ओ३म्
आर्य मित्र
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० न २२४१/५७ घोषणा पत्र म० ७ / २८-२-८१

वर्ष ८९] मा० पौष १५, पौष कृष्ण ९, रविवार सवत् २०४२ वि०, दि०, ५ जनवरी १९८६ [अङ्क १

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

प्रार्थना

ओ गाव ऽ उपावतावत
मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा
हिरण्यया ॥

—यजु ३३।१९

भावार्थ—हे ऋत्विजो ! इस यज्ञवेदी को प्राप्त हो तथा यज्ञ नौका के सचालक ज्ञानकर्मरूपी दो दिव्य कर्णों को प्राप्त हो।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए

वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	३ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

डी० ए० वी० शताब्दी समारोह पर विशाल शोभा यात्रा

सभी आयसमाजो व आर्यजनो से इसमे भाग लेने की अपील

दिल्ली ४ दिसम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले ने आगामी १५ फरवरी १९८६ को डी० ए० वी० शताब्दी समारोह पर निकलने वाले—विशाल शोभा यात्रा मे सम्मिलित होने के लिये सभी आर्यसमाजो व कार्यकर्त्ताओ से विशेष कर दिल्ली की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि इस दिन सभी लोग अन्य कार्यक्रमो को छोडकर इस शोभा यात्रा मे अवश्य सम्मिलित होने की कृपा करें।

यह शोभा यात्रा प्रात ११-०० बजे लालकिला मैदान से प्रारम्भ होगी और चादनीचोक, घण्टाघर नई सडक, चावडी बाजार, हौजकाजी, अजमेरी गेट, मिन्टो रोड, कनाट प्लेस, रीगल बिल्डिंग, पार्लियामेन्ट स्ट्रीट, सरदार पटेल चौक, गोल डाकखाना, बिडला मन्दिर से होती हुई साय ५ बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे समाप्त होगी।

उत्तर प्रदेश मे स्टाम्प शुल्क की नई दरें

उत्तर प्रदेश सरकार ने भारतीय स्टाम्प (उत्तरप्रदेश सशोधन) अधिनियम १९८५ के अन्तर्गत बन्धपत्रो और हस्तान्तरण से सम्बन्धित वर्तमान स्टाम्प शुल्क की दरो मे सशोधन किये है। स्टाम्प शुल्क की दरें बन्ध पत्रो मे अब पचास पैसे के स्थान पर एक रुपया दो रुपये के स्थान पर दो रुपये पचास पैसे, चार रुपये पच्चीस पैसे के स्थान पर चार रुपये पचहत्तर पैसे, आठ रुपये पचास पैसे के स्थान पर नौ रुपये पचास पैसे, बारह रुपये पचहत्तर पैसे के स्थान पर चौदह रुपये पच्चीस पैसे, सत्रह रुपये के स्थान पर उन्नीस रुपये, इक्कीस रुपये पच्चीस पैसे के स्थान पर तेईस रुपये पचहत्तर पैसे, पच्चीस रुपये पचास पैसे के स्थान पर अटठाइस रुपये पचास पैसे, चौतीस रुपये के स्थान पर अडतीस रुपये, अडतीस रुपये पच्चीस पैसे के स्थान पर बयालीस रुपये पचहत्तर पैसे, बयालीस रुपये पचहत्तर पैसे के स्थान पर सैंतालीस रुपये पचास पैसे तथा इक्कीस रुपये पच्चीस पैसे के स्थान पर तेइस रुपये पचहत्तर पैसे स्टाम्प शुल्क देय होगा। इसी प्रकार हस्तान्तरण पत्र से सम्बन्धित स्टाम्प शुल्क मे भी निम्न सशोधन किए गए है जिसके अनुसार अब ४ रुपए के स्थान पर ४ ७५ रुपये, ८ ५० रुपये, के स्थान पर ९ ५० रुपये, १७ रुपये के स्थान पर १९ रुपये, २५ ५० रुपये के स्थान पर २८ ५० रुपये, ३४ रुपये के स्थान पर ३८ रुपये, ४२ ५० रुपये के स्थान पर ४७ ५० रुपये, ५१ रुपये के स्थान पर ५७ रुपये, ५९ ५० रुपये के स्थान पर ६६ ५० रुपये, ६८ रुपये के स्थान पर ७६ रुपये, ७६ ५० रुपये के स्थान पर ८५ ५० रुपये, ८५ रुपये के स्थान पर ९५ रुपये तथा ४२ ५० रुपये के स्थान पर ४७ ५० रुपये। स्टाम्प शुल्क की यह पुनरीक्षित नई दरें १७ अक्टूबर १९८५ से लागू की गई है।

वेद प्रचार उपदेश विभाग की सूचनाएं--

उपदेशको एवं प्रचारको के कार्यक्रम

१— श्री केशव देव शास्त्री, महोपदेशक सभा एवं अधिष्ठाता उपदेश विभाग।
१७ से १९ जनवरी ८६, आर्य समाज बेहटागोकुल, २० से २१ जनवरी, आर्यसमाज यासीनपुर, २२ से २३ जनवरी आर्य समाज- बक्सीपुर २४ से २६ जनवरी, आर्य समाज-- कुठिला (हरदोई), २१ से २३ फरवरी, आर्य समाज-फखर पुर [बहराइच, १४ से १६ मार्च आर्य समाज गङ्गागंज (कानपुर)।

२— श्री शिवकुमार जी शास्त्री, महोपदेशक सभा।
१ जनवरी से १५ जनवरी ८६ तक, ग्राम, पो०- वरीमहैतम (कानपुर) १३ से १५ फरवरी ८६ तक आर्य समाज- मोठ एवं १६ से १७ फरवरी तक आर्यसमाज- चिरगांव[झासी] २२ से २५ फरवरी आर्य समाज अटवा अलीमर्दनपुर [हरदोई], २ से ८ मार्च ८६ तक आर्यसमाज-बुढ़ाना गेट (मेरठ शहर)।

३— श्री विश्वम्भरदत्त शास्त्री, उपदेशकसभा।
३१ जनवरी ८६ तक आर्य समाज--अमरोहा (मुरादाबाद) श्री हरिश्चन्द्र जी संयोजक के माध्यम से।

४— श्री तेजपाल सिंह भजनोपदेशकसभा एवं अभयरामजी, ढोलक वादक सभा।
३१ जनवरी ८६ तक आर्यसमाज अमरोहा (मुरादाबाद] श्री हरिश्चन्द्र जी संयोजक के माध्यम से।

५— श्री ठा० गजराजसिंह जी राघव भजनोपदेशक सभा।
१३ से १५ फरवरी तक आर्य समाज चिरगांव तथा १६ से १७ फरवरी ८६ तक, आर्यसमाज—मोठ)झासी)

६—श्री कमलदेव भजनोपदेशक सभा, २१ से २३ फरवरी आर्य समाज फखरपुर (बहराइच)

७— श्री ब्रह्मानन्द जी भजनोपदेशक सभा एव ओम लाल जी, ढोलक वादक सभा।

१ से १५ जनवरी ८६ तक, ग्राम, पो०-वरीमहतम(कानपुर) १७ से २५ जनवरी ८६ तक, क्रमश आर्य समाज-- बेहटा-गोकुल, यासीनपुर, बक्सीपुर, कुठिला, २२ से २७ फरवरी आर्य समाज—बेलीपार(गोरखपुर), २ से ८ मार्च ८, तक आर्यसमाज लखीमपुर, १० से १२ मार्च मोहमदापुर (लखीमपुर खीरी), १४ से १७ मार्च आर्यसमाज गंगागंज (कानपुर)

८—श्री नेमप्रकाश, भजनोपदेशक सभा।
१ से ३ जनवरी ८६ तक, तारा गांव (बरेली) ४ जनवरी से १५ जनवरी, ८६ तक ग्राम, पो०-वरीमहतंम (कानपुर) १७ से २६ जनवरी, ८६ तक क्रमश बेहटागोकुल, यासीन-पुर, बक्सीपुर, कुठिला। २२ से २५ फरवरी, ८६ तक आर्य समाज—अटवा अलीमदनपुर (हरदोई) १४ से १७ मार्च, ८६ तक आर्य समाज—गंगागंज (कानपुर), १४ से १८ अप्रैल—बेवर (मैनपुरी)।

९—श्री युगुलकिशोर, भजनोपदेशक सभा, १ जनवरी से १२ जन-वरी, ८६ तक ग्राम, पो०-वरीमहतंम (कानपुर), १३ से १५ जनवरी, ८६ तक आर्य समाज-गोला(लखीमपुर खीरी), १७ से २६ जनवरी ८६ तक, क्रमश बहेटागोकुल, यासीनपुर, बक्सीपुर, कुठिला (हरदोई) १५ से १६ मार्च आर्य समाज-गगागज (कानपुर)

१०—श्री लालताप्रसाद, उपदेशक सभा, १९ जनवरी से २१ जन-वरी, ८६ तक ग्राम—कोठा (बदायूं) २२ से २४ फरवरी, ८६ त आर्य समाज-अटवा अलीमदनपुर (हरदोई)।

११—श्री खेमचन्द्र जी भजनोपदेशक सभा, १ से १३ जनवरी, ८६ तक जिला उपसभा आजमगढ़, १९ जनवरी से २१ जनवरी, ८६ तक ग्राम—कोठा, (बदायूं)।

१२—श्री सीताराम भजनोपदेशक एवं प्रताप आर्य ढोलक वादक १ फरवरी से ३० अप्रैल, ८६ तक जिला उप सभा (बरेली)।

केशवदेव शास्त्री अधिष्ठाता

सावधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कुछ निष्कासित व्यक्ति प्रदेश भर मे जगह-जगह आर्यजनो को भ्रमित कर रहे हैं कि रजिस्ट्रार फर्म—सोसाइटीज एण्ड चिट्स लखनऊ ने वर्तमान सभाधिकारियों को अमान्य घोषित कर दिया है और पुराने निष्कासित सभा प्रधान को स्वीकृत प्रदान कर दी है। यह समाचार सर्वथा षड्यन्त्रपूर्ण है और आर्य जनो को भ्रमित करने वाला है। आर्य जन सावधान रहे। सभा के वर्तमान प्रधान प० इन्द्रराजजी मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी एवम कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण बलदेव महाना है तथा सभा के अपने कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ मे यथा वत् कार्यरत हैं। आर्य जन साव धान रहे।

मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

सूचना

सभी स्वतन्त्रता सेनानियों के पेंशन के सम्बन्ध मे सत्याग्रह हैदराबाद के सत्याग्रहियों के प्रार्थना पत्र जो अभी तक सभा कार्यालय को प्राप्त हुये है, उन्हे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को कार्यवाही हेतु भेज दिया गया है।

सभी आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के सत्याग्रहियो, स्वतन्त्रता सेनानियो से प्रार्थना है कि अपनी पेंशन के सम्बन्ध मे प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदा नई दिल्ली से सीधे सम्पर्क करें।

मनमोहन तिवारी मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

—आर्य समाज खाजपुरा के तत्वावधान में वेद प्रचार अध्यात्म कथा सप्ताह दिनांक १ से ८ दिस० ८५ के मध्य सुन्दर शाह कोल्ड स्टोरेज के प्रांगण में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। मंत्री

वैदिक धर्म-सनातन संस्कृति

(श्री डा० आनन्द सुमन वैदिक प्रवक्ता,

अनेक युग बीत चुके हैं, अनेकों मजहब, मत बने बिगड़े है, अनेको राष्ट्रों का तख्ता पलटा है,बहुतो का कायाकल्प हो गया है किन्तु दो अरब वर्ष से वैदिक धर्म अपने सत्य जन कल्याणकारी स्वरूप को निरन्तर सूर्यको भाँति प्रकाशित किए हुये है। इसी भावना को मुस्लिम कवि इकबाल ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

युनान मिश्र रोमाँ सब मिट गये जहा से
बाकी अभी तलक हे नामो निशा हमारा,
कोई बात हे कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
एक वक्त से हे दुश्मन दौरे जहां हमारा।

इकबाल की यह पंक्तियाँ वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप मानवीय सन्देश एवं स्वत प्रमाण होने की पुष्टि करती है। इकबाल की यह विचार धारा भी बदल गई थी, वह भी पाकिस्तान के विभाजन के समय सम्प्रदाय की भावनाओ मे बह गये थे। किन्तु तब भी वैदिक धर्म की सत्यता पर कोई चिन्ह नहीं लगा, वास्तव मे एक विशेषता है हमारी सस्कृति की, कि हम आज तक नहीं मिटे निरन्तर आने वाले परिवर्तनो से हमारी संस्कृति के धरोहर वेद मे कोई परिवर्तन नहीं आया, नहीं बदला हमारा वैदिक परिवेश।

वैदिक धर्म ही एक मात्र धर्म है जो सारे ससार को सत्य, मानवता, विज्ञान एव विवेक के पथ की ओर प्रोत्साहित करता है, यह बात केवल लिखने कहने या पढ लेने की नहीं, ससार की हर कसौटी पर परखने के बादही यह लिखा जा रहा है। स्वयं मैने इस्लामी वातावरण मे आँखें खोली। जवानीकी दहलीज पर आते आते मैं कट्टर जनूनवादी इस्लामी बन गया। यह थी इस्लामी सम्प्रदाय की मतान्धता- किन्तु जब मेरे सामने सत्य उजागर हुआ— मुझे प्रकाश मिला तब मुझे मजबूर होकर वैदिक धर्म मे आना पडा। मैने अनुभव किया कि वैदिक धर्म मे हमे पूरी स्वतन्त्रता है कि हमे किसी भी प्रश्न को बुद्धि व विवेक से खोजें केवल यह कहना कि यह कुरआन है क्योंकि मै कह रहा हू इसलिये यह सत्य है, यह बात नहीं, वैदिक धर्म की महत्ता यही है कि हम अपनी बुद्धि लगाकर परखें, जाचें समझे इसी प्रेरणा का आधार है वेद अर्थात् ज्ञान।

सृष्टि की उत्पत्ति के पश्चात् जिस पहले मानव ने धरती पर पग रखा उसके मस्तिष्क मे जो पहला सत्य विचार आया वहीं से आरम्भ होता हे वेद का सन्देश श्रुति के माध्यम से वेद का सन्देश चहु ओर प्रसारित हुआ डार्विन का सिद्धात फेल हो गया कि पहले मानव नहीं था वह तो बन्दर की सन्तानों मे से है। वेद ने सारा रहस्य समझाया उसे जिसने समझने का प्रयास किया। वेद ज्ञान फैला सूर्य की भाति सारी सृष्टि को अपने प्रकाश से प्रकाशित कर दिया, कुछ विसंगतियों ने जन्म लिया वेद के विचार सीमित हो गये जन्माधिकार वाद को मानने वाले घमण्डी बन बैठे, सामाजिक परिवेश भ्रष्ट हो गया। मानव समाज मिथ्या मे धंस गया, एक व्युह जो वेद ज्ञान को नहीं समझता था वह धीरे धीरे छा गया, शकराचार्य ने भी वेदकी ओर जाने का साहस नहीं दिखाया। ब्रह्मा मे जैमिनी पर्यन्त ही लक्ष्मण रेखा बना दी गई अनेक ऋषि मुनि हुए किन्तु किसी ने भी प्रस्थान त्रयी को छोड कर वेदत्रयी की ओर बढ़ने का साहस नहीं दिखाया वेदान्त तक ही सीमित रह गया।

समाज की १८ वीं शताब्दी आई, अग्रेजो का सूर्य उदय था। उनकी आज्ञा के बिना कोई चू तकन करता था। किन्तु एक दीवाने ने साहस दिखाया उसने ज्ञान के अथाह सागर मे गोते लगाये पुराने पत्थरो को छोड़कर वह मणि खोज लाया—वेद। दयानन्द को वेद क्या मिला समझो सारा ससार हो मिल गया ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त की श्रृ खला टूट गई— आज बडे गर्व से हम कहते हैं ब्रह्मा से दयानन्द व दयानन्द से आर्य समाज पर्यन्त वेद की विचार धारा संसार का मार्ग दर्शन करती रहेगी।

वेद के प्रकाश से हमे जो मिला वह सब कुछ है सर्वस्व है, उसी मे सबका हित हे मानवता विज्ञान व विवेक का त्रिसूत्र, समाज ने अगड़ाई ली वेद ज्ञान फैला अब आवश्यकता है कि हम सब मिलकर वेद ज्ञान को समझें दयानन्द ने कहा— वेद सबसत्य विद्याओ का पुस्तक है'। इस विचार को सारे ससार मे फैलाना है। सत्य विद्याओं के मूल वेदको समझना है सबको समझाना है, तब ही मानव समाज निर्भय रह सकेगा तभी होगी विश्व शान्ति मानव एकता, नारे लगाने से सम्मेलन करने से विश्व शांत नहीं रह सकेगा। वेद के मर्म को स्वय समझना तदनुरूप आचरण मे लाना व अन्यो तक भी वेद सदेश पहुचाना होगा, सारे ससार मे वेदकी पताका फहराओ तभी होगा मानवता का कल्याण तभी बुद्धिपर छाई कालिमा मिटेगी जो भयावह वातावरण सबको झका मे डाले हे, भयभीत किये हैं उस कुरीति को तोडना होगा ज्ञान की खोज ही मानव जीवन का मुख्य ध्येय है हमे सब ओर यह सन्देश प्रसारित करना है कि अन्धकार मय मार्ग पर न चलकर हम सब प्रकाश युक्त बुद्धि को प्रशस्त करने वाले वेद मार्ग को ही अपनाये मानवो तक वेद का सन्देश पहुचाना आज के आर्य समाजियों का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। बिना विचार के कहीं हम प्रस्थान त्रयी मे न फस जाये कहीं फिर हमे अन्धकार की गुफा मे न धंस जाना पडे।

जागो, उठो समझो समझाओ, वेद का सन्देश जन जन तक पहुचाओ आज ससार को वैदिक धर्म की आवश्यकता है। वैदिकजीवन पद्धति के बिना सब अधूरा ही रह जायेगा। अत कर्मशील बनो। यही आर्य समाज का सन्देश है।

आर्य जगत्

—आर्य समाज ताजगज आगरा का १५ वां वार्षिकोत्सव दिनाक ३० नव० से २ दिस० तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमे गुरुकुल एटा के आचार्य श्री वागेश जी, श्री विद्यारत्न जी, विख्यात सगीतज्ञ वेगराज जी तथा आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वानों के भजन प्रवचन हुए। तथा दिनाँक २ दिस० ८५ को अपराह्न महिला सम्मेलन विदुषी आर्य महिला श्रीमती शाती नागर की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम प्रभावशाली रहा। त्रिलोकी नाथभट्ट

—श्री इन्द्र देव सिंह जी मंत्री जिला आर्यप्रतिनिधि सभा बलिया के पौत्र का नामकरण सस्कार दिनांक २९ नव० ८५ को श्री ओम प्रकाश शास्त्री सोनीपत हरियाणा के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

सवाददाता

स्वामी श्रद्धानन्द जी

महात्मा गांधी भी जिनसे प्रभावित थे

(श्री डा० कमल किशोर गोयनका ए/९८ अशोक विहार फेस प्रथम, दिल्ली-११००५२)

(गतांक से आगे)

गांधी ८ अप्रैल, १९१५ को गुरुकुल कांगड़ी पहुंचे, जहां स्वामी श्रद्धानन्द की उपस्थिति में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने उनका स्वागत करते हुये मान पत्र भेंट किया।

गांधी ने अपने उत्सव में अन्य बातों के साथ स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा उन्हें भाई कहने की बात का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए कहा, 'महात्मा जी ने मुझे अपने एक पत्र में 'भाई' कहा है, उसका मुझे गर्व है। कृपया आप लोग यही प्रार्थना करें कि मै उनका भाई बनने के योग्य हो सकूं। मैं २८ वर्ष बाद अपने देश मे आया हूं। मैं कोई सलाह नहीं दे सकता। मै तो मार्ग दर्शन प्राप्त करने आया हूं और जो भी मातृभूमि-की सेवा मे लगा है ऐसे प्रत्येक प्राणी के सम्मुख झुकने के लिये तैयार हूं। मैं अपने देश की सेवा मे प्राण देने के लिये तैयार हूं। अब मैं विदेश नहीं जाऊंगा। मेरे एक भाई (लक्ष्मी दास गांधी) चले गये हैं। मुझे आशा है कि महात्मा जी उनका स्थान ले लेंगे और मुझे भाई मानेंगे।

स्वामी दयानन्द ने भाई के नाते मानो आशीर्वाद देते हुए कहा, 'मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि आप अब भारत में रहेंगे और अन्य लोगों की भांति बाहर रहकर भारत की सेवा करने के लिये विदेश नहीं जायेंगे। मुझे आशा है कि गांधी भारत के लिये ज्योति स्तम्भ बन जायेंगे।' स्वामी श्रद्धानन्द की यह भविष्यवाणी कितनी सच हुई, यह हम भारतवासी ही नहीं सारा संसार जानता है।

महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन काल मे दो बार ८ अप्रैल १९१५ तथा २० मार्च, १९१६ को गुरुकुल कांगडी गये तथा उनके शहीद होने के लगभग चार मास उपरांत १९ मार्च, १९२७ को दीक्षांत भाषण देने गये थे।

इससे पूर्व गांधी २० मार्च, १९१६ को गुरुकुल के वार्षिक उत्सव पर जब आये, तो उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी को स्वशासित, प्रजातन्त्रीय और राष्ट्रीय संस्था मानते हुए स्वामी श्रद्धानन्द की प्रशंसा करते हुए कहा था, आर्य समाज की गतिविधि का सर्वश्रेष्ठ परिणाम कदाचित् गुरुकुल की स्थापना और उसके परिचालन मे दिखाई पड़ता है। यह ठीक है कि महात्मा मुन्शीराम की प्रेरणादायक उपस्थिति ही उसकी शक्ति का अधिष्ठान है, किन्तु यह संस्था सच्चे अर्थों मे एक स्वशासित प्रजातन्त्रीय और राष्ट्रीय संस्था है, किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता या आश्रय से यह बिलकुल मुक्त है। 'इस भाषण में गांधीने निर्धन व्यक्तियो द्वारा दान देने तथा संस्था के प्रबन्धकों की जबरदस्त संगठन शक्ति की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

महात्मा गांधी ने अपनी 'आत्म कथा' मे पहली यात्रा के अनुभव के सम्बन्ध मे लिखा जब मैं पहाड़ से दीखने वाले महात्मा जी के दर्शन करने और उनका गुरुकुल देखने गया, तो मुझे बड़ी शांति मिली। हरिद्वार के कोलाहल और गुरुकुल की शांति के बीच का भेद स्पष्ट दिखायी देता था। महात्मा ने मुझे अपने प्रेम से नहला दिया। ब्रह्मचारी मेरे पास से हटते ही न थे।'

यात्रा के बाद महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द मे सहयोग निरंतर बढ़ता गया और स्वाधीनता संग्राम मे कई बार मिलकर कार्य किया। जब अंगरेजों ने रौलट अधिनियम लागू किया, तो स्वामी श्रद्धानन्द ने ३० मार्च, १९१९ को दिल्ली में ४० हजार व्यक्तियों के जुलूस का नेतृत्व करते हुए विरोध किया। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा गांधी को भेजे गये तार के अनुसार इस दिन हुए गोलीकांड में ४ हिन्दू, ५ मुसलमान मारे गये तथा १३ घायल एवं २० लापता हुए।

गांधी ने ३ अप्रैल, १९१९ को इस बलिदान एवं धैर्य के लिये स्वामी श्रद्धानन्द को तार दिया और लिखा, 'रौलट कानून का विरोध करने में आपने तथा दिल्ली के लोगोंने जिस अनुकरणीय धैर्य से काम लिया है, उसके लिये मैं आपका तथा दिल्ली के लोगों को साधुवाद देता हूं। हम उसके पीछे निहित दमन की भावना का विरोध कर रहे हैं। यह कोई आसान काम नहीं है।

लेकिन वीरमगाम और अमृतसर मे हुए दुखदायी कांडों के बाद जब गांधी ने सत्याग्रह स्थगित कर दिया, तो स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली समिति भंग करके आंदोलन से अपना हाथ खींच लिया। स्वामी श्रद्धानन्द गांधी की ओर से निराश हो गये और उन्होंने गांधी के दृष्टिकोण का ओर दार विरोध किया। यह दोनों की महानता थी कि प्रेम भाव फिर भी बना रहा। गांधी ने 'स्वामी जी के संस्मरण' मे लिखा है कि जितना जोरदार उनका विरोध होता था उतना ही जोरदार उनका प्रेम भी होता था।

स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या से गांधी को बड़ा आघात लगा। गांधी कांग्रेस कमेटी की बैठक मे भाग लेने के लिये गौहाटी जा रहे थे। उन्हें सोरभोग नामक एक छोटे से रेलवे स्टेशन पर लाला लाजपत राय का तार मिला। गांधी इस हत्या से स्तब्ध थे किन्तु उनके विचार में यह हत्या नहीं 'वीरगति' थी। गांधीने गौहाटी की २४ दिसम्बर १९२६ को बैठक में इसे 'अपूर्व मरण' एव 'धन्य मृत्यु' कहा और कामना की कि ऐसी मृत्यु हम सबको मिले।

२६ दिसम्बर, १९२६ के अधिवेशन में गांधी ने स्वयं शोक प्रस्ताव रखा और उसमे स्वामी श्रद्धानन्द के देश प्रेम, निष्ठा निर्भयता एवं अन्य गुणों की प्रशंसा की।

'यंग इंडिया (३०-१२-१९२६) मे 'शहीद श्रद्धानन्द जी' शीर्षक से लिखी अपने श्रद्धांजलि में गांधी ने उन्हें 'वीरता का अवतार 'कर्मवीर एव 'योद्धा' कहा तथा लिखा 'धर्म और सत्य' के लिये प्राण देने के कारण मृत्यु भी धन्य हो गई।' गांधी ने ९ जनवरी, १९२७ को बनारस में उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिये गंगा स्नान किया और उस 'महान् आत्मा' के कार्यों को पूरा करने की ईश्वर से प्रार्थना की।

महात्मा गांधी ने स्वामी श्रद्धानन्द के हत्यारे अब्दुल रशीद को दोषी न मानकर उन अखबारों एवं लोगों को उत्तरदायी ठहराया, जो स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपत राय और मदन मोहन मालवीय को 'इसलाम का शत्रु' घोषित कर रहे थे। गांधी ने अनेक बार स्पष्ट

(शेष पृष्ठ ८ पर)

महर्षि दयानन्द पर बनने वाली फिल्म का विरोध क्यों ?

(श्री यशपालजी आर्य 'आर्यवस्तु भंडार' ८२ डिस्पेन्सरी रोड, देहरादून)

(गताङ्क से आगे)

'ख' संदर्भ मे रास में जाने से मना कर दिया-उसे निन्दित कर्म बताया और उस निन्दित कर्म के लिये एक युक्ति दी, कि स्त्री के वेश मे पुरुष को देखने और पुरुष के वेश मे स्त्री को देखना निन्दित कर्म है। दूसरी युक्ति यह दी कि जब राम सीता और कृष्ण राधा को ईश्वर मानते—तो सीताराम और राधा कृष्ण के नृत्य से मनोरंजन कैसे करते हो। गोया कहा कि यो की नाच देखकर मनोरंजन करते हो। स्पष्ट है यहा ऋषि ने रास का खण्डन पुरुष पात्रों द्वारा स्त्री का अभिनय करने के कारण किया है। या उन्हे ईश्वर मानने के कारण किया है। यदि स्त्रियो का अभिनय स्त्रियां करती तो विरोध नहीं था यदि ईश्वर न मानते तो विरोध नहीं था।

संदर्भ 'ग' मे भी यही वेश परिवर्तन की बात दोहराई गई है। संदर्भ 'ड' मे रामलीला देखने को हजार हत्या के बराबर दोष बताया है। संदर्भ 'ख' मे महर्षि द्वारा पाप और हजार हत्या की पुष्टी मे मनु का कोई श्लोक पढ़े जाने का जिकर तो है पर किसी जीवनी कार ने वह श्लोक लिखा नही है। यदि वह श्लोक मिल जाता तो सारी स्थिति साफ हो जाती। लीजिये हम वह श्लोक प्रस्तुत करते है—

न राज्ञ प्रति गृह्णी याद राजन्य प्रसूतित

सूना चक्र ध्वजवता वेशेनैव च जीविताम्। मनु ४।८४

वर्णन है किसका दान ग्रहण न करे—वेशेनैव—वेश बदल कर आजिविका करने वालों का दान ग्रहण न करे।

दश सूना सम चक्र दश चक्र समोध्वज

दशध्वज समो वेशो दशवेश समोनृप।मनु ४।८५

क्योंकि इसमे हजार हत्या का दोष है—एकचक्र दस हत्या के समान सौ हत्या एक ध्वज के समान और हजार हत्या एक वेश बदल कर जीविका चलाने वाले के समान और दस हजार हत्या का पाप राजा का दान ग्रहण करने से एक दम स्पष्ट हो गया है कि महर्षि ने संदर्भ 'ख' और 'ग' से जो कुछ कहा था—संदर्भ 'ङ' मे हजार हत्या कह कर मनु के प्रमाव से उसे पूर्ण कर दिया है। दयानन्द का विरोध वेश परिवर्तनसे है—नाटकसे नहीं है। 'घ' सदर्भमें स्पष्ट रूपसे स्वांग बनाने (वेश परिवर्तन करने) और मन्च पर नचाने का विरोध है। लडके को सीता बनाना भी वेश परिवर्तन है।

संदर्भ 'च' मे कृष्ण सरीखे योगी के साथ—कुब्जा—राधा गोपियो आदि के साथ सम्बन्ध जोडना घृणित बताया गया है। सदर्भ 'छ' मे राधा कृष्ण-राम सीता से भीख मँगवाने का निषेध किया है। नाटक का निषेध वहा भी नहीं है।

महर्षि के पत्र और विज्ञापन पृष्ट ३६६-३६७ 'लाला कालीचरण जी आनन्दित रहो। विदित हो कि तुम आर्य समाज के पत्र में। नाटक का विषय मत छापो। यह अनुचित बात है। यह आर्य समाज है भडुआ समाज नहीं है जो तुम नाटक का विषय छापते हो। ऐसा करना भडुआ पन की बात है। इसलिए ऐसा बर्तना उचित नहीं। ह० दयानन्द १६ अक्तूबर १८८२।'

यहा स्पष्ट रूप से नाटक का विषय छापने का खण्डन किया है। उसे भडुवा पन बताया है। महर्षि द्वारा 'वेशो' (मनु के उपरोक्त ४।८५ मे) का अर्थ भडुआ किया गया है। स्पष्ट है यहा भी नाटक का निषेध वेश परिवर्तन के ही कारण है। यदि ऐसा न माना जाय तो ऋग्वेद भाष्य के टाइटल पेज पर ३१ ५—१८८२ का विज्ञापन कैसे छप गया।

५-५-१८८२ को ऋषि राजा ने राजा दुर्गाप्रसाद को पत्र लिखा 'लाला कालीचरण मे कह देना कि अगले महीने मे भा-सु-प्र का नोटिस वेद भाष्य पर छाप देवे' पत्र और विज्ञापन पृष्ट ३३१। और ३१-५-१८८२को महर्षि के हस्ताक्षरो से युक्त विज्ञापन छप गया—'सब सज्जनो को विदित हो कि एक भारत सुदश प्रवर्तक पत्र सनातन वेदोक्त धर्म विषयक.व्याख्यान—नाटक—तथा सत्योप देशों से सुभूषित हो के प्रति मास निकलता है—जिस किसी को उसके ग्राहक बनने की इच्छा हो वह लाला कालीचरण मन्त्री आर्य समाज फरुखाबाद के पास लिख कर मगवा लेवे। ह० दयानन्द सरस्वती

इस विज्ञापन मे नाटक छापने की बात को बड़े गर्व मे कहा गया है। (भडुआ पन नहीं कहा है।) हम समझते हैं उपरोक्त पत्र और विज्ञापन दोनों मे विरोध नहीं है। भाव दोनो का एक ही है। जहां न छापने को कहा है वहां वेश परिवर्तन के कारण कहा है—अन्यथा छापने का विरोध नहीं है। आखिर ऋषिराज नृत्य संगीत नाटक का विरोध करते क्यों ? डा० कपिलदेव उपकुलपति महाविद्यालय ज्वालापुर का वेद गोष्ठी अजमेर निर्वाणशती पर दिया भाषण अमर ज्योति शिवरात्रि अंक पृष्ठ २०४ पर छपा है। उनका कहना है ललित कलायें वेद से निकली है। जग्राह पाठ्य मृग्वेदात् सामभ्यो गीत मेवाच।

यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि (भरतमुना। १-१७) महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश पृष्ट ६६ पर लिखा है। 'इस राज विद्या को दो वर्ष में सीख कर गन्धर्व वेद कि जिसको गान विद्या कहते हैं उसमे स्वर-राग-रागिणी-समयताल ग्राम तान वादित्र नृत्य गीतादि करे यथावत् सीखे। परन्तु मुख्य करके सामवेद का गान वादित्र वादन पूर्वक सीखें और नारद संहितादि जो जो आर्ष ग्रन्थ हैं उनको पढ़े। परन्तु भडवे वेश्याओ के विषया शक्ति कारक और बैरागियों के गर्दभ शब्दवत् व्यर्थ आलाप कभी न करें।

हम समझते हैं कि अब यह कहने की कोई गुंजायश नहीं रही कि दयानन्द नृत्य सगीत या नाटक का विरोध करता है।

महर्षि दयानन्द के उपरोक्त अंशो को प्रस्तुत करके दयानन्द पर बनने वाली फिल्म का विरोध किया जाता है तब यह भी कहा जाता है कि दयानन्दपर फिल्म बनानेकी कोई उपयोगिता नहीं है। क्योंकि गांधी पर फिल्म बनी। जिन दो वर्षो मे धूम-धाम से उस फिल्म का प्रदर्शन हुआ उन्हीं दो वर्षो मे देश मे शराब की खपत ड्योढ़ी हो गई। हम जानना चाहेंगे कि क्या गांधी पर बनी फिल्म मे शराब का प्रचार किया था ? इस फिल्म से शराब की खपत बढ़ने या दहेज की मांग बढने का क्या सम्बन्ध है हम समझ नहीं सके हैं। क्रमश

ओ३म्

क्या यह समाचार आपने पढ़ा है ?

क्या आपका दिल कचोटता है ?

क्या आपका खून तड़प, और दिमाग बेचैनी, महसूस करता है ?

"एक लाख हिन्दुओ को अविलम्ब ईसाई बनाने की योजना"

आगामी मास ईसाइयों के धर्म गुरु श्री पोप पाल के भारत आगमन पर उनके स्वागत के लिये, एक समाचार के अनुसार, ईसाई पादरियों ने तैयारी शुरू कर दी है कि नागपुर के इलाके में लगभग एक लाख आदिवासियों को ईसाई बनाने का काम पूरा कर लें।

हिन्दुस्तान में हिन्दुओं को ईसाई बनाने का व्यापक अभियान तेजी से चल रहा है। आपके शहर में भी आए दिन बड़ी-बड़ी मोटरों से ईसाई धर्म की पुस्तकें कौड़ियों के मूल्य बेची या बांटी जाती है, आपने देखा सुना होगा।

यदि हिन्दुओं के धर्मान्तरण की यही हालत रही तो हमारी आपकी जिन्दगी में ही हिन्दुस्तान में ही हिन्दू अल्पसंख्यक हो जायेंगे, और फिर न रहेगी धर्मनिरपेक्षता और न ही रहेगा लोकतन्त्र।

क्या धर्मनिरपेक्ष राज्य के यह अर्थ हैं कि केवल हिन्दुओं को धर्म छोड़ना पड़े ?

धन से, छल से, बल से, प्रलोभन से सेवा अथवा चिकित्सा अथवा शिक्षा संस्थाओं के जाल में फँसा कर ईसाई अथवा मुसलमान बनाने की सुविधायें प्रदान करना क्या धर्मनिरपेक्षता है।

भारत में बसे पादरियों ने एक लाख आदिवासी बन्धुओं को ईसाई बनाकर अपने धर्म गुरु पोप पाल का स्वागत करने का निश्चय किया है।

दूसरी तरफ गांव के गांव मुसलमान बनाये जा रहे हैं।

धर्मान्तरण के इस विशाल अभियान के लिये उनके पास धन है, साधन है, करोड़ों रुपया इस काम के लिये योरुप, अमेरिका और अरब देशों से अलग-अलग नामों से इस देश को भेजा जा रहा है।

क्या आप इस प्रकार हिन्दू जाति के अंग भंग होते हुए देख कर भी खामोश रहेंगे ?

एक धर्मनिरपेक्ष राज्य इस प्रकार कैसे एक धर्म गुरु को राजकीय मेहमान बना कर उसका स्वागत कर रहा है ? क्या यह शासन इसी प्रकार हिन्दू धर्म गुरुओं और पूज्यपाद शंकराचार्यों का राजकीय स्वागत करेगा ?

देखिये कहीं हमारी और आपकी भूलों के परिणाम स्वरूप हमारे आपके देखते भारतीय संस्कृति-हिन्दू धर्म नष्ट न हो जाय।

सोचिए

विचारिए

कुछ तो करिए !

फिलहाल :-

आपसे अनुरोध है कि-

आपके परिवार के सदस्य माननीय प्रधान मन्त्री जी को पत्र लिखें कि वह अनुचित कार्य तत्काल रोका जाय।

और, यदि आपका जी चाहे तो धर्मरक्षा अभियान चलाने के लिये एक रुपये की सहायता दीजिये।

निवेदक
नगर आर्य समाज
गणप्रसाद रोड, लखनऊ
आर्य समाज सदर, कैंट लखनऊ

माननीय श्री प्रधान मन्त्री जी,

साग्रह अनुरोध है कि हिन्दुओं का धर्मान्तरण रोका जाए, विदेशों से आने वाले धन की गहराई से जांच की जाए, प्रच्छन्न रूप से ईसाई मुसलमान बनाने के लिए भेजे गये धन पर रोक लगायी जाय। विदेशी धर्म प्रचारक वापस भेजे जायें। अपने देश में घुस पैठ रोकी जाय, सभी के लिये एक ही कानून हो अल्पसंख्यकों को ऐसी सुविधायें न दी जाए कि वह अनैतिक धर्मान्तरण से बहुसंख्यक बन जाए। देश को दुर्भाग्य से बचाइए।

आपका भारतवासी

—आर्य समाज धबखुवा बाजार (फर्रुखाबाद) का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक ११ से १३ दिसम्बर ८५ तक सामवेद परायण यज्ञ के साथ धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमे आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वानों ने भाग लिया। इसी अवसरपर कई बच्चो का यज्ञोपवीत एवं मुंडन सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। प्रधान

—दीपावली के शुभ अवसर पर आर्यसमाज भागलपुर देवरिया में समाज के प्रधान श्री चन्द्रशेखर मिश्र शास्त्री के पौरोहित्य में, यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला गया। मन्त्री

—आर्य समाज पिलखुआ (गाजियाबाद) मे दि० २३ दिसम्बर ८५ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया तथा समाज के मन्त्री श्री श्री निवास आर्य ने श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके आदर्शों को अपने जीवन में लागू करने की अपील की।

समाचारदाता

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वीय अफ्रीका कीनिया-नैरोबी की गतिविधियां एवं निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वीय अफ्रीका अपने स्थापना काल से ही पूर्वी अफ्रीका ही नहीं अपितु भारत से दूर सभी पार-देशीय क्षेत्रों में वैदिक मन्तव्यों और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा संस्थापित आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में लीन रहा है। आज भी यह सभा पूर्व मर्यादाओं को सुरक्षित रखता हुआ आगे ही आगे बढ़ता जा रहा है। इस वर्ष सभा का निर्वाचन २४ नवम्बर १९८५ ई० को सर्वसम्मति से दो वर्ष के लिए अर्थात् १९८६ ई० तक अतीव प्रसन्नता एवं सद्भावनाओ से परिपूर्ण वातावरण मे हुआ। निर्वाचन के पश्चात् सभा प्रधान श्री हरवंशराय जी साही ने अपने साथियो को साथ लेकर युगाण्डा, तञ्जानियां और कीनियां सभी प्रदेशों की आर्य समाजों का दौरा किया और आर्य बन्धुओं को मिलकर उत्साह प्रदान किया। इस दौरे का बड़ा ही सफल प्रभाव पड़ा।

इस वर्ष की गतिविधियों मे उल्लेखनीय कार्य कीनिया राष्ट्र मे ईसाई और इसलाम धर्म के साथ हिन्दू धर्म की शिक्षा को भी अनिवार्य रूप से लागू कराने का भरसक यत्न है। इस राष्ट्र की सरकार ने धर्म शिक्षा सभी शिक्षण संस्थाओं मे इसी सत्र से पाठ्यक्रम मे निर्देशित कर अनिवार्य कर दी थी। किन्तु इसमे केवल इसलाम और ईसाई धर्म को ही लिया गया था। हिन्दू धर्म का कहीं भी नाम नहीं था। सभा के अधिकारियों और डा० वेदीराम जी शर्मा के अनथक प्रयत्नों से इस सरकार ने हिन्दू धर्म को भी पाठ्यक्रम मे सम्मिलित करना स्वीकार कर लिया। किन्तु हिन्दू धर्म का मार्ग अन्य धर्मों के समान सरल नहीं था। फिर भी डा० शर्मा जी ने हिन्दू धर्म का पाठ्यक्रम तैयार किया और सरकार के शिक्षा मन्त्रालय को मेरे माध्यम से भेजा। किन्तु हमारे ही कई अन्य विचारों वाले सज्जनों ने अपने आपको हिन्दू धर्म के शीर्षक से युक्त पाठ्यक्रम को स्वीकार करने मे कुछ बाधाएं उपस्थित की। इन सभी बाधाओं को श्री डा० वेदीराम जी ने बड़ी ही सूझबूझ से राज्य सरकार को पूरी तरह सन्तुष्ट करके और दूसरे भाइयों को भी समझाकर शान्त किया और परमात्मा की कृपा से हिन्दू धर्म को भी इस राष्ट्र के बच्चे पढ़ने का अवसर प्राप्त कर सकेंगे। डा० साहिब सरकार की शिक्षा नीति के पैनल पर एक वरिष्ठ सदस्य के रूप मे मनोनीत हैं और इससे आर्यसमाज के मान और आन को सर्वोपरि प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। डा० साहिब आजकल धर्म शिक्षा के अध्यापकों को तैयार कर रहे हैं और स्वयं सभी मुस्लिम, जैन, सिख, ईसाई विद्यालयों मे जाकर हिन्दू धर्म पर अपने भाषण देते हैं। इस प्रकार सभा वैदिक धर्म के प्रचार मे दत्तचित्त है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों की सूची नीचे दी जाती है। —हरवंशराय साही सभा प्रधान

निर्वाचन सूची—१९८५ व ८६ के दो वर्षो के लिए—

श्री हरवंशराय जी साही	सभा प्रधान
श्री महेन्द्र जी मल्ला	वरिष्ठ उपप्रधान
श्री शीलकान्त जी वर्मा	उपप्रधान-मम्बासा (समुद्र तटीय क्षेत्रार्थ)
श्री राजेन्द्रपाल जी चड्ढा	उपप्रधान-किसुमू (पश्चिमी क्षेत्रार्थ)
श्री बलबीर जी ठांडा	महामन्त्री
श्री मधुकुमार जी मल्ला	उपमन्त्री—एलडोरेट
श्री वीरेन्द्र कुमार जी वर्मा	उपमन्त्री
श्री गिरधारी लाल जी सेठी	कोषाध्यक्ष
श्री धर्मेन्द्र जी कपिला	सह-कोषाध्यक्ष
श्री अमरनाथ जी फक्के	वेद-प्रचाराधिष्ठाता
श्रीमती निर्मला वशिष्ठ	पुस्तकाध्यक्ष

(१) इन्हीं के साथ चौदह सदस्य अन्तरङ्ग सभा के लिए निर्वाचित हुए
(२) श्रद्धानन्द नर्सरी स्कूल के लिए—

[क] श्री नवल कुमार मल्ला, निर्देशक और
[ख] श्रीमती पुष्पा मदन, मैनेजर निर्वाचित हुए।

वैदिक साहित्य प्रकाशन को वरीयता दें

—जोशी

बांसवाड़ा, २३ दिसम्बर (वा) राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी ने कहा कि भारत की संस्कृति तथा उसके प्राचीन ज्ञान को पढ़ने के लिये वेदों को समझना जरूरी है।

श्री जोशी आज यहां राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा ज्योतिषाचार्य एवं वैदिक विद्वान् पन्नालाल जोशी की स्मृति मे आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय वेद सम्मेलन के समापन समारोह मे बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि यह विडम्बना की बात है कि हमारे विद्वानों ने वेदों पर साहित्य तो रचा है पर उसका प्रकाशन नहीं कराया। लवियों से उपेक्षित इन उत्कृष्ट प्रतियो को आम लोगों के बीच लाने की आवश्यकता पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत साहित्य अकादमी को वैदिक प्रतियो के प्रकाशन में पहल करनी चाहिए।

मुख्य मन्त्री ने कहा कि वेद किसी धर्म या राष्ट्र की परिधि तक सीमित नहीं है, बल्कि सार्वभौमिक एवं सार्वजनिक सम्पत्ति भी है। वेदों का आज उतना ही महत्व है जितना आदिकाल मे था।

उन्होंने कहा कि वेदो पर जितना भारतीयो ने लिखा है, उतना ही विदेशी विद्वानों ने भी लिखा है। आणविक हथियारों से उत्पन्न विषम परिस्थितियो से संसार को जो खतरा पैदा हो गया है, उसे दूर करने के लिये वेदों मे ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन किया जा रहा है।

(पंजाब केसरी से साभार)

शुद्धि सम्मेलन

दिनांक १७-१२-८५ आर्यसमाज बड़गांव गौण्डा के उत्सव पर स्वामी सेवानन्द महामन्त्री शुद्धि संरक्षणीय समिति हरियाणा की अध्यक्षता मे दिन के २ बजे शुद्धि सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर जो निर्धन हरिजन पैसे या दबाव के कारण अपना धर्म छोड़ने पर बाध्य हो गये थे—उनको फिर हिन्दू धर्म मे लाने और आगे के लिये वह हिन्दू धर्म न छोड़ें इसके लिये एक समिति का गठन किया गया सर्वसम्मति से सिंगरवामऊ जि० जोनपुर के भूतपूर्व राजा को प्रधान और श्री बलराम गोविन्दराम को महा मन्त्री चुना गया आर्य समाज सम्मेलन श्री राम प्रकाश वर्मा, श्री जुगुलकिशोर व श्री बलराम गोविन्द के प्रयत्नों से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। —ओमप्रकाश प्रधान

हिन्दू शुद्धि संरक्षिणी समिति

शास्त्रार्थ महारथी पं० विहारीलाल शास्त्री

(श्री डा० भवानी लाल भारतीय)

अद्भुत शास्त्रार्थी, तार्किक, प्रबल वक्ता तथा उपदेशक बिहारीलाल शास्त्री का जन्म फाल्गुन शुक्ला तृतीया सं० १९४७ वि० को मुरादाबाद जिले के पागबडा ग्राम मे हुआ। इनके पिता का नाम पं० अयोध्या प्रसाद था जो भारद्वाज गोत्रीय गौड ब्राह्मण थे। परिवार मे खेती तथा लेन देन का काम होता था। बिहारी लाल जी का संस्कृत अध्ययन प० लोक नारायण तथा उनके पुत्र पं० केदारलाल से हुआ। इनके निकट रह कर उन्होने अमर कोश, लघु कौमुदी आदि ग्रन्थ पढ़ प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् इन्हे सम्भल की संस्कृत पाठशाला में अध्यापक का कार्य मिल गया। प० यशोधर पाठक तथा प० शिव शर्मा के सान्निध्य से ये आर्य समाजी बने। कुछ समय तक मुरादाबाद के इस्लामिया स्कूल में शिक्षण कार्य किया, पुन रतनपुर की जैन पाठशाला मे भी शिक्षक रहे। जब पं० भोजदत्त शर्मा ने आगरा में आर्य मुसाफिर विद्यालय की स्थापना की तो बिहारीलाल जी वहा उपदेशक कक्षा को पढ़ाते रहे। १९२०से १९२४ तक आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला बिजनौर के अन्तर्गत प्रचार कार्य किया।

कालान्तरमे बरेली के सरस्वती विद्यालय मे अध्यापन कार्य किया। अन्तत जिला बदायू के ककराला कस्बे मे म्युनीसिपल इण्टर कालेज म संस्कृत के प्रवक्ता पद पर कार्य करते हुए १९५६ मे अवकाश ग्रहण किया। यद्यपि आप विभिन्न स्थानो पर रहते हुए भी धम प्रचारार्थ जाते, थे, किन्तु अवकाश ग्रहण कर लेने के पश्चात तो आपने सर्वात्मना प्रचार कार्य को ही अंगीकार कर लिया। प० बिहारीलाल शास्त्री ने अपने जीवन काल मे विभिन्न मतानुयायी विद्वानों से अनेक बार शास्त्रार्थ किये। जिनमे आपको सदाविजय श्री प्राप्त होती रही। आप एक ओजस्वी वक्ता तथा उत्कृष्ट लेखक भी है। आपके द्वारा लिखित साहित्य का विवरण इस प्रकार है–

वेद वाणी–वेद विषयक निबंधो का संग्रह प्रथम संस्करण।

वेद वाणी–द्वितीय संस्करण जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर द्वारा २०२५ वि० मे प्रकाशित।

पशुबलि और वेद।

योगिराज श्री कृष्ण।

इसलाम का स्वरूप।

धर्म तुला।

चार शास्त्रार्थ।

वैदिक पताका।

ब्रह्म दमन प्रथम संस्करण २०२१ मे श्री चन्द्रनारायण एडवोकेट तथा द्वितीय संस्करण १९७३ ई० मे अद्भुत वैद्य प्रधान आर्य समाज बिहारीपुर बरेली द्वारा प्रकाशित।

अगद चरण।

मूर्तिपूजा पर प्रामाणिक शास्त्रार्थ।

क्या मूर्तिपूजा वेदोक्त है? प्रेम पुस्तक भडार बरेली से २०२९ वि० मे प्रकाशित उपर्युक्त मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त शास्त्री जी ने स्वामी दर्शनानन्द कृत वेदान्त दर्शन के उर्दू भाष्य (अपूर्ण) का हिन्दी अनुवाद किया। यह अनुवाद प्रेम पुस्तक भंडार बरेली द्वारा १९५१ ई० तथा १९७३ ई० मे प्रकाशित हो चुका है। उनका चाणक्य नीति का भाषानुवाद तथा दृष्टान्त सागर भी प्रकाशित हुए हैं। चाणक्य नीति का यह अनुवाद धर्मसिंह सत्यदेव आर्य बरेली द्वारा १९३४ ई० में सर्व प्रथम प्रकाशित हुआ था।

माननीय शिव सागर रामगुलाम जी

शोक पूर्ण समाचार है कि मारीशस के प्रधान डा० शिव सागर रामगुलाम जी का दिसम्बर के मध्य मे हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। श्री शिव सागर जी भारतीय मूल के थे इनके पूर्वज एक सदी पहिले विहार से मारीशस बन्धुआ मजदूर के रूप मे गये थे। शिवसागर जी मेधावी थे—इंगलैण्ड से चिकित्सक होकर अपनी जन्मभूमि मारीशस की सेवामे रत रहे। प्रधान, मन्त्री, वाइसराय-राष्ट्र प्रधान के रूप मे सफलतापूर्वक कार्य किया—मारीशस मे नव जागरण-आर्य समाज के प्रचार प्रसार मे पूर्ण सहयोग प्रदान किया। स्वभाव से विनम्र-मृदुभाषी और सौम्य थे। भारत से विशेष लगाव था। तथा वर्ष मे एक दो बार यहा आते थे। उनके निधन से मारीशस मे भारत के एक महान् मित्र का अभाव हो गया।

आर्य मित्र डा० शिवसागर रामगुलाम को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है, प्रभु दिवगत आत्मा को शांति एव दुःखी परिवार-मारीशस निवासियों मे एवं भारतीय मित्रो को धैर्य प्रदान करे।

आचार्य रमेश चन्द्र-एम० ए० सम्पादक

स्वामी श्रद्धानन्द जी

(पृष्ठ ४ का शेष)

शब्दो में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द 'इसलाम के शत्रु' नहीं है। गांधी ने कहा कि हिन्दु-मुसलमानों को इस हत्या से शिक्षा लेनी चाहिये और उनके रक्त मे अपने-अपने 'हृदय का पाप' धो देना चाहिए। गांधी ने प्रति शोध और बदले को भी धर्म विरोधी कहा और निर्देश दिया कि हिन्दुओ को आत्म संयम रखना चाहिये।

महात्मा गाँधी स्वामी श्रद्धानन्द को, कुछ मामलो मे असहमति के बावजूद अपना भाई, आदरणीय सहयोगी मानते हुए उनके गुणों के प्रशंसक बने रहे। अस्पृश्यता निवारण के लिए उन्होंने जो कार्य किए, उनकी गाधी ने सर्वत्र मुक्तकंठ से प्रशसा की। यद्यपि दोनो देश भक्तो के क्षेत्रो एवं कार्य प्रणाली मे अन्तर था, लेकिन क्या यह संयोग ही था कि दोनों को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई।

निमन्त्रण

श्रीमती एवं श्री कृष्णबलदेव महाना

कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

अपने नवजात पौत्र

के

शुभ नामकरण संस्कार

के मङ्गलमय अवसर पर दिनांक ५ जनवरी,१९८६ को प्रात ९.३० बजे अपने निवास स्थान ९ डी, शृङ्गार नगर लखनऊ-५ मे समस्त आर्य सदस्यो को सपरिवार सादर आमंत्रित करते है।

कार्यक्रम- यज्ञ संस्कार प्रात ९ ३० बजे
प्रीतिभोज १२०० बजे

दर्शनाभिलाषी
राजीव महाना

आर्य समाजों के निर्वाचन

नाम आर्यसमाज	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
कस्वा[पूर्नियां]बिहार	श्री मुन्शीलाल आर्य	दयाशंकर आर्य	श्री मुन्शी लाल आर्य
भीकमपुर जैनी(बदायू]	श्री रघुवीर सिंह आर्य	दयाशंकर आर्य	श्री सोहन पालसिंह आर्य
रसोली (बाराबकी)	श्री स्वामी दयाल एडवोकेट	श्री रमाकांत आचार्य	श्री जगदीश प्रसाद मौर्य
आर्य कुमार सभा कल्लापुरा वाराणसी	श्री रामलखन आर्य	श्री सोमनाथ मौर्य	श्री जयप्रकाश आर्य
शास्त्री नगर कमला नेहरूनगर(गाजियाबाद)	श्री डा० जंगबहादुर शास्त्री	श्री डा० धर्म प्रकाश गुप्त	श्री भोजराज सिंह यादव
पडरोना (देवरिया)	श्री डा० ब्रह्मप्रकाश महेन्द्रा	श्री सत्यपाल कोहली	श्री ईश्वरचन्द्र गुप्त
आर्योप्रतिनिधि सभा गाजीपुर	श्री रामप्रसादजो	श्री नारायण प्रसाद आर्य	श्री हरिनारायण जी
आयवीर दल आर्य समाज असुरन रेलवे कालोनी गोरखपुर	संचालक-श्री मोहन लाल शर्मा	श्री शिवशङ्कर सिंह	श्री वेद प्रकाश जी
आर्योप्रतिनिधि सभा आगरा	श्री पूरनचन्द आर्य	श्री कोमलप्रसाद सारस्वत	श्री भगवान आर्य
वेंकट नगर(शहडोल) म० प्र०	श्री रामसुन्दर मिश्र	श्री मुद्रिका प्रसाद अवस्थी	श्री बलदेव प्रसाद सोनी

—आर्य समाज हमीरपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक २३ नव० से २६ नव० तक हर्ष एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। मंत्री

—आर्य समाज चांदपुर (बिजनौर) का ८८वा वार्षिकोत्सव दिनांक ७ से ९ दिस० के मध्य समारोह पूर्वक मनाया गया। इस कार्यक्रम में आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी स्वरूपानन्द जी, डा० ज्वालानन्द सुमन जी सदृश विद्वानों ने भाग लिया तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला राम गोपाल जी शालवाले के प्रभावशाली भाषण हुए।
राजेन्द्र कुमार मन्त्री

शोक प्रस्ताव

अत्यधिक दुख है कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जनपद लखनऊ के सम्प्रेक्षक श्री भगवानदास चावला का गत ९ दिस० १९८५ को आकस्मिक निधन हो गया। आप एक सुहृद सज्जन, कर्मयोगी, व्यवहार-कुशल एवं सब सहयोगी आर्य बन्धु थे। इस अपूरणीय क्षति पर आर्य प्रतिनिधि सभा, जनपद लखनऊ शोक-संतप्त है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शांति एवं सद्‌गति तथा शोकाकुल परिवार जनो को धैर्य एव शक्ति प्राप्त हो।
रूपचन्द 'दीपक' मन्त्री

— आर्य समाज हासीपुर (मोरजापुर) के पुराने वैदिक धर्मी श्री चेतनारायण सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती दिलबसी जी का निधन हो गया। अन्त्येष्टीय संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ तथा दिनांक १८ दिस० ८५ को शान्ति यज्ञके पश्चात् उनके स्मृतिमे १०१) रु० का दान भी आर्य समाज हासीपुर को प्राप्त हुआ। प्रभु से दिवगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की गई। मंत्री

—आर्य समाज उन्नाव के प्रधान व नगर के प्रसिद्ध वकील श्री रघुबीर सिंह के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज उन्नाव मे एक शोकसभा की गई तथा दिनाक ८ दिस० ८५ को शांति यज्ञ का आयोजन हुआ। जिसमे दिवगत आत्मा की शांति एवं दुखी परिवार के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई। मंत्री

— श्री पं० पूर्णानन्द जो वर्मा वेदालङ्कार गुरुकुल कागड़ी हरिद्वार का निधन दिनांक २५ नव० ८५ को हो गया वे ८३ वर्ष के थे। आर्य समाज चण्डीगढ मे एक शोक सभा की गयी जिसमे दिवंगत आत्मा की शान्ति एव दुखी परिवार के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई। मन्त्री

आर्य समाजो के प्रस्ताव

पोपपाल का स्वागत राज्य के अतिथि के रूपमे न किया जाय

प्रान्त की निम्न आर्य समाजो ने भारत सरकार से यह अनुरोध किया है कि ईसाइयो के धर्माध्यक्ष पोपपाल जो कि आगामी मास फरवरी ८६ मे भारत पधार रहे है उनका स्वागत राज्य के अतिथि के रूप मे न किया जाय तथा उन्हे भारत मे प्रवेश करने की तब तक अनुमति न दी जाय जब तक कि वह यह आश्वासन न दे दे कि वह भारत मे हिन्दुओ का ईसाईकरण नहीं करेंगे। भारत के संविधान मे देश को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है। ऐसी स्थिति मे भारत सरकार द्वारा ईसाई मतके प्रचारक पोपपाल को राज्यके अतिथि के रूप मे आमंत्रित करना संविधान का उलंघन और अपमान है।

१— आर्य समाज नामनेर (आगरा)
२— आर्य समाज मेंहदावल (बस्ती)

आर्य परिव्राजक

स्वामी ब्रह्मानन्द जी

स्वामी ब्रह्मानन्द जी निस्पृह आर्य सन्यासी हैं। पूर्व नाम प० बब्बूप्रसाद त्रिपाठी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य निवासी धर्माङ्गदपुर जनपद कानपुर के हैं। आपके पितामह स्व० शिवदयालु जी को स्वामी दयानन्द सरस्वती के साथ दो बार सान्निध्य प्राप्त हुआ। एक बार जब स्वामी जी काशी गये थे और दूसरी बार जब स्वामी जी ने फर्रुखाबाद से कानपुर यात्रा की थी। स्वामी ब्रह्मानन्द में उनके



स्वामी ब्रह्मानन्द जी

पितामह द्वारा वैदिक संस्कारों का प्रभाव पड़ा। कुशल वैद्य का सफल जीवन व्यतीत करने के बाद सन्यास लेकर स्वामी ब्रह्मानन्द जी वैदिक धर्म का प्रचार करते हैं। कुशल वक्ता है आर्य सिद्धांतों के ज्ञाता हैं जनता प्रभावित होती है। आर्य जनो से अनुरोध है कि इस पते पर सम्पर्क करके स्वामी जी को प्रवचन हेतु आमन्त्रित करें। ग्रामीण क्षेत्रों मे स्वामी जी के प्रवचनो का उपयोग श्रेयस्कर होगा। सम्पर्क पता—

स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा श्री अमरनाथ जी मन्त्री गणेश सेवाश्रम (खादी भण्डार) ९१ बी० किदवईनगर—कानपुर-११

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

आर्यमित्र के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ दिसम्बर १९८५ को समाप्त हो जाता है। वी पी. भेजने मे ४-५० अधिक पोस्टेज लगते है इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी पी न भेजी जाय। जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) भेज दें अन्यथा उनके नाम वी पी भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी पी भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे है। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) कर दिया गया है।

३३६, ८१८, २८१५, १९२२, १९५७, २९६८, ५४३६, ६३२२, ६३२८, ६३४४ ६४८१, ८१८३, ८३८३, ८४८९, ८४०३, ८४९६, ८७००, ८७०९, ८७९१, ९०७५, ९०८६, ९३८३, ९३९०, ९४८४, ९७९१, १००६३ १००८५, ११२०१, ११११०, ११४४४, ११४६२, ११४६४, ११४६५, ११४७०, ११४७४, ११४८५, ११८१६, ११८१७, १२०८१, १२०८४, १२०९०, १२०९२, १२०९४, १२०९५, १२०९६, १२५४९, १२५५०, १२५५१, १२५५५, १२५७०, १२६०४, १२८०८, १२८१४, १२८१५, १३०३३, १३०३५, १३०४५, १३०४६, १३०४७, १३३६४, १३३६५, १३३६६, १३३६७, १३३६८, १३३६९, १३३७०, १३३७१, १३३७२, १३३७३ १३३७४, १३३७५, १३३७६, १३३७७, १३३७८, १३३७९, १३३८०, १३३८१, १३३८२, १३३८३, १३३८४, १३३८५, १३३८६, १३३८७, १३३८८, १३३८९, १३३९०, १३३९१, १३३९२, १३३९३, १३३९४, १३३९५, १३३९६, १३३९७, १३३९८, १३३९९, १३४००, १३४०१, १३४०२, १३४०३, १३४०४, १३४०५, १३४०६, १३४०७, १३४०८, १३४०९, १३४१०, १३४११, १३४१२, १३४१३, १३४१४, १३४१५, १३४१६, १३४१७।

विनीत—

—व्यवस्थापक

शताब्दि महोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर–प्रदेश का

१५ से १८ मई तक—१९८६ के मध्य
डी० ए० वी० कालेज प्राङ्गण—लखनऊ मे

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० को स्थापित हुए एक सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। सौ वर्षों मे सभा ने प्रदेश के आर्य समाजों को सङ्गठित करने और उन्हे दिशा निर्देशन का यथा साध्य प्रयास किया है। शताब्दि समारोह विशेष भव्यता के साथ मनाया जायेगा जिसमे आर्यजगत् के मूर्धन्य नेताओ के अतिरिक्त भारत के प्रधान मन्त्री अथवा राष्ट्रपति विशेष अतिथि होगे।

० समस्त आर्यसमाजें आर्य उपप्रतिनिधि सभायें, आर्य जन और उत्तर प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिको से अनुरोध है कि इसे सफल बनाने के लिये हमारे हाथो को सुदृढ़ करें अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सभा को भेजने का प्रयास करे।

इस अवसर पर सभा के १०० वर्ष का इतिहास प्रकाशित होगा। समस्त आर्यसमाजों की विवरण पत्रिका भी संलग्न होगी। अत समस्त आर्यसमाजें एक मास के अन्तगत अपने समाज का इतिहास अपने क्षेत्र के विगत १०० वर्षों के अन्तराल के विशेष आर्यजनो का परिचय और गतिविधियो का विवरण प्रस्तुत करें जिससे विवरण पत्रिका मे सम्मिलित किया जा सके। इस अधिवेशन की सफलता के पीछे प्रदेश की समस्त आर्यसमाजो का सङ्घेत शक्ति होना आवश्यक है।

इन्द्रराज	मनमोहन तिवारी
प्रधान	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग के पूर्व अधिष्ठाता डी० ए० वी० कालेज के कोषा० एवं प्रयाग को अनेक आर्य शिक्षण सस्थाओं के अधि० तथा चौक समाज के कर्मठ सदस्य स्व० कृष्णप्रसाद जाय० के सुपुत्र श्री जीतेन्द्रनाथ जी, अत्यन्त सुन्दर एव नवीन 'सत्यम्' होटल के शुभारम्भ पर २३ सितम्बर १९८५ से १८ अक्टूबर १९८५ तक नित्य प्रात: एव सायं चारों वेदों से श्री प० लालबहादुर जी शास्त्री के पौरोहित्य मे यज्ञ सम्पन्न कराया—जो बहुत ही प्रभावशाली, आकर्षक एव अत्यन्त रोचक रहा। —मन्त्री

स्व. धर्मवीर मार्केट एव मार्ग का उद्घाटन

आर्यजगत् के प्रसिद्ध आर्य नेता एवं राजनीति के कुशल खिलाड़ी स्व० धर्मवीर जी श्रम एवम् पुनर्वास राज्यमन्त्री भारत की पावन स्मृति मे सुलेम सराय बाजार मे उनके नाम पर एक कई कक्षों का बाजार-एवम उन्हीं के नाम पर एक लम्बी सड़क का उद्घाटन ३० अक्टूबर को पं० लालबहादुर जी शास्त्री, द्वारा सम्पन्न यज्ञोपरात इलाहाबाद के प्रशासक माननीय श्री प० जे०एन० द्विवेदी के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक उच्चाधिकारी एवम् नेता उपस्थित थे।

—आर्यसमाज बांदा के शताब्दी समारोह दिनांक १०-१२-८५ से १४-१२-८५ के उपलक्ष्य मे शास्त्रार्थ महारथी श्री प० शान्तीप्रकाश जी शास्त्री मौलवी आलिम फाजिल जयपुर का विशाल जन समुदाय के मध्य अभिनन्दन किया गया जिसमे शास्त्री जी को पुष्प मालाओं से सुशोभित कर १ ऊनी शाल अभिनन्दन पत्र तथा कुछ द्रव्य भेंट किया गया इस अवसर पर बांदा आर्यसमाज की स्मारिका का विमोचन भी श्री शास्त्री जी के करकमलो द्वारा कराया गया। —रामेश्वरप्रसाद आर्य

आर्यमित्र हेतु अनुकरणीय दान

सहृदय आर्य बन्धु श्री प्रताप भाई जी देसाई कछोली वाया अमलसाड, जिला वलसाड गुजरात ने अपने पूज्य पिता की पुण्य स्मृति मे आर्यमित्र को दस हजार रुपये दान स्वरूप प्रदान किया है। इस धन का सूद आर्यमित्र के हित मे व्यय होगा।

आर्यमित्र उदार मना श्री प्रताप भाई जी के प्रति सादर आभार प्रकट करता है।

आचार्य रमेश चन्द्र एम ए — सम्पादक
विश्वम्भर दयाल गुप्त — मुद्रक प्रकाशक

वेद विचार गोष्ठी

अजमेर १८-११-१९८५। परोपकारिणी सभा के तत्वावधान मे ऋषि मेले के अवसर पर मध्याह्न सत्र मे चर्चा की गई। राम स्वरूप संयोजक गोष्ठी मे कहा कि १— ऋषिकृत वेद भाष्य उसी शैली मे पूरा हो। २— सब भाषाओं मे इसका अनुवाद हो। ३— आक्षेपो का निराकरण हो। ४— एक निर्धारित रूपरेखा अनुसार विभिन्न देशों के मूल वासियों में वैदिक धर्म के उपदेश की व्यवस्था हो। इन मुद्दो पर गम्भीर विचार करने के लिए लब्धप्रतिष्ठ वैज्ञानिक शिक्षा वेत्ता स्वामी सत्य प्रकाश की अध्यक्षता में गोष्ठी हुई।

क्रमश स्वामी ओमानन्द जी महराज [प्रधान,परोपकारिणी सभा] सत्यप्रिय शास्त्री (हिसार), प० आनन्द प्रिय जी [बडौदा], डा० भवानी लाल जी भारतीय [चण्डीगढ़], प्रो० शेरसिंह जी [नईदिल्ली] वैद्य पं० ब्रह्मानन्द जी (अजमेर), कु० सरोजिनी [प्राचार्या कन्या गुरुकुल चित्तौड], पं० अनन्तराम जी (ब्यावर), बजरंगलाल जी [डोडियाणा], धर्मवीर जी, (छातडी), बंशीलाल जी [देवली], शोहन लाल शारदा जी (शाहपुर-भीलवाडा), वैद्य लक्ष्मण सिंह जी, श्रीमती मिथिलेश (महिला आर्य समाज अजमेर), भजनोपदेशक बेगराज जी, भीखूराम वानप्रस्थी जी (शिवगंज), प्रदीप (सांचोर), वैद्य धर्म सिंह जी कोठारी ने विचार व्यक्त किये। शान्ति पाठ किरोडी मल जी गुप्त ने किया।

विश्वास है कि इन महत्व पूर्ण कार्यों के सम्पादन मे आर्य समाज सगठन का सतत सहयोग परोपकारिणी सभा को मिलता रहेगा।

रामस्वरूप गोष्ठी संयोजक

समाचार

—आर्य समाज असुरन रेलवे कालोनी गोरखपुर का ४२ वां वार्षिकोत्सव दिनाक ७ मार्च ८६ से १० मार्च ८६ तक मनाया जायगा। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान एवं संन्यासी पधार रहे हैं।

मन्त्री

— आर्य समाज विद्युत गृह कासिमपुर (अलीगढ़) का वार्षिकोत्सव दिनांक ३ से ५ मार्च १९८६ को सम्पन्न होगा। मन्त्री

उद्बोधन-गीत

(श्री धर्मवीर शास्त्री एम० ए०
बी फस्ट/५१ पश्चिम विहार नई दिल्ली ६३)

उठो आर्य वीरो, सुबह हो गई है।
खजाना नई चेतना का लुटाते
सन्देशा प्रभातागमन का सुनाते
विहग गा रहे हैं तुम्हें ही जगाते
सजग सबत गन्ध वह हो गई है।
सुनो, क्या मधुप मन्त्र-सा गा रहा है
कमल क्यों तुहिन-बिन्दु बरसा रहा है
जगो, जगाने का समय आ रहा है
कहानी कपट की अकह हो गई है।
अनाचार मन मे मनुज के बसा है
विषय-पंक मे कण्ठ तक वह फसा है
उडा व्योम में या धरा मे धसा है
प्रगति की प्रलय से सुलह हो गई है।
छिपा स्वार्थ-दानव लिये तीर-भाले
चले बस अगर देश को तोड डाले
वतन आर्यवीरो तुम्हारे हवाले
सम्भालो दशा अब असह हो गई है।
दयानन्द के साहसी तुम सिपाही
कहाँ जी सकोगे पिये विष बिना ही
है इतिहास वेता यही तो गवाही
कहा ये कहा अब जगह हो गई है।
तुम्हें आज कर्तव्य ने फिर पुकारा
चलो साथ मिलकर मिले भावधारा
मिले राष्ट्र के पोत को भी किनारा
मिटाओ अगर कुछ कलह हो गई है।
अतुल आत्म बल से भरे तुम युवा हो
दवा देश के दर्द की हो, दुआ हो
करो कुछ अजब जो न अब तक हुआ हो
मिलोगे तो समझो फतह हो गई है।

—आर्य समाज असुरन रेलवे कालोनी गोरखपुर के तत्वावधान में दिनाक ८ नव० ८५ को आर्यवीर दल शाखा रेलवे कालोनी का गठन किया गया। मत्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन पी ७९
मा० पौष १५
पौष कृष्ण ९, रविवार
५ जनवरी १९८६ ई०

ओ३म्
आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आगामी हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रचार एव सेवा शिविर

निश्चय किया गया है कि आगामी दिनाक १४ जनवरी से ९, १० अप्रैल ८६ तक लगने वाले हरिद्वार मे बारह वर्षीय कुम्भ मेले के ऐतिहासिक अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रचार एव सेवा शिविर लगाया जाय। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने जीवन मे कुम्भ के अवसरपर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसे भी १०५ वर्ष के लगभग हो चुके हैं। अत अन्धकार एवं रूढ़िवादिता का खण्डन करते हुए समुचित मार्ग दर्शन का प्रकार्य किया जायेगा विद्वानों के भाषण, उपदेश होंगे, सेवा शिविर द्वारा यात्रियों की स्वास्थ्य सेवा आदि की व्यवस्था रहेगी साथ ही विशेष स्नान पर्वो के दिन ऋषि लगर का भी आयोजन होगा वहीं शिविर लगाकर सभा के वरिष्ठ अधिकारी भी स्वय व्यवस्था की देखरेख करेंगे। समस्त प्रदेश की उपप्रतिनिधि सभाओ, आर्यसमाजो और आर्यजनो से अनुरोध है कि इस अवसर पर हमारी सहायता करें, अपने क्षेत्र मे धन और अन्न आदि का सग्रह करें, सभा को सूचना दे और सुविधानुसार उनका सग्रहीत अन्न हरिद्वार भिजवाने का प्रयास किया जाय। सबके सम्मिलित सहयोग से ही हमारे उद्देश्य सम्पन्न हो सकते हैं तदर्थ सबका सहयोग अपेक्षित है और इस मे अविलम्ब कार्य प्रारम्भ कर दिया जाय।

इन्द्रराज	कृष्ण बलदेव महाना	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

प्रयाग माघ मेला एवं वेद प्रचार

आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान मे १४ जनवरी १९८६ से १३ फरवरी १९८६ वसन्त तक माघ मेलाक्षेत्र मे बड़े धूम धाम से वेद प्रचार होगा—जिसमे धर्म प्रचार के साथ-साथ भूले भटकों का मार्ग दर्शन प्राथमिक चिकित्सा नि शुल्क औषधि वितरण नि शुल्क वैदिक साहित्य वितरण व्यायाम एवम आत्म विद्या का प्रदर्शन, अनेक विचार गोष्ठियो एवम सम्मेलनो के साथ-साथ विशेष पर्वों पर ऋषि लङ्गर का आयोजन रहेगा। जो दानी एवम् सहयोगकर्ता कुछ भी अपना सहयोग देना चाहते हैं—प्रधान/मन्त्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा डी०ए० वी० कालेज, इलाहाबाद ३ के पते पर सम्पर्क करें।

—मन्त्री

—आर्यसमाज देवबन्द का वार्षिक उत्सव बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। उत्सव मे राष्ट्र रक्षा, वेद, महिला, युवक तथा आर्य सम्मेलनों का आयोजन किया गया। तथा मास जनवरी ८६ मे आर्य समाज देवबन्द मे आर्य वीर दल शिविर का आयोजन रखा गया है।

—विश्वम्भर देव शास्त्री संयोजक आर्यसमाज देवबन्द

हिन्दी दिवस सम्पन्न

प्रान्त की निम्न आर्यसमाजों में दिनांक ८ दिसम्बर १९८५ को हिन्दी दिवस मनाया गया जिसमें सर्वसम्मति से उर्दू को द्वितीय राज्य भाषा बनाने का विरोध किया गया तथा यह भी बताया गया कि संविधान मे उर्दू को द्वितीय राष्ट्र भाषा बनाने का कोई प्राविधान नहीं है तथा संसार के किसी भी देश मे दो राष्ट्र भाषाओ की मान्यता नहीं दी गई है। उर्दू को राष्ट्रभाषा स्वीकार करने के लिये प्रान्त मे केवल ३ प्रतिशत व्यक्ति ही राष्ट्र विरोधी कुचक्र चल रहे हैं। साथ ही प्रो० वासुदेव सिंह जी जैसे निर्भीक वक्ता एव योग्य नेता को केवल इसी आधार पर मंत्रिमण्डल से वंचित रखा गया कि उन्होंने द्वितीय राज्यभाषा विरोध कर हिन्दी का समर्थन किया। समाजो के पारित प्रस्ताव मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश सरकार तथा प्रधान मन्त्री भारत सरकार को प्रेषित किये गये।

१—आर्यसमाज टूंडला (आगरा) २—आर्यसमाज आगरा नगर।
३—आर्यसमाज मेंहदावल (बस्ती), ४—आर्यसमाज खलीलाबाद (बस्ती)
५—आर्यसमाज महाराजगज (रायबरेली), ६-आर्य समाज सुरजननगर (मुरादाबाद), (७) आर्यसमाज लालगज (रायबरेली)।

आर्यसमाज मारीशस के नक्षत्र—

सर शिवसागर रामगुलाम शांति यज्ञ

अल्मोड़ा—आर्यसमाज मन्दिर ताड़ीखेत १८ दिसम्बर १९८५ को प० प्रेमदेव शर्मा की अध्यक्षता मे मारीशस के गवर्नर जनरल "सर शिवसागर रामगुलाम शांति यज्ञ" सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि १५ दिसम्बर को उनके निधन से मानव धर्म प्रचारक आर्यसमाज ने अपना शुभचिन्तक खो दिया है। —स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती कच्चाहारी

आर्यसमाजो में प्रसन्नता की लहर

अब एवम् पुनर्वास राज्य मन्त्री स्व० धर्मवीर के ज्येष्ठ सुपुत्र माननीय श्री शैलेन्द्र कुमार 'आर्य' के चायल क्षेत्र से विधायक चुने जाने एवम् जनता के कार्यो में पूर्ण निष्ठा तथा अभिरुचि के साथ-साथ आर्य समाज की अत्यन्त श्रद्धा तत्परता एवम् सक्रियता से सेवा करने पर प्रयाग की आर्यसमाजों मे प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है—जो स्वाभाविक है। समस्त आर्यसमाजें अपने प्रिय विधायक की प्रभु से दीर्घायु की प्रार्थना करती है। —मन्त्री जिला सभा

—आर्यसमाज कस्बा सुमेरपुर (हमीरपुर) का १६ वां वार्षिक उत्सव दिनांक ७, ८, ९ दिसम्बर ८५ तक बड़े उत्साह से मनाया गया जिसमे देश को अखण्डता बनाये रखने सम्बन्धित प्रभावशाली उपदेश हुए तथा दहेज, छुआछूत, मद्यपान, गोहत्या आदि जैसे कुकृत्यो से जनता को सावधान किया गया अच्छा प्रभाव रहा।

—रामेश्वरप्रसाद आर्य उपमन्त्री

स्वामिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीनआर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० न २२४१/५७ घोषणा पत्र स० ७ / २८-३-८५

वर्ष ८९] मा० पौष २२, पौष शुक्ल २, रविवार सवत् २०४२ वि०, दि०, १२ जनवरी १९८६ [अङ्क २

प्रार्थना

ओं यद्द्य सूर ऽ उदिते ऽ नागा मित्रो ऽ अर्यमा । सुवाति सविता भग ॥

—यजु ३३।२०

भावार्थ—प्रतिदिन सूर्य उदित होते ही जो दोष रहित होता हुआ मित्ररूप न्यायाधीश ऐश्वर्य वान् राजा है, वह ही ऐश्वर्य उत्पन्न करता है ।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	३ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

युवक प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी की स्पष्टोक्ति-

नैतिक पतन साम्प्रदायिकता और अवसरवादियों के प्रति आक्रोश

बम्बई में कांग्रेस की शताब्दी समारोह के अवसर पर कांग्रेस अध्यक्ष तथा भारत के प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने अपने दल के अवसरवादियों साम्प्रदायिक भावना से परिपूर्ण व्यक्तियो और नैतिक मूल्यों से पतित, भ्रष्ट कांग्रेसजनों के प्रति आक्रोश प्रकट किए। और ऐसे स्वार्थी तत्वों की भर्त्सना करते हुए उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि यदि ऐसे व्यक्ति स्वत कांग्रेस से बाहर नहीं जाते है तो उन्हें निकालना पड़ेगा यह उद्गार श्री राजीव के सही मूल्यांकन पर आधारित हैं क्योंकि इस प्रकार के तत्व अकेले कांग्रेस में ही नहीं सभी दलों और सस्थाओं मे सक्रिय हैं तथा सिद्धान्त रहित चाटुकार और अवसरवादी सब कहीं उज्वल छवि को धूमिल कर रहे हैं । पता नहीं राजीव जी की स्पष्टोक्ति कांग्रेस जनों ने सुनी या नहीं क्योंकि जिस समय वह अपना भाषण दे रहे थे स्टेडियम के ध्वनिवर्द्धक यन्त्र फेल हो गये थे और स्टेडियम के छ हारों पर लाखों व्यक्तियों का धक्का मुक्का एव कोलाहल हो रहा था तथा पुलिस के बेंत चल रहे थे ।

श्री राजीव के उद्गार अकेले किसी एक दल के व्यक्तियों के लिए नहीं । इसी आधार पर समस्त राजनैतिक दलों को और सार्वजनिक सस्थाओं को यहां तक कि आर्यसमाज के सङ्गठन को भी अपने अन्दर घुसे हुए ऐसे स्वार्थी तत्वों का जो छवि को धूमिल और कलंकित कर रहे हैं निष्कासन करना आवश्यक है। 'आर्यमित्र' अपेक्षा करता है कि युवा प्रधान मन्त्री का सङ्केत सब ध्यान से सुनेंगे और राजनैतिक दलों तथा सामाजिक सङ्गठनों और समाजसेवी संस्थाओं में शुद्धिकरण प्रारम्भ होगा ।

श्री पं०·बिहारीलाल जी शास्त्री दिवंगत

—आर्यजगत् का उद्भट विद्वान्, तार्किक कुशल वक्ता हमारे बीच से चला गया—

—आर्यसमाज मे प्राचीन शास्त्रार्थाचार्यों का अध्याय समाप्त

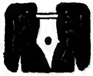


स्व० श्री प बिहारीलालजी शास्त्री

अत्यन्त खेद के साथ समाचार अंकित है कि बरेली निवासी श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री जो आर्यसमाज के धुरन्धर शास्त्रार्थ महारथी थे । लम्बी बीमारी के बाद शुक्रवार दिनांक ३ जनवरी १९८६ को मध्यान्होत्तर २ ३० बजे दिवगत हो गये उनकी आयु ९४ वर्ष की थी । श्री शास्त्री जी इधर कई वर्षों से एक न एक कष्टों से पीड़ित थे तथा अपने निवास स्थान बरेली में ही अपने परिवार मे रह रहे थे और वहीं उनका देहावसान हुआ । श्री बिहारीलाल जी आर्य शास्त्रों के उद्भट विद्वान् कुशल वक्ता और तर्कपूर्ण प्रणाली के अपने ढग के अद्वितीय विद्वान् और उपदेशक थे । उनके दिवंगत होने से उनके समकक्ष विद्वानो का अध्याय समाप्त हो गया ।

'आर्यमित्र' दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है । दुखद समाचार को सुनकर सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि आर्यजगत् का एक सूर्य अस्त हो गया । सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी जी ने शोकपूर्ण शब्दो में कहा कि आर्यजगत् मे शास्त्री जी सरीखा कोई दूसरा विद्वान् नहीं है साथ ही अन्य अधिकारियों ने भी शोक प्रकट किया और सभा कार्यालय द्वारा दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई ।

ओ३म् आर्य मित्र



सम्पादकीय

लखनऊ-रविवार, , १२ जनवरी १९८६, दयानन्दाब्द १६१
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६

प्रफुल्ल कुमार महन्त साधुवाद

भारत के सुदूर पूर्वी प्रदेश असम मे विधान सभा तथा लोक सभा के निर्वाचन मे और असम गणपरिषद जो संघर्ष तो विगत सात वर्षों से कर रही थी परन्तु संगठित राजनैतिक दल के रूप मे केवल तीन मास पूर्व उदित हुई ने पूर्ण सफलता और बहुमत प्राप्त किया तथा उसके बत्तीस वर्षीय नवयुवक नेता जो गौहाटी विश्वविद्यालय के एम० एल० एम० के तृतीय वर्ष के छात्र भी हैं ने मुख्यमन्त्री के रूपमे शपथ ग्रहण किया। विधान सभा के १२५ सीटो मे से असम गणपरिषद ने ६४ पर सफलता प्राप्त की लोक सभा की १४ सीटों मे से ७ पर भी वह सफल रही। कांग्रेस जो वर्षोंसे वहा सत्ता पर थी और १९८३ के निर्वाचन मे पुलिस और सेना के सहारे सत्ता पर बैठायी गई उसे केवल पच्चीस सीटें प्राप्त हुई सात तो ऐसे जिले हैं जिनमे कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली इस पराभव का कारण है कि आसाम की जो सही एवं ज्वलन्त समस्या थी उससे केन्द्रीय कांग्रेस सरकार से लेकर आसामकी प्रांतीय कांग्रेस सरकार तक ने अपनी आंखें बन्द की और वहाँ की घुसपैठ करने वाली मुस्लिम जनता की चाटुकारिता मे लगी रही।

असम भारत वर्ष मे एक ऐसा राज्य हैं जहाँ इस्लामी शासन कभी भी कायम नहीं हो सका। दिल्ली के मुगलो को भी वहा पहुचना दूभर रहा। वहीं अगस्त सन् १९४७ के बाद जब देश का विभाजन हुआ और पूर्वीपाकिस्तान (बंगलादेश) का उदय हुआ। अत मुसलमानो ने योजना बनाई की आसाम को यदि मुस्लिम बाहुल्य बना दिया जाय तो पूर्वी पाकिस्तान बडा शक्तिशाली हो जायेगा इस योजना के तहत असम भारत से अलग हो जायें। बगला देशसे सहस्त्रो की संख्या मे मुसलमानो ने अवैध रूप से असम मे प्रवेश किया यहा तक कि लगभग ढाई करोड के आबादी वाले देश मे एक करोड के लगभग बंगाली भाषी मुसलमान पहुच गये और इनके अवैध प्रवेश मे उन कांग्रेसी मुसलमान मुख्य मन्त्रियों ने छिपे रूपसे सहायता पहुचाई। जहा एक ओर भय था कि आसाम की सरल सहज भावनामयी शक्ति उपासिका संस्कृत को ठेस पहुचती असम भाषा का व्यवहारिक रूप नष्ट होता वहीं आगामी ३० वर्षों के अन्दर मुस्लिम बहुल होते ही असम भारतवर्ष से पृथक हो जाता। असम के नवयुवकोंने इस समस्या को समझा और संघर्ष किया। बाहर से आये हुए अवैध निवासियों को निकालने की आवाज उठाई परन्तु मुस्लिम चाटुकारिता का कम्बल ओढे हुए कांग्रेसी सरकारें सत्य को नहीं समझ सकीं या सत्य से आँख बन्द करती रहीं। वहा के नवयुवकों ने संघर्ष किया अपने रक्त से बलिदान से असम की मेदनी को सचित किया और अत मे श्री राजीव गांधी ने असम गणपरिषद मे समझौता किया और थोडे से परिवर्तन के बाद इस समझौते मे स्वीकार किया गया कि १९७१ के बाद जितने अवैध रूप से आसाम मे आये हैं वे वहां से निकाल दिए जाय और १९६७ से लेकर १९७१ तक जो अवैध रूप से आये हैं उन्हे १० वर्षो के लिए मतदानके अधिकार से वंचित किया जाय। इसके साथ ही वहा नव निर्वाचन की घोषणा की गई। स्वाभाविक था वहां के मुसलमान कांग्रेस के विरोध मे हुए और इतना ही नहीं भारतके भी कांग्रेसी मुसलमान तक बौखला उठे।

असम गणपरिषद के ६४ विधायको मे से प्राय ४८ अविवाहित हैं और २६ से लेकर ३६ वर्ष के आयु के बीच के हैं। दो महिला विधायकायें भी अविवाहित हैं तथा 'प्रफुल्ल कुमार महन्त' भृगु कुमार फूकन, दिनेश गोस्वामी और अन्य नवयुवक सराहना के पात्र हैं जिनका संघर्ष सफल रहा और उन्होने अपनी सरकार का गठन किया।

शासन की उपलब्धि तो सरल है परन्तु सत्ता मे रहकर प्रमाद न आने पावे इस दोष को समन करने की शक्ति भी उन्हें अर्जित करनी पड़ेगी और एकता के सूत्र मे बधना पडेगा जिसका मूलआधार है स्वार्थ के त्याग का पथ।'

आशा है कि 'महन्त' जो इस मूल मंत्र को अपने आचरण मे उतारेंगे और युवा शक्ति नवीन उष्ण रक्त के द्वारा यह गठित सरकार असम के समुत्थान और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रति जागरूक रहेंगे उन्हे प्रभु इसमे सफलता दें। राजीव समझौता केन्द्रीय सरकार के साथ है अत केन्द्रीय सरकार का भी दायित्व है कि १९७१ के बाद वहाँ अवैध रूप से प्रवेश किए हुए व्यक्तियों के निष्कासन मे राज्य को पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी क्योंकि किसी को नागरिकता प्रदान करना, नागरिकता से वंचित करना और राष्ट्र मे किसी भी दिशा से अवैध प्रवेश को रोकने का संवैधानिक अधिकार भी केन्द्रीय सरकार का है।

'आर्य मित्र' आशा करता है कि यह आर्य युवक समय के अनुसार आगे बढ़ेंगे और उनकी सफलता की कामना करते हैं। तथा विरोध कक्ष में बैठने वालों को भी प्रभु मानसिक प्रकाश दे कि वह आसाम की समुन्नति मे अपने को अर्पित करें और स विधान मे जो विरोध का पक्ष का दायित्व है उसका समुचित निर्वाह करें तथा आसाम मे वैध रूप से नागरिक अधिकार पावे जो मुसलमान हैं वे अपने को आसाम की संस्कृति सभ्यता और वहां कि भाषा मे समरस होने का प्रयास करें।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

सावधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कुछ निष्कासित व्यक्ति प्रदेश भर मे जगह-जगह आर्यजनों को भ्रमित कर रहे हैं कि रजिस्ट्रार फर्म—सोसाइटीज एण्ड चिट्स लखनऊ ने वर्तमान सभाधिकारियों को अमान्य घोषित कर दिया है और पुराने निष्कासित सभा प्रधान को स्वीकृत प्रदान कर दी है। यह समाचार सर्वथा षड्यन्त्रपूर्ण है और आर्य जनों को भ्रमित करने वा। हे। आर्य जन सावधान रहें। सभा के वर्तमान प्रधान प० इन्द्रराजजी मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी एवम् कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण बलदेव महाजन हैं तथा सभा के अपने कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ मे यथावत् कार्यरत है। आर्य जन सावधान रहें।

मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

मारीशस के राष्ट्रपिता—

डाक्टर सर शिवसागर रामगुलाम का महाप्रयाण

[लेखक पण्डित धर्मवीर घूटा, शास्त्री ओ०बी०ई० उपदेशक आर्य सभा मारीशस, बाक्वा, अध्यक्ष मारीशस हिन्दी लेखक संघ]

मारीशस के डा० सर शिवसागर जी का देहावसान रविवार दि० १५ दिसम्बर ८५को सायंकाल ४ ४५ पर सरकारी भवन रेजवी मे हुआ था। यह समाचार रेडियो द्वारा प्रसारित होते ही सारे टापू मे शोक छा गया था। कितने लोगो ने उस शाम भोजन भी नहीं प्राप्त किया था। मंगलवार १७ दिस० को उनका अन्तिम संस्कार प० तुलसी द्वारा पाम्प्ले मुस बाग में हुआ था। जहा आपका अन्तिम सस्कार किया गया था वहा पर सन् १९७० मे भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने एक पौधा रोपा था जो अब विशालरूप धारण कर रहा है। यह बाग एक ऐतिहासिक स्थल है।

डाक्टर सर शिवसागर रामगुलाम जी का जन्म १८ सितम्बर सन् १९०० मे फ्लाक जिले के बेलरिव कोठी मे हुआ था। जब आप ४-५ वर्ष के हुए तो पिता का देहान्त हो गया। आपके चाचा जी ने आपको पाला और पढ़ाया लिखाया। टापू के रोयल कालेज मे शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने लन्दन मे जा करके डाक्टरी का अध्ययन किया। यहाँ पर आप पत्रकार के हैसियत से भी काम करने लगे थे क्योंकि मारीशस मे आपके चाचा जी जो कोठी मे काम किया करते थे उनकी आमदनी मे एक प्रकार की कठिनाई पड चुकी थी इसलिए आपके खर्च के लिए पैसा भेजना कठिन हो गया था। लन्दन मे आपकी भेंट पं०नेहरू जी, महात्मा गांधी जी आदि से हुई थी उन्होने आपको प्रोत्साहन दिया था। सन् १९३५ मे डाक्टर जी मारीशस लौटे और यहाँ पर गरीबों की दुर्दशा देखी तो आपको बहुत दुख हुआ। इतना तक कि जिनके पास चिकित्सा के लिये पैसा नहीं रहता था आप नि शुल्क चिकित्सा करने के बाद दवा भी नि शुल्क दे दिया करते थे। आर्यसमाजी भाइयो ने आपका स्वागत विशाल पैमाने मे बाक्वा के आयन वैदिक पाठशाला मे किया था। तभी से आप आर्यसमाज के कार्यों मे भी हाथ बटाने लगे थे। जन जागरण कार्य मे भी आप अपना बहुमूल्य समय दिया करते थे।

आप गत २ वर्षों से मारीशस के गवर्नर जनरल नियुक्त हुए थे इसीलिए अपना निवास स्थान पोर्ट लुईस छोड़कर सरकारी भवन रेजवी मे आपको निवास करना पडता था। यहीं पर गत वर्ष आपकी धर्म पत्नी माता सुशीला का देहावसान हुआ था, तभी से आपका स्वास्थ्य गिरने लगा था।

भारत से हमारे स्वामी, सन्यासी गण जो भी यहा पर आते थे सब से आपका विशेष स्नेह होता था। भेंट होने पर आप सर्वप्रथम उनके सामने झुक जाया करते थे और कहते थे—'कोई भी कठिनाई हो तो जरूर जनाइयेगा।' आर्यसमाज के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी सर्वप्रथम यहा पर सन् १९१४ मे पधारे थे और यहा पर धार्मिक कार्य करके भारत लौट गये थे उसी प्रकार डा० मणिलाल जी का आगमन मारीशस मे सन् १९०७ मे हुआ था। आपको महात्मा गाधी जी ने यहा पर आ करके कार्य करने की मन्त्रणा दी थी।

सन् १९१० मे डाक्टर मणिलाल जी के सहयोग से मारीशस मे आर्यसमाज संस्था का नींव डाली गई थी और क्यूरीपे नगर मे समाज स्थापना की गई थी। डाक्टरजी ने यहा पर एक प्रेस चलाया सन्१९०९ मे। पत्र का नाम था 'हिन्दुस्तानी'। जब आप भारत लौटने लगे तो यह प्रेस आर्यसमाज संस्था को दान मे दे दिया था। अब इस प्रेस से काम नहीं लिया जाता है, पर यह प्रेस सभा के बराम्दे मे पडा हुआ है।

यहाँ पर पाठकों की जानकारी के लिये यह भी नोट करने योग्य बात है कि सन् १९०२ मे महात्मा गाधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटते समय कुछ दिनो के लिये मोरिशस मे रुक गये थे। यहाँ पर प्रवासी भारतीयों को आपने कहा था कि—'शिक्षा को अपनावें और एकता से रहें।' इसी बात को डा०शिवसागर रामगुलाम ने लेकर कार्य किया और उन्हें भारी सफलता मिली।

सन् १९५० मे डा० रामगुलाम जी ने डा० मणिलाल और स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी को आमन्त्रण दिया था मारीशस आने के लिए। दोनों महापुरुष आये थे और सारे टापू मे पुन जा करके भारतीयों को एकता मे रहने और धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति करने के लिए प्रेरणा दी थी। इन महात्माओ का एक भव्य स्वागत आर्य सभा में, पोर्ट लुईस मे किया गया था। इन लोगो के आगमन और बिदाई के मौकों पर हवाई अड्डे पर हजारों की सख्या मे भोरिशस की जनता ने जा करके अपनी श्रद्धा प्रकट की थी। डाक्टर रामगुलाम जी ने हवाई अड्डे पर इनके सामने सिर झुकाकर उनका स्वागत किया था। फूल मालायें भेंट की थीं। डाक्टर मणिलाल जी ने हमारे पूर्वजो की बहुत सेवा की थी और स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने कठिन काल मे ढाढस बंधाया था, तो इन दो महापुरुषो को हम कैसे भूल सकते थे। इसी प्रकार सन् १९६० मे स्वामी ध्रुवानन्द जी भी मारीशस प्रचारार्थ पधारे थे। डाक्टर जी ने इन्हे अपने पास एक रोज भोजन के लिये आमन्त्रण दिया था। मौके पर स्वामी जी ने उनसे यह आग्रह किया था कि सभी सरकारी पाठशालाओ मे हिन्दी पढाने की योजना तो बनाई गई है पर अब तक सब मे नहीं पढ़ाई जाती है, तभी से सभी प्राथमिक पाठशालाओं मे हिन्दी पढाई जाने लगी। डाक्टर रामगुलाम जी के काल ही से हिन्दी अध्यापकों का स्तर अंग्रेजी, फ्रेंच अध्यापकों के समान कर दिया गया। वेतन मे भी वृद्धि हो गई। अन्य सब हक बराबर कर दिये गये।

डाक्टर रामगुलाम जी हमेशा से जन जागरण कार्य मे भी अपना बहुमूल्य समय दिया करते थे। १२ मार्च सन् १९६८ को आपके तप, त्याग तथा परिश्रम से मारिशस टापू स्वतन्त्र हुआ था। उस तारीख को ८ ३० प्रात काल आर्य भवन पोर्ट लुईस मे यज्ञ किया गया था, आप भी विराजे थे और स्वतन्त्रता सघर्ष मे आर्यसमाज द्वारा दिये गये सहयोग के लिए आपने आर्यसमाजियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और भविष्य मे सतर्क रहकर स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिये मन्त्रणा दी थी। हर स्वतन्त्रता वर्ष गांठ के शुभावसरो पर पर आप प्रात काल ८ ३० आर्य सभा भवन राजधानी पोर्ट लुई मे मारीशस के प्रधान मन्त्री के हैसियत मे आते थे और यज्ञाहुतियां भी डालते थे। हमारी प्रार्थना सभा मे शामिल होकर आप हमें भी कार्य करने के लिए प्रेरित किया करते थे। (क्रमशः)

भारत में भाषा विवाद कब तक

जब पंजाब मे ४८/ प्रतिशत हिन्दुओ की जनसंख्या के बावजूद उनका पंजाब में 'हिन्दी द्वितीय राज्य भाषा' विषयक माग अधर मे फिर उत्तर प्रदेश के १५/ मुसलमानो के लिए द्वितीय राज्यभाषा का कैसा प्रश्न

बिहार के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री डा० जगन्नाथ मिश्रा ने उत्तर प्रदेश मे कुछ समय से शात पडे उर्दू भाषा के विवाद को फिर उकनाया है। उन्होंने पिछले सप्ताह उत्तर प्रदेश उर्दू राब्ता कमेटी एव आल इन्डिया मीर अकादमी के संयुक्त आयोजन मे 'मीर-ए-उर्दू' का अलकरण ग्रहण करते हुये, प्रधान मन्त्री से अपील की है कि वे उत्तर प्रदेश सरकार को निर्देश जारी करें, कि वह उर्दू को द्वितीय राज भाषा का दर्जा देने क लिये अपने कानून मे परिवर्तन करे। डा० मिश्रा ने उक्त आयोजन मे इस बात को बारम्बार दोहराया कि उन्होने बिहार राज्य मे उर्दू को द्वितीय राज भाषा का दर्जा देकर उसका मौलिक अधिकार दिलाया और श्रीमती इन्दिरा गाधी के निर्णय को लागू किया। यह दोनो ही बातें आधारहीन हैं। उर्दू का द्वितीय राज भाषा बनने का मौलिक अधिकार किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं किया जा सकता और न ही इन्दिरा गाधी ने कोई ऐसा निर्देश दिया था। जन सख्या, प्रशासनिक अथवा किसी भी अन्य दृष्टि से उत्तर प्रदेश म उर्दू को द्वितीय राजभाषा का स्थान नहीं दिया जा सकता। हाँ उर्दू भाषा के विकास और उत्थान के लिए सुविधायें उपलब्ध कराना, अलग बात हे-जिससे हमारा कोई मतभेद नहीं है।

डा० मिश्रा ने उत्तर प्रदेश मे उर्दू को द्वितीय राज भाषा बनाने की जो हिमायत की है, उससे शह पाकर उपरोक्त सस्थाओं तथा उत्तर प्रदेश उर्दू समन्वय समिति ने आंदोलन चलाने की भी घोषणा कर दी है, जिसके अन्तर्गत १५ जनवरी को उत्तर प्रदेश के सभी जिलो मे मौन जुलूस निकाले जायेंगे और जिला धिकारियो को ज्ञापन दिये जायेंगे। इस आन्दोलन के अगले चरण मे लखनऊ मे मुख्यमन्त्री के समक्ष एक लाख व्यक्तियो द्वारा प्रदर्शन की योजना बनी है, जिससे कानून व्यवस्था को खतरा उत्पन्न हो सकता है। पिछले कुछ मास से उत्तर भारत मे मुस्लिम साम्प्रदायिकता की लहर पनप रही हे। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा शाहबानो के पक्ष मे किये अत्यन्त मानवीय एव उचित फैसले को आधार बनाकर और विदेशी घुसपैठियो की नागरिकता स्थगित करने तथा घुसपैठ रोकने जैसे राष्ट्रीय हितों को सर्वथा ताक मे रखकर बेबुनियाद आन्दोलन चलाये जा रहे हैं। ऐसे विषाक्त वातावरण मे 'मुस्लिम साम्प्रदायिकता की एक और चिन्गारी छोड़कर डा० जगन्नाथ मिश्रा जैसे प्रबुद्ध व्यक्ति ने साम्प्रदायिक अभिव्यक्ति को सम्मान प्रदान करने का घृणित कार्य किया है। ज्ञातव्य ह कि बिहार को छोड कर देश के किसी भी अन्य प्रांत मे उर्दू को द्वितीय भाषा का स्थान नहीं मिला है।

उर्दू के हिमायतियो से मै एक प्रश्न पूछना चाहता हू? पजाब मे हिन्दुओ की जनसख्या ४८ प्रतिशत हे और उन्होने हिन्दी को द्वितीय भाषा बनाने की माग की है जो आज तक पूरी नही हुयी, जबकि हिन्दी राष्ट्रभाषा भी है। उत्तर प्रदेश मे मुसलमानो की जनसख्या लगभग १५ प्रतिशत है, पर उनके लिए सब ओर से आवाज उठ रही है। क्या पजाब मे हिन्दी के पक्ष मे भी डा० मिश्रा जैसे राज नेता अपनी आवाज उठा पायेंगे?

इसी से सम्बन्धित पहलू यह है कि मुस्लिम धर्मान्धता के सामने राष्ट्रीय हितो का बलिदान किया जा रहा है और राजनीतिक दलों के जाने माने नेता भी मुस्लिम स्वार्थों की राजनीति कर रहे हैं। लोक सभा उपचुनाव म करीमगंज से सैयद शहाबुद्दीन की जीत को इसी परिपेक्ष्य मे देखना चाहिये।

डा० आनन्द प्रकाश उपमन्त्री सभा

आर्य समाज सॉताक्रूज बम्बई मे

ऋषि दयानन्द के जीवन एव व्यक्तित्व पर शोध पूर्ण कथा—

प्रसिद्ध अनुसंधान विद्वान डा०भवानीलाल भारतीय की ऋषि दयानन्द जीवन एव व्यक्तित्व पर २४ नवम्बर से २७ नवम्बर तक रोचक एव शोधपूर्ण कथा आर्यसमाज सन्ताक्रूज बम्बई मे सम्पन्न हुई। स्मरणीय है कि डा० भरतीय स्वामी दयानन्द के जीवन के अधिकृत विद्वान् एव व्याख्याता हैं। उनके द्वारा ऋषिके जीवन का महा प्रयाण का प्रसंग जब वर्णित किया जाता है तो लोगो के नेत्र अश्रुसिक्त हो जाते है। देश मे वे सर्वत्र स्वामी दयानन्द पर शोध पूर्ण व्याख्यानो के लिये आमंत्रित किये जाते है। सम्वाददाता

शोक सवेदना

—आर्य समाज जौनपुर मे दिनाक ३०-१२-८५ को समाज के भू० पू० मन्त्री श्री चुन्नीलाल जी के असामयिक निधन तथा श्री पृथ्वी सिंह आजाद उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के निधन पर एक शोकसभा की गई जिसमे परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्माओ की चिरशांति और शोकाकुल परिवार के धैर्य हेतु प्रार्थना की गई। मन्त्री

आर्य समाज विकास नगर देहरादून
प्रधान श्री डा० नरदेव शर्मा
मन्त्री श्री हरीसिंह पंवार
कोषा० श्री श्याम पाल

आर्य मेला प्रचार समिति बेचूबीर मिरजापुर
प्रधान श्री लाल जी सिंह
मन्त्री श्री राजेन्द्र सिंह
कोषा० श्री तेजबली सिंह

उ.प्र. शासन का शिक्षा विभाग और आर्यसमाज

[श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद उ०प्र०]

माध्यमिक शिक्षा परिषद् इलाहाबाद की हाई स्कूल की पुस्तक 'सामाजिक विज्ञान भाग-१' देखने को मिली। इस पुस्तक के नव जागरण' स्तम्भ के अन्तर्गत पृष्ठ २५४ से 'स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज' पाठ प्रारम्भ होता है। इस पाठ मे दो भ्रान्तिया हैं और तीसरी भ्रांति पाठ के अन्त मे दी गई प्रश्नमाला मे है।

प्रदेश मे लाखो विद्यार्थियों को इस पुस्तक को प्रति वर्ष पढ़ना है। इसके पढ़ने से भारत के लाखों भावी नागरिकों के मन और मस्तिष्क मे प्रति वर्ष आर्यसमाज के विषय मे भ्रान्त चित्र उभरेगा। इस पाठ का तुरन्त सशोधन होना चाहिये।

भ्रान्ति का कारण यह है कि सम्बद्ध राजकीय अधिकारी ने आर्य समाज के किसी विद्वान् से सम्पर्क करने का प्रयत्न ही नहीं किया। किसी अनाधिकारी व्यक्ति से यह पाठ लिखा लिया गया है। यदि किसी आर्य विद्वान् से अधिकारी महोदय परिचित नहीं थे तो आर्यसमाज की शिरोमणि सभा से सम्पर्क करके उपयुक्त सामग्री पाठ के लिये उपलब्ध कर लेनी चाहिये थी।

उत्तरप्रदेश शासन के शिक्षा विभाग के उत्तरदायी अधिकारी का आर्यसमाज जैसी विश्व व्यापी सस्था के उच्च सगठनो से अपरिचित होना आश्चर्य का विषय है और यह भी तब जबकि उत्तर प्रदेश मे कम से कम १५-२० स्नातक और स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सैकड़ों हाई स्कूल और इन्टर कालिज और इनसे अधिक जूनियर, प्राइमरी, बेसिक आदि शालायें आर्यसमाज द्वारा सञ्चालित हैं। दर्जनो गुरुकुल रहे सो अलग। इसके अतिरिक्त यह तथ्य भी सर्व प्रकट है कि शिक्षा के क्षेत्र मे जितना बड़ा योगदान भारत मे आर्यसमाज का है, इतना अन्य किसी भी संगठन अथवा सस्था का नहीं।

प्रदेश की राजधानी लखनऊ नगर मे आर्यसमाज के प्रदेशीय शिरोमणि सगठन उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा' का कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग पर महात्मा नारायण स्वामी भवन मे स्थित है, जो प्रदेश की लगभग १८०० आर्यसमाजों की शिरोमणि सभा है। वहा से सम्पर्क करने का प्रयत्न नहीं किया गया। कारण यह है कि आर्यसमाज क्योंकि शिष्ट, सभ्य तथा सुसस्कृत जनो का सगठन है, तोड़-फोड़ नहीं कर सकता, किसी अधिकारी पर पथराव नहीं कर सकता और किसी सरकारी भवन, रेलो व बसो आदि मे आग नहीं लगा सकता अतएव प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा प्राय आर्यसमाज के विषय मे पाठ्य पुस्तको मे भ्रांतिपूर्ण बातें प्रकाशित की जाती तथा करायी जाती रहती हैं। इससे पहले भी इस प्रकार की हरकतें हुई हैं। यथा सम्भव शीघ्र ही उनके विषय में भी लिखूंगा।

प्रस्तुत पुस्तक के उपयुक्त पाठ मे निम्न भ्रान्तियां है—

१—आर्यसमाज का नियम है—'सब मनुष्यो को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालन मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहे। इसे इस प्रकार कर दिया गया है "सब मनुष्यों को सर्वथा सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालन करने मे व्यस्त रहना चाहिये।' (संख्या १० पृष्ठ ३५५)

प्रश्न उत्पन्न होता है कि जो सर्वथा सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने मे व्यस्त रहेगा, उसके वैयक्तिक जीवन और पारिवारिक आवश्यकताओ की पूर्त्ति और समस्याओं का हल कौन करेगा?

परतन्त्र रहना तो ठीक है क्योकि सार्वजनिक सर्वहितकारी नियम मे यदि व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य प्राप्त होगा तो असामाजिकता और अराजकता फैलेगी। व्यक्तिगत नियमो मे अर्थात् प्रत्येक हितकारी नियम मे स्वतन्त्रता की बात ठीक है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की पृथक्-पृथक् रुचि और परिस्थितियां होती हैं किन्तु व्यक्तिगत रुचियों और परिस्थितियों को समाज पर नहीं थोपा जा सकता अपितु उन्हे इसप्रकार से मोड़ देना होता है कि सामाजिक सर्व हितकारी नियमो का उल्लंघन न हो जाय। उदाहरण के लिये प्रत्येक व्यक्ति स्व गृह का कचरा बाहर निकालने का अधिकार रखता है, यह उसका व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य है, उसकी यह स्वतन्त्रता नहीं छीनी जा सकती। परन्तु उसे अपने घर के कचरे को सड़क पर फेंक देने का अधिकार नहीं है। ऐसा करने से सामाजिक सर्वहितकारी नियम भंग होता है और सड़क पर चलने वाले नागरिकों को कष्ट होता है तदर्थ उसे यह कचरा नगरपालिका द्वारा निर्मित कूड़ेदान मे अथवा जहा कहीं कूड़ा डालने का स्थान निश्चित हो, वहीं डालना चाहिये। इस प्रकार आर्यसमाज का यह नियम नितान्त बुद्धि पूर्वक निर्मित है। इसमे 'सर्वथा' शब्द और 'व्यस्त रहना' किया जोड़ कर न केवल नियम का स्वरूप ही परिवर्तित कर दिया गया है अपितु उसके अर्थ को भी नितान्त अव्यवहारिक, भ्रान्तियुक्त नियम बनाने वाले की अयोग्यता का परिचायक बनाकर इसके रचयिता और आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती को मूर्ख सिद्ध करने और भारत के भावी नागरिको की दृष्टि मे गिराने का कुत्सित प्रयास किया गया है अत यह परिवर्तनीय है।

२—'इनमे सबसे प्रसिद्ध गुरुकुल १९००मे हरिद्वार मे कागड़ी नामक स्थान पर लाला मुशीराम और स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित हुआ।' (आ०स० और शिक्षा पृष्ठ २५६)

इसे पढ़कर मै इस परिणाम पर पहुचा कि उत्तरप्रदेश मे सरकारी तन्त्र ऐसे लोगो के हाथ मे है, जिन्हें न तो किसी विषय की सूझ समझ और जानकारी है तथा न किसी विषय मे यह लोग जानकारी करने को तैयार हैं या फिर यह लोग जान बूझ कर षड्यन्त्रपूर्वक आर्यसमाज के विषय मे यह अनर्गल प्रचार लेखबद्ध रूप से पाठ्य पुस्तकों के द्वारा करने पर तुले हुए हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द और लाला मुशीराम दो व्यक्ति नहीं थे अपितु एक ही व्यक्ति के पृथक्-पृथक् व्यक्तित्वो को आश्रमानुसार दो पृथक्-पृथक् संज्ञायें हैं। गृहस्थ के लाला मुशीराम ही वानप्रस्थ मे महात्मा मुशीराम और सन्यास मे स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए। गुरुकुल की स्थापना सन् १९०० ईसवी मे नहीं अपितु १९०२ ईसवी मे कागड़ी ग्राम के निकट बिजनौर जनपद मे महात्मा मुशीराम जी के द्वारा हुई थी। इन्हीं महात्मा मुशीराम जी ने कुछ वर्ष के पश्चात् सन्यास आश्रम धारण किया, तब वह स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध होकर गुरुकुल का सञ्चालन करते रहे।

(शेष पृष्ठ १० पर)

पोप-पाल भारत में

[श्री विश्वम्भरदेव शास्त्री, देवबन्द]

कैथोलिक ईसाई जगत् के मूर्धन्य रोम के बड़े पादरी फरवरी १९८६ मे भारत सरकार के आमन्त्रण पर भारत आ रहे है। यह बड़े हर्ष की बात है कि जो पादरी स्वय पहले भारत आते थे वे अब सरकार के निमन्त्रण पर आ रहे हैं।

१८५७ के पश्चात् भी कैथोलिक पादरी अंग्रेजी शासनकाल से भारत मे आते रहे और अपना धर्म प्रचार करते रहे। पहले अंग्रेजो ने भारत के धन से इन पादरियों को सुविधा दी और पुन भारतीय माल से सम्पन्न हो जाने पर उस धन का नाना प्रकार से प्रयोग करके अनेको ईसाई प्रधान राज्य स्थान स्थान विशेष कर आसाम मे बने। आदिवासी जनजाति के लोगों मे इनका प्रचार चला, ईसाई बनते गये, राष्ट्रीयता कम होती गई। उस समय हम पराधीन थे स्वामी दयानन्द ने जाति को सावधान भी किया तो भी सौ वर्ष के पश्चात तथा स्वतन्त्रता के इतने वर्ष व्यतीत होने पर भी भारत सरकार के आमन्त्रण पर ईसाई लोग निरीह आदिवासियो, पिछड़े लोगो को कम नहीं एक लाख ईसाई बनाकर अपने धर्म गुरु को इस धर्म निरपेक्ष राज्य मे उपहार देंगे, क्या भारत के राजनीतिक नेता इस उपहार को उचित मानेंगे? सेवा भाव अलग है और स्वार्थ भाव पृथक है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले ने चुनौती दी है कि यदि उपहार की बात ठीक है तो उससे चौगुने ईसाइयो को हिन्दू बनाया जायेगा। राष्ट्रीय एकता के लिये अविलम्ब जुट जायें। क्या राष्ट्रीय एकता का ढोल पीटने वाले लोग इसको मान्यता देंगे?

पहले हम परतन्त्र थे अत सामाजिक उत्थान मे महापुरुष जुट गये। उन्हीं महा तपस्वियो के प्रयास से धीरे-धीरे राजनैतिक स्वतन्त्रता मिली परन्तु विदेशी शक्तियो ने भारत की उदारता का दुर्भावपूर्ण अर्थ लगा कर घोषणायें कीं जिनमे प्रथम घोषणा १९५३ मे अमेरिका से हुई— बिलियम फ्रेंक ग्राहम 'जो कूट राजनीति का जनक माना जाता है ने निर्णय की घड़ी नामक प्रोग्राम पर कहा था।"

'अमेरिका के लोगो यदि ससार मे कम्युनिज्म का सामना करना चाहते हो तो तुम्हे इसका मुकाबिला सबसे पहले भारत मे करना होगा क्योकि अमरीकी और रूसी ब्लाक के मध्य भारत के हाथ मे ही सन्तुलन शक्ति हैं। इसके लिये भारत मे पादरियों की एक सेना भेजनी होगी जिसका नारा होना चाहिये कि भारत मे बूढ़ा हिन्दू धर्म समाप्त हो और उसकी लाश पर ईसाई धर्म का झण्डा लहराये ताकि अप चर्चों के द्वारा अमरीका भारत के राजनीतिक ढाचे पर अपना नियन्त्रण ने कर सके।'

विचार करें कि स्वतन्त्रता से पूर्व ईसाइयो की संख्या क्या थी और स्वतन्त्रता के पश्चात् इतनी कहां से बढ़ गयी। यह सब लोभ के चक्कर मे डालकर, राजनैतिक षडयन्त्र रचकर विदेशी पूँजी के बल पर नहीं किया गया?

इस प्रजातन्त्र मे आदिवासियो तथा पिछड़े प्रदेशो रांची, हजारी बाग, छोटा नागपुर ईसाइयो की दया पर समर्पित कर दिये है। जहाँ एक लाख से अधिक को ईसाई बनाकर भेड़ो की भांति भेंट किया जा वेगा। भारत माता के पुत्रो-अब भी उठो-जागो-धर्म के नाम पर राष्ट्रघातक कार्यों के प्रति सजग हो जाओ। राष्ट की एकता के नाम पर इन मा के सपूत की रक्षा के लिये अपना तिजोरियो को खोल दो, विदेशी शक्तियो को दिखा दो कि अब तुम्हारे कुचक्र भारत भूमि को खण्डित नहीं कर सकेंगे।

पराधीनता की दासता ने जकड़ा भारत एक साथ सभी समस्याओं को नहीं सुलझा सकता था। सबसे बड़ी समस्या खाद्यान्न की थी, उस पर अपना अधिकार जमाकर परमुखापेक्षी होने मे तो बचा ही नहीं अपितु अन्न से अन्य देशो की सहायता करने मे लग गया है। उद्योग धन्धों की वृद्धि व यातायात भी कई गुना बढ़ा। इसका क्या फल निकला। यातायात के लिये तेल की बड़ी भारी आवश्यकता पड़ी, जिसकी पूर्ति खाड़ी देशो ने करनी प्रारम्भ कर दी। चमत्कार हुआ कि थोड़े ही वर्षों मे अरब देश धन सम्पन्न हो गये।

सोचिये जिनके काफिले धन के लालच से भारत में आते और धन लूटकर ले जाते थे। वे भी भारत के धन से सम्पन्न पेट छके होने पर क्या कर रहे है?

सुनिये अब इनकी भी घोषणा—

भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् योरोपवासी पादरियो की भीड़ जब भारत मे बढ़ने लगी। कुछ अलग अपने प्रभुत्वपूर्ण राज्य बना लिए तब जिस जाति ने पहले तलवार के बल पर भारत को अपना दास बनाना चाहा। उन्होंने तलवार की नीति छोड़ धन की नीति को हाथ मे लेकर १९७३ मे कुवेत ने घोषणा की–

१९७३ में पान इस्लामिक लीग की स्थापना हुई। इसका लक्ष्य था मोरक्को से लगाकर इण्डोनेशिया के समस्त देशो को इस्लाम धर्म के झण्डे के नीचे लाना। इसके लिये भारत को ही केन्द्र चुना गया।

कुवैत के समाचार मे लिखा है कि इस समय यदि प्रयत्न किया जाये तो भारत के समस्त हरिजनों को मुसलमान बनाकर यहां मुसलमानो की संख्या तुरन्त बीस करोड बनाई जा सकती है।"

किसी के विचार को तब जाना जाता है जब वह किसी काम को करता है। दक्षिण मे मीनाक्षीपुरम की घटना किससे छिपी है। सामूहिक रूप मे लोभ तथा आतङ्क के प्रभाव से बना लिया था सबको मुसलमान।

आर्यसमाज निरर्थक झगड़ा मोल नहीं लेता परन्तु जब राष्ट्रीयता पर प्रहार होगा तो जगायेगा अवश्य। अपनी उदारता का दुरुपयोग अब भारत सहन नहीं करेगा।

इस्लामी देशो मे दूसरे धर्म को मानने वालो को दूसरी श्रेणी का नागरिक माना जाता है जिनको मताधिकार भी प्राप्त नहीं है।

भारत की उदारता मताधिकार ही नहीं अपितु अल्पसंख्यक के नाते अनेको सुविधायें दे रखी है। इस पर भी कट्टर मुल्लापन की नीति, शरीयत, नारी अधिकार हनन आदि के लिये कटिबद्ध हो रहे है। जहाँ शरीयत के नियमों का पालन है वहीं उसके दण्ड विधान को भी क्यो नहीं स्वीकार करते तब जाने कि सच्चे धर्म पालक है।

राष्ट्र पुत्रो सावधान हो जाओ, अपनी भूमि की एकता के लिये।

एक भाषा, एक राष्ट्र, एक भाव की भावना से राष्ट्र बचेगा। पाकिस्तान एटम बम बना रहा है, अमेरिका के बल पर।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि आप इसराईल से मित्रता करें, वह भारत की मित्रता स्वीकार कर तथा पाक के बम निर्माण क्षेत्रो को ध्वस्त कर देगा।

'शठे शाठ्यं समाचरेत्' चाणक्य नीति का सदुपयोग का समय आ गया है।

महर्षि दयानन्द पर बनने वाली फिल्म का विरोध क्यों ?

(श्री यशपालजी आर्य 'आर्यवस्तु भंडार' ४६ डिस्पेन्सरी रोड, देहरादून)

(गताङ्क से आगे)

इस प्रकार की दलील दी जाय तो क्या कल यह नहीं कहा जायगा कि १८७५ मे आर्य समाज की स्थापना और उसके प्रचार के सौ वर्षो मे जहां भारत सरकार को शराब से कुल आमदनी १८८१ मे ढाई २॥ करोड़ रुपये से कम थी वहा १९८५ मे एक एक नगर की आमदनी १०-१० करोड़ रुपये से ऊपर चली गई है। १८७५ मे दहेज का एक मामला भूल से सुनाई देता था—आज सारे देश मे दहेज से भूकम्प आया पड़ा है।

क्या आर्य समाज शराब और दहेज लेने का प्रचार करता हे ?

बडे जोर से कहा जा रहा है कि सिनेमा से किसी ने अच्छाइयां नहीं ली हैं केवल बुराइया ही ग्रहण की है। देखे को अनदेखा करने का क्या इलाज है। जब यह कहा जाता है कि लोग सिनेमा से बुराइया ही ग्रहण करते हैं तो इसका अर्थ ही यह है कि गन्दी फिल्मे बन रही है। यदि अच्छी फिल्मे बनतीं तो लोग अच्छाइयां ग्रहण करते जितनी अच्छी वाली फिल्मो मे आई हैं उसे एक दो ने नहीं सारे देश ने ग्रहण किया है—स्वीकार किया है। हिन्दी को आज सारा देश समझता है—काश्मीर से रामेश्वरम तक—यदि इसके लिये किसी को श्रेय देना हो तो सिनेमा के योगदान को कैसे भुलाया जायगा। नमस्ते का प्रचार हमने किया है—लेकिन नमस्ते को देश के एक कोने से दूसरे कोने तक और देश से बाहर भी पहुचाने मे सिनेमा का योगदान सब विदित है। महर्षि ने स्वयंवर विवाह की बात सत्यार्थ प्रकाश मे लिखी थी—उसे घर-घर मे चरचा का विषय सिनेमा ने बनाया है।

हम मानते हैं बच्चे सिनेमा के गन्दे गाने भी गाते है। पर जब फिल्म मे गन्दे गीत होंगे तो बच्चो पर गन्दे संस्कार पडेगे ही अच्छी फिल्म हो—गीत हो तो वे भी गाये जायेंगे। आर्य समाज के मंच से अधिकाश गीत सिनेमा की तरजो पर बने गाये जाते हैं। तरज उनकी शब्द हमारे। देश भक्ति के बीसियो फिल्मी गीत घर-घर बच्चे गाते है।

कहा जा रहा है दयानन्द सौ वर्ष से अपने पैर पर खडा है उसे 'सिनेमा की बैसाखियो की जरूरत नहीं है। हम कब कहते हैं दयानन्द को बैसाखियों की जरूरत है। दयानन्द को नहीं—हमको बैसाखियों की जरूरत है एक साधारण भारतीय को जरूरत है बैसाखियो की-उसे बैसाखियों का सहारा चाहिये कि वह दयानन्द तक पहुच सके। कही गई बात का असर होता है—परदेखे का कही अधिक असर होता है।

क्या आर्य समाज के उपदेशक—महात्मा या ऋषि राज स्वयं अपने उपदेशो मे कथायें कहानिया और उदाहरण देकर श्रोताओ की ग्रहण क्षमता नहीं बढाते हैं उन्हीं को यदि रंग-मंच पर उतारने की बात कहो जाय—तो सिद्धान्त हानि कैसे हो जायेगी ? यदि श्रव्य काव्य को दृश्य काव्य बना दिया जाय तो प्रभाव बढ़ेगा ही घटेगा तो नहीं।

रही ये बात कि गुरु नानक देव पर फिल्म नहीं बनी-ईसा पर नहीं बनी हजरत मुहम्मद साहब पर नहीं बनी। नहीं बनी होगी। सैकड़ों पर बनी हैं—बन रहे हुए है। न भी बनती तो हमारा प्रश्न ये हैं कि हमारे लिए किसी की नकल करना जरूरी है ? वहा तो मसजिद मे गाना बजाना हराम है हजरत की फोटो बनाना हराम हे क्या आर्य समाज मन्दिरो मे अब सगीत का बहिष्कार किया जायगा ? क्या दयानन्द के चित्र फाडे जायेगे। गुणदोष का विवेचन होना चाहिए हमारी प्रार्थना है हानि लाभ पर विचार करें।

सार्वदेशिक सभा की हैदराबाद की बैठक मे फिल्म बनाना सर्व-सम्मति से नहीं तय हुआ होगा। बहुमत से हुआ होगा। आखिर बुद्धि-जीवियो के सम्मत निर्णय (प्रजातन्त्र मे) सर्व सम्मति से ही तय हों बहुमत से नहीं—यह नियम कहा है ? हमने सार्वदेशिक सभा का ११३८ का निर्णय भी देखा है 'महर्षि दयानन्द का फिल्म बनने का विषय प्रस्तुत हुआ। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यह सभा फिल्म निर्माण के लिए कोई अनुमति देना आवश्यक नहीं समझती।' प्रस्ताव से स्पष्ट है फिल्म बनाने वाले के लिए अनुमति लेने की जरूरत नहीं है।

इस लेख के लिखने का हमारा यह उद्देश्य नहीं है कि महर्षि दयानन्द पर यदि फिल्म नहीं बनी तो आसमान टूट जायगा। या भूचाल आ जायगा। फिल्म बनने से यदि आर्य समाज मे आपस मे फूट पड जाय या अन्य हानिया हो तो हम नहीं चाहेगे। फिल्म बने। परन्तु एक बात हम साफ कर देना चाहते हैं कि फिल्म बनने मे कोई सैद्धान्तिक हानि नहीं है।

भगवान् देव जब फिल्म बनने लगे तो सिद्धान्त का प्रश्न आ खड़ा हो और जब भारत सरकार फिल्म बनाकर टी० वी० पर प्रदर्शित करें। तो सब उसे खुशी-खुशी देखें और भारत सरकार को बधाइयों के तार भेजे जाय। गुजरात सरकार की फिल्म दयानन्द पर बने और आर्य समाज मे खुशी की लहर दौड जाय। यह दो रंगी हम नहीं समझ सके ?

मै तो आपसे अपना रोना रोना चाहता हू—जब से टी० वी० का प्रचार बढ़ा है—सप्ताह मे कई-कई फिल्मे कई-कई सीरियल—दूसरे अनेक इसी प्रकार के प्रोग्राम टी० वी० पर आने लगे हैं—क्या आपके और मेरे बच्चे रविवार को प्रात टी० वी० प्रोग्राम छोड़कर आर्य समाज मन्दिर मे आते है ? क्या सायकाल को किसी (विद्वान सुवक्ता को सुनने के लिए कोई युवक फिल्म छोडकर आना चाहता है ? क्या साप्ताहिक सत्संगो--उत्सवो मे युवक युवतिया और बच्चो के चेहरे देखने को मिलते है ? कोई ऐसा आकर्षण पैदा करो -इनका चरित्र भी उन्नति हो और यह साफ सुथरी पनीरी दयानन्द की वाटिका मे लहलहाने लगे।

सभा कोषाध्यक्ष के पौत्र का शुभ नामकरण संस्कार

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण बलदेव महाना के पौत्र (सुपुत्र श्री राजेन्द्र महाना) का शुभ नाम करण संस्कार रविवार ५ जनवरी १९८६ को उनके निवास स्थान ९–डी शृंगार नगर लखनऊ मे वैदिक रीति से यज्ञोपरात सम्पन्न हुआ। नगर एव प्रदेश के वरिष्ठ आर्य नेता सम्भ्रात नागरिक एव व्यवसाय तथा सामाजिक क्षेत्र के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। महाना दम्पति एव उनके परिवार ने सबका भावपूर्ण आदर सत्कार किया तथा प्रसाद एवं सुस्वादु व्यञ्जनो से आगन्तुको का समादर हुआ। प्रभु नव जात शिशु को आयुष्य प्रदान करें, एवं महाना परिवार सम्पन्न वान् होकर इसी प्रकार आर्य जनो की सेवा भावना मे तत्पर रहे।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

सम्पादक के नाम पत्र–

पोप के आगमन पर धर्म परिवर्तन

प्रिय सम्पादक महोदय,

स्वभाव से धार्मिक और सहिष्णु होने के कारण, हिन्दू लोग सदा से अन्य धर्मों के अनुयायियों की धार्मिक भावनाओं की कद्र करते आये हैं, और कोई भी ऐसा कार्य करने से बचते हैं, जिनसे इन भावनाओं को ठेस पहुचे इसी स्वभाव के कारण, वे अन्य धर्मों की आलोचना करना भी उचित नहीं समझते।

हिन्दुओं के इसी पावन स्वभाव की भावना को राष्ट्रीय सघ ने भी स्वीकार किया है, अपने मानवाधिकारों की सूची मे धार्मिक स्वतन्त्रता तथा सहिष्णुता के सिद्धांत का समावेश करके। लेकिन, ईसाई मिशनरी इस सिद्धांत की व्याख्या अपने ढंग से ही करते हैं। उनकी दृष्टि में धार्मिक सहिष्णुता के अर्थ है, यह मानना कि अन्य सभी धर्म ईसाई धर्म से हीन है, और आदमी को मुक्ति ईसाई धर्म की शरण मे आने से ही मिल सकती है। उनके सोच के केन्द्रबिन्दु मे ईसाई धर्म के अलावा कोई और धर्म जैसे है ही नहीं।

उनके इस सोच की झलक हाल ही मे प्रकाशित क्रिश्चियन एनसाइक्लोपीडिया' मे मिल सकती है। इसे पढ़ने पर यह ज्ञात हो जाता है कि ईसाई मिशनरी विश्व के अज्ञानी और निर्धन लोगों को लोभ देकर या जबरन ईसाई बनाने के लिये कौन-कौन से हथकण्डे अपनाते हे, उनके लक्ष्य क्या हैं, और उन्हे समाप्त करने में वे किस सीमा तक सफल हो चुके हैं, आदि-आदि। दूसरी झलक हमे स्वय अपने देश के केरल राज्य के होसदुर्ग तालुका के मोविकई गांव मे ही देखने को मिल सकती है। यहाँ कन्हनगढ़ के पुलिस सब-इन्सपेक्टर केराकरेट थामस साहब इस फिराक मे हैं कि आस-पास के इलाकों मे रहने वाले निर्धन और अज्ञानी हिन्दुओ को नौकरियों, आवास आदि का लोभ दिखा कर या डरा-धमका कर, ईसाई बना लिया जाये, तथा पोप के भारत-आगमन के शुभावसर पर, उन्हे उपहार के तौर पर पोप साहब को भेंट किया जा सके। जब स्थानीय अधिकारियो ने इन हिन्दुओ की इस फरियाद पर कोई ध्यान नहीं दिया कि उन्हें पुलिस सब-इन्सपेक्टर की ज्यादतियों से बचाया जाये, तो वे अब मुख्य मन्त्री श्री करुणाकरण की शरण में गये है। हम आशा करते हैं कि एक हिन्दू तथा न्याय प्रिय मुख्य मन्त्री होने के कारण वे इस प्रार्थना पर सहानुभूति पूवक ध्यान देकर धर्मोन्मादी थामस के अत्याचारो से प्रार्थी हिन्दुओं की सुरक्षा की तत्काल व्यवस्था करेंगे।

धर्म स्वातन्त्र समर्थन समिति की ओर से'

सदाजीवत लाल

सदाजीवत लाल चन्दूलाल

मानद् महामन्त्री

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य समाजों के माननीय प्रधान व मन्त्री जी से आर्यमित्र के माध्यम से अनुरोध किया जा चुका है कि अपनी समाज के निर्वाचन को जिला सभा के माननीय प्रधान या मन्त्री से या आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मानित सदस्य से प्रमाणित करा कर भेजें तभी हम निर्वाचन की सूचना आर्य मित्र मे प्रकाशित कर सकेंगे।

सम्पादक

आदर्श विवाह सम्पन्न

इन्दौर नगर के सुप्रसिद्ध उद्योग पति श्री आयुष्मान अनिल जी अग्रवाल का शुभ विवाह सस्कार आयुष्मति मजू जी के साथ मार्ग शीर्ष सुदी ३ शनिवार १४ दिसम्बर १९८५ को वेद पथिक पं० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी ने सम्पन्न कराया। श्री अनिल जी अग्रवाल ने सवा रुपया और एक नारियल तिलक मे स्वीकार करके दहेज रहित विवाह संस्कार कराया।

श्री पूज्यनीय माता इन्दिरा देवी जी अग्रवाल ने वेद प्रचार के लिये पं० धर्मवीर जी को एक हजार रुपया भेंट किया तथा ५००) दक्षिणा पांच पात्र, कबल, धोती तौलिया भी वेद पथिक जी को भेंट किया गया।

संवाददाता

वृहद् यज्ञ एव विविध सम्मेलन

ईश्वर-कृपासे २५, २६, २७ अप्रैल १९८६ (शुक्रवार, शनिवार, रविवार) को नित्य तीन दिवसीय वृहद् यज्ञ एव विविध सम्मेलनो का आयोजन आर्यसमाज वार्ड १७ गोविंद नगर कानपुर-६ मे सोल्लास विशाल स्तर पर किया जा रहा है। इसी अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन एवं आमंत्रित विद्वानो, महात्माओं का प्रीतिभोज भी होगा। स्मारिका हेतु विज्ञापनादि एव यज्ञ हेतु श्रद्धालु यजमानो का सहृष स्वागत है।

अत समस्त जनता से विनम्र निवेदन है कि इस पुण्य अवसर पर परिवार एवं इष्टमित्रो सहित पधार कर धर्म लाभ उठावें तथा इस शुभ कार्य मे अपने उदार हृदय एव तन, मन, धनसे सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

नोट-विस्तृत कार्यक्रम बाद मे प्रस्तुत किया जायगा।

मन्त्री

क्षितीश वेदालंकार की नवीनतम कृति

'स्टार्म-इन-पञ्जाब'

(अंग्रेजी)

ऐतिहासिक शोध-नवीनतम तथ्य तथा विस्तृत जानकारी से पूर्ण

(आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक आर्य मित्र लखनऊ)

श्री क्षितीश जी वेदालङ्कार ख्याति प्राप्त पत्र सम्पादक एवं इतिहास एवं राजनीति एवं सामयिक विषयों के विश्लेषक है। पञ्जाब की समस्या जो विगत छ वर्षों से सारे देश को आक्रान्त किये हैं—जहां कितने ही निरीह व्यक्तियों की हत्या हुई जो लाला जगत नारायण से लेकर हरिश्चन्द्र लोंगोवाल तक उल्लेखनीय है। खालिस्तान का पृथक ?? का नारा वहाँ लगा—भिण्डर वाले का प्रभाव कैसे बढ़ा और स्वर्ण-मन्दिर मे सेना के प्रवेश से लेकर प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की कुत्सित घटनाओ के बीज कहा और कैसे ज्ञात अज्ञात मे बोये गए और पनप उठे इन सब पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार किया गया है उस समय से जब नानक चन्द्र जी का जन्म पञ्जाब मे १४६९ मे कार्तिक पूर्णिमा को हुआ। पञ्जाब जो भारत का मुकुटमणि था जिसने सिकन्दर को भारत मे आगे बढ़ने से रोक दिया और पञ्च नदियो से सिञ्चित प्रदेश जहां कभी ऋग एवं साम की ऋचायें गूंजी थीं कैसे राष्ट्र विरोध की काली आंधी से आक्रान्त हो उठा—इस समस्त प्रश्नो का विस्तार के साथ उत्तर हमे क्षितीश वेदालङ्कार की कृति मे ऐतिहासिक तथ्यो के साथ एवं प्रमाण सिद्ध दस्तावेजो के साथ मिलता है।

क्षितीश जी की प्रथम पुस्तक हिन्दी मे प्रकाशित हुई—'पञ्जाब तूफान के दौर से' जो प्रकाशन की अल्पावधि मे ही हाथों हाथ निकल गयी। उस पुस्तक की लोकप्रियता के कारण देश-विदेश से सुझाव दिया गया कि पुस्तक अंग्रेजी मे प्रकाशित की जाय जिससे ब्रिटेन और अमेरिका मे तथा अहिन्दी भाषी जनता भी पञ्जाब समस्या समझ सके। अंग्रेजी पुस्तक हिन्दी का अनुवाद ही नहीं है अपितु परिवर्धन के साथ है साथ ही एक दोष आर्य समाज के माथे दिया जाता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सिख-धर्म और गुरु के सत्यार्थ प्रकाश मे आलोचना की है जिससे हिन्दू-सिख दूरी बढ़ी-इसका भी इसमें उत्तर दिया गया है। समाधान है।

क्षितीश जी ने साहस के साथ स्पष्ट रूप से लिखा है कि—'यदि तीन जून सन् चौरासी को सैनिक अभियान स्वर्ण-मन्दिर पर न होता तो चार जून को प्राय चार हजार बौद्धिक पढ़े-लिखे हिन्दुओ को भिण्डर वाले की योजना के अनुसार मौत के घाट उतार दिया जाता। पञ्जाब मे ४८ प्रतिशत हिन्दुओ में से पचीस प्रतिशत हरिजन हैं। योजना थी कि क्रमबद्ध रूपसे सारे पञ्जाबमे उच्च बौद्धिक हिन्दुओं का सामूहिक वध कर दिया जाय—जो बचेंगे वह भाग जायेंगे और हरिजन सिख हो जायेंगे। भारत सरकार जब कि कर्तव्य और विमूढ़ की स्थिति मे आ जायेगी उसी समय फीरोजपुर तथा गंगानगर की सीमा मे पाकिस्तान सैनिक भारत मे प्रवेश करेंगे—खालिस्तान की स्वर्ण मन्दिर से घोषणा की जायेगी और पाकिस्तान बांगला देश-चीन तथा ब्रिटेन भी खालिस्तान को मान्यता प्रदान कर देंगे।

उपरोक्त सनसनी खेज तथ्य पुस्तक मे वर्णित है विस्तार के साथ-जो सरकार के श्वेत पत्र मे होना चाहिये—उसका उल्लेख क्षितीश जी ने अपनी पुस्तक मे किया। कितना परिश्रम किया है तथ्य के आकलन मे और प्रकाशित करने मे। अत्युक्ति न होगी क्षितीश जी ने जान की बाजी लगा कर और खालिस्तान के हिट लिस्ट की परवाह न करके यह पुस्तक लिखी है। कतिपय उल्लेख देखिये —

अंग्रेज जनरल डायर जलियां वाला हत्या काड के अपराधी को स्वर्ण मन्दिर मे सम्मान दिया जाता है। सरोपा भेंट की जाती है।

रणजीत सिंह के खालसा राज्य का विध्वंसक लार्ड डलहौजी स्वर्ण मन्दिर मे जूते पहिने प्रवेश करता है तथा उसका दीप मालाओ से स्वागत होता है।

सिख—सभा के सदस्य ब्रिटिश हो सकते है हिन्दू नहीं।

१८५७ की भारतीय क्रांति के समय सिखों ने अंग्रेजो का साथ दिया और शहीदो को गद्दार बताया।

भारतीय संविधान और राष्ट्रीय ध्वज को जलाया गया। उसकी राख राष्ट्रपति को भेजी गयी।

अकाल तख्त के ग्रन्थियो से चार करोड़ का स्वर्ण छीना गया। भिण्डर वाले ने अपने समर्थको मे व्यय किया।

इसी प्रकार विश्लेषण के साथ पञ्जाब की विगत चार सौ वर्षों की राजनीति और उसमे सिख कैसे अंग्रेजो के इशारे पर हिन्दू विरोधी बने वर्णित है, हर घटना प्रमाणित है। इतिहास के सत्य से पूर्ण है। तथा कम से-कम में जो इतिहास का विद्यार्थी हूं कह सकता हूं पचासो तथ्य ऐसे है जिनका मुझे ज्ञान नहीं है।

क्षितीश जी आर्य समाज के एक सेनानी हैं। 'आर्य जगत' के सम्पादक हैं और एक इतिहास कार के रूप मे निर्भीकता के साथ अपनी रचनाओ द्वारा हमारे सामने आये हैं। अपने ही सेना के सेना पति को उसका एक सैनिक क्या साधुवाद दे फिर भी विनम्रता पूर्वक समस्त आर्य जनों की ओर से आर्य मित्र उनके प्रति आभारी है।

स्टार्म इन—पञ्जाब अंग्रेजी और पञ्जाब तूफान के दौर से हिन्दी पुस्तके प्रोत्साहन के योग्य हैं तथा प्रत्येक आर्य समाज मे उसकी सस्था मे इसका होना आवश्यक है श्री क्षितीश ने प्राणो को बाजी पर रख कर पुस्तकें लिखी है। अपने अल्प साधन से उन्हे प्रकाशित कराया है। आर्य जनो का कर्तव्य है कि उन्हे पूर्ण सहयोग प्रदान करें। यही उनके प्रति सक्रिय आभार प्रदर्शन होगा।

स्टार्म इन—पञ्जाब अंग्रेजी, पञ्जाब तूफान के दौर से हिन्दी—लेखक श्री क्षितीश जी वेदालङ्कार—'सुपर्णा' डी—८१—गुलमोहर पार्क नई दिल्ली—४९—सम्पर्क स्थल है। प्रकाशक पता—दी वर्ल्ड पबलीकेशन्स ८०७/९५—नेहरू प्लेस नई दिल्ली-१९।

—आर्यसमाज मैनपुरी का दिनांक २२-१२-८५ का यह साप्ताहिक सत्संग अपने भूतपूर्व प्रधान एव दयानन्द शिक्षा समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र एडवोकेट को दिनांक २०-१२-८५ को हृदयगति के अवरोध के कारण हुई आकस्मिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करता है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह मृतक की आत्मा को शान्ति दे। पार्थिव शरीर का सस्कार वैदिक रीत्यानुसार नगर के अनेको गण्यमान्य सज्जनो की उपस्थिति मे प्रात २१-१२-८५ को किया गया। —नरेन्द्रार्य

—महर्षि दयानन्द बाल विद्यालय अन्तर्गत आर्यसमाज हासीपुर (मीरजापुर) मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। श्री यज्ञदेव वानप्रस्थी द्वारा उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया। —मन्त्री

—श्री रामआसरे विश्वकर्मा ग्राम बघेडा जि० मीरजापुर के पिता श्री अमृतलाल के निधन पर अन्त्येष्टि-संस्कार वैदिक रीत्यनुसार श्री रामयज्ञसिंह एम० ए० के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। श्री विश्वकर्मा जी ने १०१) अपने पिता एव माता के स्मृति मे आर्यसमाज हांसीपुर के मन्दिर निर्माणार्थ दान दिया। आपको धन्यवाद दिया गया।

-यज्ञदेव वानप्रस्थी

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

आर्यमित्र के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ जनवरी १९८६ को समाप्त हो जाता है। वी पी भेजने मे ४-५० अधिक पोस्टेज लगते है इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी पी न भेजी जाय। जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) भेज दें अन्यथा उनके नाम वी पी भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी पी भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे है। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) कर दिया गया है।

३३६, ८१८, १८१५, १९२२, १९५७, २९६८, ५४३६, ६३२२, ६३२८, ६३४४, ६४८१, ८१८३, ८३८३, ८४८९, ८४९३, ८४९६, ८७००, ८७०९, ८७९१, ९०७५, ९०८६, ९३८३, ९३९०, ९४८४, ९७९१, १००६३, १००८५, ११११०१, ११११०, ११४४४, ११४६२, ११४६४, ११४६५, ११४७०, ११४७८, ११४८५, ११८१४,११८१७, १२०८१, १२०८४, १२०९०, १२०९२, १२०९४, १२०९५,१२०९६, १२५४९, १२५५०, १२५५१, १२५५५, १२५७०, १२६०४,१२८०८, १२८१४, १२८१५, १३०३३, १३०३५, १३०४५, १३०४६, १३०४७, १३३६४, १३३६५, १३३६६, १३३६७, १३३६८, १३३६९, १३३७०, १३३७१, १३३७२, १३३७३, १३३७४, १३३७५,१३३७६, १३३७७, १३३७८, १३३७९, १३३८०, १३३८१, १३३८२,१३३८३, १३३८४, १३३८५, १३३८६, १३३८७, १३३८८, १३३८९,१३३९०, १३३९१, १३३९२, १३३९३, १३३९४,१३३९५, १३३९६, १३३९७, १३३९८, १३३९९, १३४००, १३४०१, १३४०२, १३४०३,१३४०४, १३४०५, १३४०६, १३४०७, १३४०८, १३४०९, १३४१०,१३४११, १३४१२, १३४१३, १३४१४, १३४१५, १३४१६, १३४१७।

विनीत—

—व्यवस्थापक

शताब्दि महोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश का

१५ से १८ मई तक—१९८६ के मध्य

डी० ए० वी० कालेज प्राङ्गण—लखनऊ मे

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० को स्थापित हुए एक सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। सौ वर्षों मे सभा ने प्रदेश के आर्य समाजों को सङ्गठित करने और उन्हे दिशा निर्देशन का यथा साध्य प्रयास किया है। शताब्दि समारोह विशेष भव्यता के साथ मनाया जायेगा जिसमे आर्यजगत् के मूर्धन्य नेताओ के अतिरिक्त भारत के प्रधान मन्त्री अथवा राष्ट्रपति विशेष अतिथि होगे।

० समस्त आर्यसमाजे आर्य उपप्रतिनिधि सभायें, आर्य जन और उत्तर प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिको से अनुरोध है कि इसे सफल बनाने के लिये हमारे हाथो को सुदृढ करें अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सभा को भेजने का प्रयास करें।

इस अवसर पर सभा के १०० वर्ष का इतिहास प्रकाशित होगा। समस्त आर्यसमाजो की विवरण पत्रिका भी संलग्न होगी। अत समस्त आर्यसमाजें एक मास के अन्तर्गत अपने समाज का इतिहास अपने क्षेत्र के विगत १०० वर्षों के अन्तराल के विशेष आर्यजनो का परिचय और गतिविधियो का विवरण प्रस्तुत करे जिससे विवरण पत्रिका मे सम्मिलित किया जा सके। इस अधिवेशन की सफलता के पीछे प्रदेश की समस्त आर्यसमाजो का सम्वेत शक्ति होना आवश्यक है।

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

उत्तरप्रदेश शासन का शिक्षा विभाग और आर्यसमाज

(पृष्ठ ५ का शेष)

३—इस पाठ के अन्त मे दी हुई प्रश्नमाला मे प्रश्न है 'स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किस सम्प्रदाय की स्थापना की ?' यद्यपि तथ्य यह है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती सम्प्रदायवाद के नितान्त विरोधी थे। उन्होने तो आर्यसमाज की स्थापना की। जो एक सस्था है। इसका अर्थ यह है कि प्रदेश सरकार के सम्बद्ध अधिकारी को 'समाज' शब्द के अर्थ भी नहीं आते। समाज सभ्य लोगो से बने संगठन को कहते हैं। आर्यसमाज का एक नियम है 'ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।' जिस संस्था की स्थापना ही ससार के उपकार के लिये की गयी है और संसार के उपकार के साधन उसके नियम मे शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति जैसे सर्वमान्य सिद्धान्त बताये गये है, उसे सम्प्रदाय बताना या तो नितान्त बुद्धि हीनता का परिचायक है अथवा जान बूझ कर आर्यसमाज को विकृत रूप मे भावी भारतीय जनमानस मे बैठाना उद्देश्य है। इस पुस्तक मे तुरन्त सुधार होना चाहिये। मेरा अभिप्राय यह है कि उपर्युक्त तीनो स्थल एकदम बदले जाने चाहिये तथा—

४—आर्यसमाज के दस नियमो को उनके वास्तविक रूप मे छपवाया जाना चाहिये।

५—ऐसे उत्तरदायी पद पर बैठा हुआ व्यक्ति इस प्रकार का कार्य करने के कारण दण्डित किया जाना चाहिये। जिससे भविष्य मे अन्य किसी को इस प्रकार के कार्य करने का दुस्साहस न हो।

पं० रामप्रसाद विस्मिल बलिदान दिवस सम्पन्न

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी अमर बलिदानी प० राम प्रसादबिस्मिल का बलिदान दिवस मनाने बिस्मिल यज्ञशाला लालडिग्गी से बस द्वारा शोभायात्रा के रूप मे जिला कारागार पहुचा। यज्ञोपरांत जिला गोरखपुर कारागार मे माल्यार्पण, यज्ञ एव श्रद्धांजलि सभा के रूप मे मनाया गया जिसमे उपस्थित नर नारियो ने श्रद्धापूर्वक अपनी आहुति डाली।

जेल के भीतरी प्रागण मे (तनहाई कोठरी के पास) लोगो ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा की अध्यक्षता जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री पं० द्विजराज शर्मा पुरोहित ने की। यज्ञ के यजमान जिला कारागार के डिप्टी जेलर श्रीमान लाल बहादुर शाही जी थे। मन्त्री

बाबू हरिश्चन्द्र जी नहीं रहे !

आर्य समाज मैनपुरी के वयोवृद्ध नेता एवं फोजदारी के अग्रणी वकील श्रीयुत बाबू हरिश्चन्द्र जी एडवोकेट (राजा जी) का दिनांक २०-१२-८५ को प्रात स्नान करते समय हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। दि० २१-१२-८५ को उनका पार्थिव शरीर भारी जनसमूह के मध्य उनके एकमात्र सुपुत्र श्री सुरेशचन्द्र एडवोकेट द्वारा पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार अग्नि को समर्पित किया गया दि० २३-१२-८५ को शान्ति-यज्ञ सम्पन्न हुआ। राजा जी की असामयिक मृत्यु से आर्य समाज मैनपुरी को अपूरणीय क्षति हुई है।

कु० ध्रुव पाल सिंह 'अटल' निरीक्षक सभा

आवश्यक सूचना

पूर्वी उ० प्र० की आर्य समाजों से निवेदन है कि उनके जिले मे जितने दयानन्द बाल मन्दिर चल रहे हैं उनकी सूची श्री अवध विहारी खन्ना विश्वनाथ गली वाराणसी के पास अविलम्ब भेज दें ताकि दयानन्द बाल मन्दिरो की एकरूपता के सम्बन्ध मे कोई निर्णय लिया जा सके।

प्रयागदीन जायसवाल मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर
दल पू० उ० प्र०

सम्पादक के नाम पत्र—

भारत के लिए न्यूक्लीय बम का पर्याय नहीं है

अपनी हाल की विदेश-यात्राओं से प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी को भली भांति पता चल गया है कि अन्तर राष्ट्रीय राजनीति बडी निर्मम और कठोर है, और वास्तव में सत्ता और शक्ति के हाथों की कठपुतली मात्र है। भारत ऐसी निष्ठुर और स्वार्थी राजनीति के क्षेत्र मे अपने अस्तित्व तथा हितो की रक्षा एक सशक्त और समर्थ राष्ट्र बन कर ही कर सकता है। और यह शक्ति और सामर्थ्य उसे न्यूक्लीय बम का निर्माण करके ही प्राप्त हो सकती है, तेजी से बदलती हुई परिस्थितियो मे अब उसके लिये न्यूक्लीय बम का कोई पर्याय नहीं रहा है। जैसा कि 'टाइम्स आफ इन्डिया' (२० अक्तूबर, १९८५) ने अपने सम्पादकीय मे लिखा है, 'यह आशा करना भारत के लिये एक खामखयाली ही होगी कि महाशक्तियां पाकिस्तान को अणु-बम बनाने से रोक पायेंगी।'

इस प्रसग मे हमे प्रधान मन्त्री श्री गाधी द्वारा श्रेष्ठतम फ्रांसीसी दैनिक 'ला मांद' को दिये गये साक्षात्कार के ये अ श अनायास याद आ रहे हैं, यदि आवश्यकता हुई तो भारत सरकार गुप्त रूपसे न्यूक्लीय बम बनाने का निर्णय ले सकती है। पाकिस्तान भी अपना अणु-बम गुप्त रूप से ही बना रहा है। इस मामले मे गुप्तता अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पाकिस्तान द्वारा निर्माणाधीन बम को 'इस्लामी बम' की संज्ञा देकर प्रधान मन्त्री ने यह भी बता दिया है कि वह भारत ही, नहीं अन्य देशों के लिये भी, जिनमे इसरायल का ध्यान सबसे पहले आता है, खतरे का कारण बन सकता है। ये देश 'इस्लामी बम' के संकट का सामना किस प्रकार करेंगे, यह वे ही जाने, लेकिन भारत के पास इस सकट का सामना करने का एक ही उपाय है—स्वयं अपने बम का निर्माण करना।

जैसे-जैसे पाकिस्तान बम बनाने के निकट आता जा रहा है, वैसे-वैसे उसकी युद्धसलग्नता बढती जा रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि वह जानता है कि भारत के पास न न्यूक्लीय बम है, और ना ऐसा बम बनाने की उसकी योजना ही है। जिस दिन उसे पता चल जायेगा कि भारत ई ट का जवाब पत्थर से देने को तैयार है, उसे गीदडभमकी देने से पहले भी सोचना पडेगा। जब तक पाकिस्तान ने 'इस्लामी बम' बनाने के प्रयास आरम्भ नहीं किये थे, तब तक भारत मे न्यूक्लीय बम बनाने के बारे मे गहरा मतभेद था, लेकिन पाकिस्तानी बम के निर्माण की तैयारियो ने इस मतभेद को पूरी तरह समाप्त कर दिया है।

सदाजीवत लाल चन्दूलाल

—श्री प० शिवदयालु जी स्वतन्त्रता सेनानी की धर्मपत्नी श्रीमती रामकली देवी स्वतन्त्रता सेनानी का प्राणांत दिनाक २६ दिस० १९८५ को रात्रि ९ बजे हो गया। शांतियज्ञ दिनांक ५ जनवरी १९८५ को पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ।

अश्विनी कुमार मित्तल

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
मा० पौष २२
पौष शुक्ल २, रविवार
१२ जनवरी १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आगामी हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रचार एवं सेवा शिविर

निश्चय किया गया है कि आगामी दिनांक १४ जनवरी से ९, १० अप्रैल ८६ तक लगने वाले हरिद्वार में बारह वर्षीय कुम्भ मेले के ऐतिहासिक अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रचार एवं सेवा शिविर लगाया जाय। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने जीवन मे कुम्भ के अवसरपर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसे भी १०५ वर्ष के लगभग हो चुके हैं। अत अन्धकार एव रूढ़िवादिता का खण्डन करते हुए समुचित मार्ग दर्शन का प्रचार किया जायेगा। विद्वानो के भाषण, उपदेश होंगे, सेवा शिविर द्वारा यात्रियों की यथासाध्य सेवा आदि की व्यवस्था रहेगी साथ ही विशेष स्नान पर्वों के दिन ऋषि लंगर का भी आयोजन होगा वहाँ शिविर लगाकर सभा के वरिष्ठ अधिकारी भी स्वय व्यवस्था की देखरेख करगे। समस्त प्रदेश की उपप्रतिनिधि सभाओ, आर्यसमाजो और आर्यजनो से अनुरोध है कि इस अवसर पर हमारी सहायता करें, अपने क्षेत्र मे धन और अन्न आदि का सग्रह करें, सभा को सूचना दें और सुविधानुसार उनका सग्रहीत अन्न हरिद्वार भिजवाने का प्रयास किया जाय। सबके सम्मिलित सहयोग से ही हमारे उद्देश्य सम्पन्न हो सकते हैं तदर्थ सबका सहयोग अपेक्षित है और इस मे अविलम्ब कार्य प्रारम्भ कर दिया जाय।

इन्द्रराज	कृष्ण बलदेव महाना	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

नई शिक्षा नीति गुरुकुल प्रणाली पर आधारित हो

आर्यसमाज गोविन्द नगर के तत्वावधान मे आयोजित श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर केन्द्र सरकार से मांग की गई कि नई शिक्षा नीति प्राचीन गुरुकुल प्रणाली पर आधारित हो, जिसके अन्तर्गत धनी निर्धन विद्यार्थी एक साथ विद्याध्ययन करें। गुरुकुल प्रणाली के प्रणेता स्वामी श्रद्धानन्द का विचार था कि भारत गुरुकुल प्रणाली को अपनाकर ही वास्तविक प्रगति कर सकता है। सभा की अध्यक्षता प्रख्यात आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने की।

श्री आर्य ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज शहीदो की संस्था है, जिसने देश के स्वतन्त्रता सग्राम एव धर्म रक्षा हेतु अनेक बलिदानी शहीद दिये। सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिसमिल, लाला लाजपतराय, प० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, नाथूराम आदि अनेक शहीद आर्यसमाज के ही हैं। —मन्त्री

वर्ष १९८६ स्नान पर्वों की सूची

१४ जनवरी १९८६	मकर सक्रान्ति प्रथम स्नान पर्व	
१३ फरवरी '	बसन्त पचमी	'
८ मार्च "	महाशिवरात्रि	"
८ अप्रैल "	चैत्य अमावस्या	"
१० अप्रैल "	नवसंवत्सर	"
१३ अप्रैल "	बैशाखी	"
१४ अप्रैल "	मुख्य कुम्भ	"
१८ अप्रैल "	रामनवमी	"
२४ अप्रैल "	पूर्णिमा चन्द्रग्रहण	"

त्सव

—आर्यसमाज लार (देवरिया) का ५३ वाँ वार्षिकोत्सव दि० १९ जनवरी १९८६ से २१ जनवरी ८६ के मध्य सम्पन्न होगा जिसमे प्रमुख विद्वान् एव भजनोपदेशक सम्मिलित होगे। —मन्त्री

—आर्य स गरान (ओ३मनगर) मेरठ का वार्षिकोत्सव दिनांक ९ फरवरी से १२ फरवरी १९८६ के मध्य सम्पन्न होगा। —मन्त्री

–आर्यसमाज विद्युतगृह कासिमपुर (अलीगढ) का वार्षिकोत्सव दिनाक ३ मार्च से ५ मार्च १९८६ के मध्य सम्पन्न होगा। –मन्त्री

–आर्यसमाज ताजगज (आगरा) के तत्वावधान मे दिनाक ८ दिसम्बर ८५ को श्री मुन्नीलाल जी आर्य का पाणिग्रहण संस्कार श्री पं० दिवाकर जी शास्त्री तथा प० रामचन्द्र शास्त्री दिल्ली के पौरोहित्य मे पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ। तथा श्री रामकुमार जी आर्य एव श्रीमती कुमकुम रानी माहेश्वरी का पुनर्विवाह संस्कार धूमधाम से पं० सूदेव जी शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। –सेवतीलाल आर्य

—आर्यसमाज फीरोजाबाद ने उत्तर प्रदेश के पूर्व महाधिवक्ता श्री नरेशचन्द्र जी उपाध्याय, श्री प० शातिलाल जी शर्मा एवं आर्यसमाज फीरोजाबाद के उपाध्यक्ष श्री छोटेलाल जी गुप्त के युवा पुत्रश्री प्रकाश चन्द्र जी गुप्त के निधन पर क्षोभ प्रकट किया और परमपिता परमात्मा से उन सभी सज्जनो की आत्माओं की सद्गति एव दु खी परिवारों को सन्तोष प्रदान करने के लिये प्रार्थना की। —मन्त्री

–आर्यसमाज लक्ष्मण छपरा (बलिया) के तत्वावधान मे तथा श्री सुदर्शनसिह के संयोजकत्व मे द्वाबा क्षेत्र मे होने वाले सुविख्यात बाबा के मेले मे दिनांक १५ दिसम्बर ८५ से १७ दिसम्बर तक वैदिक धर्म का प्रचार समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ तथा साहित्य-विक्रय का कार्य हुआ। –मन्त्री

–श्रीमद्दयानन्द आर्य गुरुकुल नगला कटीला (एटा) का १८ वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। —प्रधानाचार्य

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्रीविशम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० न० १२४१/५७ — घोषणा पत्र स० ७ / २८-२-८५

वर्ष ८९] भा० पौष २९, पौष शुक्ल ९, रविवार सवत् २०४२ वि०, दि०, १९ जनवरी १९८६ [अङ्क ३

प्रार्थना

ओ आ सुते सिञ्चत श्रिय ˎ रोदस्योरभिश्रियम् । रसा दधीत वृषभम् । त प्रत्नथाय वेन ॥ —यजु ३३।२१

भावार्थ—हे आनन्द देने वाले विद्वानों ! तुम उत्पन्न जगत मे द्यावा-पृथिवी के शोभा रूप राष्ट्र को सुख से भरपूर करो तथा सुखवर्धक राजा को धारण करो ।

इस अक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए

वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	३ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

उत्तरप्रदेश के आर्यजनोंसे अपील

सभा की भावी योजनायें पूर्ण करने में उदार सहयोग प्रदान करें

'बिन्दु-बिन्दु निपातेन सम्पूरयति घटम्'

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने अपने अन्तराल के सौ वर्षों में समाज सेवा सांस्कृतिक समुत्थान और शिक्षा क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान किया है। पतझड़ एवं वसन्त दोनो के बीच से गुजर चुकी है और अब सौ वर्ष होने पर शताब्दी आयोजन को १८ मई १९८६ मे लखनऊ नगर मे आयोजित कर रही है उसका केवल एक ही उद्देश्य है कि विगत कार्यों का सहावलोकन और भविष्य मे नवीन योजनाओं का अधिग्रहण तथा नव शक्ति के साथ सेवा क्षेत्र मे अग्रणी होकर पद निक्षेप करना।

महर्षि दयानन्द के निर्वाण के तीन ही वर्ष के भीतर सभा का निर्माण हो गया था और ऋषिवर के आदर्श और आदेशों पर जो कुछ सभा ने कार्य किया उसके साक्षी प्रदेश के आर्य हैं। हमारे गुरुकुल विद्यालय और प्रदेश में व्याप्त १७००से ऊपर आर्यसमाजें हमारे कार्य के द्योतक हैं। अत पर्व का आयोजन नवीन शक्ति सचय के हेतु हम कर रहे हैं तथा समस्त आर्यजन हमारे इस पुनीत आयोजन को सफल करने में सहयोग प्रदान करें। आवश्यक और आशा है कि प्रदेश मे फैले हुए आर्यजनो मे स्वयं कर्त्तव्य बोध की भावना जाग्रत होगी और वह स्वयं ही यथाशक्ति धन सग्रह करके हमें सफलता की ओर पहुचाने में सक्रिय होंगे। हमारी बहुत सी भावी योजनायें हैं जिनपर हम प्रकाश डालेंगे और जिन्हे हम कार्य रूप में परिणित करेंगे जैसे प्रथम उच्चकोटि के साहित्य का प्रकाशन, मुद्रण प्रकाशन की सुव्यवस्था और अधिक से अधिक आर्ष ग्रन्थ सुसाहित्य आर्य जनता तक पहुचाना, आर्य जगत की फैली हुई शिक्षा सस्थाओं का नवीन रूप से सुधार करना उनमे बदलते हुए समाज और प्रदेश के परिवेश के अनुकूल परिवर्तन करना साथ ही सस्थाओं के माध्यम से ऐसी नवीन युवा पीढ़ी की संरचना जो आर्य सिद्धान्तो के प्रसारण में सहयोगी बनें। समाजसेवी होने के नाते कम से कम उत्तर प्रदेश के केन्द्र लखनऊ और प्रात के प्रत्येक अंचलों में स्वामी दयानन्द के नाम से अकित चिकित्सालयों की स्थापना यह हमारा शताब्दी के अवसर पर नवीन पग होगा। उपदेशक विद्यालय, अनाथ विधवा और निरीह जनों के लिये नवीन संरक्षण केन्द्रों की स्थापना और जो इस दिशा मे कार्यरत हैं उनका पुनरुद्धार। इसके अतिरिक्त समस्त भारतवर्ष और प्रदेश से जो विद्वान और आर्य जन उपस्थित होगे उनके सादर सुझावों का सादर पालन किया जायेगा और नवीन योजनायें भी सग्रहीत हो सकती हैं।

प्रदेश के आर्य जनों से, आर्यसमाज के अधिकारियों से विनम्र सप्रेम अनुरोध हे कि सभा हेतु धन सग्रह प्रारम्भ करें और उदार सहयोग से आर्य प्रतिनिधि सभा को आगामी शताब्दि उत्सव को एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक समारोह के रूप में सफलता प्रदान करें।

इन्द्रराज	कृष्णबलदेव महाना	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

ओ३म्
आर्य मित्र



सम्पादकीय

लखनऊ–रविवार , १९ जनवरी १९८६ दयानन्दाब्द १६१
सृष्टिसंवत १९७२९४९०८६

उदयति सूर्य : 'प्राच्याम्'

इतिहास के सुदूर अतीनकाल से पूर्व से पश्चिम की ओर विद्या और ज्ञान की किरणो का प्रसारण हुआ प्रकृति भी ऐसा ही चित्रित करती है जब ब्रह्माण्ड के प्रत्येक भूखण्ड सिंदूरी ऊषा की लालिमा के साथ अंशमाली की किरणे अन्धकार को चीरती हुई प्रकाश बिखेरती हैं। आर्यवर्त्त के ज्ञान की रश्मियां वैदिक सूर्योदय के साथ पश्चिम मे फैली इतिहास इसे सिद्ध कर रहा है परन्तु विगत चार शताब्दियो के अन्तगत पश्चिम से पूर्व की ओर जहां वैज्ञानिक ज्ञान और तकनीकी क्रिया कलापो का आगमन हुआ वहीं पूर्वीय देश भारतवर्ष–इण्डोनेशिया, मलेशिया सब धीरे-धीरे यूरोपीय जातियो के उपनिवेश बन गये और आज यद्यपि समय के परिवतन म इन पूर्वीय देशो को संघर्ष के बाद राजनैतिक स्वतन्त्रता तो है परन्तु पश्चिमी देशो ने विभाजन वैमनस्य और हीन भावना के जो दूषित बीज बोये थे वह पनप रहे हैं तथा ये प्राची के देश प्रतीची सभ्यता एवं संस्कृति के क्रीत दास बन गये है उदाहरण स्वरूप भारतवष को ही ले प्राय दो सौ वर्षा तक इगलैण्ड इस देश मे आंशिक और पूर्ण रूप से शासक रहा और जब यहा से उसकी राजनैतिक शक्ति अस्त होने लगा तो उसने भारत मे विभाजन के बीज बोये सबल राष्ट्र खण्डित हो गया पाकिस्तान और बांगला देश आर्यवर्त की पुण्य भूमि मे इस्लामी झण्डे के नीचे बन गये और आज हमारा सघर्ष उन्ही देशो से हो रहा है और इगलैण्ड तथा उसका सजातीय बन्धु अमेरिका इन दोनो देशो को पाकिस्तान और बागला देश को भारत के विरुद्ध उत्तेजित करने मे कोई कोर कसर नहीं रख रहा है यही स्थिति श्रीलंका की है जहा तामिल और सिंघली संघष है और उसी प्रकार बर्मा, इण्डोनेशिया, मलेशिया और वियतनाम भी आपस मे खण्डित हो रहे है और लड रहे है तथा सब का एक ही धारणा है कि विज्ञान कला-कौशल रहन-सहन वेश भूषा सब मे हम योरुपियन देशो से पीछे है और उसी लक्ष्य तक हमे पहुचना है यही एक विडम्बना है जिस पर गम्भीरता से विचार करना है आर्यवत को अपने स्वत महान ज्ञान के साथ अपना स्वतन्त्र मार्ग प्रशस्त करना है।

उदाहरण स्वरूप हम जापान को ले सकते है द्वितीय महायुद्ध म अमेरिका के हाईड्रोजन बम ने उसे नष्ट कर दिया था परन्तु बिना यूरोपीय सहायता के वह विज्ञान और तकनीक म आगे है खेद है कि किसी समय इन देशो से अर्थात् चीन जापान कोरिया एव वियतनाम से हमारे घनिष्ठ सम्बन्ध थे भारत के ही बौद्ध भिक्षुओ ने इन देशो मे धम एव सस्कृति का प्रचार किया और यह बौद्ध धम प्रधान देश है इण्डोनेशिया मलेशिया तो भारतीय इतिहास के स्वर्णिम युग मे वृहतर भारत के अन्तगत थे परन्तु योरुप के सम्पर्क के साथ ही भारत राजनैतिक दृष्टि मे जहां पराधीन हुआ वहीं बौद्धिक दृष्टि से पराभव को प्राप्त हुआ उसी पराभव के स्थिति मे कराहते हुए देश को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऊपर उठाने का प्रयास किया ऋषिवर का संदेश देश को जगा तो सका परन्तु उसे अपने पैरो पर गर्व के साथ खडे होने की स्थिति आज तक नहीं ला सका इस दिशा मे आर्य समाज को विचार करना चाहिये और अपने प्रचार एव प्रसार के साधनो को आधुनिक तकनीकी के साथ मेला करते हुये शक्ति सम्पन्न बनाना चाहिये।

भारत के प्रधान मन्त्री और शासन तन्त्र पर बैठे हुए व्यक्तियो से भी अनुरोध है कि वह जापान के वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग को अधिक से अधिक ग्रहीत करें और चूं कि जापान का हमारे यहा कोई राजनैतिक स्वार्थ नहीं है इसलिये उसका सहयोग अधिक भ्रात्र भावना मे परिपूर्ण रहेगा ब्रिटेन एव अमेरिका निरन्तर हमारी आतरिक विषयो मे हस्तक्षेप करते है और नवीन समस्यायें प्रस्तुत करते हैं अत आवश्यक है कि इस विषय पर गम्भीरता से विचार किया जाय और योरुप तक ही सीमित न रह कर हमारी वाहिनी वाहु अधिक स अधिक सम्पर्क के लिये प्राची देशों की ओर बढ़े।

आर्य-जन संकल्प लें

हरिद्वार कुम्भ मेले के अवसर पर सौ वर्ष पूव महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अकेले निर्भीकतापूर्वक पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी और अन्धविश्वास तथा रूढिवादिता का विरोध करते हुए वैदिक ज्ञान अग्नि को प्रज्वलित किया था।



महर्षि दयानन्द सरस्वती

आज स्वामी दयानन्द के सैकडो सेनानी एव सिपाही विश्व मे मौजद है सबका कर्त्तव्य है कि इस अवसर पर पूर्ण शक्ति के साथ रूढिवादिता और अन्धविश्वास को समूल नष्ट करने का सकल्प लें तथा सत्य का प्रकाश ससार मे प्रकाशित करें।

मुस्लिम मनोवृत्ति

(श्री डा० काशीनाथ शास्त्री एम० ए० बी० टी० साहित्यालंकार
विद्यावाचस्पति एच० एम० डी० एम० आयुर्वेद विशारद
आर्य निवास, राजेन्द्र वार्ड गोंदिया (महाराष्ट्र)

जब से सर्वोच्च न्यायालय द्वारा तलाक शुदा मुस्लिम महिला को निर्वाह भत्ता दिये जाने सम्बन्धी फैसला सुनाया गया है तब से सम्प्रदायवादी मुसलमानों मे खलबली मच गई है और वे बुरी तरह बौखला गये हैं। जिधर देखो उधर 'शरीयत बचाओ' के नारे लगाये जा रहे हैं और सर्वोच्च न्यायालय के उत्तम फंसले पर विरोध प्रकट किया जा रहा है। कुछ दिनों पूर्व बम्बई में होने वाले 'शरीयत बचाओ' सप्ताह का उद्घाटन करते हुए महाराष्ट्र मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मौलाना जियाउद्दीन बुखारी ने यह दावा किया कि भारत मे इस्लाम के प्रवेश के कारण ही सती प्रथा को रूढ़ि समाप्त हुई। मौलाना ने इस संदर्भ मे एक प्रश्न प्रस्तुतकर उत्तर भी स्वयं दे दिया कि 'अगर भारत मे इस्लाम का प्रवेश नहीं हुआ होता तो अपने पति के निधन के बाद श्रीमती इन्दिरा गांधी का क्या हुआ होता ' उन्हें भी सती हो जाना पड़ता।'

मौलाना का यह प्रमत्त प्रलाप ही हैं क्योंकि असलियत इसके बिल्कुल विपरीत है। असलियत यह है कि सती प्रथा की मजबूरन अनिवार्यता मुसलमानों के इस भूमि पर पैर पड़ते ही शुरू हुई। अगर मुसलमान न आते और अपना राज्य स्थापित करने तथा हिन्दुओं को तलवार के जोर से मुसलमान बनाने के लिये हिन्दुओं का भीषण संहार न करते तो सामूहिक रूप से जौहर या सती की प्रथा कभी न प्रचलित होती। चित्तौड़ की महारानी पद्मावती का सहस्रों राजपूतनियों के साथ सती हो जाना इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। जब पतिव्रता महारानी और क्षत्राणियों को अपनी इज्जत व जान बचाने की कोई आशा न रही तो उन्होंने विधर्मियों के हाथों मे पड़ने के बजाय सती हो जाना ही उत्तम समझा।

प्राचीन काल मे सती होना अनिवार्य न था। उदाहरणार्थ–महाराजा दशरथ की मृत्यु पर कौशिल्या, सुमित्रा और कैकेयी सती नहीं हुईं। इसी प्रकार महाभारत का इतना भीषण युद्ध हुआ कि उसमें १८ अक्षौहिणी सेनाओं का संहार हुआ, किन्तु उस समय भी विधवाओं ने जौहर नहीं किया या सती नहीं हुई अपवाद स्वरूप परिस्थिति वश या भावावेश में स्वेच्छा से कुछ स्त्रियां (मुसलमानों के आगमन से पूर्व) यदा-कदा सती हुई हों तो बात दूसरी है।

मौलाना ने भूतपूर्व प्रधान मन्त्री आदरणीया स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी पर भी बहुत ही अशोभनीय आक्षेप किया है। शायद मौलाना बुखारी साहब यह बताना चाहते हैं कि जिस तरह इस्लाम ने दीगर हिन्दू स्त्रियों को सती होने से बचाया उसी तरह उसने श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी बचाया अन्यथा उन्हें भी अपने पति—फिरोज गांधी के निधन पर सती हो जाना पड़ता। लेकिन जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है असलियत इसके बिल्कुल विपरीत है। अगर मुसलमानी कानून और मुसलमान स्त्रियों के प्रति इतने उदार व सहिष्णु होते तो एक मुस्लिम महिला शाह बानों को उसके पति ने उसे बुढ़ापे मे तलाक देकर उसके पांच बच्चों सहित घर से बाहर न निकाल दिया होता और

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्मृति में एक चल विजयोपहार चलाने की योजना

आर्य समाज मे बच्चों एव नवयुवकों को आकर्षित करने हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्मृति मे एक चल वैज्यन्ती चलाने का निर्णय लिया है। प्रतियोगिता मे शारीरिक एव बौद्धिक प्रदर्शन होगा।

प्रत्येक जिले के इच्छुक जिला समिति, आर्य वीर दल, मण्डल पति मन्त्री, अपनी स्वीकृति दिनांक १५ फरवरी १९८६ ई० तक भेजें। प्रतियोगिता का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी समारोह मे होगा।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

शुद्धि एवं विवाह

दि० ५।१।८६ को प्रात ९ बजे एक ईसाई युवती कु० मेग्दलीना जैसलर को आर्य समाज मन्दिर मेरठ शहर मे श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने शुद्धि करके वैदिक धर्म मे दीक्षित कर उसका नाम कु० नीलम रखा।

तत् पश्चात् उसका विवाह संस्कार डा० सुभाष चन्द्र जी के साथ वैदिक रीति से स्वय सभा प्रधान जी ने सम्पन्न करवाया। श्री मास्टर सुन्दर लाल जी एव श्रीमती शकुन्तला जी गोयल प्रधान स्त्री आर्यसमाज मेरठ शहर ने नवयुगल को आशिर्वाद दिया। सम्वाददाता

न सर्वोच्च न्यायालय, द्वारा उस तलाक शुदा महिला को निर्वाह–भत्ता दिये जाने सम्बन्धी फंसले पर मुसलमान इतना भड़क उठते। इसी तरह अभी कुछ ही दिनों पहिले केरल की एक मुस्लिम धार्मिक सस्था ने वहीं की एक जुनेजाबी नामक मुस्लिम महिला को जब कोड़े मारने की सजा सुनाई तो महिलाओ के प्रति हमदर्दी बताने वाला कोई भी मुसलमान उसे बचाने नहीं आया।

अत जिनके यहा पत्निया पतियों की खेती समझी जाती हो और मात्र भोग विलास का साधन हो वे अगर हिन्दू महिलाओ के प्रति उदारता बताने का दावा करें तो यह केवल सफेद झूठ है। पुन अगर मुसलमानो के आगमन ने हिन्दू स्त्रियो को सती होने से बचा लिया होता तो राजा राम मोहन राय जैसे सुधार वादी हिन्दू नेताओं के सहयोग से लार्ड विलियम बेंटिक को सन् १८२९ मे सती प्रथा को बंद करने के लिए कानून न बनाना पड़ता।

आशा है कि मुसलमान भाई इसे अन्यथा न समझेंगे और इस देश व हिन्दुओं के प्रति अपना अलगाव वादी दृष्टि कोण बदलेंगे क्योंकि हिन्दू और मुसलमान दोनो को मिल-जुल कर अब इसी देश मे रहना है।

आर्यजगत् के गौरव शास्त्रार्थ महारथी–

पं. बिहारीलाल शास्त्री दिवंगत

आदर्श शव यात्रा

पवित्र भागीरथी तट पर अन्त्येष्टि संस्कार

दिनाक ३-१-८६ मध्याह्न २ बजे लम्बी बीमारी के पश्चात् ९६ वर्ष की आयु मे पं० जी का स्वर्गवास अपने निवास स्थान रामपुर गार्डन, बरेली मे हो गया। यह समाचार नगर मे फैलते ही उनके अन्तिम दर्शनार्थ नर नारियों का तांता बंध गया।

दिनाक ४-१-८६ मध्याह्न उन की शव यात्रा की व्यवस्था की गई समस्त आर्य समाजों के व्यक्ति सम्मिलित हुये। प्राचीन भारतीय शास्त्रीय शैली पर जैसा प्राचीन इतिहास मे दशरथ की शव यात्रा का वर्णन है–'जगु सामानि सामगा' (बाल्मीकि रामायण)


स्व०श्री प बिहारीलालजी शास्त्री

दशरथ की शव यात्रा के साथ सामगान करने वाले वेद पाठी साथ साथ चल रहे थे। तदनुसार प० जी की अर्थी जो फूलो, ओ३म् के झण्डो से सजी हुई थी। उनके आदर्श पुत्र प० अरविन्दलाल तथा परिजनो द्वारा उठाते ही वेद-पाठियो ने एक साथ सामगान की ध्वनि प्रारम्भ की। उस समय यहा जो विद्वान मण्डली उपस्थित थी उनके नाम इस प्रकार उल्लेखनीय हैं–

१–सामगाचार्य पं० विद्याशंकर अलनेश
२–वेदाचार्य आचार्य विश्वश्रवा व्यास
३–वेदाचार्या सावित्री देवी शर्मा
४–वेदाचार्या श्रीमती देवी शास्त्री धर्मपत्नि आ०विश्वश्रवा व्यास
५–प्राच्य नवीन व्याकरणाचार्य पं० रमेशचन्द्र शास्त्री
६–साहित्याचार्य पं० सतीशचन्द्र शास्त्री
७–व्याकरणाचार्य प० ज्ञानेन्द्र जी
८–आर्यसमाज के पुरोहित पं० अशर्फीलाल एम० ए०
९–प० रामप्रसाद त्रिपाठी आदि

सबके हाथो मे सामवेद थे। आगे-आगे विद्वान मण्डली सामगान करती हुई शव के साथ चल रही थी। एक मील पैदल शवयात्रा चली। प० जी की इच्छा थी कि मेरा अन्त्येष्टि संस्कार भागीरथी गंगा तट पर हो। बरेली नगर रामगंगा के किनारे बसा है। पर भागीरथी यहां से ८० किलोमीटर दूर कछला पर है अत शवयात्रियो के लिए कारो, बस, ट्रको की पर्याप्त व्यवस्था की गई थी। उनके द्वारा शव यात्रा भागीरथी पहुची। एक ट्रक पर सजाकर प० जी का शव रखा गया और चारो ओर वेदपाठी बैठे सामगान रास्ते भर करते रहे। लाउडस्पीकर लगा हुआ था। वेदपाठियो की व्यवस्था आचार्य विश्वश्रवा व्यास कर कर रहे थे। बदायू, उझियानी से गुजरते हुए शव यात्रा ४ बजे कछला पहुची।

स्व. श्री प. बिहारीलालजी शस्त्री के प्रति शोक संवेदना एव श्रद्धांजलि

आर्यजगत् के ख्याति प्राप्त एव मूर्धन्य विद्वान् कुशल वक्ता, प्रमुख शास्त्रार्थ महारथी एव लेखक स्व० प० बिहारीलाल जी शास्त्री का निधन हमारे लिए एक अपूरणीय क्षति है कि आर्यजगत् का एक अजेय शास्त्रार्थ स्तम्भ ढह गया। स्व० पं० जी के प्रति अपना उद्गार प्रकट करते हुए सभा मन्त्री प० मनमोहन जी तिवारी एव सभा प्रधान पं० इन्द्रराज जी ने अपनी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की तथा शोक संवेदना प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की चिर शांति एवं शोक सतप्त परिवार के असीम धैय हेतु प्रभु से प्राथना की। –सवाददाता

पं० जी के पुत्र प० अरविन्द जो ने अन्त्येष्टि सस्कार के लिए पर्याप्त सामान की व्यवस्था की थी। एक बडा पीपा शुद्ध देशी घी, एक मन सामिग्री, आधा मन चन्दन और एक बडा थैला भर कपूर। प० जी, के शव को नख से शिख तक चन्दन से पूर्ण ढका गया फिर सामिग्री की तह ऊपर की गई। सब वेद-पाठियो ने सामवेद रखकर संस्कार विधियां अपने हाथो मे लीं और उच्च मधुर ध्वनि के साथ अन्त्येष्टि मन्त्रो से घी की आहुतिया प्रारम्भ हुई।

सस्कार की समाप्ति पर आचार्य रमेशचन्द्र जी का प्रवचन हुआ। अब नगर के सब दश आर्यसमाजो की सम्मिलित सभा होने जा रही है जिसमे प० जी के स्थायी स्मारक बनाने पर विचार होगा।

आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र
१४ एफ–रामपुर गार्डन, बरेली (उ०प्र०)

आगामी हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रचार एव सेवा शिविर

निश्चय किया गया है कि आगामी दिनाक १४ जनवरी से ९, १० अप्रैल ८६ तक लगने वाले हरिद्वार मे बारह वर्षीय कुम्भ मेले के ऐतिहासिक अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रचार एव सेवा शिविर लगाया जाय। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने जीवन मे कुम्भ के अवसरपर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसे भी १०५ वर्ष के लगभग हो चुके हैं। अत अन्धकार एव रूढ़िवादिता का खण्डन करते हुए समुचित मार्ग दर्शन का प्रचार किया जायेगा। विद्वानो के भाषण, उपदेश होंगे, सेवा शिविर द्वारा यात्रियों की यथासाध्य सेवा आदि की व्यवस्था रहेगी साथ ही विशेष स्नान पर्वो के दिन ऋषि लगर का भी आयोजन होगा वहीं शिविर लगाकर सभा के वरिष्ठ अधिकारी भी स्वय व्यवस्था की देखरेख करेंगे। समस्त प्रदेश की उपप्रतिनिधि सभाओ, आर्यसमाजो और आर्यजनो श अनुरोध है कि इस अवसर पर हमारी सहायता करें, अपने क्षेत्र मे धन और अन्न आदि का सग्रह करें, सभा को सूचना दें और सुविधानुसार उनका सग्रहीत अन्न हरिद्वार भिजवाने का प्रयास किया जाय। सबके सम्मिलित सहयोग से ही हमारे उद्देश्य सम्पन्न हो सकते हैं तदर्थ सबका सहयोग अपेक्षित है और इस मे अविलम्ब कार्य प्रारम्भ कर दिया जाय।

इन्द्रराज	कृष्ण बलदेव महाना	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

पं० बिहारी लाल शास्त्री : एक परिचय

(श्री सन्तोष 'कण्व')

तर्क शिरोमणी पं० बिहारी लाल शास्त्री का जन्म विक्रम सवत १९४७ को फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मुरादाबाद जनपद के फगवाडा ग्राम मे एक पौराणिक परिवार मे हुआ था। उनके पिता प० अयोध्या प्रसाद अपने समयके एक सम्पन्न जमींदार थे। घर पर कृषि और लेन-देन का कार्य होता था। माता का नाम श्रीमती मुन्नी देवी था।

शास्त्री जी की प्राथमिक शिक्षा घर पर तथा शेष पढ़ाई जवाहर लाल संस्कृत पाठशाला मुरादाबाद में सम्पन्न हुई थी। शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्हें आर्य समाज के विद्यविद्यालय मे अध्यापन का कार्य मिल गया। वे वहीं समाज मन्दिर मे रहने लगे। खाली समय मे पुस्तकालय का काम भी देख लेते थे। एक दिन 'मूर्ति पूजा' पर स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा लिखित ट्रैक्ट पढ़ने लगे। स्वामी जी के तर्कों का उन पर कुछ ऐसा विलक्षण प्रभाव पडा कि मूर्ति-पूजा से अश्रद्धा होने लगी।

उनके विद्या-गुरु पौराणिक कम काण्डी थे। उन्होने उनसे अपनी शंकाओ का समाधान करना चाहा, परन्तु होना क्या था वे तो आर्य समाज के नाम से ही चिढ़ते थे। उन्होने शास्त्री जी को भी आर्य समाज से दूर रहने की प्रेरणा दी। इसका उन पर प्रतिकूल प्रभाव पडा। वे धीरे-धीरे आर्य समाज की ओर झुकने लगे, और अन्त मे बस उसी के होकर रह गये।

उन्होंने कितने ही परिचितों के समक्ष अपनी शकायें रखीं, लेकिन कोई सन्तोष-जनक समाधान नहीं हुआ। इस बीच शास्त्री जी ने महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ा। बार बार पढ़ा। समस्त सन्देहों का जाल तार-तार हो गया। विवेक रूपी चाद शंकाओं की बदली से बाहर झांकने लगा। सारी स्थिति स्पष्ट हो गई। पाखण्ड का साम्राज्य कैसे स्थापित हुआ, यह उनसे छिपा न रह सका।

अब तो उनके श्रद्धेय गुरु महर्षि दयानन्द ही थे। शास्त्री जी ने उनका जीवन-चरित्र पढ़ा। पाखण्ड-खण्डन और राष्ट्र निर्माण हेतु महर्षि का बलिदान उनकी प्रेरणा का स्रोत बन गया। अपने गुरु के मार्ग का अनुसरण करते हुए उन्होंने उस युवा अवस्था मे ही पाखण्ड खण्डनी पताका अपने सुदृढ़ हाथों मे ली, और फिर शुरू की देश के कोने-कोने की यात्रा।

उनके भाषणों मे जादुई कमाल था। क्या शिक्षित क्या अशिक्षित सभी मन्त्र-मुग्ध हो सुनते थे। उनके तर्कों का लोगों पर जवाब न था। कितने ही शास्त्रार्थ में सामने आये, बस, मुंह की ही खाए। साम-दाम-दण्ड-भेद, पाखण्डियो का कोई भी अस्त्र उन्हे उस मार्गसे हटा न सका। सबका सामना किया वैदिक-धर्म की पताका को कभी झुकने न दिया।

लेकिन, बढ़ती अवस्था और परमात्मा की व्यवस्था के आगे किसकी समर्थता है। ३ जनवरी, १९८६ अपराह्न दो बजे बरेली मे उन्होंने अपना शरीर छोड दिया।

शास्त्री जी का सार्वजनिक-क्षेत्र बहुत व्यापक रहा। सन् १९१६ मे वे डा० श्याम स्वरूप सत्यव्रत द्वारा संचालित कल्याणी पाठशालाओं के निरीक्षक बने थे। दो वर्ष बाद मुसाफिर विद्यालय, आगरा के प्रधानाचार्य नियुक्त हुए। सन् १९२० से १९२४ तक बिजनौर जनपद मे आर्य समाज के प्रचार की धूम मचा दी। इस अवधि मे उन्होने इतनी शुद्धियां की कि विधर्मी उनकी जान के प्यासे हो गये। कितने ही आक्रमण हुए। हर-बार परमात्मा ही रक्षक सिद्ध हुए। सन् १९२४ मे सरस्वती विद्यालय—बरेली मे अध्यापक बने। सन् १९३२ मे शास्त्री जी ने उझियानी (जिला बदायू) मे अध्यापन कार्य किया। २४ वर्ष बाद वहाँ से अवकाश ग्रहण कर शेष जीवन वैदिक धर्म के प्रचार को समर्पित कर दिया। सन् १९६७ से वे बरेली मे ही रह रहे थे।

अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बीच समय निकालकर उन्होंने सैकडों लेख और दर्जनो छोटी-बडी पुस्तकें लिखी हैं। 'आर्य-मित्र' मे विशेष रूप से उनके लेख प्रकाशित होते थे। शास्त्री जी ने 'चाणक्य-नीति' पर सरल व सुबोध टीका लिखी। स्वामी दर्शनानन्द जी के अपूर्ण 'वेदान्त-दर्शन' भाष्य का उर्दू से हिन्दी मे अनुवाद कर शेष भाग को भी पूर्ण किया। 'दृष्टान्त सागर' उनकी सर्वाधिक बिकने वाली एक रोचक पुस्तक है। 'पशुबलि और वेद' के आगे बडों-बडो की बोलती बन्द है।

'दम्भ-दमन' मे माधवाचार्य एण्ड कम्पनी का भाण्डा ही फूट गया है। विपक्षियो के ग्रन्थो के उत्तर मे कई अच्छे ट्रैक्ट लिखे गये हैं। उनके कुछ प्रमुख शास्त्रार्थों का सग्रह भी छपा है।

शास्त्री जी बहुत मिलन सार और विनोदी थे। अपनी मिशनरी भावना और वक्तृत्व कला के लिये वे वर्षों तक याद किये जाते रहेंगे।

निर्वाचन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा चौक, इलाहाबाद
प्रधान श्री सोहन जी पाण्डेय
मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री
कोषा० श्री देवराज भवन

आर्य समाज आर्य नगर (मुड) बरेली—
प्रधान श्री सुखदेव जी भैय्या
मन्त्री श्री सुरेश चन्द्र शर्मा
कोषा० श्री रमेश चन्द्र सक्सेना

आर्य समाज दुल्लहपुर (गाजीपुर)
प्रधान श्री रामपति जी
मन्त्री श्री राजमुनि पाण्डेय
कोषा० श्री शिवनन्दन सिंह

—आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर का द्विवार्षिक चुनाव २१-१२-८५ को सम्पन्न हुआ। डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री जी को सर्वसम्मति से पुन दो वर्ष के लिये सभा प्रधान चुना गया। शेष कार्यकारिणी के निर्माण का अधिकार भी सर्वसम्मति से उन्हे ही दिया गया।

योगेन्द्र कुमार प्रधान

आर्य समाज कर्णपुर (देहरादून)
प्रधान श्री डा० एम० बी० लान
मन्त्री श्री खुशहाल सिंह स्नेही
कोषा० श्री ईश्वर चन्द्रवेश

यमराज के दूत

(श्री क्षितीश जी वेदालकार)

जीवनोपयोगी दवाइयो के आविष्कार और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के कारण ज्यो-ज्यो मृत्युदर कम होती गयी त्यो-त्यों जनसख्या मे वृद्धि होती गई। इस जनसख्या वृद्धि से परेशान होकर राजनीतिक नेताओं ने परिवार नियोजन का नारा लगाया। परन्तु उससे भी जन-सख्या मे जब कमी नहीं आई तो यमराज के दूत घबराये। शायद उन्होने यह सोचा होगा कि इसी तरह ससार की आबादी बढ़ती रही और मृत्यु दर कम होती रही तो हमारा सारा कारोबार ही ठप्प हो जायेगा। इसे विधाता का विधान कहे या ससार की नियति कहें—यमराज के दूतो ने यमलोक मे उतरकर इस पृथ्वी-तल पर डेरा जमाया और आधुनिक विज्ञान के बल बूते पर ऐसी जहरीली गैसों के बड़े-बडे कारखाने तैयार किये जिसमे ससार की आबादी को मिन्टो मे कम किया जा सके।

अब से एक वर्ष पूर्व भोपाल का यूनियन कार्बाइड का कारखाना यमराज के दूतो का वैसा ही प्रतिनिधित्व कर चुका है और अब दिल्ली मे श्रीराम फर्टिलाइजर्स के कारखाने ने भी अपने यमराज के दूत होने का प्रमाण प्रस्तुत कर दिया है। अब से एक वर्ष पूर्व जब २-३ दिसम्बर की रात को भोपाल के कार्बाइड कारखाने से जहरीली गैस रिसी थी तो उसकी भयकरता का शुरू-शुरू मे किसी को अदाज नहीं था। पर जब उसके परिणाम स्वरूप देखते ही देखते अढाई हजार आदमी सदा के लिए मौत की गोद मे सो गए और करीब अढ़ाई लाख आदमी उसके घातक प्रभाव से प्रभावित हुए, तब पता लगा कि यह कितनी भयकर त्रासदी थी।

कहने वाले तो यह भी कहते हैं कि इस बहुराष्ट्रीय अमेरिकी कम्पनी के कारखाने मे ऐसी जहरीली गैस तैयार करने का परीक्षण तैयार किया जा रहा था जो महायुद्धो के समय बडे पैमाने पर जन-संहार के काम आ सके। गैस रिसने की दुर्घटना अगर न होती तो इस गोपनीय षड्यन्त्र का पता भी न लगता। पर अब भेद खुल गया तो शायद मन ही मन यमराज के दूत प्रसन्न हुए होगे कि हमने संसार की जनसख्या को कम करने का एक कारागार उपाय ढूढ़ निकाला।

यो गरीब देशों के निवासी तथाकथित विकसित देशो की दृष्टि मे सदा आसान तोपों का चारा (गन फोडर) रहे हैं। युद्धो मे उन्हे तोपो के चारे की तरह ही झोका जाना रहा है। वैज्ञानिक लोग जिस तरह अपनी दवाइयो के परीक्षण चूहों, खरगोशो, और बन्दरो पर करते है उसी तरह बहुराष्ट्रीय कम्पनिया अपनी नयी उपलब्धियों का परीक्षण गरीब देशो के निवासियो पर करें तो क्या आश्चर्य है। इससे डबल लाभ भी तो होता है। कम्पनी के मालिको को आर्थिक लाभ और गरीब देश का अपनी जनसख्या कम करने का लाभ।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियो का जैसा जाल बिछता जा रहा है और जिस तरह राष्ट्रीय हितो की अपेक्षा करके गरीब देशों की सरकारें उन्हे बढावा दे रही हैं उससे ऐसा लगता है कि कोई बहुत गहरा अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र है जो गुप-चुप ढग मे मानवता के विरुद्ध चल रहा है और उस षड्यन्त्र मे जाने-अनजाने हम सब फसते जा रहे हैं। यूनियन कार्बाइड के कारखाने के सम्बन्ध मे कम्पनी के मालिको का और मध्य प्रदेश शासन का जैसा रवैया रहा है उसस मिली भगत की आशका होती है। पहले कहा गया कि रिसने वाली गैस फोसजीन थी, फिर कहा गया कि नहीं, वह मिक गैस थी। परन्तु पीछे जानकार लोगो ने बताया कि २५० डिग्री सेन्टीग्रेट के तापमान पर मिक गैस विघटित होकर हाइड्रोजन सायनाइड मे बदल गयी थी। सायनाइड का विष अपनी प्राणघातकता के लिए विश्व विख्यात है। जब तक यह पता न लगे कि वह कौन सी गैस थी, तब तक उसका इलाज भी कैसे हो। पर जब यह पता लग गया कि वह सायनाइड थी तो इस बात को छिपाने का प्रयत्न किया गया और उसके बारे मे जान बूझकर विवाद उत्पन्न कर दिया गया। जब वेस्ट वर्जिनिया (अमेरिका) स्थित यूनियन-कार्बाइड के मुख्यालय से ही ये गलती हो गयी और उसकी ओर से कहा गया कि सायनाइड के असर को दूर करने के लिए सोडियम थायोसल्फेट का इजेक्शन दिया जाना चाहिए तो एक तरह से उस गैस के सायनाइड होने की तो पुष्टि हो गयी परन्तु तब उसके आर्थिक और कानूनी परिणामो को सोचकर यूनियन कार्बाइड के मुख्यालय ने अपना वह बयान वापस ले लिया। बाद मे जिन डाक्टरो ने मरीजो को ये इन्जैक्शन दिये, उनको लाभ भी हुआ। इन इन्जैक्शनो से होने वाले लाभ से जब यह बात लगातार प्रमाणित होने लगी कि रिसने वाली गैस सायनाइड ही थी, तो वे इन्जैक्शन देने रोक दिये गए। हालाकि एक इन्जैक्शन की कीमत सिर्फ १२ पैसे पडती है, पर आज तक वे इन्जैक्शन ढाई लाख गैस पीडितो मे से केवल ५ हजार लोगो को ही दिए जा सके है। आश्चर्य की बात तो यह है कि मन्त्रियो ने सरकारी अधिकारियों ने और धन पतियो ने गैस त्रासदी के तुरन्त बाद इन इन्जैक्शनो को लगवाना जरूरी समझा, किन्तु गरीब लोगो को इन्जैक्शन देने मे उपेक्षा शुरू हो गयी। और तो और मध्य प्रदेश सरकार ने ऐसे कुछ स्वय सेवी क्लिनिक भी बन्द करवा दिये जो गैस पीडितो को यह इन्जैक्शन लगाने की सेवा कर रहे थे। इस सरकारी अधिकारियों मे से कितने अधिकारी और उनकी पत्निया यूनियन कार्बाइड की ओरसे अमेरिका की सैर कर आये, इसका कुछ पता नहीं। लेकिन इन सबसे मिली-भगत की पुष्टि तो होती है।

भोपाल के कांड को छोडिये। उसे तो अब एक वर्ष हो चुका। नियति का चक्र देखिये कि जिस दिन उस कांड को एक वर्ष पूरा हुआ उससे अगले दिन ही श्रीराम फूड्स फर्टिलाइजर कारखाने से जहरीली गैस रिसी। यह गैस मिक या सायनाइड नहीं थी, ओलियम थी। यह उतनी भयंकर भी नहीं थी। पर उससे लोगो मे भगदड मच गयी अभी तक इस गैस से मरने वालो की सख्या तीन से अधिक नहीं है पर इसका यह अर्थ भी नहीं है कि वह मनुष्यो पर कोई दया करने वाली गैस थी।

हमने ऊपर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और गरीब देशो के बडे लोगो की मिली-भगत की आशका की चर्चा की है। पर दिल्ली वाला कार-खाना तो अमेरिकी कम्पनी द्वारा निर्मित नही था और न ही वहा कीट नाशक दवाई तैयार हो रही थी। यह कारखाना तो रासायनिक खाद बना रहा था और इसके निर्माता ऐसे लोग हैं जिनका भारत के औद्योगीकरण मे काफी योगदान है। भोपाल काण्ड के लिए हम बहु-राष्ट्रीय कम्पनियो को दोष दे सकते है परन्तु खाद बनाने वाले और अपने ही लोगो द्वारा निर्मित इस कारखाने के बारे में क्या कहें ? यह ठीक है कि भोपाल काड के बाद यूनियन-कार्बाइड कारखाने को और दिल्ली काड के बाद इस फर्टिलाईजर कारखाने को सरकार ने बन्द करने का आदेश दिया है। परन्तु क्या इतने मात्र से यमराज के दूतो का खेल खतम हो जायगा ? स्वयं दिल्ली सरकार के रजिस्टर मे ऐसे १११ कारखानो के नाम दर्ज हैं जिनमें इसी प्रकार की घातक चीजे तैयार हो रही हैं और वे सब कारखाने प्रायः घनी बस्तियों के बीच मे ही है। अगर विदेशी लोग गरीब भारतवासियो को तोप का चारा समझते हैं तो भारत सरकार भी तो अपने देशवासियो को शायद उससे अधिक दर्जा नहीं देती। इसके अलावा इस प्रकार के कारखाने अन्य देशों मे भी हैं पर वहा जनता की सुरक्षा का जैसा प्रबन्ध किया जाता है उस तरह की व्यवस्था सरकार की ओर उद्योगपतियों की लापरवाही के कारण इस देश मे नहीं होतीं।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

मारीशस के राष्ट्रपिता--

डाक्टर सर शिवसागर रामगुलाम का महाप्रयाण

[लेखक पण्डित धर्मवीर घूरा, शास्त्री ओ बी०ई० उपदेशक आर्य सभा मारीशस, वाक्वा, अध्यक्ष मारीशस लेखक संघ]

(गतांक से आगे)

आप गत दो वर्षों से मारीशस के गवर्नर जनरल का ओहदा सम्भाल रहे थे। इसी बीच गत वर्ष आपकी धर्म पत्नी श्रीमती सुशीला जी का स्वर्गवास हो गया। तभी से आपका स्वास्थ्य गिरता आया।

१२ मार्च सन् १९६८ की बात है। ब्रिटिश गायना के डा० छेदी जगन जी यहा पर डा०रामगुलामजी के आमन्त्रण पर विशेष अतिथि के रूप मे विराजे थे। तत्कालीन भारतीय राजदूत जी के निवास स्थान वाक्वा नगर मे एक जलपान के मौके पर डा० छेदी जगन जी से मिलने का शुभावसर प्राप्त हुआ था। बात-बात मे आपने कहा था कि 'आप डाक्टर शिवसागर जी के गृह पर रह रहे हैं' और यह भी कहा था कि 'डा० रामगुलाम जी के साथ मेरी जानपहचान लन्दन मे हो पाई थी।' उसी मौके पर आर्यजगत् के एक महान नेता श्री प्रतापसिंह वल्लभदास शूरजी डा० रामगुलाम जी के आमन्त्रण पर पधारे थे। फिर कुछ वर्षो के बाद प्रताप जी कुछ काल के लिए मारीशस हो ठहरने आए थे तो डाक्टर रामगुलाम जी से उनका घनिष्ट सम्बन्ध हो गया था और कहीं आने जाने के लिए डा० जी की कृपा से वे अतिथि मोटर का स्तेमाल भी किया करते थे।

डाक्टर जी के चल बसने से गरीबो ने बहुत आंसू बहाये। क्रिश्चियन, मुस्लिम तथा अन्य धर्मों की वृद्धाओ को उस महाप्रयाण के मौकेपर आँसू बहाते देखा था। क्योंकि प्रतिदिन ऐसे वृद्धो से भी डाक्टर जी मिला करते थे जो इस ससार मे अपने आपको बेसहारा पाते थे।

भारत, अमेरिका, रूस, चीन, पाकिस्तान, इङ्गलैण्ड, आस्ट्रेलिया के साथ-साथ संसार की सभी दिशाओ के राष्ट्रो ने अपनी-अपनी सम्वेदना के सन्देश उनके सुपुत्र डा० नवीन रामगुलाम जी के पास हमारे प्रधान मन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ के पास या हमारे स्थानापन्न प्रधान मन्त्री श्री कसाम मोलान या सरकार के प्रति भेजे। राष्ट्र संघ ने उनकी याद मे १ मिनट के लिए मौन धारण किया था भारतीय संसद ने शोक प्रस्ताव पास किया था। भारत के उपराष्ट्रपति श्री वेंकटरामन जी एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ यहाँ आये थे और भारत राष्ट्र तथा जनता की सम्वेदना प्रकट की थी, भारत के प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाँधी जी ने मारीशस के देहली स्थित दूतावास मे जा करके मारीशस सरकार के उच्चायुक्त श्री नियुट जी के पास सम्वेदना प्रकट की थी। और राष्ट्रो के प्रतिनिधि यहां विराजे थे। डा० रामगुलाम जी की सादगी और विद्वता उनकी साधुवादिता मे थी। यदि वे किसी साहित्यिक या समाज सेवी को जानते थे और उन्हे भीड़ में देख लेते थे तो मिलकर बातें करना या अपने पास बुला लेना स्वाभाविक बात थी। हमने उन्हे कभी भी किसी से अकड़कर बातें करते हुए नहीं देखा था। उनकी नम्रता ही उनकी महानता थी। हाथ जोड़ कर साधारण जनता को भी नमस्ते करना उनके लिये साधारण बात थी। अनेक मौकों पर संसार के ऊँच से ऊँच राजनीतिज्ञो के साथ सतर्कता से बातें करते हुए भी हमने देखा था। मारीशस की समस्याओ को, अफ्रीकी देशो की जटिल समस्याओं को। हिन्द महासागर को शांति का स्थल कायम रखने की बात को उन्होने अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनो मे की थी।

सन १९७२ की बात है। ऐतिहासिक विषय है समस्त विश्व के आर्यसमाजी भाइयो-बहनो का ध्यान इनकी ओर एकाएक आकर्षित हो गया था क्योंकि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिनांक १९, २० २१ मई मे राजस्थान अलवर मे होने वाले आर्य महा सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए डाक्टर रामगुलाम को चुना था और उन्होने सहर्ष स्वीकारा था। कहा जाता है कि विश्व की सभी दिशाओ के अनेक भाई या बहनें सम्मेलन मे उनके दर्शनो के लिये तीव्र इच्छा रखते थे। कितने साहित्यिको ने, समाज सेवियो ने व्यक्तिगत रूप मे उनसे भेंट की थी और चित्र खिचवाये थे। कितने पत्रकारो ने उस समय उनका इण्टरव्यू लेकर प्रकाशित किया था। इससे मारीशस की ओर मारीशस के आर्यसमाजी भाइयों तथा बहनो की भी इज्जत बढ़ी।

डाक्टर जी ने सम्मेलन के मौके पर अपने भाषण के दौरान यह भी कहा था कि 'आर्यसमाज वह आंदोलन है जिसका सूत्रपात महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए किया था। वैदिक धर्म ईश्वरीय ज्ञान है। वेद पर आश्रित आध्यात्मिक ज्ञान है।' मारीशस वापस होने पर आपने हवाई अड्डे पर पत्रकारो को बताया था कि 'उस अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसम्मेलन मे मै बहुत प्रभावित हुआ महासम्मेलन का आन्दोलन शानदार रहा। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो से भी मिलने के लिए मुझे अच्छा मौका मिला जिसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ भाई मोहनलाल मोहित जी को भी धन्यवाद करता हू और आभारी हू। तत्कालीन आर्यसमाजी नेताओ के कार्यों की भी प्रशंसा की थी।

अन्त्येष्टि संस्कार से पूर्व पाम्लेक्स बाग मे स्वामी दिव्यानन्द जी ने और स्वामी संजीवनी आनन्द जी ने वेद मन्त्र पढ़े थे। मौके पर आर्य सभा मारीशस के स्थानापन्न प्रधान श्री लघुमया लाछाया जी को सभा के उपप्रधान डा० नियुट जी को मन्त्री श्री मूलशंकर रामधनी जी को भी देखा था। श्री मोहनलाल मोहित जी उन दिनो दक्षिण अफ्रीका मे होने वाले आर्य प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती मे शामिल होने के लिए गये थे।

दो रोज बाद आर्य सभा के नवीन भवन राजधानी पोर्ट लुइस मे उनकी आत्मा की शांति के लिए एक शोक सभा की गई थी जिसमे प्रधान मन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी ने भारत के उच्चायुक्त श्री प्रेम सिंह जी ने आर्य सभा के मन्त्री श्री मूलशंकर रामधनी जी ने, स्वामी दिव्यानन्द जी ने और अनेक संस्थाओ के प्रतिनिधियो ने भावभीनी शब्दो मे सम्वेदना प्रकट की थी। हिन्दी, तामिल, तेलगू, मराठी भाषाओं के विद्वानो ने भी अपनी-अपनी श्रद्धा के फूल अर्पित किये थे। अपार भीड़ थी, क्योंकि सेवा शिविर के युवा नेता श्री धनदेव बहादुर जी ने रेडियो तथा टेलिविजन द्वारा जनता से अपने प्यारे नेता के प्रति आकर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये अपील की थी।

(शेष पृष्ठ १० पर)

'गीता स्वरूप निर्णय' जब्त

सभा मन्त्री द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार को साधुवाद--

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने 'मेरठ कालेज मेरठ' के दर्शन विभाग के प्रो० डा० राजेन्द्र कुमार गर्ग द्वारा लिखित तथा पुनीत प्रकाशन मेरठ द्वारा प्रकाशित 'गीता स्वरूप निर्णय' नामक पुस्तक जब्त कर ली है। राज्य सरकार के अनुसार यह पुस्तक आर्य समाज और सनातन धर्म के अनुयायियो की धार्मिक भावनाओ और धार्मिक विश्वासो को जानबूझ कर ठेस पहुचाने के लिये लिखी गई थी, इससे शांति एवं सद्‌भावना को खतरा उत्पन्न हो गया था। अत शांति एव सद्‌भावना को ध्यान मे रखते हुए राज्य सरकार ने यह निर्णय लिया है। पाठको को याद होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा डा० गर्ग द्वारा लिखित 'दयानन्द गाली पुराण' तथा 'गीता का स्वरूप निर्णय' को जब्त करने हेतु उत्तर प्रदेश शासन से माँग की गई थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश माननीय श्री वीर बहादुर सिंह मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश शासन को इस सम्बन्ध मे अपना आभार प्रकट करती है तथा साधुवाद देती है।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश कार्य समिति वर्ष १९८६ के लिये

१-सचालक श्री अवध विहारी खन्ना, विश्वनाथ गली वाराणसी।

२—सहायक सचालक श्री आर्य मुनि, वानप्रस्थी द्वारा आर्य समाज, केराकत, जौनपुर।

३—सहायक सचालक श्री श्याम सुन्दर आर्य, आचार्य नरेन्द्र देव रोड (बलदेव, निवास के बगल मे)।

४—मन्त्री श्री प्रयागदीन जायसवाल द्वारा आर्य समाज, बाघमण्डी, सुल्तानपुर।

५—उपमन्त्री श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य द्वारा जवाहर लाल जी आर्य सर्राफ, केराकत।

६-कोषा० श्री अशोक कुमार त्रिपाठी द्वारा आर्य समाज, दशाश्वमेध, वाराणसी।

७—उपसंचालक (कमिश्नरी) वाराणसी श्री रमाशंकर आर्य केराकत नया चौरहा, केराकत।

८—उपसंचालक (कमिश्नरी) गोरखपुर-डा० राजेन्द्र प्रसाद आर्य, द्वारा आर्य समाज फूलपुर, आजमगढ़।

९— „ , लखनऊ—

१०— उपसंचालक (कमिश्नरी) फैजाबाद श्री सत्यकाम आर्य, प्रवक्ता डिग्री कालेज, अमेठी, रामनगर, सुल्तानपुर।

पं० बिहारीलाल जी शास्त्री का निधन !

आर्यसमाज का महान् स्तम्भ ढह गया !!

काव्यतीर्थ श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री के निधन का समाचार सुन और पढ़ कर हृदय को गहरा धक्का लगा। वे आर्य समाज के महान् चोटी के उच्च शास्त्रार्थ महारथी थे। उन्होने पौरोणिकों और मौलवियों से सैकडो शास्त्रार्थ करके उन्हे परास्त किया था। आगरा मे सन १९१४। १५ मे श्री भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर विद्यालय चला रहे थे, तब शास्त्री जी उपदेशकों को पढ़ाते थे। श्री अमर स्वामी जी महाराज, श्री कुवर सुखलाल आर्य मुसाफिर आदि वक्ता उनसे पढ़े थे। पौराणिक श्री माधवाचार्य आदि पडितों से उनके अनेक लिखित और मौखिक सस्कृत मे शास्त्रार्थ हुये, वे सदैव विजयी रहे। अनेक मौलवियो को उन्होंने शास्त्रार्थ मे पछाड़ा। मैं जब सरकार मे स्वास्थ्य मन्त्री था, उस समय जब भी बरेली गया। उनके दर्शनो के लिए उनके घर जाता था। वह त्यागी तपस्वी ब्राह्मण थे। उत्सवों पर जाते थे। मन्त्रियो ने जो दक्षिणा दी जेब मे डाल ली। कभी गिला नहीं, और न अधिक माग की। उनके निधन से आर्य समाज का एक महान् गौरवशाली स्तम्भ ढह गया। परम पिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति और उसके शोक संतप्त परिवार को उनकी वियोग जन्य वेदना को सहने की शक्ति दें।

प्रेमचन्द्र शर्मा
उप प्रधान सभा हाथरस

श्रद्धांजलि

बरेली जनपद की निम्न आर्य समाजो एवं आर्य सस्थाओं ने, शास्त्रार्थ महारथी, आर्य जगत् के मुर्धन्य विद्वान् एव लेखक वयोवृद्ध स्व० श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री के निधन पर अपनी शोक संवेदना एवं श्रद्धाजलियां अर्पित की हैं कि प्रभु दिवगत आत्मा को चिर-शांति एव शोक विह्वल परिवार को धैर्य प्रदान करे।

१—आर्य समाज बिहारीपुर बरेली।
२—विद्यार्य सभा बरेली।
३—आर्य वीर दल कमिश्नरी बरेली।
४—आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ। संवाददाता

११—उपसंचालक (कमिश्नरी) इलाहाबाद श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य, पो०मु० कल्याणपुर कचरौली थाता फतेहपुर।

१२— उपसंचालक (कमिश्नरी) कानपुर श्री शिवपूजन जी द्वारा आर्य समाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर।

प्रयागदीन जायसवाल मन्त्री
केन्द्रीय कार्यालय
दयानन्द ज० हा० स्कूल
शास्त्री नगर सुलतानपुर

महर्षि दयानन्द के मिशन का एक और दीवाना उठ गया

श्री पं. बिहारीलाल जी शास्त्री का देहावसान

हजारो ऋषि-भक्तो द्वारा अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

(हमारे विशेष संवाददाता द्वारा)

बरेली—आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्–शास्त्रार्थ महारथी प०बिहारी लाल शास्त्री का शुक्रवार ३ जनवरी १९८६ को अपराह्न दो बजे देहान्त हो गया। वे ९६ वर्ष के थे।

शास्त्री जी पिछले कुछ माह से अस्वस्थ चल रहे थे। पैर की हड्डी टूट जाने के कारण वे चारपाई पर ही लेटे रहते थे। स्वास्थ्य निरन्तर गिर रहा था, फिर भी उन्हे आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की चिन्ता लगी रहती थी। चोट लगने के पहले तक वे आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग मे नियमित रूप से जाते रहे। जलसों पर बाहर जाना बन्द कर दिया था।

उनके निधन का समाचार बिजली की भाँति सम्पूर्ण नगर मे फैल गया। जिसने भी सुना, रो पडा। शास्त्री जी का पूरा जीवन महर्षि के मिशन की सेवा मे बीता। उन्होंने हजारो व्याख्यान दिये, दर्जनों शास्त्रार्थ किये। न दिन देखा न रात—न सुख देखा न चैन! बस, आर्यसमाज की पताका को फहराते रहे।

आर्यसमाज की प्रथम शताब्दी के वे एक महत्वपूर्ण स्तम्भ थे। स्वभाव से विनोदी, मन से सरल, जिससे भी मिले, अत्यन्त आत्मीयता से मिले। वक्तृत्व-कला मे निपुण, शास्त्रार्थ के अखाडे का उन जैसा मल्ल और तर्क शास्त्र का पण्डित अब ढूढे से भी नहीं मिलेगा।

—आर्यसमाज कटरा प्रयाग का ८२ वा वार्षिकोत्सव दिनाक १३ से १५ दिसम्बर के मध्य समाज के प्रधान जी की अध्यक्षता मे सोल्लास सम्पन्न हुआ जिसमे वैदिक सन्ध्या पाठ, महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन, भजन एव उपदेश के कार्यक्रमो का आयोजन हुआ।

—हरिशंकर मन्त्री

—आर्यसमाज सिलीगुडी के प्रधान श्री जवाहरलाल आर्य का निधन दिनांक १४ दिसम्बर ८५ को हो गया वे ६२ वर्ष के थे। पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ। संस्कार के पश्चात् उपस्थित जन समूह ने एक सभा का रूप लेकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की। —मन्त्री

—दिनाक २३-१२-८५ को आर्यसमाज बीना परियोजना (मीरजापुर) मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सामूहिक यज्ञ हवन के साथ सम्पन्न हुआ तथा हुतात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। —मन्त्री

—आर्यसमाज के कर्मठ सेवक तथा स्वतन्त्रता सेनानी श्री शांति प्रकाश जी प्रेम का ७२ वा जन्म दिवस 'जनसेवक' सम्मेलन के रूप मे दिनांक १२ दिसम्बर ८५ को आर्यसमाज पंचपुरी (गढ़वाल) मे समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर श्री एव श्रीमती प्रेम जी द्वारा आर्य समाज पंचपुरी के नवनिर्माण हेतु पाच हजार रुपये का सात्विक दान भी दिया गया। —वासुदेव मन्त्री

वेद महिमा

मृत्यु लोक हित, अमृत-छन्द मधु–
मरे सृष्टि का ज्ञान वेद हैं।
घिरी घोर अज्ञान निशा मे–
ज्योतिवान, दिनमान वेद हैं।

लगी आग मे, सोम-सरोवर
सकल ताप हर, प्राण वेद हैं।
ज्ञान, वेद हैं, ध्यान वेद है,
मानव को, कल्याण वेद है।

जीवन कला सिखाने वाले,
बोधवान, निर्माण वेद है।
वेद, विश्व-ब्रह्मा की वाणी—
विविध ज्ञान-विज्ञान वेद हैं।

आर्य जाति का प्राण वेद हैं।
धरती को, वरदान वेद है।
उषासूक्त' का लिये उजाला,
उतरे स्वर्ण—विहान वेद हैं।

पृथ्वी पुत्र, मनुज-हितकारी,
भू पर स्वत प्रमाण वेद हैं।
दयानन्द आनन्द कन्द के प्राणो बसे,
प्रयाण वेद है।

मानव, कल्याणक, उद्धारक,
भव-तारक, जलयान वेद हैं।
अजर अमर इस सृष्टि काव्य की
दृष्टिवान, मुस्कान वेद है।

हम शत वर्ष, कर्ममय जीवन,
जियें, सनत व्याख्यान वेद हैं।
जो न, जानते, ज्ञान वेद हैं—
उनको भी भगवान वेद है—

असतो मा, तमसो ज्योतिमय,
गाते, महिमावान वेद हैं।
नित्य चिरंतन गायन के स्वर–
नये गान के प्राण वेद हैं।

प्राणवान, अमियान वेद हैं।
मुखर ध्यान, निर्वाण वेद है
मृत्यु लोक के, अमृत-छन्द-मधु–
मरे, सृष्टि का ज्ञान, वेद हैं।

—लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र' एम० ए०, भोजपुरा, मैनपुरी

—आर्यसमाज बक्सर भोजपुर (बिहार) के भूतपूर्व मन्त्री श्री विश्वनाथ आर्य का निधन दिनांक १ दिसम्बर ८५ को हो गया। आप का अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ। प्रभु दिवंगत आत्मा को चिरशांति तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करें।

—मन्त्री

आवश्यक सूचना

धर्म शिक्षा परीक्षाएं १९८६

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश द्वारा संचालित धर्म प्रवेशिका, धर्मभूषण एवं धर्माधिकारी, की परीक्षाएं मार्च १९८६ में होंगी। परीक्षार्थियों की सूचियां १५-२-८६ तक कार्यालय मे अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

यह ज्ञातव्य है कि ये नैतिक शिक्षा की परीक्षाए नहीं हैं इनका पाठ्यक्रम वैदिक धर्म से सम्बन्धित है। सरकार द्वारा स्वीकृत पाठ्य क्रम नैतिक शिक्षा तक ही सीमित है, सभी आर्य विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य वैदिक धर्म का प्रचार एवं प्रसार है। अत उनके प्रधानाचार्यों से आशा की जाती है कि वे इन परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को आवश्यक शिक्षा की व्यवस्था करें। अध्यापक / अध्यापिकाओं से इस कार्य मे हार्दिक एव ऐच्छिक सहयोग की अपेक्षा की जाती है। प्रबन्धाधिकारियों से अनुरोध है कि वे धर्म शिक्षा के लिए अध्यापकों एव प्रधानाचार्यों को प्रेरित करें तथा इन परीक्षाओं को सफल बनाने में योगदान प्रदान कर। माधवसिंह

मन्त्री-प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र०

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

आर्यमित्र के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ जनवरी १९८६ को समाप्त हो जाता है। वी पी भेजने मे ४-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी पी न भेजी जाय। जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) भेज दें अन्यथा उनके नाम वी पी भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी पी भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे है। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) कर दिया गया है।

३३६, ८१८, २८१५, १९२२, १९५७, २९६८, ५४३६, ६३२२, ६३२८, ६३४४, ६४८१, ८१८३, ८३८३, ८४८९, ८४९३, ८४९६, ८७००, ८७०९, ८७९१, ९०७५, ९०८६, ९३८३, ९३९०, ९४८४, ९७९१, १००६३ १००८५, ११२०१, ११११०, ११४४४, ११४६२, ११४६४, ११४६५, ११४७०, ११४७४, ११४८५, ११८१४,११८१७, १२०८१, १२०८४, १२०९०, १२०९२, १२०९४, १२०९५,१२०९६, १२५४९, १२५५०, १२५५१, १२५५५, १२५७०, १२६०४,१२८०८, १२८१४, १२८१५, १३०३३, १३०३५, १३०४५, १३०४६, १३०४७, १३३६४, १३३६५, १३३६६, १३३६७, १३३६८, १३३६९, १३३७०, १३३७१, १३३७२, १३३७३ १३३७४, १३३७५,१३३७६, १३३७७, १३३७८, १३३७९, १३३८०, १३३८१, १३३८२,१३३८३, १३३८४, १३३८५, १३३८६, १३३८७, १३३८८, १३३८९,१३३९०, १३३९१, १३३९२, १३३९३, १३३९४,१३३९५, १३३९६, १३३९७, १३३९८, १३३९९, १३४००, १३४०१, १३४०२, १३४०३,१३४०४, १३४०५, १३४०६, १३४०७, १३४०८, १३४०९, १३४१०,१३४११, १३४१२, १३४१३, १३४१४, १३४१५, १३४१६, १३४१७।

विनीत—

—व्यवस्थापक

शताब्दि महोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश का

१५ से १८ मई तक—१९८६ के मध्य

डी० ए० वी० कालेज प्राङ्गण—लखनऊ में

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० को स्थापित हुए एक सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। सौ वर्षों में सभा ने प्रदेश के आर्य समाजों को सङ्गठित करने और उन्हें दिशा निर्देशन का यथा साध्य प्रयास किया है। शताब्दि समारोह विशेष भव्यता के साथ मनाया जायेगा जिसमें आर्यजगत् के मूर्धन्य नेताओं के अतिरिक्त भारत के प्रधान मन्त्री अथवा राष्ट्रपति विशेष अतिथि होंगे।

० समस्त आर्यसमाजें आर्य उपप्रतिनिधि सभायें, आर्य जन और उत्तर प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिकों से अनुरोध है कि इसे सफल बनाने के लिये हमारे हाथों को सुदृढ़ करें अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सभा को भेजने का प्रयास करें।

इस अवसर पर सभा के १०० वर्ष का इतिहास प्रकाशित होगा। समस्त आर्यसमाजों की विवरण पत्रिका भी संलग्न होगी। अत: समस्त आर्यसमाजें एक मास के अन्तर्गत अपने समाज का इतिहास अपने क्षेत्र के विगत १०० वर्षों के अन्तराल के विशेष आयोजनों का परिचय और गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करें जिससे विवरण पत्रिका में सम्मिलित किया जा सके। इस अधिवेशन की सफलता के पीछे प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों का समवेत शक्ति होना आवश्यक है।

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

(पृष्ठ ७ का शेष)

दिनाक २२ से २६ अगस्त सन् १९७३ को मारीशस में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (देहली) के सहयोग से १२वां आर्य महासम्मेलन करने की योजना बनाई गयी थी। अफ्रीका, भारत तथा एशिया से बहुत से भाई बहन पधारे थे। दक्षिण अफ्रीका से १०५ और भारत से अकबर जहाज द्वारा श्री रामलाल मलिक जी की देखरेख में ५०० से अधिक यात्री विराजे थे। सार्वदेशिक सभा का आफिस वहां पर चला आया था। डाक्टर रामगुलाम जी की कृपा से सरकार तथा प्रसारण विभाग द्वारा बहुत प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था। उनकी कृपाओं को कौन भुला सकता है। उनकी साधुवादिता के कारण ही टापू की सभी दिशाओ मे लोग उन्हें 'चाचा' कहकर पुकारते थे।

गत वर्ष की बात है। मारीशस मे प्रवासी भारतीयों के आगमन की १५० वीं वर्षगांठ मनाई गई थी। भारत के राष्ट्रपति श्री ज्ञैलसिंह जी भी पधारे थे। डाक्टर रामगुलाम जी ने अपने सरकारी निवास स्थान पर एक जलपान का प्रबन्ध किया था। शाम का समय था। सूरज ढल रहा था। सभी आमन्त्रित आ चुके थे, जिनमें भारत के अनेक पत्रकार और साहित्यिक भी थे। डाक्टर जी यथासम्भव अपने बाग मे घूम घूमकर राष्ट्रपतिजी से मोरिशस के अतिथियों का परिचय करवा रहे थे साथ मे प्रधान मन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी भी थे। अब न मालूम हमें वैसा मौका प्राप्त होगा या नहीं, पर आज उनके चरणों पर श्रद्धा के दो फूल अर्पित करते हुए मन में ढाढस हो रहाहै।

निजाम हैदराबाद के सत्याग्रह मे भाग लेने वाले स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियो का दिल्ली में अभिनन्दन होगा

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध उपदेशक साहित्यकार स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी वेद पथिक पं० धर्मवीर आर्य झण्डाधारी ने सूचित किया है कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का सचित्र स्वर्ण इतिहास वह लिख रहे हैं।

श्री वेद पथिक जी ने यह बतलाया है कि इस इतिहास के प्रकाशनार्थ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री लाला रामगोपाल जी को १०००० (दस हजार) रुपये का प्रथम किश्त भेंट कर रहा हूं।

श्री झण्डाधारी जी ने यह बतलाया है कि धर्मवीर ग्रन्थमाला की बिक्री का शत प्रतिशत आय विश्व व्यापी वेद प्रचार, शुद्धि और हिन्दू संगठन के लिए दान प्रदान किया जायेगा।

अभिनन्दन समारोह

वेद पथिक जी ने यह कहा है कि समस्त मर्याधिकारियो के सुपुत्रो या उत्तराधिकारियो को एवं समस्त सत्याग्रहियो को हैदराबाद सत्याग्रहियों को हैदराबाद सत्याग्रह का स्वर्ण इतिहास एक एक दुशाला, प्रशस्ति पत्र एवं धर्मरत्न की उपाधि से अलकृत किया जायेगा।

वेद पथिक पं० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी ने कहा है कि अभिनन्दन समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे होगा जिसकी तिथि की घोषणा पुन इतिहास प्रकाशित हो जाने पर की जायेगी।

संवाददाता
सत्यप्रकाश आर्य
वैदिक समाचार समिति
सरायरोहिल्ला, नई दिल्ली-५
फोन—५८६५४५

आजाद जयन्ती

८० वा जन्म महोत्सव

क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद का ८० वां जन्म दिवस ७ जनवरी १९८६ को उनके पैतृक ग्राम बदरका जनपद उन्नाव मे विशेष समारोह के साथ आयोजित हुआ। उत्तरप्रदेश के राज्यपाल श्री आरिफ उसमान खां मुख्य अतिथि थे। आजाद के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की गयी भूतपूर्व प्रदेशीय मन्त्री प० गोपीनाथ दीक्षित ने अध्यक्ष पद का भार ग्रहण किया।

ग्राम बदरका मे आजाद विद्यालय की स्थापना हुई। आजाद पार्क मे आजाद की आदमकद प्रस्तर मूर्ति स्थापित है। 'आर्यमित्र' के सम्पादक आचार्य रमेशचन्द्र अवस्थी का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ कि आजाद की मूर्ति के पास उनके साथी क्रातिकारियो की मूर्तिया या चित्र संजोए जांय और इस स्थल को क्रांति स्थली स्वीकार करके सरकार समुचित सहयोग विकास हेतु प्रदान करे। आजाद स्मारक ट्रस्ट के मंत्री डा० ब्रजकिशोर शुक्ल ने आभार प्रकट किया और आगामी वर्ष अधिक जन सेवा के कार्य प्रारम्भ करने का संकल्प किया।

—संवाददाता

घासीराम प्रकाशन विभाग

(विक्रय विभाग)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ मे उपलब्ध पुस्तको की सूची निम्न है, आधी धनराशि अग्रिम भेजने की कृपा करें तथा रेलवे स्टेशन अवश्य लिखें।

क्र स	नाम पुस्तक	मूल्य
(१)	सत्यार्थप्रकाश अजिल्द	६ ००
(२)	सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी) सजिल्द	६० ००
(३)	सत्यार्थ प्रकाश उर्दू	१२ ००
(४)	वेदार्थ कल्पद्रुम	६० ००
(५)	हिन्दू राज्य	२० ००
(६)	ऋग्वेद भाष्य भूमिका	१२ ००
(७)	सत्यार्थप्रकाश उपदेशा	४ ००
(८)	कायाकल्प	५ ००
(९)	यज्ञ पर्व सुधा	२ ५०
(१०)	कर्त्तव्य दर्पण	४ ००
(११)	मासाहार घोर पाप	४ ००
(१२)	मृत्यु और परलोक	४ ००
(१३)	दैनिक यज्ञ प्रकाश	०० ५०
(१४)	वैदिक निघण्टु	०० ४०
(१५)	राष्ट्र सुरक्षा और वेद	०० १५
(१६)	आर्य प्रतिनिधि सभा का इतिहास	२ ५०
(१७)	जैन मत दर्पण	०० २०
(१८)	पंचलाव सहिता (अंग्रेजी)	०० ३०
(१९)	ऋग्वेद रहस्य	५ ००
(२०)	लघु सत्यार्थ प्रकाश तृतीय	०० ३७
(२१)	लघु सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय	०० ३७
(२२)	कुर्बानी कुरान के विरुद्ध	१ ००
(२३)	आर्यन मैनिस्टो	०० ६०
(२४)	नैतिक जीवन	४ ००
(२५)	देश भक्त बच्चे	४ ००
(२६)	अस्पृश्यता निवारण	०० ५०
(२७)	शराबबन्दी क्यो आवश्यक है ?	०० २५
(२८)	वैदिक सूक्ति सुधा	१ ५०
(२९)	मेहरे बाबा मत दर्पण	०० १०
(३०)	मुसाहिब और इस्लाम उर्दू	५ ००
(३१)	आर्यसमाज और इस्लाम	२ ००
(३२)	महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र	१ ५०

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र०

धर्म शिक्षा पुस्तकों की सूची

भाग ५	२ ५०
भाग ८	३ ००
भाग ९	४ ००
भाग १०	३ ००
भाग ११	४ ००
भाग १२	३-५०

उपर्युक्त पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन भी दिया जायगा। आर्डर के साथ चौथाई धन अग्रिम भेजने की कृपा करें।

—व्यवस्थापक बिक्री विभाग

रजिस्ट्रेशन संख्या [illegible]
[illegible] भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
[illegible] ४५९९३
[illegible] एल डब्ल्यू/एन पी ७१
[illegible] पौष २९
[illegible] शुक्ल ९, रविवार
१० जनवरी [illegible]

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

यमराज के दूत

(पृष्ठ ६ का शेष)

[illegible] हो, चाहे कीटनाशक दवाइयाँ तैयार [illegible] रासायनिक खाद तैयार करना हो, इन सबके पीछे [illegible] मे कृषि की पैदावार बढ़ाने का अभियान काम कर रहा है। [illegible] पीछे एक दृष्टि दोष है जिसे शायद हम नहीं समझ पा रहे [illegible] की पैदावार बढ़ाना आवश्यक है, परन्तु उसके लिए पश्चिम की नकल करके पश्चिम के ही साधन हमने अपनाने शुरू किये हैं, [illegible] लगता है कि इक्कीसवीं सदी मे पहुचने की जल्दी मे हमने आधुनिक तकनीक का जो बहु-विज्ञापित छोटा रास्ता अपनाया है वह [illegible] की जड है। नीतिकारो का कहना है–'यस्य देशस्य [illegible] तु तज्जं तस्यौषधम् हितम्'–जिस देश का जो प्राणी है उसके लिए उसी देश मे उत्पन्न हुई औषधि हितकारक है। हमने अपने देश के कृषि के साधनो की और गोबर और गोमूत्र आदि स्वाभाविक खाद की उपेक्षा करके रासायनिक खाद और रासायनिक कीट नाशक दवाओ को अपना कर जो खतरनाक जीवन पद्धति अपना ली है उससे यम के दूतो का [illegible] गया है। हम अपनी जड से कटते जा रहे हैं। हमने अपने ग्रामोद्योगो सिचाई के साधनो और खेती के उपकरणों की उपेक्षा करके जो नकलची बन्दर का रोल अपनाया है, उससे इस प्रकार की [illegible] सदा हमारे सिर पर लटकती रहेगी। हमे कोई ऐसा उपाय सोचना पडेगा कि आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों का लाभ भी हम उठा सकें और अपने देश मे सदियो से अपनाये गये रास्तो को भी न छोडे। दोनों के सही सन्तुलन मे ही हमारा सही भविष्य निर्भर है। जब तक यह असन्तुलन रहेगा तब तक यम के दूत प्रसन्न ही होंगे।

शोक सम्वेदना

आर्य समाज पंचपुरी गढवाल ने अपनी २९-१२-८५ की एक शोक सभा मे महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के उप प्रधान बाबा श्री पृथ्वी सिंह जी आजाद और ग्राम मल्ड गढ़वाल के वयोवृद्ध कर्मठ आर्यसमाजी जन सेवक श्री लोकमणि जी आर्य के निधन पर शोक सम्वेदना प्रकट करके दिवगत आत्माओ की शांति और सद्‌गति तथा पारिवारिक जनो को धैर्य प्रदान करने के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

वासुदेव मन्त्री आर्य समाज
पचपुरी गढ़वाल

हरिद्वार कुम्भ पर स्नान पर्वों की सूची

१४ जनवरी	१९८६	मकर संक्रान्ति प्रथम स्नान	पर्व
१३ फरवरी	"	वसन्त पचमी	"
८ मार्च	"	महाशिवरात्रि	"
८ अप्रैल	"	चैत्य अमावस्या	"
१० अप्रैल	"	नवसंवत्सर	"
१३ अप्रैल	"	बैशाखी	"
१४ अप्रैल	"	मुख्य कुम्भ	"
१८ अप्रैल	"	रामनवमी	"
२४ अप्रैल	"	पूर्णिमा चन्द्रग्रहण	"

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य समाजों के माननीय प्रधान व मन्त्री जी से आर्यमित्र के माध्यम से अनुरोध किया जा चुका है कि अपनी समाज के निर्वाचन को जिला सभा के माननीय प्रधान या मन्त्री से या आर्य प्रतिनिधि – सम्मानित सदस्य से प्रमाणित करा कर भेजें तभी हम निर्वाचन आर्य मित्र मे प्रकाशित कर सकेंगे।

सम्पादक

शोक सम्वेदना

दु:ख है कि श्री रामचन्द्र शर्मा स०वि० एव भजनोपदेशक खालसा गज मुरादाबाद के बड़े भाई श्री विश्वनाथ जी त्यागी का लम्बी बीमारी के बाद दिनांक १९ दिस० ८५ को देहान्त हो गया अन्त्येष्टीय संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। प्रभु से दिवंगत आत्मा की चिरशांति एव शोकाकुल परिवार के धैर्य हेतु प्रार्थना की गई। सम्वाददाता

अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित करते हैं कि हमारे परमपूज्य महाशय बनवारी लाल जी आर्य–स्वतन्त्रता सेनानी एवं आर्य जगत् के मूर्धन्य समाज सेवी का निधन ३-१-८६ को प्रात बेला मे हो गया है। तथा शांति यज्ञ बृहस्पतिवार दिनाक ९-१-८६ को अपरान्ह २ बजे पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

रामशरण आर्य

अधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीनआर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्रीविश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० न २२४१/५७ घोषणा पत्र म० ७ / २८-२-८५

वर्ष ८९]मा० माघ ६,१३, माघ कृष्ण १,८ रविवार सवत् २०४२ वि०, दि०, २६ जनवरी, २ फरवरी १९८६[अङ्क ४-५

प्रार्थना

ओं आतिष्ठन्त परि विश्वे ऽ अभूषञ्छ्रियो वसानश्चरति स्वरोचि । महत्तद्वृष्णो ऽ असुरस्य नामा विश्वरूपो ऽ अमृतानि तस्थौ ।।–यजु ३३।२२

भावार्थ–सब विद्वान राजासन पर स्थित हुए राजा को भली-भांति अलंकृत करते हैं। वह राजा राजलक्ष्मियों को धारण करता हुआ स्वतेजवाला होता हुआ विचरता है। तथा सुख वधक प्राणदाता राजा का बहुत बड़ा नाम है। वह विश्व रूप होकर अनश्वर सुखो मे स्थित होता है।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–
मनमोहन तिवारी
सम्पादक–
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

आध्यात्मिक–राजनैतिक–सामाजिक क्रांति के भारत में प्रथम उद्घोषक



दयानन्दसरस्वती

सन् १८५७ की प्रथम जन क्रान्ति विदेशी शासन को उखाड फेंकने के लिए हुई जो कतिपय भारतीय गद्दारों के कारण असफल रही। बीस वर्ष भी नहीं बीत पाये कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह का मन्त्र फूंक दिया। स्वदेशी महिमा प्रस्तुत की और वैदिक आदर्श वाद को प्रस्तुत करके राष्ट्र मे सामाजिक–राजनैतिक और आध्यात्मिक नव चेतना को जन्म दिया। श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय आदि सिर पर कफन बाध कर स्वातन्त्र्य युद्ध मे कूद पडे। देश से अशिक्षा, रूढिवाद, जातिवाद तथा स्त्री एव दलितों के उद्धार मे आर्यसमाज ने आन्दोलन प्रारम्भ किया। महात्मा गांधी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा ली तथा स्वतन्त्रता के युद्ध मे आर्य जन प्रथम पंक्तियो में आये। क्रान्तिकारी आजाद और बिस्मिल भी सत्यार्थ प्रकाश से अनुप्रेरित हुए।

२६ जनवरी के पावन पर्व पर आर्य जन ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के आदर्शों से शक्ति प्राप्त करके देश से भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता एवं देशद्रोही विचारों के उन्मूलन मे पूर्ण योगदान दें।

ओ३म्
आर्य मित्र



सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार, , २६ जनवरी व २ फरवरी १९८६ दयानन्दाब्द १६१
सृष्टिसम्वत १९७२९४९०८६

राष्ट्र नेताओ के लिए आत्म मन्थन—

छब्बीस जनवरी

छब्बीस जनवरी भारतीय राष्ट्र मे एक पावन दिवस है। क्योंकि छब्बीस जनवरी सन उन्नीस सौ तीस को रावी नदी के पावन तट पर लाहौर (अखण्ड भारत) मे कांग्रेस के अधिवेशन मे प्रस्ताव पास किया गया था कि भारत पूर्ण स्वाधीनता चाहता है सर्वशक्ति सम्पन्नता'। तथा छब्बीस जनवरी सन् उन्नीस सौ पचास को भारतीय संविधान जो सर्वसत्ता सम्पन्न है क्रियान्वित हुआ और गवर्नर जनरल के स्थान पर श्री राजेन्द्र बाबू राष्ट्रपति हुए।

धीरे-धीरे देश को स्वतन्त्र हुए छत्तीस वर्ष हो गये। गांधी के रामराज्य के नारे पर देश के युवकों ने आत्म बलिदान किया और राष्ट्र मे राष्ट्रीय स्वर वैदिक सद्ज्ञान पर आधारित राष्ट्र का मार्ग निर्देशक होगा इस आशा से आर्य समाज का प्रबल आन्दोलन राष्ट्रीय आन्दोलन में बदल गया। परन्तु खेद है कि न तो हम राम राज्य ला पाये बल्कि आज गरीब और अमीर की दूरी बढती जा रही है देश मे आदिवासी हरिजनों की समस्यायें उलझी पडी है तथा भारतीय राष्ट्र के नायक नीति और चेतना के लिए योरुप का मुंह ताकते हैं। अत स्वाभाविक है कि वह व्यक्ति जो राष्ट्र मे राष्ट्रीय गौरव का स्वप्न देखते थे भी दुखी है। आज भारत के किसान और मजदूर की पहुच शासन सत्ता तक नहीं है। आज शासन तन्त्र इंगलैण्ड और इटली के गीत गाने मे सलग्न हैं। आत्म चिन्तन और अध्यात्मा को पीछे हटा कर खोखले विज्ञान के संगीत सुनाये जा रहे हैं। जैसे मुगल दरबारो और अवध के नवाबो के यहाँ चाटुकार नर्तक और नौटकी वादक इकटठे थे वैसे ही कुछ फिर देलही दरबार हो रहा है। न वहा किसानो के सच्चे प्रतिनिधि हैं न मशीनों में जूझते हुए मजदूरो के हितैषी हैं। वहाँ सेवा निवृत्त आई० ए० एस० अधिकारी है, फिल्म के कलाकार हैं जो देश और राष्ट्र को उचित भारतीय चिन्तन देने मे असमर्थ है।

धम निरपेक्षता का गलत अर्थ करके खुले आम अरब के पेट्रो-डालर के पैसे से भारत मे इस्लामी प्रचार हो रहा है। शाहबानो ऐसे मुकदमे को लेकर मुसलमान केन्द्रीय मत्री तक सर्वोच्च न्यायालय और उसके भू० पू० अवकाश प्राप्त प्रमुख न्यायमूर्ति चन्द्रचूड के प्रति अवमानना प्रकट करके भारत के मुसलमानो को फिर से एक नवीन पाकिस्तान के निर्माण का इशारा कर रहे ह। काश्मीर कितना भारत विरोधी हो रहा है सर्वविदित है। अरुणांचल नागालैण्ड और बिहार क कुछ क्षेत्रो मे ईसाई मिशनरी कारगर है। इन सबके कारनामे भारत सरकार देख रही है परन्तु मौन है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश को नैतिकता के आधार पर ऊंचा उठाने के लिए आय समाज का सगठन किया था। गांधी ने हरिजन उद्धार, मदिरा निषेध, विदेश वस्त्र बहिस्कार के आन्दोलन चलाये थे। परन्तु सरकार मदिरा की सरितायें खुले आम बहा रही हे। राष्ट्रीय नेताओ ने खादी और भारतीय वेशभूषा को तिलांजली दे रखी है। राष्ट्र भाषा के स्थान पर ब्रिटिश भाषा प्रमुख है। क्या छत्तीस वर्षो मे राष्ट्रीय नेता विचार करें कि उन्होंने राष्ट्र को कितने प्रवचना मे रखा है। प्रवचना, षड्यन्त्र, अधिक दिनो नहीं चलते हैं। अ- 'आर्य मित्र' अपील करता है राष्ट्र के नेताओ से चाहे जिस दल के हो कि उन्हें आत्म मंथन करके सही दिशा ग्रहण करना चाहिए और आर्य समाज के प्रमुख नेता भी महर्षि दयानन्द सरस्वती से पुन शक्ति और प्रेरणा लेकर राष्ट्र को नवीन चेतना दे और चाटुकारिता छोड़कर शासन सत्ता को राष्ट्रीय भारतीय गौरव को वरण करने की प्रेरणा दें।

गण—तन्त्र

डा० राजेन्द्र वर्मा प्राध्यापक,
जा० दे० ब० राजकीय कन्या महाविद्यालय,
कोटा—३२४००१ (राजस्थान)

गण तो अब भी बंधन मे है, तन्त्र किन्तु निर्बन्ध हो गया।
गण पर अकुश, तन्त्र निरंकुश, उच्छृङ्खलता, स्वच्छन्द हो गया॥

संविधान तो बना दिया, पर कितना होता है अनुपालन ?
सही दिशा मे कितना होता पर विश्रुत विधि का सचालन ?

पारस्परिक, व्यक्तिगत स्वार्थों के हित हो जाते परिवर्तन।
भाई और भतीजा के हित हो जाता प्राय अधिवशन॥

आज व्यक्तिगत लाभो के हित, मन मे सेवा-भाव मिट गया।
मन्त्र लोक-सेवा का गाधी जी के द्वारा दिया पिट गया॥

पहले भी संघर्ष रहा था आपस मे, पर रही एकता।
कहने को अब एक, दरारें पडीं, परस्पर मे अनेकता॥

देश बंट गया लेकिन फिर भी बंटवारे की बात चल रही।
आतकित पजाब प्रान्त मे, है आपस की फूट फल रही॥

अर्थ-नीति के परिवतन से, कहा दीनता दूर हुई हैं।
ऋण की छाया मे विकास की काया चकनाचूर हुई है॥
मत लेने के हित कुत्सित-आरक्षण मे कालाबाजारी।
अनुचित लाभ उठाते उद्योगो से मिलती मालगुजारी।
कमर तोड दी महगाई ने, भ्रष्टाचार पनपता जाता।
शासन, भ्रष्ट-प्रशासन को अनुशासन मे है नहि ला पाता॥
आखो के रहते भी नेता शासन-मद मे अन्ध हो गया।
गण तो अब भी बन्धन मे है, तन्त्र किन्तु निबन्ध हो गया॥
गण पर अकुश, तन्त्र निरकुश, उच्छृङ्खल, स्वछन्द हो गया॥

अध्यात्म सुधा

—धर्मवीर विद्यालकार आचार्य उपदेशक महाविद्यालय टंकारा (जि० राजकोट) पिन ३५ आचार्य अन्तर्राष्ट्रीय संयोजक

श्रद्धावान् एकनिष्ठ भक्त को प्रभु का अचानक दर्शन

पा लिया ! पा लिया !!

उद्वयम् तमसस्परि स्व पश्यन्तउत्तरम् ।

देव देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥

अन्वय —वयम् तमस परि स्व उद् पश्यन्तम्, उत्तरम् देवम्

(पश्यन्तम्) देवत्रा ज्योतिम् सूर्यम् अगन्म ॥

अर्थ —हमने अन्धकार से दूर भले प्रकाश को, आनन्द को अनुभव किया है। फिर उससे भी अधिक भले आनन्द को अनुभव किया है। तदुपरान्त देवो की कोटि से भी श्रेष्ठ, उत्तम ज्योति स्वरूप सूर्य के समान अद्वितीय प्रकाश एवं आनन्द रूप भगवान को पा लिया है। अत्यधिक श्रद्धा, सम्पूर्ण अपूर्व निष्ठा और आस्तिकता के कारण ऐसा प्रतीत होने लगता है कि मैंने उस वाञ्छनीय परम तत्व को पा लिया है।

मनसा परिक्रमा के छ मन्त्रो द्वारा हम छ दिशाओ से अपने को द्वेषरहित कर चुके हैं। राग और द्वेष एक ही वस्तु के दो पहलू होने से वस्तुत एक ही वस्तु हैं। राग तो अच्छी पहलू है । द्वेषही दुखदायी चिन्तावर्धक और छटपटाहट का कारण है। बन्धन तो राग और द्वेष दोनो से होता है। पर इन दोनों मे द्वेष अति अनिष्टकारी अर्थात् गलत काम करने मे प्रेरणा देने वाला है । उसे प्रभु के न्याय तुला पर धर मानव निश्चिन्त होते ही जो परम आनन्द क्रमश पाने लगता है, उसी का संकेत इस मन्त्र में है।

द्वेष रहित होने पर वह पहले सासारिक सम्बन्धो, पदार्थो मे आनन्द पाता है। फिर उससे ऊपर उठ देवत्व या मैत्री दया, न्याय, उपकार, दान आदि दिव्य गुणो को धारण कर दिव्य आनन्द को अनुभव करने लगता है। इस प्रकार के निरन्तर अभ्यास के अनन्तर उसे परमैश्वर्यवान् सर्वोत्तम ज्योतिस्वरूप सूर्य के समान दीप्तिमय भगवान के आनन्दमय स्वरूप का आभाष होता है। उसे ऐसा लगता है कि मुझे इस आलौकिक, दिव्य, नित्य, अजर, अमर, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त का दर्शन हो गया है। "आर्शि" जब उसको विज्ञान के रहस्यमय नियम का पता चला तो वह टब मे से उठकर मात्र निकला और चिल्लाने लगा "यूरेका यूरेका (पा लिया पा लिया)। उसे यह ध्यान ही न रहा कि वह नंगा ही चला आया है। इसी प्रकार की दशा भक्त की तब हो जाती है। वह श्रद्धातिरेक से चिल्ला उठता है—

"अगन्म अगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।"

चित्तवृति के निरन्तर निरोध, यम, नियम, आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार बाल अगो का सतत अभ्यास फिर धारणा-ध्यान-समाधि अन्तरंग अगो की अविकल्प परिचर्या से सम्प्रज्ञात तत्पश्चत् असप्रज्ञात समाधि का लाभ होता है। अनेकों विघ्नों-बाधाओं को पार करते हुए मोक्ष की स्थिति तत्पश्चात् निःश्रेयस का अधिगम होता है।

इतनी लम्बी, कठोर जटिल साधना से पूर्व ही, भक्त की आस्तिकता की पराकाष्ठा और निष्ठा की चरम सीमा के कारण, उसे जो भगवान की एक भूली-भटकी किरण का आभास मिलता है, उसके अतीव शुद्ध, सात्विक, सरल प्रसादपूर्ण आनन्द की अनुभूति से ऐसा आभास होता है कि भगवान को उसने पा लिया है। तब वह चिल्ला उठता है— "अगन्म, अगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥"

संसार को अनेको सन्तों ने मिथ्या कहा है। भक्तों ने उन्हे सत्य वचन माना है, पर स्वीकार नहीं कर पाये। संसार को उसके चमत्कार को, अनुपम शब्द को, मधुर रस को मनोहारि गन्ध को, कोमल स्पर्श को-एकदम असत्य, झूठ कैसे मान ले। नहीं मान सकते। सन्तों की वाणी को भी सच मानता है। इस पहेली में परेशान है। इन सबको छोडकर अन्यत्र क्या सुख हो सकता है ? उसकी कल्पना चाहे कर लें, जन साधारण नहीं कर सकता। ध्रुव को छोड अध्रुव को ग्रहण करने मे बुद्धि मानी नहीं। पर जन साधारण के लिए जो वर्तमान है, जो इन्द्रिय ग्राह्य है, वही सत्य है, वही ध्रुव है। ठीक है नष्ट होता है तो और मिल जाता है। इसलिये इन्द्रियातीत आनन्द के अस्तित्व को किसी प्रकार स्वीकार करन उसे भाता नहीं। वह सन्त की वाणी मे "हां जी, हा जी" मिलाता रहेगा। तबले पर चलती हुई अँगुलियो की तरह या नर्तक के पदो की अविरल क्रमबद्ध ताल के समान वह चाहे कुछ कह दें, उसका मन उसकी गवाही नहीं देता।

इन्द्रियातीत, परम शुद्ध, सात्विक, प्रसादपूर्ण आनन्द के प्रति इस प्रकार के अविश्वास की स्थिति मे, जब भक्त के श्रद्धा से घनीभूत आतिकता की आस्था से सान्द्र हृदय पटल पर सूर्यरूपी प्रभु की भूली भटकी एक किरण का दूर से प्रकाश (कितना सूक्ष्म होगा वह) दीख पडता है तो उसका अविश्वास डगमगा जाता है। वह आनन्दातिरेक मे चिल्लाता है—

"अगन्म अगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥"

कलकत्ता मे वेदार्थ कल्पद्रुम के प्रणेता आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री-सम्मान समारोह के उपलक्ष मे

सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री राम गोपाल शालवाले महोदय का उद्बोधन--चुनौती

१९ विधान सरणी कलकत्ता के आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर उपलक्षित सम्मान के समायोजन के लिए कलकत्ता आर्य समाजियो की प्रशसा करते हुए अपने भाषण मे श्री शालवाले महोदय ने संसार के सभी मजहबों को चेतावनी दी कि वे चिरंजीवी नहीं है, वे सब के सब कटाव करने वाली नदी के तट वृक्ष हैं, वे तर्क और युक्तिवाद की लहरो की थपेड़ों से टकराकर गिर जाने वाले है। केवल वैदिक धर्म ही एकमात्र सृष्टिक्रम के अनुकूल वैज्ञानिक तर्क की कसौटी पर खरा उतरने वाला है, जिसका उद्घोष इस युग के महान सुधारक क्रान्तदर्शी महर्षि ने किया है।

'वेदार्थ पारिजात' के द्वारा पौराणिक संस्कृत विद्वान श्री करपाली ने 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' का अपनी दृष्टि मे सबल खण्डन करके

शेष पृष्ठ ४ पर

हिन्दू समाज को खतरा

ऐ० शंकर
३६ फीरोजा मेशन ग्रान्ट रोड, स्टेशन के सामने
बम्बई–४०००७–फोन

इतिहास साथी है भारत के समय-समय पर हुए विभाजन का इस प्रत्येक विभाजन पर अपनी मातृभूमि का बहुमूल्य भाग विदेशियो के हाथ चला गया और उसके साथ ही चले गये हमारे अनेको पवित्र मन्दिर हमारी अद्भुत संस्कृति की अमूल्य कलाकृतियां सर्व प्रथम अफगानिस्तान गया उसके बाद बर्मा, सीलोन, पाकिस्तान, और बगला देश गया। और अब पुन हमारी मातृभूमि के विभाजन का षड्यत्र चल रहा है उन विदेशी शक्तियो द्वारा जो अपने ५ गहरे स्वार्थो की पूर्ति के लिए भारत को लेबनान व बेरूट बनाकर उसे अपने अधिकार क्षेत्र मे बांट लेना चाहते हैं।

आज से ३०-४० वर्ष बाद हिंदू लोग अपने देश से उसी तरह निकाल दिये जायेंगे जैसे बगला देश व पाकिस्तान निकाल दिये गये। फर्क सिर्फ यही होगा कि पाकिस्तान से हिन्दू लोग अपने भारत देश में आ सकें जबकि भारत से खदेडे हुए हिन्दुओ को हिन्द महासागर के अलावा दूसरा कोई स्थान नहीं रहेगा। यह तथ्य नीचे लिखी पक्तियो को पढकर आपको स्वय स्पष्ट हो जायेगा यह सब इसलिए हो रहा कि दुर्भाग्यवश आज भी हिन्दू समाज गहरी नींद मे सो रहा है।

१ इस्लामिक देशों ने एक षड्यन्त्र रचा है, वे सऊदी अरेबिया से लेकर इडोनेशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के सम्पूर्ण दक्षिणी अचलको अपने राजनीतिक शोषण के दायरे मे लाने के लिए वहा क समस्त जनता का धीरे-धीरे धर्म परिवर्तन करके उसे एक स्लामिक क्षेत्र मे बदलना चाहते हैं। इस कार्य के लिए २००० करोड रूपयो की राशि खर्च की जाने वाली है। मस्जिद व अन्य मुस्लिम प्रधान संस्थाओं व क्षेत्रों मे अस्त्र-शस्त्र भरे जाते हैं। ताकि अवसर आने पर उनका उपयोग किया जा सके। मुस्लिम व ईसाइ देश ये बात जानते हैं कि भारत देश को युद्ध मे नहीं जीता जा सकता पर उसे, धर्म परिवतन, सांस्कृतिक तोड फोड षड्यन्त्र व विश्वासघात द्वारा अपने अधिकार मे लिया जा सकता है। इस दिशा मे पाकिस्तान अग्रणीय भाग ले रहा है तथा भकित आतकवादी सिखो को सहायता पहुचाकर भारत में भारी गडबडी उत्पन्न करना चाहता है।

डा० फारूख अब्दुल्ला की पार्टी के प्रमुख सदस्य मौलाना अताउल्ल सुहरावर्दी ने अभी हाल में काश्मीर लेजिस्लेटिव असेम्बली मे 'हिन्दुओ के प्रति विष उगला है तथा भारत की ब्रिटिशईस्ट इण्डिया कम्पनी से तुलना करते हुए कहा है कि "काश्मीर ने पाकिस्तान के बजाय भारत मे अपना विलय इसलिए किया है कि वो सम्पूर्ण भारत मे इस्लाम का प्रसार करके अपना धार्मिकर्तव्य पूरा करना चाहता है। पाकिस्तान जैसे सम्पूर्ण इस्लामिक देश मे इसकी गुजाइश नहीं थी। इस योजना के अन्तगत काश्मीर के सैकडों गांवों को हिन्दू नाम बदलकर मुसलमानी नाम रख दिया गया है तथा सैकडो हिन्दू मन्दिर तोड़ दिए गये हैं।

२ लनन के (अगस्त ८ सन् १९८१) इकोनोमिस्ट अखबार ने

(पृष्ठ ३ का शेष)

एक गर्व भरी गर्जना और चुनौती की थी। उनके जीवन काल मे ही आर्य समाज की ओर मे उन्हें पता नहीं था कि एक महर्षि भक्त युगल आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री और उनकी इस धर्म पत्नी आचार्या निर्मला देवी ने त्यागपूर्ण निर्लोभ भाव मे बडी तपस्या कर 'वेदार्थ कल्पद्रुम' ग्रन्थ की रचना कर, श्री करपात्री जी और उनके १४ विद्वानों द्वारा लिखे पारिजात का, न केवल मुहतोड उत्तर ही दिया है, बल्कि इस आचार्य दम्पति ने महर्षि की भूमिका का सप्रमाण प्रत्यक्षर तीखी तर्कों से खण्डन किया है। मैं इन दोनों का हृदय से अभिनन्दन करते हुए प्रभु से चिरायुष्य की की कामना करता हू। आगे उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक सभा शेष खण्डो को शीघ्र प्रकाशित करने को कृतसकल्प है।

'वेदार्थ पारिजात' के अन्त मे श्री करपात्री का यह लिखना दम्भ पाखण्ड और मिथ्या घमण्ड ही है कि 'आर्य समाजियों में जन्म-जन्मान्तर मे भी इसका उत्तर देने का सामर्थ्य पैदा नहीं होगा। आर्य समाज के इस अकेले आचार्य दम्पती ने बडी शालीनता-पूर्ण वि[illegible] से करपात्री जी के गर्व और मद को चकनाचूर ही नहीं किया, प्रत्युत पौराणिको के मिथ्याडम्बर और अवैदिक मान्यताओ को सदा-सदा के लिए ध्वस्त और धराशायी कर दिया।

अब किसी पौराणिक या अन्य मे साहस नहीं होगा कि ऋषि के सिद्धान्तो पर खण्डनात्मक कलम कल्पान्त तक उठा सके, ऋषि की भाष्य भूमिका के लिए 'वेदार्थ कल्पद्रुम' एक स्थायी कवच है, अन्त मे शालवाले महोदय ने आचार्य जी को माल्यार्पण कर सम्मान किया।

सम्मान समारोह की बेला मे डा० उमाकान्त उपाध्याय प्रोफेसर कलकता विश्वविद्यालय डा० वाचस्पति उपाध्याय सस्कृत प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्याल ने ग्रन्थ की भूरि-भूरि प्रशसा की। समारोह सयोजक श्री राम आर्य, स्वागताध्यक्ष पद्म श्री घनश्याम दास गोयल, श्री चांदरत्न दम्माणी प्रधान बडा बाजार, श्री सीता राम प्रधान कलकत्ता आर्य समाज श्री रघुवीर जी, श्री फूलचन्द जी, आदि ने माल्यार्पण कर शाल तथा ९००१ रू० भेंट प्रदान कर आचार्य दम्पति का अभिनन्दन किया। समारोह की अध्यक्षता स्वतन्त्रता सेनानी श्री मिश्री लाल ने की।

अन्त मे आचार्य जी ने इस सम्मान को भावविभोर स्थिति मे रुधे गले से महर्षि के सिद्धान्तों और गुरुवर प० बिहारी लाल जी शास्त्री का सम्मान कहा जिन्होंने इस ग्रन्थ को लिखने की प्रेरणा और सामर्थ्य दी है।

सवाददाता

लिखा है कि कवेतक के अरब टाइम्स के अनुसार लदन स्थित इस्लामिक कल्चरल सोसाइटी की एक महत्वपूर्ण योजना यह है कि ११ करोड हरिजनों मे से कम से कम ८ करोड हरिजनों को धर्म परिवर्तन की एक लहर उत्पन्न करके मुसलमान बना लिया जाय। इससे यह षड्यन्त्र विश्व हिन्दी परिषद की एकात्मता यात्रा तथा अन्य प्रयत्नों द्वारा कुछ समय के लिए रोक दिये गये हैं पर इस्लामी देश अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए दिन रात कार्यरत हैं। इतिहास का साक्षी है कि जहां भी हिन्दू समाज कमजोर हुआ है वो भाग

(क्रमश)

गाधी जी की पुण्य-तिथि पर विशेष—

तीस जनवरी की याद

श्री रामकृष्ण 'भारती'

—बी–७८, बालीनगर, नई दिल्ली १५

तीस जनवरी का दिन हमारे देश के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण दिन है। इसी दिन आज से अड़तीस वष पूव बापू का बलिदान हुआ था। महात्मा गांधी १९२० ई० से अपने बलिदान होने तक भारतवर्ष की राजनीति पर पूर्णरूप से छाये रहे। वे १९३४-३५ मे हरिजन आन्दोलन के दौरे पर लाहौर आये। तब हम सह्यमहाविद्यालय लाहौर के छात्र थे। बापू की सेवा करने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ। लाजपत भवन मे डी० ए० वी० कालेज के समीप उनके निवास की व्यवस्था के सम्बन्ध में हम विद्यार्थियों की भी स्वयसेवको के रूप मे ड्यूटी लगाई गयी। फिर १९३६ ई० मे, अक्तूबर मास मे, आचार्य काका साहेब कालेलकर लाहौर पधारे तथा उनके भाषण का राष्ट्रभाषा प्रचारक सघ लाहौर की ओर से लाजपत भवन मे आयोजन करने का सौभाग्य हमे प्राप्त हुआ। तब हम डी० ए० वी० कालेज लाहौर मे एफ० ए० के छात्र थे। हमे उस अवसर पर लाहौर से बापू के लिए मिट्टी का तन्दूर वर्धा ले जाने का डा० गोपीचन्द भार्गव की ओर से आदेश प्राप्त हुआ और हम काका साहेब के साथ वर्धा पहुचे। हमारे निवास की व्यवस्था हरिजन आश्रम मे काका निवास मे कर दी गयी तथा हमे उनके निकट छ मास तक रहने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। वर्धा मे रहते हुए हम प्राय प्रति रविवार को प्रात बापू के दर्शनार्थ सेवाग्राम जाया करते थे।

तीस जनवरी, १९४८ का दिन। हम अपने विद्यालय का अध्यापन कार्य करके चादनी चौक से ट्राम के द्वारा सब्जी मण्डी जा रहे थे। अभी सब्जी मण्डी पहुचे ही थे कि बाजार में कोहराम मच गया। 'बापू पर गोली चली है।' उनकी प्रार्थना सभा मे किसी ने उन पर गोलिया चलाई और वे हम सब को हाहाकार करते हुए छोड गए। हम उन दिनो, दिन मे एक स्थानीय विद्यालय मे और रात्रि मे दैनिक 'अमर भारत' के सम्पादकीय विभाग मे, कार्य करते थे। गाधी जी की प्रार्थना सभा की सामग्री का चयन प्राय हमे ही करना होता था उसी रात्रि को हम बिडला भवन पहुचे तथा दूसरे दिन राजघाट तक की यात्रा में भी सम्मिलित हुए। श्री जवाहर लाल नेहरू का रेडियो पर भाषण सुनने तथा गांधी जी की अन्तिम यात्रा मे सम्मिलित होने का भी हमे अवसर प्राप्त हुआ।

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने अग्रेजी तथा हिन्दी मे गाधी जी के सम्पूर्ण वाङ्मय का प्रकाशन किया है। अग्रेजी मे इसके ९० तथा हिन्दी मे ८० के लगभग खण्ड अबतक प्रकाशित हो चुके हैं। ३० जनवरी, १९४८ का विवरण बापू के सम्पूर्ण वाङ्मय के ९० वे खण्ड मे ही प्रकाशित हुआ है और उसमे प्राय वे ही बातें प्रकाशित हुई हैं जिन्हे प्राय पाठक समाचार पत्रों मे समय-समय पर पढ़ते रहे हैं।

आज हम पाठकों का ध्यान उस समाचार की ओर आकर्षित करना चाहते हैं, जो पिछले वर्ष स्थानीय 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के ३१ जनवरी १९८५ के अक मे प्रकाशित एक लेख के माध्यम से प्रकाश मे आया है। उक्त लेख के लेखक श्री नारनदास चकर हैं। इस लेख मे लेखक ने यह लिखा है कि मनुबेन, जो उन दिनो बापू की सेवा मे निरन्तर रहती थी तथा आभाबेन के साथ बापू को लाठी के समान सहारा देती थीं, ने उन्हे यह बताया कि बापू के हत्यारे श्री नाथूराम गोडसे उनकी हत्या के कुछ घण्टे पूर्व भी बिडला भवन मे आए थे। लेखक के अनुसार (बाप की दोहती पोती) मनुबेन ने उक्त बात उन्हे तब बताई, जब वे भावनगर के महुआ स्थान पर १९६६ ई० मे उनसे मिले और उन्होने उन्हे ३० जनवरी, १९४८ तथा उसके एक दिन पूर्व का पूर्ण विवरण दिया। मनुबेन का कहना था कि उस समय उसने यह समझा था कि श्री गोडसे सम्भवत गाधी जी का अनुयायी अथवा भक्त रहा होगा तथा उसने यह सोचा भी न था कि वह बापू पर कुछ घटो के पश्चात् गोलियां चलायेगा।

मनुबेन ने उन्हे बताया कि गोडसे बिडला भवन मे १२ बजे दोपहर के मध्य आया तथा उसने मनुबेन से पूछा कि गांधी कहा बैठते तथा सोते है? मनुबेन का कहना था कि उन्हे उस व्यक्ति के ऐसा पूछने पर कोई अनहोनी अनुभव नहीं हुई, क्योकि हजारो व्यक्ति बापू के दर्शनार्थ आया करते थे तथा उनके सम्बन्ध मे ऐसी पूछताछ किया करते थे। मनुबेन को इस बात का तनिक भी विचार नहीं आया कि जो व्यक्ति दोपहर के समय गांधी जी के सम्बन्ध मे पूछताछ कर रहा था वह गाधी जी की हत्या की योजना बना रहा था। उनके विचार मे यह बात और भी पहेली के समान अजीब लगती है कि उसने उसी समय बिडला भवन मे बापू पर गोली क्यो नहीं चलाई, जबकि उसने कुछ घटे शाम तक प्रतीक्षा करना उचित समझा। यदि गोडसे चाहता तो वह बापू पर तभी गोली चला सकता था। हो सकता है, उसने बापू को सोते हुए देख कर अपना विचार उस समय त्याग दिया हो मनुबेन का कहना था कि कोई अन्य व्यक्ति उक्त घटना को नहीं जानता। उन्होने सम्बद्ध व्यक्तियो को उस व्यक्ति के सम्बन्ध मे सूचित कर दिया। बाद मे जब गोडसे ने गाधी जी पर सायकाल को गोली चलाई, तब मनुबेन ने प० नेहरू तथा सरदार पटेल दोनो को बता दिया था कि यह वही व्यक्ति है, जो मध्याह्नोत्तर के समय बिडला भवन आया था। पुरानी बातो को स्मरण करते हुए मनुबेन ने लेखक को यह भी बताया कि दूसरे दिन बापू और मनुबेन को सेवाग्राम जाना था तथा फरवरी मास मे उनका कार्यक्रम कराची जाने का था। बापू की कराची यात्रा की व्यवस्था पहले ही की जा चुकी थी, पर यह सब नहीं होना था।

एक अन्य घटना का उल्लेख करते हुए मनुबेन ने लेखक को बताया कि सम्भवत गांधी जी को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। बापू ने श्री किशोर भाई मश्रुवाला को एक पत्र लिखा था, जो अन्य कागजो के साथ ही पडा रह गया तथा बापू को यह बात अच्छी नहीं लगी। उसने बापू से जब यह पूछा कि क्या वह उस पत्र मे एक और पक्ति लिख सकती है कि वे वर्धा जाने वाले हैं तो गाधी जी ने उत्तर दिया, कल की कौन जानता है? यदि हमारा कार्यक्रम अन्तिम रूप से निश्चत हो जाता है, तो मै आज साय की प्रार्थना सभा मे ऐसी घोषणा कर दूगा। किन्तु मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि यह पत्र अब तक डाक मे नही डाला गया और पडा रह गया। यद्यपि डाक मे पत्र डालने का काय तुम्हारा नही, पर तुम इस उत्तरदायित्व से बच नहीं सकतीं।"

एक अन्य घटना का उल्लेख करते हुए मनुबेन ने बताया—उसी दिन (३० जनवरी को) प्रात गाधी जी को पता चला कि उनके साथ

रहने वाले लोगो में से एक अभी नहीं जागा। गांधी जी ने इस पर यह कहा कि उन्हें इस बात का दुःख है कि वे उन लोगो पर भी अपना प्रभाव नहीं रखते, जो उनके साथ रहते हैं। वे प्रार्थना को आत्मा को स्वच्छ करने वाला झाडू समझते थे तथा उन्हे प्रार्थना मे अटूट और दृढ़ विश्वास था—'यदि मेरे साथ रहने वाले प्रार्थना को पसन्द नहीं करती, तो उसके लिए मेरे घर को छोड़ जाना अच्छा होगा। ऐसा हम दोनों के लिए ठीक ही होगा। यदि तुम काफी साहस जुटा सको, तो कृपया मेरी ओर से उसे बता देना। मुझे उसका ऐसा व्यवहार नहीं रुचा। मेरी इच्छा है कि भगवान मुझे यह सब देखने के लिए जीवित नहीं रखें।

इन शब्दों के साथ बापू ने मनुबेन को यह भजन गाने को कहा—'था के नाथाकेर छत्तानी हो मानवी ना लाजे बिसोमो' (गुजराती) अर्थात् 'थके हो अथवा नहीं, मानव, आराम मत करो।'

मनुबेन का कहना था कि उसे इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि बापू उस दिन क्यों इसी विशेष भक्तिगीत के लिए आग्रह कर रहे हैं। ऐसा उनके लिए अभूतपूर्व था। मैंने सोचा—संभवत बापू उपवास करने की सोच रहे हैं। मैं बापू से अनुमति प्राप्त करके उस दिन आभाबेन के साथ जो बापू को मेरे साथ दूसरे हाथ का सहारा देती थीं, अपने किसी सम्बन्धी से मिलने नगर गई। हम दोनो ४ १५ बजे साय वापस लौटीं। जब हम लौटी, तब बापू तथा सरदार पटेल काठिया वाड के सम्बन्ध मे चर्चा कर रहे थे। तभी श्री यू० एन० ढेबर तथा श्री रसिकलाल पारिख (दोनो सौराष्ट्र नेता) आये तथा उन्होने गाधीजी से मिलने की इच्छा प्रकट की। गाधी जी ने मुझसे कहा, "दोनों से कहो यदि मै जीवित रहा तो वे मुझसे प्रार्थना के बाद भ्रमण के समय बात कर सकते हैं।" मैंने दोनो नेताओ को प्रार्थना के समय तक प्रतीक्षा करने को कहा, क्योंकि यदि वे प्रार्थना के ठीक बाद बापू से नहीं मिलते तो सम्भवत उन्हे बापू से मिलने का अवसर खोना पड सकता है। दोनों ने प्रतीक्षा करने का निश्चय कर लिया।

गांधी जी सरदार पटेल के साथ बातें करने मे इतने व्यस्त थे कि उन्हे प्रार्थना मे दस मिनटो को देर हो गयी थी। उस दिन की दुःखान्त बातो को स्मरण करते हुए मनुबेन ने बताया—बापू चार सीढ़ियां ऊपर चढ़े तथा उन्होने ऊपर की ओर देखा। तब उन्होने प्रार्थना के लिए जुडे हुए हाथो को ऊपर उठाया तथा एकत्रित लोगो का स्वागत किया तथा आगे चलने लगे। मै दाहिनी ओर चल रही थी तथा आभा बाई ओर। मेरी ओर से एक बलशाली युवक, जो खाकी कपड़ों मे था, अपने दोनों जुड़ हुए हाथो के साथ भीड मे से मार्ग निकालते हुए आगे की ओर हमारे समीप आया। मैंने सोचा कि वह बापू के पैर छूना चाहता है, क्योंकि ऐसा प्राय प्रतिदिन होता रहता था। मैने उस युवक को हटाया और कहा—बापू को आगे ही देर हो गयी है, तुम बापू को क्यों तंग कर रहे हो। किन्तु उस नवयुवक ने बलपूर्वक मुझे इस प्रकार धकेला कि मेरे हाथो से गाधी जी की नोटबुक आदि गिर पड़ीं। ज्यो ही मैं उठाने के लिए नीचे झुकी, तीन गोलिया एक के बाद एक करके चलीं। अंधकार छा गया। वातावरण मे धुआं छा गया तथा आकाश मे गोलियो की आवाज प्रतिध्वनित हुई। गोलियां चलने के बाद बापू के होठों पर 'हे राम!' 'हे राम!' के शब्द थे। पर वे दूसरी बार 'राम' शब्द का उच्चारण पूर्ण नहीं कर पाए। उनके हाथ जुडे हुए थे तथा एक क्षण मे ही वे भूमि पर गिर पडे। कुछ लोगो ने उन्हें ऊपर की ओर पकडने का प्रयत्न किया। आभाबेन भी गिर पड़ीं उन्होने शीघ्र ही बापू के सिर को अपनी गोद मे रख लिया। वे बहुत डर गई थीं। उन्होने अपने जीवन मे पहली बार ही पिस्तौल देखा था यह सारी घटना कठिनता से तीन चार मिनटों मे हो गयी थी। बापू की घडी मे तब ५ बजकर १७ मिनट हुए थे। गाधी जी चिर निद्रा मे लीन थे। उन्हे उनके कमरे मे ले जाने मे कठिनता से दस मिनट लगे होगे। दुर्भाग्य से उस समय कोई डाक्टर वहा उपलब्ध नहीं था। डा० सुशीला नैय्यर के औषधि बक्स मे से भी कोई औषध उपलब्ध नहीं हो सकी। गांधी जी प्राय कहा करते थे, मेरी औषधि तो राम है।" उनकी यह उक्ति सत्य सिद्ध हुई। कुछ देर बाद सरदार पटेल आ पहुचे। उन्होने मनुबेन तथा दूसरो को सान्त्वना प्रदान की। उन्होंने मनुबेन को गीतागान करने को कहा। इस बीच कर्नल भार्गव आये तथा उन्होने बापू का परिक्षण किया। जिस समय वे बापू के शरीर का वक्ष निरीक्षण यन्त्र से परीक्षण कर रहे थे, दो मिनटो तक आशा की एक किरण शेष थी, पर बाद मे उन्होने कहा—'मनु, बापू नह रहे।'

पं० नेहरू का मुख सरदार की गोद मे था, वे शिशु के समान रोने लगे। उनकी दशा अत्यन्त दुःख-पूर्ण थी। जब भी कोई उस समय उस कमरे मे जूतो के साथ प्रवेश करता था तभी नेहरू जी सयम खो देते और 'बदतमीज' कह कर उसे अपने बूट उतारने को कहते। मनुबेन ने बताया कि पं० नेहरू ने उसे कहा, "मनु, पूर्ण शक्ति के साथ गीता का गायन करो। सम्भवत बापू जाग जाए।"

पाठको को उक्त लेख का पूर्ण तथा विस्तृत विवरण देते हुए हमे अपार हर्ष हो रहा है। हम लेखक तथा 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के आभार हैं। बिडला भवन, नई दिल्ली, जिस मार्ग पर स्थित है, उस मार्ग का नाम उसी दिन की स्मृति के रूप मे 'तीस जनवरी मार्ग कहलाता है। वर्ष मे इस दिन बापू की स्मृति मे प्रार्थना तथा स्मृति सभा का आयोजन भी किया जाता है। बिडला भवन अब देश का एक स्मारक भी बन गया है। बापू के भक्त श्री घनश्यामदास बिडला भी अब बा के पास ही पहुच गये हैं। बापू तो आज अमर है।

—दिनाक १ जनवरी १९८६ को ग्राम नसीरपुर भिखन (उन्नाव) निवासी श्री सेवा राम कुरील के यहां नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ पुरोहित का कार्य श्री मोहन लाल आर्य ने किया।

गुरुचरन लाल

—दिनांक ४ दिसम्बर ८५ को आर्य समाज दीवाल हैडी (सहारनपुर) मे हिन्दी दिवस मनाया गया तथा उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का विरोध किया गया प्रस्ताव की प्रतिलिपि मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार को भेजी गई।

मंत्री

—आर्य समाज हासीपुर (मिरजापुर) के सदस्य श्री हौसिला प्रसाद सिंह के माता श्री मती ललवती देवी का निधन दिनाक ३ जनवरी ८६ को हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार श्री यज्ञदेव वानप्रस्थी के पौरोहित्य मे पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ।

रामलाल सिंह मन्त्री

वैदिक धर्म ही हमारा धर्म है

—डा० सुमन—

मेवात् क्षेत्र में आर्य समाज का व्यापक प्रचार

नूह (गुण गॉवा)

आज विश्व के सम्मुख अनेक समस्याएं हैं। एक भयावह वातावरण बना है। दानवता मुंह बाए खडी है। अनेकों साम्प्रदाय अपने-अपने नियम से प्रचार कार्य मे लगे हैं। साम्प्रदाय या मजहब की भावना से उठकर हमें मानव समुदाय की रक्षा एव विश्व शांति हेतु एक सबल एवं समर्थ पग उठाना है। यदि मत मजहब की लडाई को छोडकर हम सब सत्य सनातन वैदिक धर्म को मानव मात्र के जीवन मे ल सकें तो सारे ससार का कल्याण हो सकेगा। यह शब्द हैं युवा आर्य प्रवास डा० आनन्द सुमन के जो मेवात क्षेत्र के एक सप्ताह के प्रवास मे उजीना नूह कुरथला नगिना इत्यादि की विशाल जन सभाओ को सम्बोधित कर रहे थे।

डा० सुमन ने कहा कि मजहब व धर्म एक दूसरे का पर्याय नहीं हो सकता। विद्वानो को यह निष्कर्ष निकालना होगा कि मजहब को धर्म नहीं कहा जाय। धर्म का अथ है धारण करना। मनुष्य मात्र को एक सूत्र मे पिरोकर ससार का उपकार करना। मजहब का अर्थ है मानव समुदाय मे वर्ग खडे करना। धर्म गुरु के आधार पर वर्ग बाँटना। धर्म जोडता है मजहब तोडता है। इसीलिए सभी मानवो को मजहब की दीवारों से थोडा ऊपर उठकर मनुष्य मात्र के कल्याणकारी विवेक पूर्ण मार्ग को अपनाना चाहिए। मेवात् क्षेत्र मे डा० सुमन के क्रान्तिकारी एव विद्वता पूर्ण विचारों को सहस्त्रों मुस्लिम एवं हिन्दुओं ने सुना। लोगों के मन मे आर्य समाज के प्रति श्रद्धा तथा सद्भावना बनी है। नगीना की सभा मे कुछ अराजक तत्वों ने डा० सुमन पर प्राणघातक हमला किया। व उनकी कार को आग लगाने का प्रयास किया। किन्तु पुलिस एवं सभ्य समाज के हस्तक्षेप से इस दुर्भावनापूर्ण कार्यवाही को रोका गया।

टेकचन्द—प्रधान—आर्य समाज नूह। एवं वेद प्रचार मडल मेवात् का इस कार्यक्रम मे समुचित सहयोग मिला।

मन्त्री—आर्य समाज नूह

—दिनाक १५ से २१ दिसम्बर के मध्य 'अखण्ड वेदान्त सत्सग मडल' मदाना मे, श्री स्वामी वेदानन्द जी द्वारा वेदकथा सम्पन्न हुई तथा श्रोताओं मे नवचेतना का संचार हुआ।

अधिष्ठाता

—आर्य समाज ला (देवरिया) का ५३वा वार्षिकोत्सव दिनाक १९ जनवरी से २१ जनवरी १९८६ के मध्य सोल्लास सम्पन्न हुआ जिसमे आर्य जगत के प्रमुख विद्वानो ने भाग लिया।

मन्त्री

—श्री रघुबर दत्त शर्मा भू० पू० प्रचारक ने, सन्यास आश्रम ग्रहण कर लिया और उनका नाम श्री स्वामी विद्यानन्द सिद्धान्त शास्त्री रखा गया।

धर्म प्रकाश आर्य मन्त्री

शुद्धि सस्कार

—आर्य समाज गढमुक्तेश्वर (गाजियाबाद) के सौजन्य से दिनाक ५ जनवरी १९८६ के साप्ताहिक सत्संग मे मुस्लिम नवयुवक महबूब भाई का वैदिक रीत्यनुसार शुद्धिकरण करके उनका नाम राजेश कुमार आर्य रखा गया। —मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हल्द्वानी जिला नैनीताल का वार्षिकोत्सव इस वर्ष दिनांक २४ फरवरी ८६ से १ मार्च ८६ तक बडे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

महर्षि दयानन्द वाक प्रतियोगिता दिनाक २८ फरवरी ८६ को एक विशेष आकर्षण होगा तथा प्रचार का अच्छा साधन होगा नवयुवकों मे चेतना होगी।

अमृत लाल प्रधान

यतिमंडल की आगामी बैठक

वैदिक यतिमण्डल का आगामी अधिवेशन १-२ दिसम्बर ८५ मे रोहतक में सम्पन्न हुए अधिवेशन १-२ फरवरी १९८६ को गुरुकुल आश्रम आमसेना कालाहाण्डी (उडीसा) मे होगा। मेरी सभी पूज्य सन्यासिवग, वानप्रस्थ तथा नैष्ठिकब्रह्मचारियो आदि यतिमण्डल प्रेमियो से अनुरोध है कि अधिकाधिक सख्या मे पहुचें। इस अवसर पर एक विशाल शुद्धि समारोह का भी आयोजन है। उन नवदीक्षित बन्धुओ को अपने आशीर्वाद देना है। गुरुकुल पहुचने के लिए दिल्ली से छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस मे बैठकर खरियार रोड उतरे।

धर्मानन्द सरस्वती आचार्य

गुरुकुल आमसेना (खरियार रोड) कालाहाण्डी (उडीसा)

—आर्य समाज खागा फतेहपुर का वार्षिकोत्सव २५ नवम्बर से २९ नवम्बर तक श्री सन्तशरण सिंह जी की अध्यक्षता म बडी धूमधाम से मनाया गया। मंत्री

—दिनॉक ८ दिसम्बर से १६ दिसम्बर १९८६ तक गुरुकुल सिराथू के आचार्य श्री अशर्फीलाल शास्त्री गुरुकुल ब्रह्मचारियो तथा आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कुशरामजी आर्य फरुखाबाद (मैजिक लैटर्न प्रचारक) के साथ प्रचाफ कार्य क्षेत्रीय ग्रामीण अंचलो समारोह से सम्पन्न हुआ। मंत्री

दुःखद समाचार

दुःखद समाचार है कि भरथना आर्य समाज के लगन निष्ठा वृद्ध महाशय श्री लालमन जी का २१ दिसम्बर ८५ को स्वर्गवास हो गया। वे ८० वर्ष के थे। बीमार अवस्था मे महाशय जी ने अपने हाथों मे १००१ रूपया आर्य समाज को दान मे दिया। मरने के बाद शान्ति यज्ञ मे १११ रूपया इनके पुत्र श्री आनन्द स्वरूप ने आर्य समाज को दान दिया।

श्याममुनी आर्य बालूगंज भरथना (इटावा)

सरकार सुप्रीम कोर्ट का फैसला नहीं बदल सकती

—केन्द्रीय कानून राज्य मन्त्री श्री एच० आर०भारद्वाज

इन्दौर ४ जनवरी (वार्ता) निर्वाह भत्ता सम्बन्धी कानूनो मे फेर बदल किया जायेगा। यह इसलिए कि किसी भी धर्म की तलाक शुदा हर महिला को उचित निर्वाह भत्ता मिल सके।

यह जानकारी केन्द्रीय कानून राज्यमन्त्री श्री एच०आर०भारद्वाज ने यहा दी। वे इन्दौर की तलाक शुदा शाहबानो का सुप्रीम कोर्ट के फैसले को न माने जाने से उत्पन्न विवाद के ऊपर टिप्पणी कर रहे थे।

श्री भारद्वाज ने सवाददाताओ से कहा कि सरकार सुप्रीम कोर्ट का फैसला नही बदल सकती। हां सरकार यह पक्का कर देगी कि किसी भी धर्म की तलाक शुदा हर महिला को निर्वाह भत्ता जरूर मिले। उन्होने कहा कि सुप्रीम कोट के फैसले पर देश भर मे बहस चल रही है।

उन्होने कहा कि भारत के खुले समाज मे सामान्य सिविल कोड होना अच्छा सकेत है पर भारत धर्म निरपेक्ष देश है। यहां के लोगों को इसके लिये पहले अपने आपको तैयार करना होगा यह किसी समाज पर थोपा नही जा सकता।

श्री भारद्वाज ने कहा कि देश की न्यायप्रणाली मे सुधार के लिये कई अन्य उपाय भी किये जा रहे है। लोक अदालतो को प्रयोग के तौर पर शुरू किया गया है। सफलता मिलने पर इसे स्थाई कर दिया जायगा।

श्री भारद्वाज ने कहा कि जिला अदालतो की समस्याओ की जानकारी के लिए वे स्वयं देश मे अब तक सौ से अधिक अदालतो का दौरा कर चुके है। इनमे उत्तरप्रदेश की सभी जिला अदालतें शामिल हैं। (जनसत्ता से साभार)

स्वर्णजयन्ती महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज [illegible]पुरा वराणसी का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव समारोह के साथ दिनाक १९ दिसम्बर ८५ से २२ दिसम्बर ८५ के मध्य सम्पन्न हुआ जिसमे आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एव भजनोपदेशक सम्मिलित हुए।

इस सम्मेलन मे वैदिक यज्ञ, शका-समाधान, भजनोपदेश, भाषण, प्रवचन आदि के साथ दिनांक २२ दिसम्बर को महिला सम्मेलन सुश्री मेधा देवी व्याकरणाचार्या की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ साथ ही इसी अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी हुआ। स्मारिका के यशस्वी सम्पादक श्री ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने विद्वान् लेखको, सह-सम्पादको तथा आर्थिक सहयोग आदि देने वाले सज्जनो के प्रति आभार प्रकट किया। महोत्सव प्रभावशाली रहा। —मन्त्री

जिला आर्योप्रतिनिधि सभा उन्नाव के तत्वावधान मे दिनाक १० जनवरी से १२ जनवरी १९८६ के मध्य मेला तकिया मे यज्ञ, वेद प्रचार एव जन जागरण समारोह सम्पन्न हुआ। आर्य जगत् के अनेक विद्वान् एव भजनोपदेशक सम्मिलित हुए। —मन्त्री

शताब्दि महोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश का

१५ से १८ मई तक—१९८६ के मध्य

डी० ए० वी० कालेज प्राङ्गण—लखनऊ मे

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० को स्थापित हुए एक सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। सौ वर्षों मे सभा ने प्रदेश के आर्य समाजों को सङ्गठित करने और उन्हें दिशा निर्देशन का यथा साध्य प्रयास किया है। शताब्दि समारोह विशद भव्यता के साथ मनाया जायेगा जिसमें आर्यजगत् के मूर्धन्य नेताओं के अतिरिक्त भारत के प्रधान मन्त्री अथवा राष्ट्रपति विशेष अतिथि होगे।

० समस्त आर्यसमाजें आर्य उपप्रतिनिधि सभायें, आर्य जन और उत्तर प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिको से अनुरोध है कि इसे सफल बनाने के लिये हमारे हाथो को सुदृढ़ करें अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सभा को भेजने का प्रयास करें।

इस अवसर पर सभा के १०० वर्ष का इतिहास प्रकाशित होगा। समस्त आयसमाजो की विवरण पत्रिका भी संलग्न होगी। अतः समस्त आर्यसमाजें एक मास के अन्तर्गत अपने समाज का इतिहास अपने क्षेत्र के विगत १०० वर्षों के अन्तराल के विशेष आर्यजनो का परिचय और गतिविधियो का विवरण प्रस्तुत करें जिससे विवरण पत्रिका मे सम्मिलित किया जा सके। इस अधिवेशन की सफलता के पीछे प्रदेश की समस्त आर्यसमाजो का सङ्घेत शक्ति होना आवश्यक है।

इन्द्रराज　　　　मनमोहन तिवारी
प्रधान　　　　मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

शोक समाचार

दिनांक ५-१-८६ दिन रविवार को साप्ताहिक सत्सग के पश्चात् समाज की ओर से 'स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी' प० सालीराम शर्मा की ३१-१२-८५ को ८० वर्ष की आयु में ४७ बी आलोकनगर (आगरा)मे निधनपर सवेदना व्यक्त की गई। आप कर्मठ एव सघर्षशील व्यक्तित्व के, धनी कुशल प्रधानाध्यापक के साथ-साथ आर्यसमाज मिढ़ाकुर के कर्मठ कार्यकर्ता थे।

इनकी सेवाओ का स्मरण करते हुए परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति की प्रार्थना की गयी, श्रद्धांजलि के बाद सभा का विसर्जन किया गया। —धर्मेन्द्रकुमार आर्य

—आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् प०बिहारीलाल शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी के दि० ३-१-८६ को आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज बीसलपुर(पीलीभीत) हार्दिक शोक व्यक्त करता है। उनके उठ जाने से पूरा आर्यजगत् शून्यता का अनुभव करता है। यह ऐसी क्षति है जिसकी कालान्तर मे भी पूर्ति होना कठिन है। सभी आर्य समासद् दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु तथा परिवार जनो को धैर्य प्रदान करने को प्रभु से प्रार्थना करते हैं। —डा० पूर्णानन्द प्रधान

सिख महन्त द्वारा आर्य समाज को १५ लाख रुपया दान

नया वर्ष हिन्दू सिख एकता की नई कड़ी से प्रारम्भ

(जलालाबाद (फाजिल्का) मे ज्ञानी गुरबख्शसिंह डी० ए० वी० कालेज का उद्घाटन)

(निजी सम्वाददाता द्वारा)

देश के समस्त हिन्दू समाज की ओर विशेष रूप से आर्य जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी की १९८६ के नये वर्ष के पहले दिन डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी ने भारत पाक सीमा पर स्थित जलालाबाद (फाजिल्का) मे ज्ञानी गुरबख्शसिंह डी० ए० वी० सेंटिनरी कालेज का उद्घाटन किया। इस कालेज के लिये ज्ञानी गुरबख्श सिंह चरिटेबल ट्रस्ट की ओर मे ११लाख ५१ हजार रुपया का चेक प्रो० वेद व्यास जी को भेंट किया गया और आगामी दो मास मे साढे ३ लाख रु० और देने का सकल्प किया।

डिप्टी कमिश्नर सरदार इन्द्रजीत सिह ने उक्त राशि के चेक के अलावा उस भूमि की रजिस्ट्री भी प्रदान की जिस भूमि पर कालेज खुलना है। एस० डी० एम० श्री करतारसिंह और हिन्दू सिख भारी सख्या मे समारोह मे उपस्थित थे। इस कदम से सारे पंजाब मे हिन्दू-सिख एकता की एक नई लहर चलने की आशा की जा रही है। महन्त ज्ञानी गुरबख्श सिंह ने खालसा कालेज खोलने के बजाय डी० ए० वी० कालेज खोलने को प्राथमिकता दी। यह बात शिक्षा के क्षेत्र मे डी० ए० वी० कालेज कमेटी की साख और उसके अद्भुत कीर्तिमान की द्योतक है। हिन्दू सिख एकता की नई कड़ी के अलावा इस घटना को डी० ए० वी० शताब्दी की अत्यन्त शुभ शुरुआत भी माना जा रहा है।

समारोह मे पहले डी० ए० वी० कालेज अबोहर के प्रिंसिपल बी० बी० मेहरा और आर्य समाज जलालाबाद के प्रधान श्री मोहन लाल ने यज्ञ का आयोजन किया। उसके बाद गुरु ग्रन्थ साहब के सामने अरदास हुई। तत्पश्चात प्रो० वेद व्यास जी ने कालेज का उद्घाटन किया। ट्रस्ट के मन्त्री महोदय ने सभा प्रधान प्रो० वेद व्यास जी, सगठन सचिव-श्री दरबारी लाल जो सहायक सचिव प्रि० मदन लाल जी और आर्य प्रादेसिक प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल का हार्दिक स्वागत किया।

ट्रस्ट के मन्त्री महोदय ने ज्ञानी गुरबख्श सिंह जी का परिचय देते हुए कहा कि जिनके नाम से इस कालेज की बुनियाद रखी जा रही है, उनका जन्म सन् १९०९ मे जिला मिंटगुमरी की दीपालपुर तहसील (अब पाकिस्तान) मे हुआ था। ५ वर्ष की आयुमे ही चेचक से बालक के आंखो की रोशनी जाती रही। परन्तु इससे उनके अन्दर की आखें खुल गई। मा अपने सुन्दर बालक की आखो को रोशनी से हीन देख अर्घ-विक्षिप्त हो गयी। बाद मे परिवार वालों ने उन्हे पढने के लिये हरिद्वार भेज दिया। वे निर्मल साधुओ की सगत मे रहे।

जब विद्या की प्यास पूरी नहीं हुई तो वे काशी चले गये। वहा संस्कृत पढी शास्त्री परीक्षा पास की। उपनिषद आदि शास्त्रो का अध्ययन किया। अग्रेजी भी सीखी। स्मरण शक्ति बहुत अच्छी थी। इसलिये केवल गुरु ग्रन्थ साहिब ही नहीं अपितु कुरान भी कण्ठस्थ की। विद्या के साथ वाणी मे भी ओज था। प्रवचनो मे जनता प्रभावित होने लगी। उनके भक्तो मे हिन्दुओ और सिखो दोनो की सख्या बढ़ने लगी।

भगत तारा चन्द का, जो बाद मे महन्त ताराहरि के नाम से विख्यात हुए इनकी ओर ध्यान गया। इनकी योग्यता को देख कर उन्होने अपनी गद्दी का उत्तराधिकारी इन्हीं को घोषित कर दिया। ज्ञानी गुरबख्शसिंह ने गद्दी सभालते ही शिक्षा के प्रचार की ओर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने फाजिल्का मे गुरु नानक भक्ति आश्रम, जलालाबाद मे [illegible] भक्ति आश्रम और सहारनपुर मे तारा हरि भक्ति आश्रम की स्थापना की और उनमे बच्चो की नि शुल्क शिक्षा की व्यवस्था की। ये तीनो संस्थायें अभी तक चल रहीं हैं। अन्त मे उन्होने जलालाबाद मे डी० ए० वी० कालेज की स्थापना के लिये १५ लाख रु० देकर अपने जीवन की चिरकालीन साध पूरी की है।

आर्य सम्मेलन सम्पन्न

सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत

दिनांक १४ से १७ दिसम्बर ८५ के मध्य जिला आर्य प्रतिनिधि सभा गोडा तथा आर्य समाज बडगाव गोन्डा के तत्वावधान मे एक आर्य सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ तथा दिनाक १७ दिसम्बर ८५ की रात्रि को विशाल सार्वजनिक सभा को श्री प० इन्द्रराज जी अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने सम्बोधित किया तथा उपस्थिति जनता सभा प्रधान जी के भाषण एवं प्रवचनो से लाभान्वित हुई। इस विशाल सम्मेलन मे आर्य जगत् के प्रमुख विद्वान एवं भजनोपदेशक सम्मलित हुए। सम्मेलन प्रभावशाली रहा। बलराम गोविन्द मन्त्री जिला आर्य प्रतिनिधि सभा गोन्डा

शुद्धि समाचार

१३, नवम्बर १९८५, आर्य समाज मलाही, पूर्वी चम्पारण (बिहार) के तत्वावधान मे तायरा खातून ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया जिनका नाम तारा देवी रखा गया। पुरोहित श्री इन्द्रदेव जी वर्मा विद्या वाचस्पति एवं मुख्य वक्ता श्री जागेश्वर प्रसाद 'निर्मल' एम० ए० की उपस्थिति मे हजारों हजार की संख्या मे क्षेत्रीय जनता ने भाग लकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे योगदान दिया।

(२)

हिन्दू परिवार की अपहृत बालिका पूर्व नाम सीमा कुमारी जिसका वेश्या गृह मे नाम रेहाना खातून था आर्य समाज मलाही पूर्वी चम्पारण (बिहार) के अधिकारियों के सतत प्रयास से उसे नाटकीय जीवन से मुक्ति मिली। दि० ७-१-८६ को शुद्धि संस्कार के बाद नाम सीमा कुमारी रखा गया और दि० ८-१-८६ को श्री गणेश चन्द्र चौधरी (मैथिल ब्राह्मण) के साथ प० जागेश्वर प्रसाद 'निर्मल' एम० ए० एव बिन्देश्वरी जी के पौरोहित्य मे सोल्लास विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। हजारो हजार को सख्या मे उपस्थित होकर क्षेत्रीय जनता ने वर वधू को आशीर्वाद दिया।

दिनेश कुमार आर्य
मन्त्री आर्य समाज मलाही
पूर्वी चम्पारण बिहार

'हाई स्कूल तक सस्कृत शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिये'

(लेखक श्री सुरेशचन्द्र जी शास्त्री प्रचार मन्त्री, जिज्ञासु सरलतम सस्कृत प्रचार समिति कार्यालय ९८ जी० टी० रोड बहादुर गजप्रयाग)

इलाहाबाद। राष्ट्र भाषा को किस प्रकार प्रतिष्ठित किया जाए, आज यह चिन्ता का विषय है। यदि हम संस्कृत को राष्ट्र भाषा के रूप मे स्वीकार कर लेते तो हमारी यह स्थिति न होती। सस्कृत के प्रति विदेशों मे इतना प्रेम है जिसका अन्दाजा हम नहीं लगा सकते। जो लोग भारतीय संस्कृति की जानकारी लेने आते हैं, यह सस्कृत भाषा मे ही है। जब तक सस्कृत नहीं जानते तब तक भारतीयता व भारतीय सस्कृति का ज्ञान नहीं पा सकते। अत सस्कृत शिक्षा को हाई स्कूल तक अनिवार्य कर देना चाहिये।

उपर्युक्त उद्गार जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति उत्तर प्रदेश द्वारा प्रयागमे आयोजित दस-दिवसीय नि.शुल्क स स्कृत स भाषण शिविर के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रयाग उच्च न्याया-लय के भूतपूर्व न्यायाधीश एवं विश्व हिन्दू परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष प० शिव नाथ काटजू ने आर्य समाज मन्दिर चौक मे व्यक्त किये।

समारोह का उद्घाटन करते हुए इलाहाबाद विश्व विद्यालय के भूतपूर्व कुलपति श्री अवध बिहारी लाल ने कहा कि स स्कृत हमारे भारत वर्ष की कु जी है। हम तभी उसे (संस्कृत की) जान सकते है जब स स्कृत भाषा को जाने। स स्कृत व्याकरण के अतिरिक्त संभाषण के कार्यक्रम को प्रारम्भ कर इस समिति ने सराहनीय प्रयास किया है। आवश्यकता है कि इस प्रकार के शिविर वर्ष-पर्यन्त चलाये जायें जिससे जन-साधारण मे सस्कृत का प्रचार प्रसार हो सके।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रयाग उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री बनवारी लाल यादव ने सभाषण शिविर के ४५ प्रशिक्षार्थियों को 'वाग्विशारद' की मानद् उपाधि वितरित करने के पश्चात् निरन्तर संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार व व्यवहारिक जीवन मे उपयोग का आवाहन किया।

स स्कृत सभाषण शिविर के प्रशिक्षक एव विश्व सस्कृत प्रतिष्ठा-नम् पंजाब के मन्त्री श्री राजा राम शर्मा ने प्रशिक्षार्थियों का संभाषण प्रदर्शन कराते हुए कहा कि संस्कृत भाषा आवश्यक है। इसके बिना हमारी सस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती।

समारोह मे कु० मधु पाण्डेय, आशा श्रीवास्तव, विजय खरे, ममता मिश्रा आदि ने ईश वन्दना, स्वागत गीत व राष्ट्र गीत था श्री सत्य-देव शास्त्री ने अष्टाध्यायी सूत्रपाठ व गजल का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

प्रारम्भ मे समागत अतिथियो का स्वागत समिति के प्रधान श्री विश्वम्भर नाथ अग्रवाल ने तथा अन्त मे मन्त्री श्री राधेमोहन ने धन्य-वाद ज्ञापित किया।

–आयसमाज उतरोला (गोण्डा) का ५१ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ८ मार्च से ११ मार्च १९८६ के मध्य सम्पन्न होगा। –मन्त्री

हा पं० बिहारीलाल शास्त्री

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान प० बिहारी लाल शास्त्री जी के निधन के समाचार को सुनकर, आर्य समाज अल्मोड़ा में दिनांक १२-१-८६ को एक शोक सभा आयोजित की गई, और उन्हें एक निर्भीक वैदिक धर्म प्रचारकके रूपमे स्मरण किया गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को परम शांति, प्राप्त हो तथा परिवार को सान्त्वना भारतवासी ऐसे कर्मठ विद्वान् के जीवन चरित्र से आत्मोन्नति की प्रेरणा प्राप्त करते रहे। मन्त्री

आर्य समाज कायमगंज (फर्रुखाबाद) के कर्मठ सभासद् श्री मुन्शीलाल आर्य का लम्बी बीमारी के पश्चात् दिनाक १५ जनवरी ८६ को फरूखाबाद मे निधन हो गया।

उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीत्य से फर्रुखाबाद में गंगाजी के तट पर वेद मन्त्रों द्वारा श्री दयानन्द शर्मा द्वारा सम्पन्न हुआ।

रामरक्षपाल आर्य

स्व० श्री पं. बिहारी लाल जी के प्रति शोक संवेदना

प्रांत की निम्न आर्य समाजों ने आर्य जगत के प्रमुख विद्वान् एवं वक्ता स्व० श्री शास्त्री जी के प्रति अपनी भाव विह्वल श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है कि प्रभु दिवगत आत्मा को शांति एवं शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करें।

आर्य समाज जौनपुर
आर्य समाज सीसामऊ कानपुर
आर्य समाज ताड़ीखेत
आर्य समाज हरदोई

मन्त्री

समाचार

आर्य समाज स्वरूपनगर कानपुर का ११वा वार्षिकोत्सव एवं चारों वेदों के शतक रविवार दि० ९ फरवरी १९८६ से बहुत उत्साह के साथ प्रारम्भ हो रहा है। पूर्णाहुति बसत पचमी बृहस्पतिवार दि० १३ फर-वरी ८६ को होगी। कार्यक्रम मे आर्य जगत् के प्रमुख विद्वान एवं वक्ता गण सम्मलित होगें। प्रधान

शोक समाचार

आर्य समाज, ज्वालापुर के प्रधान डा० कृष्णदत्त शर्मा का ७२ वर्ष की आयु मे निधन हों गया। वे अपने पीछे पत्नी, ५ पुत्र तथा पांच पुत्रियां छोड़ गये हैं उनकी शव यात्रा मे नगर के अनेक प्रतिष्ठित लोग सम्मिलित हुये। बाद मे एक शोक सभा मे उन्हें भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयीं। मन्त्री

गोवा जहां मुस्लिम पर्सनल ला मान्य नहीं

पणजी, ८ जनवरी। गोवा मे सभी नागरिको के लिए समान कानून होने से तलाक नहीं होता। इसका श्रेय पुर्तगालियों को है, जिन्होंने १९७० मे समान नागरिक संहिता लागू किया। यह कोड ११५ साल बीत जाने के बाद भी जारी है। हालांकि गोवा केन्द्र शासित क्षेत्र है लेकिन देश की यही एकमात्र ऐसी जगह है जहां मुस्लिम पर्सनल ला मान्य नहीं है।

पुर्तगालियों से गोवा को मुक्त कराने के बाद उसे देश की मुख्य धारा मे जोडने के लिए अधिकतर औपनिवेशिक कानूनों को हटा दिया गया और उनके बदले केन्द्रीय कानूनों को लागू किया गया। लेकिन समान नागरिक सहिता को जानबूझ कर नहीं बदला गया।

पुर्तगाली सिविल कोड गोवा की मुस्लिम औरतों में बहुत लोकप्रिय हैं। उनका मानना है कि इससे उन्हें पर्याप्त सरक्षण मिलता है। इस कानून के तहत कोई भी मुस्लिम एक से अधिक पत्नी नहीं रख सकता। वह तलाक भी नहीं दे सकता। लेकिन मुस्लिम पर्सनल कानून के तहत आसानी से तलाक दिया जा सकता है और तीन बार शादी की जा सकती है।

लेकिन अब कुछ वर्षों से कुछ प्रभावशाली रूढिवादी मुस्लिम पुराने कानून को बदलने की माग कर रहे है। उनका कहना है कि देश के दूसरे भागो मे जैसे कानून हैं, वैसे ही कानून यहां भी बनाये जाएँ। इस मांग का मुस्लिम सुधारवादी महिलाएं जमकर विरोध कर रही है। वे पुराने कानून को जारी रखने पर ही जोर दे रही है। इससे केन्द्र शासित क्षेत्र के ४३,००० बूढे मुसलमानों मे असन्तोष पैदा हो गया और सरकार को इस मसले पर विचार के लिए एक पर्सनल ला कमेटी बनानी पडी।

गोवा मे इस पुराने औपनिवेशिक कानून को जारी रखा जाए या नहीं, इस पर जबरदस्त बहस छिडी हुई है। गोवा मे मुस्लिम पर्सनल ला न लागू करने के लिए एक युवा सामाजिक कार्यकर्ता और कानून की अन्तिम वर्ष की छात्रा कुमारी रसीदा मुजावर जेहाद छेडे हुए हैं। उन्हे दो मुस्लिम सगठनो—मुस्लिम यूथ वेलफेयर एसोसियेशन और गोवा मुस्लिम वुमेन एसोसियेशन का पूरा-पूरा समर्थन मिल रहा है। ये दोनों संगठन किसी भी तरह पुराने कानून को जारी रखने के पक्ष मे हैं।

दूसरी तरफ शहर की वकील और आल इण्डिया पर्सनल ला के एडवाइसरी बोर्ड के सदस्य अशरफ आगा पुराने कानून को बदलने की पुरजोर मांग कर रहे हैं।

पुर्तगाली सिविल कोड के समर्थक मुस्लिम पर्सनल ला के पक्ष मे कतई नहीं है। उनका कहना है कि मुस्लिम पर्सनल ला जहा भी है, वहां कहर ढा रहा है। गोवा अभी तक इसकी बुराइयो से बचा हुआ है। अगर मुस्लिम पर्सनल ला यहा भी लागू किया गया तो यह भारतीय जीवन की मुख्य धारा मे गोवा को गलत रास्ते पर शामिल करने की कोशिश होगी।

पुर्तगाली सिविल कोड के समर्थकों का यह भी कहना है कि शादी और तलाक धर्म के दायरे मे नहीं आते। इसके लिए समान सिविल कोड ही ठीक है।

लेकिन मुस्लिम पर्सनल ला के समर्थकों का कहना है कि गोवा भारत का हिस्सा है इसलिए यहा भी वही कानून होने चाहिये जो देश बाकी हिस्सो मे है। श्री आगा के अनुसार पुर्तगाली कानून मुस्लिमों के धार्मिक मामलों मे दखलदाजी करता है। उनका कहना है कि इस कानून के तहत शादी का पजीयन कराना उन्हे मजूर नहीं है क्योंकि इस्लाम शादी को धार्मिक मामला मानता है। शादी का पजीयन शादी के बाद होना चाहिये। मौजूदा कानून पक्के मुस्लिमों की भावनाओं को चोट पहुचाता है।

श्री आगा का कहना है कि पुर्तगाली सिविल कोड १८७० मे असहाय लोगो पर थोपा गया। क्या गोवा के लोगों को ऐसा कानून रखना चाहिए जो उनकी धार्मिक भावनाओ की परवा न करे। उनका मानना है कि पुर्तगाली सिविल कोड को किसी भी तरह मजूर नहीं किया जा सकता क्योंकि यह धार्मिक आजादी के मौलिक अधिकार के खिलाफ है।

रशीदा का कहना है कि यदि शरीयत कानून को सच्ची भावना के साथ लागू किया जाए तो उन्हे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। तलाक का दुरुपयोग हो रहा है।

रसीदा मुस्लिम पर्सनल ला कानून के खिलाफ तरह-तरह के तर्क देती है। सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप मे वे मुस्लिम पर्सनल ला से पीडित कई महिलाओ से मिल चुकी हैं। तलाक के बाद इन महिलाओ को अपना घर-बार छोडना पड़ा। इनमे से कइयों को तो अपनी रोजी-रोटी के लिए वास्को के रेड लाइट इलाके मे शरण लेनी पडी।

रशीदा के जेहाद से मुस्लिम पर्सनल ला के समर्थक बहुत खफा हैं। उसे 'काफिर' कहा जा रहा है। मुस्लिम पर्सनल ला का विरोध करने वालों को परेशान भी किया जा रहा है।

लेकिन मुस्लिम पर्सनल ला के समर्थकों की सख्या बहुत कम है। पर्सनल ला कमेटी के सूत्रो का कहना है कि मुस्लिम पर्सनल ला का समर्थन मुख्य रूप से बाहर से आकर बसे मुस्लिम कर रहे हैं।

कमेटी के अध्यक्ष और कानून मन्त्री शेख हसन हाकिम ने कमेटी की १५ फरवरी को बैठक बुलाई है जिसमे सुझावों को अन्तिम रूप दिया जाएगा। (जनसत्ता से साभार)

डा० द्विवेदी पुरस्कृत

ज्वालापुर (हरिद्वार) गुरुकुल महाविद्यालय के कुलपति एवं विश्व भारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर (वराणसी) के निदेशक डा०कपिल देव द्विवेदी को आर्यसमाज शताब्दी समारोह समिति कलकत्ता द्वारा वैदिक साहित्य के क्षेत्र मे उत्कृष्ट योगदान के लिए पाच सौ रुपये नगद तथा शाल व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। डा० द्विवेदी के अतिरिक्त डा० सत्यकेतु विद्यालंकार को भी पुरस्कृत किया गया।

—आर्येन्द्र आर्य

—आर्यसमाज लहेरिया सराय दरभङ्गा (बिहार) के तत्वावधान मे दिनांक २७ दिसम्बर ८५ से २९ दिसम्बर ८५ तक वेद प्रचार समारोह' मनाया गया। —ध्रुवनारायण आर्य मन्त्री

अमर रहे गणतंत्र महान

बढ़े सुपथ पर भारत देश,
विश्व शांति की ओर विशेष,
दानवता के तत्व नष्ट हो—
रहे न भू पर किंचित शेष,
जन जन मे जागे बलिदान।
अमर रहे गणतन्त्र महान ।।

राष्ट्र भक्ति का स्रोत बहे,
अनीति—अधर्म—अन्याय ढहे,
पाखण्डो का, अन्धतमों का
ढेर भूमि पर आज ढहे,
आए वैदिक धर्म विहान।
अमर रहे गणतन्त्र महान ।।

भगत-सुभाष बने हम सब,
परहित त्याग करें हम सब,
जन—जन सेवा मे अर्पित हो—
आर्य, श्रेष्ठ बनें हम सब,
सत्य—धर्म पर हो अभिमान।
अमर रहे गणतन्त्र महान ।।

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट', मुसाफिर खाना, सुलतानपुर

आगामी हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रचार एवं सेवा शिविर

निश्चय किया गया है कि आगामी दिनांक १४ जनवरी से ९, १० अप्रैल ८६ तक लगने वाले हरिद्वार मे बारह वर्षीय कुम्भ मेले के ऐतिहासिक अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रचार एवं सेवा शिविर लगाया जाय। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने जीवन मे कुम्भ के अवसरपर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसे भी १०५ वर्ष के लगभग हो चुके हैं। अत अन्धकार एवं रूढ़िवादिता का खण्डन करते हुए समुचित मार्ग दर्शन का प्रचार किया जायेगा। विद्वानो के भाषण, उपदेश होंगे, सेवा शिविर द्वारा यात्रियो की यथासाध्य सेवा आदि की व्यवस्था रहेगी साथ ही विशेष स्नान पर्वों के दिन ऋषि लगर का भी आयोजन होगा वहाँ शिविर लगाकर सभा के वरिष्ठ अधिकारी भी स्वय व्यवस्था की देखरेख करेंगे। समस्त प्रदेश की उपप्रतिनिधि सभाओ, आर्यसमाजो और आर्यजनों से अनुरोध है कि इस अवसर पर हमारी सहायता करें, अपने क्षेत्र मे धन और अन्न आदि का सग्रह करें, सभा को सूचना दें और सुविधानुसार उनका संग्रहीत अन्न हरिद्वार भिजवाने का प्रयास किया जाय। सबके सम्मिलित सहयोग से ही हमारे उद्देश्य सम्पन्न हो सकते हैं तदर्थ सबका सहयोग अपेक्षित है और इस मे अविलम्ब कार्य प्रारम्भ कर दिया जाय।

इन्द्रराज	कृष्ण बलदेव महाना	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

पुस्तक-परिचय

प्रार्थना सम्बन्धी आठ मन्त्र—व्याख्याता तथा लेखक—आचार्य डा० सुरेन्द्रदेव शास्त्री स्नातक प्रकाशक—विश्वामित्र शैक्षणिक एवं सामाजिक उत्थान संस्थान—जगत नगर—भोंगांव—मैनपुरी, मूल्य २ ५०।

डा० सुरेन्द्रदेव जी संस्कृत तथा आर्य साहित्य के सुयोग्य विद्वान् है—विचारक हैं तथा वक्ता हैं। आपने सस्कृत साहित्य-व्याकरण-अध्यात्म आदि विषय पर बहुत-सी पुस्तकें लिखी हैं।

प्रार्थना सम्बन्धी आठ मन्त्रो से सभी आर्य जन परिचित हैं। परन्तु उनके अर्थ गाम्भीर्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सबका परिचय नहीं है। आचार्य सुरेन्द्रदेव जी ने इस कमी को पूरा किया है और मन्त्रों की व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की है। आर्यजनो के अतिरिक्त उपदेशकों एवं भजनीको के लिये भी उपयोगी है आर्य विद्यालयों मे छात्रो को पारितोषिक मे वितरित की जाय तथा मन्त्रों का अर्थ इसी आधार पर समझाया जाय। पुस्तक का अधिक से अधिक प्रचार हो। ऐसी कामना है। छपाई सुन्दर है। अन्य मुद्रण मे एक अशुद्धि भेंट है।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

—तहसील वेद प्रचार सभा अतरौली के द्वारा तहसील के रामनगर गुलरिया, नबाबपुर, समैना तातारपुर, कसेर, राजमऊ मे १४ नवम्बर से २७ नवम्बर ८५ तक सघन प्रचार किया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज तिलकद्वार मथुरा मे दिनांक १२ जनवरी १९८६ के साप्ताहिक सत्संग मे श्री प० वेदपथिक धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी, दिल्ली द्वारा 'गायत्री मन्त्र की महिमा' वेद व विश्व शान्ति विषय पर हृदयग्राही उपदेश हुआ तथा बाल्मीकी मुहल्ले मे सात युवको का उपनयन सस्कार महात्मा प्रेम भिक्षु जी के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। —मन्त्री

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

आर्यमित्र के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ फरवरी १९८६ को समाप्त हो जाता है। वी पी भेजने मे ४-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी पी न भेजी जाय। जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) भेज दें अन्यथा उनके नाम वी पी भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी पी भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे है। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) कर दिया गया है।

७४३, ७९६, १९२०, २२२३, २३५२, २३५६, २९६२, ४२७३, ४७९१, ५२०१, ५७९६, ७०९२, ८७३०, ९०९०, ९०९५, ९१०६, ९६०३, ९६०६, ९८०८, ९८१७, १००९६, १०११८, ११९२५, १११३७, ११५०५, ११५०६, ११५११, ११५१८, ११५४१, ११८३६, ११८५३, ११८५४, १२१२१, १२५७६, १२५७८, १२५७९, १२५८०, ११५८९, १२८२०, १२८२४, १२८२५, १२८२६, १२८३०, १२८३१, १२८३२, १२८३३, १२८३५, १२८३६, १२८४०, १३०५२, १३०५३, १३०५५, १३०५६, १३०५९।

विनीत—
—व्यवस्थापक

अ:वश्यक सूचना

धर्म शिक्षा परीक्षाए १९८६

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित धर्म प्रवेशिका, धर्मभूषण एवं धर्माधिकारी, की परीक्षाए मार्च १९८६ मे होंगी। परीक्षार्थियो की सूचियां १५- -८६ तक कार्यालय मे अवश्य पहुच जानी चाहिए।

यह ज्ञातव्य है कि ये नैतिक शिक्षा की परीक्षाएं नहीं है इनका पाठ्यक्रम वैदिक धर्म से सम्बन्धित है। सरकार द्वारा स्वीकृत पाठ्य क्रम नैतिक शिक्षा तक ही सीमित है, सभी आर्य विद्यालयो का मुख्य उद्देश्य वैदिक धर्म का प्रचार एव प्रसार है। अत उनके प्रधानाचार्यो से आशा की जाती है कि वे इन परीक्षाओ के लिये विद्यार्थियो को आवश्यक शिक्षा की व्यवस्था करें। अध्यापक / अध्यापिकाओं से इस कार्य मे हार्दिक एवं ऐच्छिक सहयोग की अपेक्षा की जाती है। प्रबन्धाधिकारियों अनुरोध है कि वे धर्म शिक्षा के लिए अध्यापकों एव प्रधानाचार्यो को प्रेरित करें तथा इन परीक्षाओ को सफल बनाने मे योगदान प्रदान करें। माधवसिंह

मन्त्री-प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ० प्र०

उत्तर-प्रदेश की प्राचीनतम सेवा संस्था

श्रीमद् दयानन्द बाल-सदन--मोतीनगर लखनऊ को बदनाम करने का द्वेषपूर्ण कुचक्र

उत्तर-प्रदेश मे १९१५ मे स्थापित श्रीमद दयानन्द बाल सदन अनाथ बालको का पालन पोषण-शिक्षा और वयस्क होने पर समाज के योग्य नागरिक बन सके--इस पुनीत कार्य मे संलग्न है। इधर बाल-सदन उन्नति की ओर था। मोतीनगर लखनऊ मे पर्याप्त सुविधा सेवासियो के दे रहा है। कतिपय व्यक्तियो ने उसकी समुन्नति से ईर्ष्या रखते हुए उसको बदनाम करने का कुचक्र रच दिया। मृगी और मानसिक विक्षिप्तता से पीडित एक संवासिनी की स्वाभाविक मृत्यु का असत्य और शरारत पूर्ण प्रचार किया गया। स्थानीयपत्रो मे भी गलत रिपोर्ट और मामले को उछाला गया।

सत्यता इस प्रकार है कि १८ जनवरी १९७९ को पुलिस ने एक विक्षिप्त बालिका को इस संस्था मे प्रविष्ट कराया जो मृगी और मानसिक विक्षिप्त थी। संस्था से निरन्तर प्रयास किया गया कि किसी बाल चिकित्सालय मे उसे प्रान्तीय प्रशासन भेज दें किन्तु सफलता न मिली। इधर संस्था अपने प्रयासों से उसकी चिकित्सा कराती रही। मेडिकल कालेज और बलरामपुर अस्पताल मे वाह्य रोगी के रूप मे चिकित्सा हो रही थी कि १४ जनवरी ८६ को संवासिनी आशा की मृत्यु हो गई। शव के पोस्ट मार्टम मे स्वाभाविक मृत्यु अंकित है।

कुमारी सुधा नामक एक महिला अधीक्षिका की नियुक्ति ५ अक्टूबर १९८५ को अस्थायी रूप से की गई--उसका कार्य सन्तोषजक और उत्तरदायित्व पूर्ण नहीं था अत ७ जनवरी १९८६को उसकी सेवायें समाप्त कर दी गई। अत: संस्था को बदनाम करने का षड्यन्त्र कतिपय स्वार्थी जनो द्वारा रचा गया कि संवासिनी को मार डाला गया। संस्था मे अबैध रूप से व्यक्ति आते जाते रहे है। जब कि चौकीदार रहता है और महिला अधीक्षिका का पूर्ण दायित्व रक्षा का है।

संस्था के वर्तमान प्रधान श्री अर्जुन देव महाना और मन्त्री श्री रामचन्द्र शर्मा की देख रेख मे अनुशासन और सेवा धर्म पर पूर्ण ध्यान दिया जाता है। तथा इन अधिकारियो ने कड़े शब्दो मे समस्त आरोपो को असत्य बताया है और महिला अधीक्षिका की लापरवाही तथा असत्य प्रचार पर आक्रोश प्रकट किया।

आशा है संस्था सम्बन्धी भ्रम का निवारण हो जायेगा।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०
सम्पादक
आर्यमित्र--लखनऊ।

पर्सनलला के प्रश्न पर राजनैतिक दलो का मौन देशहित में नहीं

(श्री देवीदास आर्य)

बादा--आर्य समाज बादा के शताब्दी समारोह के अवसर पर बोलते हुये मुख्य अतिथि श्री देवीदास आर्य ने कहा कि पर्सनल ला के प्रश्न पर सभी राजनैतिक दलो का मौन देश हित मे नहीं है तथा देशद्रोह को प्राश्रय देने वाला कार्य है, प्रत्येक दल स्वार्थवश सत्य बोलने से कतराता है, जबकि इस ज्वलत समस्या के कारण देश द्रोह फैल रहा है, सविधान की धज्जियां उडाई जा रहीं है।

राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित एव आर्य प्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा मोमिन कांग्रेस मे कट्टरपथी मुस्लिमो की माग के आगे झुकने की कटुआलोचना करते हुए कहा कि कांग्रेस की तुष्टिकरण से ही पाकिस्तान का निर्माण हुआ था, अब कांग्रेस सरकार पुन उसी मार्ग पर चल रही है। कांग्रेस का तुष्टिकरण की नीति से अलगाववादी ताकतो को प्रोत्साहन मिल रहा है। जो भारत के भविष्य के लिए हानिकारक सिद्ध होगा।

बांदा के नागरिको की ओर से मुख्य अतिथि श्री आर्य का भव्य किया गया। रामरतनसिंह मन्त्री,

पुस्तक परिचय

पं० डा० श्रीराम आर्य--कासगज-एटा ने आर्य सिद्धांत सम्बन्धी प्रशसनीय पुस्तकें लिखी है। साथ ही रूढ़ियावदिता और भ्रामक प्रचार का विरोध तर्क पूर्ण शैली मे किया है उनकी रचनाओ से उपदेशको को बल मिलता है। तथा इस्लाम--कुरान-ईसाई-राधा स्वामी एव पौराणिक मतों मे वर्णित अज्ञानता का पर्दाफाश किया गया है। कतिपय निम्न रचनाये हैं तथा अन्यो के लिये सम्पर्क कीजिये। डा० श्रीराम आर्य--वैदिक साहित्य प्रकाशन कासगंज एटा।

कुरान के विचारणीय स्थल मूल्य--२-५०
इस्लाम मे नारी-- मूल्य १-२१
कुरान और अन्य मजहब मूल्य ०-८० पैसे
राधा स्वामी पाखण्ड--खण्डन-मूल्य ८) रुपया

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
मा० माघ ६ कृष्ण १ एवं माघ १३
माघ कृष्ण ८, रविवार
२६ जनवरी एवं २ फरवरी १९८६ ई०

आर्य मित्र
उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्मृति में एक चल विजयोपहार चलाने की योजना

आर्य समाज में बच्चों एवं नवयुवकों को आकर्षित करने हेतु और प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्मृति मे एक चल वैजयन्ती चलाने का निर्णय लिया है। प्रतियोगिता मे शारीरिक एवं बौद्धिक प्रदर्शन होगा।

प्रत्येक जिले के इच्छुक जिला समिति, आर्य वीर दल मण्डल पति मन्त्री, अपनी स्वीकृति दिनांक १५ फरवरी १९८६ ई० तक भेजें। प्रतियोगिता का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी समारोह में होगा।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

शोक संवेदना

दुःखद समाचार है कि गुराक आर्य समाज (गया) के सहायक मन्त्री डा० सिद्धेश्वर शर्मा के पूज्यनीया चाची श्रीमती रधिका देवी का देहान्त दि० ११ दिसम्बर १९८५ को हो गया वे ८४ वर्ष की थी। अन्त्येष्टीय संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार समाज के पुरोहित श्री पं० रामदेव शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। मन्त्री

सूचना

खेद है कि विद्युत के नियमित न प्राप्त होने से आर्यमित्र का २६-१-८६ का अंक समय से प्रकाशित नहीं हो सका अत २६-१-८६ और २-२-८६ का अंक संयुक्त रूप से पाठकों के कर कमलों मे पहुंच रहा है। असुविधा हेतु क्षमा प्रार्थी हूं।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०
सम्पादक आर्यमित्र

निर्वाचन

आर्य समाज लालपुरा (पटना)
प्रधान श्री गंगाप्रसाद
मन्त्री श्री उपेन्द्र कुमार सिन्हा
कोषा० श्री देवशरण पासवान

आर्य समाज महाराजपुर
प्रधान श्री दास भागीरथ आर्य
मन्त्री श्री जयनारायण आर्य
कोषा० श्री दयाराम आर्य

आर्य समाज टांडाबादली रामपुर
प्रधान श्री बुद्ध सेन आर्य
मन्त्री श्री सुधीर कुमार आर्य
कोषा० श्री विनोद कुमार

आर्य वीर दल आर्यसमाज हरिद्वार
संचालक श्रीदेवेन्द्रकुमार विद्याभास्कर
प्रधान श्री आजाद सिंह आर्य
मन्त्री श्री अतुल कुमार
कोषा० श्री जगपाल सिंह

निर्वाचन

आर्य समाज अम्बहटा (सहारनपुर)
प्रधान श्री मोहनलाल सर्राफ
मन्त्री श्री सुरेश चन्द्र आर्य
कोषा० श्री रमेश चन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मूकाश्मीर
प्रधान श्री योगेन्द्र कुमार
मन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार
कोषा० श्री देवराज सेठी

आर्य समाज कृष्णपोल बाजार जयपुर (राजस्थान)
प्रधान श्री सत्यनारायण शाह
मन्त्री श्री ओमशरण विजय
कोषा० श्री सूर्य नारायण गुप्ता

आर्य समाज बक्शीपुर गोरखपुर
प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार
मन्त्री श्री डा० विनय प्रताप
कोषा० श्री वीरेन्द्रनाथ आर्य

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीनआर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्रीविश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० न० २२४१/५७ | घोषणा पत्र स० ७ / २४-३-८५

वर्ष ८९] मा० माघ २०, माघ शुक्ल १, रविवार सवत् २०४२ वि०, दि०, ९ फरवरी १९८६ [अङ्क ६

प्रार्थना

ओं प्र वो महे मन्दमाना-यान्धसोऽर्चा विश्वानराय विश्वा-भुवे। इन्द्रस्य यस्य सुमख सहो महि श्रवो नृम्ण च रोदसी सपर्यत ॥ —यजु ३३।२३

भावार्थ—आनन्द देने वाले समस्त राष्ट्रनायक समस्त राष्ट्र के स्वामी (उस) राजा के लिये अन्नादि से अर्चना भेंट करो, जिस राजा के उत्तम कर्मबल, महान् यश और धन को आकाशभूमि सेवन करते हैं।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

७१ प्रतिशत हिन्दू और २८ प्रतिशत सिख आबादी के नगर—

चण्डीगढ़ पंजाब को देना

कहां तक न्यायसगत व तर्कपूर्ण है

सम्प्रति चण्डीगढ़ बहुचर्चित नगर है और इधर राजीव लोंगोवाल समझौते के अन्तर्गत दि० २६ जनवरी १९८६ को इस नगर को पजाब को पूर्ण रूप स सौप दिया जाना था और उसके बदले में पजाब के अबोहर, फाजिल्का के क्षेत्र जो हिन्दी भाषी थे वह हरियाणा को मिलने थे। परन्तु मैथ्यू आयोग अबोहर फाजिल्का और कदूखेड़ा मे हिन्दी भाषी तथा पंजाबी भाषी जनगणना के बाद भी किसी तथ्य पर नहीं पहुच सका और बहुचर्चित समझौता एक प्रकार से भंग हो गया। जब अबोहर और फाजिल्का में भाषा के आधार पर जनगणना हुई तो स्वाभाविक है कि चण्डीगढ़ मे भी वैसा ही होना चाहिये था परन्तु सत्तारूढ़ कांग्रेस पहले मुस्लिम तुष्टीकरण में रही, भारत का विभाजन हुआ कितनी भयंकर हत्यायें हुई और भारत के दोनो ओर इस्लामी राज्य बने। जो मुसलमान भारत मे रहे सत्तारूढ़ दल उनकी तुष्टीकरण मे लगा रहा है और आज तक कोई समस्या का निराकरण नहीं हुआ और मुसलमान उर्दू, शाहबानो, शरियत आदि के नारे लगाता सडक पर घूम रहा है।

सत्तारूढ़ दल सिखों के भी तुष्टीकरण मे रहा और विशाल पजाब तीन प्रदेशों मे बट गया। सिखों को पंजाब मिला जहा केवल उनकी जनसख्या ५२/ रही परन्तु उनकी मांगें बढ़ती गई तथा सत्तारूढ़ दल ने यह भी निश्चय कर दिया कि चण्डीगढ़ पजाब को दे दिया जाय जो किसी भी प्रकार से न तर्क संगत है न न्यायसगत है और वहा की जनता उसके भाषा और विचारों की कोई परवाह न करके नेताओं की अपनी सनक सामने आई।

चण्डीगढ़ का परिचय देना कुछ अनावश्यक न होगा। भारत के विभाजन के समय लाहौर जो पंजाब की राजधानी था पाकिस्तान मे चला गया और पाकिस्तानी पजाब की राजधानी बन गया। भारत का जो पंजाब प्रदेश था उसकी राजधानी के लिए उपयुक्त स्थान की खोज हुई शिमला और जालधर देखे गये परन्तु अन्त मे यह निर्णय हुआ जिसका श्रेय स्व० प० जवाहरलाल नेहरू को है कि एक नवीन नगर को पजाब की राजधानी बनाई जाय। और उसके लिये चण्डीगढ़ का क्षेत्र जो हरियाना, पजाब और हिमांचल प्रदेश के मिले हुए कोण पर स्थित है चुना गया और जब नवीन नगर बनाना निश्चय हुआ तो नेहरू जी ने भारत और विदेशों के नगर शिल्पियो से परामर्श करके फ्रांस के प्रसिद्ध नगर शिल्पी लोकारबोयूनियर को जो विश्वविख्यात नगर निर्माण अभियन्ता था को कार्य भार सौंपा गया उसने इस नगर का मानचित्र तैयार किया जो बडा ही स्वास्थ्यप्रद, कलात्मक और स्वच्छ था नगर मे सैंतालीस सेक्टर बनाये गये, हर सेक्टरों मे बाजार, विद्यालय आदि की सुविधा रही और सुन्दर भव्यनगर बनकर तैयार हो गया। चण्डीदेवी का मन्दिर उस क्षेत्र में प्रसिद्ध था इस लिये इसका नाम चण्डीगढ़ रखा गया। यहाँ का सचिवालय, हाईकोर्ट, विश्वविद्यालय के भवन कला

(शेष पृष्ठ २ पर)

चण्डीगढ़ पंजाब को देना कहाँ तक न्यायसंगत व तर्कपूर्ण है

(प्रथम पृष्ठ से आगे)

और सुविधा दोनो दृष्टि से अद्वितीय है और पूरे पंजाब की यहाँ राजधानी बनाई। खेद है सिख इतने पर भी सन्तुष्ट न हुए और पंजाबी भाषा के आधार पर पंजाबी सूबे की मांग करने लगे और अन्त में पूरा भारतीय पंजाब, हिमांचल, हरियाणा पंजाब मे विभाजित हो गया और चण्डीगढ़ में पंजाब तथा हरियाणा दोनों के कार्यालय विभाजित होकर बने रहे। यहाँ तक कि पहले दोनों के गवनर और उच्च न्यायालय भी एक ही था परन्तु सिखों की मांग बढ़ती गयी सत्तारूढ दल मतो की प्राप्ति के चक्कर मे सिखो की तुष्टीकरण नीति पर चलता गया।

पंजाब में ५२-/- केवल सिख थे परन्तु उनकी जो मागें थीं और जिसके पीछे इङ्गलैण्ड, एव अमेरिका की योजनायें थीं तथा जो पाकिस्तान के द्वारा क्रियान्वित होती थी ने जैसा उग्र रूप धारण किया वह सबविदित है। पंजाब मे भी कांग्रेसी खेमे मे भी जैलसिंह तथा दरबारा सिंह ग्रुप की प्रतिद्वन्द्विता से सभी परिचित हैं और जिस सबका परिणाम स्व० भिंडरवाला का उदय, सिख छात्र फेडरशन को बल मिला और सन् १९८३ से लेकर लाला जगतनारायण हत्या काण्ड से अमृतसर, ब्ल्यूस्टार तक की घटना के चक्र सबके सामने है। स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी उस समस्या का सही निदान न ढूढ सकीं। किसी प्रकार राजीव-लोंगोवाल समझौता हुआ लेकिन सिरफिरे सिखो ने उसे न स्वीकार करके लोंगोवाल की हत्या कर दी। पंजाब मे निर्वाचन का नाटक हुआ कांग्रेसी हारे अकाली जीते और सुरजीतसिंह बरनाला मुख्य मन्त्री बने। पंजाब मे अकाली शासन स्थापित हुआ। आशा थी कि शांति होगी परन्तु उग्रवादी सिखो को सभालने मे उन्हे अपने अधिकार के अन्तर्गत लाने मे बरनाला सरकार असफल रही।

मैथ्यू आयोग ने भी छह महीने से अपना समय नष्ट किया और कोई रचनात्मक सुझाव न दे सकी। सतलज यमुना नहर का निर्माण भी जो समझौते का एक मुख्य विषय था उसके निर्माण का कार्य तो दूर किसानों से भूमि का अधिग्रहण भी नहीं हुआ। इस प्रकार राजीव-लोंगोवाल समझौते का जो शोर मचाया गया वह समाप्त हो गया और आज स्थिति यह है कि अकाली दल, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति जिसके अध्यक्ष श्री तोहड़ा जी हैं और मुख्यमन्त्री श्री बरनाला दोनो के देखते ही स्वर्ण मन्दिर पर पुन उग्रवादियों के दो प्रमुख दल दमदमी टकसाल और सिख छात्र फेडरेशन का कब्जा हो गया। पुराने ग्रन्थी हटा दिये गये नये ग्रन्थी बने और सिखों में यह भावना फैलाकर कि 'ब्ल्यूस्टार' के समय स्वर्ण मन्दिर की जो क्षति हुई उसकी मरम्मत भारत सरकार द्वारा कराकर मन्दिर अपवित्र हुआ अब फिर से वहाँ कार सेवा प्रारम्भ हो रही है।

अब 'आर्यमित्र' बडे प्रबल शब्दो मे राष्ट्र के नेताओं से चाहे जिस दल के हो और प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी से अपील करता है कि न्याय तर्क को छोड़कर तुष्टीकरण का मार्ग अपनाना किसी व्यक्ति के लिए हीं नहीं अपितु देश के लिए घातक है। तुष्टीकरण के परिणाम सामने आ रहे हैं। नवीन नये सिरे से विचार किया जाय और चण्डीगढ़ जहा ७१ -/ हिन्दू हैं और जो पंजाब के मध्य मे भी नहीं है उसे पंजाब को सौंप देना, चण्डीगढ़ निवासियो की इच्छा के विरुद्ध उनके ऊपर एक अन्यायपूर्ण प्रहार होगा। अत चण्डीगढ़ जैसा केन्द्र शासित साफ-सुथरा नगर है उसे वैसा ही रहने दिया जाय और जैसे हरियाणा अपनी नई राजधानी बना रहा है वैसे पंजाब भी जालन्धर या उसके आस-पास कहीं किसी उपयुक्त स्थान पर अपनी नई राजधानी बनावे और जब तक दोनों की राजधानी न बन जाय चण्डीगढ़ का वर्तमान स्वरूप विद्यमान रहे तदुपरान्त दिल्ली के कतिपय कार्यालय वहां के भवनों में स्थानान्तरित कर दिये जांय। इससे देहली से कार्यालय के आधिक्य का भार कम होगा और चण्डीगढ़ केन्द्रीय प्रशासन मे निखर उठेगा। परन्तु एक बात का ध्यान रखना चाहिये कि इस पंजाब की रणनीति मे हिन्दुओं की क्षति हुई है और अब शासन को, नेताओं को बहुत बुद्धिमत्ता के साथ नवीन पग उठाना चाहिये।

'आर्यमित्र' पूर्ण सद्भावना के साथ प्रभु से प्रार्थना करता है कि बरनाला और तोहड़ा मे भी ऐसी शान्ति और साहस आये कि वह सरकार और पंथ की बिगड़ी हुई गतिविधि को सभाल सकें इस में राष्ट्र का कल्याण एवम् श्रेय है। —आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

डी० ए० वी० शताब्दी समारोह समिति

द्वारा—डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी
चित्रगुप्ता रोड नई दिल्ली-११००५५

डी० ए० वी० शताब्दी समारोह की शोभा यात्रा शनिवार १५ फरवरी १९८६ को भारत की राजधानी दिल्ली मे

यह तो आपको ज्ञात ही है कि वर्ष १९८५-८६ डी०ए०वी० शताब्दी का वर्ष है। इस उपलक्ष्य मे भारत की राजधानी दिल्ली में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

उपर्युक्त शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में एक विशाल शोभा यात्रा शनिवार १५ फरवरी १९८६ को भारत की राजधानी दिल्ली में निकाली जायेगी। यह शोभायात्रा प्रात ११ बजे लालकिला मैदान से आरम्भ होगी, जो कि चांदनी चौक, घण्टाघर, नई सड़क, चावड़ी-बाजार, हौजकाजी, अजमेरी गेट, मिन्टोरोड,कनाट प्लेस,रीगल बिल्डिंग पार्लियामेण्ट स्ट्रीट, सरदार पटेल चौक, गोल डाकखाना, बिड़ला मंदिर से होती हुई सायं ४ बजे आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे समाप्त होगी।

हमारी समस्त आर्यसमाजों, डी०ए०वी० संस्थाओं एव अन्य आर्य संस्थाओं से प्रार्थना है कि वे शोभा यात्रा मे अवश्य ही सम्मिलित होने की कृपा करें।

बाहर से पधारने वाले महानुभावो के ठहरने एवं भोजन का प्रबन्ध डी० ए० वी० शताब्दी समारोह समिति की ओर से किया जायेगा। दिल्ली भारत की राजधानी है हमारी इच्छा है कि इस शोभा यात्रा मे सब संस्थाय अपने-अपने 'मोटो' एवम् ओ३म् के झण्डे लेकर अवश्य ही सम्मिलित हो।

इस उपलक्ष्य मे आप कोई अपना सुझाव देना चाहे अथवा कोई जानकारी लेना चाहें तो निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं—जनरल सेक्रेट्री-आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

—रामनाथ सहगल संयोजक शोभा यात्रा

अध्यात्म सुधा

विश्व कल्याण कर्ता-यज्ञ

(लेखक–श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य, वेद सदन,
महारानी पथ, इन्दौर ४५२००७ मध्य प्रदेश)

(१) यज्ञ-विश्व का आधार तत्व।

विश्व के जीवन एवं विश्व के स्वास्थ्य के लिये यज्ञ-होम-हवन परम् आवश्यक है। यज्ञ हवन की क्रिया शीलता और उपयोगिता का आध्यात्मिक क्षेत्र में अर्थात् अपने शरीर, प्राण, मन आदि पर अद्भुत प्रभाव होता ही है तथा आधि भौतिक और आधि दैविक क्षेत्रों मे भी स्वाभाविक रूप से महत्वपूर्ण होता है। यज्ञ समस्त जड तथा चेतन सृष्टि का प्राण-पोषक तथा जीवन प्रदाता है। सृष्टि के जीवन का प्रमुख वैज्ञानिक आधार भूत तत्व यज्ञ ही है। मानव सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व भी इस सृष्टि मे, प्राकृतिक तत्वों और पदार्थों मे, प्रत्येक पिण्ड मे यज्ञ चल रहा था–और अब भी चलता रहता है तथा भविष्य मे भी प्रलय पर्यन्त चलता ही रहेगा। अत यज्ञ सनातन तत्व है, सनातन कर्म है और सनातन धर्म है। स्वभाव ही धर्म माना गया है–अत यज्ञ सदा बाहार, सर्व समृद्धिकारक एव परम् श्रेष्ठ विज्ञान है।

(२) चराचर सृष्टि की उत्पत्ति यज्ञ से–

पुरुष सूक्त के मन्त्रो मे बताया है कि परमात्मा के यज्ञ से विविध प्रकार के भोज्य पदार्थ और उनके भोक्ता—जीव सृष्टि की भी उत्पत्ति हुई। समस्त ज्ञान-विज्ञान एव कर्तव्योंके प्रेरक, सर्वज्ञान मय वेद भी प्रकट हुये और इनके उपयोक्ता साध्य, देव, ऋषि, मनुष्यादि भी उत्पन्न हुए। इन उत्पन्न ऋषि-मुनियोने सृष्टिमें यज्ञोंके विविध कर्मोंके वैज्ञानिक प्रवाहों तथा उनके प्रभावों को देख और यज्ञ के विज्ञान को समझ कर यज्ञ प्रारम्भ किये और उनका प्रचलन स्थापित किया। यज्ञ के प्रारम्भिक विज्ञान का सूत्ररूप में प्रतिपादक मन्त्र पुरुष सूक्त मे।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म शरध्दवि।

यह है। इसमे यज्ञ के तीन आधार भूततत्व बताये हैं–(१) आज्य, (२) इध्म और (३) हवि। आज भी यज्ञ के लिये यही तीन पदार्थ उपयोग मे लिये जाते हैं।

(३) यज्ञ के आधारभूत तीन पदार्थ—

सृष्टि के प्रारम्भ के प्राकृतिक यज्ञ मे वसन्त ऋतु ही आज्य थी, ग्रीष्म ऋतु ही इध्म थी और शरद् हवि थी। आज भी घृत का संग्रह वसन्त में अच्छा होता है। इन्धन का संग्रह ग्रीष्म मे ही अच्छा होता है और औषधि वनस्पतियों का परिपाक शरद् मे ही ग्राह्य है। प्रकृति के अनुरूप देवों, साध्यों ऋषियों एवं मनुष्यों ने यज्ञ को अपने जीवन मे धारण कर नित्य एव नैमित्तिक कर्मों में यज्ञों का अनुष्ठान धर्म रूप में प्रारम्भ किया तो आज्य के रूप मे गोघृत को ग्रहण किया। इध्म अर्थात इन्धन के लिये कतिपय यज्ञिय वृक्षों ने समिधायें ग्रहण की तथा हवि के रूप में औषधियों, वनस्पतियो को ग्रहण कर हवि की मान्यता स्थापित की। इन्हीं तीन आधारभूत पदार्थों का उपदेश यजुर्वेद अध्याय तृतीय के प्रथम मन्त्र मे भी निम्न प्रकार है।

समिधाग्नि दुवस्यत–घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन्हव्याजुहोतन–

अर्थात् समिधाओं से अग्नि प्रदीप्त करो—प्रदीप्त अग्नि की घृत से सेवा करो—और उस प्रबुद्ध अग्नि मे--प्रदीप्त अग्नि मे हव्य पदार्थों की आहुति प्रदान करनी चाहिये।

(४) यज्ञ का आधार तत्व—अग्नि का गुण–

यज्ञ के उपर्युक्त तीनों पदार्थ शोधक हैं। अग्नि परम शोधक है। घृत भी परम शोधक है तथा हव्य पदार्थ भी शोधक एवं पुष्टिकर्ता हैं। परन्तु घृत और हव्य पदार्थ जब अग्नि मे प्रयुक्त होंगे तभी उससे विविध प्रकार का लाभ होगा। इसलिये ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में ही सर्व प्रथम अग्नि की साधना करने के लिये उसके गुणो का प्रकाश किया गया है—

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

अर्थात् अग्नि की आराधना करो, अग्नि के गुणो का निरन्तर अनुसन्धान करो, अग्नि से सम्भावित कार्यों को जानकर उसके प्रयोग कला-यन्त्रो मे करके विविध सुख प्राप्त करो। यह अग्नि पुरोहित है–तुम्हारी कामनाओं की पूर्ति के लिये विविध रूप मे रचना कार्य साधक इन्जीनियर तुल्य है। यह विविध सुखों का संगीत कर्ता है। यह विविध ऋतुओं का निर्माता है। यह हव्य पदार्थों को ग्रहण कर उनका प्रसारण करता है और विविध प्रकार के रत्नों का निर्माता एवं दाता है। इसी प्रकार अग्नि के सहस्त्रो अद्भुत गुणों का भण्डार वेद है।

(५) यज्ञ की अग्नि का आधारभूत पदार्थ–इध्म–

यज्ञ के लिये समिधा परम आवश्यक है। समिधा के बिना अग्नि की स्थापना एवं स्थिरता नही। समिधाओ में भी अग्नि प्रकट होती और उसी मे निवास करेगी। समिधायें ऐसे वृक्षों की यज्ञ में प्रयुक्त होती हैं, जिनसे प्रदूषण कम और ऊर्जा तथा आरोग्यता विशेष होती है तथा अंगार होने पर उनसे कोयला न बन कर भस्म ही बन जाती है। ऐसी समिधायें पलाश, पीपल, आम, विकंकत, गूलर आदि वृक्षो की होती है। कामना भेद से भी समिधाओं का प्रयोग होता है। सब कामनाओं के लिये पलाश अर्थात् ढाक की समिधा श्रेष्ठ है। रोगनाशनार्थ आक की समिधा उपयोगी है—विशेष रूप से वात एवं कफज रोगों मे अतिलाभकारी है। खैर की समिधा धन लाभ के लिये, पीपल की समिधा प्रजा लाभ के लिये, शमी अदृष्ट दोषो के शमन के लिये उपयोगी है।

(६) यज्ञ का दूसरा आधार भूत पदार्थ-घृत—

केवल समिधाओ तथा अग्नि से ही यज्ञ नहीं हो सकता। समिधाओ से प्रदीप्त ज्योतिर्मय अग्नि में घृत की आहूतियां देने से वह इच्छित समय तक प्रदीप्त रह सकती है।		क्रमश

विश्वके मानव समाजके नाम विश्व शाँति का दिव्य संदेश

(लेखक—श्री वेद पथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशक, १९५७ अहाता ठाकुर दास, सरायरुहेला, नई दिल्ली—५ ।

१—राष्ट्र भाषा हिन्दी का सम्मान करने के लिये विश्व की सम्पर्क भाषा हिन्दी को बनाने के लिये सभी देशवासी हिन्दी में ही अपना पत्र व्यवहार, खाता बहीं लिखें। हिन्दी में ही अपना नाम पत्र लिखें।

२—दिन, तिथि, संवत पत्र व्यवहार में अवश्य लिख कर भारतीय संस्कृति की रक्षा करें।

३—अपना खान-पान, आचार-विचार, व्यवहार, रहन-सहन शुद्ध और पवित्र बना कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सुखों के अधिकारी बनें।

४—महर्षि संतानों उठो जागो भारतीय संस्कृति और भारत राष्ट्र खतरे मे है इसे बचाने की आज प्रबल प्रतिज्ञा करो।

५—विश्व को विनाश से बचाने के लिये विश्व बन्धुत्व की भव्य भावनाओं को अपने मन मन्दिर में जागृत करो।

६—अन्डा, मांस, शराब, तम्बाकू, अफीम, गांजा, भंग, सिगरेट, बीड़ी, आदि नशीले पदार्थों का सर्वथा परित्याग करके विश्व में रामराज्य स्थापित करो।

७—विश्व विजय के पावन पथ पर प्रति पल अग्रसर होने के लिये संकल्प बल के धनि बनो।

८—पर धन, पर वनिता पर न लोभाओ। संतोषामृत का पान प्रतिपल किया करो।

९—विश्व हित ही जीने और मरने का संकल्प धारण करो।

१०—अपना जीवन यज्ञ मय बना कर अक्षय सुखों को प्राप्त करो।

११—प्रतिपल ईश्वर चिन्तन और आत्म उन्नति में मन लगा कर परमानन्द को प्राप्तकर मोक्ष अवस्थामें विचरण करने का अलौकिक आनन्द प्राप्त करो।

१२—विश्व की धरती को स्वर्गीय सुखो से परितृप्त करने का आज महाव्रत धारण करो।

१३—अपनी रचना को, मन को इन्द्रियों को पवित्र और परिपुष्ट बनाने के लिये ओ३म् नाम का प्रति पल जप करते रहो।

१४—राष्ट्र रक्षा के लिये, विश्व कल्याण के लिये विश्व की रत्न मणियों के रत्न कोष को निछावर कर देने का संकल्प सामूहिक रूप से करो।

१५—यह ध्यान रहे अपने जीवन के एक क्षण को भी व्यर्थ मत जाने दो समय का मूल्य हीरे मोतियों से जवाहरातों से रत्नों से भी अधिक मूल्यवान है अत. मानवता की सेवा में अपने जीवन धन सर्वस्व को निछावर कर दो यह वेद भगवान का और भारतवर्षके प्राचीन महर्षियों का विश्वके मानव समाज के नाम अनुपम उपदेश है। क्रमशः

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्मृति में एक चल विजयोपहार चलाने की योजना

आर्य समाज में बच्चों एव नवयुवकों को आकर्षित करने हेतु और प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्मृति में एक चल वैज्यन्ती चलाने का निर्णय लिया है। प्रतियोगिता मे शारीरिक एव बौद्धिक प्रदर्शन होगा।

प्रत्येक जिले के इच्छुक जिला समिति, आर्य वीर दल मण्डल पति मन्त्री, अपनी स्वीकृति दिनांक १५ फरवरी १९८६ ई० तक भेजें। प्रतियोगिता का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी समारोह मे होगा।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सद्पदेश

१—जो मनुष्य अपनी आज्ञाओं में दृढ़ होते हैं, वे ही संसार में प्रतापी और विजई होकर कीर्ति पाते हैं।

२—जो मनुष्य चलते-फिरते रह कर पुरुषार्थ करते रहते हैं, वे पृथिवी पर सब दिशाओं में सुख भोगते हैं।

३—जैसे निर्मल जल से शरीर शुद्ध करके मल का नाश करते हैं, वैसे ही मनुष्य अन्तःकरण का मल दूर करके पृथिवी पर धार्मिक व्यवहार से आत्मा की शुद्धि करें।

४—जिस प्रकार मनुष्य उत्तम पुरुषों से मिलकर श्रेष्ठ-श्रेष्ठ गुण प्राप्त करते हैं और दूसरों को प्राप्त कराते हैं उसी प्रकार हम उत्तम गुण प्राप्त करके अपना जीवन श्रेष्ठ बनावें।

५—सत्यकर्मी, सत्यगामी, जितेन्द्रिय, ईश्वर और विद्वानों से प्रीति करने वाले चतुर पुरुष पृथिवी पर उन्नति करते हैं। यह नियम भूत और भविष्यत् के लिए समान है।

६—जब तक मनुष्य अपने आत्मघाती दोषों को नहीं नाश करता, अज्ञान के कारण उसके सब पुण्य कर्म और उद्योग निष्फल हो जाते हैं।

७—खोटे और कुकर्मी मनुष्य से न कोई मिलता है और न वह अन्न आदि पदार्थ पा सकता है, तब वह दुराचारी महा दुःखी होता है।

८—जो बड़े-बड़े महात्मा अपने दोष को नहीं मिटाते वे पूर्व जन्म के और इस जन्म के पुण्य को नाश करके अपना मनुष्य जीवन नाश कर देते हैं।

'देवताओं का सदन पीपल वृक्ष'

[श्री सतीशचन्द्र गुप्त एडवोकेट, प्रधान आर्यसमाज मण्डी बांस मुरादाबाद]

सब उपलब्ध वृक्षों में वैज्ञानिकों ने, धार्मिक गुरुओं ने मनीषियों ने यह मत बड़ी खोजबीन के पश्चात् प्रकट किया है कि पीपल का वृक्ष एक ऐसा वृक्ष है जो दिनरात यानी पूरे चौबीस घण्टे प्राण वायु (आक्सीजन) देता है।

कैसी अद्भुत माया है कि पीपल के वृक्ष मे, उसकी छाल में, दूध मे, रोगों को दूर करने की क्षमता है।

श्रीकृष्ण ने वृक्षो में सबसे श्रेष्ठ पीपल को बताया है। पौराणिक विवेचना के अनुसार पीपल वृक्ष को लगाना ऐसा ही है जैसे कि अपनी सन्तान का पालना और श्रेष्ठ नागरिक बनाना। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने बिहार अचल के गया जनपद मे एक पीपल के वृक्ष के नीचे घोर तपस्या करते हुए प्रकाश पाया था। तुलसीदास की रामायण के उत्तर कांड में तुलसी की आध्यात्मिक कल्पना कागभुशुण्ड का निवास हिमालय मे उगे देव पीपल के विशाल वृक्षों में दिखाया है। वह पीपल के नीचे बैठकर ही प्रभु का ध्यान करता था। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ब्रह्ममुहूर्त मे पीपल के वृक्ष के नीचे समाधि लगाकर ईश ध्यान में अनेकों बार देखे गये। यह है पीपल वृक्ष की ऐतिहासिक मान्यता। परन्तु सत्य यह है कि पीपल में देवता निवास करते हैं। सभी आर्यों का मत है कि वेद ईश्वर की वाणी है कि पीपल वृक्ष में देवताओं का निवास है।

वैदिक परिपाटी के अनुसार देवता से अभिप्राय विद्वान जन से है क्योंकि बुद्धिमान लोग ही पीपल की वैज्ञानिकता से, उसमे उपलब्ध प्राणवायु से लाभ उठाकर जनजीवन को उच्च शिखर पर ले जा सकते हैं। साधारण लोग पीपल को पानी चढ़ाकर माथा नवाकर या पीपल के पेड़ के चारों ओर सूत लपेटकर यह समझ बैठते हैं कि पीपल देवता को प्रसन्न कर लिया। हालांकि पेड़ नश्वर है और सत्य यह है कि परमात्मा अनश्वर, अजन्मा अजर तथा सर्वज्ञ है और पीपल का वृक्ष जड़ प्रकृति का रूप मात्र है। यह तो एक अवसर होता कि लोग पूजा के आडम्बर में फसकर उसकी प्राण वायु से उन क्षणों में लाभ उठा लेते हैं।

पीपल वृक्ष को पानी की भी आवश्यकता नहीं होती। दीवार हो या पत्थर, कुआं हो या कंकड़ पीपल बिना पानी की सहायता के उगता देखा जा सकता है। उसकी परिक्रमा के बहाने से साधारण जन को प्राण वायु मिल जाती है। वास्तव में हमें पीपल का पूजन नहीं, सेवन करना चाहिये। अथर्ववेद में लिखा है—"यत्रा श्वत्था प्रति बुद्धा-अभूतन" जिसका स्पष्ट अर्थ है—जहां अश्वत्थ अर्थात् पीपल वृक्ष होते हैं वहीं ज्ञानी विद्वान जन निवास करते हैं। हमको यह भी ज्ञात होना चाहिये कि पीपल तले आते ही विद्वत्ता कोई आसमान से नहीं टपकेगी। वेद मन्त्र का आशय है कि पीपल के गुणों से लाभ उठाकर विद्वान एवं जागरूक लोग ज्ञान विज्ञान और ध्यान की क्रिया में पारंगत हो जाते हैं।

कैसा अजीब आश्चर्य है कि पीपल वृक्ष पर फल तो आते देखे जाते हैं परन्तु फल आने से पूर्व फूल उगते नहीं देखे। सुखों के फूलों के घमण्ड में चूर होना नादानी है। यह शिक्षा पीपल से प्राप्त होती है। पीपल सभी छांव देता है, स्वस्थ रखता है, सौ रोगों को दूर भगाता है मगर पूरे वृक्ष पर कोई भी कांटा नहीं। सब इसके नीचे आकर सुख की सांस लेते हैं। पीपल की छांव व इसके पत्तों से छनी हवा प्राण वायु दिमाग की ताजगी को बढ़ाती है और चेतनता का प्रकाश करती है।

पीपल का बड़ा महत्व वायु प्रदूषण रोकना है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी के मध्य में फैली अनेकों प्रकार की विषैली गैसों को शुद्ध करके यह अपने नीचे धरातल पर और आस-पास के क्षेत्रों पर प्राण वायु छोड़ता है। और यही कारण है कि दमा, तपेदिक आदि भयकर रोगों मे पीपल तले रहने के प्राचीनतम वैदिक अनुसन्धान आज प्रत्यक्ष मे बताये जा रहे हैं तथा प्रयोग किये जा रहे हैं। यह एक आश्चर्यजनक सत्य है कि पीपल तले दिन में कभी अंधेरा नहीं होता और यह भी सत्य है कि पीपल चाहे कितना ही सघन क्यों न हो जावे सूर्य की किरणों को ठन्डा करके ही धरती तक आने देता है।

वेदों में लिखा है 'तत्र अमृतस्य चक्षणाय' अर्थात् पीपल को विधिवत् नियमानुसार सेवन व प्रयोग करने से अमृत की प्राप्ति होती है। इस प्रकार से वेद वाक्य से प्रमाणित है कि वेद में पीपल को अमृतमय माना गया है।

इन सब तथ्यों को लिखने की मेरी मूल भावना यह रही है कि पीपल में रचनात्मक कार्य कराने की विशेष क्षमता है। यह वास्तव में कर्मयोग का ज्ञान देता है। निरन्तर जीवन पर्यन्त कर्मठ रहना पीपल के स्वभाव की महान विशेषता है। इसके पत्ते तब भी हिलते-डुलते रहते हैं जब वायु रुकने या भारी हो जाने पर अन्य वृक्षों के पत्ते हिल ही नहीं पाते हैं। इसका रस, कोमल पत्ते और नर्म शाखायें सेवन करने से अनेकों व्यक्ति अनेकों रोगों से मुक्त होते देखे गये हैं। इसकी विशेषता यह है कि वायु के समान तरंगित होने से पाचन में हल्के होते हैं और प्रत्येक मौसम मे लाभदायक। वैद्यक के अनुसार छोटे बच्चे से लेकर वृद्ध तक के लिए पीपल हितकारी है। पीपल के पत्ते निरन्तर हिलते हुए मूक वाणी से भारतीय जनमानस की ओर यह संकेत करते हैं कि नस-नस मे तरुणता का आभास भरा हो और सदा कर्मठ होकर शुभ कार्यों में लगे रहे तभी तो श्रीकृष्ण ने जो वेदों के परम ज्ञानी थे यह कहा था कि 'पेड़ों में मै पीपल हू।'

जिन्होंने वेदों का स्वाध्याय किया है वह सब जानते होंगे कि पीपल तो आक्सीजन (प्राणवायु) का सिलेण्डर है। खांस, दमा, यक्ष्मा, टाइफाईड्स, डिप्थीरिया, और कैंसर के रोगियों के लिये पीपल भगवान का दिया हुआ वरदान है। रात्री को सब पेड़ घातक वायु छोड़ते हैं, परन्तु पीपल दिन रात जीवनवायु (प्राण वायु) छोड़ता है।

आवश्यक सूचना

धर्म शिक्षा परीक्षाए १९८६

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश द्वारा सचालित धर्म शिक्षा परीक्षा के फार्म आर्य विद्यालयों को पूर्व ही भेजे जा चुके हैं, परन्तु फार्म अभी तक कार्यालय को पूर्ण रूप से भर कर प्राप्त नहीं हुए हैं। धर्म शिक्षा परीक्षा की तिथि १९-३-८६ दिन रविवार को निर्धारित की गई है। अत सभी आर्य विद्यालयो के प्रधानाचार्यों से अनुरोध है कि धर्म शिक्षा परीक्षा फार्म शुल्क सहित १५-२-८६ तक अवश्य भेजने की कृपा करें।　माधवसिंह

मन्त्री—प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश
लखनऊ

रजतजयन्ती समारोह

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मीरजापुर का रजत जयन्ती समारोह ७ से ९ मार्चतक आयसमाज मन्दिर ओबरा में मनाया जा रहा है जिसका उद्घाटन श्री मनमोहन जी तिवारी सभा मन्त्री करेंगे। मुख्य अतिथि श्री ए० के० शाह अध्यक्ष राज्य विद्युत् परिषद उ० प्र० होंगे। महिला सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती सन्तोषकुमारी कपूर उपप्रधाना सभा करेंगी। उक्त अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित होगी।

आर्यजगत् के उच्चकोटि के उपदेशक व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।　—देवनसिंह संयोजक

शोक समाचार

आर्यसमाज पवावा पो० कैमरी जनपद रामपुर के प्रधान श्री पालसिंह जी आर्य की पुत्रवधू के आकस्मिक निधन पर परिवार एव सम्बन्धित जनों में शोक व्याप्त है।

श्री पालसिंह जी आर्य ने अपनी पुत्र वधू के निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा को १०१) (एक सौ एक) रुपया दान दिया, सभा की ओर से प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति व सद्गति तथा दुखित व सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

—विश्वम्भरदत्त शास्त्री उपदेशक सभा

—आर्यसमाज परीक्षितगढ़ (मेरठ) के मन्त्री श्री आशाराम आर्य एम० ए० विद्यावाचस्पति जी की होनहार सुयोग्य सुशीला सुपुत्री ओ३मकुमारी कक्षा १० की योग्य छात्रा का अचानक हृदयगति रुक जाने पर मृत्यु हो गई। ईश्वर से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को शांति तथा परिवार को धैर्य प्रदान करें।　—मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज कोटद्वार की यह सभा मारीशस के गवर्नर जनरल एव भूतपूर्व प्रधान मन्त्री सर शिवसागर रामगुलाम के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है। तथा परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा सद्गति के लिये प्रार्थना करती है।　—मन्त्री

शताब्दि महोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश का

१५ से १८ मई तक—१९८६ के मध्य
डी० ए० वी० कालेज प्राङ्गण-लखनऊ में

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० को स्थापित हुए एक सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। सौ वर्षों मे सभा ने प्रदेश के आर्य समाजों को सङ्गठित करने और उन्हें दिशा निर्देशन का यथा साध्य प्रयास किया है। शताब्दि समारोह विशेष भव्यता के साथ मनाया जायेगा जिसमे आर्यजगत् के मूर्धन्य नेताओं के अतिरिक्त भारत के प्रधान मन्त्री अथवा राष्ट्रपति विशेष अतिथि होगे।

० समस्त आर्यसमाजें आर्य उपप्रतिनिधि सभायें, आर्य जन और उत्तर प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिकों से अनुरोध है कि इसे सफल बनाने के लिये हमारे हाथों को सुदृढ़ करें अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सभा को भेजने का प्रयास करें।

इस अवसर पर सभा के १०० वर्ष का इतिहास प्रकाशित होगा। समस्त आयसमाजों की विवरण पत्रिका भी संलग्न होगी। अत समस्त आर्यसमाजें एक मास के अन्तर्गत अपने समाज का इतिहास अपने क्षेत्र के विगत १०० वर्षों के अन्तराल के विशेष आर्यजनों का परिचय और गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करें जिससे विवरण पत्रिका में सम्मिलित किया जा सके। इस अधिवेशन की सफलता के पीछे प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों का समवेत शक्ति होना आवश्यक है।

इन्द्रराज　　　　मनमोहन तिवारी
प्रधान　　　　मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क १५ फरवरी १९८६ को समाप्त हो जाता है। वी पी भेजने मे ४-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी पी न भेजी जाय। जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) भेज दें अन्यथा उनके नाम वी पी. भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी पी भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे है। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) कर दिया गया है।

७४३, ७९६, ११२०, २२२३, २३५२, २३५६, २९६२, ४२७३, ४७११, ५२०१, ५७१६, ७०१२, ८७३०, ९०९०, ९०१५, ९१०६, ९६०३, ९६०६, ९८०८, ९८१७, १००१६, १०११८, ११९२५, १११३७, ११५०५, ११५०६, ११५११, ११५१८ ११५४१, ११८३६, ११८५३, ११८५४, १२१२१, १२५७६, १२५७८, १२५७९, १२५८०, ११५८९, १२८२०, १२८२४, १२८२५, १२८२६, १२८३०, १२८३१, १२८३२, १२८३३, १२८३५, १२८३६ १२८४०, १३०५२, १३०५३, १३०५५, १३०५६, १३०५९।

विनीत—
—व्यवस्थापक

आर्य समाज एच० ए. एल (इन्दिरा नगर) लखनऊ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक २६ जनवरी सन् १९८६ को इन्दिरा सामुदायिक केन्द्र इन्दिरा नगर के मध्य समागार मे दो द्विवर्षीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमे महिला सम्मेलन तथा आर्य युवा सम्मेलन का आयोजन हुआ। यज्ञ के आचार्य वैद्य कुन्दन लाल आर्य के संयोजकत्व मे यज्ञ का कार्य सम्पन्न हुआ। उत्सव मे आर्य जगत के कई विद्वान एवं वक्ता सम्मलित हुये, श्रीमती डा० शांतिदेव बाला, लखनऊ, श्री पं० दीनानाथ सिंह (मन्त्री आर्य कुमार सभा उ० प्र०) तथा सभा के उपदेशक पं० लालता प्रसाद आदि विद्वानो के प्रभाव शाली प्रवचन हुये। अन्त मे श्री जे० पी० अग्रवाल श्री इन्जीनियर समाज प्रधान की अध्यक्षतामे प्रीति-भोज का सफल आयोजन हुआ। कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

सम्वाददाता

मीरजापुर में वार्षिकोत्सव की धूम

आर्य समाज कदवां-मीरजापुर का वार्षिकोत्सव २५—२६ फरवरी दीक्षितपुर २७—२८ फरवरी, बगहा १—२ मार्च, बनेता—डोमनपुर ३—४ मार्च, पचरांव ५ मार्च १९८६ को उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है।

बेचनसिंह संयोजक

आर्य समाज पिलखुवा (गाजियाबाद) का ग्यारहवा एव ऋषि बोधोत्सव आगामी माह ६, ७, ८ व ९ मार्च ८६ को मनाया जायेगा। आर्य जगत के अनेकों विद्वान वेद प्रचार हेतु पधार रहे हैं। म न्त्री

आर्य समाज मऊ नाथ भञ्जन आजमगढ़ का ८२ वां वार्षिकोत्सव दि० ९-३-८६ से १२ ३ ८६ तक समारोह पूर्वक मनाया जायेगा जिसमे आर्य जगत के प्रमुख विद्वान एव वक्ता पधार रहे हैं। मन्त्री

समाचार

'आर्य समाज वीर गांव टिटोटा बुलन्द शहर (उ० प्र०) का ३३ वां वार्षिकोत्सव दि० २२,२३ व २४ मार्च १९८६ को वीर गाव टिटौटा में काफी धूम-धाम के साथ आयोजित किया जा रहा हैं। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के धुरन्धर विद्वान एव प्रभावशाली भजनोपदेशक पधार रहे हैं।' मन्त्री

—सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि दि० २५-३-८६ से दि० ४-३-८६ तक आर्य समाज सरधना (मेरठ) मे आर्य महोपदेशक शास्त्रार्थ महारथी श्री प० ओमप्रकाश जी शास्त्री खतौली निवासी का वैदिक विषयो पर प्रवचन होगा। मन्त्री

वेद मंदिर व यज्ञ शाला की स्थापना

सभी आर्य बन्धुओं को यह जान कर प्रसन्नता ह गी कि मैने अपने यहाँ स्थानीय आर्य समाज सांडी जि० हरदोई की आवश्यकता को अनुभव करते हुये वेद मन्दिर और यज्ञ शाला का निर्माण कराया है और इसमे चारो वेदो की स्थापना कर चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन करने जा रहा हू। इसी प्रकार की एक वसीयत आर्य समाज सांडी के नाम भी मैंने कर दी है। इस कार्य से कतिपय पौराणिक अराजक तत्व मुझपर क्षोभ गये हैं और वे मेरे मस्तिष्क को असंतुलित बताकर जनता मे भ्रम फैला रहे हैं। अत प्रबुद्ध नागरिक किसी प्रकार भ्रम में न पडे और सावधान रहे तथा मेरे इस शुभ धर्म काय मे भाग लेकर लाभ उठायें। सूचनार्थ निवेदन है।

निवेदक
मेवाराम गुप्त ठेकेदार
मु० नवाबगज
साडी जि० हरदोई

समाचार

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी (मेरठ) के तत्वावधान मे दि० २६ फरवरी से २ मार्च १९८६ के मध्य ग्राम माजरा (रोहटा) मेरठ मे यजुर्वेद परायण यज्ञ का आयोजन होगा। यज्ञ का कार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम के आचार्य श्री स्वामी विवेकानन्द जी के पौरोहित्य में होगा। उसी अवसर पर एक नेत्र चिकित्सा शिविर का भी आयोजन होगा जिसका उद्घाटन सभा प्रधान प० इन्द्रराज जी करेंगे। रोगियो के निवास एवं भोजन की नि शुल्क व्यवस्था होगी। मन्त्री

आर्य समाज ब्रह्मपुरी मेरठ मे ऋषि बोधोत्सव का विशेष कार्यक्रम दि० ८ मार्च १९८६ को प्रात ८ से १० बजे तक सम्पन्न होगा।

मन्त्री

नगर आर्य समाज जौनपुर का १२ वा वार्षिकोत्सव महर्षि दयानन्द जन्म एवं बोध उत्सव दि० ८ मार्च से ११ मार्च १९८६ के मध्य सम्पन्न होगा। आर्य जगत के प्रमुख विद्वान, वक्ता एव भजनोपदेशक सम्मिलित होगे।

मन्त्री

आर्य समाज खेडा अफगान (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव दि० २६ फरवरी से २८ फरवरी १९८६ के मध्य सम्पन्न होगा। आर्य जगत के प्रमुख विद्वान, भजनोपदेशक एव सन्यासी पधार रहे हैं। मन्त्री

आर्य समाज बहराइच का वार्षिकोत्सव दि० ८ मार्च से ११ मार्च १९८६ तक सोल्लास सम्पन्न होगा। प्रमुख विद्वान एव वक्ता पधार रहे हैं।

मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण स० एल. डब्ल्यू/एन पी ७१
मा० माघ २०
माघ शुक्ल १, रविवार
९ फरवरी १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

तृतीय शोध संगोष्ठी सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दि० १३-१-८६ को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान प्रभात आश्रम टीकरी, भोलाझाल, मेरठ (उ०प्र०) मे वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता मे वैदिक वाङ्मय में सृष्टि-उत्पत्ति प्रक्रिया' विषय पर डा० निरूपण विद्यालंकार के संयोजकत्व मे एक शोध सगोष्ठी का समायोजन हुआ । श्री शोमदेव शतांशु ने शोध संस्थान के गत वर्ष के प्रगति विवरण का परिचय दिया । इस संगोष्ठी मे अधोलिखित विद्वान्-विदुषियों के शोधपत्र पढ़े गये ।

१–सुनीता वर्मा–मेरठ वि० वि० ऋग्वेद के १०म मण्डल मे सृष्टियुत्पत्ति प्रक्रिया ।

२–डा० गणेशदत्त जी प्रधानाचार्य साहिबाबाद संस्कृत कालेज, ने ऋग्वेद के नासदीय सूक्त के आधार पर सृष्टि उत्पत्ति क्रम ।

३–डा० भारत भूषण गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० ने सृष्टि उत्पत्ति ज्ञान मे ऋत, सत्य, सलिल, तपस्, संवत्सर शब्दों का महत्व ।

४–डा० वेदप्रकाश गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने औपनिषदी सृष्टि प्रक्रिया ।

५–प्रोफेसर सत्पाल नारंग गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय ने सृष्टियुत्पत्ति के विषय मे विभिन्न मतो का पर्यवेक्षण ।

६–डा० निगम शर्मा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने वैदिक वाङ्मय मे वर्णित सृष्टि प्रक्रिया पर संस्कृत भाषा मे अपना शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया ।

अन्त मे अध्यक्ष महोदय ने गोष्ठी मे विद्वानो के पधारने पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए वैदिक विषयो के शोध की महत्ता बताई । संयोजक डा० निरूपण जी ने सबको धन्यवाद देते हुए–शांति पाठ पुरस्सर सगोष्ठी का समापन करवाया । —आचार्य प्रभात आश्रम

स्वामी पद्ममुनी जी का निधन

पौड़ी गढ़वाल के आर्यसमाज के बहुत ही कमठ सन्यासी स्वामी पद्ममुनी जी महाराज का दिनांक ३१ १२ ८५ को उनके पैतृक ग्राम-कोटलाल पट्टी–मोदास्यू पौड़ी गढ़वाल मे लगभग ८० वर्ष की अवस्था में निधन हो गया । आर्यसमाज कोटद्वार के ५-१-८६ के साप्ताहिक अधिवेशन मे स्वामी जी की स्मृति मे शोक मनाया गया तथा उन की दिवगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हुए दो मिनट का मौन रखकर स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई । —मन्त्री

—मकर संक्रान्ति के पावन पर्व पर श्री वीरबलप्रसाद आर्य (पुस्तकाध्यक्ष) आयसमाज कोपागज (आजमगढ़) के यहा सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार श्री नरेन्द्र जी आर्य के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ । –संवाददाता

—आयसमाज मेहदावल (बस्ती) का ७० वां वार्षिकोत्सव दि० २१ जनवरी से १ व २ फरवरी १९८६ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ । —मन्त्री

आगामी हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रचार एवं सेवा शिविर

निश्चय किया गया है कि आगामी दिनांक १४ जनवरी से ९, १० अप्रैल ८६ तक लगने वाले हरिद्वार मे बारह वर्षीय कुम्भ मेले के ऐतिहासिक अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रचार एवं सेवा शिविर लगाया जाय । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने जीवन मे कुम्भ के अवसरपर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसे भी १०५ वर्ष के लगभग हो चुके हैं । अत अन्धकार एव रूढ़िवादिता का खण्डन करते हुए समुचित मार्ग दर्शन का प्रचार किया जायेगा । विद्वानों के भाषण, उपदेश होंगे, सेवा शिविर द्वारा यात्रियो की स्वास्थ्य सेवा आदि की व्यवस्था रहेगी साथ ही विशेष स्नान पर्वों के दिन ऋषि लगर का भी आयोजन होगा वहाँ शिविर लगाकर सभा के वरिष्ठ अधिकारी भी स्वय व्यवस्था की देखरेख करेंगे । समस्त प्रदेश की उपप्रतिनिधि सभाओ, आर्यसमाजो और आर्यजनों से अनुरोध है कि इस अवसर पर हमारी सहायता करें, अपने क्षेत्र मे धन और [illegible]दि का सग्रह करें, सभा को सूचना दें और सुविधानुसार उनका संग्रहीत अन्न हरिद्वार भिजवाने का प्रयास किया जाय । सबके सम्मिलित सहयोग से ही हमारे उद्देश्य सम्पन्न हो सकते हैं तदर्थ सबका सहयोग अपेक्षित है और इस मे अविलम्ब कार्य प्रारम्भ कर दिया जाय ।

इन्द्रराज	कृष्ण बलदेव महाना	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

श्रद्धाँजलिया

प्रदेश की निम्न आर्यसमाजो एव आर्य संस्थाओ ने शास्त्रार्थ महारथी आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् एव वक्ता स्व० श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री के निधन पर अपनी शोक संवेदनायें एव श्रद्धांजलिया अर्पित की हैं कि प्रभु दिवगत आत्मा को चिर शांति एव शोक विह्वल परिवार को धैर्य प्रदान करे ।

—आर्यसमाज परीक्षतगढ़ (मेरठ)
—आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी मुरादाबाद
–आर्यसमाज बिसौली (बदायू)
—आर्यसमाज नया शहर इटावा
—पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी
—आर्यसमाज वार्ड १७ गोविन्दनगर कानपुर

—आर्यसमाज बिसौली (बदायूं) के तत्वावधान मे, दिनांक २९ नवम्बर से १ दिसम्बर ८५ तक विशाल सत्सग का आयोजन हुआ । —मन्त्री

—दिनाक २६ जनवरी १९८६ को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ मे यज्ञ, ध्वजारोहण, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा पुरस्कार वितरण का आयोजन हुआ । —मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीनआर्यभास्करप्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ओ३म

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं २२४१/२७ घोषणा पत्र स० ७ / २८-२-८१

वर्ष ८९] सा० माघ २७, माघ शुक्ल ७, रविवार सवत् २०४२ वि०, दि०, १६ फरवरी १९८६ [अङ्क ७

प्रार्थना

ओं बृहस्पिविश्म ऽ एषा भूरि शस्तं पृथु. स्वर । येवामिन्द्रो युवा सखा ।। —यजु ३३।२४

भावार्थ—जिनका युवा राजा मित्र है, उनका महान् प्रताप बहुत प्रशसनीय कर्म और विस्तृत सद्न आदि प्रस्त्र होते हैं ।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

राष्ट्र के चरित्र और नैतिक स्तर में गम्भीर गिरावट

अभी समय है, सावधानी बरती जाय नहीं तो रोग असाध्य हो जायेगा

आधुनिक भारत के निर्माताओं मे महर्षि दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी को विशेष प्रमुखता दी जाती है । ऋषिवर दयानन्द ने जो समस्त प्रयास धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में किये उनका केवल एक उद्देश्य था कि राष्ट्र ऊपर उठे । राष्ट्र व्यक्तियों का समूह है अत व्यक्ति में सुधार आवे और उसका सामाजिक तथा आध्यात्मिक जीवन स्तर उदात्त बने । इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आर्यसमाज की स्थापना की गई । कहना अनुचित न होगा कि गुजरात के एक महापुरुष ने जिन आदर्श सूत्रों की रचना की उसी प्रदेश के दूसरे श्रेष्ठ व्यक्ति महात्मा गांधी ने उन्हीं आदर्श सूत्रों की व्याख्या की और राजनैतिक जीवन मे उसे उतारा जिसके लिए उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द से बल मिला और स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी जहाँ पर महात्मा गांधी अफ्रीका से भारत आने पर प्राय छ महीने रहे आदर्श की दीपशिखायें प्रज्वलित हुयीं । आज चाहे सामाजिक जीवन हो या राजनैतिक जीवन दोनों का आदर्श, नैतिकता, और चरित्र प्रधानता को तिलांजलि देकर केवल एक उद्देश्य है स्वार्थ सिद्धि, चाहे उसके लिए पतन के किसी भी निम्न धरातल का स्पर्श करना पड़े ।

भारतीय लोक सभा और विधान सभाओ के बजट सत्र प्रारम्भ हो रहे हैं और समाचार मिल रहे हैं कि विपक्ष, राष्ट्रपति और राज्यपालों के प्रारम्भिक भाषणों में किस प्रकार का बचकाना प्रदर्शन कर रहे हैं । पद की गरिमा समाप्त है । विगत ६ फरवरी को उत्तर प्रदेश के विधान सभा के कतिपय विपक्ष के सदस्यों ने अपने चेहरे पर राक्षसी मुखौटा लगाकर राज्यपाल का उपहास किया, पानी भरे गुब्बारे फेंके यही स्थिति प्राय: सभी राज्यों में हुई क्या यह भावी भारत को स्वस्थ लोकतांत्रिक प्रणाली की ओर ले जाने मे सक्षम होगी । यद्यपि विपक्ष के साथ सत्ता पक्ष का भी दोष है उनमें भी गिरावट है कि वह सत्ता के मद में विपक्ष के सत्य मांग की अवहेलना करते हैं आर्यसमाज के भी सगठन इन दोषों से बरी नहीं हैं । अकेले उत्तरप्रदेश में ही ८० / से ऊपर आर्यसमाजें हैं जो सत्ता सघर्ष मे रुचि रखती हैं और आर्यसमाज के मूल सिद्धांत, प्रचार और समाज सेवा से विमुख हो रही हैं । श्री राजीव गांधी जिस दल के वे प्रधान हैं उसमे नैतिकता लाने के लिए प्रयत्नशील हैं 'आर्यमित्र' उनकी प्रशसा करता है । क्या अन्य राजनैतिक दल और आर्यसमाज के नेता भी पूर्ण बल के साथ जैसे राजीव जी सत्ता के दलालों को निकालने के लिये अभियानशील हैं अपने दलों से सत्ता के दलाल पदलोलुप व्यक्ति और निष्ठा शून्य जनों को निकालकर दल को नवीन उषा लालिमा के नव जीवन को प्रदान करने की चेष्टा करेंगे । इस समय कायाकल्प का युग है, प्रयास किया जाय कि यदि व्यक्ति सुधर जाय तो राष्ट्र सुधर सकता है । —आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

ओ३म्
आर्य मित्र



सम्पादकीय

लखनऊ-रविवार, १६ फरवरी १९८६, दयानन्दाब्द १६१
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६

पोप पाल की भारत यात्रा

कैथोलिक ईसाइयो के मूर्धन्य धर्म गुरु ने भारत की दस दिन की यात्रा की और विशेष रूप से उन स्थानों पर गये जहा ईसाई धर्मावलम्बियों का बहुमत था। परिचय इस प्रकार है कि हजरत ईशामसीह का जन्म योरुशलमसे८ किलोमीटर दूर 'बैथलहम' मे हुआ था और योरुशलम से उनकी शिक्षायें प्रारम्भ हुई। परन्तु ईसाइयों का मुख्य केन्द्र इटली का रोम नगर है कारण है कि योरुशलम, इजराइल का एक अग है। मुस्लिम प्रदेशों से यहूदियो का सघर्ष होता रहा और आज भी हो रहा है इसलिये ईशामसीह के समय में ही उनके शिष्य सैन्टपीटर इटली के रोम नगर मे जाकर धर्म प्रचारक हुए और वहाँ से ईसाई धम योरुप, में फैला और योरुप के राजनैतिक प्रभाव मे 'ऐशियाई क्षेत्र उपनिवेश बनने लगे तो यहाँ भी ईसाई धर्म फैलने लगा। सघर्ष होते रहे और अन्त मे रोम का ही प्रमुख पादरी पोप जिसका इटैलियन अर्थ है पिता धर्म प्रमुख बना और विभिन्न देशों की चर्चें उसके आधीन हैं। रोम में ही वेटिकन वह भूखण्ड है जो १०९ एकड़ का है जिसमें पोप के निवास, चर्चों के कार्यालय और चर्च हैं इसकी एक स्वतन्त्र सत्ता का प्रधान पोप कहलाया। यद्यपि इटली मे भी मुसोलिनी आदि ने इस सर्वोच्च सत्ता को स्वीकार नहीं किया लेकिन फिर भी सारे ससारके कैथोलिक ईसाई जिनकी सख्या भारतमें एक करोड बीस लाख के लगभग है वह सब पोप को ही धर्म के सम्बन्ध में एक मात्र सर्वश्रेष्ठ सत्ता स्वीकार करते हैं इस प्रकार पोप जान पाल द्वितीय क्रिश्चियन समुदाय के सर्वश्रेष्ठ धर्म गुरु हैं।

भारत मे यदि पोप जान पाल ईसाई चर्चों के द्वारा यात्रा के लिये बुलाये जाते तो अनुचित नहीं था परन्तु एक ओर धर्म निरपेक्षता का विशेष रूप से हिन्दुओ के सामने ढका पीटने वाली भारत सरकार के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के विशेष आमंत्रण पर पोप पाल द्वितीय भारत पधारे यह निमंत्रण न्याय सगत नहीं था। क्या भारत सरकार यदि आज पोप को आमंत्रित करती है कि वह भारत मे ईसाइयों की गतिविधियों को देखें और उनकी खुशहाली के लिये भारत सरकार को प्रमाण पत्र दें तो यह भी हो सकता है कि कल भारत सरकार मक्के के सबसे बडे मोलवी को भी बुलाकर भारत दर्शन का मौका दें। भारत उदार भावना का देश है यहा कोई भी व्यक्ति स्वेच्छा से आ सकता है परन्तु 'आर्यमित्र' को जो आक्षेप है वह यह है कि भारत सरकार ने राष्ट्रपति के द्वारा निमंत्रण भेजकर उनके निमंत्रण का सरकारीकरण किया और भारत में देहली, कलकत्ता, शिलांग, मद्रास, और केरल के जिन स्थलों का उन्होंने निरीक्षण किया उसका सारा व्यय भार भारतीय राजकोष पर गया जो करोडों मे पहुच सकता है। इसीलिये सार्वदेशिक सभा दिल्ली के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने भी राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह को तथा केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री चव्हाण को विरोध पत्र प्रस्तुत करते हुए बडे ही तर्क संगत ढंग से भारत सरकार को आमत्रण देने की पद्धति का खडन किया और अपना रोष प्रकट किया। गृह मन्त्री को भी स्पष्ट कर दिया कि पोप जान पाल भारत भ्रमण करें परन्तु कोई भी ऐसा कार्य प्रत्यक्ष या—परोक्ष में न हो जो ईसाई धर्म को बढ़ावा दें। इसके लिये सार्वदेशिक प्रधान बधाई एव प्रशसा के पात्र हैं।

पोप जान पाल ने यद्यपि नियत्रित भाषा में अपने भाषण दिये प्रेम एवं सौहार्द्रता की बातें कहीं परन्तु ईसाई मिशनरियों को इससे बल मिला। लिखने की आवश्यकता नहीं कि भारत मे फैले हुए ईसाई मिशनरी सेवा, शिक्षा, चिकित्सा के माध्यम से निरीह एव निर्धन व्यक्तियों को ईसाई धर्म में प्रवेश देने में किसी भी प्रकार संकोच नहीं कर सकते। अत 'आर्यमित्र' भारत सरकार से अनुरोध करता है कि धर्म निरपेक्ष का नारा लगा कर इस प्रकार धर्म विशेष के व्यक्तियों को प्रोत्साहित करना अनुचित है। विशेष रूप से दिल्ली में आगमन और वहाँ से प्रस्थान जहाँ कि राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, केन्द्रीय मन्त्री उपस्थित थे, धर्म निरपेक्षता के सिद्धात के विरुद्ध है। भारत की गरीबी अभी दूर नहीं है अत. भारत को दूसरों के लिये यात्रा कराने मे व्यय करने की अपेक्षा वह धन देश की गरीबी में खर्च करना श्रेयस्कर होता।

आचार्य रमेशचन्द्र एम०

धर्म शिक्षा परीक्षा १९८६

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश द्वारा सचालित धर्म शिक्षा परीक्षा की तिथि १९-३-८६ को परिवर्तित कर ९-३-८६ दिन रविवार को कर दिया गया है अत. सभी आर्य विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से अनुरोध है कि धर्म शिक्षा फार्म एव शुल्क सहित २०-२-८६ तक अवश्य भेजने की कृपा करें।

माधवसिंह
मन्त्री—प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश
लखनऊ

शोक समाचार

आर्य समाज लखीमपुर के सभी सभासद एवं पदाधिकारी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एव पूर्ण निष्ठावान ऋषि भक्त श्री रामस्वरूप जी आर्य के निधन पर अपना शोक व्यक्त करते हैं। साथ ही परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनके सुयोग्य पुत्र श्री ओम प्रकाश जी आर्य सहित शोक संतप्त परिवार को यह शोक सहन करने की शक्ति प्रदान करें एव दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें। मन्त्री

आर्य समाज शास्त्री नगर, विजय नगर कानपुर का तीसवां वार्षिकोत्सव दि० १ मार्च से ३ मार्च १९८६ के मध्य धूम-धाम से सम्पन्न होगा। आर्य जगत के प्रमुख विद्वान, वक्ता एव भजनोपदेशक सम्मलित हो रहे हैं। मन्त्री

आर्य समाज हल्द्वानी (नैनीताल) का वार्षिकोत्सव दिनांक २४ फरवरी से १ मार्च १९८६ के मध्य समारोह पूर्वक मनाया जायेगा इसी अवसर पर महर्षि दयानन्द वाक् प्रतियोगिता का कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा जिसकी अध्यक्षता श्री सुरेशचन्द्र जी जोशी शिक्षा निदेशक करेंगे। मन्त्री

अध्यात्म सुधा

विश्व कल्याणकर्ता-यज्ञ

(लेखक—श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य, वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर ४५२००७ मध्य प्रदेश)

(गताङ्क से आगे)

दीपक मे जैसे घृत या तेल रहने से दीपक की रुई की बत्ती दीर्घकाल तक ज्योतिर्मय बनी रहती है उसी प्रकार समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि के लिये घृताहुतियां अति आवश्यक हैं। अग्नि एवं घृताहुतियो से समृद्ध ज्वालाओ से वच, ऊर्जा वायुमण्डल मे, अन्तरिक्ष मे दशो दिशाओ मे व्याप्त होकर अणु-परमाणु मे वैद्युतिक शक्ति संचारित करके नई ऊर्जा, स्फूर्ति तथा जीवन का संचार करती है अपवित्रता को भी दूर करती है। घृत मे परम शोधक शक्ति है। शरीर मे व्याप्त विष को दूर करने मे प्रसिद्ध है। इसके इसी गुण के कारण यज्ञ द्वारा समस्त अन्तरिक्ष को शुद्ध, निर्विष एवं शक्ति-सम्पन्न करने के लिए आहुति रूप मे प्रयुक्त होता है।

७—यज्ञ का तीसरा पदार्थ—हवि—

समिधा से प्रदीप्त अग्नि मे घृताहुति देने से विश्व के पर्यावरण मे शोधन एव पुष्टि होती है। परन्तु और भी अधिक लाभ तथा इच्छित विशेष लाभ प्राप्ति के लिए हव्य द्रव्यो का भी प्रयोग करना चाहिए। हव्य द्रव्यो के लाभ और प्रभाव को घृताहुति सहस्रगुना बढ़ा देती है। हव्य पदार्थ जिस जिस विशेष प्रयोजन के लिए यज्ञ मे प्रयुक्त होगे वे इन उन कामनाओ की पूर्ति करेंगे। अत यज्ञ द्वारा इच्छित पर्यावरण बनाया जा सकता है। वेद ने अग्नि को ऋत्विज ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र मे बता कर इच्छित ऋतु निर्माता—पर्यावरण निर्माता का रहस्य प्रकट किया है। हव्य पदार्थों के गुणज्ञान के आधार पर ही यज्ञ सब कामनाओ की पूर्ति करने मे समर्थ बन जाता है। इसलिए यज्ञान्त मे यजमान कहता है—सर्वान्न कामान्त्समर्धय—अर्थात् यज्ञाग्नि इष्टफल प्रदाता है-अत हमारी सब कामनाओं की पूर्ति करें।

८—हव्य पदार्थों के बारे मे वेद का निर्देश –

हव्य पदार्थों के बारे में वेद मे अनेक स्थानो पर वर्णन है। अथर्ववेद काण्ड ८ के सूक्त २ के छठे मन्त्र मे हव्य पदार्थो का निम्न रूप मे वर्णन है— 'जीवला नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम्।
त्रायमाणां सहमाना सहस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये॥

अर्थात् जीवन दने वाली, कभी हानि न करने वाली, स्फूर्ति प्रदाता जीवन की रक्षा करने वाली, रोगों को दबाने वाली, बलवती औषधियां यज्ञ मे जीवन की रक्षा और वृद्धि के लिए होम के द्रव्यों के रूप मे प्रयुक्त करनी चाहिये। ऐसी औषधियो के हव्य रूप मे प्रयोग करने से यज्ञ सब प्रकार से रक्षा करने वाला, सब दोषों का अर्थात् प्रदूषणादि का विनाशक होकर संसार का महोपकारक, जीवनदाता तथा समृद्धि करने वाला हो जाता है।

९—उक्त तीन पदार्थों के अतिरिक्त यज्ञ के लिए मन्त्र भी आवश्यक हैं—

उक्त तीनों पदार्थों के अतिरिक्त यज्ञ मे मन्त्रो की आवश्यकता का प्रतिपादन वेद में किया है, जैसा कि निम्न मन्त्र से प्रकट है—

'उप प्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते।'

—यजुर्वेद अध्याय ३ मन्त्र ११

यज्ञ मे पहुंच कर अग्नि के लिए मन्त्रों का उच्चारण इस प्रकार करें कि जिससे दूरस्थ एवं समीपस्थ सभी जन सुन सकें। अत यज्ञ में मन्त्र बोलना आवश्यक है। यज्ञकर्ताओं को मन्त्र तो बोलना ही चाहिये। जोर से बोलना चाहिये-परन्तु अन्य जो भी यज्ञ मे भाग लें, उपस्थित हो, उनको भी मन्त्र बोलना चाहिये। मन्त्र याद न हो तो स्वाहा को ध्वनि उच्च स्वर मे करनी चाहिए। मन्त्र की ध्वनि यज्ञ मे करने से यज्ञ से निर्मित आरोग्य प्रद प्राणों का प्रवेश एवं संचार शरीर की नस-नाड़ियो मे होने लगता है तथा अशुद्धियां निकल जाती हैं। अत यज्ञ के लिए उपर्युक्त तीन पदार्थों के अतिरिक्त मन्त्रोच्चारण भी आवश्यक है।

१०—यज्ञ सृष्टि का स्वभाव है—

यज्ञ कार्य सृष्टि स्वभाव एव नियम के अनुकूल है। नित्य सूर्योदय होता है। दिन होता है। प्रकाश होता है और ताप व्याप्त होता है। ताप के वायुमण्डल मे विभिन्न गतियां प्रारम्भ होने लगती हैं। सृष्टि का जीवन, चराचर जगत् का प्राण और आत्मा सूर्य ही है। सूर्य से ही प्राणो का प्रवाह चलता रहता है। वेद मे 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' मन्त्र वाक्य सूर्य के महत्व को प्रकट करता रहता है। उसी प्रकार हमारे लिए यह अग्नि भी महत्वपूर्ण है। इससे भी वही सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा सिद्ध किये जा सकते हैं। अग्नि तत्व ही यज्ञ का आधारभूत प्रधान तत्व है तथा प्रधान कार्यकर्ता है। अत वेद ने इसको पुरोहित कहा। यही प्रधान देवतत्व है। सर्व कार्य साधक है। वह हव्य द्रव्य पदार्थों को इतस्तत ले जाने वाला है। पवित्रकर्ता है। प्रवाहमान होने से व्यापक रूप से गतिकर्ता है। पावक है। प्रदूषणादि का शोधक है। सर्वार्थ साधक है। अग्नि मे जब यज्ञ किया जाता है तो उसकी शक्ति प्रभाव एव प्रमाण असीमित होने लगती है। यह यज्ञ सृष्टि प्रवाह के अनुकूल होने से ही महत्वपूर्ण है तथा हमारी सब कामनाओं की पूर्ति करने वाला हो जाता है।

११—यज्ञ द्वारा पर्यावरण मे शोधन प्रक्रिया—

यज्ञ ब्रह्माण्ड को शुद्ध एव पुष्ट करता है। संसार को जीवन देता है। अग्नि मे होमा हुआ पदार्थ वायु मण्डल मे शीघ्र व्याप्त हो जाता है व्याप्त हो जाने से अन्तरिक्षस्थ ताप एव विद्युतादि अग्नियों तथा सूर्य रश्मियों द्वारा ताप की तीव्रता, उग्रता एव ताप की परिवर्तित स्थितियो मे होमा हुआ पदार्थ सूक्ष्म रूप से उत्तरोत्तर ऊपर गति करता है और ताप की न्यूनता स वह नीचे की ओर भी गति करता है। इस प्रकार होमे हुए पदार्थों की गति यज्ञ के द्वारा ऊपर नीचे की ओर क्रमश होने लगती है और एक प्रकार की घर्षण क्रिया प्रारम्भ होने लगती है जिससे प्रदूषणो का निवारण कार्य शीघ्र होने लगता है। परिणामत.—शन्नो वात पवताम्—सुखकारी वायु चलने लगती है। अत प्रदूषणों के निवारण के लिए यज्ञ अत्यन्त सुगम तथा श्रेष्ठ साधन है। तथा इसको वैज्ञानिक कार्य समझकर अंगीकार करना चाहिये।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

हिन्दू समाज को खतरा

ऐ० शंकर
३६ फीरोजा मेंशन ग्रान्ट रोड, स्टेशन के सामने
बम्बई-४०००००७

(गतांक से आगे)

१३-हिन्दू लोग धर्म निरपेक्षता तथा सर्व धर्म समभाव के स्वप्न लोक में विचर रहे हैं जबकि अन्य धर्मावलम्बी युद्ध स्तर परहिन्दुओं को निगल जाने की दिनरात तैयारियां कर रहे हैं। हिन्दू लोग हमेशा अन्य धर्मावलम्बियों के साथ शांतिपूर्वक रहना चाहते हैं। पर उनकी सब उदारता के बावजूद भी भारत के १५ / मुसलमान पाकिस्तान के समर्थक हैं। जब पाकिस्तान की कोई टीम हाकी या क्रिकेट मैच मे जीत जाती है तब पाकिस्तान जिंदाबाद तथा 'अल्लाह ओ अकबर' के नारे लगाते हैं।

१४ यदि हम राष्ट्रीय मंच की ओर देखें तो पायेंगे कि एक ओर मुसलमान, ईसाई कम्युनिस्ट तथा विकृत विचार वाले हिन्दू तथा दूसरी ओर अपने निहित स्वार्थ वाले राजनीतिक दल अपने तुच्छ लाभ के लिए इस बृहत शांति प्रिय हिन्दू समाज का विभाजन करके उसे नष्ट करने पर तुले हुए है। वे अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण के लिये उनकी राष्ट्र विरोधी मांगों को भी पूर्ण करने मे एक दूसरे के प्रति होड़ लगा रहे हैं।

इन कष्टों को और अधिक बढ़ाने के लिये प्रेस और राजनीतिक नेता हिन्दू समाज की निरन्तर निन्दा करके उसे नीचा दिखाते हैं। जिससे उसका आत्म विश्वास नष्ट होकर उसका नैतिक पतन हो रहा है। हिन्दू लोग जो देश की आबादी के ८५ / भाग हैं अपने ही देश मे दूसरी श्रेणी के नागरिकों की तरह दर्जा पा रहे हैं। अल्पसंख्यकों का निरन्तर तुष्टीकरण होने के कारण वे अल्पसंख्यक आक्रामक होकर राष्ट्र विरोधी कार्यों मे लगे हुए हैं। विश्व के किसी देश में भी बहुसंख्यकों के साथ इस तरह का व्यवहार नहीं किया जाता है।

इस तरह के सब तथ्य समाचार पत्रों मे नहीं छापे जाते क्योंकि इस तरह की सचाई प्रकाशित करना साम्प्रदायिकता मानी जाती है। यह सब कार्य धर्मनिरपेक्षता के विकृत-स्वरूप के कारण ही हो रहा है।

परिणाम स्वरूप सारा हिन्दू समाज, उसके धार्मिक व सामाजिक नेता तथा उद्योगपति भावी खतरे के प्रबल अन्धकार मे हैं। उनका व्यवहार उस शुतुर्मुर्ग की तरह है जो शिकारी द्वारा पीछा किये जाने पर अपना मुंह बालू में छिपा लेता है और अन्त मे शिकारी द्वारा मारा जाता है। इसी तरह अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर पाकिस्तान, चीन तथा रूस मिलकर भारत को घेर रहे हैं।

१५-भारत कृष्ण भगवान की जन्म भूमि है। हिन्दुओं को गौमाता के प्रति बहुत श्रद्धा है। गोहत्या से हिन्दू समाज के ९० / लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचती है। बिनोवा भावे जो महात्मा गांधी के सर्वोत्तम शिष्य थे उन्होंने गोहत्या बन्द कराने के लिए अपना जीवन समर्पण कर दिया पर उनकी इच्छा पूरी नहीं की गई।

जो गोहत्या के समर्थक हैं वे भारत के शत्रु हैं क्योंकि गाय कृषि प्रधान भारत देश की आर्थिक नींव है। इसीलिए गांधी जी आजादी के बाद देश में तुरन्त गोहत्या बन्द कर देना चाहते थे पर उनकी इच्छा भी पूरी नहीं की जा सकी। आखिर किसका भय है हमे? क्या हम आज भी मुसलमानो के गुलाम हैं? क्या हिन्दुओं के कोई लोकतान्त्रिक अधिकार नहीं हैं? हिन्दू इतने उदार क्यों हैं? हिन्दुओ ने १० हजार मुसलमानो को २० करोड़ हो जाने के मदद की जबकि पाकिस्तान मे ३५ वर्षों मे १ करोड़ हिन्दुओं के बदले अब सिर्फ २ लाख हिन्दू बच गये हैं। इसी तरह हिन्दुओं ने भूतकाल मे आये हुए २ हजार ईसाइयों को ३ करोड़ बनने मे मदद की तथा मुसलमान व ईसाइयों के लिये मस्जिद गिरजाघर भी बनवाकर दिये जबकि उन लोगों ने हिन्दू मन्दिर बनवाने के बजाय उन्हें हजारों की संख्या में तोड़ा। पर अपनी इस सब उदारताओं के बदले मे हिन्दुओ को क्या मिला? सिर्फ तिरस्कार व विश्वास घात ईसाई व मुसलमान लोग उन्हे मूर्ख, काफिर व अपने धर्म के बोझेबाज समझते हैं। हिन्दुओं को यह समझना चाहिये कि यद्यपि वे अपनी आर्थिक प्रगति से सन्तुष्ट हैं पर वे धीरे-धीरे अपने धार्मिक, सांस्कृतिक व लोकतांत्रिक अधिकार खोकर कमजोर होते जा रहे हैं।

१६-मैं अपने मुसलमान भाइयों से अनुरोध करूंगा कि वो ये याद रक्खें कि उनके पूर्वज हिन्दू थे जिनका धर्म परिवर्तन तलवार के बल पर किया गया था तथा उन्हें अपने विदेशी मालिक अरबों व तुर्कों के बहकावे मे आकर हिन्दुओं से शत्रुता का व्यवहार नहीं करना चाहिये उन्हें अपना भाई मानकर मित्रता के साथ रहना चाहिये।

मैं जानता हू कि यह सब पढ़कर कुछ पाश्चात्य विचार वाले हिन्दू इसे एक भयभीत विचारधारा कह कर इसकी ओर ध्यान नहीं देंगे कुछ लोग इसे साम्प्रदायिक कहकर इसकी निन्दा करेंगे तथा सत्य की ओर से अपना मुंह मोड लेंगे। पर अब समय आ गया है जब आम हिन्दू को यह महसूस करना होगा कि यदि हिन्दू समाज शक्तिशाली, संगठित तथा बहुसंख्यक नहीं रहेगा तो न सिर्फ उनके धर्म पर आक्रमण होगा बरन उनके जीवन तथा उनकी सम्पत्ति पर भी आक्रमण होगा।

हिन्दू लोग इतिहास मे वीरता में सर्वप्रथम रहे हैं। उन्होंने हमेशा बड़े-बड़े युद्ध लड़कर जीते हैं। आज स्थिति अभी भी उनके हाथ मे है और वे यदि आपस में मतभेद दूर करके एक हो जाते हैं तो भारत विश्व में सर्वोत्तम राष्ट्र बन सकता है पर यदि वे आपस मे विभाजित रहे तो कोई भी उन्हें अथवा भारत को विनाश से नहीं बचा सकता। हिन्दू एकता बिना हिन्दू-मुस्लिम एकता भी नहीं हो सकती। सारा विश्व देख रहा है कि समस्त हिन्दू समाज का वोट पाकर श्री राजीव गांधी कितने शीघ्र साहसिक निर्णय ले रहे हैं। क्योंकि अपने वोट के बदले मे हिन्दू लोग कभी कोई राष्ट्र विरोधी मांगें नहीं पेश करते। वर्तमान राजनीतिक घटनाओं मे यह स्पष्ट कर दिया है कि सिर्फ हिन्दू एकता ही भारत को पराजय व विनाश से बचा सकती है। अल्पसंख्यको की सुख शांति के लिये भी यही आवश्यक है क्योंकि सिर्फ हिन्दू धर्म ही भारत तथा विश्व मे शांति स्थापित कर सकता है।

स्मरण रखिये महात्मा गांधी ने क्या कहा था 'भारत का उत्थान मुसलमानों व ईसाइयों पर उतना निर्भर नहीं करता जितना इस बात पर निर्भर करता है कि हिन्दू लोग किस तरह अपने धर्म की रक्षा करते हैं क्योंकि मुसलमानों के काशी विश्वनाथ भारत के बजाय मक्का मे हैं और ईसाइयों के जेरूशलम मे हैं। पर हिन्दू लोग अपनी मुक्ति व उद्धार भारत मे रहकर ही कर सकते हैं। भारत युधिष्ठिर और मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र का देश है। हमारे ऋषियों ने कहा है कि भारत एक कर्म भूमि है भोग भूमि नहीं।

———

कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो

(ओबेदुल्ला खा आजमी को चैलेञ्ज)

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

(अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उत्तर प्रदेश)

(गताङ्क से आगे)

शोरबाजी और गाने बजने लगते हैं। अनेक मस्जिदो से तो भाषण भी होते हैं। उस हल्ले मे चाहे कोई रोगी तडप रहा हो, चाहे विद्यार्थी दुखी हो और चाहे दिन भर के थके-मांदे लोग चारपाई पर पडे करवटें बदलते हुए गालियाँ दे रहे हो किन्तु दो बजे रात से सवाब के नाम पर अजाब कमाने वाले दीनदार तो इस प्रकार की हरकतें करके इसलिये प्रसन्न होते हैं क्योंकि उनका खुदा स्वयं भी कुरान द्वारा प्राप्त क्षमाशीलता और दयालुता का तमगा लगाकर उसी कुरान के शब्दोमे लोगो के दिलो मे रोगो को बिना किसी अपराध के ही बढा देना और निरपराध प्राणियो को मार कर खाने का आदेश तो देता ही है, साथ ही इस्लाम को न मानने वालो की पोरी-पोरी काटकर तथा उन्हे तडपा कर तब उनकी गर्दन काट कर मारने का निर्देश करता है, फिर कुरान पर ईमान रखने वाले और कुरान के खुदा की उपासना करने वाले उपर्युक्त प्रकार की हरकतो द्वारा लोगो को दुखी करें तो उनका दोष भी क्या है ?

सत्ता मे बने रहने के लिये भारत के ना समझ तथा स्वार्थी राजनीतिक नेताओ की साम्प्रदायिकता पूर्ण तुष्टीकरण की नीति का परिणाम है कि राष्ट्र भक्त बहुमत प्रतिदिन पाच-पाच बार अजान के नाम पर और पूरे महीने रमजान के नाम पर प्रत्येक वर्ष अत्याचार सहन कर रहा है और यदि मुरादाबाद मे ईद की नमाज मे सुअर घुस जाय तो निरपराध हिन्दुओ की हत्या करनी प्रारम्भ कर दें। मेरठ मे मन्दिर की पूजा की आरती भी सहन न करें और निरपराध राम भोले पुजारी की हत्या कर डालें। दिन रात जहादी नारे लगावें और हिन्दुओ की सार्वजनिक हत्यायें करे और हिन्दू फिर भी सहन करता रहे। यह ध्यान रहे कि हिन्दुओ की इस सहनशीलता को इनकी कायरता न समझा जाय। लावा भीतर ही भीतर सुलग रहा है, जो किसी भी समय फटकर ज्वालामुखी बन सकता है। हिन्दू यदि विष उगलने वाले सांपो को दूध पिलाता है तो डन्डा लेकर उसके विषैले फन को कुचल देना भी जानता है।

तुम इस आग से मत खेलो ,
यह आग तुम्हे खा जायेगी ।
चिनगारी एक भी गर चमकी,
तो प्राणो पर आ जायगी ।।

जनाब ओबेदुल्ला साहब ने 'मुस्लिम पर्सनल ला' का रोना भी रोया है तथा उसके साथ अन्य भी अनेक प्रश्न उठाये हैं हमारा यह कहना है कि यदि मुस्लिम पर्सनल ला को इसी रूपमे रहना है तो फौजदारी कानून पर अर्थात् भारतीय दण्ड संहिता मे भी इसे लागू करना होगा और उसके अनुसार चोरी करने वाले मुसलमान को हाथ काटे जाने तथा व्यभिचारी मुसलमान को सार्वजनिक रूप से पत्थर मार-मार कर मार डालने का दण्ड निश्चत करना होगा और साथ ही भारतीय नागरिक संहिता से पृथक् रहने के कारण मुसलमानो को दूसरी श्रेणी का नागरिक घोषित करना होगा। कारण यह कि जो वर्ग सिविल कोड (राष्ट्रीय विधि व्यवस्था) अथवा समान नागरिक संहिता को स्वीकार करने को तैयार नहीं, वह कदापि राष्ट्रीय नहीं हो सकता और जो राष्ट्रीय नही है, उसे नागरिक अधिकार देने का क्या प्रश्न ? जो नागरिक होने के अधिकारी नही, वह विदेशी तो है ही, साथ ही राष्ट्र विरोधी भी हैं क्योंकि वह राष्ट्रीय विधि व्यवस्था को ही स्वीकार नहीं करते। फिर ऐसे अराष्ट्रीय तत्वों को राष्ट्र भक्त कब तक और क्यो सहन करते रह सकते है ?

कट्टर मुस्लिम देश और शाह की हुकूमत लागू करने वाले पाकिस्तान मे तो साधारण से इस मतभेद पर ही कि हजरत मोहम्मद खुदा के अन्तिम पैगम्बर नहीं अपितु समय-समय पर पैगम्बर आते रहते हैं और समय की आवश्यकता नुसार पैगाम देते रहते हैं, उस देश की बहुत बडी जन संख्या तथा पाकिस्तानके सर्वाधिक शिक्षित वर्ग अहमदी मुसलमानो के नागरिक अधिकार ही छीन लिये गये। यद्यपि वह कुरान को अपनी पवित्र और ईश्वरीय पुस्तक मानते हैं नमाज पढते और रोजा रखते हैं। उनकी मस्जिदो पर अब मस्जिद शब्द के स्थान पर 'अहमदी इबादत गाह' शब्द लिखा रहता है। शासकीय आदेशानुसार उन्हे मस्जिद शब्द मिटाना पडा। परन्तु यहा भारत की राष्ट्रीय विधि-व्यवस्था और न्यायपालिका को अपमानित कर और उसके विद्रोही बनकर भी निर्लज्जता पूर्वक विचरते हुए उस इस्लामके ढोल पीट रहे हैं, जो पाकिस्तान मे अपने ही अनुयायियो के साधारण से मतभेद को भी सहन नहीं कर सका।

ओबेदुल्ला सर्वसाधारण अनपढ मुसलमानो की भावनायें भडकाकर नेतागीरी का भाव पूरा करने तथा अपने जर्दे-पुलाव पक्के करने के लिये इस प्रकार के बयान प्रसारित कर रहा है अन्यथा यदि उसमे कोई नैतिक साहस है तो 'कुरान ईश्वरीय पुस्तक है' वह यह सिद्ध करने के लिये हमारा शास्त्रार्थ का चैलेञ्ज स्वीकार करें और सार्वजनिक सभा मे भारत की राजधानी दिल्ली के इण्डिया गेट पर भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता मे हमसे शास्त्रार्थ करने को तैयार होकर पत्र-व्यवहार द्वारा तिथि और शास्त्रार्थ की शर्ते तय कर लें अथवा जैसा उसने अपने बयान मे प्रधान मन्त्री राजीव गांधी आदि को 'मुसलमान होना पडेगा' वाक्य का प्रयोग किया है, वही अनुबन्ध-पत्र हमारे साथ मिलकर तैयार कर लें कि यदि वह कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध नहीं कर सका तो उसे इस्लाम छोडकर वैदिक धर्म मे दीक्षित होना होगा।

क्रमश॰

विश्वके मानव समाजके नाम विश्व शाँति का दिव्य संदेश

(लेखक—श्री वेद पथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशक, ११५७ अहाता ठाकुर दास, सरायरुहेला, नई दिल्ली—५ ।

गतांक से आगे

१६—विश्व शांति के लिये विश्व युद्ध के भय से विश्व को बचाने के लिये अपने आपको आगे करके विश्व समाज के पथ प्रदर्शक बनो यह भारत जननी की भारतीय युवकों के नाम और युवतियो के नाम पावन संदेश है ।

१७—विश्व के अमर इतिहास मे अपना शुभ नाम स्वर्णाक्षरों मे अंकित करने के लिये विश्व की सेवा का महाव्रत धारण करो ।

१८—इस विशाल विश्व की धरती पर वैदिक सभ्यता के सूर्य को उदित करने की क्षमता को प्राप्त कर अज्ञान अन्धकार को दूर भगा दो ।

१९—दानवीर और धर्मवीर कर्मवीर बन कर वसुधा को वेद सुधा का दान देकर विश्व के मानव समाज को अकाल मृत्यु के गाल मे जाने से बचा लो ।

२०—वैदिक विचारों के रत्न कोष के स्वामी बनो, दिग्विजय का उद्-घोष करो । अरबों वर्षों के शाश्वत शब्दों को अपने हृदय आकाश मे सुनने का समाधि अवस्था मे अभ्यास करो । यह वेदों शास्त्रों का धर्म ग्रन्थों का, धर्मसूत्रो का उपदेश है ।

२१—परम पिता परमात्मा को यत्र, तत्र, सर्वत्र देखने का अपना मृदु मंगल मणि मंडित मृदुतट सरल, सरस, सलिल स्वभाव बना लो ।

२२—वेदो के उपदेशों के अनुरूप अपना जीवन बनाकर अपना जीवन सार्थक बना लो अन्यथा चौरासी लाख योनियों के दारुण दुःख द्वन्द्वों से बच न सकोगे ।

२३—वैदिक युग और धर्म युग, नवयुग के निर्माण यज्ञ मे तन मन और धन अपने सर्वस्व का दान देकर लगो ।
विश्व के समस्त राष्ट्रों के राष्ट्र नायकों को वेद का पावन संदेश देकर उनका जीवन वेदोक्त बनाने का आज जीवन समर मे बीड़ा उठाओ ।

२४—भारत माता की स्वतन्त्रता और अखण्डता के लिये सर पर कफन बांध कर मौत को भी मार देने की प्रबल प्रतिज्ञा करके अरिदल पर बादल बनकर बिजली बन कर टूट पड़ो ।

२५—विश्व में ममता, स्नेह प्रेम की ज्ञान की गंगा बहाने के लिये गुरु-कुलों की स्थापना करो । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही मानव दान-वता को त्याग कर मानव और देव सत्ता का अधिकारी बन सकेगा ।

२६—राष्ट्र भाषा हिन्दी के विश्व व्यापी प्रबल प्रचार के लिये तथा भारत जननी की रक्षा के लिये अपना तन, मन और धन सर्वस्व निछावर करके जीवन संग्राम में प्रति पल आगे बढ़ो ।

२७—अखिल विश्व में भारत राष्ट्र का झंडा, ऊंचा रहे इसके लिये विश्व के मानव समाज के पथ प्रदर्शक हिय हर्षक और मन्त्र दर्शक, आत्म तत्व दर्शक बनो ।

२८—सोते हुये विश्व के मानव समाज को जागृत करने के लिये अपने आप को जागृत करो घोर तप करो ।

२९—वैर, विरोध, द्वेष के दावानल से बचने के लिये विश्व शान्ति का संदेश वाहक बनो ।

३०—कठिन कठिनाईयो से घिर जाने पर अथवा विकराल काल के आ जाने पर अपने आपको अजर अमर अक्षय समझ कर एक क्षण के लिये भी अधीर मत होओ ।

३१—तुम शक्तियों के पुंज हो, परमात्मा के अमृत पुत्र हो अत इस संसार मे निर्भय होकर विश्व के मानव समाज की सेवा में अपने आपको समर्पित कर दो ।

३२—वैदिक जीवन की आभा की प्रतिभा के पावन पराग को और अनुपम अलौकिक अकल्पनीय अनुराग को प्राप्त करो ।

३३—जग को जगमग कर देने की क्षमता को प्राप्त करो । यह वेद भगवान का उपदेश है ।

३४—सदा प्रसन्न रहने का अपना सरल, सरस, सलिल, सौम्य, स्वभाव बना लो ।

३५—जीवन की पथ रेखा के सुमन सौम्य समीर और अमीर अभय अद्भुत वीर धर्मवीर बनो ।

३६—अपने रोम रोम में प्रति पल ऐसी मृदुमंगल झनकार, ताल, स्वर लय सरगम साकार और निराकार पैदा करो जिससे जग की आकु-लता घुटन वेदनायें सभी समाप्त हो जायें ।

३७—विश्व के नील गगन के तुम ध्रुव तारा बनो । रवि, शशि तारों के समान अपने जीवन में अतुलित प्रकाश को पैदा करके जग जीवन को वैदिक जीवन का दान दो ।

३८—भारतीय वैदिक सभ्यता की धन्य धरोहर को सचित संजोये हुये तुम विश्व के मानव समाज के अग्रदूत धर्म दूत धर्मवीर महान बनों ।

३९—तुम अपने मन पर विजय प्राप्त करके शिक्षा विजय का अभियान करो ।

४०—आपदाओं के तुफानों की परवाह न करके डटे रहो कर्तव्य पर जब तक दम में दम रहे ।

४१—तुम सृष्टि के शृंगार और शिक्षा सिन्धु के पतवार बनो ।

४२—मृत्यु से अब कह दो कि हम अजर अमर अक्षय अमृत आत्मा हैं हम अविनाशी परमात्मा के अमृत पुत्र हैं ।

१-वेद प्रचार-उपदेश विभाग की सूचनायें उपदेशको एवं प्रचारको का कार्यक्रम

१ श्री पं० केशवदेव शास्त्री, महोपदेशक सभा एवं अधिष्ठाता उपदेश प्रचार विभाग सभा।

२१ फरवरी से, २३ फरवरी, ८६ तक, आर्य समाज फखरपुर (बहराइच) २ से ९ मार्च, तक (आर्य समाज—लखीमपुर खीरी) ऋषि बोधोत्सव पर।
१४ से १६ मार्च, ८६ तक आर्य समाज गंगागंज (कानपुर)

२—श्री शिवकुमार जी शास्त्री, महोपदेशक सभा।

१ फरवरी से १० फरवरी' ८६ तक जिला उपसभा प्रयाग-माघ मेला, १३ से १५ फरवरी तक मोठ, १६ से १७ फरवरी, ८६ तक आर्य समाज चिरगाँव (झांसी) २२ फरवरी से २४ फरवरी ८६ तक अटवा अली मर्दनपुर (हरदोई) २ से ८ मार्च ८६ तक आर्य समाज-बुढानागेट (मेरठ) ऋषि बोधोत्सव पर।
१९ से २१ मार्च आर्य समाज कुकराटाउन (लखीमपुर खीरी)

३—श्री विश्वम्भर दत्त शास्त्री, उपदेशक सभा।

१ से ६ फरवरी क्रमशः आर्य समाज-मिक्काबाला एवं अफजलगढ़, इसी क्रम से ७ फरवरी से २१ मार्च ८६ तक जिला उपसभा रामपुर के माध्यम से।

४—डा० गजराज सिंह राघव, भजनोपदेशक सभा।

१२ फरवरी से १४ फरवरी तक आर्य समाज--बहादुराबाद (सहारनपुर) २१ से २३ फरवरी तक आर्य समाज--दादो (अलीगढ़) २ मार्च से ९ मार्च, ८६ तक आर्य समाज--थाना भवन, (मु० नगर) ऋषि बोधोत्सव पर

५—श्री धर्मराज सिंह जी, भजनोपदेशक सभा।

२८ फरवरी से २ मार्च, ८६ तक आर्य समाज-बिलन्दपुर (शाहजहांपुर) ९ से १५ मार्च जिला उपसभा रामपुर के माध्यम से।

६—श्री कमलदेव जी, भजनोपदेशक सभा।

२१ से २३ फरवरी, आर्य समाज— फखरपुर (बहराइच) ८ से २१ मार्च, ८६ आर्य समाज-बहराइच।

७—श्री ब्रह्मानन्द जी, भजनोपदेशक सभा एवं श्री ओमलाल जी, ढोलक वादक सभा।

२२ से २७ फरवरी, ८६ तक आर्य समाज—बेलीपार (गोरखपुर) २ से ९ मार्च, ८६ तक आर्यसमाज-लखीमपुर खीरी, १० से १२ मार्च आर्य समाज-मोहम्मदपुर (लखीमपुर खीरी), १४ से १६ आर्य समाज-गंगागंज (कानपुर) १९ से २१ मार्च, ८६ आर्य समाज—कुकराटाउन (लखीमपुर खीरी), २८ से ३१ मार्च, आर्य समाज—पाली (हरदोई)।

८—श्री जगतवीर सनेही, भजनोपदेशक सभा।

१ फरवरी से १३ फरवरी, ८६ तक जिला उपसभा प्रयाग-माघ मेला, १ मार्च से १६ अप्रैल ८६ तक आर्य समाज—जौनपुर।

९—श्री शिवदेव बेधड़क भजनोपदेशक सभा, १ फरवरी, से १३ फरवरी, ८६ तक जिला उपसभा प्रयाग माघ मेला।

श्री सीताराम शर्मा, भजनोपदेशक सभा (सहारनपुर)।

१०—१ फरवरी से ३१ मार्च, ८६ तक, श्री हरिश्चन्द्र आर्य, संयोजक, आर्य समाज-अमरोहा के माध्यम से।

श्री तेजपालसिंह भजनोपदेशक सभा एवं अमरराम, ढोलकवादक सभा।
११—१ फरवरी से ३१ मार्च, ८६ तक,
आर्य समाज—अमरोहा ,,

१२—श्री नेमप्रकाश भजनोपदेशक सभा।

२२ से २७ फरवरी, ८६ तक आर्यसमाज-बेलीपार (गोरखपुर) ८ से १० मार्च, ८६ तक आर्यसमाज ग्राम-बसहिया (फैजाबाद) १४ मार्च से १६ मार्च ८६ तक आर्यसमाज-गंगागंज (कानपुर) १९ मार्च से २१ मार्च ८६ तक आर्यसमाज-कुकराटाउन (लखीमपुर खीरी) १८ मार्च से ३१ मार्च आर्य समाज—पाली (हरदोई)

१३—श्री युगुलकिशोर, भजनोपदेशक सभा।

२२ से २५ फरवरी, आर्य समाज—अटवा अलीमर्दनपुर १४ से १६ मार्च, आर्य समाज—कुकराटाउन (लखीमपुर खीरी) २८ मार्च से ३१ मार्च आर्य समाज—पाली (हरदोई)

१४—श्री सीताराम आर्य, भजनोपदेशक सभा, एवं प्रताप आर्य, ढोलक वादक सभा।

१ फरवरी से ३० अप्रैल, ८६ तक जिला उपसभा बरेली के माध्यम से।

१५—श्री लालताप्रसाद जी उपदेशक सभा ७ से ९ फरवरी आर्यसमाज—सुरजन नगर (मुरादाबाद)

२२ से २५ फरवरी आर्य समाज—अटवा अलीमर्दनपुर ८ से १० मार्च ८६ तक आर्य समाज-ग्राम—बसहिया (फैजाबाद)

१६—श्री मुकर्मानन्द जी, उपदेशक १ से १३ फरवरी ८६ तक जिला उपसभा प्रयाग-माघ मेला।

१ मार्च से १६ अप्रैल ८६ तक आर्य समाज—जौनपुर।

१७—श्री क्षेमचन्द्र जी, भजनोपदेशक सभा।
१ फरवरी से १३ फरवरी, ८६ तक जिला उपसभा प्रयाग, माघ मेला।

केशवदेव शास्त्री अधिष्ठाता
उपदेश विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश कार्य समिति वर्ष १९८६ के लिए

१ संचालक श्री अवध बिहारी खन्ना, विश्वनाथ गली वाराणसी।

२ सहायक संचालक श्री आर्य मुनि, वानप्रस्थी, द्वारा आर्य समाज, केराकत, जौनपुर।

३ सहायक संचालक श्री श्याम सुन्दर आर्य आचार्य नरेन्द्र देव रोड (बलदेव निवास के बगल मे)

४ मन्त्री श्री प्रयागदीन जायसवाल द्वारा आर्य समाज, बाघमण्डी, सुलतानपुर।

५ उपमन्त्री श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य द्वारा जवाहरलालजी आर्य सर्राफ, केराकत।

६ कोषा० श्री अशोक कुमार त्रिपाठी द्वारा आर्य समाज, दशाश्वमेध, वाराणसी।

७ उपसंचालक (कमिश्नरी) वाराणसी श्री रमाशंकर आर्य, केराकत नया चौरहा, केराकत।

८ उपसंचालक (कमिश्नरी) गोरखपुर डा० राजेन्द्र प्रसाद आर्य द्वारा आर्य समाज फूलपुर, आजमगढ़।

९ उपसंचालक (कमिश्नरी) लखनऊ।

१० " " फैजाबाद-श्री सत्यकाम आर्य, प्रवक्ता डिग्री कालेज, अमेठी, रामनगर, सुलतानपुर।

११ उपसंचालक (कमिश्नरी) इलाहाबाद श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य, पो० मु० कल्याणपुर कबरोली धाता फतेहपुर।

१२ उपसंचालक (कमिश्नरी) कानपुर श्री शिवपूजन जी द्वारा आर्य समाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर।

गुरुकुल कण्वाश्रम बसन्तपंचमी मेला उत्सव

हिमालय की सुरम्य घाटियो मे गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम कोटद्वार भाबर मे बसन्त पचमी मेला दि० १३ से १५ फरवरी १९८६ के मध्य बडी धूम-धाम से मनाया गया जिसमे विद्वानो के प्रवचन, मधुर भजन एव संगीत कार्यक्रम गुरुकुल ब्रह्मचारियो का व्यख्यान एव शारीरिक प्रदर्शन धार्मिक चलचित्र प्रदर्शन युवा सम्मेलन, राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन आदि कार्यक्रमो का भव्य आयोजन हुआ।

ब्र० विश्वपाल जयन्त
(आधुनिक भीम)
सस्थापक

लेखको एव कवियो से सादर अनुरोध

आर्यमित्र का ऋषिबोध अंक ९ मार्च १९८६ को प्रकाशित होगा। लेखक एव कवियो से अनुरोध है कि अपनी रचनायें २५ फरवरी १९८६ तक प्रेषित करके अनुगृहीत करें।

'आर्यमित्र' आर्य जगत् का व्यापक पत्र है। व्यवसायी बन्धु एवं प्रकाशको से अनुरोध है कि अपने विज्ञापन आर्यमित्र मे उदारता पूर्वक प्रकाशनार्थ भेजे। आर्यमित्र को आर्थिक स्वावलम्बी बनाना उदार आर्यजनो पर निर्भर है।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०
सम्पादक 'आर्यमित्र'
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-काश्मीर की निर्वाचित कार्य कारिणी

२६-१२-१९८५

प्रधान	श्री डा० योगेन्द्र कुमार जी
उपप्रधान	श्री जयदेव जी
	श्री कृष्ण लाल जी कार्यालयाध्यक्ष
	श्री मोहन लाल जी मोतियाल
	श्रीमती राम प्यारी जी
	श्री लाल चन्द जी
महामन्त्री	श्री राजेन्द्र कुमार जी
संगठन मन्त्री तथा निरीक्षक	प० हरिश्चन्द्र जी
उपमन्त्री	श्री लाहौरीमल जी
,	श्री देवेन्द्र कुमार जी
कोषा०	श्री देवराज सेठी जी
अन्तरग सदस्य	श्री सूर्यदेव जी—वेद प्रचार अधिष्ठाता
"	श्री सुदेश कुमार—पुस्तकाध्यक्ष
"	श्री शम्भुनाथ तुली जी
"	श्री कृष्ण लाल जी गांधी नगर (अ० स०)
"	श्री लाला हरनाम दास जी
"	श्री बालकृष्ण जी
"	श्री गोपाल मिश्रु जी
"	श्री नेत्रपाल शास्त्री जी
"	श्री भारत भूषण जी
"	श्री विद्याभानु शास्त्री जी
"	श्रीमती प्रेम सहगल जी
"	श्रीमती कमला देवी जी
"	श्रीमती शांति देवी जी

उपसभा श्रीनगर

प्रधान	श्री सत्यदेव सेठी जी
मन्त्री	श्री विक्रम कुमार जी
वेदप्रचार अधिष्ठाता	श्री नेत्रपाल शास्त्री जी
सदस्य	श्री योगेन्द्र मदन जी
"	श्री त्रिलोकी नाथ भट्ट जी
"	श्री महेश्वर नाथ ठिक्कू जी
"	श्री लाल चन्द जी
,	श्री डा० रमेश कुमार शर्मा

विद्यार्य सभा

प्रस्तोता	श्री विद्याभानु शास्त्री जी
मन्त्री	श्री प० हरिश्चन्द्र शास्त्री जी

अध्यात्म सुधा
(पृष्ठ ३ का शेष)

१२—पवित्रता—सृष्टि का स्वभाव है—

सृष्टि के पदार्थों का स्वभाव शुद्धता एव पवित्रता का है। प्रदूषण स्वभाव नहीं है। अपितु यह तो विकार है। अस्वाभाविक है—अत उसका निवारण कार्य भी सहज ही है। होम मे होमे हुए पदार्थ सुगन्धित रोगनाशक और पुष्टि प्रदाता होने से उनका घर्षण वायु मण्डल मे यज्ञ मे बारम्बार आहुति प्रदान करने से सहज मे हो होने लगता है। यज्ञाग्नि मे आहुति देते ही अन्तरिक्षस्थ वायु मण्डल में घर्षण क्रिया प्रारम्भ हो जाती है तथा बारम्बार आहुति देने से घर्षण अर्थात् मार्जन, शोधन क्रिया का क्षेत्र स्वत ही विशाल होता जाता है। यज्ञ की समाप्ति पर तापक्रम क्रमश घटने से पृथ्वी की ओर घर्षण क्रिया होने लगती है। रात्रि और दिवस के तापमानो से भी यज्ञ की इस क्रिया को स्वाभावत सरक्षण और बल प्राप्त होता है तथा प्रदूषणों का विशुद्धिकरण होता जाता है।

१३—यज्ञ से विश्व मे आरोग्यता एव पुष्टि—

यज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध एव पुष्ट होता है यह ध्रुव सत्य है। वायु मण्डल मे ही मेघों का निर्माण होता है। यज्ञ की आहुति से उत्पन्न ऊष्मा, वाष्प, एवं धूम्र का संयोग अन्तरिक्षस्थ वायु मण्डल मे प्रविष्ट होकर मेघ मण्डल मे स्थित हो जाता है और मेघ मण्डल के जलों को शुद्ध एव सस्कारित कर वृष्टि का हेतु बन जाता है। वायु एवं वृष्टि जल की शुद्धता से पृथ्वीस्थ वृक्ष, वनस्पति, अन्न फलादि शुद्ध, पुष्ट एवं आरोग्यता प्रदान करने वाले हो जाते हैं। इस प्रकार यज्ञ से विश्व का महोपकार होता है। आज के समय मे प्रदूषण की समस्या उग्र तथा आक्रामक रूप में भी उपस्थित होती जाती है। इसकी शाति भी यज्ञ से ही होगी। प्रदूषणो की समस्या का निराकरण यज्ञ ही है। यज्ञ प्रति दिन घरो मे होने के साथ-साथ औद्योगिक प्रतिष्ठानो मे भी अनिवार्य रूप से यज्ञ होने चाहिये—तभी प्रदूषणों का व्यापक रूप से निराकरण होगा। अथर्ववेद काण्ड ८, सूक्त २ के मत्र २८ मे बताया है कि-यज्ञाग्नि विविध कष्टों मे पार लगाने वाली है, प्रदूषणों का नाश करने वाली है, घातक तत्वो को नष्ट करने वाली है। पीडाओ को हरने वाली, शुद्धिकर्ता तथा महारोग है। यजुर्वेद अध्याय एक के मन्त्र ८वें मे अग्नि को—धुरसि सब दोषों को नष्ट करने वाला—सन्नितमम्—शुद्धि का हेतु कहा है। मन्त्र ९ मे अपहृत रक्ष—दुगन्ध्यादि दोषों का नाश करने वाला बताया है। उसको यज्ञ ऊपर चढ़ा देता है। इस प्रकार अन्तरिक्षस्थ वायुमण्डल शुद्ध हो जाता है।

१४—यज्ञ जीवन है—प्रदूषण जीवन विनाशक है—

' प्रदूषणों से रोग होते हैं और मृत्यु भी हो जाती है-यह एक सर्वजन विदित सत्य है। यह प्रदूषण वायु मे फैलकर जन संहारक हो जाता है। वायु में प्रदूषण व्याप्त हो जाने से वह जल मे, वृक्ष—वनस्पतियों मे तथा पृथ्वी के ऊपरी भाग एव भीतर भी प्रविष्ट हो जाता है। इसी प्रकार स्थान स्थान पर यदि यज्ञ होगे तो उनका अंश घृत के साथ शक्तिशाली बन कर वायु मण्डल मे व्याप्त होगा जिससे प्रदूषणो का निवारण तत्काल होगा और रोगों का शमन भी होगा, प्राणिमात्र को ही नहीं, अपितु वृक्ष, वनस्पति आदि तथा पृथ्वी जल आदि का भी शोधक एवं पुष्टिकारक सिद्ध होगा। इस प्रकार यज्ञ विश्व के जीवन का निर्माता एवं विश्व का कल्याण करने वाला सिद्ध हो सकेगा।

शताब्दि महोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश का

१५ से १८ मई तक—१९८६ के मध्य
डी० ए० वी० कालेज प्राङ्गण—लखनऊ मे

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० को स्थापित हुए एक सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। सौ वर्षों मे सभा ने प्रदेश के आर्य समाजों को सङ्गठित करने और उन्हें दिशा निर्देशन का यथा साध्य प्रयास किया है। शताब्दि समारोह विशेष भव्यता के साथ मनाया जायेगा जिसमे आर्यजगत् के मूर्धन्य नेताओ के अतिरिक्त भारत के प्रधान मन्त्री अथवा राष्ट्रपति विशेष अतिथि होगे।

० समस्त आर्यसमाजें आर्य उपप्रतिनिधि सभायें, आर्य जन और उत्तर प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिकों से अनुरोध है कि इसे सफल बनाने के लिये हमारे हाथों को सुदृढ़ करें अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सभा को भेजने का प्रयास करें।

इस अवसर पर सभा के १०० वर्ष का इतिहास प्रकाशित होगा। समस्त आर्यसमाजों की विवरण पत्रिका भी संलग्न होगी। अत समस्त आर्यसमाजें एक मास के अन्तर्गत अपने समाज का इतिहास अपने क्षेत्र के विगत १०० वर्षों के अन्तराल के विशेष आर्यजनों का परिचय और गतिविधियो का विवरण प्रस्तुत करें जिससे विवरण पत्रिका मे सम्मिलित किया जा सके। इस अधिवेशन की सफलता के पीछे प्रदेश की समस्त आर्यसमाजो का समवेत शक्ति होना आवश्यक है।

इन्द्रराज — मनमोहन तिवारी
प्रधान — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

—आर्यसमाज बहराइच का ८६ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ८ मार्च से ११ मार्च १९८६ के मध्य सोल्लास सम्पन्न होगा। —मन्त्री

सन् १८६६ से १९८५ ई० तक–

हरिद्वार कुम्भ मेले में पाखण्ड खण्डन और आर्य समाज

(श्री केशवदेव शास्त्री वानप्रस्थ, महोपदेशक अधिष्ठाता, उपदेश विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

लखनऊ, वेद निकेतन सांडी जि० हरदोई उ० प्र०)

इन भगवानो के कारनामे भी कम रोचक नहीं होते। हथियारों का निर्माण व जमाखोरी तस्करी, मुक्त यौन व्यापार, नशीले पदार्थों का व्यापार और स्वर्ग के लिये मोटी मोटी रकमे लेकर टिकटो की बिक्री जैसे अनेक कार्य सम्हाले हुए हैं यह "भगवान" आखिर कौन बनता है भगवान और कौन बनाता है भगवानो मे सबके कारनामे वर्णन करने के लिये एक पुस्तक पृथक से लिखी जा सकती है किन्तु वर्तमान बहु चर्चित भगवानों मे भगवान रजनीश, जय गुरुदेव, हंसादेश, ब्रह्मा-कुमारी, साईं बाबा, महेश योगी, धीरेन्द्र ब्रह्मचारी आदि २ का नाम उल्लेखनीय है जिनकी चर्चा समाचार पत्रो मे प्राय होती रहती है और भगवान रजनीश के विषय मे भारत से बाहर अमरीका मे जो तथ्य सामने आये हैं और उन्हे गिरफ्तार कर जेल जाने, मुकदमा चलने, सजा देने आदि का जो विवरण प्राप्त हुआ है इससे देश के बुद्धिवादी लोगों का सर शर्म से झुक जाता है। उक्त कथित भगवान अब भारत वापस आ गया है और पूर्ववत पुन सक्रिय हो चुका है। इन भगवानो का विस्तृत विवरण फिर कभी कभी प्रकाशित किया जावेगा। इन बढ़े हुए पाखण्डो से जनता को बचाने हेतु आगामी हरिद्वार कुम्भ महा मेला मे आर्यसमाज की पाखण्ड खंडिनी पताका गाड़ कर प्रचार द्वारा जन-जन को प्रभावित करना है क्योंकि ऐसा शुभ अवसर बिना विज्ञापन बिना सूचना दिये करोड़ो की संख्या मे जनता के उपस्थित होने का अवसर कभी प्राप्त नहीं हो सकता। जिस युग मे महर्षि दयानन्द ने कुम्भ मेला मे प्रचार कार्य प्रारम्भ किया था उस समय उनका साथ देनेवाला कोई नहीं था आज के साधन नहीं थे, ठहरने प्रचार करने को कोई स्थान भी नहीं था अब आज परिस्थितियां और है साथी भी हैं साधन भी हैं तथा हर की पौड़ी के पास ही विशालकाय आर्य समाज मंदिर तिमंजिला गर्व से अपना सर ऊंचा किये हुए पाखण्ड खण्डन के लिये आगन्तुक आर्यजनो के स्वागतार्थ खड़ा है आर्यसमाज-सभाओ के पदाधिकारी नेतागणों ने इन पाखण्डों से मोर्चा लेने हेतु अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दी है और कुम्भ मेले मे विशाल प्रचार कैम्प लगने जा रहा है। महोपदेशको उपदेशको भजनोपदेशको तथा अन्य प्रचार साधनों को जुटाया जा रहा है। आर्यप्रतिनिधि सभा उ प्र की ओर से प्रचार कैम्प को अधिक से अधिक प्रभावी बनाने के लिये सभा प्रधान और सभा मन्त्री द्वारा विशेष प्रयत्न कर आर्य जनता का आह्वान किया जा रहा है। मै कुछ योजनाए कुम्भ मेले हरिद्वार में प्रचारार्थ आर्य नेताओं के सम्मुख रखना चाहता हूं विचार किया जावे। योजना इस प्रकार है।

(१) कुम्भ मेला हरिद्वार मे विशाल कैम्प काफी लम्बे चौड़े क्षेत्र मे लगाया जावे, जिसमें तम्बुओं कनातों और छोलदारियों मे क्षेत्र को घेरा डालकर बीच मे विशाल पण्डाल का निर्माण किया जावे जिसमें पचास हजार से ऊपर जनता बैठ सके।

(२) पण्डाल से होने वाले प्रचार का मेला स्थित जन-जन तक पहुचाने के लिये मेला के प्रत्येक चौराहे पर लाउडस्पीकर लगाकर प्रचार कैम्प से जोड़ा जावे।

(३) समस्त मेले मे भिन्न-भिन्न स्थानो पर क्रमश· नित्य प्रभातफेरी निकाली जावे जिसमे विशेष पाखण्ड खण्डन के गीत गाये जावे मेले को सेक्टरों मे बाट लिया जावे।

(४) आर्य समाज से सम्बन्धित समस्त पत्र पत्रिकायें आर्यमित्र, आर्य सन्देश, आर्य जगत, सार्वदेशिक आदि २ "पाखण्ड खण्डन" विशेष अंक लाखो की संख्या मे छाप कर बिना मूल्य अथवा अल्प मूल्य लेकर मेले में वितरित की जावे।

(५) आर्य समाज से सम्बन्धित साहित्य की दूकानो से अधिक से अधिक पुस्तकें सस्ते मूल्य मे बेचकर आर्यसमाज के परिचय सम्बन्धी ट्रैक्ट बेचें जावे। इसके लिये आर्यजन फेरी लगा भजन मंडली के साथ घूम कर प्रचार करें।

(६) कुम्भ मेले हरिद्वार के जाने वाले आर्यजन अपनी सामर्थ्य योग्यता के अनुसार मिशनरी बनकर किसी न किसी प्रकार के कुछ न कुछ प्रचार कर पाखण्ड का खण्डन करते रहे और आर्यसमाज के सन्देश को जन-जन मे पहुचाये।

(७) आर्यवीर दल आर्य कुमार सभा तथा अन्य आर्य संस्थाए अपने योगदान द्वारा कुम्भ मेला हरिद्वार में प्रचार कैम्प से सम्बन्धित योजनाओं मे काफी सहायक सिद्ध हो सकती हैं। विशेषकर खोये गये बच्चों महिलाओं आदि का उनके स्थान पर पहुचाना।

(८) प्रचार कैम्प मे शंका समाधान का विशेष कक्ष लगाया जावे जिसमें योग्य आर्य विद्वानो को भी अपना समय देना चाहिये।

(९) प्रचारकों का एक दल भिन्न-भिन्न पाखण्ड स्थलों का दौरा करता हुआ मेले मे लगाये गये पाखण्ड पण्डालों में पहुच कर जानकारी प्राप्त कर जनता को ठगने से बचाये।

(१०) इस सभी प्रकार की कार्यवाहियों में जन-धन की भी बहुत आवश्यकता है अत आर्यजन इस महान प्रचार यज्ञ में सभी प्रकार की सहायता कर अधिक से अधिक दान देकर सभा के हाथ मजबूत करे जिससे पाखण्ड खण्डन, का यह आन्दोलन सफल होकर समस्त भारत के कोने २ मे आये हुए जनता जनार्दन के हृदयो में पाखण्ड खण्डन की तीव्र ज्वाला भड़के जिससे धर्म के नाम पर फैले हुए अनाचार पापाचार भ्रष्टाचार और दुराचार जलकर भस्म हो जावे।

—आर्य समाज गया का ६३वां वार्षिकोत्सव दिनांक १० अप्रैल से १३ अप्रैल १९८६ के मध्य धूमधाम से सम्पन्न होगा।

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिम उत्तर प्रदेश, बिन्दकी, फतेहपुर कार्या समिति सन् १९८६

क्र० सं०	नाम	प ा	पद	क्षेत्र
१	श्री बालकृष्ण आर्य	आर्य बीर निकेतन बिन्दकी फतेहपुर	प्रांतीय संचालक	प० उ० प्र०
२	श्री ज्ञानप्रकाश भारती	आर्य समाज तिलहर शाहजहांपुर	सहायक संचालक	,,
३	,, सुरेन्द्र कुमार जैमनी	८० लम्बा बाजार मेरठ रोड, मुजफ्फर नगर	मन्त्री	,
४	,, भगवती प्रसाद गुप्त	सब्जीमन्डी बिन्दकी फतेहपुर	कोषा०	,,
५	,, आर्य प्रकाश आर्य	बजाही बाजार बिन्दकी फतेहपुर	उपमन्त्री	,,
६	,, देवीदास आर्य	गोविन्द नगर कानपुर	सरक्षक	,,
७	,, शेखर जी	हजरतगंज लखनऊ	सरक्षक	,,
८	,, भूषण जी	सिविल लाइन, मुरादाबाद	संरक्षक	,,
९	,, पूरनचन्द्र आर्य	आर्य समाज हींग की मन्डी आगरा	संरक्षक	,,
१०	,, समरसिंह आर्य	आर्य समाज पलड़ी मेरठ	प्रान्तीय शिक्षक	,,
११.	,, विद्याशंकर अखिलेश	आर्य समाज मूढ बरेली	,	,,
१२	,, रामसिंह राणा	आर्य समाज अमरोहा मुरादाबाद	,,	,,
१३.	,, महात्मा आर्य भिक्षु	वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार	बौधिकाध्यक्ष	,,
१४	,, हरवंश लाल आर्य	ठाकुरगज लखनऊ	आय व्यय निरीक्षक	,,
१५	,, हरिओम गुप्ता	ट्रेनलाईटिंग फिन्टर उत्तर रेलवे बरेली,	उप सचालक	बरेली मुरादाबाद विभाग
१६	,, जयनारायण आर्य	स्वामी सराय जयगज अलीगढ़,	उपसचालक	आगरा
१७	,, वीरेन्द्र कुमार विद्यावास्पति,	कैस्थ ट्रेस्ट भवन थामसनगंज सीतापुर	,,	कुमाऊ गढ़वाल
१८	,, नाथूराम आर्य	आर्य समाज सीपरी बाजार झांसी	,,	झांसी
१९	,, पं० फूल सिंह शास्त्री	आर्य समाज थमौरा टीकरी मेरठ,	,,	मेरठ
२०	" रवीन्द्र आर्य	आय वीर निकेतन बिन्दकी फतेहपुर	कार्यालय मन्त्री	
२१	,, वेचनसिंह आर्य	साहूपुरी, वाराणसी	अधिष्ठाता,	उ० प्र०
२२	,, मन मोहन तिवारी	मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ ५	पदेनसदस्य	
२३	,, वीरेन्द्र कुमार आर्य	आर्य समाज अमरोहा मुरादाबाद,	सदस्य	
२४	,, सन्तोष कुमार आर्य	४०, चालवाई ठेरा बरेली	सदस्य	
२५	,, कृष्णबलदेव महाना	९ डी, सिंगार नगर, लखनऊ।	सदस्य	
२६	,, हरिश्चन्द्र आय	जैन मन्दिर मार्ग रामपुर स्टेट	सदस्य	
२७	,, शिवशकर सर्राफ	तिलहर शाहजहापुर	सदस्य	

नोट—मण्डल पतियो की नियुक्ति इसमे नही है वह बाद मे होगी।

सुरेन्द्र जैमनी मुजफ्फर नगर
प्रांतीय मन्त्री

डा० बालकृष्ण आर्य
प्रांतीय सचालक,
आय वीर दल पश्चिमी (उ० प्र०)

आर्य जगत्

आर्य समाज बहादराबाद (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव दि० १२ फरवरी से १४ फरवरी सन् १९८६ को बड़े समारोह तथा उत्साह पूर्वक मनाया गया। जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी था श्री महात्मा आर्य भिक्षु जी विशेष अतिथिके रूपमें सम्मलित हुए।　मन्त्री

आर्य समाज सिविल लाइन्स राम घाट मार्ग अलीगढ के तत्वावधान मे श्री स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की पूर्व सध्या में दि० २२ दिसम्बर १९८५ को गोष्ठी का सफल आयोजन हुआ।　मन्त्री

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) मेरठ का १४ वा वार्षिकोत्सव दि० १३ एवं १४ जनवरी १९८६ को समारोह पूर्वक गुरुकुल प्रभात आश्रम की भूमि में सम्पन्न हुआ। दि० ८ जनवरी ८६ से अथर्व वेद पारायण यज्ञ श्री स्वामी विवेकानन्द जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। जिसकी यजमान श्रीमती पद्मावती जी सर्राफ धर्मपत्नी स्व० श्री रघुनन्दन प्रसाद जी सर्राफ थी। दि० १३ जनवरी ८६ को वेदों मे सृष्टि उत्पत्ति प्रक्रिया विषय पर स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध सस्थान के अन्तर्गत एक शोध सगोष्ठी का आयोजन हुआ तथा दि० १४ जनवरी ८६ को श्री डा० हरिप्रकाश जी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी के उद्बोधक प्रवचन एवं श्री जयनारायण जी अरुण उपमन्त्री सभा द्वारा कविता पाठ हुआ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वैदिक प्रश्नोत्तरी श्लोक अन्ताक्षरी सूत्र अन्ताक्षरी संस्कृत एवं हिन्दी में धारावाहिक व्याख्यान से एवं शास्त्रार्थ प्रदर्शन से हजारो श्रोताओ को मन्त्र मुग्ध किया। समस्त समारोह के संयोजक श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा तथा मन्त्री गुरुकुल थे तथा भोजन का समस्त व्यय श्री विनोद कुमार जी गर्ग डेल्टावालो ने वहन किया।

सवाददाता

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पञ्जीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७१
मा० माघ २७
मास शुक्ल ७, रविवार
१६ फरवरी १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

साहित्य-समीक्षण

सिख हिन्दुओ से अलग है
खालिस्तान की राष्ट्र विरोधी मांग
पजाब की उलझी समस्याये

समस्त विषयो पर एतिहासिक विवेचना के साथ प्रसिद्ध पत्रकार एव विचारक प० छितीश वेदालकार जी की नवीन कृति

० स्टार्म इन पजाब—(अग्रेजी)

० पजाब तूफान के दौर से—(हिन्दी)

क्षितीश जी ने गुरुनानक के जन्म १४६९ से आज तक के सिख इतिहास पर प्रमाणिकता के साथ तथ्य प्रस्तुत किये हैं। सिख कैसे ब्रिटिश काल के मोहरे बनते रहे और ३ जून १९८४ को यदि स्वर्ण मन्दिर पर सेनाभियान न होता तो पंजाब मे हजारो हिन्दुओ की हत्या की योजना थी। तथा अन्य तथ्य ऐतिहासिक प्रमाण के साथ समायोजित है लेखक ने प्राणो की बाजी लगाकर पुस्तक प्रकाशित की है। आर्य समाज ने सिखो को अलग किया का भी सप्रमाण उत्तर दिया गया है।

प्रत्येक आर्य जन को इस पुस्तक को पढना चाहिये। जो सरकार के श्वेत पत्र मे होना चाहिये वह इस पुस्तक मे है। यही लेखक की निर्भीकता है। आर्यसमाजें पूर्ण सहयोग कर पुस्तक प्राप्ति हेतु तथा मूल्यादि की जानकारी के लिये सम्पर्क कीजिये—

पं० क्षितीश जी वेदालङ्कार
डी. ८१ सुपर्णा गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-४९

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पू० उत्तरप्रदेश के मन्त्री श्री प्रयागदीन जायसवाल ने अपने कमिश्नरी स्तर के उपसचालको (श्री रमाशंकर आर्य केराकत वाराणसी कमिश्नरी, श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद फूलपुर गोरखपुर कमिश्नरी, श्री सत्यकाम जी अमेठी फैजाबाद कमिश्नरी, श्री हरिश्चन्द्र आर्य फतेहपुर इलाहाबाद कमिश्नरी, श्री शिवपूजन कानपुर कानपुर कमिश्नरी से अनुरोध किया है कि वह अपने-अपने जिले की आर्य वीर दल की कार्यसमिति का गठन करके उनकी सूची मेरे पास भेजदें। तथा आर्य वीर दल को अधिक सक्रिय किया जाय। शाखा एव बौद्धिक के माध्यम से सगठन को मजबूत किया जाय। इसके अतिरिक्त फतेहपुर अयोध्या, ओबरा मिर्जापुर, केराकत, आजमगढ मे जो शिविर लगने हैं उसकी तैयारी की जाय। तथा शिविर से सम्बन्धित लोग मेरे पास तिथि भी भेज दें कि कब शिविर लगा रहे हैं।

—प्रयागदीन जायसवाल मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल पू० उ० प्र०, सुल्तानपुर

आगामी हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रचार एवं सेवा शिविर

निश्चय किया गया है कि आगामी दिनाक १४ जनवरी से ९, १० अप्रैल ८६ तक लगने वाले हरिद्वार मे बारह वर्षीय कुम्भ मेले के ऐतिहासिक अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रचार एव सेवा शिविर लगाया जाय। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने जीवन मे कुम्भ के अवसरपर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसे भी ११९ वर्ष के लगभग हो चुके हैं। अत अन्धकार एव रूढिवादिता का खण्डन करते हुए समुचित मार्ग दर्शन का प्रचार किया जायेगा। विद्वानो के भाषण, उपदेश होंगे, सेवा शिविर द्वारा यात्रियो की यथासाध्य सेवा आदि की व्यवस्था रहेगी साथ ही विशेष स्नान पर्वो के दिन ऋषि लगर का भी आयोजन होगा वहीं शिविर लगाकर सभा के वरिष्ठ अधिकारी भी स्वय व्यवस्था की देखरेख करगे। समस्त प्रदेश की उपप्रतिनिधि सभाओ, आर्यसमाजो और आर्यजनो से अनुरोध है कि इस अवसर पर हमारी सहायता करें, अपने क्षेत्र मे धन और अन्न आदि का सग्रह करें, सभा को सूचना दें और सुविधानुसार उनका सामग्री। अन्न हरिद्वार भिजवाने का प्रयास किया जाय। सबके सम्मिलित से ही हमारे उद्देश्य सम्पन्न हो सकते हैं तदर्थ सबका सहयोग अपाक्षित है और इस मे अविलम्ब कार्य प्रारम्भ कर दिया जाय।

इन्द्रराज	कृष्ण बलदेव महाना	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

चिर समाधिरत पं० बिहारीलाल

चिर समाधि रत आज हैं आर्यजगत् के लाल।
वेद धर्म सन्देश हर वीर बिहारीलाल॥
आर्य पथिक ! वैदिकव्रती वाग्मी भूषण तीर्थ।
थे शास्त्रार्थ महारथी वेद काव्य के तीर्थ॥
मानसरोवर सा सुभग नगर बरेली जान।
राज हस वह उड गया अब अरविन्द सुजान॥
जहाँ कमल वह कमल सर शुचिता का वरदान।
वे मराल फिर आ सकें प्रकृति विकृति को जान॥

—पं० रमेशचन्द्र पाठक, गुरुकुल वज्रपुर, शाहजहांपुर

वयोवृद्ध आर्यों द्वारा ग्राम प्रचार

१२-१-८६ आर्यसमाज लखनऊ मे स्मरणीय दिवस था। आर्यसमाज कैसरबाग के नेतृत्व मे वयोवृद्ध आर्यों की एक टोली नगरबस रिक्शा और लम्बी पद यात्रा करके गोमती नगर के आगे ग्राम ग्वारी का पुरवा पहुची। वहाँ के उत्साही आर्य नवयुवकों ने हाल ही मे वहा चन्द्रशेखर आजाद शिक्षा निकेतन की स्थापना की है। आदरणीय सत्यनारायण के सचालन मे बृहत यज्ञ हुआ। फिर सर्वश्री तेजनारायण, पुरुषोत्तम सिंह योग आचार्य मेधावी जी के प्रवचन हुये। वैदिक साहित्य का वितरण किया गया। आर्यसमाज लालबाग व इन्दिरानगर ने प्रचार में सक्रिय सहयोग दिया।

ज्ञानकृष्ण आर्य
वैदिक प्रचार केन्द्र सामने लाजपतनगर, चौक, लखनऊ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीनआर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० न २२४१/५७ | घोषणा पत्र स० ७ / २८-३-८५

वर्ष ८९] | भा०फाल्गुन ४, माघ शुक्ल १४, रविवार सवत् २०४२ वि०, वि०, २३ फरवरी १९८६ | [अङ्क ८

प्रार्थना

ओ इन्द्रं हि मत्स्यन्धसो विश्वेभि सोमपर्वभि । महां २ ऽ अभिष्टिरोजसा ।।

—यजु ३३।२५

भावार्थ-हे राजन तू तेज से महान् अभ्यर्थनीय है, अत समस्त ऐश्वर्ययुक्त गुणों सहित आ और अन्नादि द्वारा तृप्त हो ।

इस अक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

सम्पादक—

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

आर्य जनता से सादर निवेदन

प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा की शताब्दी की सफलता का दायित्व उत्तरप्रदेश के आर्यजनो पर निर्भर है

वर्ष १८८६ से यात्रा करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश वर्ष १९८६ मे पहुच गई और हमारी यात्रा के सौ वर्ष पूर्ण हुए । इन वर्षों मे हमने सौ ग्रीष्म, सौ वर्षा, सौ शिशिर और सौ वसन्त देखे अर्थात हमने शुभ सकल्पो के साथ सद् कार्यो का प्रारम्भ किया सफल भी हुए, असफल भी हुए परन्तु आज कम से कम आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को पूर्ण सन्तोष है कि विगत सौ वर्षों मे समाने प्रदेश की विभिन्न दिशाओ मे सामाजिक, नैतिक, शैक्षिक और जन सेवा आदि मे पर्याप्त कार्य किया तथा उत्तर प्रदेश मे विगत सौ वर्षों मे जो जन जागरण हुआ प्रदेश की जनता के गौरव मे वृद्धि हुई शिक्षा के क्षेत्र मे जो प्रदेश मे कीर्तिमान स्थापित हुआ उसमे हार मे धागे के समान आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी भूमिका का निर्वाह समुचित रूप से किया और आज सभा गौरव अनुभव करती है कि उसके एकता सूत्र मे सत्रह सौ आर्यसमाजो की मणिया पिरोई हुई हैं । आज सभा शताब्दी समारोह के रूप मे आत्मश्लाघा बिखेरने नहीं जा रही है अपितु नवीन सकल्पो, नवीन कार्य प्रणालियो का चयन और नवीन ससाधनो के द्वारा अधिक से अधिक आर्यसमाजो के सिद्धान्तो की आधार शिला को दृढ़ करते हुए सभा अपने सेवा क्षेत्र का विस्तार करे, इन्हीं सकल्पो की दृढ़ता के लिए नवीन योजनाओ के रेखाकन के लिए समस्त उत्तरप्रदेश के आर्य जन दिनाक १५ मई से १८ मई १९८६ के मध्य लखनऊ मे शताब्दी आयोजन के रूप मे एकत्रित हो रहे ह । इस महान् अवसरपर सभा नवीन चेतना और नवीन करवट लेकर दृढता के साथ जनता जनार्दन के बीच नवीन आदर्श कार्यक्रमो को सचालित करने की सुदृढ़ प्रतिज्ञा करेगी ।

उत्तर प्रदेश की आर्यजनता से अपील है कि हमारे समारोह को सफल बनाये आर्यसमाजें धन सग्रह करके भेजें, सभा से रसीदें प्राप्त करें इसके अतिरिक्त इस आदर्श अवसर पर अपनी सम्पत्ति और भूमि भी सभा के हित मे दान करें । सभा के कार्यकर्ता शीघ्र ही प्रत्येक जनपद और आर्यसमाजो मे शताब्दी कार्यक्रम की सफलता के लिए अपील हेतु पहुच रहे हैं । समाजें अपना इतिहास, अपने क्षेत्र के विशिष्ट आर्य जनो का परिचय शीघ्र भेजें जो इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका मे सम्मिलित किया जा सके ।

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्य मित्र



सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार , २३ फरवरी १९८६, दयानन्दाब्द १६१
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८६

जनवाणी का समादर हो

प्राचीन काल से भारतीय नीति शास्त्र मे राज्य प्रशासन और उसके प्रमुख राजा का एक ही उद्देश्य निश्चित किया गया है वह है—जन-जन के हित की कामना और यही जन-जन समुदाय व्यापक रूप से राष्ट्र बन जाता है अत राष्ट्र का अभ्युत्थान एक मात्र लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके साथ ही भारतीय वैदिक वाग्मय से लेकर नीति शास्त्रों तक मे यह भी उल्लेख है कि यदि राजा या राज्य कर्मचारी अपने कर्तव्य पालन मे सफल नहीं होते हैं तो उन्हे अन्य योग्यतम व्यक्तियो के लिये स्थान का परित्याग कर देना चाहिये। राजा राष्ट्र का प्रतिनिधि होता है और उसके कार्योंकी क्षमता का प्रतिबिम्ब ही समाज का प्रतिबिम्ब होता है। अत आवश्यक है कि राष्ट्र प्रमुख का प्रतिबिम्ब उज्वल रहे जिससे राष्ट्र मे भी उज्वलता व्याप्त रहे। खेद है कि आज विश्व के राष्ट्र इन महानतम सिद्धातोसे विमुख हो रहे हैं, स्वार्थ निजी हित और आत्म सतोष ही आज राष्ट्रसचालनमे लगे व्यक्तियों का दृष्टिकोण है। उदाहरण के लिए श्री लकामे जयवर्द्धन, अफ्रीका मे श्वेत जाति का अश्वेतो के साथ अमानुषिक व्यवहार और इधर तं फिलीपाइन्स मे राष्ट्रपति के चुनाव को लेकर जो आत्म प्रवचना के समाचार आये हैं हम सब उससे अवगत है। भारत मैं भी ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं जिन्हे आत्म परितोष अधिक प्रिय हैं जन वाणी की अवहेलना करने मे अपना गौरव समझते हैं।

आज का युग आर्थिक दृष्टि से सँत्रासपूर्ण है। नित्य प्रति महगाई बढ़ती जा रही है और भारत विश्व बैंक और विश्व मुद्रा कोष के ऋण भार और व्यय भार से दबता चला जा रहा है अभी कतिपय वस्तुओ मे जिनमे निर्धन व्यक्तियों के प्रयोग मे आनेवाले मिट्टी के तेल तक में जो सरकार के द्वारा मूल्य वृद्धि की गई है उसका देश के कोने-कोने से विरोध हुआ है साथ ही अभी विरोध का स्वर धीमा नहीं पड़ा है जनता मे आक्रोश है अत सामान्य जनता के जीवन स्तर की जो उपेक्षा हो रही है वह उचित नहीं है। किसी भी व्यक्ति की छवि उसके कार्यो से बनती है उन जन प्रिय सिद्धांतो पर आधारित होती है जिसमे जन-जन की हित कामना हो केवल दूर दर्शन और आकाश वाणी से प्रचार और प्रसार से राष्ट्र या व्यक्ति ऊपर नहीं उठता। आज स्थान-स्थान पर जो बन्द के आयोजन हो रहे हैं वह कहां तक राष्ट्र और सत्ता के हित मे अनुकूल बैठेंगे इस पर विचार करना आवश्यक है। सक्षेप मे यही कहा जा सकता है कि आज सत्ता पर बैठे व्यक्ति राष्ट्र की जो वेदना है उसे समझने में अक्षम हैं।

योरप के भी एक विद्वान का कथन है कि—जन-जन की वाणी हो प्रभु की वाणी है अत जनवाणी की अवहेलना कालान्तर मे राष्ट्र के लिए विशेष रूपसे सत्ता पर बैठे व्यक्तियों के लिये अनुकूल नहीं हो सकता है अत 'आर्यमित्र' का अनुरोध है कि केन्द्रीय सरकार कम-से-कम अपने आगामी बजट मे उन वस्तुओं पर मूल्य वृद्धि न करें जिन पर भारत का सुदूर ग्रामांचलो मे बसने वाला किसान और अहर्निश श्रम से फावड़ा चलाकर कुछ पैसे कमाने वाला श्रमिक आहत न हो कम-से-कम खाद्यान्न, मिट्टी का तेल, मोटा वस्त्र, आवश्यक औषधियों मूल्य-वृद्धि प्रसार से अलग रखी जाय यही हित कर होगा। बड़े व्यक्तियों, मत्रियों के निजी व्यय पर उनके वाहनों पर उनकी रख रखाव पर कमी करना आवश्यक है। क्या मंत्रियोंके सामने आचार्य चाणक्य तथा महात्मा गाधी के आदर्श प्रस्तुत नहीं हो सकते।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०

पूर्वांचल आर्य सम्मेलन

दि० ११—१२ मार्च १९८६

स्थान—आर्य समाज मऊनाथ भजन (आजमगढ़)

सार्वदेशिकसभा प्रधान मा० श्रीलाला रामगोपाल शालवाले द्वारा पूर्वांचल की आर्य समाजो को उद्बोधन

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी

तथा

मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी जी द्वारा पूर्वांचलकी सभी समाजो का आह्वान।

दि० १२ मार्च १९८६ को पूर्वांचल की सभी समाजों के अधिकाधिक आर्य जन मऊ पहुचें। प्रावेशिक सभाधिकारियों के साथ सामूहिक विचार विमर्श, तथा निर्देशन प्राप्त करने हेतु पूर्वांच आर्य सम्मेलन को सफल बनाने मे सभी समाजों का पूर्ण योगदान अपेक्षित।

डा० विनय प्रताप
सभा उपमन्त्री/संयोजक
पूर्वी प्रचार विभाग

राम चन्द्र सिह— द्विजेन्द्रराय
स्वागताध्यक्ष स्वागत मन्त्री

पूर्वांचल आर्य सम्मेलन स्वागत समिति।

आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर का १०६ वां वार्षिकोत्सव दि० ६ मार्च से ९ मार्च १९८६ तक आर्य समाज मन्दिर तथा श्रद्धानन्द पार्क मे समारोह पुर्वक मनाया जायेगा। आर्य जगत के प्रमुख विद्वान एवं वक्ता सम्मलित होंगे। जिसमे नगर कीर्तन, भजन, व्याख्यान, आर्य वीर दल प्रदर्शन आदि अनेकों कार्यक्रमो का आयोजन होगा।

मन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज बीसलपुर (पीलीभीत)
प्रधान श्री डा० पूर्णानन्द जी
मन्त्री श्री राम स्वरूप शास्त्री
कोषा० श्री चन्द्रपाल

आर्य समाज मठपुरा दुर्ग (म० प्र०)
प्रधान श्री गुलाब चन्द्र जी बंसल
मन्त्री श्री टुलीलाल आर्य
कोषा० श्री रामलाल लूथरा

अध्यात्म सुधा

वेद का मनन

[श्री इन्द्रराज जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश]

ओं प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम। (ऋ० म० १०/सू० १२१/मन्त्र १०)

शब्दार्थ—हे (प्रजापते) सब प्रजा के स्वामी परमात्मा (त्वत्) आप से (अन्य) भिन्न दूसरा कोई (ता) उन (एतानि) इन (विश्वा) सब (जातानि) उत्पन्न हुए जड चेतनादिकों को (न) नहीं (परिबभूव) तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। (यत्कामा) जिस जिस पदार्थ की कामनावाले हमलोग आप का (जुहुमः) आश्रय लेवें और वाञ्छा करें (तत्) उस उस की कामना (न) हमारी सिद्ध (अस्तु) होवे जिससे (वय) हम लोग (रयीणाम्) धनैश्वर्यों के (पतय) स्वामी (स्याम) होवें। (संस्कार विधि से)

विशेष—हमारी वैदिक संस्कृति कंगाल संस्कृति नहीं है। वेद का आदेश है कि हमे धनैश्वर्यों का स्वामी होना चाहिए। यह भी प्रत्येक व्यक्ति की हार्दिक अभिलाषा होती है कि जो जो कामना हम करें वह-वह कामना हमारी सिद्ध होवे। हम धनैश्वर्यों के स्वामी भी बने और हमारी समस्त कामनाए भी सिद्ध हो। इसके लिए बहुत आवश्यक है कि हम लोग उस परम शक्ति परात्पर ब्रह्म जो प्रजापति है और धनैश्वर्यों का स्वामी है उसकी उपासना करे। वह सर्वज्ञ है, सर्वान्तर्यामी है सर्वशक्तिमान् है, ये जितने भी जड लोक लोकान्तर हैं उनको वह उत्पन्न भी करता है और नियन्त्रण भी करता है क्योंकि वह पति है, सबका मालिक है। साथ ही जितने भी जीव जन्तु हैं, जितने भी पशु, पक्षी, कीट, और पतग है, जितने भी मनुष्य हैं। प्राणीमात्र का वह पति है, प्रजापति है। वह ही कर्मानुसार सब प्राणियों पर अनुशासन करता है और इन सब उत्पन्न हुए जड चेतनादिकों से ऊपर है सबका नियन्त्रण करता है। सब कुछ देने वाला है। बराबर निर्माण करता है और दान करता है। उसकी सतत क्रियाएं प्राणीमात्र के कल्याण के लिए हैं। इसलिए उस प्रजापति भगवान की निरन्तर उपासना से व्यक्ति की कामनाएं पूर्ण होती हैं और वह धनैश्वर्यों का स्वामी भी बनता है। इसलिए वह ही उपास्य है। वह ही स्तुत्य है और वह ही अर्चनीय है। आइये उसी की उपासना करें।

सूनापन

(डा० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी प्रोफेसर कालोनी श्यामगंज बरेली—२४३००५)

बीत रहा है यह सूनापन।
लक्ष्यहीन, कर्मों से बोझिल,
प्रति मानव है चलता फिरता।
देवालय के शंखों की ध्वनि,
मौन यहां जिससे कब मिटता।
तेज ज्वार भाटे के क्रम मे,
मन होता रहता यह उन्मन।

लघु प्राचीरें नाप न पाते,
बौनापन कितना है छाया।
सज्जित होने पर भी लगती,
शव सी चलती फिरती काया।
कबों मे अस्तित्व समाहित,
केवल अब जड़ता का क्रन्दन।

उनके स्वर्णिम स्वप्न जलाकर,
अपना है आधार बनाते।
नीवों में आहें हैं सोयी,
बनकर भी प्रासाद लजाते।
बोल रहे हैं मन्त्र निरन्तर,
किन्तु चेतना मे गूगापन।

मानवता का नाम नही अब,
पग-पग पर शकाये मिलती।
रूप कुरूप दिखा कर दोनों,
उर कितना हैं कम्पित करतीं।
स्थाई आवास बना क्या,
विष व्यालों का यह चन्दन-वन ?

२५०० ईसाई हिन्दू धर्म में दीक्षित

नई दिल्ली ७ फरवरी, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने गुरुकुल आम सेना कालाहांडी (उड़ीसा) के वार्षिक समारोह मे सम्मलित होने के बाद दिल्ली लौटने पर बताया कि खरियार रोड कालाहांडी (उडीसा) गुरुकुल आम सेना के वार्षिक समारोह के अवसर पर २५०० ईसाइयों ने शुद्धि संस्कार द्वारा हिन्दू धर्म मे प्रवेश किया। श्री लाला जी ने बताया कि आर्य सन्यासियों ने आम के फलों से जल छिडक कर गायत्री मन्त्रों के उच्चारणों के साथ उन्हें हिन्दू धर्म में दीक्षान्त किया। सम्वाददाता

समाचार

संयुक्त आर्य समाज खलीलाबाद (बस्ती) का वार्षिकोत्सव एव ऋग्वेद पारायण यज्ञ कार्यक्रम- १९८६।

दिनांक २४ से २६ फरवरी आर्य समाज मगहर, २७ फरवरी से १ मार्च आर्य समाज लालगज, २ से ४ मार्च आर्य समाज गजाधर पुर, ५ से ७ मार्च आर्य बांसी, ८ से १५ मार्च ऋग्वेद पारायण यज्ञ एव वार्षिकोत्सव आर्य समाज खलीलाबाद जनपद बस्ती। उक्त कार्यक्रमों मे आर्य जगत के प्रमुख विद्वान, वक्ता एव भजनोपदेशक सम्मिलित होंगे—

मन्त्री

सास्कृतिक धरोहरों की रक्षा

[श्री नरेन्द्रमोहन जी सम्पादक 'जागरण' कानपुर]

न्यायालय के आदेश के बिना ही श्री राम जन्म भूमि मे ३५ वर्ष तक ताला बन्द रहना यह बताता है कि राज्य सरकार किस तरह से काम करती है। वैसे दोष किसी व्यक्ति विशेष का नहीं है, लेकिन सच बात यह है कि दोष हर उस व्यक्ति का है जो कभी न कभी इस राज्य के मुख्य मन्त्री की कुर्सी पर बैठा। यदि मुख्य मन्त्री को प्रदेश की जनता की भावनाओं की चिन्ता हो न हो तो ऐसे मुख्य मन्त्री का रहना न रहना बराबर है। जन भावनाओं से जो अपने को जोड नहीं सकता और वास्तविकता का पता लगाने के लिए जो प्रयास नहीं कर सकता और केवल मात्र राजनीतिक गोटिया बैठाना ही चाहता है तो ऐसे मुख्य मन्त्री से कल्याणकारी समाज की संरचना नहीं की जा सकती और न ही लोकतन्त्र की। लोकतन्त्र की पहली शर्त है कि जन भावनाओं के साथ और जनसमस्याओं के साथ अपने आपको जोडकर समस्याओं का निदान खोजने की चेष्टा करना तथा जन भावनाओं मे अपने को पूर्ण रूप समर्पित कर डालना। यदि ऐसा नहीं हो रहा था तो दोष किसका है और ऐसा क्यो नहीं हुआ इसका तो पता लगाया ही जाना ही चाहिए।

दुर्भाग्य से उत्तर भारत मे बहुसख्यकों की भावनाओं के साथ जान बूझ कर खिलवाड़ किया जाता है और यह खिलवाड़ आज से नहीं सैकडों वर्षों से किया जा रहा है। पहले मुगल शासक थे तो वे करते थे, उसके बाद अंग्रेज आये, अंग्रेजों ने भी बहुसख्यकों की भावनाओं का आदर बिल्कुल भी नहीं किया, देश आजाद हुआ और तब यह आशा हुई कि संभवत अब बहुसंख्यकों की भावनाओं का सम्मान किया जायेगा तथा धर्म निरपेक्षता को हास्यास्पद स्थिति तक नहीं ले आया जायेगा, लेकिन, वाह री राजनीति और वाहरी वोट की भूख जिसने धर्म निरपेक्षता की नीति को बिलकुल हास्यास्पद स्थिति तक पहुचा दिया और अब तक कोई भी बहुसंख्यक व्यक्ति न तो राष्ट्र वादी बन सकता और न धर्म निरपेक्ष जब तक उसके पास अल्पसंख्यको का प्रमाण पत्र न हो। अब तो हर हिन्दू को यदि राष्ट्र भक्त बनना हो तो उसकी पहली शर्त यह है कि उसे मुसलमानों से, ईसाइयों से, सिखो से व अन्य अल्पसंख्यको से प्रमाण पत्र हासिल करना चाहिये और यदि उसे प्रमाण पत्र नहीं मिलता तब आज की राजनीतिक हवा के अनुसार न तो वह देश भक्त हैं न धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति और न राष्ट्रवादी व्यक्ति।

कमाल है इस मानसिकता का जहा राष्ट्रीयता की मशाल जलाने का दायित्व बहुसख्यको के कधो पर नहीं डाला जाता बल्कि वही बहु सख्यक यह मशाल जला कर चल सकते हैं जिन्हे अल्पसंख्यकों से प्रमाण पत्र प्राप्त है। ऐसा दुनियां के किसी अन्य देश मे नहीं होता। आज चीन मे हान वंशजो का बहुमत है और रूस मे उन लोगों की चलती है जो यूरोपीय क्षेत्र के रहने वाले हैं। अब यदि हान वंशजों के साथ यह शर्त लगा दी जाये कि वे सभी राष्ट्र भक्त चीन की दृष्टि में तभी होंगे जब वे तिब्बत वासियों से प्रमाण पत्र लें या मगोलिया वासी से प्रमाण पत्र लें तो ऐसा कोई भी प्रमाण पत्र वे हासिल नहीं कर सकेंगे। इसी प्रकार यदि गोर्बाचोव के साथ यह शर्त लगा दी जाय कि वे भी तभी रूसी देशभक्त होंगे जब उन्हे इसके लिए सबसे पहले लिथूनिया, लटेविया, यूक्रेन, या उजबेकिस्तान अथवा व्लाडीवास्टक से प्रमाण-पत्र प्राप्त करें तो यह प्रमाण पत्र गोर्बाचोव को नहीं मिल सकता। यह तो एक बिलकुल सामान्य सी बात है कि राष्ट्रभक्ति का कार्य सबसे पहले बहुसंख्यकों को ही करना होगा और अन्य लोग जब तक बहुसंख्यकों की मुख्य धारा के साथ नहीं चलते तब तक वे राष्ट्रीय मुख्य धारा के अंग बन ही नहीं सकते। यहां तो बिल्कुल उल्टी गङ्गा बहने की बात है कि अल्पसंख्यक मुख्य-धारा के साथ चलें और बहुसंख्यक अल्पसंख्यक से प्रमाण-पत्र प्राप्त करें। चूंकि हमारे देश मे उल्टी गंगा बहती आ रही है और इसका प्रमाण है कि श्री राम जन्मभूमि में ३५ वर्ष तक ताला पड़ा रहा। और तो और जनसंघ भी सत्ता मे आया लेकिन उसके मस्तिष्क में भी यह बात नहीं आई कि वे कम से कम फाइलें तो मगाकर देख लें कि वास्तविकता क्या है। दरअसल चाहे वे जनसघ के लोग हों या कांग्रेस के या किसी अन्य दल के इन सभी राजनीतिज्ञों के पास इस बात की फुर्सत ही नहीं है कि वे किसी भी समस्या की जड तक जायें। उनका तो अधिकांश समय राजनीतिक तिकड़मबाजी मे और गोटें बैठाने मे बीत जाता है और जो थोड़ा बहुत समय बचता है उसमें वे प्रदेश का प्रशासनिक कार्य करते हैं या फिर अपनी नेतागीरी या भाषणबाजी। अब तो हर जगह भाषणबाजी का जोर है, समस्याओं को गहराई से समझने की चेष्टा न तो किसी ने की है और न किसी को इसका चाव ही दिखायी देता है।

खैर, जो हुआ वह हुआ। अन्तत राम जन्मभूमि का ताला खुला और हिन्दुओं की भावनाओं का सम्मान हुआ लेकिन अभी तक वह संघर्ष बिल्कुल अधूरा है। प्रश्न यहां यह नहीं है कि कौन-सा मन्दिर किसके कब्जे मे है, कौन सी मस्जिद किसके कब्जे मे है, प्रश्न यह है

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्यमित्र साप्ताहिक के स्वामित्व के सम्बन्ध में विवरण

फार्म—४

प्रपत्र नियम—८

१—प्रकाशन का स्थान—भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, नारायणस्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ-१

२—प्रकाशन की आवर्तिता—साप्ताहिक, प्रति बृहस्पतिवार व शुक्रवार

३—मुद्रक का नाम—श्री विश्वम्भर दयाल गुप्ता, स्वत्वाधिकारी श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ के लिये।

४—राष्ट्रीयता—भारतीय

५—प्रधान सम्पादक-श्री मनमोहन तिवारी, ९ पुराना गणेशगंज लखनऊ

सहसम्पादक—श्री आ० रमेशचन्द्र एम०ए० २० नेहरूनगर, लखनऊ

राष्ट्रीयता—भारतीय

६—पत्र का स्वामित्व किसके पास है—श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ।

मैं विश्वम्भर दयाल गुप्ता घोषित करता हू कि मेरी जानकारी मे और विश्वास के अनुसार दिये गये विवरण सही है।

विश्वम्भर दयाल गुप्ता

दि० १ मार्च १९८६ प्रकाशक के हस्ताक्षर

शरीयत, संविधान और राजीव गांधी

प्रो० बलराज मधोक

जब से सुप्रीमकोर्ट ने शाहबानो नाम की तलाकशुदा मुस्लिम महिला की अपने पति से, जिसने लगभग ४० वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद तलाक दे दिया था, गुजारा मांगने सम्बन्धी अपील को स्वीकार किया है और उसके वकील पति को भारतीय दंड संहिता की धारा १२५ के अन्तर्गत रुपये ५०० प्रतिमाह गुजारा देने का आदेश दिया है, कुछ मुसलमान नेताओं ने आसमान सिर पर उठा रखा है। उनका कहना है कि सुप्रीम कोर्ट ने शरीयत में दखल दिया है। वे मांग कर रहे हैं कि दण्ड संहिता की धारा १२५ और संविधान की धारा ४४, जिसके अनुसार राज्य का कर्तव्य है कि सभी नागरिकों के लिए समान कानून की व्यवस्था करे, को हटा दिया जाये और उन्हें आश्वस्त किया जाये कि उनकी शरीयत में दखल नहीं दिया जायेगा। श्री राजीव गांधी के मंत्रीमंडल के एक सदस्य श्री असारी ने लोकसभा में भी इसी प्रकार के विचार रखे हैं। श्री राजीव गांधी ने अभी तक उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की है अपितु वह भी कहा है कि शरीयत द्वारा प्रतिष्ठित मुसलमानों के विवाह और तलाक सम्बन्धी कानून में दखल देने का उनका कोई इरादा नहीं है। इसलिए यह प्रश्न उभर कर सामने आया है कि "सेकुलर" भारत में इस्लामी शरीयत प्रमुख है कि संविधान और क्या प्रधानमंत्री संविधान से भी ऊपर हैं?

इस प्रश्न का ठीक उत्तर देने के लिए पहले यह समझना होगा कि शरीयत का आधार मुख्य रूप से मोहम्मद साहब का अपना जीवन और उनका विभिन्न परिस्थितियों और अवसरों पर व्यवहार है। उनके मरने के अनेक वर्ष बाद उनको जानने वाले कुछ लोगों ने इसके सम्बन्ध में अपने अनुभव और अनुभूति के आधार पर कुछ हदीसें लिखी थीं। उनमें एक रूपता नहीं है। उनके आधार पर विभिन्न मुल्लाओं द्वारा दिए गये फतवे या फैसले भी भिन्न भिन्न हैं। सुन्नी और शिया मुसलमानों की इस सम्बन्ध में मान्यताएं भी बहुत कुछ भिन्न हैं। विभिन्न राज्यों के शासक उनमें अपने अपने सवालों की पूर्ति के लिए समय-समय पर फेरबदल भी करते रहे हैं। इस प्रकार शरीयत का इस्लाम मजहब के बुनियादी सिद्धान्तों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। यह एक व्यवहार सम्बन्धी परम्परा मात्र है।

शरीयत और औरत

शरीयत का सम्बन्ध सिविल मामलों से भी है और फौजदारी मामलों से भी। फौजदारी मामलों में शरीयत चोरी का दंड हाथ काटना और व्यभिचार का दंड पत्थरों से मार डालना है। इसमें सूद लेना और देना तथा शराब पीना भी वर्जित है। परन्तु हिन्दुस्तान के मुसलमान इसके फौजदारी भाग को अपने ऊपर लागू नहीं रखना चाहते। वह केवल शरीयत के विवाह और तलाक सम्बन्धी भाग से ही जुड़े रहना चाहते हैं क्योंकि मोहम्मद साहब की ११ पत्नियां थीं और उनकी पहली पत्नी की आयु उनकी आयु से दुगनी और अन्तिम की आयु उनकी आयु का पांचवां भाग थी। इसलिए बहुविवाह और बेमेल विवाह प्रथा शरीयत का अंग मानी जाती है।

शरीयत के अनुसार हर मुसलमान एक समय में ४ पत्नियां रख सकता है। यदि वह उनमें से किसी को छोड़ना चाहे तो उसे तीन बार "तलाक दिया" कहना पर्याप्त है। जिस पत्नी को उसने एक बार तलाक दे दिया हो, उससे वह दोबारा विवाह तभी कर सकता है, जब तलाक शुदा पत्नी किसी और से विवाह करे, उसके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करे और उसके बाद उसे तलाक मिले। जिस औरत को तलाक दिया जाये यदि वह गर्भवती हो तो सन्तान की उत्पत्ति तक अन्यथा तीन महीनों तक ही उसे गुजारा देने की जिम्मेवारी पति की रहती है।

इस प्रकार शरीयत के अनुसार औरत मरद के पांव की जूती के समान है, जिसे वह कभी भी फेंक सकता है। उसे अनेक सौतों को और हर प्रकार के उत्पीडन को सहना पड़ता है।

भारतीय संविधान

यह स्थिति भारत के संविधान और संयुक्त राष्ट्र संघ के मानव अधिकार चारटर के बिल्कुल विपरीत है। भारत का संविधान सेकुलर है, मजहबी नहीं। यह लिंग के आधार पर स्त्री पुरुष के बीच भेद-भाव की इजाजत नहीं देता। इसकी धारा ४४ राज्य को सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून के लागू करने का भी निर्देश देती है।

कोई मुस्लिम महिला नहीं चाहती है कि उसकी अनेक सौतें हों और उसका पति जब चाहे उसे तलाक दे दें, और उसे कोई गुजारा भी न दे। इसीलिए मुस्लिम महिलाओं ने आमतौर पर शाहबानो केस पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का स्वागत किया है। वे चाहती हैं कि देश में सबके लिये समान सिविल कानून हो और विवाह तथा तलाक के सम्बन्ध में उनपर भी वही नियम लागू हो, जो हिन्दू महिलाओं पर लागू होते हैं।

बौखलाहट का कारण

परन्तु मुसलमान मरद, विशेष रूप से मुल्ला मौलवी शाहबानो केस के फैसले से घबरा गये हैं। इसके कई कारण हैं। पहला यह है कि इससे उनकी बहुविवाह की प्रवृत्ति पर अंकुश लगा है, क्योंकि अब तलाक शुदा मुस्लिम औरतें उनसे गुजारा मांग सकती हैं। दूसरे, अनेक पत्नियों के जरिए बच्चे पैदा करके अपनी रैयत बढ़ाते जाने की उनकी राजनैतिक योजना पर इस फैसले से रोक लगा सकती है। तीसरे, इस फैसले के कारण मनचले अमीर हिन्दुओं के दूसरा विवाह करने के लिए मुसलमान बनने पर भी कुछ रोक लगेगी। यही कारण है कि जमाते इस्लामी जमीयतुल उलमा मुस्लिम इस फैसले और न्यायमूर्ति चन्द्रचूड के पीछे लट्ठ लेकर पड गए हैं। शहाबुद्दीन के अनुसार इस फैसले ने सभी मुसलमानों को इकट्ठा कर दिया है। परन्तु शायद वे मुसलमानों में मुस्लिम औरतों को नहीं गिनते।

इस फैसले के विरुद्ध और संविधान की धारा ४४ को हटाने के लिए चलाये जाने वाले आन्दोलन की प्रतिक्रिया भी होने लगी है। सभी राष्ट्रवादी तत्व और दल इस फैसले और सांझे सिविल कानून के पक्ष में बोलने लगे हैं।

मुसलमानों द्वारा चलाये जाने वाले इस आन्दोलन से यह प्रश्न कि मुसलमान भारत के नागरिक हैं या विदेशी फिर उठ खड़ा हुआ है। यदि पाकिस्तान की मांग करने के बाद भारत में स्वेच्छा से रह गये मुसलमान भारत के नागरिक हैं, तो उन्हें भारत के संविधान का आदर करना चाहिए और भारत के कानूनों को मानना चाहिए। यदि वे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

शरीयत, संविधान और राजीव गांधी

(पृष्ठ ५ से आगे)

नागरिक नहीं तो फौजदारी मामलों पर भी उनपर शरीयत लागू होनी चाहिए। और उन्हे मत देने के अधिकार से वंचित कर देना चाहिए। उन्हें यह स्पष्ट रूप से बता देना चाहिए कि भारत इस्लामी राज्य नहीं। यदि वे शरीयत से इतना ही प्यार करते हैं, तो पाकिस्तान या किसी और इस्लामी राज्य में जाकर बस सकते हैं।

एक प्रबुद्ध और आधुनिक व्यक्ति के नाते श्री राजीव गांधी से अपेक्षा थी कि वे राष्ट्रवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। परन्तु इस मामले मे उन्होंने जो रवैया अपनाया है, उससे उनकी स्थिति बहुत हास्यास्पद और दयनीय बन गई है। एक तरफ तो वे हिन्दुस्तान को २१वीं शताब्दी मे ले जाने की बात करते हैं और दूसरी ओर मुसलमान महिलाओ के हितों की उपेक्षा करके और भारत के संविधान की अवहेलना करके वे मुसलमानो के ७वीं शताब्दी की ओर लौटने की बात मानने के संकेत दे रहे हैं। उनके द्वारा अपने मंत्री श्री अन्सारी के विरुद्ध अभी तक कोई कार्यवाही न करने से उनके मंत्रीमंडल के कई अन्य सदस्य भी खिन्न हैं। मंत्रीमंडल का उत्तरदायित्व साझा होता है। यदि एक मंत्री संसद मे ऐसी बात कहे जो संसदीय परम्परा, संविधान और नैतिकता के विरुद्ध हो तो उसके छींटें सभी मंत्रियो पर पड़ते हैं।

१९८४ के चुनाव मे श्री राजीव गांधी और कांग्रेस को मुसलमानो के मत न के बराबर मिले थे। वे राष्ट्रीय एकता की अपील के कारण अधिकांश हिन्दू मत ले पाये थे और यहीं उनकी और कांग्रेस की प्रचण्ड सफलता का मूल कारण था। अब यदि उन्होंने मुल्लाओं को प्रसन्न करने के लिए संविधान और राष्ट्रीय भावना की उपेक्षा की तो हिन्दुओं पर इसकी गहरी प्रतिक्रिया होगी। मुल्ला तुष्टीकरण की नीति से कांग्रेस को मुसलमान मत मिलेंगे कि नहीं यह तो समय बतायेगा परन्तु इसकी छवि अवश्य सफल होगी। ऐसी स्थिति जिसमे चार पत्नी वाला मुसलमान जब किसी हिन्दू को दूसरा विवाह करने पर दण्डित कर सकता है, भारत मे अब अधिक देर तक चलने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

इसलिए मुस्लिम महिलाओं के हित, संयुक्त राष्ट्र संघ का मानव अधिकार चारटर, भारत का संविधान और राजीव गांधी तथा कांग्रेस पार्टी के अपने हित इस बात की मांग करते हैं कि शरीयत के नाम पर साम्प्रदायिकता फैलाने वालो के साथ सख्ती से निपटा जाये और संविधान की धारा ४४ पर अविलम्ब अमल किया जाये।

आर्यजन भ्रमित न हो

गोरखपुर, बस्ती तथा देवरिया के आर्य जगतमें श्री द्विजराज शर्मा तथा राम मंगल विश्वकर्मा नामक दो व्यक्ति अपने आपको 'जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर का क्रमशः प्रधान तथा मन्त्री बता कर निरन्तर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा सार्वदेशिक सभा के सम्मान्य अधिकारियो के प्रति अनर्गल एवं अपप्रचार मे लीन हैं। इन व्यक्तियों ने कुछ निहित स्वार्थी तत्वों के साथ मिल कर 'जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा' नाम से अलग संगठन के रूप मे सम्भवत पंजीकृत करा लिया है तथा उसके नाम से भ्रम पैदा कर, कोट को धोखा देने के उद्देश्य से चोरी चोरी मे जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा को स्वर्गीय गिरधारी लाल जायसवाल द्वारा प्रदत्त भूमि, मकान तथा २५०००/ के फिक्सड डिपाजिट पर अवैध अधिकार कर उसका दुरुपयोग करने के उद्देश्य से अवैधानिक मुकदमे दायरकर उक्त सम्पत्ति को हड़पने का प्रयत्नकर रहे हैं। ये व्यक्ति निरन्तर उक्त तथा-कथित जिला सभा के नाम पर धन, सम्पत्ति दान स्वरूप प्राप्त करने तथा चन्दा उगाही मे प्रयत्नशील रहते हैं। पूर्वांचल की सभी समाजों को सूचित किया जाता है कि दि० २३ अक्टूबर ८५ को 'आर्यमित्र' मे सूचना प्रकाशित की जा चुकी है कि 'जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा' गोरखपुर का निर्वाचन निरस्त कर दिया गया है। शीघ्र ही आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा विधिवत् 'जिला सभा' का गठन किया जायगा उसमें गोरखपुर जनपद की सभी समाजें सक्रिय योगदान दें। उपर्युक्त व्यक्तियो के अनर्गल प्रचार तथा कुचक्रो से दिग्भ्रमित न हों। कृपया ध्यान दें—नियमानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा सम्बद्ध उत्तर प्रदेश की सभी समाजों तथा सम्बन्धित संस्थाओं, जिला सभाओं हेतु दान स्वरूप प्राप्त समस्त अचल सम्पत्ति का निबन्धन (रजिस्ट्री) आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश-५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम से ही होना चाहिए। इस सम्बन्ध में दान दाता जन किसी प्रकार के बहकावे मे न आवें।

यह भी सूचित किया जाता है कि 'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश' का विधिवत् प्रामाणिक एवं सार्वदेशिक सभा द्वारा मान्य कार्यालय ५-मीरा बाई मार्ग, नारायण स्वामी भवन, लखनऊ है जो निरन्तर सुव्यवस्थित रूप से कार्यरत है सभी समाजें इसी से अपना सीधा सम्पर्क बनाये रक्खें।

मनमोहन तिवारी	डा० विनय प्रताप
(सभा मन्त्री)	(सभा उपमन्त्री—एवं संयोजक पूर्वी प्रचार विभाग)

—आर्य समाज बसोरा (हरदोई) का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दि० १९ जनवरी से २१ जनवरी १९८६ के मध्य सोल्लास सम्पन्न हुआ। मन्त्री

हिंदू धर्म मे दीक्षित

कानपुर, १० फरवरी (वि) आर्यसमाज मन्दिर गोविंद नगर कानपुर मे विख्यात महिला उद्धारक आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने एक तलाकशुदा मुस्लिम महिला को उसके चार बच्चों सहित उनकी इच्छानुसार हिंदू धर्म ग्रहण कराया।

बताया जाता है कि यह २६ वर्षीय तलाकशुदा महिला मलका बेगम अपने चारो बच्चों सहित श्री देवीदास आर्य के निवास पर पहुची और अपनी दुखद कहानी सुनाई कि उसे पति ने तलाक देकर बेसहारा कर दिया है। अत वह इस्लाम को छोड़ना चाहती है। उसकी सहायता की जाये। श्री आर्य ने उसे हिंदू धर्म मे दीक्षित कर उनका नाम माया देवी तथा बच्चों के नाम राम, श्याम, शांति व मालती रखे। इसके बाद इस महिला की इच्छानुसार उसका विवाह एक हिंदू युवक प्रह्लाद से वैदिक रीति से कराया गया। संवाददाता

कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो

(ओबेदुल्ला खां आजमी को चेलेञ्ज)

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उत्तर प्रदेश)

(गताङ्क से आगे)

यदि वह तैयार नहीं तो इसका यह अर्थ है कि वह मन से कुरान को ईश्वरीय पुस्तक नहीं मानता, केवल अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिये यह बयान प्रसारित किया है। इस दशा में वह अपने उपर्युक्त अनर्गल प्रलाप के लिये सार्वजनिक क्षमा-याचना करे।

मौलाना का कहना है कि 'हिन्दोस्तान के मुसलमानों को जो ईमान की रौशनी आयी है।' वह कौन सी रौशनी आयी है? हमारा तो यह कहना है कि वह ईमान है ही नहीं रौशनी होना तो दूर की बात है। ओबेदुल्ला जी कह दें और दूसरे मान लें, यह नितान्त असम्भव है। यह तो उन्हें सार्वजनिक रूप से शास्त्रार्थ करके सिद्ध करना होगा कि कुरान ईश्वरीय पुस्तक है और उसमें वर्णित बातें ईमान की रौशनी है। यदि वह इसके लिये तैयार होकर अपना पक्ष सिद्ध नहीं कर पाते तो उनकी प्रतिज्ञा थोथी है और न कुरान ईश्वरीय पुस्तक है, न इस्लाम ईमान की रौशनी अपितु एक भ्रान्ति है और कुरान ईश्वरीय पुस्तक होने के नाम विश्व के भोले और ना समझ लोगों को स्वर्ग में सुन्दरी युवतियां और सुन्दर लडकों का लालच देकर उनकी काम-वासना और दूध, शहद, शराब की नहरों तथा मेवाओं का लोभ दिलाकर उनकी भौतिक भोगवादी प्रवृत्तियों को उभार कर इन्हें इस्लाम के अविद्यायुक्त अन्ध विश्वासी जाल में फंसाया गया है।

जहाँ तक हिन्दुस्तान के मुसलमानों में ईमान की रौशनी की बात है, वह भी नितान्त मिथ्या है। भारत में किसी ने इस्लाम को ईमान की रौशनी या अच्छा समझकर नहीं अपनाया। यहाँ तो तलवार के बल पर लोगों को मुसलमान बनाया गया तथा कुछ लोग भूख से तंग आकर लालच के वशीभूत हुए, तब मुसलमान बने। इनको भी मुसलमान बनाने के लिये लिये भारत के मुस्लिम साम्राज्य काल में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर दी गयीं।

ओबेदुल्ला का कहना है कि 'हम वो जुबानें काट लेंगें, जो जुबानें कुरान के खिलाफ बोलेंगी, वो खालें खींच लेंगे, जो कुरान के खिलाफ कांपते (हरकत करते) हुए नजर आयेंगी।' 'बाप न मारी पोदवो, बेटा तीरन्दाज' उन कायरों की सन्तान जिन्होंने केवल पेट की आग बुझाने के लिये अथवा तलवार के भय से चोटी कटवा और जनेऊ तुड़वाकर इस्लाम जैसे अविद्या युक्त और बुद्धि विरुद्ध मत को स्वीकार कर लिया, वीरता के दम भर रही है। आश्चर्य———महद् आश्चर्य ———तलवार के भय और रोटी के लालच से धर्म बेचने वाले मरे हुए हिन्दुओं की सन्तान धमकियें दें और सिर देकर सार की रक्षा करने वाले' नर पुङ्गवों की सन्तति सुनती रहे, यह अब अधिक समय तक नहीं चल सकता।

एक ओर तो इस प्रकार की धमकी और दूसरी ओर भारतीय सर्वोच्च न्यायालय का यह कह कर अपमान किया जाय कि 'हम किसी कोर्ट के पाबन्द नहीं। हाई कोर्ट तो दूर की बात है, सुप्रीम कोर्ट भी अगर 'मुस्लिम पर्सनल ला' को चेलेञ्ज करेगी तो हम सुप्रीम कोर्ट का भी हर फैसला जूते की नोक पर रक्खेंगे।' भारतीय सर्वोच्च न्यायालय तक को जूता दिखाया जाय, भारत का गुप्तचर विभाग भारत के प्रत्येक क्षेत्र में बजाये जाने वाले इस कैसेट के विषय में कानों में तेल डालकर बैठा रहे, इस पर कोई कानूनी कार्यवाही न हो, इससे यह सिद्ध होता है कि भारत के नेताओं और सरकारी कर्मचारियों की दृष्टि में हिन्दू तो उपेक्षित ही नहीं अपितु पद दलित किये जाने और कराये जाने के योग्य है ही———भारतीय सर्वोच्च न्यायालय का भी इन लोगों की दृष्टि में कोई मूल्य और सम्मान नहीं है। नहीं तो मौलाना ओबेदुल्ला को इस समय जेल में होना चाहिये था और उनके कैसेट को बजाने वालों पर भी न्यायालय की मानहानि तथा शान्ति भंग करने के प्रयत्न का अभियोग चलाया जाना चाहिये था।

इतना अनर्गल और अवैध प्रलाप करके भी अपने उक्त भाषण में इस असभ्य मौलाना ने अपने आपको भारत का राष्ट्र भक्त और स्वाधीनता सेनानी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। जिन लोगों के बहुमत ने पाकिस्तान के पक्ष में मतदान किया और इतने पर भी निर्लज्जता तथा ढीठतापूर्वक जो भारत में पड़े हुए हैं। भारत में युद्ध होने पर जो दिनरात पाकिस्तान रेडियो सुनते, पाकिस्तान की जीत पर खुशियां और भारत की विजय पर मातम मनाते है। यहीं तक नहीं अपितु खेलों में भारत से पाकिस्तान के जीत जाने पर 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाते और मिठाइयां बांटते है और भारत की जीत हो जाने पर घर में मौत हो जाने जैसा मातम मनाते हैं। भारत भक्त अपनी स्वाभाविक उदारता और सहनशीलता के कारण इतने पर भी सहन कर लेता है तो इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वह मरे हुए और कायर हिन्दुओं की सन्तान एक सहस्र वर्ष के लोमहर्षक संघर्ष को सह कर जीवित रहने वाले ऋषि-मुनियों और रामकृष्ण जैसे नरशार्दूलों की सन्तानों को धमकियां दें, उसकी राष्ट्रीय चेतना को ललकारे, उसकी राष्ट्रीय न्यायपालिका के सर्वोच्च न्याय मन्दिर का अपमान करें और वह चुपचाप सब कुछ सहता रहे। चिड़िया का बच्चा बाज के सामने चहचहाये और बाज-बाज आये। नेता और सरकार या तो अपने कर्त्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करें, नहीं तो ऐसे बदलगाम लोगों से निबटने की शक्ति राष्ट्रभक्त हिन्दुओं में है। हमारे लोगों में किसी ने कोई लेख लिखा, कोई पुस्तिका लिखी, कोई बात भाषण में कही, चाहे वह कितनी ही युक्ति युक्त तथा राष्ट्रहित में हो, झट सरकार का डण्डा उठा और यदि गिरफ्तारी नहीं तो कम से कम अभियोग अवश्य चालू कर दिया गया। देश-द्रोही अवाञ्छनीय तत्व चाहे जों बकवास करें, सरकार, उसके कर्मचारी और नेता सभी कच्चे घड़े की छाने रहते हैं, आखिर क्या यह बात है कि–

क्रमशः

पाणिनि कन्या महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

'पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी' का १५ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ४, ५, ६ अप्रैल ८६ को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाना निश्चित हुआ है।

इस अवसर पर अनेकों महात्मा गण और विद्वज्जन पधार रहे हैं।

प्रज्ञा देवी आचार्या

शोक प्रस्ताव

रसड़ा (बलिया)—रसड़ा के आर्य सन्यासी श्री राधा मोहनलाल मुख्तार उर्फ स्वामी सत्यानन्द जी का गत ३१ जनवरी को निधन हो गया। वे लगभग ९० वर्ष के थे। आर्य प० श्री सरदार जी शर्मा के पौरोहित्य में उनके पुत्रों द्वारा वैदिक पद्धति से दाह संस्कार सम्पन्न हुआ। सम्वाददाता

शोक संवेदना

प्रांत की निम्न आर्य समाजों ने स्व० श्री प० बिहारी लाल जी शास्त्री के निधन पर अपनी शोक संवेदना एवं श्रद्धांजलि अर्पित की हैं कि आर्य जगत के गौरव एवं व्याकरण का एक सूर्य अस्त हो गया। प्रभु दिवंगत आत्मा को चिर शांति तथा शोकाकुल परिवार को असीम धैर्य प्रदान करें।

१–आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर
२– ,, ,, बड़ा बाजार पानीपत
३– ,, ,, हासीपुर मिरजापुर
४– ,, ,, विद्युत गृह कासिमपुर अलीगढ़
५–महिला आर्य समाज स्टेशन रोड, मुरादाबाद
६–आर्य समाज मण्डी बास मुरादाबाद
७– ,, ,, कुन्दरकी ,,
८– ,, ,, मउआ सुमेरपुर हमीरपुर
९– ,, ,, गोरखपुर बक्शीपुर
१०–आर्य कुमार सभा हरदोई
११–आर्य समाज मैनपुरी
१२– ,, ,, गंगा जमुनी बहराइच
१३– ,, ,, बनगांव पूर कालिका गोन्डा
१४– ,, ,, कटरा बाजार गोन्डा
१५–आर्य समाज एवं जिला आर्यो प्रतिनिधि सभा बहराइच
१६–आर्य समाज ब्रह्मपुरी, मेरठ।

निर्वाचन

आर्य समाज पलिया (लखीमपुर-खीरी)
प्रधान श्री भवानी शंकर अवस्थी
मन्त्री श्री नरेन्द्र सलूजा
कोषा० श्री मुल्क राज कन्याल

आर्य समाज बिलग्राम (हरदोई)
प्रधान श्री बाबू तेज नारायण कपूर
मन्त्री श्री जगनाथ प्रसाद आर्य
कोषा० श्री रामचन्द्र कुशवाहा

उत्तर प्रदेश विद्यालय प्रबन्धक महासभा का

इक्कीसवाँ अधिवेशन

उ०प्र० विद्यालय प्रबन्धक महा सभा का २१ वाँ अधिवेशन दिनांक १ व २ मार्च १९८६ को पूर्वाह्न ११ बजे सेन बालिका विद्यालय इण्टर कालेज फूलबाग माल रोड कानपुर में सम्पन्न होगा।

इस शुभ अवसर पर उ०प्र० विद्यालय प्रबन्धक महासभा के समस्त माननीय सदस्यों तथा प्रबन्धक महानुभावों को सादर आमन्त्रित किया जाता है। कार्यक्रम एवं विचारणीय विषय निम्न हैं–

विचारणीय विषय—

१ वर्तमान कार्यसमिति द्वारा प्रतिवेदन एवं आय-व्यय विवरण।
२—विषय निर्वाचिनी समिति की बैठक एवं प्राप्त प्रस्ताओं का विश्लेषण।
३—नवीन कार्यसमिति के गठन हेतु नामांकन पत्र प्राप्त करने की घोषणा।
४—परीक्षा प्रणाली में सुधार और उसका विकेन्द्रीयकरण।
५—कक्षाओं में अध्यापक छात्र अनुपात।
६—प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप एवं प्रबन्ध।
७–शिक्षकों को राजनीति से अलग रखने पर विचार।
८–निजी प्रबन्धतन्त्र के दायित्वों और अधिकारों का विश्लेषण।
९–प्रत्येक जनपद स्तर पर प्रबन्धकों सहित एक-एक परामर्शदात्री समिति का निर्माण।
१०–कतिपय प्रबन्धतन्त्रों के आपसी झगड़ों को निपटाने के सम्बन्ध में निर्णय।
११—महासभा के विधान में कतिपय संशोधन।
१२—विभिन्न छात्र एवं अनुपालन कोष की आयवृद्धि के साधन एवं वर्तमान शुल्कों पर विचार।
१३–क्षतिपूर्ति हेतु प्राप्य शुल्कांशों को प्रतिमाह काटकर जमा करने के सम्बन्ध में सामूहिक निर्णय।
१४–महासभा के कार्यों को गति देने एवं सम्पर्क स्थापित करने हेतु एक वैतनिक कार्यकर्ता की नियुक्ति पर विचार।
१५–नवीन कार्यसमिति का गठन एवं पदाधिकारियों का निर्वाचन।

भवदीय—

गोपीनाथ दीक्षित, अध्यक्ष, ६६ बी दारुलसफा, लखनऊ
दीनदयाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, २९३ हरीनगर, लखनऊ
नरोत्तमदास अग्रवाल, उपाध्यक्ष, ४ कटरा रोड, इलाहाबाद
केदार नाथ गुप्त, महामन्त्री, १५५ भारती भवन रोड, इलाहाबाद
मनमोहन तिवारी, मन्त्री, ९ पुराना गणेशगंज, लखनऊ

कानपुर में सम्पर्क हेतु निम्न पते से पत्राचार करें—

(१) श्री शिवकुमारसचान, ११५२ अशोक बिहार, साकेतनगर, कानपुर।
(२) श्री प्रेमचन्द्र अग्निहोत्री, महामन्त्री कानपुर विद्यालय प्रबन्धक महासभा, ३७ अशोक बिहार कानपुर।

पत्र संख्या मे—१२९२ दिनांक २। २। ८६

आदेश

यत जिन परिस्थितियों मे श्री हरदत्तसिंह जी को आर्यसमाज मैनपुरी का प्रशासक बनाया गया था वह परिस्थितियां अभी तक प्राय ज्यों की त्यो बनी हुई हैं परन्तु इन परिस्थितियों का निवारण हो परमावश्यक है।

अत मैं इस सभा के निश्चय स० ८०१५ दि० २७-७-८५ के क्रम मे, इसी सभा की ओर से, उक्त प्रशासक के कार्य-काल को उनके प्रचलित कार्यकाल की समाप्ति के तत्काल पश्चात से आगे, छ मास के लिए और बढ़ाता हू।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश
लखनऊ

पत्र संख्या मे—१२९३ दिनांक २। २। ८६

आदेश

यत. श्री दयानन्द सरस्वती साधना मन्दिर इण्टर कालेज जाजूमई, जिला मैंनपुरी के सुचारु संचालन आदि के हेतु अधोहस्ताक्षरी द्वारा नियुक्त तदर्थ समिति, मान० उच्च न्यायालय के आदेशानुसार जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला-मैंनपुरी के सहयोग के न मिलने के कारण, अपने उद्देश्यों को सुपूर्ति न पूर्णत सफल नहीं हो सकी है।

अत मै, उक्त तदर्थ समिति के कार्यकाल को, उसके प्रचलित कार्य-काल की समाप्ति के तत्काल पश्चात से आगे, छ मास के लिए और बढ़ाता हू।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
लखनऊ

पत्र संख्या—मे—१२८६ दिनांक २। २। ८६

आदेश

यत आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, जिला-मैनपुरी के घोर अनियमित एव प्रदर्शित वार्षिक निर्वाचन दि० २४-११-८५ को इस सभा ने अभी तक मान्यता प्रदान नहीं की है।

अतः जनपद-मैनपुरी की समस्त आर्यसमाजो तथा सभी प्रकार की आर्य-संस्थाओं एवं वहाँ के आर्यजनों आदि से अनुरोध है कि—वह उपर्युक्त अनियमित निर्वाचन मे तथाकथित निर्वाचित अन्तरग सभा और उसके स्वघोषित पदाधिकारियों के किसी भी निश्चय, निर्णय और निर्देश आदि इस सभा के अगले आदेशों तक न मानें तथा आर्योपसभा सम्बन्धी प्रत्येक कार्य के लिये इस सभा के अन्त० सभासद श्री नरेन्द्र आर्य (ओ३म् भण्डार, मैनपुरी) से सम्पर्क करें।

इस आदेश का कठोरतापूर्वक परिपालन किया जावे अन्यथा दोषी व्यक्ति को क्षमा नहीं किया जावेगा।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश
लखनऊ

पत्र संख्या मे—१२८५ दिनांक २। २। ८६

आदेश

यत इस सभा के निरीक्षक, कुं० ध्रुवपालसिंह 'अटल' की आख्या दि० २९-१२-८५ के अनुसार, आर्यसमाज खुदागज रामस्वरूपनगर जिला फर्रुखाबाद का संगठन प्राय. समाप्त सा हो चुका है जिसके अभाव मे इस आर्यसमाज से सम्बद्ध इस सभा की भू-सम्पत्ति (१-२ ३४+२-७७१+३-१३३६ (योग)—२३४१ एकड़) का दुरुपयोग हो रहा है जिसकी रक्षा तथा व्यवस्था हेतु तत्काल आर्य समाज खुदागज—रामस्वरूप नगर के पुनर्गठन की परम आवश्यकता है।

अत मैं, इस सभा के मान० मन्त्री की संस्तुति, पत्र सं० ५६३ दि० २५-१-८६ से सहमत होता हुआ इस सभा की उक्त सम्पत्ति की रक्षा तथा व्यवस्था तथा उक्त आर्यसमाज के पुनर्गठन हेतु निम्नांकित आर्य जनो की निम्नांकित तदर्थ समिति छ मास के लिये नियुक्त करता हू—

१-श्री हरीराजसिंह, संयोजक, तदर्थ समिति आर्यसमाज खुदागंज
२- " अशोककुमारसिंह (प्रधान) सदस्य " "
३- " कृष्णपालसिंह (कनकोली) " " "
४- " सुरेन्द्रसिंह (खुदागज) " " "
५- " चन्द्रपालसिंह (कनकोली) " " "

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
लखनऊ

दिवंगत पंडित बिहारीलाल शास्त्री के प्रति एक श्रद्धांजलि

शीर्षस्थ वैदिक विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी, अद्भुत तार्किक, उद्भट भाषा शास्त्री धर्मवीर एवं अनेक उच्चकोटि की पुस्तकों के लेखक स्व-नामधन्य आचार्य प्रवर पण्डित बिहारीलाल शास्त्री का निधन आर्य समाज पर वज्रपात के समान है। पण्डित जी के निधन के उपरान्त आर्यसमाज की शास्त्रार्थ परम्परा को जीवित रखने का प्रश्न गम्भीर रूप से सामने आ गया है। यह कहना न तो अतिशयोक्ति है और न ही मात्र औपचारिकता—कि यह क्षति अपूरणीय है। उनकी पावन स्मृति के साथ ही अनेक संस्मरण स्मृति पटल पर उभर आते हैं। उन्होंने सैकड़ो व्यक्तियो के जीवन को अपनी पावन अमृतवाणी से सम्भारा और न जाने कितने विद्वानों की सहायता दी। बरेली नगर की आर्य जनता ने पण्डित जी के नाम पर एक स्थायी स्मारक बनाने का विचार प्रारम्भ कर दिया है-जो बहुत स्तुत्य प्रयास है,। इस प्रस्तावित स्मारक की सार्थकता के लिये यह आवश्यक है कि इसके द्वारा आर्य समाज की लुप्तप्राय शास्त्रार्थ परम्परा को जीवित रखने का ठोस प्रयास किया जावे। इसी दृष्टि से ही सारा कार्य हो। सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक सभा का सहयोग इस कार्य मे निश्चित रूप से प्राप्त होगा। मैं समझता हू कि दिवगत महान् आत्मा के प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उनकी आत्मा को सच्ची शान्ति तभी प्राप्त होगी जब हम उनके जीवन मिशन को जीवित रखेंगे।

डा० आनन्द प्रकाश
उपमन्त्री
सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली

आर्यसमाजें २ से ९ मार्च ८६ तक ऋषि-बोधोत्सव (दयानन्द सप्ताह) समारोह से मनायें

इस महान् पर्व पर हमारी प्रतिज्ञाए और कार्यक्रम

१–ऋषिबोधोत्सव पर जन-सम्पर्क एव सदस्यता अभियान चलाया जावे ।

ऋषि बोधोत्सव पर आर्यसमाज के प्रचार की दृष्टि से विशेष जन-सम्पर्क स्थापित करने एव सदस्यता अभियान पर विशेष बल दिया जाना चाहिये ताकि आर्य विचारों तथा आर्यसमाज से सहानुभूति रखने वाले बन्धुओ के सक्रिय सहयोग से समाज लाभान्वित हो सके ।

२–आर्यजनो मे पारस्परिक सहयोग एव भ्रातृत्व-भावना वृद्धि का प्रयत्न किया जाय—

प्रत्येक जिले मे जिले की समस्त समाजों को 'आर्य सम्मेलनो' का आयोजन करना चाहिये, और परस्पर भ्रातृत्व-भाव की वृद्धि के साथ-साथ स्थानीय आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक गोष्ठियों के द्वारा परस्पर सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाए ।

३–राष्ट्र के नैतिक पतन को रोकने का आयजन विशेष यत्न करें—

आर्यसमाज एक धार्मिक आन्दोलन है । राष्ट्र के नैतिक पतन को देखते हुए आर्यसमाज का दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है । अत सभी आर्य बन्धुओं को चाहिए कि इस पर्व पर सामूहिक रूप से राष्ट्र के नैतिक उत्थान मे विशेष सक्रिय सहयोग देने का निश्चय करें,और स्वयं नैतिक जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर राष्ट्र का मार्ग दर्शन करें ।

दयानन्द सप्ताह का कार्यक्रम

१–उद्बोधन—प्रति दिन प्रातः नगर-नगर और ग्राम-ग्राम मे टोलियां बनाकर उद्बोधन किया जावे ।

२–प्रभात फेरी की जाय, इसके पश्चात् आर्यसमाज मन्दिर मे यज्ञ किया जाय, यथासम्भव इस सप्ताह मे सम्पूर्ण यजुर्वेद संहिता से बृहद् यज्ञ किया जावे ।

३–'आर्यमित्र'—प्रत्येक आर्यसमाज के पदाधिकारी तथा सदस्य गण 'आर्यमित्र' के स्वय तथा कम से कम ५ नवीन ग्राहक बनायें 'आर्यमित्र' के नवीन ग्राहक बढ़ाने का प्रयत्न करें ।

दलितोद्धार–समाज मे अछूत कहे जाने वाले बन्धुओ से सम्पर्क स्थापित किया जावे । उनको वैदिक धर्म की विशेषतायें बताई जावें । उनके यहां हवन करके यज्ञ शेष वितरित किया जाय । छुआ-छूत मिटाने का प्रयत्न किया जाये ।

धर्मरक्षा महाभियान तथा हरिजन स्नेह सम्मेलन आयोजित किया जाय ।

गुरुकुल आन्दोलन–सभा की ओर से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहित करने के लिये गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन गत ८१ वर्षों से सचालित है । बोधरात्रि के अवसर पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व पर विशेष प्रकाश डालना तथा गुरुकुल को आर्थिक सहायता द्वारा उसे समर्थ बनाना प्रत्येक भारतीय और आर्य का कर्तव्य है ।

आचार-व्यवहार–जनता मे से भ्रष्टाचार और चरित्रहीनता मिटाने के लिए सिनेमा के भ्रष्टाचार फैलाने वाले अश्लील चित्रों के विरुद्ध आन्दोलन किया जावे तथा मादक द्रव्य निषेध व गोरक्षा पर बल दिया जावे ।

आत्म-निरीक्षण–इस सप्ताह मे एक दिन समस्त आर्य भाई-बहनों को एकत्र होकर इस बात पर भी गम्भीरता से विचार करना चाहये कि शक्तिशाली एवं प्रभावशाली आर्यसमाज का कार्य कैसे आगे बढ़ाया जाय ।

स्वदीक्षा व्रत-भविष्य मे आर्यसमाज के लिए दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा एवं काशी शास्त्रार्थ शताब्दी,आर्यसमाज स्थापना शताब्दी मेरठ,कानपुर एवं वाराणसी मे सत्यार्थप्रकाश शताब्दी मे स्वीकृत प्रस्तावों एवं उपयुक्त एवम् ऋषिनिर्वाण शताब्दी अजमेर संकल्पो के लिए सामूहिक दीक्षा व्रत लेना तथा उन्हें व्यक्तिगत और सामूहिक दोहराना चाहिये ।

प्रीतिभोज-आर्यसमाज मन्दिर मे एक दिन प्रीतिभोज किया जावे । उसमें हरिजन बन्धुओ को भी सम्मिलित किया जावे ।

ईसाई-प्रचार-निरोध –एक दिन सार्वजनिक सभा करके ईसाइयत के प्रचार के लिए आने वाले धन, विदेशी मिशनरियो पर प्रतिबन्ध लगाने, विदेशी मिशनरियो का राष्ट्रीयकरण करने तथा हिन्दू बालक-बालिकाओ की ईसाइयत की शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाने की भारत सरकार से माँग करनी चाहिये ।

ऋषि बोध पर्व ८ मार्च १९८६ ई० दिन शनिवार

प्रात समस्त आर्य सज्जन तथा देवियाँ मन्दिर मे एकत्रित होकर—

(१) कुछ काल वेद पाठ करें ।

(२) साधारण यज्ञ तथा पर्वेष्टि यज्ञ करें ।

(३) आत्मोद्धार सम्बन्धी भजन गान किये जावें ।

(४) प्रत्येक व्यक्ति आत्मोन्नति, स्वाध्याय वैदिक धर्म प्रचार करने का अनुष्ठान करें ।

मध्याह्न–विशेष शोभा यात्रा का आयोजन किया जाय । शोभा-यात्रा अधिक से अधिक गम्भीर तथा प्रभावोत्पादक होना चाहिये । आर्य पुरुषो, कुमारों, देवियों को अपनी-अपनी टोलियां बनाकर स्वयं भजन गाने चाहिए । भजनो मे प्रभु-भक्ति, महर्षि-महिमा, जातीय गौरव तथा आत्म-सुधार के विशेष भाव हो ।

रात्रि—मन्दिरो मे विशेष रोशनी करनी और उसके पश्चात् आर्य मन्दिरो मे वेदोपदेश तथा ऋषि जीवन पर प्रकाश डालने वाले व्याख्यान होने चाहिए ।

विनीत—
इन्द्रराज
प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

-ओ३म्-

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।



कुम्भ मेला हरिद्वार

-१९८६-

मे

विशाल वेद प्रचार शिविर

(दिनाक १ अप्रैल से १४ अप्रैल १९८६ तक)

सादर स्नेहाभिनन्दन

卐

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

शिविर कार्यालय-आयसमाज मन्दिर हरिद्वार

सर्वे भवन्तु सुखिन. सर्वे सन्तु निरामया. ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।

शताब्दि महोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश का

१५ से १८ मई तक—१९८६ के मध्य
डी० ए० वी० कालेज प्राङ्गण-लखनऊ मे

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० को स्थापित हुए एक सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। सौ वर्षों मे सभा ने प्रदेश के आर्य समाजो को सङ्गठित करने और उन्हें दिशा निर्देशन का यथा साध्य प्रयास किया है। शताब्दि समारोह विशेष भव्यता के साथ मनाया जायेगा जिसमे आर्यजगत् के मूर्धन्य नेताओं के अतिरिक्त भारत के प्रधान मत्री अथवा राष्ट्रपति विशेष अतिथि होगे ।

० समस्त आर्यसमाजें आर्य उपप्रतिनिधि सभायें, आर्य जन और उत्तर प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिको से अनुरोध है कि इसे सफल बनाने के लिये हमारे हाथों को सुदृढ़ करें अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सभा को भेजने का प्रयास करें।

इस अवसर पर सभा के १०० वर्ष का इतिहास प्रकाशित होगा । समस्त आर्यसमाजों की विवरण पत्रिका भी संलग्न होगी । अत समस्त आर्यसमाजें एक मास के अन्तर्गत अपने समाज का इतिहास अपने क्षेत्र के विगत १०० वर्षों के अन्तराल के विशेष आर्यजनो का परिचय और गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करें जिससे विवरण पत्रिका मे सम्मिलित किया जा सके। इस अधिवेशन की सफलता के पीछे प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों का समवेत शक्ति होना आवश्यक है।

इन्द्रराज　　　　मनमोहन तिवारी
प्रधान　　　　मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश ५-मीराबाई माग, लखनऊ ।

—दु ख है कि आर्यसमाज अजीतमल (इटावा) के उपाध्यक्ष श्री भगवत स्वरूप जी आर्य की पूज्यनीय माता जी का निधन दिनांक ६-२-८६ को हो गया। वे ८६ वर्ष की थीं। उनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार पवित्र यमुना नदी पर किया गया। जिसमे समाज के प्रतिष्ठित लोग शामिल थे।　　—मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
मा० फाल्गुन ४
माघ शुक्ल १४, रविवार
२३ फरवरी १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सांस्कृतिक धरोहरो की रक्षा

(पृष्ठ ४ का शेष)

कि सही मानसिकता उत्तर भारत मे जागृत हो ही नहीं रही है। आज दक्षिण भारत के प्रत्येक राजनीतिज्ञ को यह कहते हुए गर्व है कि वह हिन्दू है और उनकी सरकार ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अमुक-अमुक काय किए हैं। तमिलनाडु के मुख्यमन्त्री यह कह सकते हैं कि उनकी सरकार ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए कई कार्य किये हैं लेकिन ऐसी कोई घोषणा उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा या मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री नहीं कर सकते, क्योकि इन राज्यो की राजनीतिक मानसिकता केवल मात्र अल्पसंख्यको को किसी न किसी प्रकार पटाकर अपने साथ कर लिया जाये इस नीति पर आधारित हे। सच बात तो यह है कि यह एक प्रकार से अल्पसंख्यको का राजनीतिक शोषण है।

धर्मनिरपेक्ष समाज का अर्थ यह नहीं होता कि बहुसंख्यक समाज का जो सांस्कृतिक परिवेश है और उसने जो मुख्यधारा दी है उसमे आमूल परिवर्तन कर डाला जाए, इस प्रकार के समाज का अथ तो केवल यह है और होना भी यही चाहिये कि बहुसंख्यक समाज अल्प संख्यकों के प्रति पूर्ण रूप से सहिष्णु बने, उन्हें आदर दे और उन्हे उपासना करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करे। उदारता और सहिष्णुता का अर्थ यह नहीं होता कि बहुसंख्यक समाज का जो ढांचा है और उन की जो दार्शनिक मान्यताए हैं उन्हे ध्वस्त कर डालने का अधिकार अल्पसंख्यको की सस्कृति की रक्षा की वकालत करने वालो को दे डाला जाए। सहिष्णुता का लाभ उठाकर यदि कोई बाहरी सस्कृति अन्दर घुसपैठ कर तोडफोड करना चाहती है तो उसकी इजाजत इसे नहीं दी जा सकती। बाहर से आई हुई कोई भी सस्कृति राष्ट्रीय संस्कृति का स्थान यदि ग्रहण करना चाहे तो यह कार्य वह बहुसंख्यको की संस्कृति को कुएं मे धकेल कर नहीं कर सकती। भारतीय संदर्भ मे यदि यह तय करना पडे कि हमारी राष्ट्रीय संस्कृति का उद्गम क्या है और हमारी वतमान सस्कृति है क्या तो इसका उद्गम हम न रोम से खोज सकेंगे, न अरब और ईरान मे। इसके लिये तो हमे अपने सांस्कृतिक प्रतीको, मान्यताओ और धरोहरो की ओर ही देखना होगा। राम जन्म भूमि हमारी एक राष्ट्रीय धरोहर है और इस राष्ट्रीय धरोहर को जो मान्यता नहीं देता और उसका विरोध करता है तो ऐसी बात को सरक्षण धमनिरपेक्षता की आड मे देना अन्याय है। बहुसंख्यक समाज की संस्कृति का उपहास करके अनादर करके अथवा तिरस्कार करके जो राष्ट्रीय सस्कृति को परिपुष्टि करने और निर्माण करने का स्वप्न देख रहे हैं वे तो भटके हुए लोग हैं।

हा ! बिहारीलाल जी शास्त्री

जीवन भर करते रहे, वैदिक धर्म प्रचार।
वही बिहारीलाल जी, छोड चले ससार॥
छोड चले संसार, आर्य जन सब हैं रोते।
कर-कर उनकी याद, आसुओ से मुह धोते॥
कहे ब्रह्मानन्द आर्य, वेद हित अपना तन मन।
कर दीन्हा सर्वस्व, निछावर सारा जीवन॥

—ब्रह्मानन्द आर्य प्रचारक सभा

आगामी हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रचार एव सेवा शिविर

निश्चय किया गया है कि आगामी दिनाक १४ जनवरी से ९, १० अप्रैल ८६ तक लगने वाले हरिद्वार में बारह वर्षीय कुम्भ मेले के ऐतिहासिक अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रचार एव सेवा शिविर लगाया जाय। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने जीवन मे कुम्भ के अवसरपर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसे भी ११९ वर्ष के लगभग हो चुके हैं। अत अन्धकार एव रूढ़िवादिता का खण्डन करते हुए समुचित मार्ग दर्शन का प्रचार किया जायेगा। विद्वानों के भाषण, उपदेश होंगे, सेवा शिविर द्वारा यात्रियों की यथासाध्य सेवा आदि की व्यवस्था रहेगी साथ ही विशेष स्नान पर्वों के दिन ऋषि लगर का भी आयोजन होगा वहीं शिविर लगाकर सभा के वरिष्ठ अधिकारी भी स्वय व्यवस्था की देखरेख करेंगे। समस्त प्रदेश की उपप्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजो और आर्यजनों से अनुरोध है कि इस अवसर पर हमारी सहायता करें, अपने क्षेत्र मे धन और अन्न आदि का सग्रह करें, सभा को सूचना दें और सुविधानुसार [illegible] हीत अन्न हरिद्वार भिजवाने का प्रयास किया जाय। सबके [illegible] सहयोग से ही हमारे उद्देश्य सम्पन्न हो सकते हैं तदर्थ सबका सहयोग अपेक्षित है और इस मे अविलम्ब कार्य प्रारम्भ कर दिया जाय।

इन्द्रराज	कृष्ण बलदेव महाना	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

'वेदो में योग विद्या' नामक ग्रन्थ को 'दयानन्द पुरस्कार'

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा दिया जाने वाला 'दयानन्द पुरस्कार' इस वर्ष वेदों मे 'योग-विद्या' ग्रन्थ के रचयिता आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (डा०योगेन्द्र पुरुषार्थी) को दिया गया है। उन्हे ११०० रुपये की राशि से सम्मानित किया गया। इसी विषय पर स्वामी जी ने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से पी. एच डी की उपाधि प्राप्त की थी। यह ग्रन्थ शोध प्रबन्ध का सशोधित प्रकाशन है। दैनिक हिन्दुस्तान तथा आर्यजगत् आदि साहित्यिक पत्रिकाओ ने इसकी प्रशसा में विशेष समीक्षा की है। इस विषय का यह प्रथम प्रयास है, योग मे जिज्ञासा रखने वाले सज्जनों के लिए यह ग्रन्थ पठनीय है। उक्त ग्रन्थ यौगिक शोध सस्थान योगधाम ज्वालापुर हरिद्वार से प्रकाशित है। ऐसे विद्वान् को सम्मिलित कर सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने सराहनीय कार्य किया है।

सुमेधानन्द सरस्वती
प्रधान आर्यसमाज श्री गंगानगर
(राजस्थान)

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीनआर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं १२४१/५७ घोषणा पत्र सं० ७ / २८-२-८१

वर्ष ८९] मा०फाल्गुन ११,१८ फाल्गुन कृष्ण ६,१४, रविवार संवत् २०४२ वि०, दि०, २, ९ मार्च १९८६ [अङ्क ९-१०

प्रार्थना

ओं इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्ध-नीतिः प्र मायिनाममिनाद्वर्पणीतिः। अहन्व्यंसमुशधग्वने-ष्वाविर्धेना ऽ अकृणोद्राम्याणाम् ॥

—यजु ३३।२६

भावार्थ—बलिष्ठ नीतिवाला, विभिन्न रूपवती नीतिवाला, राष्ट्रपति,आक्रमणकारी शत्रुओं को युद्धार्थ स्वीकार करता है। और मायावियों को पीड़ित करता है। परधनकामना करने वालों का नाशक वह राजा फूट फैलानेवाले को मारता है तथा सम्मेलनों में रमण करने वाली प्रजाओं की वाणियों को बन्धनरहित करता है।

[ऋषि-बोध-अंक]

विश्व कल्याण के पुरोधा



महर्षि दयानन्द सरस्वती



धृतव्रतो, महाप्राणो, महात्मा, धर्मधूर्वहः,
पुरोधा युगधर्मस्य, ज्योतिःस्तम्भस तमोयुगे,
सस्कृते. प्रतिसस्कर्ता, ऽद्यतनार्याग्रणीर महान्
आर्यस्योद्धारपद्धत्या आद्यद्रष्टा कलौ युगे,
उच्छ्रयिता पताकां यान्वर्थां पाखण्डखण्डिनीम्,
दयानन्दो मुनिर् वन्द्यो भारतीयैर युगेयुगे।
हुतात्मानौ दयानन्द-श्रद्धानन्दौ तु विस्मृतौ,
श्रद्धिता राष्ट्रभङ्क्तारो, धिग् धिक् श्रद्धा-विपर्ययः ! ॥

—डा० हर्षनारायणः



प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ओ३म् आर्य मित्र



सम्पादकीय

लखनऊ-रविवार , २,९ मार्च १९८६, दयानन्दाब्द १६१
सृष्टिसम्वत १९७२९४९०८६

ऋषि बोध पर्व—

राष्ट्र बोध बेला—

भारतीय वैदिक संस्कृति में सूर्य एव प्रकाश के प्रति विशेष उल्लेख प्राप्त होता है जिसका प्रतीक अर्थ यह है कि जैसे गहन-तम निशीथि के अन्धकार को विदीर्ण करता हुआ सूर्य उषा की लालिमा बिखेरने के बाद अपनी सुनहली किरणें धरा पर विकीर्ण करता है और निद्रा मे लीन मानव पशु पक्षी सभी जागृत स्थिति मे आकर कर्तव्य एवं कर्म प्राङ्गण मे विचरने लगते हैं उसी प्रकार शिव पर्व जो कल्याण-परक है भारतीय सस्कृति मे आर्यावर्त की परम्परा मे जो विश्व के कल्याण चिन्तन के लिए एक पुनीत अवसर है। जब हम तमस से प्रकाश की ओर अभिमुख होते है। संयोग से इस शिव पर्व का सम्बन्ध मेधावी बालक मूलशङ्कुर से भी सयुक्त हो गया अत इसे ऋषिबोध पर्व संज्ञा दी गई। सम्प्रति ऋषिबोध पर्व के अवसर पर समस्त आर्य जनो को आत्म मथन करना चाहिए आत्म मन्थनसे कालुष्य तथा अमृत दोनो प्राप्त होते है। हमे अपने जीवन का जो अन्धकार एवं कालिमा पूर्ण पक्ष है उसे तिलाञ्जलि देना होगा तथा जो प्रभापूर्णपक्ष है उसे अभिग्रहीत करना होगा। इसके साथ ही राष्ट्र की दिशा को भी एक ऐसा पथ प्रदान करना है जो आज मनीषियों के लिए आवश्यक हो गया है जिससे राष्ट्र का तमस ज्योति मे परिवर्तित हो जाय।

भारतीय राष्ट्र आज समस्या ग्रस्त है। राष्ट्र के दोनों ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान और बगलादेश हमारे सच्चे सखा नहीं हैं उनकी राजनीति स्वार्थ से भरी हुई है और श्री लंका मे तमिल नर संहार भारत के लिए हितकर नहीं है। यह सब देश हमसे जो मैत्री की बात करते है वह भारत को छलावा मे रखने के लिए करते हैं उनकी आन्तरिक स्थितिया स्पष्ट नहीं हैं। भारत सरकार भी स्वीकार कर चुकी है कि पाकिस्तान मे भारत विरोधी सिखों को आश्रय दिया जाता है और खालिस्तान की माग के लिये उन्हे उकसाया जाता है। पञ्जाब मे भी अकाली सरकार बनने के बाद भी स्थिति मे कोइ परिवर्तन नहीं है। स्वर्ण मंदिर और पंजाब के कुछ गुरुद्वारो पर दमदमी टकसाल तथा उग्रवादियो का सशस्त्र अधिकार है जो मुख्यमन्त्री श्री सुरजीतसिंह बरनाला मे लेकर भारत सरकार तक को प्रकारान्तर से चुनौती दे रहे हैं। इसके साथ ही भारत के मुसलमान शरीयत और शाहबानो के प्रश्न लेकर भारत सरकार के विरोधी थे ही और अब बाबरी मस्जिद के प्रश्न के साथ काले झन्डे और काली पट्टियां बाँधकर भारत सरकार को ललकारने की ओर बढ़ रहे है यह ऐसी परिस्थितियां हैं जिन पर राष्ट्र को गम्भीरतासे विचार करना है।

लोकतन्त्र मे कोई राजनैतिक दल जो सत्तापक्ष मे होता है यद्यपि वह सरकार चलाता है परन्तु जब देश मे विद्रोही प्रवृत्तियां अधिक हो जाती हैं, देश दुर्बलता की ओर बढ़ने लगता है तो राष्ट्र के समस्त नागरिको का दायित्व हो जाता है कि वह राष्ट्र के हित के मार्ग के लिए विचार करे तथा सरकार को सक्रिय सहायता दें। आर्य समाज विगत सौ वर्षों से राष्ट्र को नवीन चेतना उचित मार्ग दर्शन दे रहा है। आर्यजन राष्ट्र-प्रेमी और राष्ट्रवादी हैं अत उन्हे स्वयं आगे बढ़कर राष्ट्र कैसे अन्धकार से प्रकाश की ओर आवे इस विषय पर विचार करना चाहिए और ऋषि बोध के पावन पर्व पर राष्ट्रबोध को भी समुचित दिशा प्रदान करें, ऐसा वातावरण प्रस्तुत होना आवश्यक है।

आचार्य रमेश चन्द्र एम ए
सम्पादक

वेद विद्या का महारथी

(श्री राजा रणञ्जय सिंह, भूपति भवन अमेठी
जनपद सुल्तानपुर (उ०प्र०) २२७४०)

ओ३म्

ईश्वर का भक्ति अनुरक्ति अति सत्यव्रति,
ब्रह्मचर्य शक्ति जिस व्यक्ति मे अपार थी।
दया की जो मूर्ति था आनन्द सुधा वर्षक था,
सारस्वती वाणी का जिसके अलङ्कार थी।
जिस परमहस मे राजहस से अधिक,
क्षीर नीर न्याय बुद्धि विविध प्रकार थी।
धन्य है 'रणञ्जय' वह त्यागी तपस्वी ऋषि,
स्वामी दयानन्द वेद विद्या का महारथी॥

महाशिवरात्रि और महर्षि दयानन्द

(आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री कुलपति, महर्षि दयानन्दाद गुरुकुल
कृष्णपुर पो० मन्झना, फर्रुखाबाद (उ० प्र०)

रात्रियां सभी है शिव, अशिव न होती कोई,
सृष्टि के नियम ध्रुव वेद यही आया है।
निशा बीच होय सृष्टि दिवस में पुष्टि पाती,
सूर्य है दिनेश, निशापति चन्द्र भाया है॥१॥
विचारो की सृष्टि हुई बाल मूलशङ्कर के,
चतुर्दशी फाल्गुन वदी को यश पाया है।
सत्यव्रत की पुष्टि विरजानन्द सूर्य ने की,
पूर्णानन्द मूल 'दयानन्द' नाम पाया है॥२॥
छाया हुआ देशमें था, जाल पाखण्डो का,
वेदो का प्रचार करू व्रत यही लाया है।
मिथ्या का खण्डन और सत्य का स्थापन किया,
विश्व भर में पुन 'ओ३म् ध्वज दृष्टि आया है॥३॥
स्वय पिया जहर, जग को अमृत पिलाया,
मुक्ति का सन्देश पुन दयानन्द लाया है।
विश्व के कल्याण हेतु सुदिव्य आत्मा जगी थी,
इसीलिए नाम 'महाशिव रात्रि' पाया है॥

अध्यात्म सुधा

वेद का मनन

[श्री इन्द्रराज जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश]

ओ३म सनो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥

—यजुर्वेद अ० ३२/मन्त्र १०

शब्दार्थ—हे मनुष्यो ! (यत्र) जिस (तृतीये) जीव और प्रकृति से विलक्षण (धामन्) आधाररूप जगदीश्वर में (अमृतम्) मोक्ष सुख को (आनशाना) प्राप्त होते हुए (देवाः) विद्वान् लोग (अध्यैरयन्त) सर्वत्र अपनी इच्छापूर्वक विचरते हैं जो (विश्वा) सब (भुवनानि) लोक लोकान्तरों और (धामानि) जन्म, स्थान नामों को (वेद) जानता है (स) वह परमात्मा (न) हमारा (बन्धु) भाई के तुल्य मान्य सहायक (जनिता) उत्पन्न करन हारा (स) वही (विधाता) सब पदार्थों और कर्म फलों का विधान करने वाला है, यह निश्चय करो। (स्वामी दयानन्द जी के यजुर्वेद भाषाभाष्य से)

विशेष—इस मन्त्र में भगवान् को तीन नामों से याद किया गया। संसार में व्यक्ति अकेला कुछ नहीं कर सकता। यदि किसी भी प्रकार का संकट आता है तो बिना किसी की सहायता के व्यक्ति का अस्तित्व स्थिर नहीं रह सकता। यदि उसे पता चल जाए कि वह सर्वशक्तिमान् भगवान् तेरा बन्धु है। भ्राता के समान तेरा सहायक है और केवल बन्धु ही नहीं है अपितु वह सारे संसार को उत्पन्न करने वाला भी है और वह केवल संसार को उत्पन्न ही नहीं करता अपितु विधाता भी है अर्थात् सब पदार्थों से हम कैसे लाभ उठा सकते है, यह भी हमें यथावत् निर्देश करता है साथ ही वह परम न्यायकारी होता हुआ हम किये हुये कर्मों का यथावत् फल प्रदाता है।

वह परमात्मा बन्धु, जनक तथा विधाता क्यों है? क्योंकि वह समस्त लोक लोकान्तरों और उनके नाम, स्थान और जन्मों को जानता है। वह न्यायकारी के साथ-साथ सर्वज्ञ भी है।

वह परमपिता परमात्मा आनन्द का धाम और मुक्ति का परमधाम है। विद्वान् लोग उसी आनन्द की उपासना से संसार से बिलकुल पृथक जीवात्मा से भी अत्यन्त विलक्षण उस जगदीश्वर में मोक्ष का आनन्द लेते हुए प्रकृति के बन्धन' में छूटकर सदैव सर्वत्र स्वेच्छा से विचरते हैं। ऐसा वह परात्पर ब्रह्म हमारा बन्धु है। केवल उसी का सहारा लेना चाहिए। कठोपनिषद् में कहा भी है—

एतदालम्बन श्रेष्ठ एतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बन ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥

—कठ० १-२-१७

संसार में समस्त जागतिक सहारों से इस परमात्मा का सहारा सर्व श्रेष्ठ और परम सहारा है। सांसारिक सहारे तो साथ छोड़ देते हैं परन्तु वह कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ता क्योंकि वह हमारा बन्धु है।

हम उपासकों को तो केवलमात्र उस सच्चे बन्धु को ही उपासना करनी चाहिये अन्य अस्थिर सम्बन्धियों की नहीं।

इसी मन्त्र का भावार्थ महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज वेद भाष्य में इस प्रकार लिखते हैं—

हे मनुष्यो ! जिस शुद्ध स्वरूप परमात्मा में योगीराज विद्वान् लोग मुक्ति सुख को प्राप्त हो आनन्द करते हैं, उसी को सर्वज्ञ, सर्वोत्पादक सर्वदा सहायकार मानना चाहिये अन्य को नहीं।

महर्षि के शब्दों में वह अनन्त कोटि लोक लोकान्तरों को अपनी सहज शक्ति से धारण करने वाला सर्वजनक, सर्वोत्पादक, सर्वज्ञ, सर्वत्र विराजमान, आनन्द स्वरूप परमालम्बन, सबका एकमात्र आश्रय, और अपनी समस्त शक्तियों से यथार्थ बन्धु के समान एकमात्र आनन्द भावना और परम श्रद्धा से उपास्य है। उसी की तल्लीनता से स्वेच्छा पूर्वक सर्वत्र विचरने रूप परम मुक्ति की उपलब्धि होती है।

पं० बिहारीलाल शास्त्री के प्रति—

श्रद्धा दशति

(श्री शिवकुमार शास्त्री महोपदेशक आ० प्र० सभा, उत्तरप्रदेश)

(१)
निशम्य गर्जनां यस्यमृगेन्द्रस्य भयान्विता।
हित्वा शास्त्रार्थ कान्तार प्रति वादिमृगा गता ॥
(२)
सगतोऽद्य दिवं देवास्त्यक्त्वाऽस्मान् शोक सकुलाम्।
आर्य सामाजिकान् सर्वान् विलाप्य कुल मानसान् ॥
(३)
गता बिहारीलालोन दिवं देवोपमो बुध।
समाजोपवनस्याद्य बसन्तो उन्त समागत. ॥
(४)
गत सुमनसा, सार्धं तेन सद् रामणीयकम्।
आमोदश्च प्रमोदश्च पल्लवानां च नर्तनम् ॥
(५)
क करिष्यति हा हाऽद्य सारसिवर्तं स्व भाषणे।
आर्य सामाजिकान् सर्वान्, उत्सवेषु समागतान् ॥
(६)
ईर्ष्या द्वेष लवोन्मुक्त पूत हासेन सयुत.।
परिहासो विशुद्ध स, क्वाधुना हन्त लप्स्यते ॥
(७)
गृहस्यस्यापि तस्यासीत् सन्ध्या सिप्रवरस्य किम्।
वेद धर्म प्रचारस्य काममातोऽप्यकामना ॥
(८)
जीवनेयस्य सारल्य नैर्मल्य हृदि, मानसे।
समस्त भूत कल्याण शाकल्योऽभूत् प्रतिष्ठित ॥
(९)
जयति बिहारीलालोयद् गुण गण वर्णनेनालम्।
मादृशलघुजन वाणी स्थिरयशोयस्य कल्पान्तम् ॥
(१०)
वयं त्वां स्मरामो दिव देवयातम्,
प्रयाता समे तत्र त्वां यत्र यात.।
ततोऽप्यत्र शिव देहि पावान तेभ्य,
जनेभ्यो निजेभ्यो ऽतिशोका कुलेभ्य. ॥

राम जन्म भूमि की राम-कहानी इतिहास की जबानी

–शिवसिंह 'सरोज'

राम जन्म भूमि अयोध्या का ताला खुल जाने के बाद भारत देश मे मुसलमानों ने विरोध प्रकट किया और अशोभनीय घटनायें हुई। प्रस्तुत लेख सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री शिवसिंह सरोज के द्वारा जन्म भूमि इतिहास पर प्रकाश डाला गया है। बाबर के समय लिखी पुस्तक तुजक बाबरी में भी उल्लेख है कि मन्दिर पर मस्जिद खड़ी करने का कार्य हुआ।

–सम्पादक

अयोध्या स्थित श्री राम जन्म-स्थल भारत की आस्था विश्वास का केन्द्र और भावनात्मक एकता का चरम पावन स्रोत रहा है।

गजेटियर के अनुसार यहाँ अयोध्या का सबसे आकर्षक गगन चुंबी मन्दिर था जिसे सम्राट विक्रमादित्य ने बनवाया था, जिसके अवशेष आज भी विद्यमान हैं।

पौराणिक परम्परा के अनुसार विक्रमादित्य से पूर्व राम जन्मभूमि के विशाल मन्दिर का निर्माण इक्ष्वाकु वंशीय महाराज मांधाता ने कराया था, जिसके अवशेष को ही आधार बना सम्राट विक्रमादित्य ने यहाँ विशाल मन्दिर स्थापित कर अयोध्या की पुनर्प्रतिष्ठा की।

इस मन्दिर के स्तम्भों मे कसौटी वाले पत्थर का प्रयोग किया गया जिन पर हिन्दूशैली की कारीगरी आज भी उन अवशेषो पर देखी जा सकती है जो तथाकथित मस्जिद मे लगे हुए हैं।

गजेटियर' के ही अनुसार वर्ष १५२८ ई० मे बाबर जब बिहार जा रहा था तो एक सप्ताह अयोध्या मे ठहर गया। अयोध्या के इतिहास मे भी इसका उल्लेख है। इस इतिहास के अनुसार कुछ साम्प्रदायिक मुल्लाओ ने देहली आकर बाबर पर दबाव डाला कि वह श्री राम जन्म भूमि के विशाल मन्दिर को ढहाकर वहाँ पर मस्जिद बना दें। बाबर इसके लिए तैयार न हुआ और इसे इस्लाम धर्म के प्रतिकूल बताया जिसमे बिना अनुमति किसी दूसरे की भूमि पर मस्जिद बनाने की आज्ञा नही दी गई है। मुल्लाओं ने बाबर के विरुद्ध फतवा निकालने की धमकी दी तब मुगल सम्राट ने स्वयं अयोध्या आकर परिस्थिति के पर्यवेक्षण के बाद निर्णय लेने को कह कर कुछ दिनों के लिये इस विषय को टाल दिया।

बाबर जब अयोध्या आया तो साम्प्रदायिक और संकुचित तत्वों द्वारा उसे फिर बरगलाने की कोशिश की गई और बताया गया कि भारत के शासको और जनता की मूल शक्ति श्री राम जन्म भूमि से ही प्रेरित है जो वास्तव में सिद्ध स्थली है। अतएव जब तक इसे ध्वस्त नहीं किया जाता—मुगल साम्राज्य की जडे यहा नहीं जमाई जा सकती हैं। अन्ततः बाबर इस मन्दिर को गिराकर यहा मस्जिद बनाने पर मजबूर हो खुद बिहार की ओर रवाना हो गया। इसी समय विक्रमादित्य द्वारा निर्मित मन्दिर को ध्वस्त करके यहां उसी की दीवारों पर मस्जिद खडी की गई जिसे बाबरी मस्जिद कहा जाने लगा। हम ऊपर लिख चुके हैं कि इस मस्जिद मे लगे कसौटी के स्तम्भों मे हिन्दू शैली में बने कमनीयता के प्रतीक आज भी देखे जा सकते हैं।

मस्जिद बन जाने के बाद भी पूजा और दर्शन के लिए हिन्दू उसके परिसर में जाते रहे। वर्ष १८८५ मे भयंकर साम्प्रदायिक दंगे के बाद अल्पसंख्यक समुदाय ने राम जन्मभूमि पर एकाधिकार कर लिया। इसी समय हनुमानगढ़ी पर भी साम्प्रदायिक तत्वों ने हमला किया लेकिन वहा से वे खदेड दिये गए।

गजेटियर के ही अनुसार अवध के नवाबों ने जब अपनी फौज को अयोध्या पर चढ़ाई करने की अनुमति नहीं दी तो बाबर की ही भाँति उन पर भी साम्प्रदायिक तत्वों ने दबाव डाला। फिर भी जब वे हनुमान गढ़ी गिराने को तैयार न हुए तो अमेठी के मौलवी अमीर अली ने अपनी खुद की फौज बनाकर अयोध्या के लिए कूच कर दिया। यह फौज जब बाराबंकी जिले मे स्थित कल्याणी नदी के तट पर बसे आज के रामसनेही घाट कस्बे के समीप पहुंची तो सिद्ध प्रसिद्ध बाबा रामसनेही ने अपनी बलि चढ़ा मौलवी के मनोरथ को असफल कर दिया और यहीं से उसकी फौज भाग खड़ी हुई। इन्हीं संत के नाम पर कस्बे का नाम रामसनेही घाट रखा गया। बाबा रामसनेही की समाधि पर प्रति वर्ष मेला लगता है।

इस घटना के बाद ही नवाब सआदत अली ने हनुमानगढ़ी की प्रतिष्ठा बढ़ाने और आकस्मिक आक्रमणों से सुरक्षित करने के लिए अपनी हिन्दू प्रजा को प्रोत्साहित करने के लिए गढ़ी के किले मे दो तोपें भी लगवा दीं जो आज भी वहां देखी जा सकती हैं। लाला सीताराम बी०ए० द्वारा लिखित अयोध्या के इतिहास के अनुसार नवाबों को अयोध्या के हमले पर न राजी किये जाने पर एक मुस्लिम काजी खुद मुख्तियार होकर फतवा और फरमान जारी करने लगा। अपनी टकसाल भी चला दी। अन्ततः मुस्लिम शासन द्वारा ही काजी गिरफ्तार किया गया। इसी भांति नवाबी फौज ने हनुमानगढ़ी पर हमला करने के बजाय उसकी रक्षा भी की।

बाबरी मस्जिद हटाने का प्रयास

गजेटियर के ही अनुसार अंग्रेजो के विरुद्ध जब भारतीयो में प्रखर राष्ट्रीयता की लहर उठी तो दिल्ली के अन्तिम मुस्लिम सम्राट बहादुर शाह और अवध के नवाबों द्वारा राम जन्म-स्थल को मुक्त कर बाबरी मस्जिद को उससे दूर अलग बनाने का प्रयास प्रारम्भ हुआ।

इस सतकार्य मे एक उदारचेता तथा राष्ट्रीय वृत्ति के राजा अमीर अली, राजा देवीबख्शसिंह, राजा अयोध्या एवं महंत रामशरणदास ने पूरा योग दिया। समझौता होने ही वाला था कि अंग्रेजों ने आड लगा दी। उक्त राष्ट्रीय नेताओं मे कुछ को फांसी पर लटका दिया, कुछ को कुचल दिया गया। कर्नल मार्टिन, होप ग्रांट और हैवलाक के षड्यन्त्र हुए। राम जन्म भूमि का विवाद फिर ज्यों का त्यों बना रहा। नवाबी का शासन शिथिल हो चुका था इसलिये साम्प्रदायिक तत्वों पर उसकी पकड़ भी ढीली हो गई थी। वे अंग्रेजों के इशारे पर खुल कर खेलने लगे और रामजन्म भूमि पर कब्जा जमाने और हनुमानगढ़ी को भी ध्वस्त करने के लिए मुसलमानों को उकसाने लगे। अमेठी के मौलवी अमीर अली और अयोध्या के कथित काजी के उदाहरण इसके प्रमाण हैं।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

ऋृषि बोध पर्व मंगल मय हो—

—आर्य समाज विगत सौ वर्षो से समाज सेवा और विश्व मानव के कल्याण मे निहित एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का संगठन है। महर्षि दयानन्द के पहले जब वह बालक मूल शंकर थे प्रभु की प्रेरणा से उनके मानस मे एक शिवरात्रि की शुभ बेला मे जैसे अन्धकार की गहनता मे विद्युत की रेखा प्रकाश फैला देती है वैसे ही परिवार जनो की शिव साधना की लीन बेला मे उस मेधावी बालक के मस्तिष्क मे एक प्रकाश रेखा चमक उठी और वह 'सत्यशिव' के परिशोध के कार्य मे लग गया। वह महिमा मयी बेला क्रांति वाहिनी भारत के लिये एक दिशा बन गई और आर्य समाज का सौ वर्ष का इतिहास उसी भारतीय क्रांति का गौरव मयी इतिहास बन गया जिसमे सच्चे अध्यात्म का प्रसार हुआ, नैतिक पुनरुत्थान हुआ, वेदो की महिमा व्याप्त हुई और पराधीन राष्ट्र स्वतन्त्र हुआ। परन्तु स्वतन्त्रता के बाद हम देश मे जैसा पुनर्जागरण और जैसी जनक्रांति चाहते थे वैसी नहीं हो पाई। आज आर्य समाज के सामने जो सबसे बड़ा कार्य है वह सारे देश मे आर्यत्व की भावना के प्रचार एवं प्रसार का महत्तम कार्य है और इसी हेतु शिवपर्व पर हम शुभ संकल्पो की प्रतिज्ञा करते हैं।



श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान सभा

अपने उपरोक्त उद्देश्यो की पूर्ति के लिये हम संकल्प व्रती हैं तथा आर्य प्रतिनिधि सभा की जो शताब्दि समारोह १५ मई से १८ मई १९८६ के मध्य लखनऊ मे सम्पन्न होने जा रही है उसमे इन्हीं आयोजनो पर हमे विचार करना तथा क्रियान्वन करना है। समस्त आर्य जन हमारी योजना मे सभागी बनें और इसे सफल करने के लिए हमारी सहायता करें।

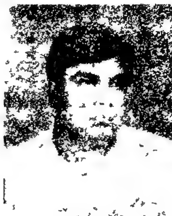
इन्द्रराज प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

—आर्य समाज उसाड (सहापुर) का वार्षिकोत्सव दि० २१ से २३ मार्च ११८६ तक हर्ष एवं उल्लास के साथ सम्पन्न होगा।

मन्त्री

कल्याण पर्व ऋृषि बोध

—फाल्गुनी मादक बयार के झोंकों के बीच जब प्रकृति पर वासन्ती प्रभा अपना प्रभाव डालना प्रारम्भ करती है, खेतो में पीत सरसों लहलहाने लगते है, आम्र वृक्षों पर वासन्ती बौर की प्रभा छा जाती है और कृषि प्रधान देश भारत के कृषकों का श्रमशिवत्व शस्य श्यामलाओं के अंकुरों मे फूट उठता है उसी मध्य अर्द्ध फाल्गुन मे 'शिवरात्रि' महा पर्व आयोजित होता है, जब राष्ट्र के कल्याण हेतु हम सबका स्वर एक हो जाता है। इस कल्याण मय बेला मे आर्य समाज का भी सन्देश निहित है क्योंकि परम वीतराग तपस्वी महर्षि दयानन्द के जीवन मे 'शिवरात्रि' बोध पर्व है और इतना ही नहीं आज समस्त आर्य जगत स्वप्न से जागृति की ओर बढ़ने का प्रयास करता है।



श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री सभा

विगत सौ वर्षों मे वेद प्रचार, रूढ़िवादिता, महिला उद्धार और शिक्षा क्षेत्र मे आर्य समाज की सेवायें सराहनीय हैं। मुझे गौरव है कि आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं के संचालन का भार आर्य समाज के एक सेवक के नाते मुझे निभाना पड़ रहा है परन्तु अब प्रदेशीय सरकारो और केन्द्रीय सरकारों की कुछ ऐसी शिक्षा नीतियां हैं जिनके अन्तर्गत हम आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओ को महर्षि दयानन्द के आदर्शों के अनुरूप संचालन करने मे असमर्थ है क्योंकि राजकीय हस्तक्षेप हमारे कार्य मे व्यवधान बनते हैं। अत इस ऋषि बोध पर्व पर जहां मै समस्त देश के नरनारियो का सादर अभिनन्दन करता हू वहीं सबसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० जो आगामी मई माह के मध्य मे शताब्दी समारोह मना रही है उसमे एक वृहत आर्य शिक्षा सम्मेलन का भी आयोजन होगा जिसमे प्रान्त व आर्यजगतके उच्च शिक्षा विद सम्मलित होंगे और हमे स्पष्ट योजना बनानी पड़ेगी तथा प्रशासन से साफ कहना पड़ेगा कि आर्यसमाज से सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं पर प्रशासन का हस्तक्षेप हमे अधिक सहन नहीं है क्योंकि हमारा जो संकल्प है उस पर व्याघात आता है। हम पहले ऋषि के अनुयायी है फिर सरकार के।

एक बार ऋषि बोध के पावन पर्व पर समस्त आर्य जनो का अभिवादन करते हुए विनम्र अपील है कि हमारे शताब्दी समारोह के संकल्पों को पूर्ण करने हेतु अपना उदार सहयोग प्रदान करें।

मनमोहन तिवारी मन्त्री सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

"महर्षि दयानन्दाभिमत धर्म और राजनीति"

(आचार्य डा० सुरेन्द्रदेव जी स्नातक, शास्त्री, एम० ए० पी-एच० डी० अध्यक्ष संस्कृत-विभाग, भोगांव (मैनपुरी)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर जब हमारे भारतवर्ष का नवीन संविधान बनाया गया तो उसमे वर्तमान राज्य को 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' की संज्ञा दी गई। अर्थात् जिस राज्य का किसी विशिष्ट-धर्म के साथ कोई लगाव न हो, जो सभी धर्मों को आदर की दृष्टि से तो देखता हो किन्तु उस राज्य का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो। अथवा दूसरे शब्दों मे यों कहा जाय कि जिस राज्य की राजनीति मे धर्म का कोई स्थान न हो।

किन्तु ऋषियों द्वारा प्रणीत धर्म तथा राजनीति की परिभाषाओं से यह सिद्ध होता है कि धर्म और राजनीति का बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। धर्म को राजनीति से किसी भी दशा में पृथक किया जा सकना सम्भव नहीं है। ऋषियो द्वारा निम्न लिखित परिभाषाए दी गई हैं—

"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः सधर्मः" (वैशेषिक दर्शन)

अर्थात् जिससे इस लोक में अभ्युदय तथा परलोक मे निःश्रेयस अर्थात् कष्टो से छुटकारा (दूसरे शब्दो में इसी का नाम है 'मोक्ष') प्राप्त किया जाय उसी का नाम धर्म है। इसी को दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार कह सकते हैं कि जिन नियमों अथवा सिद्धान्तो के आधार पर इस लोक मे अथवा परलोक मे सुख तथा आनन्द की उपलब्धि हो उसी का नाम है 'धर्म'। महाभारत में भी धर्म का लक्षण करते हुए लिखा गया है—

"धारणाद्धर्ममित्याहुर्धर्मो धारयते प्रजा।"

जिसको धारण किया जाय उसी का नाम है 'धर्म'। सम्पूर्ण प्रजा द्वारा जिसको धारण अथवा स्वीकार किया जाय अथवा जिन नियमो और सिद्धान्तों के द्वारा समस्त विश्व को एक सूत्र मे बाधा जा सके उसी का नाम है 'धर्म'।

ऋषि दयानन्द ने धर्म के उपर्युक्त लक्षणों को स्वीकार करते हुये यह स्पष्ट किया है कि धर्म को राजनीति से पृथक किया जा सकना किसी भी दशा मे सम्भव नहीं है। राजनीतिज्ञो द्वारा राजनीति के जिन सिद्धान्तों को धारण अथवा स्वीकार किया जाया करता है, वे सिद्धांत भी स्वयं धर्म हैं। राजधर्म को किसी भी दशा मे धर्म से व्यतिरिक्त नहीं किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास मे इन्हीं राजधर्मों का विशद वर्णन प्रस्तुत किया है। उनका कथन है कि धर्म और राजनीति परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। विना धर्म के हम एक पग भी आगे नहीं चल सकते हैं। राजनीति का आधार तो धर्म ही है। इन्हीं शाश्वत सिद्धान्तों को आधार मानकर ही राजनीति सम्बन्धी नियमो एव सिद्धान्तों का निर्माण किया जाया करता है।

धर्म के उपर्युक्त लक्षण के आधार पर ही मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति आदि धर्म शास्त्रों मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास इन चारों आश्रमों के कर्त्तव्य कर्मों का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। इन्हीं के अन्तर्गत सम्पूर्ण सामाजिक तथा राजनीतिक नियमों तथा सिद्धान्तों का उल्लेख प्राप्त होता है।

हमारी सम्पूर्ण प्राचीन परम्परा ही इस बात की द्योतक है कि उस से सामाजिक अथवा धार्मिक और राजनीतिक अङ्गों को पृथक किया जा सकना सम्भव ही नहीं है। दोनों एक दूसरे के अपेक्षित हैं। बिना धर्म के हम राजनीति के किसी सिद्धान्त पर चल ही नहीं सकते हैं। धर्म को आधार मानकर ही हम अपनी जीवनचर्या को सुव्यवस्थित रख सकते हैं।

वास्तविकता तो यह है कि हमारे नेता पाश्चात्य सभ्यता मे दीक्षित हैं तथा वे भारतीय प्राचीन ग्रन्थो तथा संस्कृति से प्रायः अनभिज्ञ हैं। इसी कारण उन्होंने हमारे संविधान का निर्माण पाश्चात्य देशों (अमेरिका, इगलैण्ड आदि) के संविधानों को आधार मानकर किया है।

अंग्रेज शासक यह भलीभांति जानते थे कि यदि हम भारत मे सफलतापूर्वक राज्य करना चाहते हैं तो हमे भारत के ही राजनीति सम्बन्धी प्राचीन धर्म शास्त्रों का अध्ययन कर उन्हीं के आधार पर भारत के संविधान को बनाना होगा। और उन्होंने किया भी वैसा ही। इसी कारण वे सफलतापूर्वक सैकडो वर्षों तक भारत को अपने आधीन रख सके।

पाश्चात्य देशों में केवल सुख की प्राप्ति ही जीवन का प्रधान लक्ष्य माना गया है। अतएव इस सुख की प्राप्ति हेतु एक विशिष्ट प्रार्थना पद्धति को ही 'धर्म' माना जाता है किन्तु हमारा वैदिक धर्म तो इतना संकुचित नहीं है। इसमे तो इस लोक से सम्बन्धित अभ्युदय को तथा परलोक सम्बन्धी आनन्द की उपलब्धि की प्राप्ति के कारण भूत धर्म को ही प्रधानता दी गई है। इसी की प्राप्ति हेतु चारो वर्णों और चारों आश्रमों की व्यवस्था को निर्धारित किया है।

ऋषिवर दयानन्द ने स्वरचित ग्रन्थों मे इस धर्म की अतिविशद व्याख्या की है। इनके द्वारा जो कार्य किया गया है वह मानवमात्र के लिए हितकारक तथा मानव-जीवन के लक्ष्य की पूर्ति का साधक है। उन्होंने स्थान-स्थान पर जिस धर्म के पालन करने की शिक्षा दी है वह कोई उनकी वस्तु नहीं है। उन्होंने बतलाया है कि परब्रह्म परमात्मा ने जिस वैदिक ज्ञान को चारों वेदों के रूप मे प्रदान किया है वह मानवमात्र के लिये समान है, वह किसी देश विशेष की वस्तु नहीं है। परमात्मा की दृष्टि मे सभी मानव समान हैं। अतएव उनके द्वारा दिये गये ज्ञान का अध्ययन कर उसका मनन एव चिन्तन कर मानव अपने लक्ष्यीभूत उद्देश्य की पूर्ति सरलतापूर्वक कर सकता है।

आज समस्त विश्व मे जो हाहाकार मचा हुआ है, अशान्ति का वातावरण फैला हुआ है उसको दूर करने का कोई मानवीय साधन नहीं है। हम विज्ञान में कितने ही आगे बढ़ जांय, उससे कभी भी सुख और शांति की उपलब्धि नहीं की जा सकती है। वह सब तो हमे विनाश की ही ओर ले जाने वाला है। हां, राजनीतिक दृष्टि से हम उसका प्रयोग कर आधुनिक भौतिक युग मे आगे अवश्य बढ़ सकते हैं किन्तु सुख और शांति की प्राप्ति उससे कभी भी न हो सकेगी। अतएव हमे राजनीति के साथ धर्म का संयोग अवश्य करना होगा, साथ ही इस भावना को भी हृदय से निकाल देना होगा कि राजनीति से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है। राजनीति के साथ धर्म का संयोग हो जाने पर प्रत्येक राजनीतिज्ञ को धार्मिक सिद्धान्तों का पालन भी करना होगा। इस प्रकार की स्थिति के उत्पन्न हो जाने पर हम मानव जीवन के चरम लक्ष्य तक पहुच कर अपने जीवन को सफल, समृद्ध एवं सुख और शांति का प्रापक बना सकेंगे।

ऋषि दयानन्दाय तस्मै नमः

(श्रीमती सावित्री देवी शर्मा एम० ए० वेदाचार्या
१०, केलाबाग 'सावित्री सदन' बरेली उ० प्र०)

टङ्कारेति सदासमृद्धि बहुले मोर्वीप्रदेशस्थिते ।
ग्रामे शास्त्रपुराणपाठ कुशलं. सुब्राह्मणं सेविते ॥
श्रीकृष्णाख्य द्विजगृह स्वजनुषां यो वै समालोकयत् ।
मानार्हाय मनस्विने मुनिदयानन्दाय तस्मै नम ॥

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व पटल पर छाई हुई विविध विकृतियों के सुधारक के रूप मे इस शस्यश्यामला भारतभूमि पर अवतीर्ण हुए । अलकनन्दा के तट पर खडे होकर उस ऋषि ने अपने ज्योतिमय नयनों से जिधर देखा उधर अन्धकारमयी तमिस्रा ही दीखी । आध्यात्मिक, शास्त्रीय, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, पारिवारिक एव आर्थिक सभी दुरन्त समस्यायें किसी मन्त्रार्थ द्रष्टा दार्शनिक का समाधान मांग रही थी । महर्षि ने वस्तुत सत्यार्थ प्रकाशक वेदचतुष्टय को ही अपना परम आधार मानकर कुशल वैद्य के समान सभी रोगों का निदान एव सफल चिकित्सा प्रारम्भ की जिनका क्रमश विवरण निम्नांकित है—

१— आध्यात्मिक—

आध्यात्मिक क्षेत्रमे विभिन्नवादों मे दार्शनिक उलझे हुये थे । अद्वैतवाद द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद जैसे विषयों के साम्प्रदायिक खण्डन-मण्डन मे ही अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर रहे थे । ऋषिवर ने ईश्वर-जीव-प्रकृति रूप मे तीन अनादि सत्ताओ की तर्कसंगत समीक्षा प्रस्तुत कर त्रैतवाद का उदघोष किया । सर्वव्यापक - सर्वान्तर्यामी सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा जगत्पति है । अनन्त जीवों के कल्याणार्थ उसने इस दृश्यमान जगत की रचना की । ससार की अनेक भाषाओं के कारण उस प्रभु के नाम भिन्न २ हो सकते है किन्तु सकल विश्व की नियामक शक्ति एक परमेश्वर ही है । हम सभी आत्मायें उसकी अमृत सन्तानें हैं । प्रकृति हमारी जगदम्बा माता तथा परमात्मा सबका पिता है । अत साम्प्रदायिक सघर्षों का कोई औचित्य प्रतीत नहीं होता ।

२— शास्त्रीय—

(१) ऋषि दयानन्द के अवतरण से पूर्व भारतीय दर्शनो मे अन्तर्निहित एकरूपता को न समझ कर दार्शनिक इन्हें अलग अलग साम्प्रदायिक ग्रन्थ समझते थे । ऋषि ने इन षडदर्शनों को वेदार्थ ज्ञान का आधार बताकर विद्वानों के समक्ष इनका समन्वितरूप प्रस्तुत किया । अवरुद्ध मार्ग खुला । पौरस्त्य एवं पाश्चात्य विद्वानों ने इस दृष्टि से दर्शनों के स्वाध्याय से वैदिक ज्ञान के गाम्भीर्य को समझने की चेष्टा की ।

(२) सूत्रग्रन्थों के आधार पर चलने वाली पुरातन वेदभाष्य प्रणाली को नई दिशा देते हुये महर्षि ने मन्त्रार्थ बोध के लिये यास्क प्रणीत नैरुक्त प्रक्रिया का अवलम्बन किया जिससे वेद के विलक्षण प्रतीकार्थों द्वारा विभ्रान्त विचारकों की अन्तर्दृष्टि खुली । विदेशियों द्वारा गड़रियों के गीत कहे जाने वाले वेद आज सार्वभौम विश्व-संस्कृति के प्राण स्वरूप प्रतीत हुये । ऋषि दयानन्द की उद्बोधन शैली का यह लोकोत्तर प्रभाव था । साथ ही ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त आर्ष परम्परा से परिपुष्ट भाष्य का आदर्श भी ऋग्वेद यजुर्वेद भाष्यों में प्रकट किया ।

३— सामाजिक—

अनेक सामाजिक कुरीतियों के प्रचलन से देश की अन्त स्थिति बिगड चुकी थी । वर्ण संघर्ष विकराल रूप से मानवता को जर्जर बना रहा था । वर्णाश्रम व्यवस्था के मौलिक चिन्तन से इन सभी (बाल विवाह-वृद्धविवाह-अस्पृश्यता-नारी जाति में अशिक्षा) समस्याओं का तात्त्विक समाधान प्रकाशित किया । आज की अशिक्षिता नारी में उन्हें गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, भारती, विद्योत्तमा, सीता, सावित्री जैसी विदुषी देवियों के दर्शन हुये । उनकी दृष्टि मे सम्मानित मातृशक्ति ही विश्व में स्वर्गीय साम्राज्य की संस्थापिका है । परिणामत आज, भारत के कोने कोने में कन्या गुरुकुलों की स्थापना हुई । असंख्य देवियाँ वेद शास्त्रों में पारङ्गत होकर सारस्वत वैभव की अधिकारिणी बनीं । यह था ऋषि कृपा का प्रसाद ।

४—राजनैतिक—

विदेशी शासको के पारतन्त्र्य से मुक्त स्वतन्त्र भारत की कल्पना को साकार करने के लिये ऋषि ने सर्व प्रथम 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया । प्रजा पर पुत्रवत कृपा दृष्टि रखने वाला, निष्पक्ष, न्यायप्रिय होने पर भी विदेशी राजा स्वदेश के लिये कभी हितकारी नहीं हो सकता । अपने देश में अपना ही राजा हो । सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में वेदानुमोदित राजनैतिक व्यवस्था एवं वैदिक सविधान पर प्रकाश डाला है ।

५— आर्थिक—

अपने देश की आर्थिक विपन्नता को देखकर महर्षि का वीतराग हृदय भी द्रवित हो उठा । देश को पूर्ववत् समृद्धशाली बनाने के लिये 'गोकरुणानिधि' नामक पुस्तक लिखकर ससार के अर्थशास्त्रियों को चुनौती दी । गोरक्षा द्वारा कृषिउत्पादनमें अभिवृद्धि होने से ही दरिद्रता का समूलनाश सम्भव है । इस प्रयोजन के लिये अनेक स्थानो पर गोकृष्यादिरक्षिणी सभाओ का भी निर्माण किया ।

६- धार्मिक—

इस धराधाम पर महर्षि के शुभागमन से पूर्व धर्म शब्द मत, सम्प्रदाय या मजहब का पर्यायवाची समझा जाता था । अत हमारा धर्म धर्मग्रन्थ, धर्मस्थान, धार्मिक महापुरुष सभी बंटे हुए थे । धर्म के नाम पर क्षुद्राशय मनुष्यो मे पारस्परिक कलह क्लेशों को देखकर देवदयानन्द ने वैदिक धर्म का डका बजाया । इस सदाचारमय धर्मचक्र के प्रवर्तनार्थ विश्व के श्रेष्ठ पुरुषों को एकता के सूत्र के आबद्ध होने के लिये सादर आवाहन किया ।

७- पारिवारिक—

पारिवारिक संगठन को विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्राथमिक विद्यालय मानकर गुरुवर दयानन्द ने आश्रमों मे श्रेष्ठ गृहस्थाश्रम के लिये सुनियोजित आचार सहिता बनाई । फलस्वरूप इन्हीं सभ्य परिवारो मे प्रशिक्षित कितने ही देशभक्तों (लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, स्वामीश्रद्धानन्द, सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल इत्यादि) ने देशहित मे अपना तन मन धन समर्पित किया ।

अत. हम कह सकते हैं कि सत्य सनातन वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द ने आजीवन देश की विकट परिस्थितियों में संघर्षरत रहकर सार्वजनीन

(शेष पृष्ट ८ पर)

बोध-रात्रि

नकल को देखकर असल की खोज करे,
अमल को देख कभी नकल को करेना !
नकल करे है, वह असल को जाना नहीं,
नकल का कोई कभी ध्याम भी न धरेना ॥
नकल को देखी मूल सन्देह रहा है अति,
असल की खोज हेतु, चले वन डरेना ।
खोज किया गिरि-वन, मठ और मन्दिरो मे,
मिला न असल शिव, काम कुछ सरेना ।
ऐसा ही था काल और कराल पोल पाखण्ड का,
वेदों का अभाव-भाव रखे थे पाहनपे ।
मन्दिरों की भरमार, मन्दिर बनाते सब,
मन्दिर सजा के देव, बिठाते वाहनपे ॥
मूलशङ्कर गये थे शिव जाम मन्दिर में,
शिव की प्रतिमा देख, लगे थे गाहनपे ॥
शिव-शिव बंब-बब बोले पिता साथ मूल,
मूल, के यही था भाव, दर्शन की चाहनपे ॥
भोग भी लगाया पूजा, पाठ किया प्रेमयुत,
सभी मिल स्तुति की थी, विधि ध्यान से ।
शिव-शिव ध्यान किया, 'मूल' पास देख रहा,
आयेंगे वो आज शिव, देखे हम मान से ॥
देखते ही रहे मूल, आया नहीं गया मोह,
आते चूहा खाते दौड़, प्रसाद को पानसे ।
अफसोस रहा मन, मूल को सन्देह हुआ,
शिव कैसा ? आया नहीं, गाया गुन गानसे ।
जैसे मिले वैसे किये, अनुष्ठान साधनसो,
शिव की है प्राप्त हेतु, यत्न कई किये थे ।
विवेक-वैराग रहा, शिव मिलने को सब–
जग सुख मान तुच्छ सभी छोड दिये थे ॥
शिव-शिव करे जग, शिव का न पता लगा,
पाहन की प्रतिमा को, शिव मान लिये थे ॥
शांति न मिली मूलशङ्कर को पश्चाताप,
तितिक्षा सही कई बार जहर पिये थे ॥
पढ़े थे अनेक ग्रन्थ शिव देखने के लिए,
अहर्निश शिव ही की, खोज की तलास में ।
कहां ? शिव कहां? बसे, कहां है समाधी लगी,
कहां ? है निवास खास, घूमते उदास मे ॥
पता भी लगाया कई, पूछते सन्यासियो को,
गये थे सिद्धोंके गिरि-गुहा के निवास मे ॥
'घनसार' रहे असमंजस मे अष्ट पहर,
बताते अनेक, शिव रहत है कैलाश मे ॥
सन्देह न गया कई युगतिए लगाय रखी,
किसी ने बताया, मथुरा में दण्डी रहते ।
गया दयानन्द पास, द्वार खड़खाय बोले–
असीम लगन रही तितिक्षा को सहते ॥
अन्दर से आई बाज कौन ? है ये शब्द सुना,
'पूछने को यही आया' यही बात कहते ॥
'घनसार' रहे ऋषी विरजानद गुरु पास,
भ्रम को भगाया पाया, सत्य शिव चहते ॥

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार' कवि कुटीर पीपाडशहर (राज०)

बोध दिवस पर ऋषि को प्रणाम

(रचयिता सरस्वती गोयल १८० साकेत मेरठ)

उठी लेखनी आज फिर, करके ऋषि को प्रणाम,
ऋषि दयानन्द के बोध दिवस पर, करती कुछ गुणगान ।
शिवरात्री का ही वह दिन था, मूलशकर जी ने व्रत किया,
दिन भर भूखे प्यासे रह कर, मन में शिव सकल्प लिया ।
शिव मन्दिर पिता के संग गये, भक्तिभाव मन में लेकर,
पूर्ण निष्ठा और श्रद्धा भाव से, विधिपूर्वक शिव पूजन किया ।
गहन रात्रि जब घिर आई, सब भक्त निद्रा मग्न हुए,
किन्तु व्रत पालन के लिए, मूलशंकर जी जगते रहे ।
अर्ध रात्रि सुनसान देखकर, वहां एक चूहा आया,
दौड-दौड़कर उछल कूद कर, शिव के ऊपर चढ़ आया ।
पूजा का मिष्ठान खाकर, समस्त भोग को जूठा किया,
इस छोटी-सी इक घटना से, मूलशकर जी को बोध हुआ ।
यह कैसे जग रक्षक शिव जी हैं, जो चूहा हटा नहीं सकते,
ससार के सब प्राणियों की, ये कैसे रक्षा कर सकते ।
सच्चे शिव की खोज करने, शीघ्र ही घर को त्याग दिया,
जगल-जगल भटकते रहे, गिरी कन्दराओं मे भी वास किया ।
बचपन में सन्यासी हुए, और दयानन्द सरस्वती नाम हुआ,
गुरु विरजानन्द के आश्रम जाकर, जीवन अपना कृतार्थ किया ।
सब शास्त्रों का अध्ययन करके, गुरु का आशीर्वाद लिया,
पाखण्ड दूर करने के लिये, जगह जगह शास्त्रार्थ किया ।
ऋषि हरिद्वार में आकर के, पाखण्ड खण्डिनी लहराये,
सच्चे तर्कों को सुन करके, समस्त विरोधी थर्राये ।
केवल एक ही दीपक ने, अज्ञान अंधेरा दूर किया,
अपनी अल्प सी आयु में ही, कार्य इतना महान किया ।
सत्यार्थप्रकाश की रचना की, मिथ्या विश्वास को दूर किया,
'सरस' ज्ञान की सरिता बही, और वेदों का प्रकाश किया ।

भुव भारती में जया ज्योति जगायी

[श्री राजेन्द्र चन्द्रायण बी-१२८३ इन्दिरानगर, लखनऊ-१६]

वे सजीव सदेशे सुशीलता के, जनप्रेरक 'आर्यसमाज' बनाया ।
छुआछूत का घोर विरोध किया, तथा नारी गिरीह का मान बढ़ाया ॥
वे गुलामी, गरीबी, अशिक्षा के शत्रु, 'स्वराज्य' का नारा बुलंद लगाया ।
महा मेंजुलमूर्ति दयानन्द जी, प्रभु गुंजित ओम-निनाद सुनाया ।
वह लोकऋषी श्री दयानन्द जी, यही सत्य-सा मन्त्र गए सिखला॥
'मत कल्पित स्वर्ग की चाह करो, धरा मानवी में सुरधाम मिला ॥
जब वैदिक आर्यता है दमती, तभी ओम-विभा से है विश्व खिला ।
अवनी-तल ही गोलोकीय बने, शुचिता मृदुता जो मिले प्रमिला ।"
नहीं कोई महामति था जग का, जिसने दयानन्द की कीर्ति न गाई ॥
चाहे गांधी, रवीन्द्र या लाजपत हों, अथवा एण्ड्र ज, एनीबीसेन्ट माई ।
सिरमौर बने 'ऋषि!' क्रांतिगुरु, हुए प्रेरित 'भामा', रानी 'लक्ष्मीबाई' ।
उनको युगबोध था लोकमुखी, जिस कारण राष्ट्र स्वतन्त्रता आई ॥
ऋषिराज की थी यही गूढ़ कला, जो अनेकता में भी समेकता पायी ।
बहुतेरों को एक बनाके गये, शुचिता शहदीली असीम बहायी ॥
युगपूज्य प्रनेता दयानन्द जी, श्रुति-ओम की धूम अनूप मचायी ।
महामानवी ज्योति अखण्ड जली, भुव-भारती मे जया शक्ति जगायी ॥

(पृष्ठ ७ का शेष)

कल्याण मार्ग का प्रदर्शन किया । आधुनिक स्वतन्त्र भारत के कर्णधार यदि ध्यान पूर्वक उनके आदर्श सिद्धान्तों का आचरण करें तो स्वदेश में व्याप्त अराजकता एव भ्रष्टाचारों का निवारण अवश्यम्भावी है । योगी अरविन्द ने कहा था— यदि संसार के महापुरुषो को पर्वत की चोटियां माना जाये तो देवदयानन्द उन सब में सर्वोच्च शिखर माने जायेंगे ।

पाषाणैरत्याहतोऽपि सुमनाः प्रावात् शुभ सौरभम् ।
साक्षान्मातृवसुन्धरेव मनस. सद्भावेदयत् ॥
कष्टंयेन परोपकारव्रतिना सज्जीवन यापितम् ।
श्रद्धेयाय महर्षये गुरुदयानन्दाय तस्मै नमः ॥

भारत के आदिवासी क्षेत्र ईसाइयों के चरागाह नहीं बनेंगे

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शाल वाले का प्रेस सम्मेलन में वक्तव्य

पोप पाल द्वितीय के भारत आगमन पर आदि वासियों के सामूहिक धर्मान्तरण की योजना के सम्बन्ध मे श्री शाल वाले ने योजना की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुये कहा कि अंग्रेजों ने फूट डालो और राज्य करो की नीति के अनुसार भारत की सांस्कृतिक एकता को खण्डित करने के लिये अनुसूचित जन-जाति के लोगो की ओर विशेष ध्यान दिया। इसीलिये पिछले सौ वर्षों से आदि वासी क्षेत्र ईसाई मिशनरियों का चरागाह बना हुआ है। जिसका स्पष्ट परिणाम नागालैण्ड, मिजोरम और मेघालय मे देखा जा सकता है। भारत की स्वतन्त्रता के बाद से इस कार्य में और तेजी आई है। तभी तो रांची जिले मे सन् १९७१ में ईसाइयों की संख्या जहां ३ प्रतिशत थी, वह सन् १९८१ की जनगणना मे बढ़कर १३ प्रतिशत हो गई।

श्री शाल वाले ने एक लाख आदि वासियो का धर्मान्तरण करके पोप पाल को भेंट करने की योजना का प्रारूप बताते हुए कहा कि प्रत्येक चर्च को एक हजार से डेढ़ हजार तक आदि वासियों का कोटा दिया गया है और उसके लिये मिशनरियों को सब साधन मुहैया किये गये हैं। यातायात के लिये सैकड़ों जीपों और मोटर साइ किलों के अलावा वस्त्रादि भी प्रभूत मात्रा मे दिये गये हैं। रेडक्रास का भी इसमे पूरा सहयोग है। जहां तक वित्तीय साधनों का प्रश्न है, मिशनरियो के पास उनकी कमी-कभी नहीं रहा है। स्कूलो के भवन-कार्यकर्त्ताओ के लिये निवास स्थान और अधिक से अधिक स्थानो पर छोटे या बड़े गिरजाघर बनाने का प्रयत्न तो किया ही गया है। आदिवासी छात्र-छात्राओं को पुस्तकें, यूनिफार्म और स्कूल की फीस माफ करने की सुविधायें भी दी गई हैं।

श्री शालवाले ने अन्य वित्तीय प्रलोभनों की चर्चा करते हुए कहा कि प्रत्येक गांव में कार्य कर्त्ताओं को नियुक्त करके उनसे कहा गया है कि ऐसे व्यक्तियों की सूची तैयार करें जो किसी महाजन के कर्जदार हों, किसी मुकदमें में फसे हों, और जिन्हें कानूनी सहायता की जरूरत हो, घर के मुखिया की मृत्यु के कारण जिनका परिवार आर्थिक सकट मे हो, जो अपने यहां कुआं खुदवाना चाहते हों, पर धनाभाव से वैसा करने मे असमर्थ हों। इस प्रकार के सब व्यक्तियों को चर्च की ओर से ऋण दिया जाता है। यदि ऋण लेने वाला व्यक्ति सपरिवार ईसाई बन जाता जाता है तो इस ऋण को आर्थिक सहायता में सम्मिलित कर लिया जाता है। अन्यथा ऋण वापस करने के लिये उसे झूठे मुकदमों में फसा कर तथा अन्य प्रकार से डराया धमकाया जाता है। जो बिचौलिये जितनी अधिक मात्रा में ईसाई बनने वालों को तैयार करते हैं, उन्हें उसी अनुपात में पारिश्रमिक दिया जाता है। कभी-कभी आदिवासी युवकों को फंसाने के लिये ईसाई बनी आदिवासी युवतियों को भी काम में लाया जाता है। यदि वह युवक उस युवती से शादी करने को तैयार न हो तो उस युवक से युवती के गर्भवती होने का आरोप लगाकर परेशान किया जाता है। ऐसे भी अनेक मामले सामने आये हैं, जब आदिवासी प्रतिभाशाली युवकों को विदेश भेजने का और शिक्षित लड़कियो से शादी करने का प्रलोभन दिया जाता है।

अन्त में श्री शालवाले ने कहा कि सबसे बड़ी आपत्ति की बात यह है कि उच्चतम न्यायालय के निर्णयों के अनुसार धर्मान्तरण के पश्चात् अनुसूचित और जन-जाति के लोगों को वे सुविधायें नहीं मिल सकती है जो पिछडे वर्ग के नाते उन्हें सरकार की ओर से धर्मान्तरण से पहले मिल रही थीं। आश्चर्य की बात यह है कि अन्य धर्म स्वीकार करने वालों पर तो यह फैसला लागू किया जाता है, परन्तु ईसाई बनने वाल्लों लोगों पर नहीं। यह भेद-भाव क्यों है ? यदि भारत सरकार कुछ विदेशी शक्तियों के राजनीतिक दबाव के कारण छोटा नागपुर आदि के धर्मान्तरित ईसाइयों को वही सुविधायें देना जारी रखती है तो यह हमारी स्वतन्त्रता पर भारी कलंक है। क्या सरकार इस तरह उन आदिवासियों को भी धर्मान्तरण के लिये प्रेरित नहीं कर रही जो अपने पूर्वजों के धर्म को तिलांजलि देने को तैयार नहीं है ? सरकार को स्वय इस पहलू पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये।

उत्सव

—आर्य समाज जगीगञ्ज वाराणसी का २१ वां वार्षिकोत्सव दि० २८ से ३० मार्च ८६ के मध्य सोल्लास सम्पन्न होगा। मन्त्री

—आर्य समाज उतरौला (गोंडा) का ५२ वां वार्षिकोत्सव दि० ८ से ११ मार्च के मध्य सम्पन्न होगा।

धर्मपालआर्य प्रधान

—दयानन्द बाल मन्दिर शिकारपुर (बुलन्द शहर) का वार्षिकोत्सव दि० ८ व १० मार्च को ऋषि बोधोत्सव के रूप मे सम्पन्न होगा।

प्रधानाचार्य

—आर्य समाज पहासू (बुलन्द शहर) का वार्षिकोत्सव ऋषिबोधोत्सव सप्ताह के रूप में दि० ३ मार्च से ९ मार्च तक धूमधाम से सम्पन्न होगा।

मन्त्री

—आर्य समाज मन्दिर, सिविल लाइन्स, वैदिक आश्रम, रामघाट मार्ग, अलीगढ़ का ऋषी बोध सप्ताह दि० ८, ९, व १० मार्च, ८६ को सम्पन्न होगा। आर्य जगत के प्रमुख विद्वान एवं वक्ता सम्मलित होंगे। मन्त्री

आर्यसमाजें २ से ९ मार्च ८६ तक ऋषि-बोधोत्सव (दयानन्द सप्ताह) समारोह से मनाये

इस महान् पर्व पर हमारी प्रतिज्ञाए और कार्यक्रम

१–ऋषिबोधोत्सव पर जन-सम्पर्क एवं सदस्यता अभियान चलाया जावे ।

ऋषि बोधोत्सव पर आर्यसमाज के प्रचार की दृष्टि से विशेष जन-सम्पर्क स्थापित करने एव सदस्यता अभियान पर विशेष बल दिया जाना चाहिये ताकि आर्य विचारो तथा आर्यसमाज से सहानुभूति रखने वाले बन्धुओ के सक्रिय सहयोग से समाज लाभान्वित हो सके ।

२–आर्यजनो मे पारस्परिक सहयोग एव भ्रातृत्व-भावना वृद्धि का प्रयत्न किया जाय—

प्रत्येक जिले मे जिले की समस्त समाजों को 'आर्य सम्मेलनों' का आयोजन करना चाहिये, और परस्पर भ्रातृत्व-भाव की वृद्धि के साथ-साथ स्थानीय आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक गोष्ठियों के द्वारा परस्पर सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाए ।

३–राष्ट्र के नैतिक पतन को रोकने का॰आर्यजन विशेष यत्न करें—

आर्यसमाज एक धार्मिक आन्दोलन है । राष्ट्र के नैतिक पतन को देखते हुए आर्यसमाज का दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है । अत सभी आर्य बन्धुओं को चाहिए कि इस पर्व पर सामूहिक रूप से राष्ट्र के नैतिक उत्थान मे विशेष सक्रिय सहयोग देने का निश्चय करें,और स्वयं नैतिक जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर राष्ट्र का मार्ग दर्शन करें ।

दयानन्द सप्ताह का कार्यक्रम

१–उद्बोधन—प्रति दिन प्रात· नगर-नगर और ग्राम-ग्राम मे टोलियां बनाकर उद्बोधन किया जावे ।

२–प्रभात फेरी की जाय, इसके पश्चात् आयसमाज मन्दिर मे यज्ञ किया जाय, यथासम्भव इस सप्ताह मे सम्पूर्ण यजुर्वेद सहिता से बृहद् यज्ञ किया जावे ।

३–'आर्यमित्र'—प्रत्येक आर्यसमाज के पदाधिकारी तथा सदस्य गण 'आर्यमित्र' के स्वय तथा कम से कम ५ नवीन ग्राहक बनायें 'आर्यमित्र' के नवीन ग्राहक बढ़ाने का प्रयत्न करें ।

दलितोद्धार–समाज मे अछूत कहे जाने वाले बन्धुओ से सम्पर्क स्थापित किया जावे । उनको वैदिक धम की विशेषतायें बताई जावे । उनके यहां हवन करके यज्ञ शेष वितरित किया जाय । छुआ-छूत मिटाने का प्रयत्न किया जाये ।

धर्मरक्षा महाभियान तथा हरिजन स्नेह सम्मेलन आयोजित किया जाय ।

गुरुकुल आन्दोलन–सभा की ओर से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहित करने के लिये गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन गत ८१ वर्षों से सचालित है । बोधरात्रि के अवसर पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व पर विशेष प्रकाश डालना तथा गुरुकुल को आर्थिक सहायता द्वारा उसे समर्थ बनाना प्रत्येक भारतीय और आर्य का कर्तव्य है ।

आचार-व्यवहार–जनता मे से भ्रष्टाचार और चरित्रहीनता मिटाने के लिए सिनेमा के भ्रष्टाचार फैलाने वाले अश्लील चित्रो के विरुद्ध आन्दोलन किया जावे तथा मादक द्रव्य निषेध व गोरक्षा पर बल दिया जावे ।

आत्म-निरीक्षण–इस सप्ताह मे एक दिन समस्त आय भाई-बहनो को एकत्र होकर इस बात पर भी गम्भीरता से विचार करना चाहये कि शक्तिशाली एवं प्रभावशाली आर्यसमाज का कार्य कैसे आगे बढ़ाया जाय ।

स्वदीक्षा व्रत–भविष्य मे आर्यसमाज के लिए दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा एवं काशी शास्त्रार्थ शताब्दी,आर्यसमाज स्थापना शताब्दी मेरठ,कानपुर एवं वाराणसी में सत्यार्थप्रकाश शताब्दी में स्वीकृत प्रस्तावों एवं उपयुक्त एवम् ऋषिनिर्वाण शताब्दी अजमेर संकल्पों के लिए सामूहिक दीक्षा व्रत लेना तथा उन्हें व्यक्तिगत और सामूहिक दोहराना चाहिये ।

प्रीतिभोज–आर्यसमाज मन्दिर मे एक दिन प्रीतिभोज किया जावे । उसमे हरिजन बन्धुओं को भी सम्मिलित किया जावे ।

ईसाई-प्रचार-निरोध–एक दिन सार्वजनिक सभा करके ईसाइयत के प्रचार के लिए आने वाले धन, विदेशी मिशनरियो पर प्रतिबन्ध लगाने, विदेशी मिशनरियो का राष्ट्रीयकरण करने तथा हिन्दू बालक-बालिकाओ की ईसाइयत की शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाने की भारत सरकार से मांग करनी चाहिये ।

ऋषि बोध पर्व ८ मार्च १९८६ ई० दिन शनिवार

प्रात· समस्त आर्य सज्जन तथा देवियां मन्दिर मे एकत्रित होकर—

(१) कुछ काल वेद पाठ करें ।

(२) साधारण यज्ञ तथा पर्वेष्टि यज्ञ करें ।

(३) आत्मोद्धार सम्बन्धी भजन गान किये जावें ।

(४) प्रत्येक व्यक्ति आत्मोन्नति, स्वाध्याय वैदिक धर्म प्रचार करने का अनुष्ठान करें ।

मध्याह्न–विशेष शोभा यात्रा का आयोजन किया जाय । शोभा-यात्रा अधिक से अधिक गम्भीर तथा प्रभावोत्पादक होना चाहिये । आर्य पुरुषो, कुमारों, देवियों को अपनी-अपनी टोलियां बनाकर स्वयं भजन गाने चाहिए । भजनों मे प्रभु-भक्ति, महर्षि-महिमा, जातीय गौरव तथा आत्म-सुधार के विशेष भाव हों ।

रात्रि—मन्दिरों मे विशेष रोशनी करनी और उसके पश्चात् आर्य मन्दिरों मे वेदोपदेश तथा ऋषि जीवन पर प्रकाश डालने वाले व्याख्यान होने चाहिए ।

विनीत—

इन्द्रराज

प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

सूचना

प्राथमिक धर्म शिक्षा परीक्षा १९८६

१— प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० के अन्तरंग बैठक दि० १९-५-८५ के प्रस्ताव सं० ३ में निश्चय किया गया कि प्रदेश में चल रहे सभी दयानन्द बाल मन्दिरों में कक्षा ५ स्तर की धर्म परीक्षा आयोजित, की जावे जिससे कि जो विद्यालय अपने छात्रों को शिक्षा विभागीय परीक्षा में प्रविष्ट कराते हैं उन्हें भी धर्म शिक्षा परीक्षा देने का आधार बना रहे।

२— यह परीक्षा धर्म शिक्षा भाग ५ के पुस्तक के आधार पर होगी परीक्षा तिथि २०-४ ८६ दिन रविवार को निर्धारित की गई है प्रत्येक छात्र परीक्षा शुल्क २) रु० मात्र होगा।

३— विषय मुख्यतया निम्न प्रकार से होंगे।
प्रार्थना सन्ध्या के मन्त्र, महर्षि दयानन्द के जीवन सम्बन्धी' सामान्य जानकारी, आर्य समाजके नियम एवं प्रमुख कार्य' ईश्वर के अस्तित्व उसके गुण तथा प्रमुख कार्यों की जानकारी, यम नियमों का ज्ञान गायत्री मन्त्र और उसका भावार्थ, यज्ञ प्रार्थना 'राष्ट्रीय ज्ञान, भजन, ओ३म् जय जगदीश हरे।

४— इस परीक्षा में किसी भी विद्यालय के कक्षा ५ के विद्यार्थी प्रविष्ट हो सकते हैं आर्य समाजों द्वारा संचालित सभी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिये यह परीक्षा अनिवार्य होगी चाहे वे विद्यार्य सभा द्वारा संचालित प्राथमिक परीक्षामे सम्मिलत हो अथवा नहीं। सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं विद्यालयों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे इस ओर अवश्य ध्यान देने की कृपा करें।

माधव सिंह मन्त्री

प्राथमिक शिक्षा परीक्षा १९८६

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० द्वारा संचालित प्राथमिक शिक्षा परीक्षा २१-४-८६ से प्रारम्भ होगी अत' सभी दयानन्द बाल मंदिर के प्रधाना चार्या / प्रधानाचार्यों से अनुरोध है कि परीक्षा आवेदन पत्र शुल्क सहित शीघ्र भेजने की कृपा करें।

माधव सिंह मन्त्री

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सांताक्रुज बम्बई का ४१वा वार्षिकोत्सव रविवार दिनांक १९-१-८६ से २६-१-८६ तक समारोह पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (बम्बा) श्री पं० सत्यानन्द जी वेदवागीश (अलवर) पं० विद्याधर जी भूतपूर्व मन्त्री (हिमांचल) प्रदेश आचार्य सोमदेव शास्त्री, श्रीविनोद गुप्ता संस्थापक 'सावधान' श्री मधु मेहता संस्थापक 'हिन्दुस्तानी एकता आन्दोलन' प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यप्रकाश जी आर्य प्रिन्सिपल के० एल० तलरेजा श्री वशिष्ठ वस्से श्री आर० डी० हलगडी, श्री विजयवीर त्यागी, श्री राजसिंह आर्य श्री पन्नालाल पीयूष, श्री सत्यपाल पथिक, श्री कमलेश चन्द्र आर्य, श्रीमती अपराजिता मल्ला, श्रीमती सुमित्रा अमीन, श्रीमती लक्ष्मारानी गोयल, श्रीमती डा०सुमन वर्मा आदि आर्य विद्वानों, वक्ताओं ने भाग लिया।

इस उत्सव पर आर्य महिला सम्मेलन, आर्य युवक सम्मेलन, वेद सम्मेलन- गणतन्त्र दिवस एवं राष्ट्रीय एकता सम्मेलन आयोजित किये गये। दि० १९-१-८६ तक अथर्ववेद पारायण महायज्ञ श्री प० सत्यानन्द जी वेदवागीश के ब्रह्मत्व में २६-१-८६ को पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। कैप्टन देवरत्न आर्य महामन्त्री

वेद मनुष्य मात्र का कल्याण चाहता है

(डा० सुमन)

झांसी १७ फरवरी—वेद उन्मुक्त किताब है अर्थात ज्ञान का स्रोत या ज्ञान की माँ, वेद किसी व्यक्ति वर्ग या सम्प्रदाय विशेष की धरोहर नहीं वेद पर मनुष्य मात्र का उतना हो अधिकार है जितना एक नवजात शिशु का अपनी मा के स्तन पान पर। पिछले पांच हजार वर्षों मे वेद को जो ग्रहण लगा आधुनिक युग के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने प्रस्थान त्रयी को छोडकर वेद त्रयी को अपनाया आज वही चमत्कार सारे संसार को वेद की ज्योति से प्रकाश मान कर रहा है, यह विचार है युवा आर्य नेता वैदिक प्रवक्ता डा० आनन्द सुमन (पूर्व नवाब छतारी) के जिन्होंने पाँच वर्ष पूर्व इस्लाम मजहब को त्यागकर वैदिक धर्म स्वीकार किया केवल वैदिक धर्म ही स्वीकार नहीं किया वेद एवं अन्य आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा दीक्षा ली व अपने सहयोगियों साथियों को वैदिक धर्म मे लौटाया। डा० सुमन विगत् पांच वर्षों से वैदिक क्रांति अभियान में सक्रिय है एव निरन्तर देश विदेश में वेद प्रचार कर रहे है। विगत सप्ताह मे डा० सुमन ने झांसी जनपद मे विस्तृत प्रचार किया।

मोठ, चिरगांव, पारीछा व झांसी में अपने क्रांतिकारी विचारों का पान सहस्त्रों जनता को कराया—

डा० सुमन के प्रवास से झांसी जनपद आर्य समाज के प्रति लोगों मे अपूर्व उत्साह देखा गया।

मन्त्री आर्य समाज झांसी

शुद्धि संस्कार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान मे ग्राम गोटियार डीह रामपुर (म० प्र०) में दि० १० फरवरी १९८६ को यज्ञ, हवन तथा प्रचार का कार्य हुआ इसी अवसर पर श्री स्वामी सेवा नन्द सरस्वती महामन्त्री हि० शु० समिति हरियाणा, के सहयोग से विभिन्न परिवारों को मिला कर लगभग १५१ ईसाइयों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षाली तथा वैदिक धर्म ग्रहण किया। शुद्धि हुए व्यक्तियों को श्री स्वामी जी ने वस्त्र वितरण किया। संवाददाता

नगर आर्य समाज साहूबगंज गोरखपुर के तत्वावधानमें लालडिग्गी उद्यान स्थित पं० रामप्रसाद बिस्मिल स्मारक यज्ञ शाला पर एक मुसलिम युवती श्रीमती नाहिदा खातून पुत्री मोहम्मद रफीक निवासी ग्राम विशुनपुर जिला गोन्डा का शुद्धि संस्कार (वैदिक धर्म) हिन्दू में दीक्षित करा कर उसका नाम शांति देवी रक्खा गया तत्पश्चात उसका विवाह संस्कार श्री विजय प्रकाश श्रीवास्तव पुत्र श्री नानकप्रसाद श्रीवास्तव निवासी विशुनपुर जिला गोन्डा के साथ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन रमेश प्रसाद गुप्त (मन्त्री) नगर आर्यसमाज साहबगंज ने किया।

मन्त्री नगर आर्य समाज साहबगंज गोरखपुर

उत्सव

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) का १५ वां वार्षिकोत्सव दि० १५ से १७ मार्च ८६के मध्य सोल्लास सम्पन्न होगा।

आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री कुलपति

आर्य समाज फतेहपुर का वार्षिकोत्सव दि० ७ से १० मार्च ८६ के मध्य बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायगा। जिसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान सर्वश्री महात्मा नारायण स्वामी क्रांतिकारी, डा० आनन्द सुमन एवं शिवदेव बेधड़क भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० तथा आधुनिक भीम श्री विश्वपाल जयन्त आदि सम्मिलत हो रहे हैं। मन्त्री

कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो

(शेष पृष्ठ ७ से आगे)

मस्तिष्क में शाह की रूपरेखा क्या है ? और उनका इस्लाम किस शाह से सम्बद्ध है ?

'मुस्लिम पर्सनल ला' हनफी, मालिकी, शाफई और अस्ना अश्री (शिया) इन चार वर्गों में बटा हुआ है। इन चार विचार धाराओ मे 'चाइल्ड एडाप्शन-ला' के अनुसार हनफी कानून मे पुत्री के वयस्क होते ही मा का उस पर अधिकार समाप्त हो जाता है। मगर मालिकी विचार धारा के अनुसार मां पुत्र के युवा होने तक उसकी अभिभावक रह सकती है। जब कि हनफी विचार धारा मे पुत्र के सात वर्ष का होने पर मां क अधिकार को समाप्त कर दिया जाता है।

आर्य जगत

-आर्य समाज सरदार पटेल मार्ग खलासी लाईन सहारनपुर का ३३ वां स्थापना दिवस समारोह वा बाल हकीकत राय बलिदान दिवस दि० १३ फरवरी ८६ को सोल्लास से सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

-आर्य समाज स्वरूप नगर कानपुर का ११ वां वार्षिकोत्सव दि० ९ फरवरी से १३ फरवरी १९८६ के मध्य सम्पन्न हुआ जिसमे वेदपारायण यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ। मन्त्री

निर्वाचन

आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी मुरादाबाद
प्रधान श्री देवसेन दुग्गल
मन्त्री श्री यशपाल आर्य बन्धु
कोषा० श्री वेदप्रकाश रस्तोगी

निर्वाचन

आर्य समाज बांसी (बस्ती)
प्रधान श्री भवानी शरण भट्ट
मन्त्री श्री द्वारिका प्रसाद यादव
कोषा० श्री अम्बिका प्रसाद

आर्य समाजटाण्डा बादली (रामपुर)
प्रधान श्री बुद्धसैन जी आर्य
मन्त्री श्री सुधीर कुमार
कोषा० श्री विनोद कुमार

आर्य समाज रमपुरा (मुरादाबाद)
प्रधान श्री भगवान सिंह आर्य
मन्त्री श्री बृजकिशोर आर्य
कोषा० श्री अनिल कुमार आर्य

आर्य समाज बागपत मेरठ
प्रधान श्री जगबीरसिंह एडवोकेट
मन्त्री श्री समरजीत सिंह
कोषा० श्री देवेन्द्र कुमार आर्य

आर्य समाज बादशाह नगर लखनऊ
प्रधान श्री रामसेवक विश्वकर्मा
मन्त्री श्री रामदेव आर्य
कोषा० श्री राधेश्याम अग्रवाल

आर्यसमाज गढ़मुक्तेश्वरगाजियाबाद
प्रधान श्री डा० चैतन्य स्वरूप
मन्त्री श्री कुलभूषण आर्य
कोषा० श्री राकेश मोहन गोयल

आर्य समाज ताड़ीखेत (अल्मोड़ा)
प्रधान श्री भगवती प्रसाद शर्मा
मन्त्री श्री राम दत्त पाण्डेय
कोषा० श्री बाला दत्त पपने

आर्य समाज लालगंज रायबरेली
प्रधान श्री डा० शकुन चन्द्र गुप्त
मन्त्री श्री शिव बालक आर्य
कोषा० श्री श्रीराम यादव

आर्य समाज कैसर बाग लखनऊ
प्रधान श्री गुदरी लाल
मन्त्री श्री अवध नारायण
कोषा० श्री हरीराम गुप्ता

आर्य समाज बिलसंडा (पीलीभीत)
प्रधान श्री वेदमुनि वानप्रस्थ
मन्त्री श्री कृष्णकुमार शास्त्री
कोषा० श्री राममाथ आर्य

आर्य समाज प्रेमनगर देहरादून
प्रधान श्री डा० आदर्श कुमार बशल
मन्त्री श्री वेद प्रताप सिंह
कोषा० श्री प्रेम कुमार शर्मा

आर्य समाज मुगलसराय वाराणसी
प्रधान श्री शकर लाल पोद्दार
मन्त्री श्री जय प्रकाश वैश्य
कोषा० श्री बुद्धिराम प्रसाद वैश्य

आर्य समाज फतेहपुर
प्रधान श्री देवेन्द्र प्रकाश
मन्त्री श्री डा० हर्ष वर्द्धन
कोषा० श्री राजनारायण रस्तोगी

जिला आर्योप्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर
प्रधान श्री विश्वबन्धु जी आचार्य
मन्त्री श्री मंगलदत्त शर्मा
कोषा० श्री हरदत्त शर्मा

आर्यसमाज मण्डिया धुरेकी (बदायू)
प्रधान श्री ओ३म प्रकाश आर्य
मन्त्री श्री कल्याण प्रकाश आर्य
कोषा० श्री रोशनलाल आर्य

श्री देवीदास आर्य का अभिनन्दन

कानपुर। १ फरवरी (नि० स०) महिला उद्धारक आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य का पूनम जन कल्याण परिषद के तत्वावधानमे अनेक सस्थाओं द्वारा अभिनन्दन किया गया।

श्री आर्य ने अब तक हजारो अपहृत कन्याओं को अपना जीवन संकट मे डाल कर अराजक तत्वों तथा वेश्यालयो से मुक्त कराया है और ५०० से अधिक अनाथ व पतित कन्याओ के स्वय कन्यादान करके विवाह करायें हैं।

समारोह मे विभिन्न सस्थाओं के प्रतिनिधियों सर्वश्री जगदीश नारायण तिवारी, प्रो० सोमनारायण शुक्ल, राजकिशोर अवस्थी, मोहम्मद बशीर- चन्द्रचूड़, शांति देवी आदि ने भाषण देकर श्रीदेवी दास आर्य के समाज सुधार व महिला उद्धार के कार्यों को भूरि-भूरि प्रशसा की। समारोह की अध्यक्षता श्री इन्द्र पाल भारती ने की। सम्वाददाता

कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो

(ओबेदुल्ला खां आजमी को चैलेन्ज)

• स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उत्तर प्रदेश)

(गताङ्क से आगे)

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वोह कत्ल भी करते हैं तो शिकवा नहीं होता॥

जनाब ओबेदुल्ला साहब ने बड़े गर्व के साथ काकोरीकाड के अमर बलिदानी श्री अशफाकुल्ला का नाम लेकर अपनी देश भक्ति और देश के लिये मुसलमानों द्वारा बलिदान देने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। यद्यपि इन मौलाना को यह पता नहीं कि अशफाकुल्ला का जन्म ही मुसलमान घर में हुआ था किन्तु वह आचार विचार से वैदिक धर्मी (आर्य समाजी) थे और अपने एक मात्र मित्र तथा राजनीतिक और धार्मिक गुरु और काकोरी काड के नेता अमर बलिदानी श्री पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल के साथ दोनो समय नियमित रूप से सन्ध्या किया करते थे। यदि हम मान भी लें कि वह वैदिक धर्मी नहीं अपितु मुसलमान थे तो अशफाकुल्ला के अतिरिक्त और कितने बलिदान मौलाना ओबेदुल्ला के बुजुर्गों और उम्मत के लोगों ने भारत की स्वाधीनता के लिये दिये हैं। हल्दी की इस एक ही गांठ पर जनाब मौलाना साहब 'पंसरहट्टे का बाजार' खोले बैठे है।

मुसलमानों के भूमि में दबाये जाने को भी आपने राष्ट्र भक्ति सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। यद्यपि मृत देह को भूमि मे दबाकर भारत की उर्वरा भूमि को कृषि के लिये अनुपयुक्त कर दिया जाता है और इस प्रकार उनकी यह कारगुजारी भी भारत की खाद्य समस्या को दिन प्रतिदिन और उलझाने का प्रयत्न होने से राष्ट्र-भक्ति नहीं अपितु राष्ट्र द्रोह बनी हुयी है। यह अरब की नाकारा रेगिस्तानी भूमि नहीं है कि इस प्रकार विनष्ट की जाय। इस समय भारत की लाखो एकड़ भूमि जिसमे लाखों हो टन अन्न उत्पन्न होता था, इस इस्लामिक अन्ध विश्वास के कारण कब्रिस्तानो के रूप में निरर्थक पड़ी हुयी है।

मौलाना ने यह भी फरमाया है कि 'कहा ऐसा न हो कि तारीख अपने को दोहरा दे।' जनाब मौलाना अपनी उस तारीख के पन्ने भी पलट कर देख लें 'अब खलील खां फाख्ता मारा करते थे।' अब वह पन्ने मैदान मे रखकर बिना मिट्टी के तेल के ही फूंक दिये जायेंगे।' जैसी कि उन्होंने घोषणा की है गीता, सीता और ग्रन्थ साहब की इज्जत पर भी हाथ डाल कर देख लें, इस चाव को पूरा कर लें। ध्यान रहे कि भारत की पवित्र भूमि पर किसी भी भारतीय ग्रन्थ तथा भारत की सीता की ओर उठने वाले हाथ काट कर फेंक दिये जायेंगे।

उर्दू की भी आपने वकालत की है। ठीक है उर्दू भारत की भाषा है, भारत में जन्मी है किन्तु जनाब से और इस्लाम से उर्दू का क्या सम्बन्ध है ? उर्दू सेना अथवा बाजार की बोली का नाम है। बाजार में और सेना में विविध बोलियां बोलने वाले लोग होते हैं। उन विविध बोलियों के शब्दों से बनने वाली बोली को उर्दू कहते हैं। पहले तो वह बोली——भाषा है ही नहीं यदि भाषा है भी तो फौजी और बाजारी——आप उसकी वकालत करने वाले कौन होते हैं ? उर्दू ने तो आपका वकालतनामा नहीं लगाया। वास्तविकता यह है कि साम्प्रदायिक आधार पर और अरबी-फारसी के शब्दों का समूह बनकर भारत में उर्दू सहन नहीं होगी। यहां तो वह यहा की पुत्री, लोक-भाषा बन कर रह और पनप सकती है।

मुसलमानों के भारत मे कत्ल-ए-आम और माँ बहनों की इज्जत लूटी जाने की बात भी इस भाषण मे कही गयी है। यद्यपि यह कारगुजारियां भी मुजाहिदों ने इस्लाम ही किया करते हैं। उनका पूरा इतिहास इन कारगुजारियों मे भरा पड़ा है। सन् १९४७ में पाकिस्तान बनने के बाद १३००० हिन्दू महिलाओं को नंगी करके रावलपिण्डी की सड़कों पर उनका जुलूस निकाल कर इस्लामी चरित्र का खुला प्रदर्शन किया गया। बंगला देश के युद्ध के समय सन् १९७१ ईसवी में पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा ढाका विश्वविद्यालय की सैकड़ों क्वांरी लड़कियों के साथ सार्वजनिक रूप से सामूहिक बलात्कार और युद्ध के मोर्चों पर खाइयों में दिन रात सहस्त्रों बंगला देश की युवतियों को हरदम नंगी रखकर उनके साथ इच्छानुसार व्यभिचार क्या इस्लामी दरिन्दगी का प्रदर्शन नहीं था। भारत मे जहां भी कम-से-कम १५-२० प्रतिशत आबादी इस्लामिक दीनदारो की होती है, वहीं साम्प्रदायिक दंगे, बलवे, लूट और स्त्रियों के साथ बलात्कार होते हैं। यदि हिन्दू इन करतूतों को पसन्द करते तो अल्प सख्या मे होने के कारण अब तक मुसलमान भारत मे जीवित नहीं रह सकते थे। यदि रहते तो इसी प्रकार——जिस प्रकार बगला देश और पाकिस्तान के सिन्ध प्रदेश में हिन्दू पददलित होकर रह रहे हैं। आये दिन उनकी लड़कियां छीन ली जाती हैं, उनके साथ बलात्कार होते हैं। हिन्दू यदि बोलने का साहस करते हैं तो उन्हे मारा-पीटा और कत्ल तक किया जाता है। वह लुट-पिटकर और बार-बार भाग कर भारत आते रहते हैं।

मजहबी दीवानगी के आधार पर बनने वाले इस्लामिक देश पाकिस्तान के इस्लामिक नमूने को चर्चा तो ऊपर अहमदियों के प्रसग में कर ही चुका हू, जिससे मौलाना ओबेदुल्ला की पाकिस्तानी मुस्लिम पर्सनल ला, इस्लामिक शाह और कुरानी अजमत के विषय में तसल्ली हो ही जायेगी। अब शाह की वास्तविकता का परिचय देकर मौलाना से यह पूछना चाहता हू कि वह किस शाह की वकालत कर रहे है तथा उनके

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य समाज विवस्वत् वेद मन्दिर ग्राम शिवपुर (गोरखपुर)

१ मार्च से १५ मार्च १९८६ तक वैदिक शिविर का भव्य आयोजन।

(प्रात योग प्रशिक्षण, मध्याह्न वैदिक सिद्धांत प्रशिक्षण, सायं संस्कृत प्रशिक्षण)

(शिविर मे भाग लेने वाले सज्जन पूर्व से ही अपना नाम एव पता सूचित करें)

१८ मार्च १९८६ मंगलवार से २४ मार्च १९८६ सोमवार तक चतुर्वेद महा यज्ञ महोत्सव।

प्रात ८ बजे से १२ बजे तक चतुर्वेद महायज्ञ, भजनोपदेश एव यज्ञीय प्रवचन।

मध्याह्न २ बजे से ५ बजे तक भजनोपदेश एव वैदिक प्रवचन।

साय ७ ,, ,, १० ,, ,, सन्ध्या, भजन एवं वेद प्रवचन।

रात्रि १० ,, ,, १२ ,, ,, मैजिक लैन्टर्न, विद्यालय के बच्चों के कार्यक्रमादि।

निवेदक—

विवस्वत् वेद मन्दिर के समस्त अधिकारी एवं सदस्य गण।

बहु चर्चित वाद की समाप्ति

सराय तरीन निवासी श्री देवेन्द्र जी द्वारा जो वाद (मुकदमा) बनाम श्री रामगोपाल जी शाल वाले आदि के नाम दायर किये गये थे वह सब वाद श्री देवेन्द्र जी द्वारा वाद नं० २७ सन् १९८५ न्यायालय मुन्सफी सम्भल द्वारा वापस ले लिये गये हैं और न्यायालय ने मुकदमे वापसी को मान्यता भी प्रदान कर दी है।

यह सूचना सर्व साधारण की जानकारी तथा भ्रम निवारण हेतु प्रकाशित की जाती है।

शिषि--सम्वाददाता 'आर्यमित्र'

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा, राजकोट (गुजरात) ऋषि बोधोत्सव वर्ष १९८६

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दि० ७ से ९ मार्च को ऋषि जन्म स्थान टंकारा मे ऋषि बोधोत्सव का विशाल समारोह होने जा रहा है इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा आर्य जगत के प्रसिद्ध तपस्वी विद्वान महात्मा दयानन्दजी (देहरादून) होंगे। देश देशान्तर से पधारे आर्य विद्वान तथा कलाकार ऋषि भक्त इस अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि ऋषि के चरणों में अर्पित करेंगे। ऋषि मेला पर आवास भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क होगा। रामनाथ सहगल मंत्री

आर्य समाज बांसी (बस्ती) का ७७ वां वार्षिकोत्सव दि० ५ से ७ मार्च ८६ के मध्य सोल्लास सम्पन्न होगा जिसमे आर्य जगत के प्रमुख विद्वान एव वक्ता सम्मलित हो रहे है। मंत्री

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका पावमानी

प्रकाशित हो चुकी है। पहले अंक में पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पंच यज्ञ प्रकाश' प्रकाशित की गई है। इस अंक का मूल्य ५) रुपये हैं। पाँचों महा यज्ञों पर बड़ी खोज पूर्ण पुस्तक है।

पत्रिका का वार्षिक शुल्क बीस रुपये है। अगले अंक मे शोध लेख एव प बुद्धदेवजी विद्यालङ्कार द्वारा अप्रकाशित शतपथ ब्राह्मण का समर्पण भाष्य का प्रकाशन प्रारम्भ किया जा रहा है जो निरन्तर धारा वाही रूप मे अगले अंकों में भी चलता रहेगा। विद्वान्-स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए एक सुअवसर है। कृपया अपने पूरे नाम पते सहित पत्रिका का वार्षिक शुल्क २०) रुपये इन्द्रराज प्रबन्ध सम्पादक—द्वारा आर्य समाज मेरठ शहर के पते पर-भेजें और वैदिक शोध निबन्ध तथा शतपथ—भाष्य से लाभ उठावें।

इन्द्रराज प्रबन्ध सम्पादक पावमानी

वर की आवश्यकता

२६ वर्षीय, १५५ से० मी० एम० ए०, गुणवती सावले रंग की वैश्य कन्या के लिये वर की आवश्यकता है उपयुक्त विधुर अथवा तलाक शुदा भी स्वीकार्य जाति बन्धन नहीं।

श्री रंगीलाल आर्य
स्थान पो० जसमौर
(सहारनपुर)

समाचार

—आर्य समाज सकरावां (फर्रुखाबाद) का वार्षिकोत्सव दि० ६ से ८ मार्च ८६ के मध्य सम्पन्न होगा। जिसमें आर्य वैदिक प्रवक्ता डा० आनन्द सुमन तपोवन आश्रम देहरादून पधार रहे हैं। मन्त्री

—आर्य समाज बहराइच का वार्षिकोत्सव दि० ८ मार्च से ११ मार्च १९८६ के मध्य सोल्लास सम्पन्न होगा। मन्त्री

-हरदोई-देहटागोकुल आर्य समाज का वार्षिक उत्सव दि० १८ जनवरी से २० जनवरी ८६ तक उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री शांती स्वरूप जी ने गृहस्थ आश्रम त्याग कर वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा श्री पं० केशव देवशास्त्री वानप्रस्थ से प्राप्त की।

विमल कुमार आर्य
एडवोकेट

—आर्य समाज मुरलीपुर रार कानपुर का वार्षिकोत्सव दि० १३ से १५ जनवरी के मध्य धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। मन्त्री

राम जन्म भूमि

(पृष्ठ ४ का शेष)

सतोष का विषय है कि सैकड़ो वर्षों के बाद फैजाबाद के जिला जज ने इस विवाद का न्यायिक ढग से अन्त कर पूजा और दर्शन के लिए श्री राम जन्म भूमि का ताला खुलवा दिया। राष्ट्रीय वृत्ति के प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह किसी सम्प्रदाय का हो, इस ऐतिहासिक निर्णय का स्वागत करना चाहिये।

गजेटियर के अनुसार वर्ष १८५७ मे जब कतिपय साम्प्रदायिक तत्वों द्वारा हिन्दुओं को पूजा-दर्शन के लिए रोका जाने लगा तो उन्होने घेराबन्दी शुरू की, तब इस घेरे के बाहर १७ गुणा २१ फुट का एक चबूतरा बनाकर प्रतीक रूप से श्री राम जन्म भूमि की पूजा और उपासना की जाने लगी। कहा जाता है नवाब वाजिद अली शाह ने इस चबूतरे की राम चन्द्र की प्रतिमा को चांदी की छतरी भी प्रदान की।

चबूतरे पर मन्दिर बनाने का प्रयास

वर्ष १८८५ मे महत रघुबरदास नामक एक संत ने उक्त चबूतरे पर जब मन्दिर बनाने का प्रयास किया तो उसे रोका गया। तब सन्त ने न्यायालय की शरण ली। तत्कालीन न्यायाधीश ने वहाँ मन्दिर बनाने की अनुमति तो नहीं दी किन्तु अपने फैसले मे विक्रमादित्य के राम जन्म-भूमि पर बने विशाल मन्दिर को ध्वस्त करने को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। वर्ष १९३४ मे फिर राम जन्म भूमि पर अधिकार कर, वहां मन्दिर बनाने का आंशिक रूप से सफल प्रयास किया गया, किन्तु वह पूरी तौर से सफल न हो पाया किन्तु तभी से मस्जिद में नमाज पढ़ना बन्द हो गया।

जब राम जन्म भूमि मे ताला लगा

वर्ष १९४९ मे जन्म भूमि का विवाद जब फिर उठ खड़ा हुआ तो वहा पुलिस का पहरा लगा दिया गया और बिना किसी न्यायालय के निर्देश के उसके मुख्य द्वार पर ताला लगा दिया गया। उसके बाद सिटी मजिस्ट्रेट श्री मार्कण्डेय सिंह ने विवाद के कारण श्री राम जन्म-भूमि की समस्त सम्पत्ति को दण्ड संहिता की धारा १४५ के अन्तगत कुर्क कर लिया तथा तत्कालीन नगरपालिका के अध्यक्ष श्री प्रियादत्त राम को उसका रिसीवर बना दिया। उनकी मृत्यु के बाद उनके सुपुत्र को वह स्थान मिला।

विवादाधीन मुकदमे

अब इस विवाद के सम्बन्ध मे कुल चार मुकदमे चल रहे है। २/५०, २५/५०, २६/५० और १२/६१ नम्बर वाले ये मुकदमे फैजाबाद की दीवानी अदालत मे दायर किये गए। २६/५९ का मुकदमा निर्मोही अखाड़े का १२/६१ सुन्नी सेन्ट्रल वक्फ बोर्ड का है जो राम जन्म भूमि के स्वामित्व से सम्बन्धित है, जो विचाराधीन है।

अन्य दो मुकदमे जो अल्पसंख्यको के एक वर्ग द्वारा पूजा व दर्शन के निषेध में निषेधाज्ञा निकालने से सम्बन्धित थे, सिविल जज ने जिसमे प्रमाण पत्र दिया था कि हिन्दुओं को पूजा दर्शन की मिली अनुमति मे अब व्यवधान नहीं डाला जाए। उन्हें अपने इस अधिकार के प्रयोग की छूट दी जाए। अपील में सिविल जज के उक्त निर्णय की पुष्टि उच्च न्यायालय ने भी कर दी।

अधिवक्ता श्री उमेशचन्द्र पाडेय ने इसी आदेश को आधार बनाकर न्यायालय मे अर्जी दी कि उक्त निर्णयों के होते हुए मंदिर मे ताला डालकर पूजा व दर्शन की अनुमति मे व्यवधान डालना अदालत की अवमानना है। अतएव जिला शासन को ताला जल्द खुलवाने का निर्देश दिया जाए।

फैजाबाद के जिला जज ने उभय पक्षो को सुनने के बाद जिला प्रशासन को ताला खुलवाने का निर्देश दिया और न्यायालय के निर्देश मे ताला खोल भी दिया गया।

ताला खुलजाने के बाद देश में ही नहीं विदेश मे भी सतोष और हर्ष व्यक्त किया गया अल्पसंख्यको के भी समझदार समुदाय ने चिर-कालिक विवाद के न्यायालय के माध्यम से हल किये जाने पर सतोष व्यक्त किया।

इनका कहना है कि भारतीय स्वतन्त्रता के लिए बलि देने वाले अमर शहीद टीपू सुल्तान की बलि भूमि और कब्र के पास मंदिर और मस्जिद अगल-बगल बने हुए हैं जिन पर आज तक किसी ने भी आपत्ति नहीं प्रकट की। इसी भाँति लखनऊ जिले के काकोरी मार्ग पर भी बने पुल के मुहाने पर नवाब आसफुद्दौला द्वारा बनाये गये मन्दिर-मस्जिद अगल-बगल स्थित है।

इन प्रमाणो को प्रस्तुत करते हुए मेरे मुस्लिम मित्रों ने यह भी बताया कि अनेक मस्जिदें ऐसी पड़ी हैं जिनमे चिराग भी नहीं जलता तो ऐसी बाबरी मस्जिद पर ही मोह क्यो? मुस्लिम धर्माज्ञा के अनुसार जिसमे नमाज भी नहीं पढ़ी जा सकती? इनका कहना है कि हमारी जाति के साम्प्रदायिक तत्व अपनी राजनीति और रोटी-रोजी चलाने के लिए श्री राम जन्म भूमि का विवाद खड़ा किये हुये हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इतिहास सिद्ध राम जन्म भूमि को हिन्दुओं को स्वेच्छा से सौंप महान इस्लाम धर्म की उदारता का परिचय दिया जाए।

हाल ही मे प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी ने मालद्वीप की यात्रा मे वहाँ बनी तीन सौ वर्ष पुरानी मस्जिद के जीर्णोद्धार के लिए सरकारी कोष से करोड़ों रुपये और कीमती गलीचे प्रदान किये। इसी तरह लखनऊ के इमामबाड़ों, आगरा के ताजमहल, आगरा, दिल्ली एवं फतेहपुर सीकरी के मुस्लिम महत्व के स्थलों के जीर्णोद्धार और रख-रखाव मे अरबों रुपये खर्च किये जाते है। ऐसी स्थिति मे सम्राट विक्रमादित्य द्वारा निर्मित अयोध्या के श्री राम जन्म भूमि स्थित ध्वस्त मन्दिर के पुनर्निर्माण का दायित्व भी भारत सरकार का है और यही उसकी धर्म निरपेक्षता की कसौटी भी है।

पुरातात्विक दृष्टि से किसी भी सम्प्रदाय के महत्व के स्थलो के पुनर्नवीकरण पर किसी को आपत्ति न होनी चाहिये। मूल बात यह है कि किसी सम्प्रदाय को अपने धार्मिक स्थल पर पूजा और दर्शन के लिए रोका नहीं जा सकता। राम जन्म-भूमि में ताला लगाकर इस अधिकार को छीन संविधान की ही नहीं न्यायालय की भी अवमानना की गई थी। अतएव ताला खुलने का स्वागत सभी सम्प्रदायों को करना चाहिये।

———

आर्यमित्र साप्ताहिक
आर्य कन्याणी-भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 45093 ४२९९३
पंजीकरण स० एल. डब्ल्यू/एन पी ७१
मा० फाल्गुन ११, १८
फाल्गुन कृष्ण ६, १४, रविवार
२,९ मार्च १९८६ ई०



उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आगामी हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रचार एवं सेवा शिविर

निश्चय किया गया है कि आगामी दिनांक १४ जनवरी से ९, १० अप्रेल ८६ तक लगने वाले हरिद्वार मे बारह वर्षीय कुम्भ मेले के ऐतिहासिक अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रचार एवं सेवा शिविर लगाया जाय। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने जीवन में कुम्भ के अवसरपर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसे भी ११९ वर्ष के लगभग हो चुके हैं। अत अन्धकार एवं रूढिवादिता का खण्डन करते हुए समुचित मार्ग दर्शन का प्रचार किया जायेगा। विद्वानों के भाषण, उपदेश होंगे, सेवा शिविर द्वारा यात्रियों की यथासाध्य सेवा आदि की व्यवस्था रहेगी साथ ही विशेष स्नान पर्वों के दिन ऋषि लंगर का भी आयोजन होगा वहीं शिविर लगाकर सभा के वरिष्ठ अधिकारी भी स्वयं व्यवस्था की देखरेख करेंगे। समस्त प्रदेश की उपप्रतिनिधि सभाओ, आर्यसमाजो और आर्यजनों से अनुरोध है कि इस अवसर पर हमारी सहायता करें, अपने क्षेत्र मे धन और अन्न आदि का संग्रह करें, सभा को सूचना दें और सुविधानुसार उनका संग्रहीत अन्न हरिद्वार भिजवाने का प्रयास किया जाय। सबके सम्मिलित सहयोग से ही हमारे उद्देश्य सम्पन्न हो सकते हैं तदर्थ सबका सहयोग अपेक्षित है और इस में अविलम्ब कार्य प्रारम्भ कर दिया जाय।

इन्द्रराज	कृष्ण बलदेव महाना	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ मार्च १९८६ को समाप्त हो जाता है। वी पी भेजने मे ४-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी पी न भेजी जाय। जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) भेज दें अन्यथा उनके नाम वी पी भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी पी भेजने के लिए हमें बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे है। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) कर दिया गया है।

३५७, ७५४, ९३७ १२३८, १८४५, १९४४, २१५४, २३७२, २६७०, २७३६, ३९८६, ४३३०, ४३५५, ५५३३, ५८४५, ६०४३, ६६१३, ८२१३, ८२१५, ८२२९, ८२३८, ८७३५, ८९१३, ८९१२, ९६२७, १०१२१, १०१२३, ११९४८, ११५६२, ११८७८, १२१२४, १२१२६, १२१३५, १२१४०, १२१४३, १२१४४, १२६०८, १२६११, १२६२६, १२६२७, १२६२९, १२६३०, १२८४४, १२८४५, १२८४६, १२८५२, १२८५५, १२८५६, १२८५७, १३०६३, १३०६५, १३०६९, १३४२८, १३४२९, १३४३०, १३४३१, १३४३४, १३४३७, १३४३८।

विनीत—
—व्यवस्थापक

शताब्दि महोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश का

१५ से १८ मई तक—१९८६ के मध्य डी० ए० वी० कालेज प्राङ्गण—लखनऊ में

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० को स्थापित हुए एक सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। सौ वर्षों में सभा ने प्रदेश के आर्य समाजों को सङ्गठित करने और उन्हें दिशा निर्देशन का यथा साध्य प्रयास किया है। शताब्दि समारोह विशेष भव्यता के साथ मनाया जायेगा जिसमे आर्यजगत् के मूर्धन्य नेताओं के अतिरिक्त भारत के प्रधान मन्त्री अथवा राष्ट्रपति विशेष अतिथि होंगे।

० समस्त आर्यसमाजें आर्य उपप्रतिनिधि सभायें, आर्य जन और उत्तर प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिको से अनुरोध है कि इसे सफल बनाने के लिये हमारे हाथों को सुदृढ़ करें अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सभा को भेजने का प्रयास करें।

इस अवसर पर सभा के १०० वर्ष का इतिहास प्रकाशित होगा। समस्त आर्यसमाजों की विवरण पत्रिका भी संलग्न होगी। अतः समस्त आर्यसमाजें एक मास के अन्तर्गत अपने समाज का इतिहास अपने क्षेत्र के विगत १०० वर्षों के अन्तराल के विशेष आर्यजनों का परिचय और गतिविधियो का विवरण प्रस्तुत करें जिससे विवरण पत्रिका मे सम्मिलित किया जा सके। इस अधिवेशन की सफलता के पीछे प्रदेश की समस्त आर्यसमाजो का समवेत शक्ति होना आवश्यक है।

इन्द्रराज	मनमोहन तिवारी
प्रधान	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल मुद्रक



आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.



१८८६ - १९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ

विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों पर विचार

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १. फोन ४५६६३

ओ३म्
आर्य मित्र



सम्पादकीय

लखनऊ-रविवार, , १६ मार्च १९८६, दयानन्दाब्द १६१
सृष्टिसम्वत १९७२९४९०८६

आरिफ खां को साधुवाद—

केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री मो० आरिफखां ने अपने पद से त्याग पत्र देकर सिद्धांत प्रियता और नैतिकता के उच्चतम आदर्शों को राजनीति के पंकिल क्षेत्र मे स्थापित किया है। मुस्लिम महिला संरक्षण तलाक विधेयक जो राजीव सरकार ने लोक सभा मे प्रस्तुत किया और जिसमे मुस्लिम महिलाओं को प्रगति विकास के पथ से पीछे ढकेल दिया गया है के विरोध में आरिफ का त्याग पत्र एक ऐतिहासिक कदम है।

भारतीय लोक सभा के मुस्लिम लीगी सदस्य श्री सुलेमान बनात वाला ने मार्च १९८५ मे एक व्यक्तिगत विधेयक प्रस्तुत किया जिसमें प्रयास किया कि भारतीय दंड विधान की धारा १२५ जिसके अन्तर्गत सर्वोच्च न्यायालय ने परित्यक्ता शाहबानो को उसके पति से गुजारा भत्ता दिलवाया था वह धारा मुसलमानो पर लागू न हो। श्री आरिफ मुहम्मद खां ने इसके विरोध में बोलने के लिये राजीव गांधी को सूचित किया और उनकी अनुमति से दि०२३ अगस्त १९८५को लोकसभा मे बनात वाला की विधेयक पर आरिफ ने जो अपने विचार प्रस्तुत किये वे बड़े बड़े ही मुस्लिम धर्म शास्त्रों के अध्ययन के बाद प्रस्तुत थे और जिसमे धारा १२५ का समर्थन था और किसी भी मुस्लिम शरीयत के प्रतिकूल नहीं था। श्री आरिफ की इस प्रभावशाली भाषण के लिये लोक सभा और उसके बाहर उनकी प्रशंसा की गई तथा शाहबानों के प्रश्न को लेकर जो कट्टर पंथी मुसलमान साम्प्रदायिकता फैला रहे थे उनके मुह पर भी आरिफने एक बहुत करारा प्रहार किया था।

राजनीति आज कलुषित और कलंकित है। स्वार्थ के सामने महान सिद्धांतो की बलि देना भी उचित माना जाता है। आसाम का निर्वाचन नजदीक आया और आरिफ के निष्पक्ष भाषण से श्री राजीव जी ने यह समझा कि आसाम के मुसलमान कांग्रेस से अलग हो जायेंगे उन्हे कांग्रेसी वोटों का बैंक बनाने के लिये राजीव जी ने विचार बदला और लोक सभा मे जेड० आर० अंसारी जो दूसरे मुसलमान राज्य मन्त्री है उनसे ऐसा भाषण दिलवाया जिसमे सर्वोच्च न्यायालयके विद्वान न्यायाधीशों के लिए असम्मान पूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया। मुस्लिम शरीयत के पालन की बात कहते हुए साम्प्रदायिकता को उभारा गया। श्री आरिफ के कान खड़े हो गये और यहां तक कि राजीव अपने एक मुस्लिम देश की यात्रा पर जाने के लिए आरिफ को अपने साथ भी नहीं ले गये उधर संकेत किया गया कि सरकार मुस्लिम महिला सरक्षण तलाक विधेयक प्रस्तुत कर रही है जिसकी रूपरेखा और समर्थन मुस्लिम लीग, मुस्लिम मजलिस, मुस्लिम परसनल ला और मुस्लिम मजलिस इत्तिहाद का समर्थन लिया गया है और धारा १२५ (दंड विधान) से मुसलमान मुक्त रहेंगे।

श्री मो० आरिफ ने इसका विरोध किया और कानून मन्त्री श्री अशोक कुमार सेन को अपने विचारो से अवगत कराया तथा दिनांक २५ फरवरी १९८६ को जिस दिन विधि मंत्री ने मुस्लिम महिला विधेयक लोक सभा में प्रस्तुत किया उसके पहले ही ३५ वर्षीय नवयुवक प्रगतिशील विचार तथा दृढ़ विश्वासी श्री आरिफमो० खां ने अपने मन्त्री पद से त्यागपत्र प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी को भेज दिया।

श्री राजीव ने अरुणसिंह, श्री अरुण नेहरू द्वारा श्री आरिफ के ऊपर दबाव डाला कि वे अपने विचार त्याग दें परन्तु निर्भीक साहसी आरिफ अपने विचारों पर दृढ़ रहे और यहां तक कह दिया कि यह विधेयक साबित कर रहा है कि सरकार केवल मुस्लिम लीग ऐसे साम्प्रदायिक दल को मुसलमानो का प्रतिनिधि मानती है और लीग आज वह वातावरण पैदा कर रही है जो भारत विभाजन के समय हुआ था। मुसलमानों को खुश करने के लिए सिद्धान्त से आज नीचे गिरा जा रहा है मैं त्यागपत्र आज निश्चय के साथ भेज रहा हू वापस नहीं लूंगा।

श्री आरिफ मोहम्मद खां की जहां तक प्रशंसा की जाय कम है और भारत सरकार ने यह भी कहा था कि अन्य मुस्लिम देशों में मुस्लिम महिलाओ के तलाक सम्बन्धी जो नियम है उनका अध्ययन किया जायेगा परन्तु जब मुस्लिम देशों के द्वारा विषय के नियम मंगवाये गये तो ज्ञात हुआ कि आज अन्य मुस्लिम देश प्रगतिशील हैं और अपने यहां शरियत धार्मिक नियमों से भी ऊपर बढ़कर मानवता को महत्व दे रहे हैं अत राजीव जी ने इस रिपोर्ट को भी लोक सभा मे प्रस्तुत नहीं किया।

यह मुस्लिम महिला सम्बन्धी विधेयक मुस्लिम कठमुल्लापन का एक स्पष्ट चित्र है। राजीव सरकार ने उन महान सिद्धांतो को भी तिलांजलि दे दिया जिस पर कांग्रेस अब तक कार्य कर रही थी। मुस्लिम लीग को कभी भी सारे मुसलमानों का प्रतिनिधि नहीं माना गया जिसे राजीव गांधी ने मान लिया और शाहबानो सम्बन्धी मुस्लिम हो हल्ला के सामने घुटने टेक दिये तथा सैकड़ो मुस्लिम बुद्धि जीवी, मुस्लिम महिलायें न्यायवेत्ता तथा विधि वेत्ता जिन्होंने इस बिल की कड़े शब्दों मे निन्दा की है उनकी आवाज को भी राजीव ने ठुकरा दिया।

संक्षेप मे आज राजीव सरकार मे किसी भी व्यक्ति की स्वय आत्म वृढ़ता नहीं है प्रधान मन्त्री, उनके एक सम्बन्धी तथा विद्यालय के एक सहयोगी मिलकर जो तय करते है वही नियम बन जाता है यह विधेयक न तो कांग्रेस के संसदीय दल ने प्रस्तुत किया न मन्त्रिपरिषद् मे विचार किया गया सीधे अशोक सेन ने लोक सभा मे प्रस्तुत कर दिया। यदि बहुमत के बल पर अदूरदर्शिता का परिचय देते हुए राजीव सरकार इस बिल को पास कर देती है तो यहनिश्चय है कि कल सिख परसनल ला की मांग उठ जायेगी और जिसके लिए जैसे आज मुल्लाओ से परामर्श लिया गया है वैसे ही सिखों के धार्मिक जत्थेदारों के इशारे पर पास करना पड़ेगा।

'आर्यमित्र' राजीव सरकार से अनुरोध करता है कि भारत के संसदीय इतिहास मे एक 'काली रेखा' खींचने का प्रयास न करें और आरिफ मोहम्मद को समस्त आर्य जनता की ओर से साधुवाद देता है कि वे भारतीय राजनीति में भविष्य मे और उज्ज्वल छवि के साथ आगे बढ़ें।

-आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

वैदिक सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द

लेखक-यशपाल आर्यबन्धु आर्यनिवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद २४४०३२)

आर्य समाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदों के अद्वितीय विद्वान् थे। उन्होने वेदो के मर्म को भली भांति समझ कर जन सामान्य के सम्मुख प्रस्तुत किया था। वैदिक सिद्धांतो को जितनी सूक्ष्मता से उन्होने अध्ययन किया था। उतना स्यात् ही कोई अन्य कर पाया हो। इसीलिये वे उन सिद्धातो को जन सामान्य के सम्मुख स्पष्ट रूप मे रखने मे भी सफल हुये। महर्षि द्वारा व्याख्या पाकर वैदिक सिद्धांत भी महर्षि दयानन्द के सिद्धांतो के नाम से लोक व्यवहार मे सुविख्यात हुये। महर्षि के सिद्धातो की यह विशेषता है कि वह स्पष्ट, सुलझे हुये तथा युक्तियुक्त है। ससार मे कोई भी व्यक्ति उन सिद्धातो को असत्य सिद्ध करने मे समर्थ नहीं हो सकता। वैदिक सिद्धांतो के मर्मज्ञ पडित बिहारी लाल शास्त्री का यथार्थ कथन है कि— दयानन्दस्य सिद्धात सुदृढक मर्मन्वित । न खडयितु शक्या मायावाद विमोहितै ' (अगद चरण, पृष्ठ ११ इसी प्रकार क्रांति और रामप्रसाद बिस्मिल का भी कथन है कि-'आर्य समाज के सिद्धांत सार्वभौम हैं, उन्हे हराने की किसी मे सामर्थ्य नहीं है। (देख-मुझ आर्य समाज क्यो प्रिय है, पृष्ठ ७२) वैदिक सिद्धांत होने के नाते महर्षि दयानन्द के सिद्धांत भी वेदो की भांति ही सार्वभौम एव शाश्वत है।

यद्यपि वैदिक सिद्धात उतने ही पुराने हैं कि जितने स्वय वेद है पर उनका उद्घाटन आधुनिक युग मे महर्षि दयानन्द ही समुचित रूपेण कर पाये थे। उदाहरण के लिये मुक्ति से पुनरावृत्ति सिद्धात को ही ले लीजिये। महर्षि दयानन्द से पूर्व कोई भी व्यक्ति इतने स्पष्ट शब्दो मे इतना खुलकर इस सिद्धान्त को प्रस्तुत नही कर सका था। त्रैतवाद के सिद्धात को भी इतने स्पष्ट रूप मे किसीने प्रस्तुत नहीं किया वैदिक दर्शनो के सम्बन्ध मे भी लोगो मे प्राय यही धारणा थी कि वैदिक दर्शनो मे परस्पर विरोध पाया जाता है। महर्षि ने इस मिथ्या धारणा का सर्वथा निर्मूल कर दिया और उद्घोष किया कि वैदिक दर्शन भिन्न तो है, पर विरोधी नहीं। अपितु एक ही सत्य को विभिन्न दृष्टिकोणो से उद्घाटित कर रहे है। तात्पर्य यह कि महर्षि दयानन्द ने प्राय सभी सिद्धातो पर अपना मत स्पष्ट कर दिया है। इस पर भी उनके अनुयायी आर्य जन कतिपय सिद्धान्तो पर निरन्तर विवाद करते चले आ रहे हैं। और आश्चर्य तो यह है कि सभी लोग महर्षि को अपने-अपने पक्ष मे उद्धृत करने लगे है। चाहे तो वह आयुको निश्चित मानने वाले हो अथवा अनिश्चित मानने वाले, वृक्षो मे जीव मानने वाले हो या न मानने वाले सभी महर्षि को अपने अपने पक्ष मे प्रस्तुत करने मे लगे है। पर क्या महर्षि दयानन्दने परस्पर विरोधी मत व्यक्त किये है ? ऐसा तो कोई सोच भी नहीं सकता। फिर दोनों पक्ष उन्हे अपने समर्थन मे कैसे प्रस्तुत कर रहे है ? निश्चय ही कोई एक ऋषि को जबरदस्ती उनके मन्तव्यो के विरुद्ध प्रस्तुत कर रहा है। तो आइये ! देखा जाये कि महर्षि का अपना मन्तव्य क्या है।

विवादक मुख्य दो विषय है। एक-आयु सम्बन्धी कि यह निश्चित है या अनिश्चित और दूसरा वृक्षोमे जीव सम्बन्धी। अत: इन दोनो विषयो पर महर्षि के मन्तव्य हम यहां प्रस्तुत कर रहे है पाठक स्वय निर्णय करें कि महर्षि की एतद विषयक मान्यता क्या है।

आयु निश्चित है कि नहीं ? महर्षि के विचार –

महर्षि दयानन्द ने इस सम्बन्ध मे अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त किये हैं। फिर भी आर्यगण अपनी-अपनी मान्यता की दृष्टिसे उनको घुमा फिरा कर प्रस्तुत करते रहते हैं। अत हम महर्षि के विचारो को बिना किसी पूर्व टिप्पणी के प्रस्तुत कर रहे है ताकि पाठक उस पर शांति से चिन्तन मनन कर सकें। और फिर अपनी मान्यता सुनिश्चित कर सके।

(१) मनुष्य ब्रह्मचर्यादि उत्तम नियमो से त्रिगुण आयु कर सकता है। अर्थात (४००) चार सौ वर्ष तक भी सुख पूर्वक जी सकता है।' ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका वेद सज्ञा विचार।

(२) मुरादाबाद के जगन्नाथ दास कृत आर्य प्रश्नावली—८२)
प्रश्न–जो कुछ ईश्वर ने नियत किया है उसमे न्यूना धिक्य करने वाला कोई नहीं। जो बात जिस प्राणी के लिये जिस काल मे जिस प्रकार से ईश्वर ने नियत की है, उससे विरुद्ध कभी नहीं होती।

समीक्षा (महर्षि दयानन्द द्वारा)

क्या ब्रह्मचर्य और योगाभ्यासादिउत्तम कर्मों से आयु का अधिक होना और कुपथ्य सेवा व्यभिचारादि से न्यून नहीं होता जब ईश्वर का नियत किया हुआ ही होता है तो जीव के कर्मों की अपेक्षा कुछ भी नहीं रह सकती। और जो अपेक्षा है तो केवल ईश्वर ने नियत नहीं किया किन्तु दोनों निमित्तो से होती है। जो हमारा क्रिय माण स्वतन्त्र न हो तो हम उन्नति को प्राप्त कभी नहीं हो सकते। इसी लिये हम कर्म करने मे स्वतन्त्र और ईश्वर जीवो के कर्मों को यथायोग्य जानकर कर्मानुसार शुभाशुभ फल देने मे स्वतन्त्र है।' (देखें–ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन, द्वितीय भाग, तृतीय सस्करण, पृष्ठ ५९४)

(३) जो मनुष्यो मे विवाह का नियम न रहे तो गृहाश्रमके अच्छे-अच्छे व्यवहार सब नष्ट-भ्रष्ट हो जायें। कोई किसी की सेवा भी न करें। और महा व्यभिचार बढ कर सब रोगी निर्बल और अल्पायु होकर शीघ्र शीघ्र मर जाये। कोई किसी से भय व लज्जा न करें। वृद्धावस्था मे कोई किसी की सेवा भी नहीं करे और महाव्यभिचार बढ़ कर रोगी निर्बल और अल्पायु होकर कुलो के कुल नष्ट हो जायें।

(सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास)

(४) 'अन्यथा वीर्य व्यर्थ जाता दोनो की आयु घट जाती।' (स प्र चतुर्थ समुल्लास)

(५) '२४ वर्ष के पश्चात् गृहाश्रम करूंगा तो प्रसिद्ध है कि रोग रहित रहूंगा और आयु भी मेरी ७० व ८० वर्ष तक रहेगी। (तृतीय समुल्लास)

क्रमश

डी.ए.वी की शोभायात्रा स्थगित

पुनः शोभायात्रा की तिथि शीघ्र ही घोषित होने की सम्भावना

डी० ए० वी० शताब्दी के उपलक्ष्य मे १५ फरवरी को दिल्ली मे जो शोभा यात्रा निकलनी थी, वह राजधानी की विषम परिस्थितियो के कारण स्थगित करनी पडी। जिस विशाल पैमाने पर इस शोभा यात्रा की तैयारियाँ की गई थीं, उसे एक दृष्टि से अभूतपूर्व कहा जा सकता है। शोभा यात्रा मे शामिल होने के लिए आर्य जनता का उत्साह भी अतुलनीय था। जिस बड़े पैमाने पर शोभा यात्रा निकलनी थी, उसे देखकर जनता को न केवल डी० ए० वी० आन्दोलन की बल्कि आर्य समाज की, और कहना चाहिये कि समस्त हिन्दू समाज की शक्ति की एक झांकी मिल जाती।

इस शोभा यात्रा के लिए सम्पूर्ण तैयारिया हो चुकी थीं। लाल-किला के मैदान से यह शोभा यात्रा प्रारम्भ होनी थी। वह मैदान खूब ढग से सजा दिया गया था। शोभा यात्रा के सारे मार्ग मे लाउडस्पीकर और ओ३म् के झण्डे लग चुके थे। स्थान-स्थान पर तोरण द्वार बन चुके थे। चाँदनी चौक के बड़े व्यापारियों ने स्कूलो के बच्चो मे वितरण के लिये भारी तादाद मे केले और सतरे एकत्र कर रखे थे। दिल्ली के बाहर उड़ीसा, बंगाल और महाराष्ट्र जैसे दूरस्थ प्रदेशो से हजारो आर्य जन इस शोभा यात्रा मे सम्मिलित होने के लिए दिल्ली पहुच चुके थे। आर्यसमाज के अलावा जैनियो और सनातन धर्म के स्कूलो के बच्चे भी शोभा यात्रा मे सम्मिलित होने वाले थे। एक तरह से यह शोभा यात्रा हिन्दुत्व की विराट शक्ति का प्रदर्शन होती।

अचानक १४ फरवरी को दोपहर २ बजे की नमाज के समय जामा मस्जिद मे हजारो मुसलमान एकत्रित हुए। जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला शाह बुखारी ने उनके सामने उत्तेजनापूर्ण भाषण दिया और अयोध्या मे राम जन्म स्थान का ताला खुलने पर उसे बाबरी मस्जिद बताते हुए मुसलमानो से उसका तीव्र विरोध प्रकट करने को कहा। नमाज के बाद हजारो मुसलमान सडको पर निकल आये और उन्होने दरियागंज तथा अन्य इलाको मे तोडफोड शुरू कर दी।
उपद्रव और न भडकने देने के लिए पुलिस को लाठी चार्ज करना पड़ा और कुछ स्थानो पर गोली भी चलानी पडी। अन्त मे कर्फ्यू लगा दिया गया।

उसी दिन शाम को ५ बजे लालकिले मैदान मे मुख्य कार्यकर्ताओ की एक बैठक रखी थी, जिसमे शोभा यात्रा के सुचारु रूप से सचालन के लिए सबको दायित्व सौंपे जाने थे। परन्तु कर्फ्यू के कारण बैठक वहाँ नहीं हो सकी। सब रास्ते बन्द होने के कारण लोग तो बैठक के स्थान तक पहुच ही नहीं सके।

उपर्युक्त स्थिति की सूचना मिलने पर डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के अधिकारियो ने तुरन्त एक आपातकालीन बैठक बुलाई जो प्रो० वेद व्यास जी की अध्यक्षता मे हुई। आपस मे परामर्श के बाद शोभा यात्रा के कार्यक्रम के सम्बन्ध मे पुलिस कमिश्नर से मिलने का निश्चय किया गया। अधिकारी गण पुलिस कमिश्नर से मिले। परन्तु वे किसी भी हालत मे शोभा यात्रा की अनुमति देने को तैयार नहीं हुए। फिर विचार विमर्श के बाद यह सोचा गया कि पुरानी दिल्ली मे कर्फ्यू होने की वजह से शोभा यात्रा निकालना सम्भव नहीं है तो नई दिल्ली मे ही शोभायात्रा निकाल ली जाय। परन्तु पुलिस उसके लिये भी तैयार नहीं हुई क्योकि नई दिल्ली मे भी कोई ऐसी मुख्य सडक नहीं थी, जिस पर कोई मस्जिद न पडती हो। इसलिये वहा भी गडबडी का अंदेशा ज्यो का त्यो मौजूद था। अन्त मे डी० ए० वी० के अधिकारियो ने शोभा यात्रा को स्थगित करना ही श्रेयस्कर समझा।

भारत भर से जिस उत्साह और उमंग के साथ आर्य जनता इस शोभा यात्रा के लिए उमड पडी था, उसके लिए हम आर्यजनता को यह विश्वास दिलाना चाहते है कि शोभा यात्रा पुन निकालने की तिथि घोषित की जायेगी और हमे विश्वास है कि जनता उसमे उसी उत्साह से भाग लेगी। रामनाथ सहगल

संयोजक-डी० ए० वी० शोभायात्रा

शुद्धि पत्र

२३ फरवरी १९८६ के 'आर्यमित्र' पृष्ठ ९ कालम १ मे जो आदेश प्रकाशित हुआ है उसमे पैरा दो मे निश्चय संख्या १० घ पढा जाना चाहिये। —आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

सम्पादक

सम्मेलन स्थगित

पूर्वाञ्चल आर्य सम्मेलन जो ११, १२मार्च का मऊ तथा गोरखपुर मे होने वाला था शासन का आदेश न मिलने से स्थगित कर दिया गया है। —डा० विनय प्रताप

—लक्ष्मी देवी आदर्श विद्यालय ककरघटा (हरदोई) का वार्षिकोत्सव दिनांक २ फरवरी ८६ को सोल्लास सम्पन्न हुआ। सभा प्रचारक पं० युगुल किशोर आर्य के मधुर भजन एवं प्रभावशाली उपदेशो का उपस्थित जनता पर व्यापक प्रभाव पडा।

—प० मेवाराम बाजपेयी प्रधानाचार्य

उत्सव

—आर्यसमाज टिकाना (मेरठ) का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक २१ से २३ मार्च १९८६ तक धूमधाम से सम्पन्न होगा जिसमे सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी तथा स्वामी ओमानन्द जी जैसे विद्वान् एव वक्ता सम्मिलित होग। —श्री पाल आर्योपदेशक

—सभी आर्य सज्जनो को सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज सिकन्दराबाद उ० प्र० का स्थापना शताब्दी समारोह दि० १७ से २० अप्रैल ८६ तक मनाया जा रहा है। जिसमे आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान् पधार रहे है। —जगदीशप्रसाद कौशल मन्त्री

—हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दानवीर कर्ण की नगरी करनाल मे २८६७-अर्बन एस्टेट सेक्टर-१३ मे १६ से १८ मई १९८६ (४ से ६ ज्येष्ठ-२०४३) वेद प्रचार समारोह एव यज्ञ, बहुत धूमधाम से हो रहा है। बहुत से योग्य विद्वान् आ रहे हैं। कृपया सपरिवार तथा अपने इष्टमित्रो सहित पधारने की कृपा करें। —स्वामी सच्चिदानन्द

—औरैया आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव दिनांक २९, ३०, ३१ मार्च व १ अप्रैल १९८६ को सोल्लास सम्पन्न होने जा रहा है, जिसमे उच्चकोटि के महोपदेशको एवं भजनोपदेशको की स्वीकृतियाँ प्राप्त हो चुकी है। —वेदप्रकाश आर्य मन्त्री

मध्वाचार्य और महर्षि दयानन्द का दर्शन

[श्री प्रो० रत्नसिंह जी, बी २१, गांधीनगर, गाजियाबाद]

मध्वाचार्य को 'पूर्ण प्रज्ञ' और 'आनन्द तीर्थ' नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म ११९९ ई० मे दक्षिण कनारा जनपद मे उडीपी के निकट एक ग्राम मे हुआ। छोटी आयु मे ही उन्होंने वैदिक ज्ञान मे दक्षता प्राप्त की। और सन्यास आश्रम मे दीक्षित हो गए। उन्होने विद्याध्ययन, चिन्तन प्रार्थना और वाद-विवाद मे अनेक वर्ष व्यतीत किये। यज्ञो मे पशु हिंसा की प्रथा को मिटाने का उन्होने बहुत प्रयास किया। १२७८ ई० मे ७९ वर्ष की आयु मे उनका देहावसान हुआ। शंकराचार्य की भांति इन्होने भी ब्रह्मसूत्र, उपनिषद व भगवद्गीता का भाष्य किया। इनकी दार्शनिक विचारधारा का जन्म शंकर के अद्वैतवाद के विरोध मे एक प्रतिक्रिया रूप मे हुआ। इनके दर्शन को 'विशुद्ध द्वैतवाद' नाम से जाना जाता है।

महर्षि दयानन्द का जन्म मध्वाचार्य के देहावसान के ५४६ वर्ष पश्चात् सन् १८२४ ई० मे काठियावाड़ के मोरवी राज्य के टंकारा नामक ग्राम मे हुआ। २२ वर्ष की आयु मे गृह त्याग कर इन्होने सन्यास आश्रम ग्रहण किया और ५९ वर्ष की आयु प्राप्त कर सन् १८८३ ई० मे परलोक गमन किया। महर्षि दयानन्द का अध्ययन ब्रह्मसूत्र-उपनिषद् व भगवद्गीता तक ही सीमित न था। वेद को स्वत प्रमाण मानकर उन्होंने अपने दर्शन का आधार वेद को बनाया। महर्षि के दर्शन को त्रैतवाद के नाम से पुकारते है।

मध्वाचार्य और दयानन्द मे लगभग साढ़े पांच शताब्दियो का अन्तर है। इस अवधि मे दार्शनिक क्षेत्र मे अनेक मत उत्पन्न हुए। इन दोनो दार्शनिको के मत मे कई समताएं और कई असमताएं हैं। दार्शनिक दृष्टि से दोनो वस्तुवादी है। दोनो ने बाह्यजगत को शंकर की भांति मिथ्या न मानकर यथार्थ स्वीकार किया है। ईश्वर, जीव, व प्रकृति की स्वतन्त्र सत्ता मे दोनो का विश्वास है। दोनो के मतानुसार ईश्वर जगत् का निमित्तकारण और प्रकृति उपादान कारण है। दोनो ने मानव जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति बतलाया है। प्रस्तुत लेख में हम मध्व व दयानन्द के ईश्वर व जीवात्मा सम्बन्धी विचारो तक ही अपने को सीमित रखेंगे।

ईश्वर

मध्व ने दो प्रकार की सत्तायें स्वीकार की हैं—स्वतन्त्र व परतन्त्र। ईश्वर की स्वतंत्र सत्ता है। वह स्वयम्भू है। वह निर्गुण नहीं है। वह सच्चिदानन्द स्वरूप, अनादि, अनन्त, निर्विकार, सब शक्तिमान, सर्व व्यापक, निराकार, नित्य और निर्विकार है। उसमे असंख्य गुण है। ईश्वर वेदों का रचयिता है। वह सृष्टि की रचना, स्थिति व संहार का कारण है। जयतीर्थ मे अपनी पुस्तक तत्वप्रकाशिका मे लिखा है "ब्रह्म जगत का निमित्त कारण उस रूप मे है जिस रूप मे पिता पुत्र का निमित्त कारण है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान है। वह असाधारण शक्तियों का पुंज है। वह असंभव को सम्भव कर सकता है। जीव के अज्ञान का कारण ईश्वर की माया है। अविद्या के कारण जीवात्मा के स्वाभाविक गुण, ज्ञान व आनन्द ढके रहते हैं। इस प्रकार अविद्या का कारण होने से ईश्वर जीव के बन्धन का भी कारण है ईश्वर परम दयालु भी है। वह अपनी दयासे जीव के बंधन काटकर उसे मुक्ति प्राप्त कराता है। इसलिए जीवात्मा के बंधन व मुक्ति का कारण ईश्वर है। आवश्यकतानुसार समय-समय पर ईश्वर अवतार धारण करता है।

मध्वाचार्य की भांति महर्षि दयानन्द ने भी ईश्वर को सच्चिदानन्द, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, नित्य और निर्विकार आदि स्वरूप वाला स्वीकार किया है। ईश्वर के स्वरूप के सम्बन्ध मे दोनो की कई बातो मे समानता है। परन्तु मध्वाचार्य की कई बातों से महर्षि दयानन्द के विचारो का मेल नहीं खाता। मध्वाचार्य ईश्वर को निर्गुण नहीं मानते। दयानन्द के मत मे ईश्वर सगुण और निर्गुण दोनो है। 'अपने-अपने स्वाभाविक गुणो से सहित और दूसरे विरोधी के गुणो से रहित होने से सब पदार्थ सगुण और निर्गुण है। कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है कि जिसमे केवल निर्गुणता व केवल सगुणता हो, किंतु एक ही मे सगुणता और निर्गुणता सदा रहती है। वैसे ही परमेश्वर अपने अनन्त ज्ञान, बलादि गुणो से सहित होने से सगुण और रूपादि जड के तथा द्वेषादि जीव के गुणो से पृथक होने से निर्गुण कहाता है।
(सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास-७)

मध्वाचार्य का यह कथन कि ईश्वर सर्वशक्तिमान होने के कारण असम्भव को सम्भव कर सकता है, युक्त नहीं है। बहुत मध्व ही नहीं बल्कि अनेक विद्वान् इस भ्रम के शिकार रहे है कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है, क्योकि वह सर्वशक्तिमान है। महर्षि दयानन्द ने इस विचार धारा का प्रबल खण्डन किया है। सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास मे महर्षि लिखते हैं, 'जो तुम कहो कि (ईश्वर) सब कुछ चाहता है और कर सकता है तो हम तुमसे पूछते है कि परमेश्वर अपने को मार अनेक ईश्वर बना स्वयं अविद्वान् चोरी, व्यभिचारादि, पाप कर्म कर और दुःखी भी हो सकता है। जैसे ये काम ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव से विरुद्ध है तो जो तुम्हारा कहना है कि वह सब कुछ कर सकता है, यह कभी नहीं घट सकता।' इसी बात को और स्पष्ट करते हुए वे सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास मे लिखते है—'परन्तु क्या सर्वशक्तिमान, वह कहाता है कि जो असम्भव बात को भी कर सके। जो कोई असम्भव बात अर्थात् जैसा कारण के बिना कार्य को कर सकता है तो बिना कारण दूसरे ईश्वर की उत्पत्ति और स्वयं मृत्यु को प्राप्त जड़, दुःखी, अन्यायकारी, अपवित्र और कुकर्मी आदि हो सकता है या नहीं जो स्वाभाविक नियम अर्थात् जैसा—अग्नि उष्ण, जल शीतल और पृथिव्यादि सब जड़ो को विपरीत गुण वाले ईश्वर भी नहीं कर सकता और ईश्वर के नियम सत्य और पूरे है इसलिए परिवर्तन नहीं कर सकता। स्पष्ट है कि सर्वशक्तिमान का यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर जो चाहे सो करे। इस शब्द का अर्थ केवल इतना ही है कि 'परमात्मा बिना किसी के सहाय के अपने सब कार्य पूर्ण कर सकता है।'

मध्वाचार्य का यह मत कि समय-समय पर ईश्वर अवतार धारण

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मध्वाचार्य और महर्षि दयानन्द का दर्शन

(पृष्ठ ५ का शेष)

करता रहता है, महर्षि दयानन्द को मान्य नहीं है। अनेक युक्तियों एव शब्द प्रमाण के आधार पर उन्होंने अवतारवाद का खण्डन किया है। जीवात्मा के बन्धन व मोक्ष का कारण ईश्वर है, मध्वाचार्य के इस मत से महर्षि दयानन्द असहमत हैं। उनके म-ानुसार जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है। अपने स्वतन्त्रतापूर्वक किये गये पवित्र, कर्म, पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति और अपवित्र मिथ्या भाषणादि कर्म पाषाणमूर्त्यादि की उपासना और मिथ्या ज्ञान से बधन होता है।

जीवात्मा

मध्व मतानुसार जीवात्मा ज्ञाता, कर्त्ता व भोक्ता है। यह निरवयव एव नित्य है। जीवात्मा का शरीर व इन्द्रियों से सयोग होना जन्म कहलाता है और वियोग होना मृत्यु। इस मत की एक विचित्र विशेषता यह है कि जीवात्मा को शरीरधारी साकार तत्व माना गया है। इस मत के समर्थन में तर्क यह है-चेतना व आनन्द जीवात्मा का स्वभाव है। दीप के प्रकाश के समान सभी प्रकाशमान द्रव्यों में कुछ न कुछ आकार रहता है। यत. जीवात्मा स्व प्रकाशमान है अत इसमे भी कोई आकार अवश्य रहना चाहिये। यहा प्रश्न यह उपस्थित होता है कि यदि जीवात्मा शरीरधारी है तो इसके शरीर का क्या स्वरूप है। निःसंदेह जीवात्मा का शरीर भौतिक नहीं हो सकता क्योंकि वैसा मानने से यह विनाशशील मानना पड़ेगा। अत. यह शरीर अभौतिक है। माध्व दर्शन के इस मत को देहात्मवाद कहते हैं।

इस मत की एक विलक्षणता यह है कि जीवात्मा को अपनी सत्ता के लिए ईश्वराश्रित मानते हुए भी अपने कर्मों के लिए स्वयं उत्तरदायी अनादि व नित्य माना गया है। आनन्द जीवात्मा का स्वाभाविक गुण है जो अविद्या के आवरण से सुप्त रहता है। जीवात्मा की चेतना व आनन्द ईश्वर की चेतना व आनन्द से भिन्न है। जीव संख्या मे अनेक हैं। उनकी भिन्नता का कारण उनका अदृष्ट है। जीव और ईश्वर मे भेद है। ईश्वर विभु है और जीवात्मा अणु या परिछिन्न है। जीवात्मा के परिमाण के सम्बन्ध मे तीन प्रसिद्ध मत हैं-अणुपरिमाणवाद, मध्यम परिमाणवाद तथा विभु परिमाणवाद। इनमे से दूसरे मत को केवल जैन मानते हैं जिसके अनुसार जीव व शरीर आकार मे समान है। मध्व का अणु परिमाणवाद युक्तियुक्त है। ब्रह्मसूत्र २-३ १९ मे जीवात्मा के उत्क्रान्ति, गति और आगति तीन धर्म माने गये हैं। यदि जीवात्मा को सर्वव्यापक माना जाये तो उस अवस्था में जीवात्मा मे उक्त तीन धर्मों का सामंजस्य नहीं रहता। छोटे बडे शरीरों के अनुसार आत्मा का मध्यमपरिमाण मानने पर उसमें सकोच विकास के आवश्यक होने से अनित्यता दोष की प्राप्ति होगी। अत जीवात्मा का अणुपरिमाण मानना ही ठीक है। जीवात्मा सम्बन्धी मध्वमत से महर्षि दयानन्द की कई बातों मे समानता है, यथा-जीव का ज्ञातृत्व कर्तृत्व व भोक्तृत्व, आकार मे अणुपरिमाण, जीवों की भिन्नता का कारण उनका अदृष्ट और जीवात्मा की नित्यता। परन्तु इस मत की दो बातें महर्षि दयानन्द को मान्य नहीं हो सकती। जीवात्मा को नित्य मानते हुए उसे साकार मानना समीचीन नहीं है। प्रत्येक साकार वस्तु सावयव होती है। सावयव वस्तु समय विशेष में रचित होती है और ऐसी वस्तु नित्य कदापि नहीं हो सकती। इसी प्रकार यह मानना कि ईश्वर ने जीवात्मा को उत्पन्न किया युक्त, दि नहीं है। जो उत्पन्न होती है वह सादि है वह नित्य नहीं हो सकती। माध्व मत में आनन्द को जीवात्मा का स्वाभाविक गुण मानना महर्षि दयानन्द को स्वीकार नहीं। आनन्द केवल ईश्वर का स्वाभाविक गुण होता है। सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास मे महर्षि दयानन्द लिखते हैं— (प्रश्न) जीव और ईश्वर का स्वरूप, गुण, कर्म और स्वभाव कैसा है। (उत्तर) दोनों चेतन स्वरूप हैं। ईश्वर के नित्य ज्ञान आनन्द, अनन्त बल आदि गुण है।' स्पष्टत· जीव का स्वाभाविक गुण चेतना है जबकि ईश्वर मे चेतना और आनन्द दोनों हैं।

जीवात्मा का लक्ष्य—मुक्ति

मध्वाचार्य और महर्षि दयानन्द दोनों के मत मे जीवात्मा का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है। मोक्ष के कारण के सम्बन्ध मे दोनों के विचारों में भेद है। ब्रह्म सूत्र के 'जन्माद्यस्य यत·' सूत्र का भाष्य करते हुए मध्वाचार्य लिखते है—"ब्रह्म जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय और इस के नियमन तथा ज्ञान, अज्ञान, ब·ध और मोक्ष का कारण है। ईश्वर की दया (प्रसाद) से ही मुक्ति प्राप्ति सम्भव है।' इस प्रकार बन्ध और मुक्ति दोनों का कारण ईश्वर है। महर्षि दयानन्द को यह मत मान्य नहीं है। मुक्ति मे जीव का लय होता है अथवा विद्यमान रहता है, इसके बारे में दोनों का मत समान है अर्थात् मुक्तावस्था मे जीवात्मा विद्यमान रहता है। मुक्ति से पुनरावृत्ति के सम्बन्ध मे दोनों के मत मे एकरूपता नहीं है। मध्व मत मे मुक्तावस्था में जीवात्मा वैकुण्ठ धाम मे निवास करती है और वहां से लौटकर इस ससार मे नहीं आती। महर्षि दयानन्द के मत मे मुक्तावस्था में जीवात्मा किसी स्थान विशेष मे निवास नहीं करता वरन् स्वातन्त्र्यतापूर्वक अव्याहत गति से सर्वत्र विचरता है। परान्तकाल तक मुक्ति के आनन्द को भोगकर जीवात्मा पुन संसार में आता है। सत्यार्थप्रकाश नवम समुल्लास मे महर्षि दयानन्द ने प्रकाट्य युक्तियों से मुक्ति से पुनरावृत्ति को सिद्ध किया है। महर्षि का यह मत दार्शनिक क्षेत्र मे अपूर्व देन है।

मध्व मत मे मुक्ति के स्तर या प्रकार को स्वीकार किया गया है। भक्ति और ज्ञान से मुक्ति की प्राप्ति होती है। साधकों की साधना में अन्तर प्रत्यक्ष है। अत उनके फल (मुक्ति) मे भी अन्तर होना चाहिये। इस अन्तर के आधार पर मुक्ति के चार प्रकार माने गये हैं। वे हैं—सालोक्य, सारूप्य, सामीप्य और सायुज्य। सायुज्य अवस्था में जीवात्मा ईश्वर से सयुक्त हो जाता है। यही वास्तविक मुक्ति है। शेष अवस्थायें इसकी अपेक्षा निम्न स्तर की हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश नवम समुल्लास मे इस प्रकार की मुक्ति की आलोचना करते हुए लिखा है कि जैसी यह चार प्रकार की मुक्ति है वैसी तो कीट, पतग पश्वादिकों को भी स्वतः सिद्ध प्राप्त है।

—वैदिक आश्रम रफायतपुर (बदायूं) में दिनांक १३ फरवरी को वसन्त पचमी पर्व तथा ९ से १६ मार्च १९८६ के मध्य ऋषि बोध सप्ताह सोल्लास सम्पन्न हुआ। —मन्त्री

—दयानन्द बाल मन्दिर अकबरपुर (कानपुर) ऋषि दयानन्द के १६२ वें जन्मोत्सव का आयोजन दिनांक १५ फरवरी ८६ को सोल्लास सम्पन्न हुआ। —प्रबन्धक

—आर्यसमाज नकुड़ (सहारनपुर) में वसन्त पचमी के पावन अवसर पर वीर हकीकत राय का बलिदान दिवस मनाया गया। —मंत्री

राजीव सरकार की कट्टरपंथी मुसलमानों के सामने घुटने टेक नीति

संसद के वर्तमान सत्र मे श्री राजीव गांधी की ओर से जो मुस्लिम महिला (संरक्षण एव भत्ता) तलाक बिल प्रस्तुत हुआ है वह वर्तमान विकासशील भारत की धर्म निरपेक्ष भावना के प्रतिकूल मुस्लिम महिलाओं को सदियो पीछे ढकेल देने की स्थिति का द्योतक है। इसमें पति द्वारा तलाक देनेपर उसके भरण पोषण का दायित्वपतिपर न होकर मायके के पिता और भाइयो पर डाला गया है और यदि वह समर्थ नहीं हैं तो मुस्लिम वक्फ उन महिलाओं का भरण पोषण करें। कितनी विडम्बना है कि पति जिसे स्त्री अपना सर्वस्व अर्पण करती है उसके द्वारा परित्यक्त किये जाने पर भरण पोषण का दायित्व दूसरे लें। मुस्लिम वक्फ खुद अभाव ग्रस्त हैं अत मुस्लिम स्त्री नि सहाय स्थिति में पहुचा दी गई है और भारतीय दड विधान की धारा १२५ मुसलमानों पर लागू नहीं होगी। इसका विरोध भारत के प्रगतिशील मुसलमानों ने किया है केन्द्रीय ऊर्जा राजमन्त्री मुहम्मद आरिफ ने इस बिल के विरोध में त्याग पत्र दे दिया और देश के उच्चशिक्षा प्राप्त मुस्लिम वर्ग ने दिल्ली बार एसोसियेशन में और यहा तक कि भारतीय ससद के अधिकांश सांसदों ने राजीव जी के इस बिल पर पुन विचार का प्रस्ताव किया। केवल कट्टर पथी और धार्मिक मुल्लाओं के परामर्श से राजीव जी ने इस बिल को प्रस्तुत कराया है।

'आर्यमित्र' प्रबल शब्दो मे इस समाज विरोधी बिल की निन्दा करता है और स्पष्ट शब्दों मे इसे कट्टर पंथी मुस्लिम लोगो मुसलमानों के सामने जो राजीव जी की नीति को घुटने टेकने की संज्ञा देता है। साथ ही अनुरोध है कि इस विधेयक को जो मुस्लिम महिलाओं के पूर्णतया हित के विरुद्ध है वापस लिया जाय यदि बहुमत के बल पर श्री रजीव जी इस विधेयकको पारित करा देते हैं तो भविष्य का भारत उन्हें सदैव दोषी मानेगा।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

व्यक्ति परिचय

(प्रभावी वक्ता तथा लेखक डा० आनन्द जी सुमन)

आर्य समाज के क्षेत्र मे डा० आनन्द सुमन जी बहु चर्चित व्यक्ति है। आय समाज के अधिवेशनों मे सुमन जी का भाषण अति प्रभावी होता है। सम्भ्रांत मुस्लिम परिवार में जन्मे और पढ़े तथा बड़े हुए। जीवन में जब सत्य की झलक मिली तो वैदिक धर्म मे दीक्षित हुए तथा डा० आनन्द सुमन के नाम से ख्याति प्राप्त है। सुमन जी की स्व लिखित पुस्तक 'इस्लाम क्यों छोड़ा' मे विस्तार से सुमन जी ने अपने बदलते विचारों और परिस्थितियों पर प्रकाश डाला है। उनके भाषणों मे विचारों की ताजगी तर्क और-स्पष्टोक्ति रहती है कि 'मुसलमानों यदि भारत में रहना है तो 'वन्देमातरम्' कहना है।

सम्प्रति सुमन जी तपोवन आश्रम देहरादून में रह रहे हैं और 'क्रांति प्रकाशन' के नाम से एक संस्थान का प्रबंध कर रहे हैं। जिसके अन्तर्गत उनकी पुस्तकें प्रकाशित हुई है।

१- मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा।
२- क्रांति के स्वर।
३-सामाजिक स्वर्ग।
४-सिंह गर्जना।
५-वैदिक सुमन सूक्ति।
६-वेद और कुरान
७-इस्लाम मे नारी।
८-क्रांति (निबन्ध-काव्य संग्रह)

उपरोक्त पुस्तको में वर्णित विषय नाम से ही स्पष्ट हैं। मानवता वादी विचारक-क्रांति की अग्नि से प्रदीप्त निर्भीक विचार पुस्तकों में भरे पड़े हैं। आर्य जगत में इन रचनाओं का स्वागत होना चाहिये। पुस्तकें मँगा कर क्रांति प्रकाशन मे हम सहयोग प्रदान करें और आर्य समाजें अधिक से अधिक डा० सुमन जी का कार्य क्रम रख कर जनता को उनके ओजस्वी विचारों से अवगत करायें। पता-डा० आनन्द जी सुमन क्रांति प्रकाशन-'तपोवन आश्रम' देहरादून-८, है। आर्य जगत को सुमन जी से सेवा की बहुत ही आशायें है।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

समीक्षा

'वेदों में नारी'-लेखक डा० कपिल देव द्विवेदी एम०ए०-डी०फिल,-कुलपति-महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) -प्रकाशक-डा० भारतेन्दु द्विवेदी-विश्व भारती अनुसंधान परिषद् ज्ञान्ति-निकेतन ज्ञानपुर-वाराणसी।

पृष्ठ १६६-साइज २० × ३०-१-१६। मूल्य १५ रुपया।

डा० कपिल देव जी द्विवेदी हमारे मध्य वैदिक ज्ञान के मनीषी है और उनका समस्त जीवन ही ज्ञानार्जन एवं ज्ञान प्रसारण में ही अर्पित है। वैदिक वाङ्मय से विशेष रुचि रही तत्सम्बन्धी मौलिक पुस्तकों की रचना की कालिज से अधिक पुस्तकें संस्कृत वाङ्मय से सम्बन्धित प्रकाशित हो चुकी है।

समस्त वैदिक वाङ्मय के अध्ययन के पश्चात् वेदों में नारी का जो उदात्त चित्र आता है उसे ही विद्वान लेखक ने प्रस्तुत किया है। नारी विभु की विशेष कला पूर्ण रचना है जो नर को जन्म देती और मानव संस्कृति की सम्पोषिका है। वैदिक ऋषियों ने उसे सादर श्रद्धांजलि अर्पित की है। उसके मानवीय एव दैवी गुणों पर श्रद्धावनत हैं सौभाग्य मयी -रूपसी, सुमङ्गली प्रेमसी और परिवारकी संयुक्ता शक्ति है। तरिनी की निर्मल धारा सम है जो दो कुलों को बांधती है। वैदिक नारी मृदुल शय्या तक ही सीमित नहीं है अपितु वह पण्डिता होकर पति का परामर्श दात्री है और रण क्षेत्र मे दुर्गा तेजोमयी है।

डा० द्विवेदी जी ने उपयुक्त वैदिक मन्त्रों का चयन करके उनकी व्याख्या प्रस्तुत की है। तथा अंग्रेजी अनुवाद भी देकर पुस्तक को सुगम कर दिया है। लेखनी की ओजस्विता के रूप लक्षित हैं। समस्त विज्ञजनों को-महिला समुदाय को महाविद्यालयों मे अध्ययन अध्यापनरत महिलाओ मे यह पुस्तक समादृत होना चाहिये। महिला संगठनों को इसे प्रोत्साहित करना चाहिये।

पुस्तक का पूर्ण आनन्द और उपयोगिता उसके अध्ययन से ही प्राप्त की जा सकती है। मैं संस्तुति करता हू-आर्य समाज और उससे सम्बन्धित विद्यालय इस रचना को अवश्य समाहृत करे।

लेखक-प्रकाशक साधुवाद के पात्र प्रकाशन-आकर्षक रुचि पूर्ण एवं कलात्मक है।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

दिल्ली मे हिंसात्मक उपद्रव पूर्व नियोजित षड्यन्त्र

पजाब के उग्रवादियों के हाथ मजबूत करने की चाल

रामजन्म भूमि मुक्ति : एक बहाना

प्रधान सार्वदेशिक के उद्गार

दिल्ली १७ फरवरी। दिल्ली में मुसलमानों द्वारा किए गये हिंसात्मक उपद्रव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये कहा कि पंजाब के उग्रवादियों और देश द्रोही शक्तियो के हाथ मजबूत करने के लिये यह हिंसात्मक उपद्रव एक सुनियोजित षड्यन्त्र था। दिल्ली तथा दिल्ली के बाहर के कई स्थानों पर एक साथ इस प्रकार की घटनाएं होना, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

श्री शालवाले ने कहा—अयोध्या में राम जन्म भूमि की मुक्ति एक बहाना मात्र है। दरअसल इस उपद्रव का उद्देश्य देश मे साम्प्रदायिक दगे भड़काकर, अस्थिरता पैदा करके पंजाब के उग्रवादियों की सहायता करना था। इन उपद्रवों पर आम जनता की भी यह राय है कि दिल्ली की जामामस्जिद के इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी और शहाबुद्दीन का इस षडयन्त्र में गहरा हाथ है और पाकिस्तान की शह पर यह उपद्रव किया गया है।

श्री शालवाले ने भारत सरकार से अनुरोध किया है कि ऐसे देशद्रोही तत्वों और इस काण्ड से संबंधित दोषी व्यक्तियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जावे। अन्यथा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए देश के सामने और भी गम्भीर चुनौतियां पैदा हो जायेंगी।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

निर्वाचन

आर्यसमाज समशेरगढ़ (देहरादून)
प्रधान श्री दयाराम जी
मन्त्री श्री किरण शंकर
कोषा० श्री धीरेन्द्र कुमार

आर्य समाज असुरन रेलवे कालोनी वेद मन्दिर (गोरखपुर)
प्रधान श्री त्रियुगी नारायण पाठक
मन्त्री श्री बिन्धय बासनी श्रीवास्तव
कोषा० श्री पूर्णमासी प्रसाद

आर्यसमाज ऊबोवाला पो० सीकास चन्द्र (बिजनौर)
प्रधान श्री डालचन्द आर्य
मन्त्री श्री सूबासिंह आर्य
कोषा० श्री उदयराज सिंह

आर्य समाज कृष्णनगर (कोटगंज) प्रयाग
प्रधान श्री कृष्ण प्रसाद साहु
मन्त्री श्री संतोष कुमार कुशवाहा
कोषा० श्री केदारनाथ गुप्ता

वैदिक पुरस्कार

आपको यह जान कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई ने यह निश्चय किया है कि प्रतिवर्ष आर्य जगत के किसी एक ऐसे वैदिक विद्वान को जिसने अपना समस्त जीवन वेद एवं वैदिक वांग्मय के प्रचार प्रसार पर समर्पित किया हो, उन्हें २१०००/= इक्कीस हजार रुपये की थैली, मान पत्र एवं शाल द्वारा पुरस्कृत कर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की जावे। इस पुरस्कार का आरम्भ १९८६ से किया जायेगा।

आर्य समाज की अन्तरग सभा ने यह भी निर्णय किया है कि यदि अधिक धन एकत्र हुआ तो एक और समानन्तर पुरस्कार ११०००/= (ग्यारह हजार रुपये) आर्य समाज के समर्पित भजनोपदेशक पुरोहित या कार्यकर्ता को भी प्रतिवर्ष देने की योजना बनाई जायेगी विशेष जानकारी एवं नियमादि के लिये सम्पर्क कीजिये।

कैप्टन देवरत्न आर्य मन्त्री आर्य समाज सान्ताक्रूज

शोक समाचार

आर्य समाज कैराना, आर्य समाज के प्रधान, निर्भीक कांग्रेस कार्यकर्ता हैदराबाद स्वतन्त्रता सेनानी तथा आर्य कन्या इन्टर कालेज कैराना के जन्म दाता माहदय प्रभूलाल जी के निधन पर जिनका निधन २५-१-८६ को हो गया है शोक प्रकट करता है। तथा परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह स्वार्गीय आत्मा को शांति तथा शोक संतृप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। मन्त्री

—अल्मोड़ा। आर्य समाज मन्दिर ताड़ीखेत मे १२ फरवरी १९८६ को 'स्वामी सत्यानन्द शांति यज्ञ' पं० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य मे अनूपसिंह जी रावत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। स्वामी सत्यानन्द जी का देहावसान ३० जनवरी, १९८६ को बलिया में हो गया था।

मन्त्री आर्य समाज ताड़ीखेत

—आर्य समाज चितरी आसफपुर (बदायूं) के प्रधान श्री नरसिंह जी के पिता का स्वर्गवास दि० २ फरवरी १९८६को होगया तथा उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ।

ओमकार शर्मा मन्त्री

आर्य जगत

—आर्य समाज मेहूदावल बस्ती का ७० वां वार्षिकोत्सव दि० ३१ जनवरी से २ फरवरी तक हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर बेतिया (चम्पारन) के भू० पू० शाही इमाम मौलाना खुर्शीद आलम वर्तमान पं० जयप्रकाश आर्य ने अपने ओजस्वी भाषण में देश के अल्पसंख्यक हिन्दुओं से राष्ट्र की एकता और अखण्डता के प्रति अपील करते हुए इस बात पर बल दिया कि बहुसंख्यक हिन्दुओं से ही राष्ट्र की अखण्डता कायम है। उत्सव में आर्य जगत के तमाम मूर्धन्य विद्वानों के अतिरिक्त प० शिवनारायण वेदपाठी, प० गंगाधर शास्त्री आदि सम्मलित हुये। उत्सव पूर्णतया सफल रहा।

प्रभुदयाल गुप्त मन्त्री

० ओ३म ०

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान

माननीय श्री पंडित इन्द्रराज जी के

प्रातिभ व्यक्तित्व के प्रति सोल्लास समर्पित

❀ अभिख्या वाचनम् ❀

मान्यवर,

वैदिक धर्म के प्रबल प्रचारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सन्देश दूत के रूप मे आज औरैया नगरी मे आपके शुभागमन की पावन वेला पर हम भाव विह्वल होकर मानसिक तृप्ति की आनन्दानुभूति कर रहे है। आपको अपने बीच पाने की आज हमारी चिरसचित अभिलाष पूर्ण हो रही है।

सारस्वत व्रती !

सामान्यतया मनुष्य को अधिसंख्य सन्दर्भो मे लोकेषणा उसके निजत्व के मूल्यांकन से विमुख कर देती है किन्तु आपने अपनी वर्चस्वी सुमेधा शक्ति की अनिर्वचनीय अभिव्यक्ति से भारतीय संस्कृति के उज्जवलतम गौरव को सरक्षण देने और समाज की मांगलिक अपेक्षाओं की पूर्ति का अभिनन्दनीय प्रयास किया है। इस हेतु सारस्वतव्रती के रूप मे आपकी एक निष्ठ भूमिका के निर्वाहन के लिए हम आपके बहुमुखी व्यक्तित्व के चिरन्तन विकास की कामना करते हैं।

वाक्ज्योति का कार्य मात्र अज्ञानान्धकार का उन्मूलन नहीं है वरन वह सार्थवती तभी होती है जब जिज्ञासुओ का चिरन्तन आलोक-पथ प्रशस्त करे। सारस्वत साधना मे समर्पित भाव से सलग्न आपकी मनश्चेतना इस प्रसग मे समूचे आर्यजगत के अनुकूल-प्रेरक प्रमाणित होगी—ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

अधिजयी आर्यसमाज सेवी !

सामाजिक क्षेत्र की उपलब्धियां मनुष्य के स्वाभिमान की मनोहारिणी अभिसारिकायें हैं और निस्तर निस्पृह होकर कठोर श्रम का सम्पादन इन अभिसारिकाओ के प्रति तीव्र वैराग्य है लोक के अर्थ मे श्रम और उपलब्धियां मनुष्य के शरीर धर्म का पुनीत भाष्य हैं। लोक की प्रशसा-मयी आखें उपलब्धियो से अलंकृत होने पर मनुष्य को कहीं अहकार का प्रबल वेग न दे जांय, इसके लिये भारतीय मनीषा ने अनासक्ति के प्रति आसक्त होकर कर्म करने की अनुशंसा की है।

महिम श्री ! आपके निरासक्त व्यक्तित्व का न्यायादेश आपके अभिमुख विद्वत्वर्ग के सम्मुख गौरव से विनम्र होकर ही प्रफुल्ल हुआ है। आपके अदम्य साहस और सरल सौजन्य की उर्वरा भूमि पर कृतृत्व के असंख्य कुसुम अक्षय होकर अभिख्या गायन करते रहे हैं। आज इस महोत्सव मे हम सभी आपके अभिजयी आर्यसमाजसेवी व्यक्तित्व का हार्दिक अभिनन्दन वन्दन करते हैं।

हम हैं आपके विनयावनत—

माघ शुक्ल १ - संवत् २०४२　　आर्य उपप्रतिनिधि सभा इटावा एवं

शुक्रवार दिनांक २१-२-१९८६　　औरैया आर्यसमाज के पदाधिकारी एवं सदस्यगण

—आर्यसमाज धौलड़ी (मेरठ) का वार्षिकोत्सव दिनांक २५ से २७ फरवरी १९८६ को बड़ी धूम धाम से मनाया गया जिसमे आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् एवं संन्यासी सम्मिलित हुए अनेकों कार्यक्रमो का आयोजन हुआ।

—मन्त्री

—गुरुकुल वैदिक आश्रम वेद व्यास राउरकेला जिला सुन्दरगढ़ (उत्कल) का २५ वां वार्षिकोत्सव ऋषि बोधोत्सव के रूप में ८ से १० मार्च १९८६ के मध्य हर्षोल्लास से मनाया गया। —मन्त्री

आर्यसमाजो की गतिविधियां

शुद्धि अभियान

दिनांक २३-२-८६ को शहर मदुरै (तामिलनाडु) के आर्यसमाज मन्दिर मे सायकाल ७ बजे हवन यज्ञ के शुभ अवसर पर श्री नारायणस्वामी व श्री एस० पी० रामनामूर्ति प्रधान आर्यसमाज मदुरै (टी०एन०) द्वारा तथा बाबू श्री परमानन्द जी मालिक फर्म जिन्दल वायर्स मदुरै (टी एन) श्री जगन्नाथ मैनेजर व श्री दुर्गाप्रसाद जी कैशियर जिन्दल वायर्स मदुरै (टी एन) के सहयोग से और स्वामी श्री सेवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता व श्री भरतसिंह आर्य (हरियाणा) की उपस्थिति मे तीन ईसाई परिवारों ने स्वेच्छापूर्वक वैदिक धर्म ग्रहण किया।

सपरिवार शुद्ध हुए व्यक्तियो की सूची

पुराने नाम

१–आई जोहू वीरतो
२–डी० अनबालोगन
३–एन० जाकीब-जेज

नये नाम

१–आई-शिवानन्द
२–डी० सुन्दरा-राजन
३–डी० रामकुमार

—नगर आर्यसमाज साहबगंज के तत्वावधान मे लाल डिग्गी उद्यान स्थित पं० रामप्रसाद बिस्मिल स्मारक यज्ञशाला पर एक मुसलिम युवक जिसका नाम आशिक अली उर्फ झिनकू पुत्र श्री झूलन निवासी ग्राम व पोस्ट दाबानगर (बखिरा) जिला बस्ती का शुद्धि सस्कार (वैदिक धर्म) हिन्दू मे दिक्षित कराकर युवक का नाम श्री झिनकू लाल आर्य रक्खा गया।

शुद्धि संस्कार जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर के अध्यक्ष श्री पं० द्विजराज शर्मा पुरोहित द्वारा सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन रमेश प्रसाद गुप्त (मन्त्री) नगर आर्य समाज साहबगंज ने किया।

—सवाददाता

जीवन परिचय—

कर्मठ एवँ आदर्श व्यक्तित्व

श्री रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव

[शुद्धि बाबू]

शुद्धिबाबू नाम से ख्याति प्राप्त हर दोई जनपद के विशेष गरिमा-मय व्यक्तित्व से अधिकांश आर्य जन परिचित हैं। हरदोई की माटी मे आर्यजनों की उपज को अनुकूलता है। प० भगवानदीन मिश्र, ठाकुर मशालसिह से कौन परिचित नहीं है वहीं के एक सम्भ्रान्त कायस्थ परिवार मे एक बालक जन्मा। १९२३ मे नामकरण हुआ रामेश्वरदयाल, परन्तु बालक के चाचा दिल्ली चादनी चौक मे रहते थे स्वामी श्रद्धानन्द के विशेष विश्वसनीय थे। शुद्धि आन्दोलन की धूम थी और नवजात बालक को भी शुद्धिबाबू कहकर पुकारा जाने लगा जो आज तक हरदोई जनपद मे प्रचलित है तथा सार्थक है।



श्री रामेश्वर दयाल शुद्धि बाबू

श्री रामेश्वर दयाल जी लगनशील आर्यसमाज के सेवक है। पद पर रहे या न रहे समाज सेवा उनका एकमेव लक्ष्य है। सरल, सादा, निश्छल, निष्कपट जीवन सेवा भावना से ओत-प्रोत २१ वर्ष तक आर्यसमाज हरदोई के मन्त्री रहे। आर्य कन्या इण्टर कालेज हरदोई के विगत ४० वर्ष स प्रबन्ध समिति के सदस्य एव सम्प्रति प्रबन्धक है। कन्या महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति के सक्रिय सदस्य है एवं संस्था के विकास कार्यों मे दत्तचित्त रहते हैं। २१ वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तरग सदस्य एव शुद्धि सभा क उप सयोजक हैं। ७१ मुसलमान एव ११ ईसाई परिवारो को वैदिक धम मे दीक्षित किया तथा कितने ही अनाथो के सम्पोषण म लग रह।

हरदोई की आर्यसमाज और जनपदीय उप प्रतिनिधि सभा मे भी प्राय सभी पदो पर निष्ठापूवक सवारत रहे है आज साठ वर्ष की आयु मे भी कमठ और निष्ठा तथा दृढ़ता मे कमी नही है। हरदोई आर्य समाज की शताब्दि मे भी सक्रियता का परिचय दिया।

श्री शुद्धि बाबू का संपन्न परिवार भी आर्यसमाज की सेवा मे पिता के चरणो की अनुकृति मे है। पत्नी समाज सेवा क कार्यों मे सच्ची अर्द्धांगिनी है। दोनों पुत्र एव पुत्र वधुयें भी आर्यसमाज और स्त्री समाज के प्रति उत्साही कार्यशील है।

प्रभु स प्रार्थना है कि शुद्धि बाबू शतजीवी होकर समाजसेवा का आदर्श कीर्तिमान प्रस्तुत करने मे सक्षम तथा उनका कमठ जीवन दूसरो के लिए आदर्श बने।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम०ए० सम्पादक

—वेद अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र मोतीझील कानपुर का बारहवा वार्षिकोत्सव दिनाक २ मार्च ८६ को धूमधाम से मनाया गया। —मन्त्री

सभा-प्रधान एवं कोषाध्यक्ष का तूफानी दौरा

स्थान—स्थान पर भव्य स्वागत

सहस्त्रो रुपये की थैलियां भेंट

२० २-८६

प्रात: आर्य कन्या इण्टर कालेज फर्रुखाबाद मे स्वागत तत्पश्चात् आर्यसमाज फर्रुखाबाद वैदिक साधना आश्रम फर्रुखाबाद का निरीक्षण।

मध्यान्ह—आर्यसमाज मोलेपुर के आर्यजनो का सम्बोधन तथा वहां यज्ञशाला का शिलान्यास जिसके लिए प० शांतिस्वरूप जी ने ५ सहस्र मुद्रा भेंट किये तत्पश्चात् आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला फर्रुखाबाद द्वारा माननीय प्रधान जी व कोषाध्यक्ष जी का स्वागत एव अभिनन्दन तत्पश्चात् गङ्गा तट पर रामनगरिया मे आर्यसमाज के प्रचार शिविर मे जनता का सम्बोधन।

अपराह्न—आर्यसमाज सुदामांज मे उक्त पदाधिकारियो का स्वागत व अभिनन्दन तथा वहा की भू-सम्पत्ति के विवादों पर विचार तत्पश्चात् 'स्वामी जी के डेरा' का निरीक्षण।

सायँ-आर्य समाज गुरुसहाय गंज मे स्वागत व सम्मान तथा १०००) रुपये की थैली भेंट।

२१—२—८६

प्रात —आर्यसमाज औरैया के आर्यजनो से विचार विनिमय।

मध्याह्न आर्यसमाज बकेवर अपराह्न आर्यसमाज भर्थना तथा साय आर्यसमाज अजीतमल मे सभा के उक्त अधिकारियो का स्वागत व सम्मान।

रात्रि—आर्य उपप्रतिनिधि सभा की असाधारण सभा को सम्बोधन तथा उपसभा द्वारा १०६१) रुपये की थैली भेंट।

—कु० ध्रुवपालसिह 'अटल'

—आर्यसमाज पडरौना का वार्षिकोत्सव बसन्त पचमी १३ से १६ फरवरी तक बड़े उल्लास उत्साह एवं उमग के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमे आर्यजगत के विख्यात उपदेशक, भजनोपदेशक सम्मिलित हुए कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

—सत्यपाल कोहली मंत्री

—महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा के सिद्धान्ताचार्य श्रेणी के चार छात्र एवं श्री धर्मचन्द्र जी विद्यालंकार, उपाचार्य ने निम्न नगरो मे वेद प्रचार किया—

रविवार २-२-८६ प्रात आर्यसमाज, माल पर, राजकोट।

सायं आर्यसमाज, हाथीखाना, राजकोट।

सोमवार ३-२-८६ जेतपुर नगर।

मगलवार ४-२-८६ वीरपुर एव जूनागढ़।

बुधवार ५-२-८६ वीरावल।

गुरुवार ६ से ९-२-८६ पोरबन्दर, आर्यसमाज एव आर्य परिवारो मे सत्सग।

—धर्मवीर आचार्य

—आर्यसमाज राडधना (मेरठ) का वार्षिकोत्सव दिनांक २१ से २३ नवम्बर १९८५ के मध्य हर्षोल्लास एवं धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

—मन्त्री

सूचना तथा कार्य विवरण

यहँ सर्व विदित है कि प्रदेश भरमे आचार्य/आचार्याओ छात्रो/छात्राओ को वैदिक सिद्धातो के निकट लाने एवम स्वस्थ संस्कारो को आरोपित करने के निम्नांकित श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम चल रहे है ।

१—आचार्य / आचार्या प्रशिक्षण शिविर ।
२—जनपदीय छात्र / छात्रा प्रति योगितायें ।

उपर्युक्त श्रृंखला पे ३४ शिविर तथा दो जनपदीय प्रतियोगितायें तो जनवरी १९८६ तक सम्पन्न हो चुके ह । फरवरी १९८६मे ३प्रशिक्षण शिविरतथा एक जनपदीय प्रतियोगिता निम्न स्थानोपर सम्पन्न हो चुके हैं ।

१८, १९, २०, जनवरी ८६—जनता वैदिक इण्टर कालेज बडौत (मेरठ) प्रतियोगिता जिनमे लगभग ११ विद्यालयो ने भाग लिया ।

१४, १५ फरवरी ८६— डी० ए० वी० इण्टर कालज किशनपुर व राम मे प्रशिक्षण शिविर जिनमे दो इण्टर विद्यालयोके ५० आचार्या और ३५ छात्रो ने भाग लिया ।

१७, १९ फरवरी ८६ जनता वैदिक इण्टरकालेज बडौत मे प्रशिक्षण शिविर हुआ जिसमे ८१ आचार्यो / आचार्याओ व ८ बच्चो ने भाग लिया ।

२७, २८ फरवरी ८६— अब उत्तर प्रदेश के इस कार्यक्रम को अपनाते हुये रघुमल आर्यकन्या इण्टर कालेज हनुमान रोड, नई दिल्ली मे प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ । इस शिविर मे ८२ आचार्याओ तथा ६५ छात्राओ ने भाग लिया ।

अब तक इस प्रकार लगभग २७८० आचार्य / आचार्यायें एवम् ९८० छात्र / छात्रायें प्रशिक्षित हो चुके हे ।

प्रशिक्षण के विषय हैं आर्ष ग्रन्थो से परिचय वेद-उपवेद-उपाङ्ग वेदांग, उपनिषदो से परिचय, स्वामी जी को जीवन, स्वामी जी का कृतियो से परिचय, पच महायज्ञ, सस्कार विधि, योग—आसन—प्राणायाम का रचनात्मक अश, यज्ञ, व सन्ध्या क्यो वैज्ञानिक है व छात्र / छात्राओ के माध्यम से वर्ष में किस प्रकार सामाजिक कौन सा सेवा कार्य कराये जा सकते हैं आदि ।

आचार्य विद्या रत्न,
प्रदेशीय सयोजक
श्रृंखला-शिविर

—आर्य समाज चौक बाजार बुलन्द शहर का स्थापना शताब्दी समारोह दि० ८ से १० फरवरी ८६ के मध्य धूमधाम से सम्पन्न हुआ । शताब्दी समारोह के इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान महात्मा आर्य भिक्षु जी ने मनुष्य को ईश्वर की सर्वोत्तम कृति बताते हुए विवेक पूर्ण सत्कर्म करने की प्रेरणा दी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान पं० इन्द्रराज जी ने समापन भाषण मे देश मे बढ़ते हुए विघटन कारी तत्वों से सावधान रहने तथा हिन्दू संगठनको और भी सुदृढ करने हेतु उपस्थित आर्य जनता तथा नवयुवकों से अपील की कार्यक्रम प्रभावशाली एव सराहनीय रहा । शांतिशरण मन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज सरदार पटेल नगर खलाशी लाइन (सहारनपुर)
प्रधान श्री चौधरी राम
मन्त्री श्री बाबूराम शर्मा
कोषा० श्री बलदेव राज

आर्य समाज बहुराइच
प्रधान श्री बख्शी राम मोहन
मन्त्री श्री भरत सिंह
कोषा० श्री हरीराम वर्मा

आर्य समाज आगरा नगर
प्रधान श्री हरिगोपाल सिंह
मन्त्री श्री ओम प्रकाश गुप्त
कोषा० श्री वासुदेव प्रसाद

आर्य समाज इस्माइलपुर बिजनौर
प्रधान श्री फतहसिंह
मन्त्री श्री बुद्धसिंह आर्य
कोषा० श्री महावीर सिंह

स्त्री आर्य समाज साकेत मेरठ
प्रधाना श्रीमती प्रकाशवती
मंत्राणी „ सरस्वती गोयल
कोषा० „ सरला रानी

जिला आर्यो प्रतिनिधि सभा मथुरा
प्रधान श्री अभयदेव वानप्रस्थ
मंत्री श्री डा० द्वारिका प्रसाद आर्य
कोषा० श्री खुशीलाल विजय खेडा

जिला आर्योप्रतिनिधि सभा इटावा
प्रधान श्री गोपाल सिंह
मंत्री श्री डा० राजा सिंह
कोषा० श्री लक्ष्मी चन्द्र

आर्य समाज औरैया (इटावा)
प्रधान श्री रामनाथ आर्य
मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य
कोषा० श्री गुरुप्रसाद आर्य

—आर्य समाज रेलवे कालोनी, वेद मन्दिर गोरखपुर का ४३ वां वार्षिकोत्सव जो दि० ७ मार्च से १० मार्च तक होना निश्चित था, वह स्थगित किया जाता है ।
वार्षिकोत्सव पुन ९ मई से १२ मई ८६ तक मनाया जायेगा ।
मन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज नकुड़ (सहारनपुर)
प्रधान श्री माधू राम सैनी
मन्त्री श्री भूपेन्द्र कुमार
कोषा० श्री मोहन लाल

आर्य समाज लालबाग लखनऊ
प्रधान श्री ओमप्रकाशआर्य सेवकजी
मन्त्री श्री इ० सत्यदेव सैनी
कोषा० श्री कैलाश चन्द्र मेहता

जिला आर्यो प्रतिनिधि सभा लखनऊ
प्रधान श्री अर्जुन देव महाना
मन्त्री श्री सत्यदेव सैनी
कोषा० श्री बिश्वम्भर दयाल गुप्त

आर्य समाज-राधना (मेरठ)
प्रधान श्री भागीरथ सिंह
मन्त्री श्री सुरेन्द्रपाल एम० ए०
कोषा० श्री तेजपाल सिंह

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 45033 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन पी १९
भा० फाल्गुन ७५
फाल्गुन शुक्ल ६, रविवार
१६ मार्च १९८६

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

J. Kangri

आगामी हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रचार एवं सेवा शिविर

निश्चय किया गया है कि आगामी दिनांक १४ जनवरी से ९ १० अप्रैल ८६ तक लगने वाले हरिद्वार में बारह वर्षीय कुम्भ मेले के ऐतिहासिक अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रचार एवं सेवा शिविर लगाया जाय। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने जीवन में कुम्भ के अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसे भी ११९ वर्ष के लगभग हो चुके हैं। अतः अन्धकार एवं रूढ़िवादिता का खण्डन करने हेतु सत्य वैदिक मार्ग दर्शन का प्रचार किया जाय। विद्वानों के भाषण उपदेश होंगे सेवा शिविर द्वारा यात्रियों का यथासाध्य सेवा आदि की व्यवस्था रहेगी साथ ही विशेष स्नान पर्वों के दिन ऋषि लंगर का भी आयोजन होगा जहाँ शिविर में जाकर सभा के वरिष्ठ अधिकारी भी स्वयं व्यवस्था का देखरेख करेंगे। समस्त प्रदेश की उपप्रतिनिधि सभाओं आर्यसमाजों और आर्यजनों से अनुरोध है कि इस अवसर पर हमारी सहायता करें अपने क्षेत्र से धन और अन्न आदि का संग्रह कर सभा को सूचना दें और सुविधानुसार उनको संग्रहीत अन्न हरिद्वार भिजवाने का प्रयास किया जाय। सबके सम्मिलित सहयोग से ही हमारे उद्देश्य सम्पन्न हो सकते हैं तदर्थ सबका सहयोग अपेक्षित है और इस में अविलम्ब कार्य प्रारम्भ कर दिया जाय।

इन्द्रराज	कृष्ण बलदेव महाना	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कार्याध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये।

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क १५ मार्च १९८६ को समाप्त हो जाता है वी० पी० भेजने में ५.५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० न भेजी जाय। जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है वे भी शीघ्र ही २०) भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हम बाध्य होंगे। कृपया अपने अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें नम्बर नीचे लिखे हैं। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) कर दिया गया है।

३४७ ७५४, ९३७ १४३८ १८६८ १९ ४ २१५४ ३७२, २४७० २७३६ ३९८६ ४३३० ४ ५५ ५५८३ ५८४५, ६०४३, ६६१३ ८२१३ ८२१५ ८२२९ ८२३८ ८७१५ ८९१३ ८९९२, ९६२७ १०१२१, १०१२३ ११११८ ११५४४, ११८७८, १२१२४, १२१२८ १२१३५ १२१४०, १२१४३, १२१४४, १२६०८ १२६११ १२६२६ १२६४७ १२६२९ १२६३० १२८४४, १२८४५, १२८४६ १२८५२, १२८५५, १२८५६ १२८५७, १३०६३, १३०६५ १३०६९ १३४२८ १३४२९ १३४३० १३४३१ १३४३४, १३४३७ १३४३८।

विनीत—
—व्यवस्थापक

आर्य बन्धुओं से निवेदन

खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि आज फिल्मों में अश्लील चलचित्रों में नारी के अंगों का प्रदर्शन बड़े ही अनुचित ढंग से और भारतीय संस्कृति के विरुद्ध हो रहा है जो नवीन पीढ़ी को विलासिता तथा चारित्रिक पतन की ओर ले जा रहा है। अतः समस्त आर्यसमाजें इस आशय का एक प्रस्ताव पारित करें कि अश्लील चलचित्रों का प्रदर्शन व्यवसायिक फिल्मों तथा दूरदर्शन आदि पर न प्रदर्शित किया जाय। कम से कम भारतीय नारी को पाश्चात्य के समान विलासिता का साधन न बनाया जाय।

निवेदन है कि समस्त आर्यसमाज अपने प्रस्ताव पारित करके उसकी एक प्रति श्री राजीव गांधी प्रधान मन्त्री भारत सरकार १ सफदरगंज मार्ग नई दिल्ली तथा दूसरी प्रति श्री वी० एन० गाडगिल केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री शास्त्री भवन नई दिल्ली को प्रेषित करें और एक सूचना की प्रति मुझे भी भेजने की कृपा करें।

इन्द्रराज
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

१ आर्यसमाज पुष्पनगर (आजमगढ़) उत्तरप्रदेश द्वारा बसन्त पंचमी पर्व ... रूप में वैदिक परम्परानुसार मनाया गया तथा उसी दिन दो ब्रह्मचारी यतीन्द्रकुमार (१५ वर्ष) तथा शची इन्द्र कुमार (१३ वर्ष) का उपनयन संस्कार आचार्य पं० सूर्यबली पाण्डेय द्वारा सम्पन्न हुआ। साधारण जन पर इस वैदिक संस्कार का अच्छा प्रभाव पड़ा।

२—आर्य समाज पुष्पनगर (आजमगढ़) उत्तरप्रदेश का तेरहवां वार्षिकोत्सव बहुत ही धूमधाम से दि० १३ फरवरी १९८६ से १९ फरवरी १९८६ तक मनाया गया। दि० १५ फरवरी की रात्रि में दयानन्द बाल मन्दिर के भैया तथा बहनों का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सराहनीय रहा। —विद्याधर प्रधान

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये नारायणस्वामी आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

आर्य मित्र



कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं १२४१/२७ | घोषणा पत्र सं० ७ / २८-२-८२

वर्ष ८९] मा० चैत्र २, फाल्गुन शुक्ल १२, रविवार सवत २०४२ वि०, दि०, २३ मार्च १९८६ [अङ्क १२

प्रार्थना

ओ कुतस्त्वमिन्द्र माहिन सन्न`को यासि सत्पते कि त इत्था । स पृच्छसे समराण शुभानैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत्ते ऽ अस्मे । महाँ२ऽ इन्द्रो य ऽ ओजसा कदा चन स्तरीरसि कदा चन प्रयुच्छसि ॥

—यजु ३३।२७

भावार्थ—हे सज्जनों के रक्षक राष्ट्रपते ! तू महान् सहायकों सहित होता हुआ एकाकी क्यों विचरता है ? इससे तेरा क्या प्रयोजन है ? तू इधर-उधर रममाण होता हुआ जो कुछ पूछता है तथा जो तेरा हमारे से काम हो उसको हमारे लिये शुभ वचनो से कह ।

इस अक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	४ पौंड
एक प्रति	६५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्य वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

प्रदेश के प्रमुख आर्यजनो का सम्मेलन शताब्दि तिथियो में परिवर्तन—

• आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की शताब्दि समारोह को सफल बनाने हेतु सभा के अधिकारियों द्वारा दिनांक २ मार्च १९८६ को उत्तर प्रदेश के आर्यजनों का एक सम्मेलन आहूत किया गया जिसमे अधिकारी, अन्तरंग सदस्य और विशिष्ट उत्साही कर्मठ आर्यजन सम्मिलित हुए। शताब्दि महोत्सव को प्रदेश की गरिमा एवं गौरव के अनुकूल आयोजित करने पर विचार किया गया तथा समस्त आर्यजनों ने शताब्दि को सफल बनाने के लिए पूर्ण सहयोग देने का सकल्प किया वहीं यह परामर्श भी दिया गया कि शताब्दि समारोह की जो तिथियाँ दि० १५ से १८ मई १९८६ को निर्धारित की गई हैं वह अनुकूल नहीं हैं अत शताब्दि अक्टूबर मास १९८६ मे दिनांक १७ स २० के बीच आयोजित की जाय ।

अत आर्यजनों से निवेदन है कि उन्हें सक्रिय होकर चार महीने का और समय कार्य करने हेतु मिल गया है अतएव सभी आर्य बन्धु शताब्दि की सफलता हेतु अपना पूर्ण योगदान दें और धन सग्रह के कार्य मे जुट जाँय । अभी ऐसा अनुमान है कि शताब्दि के आयोजन पर कम स कम १० लाख रुपये का व्यय होगा जिसका दायित्व वहन हमारे आर्य बन्धुओं को ही करना है ।

काश्मीर का रंग मच—

विगत कुछ दिनो से चर्चा चल रही थी कि कांग्रेस (इ) समर्थित कांग्रेस की गुलशाह सरकार वहाँ साम्प्रदायिक तत्वों पाकिस्तान के प्रति निष्ठावान दलो को बढ़ावा दे रही थी और वहा का साम्प्रदायिक वातावरण विषाक्त हो उठा था । विगत २० फरवरी १९८६ को जो घटनायें काश्मीर मे हुयी उनसे भारत का प्रबुद्ध जन आश्चर्य चकित हो उठा । साम्प्रदायिक दगा दो जातियों मे होता है परन्तु काश्मीर मे तो पाकिस्तानी समर्थक तीन हजार के रूप मे एकत्रित होकर काश्मीरी पण्डितो के घरों पर आक्रमण करने लगे, मन्दिरों को तोड़ने लगे धर्म स्थलो को अपवित्र करने लगे । श्रीनगर घाटी में काश्मीरी पण्डितों मे त्राहि-त्राहि मची और उन अल्पसख्यक हिन्दुओं को वहां रहना दूभर हो गया । राज्यपाल श्री जगमोहन ने सही रिपोर्ट भेजी ।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने प्रधान मन्त्री से काश्मीर में राष्ट्रपति शासन की मांग की और आखिर में ७ मार्च १९८६ को गुलशाह की सरकार भग कर दी गई । शाह जितने दोषी हैं उतनी ही दोषी काश्मीर का कांग्रेस दल भी है जिसके समर्थन पर शाह साम्प्रदायिक सरकार चला रहे थे । राज्यपाल श्री जगमोहन जी को बधाई कि दृढ़ता से उन्होंने शासन सभाला । अभी वहां जल्दी निर्वाचन की आवश्यकता नहीं है बल्कि जितना काश्मीर मे भारत विरोधी तत्व है उसे जब तक कठोर हाथों से कुचल न दिया जाय । इसके साथ ही आर्यमित्र भारत सरकार से अनुरोध करता है कि अब वह समय आ गया है कि काश्मीर मे धारा ३७० समाप्त की जाय और काश्मीर भारत का अङ्ग होते हुए पाकिस्तानी झडे वहां न फहरा सकें । आवश्यकता है काश्मीर मे कठोर शासन और गिरी व्यवस्था के सुधार की ।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

सम्पादकीय-

लखनऊ-रविवार, , २३ मार्च १९८६, दयानन्दाब्द १६१
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८६

मधुवर्षी माधवी पर्व-

मधुमती वाचाम्, मधुर व्यवहार, मधुर भावनायें तथा जीवन की प्रत्येक समरसता में मधु-कर्ण की परिकल्पना ही श्रुतियों का सन्देश है। मानव जीवन की पूर्ण उदात्त गरिमा मधुमती होना ही कल्याण कारी है। महत्व भरत खण्ड मे और आर्यवर्त मे फाल्गुन तथा चैत्र का मास मधुमास कहलाता है जब किसलय मे मधुरस, सहकार की मंजरियोंमे मधु सचित होने लगता है। उसी अवसर पर नव शस्य श्यामला अंकुरो मे भी रसप्लावन होता है धरा का देवता कृषक आनन्द विभोर हो उठता है और इस आनन्द विभोरता मे जो उत्सव इस वैदिक मेदनी पर होते है उन्हें कालान्तर मे होलिका कहा जाने लगा। होलिका के पर्व पर 'आर्यमित्र' अपने समस्त लेखको, पाठको स्नेहियों एव प्रशसकों को मधुपर्व होलिका का सादर अभिनन्दन करता है और कामना करता है कि समस्त आर्यमित्र परिवार के हृदय मधुवर्षी हों इतना ही नहीं 'आर्यमित्र' यह भी चाहता है कि समस्त आर्य जगत आज होलिका की पावन वेला में अपने आपसी वैमनस्य को भेद प्रभेदो को होलिका के हुतासन मे फेंक दें और समस्त आर्य जगत मधुकर्णों के रसो का स्वादन करते हुए समस्त आर्य बन्धु मधु की वर्षा करें।

होली की पिचकारियां-

महाराष्ट्र के निवर्तमान मुख्यमन्त्री श्री निलंगेकर के ऊपर होलिका के अवसर पर ऐसी रंगभरी पिचकारी पडी की उनका मुख्य मंत्रित्व ही समाप्त हो गया और आंखों मे ऐसा अबीर का झोंका पड़ा जिससे उनकी पलकें बन्द हो गई तथा अपनी आयुष्मति पुत्री डा० चन्द्रकला धावले की एम० डी० की परीक्षा पुस्तकों में उलट फेर करा बैठे। जनश्रुति है कि होली में बूढ़े भी बावले हो जाते हैं और महाराष्ट्र में तो निलंगेकर जी तथा बम्बई विश्वविद्यालय के उपकुलपति एम० एस० गोरे तो रंग से सराबोर है ही कुछ छींटे वहाँ के राज्यपाल श्री कोना प्रभाकर राव पर भी पड रही हैं होली के अवसर पर इन सबको बधाई और दूसरे मन्त्रियों से अनुरोध है कि होली शालीनता से मनायें निलगेकरी कीचड़में न फसे।

हरियाणा होली खेलने में कम नहीं है वहां तो चौधरी भजनलाल और देवीदयाल की होली का हुड़दंग सब देख रहे है हरियाणा के रोहतक में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय है उसके वर्तमान उपकुलपति प्रो० रामगोपाल को यह आभास हुआ कि वहां के निवर्तमान कुलपति जो सम्प्रति कांग्रेस (इ) के सक्रिय सदस्य है ने सन् १९८४ की मेडिकल प्रवेश परीक्षा में कुछ उलट फेर किया सम्भव है हरिद्वारीलाल जी ने हरिकी पैड़ी के गंगा जल के बजाय कुछ केसरिया अधिक छान ली थी। प्रो० रामगोपाल को असली कापियों का उलट फेर मिला पुलिस को तहकीकात दी गई जैसा होली के अवसर पर होना चाहिये वैसा ही हुआ। मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने बजाय प्रो० रामगोपाल की सहायता करने के उन्हें जांच कराने से रोका और इतना ही नहीं राज्यपाल श्री मुजफ्फर बरनी से भी दबाव डलवाया कि भू० पू० उपकुलपति श्री हरिद्वारी लाल पर आंच न आने पावे लेकिन जब रामगोपाल जी अडिग रहे तो राज्यपाल ने उन्हें ही निलम्बित कर दिया। होली मे गहरी भांग छानकर जो परिणाम होना चाहिये वह हरियाणा के मुख्य मन्त्री एवं राज्यपाल ने दिखा दिया। कितनी विडम्बना है कि आज राजनीति के चक्कर में पड़कर सत्य के चमचमाती मणि पर बालुका फेंकी जाती है 'आर्यमित्र' होलिका के अवसर पर इन सबको बधाई देता है परन्तु आशा करता है कि केन्द्र और दूसरे राज्यों के मन्त्री तथा राज्यपाल होली के अवसर पर उतनी ही छानें जितने में मस्तिष्क में सतुलन बना रहे।

-आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

श्री पं० इन्द्रराज जी सभा प्रधान का जनवरी १९८६ का कार्यक्रम विवरण

(१) १ तथा २ जनवरी १९८६ को मेरठ में ही आर्य समाज के कार्यों में व्यस्त।

(२) ३-१-८६ को सहारनपुर आर्य समाज के काम से।

(३) ५-१-८६ कु० मैंग्रगलीना ईसाई युवती की शुद्धि नाम-नीलम रखा गया तथा विवाह भी सम्पन्न कराया।

(४) ६ १-८६ को एक ग्राम में भूमि के देखने के लिए गया तथा वहाँ से होता हुआ गाजियाबाद।

(५) ८-१-८६ गुरुकुल प्रभात आश्रम गया।

(६) ९, १०, ११-१-८६ को आर्य समाज एव सभा के कार्य गुरुकुल के वार्षिकोत्सव की तैयारी तथा त्रैमासिक पत्रिका 'पावमानी' के प्रकाशन की व्यवस्था में सलग्न।

(७) १२-१-८६ हरिद्वार मे कुम्भ मेले में वेदप्रचार कैम्प की बैठक में सम्मिलित।

(८) १३, १४-१-८६ मकर सौर सक्रांति के अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम के वार्षिकोत्सव में संलग्न तथा वार्षिकोत्सव-सफलतापूर्वक सम्पन्न।

(९) १५-१-८६ गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के सम्बन्ध में कार्य।

(१०) १६ से २२-१-८६ पत्नी के भ्राता के देहावसान पर शोक में सलग्न एव विभिन्न प्रकार के आर्य संस्थाओं के कार्य।

(११) २३-१-८६ को सुभाष जयन्ती के अवसर पर शर्मा स्मारक मैदान में विशेष यज्ञ करवाया तथा रात्रि को विराट सभा में नेता जी को श्रद्धांजलि दी।

(१२) २४-१-८६ आर्य समाज के विविध कार्यक्रमों में सलग्न।

(१३) २५-१-८६ प्रातः ११ बजे शास्त्री नगर में श्री देवदत्त जी प्रधान की गोद ली गई लड़की के जन्म दिवस पर आशीर्वाद। तथा आर्य विद्या सदन थापर नगर में गणतन्त्र दिवस पर मुख्य अतिथि आयकर आयुक्त का धन्यवाद ज्ञापन। गोदावरी देवी आर्य विद्या सदन के गणतन्त्र दिवस समारोह मे सम्मिलित।

(१४) २६-१-८६ प्रातः ८ बजे हरिशंकर आर्य विद्या सदन में गणतन्त्र दिवस पर बच्चों को आशीर्वाद। शकुन बाल विद्या मंदिर में गणतन्त्र दिवस समारोह में विशेष अतिथि के रूप में ध्वजारोहण। दयानन्द बाल मंदिर मुरादनगर में ध्वजारोहण एवं विशेष भाषण।

(१५) २७-१-८६ मेरठ में ही विविध सस्थाओं के कार्यों मे सलग्न।

(१६) २८-१-८६ मैडीकल कालेज मेरठ में बहुउद्देशीय हाल में लाला लाजपत राय के जन्म दिवस के अवसर पर विशेष यज्ञ पर स्व० लालाजी को श्रद्धाञ्जलि।

(१७) २९, ३० तथा ३१-१-८६ को मेरठ में विविध सस्थाओं के कार्यक्रमों में व्यस्त।

अवकाश सूचना

'आर्यमित्र' के समस्त पाठक बन्धुओं से निवेदन है कि नवसस्येष्टि पर्व के अवसर पर कार्यालय अवकाश के कारण दिनांक ३० मार्च का 'आर्यमित्र' हम पाठक महानुभावों को प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं। अगला अङ्क दिनांक ६ अप्रैल एवं ३० मार्च का संयुक्त अङ्क प्रकाशित होगा। —सम्पादक

अध्यात्म सुधा

वेद का मनन

(श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०)

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानिदेव-
वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्म ज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठांते
नम उक्तिं विधेम ॥ यजुर्वेद (४०।१६)

शब्दार्थ—हे (अग्ने) स्व प्रकाश ज्ञान स्वरूप सब जगत् के प्रकाश करने हारे (देव) सकल सुखदाता परमेश्वर आप जिसते (विद्वान्) सम्पूर्ण विद्यायुक्त हे कृपा करके (अस्मान) हम लोगो को (राये) विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य के लिये (सुपथा) अच्छे धर्म युक्त आप्त लोगो के मार्ग से (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुनानि) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (नय) प्राप्त कराईये और (अस्मत्) हमसे (जुहुराणम) कुटिलता युक्त (एन) पाप रूप कर्म का (युयोधि) दूर कीजिये इस कारण हम लोग (ते) आपकी स्तुति रूप (नम उक्तिभू) नम्रता पूर्व प्रशंसा (विधेम) सदा किया करें और सवदा आनन्द मे रहें । (संस्कार विधि मे)

विशेष—इस मन्त्र मे भगवान् को अग्नि और देव नाम से पुकारा गया है क्योकि हम लोग राज्यादि ऐश्वय चाहते है वह भगवान ही हमे राज्यादि ऐश्वय दिलवा सकता है । वह अग्नि है-प्रकाश स्वरूप है, ज्ञान स्वरूप है और समस्त ज्ञान का प्रकाशक भी है । वह 'देव' अर्थात् समस्त सुखो का देने वाला भी है । ऐसे भगवान् से हम प्रार्थना कर रहे है कि हे भगवन् हम धन और ऐश्वर्य के लिये ले चल । वह भगवान्—विद्वान-सवज्ञ और सब विद्यायुक्त हैं । वह हो 'विश्वानि वयुनानि, सम्पूर्ण ज्ञान और उत्तम कर्मो को प्राप्त कराने वाला है । इसने भक्ति विभोर हो कर हम उसी सार्थक प्रार्थना करते हैं । हे भगवन् । हम ऐश्वर्य शाली तो होना चाहते हैं परन्तु उस ऐश्वय को प्राप्त करना चाहते है 'सुपथा अच्छे मार्ग से । बस वेद मे और लोकमे बहुत बड़ा अन्तर है । लोक कहता है पात्र पवित्र और अच्छा होना चाहिये चाहे साधन ठीक हो या न हो । वद कहता है कि साध्य भी पवित्र होना चाहिये और साधन भी पवित्र होना चाहिये ।

ससार मे दो प्रकार का ऐश्वर्य है । एक तामसिक ऐश्वर्य जो हमें खा जाता है । एक सात्विक ऐश्वर्य जिसका हम उपयोग करते हैं । हम फूलते फलते हैं और सुखी होते हैं । गलत रास्ते कुपथ से कमाया हुआ धनैश्वर्य व्यक्ति को खा जाता है और सही रास्ते सुपथ से कमाया हुआ धनैश्वय व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करता है ।

अत इस मन्त्र मे हम भगवान् से सुपथ पर चल कर सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्मो के द्वारा ऐश्वर्य शाली होना चाहते हैं । कभी कभी हमारे मन मे छिपा कुटिलता रूप पाप, जो बाहर तो किसी को दिखलाई नहीं देता अपितु अन्तर्यामी परमात्मा ही उसको देखता है, हमें सुपथ पर चलने नहीं देता । हम सुपथ का प्रदर्शन और ढोंग करते हैं परन्तु येन केन प्रकारेण धनैश्वर्य का सचय करना चाहते है । मन में छिपी दुर्बलता को सांसारिक जन दूर नहींकर सकते अपितु वह अन्तर्यामी, सर्वज्ञ, और सब कुछ देने वाला भगवान्—ही दूर कर सकता है ।

यह दुर्बलता कब वह दूर करता है जब हम उसकी शरण मे जाकर बडी नम्रता पूर्वक उसकी महिमा का गान करते हैं । उसका पवित्र नाम कीर्तन एक उग्र प्रकाश की भाँति हृदय मे से कुटिलता युक्त पाप कर्म रूप अन्धकार को क्षण भर मे नष्ट कर देता है छिपे हुए कुटिलता रूप पाप कर्म को केवल मात्र उस एक प्रभु की अनन्य भक्ति, उसकी नम्रता और कृतज्ञता से भरी स्तुतियाँ ही दूर कर सकती हैं । असत्, तमस, और मृत्यु से सत्, प्रकाश और अमरत्व की ओर तो उस का पवित्र 'ओ' नाम ही ले जाने में समर्थ है । केवल उसी की नम्रता पूर्वक प्रशसाए ही व्यक्ति के हृदय को पवित्र करने वाली है । पवित्र हृदय ही सुपथ पर चल सकता है । उस सुपथसे अर्जित ज्ञान और उत्तम कर्म ही परमात्मा की सुप्रेरणा मे ऐश्वर्य सम्पन्न करते हुए व्यक्ति को आध्यात्मिक ऐश्वय का रसा स्वादन भी करवा सकता है ।

मन्त्र मे भावना है समर्पण की, केवल उस सर्वज्ञ-सर्व शक्तिमान्, प्रकाश स्वरूप, और समस्त ऐश्वर्यो के दाता परात्पर ब्रह्म के प्रति ।

आईए ! नम्रता पूर्वक बार बार नमन करते हुए केवल उसी का कीर्तन करें ।

आर्य जगत

—अखिल भारतीय आर्य सभा कानपुर के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द का जन्मोत्सव दि० १९ फरवरी ८६ को आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे धूम-धाम एव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ । उत्सव प्रभाव शाली रहा । डा० कृष्णकुमार आर्य मन्त्र

भारत का राष्ट्रीय रंगीन महापर्व–

वासन्ती–होली–नवसस्येष्टि

(श्री केशवदेव शास्त्री वानप्रस्थ महोपदेशक, अधिष्ठाता उपदेशविभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ, वेद निकेतन साँडी, हरदोई)

भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। इस हमारे देश की यही विशेषता रही है कि यहा छै ऋतुयें होती हैं। संसार के किसी भी देश में छै ऋतुयें नहीं होती। सर्दी, गर्मी, वर्षा तीन ही ऋतुयें समस्त ससार मे पाई जाती हैं। फिर भी सर्दी, गर्मी की सधि मे बसन्तोत्सव प्राय सभी देशों मे किसी न किसी प्रकार मनाया जाता है। यह खुशी का त्योहार होता है। हमारे देश मे अभी बसन्त पचमी का त्योहार (माघ शुक्ल पक्ष पचमी) मना कर ऋतुराज की आगमानी कर स्वागत किया था। अब प्रकृति की छटा मे काफी परिवतन आ गया है। और बसन्त अपने पूर्ण यौवन पर है। प्रकृति ने धरती पर नव पल्लवों, नव विकसित कुसुमों की बहार बिखेर दी है। चारों ओर प्रफुल्लता का वातावरण नृत्य कर रहा है। वन, उपवन, नगर, ग्रामों मे नव जीवन सचार हो रहा है। वृक्षों ने पुराने पल्लव झाडना प्रारम्भ कर दिये। नवकोमल कलिकाये प्रकट होने लगीं। पक्षियों ने भी पुराने पर त्याग नवीन पर ग्रहण किये। पशुओ मे पुरानी रोमावलि त्याग कर नवीन रोमावलि का चित्र विचित्र परिधान ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया है। मानव जीवन मे भी एक नया उल्लास उत्साह बिखरने लगा है। एक शब्द मे यदि कहे कि, सारी प्रकृति ने ही अपना पुराना चोला त्याग कर नवीन चोला ग्रहण कर लिया है। और समस्त वातावरण में नवजीवन सचार हुआ है। फाल्गुन पूर्णिमा के अवसर पर प्राचीन आर्यों का एक अन्तिम एवं मुख्य पर्व वासन्ती-होली नवसस्येष्टि के रूप मे अनादि वैदिक काल से मनाया जाता रहा है। यह वासन्ती होली, नवसस्येष्टि नाम से पुकारा जाता है। इसी को होली, होलक, होला होलिका भी कहते हैं। यह पर्व भी शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावलि) की भांति अति प्राचीन वैदिक कालीन बसन्त ऋतु मे मुख्य गेहू जौ चना आदि उपज का यज्ञ मे अर्पित करके ग्रहण करने का एक विशेष पर्व है। होला होलक, होली और होलिका भी इसी भाव मात्र का प्रतीक है। संस्कृत भाषा का 'होलक' जिसे आजकल होला कहते हैं का अर्थ अधपका भुना हुआ अन्न है। 'तृणाग्निभृष्टार्द्ध पक्व-शमीधान्यं होलक" होला इति भाषा। (शब्दकल्पद्रुम कोष) इसी प्रकार भाव-प्रकाश मे लिखा है कि अर्ध पक्व शमीधान्यैस्तृणा भृष्टैश्च होलक अर्थात् तिनकों की अग्नि से भुने हुये अधपके शमी धान्य फल वाले अन्न की बाली को होलक (होला) कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि, होलक. से होलिकोत्सव अथवा होला से होली नाम नवसस्येष्टि का ही बिगड़ा रूप है और इसीलिये (होलिका) के नाम से कण्डा लकडी तृण घास आदि जला जलाकर उसमे जौ की नवीन बाली अधभुनी कर होला बनाते और उसी का प्रसाद ग्रहण करते हैं। नवसस्येष्टि यज्ञ ग्रामों में बडे विशाल रूप से सामूहिक रूप से होता था। और उसमे नवान्न का होला बनाकर सर्वप्रथम उसका सेवन कर आमोद-प्रमोद खुशी का उत्सव मनाते और वासती रग द्वारा एक दूसरे को रग कर शिष्टता सभ्यतापूर्वक सभी मतभेद भुलाकर एक दूसरे को गले मिलते थे। और संगीत द्वारा इसे प्रदर्शित करते थे।

किन्तु पुराणकारों ने इस राष्ट्रीय नवसस्येष्टीय वासन्ती होलीका पर्व के नाम पर भी एक कथा हिरण्यकशिपु प्रहलाद की गढ़ ली। हिरण्यकशिपु की कथित बहिन 'होलिका' की गोद मे प्रहलाद को बिठा कर अग्निदाह कराकर दिया, जिसमें 'होलिका' जलमरी और प्रहलाद बच गये । उसी आग को देखकर भक्तों ने धूल फेंक कर बुझा दिया और भक्त प्रहलाद भगवान की कीर्तन करते बाहर निकले। यह कथा पद्मपुराण मे पाई जाती है। इन पौराणिक भक्तों से कोई पूछे कि क्या उक्त नास्तिक राक्षस हिरण्यकशिपु की बहिन जो जल गई और प्रहलाद भक्त को जलाना चाहती है तो उसे ही होलिका माता की जय कह कर आप नास्तिक राक्षस राज हिरण्यकशिपु के ही अनुयायी और उसके दल के ही सिद्ध नहीं होते, इससे तो भक्त प्रहलाद की जय बोलते तो अधिक उपयुक्त और उचित था। दूसरी ओर राक्षसी होलिका के जल जाने पर राक्षसों ने भक्त प्रहलाद और उसके आस्तिक देवताओं को गालियां दी थीं। और वही गाली अथवा कबीर बोलना यह राक्षसी कृत्य नहीं तो क्या है?

उपर्युक्त उद्धरण देने का हमारा अभिप्राय यह है कि राक्षस हिरण्य कशिपु अपने को ईश्वर कह कर नास्तिक बन गया था। प्रहलाद आस्तिक था हम आस्तिक प्रहलाद के दल के होने से भक्त प्रहलाद की जय बोलते न कि राक्षसी होलिका की।

इस पर्व के वर्तमान उस पौराणिक रूप पर दृष्टि डालिये जिसमे सभी कृत्य राक्षसी होते हैं। आज यज्ञ वेदी पर कूडा, कर्कट गदगी तथा चोरी से लाया काष्ट लकड़ी महीनों पहले इकट्ठा करके उसमें आग लगाना और माह भर जो पैदा हुये कीटाणुओं को जलाकर दुर्गन्ध पैदा कर देना और उसी में जौ की बालें भूनना कहा की बुद्धिमत्ता है? दूसरे दिन धुलहरी के नाम पर धूल मिट्टी कीचड कोलतार अथवा सडे नाबदानो का मल लेकर और भोंडा वीभत्स रगों द्वारा मुखौटे रँगना, कपड़ों को बरबाद करना इस कृत्य का होलिका पर्व से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस अवसर पर भांग, शराब, गांजा अथवा अन्य नशे मे धुत हो, मा बहिन, भावज आदि-आदि को कबीर गाली, अश्लील बकना इसे खुशी या होली का प्रदर्शन नहीं कहा जा सकता है। बेहयाई और निर्लज्जता का प्रदर्शन अवश्य है, यह सब पुराणों की देन है। भविष्योत्तर पुराण मे इस उक्त प्रकार निर्लज्जता से होली मनाने का वर्णन विस्तार से पाया जाता है। वहां लिखा है कि "गालिदानं तथा हास्यललनानर्तनस्फुटम्। वेष संन्यासिना कायनटी योगीनाम ध्रुवम्। वेश्यानाम् योगिनी नाच मोहिनी ना च कारयेत्। जल्पन्तु स्वच्छया सर्वे निशंका यस्य यन्मतम् । भविष्योत्तर पुराण।

अर्थात् गाली देना, हसना, बकवास, लड़कियो का नाच मनमाने वेष बनाकर, वेश्याओं का नाच अपनी इच्छानुसार निःशंक होकर ।

इस प्रकार इस पर्व का वर्तमान कुत्सित रूप जो आज समस्त देश मे प्रचलित है। यह पुराण अथवा पौराणिक अन्धविश्वास की देन है। जिसके परिणाम स्वरूप अनेक स्थानों पर प्रति वर्ष झगड़े हो जाते हैं चलती हुई रेल मे मोटरों में ईंटें पत्थर धूल मिट्टी फेंकना यह सब कुछ होलिका पर्व का अंग नहीं हो सकता। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि किसी सामाजिक बुराई पर यदि धर्म और नैतिकता की मुहर लगा दी जाये उस अवस्था में उसे दूर करना कठिन हो जाता है ऐसी स्थिति में वैदिक आर्यों द्वारा होली, वासन्ती, नवसस्येष्टिय यज्ञ आर्य पर्व पद्धति के अनुसार करके शिष्टता सभ्यतापूर्वक वासती रग का प्रयोग कुछ अनुचित नहीं कहा जा सकता तथा मनोरंजन के लिए धर्मपूर्वक बड़े-बड़े सम्मेलन कर शिष्टतापूर्वक प्रसन्नता भी व्यक्त की जा सकती है। आज के दूषित वातावरण में हमें गम्भीरतापूर्वक इस सब पर विचार करना चाहिये और अपनी इस अवैदिक दूषित पद्धति मे परिवर्तन करना चाहिये आशा है विज्ञजन इस ओर अवश्य ध्यान देंगे।

धूमकेतु से सम्भावित आपदायें ?

(डा० काशीनाथ शास्त्री एम० ए० बी० टी० साहित्यालंकार विद्यावाचस्पति एच० एम० डी० एस० आयुर्वेद विशारद आर्य निवास, राजेन्द्र वार्ड गोंदिया (महाराष्ट्र)

७५ साल बाद पुन. दिखलाई पड़ने वाले धूमकेतु से होने वाली सम्भावित आपदाओं के बारे में तरह-तरह की अटकलें लगायी जा रही हैं। एक ओर जब पश्चिमी वैज्ञानिक फ्रेडहायल तथा अन्य कइयों की यह धारणा है कि 'आज से करोड़ो वर्ष पूर्व से 'जीवतत्व' धूमकेतुओ की पूंछ के सहारे पृथ्वी पर आने लगे' और उन्हीं के कारण पृथ्वी पर जीवन का विकास हुआ।' तब यह कैसे माना जाय कि इस बार धूमकेतु की लाखों मील लम्बी पूंछ अपने साथ ऐसे असंख्य जहरीले तत्व और सूक्ष्म विषाणु लावेगी कि जिनसे विश्व के अनेक भागों में नये किस्म की बीमारियां फैलेंगी ? पुन यदि यह सब भी मान लिया जाय कि धूमकेतु की पूंछ में तरह-तरह की जहरीली गैस और असंख्य सूक्ष्म विषाणु होते हैं तो उनका कुप्रभाव वायु प्रदूषण और महामारियोंके रूप में प्रकट हो सकता है जिसके लिये प्रतिरोधक या कुप्रभाव को नष्ट अथवा क्षीण करने के कतिपय उपाय किये जा सकते हैं जिनमे हवन सर्वोत्तम उपाय है। परन्तु ऐसे कुप्रभावों के निवारणार्थ सर्वत्र विशाल यज्ञ (हवन) किये जांय तभी उनके सुपरिणाम सुस्पष्ट दृष्टिगोचर हो सकते हैं।

खगोल शास्त्रियो और अंतरिक्ष वैज्ञानिकोंकी धारणानुसार धूमकेतु के पृथ्वी के अति निकट आ जाने पर उसके प्रभावके कारण भूकम्प, भयंकर समुद्री तूफान व शीतलहर और ज्वालामुखी विस्फोट इत्यादि किसी न किसी प्राकृतिक अनर्थ की सम्भावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। परन्तु धूमकेतु के आगमन के प्रभाव का सम्बन्ध संसार मे प्रतिदिन होने वाली दुर्घटनाओ, राजनीतिक उथल-पुथल, महायुद्ध और राजा-महाराजाओं या राष्ट्राध्यक्षों एवं महा-पुरुषों के निधन इत्यादि से जोड़ना सर्वथा असंगत व अमान्य है। उदाहरणार्थ—हजारों व्यक्तियों की जान लेवा गत वर्ष की भोपाल गैस त्रासदी का या अभी हाल मे भिलाई में हुये इस्पात संयंत्र गैस विस्फोट जैसी घटनाओं का सम्बन्ध धूमकेतु के आगमन से जोडना सर्वथा हास्यास्पद व अविश्वसनीय है। इस मामले मे हमारे भारतीय ज्योतिषी और भविष्य वक्ता तो और भी अधिक कुशल व अग्रणी हैं। ज्यों ही नये वर्ष का आगमन होता है त्यो ही ये लोग देश के प्रमुख राजनीतिक नेताओं व व्यक्तियों का वर्ष भर का भविष्य बखान डालते है और साल भर की राजनीतिक उथल-पुथल की भविष्य वाणी कर देते है जो देश विदेश मे चल रही राजनीतिक गति-विधियों के सूक्ष्म अवलोकन या अध्ययन पर अनुमानित होती है। यदि उनमे से कोई बात किसी भविष्य वक्ता की सत्य निकले तो कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि वर्तमान घटनाक्रम को देखते हुये उसके परिणाम के सम्बन्ध में अनुभवी राजनीतिज्ञों या विचारशील व्यक्तियों का अनुमान प्राय सही निकलता है। यही बात ग्रहों की पृथ्वी से अति निकट या दूर होने की स्थिति पर चरितार्थ होती है।

परन्तु ये ग्रह (धूमकेतु आदि) कोई दैत्य, हिंसक पशु या दुष्टात्मा नहीं हैं जो किन्हीं विशेष व्यक्तियों को जान-बूझ कर हानि पहुंचायें या अपनी किसी पुरानी दुश्मनी का बदला लें। कहा जाता है कि धूमकेतु जिस दिशा मे निकलता है वहां के देश सबसे अधिक प्रभावित होते है। इस बार धूमकेतु पश्चिम दिशा में निकला है अत पाश्चात्य खगोल शास्त्रियो ओर अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के अनुसार इस बार धूमकेतु के आगमन का सर्वाधिक अनिष्टकारी परिणाम यूरोपीय देशों को भुगतना पड़ेगा। परन्तु राजनीति से रोटियां सेकने वाले एक प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिषी जी महाराज की मान्यतानुसार धूमकेतु का असर वर्ष (१९८६) भर रहेगा तथा इससे राष्ट्रीय स्तर के नेता गण एवं उद्योगपति प्रभावित होंगे। खास कर धूमकेतु का अनिष्टकारी प्रभाव दिल्ली पर खास तौर से पड़ेगा और इसके फलस्वरूप बड़ी बैंक डकैतियां व अग्नि दुर्घटनायें होंगी जिनसे जान-माल का भारी नुकसान होने का अन्देशा है।'

समीक्षा—यदि ज्योतिषी जी महाराज ने धूमकेतु के अनिष्ट के बारे मे दिल्ली के सम्बन्ध मे सर्वाधिक विचार किया था तो उन्होंने अभी कुछ दिन पहले दिल्ली के पांच सितारा होटल में भीषण आग लगने के बारे में पहिले से (उसके नाम सहित) भविष्य वाणी क्यो नहीं कर दी और भीषण आग न लग सकने के उपाय क्यो नहीं प्रकाशित कर दिये ? यही बात राजा-महाराजाओं या राष्ट्राध्यक्षोंके बारे में भी चरितार्थ होती है। शासकों या राष्ट्राध्यक्षों ने धूमकेतु का क्या बिगाड़ा है जो वह इनका अनर्थ करेगा ? सन् १९१० में जब धूमकेतु दिखा था तब उसके कुछ समय बाद यदि संयोगवश ब्रिटिश सम्राट एडवर्ड सप्तमकी मृत्यु हुई तो इसका यह अर्थ नहीं है कि इसबार भी कई राजाओं, राष्ट्रपतियो, राजनेताओं और महापुरुषों की मृत्यु होगी ही यों तो प्रतिवर्ष किसी न किसी प्रसिद्ध राजनेता या महापुरुष की मृत्यु होती ही रहती है। पुन धूमकेतु के दुष्प्रभाव के कारण राष्ट्राध्यक्षों इत्यादि की मृत्यु के सम्बन्ध मे ज्योतिषियों मे एक मत भी नहीं है। उदाहरणार्थ यूरोपीय देशो के चीन और अमेरिका के दो प्रमुख ज्योतिषियोंने भविष्यवाणी की है 'इस बार विश्व के कम से कम पांच देशों के राष्ट्राध्यक्ष और दो प्रधान मंत्रियो का देहान्त १९८६ के मई महीने से नवम्बर तक होने की सम्भावना है।' किन्तु इस देश के दो सुविख्यात ज्योतिषियों ने कम से कम तीन राष्ट्राध्यक्ष या राष्ट्र प्रमुखों की शोचनीय मृत्यु होने की तथा लगभग डेढ़ दर्जन बड़े नेताओं के जीवन के लिये संकट पैदा होने की आशंका व्यक्त की है।

'संभावना है' 'आशंका है' 'हो सकती है' इत्यादि ज्योतिषियों की संदिग्ध भाषा भी उनकी भविष्य वाणियों की असत्यता प्रकट करती है। 'लग गया तो तीर, नहीं तो तुक्का' वाली कहावत के अनुसार यदि इनकी कोई बात सत्य निकली तो डींग हां केंगे, नहीं तो चुप होकर बैठ जायेंगे। धूमकेतु के अनिष्टकारी प्रभाव के बारे में भी ज्योतिषियों में मतैक्य नहीं है। देश के एक सुविख्यात ज्योतिषी के मतानुसार धूमकेतु का असर वर्ष भर रहेगा। क्रमशः

महिला मण्डल

नारी के समानाधिकार

[श्रीमती सत्य भार्गव देवी साहित्यरत्न, सी ३४-पंचशील एनक्लेव नई दिल्ली-१७]

आज संसार मे सर्वत्र ही नारी के समानाधिकार की चर्चा पढ़ी व सुनी जाती है। हमारे आदि ग्रन्थ वेदो मे जो सनातन ग्रन्थ हैं, उसमे पुरुष के समान ही नारी को समानाधिकार दिया गया है। भले ही उस का कार्य क्षेत्र पृथक है, पर अधिकार समान ही हैं। जैसे, पुरुष को प्रत्येक कार्य क्षेत्र मे चाहे सामाजिक हो, धार्मिक हो अथवा राजनैतिक हो, करने का पूर्ण अधिकार है, वैसे ही नारी को भी समयानुसार स्थिति अनुकूल पूर्ण अधिकार है। जहा शिक्षा के क्षेत्र मे वैदिक काल मे नारी का समानाधिकार था, वैसे ही वर्तमान काल मे भी नारी का वही उत्कृष्ट उदात्त स्थान है। नारी मे सूझ-बूझ का होना अत्यावश्यक है और शिक्षा के क्षेत्र मे भी नारी का शिक्षित होना पुरुष से कहीं अधिक आवश्यक है।

नारी को जीवन मे सर्वप्रथम माता-पिता, फिर पति-गृह, फिर यदि वह चाहे तो अन्त मे पुत्र के साथ रहते हुए उसकी सन्तान को धर्म शिक्षा व्यावहारिक ज्ञान-शिक्षा देकर अपनी वंश परम्परा को कायम रखने के लिये सब प्रकार से सुयोग्य एव गुणी बनाना है। अत यदि वह शिक्षित गुणवती, दूरदर्शिका न होगी तो प्रत्येक कार्य-क्षेत्र मे वह क्यों कर चिर-शान्ति, सन्तुष्ट, सप्रसन्न और सुखी रह सकेगी। वेदों मे यहाँ तक कहा है कि-

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
—अथर्ववेद काण्ड ११, सूक्त ५, मन्त्र १८

अर्थ—ब्रह्मचर्य, विद्याभ्यास से पूर्ण विद्या को प्राप्त होके युवति, विदुषी, अपने अनुकूल सहर्ष, प्रिय विद्वान् पूर्ण युवावस्था युक्त पुरुष को वेदोक्त स्वयम्बर रीति से प्राप्त होवे।

सामवेद के ७।।३३८ मन्त्र मे पति-पत्नी के लिए (गीर्भि) वेद वाणियों द्वारा (वर्धयाम्) वृद्धि को प्राप्त हो। वेदवाणियों के दृष्टि कोण से वृद्धि प्राप्त करने का अभिप्राय यह है कि उत्तरोत्तर अपने ज्ञान को बढ़ावे और यथानुकूल अपने जीवन को बनावे। इससे जीवन में सरसता आती है।

श्रौत सूत्रादि में कहा है—"इम मन्त्रं पत्नी पठेत" अर्थात्–यज्ञ मे इस मन्त्र को स्त्री पढ़े। यदि नारी वेदादि शास्त्रो को न पढ़ी हो तो यज्ञ में सस्वर मन्त्रोच्चारण और संस्कृत मे भाषण कैसे कर सकेगी। शतपथ ब्राह्मण मे स्पष्ट लिखा है कि वेदादि शास्त्र पढ़कर स्त्रियां पूर्ण विदुषी हुई थीं। किसी कवि का वचन है–

माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठित।
न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा॥

अर्थ–वे माता पिता अपनी सन्तानों के पूर्ण वैरी हैं, जिन्होंने शिक्षा विद्या की प्राप्ति नहीं कराई। वे विद्वानों की सभा में–जैसे हंस के बीच बगुला या कौवा कुशोभित और तिरस्कृत, अनादरित होता है, वैसे ही वे अनादरित होते हैं। जहां पुरुष का–वहां स्त्री का भी सुसंस्कृत, सुशोभित, सुविद्यावान होना अति आवश्यक है।

मनुस्मृति–७/१५२ में कहा गया है—"कन्यानां सम्प्रदानं कुमाराणां च रक्षणाम्।" अर्थात्–सब कन्या (लड़के) उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य मे रखकर विद्वान् कराना। जो इस आज्ञा का उल्लंघन करे उसके अभिभावक माता-पितादि को दण्ड दिया जाय। नारी के सम्बन्ध मे वेद की निम्नलिखित दिव्य वाणी दृष्टव्य है—

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योते अदिते सरस्वति महि विश्रुति।
एता ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतम्ब्रूतात॥ यजुर्वेद ८-४३

अर्थ—हे स्त्री! तू स्तुति योग्य, उत्तम वाणीयुक्ता, रमणीया, पूजनीया, कमनीय, चन्द्र के समान आह्लाद देने वाली, श्रेष्ठ शील से प्रकाशमान, अर्थात् ज्योति के समान अज्ञानान्धकार को अपने दिव्य गुणों के प्रकाश से दूर करने वाली, दीनता और हीनता के भावों से रहित, परम्परा से प्राप्त उत्तम ज्ञान से युक्त विदुषी, महान्, उदारभावों से पूर्ण विविध विद्याओं मे प्रवीण ये तेरे नाम हैं। तिरस्कार करने के अयोग्य है। जिसका हिंसा करना कभी योग्य नहीं है। इस प्रकार प्राचीन काल मे वैदिक साहित्य मे नर-नारी के समान अधिकार थे। इसीलिये वेद मे लोपामुद्रा, घोषा, ब्रह्मवादिनी ऋषियां हुई हैं, जो पूर्ण विदुषी और वेद ज्ञाता थीं। गार्गी ने राजा जनक से शास्त्रार्थ मे विजय पाई थी। महारानी लीलावती बीजगणित मे पारगत थीं। मैत्रेयी ने विदुषी वेद माता होते हुए ऋषि याज्ञवल्क्य के उपदेश द्वारा ही श्रेय मार्ग प्राप्त किया था। त्रेता युग में राजा दशरथ की रानी कैकेयी ने जब युद्ध में रथ चक्र टूट गया तो, उस धनुर्वेद की ज्ञाता वीर स्त्री ने ही युद्ध मे स्वपति की सहायता की थी। राम वनगमन के समय माता कौशल्या ने ही सहर्ष पितृ आज्ञा पालन का उपदेश दिया था। राम के साथ सीता ने अपनी सतीत्व एवं पातिव्रत धर्म-पालनार्थ ही वन में १४ वर्ष महान् कष्ट सहे थे। लक्ष्मण ने, राम सीता के साथ वनवास जाते समय उपदेश स्वपत्नी उर्मिला को दिया कि कुटुम्ब श्वसुरादि की रक्षा–स्वकर्तव्य सहर्ष पालो पूर्ण करो। उर्मिला ने पति की आज्ञा को (१४ वर्ष तक) शिरोधार्य कर पति वियोग सहन करते हुए राजमहल मे श्वसुर परिवार की सेवा की। अपने कर्तव्य में अडिग रही। १४ वर्ष के वनवास मे सीता ने राजमहल के सुख भोग को त्यागकर पति का साथ दे पतिव्रत धर्म को पाला। चार वेद, छः शास्त्रों के ज्ञाता विद्वान् राजा रावण ने जब सब प्रकार से सीता को राज्य सुखों को अपनाने के लिए बार-बार अनुरोध किया, तो भी सीता जी अपने पतिव्रत धर्म से किंचित भी न डिगीं। ऐसी तपस्विनी नारी ने साहसी बनकर संसार मे नाम अमर कर दिया। महाभारत काल में भी बहुत ही सुयोग्य नारियाँ हो चुकी हैं। गान्धारी पति धृतराष्ट्र के दृष्टिहीन होने के कारण स्वयं भी अपनी आंखों पर सदा पट्टी बांधे रही। इस प्रकार अपनी पति भक्ति का परिचय दिया। पाण्डव जब कौरवों के साथ द्यूत खेलकर सर्वस्व हार गये तो अन्त में दांव पर द्रौपदी को भी हार में देना पड़ा। भरी सभा में द्रौपदी को निर्वस्त्र लाया गया। अर्जुन पुत्र अभिमन्यु को चक्रव्यूह भेदन विद्या ज्ञान भी उसकी माता सुभद्रा, जब वह गर्भ में था प्राप्त हुई थी। विदुषी विद्योत्तमा जो शास्त्रार्थ में सदा ही विजयी होती थी उसे महाकवि कालिदास को महान पण्डित बनाने का श्रेय था। जिसने एक मूर्ख व्यक्ति को धोखे से पाकर एक प्रकाण्ड

(क्रमशः)

ओ३म्

❀ आवश्यक सूचना ❀

उ.प्र. की समस्त आर्यसमाजों के माननीय प्रधान मंत्री जी की सेवा में-

प्रिय महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश शताब्दि समारोह की स्मारिका के प्रकाशनार्थ निम्न सूचनाएं अपेक्षित हैं, यथाशीघ्र भेजकर कृतार्थ करें। इस ग्रन्थ में आपकी गौरवशाली आर्यसमाज का उल्लेख आवश्यक है।

आपका
मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा

१–नाम आर्यसमाज

२–स्थान	पो०	जिला

३–आर्यसमाज की स्थापना तिथि

४–आर्य प्रतिनिधि सभा में प्रविष्टी की तिथि

५–आर्यसमाज की स्थापना के समय, पदाधिकारियों के नाम

प्रधान —उप प्रधान –मंत्री उपमंत्री —कोषाध्यक्ष —लेखापरीक्षक –पुस्तकाध्यक्ष

६–आर्यसमाज के वर्तमान पदाधिकारियों के नाम तथा निवास के पते सहित–
(अ) प्रधान–
(ब) उप प्रधान–
(स) मन्त्री–
(द) उपमन्त्री–
(य) कोषाध्यक्ष–
(र) पुस्तकाध्यक्ष–
(ल) निरीक्षक–

७–आर्यसमाज की वर्तमान सदस्य संख्या–	सहायक सख्या
८–आर्यसमाज का भूमि भवन है या नहीं, यदि हैं तो उसका मूल्य	तथा क्षेत्रफल
९–आर्यसमाज में पुस्तकालय है या नहीं, यदि है तो पुस्तक संख्या–	तथा मूल्य
१०–आर्यसमाज द्वारा संचालित संस्थाओं के नाम–
११–आर्य वीर दल है या नहीं, उसकी संख्या–
१२–दैनिक अथवा साप्ताहिक सत्संग होते हैं या नहीं–
१३–वेद प्रचार की व्यवस्था का उल्लेख–
१४–आपकी समाज 'आर्यमित्र' साप्ताहिक की ग्राहक है या नहीं ?
१५–विशेष वक्तव्य–विगत तीन वर्षों में आपकी समाज द्वारा किया हुआ कोई उल्लेखनीय कार्य–
(उदाहरणार्थ) जैसे- शुद्धि, भवन निर्माण, निर्धन सेवा, औषधालय, आदि-आदि।

हस्ताक्षर

दिनांक	मन्त्री	प्रधान

शास्त्रार्थ सम्पन्न

विरजानन्द विद्यापीठ देवपुरा, मैनपुरी के आचार्य प० महेन्द्रपाल जी एम० ए० (संस्कृत) बी० एड० (वैदिक पक्ष) तथा श्री श्री १००८ महन्त प्रेमदास जी महाराज घटियाघाट फर्रुखाबाद (पौराणिक-पक्ष) के मध्य, ग्रा०—रजवामा, तहसील भोगांव, जिला-मैनपुरी मे, स्थानीय ग्राम-सभा के प्रधान की व्यवस्था मे पूर्व—घोषित एवं सुनिश्चित कार्यक्रमानुसार, दि० २६-१-८६ को, सहस्त्रो के भारी जन-समूह मे शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ । पौराणिक-पक्ष की ओर से अतीव अशोभनीय, पुराने घिसे-पिटे तथा निरर्थक आठ प्रश्न प्रस्तुत किये गये जिनका वैदिक पक्ष की ओर से तर्क पूर्ण एव सन्तोष जनक उत्तर दिया गया । वैदिक पक्ष की ओर से सात प्रश्न प्रस्तुत किये गये जिनमे से एक प्रश्न का भी उत्तर पौराणिक पक्ष की ओर से न हो सका और महन्त जी को लज्जित होकर मध्य ही नही सभा-स्थल भी छोडना पड़ा । सभा मे म० दयानन्द की ! जय, आर्य समाज ! अमर रहे, वेद की ज्योति ! जलती रहे आदि के उद्घोष हुए । ग्रामीण जनता पर इस शास्त्रार्थ की ऐसी छाप पड़ी कि वहा पर पूर्व से आयोजित 'भागवत' का कार्यक्रम ही निरस्त कर दिया गया ।

कु० ध्रु्व पालसिंह 'अटल'
निरीक्षक, सभा

निर्वाचन

आर्य समाज जनक नगर सहारनपुर
प्रधान श्री डा० ओ३मप्रकाश वर्मा
मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य
कोषा० श्री कालूराम शर्मा

आर्य समाज मेरठ शहर
प्रधान श्री मनोहर लाल सर्राफ
मन्त्री श्री इन्द्रराज जी
कोषा० श्री देवेन्द्र स्वरूप जी

श्री हीरालाल आर्य वैदिक प्रतिष्ठान मेहदावल (बस्ती)
प्रधान श्री जगदीश प्रसाद
मन्त्री श्री शिवनारायण वेद पाठी

महिला आर्य समाज स्टेशन रोड, मुरादाबाद
प्रधाना श्रीमती जनक देवी
मंत्राणी श्रीमती निर्मल आर्या
कोषा० श्रीमती शशीकान्ता

आर्य समाज कसारा (आजमगढ़)
प्रधान श्री कपिल देव राय
मन्त्री श्री ज्ञानेन्द्र वर्मा
कोषा० श्री प्रकाश लाल श्रीवास्तव

साहित्य-समीक्षण

'विकल्प'—

लेखक श्री विशन स्वरूप गोयल—३३१४ बेक स्ट्रीट, करोल बाग—नयी दिल्ली—५— प्रकाशक—वैचारिक विकल्प प्रकाशन—३३१४ बेक स्ट्रीट—करोल बाग नयी दिल्ली—पृष्ठ सख्या १८४, मूल्य २५ रुपया ।

श्री विशन स्वरूप जी गोयल बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति हैं । कुशल उद्योग पति तथा विचार शील प्रतिभा सम्पन्न कुशल लेखक हैं । राष्ट्रीय विचारों से ओत-प्रोत है एव राष्ट्र हित की विचार धारा के धनी हैं । प्रस्तुत समीक्ष्य पुस्तक 'विकल्प' मे श्री गोयल जी के विचार प्रधान लेखों का सग्रह है । प्रमुख विषय है-सम्प्रदायिक दंगें क्यों होते हैं, हिन्दू कौन है, भ्रष्टाचार—कारण और निदान, धर्म की सही दृष्टि, धर्म निरपेक्षता एवं अल्प सख्यक, समाजवाद-राष्ट्रीय करण, आजादी या बटवारा, भारत हिन्दुस्तान इण्डिया, चुनाव-बढती विकृतियाँ-हिन्दू अपने देश मे क्यों अनाथ, हिन्दू राज्य की स्थापना । आदि ज्वलन्त विषयो पर निर्भीक विचार सम्पन्न लेखनी द्वारा पुस्तुत है । लेखक ने प्रत्येक विषय पर गम्भीरता से विचार करके राष्ट्रीयता की खरी कसौटी पर कसते हुए तर्क पूर्ण रीति विचार व्यक्त किये हैं । देश के विभाजन को जो वास्तव मे उस समय के नेताओ की मूढ़ता के कारण स्वीकार किया गया—भारत के साथ एक अक्षमनीय विश्वासघात है और आज भी विभाजन के बाद समस्यायें उसी प्रकार है । चाटुकारिता-मतो के लिए देश हित का परित्याग आदि पृष्ठ भूमि है । प्रत्येक देश भक्ति हृदयवाले व्यक्ति को यह 'विकल्प पुस्तक पठनीय है । हमारी यही सस्तुति है । सही दिशा सच्ची राष्ट्रीयता और देश पर न्योछावर होने का सन्देश लेखक की पक्तियो मे मुखरित है । श्री गोयल बधाई के पात्र हैं ।

प्रकाशन—उत्तम आकर्षक है । कागज सुन्दर है मुद्रण उच्च-कोटि का है । लेखक प्रकाशक का प्रयास सराहनीय है ।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

पञ्च महायज्ञ—

सम्पादक श्री सत्यदेव सैनी मन्त्री-आर्य समाज लालबाग—लखनऊ—(निवास ७३१–साकेत पल्ली लखनऊ—प्रकाशक-आर्य समाज—लाल बाग-लखनऊ—मूल्य चार रुपिया ।

समस्त आर्य जन पञ्च महायज्ञो से परिचित हैं । सन्ध्या एवं हवन यज्ञ हमारे जीवन के लिए अनिवार्य है । आर्य समाज के उत्साही मन्त्री श्री सत्यदेव जी सैनी ने प्रार्थना के मन्त्र-सन्ध्या के मंत्र एव यज्ञ मन्त्रों का अग्रेजी एव हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशन किया है । प्रारम्भ मे सन्ध्या सम्बन्धी मन्त्रों का अंग्रेजी-अनुवाद और योग्यता पूर्ण परिचय श्री एच० एल० सूद-सब जज-कोटा स्टेट द्वारा लिखित है ।

अग्रेजी और हिन्दी की व्याख्या होने से पुस्तक की उपादेयता बढ़ गयी है । छपाई और कागज उत्तम है । प्रत्येक शिक्षित परिवार के लिए यह रचना आवश्यक है भेंट रूप मे भी प्रस्तुत की जा सकती है । आर्य समाज-लाल बाग—लखनऊ इस रचना के प्रकाशन के लिये साधुवाद का पात्र है । रचना का सर्वत्र स्वागत होगा ऐसी आशा है ।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

अनुकरणीय आदर्श विवाह सम्पन्न

श्री प्रेमकृष्ण अग्रवाल (अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग गोरखपुर) के सुपुत्र श्री चि० प्रवीणकुमार का पाणिग्रहण संस्कार लखनऊ निवासी श्री शैलेन्द्र कुमार जी की सुपुत्री आ० कु० मधुरिमा के साथ दि० २-३-८६ को श्री लालबहादुर शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। उक्त विवाह पौराणिक लग्न के अभाव मे सुन्दर तिथियों में दहेज रहित सम्पन्न हुआ अतः स्तुत्य एवं अनुकरणीय हैं। श्री शास्त्री जी के अह्वान पर आर्यसमाज के कुम्भ कैम्प (हरिद्वार) में ऋषि लगर हेतु वरपक्ष द्वारा ५०१) रु० तथा कन्या पक्ष द्वारा २५) रु० का आदर्श दान भी प्राप्त हुआ। उक्त विवाह संस्कार आर्यसमाज गोरखपुर के भू०पू० प्रधान तथा पुराने नैष्ठिक कार्यकर्ता डा० सूर्यदेव प्राणाचार्य जी की प्रेरणा से इस आदर्श स्वरूप में सम्पन्न हुआ। श्री पन्नालाल जी ने भी उक्त संस्कार मे अपना योगदान किया।

—डा० विनयप्रताप संयोजक पूर्वी प्रचार विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा १ से १४ अप्रैल ८६ तक

कुम्भ मेला हरिद्वार-शिविर में वेद प्रचार

कार्यालय—आर्यसमाज मन्दिर श्रवणनाथ नगर हरिद्वार

संयोजक—श्री धर्मेन्द्रसिंह जी उपप्रधान सभा

(प्रचारक)

श्री प०केशवदेव शास्त्री वानप्रस्थ महोपदेशक-अधिष्ठाता उपदेश विभाग सभा

श्री प० शिवकुमार शास्त्री महोपदेशक सभा

श्री प० ब्रह्मानन्द आर्य भजनोपदेशक सभा मण्डली सहित

श्री प० युगुलकिशोर आर्य भजनोपदेशक सभा

श्री ठा० गजराजसिंह राघव भजनोपदेशक सभा

श्री शिवदेव वेधड़क भजनोपदेशक सभा

श्री ओमलाल ढोलकवादक सभा

इसके अतिरिक्त अन्य महोपदेशक, उपदेशक और भजनोपदेशक तथा मैजिक लेन्टर्न प्रचारक भी उक्त वेदप्रचार शिविर मे पधारेंगे। मेला में प्रचारार्थ वैदिक साहित्य ट्रैक्ट आदि के वितरण की भी व्यवस्था की जा रही है। अन्य आर्य सज्जन जो भी मेला कुम्भ मे पधारें और वेद प्रचार कार्य मे योगदान देना चाहे कार्यालय हरिद्वार से सम्पर्क करें।

निवेदक—

केशवदेव शास्त्री वानप्रस्थ महोपदेशक

अधिष्ठाता

उपदेश विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ

उत्सव

—आर्यसमाज उसका बाजार (बस्ती) का वार्षिकोत्सव दिनांक २९ मार्च से १ अप्रैल १९८६ तक समारोह के साथ सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रमुख विद्वान् उपदेशक भजनोपदेशक आदि पधार रहे है। —ओउमप्रकाश आर्य मन्त्री

—आर्यसमाज हरखेन्द्रनगर का १७ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ९, १० और ११ मई १९८६ को मनाया जाएगा। इस अवसर पर उच्चकोटि के विद्वान् सन्यासी उपदेशक और भजनोपदेशकों के पधारने की आशा है। —रामजी आर्य मन्त्री

आया होली का त्योहार

कण-कण में उल्लास जगा है,
आशाओं का सूर्य उगा है,
रूप देखकर पुण्य प्रकृति का—
अब प्रमाद का दनुज भगा है,
मनुज-मनुज के उर आंगन मे,
छाया आज असीमित प्यार।
आया होली का त्योहार ॥

खेत—बाग—वन—बने सुरम्य,
लगती वसुन्धरा अब रम्य,
प्रेम—दया—ममता—समरसता—
के मृदु भाव प्रभूति प्रकम्य
प्रकृति वधू की सुन्दरता पर—
होते कोटिक मन बलिहार।
आया होली का त्योहार ॥

पिकी पपीहे का मधु गुंजन,
करता है जन मन अनुरंजन,
मृदुल बयार बना है निर्मम—
तूफानों का महा प्रभंजन,
नव्य उषा की सौम्य रश्मियां—
बिखराती सुख—सौख्य अपार।
आया होली का त्योहार ॥

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

विनम्र निवेदन

—महिला आर्यसमाज स्टेशन रोड मुरादाबाद से प्रकाशित पुस्तक 'प्रभुदर्शन' लेखक यशपाल आर्य प्रकाशन महिला आर्य समाज स्टेशन रोड मुरादाबाद, हमने यथा सम्भव धर्म प्रेमी बन्धुओं तक पहुंचाने का प्रयास किया हैं। अब इस पुस्तक का संस्करण हमारे पास समाप्त हो गया है कृपया पुनः इसकी प्राप्ती हेतु पत्र व्यवहार न करें। विनम्र निवेदन सहित—　　मन्त्राणी

निर्मल आर्या

महिला आर्यसमाज स्टेशन रोड, मुरादाबाद

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज मण्डी बांस मुरादाबाद की आज की विशेष सभा आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री विश्वनाथ त्यागी के निधन पर शोक व्यक्त करती है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा उनके परिवारजनों को उनका गहन दुःख सहन करने का साहस प्रदान करे।

—सतीशचन्द्र गुप्त प्रधान

—आर्यसमाज के कर्मठ भू० प्रधान श्री अयनन्दनसिंह (बगहा) का २०-२-८६ को निधन हो गया उनकी आत्मा की शांति हेतु महर्षि दयानन्द बाल विद्यालय तथा आ०स० हांसीपुर ने प्रभु से प्रार्थना किया शान्ति यज्ञ के अवसर पर समाज को २५) दान प्राप्त हुआ।

—यज्ञदेव वानप्रस्थ

आगामी हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रचार एव सेवा शिविर

निश्चय किया गया है कि आगामी दिनाक १४ जनवरी से ९, १० अप्रैल ८६ तक लगने वाले हरिद्वार के बारह वर्षीय कुम्भ मेले के ऐतिहासिक अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रचार एव सेवा शिविर लगाया जाय। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने जीवन मे कुम्भ के अवसरपर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसे भी ११९ वर्ष के लगभग हो चुके हैं। अत अन्धकार एव रूढिवादिता का खण्डन करते हुए समुचित मार्ग दर्शन का प्रचार किया जायेगा। विद्वानो के भाषण, उपदेश होंग, सेवा शिविर द्वारा यात्रियो की यथासाध्य सेवा आदि की व्यवस्था रहेगी साथ ही विशेष स्नान पर्वो के दिन ऋषि लगर का भी आयोजन होग। वहीं शिविर लगाकर सभा के वरिष्ठ अधिकारी भी स्वय व्यवस्था की देखरेख करेग। समस्त प्रदेश की उपप्रतिनिधि सभाओ, आयसमाजो और आयजनो से अनुरोध है कि इस अवसर पर हमारी सहायता करे, अपने क्षेत्र मे धन और अन्न आदि का सग्रह कर, सभा को सूचना दे और सुविधानुसार उनका सग्रहीत अन्न हरिद्वार भिजवाने का प्रयास किया जाय। सबके सम्मिलित सहयोग से ही हमारे उद्देश्य सम्पन्न हो सकते है तदर्थ सबका सहयोग अपेक्षित है और इस मे अविलम्ब काय प्रारम्भ कर दिया जाय।

इन्द्रराज — प्रधान
कृष्ण बलदेव महाना — कोषाध्यक्ष
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आय प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

वार्षिकोत्सव

आर्य विरक्त वानप्रस्थ सन्यास आश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव दिनाक १५ अप्रैल स १८ अप्रैल १९८६ को समारोह मे सम्पन्न होगा इसी अवसर पर एक पावन यजुर्वेद पारायण यज्ञ का भी आयोजन होगा। —शिवनारायण उपमन्त्री

होली है

सतयुग में होली

सतयुग मे,
होली की गोद से,
जीवित
बच गया था प्रहलाद,
विजय हुयी थी,
सच्चाई की,
किन्तु आज।'
सच्चाई की बन गयी राख,
जीवित है,
भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद,
बेइमानी और रिश्वतराज,।
परम्परा चली आ रही है,
हर चौराहे पर,
आग लगायी जा रही है।
चौराहो की यह आग,
प्रहलाद को बचाने के लिये,
चाहती है लगना,
युवा हृदयो मे॥

होली शहीदो की

जिन्होने,
खेली, खून की होली,
अपने सीने पर झेली,
बन्दूक की गोली।
२३ मार्च, १९३१
फाँसी थी तुमने चूमी,
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्,
जिनके गले से निकले,
एक ही बोली,
यह शहीदों की होली।
वतन के खातिर,
खेली,
निज खून की होली,
कभी,
देश मे युवको की,
ऐसी भी थी टोली,॥
यह शहीदो की होली
(शहीद भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु की पुण्य बलिदान तिथि पर)

जनतन्त्र को खतरा

वकीलो पर लाठीचार्ज

न्याय सगत माँग को लेकर शान्त वकीलो पर लाठीचार्ज वास्तव मे जनतन्त्र के लिए खतरे का सूचक है। जनतन्त्र मे गरीब को न्याय मिलना चाहिये वह भी बहुत ही सुलभ हो और कम व्यय का हो। उत्तरप्रदेश बहुत बडा प्रदेश है। मेरठ का व्यक्ति इलाहाबाद जाकर न्याय प्राप्त करे यह गरीब के लिए तो बिल्कुल भी सम्भव नहीं है। वैसे तो आज न्याय मिलना ही कठिन हो रहा है। यह माग कितनी न्यायोचित है कि हाईकोर्ट की बेंच मेरठ मे भी स्थापित होनी चाहिये। वायदे भी किये गये है परन्तु अमल बिलकुल नहीं। पता नही सरकार न्यायोचित माग को मानकर क्यो झगडे समाप्त नहीं करती। यह जो भी हो रहा है वह जनतन्त्र के लिए भारी खतरा है। आयसमाज लाठीचार्ज की घोर निन्दा करता हुआ सरकार से प्रबल माग करता है कि मेरठ मे यथाशीघ्र हाईकोर्ट की बेंच स्थापित होनी चाहिये ताकि जनतन्त्र की रक्षा हेतु गरीब को सुलभ और सस्ता न्याय मिल सके।

इन्द्रराज
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

वैदिक सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द

(लेखक-यज्ञपाल आर्यबन्धु आर्यनिवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद २४४०३२)

(गतांक से आगे)

(६)'उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन करके पूर्ण अर्थात् चार सौ वर्ष पर्यन्त आयु को बढ़ावें वैसे तुम भी बढ़ाओ।' (स० प्र० तृतीय समुल्लास)
इस प्रकारके अनेकों प्रमाण और भी दिये जा सकते हैं। इन स्पष्टोक्तियों के रहते किसी प्रकार की शंका का कोई अवकाश शेष नहीं रह जाता।

वृक्षों मे जीव विचार—(महर्षि दयानन्द के)

(१) जो नर शरीर से चोरी, परस्त्रीगमन, श्रेष्ठों को मारने आदि दुष्ट कर्म करता है, उसको वृक्षादि स्थावर का जन्म, वाणी से किये पाप कर्मों से पक्षी और मृगादि तथा मन से किये दुष्ट कर्मों से चाण्डाल आदि का शरीर मिलता है।' (स० प्र० नवम समुल्लास)

फर्रुखाबाद के पण्डितों के लिखित प्रश्नों के महर्षि द्वारा लिखित उत्तर—
२१ वां प्रश्न। जीवात्मा संख्यात् हैं या असंख्यात ? कर्म से मनुष्य पशु अथवा वृक्ष आदि योनियों मे उत्पन्न हो सकता है या न ?

उत्तर—ईश्वर के ज्ञान मे जीव सख्यात् और जिसके अल्पज्ञान मे असंख्यात हैं। पाप अधिक करने से जीव, पशु, वृक्ष आदि योनियो मे उत्पन्न होता है। (देखें ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन, द्वितीय भाग, तृतीय संस्करण, पृष्ठ ८४१)।

(२) जो अत्यन्त तमोगुणी हैं वे स्थावर वृक्षादि, कृमि, कीट, मत्स्य, सर्प कच्छप, पशु और मृग के जन्म को प्राप्त होते हैं। (स० प्र० नवम समुल्लास)

महर्षि दयानन्द की इन स्पष्टोक्तियों को विज्ञ मानता मे उनकी इन विषयो सम्बन्धी मान्यता पर कोई शंका शेष नहीं रहनी चाहिये। पर फिर भी हम लोग अपनी-अपनी मान्यता की पुष्टि मे महर्षि दयानन्द को अकारण उद्धृत करते रहते हैं। जिससे लोगो मे यह भ्रम उत्पन्न होता है कि महर्षि ने इन विषयो पर कोई स्पष्ट निर्देश नहीं दिये। जब हमे अपनी बात रखने की चिन्ता हो तो फिर महर्षि की बात की चिन्ता क्यो करने लगेंगे ? दुःख तो इस बात का है कि कोई भी यह नहीं कहता और न ही कहने का साहस कर सकता है कि महर्षि तो 'आयु निश्चित है' तथा वृक्षो मे जीव मानते थे, पर हमारी मति मे वृक्षों मे जीव नहीं। आयु को निश्चित मानने वाले भी महर्षि की दुहाई देते हैं और न मानने वाले भी। वृक्षों मे जीव मानने वाले भी उन्हीं का नाम लेते हैं और न मानने वाले भी। पर महर्षि दयानन्द की मान्यता क्या है, यह हमने ऊपर बताने का प्रयत्न किया है। इसके विपरीत कहीं कुछ है तो कोई बताने का कष्ट करें। प्रसंग को आगे को तोड़-मरोड़ कर महर्षि की मान्यता के विरुद्ध लिखने से कोई लाभ नहीं। साथ ही हमे दूसरे के भावो को जानने और समझने का भी प्रयत्न करना चाहिये और जो हमसे सहमत नहीं भी हो पाता, तो भी उसके प्रति किसी प्रकार की अशिष्टता एवं अभद्रता का व्यवहार नहीं होना चाहिये। हमारे तर्क प्रबल हो पर भाषा विनम्र। पर हो यह रहा है कि तर्क तो कहीं भी होते नहीं, पर भाषा अत्यन्त कठोर। यह आर्य मर्यादा नहीं। आशा है सुहृद पाठक हमारी इस प्रार्थना को दृष्टिगत रखते हुये महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त विचारोका मंथन करेंगे और फिर अपनी मान्यता सुनिश्चित करेंगे। और यदि फिर भी सन्तुष्ट एवं सहमत न हो तो फिर खुलकर यह कहने का साहस करें कि यद्यपि महर्षि दयानन्द की ऐसी मान्यता है, पर हम अपने स्वाध्याय एव अन्वेषण से इस परिणाम पर पहुचे हैं। तब लोग उनकी बात को अधिक गम्भीरता के साथ सुनने तथा परखने का यत्न करेंगे ऐसी आशा है।

हरिद्वार कुम्भ पर स्नान पर्वों की सूची

८ अप्रैल १९८६ चैत्र अमावस्या
१० „ „ नवसंवत् सर
१३ „ „ वैशाखी
१४ „ , मुख्य कुम्भ
१८ „ „ राम नवमी
२४ „ „ पूर्णिमा चन्द्रग्रहण

आर्य समाज वैंकोक (थाइलैण्ड) का

निर्वाचन

प्रधान श्री सहदेव सिंह
मन्त्री श्री सग्राम सिंह
कोषा० श्री पलकधारी चन्द
उपप्रधान श्री प्रसिद्ध नारायण तिवारी
उपमन्त्री श्री वीर बहादुर चन्द
निरीक्षक श्री नरसिंह शाही
पुस्तकाध्यक्ष श्री मनोज कुमारसिंह

—आर्य समाज पुवीपुर ढाई जनपद शाहजहांपुर ने अपने वार्षिकोत्सव के अवसर पर दि० २३ फरवरी से २६ फरवरी १९८६ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का सफल आयोजन किया। वार्षिकोत्सव पूर्णतया सफल एवं सराहनीय रहा।

केवल राम प्रधान

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
मा० चैत्र २
फाल्गुन शुक्ल १२, रविवार
२३ मार्च १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

१२९४६–श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार



आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.



१८८६-१९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ

विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक
गतिविधियों पर विचार

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १ फोन ४५९९३

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये [illegible] प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री [illegible] द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं० १२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७ / २८-२-८१

वर्ष ८९] मा० चैत्र ९, १६, चैत्र कृष्ण ५, १२, रविवार संवत् २०४२ वि०, दि०, ३० मार्च, ६ अप्रैल १९८६ [अङ्क १३-१४

प्रार्थना

ओं आ तत्त ऽ इन्द्रायवः पनन्ताभि य ऽ ऊर्वं गोमन्तं तितृत्सान्। सकृत्स्वं ये पुरुपुत्रां महीं सहस्रधारां बृहतीं दुदुक्षन्॥

—यजु. ३३।२८

भावार्थ—हे राजन्! जो मनुष्य एकबार में सबको उत्पन्न करने वाली, बहुत सन्ततिवाली, अनन्तप्राण सृष्टि को धारण करनेवाली विस्तृत पृथिवी को दुहना चाहें, वे पुरुष तेरे उस शासन की प्रशंसा करते हैं। वे ही हिंसक पीड़क दुर्भिहार को दण्डित करते हैं।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

आर्यसमाज स्थापना दिवस नव शक्ति के साथ आयोजित करें—

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार दिनांक १० अप्रैल ८६ (बृहस्पतिवार) को आर्यसमाज स्थापना दिवस है तथा महर्षि दयानन्द ने अपने आदर्शों को साकार करने के लिए आर्यसमाज संगठन की स्थापना की थी समस्त आर्यसमाजें नवीन उत्साह और नव शक्ति के साथ इस दिवस को आयोजित करें। शोभायात्रा निकालें, शास्त्रीय यज्ञ का विधान हो साथ ही विद्वान् उपदेशकों के प्रवचन हों। आज भारत में पेट्रो डालर तथा अमरीकी धन के सहारे इस्लाम और मसीही प्रचार हो रहा है साथ ही देश की अखण्डता को खण्डित करने का कुचक्र है। काश्मीर, पंजाब जहाँ आर्यजन अल्पमत में हैं उन्हें सुनियोजित षडयन्त्र के साथ उत्पीड़ित किया जा रहा है। काश्मीर के अल्पसंख्यक हिन्दू जिन्हें काश्मीरी पण्डित कहते हैं काश्मीर से बहिर्गमन की योजना बना रहे हैं ऐसी स्थिति में आर्य जनों का दायित्व है कि जैसे कुशल नाविक उत्ताल तरङ्गों में थपेड़े खाती नौका को बचा लेता है ऐसे ही आर्यजन स्थापना दिवस के अवसर पर कुशल नाविक की भांति देश की लड़खड़ाती हुयी परिस्थिति में आर्योचित वीरता का समावेश करें। आशा है कि इस वर्ष का स्थापना दिवस दृढ़ संकल्पों के साथ समस्त आर्यसमाजों में मनाया जायेगा।

हरिद्वार के कुम्भ मेले पर प्रचार एवं सेवा शिविर—

हरिद्वार के विशालतम कुम्भ मेले की जो मुख्य तिथियाँ हैं अर्थात १०—अप्रैल ८६ से ~~१६~~ 13 अप्रैल ८६ तक वह आ गयी हैं। आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने वहां पर विशाल प्रचार एवं सेवा शिविर का आयोजन किया है जितने ही विद्वान् और उपदेशक स्वयंसेवक समाज सेवी चिकित्सक और सभा तथा समाजों के अधिकारी सेवा कार्य में मनोयोग से लगे हुए हैं समस्त आर्यबन्धुओं से अपील है कि वे स्वयं हरिद्वार में आकर हमारे सेवा कार्य को सहयोग एवं शक्ति दें साथ ही पूर्ण सामर्थ्य अनुसार इस वैदिक प्रचार समारोह की सफलता और सम्पन्नता के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करें। यथाशक्ति धन भेजें और अन्य उपयोगी आवश्यक सामग्री से हमें सहायता प्रदान करें।

काले बादल—

आज देश में काले बादल क्षितिज पर मंडरा रहे हैं। प्रधान मन्त्री ने मौलिक मानवीय अधिकारों के विरुद्ध जो मुस्लिम महिला विधेयक लोक सभा में प्रस्तुत किया है उससे सम्प्रदायवादी मुस्लिम मौलवियों को साहस मिला है और सबने यह समाचार पढ़ लिया है कि पटना और लखनऊ में शरियत अदालतें कायम होंगी वह मुसलमानों के आपसी विवादों पर निर्णय करेंगी कहने को तो इसे वे जातीय पंचायत कहेंगे परन्तु यह वह विषधर है जो देश में दूसरी समानान्तर अदालतें कायम कर रहे हैं संविधान के विरुद्ध है और इससे ही सन्तुष्ट न होकर आगे वे समानान्तर इस्लामी हुकूमतें कायम करने की बात सोचने लगें। श्री राजीव के सहनशीलता का अनुचित लाभ उठाते हुए मुस्लिम लीगी साम्प्रदायिकता बढ़ रही है।

'आर्यमित्र' स्पष्ट शब्दों में देश के बौद्धिक कर्णधारों से अनुरोध करता है कि वह अपनी बुद्धि से विचार करें किसी एक नेता के बंधुआ मजदूर न बनें और साहस के साथ इन साम्प्रदायिक हरकतों का विरोध करें। 'आर्यमित्र' आर्यजगत् का एक सस्वर उद्घोषक है राष्ट्र नेता इस स्थिति को सहन कर सकते हैं परन्तु आर्यजगत भारत राष्ट्र की रक्षा और उसकी अखण्डता के लिए दृढ़ संकल्पशील है।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

आर्य (ओ३म्) मित्र



सम्पादकीय

लखनऊ–रविवार ३० मार्च, ६ अप्रैल १९८६, दयानन्दाब्द १६१
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८६

नव संवत् सर एवं संकल्प दिवस

भारतीय ज्योति विज्ञान की गणना नुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सवत् सर का प्रारम्भ होता है। शुक्ल पक्ष बालचन्द्र के प्रकाश की लघु किरणो से प्रारम होता हुआ पूर्ण चन्द्र की अह्लादमयी किरणों से धरातल को ज्योत्सना प्रदान करता है अतः शुक्ल पक्ष क्रमिक विकास का प्रतीक है तभी नवीन सवत् सर शुक्ल पक्ष से अधिग्रहीत किया है। फाल्गुनी उष्ण बयार के झोके मेदनी को अभ्र हेम किरणों से परिपूरित कर देते हैं और धरा के यशस्वी पुत्र किसान आनन्द से अन्न की स्वर्ण राशियो के उपलब्धि से प्रसन्न हो उठते हैं इसी बेला पर आर्यवर्त्त के विस्तृत प्रदेश में जहां प्रकृति जीवन, और पराशक्ति सर्वंच समन्वयात्मक रूप से कार्यशील रहते हैं वही नव संवत् सर प्रारम्भ होता है।

बासन्ती प्रभा और किशलय की अनुराग मयी लालिमा के साथ नव संवत् सर पर 'आर्य मित्र' अपने समस्त पाठको, लेखकों, कवियो एवं हित चिन्तकों का अभिनन्दन करता है और परमेश से प्रार्थना करता है कि 'आर्यमित्र' का समस्त परिवार ही नहीं अपितु समस्त आर्य जगत के लिये नव संवत सर सुख शांति एवं ऐश्वर्य का वर्ष बने। साथ ही विज्ञ जनों से निवेदन है कि आर्य मित्र' के प्रति बीते हुए वर्ष में जैसा आपका सहयोग रहा है उससे अधिक सहयोग हमें इस वर्ष प्राप्त होगा। सबके प्रति पूर्ण शुभ कामना एव मगल मय भावना की अभि व्यक्ति है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी आर्य समाज की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को की थी इस विश्वास से कि जैसे बालइन्दु विकसित होकर पूर्ण इन्दु बन जाता है वैसे ही आर्य समाज समस्त देश मे विकास के साथ अग्रगामी होगी और पूर्णेन्दुके समान समस्त जगतीतल को अह्लादित करेगी और सबकी भावनाओं में चन्द्र की ज्योत्सना अंकित होगी अत: प्रत्येक वर्ष समस्त आर्य जगत में आर्य समाज स्थापना दिवस उल्लास के साथ मनाया जाता है। वास्तव में स्थापना दिवस आर्य जनों के लिये संकल्प दिवस है। इस पावन अवसर पर समस्त आर्य जन उत्साह के साथ नवीन संकल्प ग्रहण करें कि ऋषिवरके संदेश को हमनवीन शक्ति के साथ प्रसारित करेंगे विनम्र–निवेदन है कि ऋषिवर के संदेश ... में आर्य समाज के सिद्धांतों के पालन में समस्त आर्य जन एक मत हों। ऐसी एकता तथा दृढ़ता अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। परन्तु हमारे कतिपय आर्य बंधु क्षुद्र भावनायें समाज के भवन और सम्पत्ति पर अनियमित रूप से अधिकार करने विद्यालयों के संचालन में गति रोध करने आदि ऐसा प्रति अभियोग में ग्रसित हैं कि जो हमारा संकल्प है जो हमारा ध्येय है तथा ऋषिवर के जो प्रेरणा संदेश हैं उन्हें हम उतनी उत्तमता के साथ सफलता नहीं प्रदान कर पा रहे है क्योकि हमारी शक्ति का अपव्यय स्वार्थ पूर्ण कार्यों में अधिक हो रहा है।

'आर्य मित्र' समस्त आर्य बन्धुओं से निवेदन करता है कि इस वर्ष आर्य समाज स्थापना दिवस को एक ऐसे रूप मे मनायें जो संकल्प और प्रतिज्ञा दिवस हो तथा स्वार्थ एव पदलिप्सा के मनोमालिन्य से अलग होकर समाज सेवा के उज्ज्वल पथ पर प्रेममयी समवेत सहयोग पूर्ण भावना से आगे बढ़े। आज देश की परिस्थितियाँ तथा वैदिक संस्कृतिके प्रचार एव प्रसारमें इस्लामी और मसीही शक्तियों का प्रतिरोध तथा राजनेताओं को केवल मत प्राप्ति की स्वार्थमयी भावना ऐसी बहुत सी कालिमा पूर्ण परिस्थितियां हैं जिनसे आर्य जन को संघर्ष करना है क्योंकि स्पष्ट कहने में हमें संकोच नहीं है कि राजनेता राष्ट्र को वैदिक युग की उस उच्चता और गरिमा तक पहुचाने में असफल हैं जैसा हमारे वैदिक साहित्य में अंकित वैदिककाल है। राष्ट्र सम्राट एव नेताओं से नहीं बनता है। राष्ट्र का निर्माण ऋषि और विचारशील जन करते हैं। कितने शासक आये और गये राजवंश उभरे और मिटे परन्तु भारत की पवित्र जल धाराओं के तट पर जिन ऋषियो ने अग्निहोत्र और यज्ञ के द्वारा वैदिक संस्कृति की प्रति स्थापना की थी उनके संदेश आजभी हमारे मध्य जीवित है प्रकाशवान है। राम को रामत्व, बुद्ध को बुद्धत्व राजसत्ता पर बैठ कर नहीं प्राप्त हुआ अपितु वन मे वैदिक आचारों के अनुसार जीवन व्यतीत करके प्राप्त हुआ था अत आर्य जनों को ऋषि पथ पर चल कर आर्यसमाज के संदेश से ही भारत राष्ट्र का शुद्धि करण करना आवश्यक होगा जिसमें आज अन्धकार और कालुष्य के कीटाणु पनप रहें हैं। पुनीत पर्व पर सबका सादर अभिवादन।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

भूल सुधार

खेद है कि 'आर्य मित्र'—२३–३—८६ के पृष्ठ १० पर कविता छपी है के कवि का नाम अंकित नहीं है। इस कविता के रचयिताश्री ब्रजकिशोरजी रस्तोगी ३१ मुर्तजा हुसैन रोड, राजाबाजार लखनऊ हैं।

(२)

'आर्य मित्र' दिनांक १६—३—८६ के पृष्ठ ११ पर निर्वाचन के कालम में जिला आर्योप्रतिनिधि सभा इटावा के स्थान पर आर्य समाज बेला (इटावा) पढ़ा जाय। —सम्पादक

अन्तर जातीय आर्य विवाह सम्पन्न

श्री वेद प्रिय शास्त्री (आचार्य, गुरुकुल विद्यालय सीतावाड़ी जिला कोटा (राज०) के अनुज श्री विश्वम्भर देव शास्त्री का विवाह आर्य कन्या गुरुकुल नरेला से विद्या ग्रहण करने वाली रायपुरा (श्योपुरकलां) के निवासी श्री मायाराम जी आर्य की सुपुत्री सु० श्री गायत्री देवी निर्मय के साथ तथा कथित जात-पांत तोड़कर गुण, कर्मानुसार बिना दहेज के अखिल भारतीय आर्य परिवार संघ, २ म २७ विज्ञान नगर, कोटा के तत्वावधान में आर्य समाज श्योपुर कलां (म० प्र०) मे दि० ३—३–८६, को श्री मुनी आत्मदेव जी (उज्जैन), श्री मदन मोहन जी व्यास (बारा) के सम्मिलित पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

—रामकृष्ण आर्य मन्त्री

अध्यात्म सुधा

परमात्मा का वर्णन

(डा० विजयपाल शास्त्री, एम० ए०, पी० एच० डी०, मन्त्री—आर्य समाज, मेस्टन रोड, कानपुर)

ओ३म्—अह रुद्रेभिर्वसु भिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्व देवैं ।
अह मित्रावरुणोभाबिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्वि नोभा ॥

ऋग० म० १० सू १२५

महर्षि अम्भृण की कन्या वाक् । इस सूक्त की ऋषिका है, और सवगत परमात्मा देवता है । छन्द त्रिष्टुप् ।

पदपाठ—अहम् । रुद्रेभि भि । वसुऽभि । चरामि । अहम । आदित्यै । उत । विश्वऽदेवैं । अहम् । मित्रावरुणा । उभा । बिभ । अहम । इन्द्राग्नी इति । अहम् । अश्विना । उभा ।

पदार्थ – (अहम) मै (रुद्रेभि) रुद्रो के साथ (वसुभि) वसुओं के साथ (चरामि) विचरता ×हू । (अहम्) मै (आदित्यैं) आदित्यो के साथ (उत) और (विश्वऽ देवैं : । विश्व देवो के साथ (अहम्) मै (मित्रावरुणा) मित्र वरुण को (उभा) दोनो (बिभर्भि) धारण पोषण करता हू (अहम्) मै (इन्द्राग्नी) इन्द्र और अग्नि को (अहम्) मैं (अश्विना) अश्वियों को (उभा) दोनो ।

अन्वयाथ —मै रुद्रो के साथ और वसुओ के साथ विचरता हू, मै आदित्यो और विश्व देवो के साथ विचरता हू, मै मित्र वरुण दोनो को धारण पोषण करता हू मै इन्द्र अग्नि और दोनो अश्वियो को धारण पोषण करता हू ।

× पुरुष स्त्री और नपु सक का भेद शरीर धारियो मे पाया जाता है परमात्मा के कोई चिह्न नहीं, इसलिये उसके लिये कोई लिङ्ग नहीं बन सकता । तो भी नाम शब्द किसी न किसी लिङ्ग मे बोला जाता है । इसलिये परमेश्वर के नाम तीनो लिङ्गोंमे प्रयुक्त होते हैं । परमात्मा पुंलिङ्ग है, ब्रह्म नपु सक है और यहां उसको शक्ति रूप से वर्णन किया है अत स्त्री लिङ्ग है किन्तु भाषा मे पुलिङ्ग मे व्यवहार होता है । इसलिये 'विचिरता' इत्यादि पुंलिङ्ग प्रयोग हैं ।

भाष्य—इस मन्त्र मे परमात्मा का वचन है, परमात्मा स्वय अपना स्वरूप और गुण कर्म बतलाते हैं इस मन्त्र का रहस्यार्थ समझने से स्पष्ट हो जायेगा कि वेद ईश्वर के विषय मे कितनी उच्च शिक्षा देते है । यह एक भारी प्रमाण इस बात के जानने का है कि कौन पुस्तक ईश्वरीय है कि उसमे ईश्वर का वर्णन कैसा किया गया है । क्योंक वह पुस्तक ईश्वर की ओर से नहीं हो सकती जिसमे ईश्वर के स्वरूप और गुण कर्म का सच्चा और पूरा वर्णन न हो । ईश्वरीय पुस्तकमे ईश्वरके स्वरूप का सच्चा और पूरा वर्णन होना आवश्यक है ।

वेद जो कि आदि सृष्टि में दिये गये उनको त्याग कर और भूल कर लोग इस बात को भूल गये, कि ईश्वर सर्व व्यापक है, और उसको बाग मे टहलने वाला या सातवें आसमान पर बैठा हुआ बतलाया । पर वेद मैं परमात्मा ब्रह्माण्ड मे अपनी स्थिति इस प्रकार बतलाते है—'मैं रुद्रो और वसुओ के साथ विचरता हू, मैं आदित्यो और विश्व देवो के साथ विचरता हू । रुद्र, वसु आदित्य और विश्वेदेव दिव्य शक्तिया हे, इसी प्रकार जो मित्र, वरुण आदि हैं, उनका वर्णन भी यथा स्थान लिखा जायेगा । यहाँ केवल यह जानना चाहिये कि जितनी दिव्य शक्तिया हैं । परमात्मा उन सबमे व्यापक हे । उसके रहने का कोई एक स्थान नहीं, वह इस सारे विश्व मे बसे हुये हैं । वह केवल सबमे बस हुये ही नहीं, किन्तु सबका धारण और पालन भी वही कर रहे हैं । सबको थामे हुये हैं । अतएव सर्वाधार हैं । जैसे सूर्यमे भी आकर्षण है और पृथिवीमे भी आकर्षण है । सूर्य यदि पृथिवी को खींच कर अपने अन्दर मिला ले तो पृथिवी भस्म सात हो जाये और पृथिवी यदि सूय को छोडकर अत्यन्त दूर चली जाय, तो पृथिवी ठडी हो जाय, और उस पर जीवन न रहे । तब किसने पृथिवी को ऐसी मर्यादा मे रक्खा है, कि न सूय के अन्दर जा पडे, न उससे पर भाग जाये । बल्कि उनके परस्पर आकर्षण के कारण पृथिवी चक्र खाने लगे और सूर्य की परिक्रमा करती हुई चारो ओर प्रकाश और गर्मी ले सके । जिससे यह अपनी मर्यादा मे रहे, और नया जीवन पाती रहे । इसका उत्तर स्वय परमात्मा यह देते हैं ' मै मित्र वरुण, इन्द्र, अग्नि और अश्वियों का धारण और पालन कर रहा हू । इस मन्त्र मे यह बातें कही हैं ।

१ परमात्मा सर्व व्यापक है ।

२-सबको थामे हुए है सर्वाधार है ।

३-सबके पालन हार हैं ।

आर्य जगत्

—आर्य समाज जनक नगर सहारन पुर के प्रागण मे ऋषिबोधोत्सव पर्व का आयोजन दि० ८ मार्च ८६ को हर्षोल्लास के मध्य हुआ । उत्सव मे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के.प्रधान श्री इन्द्रराज जी तथा अन्य विद्वान् एव वक्ता सम्मलित हुए । उत्सव सराहनीय रहा ।

राजेन्द्र प्रसाद आर्य मन्त्री

—आर्य समाज सदरपुर (मेरठ) का तृतीय वार्षिकोत्सव दि० १० मार्च से १२ मार्च ८६ के मध्य विशेष हर्षोल्लास एव धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ इस अवसर पर श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक नजीबाबाद तथा अन्य प्रमुख विद्वान् एवं वक्ता सम्मलित हुए उत्सव सफल रहा ।

रामपाल शास्त्री मन्त्री

—आर्य समाज देहरादून के तत्वावधान मे दयानन्द बोध दिवस एव प्रचार सप्ताह दि०३ मार्चसे ९मार्च ८६ के मध्य विशेष उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ । आर्य जगत के प्रमुख विद्वान् एव वक्ता गण सम्मलित हुए ।

बलराज मन्त्री

—जनपद बुलन्द शहर मे श्री धर्मेंद्र शास्त्री मन्त्री जिला आर्योप्रतिनिधि सभा के सहयोग से दो नवीन आर्य समाजों का गठन हुआ । आर्य समाज लीला नगला प्रधान श्री बाबूसिंह मन्त्री श्री आनन्द कुमार कोषाध्यक्ष श्री प्रह्लाद सिंह तथा आर्य समाज शासर— प्रधान श्री मामराज सिंह मन्त्री— श्री रामसिंह प्रेमी निर्वाचित हुए ।

सम्वाददाता

भाषायी पृथकतावाद और आर्य समाज

(सन्तोष 'कण्व')

पहले तो हम पृथकतावाद को हवा देते हैं, जब पानी सर से ऊपर चढ़ता है, तो राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का राग अलापते हैं, कैसी विडम्बना है !

बात कहते समय—काम करते समय, हमने अपने क्षणिक निहित स्वार्थों के अतिरिक्त कभी राष्ट्र के दीर्घकालीन हितों की ओर ध्यान दिया हो, ऐसा बहुत कम देखने मे आता है। जहाँ तक प्रश्न आर्य समाज का है, इतिहास के हर मोड़ पर उसने सच कहने का साहस जुटाया है। जब-जब इस राष्ट्र का नेतृत्व किंकर्त्तव्य विमूढ़ता की स्थिति में फसा है, आर्य समाज ने सदैव स्पष्ट दिशा निर्देश दिया है। निरुत्साहित राष्ट्र मे आशा और राष्ट्र वासियों की प्रसुप्त धमनियों मे उष्ण-रक्त का संचार किया है।

भाषायी पृथकतावाद कोई आज की देन नहीं है। न हि उसके स्पष्ट परिणाम किसी से छिपे हुए हैं। पाकिस्तान के जन्म की पृष्ठ-भूमि में एक प्रमुख मांग उर्दू की भी थी। जिन्ना का कहना था-उर्दू मुसलमानों की भाषा है, और हिन्दी हिन्दुओं की। इस सफेद झूठ को दुर्बल आत्मा वाले भारतीयों, कुटिल अंग्रेजों और मतान्ध मुसलमानो ने स्वीकार कर १९४७ के घटना-क्रम को जन्म दिया। भारत टूट गया।

अपनी-अपनी जगह सब दोषी थे। सबके निहित स्वार्थ थे।

महर्षि दयानन्द ने कहा था—भारत एक राष्ट्र है। उसकी भाषा—'आर्य भाषा' है। इसी को आज 'हिन्दी' कहा जा रहा है। महर्षि को 'आर्य' शब्द अत्यन्त प्रिय था। इसी से, इस देश की भाषा को वे 'आर्य भाषा' कहते थे। उनकी दृष्टि मे 'भारत की भाषा' थी। पूरे राष्ट्र की एक भाषा। राष्ट्र मे रहने वाले समस्त लोगो की एक भाषा। हिन्दू की भाषा, मुसलमान की भाषा, सिख की भाषा, ईसाई की भाषा , ऐसा महर्षि का चिन्तन नहीं था। न ही आर्य समाज का है।

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सम्पूर्ण राष्ट्र (भारत) की एक भाषा का सिद्धांत, स्वाधीनता संग्राम के सिपाहियों ने स्वीकार तो किया, परन्तु साहस का अभाव था। आत्मिक बल नहीं था। लोग हिन्दू की भाषा और मुसलमान की भाषा के चक्कर में फंस गए। समन्वय की बात करने मे ही समय नष्ट करते रहे। महर्षि दयानन्द की किसी ने भी नहीं मानी। हिन्दू-मुसलमान की चर्चा में 'भारतीय समाज' ही विलुप्त हो गया। जब भाषायी आधार पर समाज बटा तो राष्ट्र भी टूट गया। बुरे काम का बुरा नतीजा !

देखने मे तो विभाजन उर्दू के कारण हुआ, परन्तु वास्तविकता भाषायी आधार पर राष्ट्र के समुदाय को बांटना है। समुदाय बटा, क्षेत्र भी बट गया।

उर्दू का झण्डा उठाने वाले पाकिस्तान चले गये। फिर भी कुछ मनचले सक्रिय रहे। सत्तारूढ़ दल की गलत नीतियों और दुर्बलता का उन्होंने लाभ उठाना शुरू किया। उत्तर प्रदेश मे द्वितीय राज भाषा का स्वर उठा। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन उस समय राज्य विधान सभा के अध्यक्ष थे। उन्होंने स्पष्ट कर दिया-'राज्य की एक मात्र भाषा हिन्दी ह, प्रान्त के समस्त कार्य हिन्दी में ही होंगे।'

टंडन जी तेजस्वी राष्ट्र-भक्त थे। उन्होंने सदन में घोषणा की थी—उत्तर प्रदेश विधान सभा मे लगभग सवा चार सौ सदस्य हैं, उनमें से एक भी सदस्य मेरे विरुद्ध होगा तो मैं उसी दिन अध्यक्ष पद से त्याग-पत्र दे दूंगा।'

पूरे सदन में सन्नाटा छा गया। किसी की हिम्मत नहीं पड़ी जो उर्दू की मांग उठाए। परन्तु टंडन जैसी तेजस्विता हर किसी में नहीं थी।

भारत-विभाजन के घाव भी ताजा थे। उर्दू की मांग उन पर नमक के समान थी। अत किसी को उससे सहानुभूति नहीं थी। साथ ही मांग उठाने वाले भी आत्म-ग्लानि के शिकार थे, क्योंकि वे जानते थे कि उर्दू के नाम पर पाकिस्तान बनवा लेने के बाद शेष भारत में उर्दू के लिये कोई स्थान नहीं है। न ही कोई स्वाभिमानी सरकार इसे स्वीकार कर सकती है।

फिर भी गुप्त प्रयास जारी रहे, क्योंकि तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू मुसलमानों का आवश्यकता से अधिक पक्षपात करने के लिये विख्यात थे। वे उर्दू के विद्वान नहीं थे, फिर भी बोल-चाल मे [जान-बूझ कर] उर्दू शब्दों का बहुलता से प्रयोग करते थे, भले ही वे भोंडे क्यों न प्रतीत हों। तथा कथित मुस्लिम संस्कृति और उर्दू भाषा उन्हें अत्यन्त प्रिय थी। उन्होंने स्पष्ट कहा था—'मैं शिक्षा की दृष्टि से अंग्रेज हू, सांस्कृतिक दृष्टि से मुसलमान हू और आकस्मिक दुर्घटना वश [ऐक्सीडेन्टली] हिन्दू हू।'

कहते हैं कि कांग्रेस कार्य-समिति में किसी प्रस्ताव पर जोर दार बहस चल रही थी। नेहरू जी उसके विरोध मे थे। उन पर कुछ तर्क देते तो बन नहीं पड़ता था, बस बार-बार यही दोहरा रहे थे कि इसे राष्ट्रीय मुसलमान पसन्द नहीं करेंगे। इस पर सरदार बल्लभ भाई पटेल ने हसते हुये कहा था—'मुझे तो मुसलमानों में कोई राष्ट्रीय दिखाई देता नहीं। हां, एक ही राष्ट्रीय मुसलमान है, जिसका नाम जवाहर लाल नेहरू है।'

पटेल की टिप्पणी पर नेहरू जी समेत वहां उपस्थित सभी लोग हंस पड़े। बात ही हसी की थी, हंसी में टल गई। देश का तत्कालीन वातावरण ऐसा था कि चाह कर भी, नेहरू जी, उर्दू को द्वितीय राज-भाषा बनाये जाने की मांग का समर्थन नहीं कर सके। एक सार्वजनिक सभामें उन्हें भी कहना पड़ा था—'हम उर्दू की तरक्की चाहते हैं, किन्तु वह उत्तर प्रदेश की दूसरी भाषा नहीं बनाई जा सकती। ऐसा करने से राज्य का खर्च दुगुना हो जायेगा और बहुत तरह की अड़चने आयेंगी।

नेहरू जी उर्दू को दूसरी भाषा बनाने का विरोध मात्र आर्थिक

(शेष पृष्ठ ५ पर)

भाषायी पृथकतावाद और आर्य समाज

(शेष पृष्ठ ४ से आगे)

कठिनाइयों को ध्यान मे रखकर कर रहे थे। दूसरे वे यह भी जानते थे कि उर्दू की परम्परागत लिपि कार्यालयो के काज मे जटिलतायें ही उत्पन्न करेगी।

आर्य समाज की दृष्टि मे ये कारण गौण है। हमारा विरोध कुछ कटु-सत्यों पर आधारित है, जिनकी संक्षिप्त चर्चा १५ दिसम्बर, १९८५ के 'आर्य मित्र' मे की जा चुकी है।

गत दिनों प्रो० वासुदेव सिंह ने उत्तर प्रदेश विधान सभा मे टंडन जी जैसा साहस दिखाया। सदन के बाहर भी उन्होंने वैसी ही तेजस्विता का परिचय दिया जिनका प्रतिफल उन्हें यह मिला कि मन्त्रि-पद भी हाथ से गया। अब यदि आगामी निर्वाचन मे टिकट भी कट जाए तो कोई आश्चर्य नहीं।

सच्चाई को स्वीकार करना साहसियों का काम है। यहा तो अतीत से भी शिक्षा नहीं ली जाती। सभी जानते हैं कि आर्य समाज ने भाषा आधार पर प्रान्तो के विभाजन का विरोध किया था। बम्बई राज्यमे दो राज-भाषायें थीं– गुजराती और मराठी। दोनों भाषा-भाषी परस्पर लड़ा दिए गये। भयंकर रक्त-पात हुआ। आर्य समाज के विरोध के बावजूद भाषायी आधार पर दो राज्य बने—गुजरात और महाराष्ट्र। आज भी छोटी-छोटी बातों पर दोनों लड़ रहे है। विभाजन समस्या का समाधान नहीं था।

ऐसा ही मद्रास मे हुआ। मद्रास राज्य मे भी दो राज भाषाएं थीं—तमिल और तेलगू। वहां भी भाषा को लेकर भयकर हिंसा हुई। अन्ततः आतंकवाद के समक्ष सरकार झुकी। परिणाम स्वरूप तमिलनाडू और आन्ध्र प्रदेश नाम से दो अन्य राज्य बने।

पञ्जाब की कहानी भी कोई अधिक पुरानी नहीं है। वहां हिन्दी और पजाबी के बीच बड़ी चतुराई से दीवार खींची गई। गुरुओं की वाणी 'हिन्दी' है। लिपि अवश्य कुछ भिन्न है। वह भी नागरी का चित्रांकित रूप मात्र है। ग्रन्थ साहब मे पजाबी (भाषा नहीं बोली) है ही कितनी? अधिकांश तो ब्रज-बोली मे है। यहां तक कि दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी भी ब्रज-भाषा के टकसाली कवि थे, पंजाबी के नहीं। वीर-रस मे उन्होंने अच्छी कविता की है।

आज्ञा भई अकाल की तबहिं चलायो पन्थ।
सब सिक्खन को हुकुम है, गुरु मानियों ग्रन्थ॥
इसमें कहां पंजाबी है?
नानक दुखिया सब ससांरा।
सुखी सोई जेहि नाम अधारा॥

यह पजाबी तो नहीं है। केवल गुरमुखी में लिखने के कारण ही लोग गुरुवाणी को पजाबी कह देते हैं। वस्तुतः यह तो हिन्दी है।

आर्य समाज ने पंजाब मे सत्याग्रह किया था। लोगों को समझाया था—'हिन्दी और पंजाबी दो नहीं हैं। लिपि भी एक–भाषा भी एक। थोड़ा सा उच्चारण भेद है। लिपि में चित्रात्मकता है। दोनों को एक ही रहने दो। एक रस होने दो।'

हमने स्पष्ट चेतावनी दी थी—'भाषा का झगडा पृथकतावाद को बढ़ावा देगा। क्षेत्रीयता को बल मिलेगा। राष्ट्रीय एकता को धक्का लगेगा।'

उस समय किसी ने माना नहीं। उलटा आर्य समाज को ही दोषी ठहराया। सत्ता के भूखे नेताओं ने अलगाववादियों से सांठ-गांठ कर ली। आज पंजाब धधक रहा है, तो तमाशा देख रहे हैं।

पराधीन भारत में पंजाब की बोली के लिये मुख्यतः फारसी और नागरी लिपियों का प्रयोग होता था। मुसलमानों को आये एक युग बीत चुका था पजाब ने अनेक लड़ाइयां लड़ी हैं। युद्ध सम्बन्धी गुप्त पत्र-व्यवहार नागरी या फारसी मे होने से दुश्मन की पकड़ में आ जाता था। इस समस्या को हल करने के लिये नई लिपि का निर्माण किया गया। इसके लिये नागरी की लेखन शैली को थोड़ा बदला गया। उसे जटिल बनाया गया। नागरी का यह चित्रांकित रूप दुश्मन को समझ पाना मुश्किल था। युद्ध मे गोपनीयता बरतने के लिए ऐसा करना आवश्यक भी था। बाद में गुरु अर्जुनदेवने गुरुवाणियों को ग्रन्थ का रूप देने में इसी लिपि का प्रयोग किया। इस प्रकार सेना की वह गुप्तलिपि गुरुमुखी कहलाई। उसे व्यापक जनाधार मिला। सेना की सांकेतिक लिपि समय के साथ-साथ बदलती रही। बदलती रहेगी।

मैं नहीं समझता कि हिन्दी और पजाबी के नाम पर झगड़े का कोई औचित्य हो सकता था। फिर भी हमारी चेतावनी की उपेक्षा कर न केवल पजाब को बल्कि पूरे देश को एक अनावश्यक हिंसा मे झोंक दिया गया।

आर्य समाज ने बिहार में उर्दू को दूसरी राज भाषा बनाते समय सचेत किया था। डा० जगन्नाथ मिश्र के नेतृत्व वाली सरकार ने एक नहीं सुनी। पूरा बिहार उर्दू के विरोध में खड़ा था, फिर भी उसे दूसरी राज-भाषा बनाया गया।

उत्तर प्रदेश मे हम चीख चीख कर बता रहे हैं यदि समय रहते सावधानी न बरती गई तो महा अनर्थ होगा। कश्मीर की स्थिति सामने है। पञ्जाब धधक रहा है। उत्तर प्रदेश और बिहार में उर्दू थोप कर पाकिस्तान से बांगला देश तक भीषण रक्त-पात को दावत क्यों दे रहे हो?

शोक प्रस्ताव

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा जौनपुर के मन्त्री एव आर्य समाज सराय लोका के मुख्य कार्य कर्ता श्री छोटेलाल आर्य जी की पूज्यनीया माता जी का १९ फरवरी को निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ। आर्य समाज सरायलोका ने शोक प्रस्ताव पारित किया।

धर्मपाल आर्य मन्त्री

—आर्य समाज दतियाना [मुजफ्फर नगर] का ५३ वां वार्षिकोत्सव दि० २२ मार्च से २४ मार्च ८६ तक समारोह से मनाया गया। आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान एवं वक्ता सम्मलित हुए।

मन्त्री आर्य समाज

—आर्य समाज शोहरत गढ़ [बस्ती] का वार्षिकोत्सव दि० २२ मार्च से २४ मार्च ८६ के मध्य सोल्लास सम्पन्न हुआ प्रमुख विद्वान, वक्ता सम्मलित हुए उत्सव पूर्णतया सफल रहा। मंत्री आर्य समाज

आरिफ खा के इस्तीफे से फिरकापरस्ती का जनाजा

(श्री काशीनाथ मिश्र भूतपूर्व सहकारिता मन्त्री, उत्तरप्रदेश)

शेरशाह सूरी, रजिया बेगम, सम्राट अकबर, रहीम खानखाना, मलिक मुहम्मद जायसी, सन्त कबीर और आधुनिक भारत में ब्रिगेडियर उस्मान और अब्दुल हमीद की महान राष्ट्रीय परम्पराओं से जुड़कर फिरकापरस्ती अहेलियत वाले लीगी कठमुल्लाओ के मुंह पर तमाचा मारते हुए मुस्लिम महिला विधेयक के विरोध में मोहम्मद आरिफ ने जो साहसी और सराहनीय कदम उठाया है, उससे राष्ट्रीय एकीकरण शक्तियो को अबोध बल प्राप्त हुआ है। ठीक समय पर भारत सरकार के मन्त्रि परिषद से इस्तीफा देकर मोहम्मद आरिफ खां ने फिरकापरस्ती के जनाजे का प्रदर्शन करके यह दिखाया है कि शासक दल साम्प्रदायिक शक्तियों को हवा दे रहा है।

लोकसभा मे मुस्लिम महिला विधेयक पेश करते समय कानून मंत्री ने और स्वय प्रधान मन्त्री ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर जो विचार व्यक्त किया है, उससे प्रतीत होता है कि वे लोग कांग्रेस के इतिहास, भारतीय सस्कृति और धर्मनिरपेक्षता से कोसों दूर हैं। कानून मन्त्री के जिस वाक्य के चलते मोहम्मद आरिफ खां को इस्तीफा देना पड़ा। यदि उस बात मे सत्यता रहती तो विभाजन के बाद भारतवर्ष में मुसलमान नहीं रह पाता। मुस्लिम लीगी नेताओं की बात यदि कांग्रेस आलाकमान उस समय मान गया होता तो विभाजन के बाद आबादी का तबादला हो गया होता लेकिन धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद में अटूट विश्वास रखने वाले पण्डित जवाहरलाल नेहरू को यह स्वीकार नहीं हुआ। भारतीय संस्कृति किसी मजहब विशेष से नहीं जुड़ी है। वह महान मानवीय मूल्यो के साथ खड़ी है। हमारे भारतीय सविधान की धर्मनिरपेक्षता का भी आधार महान मानवीय आदर्श है। हमारे प्रधान मन्त्री ने लोकसभा के फर्श पर शरीयत कानून की वकालत की है। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सभी धर्मों का समान आदर और सभी धर्मों के लिए वकालत कतई नहीं है। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सभी धर्मों से समान दूरी रखते हुए धर्मों के कट्टर मूल्यांकन और पोगापन्थी कर्मकाण्डों का विरोध करते हुए विवेकशील मानवीय मूल्यो के साथ रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करके आचरण करना। सैकड़ों वर्ष पूर्व पैदा हुए शेरशाह सूरी और सम्राट अकबर को आज का कट्टरपंथी, पोगापन्थी मुल्ला भी भारतीय संस्कृति का प्रतीक मानने से इनकार करने मे घबराहट महसूस करता है। मुस्लिम विधेयक पेश करने वालों को पेश करने से पहले डाक्टर ताराचन्द की लिखी हुई पुस्तक 'मुस्लिम कल्चर इन इण्डिया' पढ़ लेना चाहिये था। हमारे वर्ण व्यवस्था बनाने वाले महर्षियों ने महिलाओं को जाति विभाजन से अलग रखा। महिला की जाति और धर्म का निरूपण उसके शौहर के साथ समाविष्ट कर दिया गया। भारतीय संस्कृति के रग में रगी महिलाओं की जाति और धर्म उनके पति के जाति धर्म में वैसे ही घुलमिल जाती है जैसे दूध मे पानी। सृष्टि के सर्वोच्च रचना की संज्ञा महिलायें हैं। उसे किसी भी सम्प्रदाय और जाति सूचक विशेषण से विभूषित करना महिला समुदाय का घोर अपमान है और उसकी शक्ल को बदरूप करना है। सम्राट अकबर के शासन काल में लिखा गया रामचरित मानस हिन्दू और मुस्लिम शब्द से अपरिचित हैं। रामायण, महाभारत, गीता, पुराण और सभी वेद जो भारतीय संस्कृति के सूत्रधार हैं, हिन्दू और यवन शब्द से अपरिचित हैं। किसी किसी पुराण में 'म्लेच्छ वंश' की शिकायत है लेकिन हिन्दू मुसलमान का तस्करातक इन महान ग्रन्थों में नहीं है। हमारे संसद के केन्द्रीय कक्ष के बाहर छत पर पीतल के मोटे स्वर्ण अक्षरों में अंकित अय निजः परोवेति गणना लघुचेत साम। उदारचरितानाम वसुधैव कुटुम्बकम का यदि कोई अर्थ लोक सभा में बैठने वालों के दिमाग में हो तो उस सभा में मुस्लिम महिला और हिन्दू महिला आदि वाहियात शब्दों का जिक्र तक नहीं होना चाहिए, कानून बनाना तो दूर रहा।

जब भारतीय राष्ट्र की चतुर्दिक सीमाएं साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयता के दंगे फसाद मारपीट और खूनखराबा से आक्रांत हो, राम जन्म भूमि को लेकर कट्टरपंथी पोगापन्थी हिन्दू मुसलमान मस्तिष्क कोलाहल में तनाव की स्थिति पैदा किये हो, वैसे समय में लोकसभा के अन्दर मुस्लिम महिला विधेयक की चर्चा और उसका पारण आग मे घी का काम कर सकता है तथा सत्ताधारी दल को भारत भूखण्ड से सदा के लिए उखाड़ फेंकने में भी सहायक सिद्ध हो सकता है क्योंकि चट्टियों चायखानो, चौपालों और चौराहों पर यह चर्चा चल पड़ी है कि जिन लीगी नेताओं के सामने घुटने टेककर देश का बटवारा हुआ, उन्हीं लीगी नेताओं की पहल पर मुस्लिम महिला विधेयक पेश किया जा रहा है। देश की एकता एव अखण्डता के नाम पर चुनाव जीतने वाले सत्ताधारी कांग्रेस दल को यह सोचना पड़ेगा कि पंजाब में नित्य हो रही हत्या के प्रति मूकद्रष्टा बना रहना और मुस्लिम महिला विधेयक पेश करना देश के मतदाताओं के साथ विश्वासघात होगा।

ऐसे राष्ट्रीय सङ्कटकाल की बेला में इस अहम मसले पर मुहम्मद आरिफ ने केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद से इस्तीफा देकर भारत भूमि पर सत तुलसी, कबीर और जायसी की शाश्वत मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करते हुए कांग्रेस संस्था के जिन्दा दिली होने का जनसाधारण पर एहसास करा दिया है और राजनीतिक नैतिकता में निखार पैदा कर दिया है भारतीय संविधान, धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के समर्थकों का सर ऊंचा करते हुए राष्ट्रीय एकता का ठोस आधार दर्शाया है फिरकापरस्ती का पर्दाफाश राष्ट्रीय करके फिरकापरस्ती का जनाजा निकाल दिया है। अब कांग्रेस के सांसदों का यह पुनीत कर्तव्य है कि वे अपने घरेलू नौकरों की जमात सा व्यवहार छोड़कर जनप्रतिनिधि सा व्यवहार करें और इस फिरकापरस्ती के जनाजे को कब्रिस्तान पहुंचाकर सदा के लिए दफन कर दें।

—नगर महिला आर्यसमाज गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव आचार्य प्रज्ञादेवी की अध्यक्षता में दिनांक २६ फरवरी से २ मार्च १९८६ तक धूमधाम से मनाया गया पूर्णाहुति पर ऋषि लंगर का भी आयोजन हुआ। —दयावती मन्त्राणी

—बसन्त पचमी के पावन अवसर पर दिनांक १३ फरवरी १९८६ को महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर सिकन्दरपुर बलिया में हवन यज्ञादि का आयोजन हुआ। —प्रधानाचार्य

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज सेजपुर (अहमदाबाद) के सुयोग्य पुरोहित, वेदों के विद्वान् और पुराने उपदेशक श्री प० विजयकुमार जी स्वामी का दि० १६-२-८६ को देहावसान हो गया। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से भारी सख्या में उपस्थित आर्यों के द्वारा सम्पन्न हुई। शोक सभा दि० २३-२-८६ को आर्यसमाज में रखी गई, जिसमें अनेक आर्यों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।" —हरिलाल मंत्री

धूमकेतु से सम्भावित आपदायें ?

(डा० काशीनाथ शास्त्री एम० ए० बी० टी० साहित्या लकार विद्यावाचस्पति एम० एम० डी० एस० आयुर्वेद विशारद आर्य निवास, राजेन्द्र वार्ड गोंदिया (महाराष्ट्र)

(गताङ्क से आगे)

किन्तु दूसरे ज्योतिषियों के अनुसार धूमकेतु का प्रभाव तीन वर्ष तक रहेगा। जब कि महाराष्ट्र ज्योतिष मण्डल के कुछ सदस्यों ने यह भविष्यवाणी की है कि 'धूमकेतु के आगमन के कुप्रभाव सन् १९८६ से १९८९ तक (चार वर्ष) स्पष्टरूप से देखे जा सकेंगे।' महायुद्ध होने न होने के बारे में भी ज्योतिषियों में एक मत नहीं है। कुछ के मतानुसार सन् १९८६ के मध्य में विश्व के कुछ क्षेत्रों में युद्धाग्नि भड़केगी। परन्तु कई ज्योतिषियों के अनुसार इस वर्ष किसी बड़े या विश्व युद्ध का योग नहीं है। इसी प्रकार देश के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी के अनुसार भू० पू० प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई, चौधरी चरण सिंह और अन्य अनेक राजनेताओं एवं मार्क फर्नांडीस का भाग्योदय इस वर्ष होने की सम्भावना नहीं है। जब कि एक अन्य ज्योतिषी के अनुसार इस वर्ष मार्क फर्नांडीस व वर्त्तमान दल के सांसदों का भाग्योदय होगा ही।

इस प्रकार हम देखते हैं कि धूमकेतु के कुप्रभाव, कुप्रभाव की अवधि और उसके दुष्परिणामों के सम्बन्ध में ज्योतिषियों में एक मत नहीं है। अत ये समस्त भविष्य वाणियां केवल अनुमान पर आधारित होने के कारण अविश्वसनीय हैं। यों तो राज्यपाल या मुख्य मन्त्री राजनीतिक अस्थिरता के कारण बदलते ही रहते हैं और प्रति वर्ष किसी न किसी प्रसिद्ध राजनेता या महापुरुष की मृत्यु होती ही रहती है। संसार के कई देशों में युद्ध चल ही रहे हैं और यदि वे युद्ध विश्वयुद्ध में परिवर्तित हो जायें तो भी कोई आश्चर्य नहीं। परन्तु इन घटनाओं का सम्बन्ध धूमकेतु के आगमन से जोड़ना सर्वथा असंगत व अन्ध विश्वास है। अस्तु इन बातों की भविष्यवाणी करके जनता को व्यर्थ में आतंकित करना और अपना गौरव प्रस्थापित करना ज्योतिषियों के लिये अशोभनीय है। यों यदि किसी प्राकृतिक असाधारण उलट-फेर की या जहरीली गैस अथवा विषाणुओं से किसी महामारी के फैलने की निश्चित सम्भावना हो और यदि उनके प्रतिरोधक उपाय किये जा सकते हों तो अवश्य किये जावें। किन्तु वे उपाय (भाग्य भरोसे बैठ कर) हरिनाम स्मरण कीर्तन आदि न होकर वैज्ञानिक हों।

आर्य जगत

—आर्य समाज बसहिया [फैजाबाद] का वार्षिकोत्सव दि० ८ से १० मार्च ८६ तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प० लालता प्रसाद की उपदेशक सभा व पं० नेम प्रकाश भजनोपदेश के व्याख्यानों व भजनोपदेश का जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा।

—ईश्वरदत्त वर्मा

—आर्य समाज साकेत मेरठ के तत्वावधान में दि० १३ फरवरी ८६ को वसन्तोत्सव एवं वीर हकीकत बलिदान दिवस समारोह से मनाया गया जिसमें दहेज प्रथा उन्मूलन, वाक प्रतियोगिता आदि विषयों का संयोजन हुआ आर्य जगत के प्रमुख विद्वान एवं वक्ता सम्मिलित हुए। प्रतापचन्द्र मन्त्री

पुस्तक प्राप्ति

आर्य संसार

आर्य समाज १९ विधान सरणी कलकत्ता ने स्थापना-शताब्दि—समारोह १९८५ के शुभ अवसर पर स्मारिका-विशेषांक प्रकाशित किया है—सम्पादक प्रो० उमाकान्त जी उपाध्याय हैं। मूल्य ४ रुपिया।

स्वामी दयानन्द जी सरस्वती की जीवन काल की यात्राओं में कलकत्ता की यात्रा निर्णायक और महत्वपूर्ण थी—आर्य समाज की मूल नीति का वहीं निर्धारण हुआ तथा आर्य समाज की स्थापना भी उनके निर्वाण के दो वर्षों के अन्तर्गत हो गयी—विधान सरणी की आर्य समाज अपना महत्व देश में विशेष रूप से रखती है।

आर्य संसार प्रमुख मासिक हैं जिसने शताब्दि के अवसर पर विशेषांक प्रकाशित करके उच्चकोटि के विद्वानों के लेख प्रस्तुत किये हैं। बंगाल और भारत की सौ वर्ष की आर्य समाज की यात्रा की झांकी है तथा बंगदेश के प्रमुख आर्य जनों का परिचय और उनकी सेवाओं का उल्लेख है।

शताब्दि अक भव्य—आकर्षक और पठनीय है इसका सर्वत्र स्वागत होगा। आर्य समाज के कार्य कर्ता धन्यवाद के पात्र हैं।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

व्यक्ति-परिचय

(विद्वान वक्ता तथा लेखक प्रो० रामप्रसाद जी वेदालंकार)

आर्य समाज के मञ्च से वैदिक सिद्धांतों के कुशल वक्ता तथा गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य उप कुलपति प्रो० रामप्रसाद जी से सभी परिचित है। गुरुकुल में अध्यापन से अतिरिक्त समय में प्रो० प्रसाद जी या तो आर्य समाज के अधिवेशनों में व्यस्त रहते हैं या चिन्तन एवं लेखन में। आपका गम्भीरतापूर्ण अध्ययन एवं सरल वेष भूषा एवं जीवन वृत्ति एक दूसरे का पूरक है। 'वैदिक पुष्पाञ्जलि' भाग १—प्रकाशित हुई हैं। इसमें उच्चकोटि के मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या है तथा अन्वय और अन्वयार्थ देकर मन्त्र के समझने में सहायता की गयी है। श्रद्धा—साहित्य—प्रकाशन'—कर्म—कुटीर—आर्य नगर ज्वालापुर के पते से श्री रामप्रसाद जी से सम्पर्क किया जा सकता है और पुष्पाञ्जलि तथा उनकी अन्य रचनायें प्राप्त की जा सकती है।

आशा है कि प्रो० रामप्रसाद जी द्वारा अन्य वैदिक सिद्धांतों से परिपूर्ण रचनायें पाठकों को प्राप्त होंगी।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

राम जन्म भूमि की ऐतिहासिकता

—रवीन्द्र मोहन यादव—

अयोध्या स्थित श्री राम जन्म भूमि का ताला खुल जाने का समाचार पाकर सम्पूर्ण हिन्दू समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई। राजनीतिक क्षेत्र के लोग, विशेष कर सत्ता पक्ष के कुछ अधिक ही खुश हुए। क्योंकि बिना किसी प्रकार की राजनीतिक जोखिम के ताला खुल गया। राम जन्म भूमि पर ताला पड़ा होने पर देश के करोड़ों लोगों के हृदय में जो पीड़ा थी, वह हर्ष और उल्लास में बदल चुकी है।

स्वाधीनता के बाद जिस प्रकार विदेशी अंग्रेज शासकों की सार्वजनिक स्थानो पर लगी मूर्तियों और मार्गों के नाम आदि बदलने के साथ साथ ही तत्कालीन गृहमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयासों से सोमनाथ मन्दिर को मुस्लिम आधिपत्य से मुक्त कराकर गुलामी व पराधीनता काल के चिह्नों को हटाया गया था, उसके साथ ही श्री रामजन्म भूमि अयोध्या, कृष्ण जन्मभूमि मथुरा और विश्वनाथ मन्दिर वाराणसी का भी उद्धार होना चाहिये था। किन्तु उत्तर प्रदेश में कोई सरदार पटेल नहीं था। मुस्लिम शासनकाल मे हिन्दुओं के श्रद्धा केन्द्रों को जिसमें राम जन्म भूमि भी है, भूमिसात कर मस्जिद का निर्माण मुगल शासक बाबर द्वारा कराया गया था जिससे इसे बाबरी मस्जिद कहते हैं। इसे मुक्त करने के लिये साढ़े चार सौ साल के काल खण्ड में हिन्दू समाज ने अविराम संघर्ष किया था लेकिन मुगल शासकों का आधिपत्य स्वीकार नहीं किया। उक्त भवन बाबरी मस्जिद है या राम जन्म स्थान यह निश्चित होने के लिए उच्च न्यायालय मे मुकदमा विचाराधीन है।

फतेहपुर सीकरी के निकट चित्तौड़ के राजा सांगा से पराजित होकर भागने के बाद बाबर ने अयोध्या के पास रहने वाले मुसलमान फकीर जलाल शाह व ख्वाजा फजल अब्बास कलन्दर की शरण ली थी जिन्होंने उसे युद्ध में विजय प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया। लौटकर आने के बाद बहुत बड़ी सेना के साथ उसने पुन. राजासांगा का सामना किया जिसमे राजा सांगा हार गये। विजय प्राप्त करने के बाद बाबर पुनः अयोध्या गया, तो इन मुसलमान फकीरों ने राम जन्म स्थान को तोडकर मस्जिद बनाने का परामर्श दिया। पहले तो बाबर हिचकिचाया। परन्तु दोनों फकीरों की यह चेतावनी कि 'हिन्दुओं के इस पवित्र मन्दिर को तोड़ने से ही इस्लाम की जड़ें मजबूत होंगी उसे जंच गई और वह अपने वजीर मीरबकी खां ताशकन्दी को यह काम सौंप कर दिल्ली चला गया। सन् १५२८ में मीरबकी खां के नेतृत्व में मुगल सेना रामजन्म स्थान पर टूट पड़ी। हमले का समाचार पाकर हिन्दुओं के सशस्त्र जत्थे अयोध्या की ओर बढ़ चले, जहाँ कई दिनों तक भीषण संग्राम हुआ। अंग्रेज इतिहासकार कनिंघम ने हमले को इस प्रकार प्रस्तुत किया है, 'जन्म भूमि मन्दिर को गिराने के समय हिन्दुओं ने अपने जान की बाजी लगा दी थी। एक लाख ७४ हजार हिंदुओं की लाशें गिरने के। बाद ही मीरबकी खां तोप से मन्दिर गिराने मे सफल हो सका था। (लखनऊ गजेटियर अङ्क ३६ पृष्ठ ३) हैमिल्टन ने बाराबङ्की गजेटियर में यहाँ तक लिखा है कि "जलालशाह ने हिन्दुओं के खून का गारा बनाकर मस्जिद की नींव के लिये लखौरी ईंटें दी थीं।" बाबर ने स्वयं अपनी आत्मकथा में पृष्ठ १७३ पर लिखा है कि "हजरत फजल अब्बास मूसा आसिकान कलंदर साहब की इजाजत से जन्मभूमि मसमार कराके मैंने उसी के मसाले से उसी जगह मस्जिद तामीर की।"

इस युद्ध में हिन्दुओं की सेना का नेतृत्व फैजाबाद जिले के भाटी रियासत के राजा महताबसिंह ने किया। महताबसिंह के साथ हंसवार के राजा रणविजयसिंह मकरही के राजा संग्रामसिंह आदि इस युद्ध में बलिदान हुए थे। राजा महताबसिंह उस समय तीर्थयात्रा पर निकले हुए थे। उक्त हमले का समाचार पाकर जन्मभूमि की रक्षा के लिये तीर्थ यात्रा को युद्ध यात्रा में बदल दिया था। मन्दिर के मलबे पर मस्जिद खड़ी करने में उनको जान के लाले पड़ गये। दिन भर मस्जिद बनती और रात्रि में दीवार ढह जाती। किंवदन्तियों में यह कहा जाने लगा कि यह हनुमान जी का चमत्कार था लेकिन वास्तविकता यह थी कि हिन्दू छापामार रात में इन दीवारों को गिरा देते थे।

इन गतिविधियों से मुगल शासक काफी परेशानी में पड़ गये। परिणामस्वरूप बाबर को जलालशाह को वापस बुलाना पड़ा। स्वयं वहाँ जाकर बाबर ने प्रमुख हिन्दू सन्तों से सलाह की। फलस्वरूप बाबर ने मस्जिद की दीवार पर बोर्ड लगवा दिया जिस पर 'सी० पाक स्थान' लिखवाया गया। साथ ही इस बात की अनुमति हो गई कि शुक्रवार को छोड कर बाकी दिनों में हिन्दू वहाँ जाकर पूजा कर सकते हैं। इसके अलावा चन्दन की लकड़ी के दरवाजे लगवाकर गुम्बजों को गिरवा दिया गया, ताकि सारा भवन मस्जिद न लगे। इन बातों का वर्णन 'बाबर नामा' पृष्ठ ५२३ पर किया गया है। बाबरी मस्जिद में सीता पाक स्थान, मीनार रहित गुम्बज परिक्रमा मार्ग आज भी देखा जा सकता है। मस्जिदों मे चन्दन की लकड़ी के दरवाजे नहीं होते इसके बावजूद वहाँ चन्दन की लकड़ी के दरवाजे विद्यमान हैं। प्राचीन कसौटी पत्थर के ८४ खम्भों में से १२ बाबरी मस्जिद में, दो बाहर फाटक पर और ६ फजल अब्बास की कब्र मे तथा शेष लखनऊ फैजाबाद व लन्दन के संग्रहालयों मे रखे हैं। यह सभी अकाट्य तथ्य प्रमाणित करते हैं कि राम जन्म स्थान को भूमिसात कर उसी मलबे से, उसी स्थान पर बाबर ने मस्जिद बनवाई थी।

हुमायूं के शासनकाल मे राजपुर व सरसन्दा के ग्रामीण जन्म स्थान के प्रश्न पर विद्रोह पर उतारू हो गये थे। उन्होंने शाही छावनियों के साथ ही मस्जिद के सामने का दरवाजा नष्ट कर दिया। हंसवार रियासत की रानी जयकुमारी ३००० हजार महिलाओं को साथ लेकर राम जन्म स्थान पर अपना अधिकार लेने के बाद बादशाह की सेनाओं से लड़ते हुए शहीद हो गई थीं। अकबर के दिनों मे बहादुर क्षत्रियों ने फिर से अपना संघर्ष प्रारम्भ कर दिया लेकिन सम्राट अकबर कुछ अधिक समझदार था, इसलिये उसने टोडरमल और बीरबल की सलाह पर मस्जिद के सामने एक चबूतरे पर भगवान राम की मूर्ति लगवा दी, ताकि हिन्दू जनता पूजा कर सके। दीवाने अकबरी मे लिखा है कि "जन्मभूमि को वापस लेने के लिए हिन्दुओं ने २० हमले किये किन्तु अपनी हिन्दू रिआया का दिल शिकनी न हो इसलिए शाहंशाह हिन्द जलालुद्दीन अकबर ने बीरबल और टोडरमल की राय से बाबरी मस्जिद के सामने चबूतरा बनवा कर उस पर छोटा सा राम मन्दिर तामीर कर लेने की इजाजत बख्श दी और हुक्म दिया कि कोई शख्स उनके पूजा पाठ में किसी भी प्रकार की रोकटोक न करे।'

(शेष पृष्ठ ९ पर)

राम जन्म भूमि की ऐतिहासिकता

(पृष्ठ ८ से आगे)

अकबर के बाद जहाँगीर शाहजहाँ और अवध के नवाबों ने किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं डाला, लेकिन औरंगजेब ने सिंहासन पर बैठते ही राम जन्म स्थान को ही नहीं बल्कि पूरी अयोध्या को नष्ट कर देना चाहा था। इस पर बाबा विष्णुदास ने बादशाह के विरुद्ध हिन्दुओं को मुकाबला करने के लिये तैयार किया। फैजाबाद और बाराबंकी के सूर्यवंशी क्षत्रियों के साथ १० हजार साधुओं ने, जिनके हाथ में चिमटे थे, तीस बार मुगल सेना पर आक्रमण कर जाँबाज खां की सेना को नाकों चने चबा दिये। इस पर औरंगजेब ने उसे वापस बुला कर पुन ५० हजार सैनिकों के साथ नये सेनापति रशीद हसन अली को भेजा लेकिन विष्णुदास की सहायता के लिए गुरु गोविन्दसिंह की फौज के आ जाने पर एक खूनी संग्राम छिड़ा। इस लड़ाई में रशीद हसन अली और उसकी फौज को हराकर राम जन्म स्थान पर अधिकार कर लिया गया। औरंगजेब ने आलमगीर नामा पृष्ठ ६२३,६३० पर स्पष्ट लिखा है, काफिरों ने तीस बार आक्रमण किया और मगलसेना को लापरवाही के कारण पराजय का मुह देखना पड़ा। १६६४ में फिर राम जन्म भूमि पर आक्रमण किया गया जिसमें १० हजार हिंदुओं के बलिदान के बाद जन्म भूमि पर पुन कब्जा हो गया। चबूतरे और मन्दिर को गिराकर उस स्थान पर बहुत बड़ा गड्ढा कर दिया गया परन्तु श्रद्धालु हिन्दू जनता राम नवमी के दिन उसी गड्ढे पर जल अक्षत चढ़ाती रही।

लखनऊ में नवाब शासन के उदय होने पर नवाब अली के काल में हिन्दुओं ने फिर जन्म भूमि की मुक्ति के लिये आक्रमण किया पर सफलता नहीं मिली। नवाब नसीरउद्दीन के गद्दी पर बैठने के बाद फिर नवाब और शाही सेना का संयुक्त सामना हुआ। इस भयानक संग्राम में भाटी, हंसवार, मकरही, खजुराहट, दियार और अमेठी के राजागण सम्मिलित हुए थे। इस युद्ध में शाही सेना की धज्जियां उड़ गयीं और जन्मभूमि पर पुन हिन्दुओं का अधिकार हो गया। फैजाबाद गजेटियर में इतिहासकार कनिंघम लिखता है कि, इस बार शाही सेना एक ओर खड़ी तमाशा देखती रही। यह संग्राम ऐसा था कि वर्णन से बाहर है। दो दिन दो रात के युद्ध में सेना पराजित हुई। यह सबसे बड़ा बलवा था। वहां पर पुन चबूतरा बनाकर मूर्ति स्थापित कर ली गई।"

बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध १८५७ का स्वाधीनता संग्राम छिड़ जाने पर अयोध्या और गोण्डा के राजा देवी बख्श सिंह तथा बाबा चरण दास के नेतृत्व में जनता ने पुन संगठित होना शुरू कर दिया था। उस समय क्रांतिकारी मुसलमान नेता अमीर अली ने अयोध्या और फैजाबाद की मुस्लिम जनता को आह्वान किया कि, "बिरादरे वतन, बेगमों की शान व अस्मतों को बचाने में हमारे हिन्दू भाइयों ने जिस कदर अग्रजों का बहादुरी के साथ मुकाबला किया, उसे हम भूल नहीं सकते। बहादुरशाह जफर को अपना बादशाह मानकर हमारे हिन्दू भाई अपना खून बहा रहे है इसलिये फर्जे इलाही हमें मजबूर करता है कि हिन्दुओं के खुदा श्री रामचन्द्र जी की पैदाइशी जगह जहां पर बाबरी मस्जिद बनी है वह हिन्दुओं को वापस कर दें क्योंकि हिन्दू-मुस्लिम नाइत्तफाकी की यही सबसे बड़ी जड़ है। ऐसा करके हम लोग हिन्दुओं के दिलों को जीत लेंगे आपसी सद्भाव भी कायम हो सकेगा।" अमीर अली के इस प्रस्ताव का मुस्लिम वर्ग ने हार्दिक प्रसन्नता अनुभव करते हुए एक स्वर से समर्थन किया। अंग्रेजों में घबराहट फैल गई। वे चाहते थे कि हिन्दू-मुस्लिम बटे रहे, इसलिये झगड़े की जड़ बनाये रखना चाहते थे। सुल्तानपुर गजट में कर्नल मार्टिन की रिपोर्ट "अयोध्या की बाबरी मस्जिद को मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं को वापस दिए जाने के प्रस्ताव की खबर सुनकर हमलोगों में घबराहट फैल गई। अच्छा हुआ, गदर का पासा पलट गया, अमीर अली और बलवाई बाबा रामचरण दास को फांसी पर लटका दिया गया। फैजाबाद और अयोध्या में बलवाइयों की कमर टूट गई और तमाम जिलों पर हमारा रोब जम गया, क्योंकि गोंडा का राजा देवीबख्शसिंह फरार हो चुका था।' १८ मार्च १८५८ को जन्मभूमि परिसर में ही कुबेर टीला स्थित इमली के पेड़ पर बाबा रामचरणदास और अमीर अली दोनों देश भक्तों को फांसी पर लटका दिया गया। इस प्रकार मुसलमानों और हिन्दुओं द्वारा जन्म भूमि उद्धार का सामूहिक रूप में किया गया प्रयत्न भी अंग्रेजों ने व्यर्थ कर दिया।

भारत का कोई हिन्दू और मुसलमान इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि काशी में भगवान शिव के विश्वनाथ मन्दिर को औरंगजेब ने तोड़ कर एक मस्जिद बनाई थी जो आज भी विद्यमान है। मथुरा में श्रीकृष्ण की जन्मभूमि पर बना विशाल मन्दिर पहले मुहम्मद गजनी ने सन १०१७ में तोड़ा फिर दूसरी बार बना मन्दिर १६ वीं सदी में सिकन्दर लोदी ने तोड़ा और तीसरी बार बना हुआ मन्दिर औरंगजेब ने तोड़ा और उसी स्थान पर ईदगाह बनाई गई जो आज भी मौजूद है। कुरान शरीफ में स्पष्ट आदेश है कि दूसरे की जमीन पर बगैर उसकी रजामन्दी के मस्जिद बनाना नाजायज है और उस मस्जिद में पढ़ी गई नमाज अल्लाह स्वीकार नहीं करते। तब क्या मुगल शासकों ने कुरान शरीफ के आदेशों के खिलाफ राम, कृष्ण और शिव मन्दिरों को तोड़ कर मस्जिदें बनवा कर बहुत बड़ा पाप नहीं किया था?

हजरत पैगम्बर का इस सम्बन्ध में इतिहास में एक उदाहरण मौजूद है। उनके समय में एक यहूदी औरत के भवन के एक हिस्से को गिरा कर किसी अधिकारी ने मस्जिद का निर्माण कर लिया था। जब हजरत साहब को यह मालूम हुआ तो तुरन्त हुक्म देकर उस मस्जिद को तुड़वा कर फिर मकान बनाकर यहूदी महिला को प्रदान किया।

आवश्यकता इस बात की है कि ऐतिहासिक तथ्यों इस्लामी परम्पराओं और १८५७ के एकता प्रयासों के उदाहरण को देखते हुये मुस्लिम नेता सद्विवेक से काम लें और तुच्छ राजनीतिक स्वार्थों के लिये साम्प्रदायिक उन्माद भड़का कर देश को, और विशेष कर मुस्लिम समाज को पीछे धकेलने की कोशिश न करें। ऐसा करके वे जिनका नेतृत्व करने का दम भरते हैं, उन्हीं के साथ विश्वासघात कर रहे हैं।

—ऋषि बोध के पावन अवसर पर आर्यसमाज तिलक द्वार मथुरा के तत्त्वावधान में एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन हुआ जिसमें नगर के समस्त आर्य बन्धुओं, आर्य शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा नगर के हजारों नर-नारियों ने भाग लिया शोभा यात्रा पूर्ण सफल एवं सराहनीय रही। —मन्त्री

—आर्यसमाज नेमदारगंज (नवादा बिहार) के तत्त्वावधान में ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय नवयुवकों की टोली बनाकर साइकिल जुलूस द्वारा व्यापक प्रचार किया गया।

—आर्य मारुत

नारी के समानाधिकार

[श्रीमती सत्य भाषिणी देवी साहित्यरत्न, सी ३४-पंचशील एनक्लेव नई दिल्ली-१७]

(गतांक से आगे)

विद्वान् बना दिया। श्री मण्डन मिश्र को शास्त्रार्थ मे हराकर भारती ने जो महान विदुषी की यश पाया। रामचरित मानस के रचयिता तुलसी दास को भी तो उनकी पत्नी ने यह उपदेश दिया कि तुम्हारा जितना प्रेम मुझ पर है यदि इतना ही ईश्वर से हो तो श्रेष्ठ बन जाओ। और मुक्ति पा जाओ। इस प्रकार युग-युग मे सदा ही नारी पुरुष की मार्ग दर्शिका रही है। मुगल बादशाह अलाउद्दीन से किस कौशलता से अपने बंदी पति को कारागार से मुक्त कर अपना सतीत्व रानी पद्मावती ने बचाया। सरदार चूडावत को युद्ध मे उत्तेजित तथा कर्तव्य पूर्ण करने हेतु नव वधु हाड़ा रानी ने अपने मेहदी लगे हाथो से तलवार द्वारा शीश (मुण्ड) काट कर रण मे पति को भेजा कि उस मुण्ड माल से ही पति विजयी होगा उसका। इसप्रकार उस वीर नारी ने यश पाया। रानी दुर्गावती ने किस प्रकार दोनो हाथो मे तलवारें लेकर रण में मुगल बादशाह पर विजय पाई। आज भी देश मे नारियो की महानता विद्वता, त्याग बलिदान की कमी नही है। माता कस्तूरबा गांधी,श्रीमती सरोजिनी नायडू, आदि-आदि श्रेष्ठ नारियां हुई हैं, जिन्होंने अपना सर्वस्व, महान त्याग, बलिदान देश के लिये किया है। भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, जिसे सारा विश्व एक महान विभूति मानते हुए सम्मान देता है अपना सर्वस्व बलिदान कर स्वदेश के साथ-साथ अपने को सदा के लिए इतिहास मे अमर कर दिया है।

इस प्रकार यदि आज की नारी भी अपने अधिकारों की मांग करती है तो उचित ही है।

—श्री स्वामी अनन्त भिक्षु जी वानप्रस्थ के संयोजकत्व में आर्य समाज किरतियापुर (हरदोई) मे ऋषि बोध के पावन पर्व पर दिनांक ९ मार्च १९८६ को स्वामी जी द्वारा यज्ञ का आयोजन हुआ।

—रवीन्द्रनाथ अग्निहोत्री

नवीन गुरुकुल स्थापना

कलकत्ता के आर्यसमाजों के आचार्य एवं प्रमुख वक्ता विद्वद्वर श्री रामकृष्ण जी शास्त्री ने सूचित किया है कि उनके वैदिक ज्ञान पाण्डित्य से प्रभावित होकर उतरौला (गोण्डा) उत्तरप्रदेश निवासी महन्त मौनी बाबा ने पांच एकड़ भूमि गुरुकुल स्थापना के लिये उन्हें प्रदान की। श्री शास्त्री जी ने ऋषि बोध उत्सव (शिवरात्रि) के पावन पर्व पर उतरौला मे गुरुकुल का शिलान्यास किया तथा उसका नाम "गुरुकुल वेदाधि विद्यासागर" रखना निश्चित हुआ तथा जुलाई सन् १९८६ से विधिवत शिक्षा सत्र प्रारम्भ होगा।

महन्त जी के उदारतापूर्ण दान हेतु उन्हें बधाई है और ईश्वर से प्रार्थना है कि आचार्य जी का प्रयास सफल हो और गुरुकुल शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी हो। —आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

अवैतनिक प्रचारक

श्री मिश्रीलाल जी आर्य मन्त्री आर्यसमाज बांगरमऊ (उन्नाव) को आर्यसमाज के प्रति समर्पित संन्यासी या वानप्रस्थ की आवश्यकता है जो आर्यसमाज का प्रचार करे। प्रचारक महोदय के लिए निवास भोजन वस्त्र आदि का उत्तम प्रबन्ध रहेगा। इच्छुक व्यक्ति उपर्युक्त मन्त्री जी से सम्पर्क करे।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

—आर्य समाज लालगंज (रायबरेली) के तत्वावधान मे ऋषि-बोधोत्सव हर्ष एवं उल्लास के साथ डा० शकुन चन्द्र गुप्त प्रधान की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ भजन, गीत तथा व्याख्यान का सफल आयोजन हुआ। शिवबालक आर्य

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ अप्रैल १९८६ को समाप्त हो जाता है। वी पी. भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी पी. नहीं भेजी जावे जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी पी. भेजी जावेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी पी भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे है। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है।

४५९, ८११, ११७३, १२५९, २८१८, ३६५१, ३६९३, ४०००, ४४०४, ४४२७, ४८७६, ४८७७, ५५४९, ५५५६, ५५६१, ६[illegible]३, ६४०५, ६१४९, ८०४७, ८२४८, ८३४६, ८७६०, ८७८१, ८७८४, ८९३०, ९४३७, ९४४०, ९४४३, ९४७६, ९६३७, ९६४०, ९६४८, ९६८१, ९८६१, ९८६४, १०१४०, ११६६१, ११७७७, ११२५०, ११५८६, ११८९०, ११८९०, ११८९३, ११८९६, ११९००, १२१५५, १२१५७, १२६३१, १२६३६, १२८६७, १२८७४, १२८८१ १३०७६, १३०९८ १३०८६, १३०८७, १३०८९, १३१०३, १३१०८।

विनीत—

—व्यवस्थापक

राष्ट्रीय-निर्माण में "आर्य समाज" का योगदान

[डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज, बरेली-२४३००५]

राष्ट्रीय-निर्माण में आर्य समाज की भूमिका प्रेरक एवं गौरवास्पद रही है। आर्य-समाज' का अर्थ ही 'श्रेष्ठों का समाज' है, जो इसकी 'श्रेष्ठता' के कारण ही है। 'वैदिक धर्म' पर आधारित आर्य समाज के सिद्धांत, सनातन, शिवसंकल्पों से परिपूर्ण एवं मानव-मात्र के लिए हितकारी हैं। राष्ट्रीय उन्नति का मूल सद्विचार ही हैं, वे ही आचरण को प्रेरित करते हैं तथा आचरण का ही दूसरा नाम कर्मनिष्ठा है।

'आर्य-समाज' की वैचारिक क्रांति ने राष्ट्रीय जीवन को जागृति की ओर प्रेरित किया तथा सुप्त चेतना को योगक्षेम के लिए आंदोलित किया। आर्य समाज ने ऐसे कार्य किये जो बड़े से बड़े नेता भी नहीं कर पाये।

देश-प्रेम का संवर्धक "आर्य-समाज"

गांधी हों या जवाहर लाल नेहरू या अन्य कोई नेता, किसी ने भी ऐसा मुसलमान देशभक्त तैयार नहीं किया, जैसा कि आर्य समाज ने। जेल जाने वाले तथा कांग्रेस से लाखों रुपया लेने वाले अनेक मुसलमान गांधी जी के साथ रहे, किन्तु उनमें से कोई भी देशभक्ति के लिए फांसी के तख्ते पर नहीं झूला। देशभक्ति से परिपूर्ण, फांसी के तख्ते पर स्वतन्त्रता के लिए झूलने वाला एक ही अमर देशभक्त है—"अशफाक उल्ला खां शाहजहाँपुरी", आज भी उनकी समाधि शाहजहाँपुर में है तथा वहाँ बड़े-बड़े मनीषी भी श्रद्धानत होकर फूलमालायें अर्पित करते हैं। 'काकोरी-कांड' में जब पकड़ा-धकड़ी आरम्भ हुई तो अशफाक उल्ला खाँ भारत के सीमाप्रांत तक पहुंच चुके थे। समाचार-पत्र के द्वारा उन्हें जब ज्ञात हुआ कि प० रामप्रसाद बिस्मिल पकड़ गये हैं, वे तुरन्त लखनऊ वापस आ गये। अदालत में उपस्थित हुए तब मुसलमान जज ने उनसे कहा कि उनके बताये बयान से अशफाक साहब बच सकते हैं, जिसके उत्तर में प० रामप्रसाद बिस्मिल के शिष्य अशफाक साहब ने कहा—"मैं बचने नहीं फांसी का फंदा चूमने आया हूं। मैं अपने गुरु प० रामप्रसाद बिस्मिल से पहले फांसी के तख्ते पर चढ़ूंगा।" ऐसा देशभक्त दिलेर आखिर किसने बनाया? प० रामप्रसाद बिस्मिल पक्के आर्यसमाजी थे। जो सूझबूझ आर्यसमाज को मिली है वह और किसी के भाग्य में नहीं है।

हीरालाल गांधी का उद्धार

आर्य समाज का अन्य महत्वपूर्ण कार्य है गांधी जी के पुत्र हीरालाल गांधी का उद्धार। गांधी जी के ज्येष्ठ पुत्र हीरालाल गांधी जब मुसलमान बने, तो मुसलमानों की प्रसन्नता का पारावार असीम हो गया। हीरालाल का नाम शेख अब्दुल्ला रखा गया, शेख अब्दुल्ला का मौलवियों की सभा में बोला गया भाषण "मदीना" (कानपुर) में प्रकाशित हुआ। कानपुर के भाषण में शेख अब्दुल्ला ने कहा—'मैं हिन्दू मां से जन्मा हूं, अतः "कुरान" नहीं जानता। अगला जन्म मैं चाहता हूं, मुसलमान मां की कोख से हो, जिससे मैं 'कुरान-शरीफ' जानूं। इस भाषण से मुसलमान बहुत प्रसन्न हुए। दिवंगत पूज्य नाना जी (प० बिहारी लाल शास्त्री) कहते थे कि उन्होंने तब मुसलमानों से कहा— "मुबारक! इस्लाम के प्लेटफार्म पर हीरालाल ने पुनर्जन्म [तनासुख] का प्रचार कर दिया। पढ़ के देखो। हीरालाल इस्लाम में इन बातों का प्रचार करने गया है। मुसलमानों ने जब कहा कि जलसे में भाषण सुनकर मौलाना शौकत अली साहब तो कुछ नहीं बोले, मैंने कहा—हीरालाल ने, मुसलमानों पर, गायत्री मन्त्र पढ़ कर फूंक मार दी थी, अतः किसी को होश न था। यह तो अभी बिस्मिल्लाह है, आगे-आगे देखिये होता है क्या। मुसलमानों को तो चुप मैं कर देता था, किन्तु दिल में मेरे भी दर्द था कि हीरालाल शेख अब्दुल्ला क्यों बना।" आर्य समाज का ही इतिहास इस बात का प्रमाण है कि उस समय के बम्बई आर्य समाज के प्रधान प० विजयशंकर जी जो कस्तूरबा गांधी के ही नगर के थे तथा हीरालाल के मामा लगते थे कस्तूरबा को सान्त्वना देते हुए कहा—"समाचार-पत्र में मैंने हीरालाल के विषय में सबकुछ पढ़ लिया है यदि एक माह के अन्दर शेख अब्दुल्ला को पुनः हीरालाल न बना पाया, तो समुद्र में कूद कर जान दे दूंगा।" इस प्रकार प० विजयशंकर जी ने बिलखती कस्तूरबा को धैर्य बंधाकर एक माह में ही पुनः शेख अब्दुल्ला को 'हीरालाल' बना लिया। यह कार्य आर्य समाज का ही महान् जादू है, जिसे बड़े से बड़ा नेता भी नहीं कर पाया।

पाखण्ड से बचाया

आर्य समाज का अन्य महत्वपूर्ण कार्य है कि सिन्ध और गुजरात के लगभग चालीस हजार आगाखानियों को पाखण्ड के किले से निकालकर पुनः हिन्दू बना दिया। दिवंगत नाना जी इस संदर्भ में बताते थे— "उन्हीं लोगों के प्रयत्न से मुझे आगा-खां का गढ़ देखने को मिला जिसमें हिन्दू तो क्या कोई मुसलमान भी नहीं पहुंच सकता था।'

ईसाई होने से बचाया

इतिहास इस बात का प्रमाण है कि सन् १९२१ की मर्दुमशुमारी में कई लाख मेहतरों को आर्य समाज के प्रयत्न से ईसाई लिखे जाने से बचाया गया। शुद्धिकार्य हिन्दुओं में सुचारु रूप से मिल गया है। स्वर्गीय नाना जी के ही शब्दों में—'सैकड़ों व्यक्ति अग्रवाल, जाट, कायस्थ तथा ब्राह्मणादि बन गये। कई सौ व्यक्ति तो मेरे ही द्वारा शुद्ध होकर आज द्विजों में मिले हुए हैं।'

इस प्रकार मस्तिष्क सुपरिवर्जित करने का जो जादू आर्य समाज कर सकता है, वह अन्य कोई नहीं कर सकता। आर्षग्रन्थों को पढ़कर उनके मनन-चिंतन द्वारा इस सूझबूझ को और अधिक वर्धित किया जा सकता है वेद (ऋग्वेद-४।५१।११) कहता है—

'वय स्याम यशसो जनेषु' अर्थात् हम मनुष्यों में यशस्वी हों। श्रेष्ठ जीवन ही यशस्वी जीवन है। मेधावी होकर ही नीरक्षीर विवेक को विकसित किया जा सकता है। 'वेद ज्ञान' के द्वारा ही इस दुर्लभ जीवन को सफल बनाया जा सकता है—

'शग्धि स्वस्तये' [ऋग्वेद ५।१७।२१]

अर्थात्—हे जीव तू सुख के लिये सशक्त बन।'

'अग्ने। विवस्वदा भर।'

प्रकाश स्वरूप। प्रकाश दे।

'सपत्ना अस्मदधरे भवन्तु' [अथर्व १।१९।२]

अर्थात् शत्रु हमसे दबे रहें।

'अमृतस्य तन्तु वितते वृक्षे कम्।।' [अ० २।१।५]

तुम्हारा शरीर प्रभु प्राप्ति के लिए है।

इस प्रकार वेद ज्योति से आलोकित होकर जीवन पथ-प्रशस्त बनाना प्रत्येक मानव का कार्य है। राष्ट्र के प्रति यही योगदान श्रेष्ठ है जिससे राष्ट्रीय जीवन में जागृति की लहर आये। वैदिक धर्म के प्रसार में अनेक राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राजनैतिकादि समस्याओं का समाधान निहित है।

—

वेदों में यज्ञ चिकित्सा

(श्री रामस्वरूप शास्त्री आर्य समाज बीसलपुर, पीलीभीत)

वेद में समस्त विद्यायें बीज रूप में विद्यमान हैं। मनुष्य के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में आयुर्वेद के अन्तर्गत विभिन्न चिकित्सा प्रणालियों की चर्चा है। सामान्यतया: अग्नि में रोग नाशक तथा स्वास्थ्य वर्धक औषधियों को डालकर उनसे उठे धूम्र द्वारा चिकित्सा की जाती है। यज्ञाग्नि द्वारा भी चिकित्सा होती है। अग्निहोत्र को हम देवयज्ञ कहते हैं, क्योंकि अग्नि स्वयं देव है। अग्निहोत्र में देवतनामों द्वारा ही आहुतियां दी जाती हैं। सामान्य अग्नि द्वारा चिकित्सा, तथा यज्ञियाग्नि द्वारा चिकित्सा में अन्तर यह है कि इस चिकित्सा में साथ-साथ मन्त्रों द्वारा ईश्वरीय कृपा का भी सहारा मिलता है। सामान्य अग्नि के औषध धूम्र में परमेश्वरीय कृपा का साक्षात् सहयोग नहीं मिलता। इस लिये यज्ञाग्नि चिकित्सा श्रेष्ठ है, और अधिक फल दायिनी है।

अन्य चिकित्साओं के अपेक्षा यज्ञाग्नि चिकित्सा इसलिए भी श्रेष्ठ है कि यह वायु चिकित्सा का मूलाधार है। भोजन के बिना कई दिन व्यक्ति जीवित रह सकता है। जल के बिना भी कुछ दिन जीवन चल सकता है, किन्तु वायु के बिना तो कतिपय मिनटों में ही जीवन-लीला की इति श्री हो जाती है।

प्राकृतिक पदार्थों में अग्नि भी भेषज रूप है। यह शीत की औषधि है, वेद कहता है "अग्नि-र्हिमस्य भेषजम्" यजु. २३/१० रोगी का शीत दूर करने तथा शीत से उत्पन्न रोगों के शमन में अग्नि का उपयोग करना चाहिये। अग्नि में होम करना अग्नि और वायु की सम्मिलित चिकित्सा है। यही चिकित्सा जब वेद मन्त्रों के साथ जुड़ जाती है, तो यह यज्ञचिकित्सा कहलाने लगती है।

वेद में कतिपय स्थलों पर इसके सुन्दर प्रमाण पाये जाते हैं, देखिये अथर्ववेद इस सम्बन्ध में क्या कहता है?

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं
हेमन्तान् शतमु वसन्तान्।
शतं त इन्द्रो अग्नि: सविता
बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम्॥

अथर्व काण्ड २० सूक्त ९६

अर्थ-(शत शरदः) सौ सर्दियों तक (शतं हेमन्तान) सौ हेमन्तों तक (शत वसन्तान्) सौ बसन्तों तक (वर्धमान) बढ़ता हुआ (जीव) जीवित रह (ते) हे रोगी तेरे (शतम्) सौ वर्ष की आयु को (इन्द्र) विद्युत (अग्निः) अग्नि (सविता) सूर्य (बृहस्पतिः) वायु प्रदान करें (शतायुषा) सौ वर्ष की आयु देने वाले (हविषा) होम से (एनम्) इसको (आहार्षम्) मैं बचा लाया

न तं यक्ष्मा अरुन्धते
नैनं शपथो अश्नुते।
यं भेषजस्य गुग्गुलोः
सुरभिर्गन्धो अश्नुते॥

अथर्व काण्ड १९ सूक्त ३८/१

अर्थ- (गुग्गुलो भेषजस्य) गूगल औषधि की (सुरभिः) उत्तम (गन्ध) गन्ध (यम्) जिस रोगी को (अश्नुते) प्राप्त होती हैं (तम्) उसको (यक्ष्मा) यक्ष्मा रोग (न) नहीं (अरुन्धते) फसाते हैं तथा (एनम्) इसको (शपथ) स्पृश्य रोग—छूत रोग (न) नहीं (अश्नुते) प्राप्त होता है।

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय
कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या
इन्द्राग्नी प्रमुमुक्तमेनम्॥

अथर्व कांड ३ सूक्त ११

अर्थ-(त्वा) हे रोगी! तुझे (राज यक्ष्मात्) राज यक्ष्मा रोग से (उत) तथा (अज्ञात यक्ष्मात्) अज्ञात रोग से (जीवनाय कम्) जीवित रहने के लिए (हविषा) होम के द्वारा (मुञ्चामि) छुड़ाता हूं (यदि) यदि (एनम्) इसको (ग्राहि) अङ्गों को जकड़ने वाली वात व्याधि ने (एतत्) यह-ऐसा (जग्राह) पकड़ लिया है (तस्या) उससे (इन्द्राग्नि) हे विद्युत और अग्नि तुम दोनों (एनम्) इसको (प्रमुमुक्तम्) छुड़ा दो।

सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा
हविषाऽऽहार्षमेनम्॥

अथर्व. ३/११/३

अर्थ—मैं रोगी को हजारों रोगों का क्षय करने वाली तथा १०० वर्षों तक जीवित रखने वाली हवि के द्वारा मृत्यु की गोद से छीन लाया हूं।

गृहानुप प्र सीदाम्यमृतेन
सहाग्निना॥

अथर्व ३/१२/९

मैं इस नवनिर्मित शाला में आया हू अमृत अग्नि' के साथ (यहां अग्नि को अमृत कहा है, क्योंकि अग्नि होत्र के द्वारा अग्नि मनुष्य को शीघ्र होने वाली मृत्यु से बचाती है)।

यज्ञ चिकित्सा में अग्नि मे डाली गई औषधि सूक्ष्मरूप होकर वायुमण्डल में मिल जाती है। जब हम श्वास लेते हैं तो वह सूक्ष्मीभूत औषधियां श्वास द्वारा फेफड़ों में पहुंचकर रक्त में मिल जाती हैं। और रक्त के साथ शरीर के सभी अंग प्रत्यंग में जाकर स्वस्थ तथा नीरोग बनाती हैं। हमें रोग के अनुसार औषधियों का चुनाव कर प्रयोग करना चाहिए।

हमारे पूर्वज रोगों से बचने के लिये चार-चार महीने के अन्तर पर चातुर्मास्य यज्ञ किया करते थे, देखिये इस सम्बन्ध में गोपथ ब्रा० क्या कहता है?

"भैषज्य यज्ञा वा एते यच्चा-तुर्मास्यानि।
तस्माद्ऋतु सन्धिषु प्रयुज्यन्ते।
ऋतु सन्धिषु वै व्याधि र्जायते॥

गोपथ ब्रा०।उ०१।१९

यह चातुर्मास्य यज्ञ भैषज्य यज्ञ हैं, इसलिये यह ऋतु सन्धियों पर किये जाते हैं। क्योंकि ऋतु सन्धियों पर निश्चय से व्याधियां पैदा होती हैं।

यद्यपि रोग दूर करने के लिये प्राकृतिक पदार्थ तथा अग्नि, जल, विद्युत, वायु, सूर्य आदि का पृथक पृथक प्रयोग होता है। यज्ञ प्रक्रिया मे इन चारों का एक ही में प्रयोग हो जाता है। होम मे अग्नि तो काम करती ही है, साथ ही विद्युत शक्ति अन्तरिक्ष में उत्पन्न वासित हो जाती है, जो रोग दूर करने में सहयोग देती है। यज्ञ से वायु शुद्धि होकर रोगों को लाभ पहुचाती है। इसी प्रकार यज्ञ से सूर्य किरणों मे शीघ्र रोग दूर करने का गुण आ जाता है। औषधियों के बने योग खाने में अपेक्षाकृत कम लाभ करेंगे, किन्तु यज्ञ द्वारा औषधियों का प्रभाव सीधा फेफड़ों में होकर रक्त में चला जाता है, और हृदय को बल देता है। पिछले परीक्षणों में यक्ष्मा, इन्फ्लूएन्जा, प्लेग, चेचक आदि रोगों में इसे बड़ा लाभकारी पाया है। जहां यज्ञ होते हैं वहां या तो रोग आते ही नहीं, यदि आते भी हैं तो अधिक हानि नहीं होती। गीताकार भी यज्ञ की महत्ता का प्रतिपादन करते हुये कहते हैं –

सह यज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा
पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष
वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥

गीता अ० ३।१०।

० ओ३म् ०

❀ आवश्यक सूचना ❀

उ.प्र. की समस्त आर्यसमाजों के माननीय प्रधान मंत्री जी की सेवा में-

प्रिय महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश शताब्दि समारोह की स्मारिका के प्रकाशनार्थ निम्न सूचनाएं अपेक्षित हैं, यथाशीघ्र भेजकर कृतार्थ करें। इस ग्रन्थ में आपकी गौरवशाली आर्यसमाज का उल्लेख आवश्यक है।

आपका

मनमोहन तिवारी

मन्त्री सभा

१—नाम आर्यसमाज

२—स्थान पो० जिला

३—आर्यसमाज की स्थापना तिथि —

४—आर्य प्रतिनिधि सभा में प्रविष्टी की तिथि

५—आर्यसमाज की स्थापना के समय, पदाधिकारियों के नाम

प्रधान —उप प्रधान —मंत्री उपमंत्री —कोषाध्यक्ष —लेखापरीक्षक —पुस्तकाध्यक्ष

६—आर्यसमाज के वर्तमान पदाधिकारियों के नाम तथा निवास के पते सहित—

(अ) प्रधान—
(ब) उप प्रधान—
(स) मन्त्री—
(द) उपमन्त्री—
(य) कोषाध्यक्ष—
(र) पुस्तकाध्यक्ष—
(ल) निरीक्षक—

७—आर्यसमाज की वर्तमान सदस्य संख्या— सहायक संख्या

८—आर्यसमाज का भूमि भवन है या नहीं, यदि हैं तो उसका मूल्य तथा क्षेत्रफल

९—आर्यसमाज में पुस्तकालय है या नहीं, यदि है तो पुस्तक संख्या— तथा मूल्य

१०—आर्यसमाज द्वारा संचालित संस्थाओं तथा शिक्षा संस्थाओं का नाम तथा प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष या प्रबन्धक का नाम व निवास का पता—

११ आर्य वीर दल है या नहीं, उसकी संख्या—

१२—दैनिक अथवा साप्ताहिक सत्संग होते हैं या नहीं—

१३—वेद प्रचार की व्यवस्था का उल्लेख—

१४—आपकी समाज 'आर्यमित्र' साप्ताहिक की ग्राहक है या नहीं ?

१५—विशेष वक्तव्य—विगत तीन वर्षों में आपकी समाज द्वारा किया हुआ कोई उल्लेखनीय कार्य—

(उदाहरणार्थ)जैसे- शुद्धि, भवन निर्माण, निर्धन सेवा, औषधालय, आदि-आदि।

हस्ताक्षर

दिनांक मन्त्री प्रधान

सत्यार्थ प्रकाश की महिमा

(पं० लालता प्रसाद उपदेशक सभा)

महर्षि दयानन्द जी के सभी ग्रन्थ राष्ट्र भाषा हिन्दी मे हैं जिससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे राष्ट्र भाषा के कट्टर पुजारी थे। उनका महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' है। एक बार विरोधी भी इस ग्रथ को पढ़ले तो वह ऋषि का भक्त बन जाता है। इस ग्रन्थ के सामने विरोधी टिक नहीं सकते हैं। इसमे १४ समुल्लास हैं। प्रथम समुल्लास मे ईश्वर के नामों की व्याख्या और मङ्गलाचरण वर्णन है, द्वितीय मे शिक्षा भूत-प्रेतादि निषेध और जन्मपत्री समीक्षा, तृतीय मे पठन-पाठन, स्त्री-शूद्र वेदाधिकार, चतुर्थ मे विवाहकाल तथा गृहस्थाश्रम का पूर्ण वर्णन, पञ्चम में वानप्रस्थ और सन्यास, छठे समुल्लास में राजधर्म, सप्तम मे ईश्वरीय ज्ञान, वेदोत्पत्ति वेदविषयक विचार, अष्टम मे सृष्टि उत्पत्ति स्थल निर्णय, नवम मे विद्याऽविद्या बन्धमोक्ष का वर्णन, दशम में आचार अनाचार भक्ष्याभक्ष्य, एकादश में अवतार, मूर्तिपूजा, तीर्थ तथा समस्त सम्प्रदायों की आलोचना है। द्वादश मे बौद्ध-जैन नास्तिको का, त्रयोदश में बाइबिल आलोचना और चतुदश मे कुरान की आलोचना है।

यह ग्रन्थ वैदिकधर्म का निचोड़ है। ऐसा निष्पक्ष ग्रन्थ आज तक किसी भाषा मे नहीं लिखा गया है। पौराणिक पण्डितों ने इस पर लेखनी उठाई पर सब को मुँह की खानी पडी, यथा विद्या वारिध पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र ने 'दयानन्द तिमिर भास्कर' लिखा जिसका करारा उत्तर प० तुलसी राम स्वामी ने 'भास्कर प्रकाश' के द्वारा दिया। प० कालूराम शास्त्री ने 'आर्यसमाज की मौत' लिखा— जिसका करारा उत्तर प० मनसाराम वैदिक तोप ने 'पौराणिक पोल प्रकाश' के द्वारा दिया। पादरी ठाकुर दास ने सत्यार्थ प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास का उत्तर श्री पं० भोजदत्त आर्य मुसाफिर ने उर्दू में 'बाइबिल' का बनाना लिखा और चतुर्दश समुल्लास का उत्तर मौलाना सना उल्लाह अमृतसरी ने 'हक प्रकाश' के नाम से दिया- जिसका उत्तर श्री प० चमूपति गुरुकुल कागडी के आचार्य ने 'चौदहवीं के चांद' के नाम से दिया। सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये सिंध सरकार ने, भोपाल सरकार ने आज्ञा निकाली पर आर्य समाज के आगे उनको घुटने टेकने पड़े।

सत्यार्थ प्रकाश निम्न भाषाओं मे प्रकाशित हो चुका है—

१— हिन्दी भाषा मे	२— उर्दू	३— बगाली
४— अंग्रेजी	५— पंजाबी	६— सस्कृत
७— सिंधी	८— उड़िया	९— कनाड़ी
१०— तमिल	११— तैलगू	१२— मलयालम
१३— मराठी	१४—गुजराती	१५—फ्रेंच
१६— जर्मन	१७— पर्स्तो	१८— ब्रह्मी

१९— और नेपाली भाषा मे इस ग्रथ का अनुवाद हो चुका है।

२०— श्री प० काली चरनै जी आर्य मुसाफिर आगरा ने फारसी भाषा में सत्यार्थप्रकाश । अनुवाद किया था। बड़े-बड़े विदग्ध विद्वानों ने सत्यार्थ प्रकाश को एक महान् तथा उपयोगी ग्रन्थ बतलाया है, यहाँ थोडे से मत उन विद्वानों के दिये जाते हैं.—

१— स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थों मे सत्यार्थ प्रकाश सर्वोत्तम है। उन्होंने इस पुस्तक मे साफ साफ बताया है कि मैं हिन्दुओं मे कोई नया मत स्थापित करना नहीं चाहता।

२— मैंने सत्यार्थ प्रकाश को कम से कम १८ बार पढ़ा जितनी बार मैं उसे पढ़ता हू मुझे मन और आत्मा के लिए कुछ नवीन भोजन मिलता है, पुस्तक गूढ़ सच्चाइयों से भरी पड़ी है।

प गुरुदत्त विद्यार्थी एम, ए

३— मैंने भारत मे आकर सच्चे हिन्दू धर्म का परिचय सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से पाया है, क्योंकि मार्ग से भटकने वालो के लिए यह पथ प्रदर्शक है।

(पादरी सी एफ एण्ड्रूज)

४— सत्यार्थ प्रकाश केवल आर्य समाजियों की ही पवित्र पुस्तक नहीं है, वरन जिसका विश्वास वैदिक संस्कृति मे है उन लाखों लोगों के लिये है।

(श्री एन० सी० चटर्जी बार-एट-ला-कलकत्ता)

५— इस महान ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचार धारा ही बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रंथ अद्वितीय है।

(श्री लाला हरदयाल जी एम० ए० पी० एच० डी०)

६— सत्यार्थ प्रकाश वेद के तत्वों का प्रकाश है।

(डा० राधा कुमुद मुकर्जी एम० ए०)

७— ऋषि दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में एक ओर तो युक्ति प्रमाणों से वैदिक सिद्धांतों की स्थापना की और विविध मत मतान्तरों की न्यायपूर्ण युक्तियुक्त समीक्षा भी की। सत्यार्थ प्रकाश ने धार्मिक जगत में क्रांति उत्पन्न कर दी है। सत्यार्थ प्रकाश ससार का दिग्दर्शक बना है।

(प्रो० रमेश चन्द्र बनर्जी एम० ए०)

८— सनातन धर्म का रहस्य समझने के लिये वेद है और केवल वेद ही हमारा मार्ग दर्शन कर सकते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में वेदोक्ततत्व है। मैं खण्डन किये बिना कह सकता हूँ कि सत्यार्थ प्रकाश हमारे सभ्यता की कुञ्जी है।

(सर टी० वी० शेष गिरि आयर रिटायर्ड जज मद्रास हाईकोर्ट) क्रमशः

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के समस्त सम्मानित अंतरंग सदस्यों, प्रान्त के जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं के सम्मानित प्रधान एव मन्त्री महानुभावों से निवेदन है कि अपने जिला और शहर में आर्य समाज एव आर्य विचार धारा के व्यक्तियों के द्वारा संचालित शिक्षण सस्थाओं के नाम, सस्था के सम्मानित प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष एव प्रबन्धक का नाम उनके निवास के पूर्ण पते सहित शीघ्र ही सभा कार्यालय मे भेजने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

शोक सँवेदना

दुखद समाचार है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के कोषा० श्री कृष्ण बलदेव महाजा, आर्यो प्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रधान श्री अर्जुनदेव महाना की बहन श्रीमती सुमित्रा देवी का गत दिनों दिल्ली मे आकस्मिक निधन हो गया तथा आर्य समाज लालबाग लखनऊ के प्रतिष्ठित सदस्य श्री सत्यभूषण अग्रवाल के पूज्या माता श्रीमती चन्द्रावती जी का गत दिनों कानपुर अस्पताल मे निधन हो गया। उपर्युक्त दोनो दुखित परिवारों के प्रति लखनऊ जनपद की समस्त आर्य समाजो की ओर से शोक सवेदना व्यक्त करते हुए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हू कि वह दिवगत आत्माओ को चिरशांति तथा शोक विह्वल परिवार को धैर्य प्रदान करें।

सत्यदेव सैनी मन्त्री जिला उपसभा

—आर्य समाज सिकन्दरपुर (बलिया) के सभापति तथा महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर सिकन्दरपुर बलिया के शिक्षाविद् सदस्य श्रीमान् भुवनेश्वरी प्रसाद राय प्राचार्य गांधी इण्टर कालेज सिकन्दरपुर बलिया के आकस्मिक निधन पर दि० १७ फरवरी ८६ को विद्यालय मे एक शोक सभा आयोजित की गई और परमात्मा से दिवगत आत्मा को चिर शांति तथा शोकाकुल परिवार के धैर्य हेतु प्रार्थना की गयी।

मन्त्री

अन्त्येष्टि कर्म एव शाति यज्ञ सम्पन्न

विदित हो कि आर्य विचार के पूर्ण पोषक एक सौ चार वर्षीय श्री शीतल दास जी, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक अंचल मोरवा जिला समस्तीपुर (बिहार राज्य) का निधन २४ फरवरी ८६ को रात्रि ११ बजे हो गया। उनका अन्त्येष्टि कर्म पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।   सीताराम आर्य मन्त्री

आर्य समाजो के निर्वाचन

आर्य समाज महाराजगंज रायबरेली
प्रधान श्री डा० रामबरदान सिंह
मन्त्री श्री रामशंकर
कोषा० श्री रामसियावन आर्य

आर्य समाज कोसी कला, मथुरा
प्रधान श्री चन्द्रभान आर्य
मन्त्री श्री विजयकुमार आर्य
कोषा० श्री राजेन्द्र कुमार आर्य

आर्य समाज पडरौना (देवरिया)
प्रधान श्री ब्रह्मप्रकाश महेन्द्रा
मन्त्री श्री सत्यपाल कोहली
कोषा० श्री ईश्वर चन्द्र गुप्त

—ग्राम भगवानपुर कला पो० शाहजहांपुर (गाजियाबाद) में आर्य समाज की स्थापना हुई जिसमे श्री मदन पाल सिंह प्रधान, श्री सतीश चन्द्र गुप्त मन्त्री और मास्टर रामपाल सिंह कोषा० निर्वाचित हुए।

मन्त्री आर्य समाज

आर्य महासम्मेलन उत्तरकाशी

सत्य सनातन धर्म रक्षा हेतु

दिनांक २३, २४, २५ मई ८६

गढ़वाल वेद प्रचार समिति देहरादून द्वारा यह सम्मेलन आर्य समाज के विकास के लिये किया जा रहा है। इस अवसर पर समस्त देशवासियों के आर्य मत्र जनो से निवेदन है कि अपने अपने क्षेत्र से अभी से उत्तर काशी चलने हेतु तैयारी शुरू कर देवें।

तथा गढ़वाल वेद प्रचार समिति देहरादून के नाम चैक व नकद अधिक से अधिक दान भेजने की कृपा करें।

पत्राचार निम्न पते पर करें   मन्त्री

उम्मेद सिंह आर्य विशारद
गढ़निवास मोहकमपुर
देहरादून उ० प्र०

शुद्धि समाचार

दि० २ मार्च ८६ को यज्ञ-हवन के पश्चात आर्य समाज सेंट्रल मद्रासमें स्वामी सेवानन्द की अध्यक्षता मे ९ परिवारो की शुद्धि की गई जो कि पहले ईसाई धर्म को मानते थे शुद्धि सस्कार श्री भरत सिंह आर्य कोषा० श्री सुन्दरम प्रधान टी नारायण जी के देख-रेखमें सम्पन्न किया गया। शुद्धि के पश्चात सेवानन्द सरस्वती ने शुद्धि पर बल दिया।

सम्वाददाता

उत्सव

—आर्य समाज शाहाबाद (हरदोई) का वार्षिकोत्सव एव यजुर्वेद पारायण यज्ञ दि० १० अप्रैलसे१८अप्रैल १९८६ के मध्य हर्षोल्लास एवं धूमधाम से सम्पन्न होगा।   मन्त्री आर्य समाज

—नगर आर्य समाज गोसाईगंज (फैजाबाद) एव आर्य वानप्रस्थ सन्यास आश्रम महर्षि दयानन्द नगर गोसाईगज का वार्षिकोत्सव दि० २५ से २७ अप्रैल ८६ के मध्य धूमधाम से सम्पन्न होगा।

डा० आचार्य सच्चानन्द

—आर्य समाज केराकत (जौनपुर) का वार्षिकोत्सव दि० ३ अप्रैल से ६ अप्रैल ८६ तक हर्षोल्लास से सम्पन्न होगा। आर्य जगत के प्रमुख विद्वान एवं वक्ता सम्मलित होगे।   मन्त्री आर्य समाज

—आर्य समाज मीरकमपुर कैनी का विशाल आर्य सम्मेलन ३० मई से १ जून ८६ तक धूमधाम से मनाया जायेगा तथा २५ मई से १ जून तक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन होगा।

दयाशंकर आर्य मन्त्री

"शुद्धि संस्कार : पैट्रिस से प्रीति"

रविवार १-३-८६ अपरान्ह नगर आर्यसमाज लखनऊ की यज्ञशाला में न्यूयार्क सयुक्त राष्ट्र में सुशिक्षित छात्रा कुमारी पैट्रिस ने स्वेच्छापूर्वक वैदिक धर्म स्वीकार किया। आचार्य मेधावी जी शास्त्री ने शुद्धि सस्कार सम्पन्न कराया। और उसका नया नाम कुमारी प्रीति रखा गया। उपस्थित गण्यमान्य व्यक्तियो ने आशीर्वाद दिया।

ज्ञानकृष्ण
प्रचारक आर्य मित्र

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल. डब्लू/एन. पी. ७९
आ० चैत्र ९, १६
चैत्र कृष्ण ५, १२, रविवार
३० मार्च, ६ अप्रैल १९८६ ई०

ओ३म् आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

ओ३म् ज्योति चकृषु आर्याय
ओ३म्
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

१८८६ - १९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ

विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक
गतिविधियों पर विचार

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १ फोन ४५९९३

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीनआर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० न १२४१/२७ — घोषणा पत्र स० ७ / २८-२-८२

वर्ष ८९] मा० चैत्र ३०, चैत्र शुक्ल ११, रविवार सवत् २०४२ वि०, दि० २० अप्रैल १९८६ [अङ्क १६

प्रार्थना

ओं विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्य मध्वायर्दधद्यज्ञपतावविहुतम् । वातजूतो यो ऽ अभिरक्षति त्मना प्रजा' पुपोष पुरुधा वि राजति ॥ —यजु ३३।३०

तेजस्वी सूर्य राजा के अन्दर स्थिर आयु को धारण कराता हुआ महान् ओषधि के मधुररस को पीवे। जो राज वायु से प्रेरित हुआसा आत्मभाव से प्रजाओं की रक्षा करता है और जो बहुधा विराजमान रहता है।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

काश्मीर मे काश्मीरी पण्डितो पर अत्याचार से सार्वदेशिक प्रधान दुःखी एव क्षुब्ध : श्री शालवाले का काश्मीर का दौरा


आर्य केसरी रामगोपाल जी शालवाले

काश्मीर मे गुलशाह की सरकार जिसे छब्बीस कांग्रेस (इ) के सदस्य समर्थन दे रहे थे वह साम्प्रदायिक सरकार थी तथा उसके शासनकाल मे पाकिस्तानी समर्थको का मनोबल बहुत ऊ चा होगया था और वहाँ की प्रशासनिक क्षमता पर हिमपात पड गया था दि० २० से २२ फरवरी १९८६ के मध्य श्रीनगर घाटी मे रहने वाले शान्तिपूर्ण काश्मीरी पण्डितोपर मुस्लिम सम्प्रदाय बहुल ने अत्याचारपूर्ण आक्रमण किये लूट-पाट, हत्यायें, बलात्कार साथ ही कितने ही हिन्दू धार्मिक स्थलो को नष्ट किया गया। खेद है कि इसकी सम्भावना पहले से हो गई थी। राज्यपाल और केन्द्रीय सरकार मूकदर्शक बनी रही तथा इस अत्याचार के शिकार काश्मीरी पण्डित श्रीनगर छोडने के लिए बाध्य हो गये जो गुलशाह चाहते थे कि समस्त हिन्दू चला जाय श्रीनगर घाटी पूरी मुस्लिम हो जाये और भारत से पृथक होने वाले मनसूबे सफल हो जाय। काश्मीर की घटनाओ से भारत का प्रत्येक बुद्धिजीवी व्यक्ति दु.खी एव क्षुब्ध हुआ निर्भीक पत्रकारो ने राज्यपाल तथा केन्द्रीय सत्ता की प्रखर आलोचना की और स्वाभाविक है कि अपने जीवन को समाज की सेवा के लिए अर्पित करने वाले सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपालजी शाल वाले भी सर्वाधिक दुखी एवं क्षुब्ध हुए और निर्भीक वृद्ध 'आर्य केसरी' श्री शाल वाले जी ने काश्मीर की यात्रा की। अपने आखो से सही मूल्याकन किया। अत्याचार पीडितो के अश्रु पोछे और भारत की समस्त आर्यसमाजो को आदेश दिया कि काश्मीर मे काश्मीरी पण्डितो पर अत्याचार के विरोध मे सभायें करें और सरकार का ध्यान आकर्षित करें।

लालाजी ने भी केन्द्रीय सरकार को काश्मीर सम्बन्धी रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा पजाब मे मानव प्राणों के साथ होली खेलने वालो को कुचल देने के लिए सैनिक शासन की माग की। आशा है प्रधान मन्त्री श्री राजीव जी हमारी मागो पर अवश्य ध्यान देंगे नहीं तो आर्यसमाज को आन्दोलन का दूसरा मार्ग ग्रहण करना पड़ेगा।

———

ओ३म्
आर्य मित्र



सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार २० अप्रैल १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८६

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

आर्ष कालीन परम पुनीत उक्ति है कि जननी एवं जन्म भूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठतम है इसके सम्मान इसके गौरव और इसकी संस्कृति की रक्षा करना प्रत्येक जन का कर्तव्य है जिसने इस पवित्र भूमि के अंक में अपने नेत्र खोले हैं और जिसके शरीर में इस पावनी जन्म भूमि के रजकणों का बन्धन चर्चित है। आर्य वर्त एवं भारतवर्ष वैदिक प्रधान संस्कृति का देश है जिसमें मानव तथा इसे जन्म देने वाली जननी और जिसके आंचल में खेलकर स्वास्थ्य लाभ करता हुआ शिशु ओजस्वी मानव बनता है के प्रति हमारा विशेष दायित्व है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम योगिराज श्री कृष्ण, धनुर्धर अर्जुन विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, प्रताप, शिवाजी, आदि ने देश की गरिमा एवं रक्षा के लिए अपने को न्यो-छावर किया तथा उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध मे जब भारत में ब्रिटिश शासन ईसाइयत के प्रचार के साथ अपनी जड़ जमा रहा था महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जन्म भूमि की रक्षा के लिये वैदिक संस्कृति की गरीयसी प्रतिष्ठा के लिये आर्य समाज की स्थापना की घोषणा की उसके साथ ही स्वतन्त्रता, स्वदेशीव्रत और वैदिक संस्कृति के विकास का मार्ग भी दर्शित किया। उसी पावन तिथि की पुण्यबेला पर सारे देश मे आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया गया और जैसा समाचार मिला है इस अवसर पर आर्यजनों में विशेष उत्साह दिखाई दिया। आर्यसमाज के आदर्शों पर चलने का संकल्प दुहराया गया। यह सौभाग्य की बात है तथा आवश्यकता है कि आर्य समाज देश हित में अपने आदर्शों पर अत्यन्त दृढ़ता के साथ कदम उठायें क्योंकि राजनैतिक दल आदर्शों से विफल हो रहे हैं और देश की अखण्डता और आन्तरिक सुरक्षा पर कालिमा छाई हुई है।

सर्व विदित है कि पूर्वांचल मे, मिजोरम मे ईसाई षड्यन्त्र चल रहा है तथा भारत सरकार ने इटली के पोप को सरकारी खर्चे पर जो भारत की यात्रा कराई है उससे ईसाई समझ गये हैं कि भारत मे उपयुक्त अवसर है ईसाइयत के प्रचार का। दूसरे ईसाइयों को यह भी आत्मिक बल मिल रहा है कि भारत के प्रधान मन्त्री श्री राजीव की धर्मपत्नि श्रीमती सोनिया जी जन्मतः इटली देश की हैं जो पोप का प्रमुख केन्द्र है और धर्म से कैथोलिक ईसाई हैं।

पंजाब से लेकर जम्मू एवं काश्मीर तक जो अशांति फैली है उसके परिणाम भी अच्छे प्रतीत नहीं हो रहे हैं लोक सभा में भारत के सुरक्षा राज्य मन्त्री श्री अरुण नेहरू ने स्वयं स्वीकार किया है कि आतंक वादियों को पाकिस्तान में प्रशिक्षित किया जाता है उन्हें आर्थिक सहायता दी जाती है और वह पंजाब तथा काश्मीर में उपद्रव करने मे सफल हो रहे हैं। दुर्भाग्य है कि सन् १९४७ को भारत विभाजनके समय तत्कालीन प्रधान मन्त्री स्व० जवाहर लाल नेहरू की वैचारिक दुर्बलता के कारण काश्मीर का एक तिहाई हिस्सा जो आजाद काश्मीर है पाकिस्तान मे मिल गया और जो युद्ध विराम सीमा है वहां से बराबर पाकिस्तानी सैनिक भारत की सैन्य टुकड़ियों पर गोली वर्षा किया करते हैं। काश्मीरमे डाक्टर फारुक की सरकार के समय और तत्पश्चात् श्री गुलशाह की सरकार जिसे छब्बीस कांग्रेस(इ०) के सदस्य समर्थन दे रहे थे उस अवसर पर भारत विरोधी तथा पाकिस्तानी समर्थन शक्तियां वहाँ कारगर हुई और श्री नगर क्षेत्र के पचहत्तर हजार काश्मीरी पंडितों को उत्पीड़ित किया गया कितने ही मन्दिरो और हिन्दू संस्थाओं को ध्वस्त किया गया।

पंजाब मे आतंकवादी स्वर्ण-मन्दिर से लेकर प्रमुख गुरुद्वारों तक अधिकार जमायें हैं तथा बरनाला जी जो मुख्य मन्त्री हैं वह आतंकवादियो के लिए उपहास के पात्र हैं। केन्द्रीय सरकार राज्यपाल बदलती रहे नये आयोग फिर से बनाती रहे परन्तु उग्रवादियों की गतिविधियां कम नहीं हो—रही है और आशंका है कि यदि उनके पाकिस्तान के साथ गुप्त समझौते हैं तो वे कोई नया गुल खिला सकते हैं।

आर्य समाज के सिद्धांतों में राष्ट्रीयता और भारतकी अखण्डता एक प्रमुख मन्तव्य है। पैंतीस वर्षों मे हमने देख लिया कि राजनैतिक दलों ने तथा सत्तापर बैठे व्यक्तियों ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिये जो पग उठाये वह सब गलत और दिशाविहीन निकले और आज तो मुस्लिम विधेयक को लेकर कांग्रेस ने भारत विभाजन के जिम्मेदार मुस्लिम लीगियों के सामने घुटने टेक दिए उसी का परिणाम है कि काश्मीर मे मुसलमान अपने को सशक्त मान रहा है धारा ३७० उसका कवच है। अतः आर्यसमाज स्थापना दिवस पर जो प्रतिज्ञायें दुहराई गयी हैं उन्हे कारगर करना है। आज आर्यसमाज को देश के विफल नेताओं के चित्रों को जनता के सामने स्पष्ट करना है और शासन को उसकी गलतियों के लिये प्रताड़ित करना है इतना ही नहीं आवश्यकता है कि राजार्य सभा गठित की जाय, राष्ट्रीयता की लौ प्रज्वलित की जाय और आर्य समाज को देश की राजनीति मे सुधार करने के लिये आगे आना चाहिये क्योंकि 'जननी जन्म भूमि' की रक्षा करना हमारा दायित्व है और हमारी वैदिक मान्यता है कि राष्ट्रे वयं जागृयाम।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

शोक समाचार

—जिला सभा गोन्डा की दि० ३० मार्च की बैठक मे एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें श्री रामानन्द अग्रवाल भू० पू० मन्त्री आर्य समाज बड़गांव (गोन्डा) के आकस्मिक निधन पर आर्य कुमार सभा गोन्डा ने एक शोक प्रस्ताव पारित कर श्री अग्रवाल के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया। तथा प्रभु से दिवगत आत्मा की शांति एवं दुःखद परिवार के धैर्य हेतु प्रार्थना की।

मन्त्री आर्य कुमार सभा

अध्यात्म सुधा

जीवन का लक्ष्य : आगे बढ़ना-ऊंचा चढ़ना

(श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' वसन्तिका राजाजीपुरम् वेदवारिधि, बी-६४
लखनऊ-२२६०१७)

(गतांक से आगे)

कवच जो 'अन् अति व्याहृयं' काम रूपी शत्रु के प्रहार से बचाता है। यह 'शिव' का वह 'लोचन' है जिससे काम भस्म हो जाता है।

ब्रह्मचर्य आत्मा का मणि कैसे बनता है तो इस मणि सूक्त के प्रथम मन्त्र में उसका एक विशेषण दिया गया है 'प्रति+सरः' अर्थात् विपरीत प्रवाह। हम जिस अन्न का सेवन करते हैं और उससे जो रक्त के उपरान्त ओज, वीर्य आदि बनने की प्रक्रिया है, वह काम विकार के कारण ऊपर से बहकर नीचे वीर्य कोष मे प्रविष्ट होता है और कालान्तर कुत्सित विचारों के कारण स्वप्न दोष अथवा कामक्रीडा के माध्यम से शरीर से बाहर निकल जाता है। जिस अनुपात से यह नष्ट होता रहता है उसी अनुपात से शरीर शिथिल और निस्तेज होता जाता है परन्तु ज्ञानरूपी कवच से जब इनकी रक्षा करके इसे ऊपर प्रवाहित किया जाता है तो न केवल शारीरिक पराक्रम की प्राप्ति होती है वरन् मस्तिष्क की स्मृति, विचार शक्ति, निर्णय क्षमता भी तीव्र होकर प्रज्ञा का रूप धारण कर लेती है। आत्मा के इन्द्रत्व को यह मणि दिव्य ज्ञान की अनुभूति से होती है। बाह्य रूप रङ्ग क्या है जिस पर मानव आसक्त होकर अपना सर्वनाश कर लेता है तो प्रभु की वाणी कहती है–

नयो न रूपं जरिमा मिनाति। (ऋ० १।७०।१०)

रूप तो मेघ की भांति है। जैसे वायु उसे उड़ा कर ले जाता है, उसी प्रकार वृद्धावस्था उसे दूर ले जाता है। सच्चा वैराग्य जब ज्ञान के माध्यम से उत्पन्न हो जाता है तो मानव अनासक्त और विरक्त हो जाता है। ऐसे मणिधारक आत्मा के लिए ही उपरोक्त मन्त्र विशिष्ट ज्ञान से परिचत कराते हुए कहता है कि उसे अप्सरायें, वासनायें और विलासितायें नहीं हन पातीं। वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है।

अनेक दृष्टान्त इसके समर्थन मे दिए जा सकते हैं। ऊर्वशी ने वीर अर्जुन के तेजोमय सौन्दर्य से आकर्षित होकर संतति की याचना की। छत्रपति शिवाजी पर एक यौवन बाला आसक्त हो गई परन्तु उन महान् आत्माओं ने उनमे मातृत्व का दर्शन किया और अपने को पुत्र रूप मे प्रस्तुत किया। महाराणा प्रताप ने अब्दुर्रहीम खानखाना की पत्नी को बहिन के रूप मे देखकर अपने सैनिकों की ओर से क्षमा याचना की। स्वामी विवेकानन्द जब प्रचार कर रहे थे तो पादरियों ने एक युवती को उनकी गोदी मे षड्यन्त्रपूर्वक बिठला कर उन्हे कलंकित करने के लिए उस बाला द्वारा चुम्बन करते हुए फोटो खींचे परन्तु उनके मुख से स्त्री के स्नेह रूप का विवरण सुनकर लज्जित हो गये। काशी के पण्डों ने एक वेश्या को देव दयानन्द को कलंकित करने के उद्देश्य से उनके पास एकान्त मे भेजा परन्तु ब्रह्मचर्य के दिव्य तेज ने उसके मातृत्व को जाग्रत कर दिया और सारा षड्यन्त्र विफल हो गया।

उपरोक्त मन्त्र में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि काम विजेता ही समस्त दिशाओं मे जगमगाता है क्योंकि अमरत्व उसे ही प्राप्त होता है।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्य स्वरामरत् ॥
–अ० ११-५-१९

(ब्रह्मचर्येण तपसा) ब्रह्मचर्य के तप से ही (देवा मृत्यु उपाघ्नत) मृत्यु का नाश करते हैं अर्थात् अमरत्व को प्राप्त करते हैं (इन्द्रः ब्रह्मचर्येण देवेभ्य स्व आमरत्) आत्मा ब्रह्मचर्य के माध्यम से ही देवत्व के लिए तेजोमय आनन्द को पूर्णतय प्राप्त करता है।

वेद ने आचार्य और राजा के लिए ब्रह्मचारी होने पर बल देते हुए कहा है– आचार्यो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी प्रजापति।
प्रजापतिर्विराजति विराडिन्द्रोऽभवद्वशी।-अथर्व० ११-५-१६
ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ॥ -अथर्व० ११ ५-१७

इन दोनों मन्त्रो का संक्षिप्त आशय यही है आचार्य और राजा दोनों ब्रह्मचारी हो। राजा ब्रह्मचर्य रूपी तप से राष्ट्र की विशेष रक्षा करता है और आचार्य ब्रह्मचर्य के माध्यम से जनता को सदाचारी बनाते हैं।

आज सम्पूर्ण विश्व मे मानव की चरित्र भ्रष्टता ही उसे विनाश की ओर अग्रसर कर रही है। राष्ट्रो का नेतृत्व और जननिर्माण का उत्तरदायित्व जिन पर है वे ब्रह्मचर्यच्युत होने से मानवो का सुनिर्माण और रक्षण नहीं कर पा रहे हैं। जब तक आर्यावर्त मे वेदानुकूल इस सत्याचरण को अपनाया जाना रहा, आर्यों ने सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्यो की स्थापना की परन्तु जब उन्हे व्यसनो और विलासों ने ब्रह्मचर्य हीन कर दिया तो वे अपने साथ सबको ले डूबे। महर्षि दयानन्द ने आर्य जाति मे पुन वेदानुकूल जीवन धारण करने की जो प्रेरणा दी उसका एकमेव उद्देश्य था कि– (पुनर्नो नष्टमाजतु। अ० ७ ९-४)

कि हमारा नष्ट वैभव, स्वर्ण अतीत पुन लौट आए।

अतएव जिन्हें ऊंचा उठना हो, आगे बढ़ना हो और अपने जीवित होने का प्रत्यक्ष प्रमाण देना हो, उन्हे महर्षि दयानन्द के इन अमृत वचनो को उपरोक्त मन्त्र के सन्दर्भ मे सदैव स्मरण रखना चाहिए–

"देखो, जिस शरीर मे सुरक्षित वीर्य रहता है तब उसको आरोग्य बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। इसके रक्षण की यही रीति है कि है कि विषयों की कथा, विषयी लोगो का सङ्ग, विषयो का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, संभाषण और स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक रहकर उत्तम शिक्षा और विद्या को प्राप्त होवें। जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता, वह महाकुलक्षणी दुर्बल निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह, साहस, धैर्य, बल पराक्रमादि गुणो से रहित होकर नष्ट हो जाता है।

महात्मा हंसराज दिवस–

दिनांक २० अप्रैल १९८६ को महात्मा हंसराज दिवस है। हंसराज जी ने आर्यसमाज के लिए विशेषरूप से आर्यसमाज को शिक्षा क्षेत्र मे अग्रसर करने के लिए अपूर्व बलिदान किया था। लाहौर मे स्थापित डी० ए० वी० कालेज के वे प्राण थे और आज सारे भारतवर्ष मे फैली हुई डी० ए० वी० शृङ्खलायें लाला हंसराज के कल्पना के सौरभमय सुमन है। आर्यसमाज का इतिहास लाला हंसराज के बिना सूना है।

'आर्यमित्र' उनके पुनीत दिवस पर सादर श्रद्धाजलि अर्पित करता है।

कुम्भ में सफल सेवा प्रचार कार्य–

हर्ष है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने बारहवें वर्ष लगने वाले हरिद्वार के ऐतिहासिक कुम्भ मेले के अवसर पर बड़ी ही सराहनीय समाज सेवा का उदाहरण प्रस्तुत किया। उच्चकोटि के विद्वानो के आध्यात्मिक एव सामयिक सुधार के भाषण हुए और समाज सेवा के क्षेत्र मे हमारे शिविर ने असहायो की सेवा एवं चिकित्सा की। इस पुनीत कार्य के करने मे जिन महानुभावों के उदार सहयोग से यह पुनीत कार्य सफल हुआ उन्हे हार्दिक बधाई। -आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

ऋषि दयानन्द की हिन्दी सेवा

(श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्त रिटायर्ड प्रिंसिपल)

ऋषि दयानन्द का आविर्भाव और हिन्दी की स्थिति–

ऋषि दयानन्द चन्द्रमा की उस कला के समान थे जिसके अभ्युदय मात्र से ही गगन मण्डल का कण कण आलोकित और अलंकृत हो जाता है। उस समय देश की स्थिति अत्यन्त करुणा जनक और विडम्बनापूर्ण थी। फिरंगी सब ओर से इस प्रकार लूटने घसोटने मे व्यस्त थे मानो उनको इसके सिवाय कुछ काम न ही हो। राष्ट्र को खोखला बनाने के लिये फिरंगियों ने भारतीय इतिहास और साहित्य पर जो धूल डाली वह कहने की बात नहीं। उसके रूप को ही व्यतिक्रम किया गया। राष्ट्रोत्थान के स्थान पर राष्ट्र पतन के लिये उनके कार्य गुप्त रूप से एक गति लेकर चलते रहे और वे अपने षडयन्त्र मे अन्त तक सफल भी होते रहे। हों भी क्यो नहीं हम ही अपनी आंख फोड़ने मे उनकी सहायता करें तो इसका व्युत्क्रम क्या हो सकता है।

हमारे वास्तव में राष्ट्र पुरुष स्वर्गीय श्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने अक्षरशः ठीक कहा है 'इस देश मे जितनी भी विपत्तियां आयीं वे बाहर के लोगों से कम और हमारे देश वासियों से ही अधिक आई।'

ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। उन्होंने अपने विकसित जीवन मे देश की बिगड़ती हुई दशा का गम्भीर अध्ययन किया। १० वर्ष की अवस्था से ही संन्यास ग्रहण किया। विवाह के मङ्गलाचार उसको रुचते नहीं थे। वह था भारत मा का अनन्य पुजारी, भारतीय संस्कृति का अखण्ड उन्नायक, स्वतन्त्रता देवी का कर्मठ आराधक उसकी प्रबल इच्छा थी कि देश के घर घर में मङ्गलाचार हों। मानसिक खोखलापन और शारीरिक कंगाल देखकर उसका हृदय और मस्तिष्क क्रमशः फूट फूट कर रोने लगे और अप्रतिहत गति से विचार करने मे सलग्न हुआ। ऐसा प्रतीत होता था मानो अपने देश का निरालापन कोई अप्रत्यक्ष रूप मे घसीट रहा हो और उसके स्थान पर दे रहा हो अपनी संस्कृति की छाप।

साहित्य लुटा, इतिहास पिटा, सस्कृति ठण्डी पडी और वन्देमातरम कहने वालो के मुंह पर ताले लगाये गये। उस समय राष्ट्र को एक ऐसे साधक की आवश्यकता थी जो सभी दिशाओ मे जागरूक होकर कर्मठता धारण कर राष्ट्र व्यापी सुधार करे। राष्ट्र की मांग पूरी हुई। उसे मूलशङ्कर बाद मे दयानन्द और ऋषि दयानन्द कहलाने वाला योगी प्राप्त हुआ।

इस लेख मे ऋषि दयानन्द की हिन्दी सेवा पर ही विचार करेंगे।

सन् १८६३ के पूर्व स्वामी जी सर्वव संस्कृत में लिखा करते थे। परन्तु अब उन्होने यह प्रतीत किया कि संस्कृत समझने वाले भारतियो की संख्या कम है तब से हिन्दी में लिखना प्रारम्भ कर दिया।

श्री स्वामी जी ने सबसे पहले सन् १८६६ में 'संध्या' और पाखण्ड खण्डन' नाम की दो पुस्तकें आगरा मे लिखीं सन्ध्या नामक पुस्तक की एक सज्जन रूपलाल जी ने डेढ़ सहस्त्र रुपया व्यय करके तीस सहस्त्र प्रतियां छपवाई और मुफ्त बांटी गई।

सन् १८७० में श्री स्वामी जी ने 'अद्वैत मत खण्डन' नामक पुस्तक काशी में प्रकाशित कराई। इस पुस्तक से मायावाद के मानने वालों में बड़ी हलचल पैदा हो गई।

सन् १८७२ में श्री स्वामी जी ने वेद विरुद्ध मत खण्डन पुस्तक काशी से प्रकाशित कराई। इस पुस्तक में बल्लभादि मत की पोल खुल गई। इस पुस्तक से पर्याप्त भ्रम निवारण हुआ।

जब महर्षि दयानन्द ने इन पुस्तकों की रचना की थी उस समय हिन्दी गद्य की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं थी। यह काल यदि गद्य साहित्य का श्री गणेश काल कहा जावे तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

सम्वत् १९३२ में स्वामी जी का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ की रचना स्वामी जी ने हिन्दी मे ही की। इस ग्रन्थ को ईसाई, मुसलमान, जैन, बौद्ध आदि सभी मतावलम्बियों ने पढ़ने का कष्ट किया और इसका अध्ययन उन लोगों को अनिवार्य हो गया चूंकि पहले यह ग्रन्थ हिन्दी मे ही था इसलिए पंजाबी, बंगाली मराठी आदि लोगों ने इसके अध्ययन हेतु हिन्दी का ज्ञान किया। सत्यार्थ प्रकाश को रचकर महर्षि ने हिन्दी की अद्वितीय सेवा की।

सम्वत् १९३२ मे महर्षिने ७६ पृष्ठों की एक पुस्तक 'आर्याभिविनय की रचना की और और उसी वर्ष २५६ पृष्ठों की पुस्तक 'सस्कारविधि की रचना प्रारम्भ की थी। उक्त दोनों पुस्तकें हिन्दी व संस्कृत में हैं। संस्कार विधि की भूमिका से स्पष्ट है कि श्री स्वामी जी ने शनिवार ३० कृष्ण कार्तिक वत् संवत् १९३२ वि० अर्थात् ३० अक्टूबर सन् १८७५ ई० को प्रारम्भ किया था। इस पुस्तक का सशोधित संस्करण सम्वत् १९४१ वि० मे प्रयाग में प्रकाशित हुआ।

महर्षि जी ने 'पञ्च महायज्ञ विधि' की रचना सम्वत् १९१५ वि० मे की। इस पुस्तक मे ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ तथा नृयज्ञ का विधान सस्कृत मन्त्रो व भाषा का किया गया है।

सवत् १९३६ मे वेदांग प्रकाश की रचना की। इसमे महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी के कुछ मुख्य सूत्रों की रचना बहुत ही सावधानी के साथ की गई। इस अपूर्व ग्रन्थ की तैयारी में पण्डितों ने भी यथाकदा सहयोग दिया है इसके अधिकांश भागों मे संस्कृत व हिन्दी दोनों हैं। महर्षि जी की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। उनका यह विश्वास था कि भारतीत सन्तान की सर्वांग उन्नति तभी संभव हो सकती है जब उसको प्रारंभ से वैदिक ढांचे में ढाला जावे। इसलिए उन्होंने प्रारंभिक पुस्तक वर्णोच्चारण शिक्षा व संस्कृत वाक्य प्रबोध की रचना सम्वत् १९३६ मे की। हमारा व्यवहार धर्मयुक्त क्यों होना चाहिए इसका बोध हिन्दी में रचित पुस्तक 'व्यवहार भानु' सेभली प्रकार हो जाता है। इसमे कई दृष्टांत बड़े मनोरञ्जक हैं। इसके अलावा सन्धि विषय नामिक, कारकीय, सामासिक, स्त्रैणताद्धित, अव्यार्थ, आख्यातिक, सौवर पारिभाषिक, धातुपाठ, गणपाठ, उणादि कोष, निघण्टु आदि पुस्तकों की रचना हिन्दी में की।

महर्षि को अपने जीवन काल में अनेकों शास्त्रार्थ भी करने पड़े थे। उन शास्त्रार्थों के बारे में जनता भी अन्धकार में न रहे इसलिये उन्होंने

(शेष पृष्ठ ११ पर)

शहीद शिरोमणि वीर भक्तसिंह

जिनका बलिदान दिनाक २३ मार्च १९३१ था

(श्री प० इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश)

समय समय पर भारत माता एसे सपूतो को जन्म देती रही हैं जिन्होने वीरता, शौर्य और बलिदान मे कीतिमान स्थापित किये है। जब भारत माता परतन्त्रता की बेडियो मे जकडी हुई थीं। उनकी बेडिया तोड़ने का प्रयत्न हो रहा था। महर्षि स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्वतन्त्रता और सुधारो की लहर बराबर बाल, युवा और वृद्धो के हृदयो को छू रही थीं। अंग्रेजो को भारत से निकालने का उपक्रम हो रहा था। तब सरदार अर्जुनसिंह जी आर्यसमाज की उस क्रातिकारी विचार धारा से प्रभावित हो गये। सत्यार्थ प्रकाश ने उनको बदल डाला। समय समय पर वे पाखण्ड और झूठ का प्रतिरोध करते रहे। वे वैदिक धर्म के इतने दीवाने हो गये थे कि अपने ग्राम से ६० मील दूर जब आप एक विवाहोत्सव मे सम्मिलित हुए तो विवाह सस्कार करवाने वाले आचार्य जी ने बिना प्रसग के ही सत्यार्थ प्रकाश की कटु आलोचना प्रारम्भ की। भला अर्जुनसिंह जी को यह कब सह्य था। उन्होने आचार्य जी को चुनौती दी कि जो आप कह रहे है, वह सत्यार्थ प्रकाश मे नहीं है। जब सत्यार्थ प्रकाश ढूंढा गया तो उस ग्राम मे सत्यार्थ प्रकाश नही मिला। सरदार अर्जुन सिंह उस चहल-पहल और भोजन को छोड़कर चल दिये और अपने ग्राम से सत्यार्थ प्रकाश लाकर उन आचार्य जी को सबके सामने झूठा सिद्ध कर दिया और आचार्य जी ने सबके सामने क्षमा माग ली। ऐसे वैदिक धर्म के निष्ठावान सरदार अर्जुनसिंह जी की तीन सन्तानें हुईं (१) श्री किशनसिंह' (२) श्री अजीतसिंह जी तथा श्री स्वर्णसिंह जी। पिता की भांति ये तीनो पुत्र भी क्रातिकारी थे। देश को स्वतन्त्र करवाने के लिये जेल यातनायें सहते रहे और विदेश मे जाकर भी प्रयत्नशील रहे। इन्हीं मे मे सरदार किशनसिंह जी के घर एक सिंह बालक ने जन्म लिया। सवत १९६१में लायलपुर जिले का बागवन ग्राम धन्य हुआ। जिसदिन इस बालक का जन्म हुआ उसी दिन इसके पिता चाचा दोनो मण्डले जेल से मुक्त होकर आये। इसलिये बालक को 'भाग्यवाला' कह कर पुकारा जाने लगा और बाद मे वह भाग्यवाला ही भगतसिंह नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सरदार भक्तसिंह शिशु अवस्था से ही बहुत सुबुद्ध और मेधावी था अपनी धार्मिक माता और दादी की गोद मे पले सरदार भक्तसिंह पर अमिट धार्मिक सस्कार एव क्रातिकारी विचार धारा के संस्कार पड़े। ५ वर्ष की अवस्था मे बालक को पढ़ने भेजा गया और आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् प० लोक नाथ जी विद्यावाचस्पति ने बालक का यज्ञोपवीत संस्कार करवाया। वह बालक किशोरा अवस्था मे ही क्रातिकारी विचारो से इतना ओतप्रोत हो गया था कि लाहौर मे एक दिन जब पिता के अनन्य मित्र लाला आनन्द किशोर जी ने उस किशोर बालक को कन्धेपर उठा कर प्यार से थप-थपाते हुये पूंछा—तुम क्या करते हो। बालक ने कहा 'मैं खेती करता हूं।" लाला जी ने फिर पूछा—"तुम बेचते क्या हो? बालक ने उत्तर दिया "मै बन्दूक बेचता हूं।"

इस प्रकार की क्रान्तिकारी विचारो से युक्त वह बालक पढने लगा और बढ़ने लगा। १९२२ मे बी० ए० की परीक्षा पास किया उसी समय उसका परिचय सुखदेव और अन्यान्य क्रातिकारियों से हुआ। घर वाले उसको विवाह के बन्धन से बान्धना चाहते थे। बालक घर से भाग खड़ा हुआ। वास्तव मे वह तो मुक्त आत्मा थी भारत माता को मुक्त करवाने आई थी भला स्वयमेव बन्धन मे कैसे पड सकती थी। सरदार भक्तसिंह को हिन्दी से बहुत प्रेम था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता मे प्रथम पुरस्कार मे ५०) रुपया पारितोषिक प्राप्त कर हिन्दी साहित्य के प्रति अपनी आस्था को प्रकट किया। गंगा और यमुना मे बाढ़ आने पर उन्होंने बटुकेश्वर दत्त के नेतृत्व मे अद्भुत सेवा का कार्य कर कानपुर निवासियो पर अपनी अमिट छाप छोडी। माता की बीमारी का समाचार सुनते ही माता के दर्शनो के लिये गये। लायलपुर मे एक ओजस्वी भाषण दिया जिसमे एक अग्रेज को मारने वाले वीर बहादुर गोपीनाथ की प्रशसा की। उसी पर पुलिस ने अभियोग चला दिया। एक क्रातिकारी जीवन का प्रारम्भ हो गया।

"अकाली" नाम के पत्र का सम्पादन, एव १९०० मे पिता जी के आदेश से शुद्ध दूध अहुचाने का व्यापारिक सस्थान भी खोला। परन्तु ऐसी महान आत्माओ को छोटे-छोटे काम कहा रोक सकते है। साईमन कमीशन लाहौर मे आया। जनता ने लाला लाजपत राय जी के नेतृत्व मे उसका उग्रविरोध किया। अग्रेजो ने लाठी चार्ज किया और विशेष रूप से लाला जी पर लाठिया बरसाई। रात्रि को बहुत बडी सभा मे लाला जी आहत अवस्थामे ही ओजस्वी शब्दो मे बोले "मेरे पर बरसाई एक-एक लाठी अग्रेज के कफन की एक एक कील सिद्ध होगी।" कुछ दिन के पश्चात् लाला जी शहीद हो गये और युवक क्रांतिकारियो ने खून के बदले खून का निर्णय लिया।

१७ दिसम्बर को जब वह अग्रेज अधिकारी साडस जिसने लाला जी पर लाठियाँ चलवाई थीं, अपनी मोटर साईकिल पर जैसे ही निकला वैसे ही एक गोली उसके सीने मे लगी वह मोटर साईकिल से नीचे गिरा। तत्काल दो गोलिया और लगीं और साण्डर्स ठण्डा हो गया। गोली चलाने वाले वीरो के नाम थे सरदार भक्त सिंह, श्री राजगुरु और चन्द्रशेखर आजाद। साण्डर्स की हत्याके पश्चात् ये तीनो वीर डी० ए० वी० कालेज के भोजनालय मे आये और वहां कुछ देर ठहर कर वहाँ से चले गये। दूसरे दिन लाहौर की दीवारो पर इश्तहर चिपके हुये पाये गये जिनमे लिखा हुआ था 'साण्डर्स मारा गया। लाला जी की मृत्यु का बदला ले लिया।" इस हत्या कांड से अग्रेज अधिकारियों मे हलचल मच गई और इन तीनो वीर बहादुरो की खोज होने लगी। रास्ते रोक दिये गये। परन्तु इन्हे कौन रोकने वाला था? लाहौर के बड़े स्टेशन पर एक नौजवान सरकारी अधिकारी एक युवती के साथ दिखलाई दिया। उसके साथ टिफन कैरियर लिये हुये एक खान सामा भी था। थोडी देर मे ट्रेन आई और वे तीनो फर्स्ट क्लास के डिब्बे मे बैठ गये और गाडी दिल्ली को चल दी। दिल्ली पहुचने पर भी खुफिया पुलिस यह न जान सकी कि वह अफसर सरदार भक्तसिंह था, देवी क्रांतिकारी श्री सुशीला देवी थी और खान सामा राजगुरु था। इन लोगों ने अपनी क्रातिकारी गति बिधियो को जारी रखा। इसी मध्य मे वे पर्याप्त समय कलकत्ते की आर्य समाज कार्नवालिस स्ट्रीट का अपना केन्द्र बनाए रखा। बडा नियमित धार्मिक जीवन था सरदार भक्त सिंह जी का वे नित्य प्रति सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करते थे जब

(शेष पृष्ठ ६ पर)

शहीद शिरोमणि वीर भक्तसिंह

(शेष पृष्ठ ६ से आगे)

वहां से चलने लगे तो अपनी थाली कटोरी सेवक तुलसराम को देकर उसे यह कह कर आये कि भविष्य मे यदि कोई देश भक्त आ जावे तो इसी थाली कटोरी मे भोजन करवा देना।

उस समय केन्द्रीय विधान सभामे "ट्रेड डिस्ट्रीब्यूट्" का बिल पास हो रहा था। वीर भक्तसिंह और बटुकेश्वर दत्त किसी प्रकारसे ऐसेम्बलीके महिलाओं की गैलरी मे पहुच गए। जैसे ही बिल के पास होने की घोषणा हुई, इन दोनो युवकों ने तुरन्त ही दो बम फेंके। एसेम्बली मे हलचल मच मच गई। उन दोनों नवयुवकों ने पर्चे बांटे। धुआं साफ हुआ। दोनों युवकों को पुलिस पकड़ना चाहती थी परन्तु रिवालवर देख कर निकट नहीं आई। दोनों युवक आसानी से भाग सकते थे परन्तु वे मुस्कराते हुए खड़े रहे। अपनी पिस्तोलें फेंक दीं। पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इन्कलाब-जिन्दाबाद के नारों से एसेम्बली हाल को गुंजाते हुए जेल पहुच गये। मुकदमा चला और साण्डर्स की हत्या का भी मुकदमा चला। १२ जून १९२९ को सेशन मे जाकर समाप्त हुआ। इसके पश्चात् वह मुकदमा तीन जजो के ट्रिब्यूनल के पास आया और ७ अक्टूबर १९३० को वीर भक्तसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी का आदेश हुआ। प्रीवी कोसिल मे अपील की गई और वह भी रद्द हो गई। इनको छुड़ाने के सब प्रयत्न असफल हो गये। आखिर २३ मार्च १९३१ की साय काल तीनों बलिदानी वीर हसते-हंसते फांसी के तख्तो पर झूल गये। देश पर बलिदान हो गये। और उन क्रूर शासको ने उनके शव भी सम्बन्धियों को नहीं दिये। मिट्टी का तेल डाल कर जला दिये गये। तीनो हंसते-हसते कुर्बान हो गये। भारत माता की परतन्त्रता की बेडी को हिला कर चले गये। भारत को स्वतन्त्र कराने का उनका प्रेरणा दायक बलिदान सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

पंजाब के वीर अमर बलिदानी सरदार भक्तसिंह का पजाब आज जल रहा है। ऐ पंजाबियो! ऐ उग्रवादियो! जरा सोचो कि उन तीनो वीरो ने जो बलिदान दिया था वह इसलिये था कि निर्दोष व्यक्तियों की हत्याए की जायें। परस्पर अपनी सम्पत्ति को आग लगाई जाय। भाई-भाई का रक्त बहाये।

आज इस रक्तपात के अन्धेरे मे तीन अमर बलिदानियों का बलिदान आशा की किरण है। भगवान् ही बुद्धि पवित्र कर सकते हैं। ऐ पागल लोगो? अपने ही भाईयों के खून से होली मत खेलो अन्यथा यह आग तुम को खा जायेगी और भारत माता की दशा हीन और दीन हो जाएगी। सकल्प लो कि उग्रवाद, आतकवाद को समाप्त करके ही इन अमर वीरों का तपण करेंगे।

ऋषिवर दयानन्द का ऋणी हू

मैगासर पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध समाज सेवक बाबा आम्टे ने जयपुरके एक स्वागत गोष्ठी मे कहा कि "समाज सेवा और सार्वभौमिक मानव के प्रति प्रेम की भावना मुझे स्वामी दयानन्द की पुस्तको के अध्ययन से मिली।" वास्तव में जो कुछ हू वह ऋषिवर की ही प्रेरणा एव शिक्षा से हू।

संवाददाता

आचरण समीक्षा

पं० राम प्रकाश जी एम० ए० एल० एल० बी० (पेशकार, चीफ जुडीशियल मजिस्ट्रेट, मैनपुरी) ने न्यायालय-मुन्सिफी, मैनपुरी मे विचाराधीन वाद स० ७५४ वर्ष १९८५ श्री सत्यवीर आदि बनाम श्री इन्द्रराज आदि में, दि० १७-३-८६ को एक शपथ पत्र प्रस्तुत किया है जिसमें कु० ध्रुवपाल सिंह जी 'अटल' निरीक्षक, सभा के आचरण की समीक्षा निम्न प्रकार से की गई है —

"२४-यह कि कु० ध्रुवपालसिंह, आर्य समाज मैनपुरी के निष्ठावान समासद तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के अश कालीन अवैतनिक निरीक्षक हैं। इनका जन्म एक प्रतिष्ठित जमींदार एवं निष्ठावान आर्य परिवार मे हुआ था। उनके पास भारी पैतृक सम्पत्ति है। वह एक प्रतिष्ठित सरकारी अधिकारी भी है और चार अको मे अच्छा वेतन भी पाते हैं। उन्हें आय समाज से कभी निकाला नहीं गया है। उन्होंने वर्तमान वाद मे कुछ भी मिथ्याचरण नहीं किया है।"

रघुनन्दनसिंह, शास्त्री, मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल सिरसागंज (मैनपुरी)।

गुरुकुल करतारपुर मे प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालधर (गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) में नये छात्रा का प्रवेश एक अप्रैल १९८६ से आरम्भ हो गया है। सरकारी स्कूलों मे पढ़ाये जानेवाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, समाज शास्त्र आदि सभी विषयो के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

नि:शुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की मात्र ३०/रु० (तीस रुपये) मासिक पर समुचित व्यवस्था, शुद्ध घृत व दूध की उपलब्धि के लिये गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषतायें हैं।

प्रवेश के लिये छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पांच पास होना जरूरी है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिले अथवा पत्राचार करें।

नरेश कुमार शास्त्री आचार्य

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय

करतारपुर (जिला जालन्धर)

आर्यसमाज औरैय्या का ७५ वां उत्सव



आर्यसमाज औरैय्या का भवन तथा यज्ञशाला

इस आर्यसमाज की स्थापना ८० वर्ष पूव हुई थी। भवन के साथ बहुत बडा परिसर एवं वाटिका है।

आगामी वर्ष समाज की हीरक जयन्ती मनायी जायगी।

卐



आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ का समाज के उद्यान मे लिया गया चित्र

बायें से-सर्वश्री सञ्जीव कुमार, हरगोविन्द जी, लक्ष्मणानन्द पुरोहित, रामनाथ प्रधान आर्यसमाज, आचार्य रमेशचन्द्र सम्पादक 'आर्यमित्र', लक्ष्मणदास, प्रमोद कुमार, अरुण कुमार, प्रेमशंकर, वीरेन्द्र कुमार-पुस्तकालयाध्यक्ष, शिवशंकर लाल, वेद प्रकाश मन्त्री, गुरुप्रसाद।

卐

इटावा जनपद के प्रसिद्ध व्यापारिक उपनगर औरैय्या का पचहत्तर वां वार्षिकोत्सव २९ मार्च से १ अप्रैल ८६ के मध्य विशेष उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ जिस से इस क्षेत्र के सहस्रों नर-नारियो मे वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ। २९ मार्च को विशेष शोभा यात्रा नगर के मध्य से निकली जिसे क्षेत्र मे ऐतिहासिक कहा गया और आर्य समाज का व्यापक प्रचार हुआ।

भूतपूर्व सांसद स्वामी रामेश्वरानन्द जी आर्यमित्र सम्पादक आचार्य रमेशचन्द्र जी, प्रो० उत्तम चन्द्र शरर, ब्रह्मचारी आर्य नरेश, पं० सत्यमित्र शास्त्री, श्री धर्मेन्द्र जी तथा श्री बलवीरसिंह शास्त्री के ओजस्वी भाषणों से जनता लाभान्वित हुई। भजनोपदेशक श्री महीपालसिंह तथा कुशाराम आर्य के प्रभावी भजन हुए।

इस अवसर पर वैदिक धर्म दीक्षित डा० आनन्द सुमन जी ने मतीही - पैगम्बरी सम्प्रदायों के मिथ्यावाद को उजागर करते हुए वैदिक धर्म की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला। महिला सम्मेलन तथा आर्य सम्मेलन के कार्यक्रम भी सफल रहे।



उदारमना श्री शिवशंकरलालजी

उत्सव के अवसर पर आपने आर्यसमाज औरैय्या को १००१) रुपिया दान दिया। आगन्तुकों का अतिथि सत्कार किया। मन्त्री जी को आश्वस्त करते रहे कि जहां कार्य रुके हमे स्मरण करो। आपने उद्यान मे सुगम जल प्रवाह के लिये एक मोटर सेट भी लगवाने का वचन दिया है।

श्री शिवशंकर लाल जी कुशल व्यवसायी हैं। थोक के अढ़तिया और पिट्ठी के होलसेल डीलर है।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य वीर दल का भी गठन किया गया। जिसके विकास की आशा है और समाज सेवा का मार्ग प्रशस्त होगा युवकों मे उत्साह है तदर्थ श्री वीरेन्द्रकुमार को श्रेय है। डा० सर्वेश जी संयोजक तथा प्रशिक्षक मंगला प्रसाद जी आर्य हैं।

एक सहस्र का दान

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा इटावा की एक बैठक ३० मार्च को आर्यसमाज औरैय्या मे हुई जिसमे कुम्भ के अवसर पर सेवा शिविर की सहायता हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को जनपद की समस्त आर्य समाजों द्वारा एक सहस्र रुपिये का दान दिया गया। यह धनराशि सभा द्वारा नियुक्त क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री शिवपाल जी 'अटल' के माध्यम से सभा मन्त्री को प्रेषित की गयी।

उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता



श्री वेदप्रकाश आर्य
मन्त्री—आर्यसमाज औरैय्या

卐

औरैय्या नगर की आर्यसमाज सुरम्य है उत्सव के अवसर पर आकर्षण का केन्द्र रही एवं युवक मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य तथा उनके सहयोगियों की आर्यसमाज के प्रति निष्ठा एवं लगनशीलता सराहनीय है। आगामी वर्ष आर्य समाज की हीरक जयन्ती मनाने का आयोजन है। सम्वाददाता

निजाम रियासत मे आर्यसमाज सत्याग्रह (१६३६) के बारे में सूचना

नई दिल्ली ४ मार्च । भारत सरकार के गृह मन्त्रालय द्वारा १९३८-३९ मे आर्यसमाज द्वारा निजाम रियासत मे चलाये गये सत्याग्रह आदोलन को स्वाधीनता संग्राम मानने के बाद इस सभा मे सैकडो पत्र इस सम्बन्ध मे आये हैं, परन्तु उनमे गिरफ्तार होने की तिथि, स्थान, सजा की अवधि और रिहाई की तारीखें, जिन जेलो मे रहना हुआ उनकी तारीखे और अवधि आदि का न तो कोई उल्लेख रहता है, न उसकी सम्पुष्टि मे जेल के अधिकारियों का प्रमाण-पत्र लगा होता है। वस्तुत इतने दिनों के बाद आवेदक को इन सब विवरणो का पता ना रहना स्वाभाविक है।

मैने इस सम्बन्ध मे २६फरवरी को जो निदेशक स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना, गृह मन्त्रालय भारत सरकार निदेशक से बातचीत की थी, उससे मुझे प्रतीत हुआ कि जिन मामलो मे ये सारे विवरण निदेशक के पास पहुचे हैं, उनके लिए पेंशन की नियमानुसार स्वीकृति हो चुकी है। पूर्व प्रकाशित नियमो के अनुसार ५-६ महीने तक कारावास मे रहने वालो को केन्द्रीय सरकार भी और एक दो मास से अधिक सजा वालो को राज्य सरकारें नियत पेंशन देती हैं। पूर्व निजाम रियासत के अब आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र मे विभक्त हो जाने के कारण जेल रिकार्डों के द्वारा प्रमाणित होना और भी कठिन हो गया है। वे रिकार्ड उर्दू मे होने के कारण और फसली कलेण्डर के कारण पेचीदगी और बढ़ी हुई है। फिर भी सारे प्रयत्न किये जाने आवश्यक हैं कि जिस से जेल निवास की सम्पुष्टि हो सके। क्योंकि सभा या उन सत्याग्रहियो को भविष्य मे कभी इस प्रकार के सम्मान की आशा या सम्भावना नहीं थी, अत सार्वदेशिक सभा द्वारा जारी किये गये प्रशस्ति पत्रो पर कोई क्रम सख्या नहीं पाई जाती है, और न उसका रिकार्ड सभा मे या अधिकाश आवेदको के पास है।

हैदराबाद के केन्द्रीय कारागार से जेल निवास के आवेदनों पर जो अपेक्षित सूचनाएं मागी गई है, उनकी जानकारी इस प्रकार है—

(१) प्रार्थी और उसके पिता का वास्तविक नाम (२) जेल मे भरती होने अथवा दूसरे जेल से तबादले होने की सम्भावित तिथि की सूचना (३) उक्त जेल मे आवेदक सजायाफ्ता अथवा मुकदमे के दौरान अथवा नजरबन्द किस रूप मे रहा है ? (४) जेल द्वारा जारी किये गये प्रमाण-पत्र की यदि कोई कापी हो, तो वह भेजें (५) दो रुपये के कोर्ट फीस स्टाम्प पेपर पर दो प्रतियो मे नया आवेदन पत्र जेल को भेजा जाये, और (६) जेल सार्टिफिकेट की दूसरी प्रति पाने के लिये किसी एडवोकेट के द्वारा प्रमाणित शपथ पत्र भेजा जाये।

सम्भवत इसी प्रकार के आवेदन अन्य जेलों मे भी भेजने आवश्यक होगे। उपरोक्त आदेश मे यह स्पष्ट नहीं है कि यदि इस प्रकार के आवेदन सम्बन्धित तीनो राज्यों के जेल के महानिदेशको को भेजा जाये तो क्या उस पर कार्यवाही होगी। मित्रों की सुविधा के लिए उपरोक्त सूचना दे दी है। योजना के प्रारम्भ १९७२ मे जब मै सरकारी सेवा मे था तब से इस प्रश्न को मैने उठाया। उस काल मे मुझे चारो जेलो के अपने प्रमाण पत्र भी मिल गये थे, परन्तु तब तक उपरोक्त सत्याग्रह की स्वीकृत नहीं हुई थी। अन्तत निराश होकर १९८२ मे फौजी से आने के बाद सारे प्रमाण पत्र फाडकर फेंक दिये।

ब्रह्मदत्त स्नातक
अवै० प्रेस एव जनसम्पर्क सलाहकार

आवश्यक सूचना

समस्त आर्यसमाजो तथा आर्य बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि श्री तेजपालसिंह जी भजनोपदेशक सभा के पास १३१ नं० की ५० पेज की रसीद थी, जो यात्रा करते समय, १९ मार्च ८६ को एक ट्रक मे छूट गई है, अत उक्त रसीद को निरस्त किया जाता है, उसका उपयोग करने वाला व्यक्ति दण्ड का दोषी होगा, अत जिस सज्जन को मिले, आर्य प्रतिनिधि स० कार्यालय-५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ मे जमा कर दें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश
५ मीराई मार्ग, लखनऊ

उच्च न्यायालय द्वारा सभा आदेश की मान्यता

आर्यसमाज जाजूमई, जिला मैनपुरी द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के स्वामित्व मे, सचालित—दयानन्द इण्टर कालेज जाजूमई की पूर्व प्रबन्ध समिति को उसकी घोर अव्यवस्था आदि के कारण, माननीय प्रधान जी, सभा (पं० इन्द्रराज जी) ने अपने आदेश दि० ९-७-८५ द्वारा भग करके, उसके स्थान पर एक तदर्थ समिति नियुक्त कर दी थी ' भंग-प्रबन्ध समिति के प्रबन्धक - रमेशचन्द्र गुप्ता, सभा के उक्त आदेश के विरुद्ध मान० उच्च न्यायालय से स्थगन आदेश दि० १६-७-८५ ले आये। मान० उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति बी० एन० खरे ने उक्त स्थगन आदेश से सबन्धित याचिका स० ९६४० वष १९८५ को दोनो पक्षो की उपस्थिति मे सुनकर, उक्त स्थगन आदेश को दि० ५-३-८६ मे निरस्त कर दिया है। इस प्रकार अब उक्त कालेज पर जिला विद्यालय निरीक्षक मैनपुरी तथा उक्त कालेज के प्रधानाचार्य आदि के सहयोग से सभा द्वारा नियुक्त तदर्थ समिति का दि० ११-३-८६ स प्रभावी नियन्त्रण हो चुका है। उल्लेखनीय है कि—पूर्व प्रबन्धक श्री गुप्ता पर उक्त कालेज के लाखो रुपये की संपत्ति के गबन तथा उक्त कालेज को उक्त सभा के स्वामित्व से वचित कर निजी संपत्ति बनाने आदि के अनेक आरोप हैं। —कुं० ध्रुवपालसिंह, निरीक्षक सभा

आर्य सम्मेलन

विगत २८ फरवरी १९८६ को गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद के प्रांगण मे एक भव्य आर्य सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मन्त्री श्री पं० मनमोहन जी तिवारी तथा सभा कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण बलदेव जी महाना एवं आर्यजगत के अनेको विद्वान्, वक्ता सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन मे आर्यजगत से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं पर विचार हुआ तथा निश्चय किया गया कि राष्ट्र का सुधार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही सम्भव है इस अवसर पर गुरुकुल के छात्रो के विभिन्न सांस्कृतिक कायक्रम सम्पन्न हुए। सभा मन्त्री श्री तिवारी जी ने एक हजार रुपया तथा कोषाध्यक्ष श्री महाना जी ने पांच सौ रुपया गुरुकुल को दान स्वरूप प्रदान किया। गुरुकुल के कुलपति श्री आचार्य विश्वमित्र मेधावी जी ने उक्त आर्य नेताओ के प्रति आभार प्रकट किया। सम्मेलन प्रभावशाली एव पूर्णतया सफल रहा।

—सवाददाता

—महर्षि दयानन्दबाद गुरुकुल कृष्णपुर, पो० मझना जनपद-फर्रुखाबाद का वार्षिक महोत्सव १५, १६, १७ मार्च ८६ को सोल्लास सम्पन्न हुआ। जिसमे आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान्, महोपदेशकों ने सभा को सबोधित किया। —हरिशंकर आर्य उपाचार्य

उठो हिन्दूओ, सोना छोड़ो

उठो हिन्दुओ, सोना छोडो, घर में कांटे बोना छोडो ।
तुमने युग-युग कष्ट उठाये, सबने तुम पर तीर चलाये ।
प्रलय-निशा की बेला काटी, पाने को अपनी ही माटी ।
देखीं वे फांसी की घड़ियां, डडाबेडी औ हथकड़ियां ।
जीवन दे ईमान बचाया, देश-धर्म-सम्मान बचाया ।
पाई मुश्किल से आजादी, वह भी भू खण्डित कर आधी ।
जो कुछ अपने पास बचा है, उसमें भी संग्राम मचा है ।
सबकी अपनी-अपनी मंजिल, राष्ट्र टूटता जाता तिल-तिल ।
जिनकी गङ्गा और कहीं है, भारत उनका देश नहीं है ।
पर न तुम्हारा और ठिकाना, आवश्यक यों इसे बचाना ।
अत हिन्दुओ, सोना छोड़ो, घर तक सीमित होना छोडो ।
बाहर आ मन से मन जोड़ो, एक लक्ष्य रख बढ़ो करोडो ।
शक्ति-पुंज शत कोटि भुजाधर, सत्यमेव तुम रुद्र भयकर ।
महाकाल-मुख बल से फेरो, अरि को वीर, सबंत घेरो ।
लेगा प्रभु अवतार भला क्यों ! करे ईश नर-जनि विफला क्यों! !
मनोवृत्ति यह त्यागो भाई-"वही हरेगा जग-अघमाई ।"
लाञ्छित पौरुष करो न अपना, मत झूठा देखो यह सपना ।
अतुल आत्म-बल मधुसूदन है, करता कल्मष-कंस कदन है ।
अपने पर विश्वास करो हे ! मत नरता-उपहास करो हे !
कृष्ण तुम्हीं मे राम तुम्हीं मे, पवन पुत्र बलधाम तुम्हीं मे ।
आये गुजर सिरों से पानी, तब उठना लगभग बेमानी ।
समझो गैरों की मक्कारी, जान गये वे नब्ज तुम्हारी ।
कुछ दिन चलता शोर तुम्हारा, जल्दी ढलता जोर तुम्हारा ।
फिर सो जाते चादर ताने, बिखरे से बेसुध अनजाने ।
आज तुम्हारा स्वत्व दांव पर, बैठे ज्यों जल-प्रलय-नाव पर ।
तले चीन के अपनी धरती, सिवा तुम्हारे किसे अखरती ।
जब-जब नश्तर पाक चुभाता, तुम से अन्य कौन दुख पाता ।
देख देश यह टूट रहा है, कौन गरल-सा घूट रहा है ।
संविधान-निन्दक षड्यन्त्री, हन्त ! बने बैठे हैं मन्त्री ।
जिनको इससे पीड़ा होती, जिनको इसमे क्रीड़ा होती,
वे ही राष्ट्र, और वे तुम हो, तुम स्वतन्त्रता-कच-कुंकुम हो ।
अपना आहृत सीना देखो युग-युग आसू पीना देखो ।
समझो क्या कर्तव्य तुम्हारा, होता जाता दूर किनारा ।
हरने को तत्पर खुशहाली, भीतर ही नादिर अब्दाली ।
देखो र त अपनी सीमायें, आगे-पाछे दायें-बायें ।
सामाजिक सद्भाव जगाओ, अलग-थलग जो उन्हे मिलाओ ।
हो समष्टि के एक देश भी, निहित एक में एक शेष भी ।
अत सदम निज साफ करो हे ! फिर दुनियां की बात करो हे ।
खिडकी डालो द्वारे खोलो, मन के बन्धन सारे खोलो ।
समता की नव शस्य उगाओ, जन जन मे ममता उपजाओ ।
बन्धुभाव की लक्ष्मण रेखा, रख सकती है तुममे एका ।
तब स्वर्णिम लंका का स्वामी, लौटेगा लेकर नाकामी ।
सुरभि मन्त्र..य यज्ञ-हवन की, धो देगी कुण्ठायें मन की ।
वैदिक ज्योति जगाओ घर-घर, धर्म-तत्व समझाओ घर-घर ।
वेद-शास्त्र पहुचाओ घर-घर, प्रेम भाव से जाओ घर-घर ।
कौन पोप फिर पांव धरेगा, अरबी डालर स्वय डरेगा ।
करे बुभुक्षा भुजा मरोड़ो, उठो हिन्दुओ सोना छोड़ो ।
-धर्मवीर शास्त्री एम०ए० साहित्याचार्य पश्चिम विहार नई दिल्ली-६३

साहित्य-समीक्षण

स्वर्ण जयन्ती स्मारिका-

(आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी)

वाराणसी मण्डल की आर्यसमाजों मे लल्लापुरा आर्यसमाज का विशेष महत्व है और वैदिक ज्ञान प्रसार मे उसका अभूतपूर्व योगदान है तथा स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर उपयुक्त स्मारिका का प्रकाशन किया गया है—जिसमे उत्साही आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ के चित्र हैं। कतिपय दुर्लभ चित्र भी हैं। लेख भी उपयोगी एवं विद्वत्तापूर्ण हैं तथा ज्ञानवर्धक है। आर्यजगत के श्रेष्ठतम विद्वानों के लेख संग्रहीत है। प्रो० ज्वलन्त कुमार शास्त्री का कुशल सपादन स्मारिका का गौरव वृद्धि करती है।

प्रवचन सुधा-

लेखक पं० सतोष कुमार जी वेदालङ्कार द्वारा—प्रकाशिका—श्रीमती सावित्री देवी अरोडा ९९ ए० एस ब्लाक-न्यू अलीपुर रोड कलकत्ता-५३

मूल्य—तीन रुपिया।

पुस्तक के लेखक श्री सन्तोषकुमार जी वेदालङ्कार—योग्य एव अध्ययनशील व्यक्ति हैं तथा चिन्तन एवं मनन के बाद पुस्तक की रचना की है। इसमे सामयिक विषयों पर लघु परन्तु सारगर्भित प्रवचन है जो वैदिक मन्त्रों-सद्वचनों एवं सूक्तियों से परिपूर्ण है कतिपय विषय इस प्रकार हैं—धर्म ग्रन्थ किसे मानें, प्रभु आह्वान, दुष्प्रवृत्तियो का परित्याग—नारी नीचे देखो—ऊपर नहीं, ज्ञानी बनो। जीवन मे समरसता आदि। इस प्रकार बहुत से विषय हैं जो आर्यसमाज के सत्सगों मे पढ़ने योग्य हैं—उपदेशको भजनीकों के लिये प्रचुर ज्ञानपूर्ण सामग्री है।

प्रकाशन—आकर्षक है सुन्दर है आशा है आर्यजनो मे समाहृत होगी।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सपादक

तपोवन में वृहद् यज्ञ २१ अप्रैल से

देहरादून, २२ मार्च। वैदि साधन आश्रम, तपोवन मे वृहद् यज्ञ एव साधना शिविर २१ अप्रैल से २७ अप्रैल तक चलेगा। यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ होंगे। अन्य विद्वानो के अतिरिक्त पं० शिवाकन्त जी उपाध्याय (नई दिल्ली) के प्रवचन सप्ताह भर चलेंगे।

उल्लेखनीय है कि तपोवन के अप्रैल तथा अक्टूबर मे प्रति वर्ष होने वाले वृहद् यज्ञो के अवसरो पर दूरस्थ स्थानों से भी नर-नारी बडी संख्या में आते हैं। —देवदत्त बाली मन्त्री

वैदिक साधन-आश्रम तपोवन

—आर्यसमाज संरपुर मिर्जापुर का प्रथम वार्षिकोत्सव समारोह दि० १७-१८ मार्च १९८६ को हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया, जिसमे आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक सम्मिलित हुए। -मन्त्री

—वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद का २९वां वार्षिक यज्ञ महोत्सव दि० ८ से १३ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

—प० प्रेमानन्द सरस्वती

—आर्य समाज जमानिया गाजीपुर का ५३ वां वार्षिक महोत्सव दिनांक १३ से १६ मार्च ८६ तक चार दिनों मे बडे समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। —मन्त्री

आर्य प्रादेशिक सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन दि. १ जून १९८६

प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की समस्त आर्यसमाजों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन रविवार दिनांक १-६ १९८६ को प्रातः ११ बजे से १-३० बजे तक एव २-३० बजे से ५ बजे तक आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में सम्पन्न होगा। प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की समस्त आर्यसमाजो से प्रार्थना है कि वे वर्ष १९८५-८६ का दशांश एवं समाज के प्रतिनिधियो के नाम कार्यालय को शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। उपसभाओं के प्रधान एव मन्त्रियो से निवेदन है कि उपसभा का वार्षिक आय-व्यय विवरण रिपोट कार्यालय को यथाशीघ्र भेजें।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

नव सस्येष्टि (होलिकोत्सव) समारोह सम्पन्न

महिला आर्यसमाज सदर एव विश्व मानव परिषद् लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान मे होलिकोत्सव समारोह फाल्गुन शुक्ल १५ संवत २०४२ तदनुसार २६ मार्च ८६ को साय ४-३० बजे सार्वजनिक रूप से आर्यसमाज चौराहा सदर मे सोल्लास पूर्वक आयोजित किया गया। उत्सव का शुभारम्भ पं० मेधावी शास्त्री के पौरोहित्य मे विशेष नव सस्येष्टि यज्ञ से हुआ, जिसमे सदर के सैकडो स्त्री पुरुषों ने श्रद्धापूर्वक आहुतिया दीं। सुमधुर भजन तथा होली एवं इसका राष्ट्रीय स्वरूप विषय पर प० पवनकुमार शास्त्री का उनकी ओजस्वी वाणी मे सारगर्भित भाषण हुआ। —जयदेव शर्मा

१—आर्यसमाज मीरजापुर के मन्त्री श्री लालजी गुप्त के भतीजे चि० सतीशचन्द्र गुप्त की शादी कोरांव इलाहाबाद निवासी विन्ध्येश्वरी प्रसाद गुप्त की सौ० कन्या कु० उमा के साथ दिनाक ११ मार्च को वैदिक रीति से पं०जैराम जोशी ने सम्पन्न कराया।

२—चि० सत्येन्द्रकुमार के नवजात शिशु का नामकरण दिनाक २० मार्च को वैदिक रीति से कराकर शुभ नाम 'आदर्श' रक्खा गया।—मन्त्री

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा वेद मन्दिर वृन्दावन मार्ग, मथुरा के तत्वावधान मे कुम्भ मेला वृन्दावन के अवसर पर दिनांक १० मार्च से १६ मार्च ८६ तक वेद प्रचार शिविर का आयोजन हुआ जिसमे वैदिक योग साधना, गायत्री महायज्ञ, पावमानी वेदकथा, वैदिक सत्यनारायण कथा, आर्यवीर व्यायाम प्रदर्शन विविध महत्वपूर्ण सगोष्ठियों तथा वेदोपदेश भजन प्रवचन आदि कार्यक्रम सपन्न हुए।

—डा० द्वारिका प्रसाद आर्य मन्त्री

—दिनांक २३ मार्च ८६ को आर्यसमाज मण्डी बांस मुरादाबाद मे शहीद दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम मे मुख्य वक्ता के रूप मे बोलते हुये श्री सतीशचन्द्र गुप्त एडवोकेट ने भारत मां के महान् सपूत भगतसिंह, राजगुरु एवम् सुखदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की।

—अम्बरीश कुमार मन्त्री

—आर्यसमाज पिलखुवा (गाजियाबाद) का ११वा वार्षिकोत्सव दिनांक ६ मार्च से ९ मार्च ८६ तक बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमे आर्यजगत के मूर्धन्य सन्यासी, विद्वत्मण्डल व भजनोपदेशको ने भाग लिया श्री महेन्द्रपाल जी आर्य (भू० पू० इमाम) बगाल प्रतिनिधि सभा के भाषण अत्यन्त प्रभावशाली रहे।

—मन्त्री आर्यसमाज

पंजाब में हिन्दुओ का जानमाल असुरक्षित राज्य सरकार सर्वथा असमर्थ केन्द्र से सुरक्षा की मॉग

नई दिल्ली २२ मार्च—आज यहाँ प्रादेशिक सभा की बैठक में पंजाब की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए केन्द्रीय सरकार से मांग की गई कि इस समय आतङ्कवादियो के कारण पजाब के हिन्दुओं का जान-माल सर्वथा असुरक्षित हो गया है। राज्य सरकार सर्वथा निकम्मी सिद्ध हो चुकी है। इसलिये केन्द्र सरकार हिन्दुओ की सुरक्षा की जिम्मेवारी सँभाले।

डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्र गुप्त रोड पर हुई इस सभा मे पजाब के विभिन्न स्थानों से आर्य शिक्षण सस्थाओं के प्रतिनिधि भारी सख्या मे उपस्थित थे।

सभा मे पारित एक प्रस्ताव मे कहा गया है कि आतकवादियों ने बेगुनाह लोगों की हत्या, आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाओं और हिन्दुओं के धार्मिक स्थानों पर जबर्दस्ती कब्जा करने का सिलसिला शुरू किया है, उसके कारण हिन्दू अपने—आपको असुरक्षित समझने लगे हैं। जालन्धर, बटाला, कपूरथला और नकोदर मे जो कुछ हुआ उससे पजाब की पुलिस का निकम्मापन भी स्पष्ट हो चुका है। यदि केन्द्र सरकार ने समय रहते कदम नहीं उठाया तो हालत काबू से बाहर हो सकती है।

आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से तार द्वारा प्रस्ताव की प्रति प्रधान मन्त्री, गृहमन्त्री, आन्तरिक सुरक्षा मन्त्री और पजाब के राज्यपाल एव मुख्य मन्त्री को भेजी गई है। हरियाणा की आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से भी इसी प्रकार के तार सब सम्बद्ध अधिकारियों को भेजकर अविलम्ब कार्रवाई की मांग की गई है।

—रामनाथ सहगल मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

ऋषिबोध के पावन पर्व पर विशाल शोभायात्रा सम्पन्न

लखनऊ ८ मार्च। 'महाशिवरात्रि' पर्व के पावन अवसर पर जिला आर्यप्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का १४९ वाँ बोध दिवस महान हर्ष एव उल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर एक विशाल एवं भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ जिसमे जनपद के समस्त आर्यजनों के अतिरिक्त हजारो की संख्या में नगर के युवक,बाल,वृद्ध आदि सम्मिलित हुए तथा नगर के सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं, अध्यापक-अध्यापिकाओं ने भी भाग लिया। शोभायात्रा श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोतीनगर से प्रारम्भ होकर नगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई प्रभावी भजनो एव महर्षि दयानन्द की जय तथा आर्य समाज अमर रहे के गगनभेदी नारो से वातावरण को गुञ्जरित करती हुई नगर आर्य समाज रकाबगंज लखनऊ के प्रांगण मे पहुचकर एक विशाल सभा मे परिवर्तित हो गई। मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित श्री प्रो० वासुदेव सिंह मू० पू० मन्त्री उ० प्र० शासन ने महर्षि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए महर्षि के सिद्धांतों के व्यापक प्रचार एवं प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। प्रमुख विद्वजनों मे सुप्रसिद्ध आर्य वैदिक प्रवक्ता श्री डा० आनन्द सुमन आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण बलदेव महाना, जिलासभा लखनऊ के प्रधान श्री अर्जुनदेव महाना 'नवभारत टाइम्स लखनऊ के प्रधान सम्पादक श्री रामपाल सिंह आदि ने अलग अलग विषयों पर अपना वक्तव्य दिया तथा उपस्थित जन समूह को सम्बोधित किया। शोभायात्रा की सफलता मे शोभायात्रा के संयोजक युवक एवं साहसी कार्यकर्ता श्री रेवतीरमण जी एडवोकेट का विशेष योगदान रहा। —सम्वाददाता

जात-पात एवं दहेज उन्मूलन सम्मेलन सम्पन्न

आर्य परिवार संघ कोटा के तत्वावधान मे आर्यसमाज श्योपुर कलां के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दि० २ मार्च ८६ को आर्य समाज श्योपुर कला मे जात-पांत एवं दहेज उन्मूलन सम्मेलन का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के मंत्री श्री यशपाल जी आर्य एवं श्री रामकृष्ण आर्य एम० ए० मंत्री अखिल भारतीय आर्य परिवार संघ कोटा के संयोजन मे किया गया।

इस सम्मेलन मे आर्य समाज के स्वरूप विषय पर श्री मुनि आत्म देव जी (उज्जैन) हिन्दू जाति की धार्मिक बुराई मूर्ति पूजा पर माननीय श्री सच्चिदानन्दजी शास्त्री उपमन्त्री सार्वदेशिकसभा का दहेज विषय पर ओजस्वी प्रवचन हुआ। — संवाददाता

—आर्य कुमार सभा गोण्डा द्वारा दिनांक २६ मार्च स्थानीय 'गांधी उद्यान' में 'होली मिलन' कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें आर्यसमाज गोण्डा के पुरोहित प०अच्युतानन्द त्रिपाठी एव श्री बद्रीप्रसाद आर्य द्वारा हवन के पश्चात् होली मिलन कार्यक्रम शुरू हुआ। यजमान श्री हनुमान प्रसाद तिवारी ग्राम प्रधान के साथ ही साथ जिले के सभी प्रशासनिक अधिकारियों ने भाग लिया।

—सत्य प्रकाश श्रीवास्तव एडवोकेट मन्त्री

यायावर

(डा० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी,
प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज बरेली)

देखो यायावर यह कैसा।
नहीं जिसे गन्तव्य पता है,
फिर भी चलता जाता,
आकुल व्याकुल और बोझिल बन,
अपने को झुठलाता।
सब कुछ लेने की इच्छायें
खोटा जिस पर पैसा।

सचित जो पाथेय साथ में,
उन्मादित है करता।
धूमिल दृष्टि और तन्द्रिल तन,
यह प्रलाप कर हंसता।
घूम रहा है एक परिधि मे,
बन प्रमत्त के जैसा।

इंगित पर है ध्यान न देता,
यह विक्षिप्त बना है।
शुकवत् बोझिल हुआ ज्ञान से,
उर मे तिमिर घना है।
मानव होकर भी अविचरित,
कौन धरा पर ऐसा।

शिवरात्रि—

(सभी के कल्याण के लिए शुभरात्रि है)

अल्मोड़ा। आर्यसमाज मन्दिर ताड़ीखेत मे शिवरात्रि यज्ञ १९८६ के शिव गुरु अवसर पर स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती को शिवरात्रि को ज्ञानबोध प्राप्त हुआ था तथा ससार के कल्याण हेतु १८७५ ई० मे सर्व प्रथम बम्बई में आर्य समाज की संस्थापना की थी। -मंत्री

(पृष्ठ ८ का शेष)

काशी शास्त्रार्थ सवत् १९२६, प्रतिमा पूजन विचार १९३०, सत्यधर्म विचार सत्यार्थ विवेक सवत् १९३७ में प्रकाशित कराये।

श्री स्वामी जी के समस्त ग्रथो के बाबत यदि मोटा सा भी हिसाब किया जाय तो उनकी लिखी हुई सारी सामग्री बड़े आकार मे लगभग १५ हजार पृष्ठों मे ठहरती है।

महर्षि जी ने अपने दृष्टिकोण से लगभग ७१ ग्रथो की रचना की, स्वामी जी अपने समय के एक ही प्रतिभाशाली सुधारक व लेखक हुए हैं उन्होंने हिन्दी साहित्य को वैदिक साहित्य से भरपूर कर दिया है जिसके लिए हिन्दी व हिन्दी भाषी उनके चिरस्मरणी हैं और रहेंगे।

महर्षि ने देश सेवा, जाति सेवा, धर्म सेवा, के साथ ही साथ हिन्दी सेवा भी अक्षुण्य की जो कभी भी भुलाई नहीं जा सकती।

—अल्मोड़ा। आर्यसमाज मन्दिर ताड़ीखेत मे २ मार्च १९८६ को घनश्याम जी पाण्डे का विवाह मीरा जी के साथ प० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने गुण कर्म स्वभाव के अनुसार वर्णव्यवस्था पर प्रकाश डाला। मंत्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
मा० चैत्र ३०
चैत्र शुक्ल ११, रविवार
२० अप्रैल १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

१२९४६—श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

ज्योति चक्षुः आर्याय
ओ३म्
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

१८८६-१९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ

विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों पर विचार

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १ फोन ४५९९३

योगी

१२ ... कारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं० ११४१/५७ घोषणा पत्र सं० ७ / २८-२-८२

वर्ष ८९] भा० वैशाख ७, वैशाख कृष्ण ३, रविवार संवत् २०४३ वि०, दि० २७ अप्रैल १९८६ [अङ्क १७

प्रार्थना

ओं उदु त्य जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ यजु० ३३-३१

भावार्थ—विश्व के दिखाने के लिए किरणें उस जातमात्र में विद्यमान दिव्य सूर्य को चमकाती हैं।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

सम्पादक—

आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु

कुम्भ पर्व की समाप्ति तथा विनाश ताण्डव

बहुचर्चित द्वादश वर्षीय हरिद्वार का कुम्भ पर्व आयोजित हुआ। लाखों की भीड़ हुई और उसकी समाप्ति पर एक ऐसा काण्ड हुआ जिससे सारे देश में शोक की लहर फैल गई। जो यात्री उल्लास और सुख के स्वप्नों में खोये हुए गये थे वे शोक के आँसू बहाते हुए लौटे। दिनांक १४ अप्रैल १९८६ महा पर्व के स्नान के प्रमुख वेला पर प्रातः ६ बजे के लगभग पुलिस की यातायात व्यवस्था की शिथिलता एवं कर्तव्य विहीनता के कारण एक स्थल पर पीछे से आने वाली तथा आगे से लौटने वाली तीर्थ यात्रियों की भीड़ का ऐसा जमघट हुआ कि कमजोर पुल की बल्ली टूटी तथा कितने ही व्यक्ति जीवित काल कवलित हुये और बड़ी संख्या में हताहत तथा जख्मी हुये। सरकारी आंकड़े तो मृत्यु के केवल अड़तालिस हैं परन्तु प्रत्यक्षदर्शी भुक्तभोगी तथा पत्र संवाददाताओं के अनुसार संख्या बहुत अधिक है। खेद है कि पुलिस प्रशासन कर्तव्य विमुख रहा यह उत्तरप्रदेश के मुख्य मन्त्री तक ने स्वीकार किया। साथ ही कई घण्टों तक चोट खाये व्यक्ति कराहते रहे और उन्हें चिकित्सालय तक पहुंचाने में बहुत विलम्ब किया गया। इतना ही नहीं उत्तर प्रदेश जल निगम के एक अभियन्ता श्री गुप्त जो चोट खाये हुए थे उनका कहना है कि पुलिस हमारी सहायता करने के बजाय वह हमारी घड़ी और पर्स निकाल रही थी। उत्तरप्रदेश की पुलिस का इससे ज्यादा मानवता से गिरा हुआ और दूसरा रूप क्या हो सकता है। सारे उत्तरदायी पत्रकारों ने इस घटना की निन्दा की। शब्द नहीं हैं जिनसे इस कुव्यवस्था की निन्दा की जाय। सरकार सुव्यवस्था का ढका पीटती रही और उसके पुलिस कर्मी वहां अपना अमानवीय रूप दिखाते रहे। ऐसी स्थिति में तो यही उचित है कि परिताप और खेद के रूप में उत्तर प्रदेश के श्रेष्ठतम पुलिस अधिकारी को और पुलिस मन्त्री को त्यागपत्र दे देना चाहिये।

सामाजिक सेवा सङ्गठनों ने इस विनाशलीला के समय सजगता से कार्य किया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सेवा शिविर ने भी अपने सीमित साधनों से भरपूर मानव सेवा में सहयोग किया। सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने कड़े शब्दों में पुलिस व्यवस्था की निन्दा की और इस कांड के लिए उसे दोषी ठहराया। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यदि ऋषिवर की पाखण्ड खण्डिनी पताका का सन्देश जनता ने सुना होता तो कम से कम उसे अन्धविश्वास से छुटकारा मिलता और सम्भव है अनियन्त्रित मेले की भीड़ें अन्धविश्वास छूट जाने से कुछ नियन्त्रित हो जाती। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी, मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी आदि ने इस दुर्घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया है तथा आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के समस्त कर्मचारियों ने, 'आर्यमित्र' और उसके सम्पादकीय विभाग ने कुम्भ मेले में हुई दुर्घटना के लिये शोक प्रकट करते हुये दिवंगत आत्माओं के शांति और दुःखी स्वजनों के लिए धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आर्य मित्र

ओ३म्



सम्पादकीय

लखनऊ-रविवार २७ अप्रैल १९८६, दयानन्दाब्द १६२

सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

समय की पुकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने युग मे समय की पुकार को सुना और तदनुकूल परम दृढ़ता और शक्ति के साथ उस समय जो सामाजिक परिवर्तन देश के लिये अपेक्षित थे उनका प्रचार प्रसार किया। वैदिक ज्ञान और वैदिक जीवन दर्शन को ओजस्विता के साथ ससारके सामने पुनंजाग्रित करने का प्रयास किया। महर्षि मे अदम्य शक्ति थी उन्होंने बहती हुई बयार तथा तीव्रगति से बहते हुये जलधारकी दिशायें मोड दी। भारत वैदिक ज्ञान गरिमा से प्रभावित हो उठा और उस प्रभाव की आलोकमयी किरणें द्वीप द्विपान्तर तक फैलने लगी। स्वयं आर्यसमाज के संगठन को उन्होंने जन्म दिया और उनके जीवन का जो स्वप्न था उसे क्रियान्वित करने का भार भी आर्य समाज संगठन का दायित्व एव परम कर्तव्य है।

महर्षि दयानन्द के निधन के पश्चात दो पीढ़ियों तक आर्यसमाज के संगठन का कार्य तीव्रता और दक्षता के साथ होता रहा। जन पदों मे, ग्रामों मे आर्य समाजें स्थापित होने लगीं साथ ही गुरुकुल शिक्षा और विश्वविद्यालयं शिक्षा दोनों आर्य समाज के प्रचार तथा प्रसार का माध्यम बनी जिसका परिणाम है कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की संस्था हुई। डी० ए० वी० कालेज लाहौर से प्रारम्भ हुए और प्राय उत्तर भारत के सभी प्रमुख नगरों में डी० ए० वी० स्कूल एव कालेज स्थापित हो गये तथा कानपुर का डी० ए० वी० कालेज एक ऐसी वृहत संस्था बनी जिसकी छात्र संख्या सात हजार तक पहुच गई। इसके अतिरिक्त कितने ही आर्य समाजो के विशाल भवन हैं अनाथालय, वनिताआश्रम, वानप्रस्थ आश्रम एव आर्य समाज के बहुत से सेवा संस्थान महर्षि के स्वपनो को साकार करने मे संलग्न रहे अर्थात महर्षि के निधन के साठ वर्षों तक आर्य समाज का भारतमें प्रबल आन्दोलन रहा और भारतीय स्वाधीनता संग्राममे आर्य समाज की प्रबल भूमिका रही।

विगत चार दशाब्दियो मे खेद के साथ लिखना पड रहा है कि आर्य समाज की गति विधिया शिथिल हो गई, समाज सेवा की भावना मन्द पड गई और ऋषिवर दयानन्द के दर्शाये हुए स्वर्णिम पथ से आर्यजन विचलित होकर धूमिल पदगामी होने लगे। इस स्थितिमे जो सेवा की आत्मज्योति थी वह आर्यजनों में मन्द पड गई तथा समय के प्रभाव से पदों पर आसीन रहने का मोह सत्ता पर एक बार आकर जन्म जन्मान्तर तक उससे चिपके रहने का व्यामोह और आर्य समाज की, आर्य स गठन की, गुरुकुल एव कालेजो की जो चल एव अचल सम्पत्तियां है के प्रति लालसा भरी दृष्टि से आर्यजन देखने लगे और पदों से कर्तव्य च्युत होने लगे। अर्थात आर्य समाजका प्रचार मूल प्रचार, ईश्वर के शिक्षाओका प्रचार, आर्य साहित्य का वितरण एव समाज के दु खी, निर्बल, विकल एव दीन, निरीह जनों की सेवा के व्रत को आर्यजन निबाहने मे अधिक सक्षम न होकर समाज के भवनों को लेकर आपस मे कलह मे लग गये और यहा तक कि आज प्राय साठ प्रतिशत आर्यजन आर्य सिद्धातों के प्रति कम निष्ठावान होकर अभियोग और कुचक्र के प्रति सजग हो रहे हैं।

खेद है कि उपरोक्त पंक्तियां हमें कुछ कठोर शब्दो में लिखनी पडी हैं कारण जब कभी बाहर आर्य समाजों की गतिविधियो को जानने के लिये दौरे पर जाना पडता है तो वहां मन्त्री महोदयों तथा आर्य जनों के पास मुकदमें की फाइलें अधिक दिखाई पडती हैं लेकिन सारे प्रदेश में मुझे ऐसे किसी अधिकारियो का दल नहीं मिला जो इसलिये विवाद ग्रस्त हो कि आर्य समाज के ट्रैक्ट एव साहित्य पांच हजार के नहीं दस हजार के वितरित किये जांय। आज आर्य समाज के जलसों में जनता कम आती है जनता से हमारी सीधी पकड़ छूट रही है। अत एक पत्रकार के नाते हमारा दायित्व है कि हम आर्यसमाज के श्रेष्ठतम कर्णधारों से लेकर ग्रामीण स्तरके जनसेवी तक से साग्रह अनुरोध करें कि वे समय की पुकार को सुनें, अपने निजी स्वार्थ को सत्ता से चिपकने के मोह को, पद पर आसीन रहने की भ्रामक अभिलाषा को सबसे पहले यज्ञ की अग्नि की लपटों में समिधा के स्थान पर इन्हीं भावनाओ को समर्पित कर दें। देश आर्य समाज का नेतृत्व चाहता है। राज्य-सत्ता भारतीय संस्कृति को दुबला करने में लगी है अत आर्यजन समय की पुकार को सुनें, उठें, जागें और ऋषिवर की वाणी को नया रूप दें उनके स्वप्नों को साकार करें।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

श्रीमती लक्ष्मीदेवी श्रीवास्तव का निधन समाज की अपूरणीय क्षति

आर्य बन्धुओं को यह जानकर दु ख होगा कि आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के मन्त्री श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव की धर्म पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी का ४१ वर्ष की अल्पायु मे हृदयगति रुक जाने से विगत ७ मार्च १९८६ को प्रात १०-४० पर निधन हो गया।

रविवार ६ मार्च को प्रात १० बजे सेक्टर—४ से आपकी अन्त्य यात्रा मोक्ष धाम गई जहा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री मदनमोहन शास्त्री अजमेर के आचार्यत्व मे अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न हुआ।

मगलवार ११ मार्च को श्री रमेशचन्द्र जी के गृह पर शांति यज्ञ का आयोजन किया गया था जिसमे बहुत बडी संख्या मे परिचित तथा अपरिचित महानुभाव एव देवियां पधारी थीं। यज्ञ के उपरांत आयोजित शोक सभा मे मध्य प्रदेश जनपद की प्राय सभी समाजों ने अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमेश्वर से दिवगता के प्रति चिर शांति तथा श्री रमेशचन्द्र जी एवं उनके परिवार के प्रति इस महान् दु ख के सहन एव धैर्य हेतु प्रार्थना की।

विश्वम्भर प्रसाद शर्मा

'धर्म निरपेक्ष' भारत गणराज्य और कश्मीर

(श्री त्रिलोकी नाथ भट्ट उपाध्यक्ष काश्मीरी समाज आर्यसमाज ताजगंज, आगरा)

श्री सम्पादक जी,

कश्मीर घाटी मे फरवरी मास मे हुये भीषण साम्प्रदायिक दंगों मे वहाँ की निहत्थी अल्पसंख्यक हिन्दू जनता पर ढाये गये अत्याचारो (जैसे लूटमार, आगजनी निजी सम्पत्ति तथा धर्मस्थलो का विध्वंस, महिलाओ के साथ अभद्र व्यवहार आदि) के सम्बन्ध मे जितने भी, सम्पादकीय तथा टिप्पणियाँ आपके सम्मानित पत्र मे गत कई सप्ताह से प्रकाशित होते आये हैं। वे न केवल अत्यन्त महत्वपूर्ण अपितु सामयिक है। इनके लिये कश्मीर की हिन्दू जनता ही नहीं, देश के प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को आपका आभारी होना चाहिये।

वास्तव मे आर्यसमाज ही देश क्या विश्वभर की एकमात्र ऐसी संस्था है। जो सदा मानव कल्याण की ही बात सोच सकती है। इस उपेक्षित हिन्दू समाज के हितो की रक्षा के कार्य मे भी यह अग्रणी है। हमारी शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने सर्वप्रथम उन पीडित कश्मीरी हिन्दुओ, ब्राह्मणो के प्रति सहानुभूति एव समवेदना प्रकट करते हुये उनको भारत सरकार के उच्चाधिकारियो के अतिरिक्त प्रधानमन्त्री तक से मिलवाया। यह क्या कम सेवा है ?

अब पूज्य श्री वानप्रस्थ जी की यह माँग कि पजाब तथा जम्मू कश्मीर राज्यो को पाँच वर्षों के लिए सैनिक शासन के अन्तर्गत लाया जाये। भी एक अत्यन्त ही बुद्धिमत्ता पूर्वक तथा तर्क सङ्गत सुझाव है। प्रत्येक मननशील राष्ट्र भक्त को इसका बलपूर्वक समर्थन करना चाहिये।

कौन नहीं जानता इस सीमावर्ती, संवेदनशील प्रदेश मे भारत सरकार को देश के विभाजन के तुरन्त पश्चात से ही किन किन भयंकर परिस्थितियो से दो चार होना पड़ा है। अब तक समस्यायें ही समस्यायें खड़ी होती आ रही हैं। और चारो ओर से वहाँ का हिन्दू ही पिसा जा रहा है। यह कहना भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि देश के प्रथम प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू के मस्तिष्क से उपजा वह 'धर्म निरपेक्षता का सिद्धान्त (जिसका आविष्कार उन्हे मूलत इस कश्मीर घाटी को ही लक्ष्य बनाकर करना पडा था) यदि इतिहास का एक बड़ा ही उपहास कहीं सिद्ध हुआ तो वह भी इसी कश्मीर घाटी की ही पुण्य भूमि है। आज तक भारत सरकार के कोष से कितने अरब कितने खरब रुपये इस राज्य की सुरक्षा तथा इसके आर्थिक, सांस्कृतिक एव सामाजिक उत्थान के नाम पर व्यय हुए। यदि उसका एक प्रतिशत भी देश के अन्य पिछड़े हुये राज्यो जैसे उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि पर लगाया गया होता तो यहाँ की दरिद्रता की दशा इतनी भयावह नहीं होती। परन्तु इस तथाकथित 'धर्म निरपेक्षता' का सबसे बड़ा शिकार यह कश्मीर का हिन्दू और तत्पश्चात समूचे देश का बहुसंख्यक कहलाने वाला यह हिन्दू समाज ही सदा से बना आ रहा है। हमे विस्तार मे जाने की आवश्यकता ही नहीं। देश का प्रत्येक यथार्थवादी नागरिक वस्तुस्थिति से परिचित है।

सबसे बड़ी दुर्भाग्य की बात यह है कि इस कश्मीर की स्थिति को नष्ट भ्रष्ट करने वाले मुख्यत वहाँ के कतिपय वही नेता अपने आपको सदा ही राष्ट्रवादी (नेशनलिस्ट), समाजवादी (सोसलिस्ट) तथा धर्म निरपेक्षता मे आस्था रखने वाले (सेक्यूलर) अग्रणी घोषित कर बड़े-बड़े राष्ट्रीय नेताओ को भ्रम मे डाले रखा। इनमे सर्वप्रथम लीजिये शेरे कश्मीर, मरहूम शेख मुहम्मद अब्दुल्ला को जिनकी अब भी देश के बड़े 'सेक्यूलर' तथा राष्ट्रीय नेताओ मे ही गणना की जाती है हम उनकी अन्य विशेषताओं का यहा पर विस्तारभय से उल्लेख न करते हुये एक दो बातों पर थोड़ा-सा विचार करेंगे कि अपने सारे राजनीतिक जीवन मे कभी उन्होने एक भी ऐसा उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया कि वे इस भारत देश के वासियों की एक राष्ट्रीयता, एक विचारधारा, या उनकी भावनात्मक एकता के पक्षधर रहे हो। उल्टा जहाँ तक उनकी शक्ति काम करती रही। वे अलगाववादी प्रवृत्तियो का ही परिचय देते रहे। जैसे—

१—एक राष्ट्रीय नेता के रूप मे १९४६ मे उनको सर्वप्रथम भारत की तत्कालीन संविधान सभा (कान्सीट्यूशनल एसेम्बली) का सदस्य बनाया गया। वहाँ पर उन्होने अपने घनिष्ट मित्र तथा प्रशसक श्री नेहरू के हृदय तथा मस्तिष्क पर पूर्ण रूप से प्रभाव डालकर कश्मीर के लिये धारा ३७० जुड़वाई। इसके पश्चात कश्मीर के लिये पृथक संविधान पृथक ध्वज, पृथक रेडियो कश्मीर, एक और प्रधान मन्त्री एक सदरे रियासत' यहा तक कि भारत की सर्वोच्च न्यायालय की परिधि से बाहर एक अलग 'सलतनत' स्थापित कराके ही वहा से उठे। तत्पश्चात् अपनी उसी पृथकतावादी नीतियों का अन्धाधुन्ध पालन करते-करते १९५३ मे अपने उस परम मित्र तथा भारत के तत्कालीन प्रधान मन्त्री के उपकारो तक को भूल कर उनके ही नहीं अपितु देश की अखंडता तक के प्रति भी विद्रोह करने से उन्होने संकोच नहीं किया। उनकी इन देशघातक चालो को भाँपने के पश्चात ही जवाहरलाल नेहरू ने इस ढोंगी तथा अलगाववादी "नेता" का तुरन्त ही पत्ता कटवा दिया था। जिसके फलस्वरूप वे पूरे १८ वर्ष तक माने हुये बागी के रूप मे अपने एक और सहायक अलगाववादी अफजल बेग के साथ कई कारागारो की शोभा बढ़ाते रहे।

इन दोनो राष्ट्रीय नेताओ ने जो भारत विरोधी विचारधारा तथा पृथकतावादिता की भावना को अपने उस कारावास की अवधि मे प्रसारित किया वह किसी से छुपी नहीं। उनके ही कार्यकाल मे वहाँ पर हिन्दुओ के साथ भेदभाव, नौकरियो तथा उच्च शिक्षाओ के प्रवेश मे पक्षपात आदि की संकीर्ण नीतियाँ पनपीं। बडे ही सूक्ष्म रूप से हिन्दुओं का कश्मीर घाटी से पलायन कराने की नीतियाँ तब ही से अपनाई जा रही थीं। शेख साहब तथा उनके परिवार जन अब जनमत मोर्चे के समर्थक बने।

२—२२ वर्ष तक कलाबाजियाँ खाते-खाते जब यह दोनो तथाकथित 'राष्ट्रीय' तथा 'सेक्यूलर' नेता पुन १९७५ मे कश्मीर की राजगद्दी पर आरूढ हुये। तो अपने स्वभाव के वशीभूत होकर दोनो ने अपने पुराने अपमानोका बदला चुकाने के अभिप्राय से रही सही भारतीय संस्कृति का जम्मू कश्मीर राज्य से सफाया करने की ओर बड़ी तनमयता से अपनी शक्ति लगाना आरम्भ किया। दोनों तो सिद्धात से पक्के 'कट्टरपंथी' थे ही अब उन्होंने धीरे-धीरे कश्मीर को भारत के तिरंगे झण्डे तले ही एक सुन्दर से 'मिनी पाकिस्तान का' रूप दिया।

(क्रमश.)

जम्मू-काश्मीरमें साम्प्रदायिक दंगों के बाद उत्पन्न हुई स्थिति पर—

श्री रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की जांच रिपोर्ट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, अपने अन्य सहयोगियों के साथ ३१ मार्च से २ अप्रैल १९८६ तक काश्मीर घाटी की यात्रा पर गये थे। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य वहां हाल ही मे हुए साम्प्रदायिक दंगों के पश्चात् की स्थिति का स्वयं मौके पर पहुच कर अध्ययन करना था। उन्होंने काश्मीर घाटी के दक्षिण भाग मे स्थित उन सभी गावो का निरीक्षण किया जो इन दगो से प्रभावित हुये थे और वहां के निवासियो से व्यक्तिगत रूप से बातचीत की। २० फरवरी १९८६ को दिन के १२ बजे गाजीगुंड से बारामुल्ला तक के लगभग १२० किलोमीटर में फैले हुये भूभाग मे स्थित गांवों पर एक साथ हमले हुये। इससे यह स्पष्ट मालूम होता है कि यह हमले पूर्व सुनियोजित योजना के अनुसार किये गये थे और इस षड्यंत्र का मुख्य उद्देश्य काश्मीर घाटी के अल्पसख्यक हिन्दुओं की जान, माल और इज्जत को नष्ट करना था। श्री शालवाले अनन्तनाग के रास्ते मे दगा प्रभावित स्थानों पर भी गये। बिजबहेड़ा स्थित शिव-मन्दिर मे शिवलिंग, नन्दी, गणेश तथा अन्य छोटी-छोटी मूर्तियों को बुरी तरह तोड़-फोड कर नष्ट कर दिया गया था। अनन्तनाग ३ मील दूर स्थित वानपोह मे तीन हिन्दू दुकानों को लूटा गया, तीन मन्दिरो को जलाया गया। तेरह मकानो को भी आग लगाई गयी थी, जिससे लाखो रुपयों का नुकसान हुआ। वे वानो लोक भवन और गौतमनाग भी गये। सबसे अधिक नुकसान वानों में हुआ। वहां हिन्दुओ के अधिकाश मकान जलाकर राख कर दिये गये थे और प्राय प्रत्येक मकान को लूटा गया था। लोक भवन मे तीन मन्दिरो और एक धर्मशाला मे आग लगा दी गई और वहा का सारा सामान, बिस्तर, बर्तन आदि लूट लिया गया। गौतमनाग का दृश्य भी बड़ा करुणाजनक था। वहाँ एक नव निर्मित दुमंजिले मंदिर को ध्वस्त कर दिया गया था।

हिन्दुओं को सामूहिक एव व्यक्तिगत रूप से तग करने की शिकायतें भी सुनने को मिली। हर स्थान पर श्री शालवाले के सामने एक ही प्रश्न उठाया गया कि काश्मीर घाटी मे अल्पसंख्यकों का भविष्य क्या है? और उनकी सुरक्षा की क्या गारण्टी है? इन स्थानों पर बच्चो बूढ़ों, महिलाओं और युवको के चेहरो पर घबराहट और भय की छाप स्पष्ट दिखाई देती थी। श्री शालवाले ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा कि वे धैर्य रखें और अपना साहस न छोड़ें। वे राज्य सरकार के तथा केन्द्रीय सरकार के सम्बन्धित अधिकारियो से मिलकर इस मामले पर बातचीत करेंगे और काश्मीर के अल्पसख्यको की समस्या का हल ढूढने का प्रयत्न करेंगे।

श्री शालवाले को यह भी बताया गया कि पाकिस्तान, बगलादेश, बिहार और तिब्बत से आकर बहुत से मुसलमान काश्मीर घाटी मे स्थायी रूप से बस गये हैं और आश्चर्य की बात तो यह है कि उन्हें स्थायी निवास के प्रमाण पत्र भी दे दिये गये हैं। जब कि वहां सदियों से रहने वाले हिन्दुओ, काश्मीरी पडितो को यह प्रमाण पत्र नहीं दिये गये हैं। जिन्होंने यह प्रमाण-पत्र प्राप्त कर भी लिये थे, उन्हें भी अब तरह-तरहसे परेशान किया जा रहा है। बहुत से मुस्लिम संगठन जिनमे जमाते-इस्लामी, जमाइते-तुलबा और अल्लाह ए-वाला प्रमुख है, काश्मीर घाटी मे भारत विरोधी प्रचार मे लगे हुये हैं और खुले आम भारत विरोधी नारे लगाते हुए घूमते हैं।

श्रीनगर से देहली लौटते हुए श्री शालवाले ने जम्मू-काश्मीर के गवनर श्री जगमोहन से करीब आधे घण्टे तक काश्मीर की समस्या के बारे मे बात की। और उन्होंने वहा जो कुछ देखा और सुना उससे उन्हे अवगत कराया। उन्होंने गवर्नर को यह भी बताया जो लोग समाज विरोधी कार्यवाही मे पकड़े गये थे उन्हे भी अदालत ने या तो वैसे ही या जमानत पर छोड़ दिया है। क्योंकि पुलिस ने जानबूझ कर निर्धारित १४ दिन की अवधि मे उनके चालान कोर्ट मे पेश नहीं किये थे। इस तरह जिन्होंने लूटमार, आगजनी और हत्या जैसे अपराध किये थे, वे भी अब खुले आम घूम रहे हैं। फरवरी १९८६ मे हुए दंगो के बाद भी कई स्थानो पर अल्पसख्यको पर हमले किये जा रहे हैं। ऐसी कई घटनायें श्री शालवाले ने गवर्नर श्री जगमोहन को बताई। श्री जगमोहन ने श्री शालवाले को आश्वासन दिया कि जम्मू-काश्मीर मे अल्पसंख्यकों के जानमाल की हर सम्भव रक्षा की जायगी और अपराधियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जायगी। सब स्थिति पर विचार करके श्री शालवाले ने निम्न सुझाव प्रस्तुत किये।

१— काश्मीर की राज्य सरकार और भारत सरकार सारी स्थिति पर गंभीरतापूर्वक विचार करे और भविष्य मे काश्मीर घाटी मे रहने वाले अल्पसंख्यक (हिन्दुओं) की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध करें। समाज विरोधी विघटन कारी तत्वों की गतिविधियो को सख्ती से दबाया जाय।

२- काश्मीर की राज्य-पुलिस बहुसंख्यक सम्प्रदाय की पक्षपाती है। इसकी जांच करके अवांछित तत्वों के विरुद्ध उचित कार्यवाही की जाय।

३- घाटी मे रहने वाले अल्पसंख्यको के जानमाल की पूरी सुरक्षा की गारण्टी दी जाय।

४- जम्मू-काश्मीर तथा पजाब मे हो रही हिंसक घटनाओ को दबाने और समाज विरोधी तत्वो को नष्ट करने के लिये भारतीय संविधान मे उचित संशोधन किए जावे

———

शोक संम्वेदना

श्री देवीदास आर्य, उप प्रधान सभा (आर्य निवास-गोविन्द नगर कानपुर) के सुपुत्र प्रिय विजयकुमार जी के आकस्मिक निधन पर सभा शोक व्यक्त करती है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा समस्त दुखी परिवार को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो लेख पर

मुस्लिम प्रतिक्रिया का उत्तर

— स्वामी वेदमुनि परिव्राजक —
[अध्यक्ष–वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ० प्र०]

[स्वामी वेदमुनि जी का एक लेख प्रकाशित हुआ उस पर बहुत से क्षुब्ध मुस्लिम जनों ने आक्रोश पूर्ण अशिष्ट भाषा मे पत्र लिखे, पत्र नाम रहित थे। श्री वेदमुनि जी ने उन प्रतिक्रियाओं का शिष्ट रूप से उत्तर दिया है।

आर्यसमाज में पहले शास्त्रार्थ हुआ करता था आदरपूर्वक उलमा और पादरी आमन्त्रित होते थे अब यह प्रथा कुछ धीमी पड गई है। वेदमुनि जी उसी प्रथा के उन्नायक हैं।

आर्यसमाज भारत का प्रहरी है। यदि ईसाई और मुस्लिम धर्म प्रचारक भारतीयो को गुमराह करके धार्मिक परिवर्तन कराते है तो आर्य समाज उसका विरोधी है। इन लेखो का प्रकाशन भारतीय जनता को आगाह करना है। —सम्पादक]

मेरा एक लेख "कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो" आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ के चार अङ्कों मे पिछले दिनो प्रकाशित हुआ। इस लेख की प्रतिक्रिया स्वरूप जो पत्र मेरे और सम्पादक महोदय के पास पहुचे हैं, उन सबकी चर्चा करके लेख का कलेवर मैं नहीं बढ़ाना चाहता और प्रशंसा मे आने वाले पत्रों की चर्चा करना तो आत्मश्लाघा ही होगी। विरोध मे आने वाले एक पत्र पर प्रतिक्रिया स्वरूप इन पक्तियो मे उसका उत्तर लिखने लगा हू, जिसकी फोटू प्रति सम्पादक महोदय ने मेरे पास भेजी है।

इस पत्र के लेखक ने अपना नाम पता पत्र पर नहीं दिया किन्तु डाक घर की मुहर से पता चलता है कि पत्र दौराला जनपद मेरठ से भेजा गया है। पूरा पत्र आद्योपान्त गालियो से भरा है। क्योकि यह पत्र कुरान और इस्लाम के पक्ष को पुष्ट करने और हमारी बातों को मिथ्या सिद्ध करने के लिये लिखा गया है अत जो गालियां इस पत्र मे हमारे लिये प्रयुक्त की गई हैं निश्चित रूप से वह कुरानी शिक्षा तथा इस्लामी संस्कृति-सभ्यता का महत्त्वपूर्ण अंग और आइना हैं ऐसा मानने मे हमें कोई आपत्ति नहीं। फिर जब यह गालियां ही कुरानी शिक्षा तथा इस्लामी सस्कृति-सभ्यता की देन तो हमारे जैसे कुरान और इस्लाम विरोधियो के पास सुरक्षित भी नहीं रह सकेंगी अत इस्लाम और कुरान के अलमबरदार इस पत्र के लेखक और उसके उसी जैसे दीनी भाइयों तथा हममजहब लोगों को ही इन्हे हम इन शब्दो के साथ वापस करते हैं कि हम इन्हे सभाल कर रख सकने मे समर्थ नहीं हैं। वह अपनी प्रिय कुरानी शिक्षा तथा इस्लामी सस्कृति-सभ्यता के इन प्रतीकों को अपने पास ही सुरक्षित रक्खें।

हाँ पत्र लेखक की इस बात मे हम प्रशंसा करते हैं कि वह है ईमानदार आदमी। उसने अन्य गालियां तो हमें बहुत दीं, गधे के बच्चे और कुत्ते तक बताया किन्तु सुअर और सुअर का बच्चा नहीं लिखा क्योंकि वह जानता है कि यह उपाधि कुरान-ए-पाक और इस्लामी संस्कृति-सभ्यता का विशेष प्रतीक चिह्न है। यह केवल मुसलमानों के लिए ही सुरक्षित है, अन्य किसी को नहीं बख्शा जा सकता। किसी काफिर को इतना महत्त्वपूर्ण और इस्लामी पदक देना तो कलाम-ए-करीम तथा इस्लाम की तौहीन है अत कोई भी सच्चा मुसलमान इसे किसी अन्य मतावलम्बी को कैसे बख्श सकता है।

'बिस्मिल्लाह रहमानिर्रहीम' का कुरान मे मंजिल १, सिपारा १, सूरत १ है। यह पता ही यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि पहली मंजिल पहले सिपारे और पहली सूरत की यह पहली आयत है। पत्र लेखक का कहना है कि न यह कुरान की आयत है और न उसका भाग है। हमारा कहना है कि ऊपर दिया हुआ पता ही इसे कुरान की आयत और उसका भाग सिद्ध करता है, फिर किसी ऐरे-गैरे नत्थू खैरे के कहने से कोई किस प्रकार मान जायगा कि यह कुरान को आयत नहीं और यदि विवाद को समाप्त करने की दृष्टि से मान भी लें तो पहली मंजिल पहले सिपारे और पहली सूरत के अन्तर्गत होने से वह कुरान का भाग तो निश्चित ही है, इस बात से नकार करना कुफ्र है और यह कुफ्र पत्र लेखक जैसे किसी दीनदार मुसलमान के द्वारा ही सम्भव है, क्योंकि यह उसका अधिकार है कि वह अपनी मजहबी नाक को चाहे जिधर से पकड हम ऐसा कुफ्र कदापि नहीं कर सकते। 'तौबा-तौबा' हम तो मुसलमान होकर भी ऐसा कुफ्र करने वाले 'मुनकिरों' पर 'लाहौल' भेजते हैं।

वह लिखता है 'गाय तुम्हारी माँ, बिजार तुम्हारा बाप' हमारा यह कहना है कि यह हमारे माँ-बाप माता-पिता शब्दो के अनुरूप हमारे जीवन का निर्माण और पालन-पोषण तो करते हैं कि जनाब के माँ बाप सुअर और सुअरी तो आपके कुछ भी काम नहीं आते फिर भी पारस्परिक वार्तालाप में एक दूसरे को सुअर और सुअर का बच्चा कहकर आप लोग इन्हे अपने मा बाप स्वीकारते रहते हो। हाँ, एक बात है कि गाय-बिजार (साड) इसलिये हमारे माता-पिता हैं क्योंकि वह हमारे जीवन का पालन-पोषण करते हैं किन्तु आप तो अकारण ही सुअर-सुअरी को माँ-बाप स्वीकारते हो। सम्भव है यह इस्लामी उदारता का प्रतीक हो। माँ-बाप तो गाय-बिजार आपके भी हैं क्योंकि वह आपके जीवन का भी निर्माण और पालन करते हैं कि आप ही नालायक सन्तान जो उनका उपकार मानकर उन्हे ईमानदारी से माता-पिता स्वीकार नहीं करते और वास्तविक अर्थों मे इन माता पिताओ को मार कर खाने का महा पाप करके अपने कुसन्तान होने का परिचय देते हो तथा कृतघ्नता का पाप कर नरकाग्नि (नार-ए दोजख) मे जलने का (तोशा) तैयार कर रहे हो।

पत्र लेखक ने यह भी लिखा है कि "तुम्हे कुरान या इस्लाम के बारे मे क्या जानकारी हो सकती है।" उसे यह पता होना चाहिये कि उस जैसे मूर्खों से कुरान और इस्लाम के बारे मे हमे अधिक जानकारी है। यह दूसरी बात है कि इस्लाम जैसी निकम्मी और निम्न कोटि की विचारधारा के विषय मे विचार करके हम अपना समय विनष्ट नहीं करना चाहते। यह तो ओबेदुल्ला खा आजमी ने एक अत्यन्त बेहूदा बयान देकर और इस्लाम के भक्तो ने देश के कोने-कोने मे उसे बजाकर हमे इस विषय मे लेखनी उठाने को बाध्य कर दिया। इस्लाम और कुरान मे क्या है, इन गालिब के शब्दों मे हम इसे व्यक्त करते हैं—

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत सारी।
दिल के बहलाने को गालिब ये ख्याल अच्छा है॥

और हमें पता है इस्लाम की अताअत हजरत मोहम्मद की सुन्नत

(शेष पृष्ठ ९ पर)

"अनमोल वचन"

(श्री नन्दलाल पाहूजा, मन्त्री, आर्य समाज, थापर नगर, मेरठ २५०००१)

(शारीरिक, आत्मिक एवम् सामाजिक लाभ)

(क) प्रातःकाल उठते (सूर्य निकलने से पहले) ब्रह्म महूरत मे, प्रभु का धन्यवाद करें।

१- रात्रि का रखा पानी (तांबे के बर्तन मे) पी शौच जायें। बर्तन को मुह न लगायें।

२- शौच समय दांत मिलाकर बैठें। ३—पश्चात हाथ मुह धो, मुह में पानी भर कर दस बार छीटें आखों मे मारें मुह का पानी निकाल दिया करें।

(ख) व्यायाम—शरीर स्वस्थ है तो (१) तेल मालिश, स्नान, प्राणायाम, आसन, सैर आदि अवश्य करें (२) सन्ध्या प्रार्थना अग्नि होत्र, भजन आदि (३) धर्म के १० लक्षणों की व्याख्या सत्यार्थ प्रकाश के ५ वें समुल्ला में नित्य पढ़े (कभी पाप नहीं करेंगे) ज्ञान बढ़ाने की पुस्तकें पढें और आगे बढ़े प्रात ८ बजे तक। नाभि एव नासिका में शुद्ध घी या सरसों का तेल नित्य लगाया करें।

(ग) पारिवारिक सामाजिक कार्यों से निपटकर (१) भोजन सात्विक पौष्टिक, शीघ्र पचने वाला (२) भोजन से आधा घन्टे पहले या बीच में थोड़ा जल लेवें, भोजन के बाद एक या दो घन्टे में खूब, जल पीवें। (३) भोजन करते समय हो सके तो बोलें नहीं, थोडी भूख रहने पर छोड देवें एव चबा-चबाकर खायें।

(घ) भोजन के पश्चात—(१) तुरन्त पेशाब करें (२) फिर दांत आदि साफ करें मुह मे पानी भर आँखों में छींटें मारे बार-बार मुह का पानी निकाल देवें, ५ बार इस क्रिया को करें (३) कम से कम १५ मिनट तक लेट जायें, पहले दायें करवट फिर बायें करवट पश्चात सीधे (५+५+५) सौंफ भी खा सकते हैं।

(य) धन उपार्जन—आप कहीं भी कार्य करते हैं (१) समय पर पहुच कर बिना प्रदशन किये कार्य में लग जावें। प्रशंसा की प्रतीक्षा न करें निन्दा मे क्रोधित कदापि न हों (२) परमात्मा को सवदा सर्वज्ञ जान कर कुकर्म मे बचे। (३) देश, जाति, समाज एव परिवार के हितो का भी ध्यान रखें, परन्तु किसी कीमत पर भी मस्तिष्क मे तनाव पैदा न होने दें। दानशील बनें।

(र) रात्रि भोजन—(१) मिलने वालो को सुख-दुःख की खबर लेवें, सन्ध्या भजन परिवार मे मिलकर करें (२) सोने से ३ घन्टे पहले भोजन लेवें (३) सोने से एक घन्टा पहले दूध पिये यथा शक्ति बादाम केसर च्यवन प्राश आदि भी ले सकते है। वृद्ध तो सत शिलाजीत विशेष कर शीत ऋतु में वैद्य के परामर्श से ले।

(ल) सोने से पूर्व—(१) घूमना जरुरी है (२) लघुशका आदि दात सफाई, कपड़े ढीले सूती (३) सुरक्षित होकर पीने का पानी, रोशनी का प्रबन्ध कर लेवें।

(व) सोते समय—(१) देखें कि आपके पैर दक्षिण दिशा मे कदापि न हों।

(२) परमपिता परमात्मा का चिंतन कर सोने के ६ मन्त्र अर्थ सहित पढ़े।

(३) बायें करवट सोयें या नासिका स्वास देखकर करवट लेवें।

(स) संतुष्ट रहने के साधन—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—वे कैसे मिलेंगे ईश्वर जीव प्रकृति का स्वाध्याय करें। सत्संग मे धार्मिक विद्वानो के विचार श्रद्धा से सुनें।

(ट) घर में यथाशक्ति आवश्यकता अनुसार प्रयोग करे—शहद, बादाम, मुनक्का, अजवाइन, छुआरा, हल्दी, त्रिफला, तुलसी, कालीमिर्च, इलायची, मुरब्बा, आंवला, गुलकन्द, सौंफ, मुलहटी, लहसुन, केसर, अबरक, च्यवन प्राश, मक्खन, दही, पनीर, नींबू, मौसमी फल, खीरे, खरबूजे के मगज, चने मक्का का आटा, सब्जी, गाय का दूध आदि।

भोजन मे सलाद या फल आदि अवश्य लेवें परन्तु सब पानी में धोकर।

निवेदन

निर्वाचन समाचार जिला उपप्रतिनिधि सभा से अनुमोदित हो

सभा के मन्त्री महोदय का आदेश है कि सभी समाजें जब अपने निर्वाचन का समाचार भेजें तो अपने जिला की उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री अथवा प्रधान से अनुमोदित करा लें। प्राय इसका पालन नहीं हो रहा है और समाचार सीधे हमारे पास आ जाते हैं। कभी विवाद के कारण एक ही समाज के दो समाचार आ जाते हैं। हमे सत्य तक पहुचने मे कठिनाई होती है।

विनम्र निवेदन है कि आगामी १ मई १९८६ के बाद कोई निर्वाचन समाचार यदि जिला उपप्रतिनिधि सभा के अधिकारियों द्वारा अनुमोदित नहीं है तो उसे हम प्रकाशित करने मे असमर्थ होंगे।

आशा है इस विज्ञप्ति पर पूर्ण ध्यान दिया जायगा।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०
सम्पादक

भूल-सुधार

दिनांक १६ मार्च ८६ के 'आयमित्र'मे प्रकाशित पृष्ठ ९ पर' शुद्धि अभियान' के अन्तर्गत जिला आर्य प्रतिनिधि सभा गोरखपुर के अध्यक्ष द्विजराज शर्मा गलत छप गया है द्विजराज शर्मा जिला सभा के पुरोहित हैं अध्यक्ष नहीं। सम्पादक

—आर्य समाज बहराइच का ८५वां वार्षिकोत्सव दिनांक ७ से १० अप्रैल ८६ के मध्य घन्टाघर पार्क बहराइच मे हर्ष एव उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। मन्त्री

आवश्यक सूचना

हैदराबाद सत्याग्रह . स्वतन्त्रता सेनानी पेन्शन

जैसा कि पहले भी सूचित किया जा चुका है, भारत सरकार ने हैदराबाद सत्याग्रह मे जेल यात्रा करने वाले आर्य वीरों को 'स्वतन्त्रता सेनानी पेन्शन देना स्वीकार कर लिया है। साथ ही अब यह भी निश्चित हुआ है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रमाणित सत्याग्रहियों को पेन्शन दी जायेगी। इस समय तक जितने भी प्रार्थना पत्र सभा के कार्यालय मे प्राप्त हो चुके हैं उनकी सूची भारत सरकार गृह मन्त्रालय को भेज दी गई हैं। यदि किसी आर्य बन्धु ने, जिन्होने हैदराबाद सत्याग्रह मे भाग लिया हो, अभी तक अपना प्रार्थना-पत्र न भेजा हो तो वे उमे ३० मई सन् ११८६से पहले पूर्ण विवरण सहित भेज दें। भारत सरकार द्वारा यह तारीख अन्तिम रूप से निश्चित की गई है। इस तिथि के बाद आने वाले किसी भी प्रार्थना-पत्र को स्वीकार नहीं किया जायेगा।

दिनाक १२ मार्च १९८६,　　　　रामगोपाल शालवाले
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

सभा प्रचारक ठा० गजराजसिंह को झिझाना (मुजफ्फरनगर) से प्राप्त वेदप्रचार निमित्त, दान एवं दान दाताओ की सूची

५१) श्री नारायण दास जी प्रधान जी ५१) श्रीउत्पत्ति प्रसाद जी उप प्रधान ५१) श्री अशोक बहादुर २५) श्री जय भगवान दास जी १५) श्री जगदीश प्रसाद १५) श्री भाम राजसिंह जी ११) श्री भानू प्रकाश जी ११) श्री जय प्रकाश जी ११) श्री राम स्वरूप ओम प्रकाश जी ११) श्री दुर्गादास जी गुप्ता ११) श्री त्रिलोकचन्द्र रविन्द्र कुमार बजाज १०) श्री धन प्रकाश जी गर्ग ५) श्री वेद प्रकाश जी ५) श्री त्रिलोक चन्द्र जनरल मर्चेन्ट।　　१८२

वैदिक विवाह

दि० १२-३-८६ (अपराह्न) चि० अजय मेहरोत्रा एव आयु० प्रीति (पूर्व नाम कुमारी पैट्रिस एन० ग्रीन) का शुभ विवाह संस्कार सरोजनी नायडू मार्ग, लखनऊ मे पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। उपस्थित विशिष्ट गण मान्य व्यक्तियों ने नव वर वधू को सुखद दीर्घ दाम्पत्य जीवन का आशीर्वाद दिया।

ज्ञानकृष्ण प्रचारक आर्यमित्र

शोक समाचार

दुखद समाचार है कि आर्य समाज जीतपुर पूर्वी चम्पारण (बिहार) के मन्त्री श्री माधवानन्द आर्य के भ्राता श्री लालप्रसाद जी आर्य का दिनांक २६ जनवरी ८६ को आकस्मिक निधन हो गया। प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करें।

संवाददाता

—आर्य समाज लार (देवरिया) के संयोजकत्व मे श्री गयासिंह ठेकेदार के दादा जी का अन्त्येष्टि-संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दि० २१ मार्च ८६ को आचार्य रामज्ञानी आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना

यह आवश्यक है कि हिन्दू अपनी सन्तानों की शादियां गुण-कर्म, स्वभाव के आधार पर करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में एक अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना की गई है। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विवाह मे दहेज बाधक न हो। अब तक लगभग ८५ अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हो चुके हैं और सब दम्पति सुखी हैं। आफिस का समय प्रात—११ से ५ बजे तक है। साय ५ बजे से ७ बजे तक व्यक्तिगत बातचीत के लिये सुरक्षित है। विवाह इच्छुक युवक-युवती अथवा उनके सरक्षक निम्न पते पर सपर्क करें।

—डा० मदनपाल वर्मा,
अधिष्ठाता, अन्तर्जातीय विवाह विभाग
आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।
नोट—सेवा नि शुल्क है।

निर्वाचन

आर्य समाज भैसी (मुजफ्फर नगर)
प्रधान श्री शिशुपाल जी आर्य
मन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य
कोषा० श्री रामशरण जी

आर्य समाज अल्मोड़ा
प्रधाना श्रीमती कुसुम अग्रवाल
मन्त्री श्री जयदत्त उप्रेती
कोषा० श्री पूरन सिंह

आर्य समाज रानीमण्डी इलाहाबाद
प्रधान श्री शिवशकर लाल
मन्त्री श्री कुवर शेखर कुमार एडवोकेट
कोषा० श्री आर० डी० सिंह

आर्य समाज शृगार-नगर, आलमबाग लखनऊ
प्रधान श्री आचार्य देवव्रत अवस्थी
मन्त्री श्री देवपाल जी
कोषा० श्री डी० आर० नन्दा

आर्य समाज जीतपुर पूर्वीचम्पारण (बिहार)
प्रधान श्री रामचन्द्र चौधरी
मन्त्री श्री पं० माधवा नन्दार्य
कोषा० श्री साधु प्रसाद चौधरी

आर्य समाज ब्रह्मपुरी मेरठ
प्रधान श्री रोशनलाल
मन्त्री श्री चन्द्रपाल आर्य
कोषा० श्री यशवन्त सिंह

आर्य समाज थापर नगर मेरठ
प्रधान श्री शांति स्वरूप जौली
मन्त्री श्री नन्दलाल पाहवा
कोषा० श्री रामनाथ चोपड़ा

आर्य समाज सम्भल (मुरादाबाद)
प्रधान श्री जगदीश सरन
मन्त्री श्री नरेन्द्र प्रकाश आर्य
कोषा० श्री सत्यबीर

स्त्री आर्य समाज सीसामऊ, कानपुर
प्रधान श्रीमती शशिकांता शास्त्री
मत्राणी श्रीमती स्वर्णकुमारी अरोड़ा
कोषा श्रीमती शीलवती सक्सेना

आर्य समाज सीसामऊ, कानपुर
प्रधान श्री लक्ष्मण कुमार शास्त्री
मन्त्री श्री जयवन्तराय लाम्बा
कोषा० श्री वेदपाल जी

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज, हरदोई के साप्ताहिक अधिवेशन में उपस्थित समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य आर्य समाज, हरदोई के भू० पू० प्रधान एवं अवकाश प्राप्त न्यायाधीश स्व० श्री सुरेन्द्र विक्रमसिंह की धर्मपत्नीके स्वर्गवास पर शोक व्यक्त करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को चिर शांति प्रदान करें और शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य सहन करने की शक्ति दें।

आर्य समाज, हरदोई के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य बन्धु

दो नामी विदेशी हिन्दू-धर्म-प्रेमियो का दुःखद निधन

'दे वाण्डर वेंट वाज इण्डिया' और 'स्टडीज इन इण्डियान हिस्ट्री एण्ड कल्चर' जैसी विश्व-विख्यात पुस्तकों के लेखक, तथा हिन्दू दर्शन के प्रकाण्ड पंडित प्रोफेसर आर्थर एल० बाशम का दु:खद निधन सभी हिन्दुओं के लिए एक स्तब्धकारी घटना है। ७२-वर्षीय प्रोफेसर बाशम का निधन पिछले दिनों कलकत्ता में हुआ, जहां वे एशियाटिक सोसाइटी के लिये 'विजिटिंग प्रोफेसर के रूप मे कार्य कर रहे थे। पिछले वर्ष से वे 'भारत-विद्या विश्वकोश' नामक एक बृहद ग्रंथ के सम्पादन-संकलन कार्य में भी व्यस्त थे। उनके आकस्मिक निधन से यह महत्वपूर्ण कार्य भी अधूरा रह गया। अपने धर्म व संस्कृति से प्रेम करने वाले हिन्दू सदैव उनकी पावन तथा मधुर स्मृति को अपने मन मे संजोये रहेंगे।

हिन्दू धर्म मे गहरी आस्था रखने वाले एक अन्य विदेशी विद्वान थे ८१ वर्षीय क्रायस्टोफर ईशरवुड, जिनके निधन से पिछले दिनो हिन्दुओं को एक और गहरा धक्का लगा। वे १९४० मे हिन्दू धर्म मे दीक्षित होकर दक्षिण कैलीफोर्निया की वेदांत सोसायटी के एक आश्रम मे एक संन्यासी का जीवन व्यतीत कर रहे थे।

ईशरवुड का जन्म ब्रिटेनमें हुआ था। वे प्रख्यात ब्रितानी उपन्यासकार, सॉमरसेट माम के परम मित्र थे, और मॉम ने अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास 'रेजर्स एज' के हीरों की कल्पना ईशरवुड को ध्यान मे रखकर की थी। उपन्यास का हीरोवुड के समान ही आन्तरिक शांति की खोज मे भारत आता है। मॉम ने स्वयं ईशरवुड के कहने पर अपनी भारत-यात्रा के दौरान महर्षि रमण के दर्शन किये थे। ईशरवुड ने, गीता पातञ्जलि कृत 'योग सूत्र' शंकराचार्य तथा रामकृष्ण पर पुस्तकें लिखी थीं। ये पुस्तकें इस तथ्य की परिचायक हैं कि उन्होने हिन्दू धर्म तथा दर्शन का गहन अध्ययन किया था।

हिन्दू धर्म के इन दोनों परम प्रेमियो को हमारे शतशः प्रणाम।

भारत कल्याण मंच की ओर से,
सवाजीवनलाल चन्दूलाल

शोक प्रस्ताव

आर्य स्त्री समाज सीसामऊ कानपुर की उप प्रधाना तथा श्री डा० सुखदेव जी की माता श्रीमती माता सरस्वती देवी का संक्षिप्त बीमारी के बाद ८६ वर्ष की आयु मे देहावसान हो गया। इसी प्रकार आर्य समाज सीसामऊ के प्रतिष्ठित अन्तरग सदस्य श्री सुन्दर दास जी का ८२ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया हैं। दोनों दिवगत आत्माओं को सदगति व शांति के लिये आर्य समाज सीसामऊ मे शोक सभा मे ईश्वर से प्रार्थना की गई। तथा दोनों दिवगत आत्माओ के शोक सन्तप्त परिवारों व सम्बन्धियों को इस महानतम वियोगको सहन करने के लिये धैर्य व शांति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

लक्ष्मण कुमार शास्त्री

—आर्यसमाज हरजेन्द्रनगर कानपुर ७ के प्रांगण मे दिनांक २८ मार्च १९८६ को १० आर्य वीरों का सामूहिक यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार हुआ। जिसमे आर्य वीर सिम्भूराम, हरीराम, सुपेश आर्य, विप्लव सरकार, सुरेश मलिक, राम अवध प्रसाद, ओमप्रकाश, कु० शारदा आदि का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। पुरोहित का कार्य प० विश्वमित्र मेधावी कुलपति गुरुकुल सिराथू इलाहाबाद ने किया। —मन्त्री

श्री देबीदास आर्य को पुत्र शोक

प्रतिष्ठ आर्य नेता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के उपप्रधान कानपुर निवासी श्री देबीदास आर्यके कनिष्ठ पुत्र जिनकी आयु २६ वर्ष के लगभग थी और एडवोकेट थे उन्होंने विगत २९ मार्च को मांसिक विच्छिप्तता के कारण आत्म हत्या कर ली। श्री देबीदास जी का परिवार अभी उनकी पत्नी की मृत्यु के शोक से उबर नहीं पाया था कि यह दोहरी दु:खद स्थिति सामने आयी। कहते हैं कि उनका यह पुत्र कई वर्षों से मांसिक रूप से अस्वस्थ था और किसी भी प्रकार की चिकित्सासे उसे लाभ नहीं हो रहा था तथा अपनी माता की मृत्युके उपरात बहुत ही विच्छिप्त रूप से रहने लगा और एक दिन इस पाशविक कृति के साथ अपनी सांसारिक यात्रा समाप्त कर दी।

'आर्यमित्र' श्री देबीदास आर्य की इस शोक पूर्ण स्थिति में उनके दुःख का संभागी है साथ ही प्रभु से प्रार्थना करता है कि दिवंगत को शांति और दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करे। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी और मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी ने सम्वेदना प्रकट की तथा श्री आर्य का परिवार धैर्य धारण करे ऐसी प्रभु से प्रार्थना की।

सभा कार्यालय मे भी अपने उपप्रधान श्री देबीदास जी आर्य के इस दुःखद स्थिति के प्रति एक शोक प्रस्ताव पारित किया गया और सम्वेदना प्रकट की गई। प्रभु प्राय अपने भक्तोंकी आस्था एव विश्वास की परीक्षा दु:खो को देकर लेता है। श्री आर्य जी का जीवन सामाजिक जीवन है समाज की धरोहर है अत वे इस महान् दुःख को झेलते हुए भी अपनी समाज सेवा पर अडिगरहैं ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

गुजरात में वेद विद्यालय का उद्घाटन

९-१० अप्रैल को

महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने के लिये आर्य वन विकास फार्म ट्रस्ट रोजड, तालुका-प्रांतीज जि० साबरकांठा मे संस्कृत आर्ष व्याकरण, निरुक्त एव दर्शन आदि से वैदिक प्रचारक बनाने के अनोखे वेद-विद्यालय की स्थापना की गई है—

कल्याण जी भाई आर्य महामन्त्री
आर्य समाज घाटकोपार बम्बई।

—आर्य समाज "राजा बाजार खड्डा (देवरिया) का तीन दिवसीय ५३ वा वार्षिकोत्सव १९ मार्च से २१ मार्च ८६ तक बड़े उत्साह एव उल्लास के साथ मनाया गया। जिसमे आर्योपदेशक, विद्वान तथा भजनोपदेशक सम्मलित हुये। समारोह अत्यन्त सफल रहा। मन्त्री

—आर्य समाज खेड़ा अफगान का छठा वार्षिक उत्सव २४, २५, २६ फरवरी मे बड़े धूम धाम से मनाया गया। जिसमे महात्मा आर्य भिक्षु जी महाराज के ईश्वर विषय पर सारगर्भित भाषण हुये तथा श्री धर्मेन्द्र सिंह जी आर्य उप प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के बड़े उत्तम प्रवचन हुए। मन्त्री आर्य समाज

—आर्य समाज भगतपुर गोविन्दपुर (आजमगढ़) का १० वां वार्षिक उत्सव दि० २२ से २४ मार्च १९८६ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। मन्त्री

(पृष्ठ ५ का शेष)

तथा आप लोगों की अकीदत का, कवि के इन शब्दों मे कि–

कहता है कौन जाहिद को कि हक परस्त है।
हूरों पे मर रहा है, शहवत परस्त है॥

जन्नत मे मिलने वाली सुन्दर औरतो (हूरों) और सुन्दर लडको (गिलमानो) के साथ-साथ अनेक प्रकार की शराबों का झांसा देकर पहले तो मोहम्मद ने अरब के अशिक्षित तथा जड बुद्धि बद्दुओ को फँसा कर मजहब-ए-इस्लाम के नाम से अपने लिये शक्ति बटोरी तथा तत्पश्चात मुसलमान न बनने वालों को तलवार के बल पर मुसलमान बनने को बाध्य किया। खुदा और मजहब के नाम पर मक्का के मन्दिर मे आने वालों को उन्हीं बद्दुओं के द्वारा लुटवाया, उनकी स्त्रियां छिनवायीं और उनकी हत्यायें करायीं तथा उनमें से कुछ को पकडकर बलात "लाइलाहा इल्लाह मोहम्मदर्रसूलुल्लाह" का पाठ कराकर अपने आप को अल्लाह का शरीक बताया। इस प्रकार लाशरीक खुदा के साथ स्वयं ही शिरकत की और अपने साथ-साथ अन्यों को भी मुशरिक बनाने का गुनाह कर डाला। जब उसके पास लुटेरों का दल बडी सख्या मे हो गया तो आस पास के क्षेत्रो पर आक्रमण कर अपना मजहब फैलाने लगा और इस प्रकार के अत्याचारों को करने के लिये अपने साथियो को "कत्ल करो काफिरो को, जहां पाओ, मारो गर्दन उनकी और काटो पोरी-पोरी" जैसी आयतें बना-बनाकर लूटमार कत्लो-खून और औरतें छीनने जैसे कुकृत्य करने के लिए तैयार कर उसका प्रयोग करता रहा और इस प्रकार खुदायी पैगम्बर और इस्लाम का मजहबी बादशाह (खलीफा) बन बैठा। इसके अतिरिक्त इस्लाम का इतिहास और क्या है? यदि कोई इसे झुठलाकर इसके विपरीत तथ्य प्रस्तुत कर हमे समझा सके तो हमे उसे स्वीकार करने मे कोई ननुनच नहीं अपितु हार्दिक प्रसन्नता होगी। हमारी तो मान्यता है कि "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।"

इस मूर्ख पत्रलेखक ने राम और कृष्ण को फर्जी कहानी का हीरो लिखा है। इसमे तो लियाकत ही क्या है? हमारा तो चैलेंज है कि इस्लाम के पास विश्व भर मे इतिहास का जो बड़े से बडा विद्वान् हो, उसे सार्वजनिक रूप से हमारे सामने लाया जाय और इस विषय पर हमारा उस से शास्त्रार्थ करा लिया जाय। मूर्खों की दुनियां मे रह रहा और जडमति लोगों की लिखी पुस्तकें पढ़ ली हैं, उन जडमति मूर्खों की जो किसी इतिहासवेत्ता की शाला मे बैठने की तो क्या? उसके जूते साफ करने की भी योग्यता नहीं रखते। यह पत्र लिखकर उस मूर्ख ने हमें उसकी अपनी वास्तविकता की पोल खोलने को बाध्य कर दिया है।

वह हमें मुट्ठी भर मुसलमानों और ईसाइयों से डरा हुआ बताता है। अरे मूर्ख! 'जागते रहो' की आवाज लगाने वाला पहरेदार चोरो से डरा हुआ नहीं होता अपितु चोर ही उसकी आवाज से डर कर भाग जाते हैं। वह तो चोर-उचक्कों से नागरिको को सावधान करता है। हम मरे हुये हिन्दुओं की सन्तान से डरते नहीं हैं अपितु देश के कर्णधारों और नागरिकों को देश मे रह रहे चोर उचक्कों से सावधान करने के लिए जाति के पहरेदार बन कर जन जागरण का स्वर गुञ्जाते हैं। नेताओं और शासकों को तो हमारा इन शब्दो में आह्वान है–

एक बात कहनी है हमको, देश के पहरेदारों से।
सबल के रहना अपने घर मे छिपे हुए गद्दारों से॥

(क्रमश.)

'राम ! तुम्हारा शत अभिनन्दन'

(१)

राष्ट्र पुरुष थे विश्व विजेता, मर्यादा पुरुषोत्तम,
महामनुज थे, सत्य शिवम्-सुन्दर से भी सुन्दरतम,
रविकुल के रवि बनकर तुमने, नष्ट किया था भूतल-तम,
युगस्रष्टा ! हे युग परिवर्तक ! तुम उत्तम से भी उत्तम,

आर्य पुत्र ! हे वेदपथिक ! भारत सुत ! हे दशरथनन्दन !
राम ! तुम्हारा शत अभिनन्दन॥

महिमण्डल की असुर वृत्तियों का तुमने सहार किया,
आर्य धर्म की मर्यादा रख, जगती का उपकार किया,
अन्यायी रावण का वध कर, धरती का उद्धार किया,
मानवता की गरिमा से, भारत भू का शृङ्गार किया,

विप्र धेनु-सुर सन्तो मे, भर दिया अभयता स्पन्दन।
राम ! तुम्हारा शत अभिनन्दन॥

न्याय धर्म का, दया-प्रेम का, तुमने तान वितान दिया,
यम-नियमों की गरिमा को, तुमने सक्षम सम्मान दिया,
जगती के जन-जन को तुमने, पुरुषोचित अभिमान दिया,
कर सर्वस्व निछावर अपना, काम सभी निष्काम किया,

नष्ट किया तुमने निर्भय हो, इस धरती का दारुण क्रन्दन।
राम ! तुम्हारा शत अभिनन्दन।

'मगलमय हो नव संवत्सर'

(२)

मगलमय हो नव सवत्सर, आए नया विहान,
महिमण्डल पर शांति सुखो का, छाए नया वितान।
प्रेम-दया-ममता-समता समरसता हो संचारित,
मानव मे मानवता पूरित सद्‌गुण हो सपादित।
सत्य धर्म की विजय पताका अवनी पर लहराये,
नव संवत में ईश कृपा से, जन जन मे नवजीवन आए।

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

मुस्लिम महिला-विधेयक दुर्भाग्यपूर्ण

[मुसलमानो के चरित्र पर तीखी टिप्पणी करते हुये शबाना ने कहा, "यह कितनी विचित्र स्थिति है कि मुसलमान भारतीय संविधान और शरीयत, दोनो का इस्तेमाल अपने स्वार्थों के लिये करते हैं। जहां फौजदारी के मुकदमों की बात आती है, वे भारतीय दंड संहिता की धाराओं को मानने लगते हैं, यदि वे शरीयत के अनुसार ही चलना चाहते हैं, तो फिर चोरी की सजा के लिये हाथ कटवाने और अन्य सजाओ के लिए कोड़े खाने को भी तैयार क्यों नहीं रहते ?" —शबाना आजमी

सर्व प्रथम शाहबानो केस मे सुप्रीमकोर्ट का निर्णय तत्पश्चात् मुस्लिम महिला विधेयक फिर राज्य मन्त्री आरिफ मुहम्मद खान का त्यागपत्र, इस समय देश की मुस्लिम राजनीति में ही नही, देश भर मे चर्चा का विषय बनी हुई, यह एक ऐसा विषय बन गया है, जो गली कूचों पत्र पत्रिकाओ और चौराहो-गलियारो की चर्चा का विषय है। मुस्लिम तुष्टीकरण की जिस नीति का कांग्रेस ने बीजारोपण स्वतन्त्रता के बाद से ही कर दिया था आज उसी विष वृक्ष का फल सारा देश भोग रहा है। मुस्लिम पर्सनल ला, अल्प संख्यक आयोग, वक्फ बोर्ड आदि ढेरो ऐसे मसले है जो सरकार के लिए स्थायी सिरदर्द बन चुके हैं। गत दिनों मेरठ, वाराणसी सम्भल आदि मे हुए दगे इसकी ताजा मिसालें हैं। कितनी शर्मनाक बात है कि केवल कुछ वोटो की खातिर सरकार कठमुल्लाओं के आगे झुक रही है, जब कि उन्ही की सरकार का एक वरिष्ठ राज्य मन्त्री बिल के विरोध मे त्याग-पत्र दे रहा है।

विधेयक का बुद्धिजीवी समाज म घोर विरोध हुआ है। दजनो पत्रकारो, मुस्लिम सांसदो एवं कलाकारो ने भी इस बिल का विरोध किया है किन्तु सरकार अपनी हठधर्मिता से बाज नही आ रही। मुस्लिम महिला विधेयक के विरोधियो मे एक नई मुस्लिम महिला का नाम जुड़ा है,वह है प्रख्यात सिने अभिनेत्री और विशेषत फिल्मो के माध्यम से नारी जागरण के लिए संघर्ष करने वाली नारी की भूमिका को जीने वाली शबाना आजमी। शबाना तीन बार सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री व राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी है। एक श्रेष्ठ कलाकार के साथ-साथ शबाना एक बौद्धिक मानसिकता भी रखती हैं। वह प्रख्यात शायर कैफी आजमी की दुख्तर और विख्यात लेखक जावेद (सलीम जवेद) की बीबी हैं।

१८ मार्च ८६ को आगरा म सूरसदन मे हिन्दू-मुस्लिम-एकता एव सद्भावना के रूप मे एक शानदार अखिल भारतीय महिला मुशायरा' का आयोजन किया गया। शबाना इसी मुशायरे का उद्घाटन करने बम्बई से आगरा आई। मुशायरे के बाद पत्रकारो ने उन्हे घेर लिया और सबसे पहला ही सवाल मुस्लिम महिला विधेयक के बारे म उनके विचार जानने के लिए किया। शबाना ने संजीदगी म इस बारे मे इस तरह फरमाया, 'यदि गुजारा-भत्ता विधेयक लागू हो जाएगा तो अभागी तलाकशुदा महिलाओ को अपनी जिन्दगी की गुजर-बसर के लिए वक्फ बोर्ड के चक्कर लगाने पड़ेगे, आमतौर पर मुफलिस और अनपढ औरतो के पास ऐसा कोई साधन नही है, कि वे वक्फ बोर्ड तक पहुँच सकें, या उनसे गुजारे की रकम माग सकें।

उनका कहना था कि यह स्थिति नितान्त असम्भव है और गाव देहात की औरतो की हद वहाँ तक नहीं है। सुप्रीमकोर्ट के फैसले पर टिप्पणी करते हुए उन्होने कहा कि 'मैं इस हर्गिज मानने के लिए तैयार नही हू कि शाहबानो के मामले मे सुप्रीमकोर्ट का दिया हुआ फैसला इस्लाम, शरियत या कुरान के विरुद्ध है। उन्होने कहा कि शरीयत मे इस मामले म कुछ भी स्पष्ट रूप से नही लिखा है, बल्कि शरीयत म यह भी स्पष्ट रूप म लिखा हुआ है कि समयानुसार जो भी कार्य जनहित म हो, उन्हे अवश्य करना चाहिए सुप्रीम कोर्ट ने जनहित को देखते हुए समयानुसार फैसला दिया है जो सर्वथा उचित है।

यहा यह उल्लेखनीय है कि शरीयत के कानूनो, मुस्लिम पर्सनल कानून एव अन्य कानूनो के सन्दर्भ मे प्रख्यात पत्रकार अरुण शोरी ने पिछले दिनो चार अकों म लगातार प्रकाशित धर्मयुग के एक लेख म, मीमांसा की थी। उन्होंने भी सुप्रीमकोर्ट के फैसले को अनुचित नही बताया है। आरिफ मुहम्मद खान का संसद म दिया गया भाषण स्वय एक दस्तावेज है जो शरीयत के कानूनों की परतें खोल देता है।

शबाना ने 'समान सिविल कोड' की भी जोरदार वकालत की है। उन्होने वक्फ बोर्ड की कार्य प्रणाली पर भी असन्तोष व्यक्त किया। वक्फ बोर्ड पर टिप्पणी करते हुए उन्होने कहा, 'आप स्वय जानते हैं कि वक्फ बोर्ड की क्या हालत है और वह कैसे काम करता हैं।

मुसलमानों के चरित्र पर तीखी टिप्पणी करते हुए शबाना ने कहा, "यह कितनी विचित्र स्थिति है कि मुसलमान भारतीय संविधान और शरीयत, दोनों का इस्तेमाल अपने स्वार्थों के लिए करते हैं। जहाँ फौजदारी के मुकदमों की बात आती है, वे भारतीय दण्ड संहिता की धाराओ को मानने लगते हैं। यदि वे शरीयत के अनुसार ही चलना चाहते हैं, तो फिर चोरी की सजा के लिए हाथ कटवाने और अन्य सजाओं के लिए कोड़े खाने को भी तैयार क्यो नही रहते ?'

शबाना की ये टिप्पणियां वास्तविक तौर पर सैंकड़ो वर्षों से दबी कुचली मुस्लिम महिलाओ की हृदय की आवाज है भारत की ९९ प्रतिशत मुस्लिम महिलाए इन कानूनो और शरीयत की आड में कठमुल्लाओ और पुरुषो के शोषण का शिकार रही हैं। यही कारण है कि मुस्लिम महिलाए देश की सर्वाधिक अशिक्षित शोषित हैं। अल्पसंख्यक समाज की दुर्दशा का एक बहुत बड़ा कारण भी शोषण है। एक विद्वान् ने कहा है कि यदि पूरे घर के बच्चो को शिक्षित बनाना है, तो घर की मालकिन को पहले शिक्षित करो। यदि मुस्लिम महिला बिल पास हो गया तो देश सन् तारीखो मे बेशक २१ वी शताब्दी मे पहुच जाए, वास्तविकता मे तो वह १६ वी शताब्दी म औरतों को ले जाने वाला होगा।

(पंजाब केसरी से साभार)

—महर्षि दयानन्द विद्यामंदिर सिकन्दरपुर का वार्षिकोत्सव दि० २० मार्च ८६ को होली के पावन अवसरपर बड़े धूमधाम से समायोजित हुआ। इसमे विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। —प्रधानाचार्य

—आर्यसमाज उसका बाजार (बस्ती) का ४९ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २९ मार्च से १ अप्रैल १९८६ तक हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया। —मन्त्री

निर्वाचन—

आर्यसमाज सिविल लाइन्स नरही, लखनऊ

प्रधान—श्री ब्रह्मदत्त जी दीक्षित
मन्त्री-डा० श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त
कोषाध्यक्ष-श्री राजेन्द्रसिंह

-आर्यसमाज मऊरानीपुर झांसी

प्रधान—श्री रघुवीरसिंह परिहार
मंत्री—श्री बंशीधर भट्ट
कोषाध्यक्ष—श्री हरिश्चन्द्र द्विवेदी

—आर्यसमाज नई बाजार बक्सर (बिहार)

प्रधान—श्री रामचेतन राय
मंत्री-श्री अयोध्याप्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री बंशीधर प्रसाद

-आर्यसमाज बड़ौली (अलीगढ़)

प्रधान—श्री महेन्द्रपालसिंह आर्य
मन्त्री—श्री चन्द्रपालसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री मंगिराम आर्य

० ओ३म् ०

❀ आवश्यक सूचना ❀

उ.प्र. की समस्त आर्यसमाजों के माननीय प्रधान मंत्री जी की सेवा में-

प्रिय महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश शताब्दि समारोह की स्मारिका के प्रकाशनाथ निम्न सूचनाए अपेक्षित है, यथाशीघ्र भेजकर कृतार्थ करें। इस ग्रन्थ मे आपकी गौरवशाली आर्यसमाज का उल्लेख आवश्यक है।

आपका
मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा

१-नाम आर्यसमाज

२-स्थान   पो०   जिला

३-आर्यसमाज की स्थापना तिथि   —

४-आर्य प्रतिनिधि सभा मे प्रविष्टी की तिथि

५-आर्यसमाज की स्थापना के समय, पदाधिकारियों के नाम

प्रधान —उप प्रधान —मंत्री उपमंत्री —कोषाध्यक्ष —लेखापरीक्षक —पुस्तकाध्यक्ष

६—आर्यसमाज के वर्तमान पदाधिकारियों के नाम तथा निवास के पते सहित—
(अ) प्रधान-
(ब) उप प्रधान—
(स) मन्त्री-
(द) उपमन्त्री—
(य) कोषाध्यक्ष—
(ङ) पुस्तकाध्यक्ष—
(च) निरीक्षक-

७—आर्यसमाज की वर्तमान सदस्य सख्या-   सहायक सख्या

८-आर्यसमाज का भूमि भवन है या नहीं, यदि हैं तो उसका मूल्य   तथा क्षेत्रफल

९-आर्यसमाज मे पुस्तकालय है या नहीं, यदि है तो पुस्तक संख्या-   तथा मूल्य

१०-आर्यसमाज द्वारा सचालित सस्थाओ तथा शिक्षा संस्थाओं का नाम तथा प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष वा प्रबन्धक का नाम व निवास का पता—

११ आर्य वीर दल है या नहीं, उसकी संख्या-

१२-दैनिक अथवा साप्ताहिक सत्सग होते हैं या नहीं-

१३-वेद प्रचार की व्यवस्था का उल्लेख-

१४-आपकी समाज 'आर्यमित्र' साप्ताहिक की ग्राहक है या नहीं ?

१५-विशेष वक्तव्य—विगत तीन वर्षों मे आपकी समाज द्वारा किया हुआ कोई उल्लेखनीय कार्य—
(उदाहरणार्थ) जैसे- शुद्धि, भवन निर्माण, निर्धन सेवा, औषधालय, आदि-आदि।

हस्ताक्षर

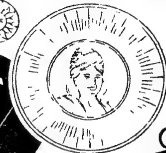
दिनांक   मन्त्री   प्रधान

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन. पी. ७९
मा० वैशाख ७
वैशाख कृष्ण ३, रविवार
२७ अप्रैल १९८६ ई०

ओ३म्
आर्य मित्र
उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र



आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.



१८८६-१९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी.कालेज, लखनऊ

विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक
गतिविधियों पर विचार

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १ फोन ४५९९३

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं० १२२७१/५७ — योजना पत्र सं० ७/२८-१-८३

वर्ष ८९] मा० वैशाख १४, वैशाख कृष्ण ११, रविवार संवत् २०४३ वि०, दि० ४ मई १९८६ [अंक १८

प्रार्थना

ओं येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ २ऽ अनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥

—यजु० ३३-३२

भावार्थ—हे पवित्र करने वाले वरणीय राजन्! जिस दर्शनसामर्थ्य से तू चमचमाते हुए सूर्य को देखता है उससे प्रजाजनों को भी देख।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तद्वक्तारमवतु 'अमृतस्य पुत्रोऽहम्'।

काश्मीर की हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं से लेकर सुदूर दक्षिण तक फैले हुए इस विशाल भूखण्ड में जिसके दक्षिण छोर का जल प्लावन कन्या कुमारी में सागर कर रहा है और पश्चिम के द्वारका तथा सौराष्ट्र से लेकर सुदूर पूर्व बंग के प्रायद्वीप तक जो एक देश एक राष्ट्र है उस राष्ट्र को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नव जागरण का सन्देश दिया। ऋषिवर ने समस्त राष्ट्र को एकता के आवरण में आबद्ध किया और वैदिक ऋचाओं में गुम्फित ज्ञान की पुष्पांजलि इस राष्ट्र को अर्पित की। निःसन्देह उन्नीसवी शताब्दी में जितने भी भारत में देशभक्त शूर वीर और राष्ट्र नेता हुए उनमें महर्षि दयानन्द सरस्वती सिरमौर थे और उनका वेदों का ज्ञान उस के आधार पर संगठित आर्यसमाज संगठन राष्ट्र के लिए अनुपम देन है। हमने ऋषिवर के उपदेशों पर चलने का प्रयास किया। देश से श्वेतांग विदेशी शासक को उखाड़ फेंका परन्तु खेद है कि हमारे इस स्वतन्त्रता के सन्धिकाल में कतिपय व्यक्तियों ने राष्ट्र की अखण्डता, भारतीय संस्कृति के गौरव के साथ हास्यास्पद खिलवाड़ किया और राष्ट्र की सीमायें छोटी कर दी गई तथा उसके बाद भी वह कार्य होते रहे जो राष्ट्र की सीमाओं को और संकुचित करते रहे। आज ब्रिटेन और अमेरिका चाहता है कि भारत महाशक्ति बनकर विश्व के सामने न आये इसलिए उसे खण्डित करने के प्रयास किये जा रहे हैं। पाकिस्तान ब्रिटेन की देन है और उसी पाकिस्तान ने आज सिखों को खालिस्तानी शिक्षा दी जा रही है तथा काश्मीर में काश्मीरियों से भारत के विरुद्ध विद्रोह करवाने का प्रयास किया जा रहा है। भारत सरकार अपनी मोह निद्रा भंग करे? जिस दिन श्रीनगर से एक लाख के लगभग काश्मीरी पण्डित पलायन करेगा 'श्रीनगर' मुस्लिम बहुल प्रांत होगा और उसीदिन श्रीनगर की घाटी से लेकर लद्दाख तक पाकिस्तानी झंडे लहरा उठेंगे। भारत सरकार लीबिया के प्रश्न को लेकर बहुत शोर मचा रही है परन्तु यदि पाकिस्तान से हमारा संघर्ष होता है तो क्या भारत सरकार को विश्वास है कि गद्दाफी की लीबिया सरकार भारत का पक्ष लेगी। नवीन संवत्सर के साथ आर्यसमाज ने ऋषिवर के सन्देशों के प्रसार के लिये शपथ ग्रहण किया है अतः राष्ट्र की अखण्डता का दायित्व आर्यसमाज पर है। आर्य नेता इस सत्य पर बल दें।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक



महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
आर्य मित्र

सम्पादकीय

लखनऊ-रविवार ४ मई १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७



आर्य जीवन की ज्योति-

ज्योतियाँ एव अग्नि शिखायें जलती हैं वायु के तरंगों मे इठलाती बल खाती हैं और कभी-कभी वायु के प्रबल झंझावात उन्हें बुझा देने में सफल हो जाते हैं। परन्तु कुछ ज्योतियाँ ऐसे अग्नि कणों से सम्बन्धित होती हैं जिन पर समय की विस्तृत राख जम जाती है परन्तु कालान्तर में उस राख के नीचे जलते हुए जो अग्निकण मिलते है उन्हे समय और गति बुझा नहीं पाता है अपितु अनुकूल परिस्थितियाँ उस अग्नि मे तीव्रता ला देती है। इसी प्रकार की गतिशीलता आर्य जीवन की है। जहां विराम है, विश्राम है, परन्तु अंत नहीं है। यही वास्तव में अंत विहीनता ही प्राणमयी ऊर्जा स्रोत है जो आर्य जाति को वेदों के अध्ययन से प्राप्त हुआ और ऋषिवर दयानन्द ने उसी वैदिक ऊर्जा स्रोत से अलसायी आर्यजाति को नवचेतना प्रदानकी। जिसका यह परिणाम है कि विपरीति परिस्थितियो, विदेशी धर्म आक्रमको और पैगम्बरी धर्मों के प्रचार रूपी आक्रमणोंसे आज आर्य जाति की रक्षा की जा सकती है। आर्यसमाज का गठन उसके प्रचार एव प्रसार के लिये उसकी जीवन वृत्तिका मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक जीवन स्रोत के ज्ञान के स्नेह को प्रदान किया।

आर्य समाज के चारों ओर इस समय विपरीत परिस्थितिया चल रही हैं। आर्य समाज-भारतीय राष्ट्र का एक प्रकाश पुज है। परन्तु जिस गति से हमें अपने प्रकाश पुज के द्वारा समय एव समाज की रक्षा करनी चाहिये उतना करने मे हम असमर्थ हैं। कहीं पर हमारी शक्ति का ह्रास हो रहा है। अतैव शक्तिके ह्रासको रोक कर आर्य समाज को बदले हुये परिवेश में नवीन परिस्थितियों मे नवशक्तिके साथ ऋषिवर के सन्देशों मे से ही अपने पथ का चयन करना पड़ेगा और इस नवीन दिशा पर उठते हुए पग से नवजवानों को ही एक क्रांति लाना होगा अत आवश्यक है कि आर्य समाज के कार्यक्रमों मे ऐसा परिवर्तन लाया जाय इसमें ऐसा प्रभाव उत्पन्न किया जाय कि उससे आज विश्व का भटकता हुआ मानव सही दिशा को पहचान सकें।

स्व० श्री प्रकाश वीर जी शास्त्री प्राय कहा करते थे कि आर्य समाज के भवन, आर्य समाज के मन्दिर और उनका रख रखाव प्रभावी होना चाहिये। अधिकाश मे आर्य समाज मन्दिर के भवन प्रभाव हीन हो रहे हैं कहीं किरायेदार बसे हैं कहीं बाहर दुकानें लगी हैं और कहीं कहीं पर तो आवांछित तत्व आर्य समाज के मन्दिरों में अधिकार किये हैं इस पंकिल वातावरण से आर्य समाज को मुक्ति दिलाना आवश्यक है। बहुत से समाज भवनों मे आवांछित रूप से स्कूल या विद्यालय चल रहे हैं और उनको लेकर आर्य समाज के सदस्यों में विवाद चल रहा है आज तक कोई विवाद ऐसा नहीं आया जो विद्यालय की शिक्षा पद्धति सम्बन्धी हो बल्कि विवाद आये हैं चरित्र हनन के और पद मोह, लोभ, आशक्ति मे फसे हुए सदस्यों के। सकेत प्रयाप्त हैं। सम्बन्धित सदस्य स्वयं विचार करें।

आज भारत मे विशेष प्रकार की परिस्थितियाँ पनप रही हैं यहा के अनुभवहीन राजनीतिज्ञों ने देश मे ऐसा वातावरण उत्पन्न किया जो देश के विभाजन के समय से भी अधिक विषाक्त हो रहा है। धर्म निरपेक्षता का गलत अर्थ लगाया गया और वह गलत अर्थ आज तक दोहराया जाता है तथा उसी की शुकरटन सब करते रहते हैं। मुसलमान धर्म निरपेक्ष नहीं हैं न वह इसे स्वीकार करता है। केवल बहुमत और हिन्दुओं पर धर्म निरपेक्षता लाद कर राष्ट्र के सत्ताधारी, हिन्दुओं की शक्ति और विचारधारा को कुंठित करते हैं तथा मुसलमान अधिक से अधिक धार्मिक वातावरण को अपने मे समेटता हुआ हरकदमको हर घटना को ऐसा प्रदर्शित करता है कि वह बहुमत के अत्याचार से पीड़ित है जबकि उसे पूरी स्वतन्त्रता है। आज 'राम जन्मभूमि' के विषय मे मुसलमान देश द्रोहित हो रहा है और सारे भारत मे कट्टर पंथी बनने की भावना पैदा कर रहा है यह शुभचिन्ह नहीं है।

भारत के अधिकाँश भागों मे कांग्रेस (इ०) की सत्तारूढ़ सरकार है और उसके उदासीन धर्म निरपेक्षता के वातावरण का मुसलमान लाभ उठा रहे हैं। अत आर्य समाज को देश मे "आर्य जीवन ज्योति' को जाग्रति करना आवश्यक है। उपेक्षा और आलस्य इस समय हितकर नहीं है। कम-से-कम प्रत्येक आर्य, और आर्य समाज का सदस्य इस आशय का सकल्प लें कि वह आगामी दस वर्षो तक किसी आन्तरिक या संगठन सम्बन्धी विवादों मे अपने को न उलझा कर सच्चाई के साथ ऋषिवर के सन्देशो का सम्वाहक बने, आर्य जीवन ज्योति को जाग्रत करें तथा निःस्वार्थ सेवक की भावना से वैदिक ज्ञान ज्योति का सम्वाहक और ऋषिवर दयानन्द का सच्चा सैनिक बने।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

आर्य युवको एव युवतियो के लिए विशेष आकर्षक कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के शताब्दि समारोह मे आर्य युवकों एवं युवतियोंके लिये एकविशेष कार्यक्रमोंका आयोजन कियाजारहा है। जिसमे

(क) दयानन्द दर्शन शोध-पत्रक प्रतियोगिता।

(ख) विभिन्न स्तरो के आर्य विद्यालयों की निम्न प्रतियोगितायें।

(१) खेलकूद (२) आसन प्राणायाम (३) भजन (४) मन्त्र-पाठ (५) आर्य सिद्धांतों तथा ऋषि के जीवन एवं कार्यों पर आधारित प्रश्नोत्तरी (६) वाद-विवाद (७) चित्रकला (८) सामूहिक गान आदि।

कार्यक्रम में विशेष सफलता प्राप्त करने वाले युवक एवं युवतियों के लिये नकद पुरस्कार प्रदान की भी योजना है। प्रदेश के समस्त आर्य विद्यालयों के प्रबन्धक तथा प्रधानाचार्यो से निवेदन है कि इस सम्बन्ध में श्री विद्यारत्न जी संयोजक से सम्पर्क कर कार्यक्रम मे भाग लेने की कृपा करें -

श्री विद्यारत्न जी संयोजक
द्वारा प्रधाना चार्या
राजकीय कन्या दीक्षा विद्यालय बुलन्द शहर

अध्यात्म सुधा

"शरीर सदन एव जीवात्मा"

लेखक–प्रियव्रत शास्त्री, एम० ए० साहित्य रत्न सरधना (मेरठ)

महात्मा विदुर जी ने धृतराष्ट्र को उपदेश करते हुए शरीर सदन एव इसके स्वामी का वर्णन इन शब्दों में किया है।

"नवद्वारमिद वेदय त्रिस्थूण पंच साक्षिकम ।
क्षेत्रज्ञाधिष्ठित विद्वान् यो वेद स पर कवि ॥

महात्मा विदुर प्रौढ़ विद्वान् एवं साहित्यिक थे। वैदिक साहित्य मे भी शरीर को नौ द्वारो वाला वर्णन किया गया है। अथर्ववेद मे "अष्ट चक्रा नव द्वारा देवानां पुरयोध्या" आदि मन्त्र मे यही वर्णन है कि यह शरीर आठ चक्र नव द्वार युक्त है साथ ही अयोध्या तथा देवताओ से युक्त भी बतलाया है। कबीर ने भी कहा है" इस शरीर के नौ दर वाजे, आदि।

महात्मा विदुर तथा वेद का वर्णन लगभग समान है। वेद मे लिखा हैं देवानांपुर "विदुर जी कहते हैं" क्षेत्रज्ञाधिष्ठितम्, इस शरीर मे नौ द्वार हैं, दो चक्षु, दो कान दो नासिका–छिद्र, दो मल मूत्र शुद्धि स्थान एक मुख तीन स्तम्भों पर यह स्थित है। वे तीन स्तम्भ कई प्रकार के है जैसे, वात, पित, कफ, सत्व, रज, तम, अल, अग्नि, पवन, अविद्या काम, कर्म-आदि। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पांच साक्षी इसके साथ जीवन पर्यन्त रहते हैं, क्योंकि यह पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश के तत्वो से निर्मित हैं।

मनीषी विदुर ने इस शरीर को क्षेत्र तथा जीवात्मा को क्षेत्रज्ञ बताया है। क्योंकि जिस प्रकार खेत मे बीज किसान बोता है। उस बीज की उपज (फल) का प्राप्त कर्ता भी किसान ही होता है, हानि लाभका दु खमुख किसान ही भोगताहै इसीप्रकार सुकर्म, कुकर्म, पाप,पुण्य, धर्म-अधर्म के बीज भी पाँच ज्ञानेन्द्रियों द्वारा इस शरीर मे अधिष्ठित आत्मा ही बोता है, इस ही कारण, राग द्वेष, सुख, दुःख, प्रयत्न आदि आत्माको ही भोगने पड़ते हैं। इस ही कारण कर्मों का कर्ता और भोक्ता जीवात्मा को ही माना जाता है।

आत्मा का लक्षण न्याय दर्शन मे–"इच्छाद्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञाना त्यात्मनो लिङ्गम" अर्थात इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख दुःख तथा ज्ञान आत्मा की पहिचान हैं। वैशेषिक दर्शन कार इसका और भी विस्तारसे इस प्रकार लक्षण बतलाते है–"प्राणापान निमेषोन्मेष जीवन मनो गतीन्द्रियान्तर विकारा सुख दुखेच्छा द्वेष प्रयत्नाश्चात्मनोलिङ्गानि" प्राण, अपान, निमेष, उन्मेष, जीवन, मन गति, इन्द्रियान्तर विकार (भूख, प्यास, ज्वरादि)इच्छा, सुख, दुःख द्वेष, प्रयत्न और ज्ञान ये सब आत्मा के कर्म गुण तथा लिङ्ग हैं।

योगीराज कृष्ण भी गीता मे अर्जुन को समझाते हुए कहते है—

इद शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
एतत् यो वेत्ति त प्राहु क्षेत्रज्ञ इति तद्विद ॥

क्योंकि आत्मा ही कर्ता और भोक्ता होता है, इसलिये, मनुष्य को सदा अच्छे कर्म ही करने चाहिये। मनुष्य के द्वारा किये गये अच्छे या बुरे कर्मों के पांच साक्षी तो सदा साथ रहते हैं। इन साक्षियों से तो कोई कर्म छुपाया ही नहीं जा सकता। इसीलिये शास्त्रो मे लेख है—
आत्मैव आत्मनों बन्धु आत्मैव रिपुरात्मन ॥
धर्म कार्यों की संक्षेप में चार पहिचान बताई गई हैं —

श्रुति स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन ।
एतच्चतुर्विधं प्राहु साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ।

इसमें भी चौथी और अन्तिम पहिचान अपने अपने आत्मा की प्रियता बताई है जिसे अपने लिये प्रिय समझता है, उसे ही दूसरों के लिये भी प्रिय समझे। ऐसा समझने में किसी भी दूसरे का अनिष्ट हो सकना सम्भव नहीं हैं। वैदिक धर्म का "वसुधैव कुटुम्बकम्" का यही आधार है।

आवश्यक सूचना

पश्चिम उत्तर प्रदेश आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर

उत्तर प्रदेश की सभी समाजों को सूचित किया जाता है कि ४ जून से १८ जून ८६ तक आर्यवीर दल का शिक्षण शिविर आर्यसमाज खैर अलीगढ़ मे लगने जा रहा है। कृपया सभी समाजें २,२ युवक शिक्षण लेने हेतु भेजे। शिविर के प्रवेश फार्म तथा नियमावली शिविरके संयोजक श्री जय नारायण जी आर्य ग्वाली सराय, जयगंज अलीगढ़ से प्राप्त करें। कृपया शीघ्रता करें। समय कम है। शिविर मे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मन्त्री तथा प्रधानजी भी सभी आर्य वीरो को आशीर्वाद देगे।

डा० बाल कृष्ण आर्य विकल
प्रान्तीय सचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिम
जिन्दकी उत्तर प्रदेश

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज–लाजपत नगर—कानपुर

'आर्य समाज का' वार्षिकोत्सव ११ से १३ अप्रैल ८६ के मध्य सम्पन्न हुआ दैनिक यज्ञ-ऋषिलङ्गर एवं आर्य सिद्धांतो के प्रचार प्रसार का विस्तृत कार्यक्रम आयोजित हुआ। आर्यमित्र सम्पादक आचार्य रमेश चन्द्र–एम० ए०—श्री उत्तम चन्द्र शरर—डा० आनन्द सुमन–प० इन्द्र देव जी आदि के विद्वत्ता पूर्ण भाषण शास्त्रीय एव सामाजिक विषयों पर हुए। श्री सोहनलाल पथिक तथा श्री जलेसर जी के भजनों का व्यापक प्रभाव रहा।

कानपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० देवेन्द्र दत्त तिवारी की अध्यक्षता मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ जिसमे उपरोक्त विद्वानो ने भाग लिया।

इस उत्सव को सफल बनाने मे प्रधान श्री हरवशलाल आनन्द—मन्त्री श्री राजेन्द्र राय–डा० आशारानी एव पूर्व मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य का विशेष योगदान रहा।

सम्वाददाता

कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो लेख प

मुस्लिम प्रतिक्रिया का उत्तर

— स्वामी वेदमुनि परिव्राजक —
[अध्यक्ष-वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ० प्र०]

(गतांक से आगे)

हम न पाकिस्तान से डरते हैं, न बांगला देश से। यह बाजू हमारे आजमाये हुए हैं। पाकिस्तान ने जितनी बार सर उठाया, प्रत्येक बार पिटा ही है। अब भी जब भी उसकी खोपड़ी खुजलाये, तभी वह फिर अपनी खाज मिटा ले और तुम्हारे जैसे देशद्रोही तथा नमकहराम पञ्चमांगी पाकिस्तानी जासूस जब चाहे अपने उस आका को बुला ले। यह तो हमारी कृपा है, जो प्रत्येक बार पीट पीट कर भी हमने पाकिस्तान को बख्शा है यदि हम कृपा न करते तो सिन्ध, बिलोचिस्तान और पख्तूनिस्तान कभी के बांगला देश की ही भांति पाकिस्तान से अलग हो जाते और पाकिस्तान एक लंगोटी जैसा बनकर केवल पञ्जाब वाला भाग रह जाता और उसे कभी भी लपेट कर भारतीय योद्धाओं द्वारा खैबर और बोलन की घाटियों से परली ओर फेंका जा सकता था, वहाँ वह अफगान लोगों की खुराक बनता और अबकी बार यदि पाकिस्तान ने हिमाकत की तो उसका यही परिणाम होगा, चाहे वह कितने ही इस्लामी बम बना ले, चाहे अपनी आत्मा को गिरवी रख कर अमेरिका से कितने ही शस्त्रास्त्र ले ले। 'क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा ?"

बांगला देश भी पिद्दी के शोरबे से अधिक नहीं है। सन् १९७१ में पाकिस्तान की सेनायें उसकी कुंवारी लड़कियों और युवा स्त्रियों को अपने पास खाइयों में दिनरात नंगी रखकर उनसे निरन्तर बलात्कार कर कुरानी शिक्षा और इस्लामी संस्कृति सभ्यता पर पूरा पूरा अमल करने में लगी थीं। आपके बांगला देशी बहादुर 'उनका बाल भी बांका' नहीं कर पाये थे। भला हो भारत के वीर योद्धाओं का जिनको साथ लेकर भारत के महान् सेनानायक जनरल मानक शाह ने इस्लाम के लगभग एक लाख पाकिस्तानी बहादुर मुजाहिदों से हथियार डलवा कर उन्हे भारत की जेलों की हवा खिलायी और इस प्रकार बांगला देश और उसकी बहू-बेटियों को उन मुजाहिदों ने इस्लाम तथा पाकिस्तानी दरिन्दों से निजात दिलाकर इस्लामी इज्जत ओ-हुरमत की रक्षा की। उस समय अपनी बहू-बेटियों की इस प्रकार लज्जा लुटते देखकर भी आपके बांगला देशीय मुजाहिदीन और इस्लामी परवाने सम्भवत चूड़ियां पहने और मेहदी लगाये बुर्कों के आवरण से युक्त होकर जनान खानों की शोभा बढ़ा रहे थे।

योगीराज कृष्ण के चरित्र पर भी कीचड़ उछालने की चेष्टा की है किन्तु क्योंकि इस्लामी गप्पों जैसी ही पौराणिक गप्पें सुन रक्खी है इतिहास की तो शाला के भी कभी दर्शन नहीं किये। अरे मूर्खाधिपति! एक बार फिर तुझे और तेरे इतिहास के गुरुओं को हमारा चेलेञ्ज है कि हम योगीराज श्रीकृष्ण के चरित्र पर ही शास्त्रार्थ करने को मैदान में आयें।

हमें तो बुजदिल लिखा है, गीदड़ लिखा है, जिसका नाम और पता लेख के ऊपर ही छपा है और जनाब इस्लामिक मुजाहिद साहब अपने पत्र पर डर के मारे हस्ताक्षर भी नहीं कर सके। पत्र पर लगी डाकघर की मुहर से पता चला कि बहादुर इस्लाम, खुदाई खिदमतगार तथा कुरानी इस्लाम के अलमबरदार 'दौराला' के निवासी हैं। हमने तो जनाब की वीरता देख ली और अब जनाब हमारे जैसे कायर के हौसले देख लें। हम दौराला आकर ही शास्त्रार्थ करने को तैयार हैं, कुरान के ईश्वरीय पुस्तक होने, राम-कृष्ण के ऐतिहासिक महापुरुष होने तथा योगीराज कृष्ण के चरित्र, जिस विषय पर भी आयोजन किया जा सके, करके, हमें बुला ले।

विचित्र बात तो यह है कि उन कायर और मरे हुये हिन्दुओं की सन्तान, जिन्होने तलवार के भय और लोभ के वशीभूत होकर इस्लाम स्वीकार कर लिया हमें धमकी दे रही है। मुर्दों की औलाद जीवितों को धमकी दे, यह क्या कम आश्चर्य है ? फिर पत्र पर अपना नाम-पता न देकर कायर और मरे हुये हिन्दुओं की सन्तान होने का प्रमाण देकर भी भड़ास निकाल रहा है, यह तो तमाशा देखिए।

गाय को इस निर्लज्ज और ढीठ ने अपना भोजन लिखा है किन्तु कुरान के पारा १७ की सूरत हज्ज में २६ से ३८ तक आयतों में ऊँटों की कुर्बानी का विधान है, गाय का कहीं नहीं। हजरत इब्राहीम ने अपने लड़के की कुर्बानी के लिये आंखों पर पट्टी बांध ली थी, परन्तु जब वह पट्टी खोली तो लड़के के स्थान पर दुम्मा खड़ा था। इससे भी दुम्मे की कुर्बानी की बात सिद्ध होती है, गाय की तो क्या, भैंस की भी नहीं सिद्ध होती। वैसे है यह भी बाजीगरों वाला तमाशा कि लड़के का दुम्मा बन गया और खुदा ने इब्राहीम की परीक्षा लेने के लिये उससे कहा था। इसका अभिप्राय यह है कि कुरानी खुदा सर्व व्यापक (हाजिर नाजिर) नहीं है, वह की मनोवृत्ति को भी नहीं जान और पहचान पाया और साधारण परीक्षकों की भांति परीक्षा लेने पर उतारू हुआ। फिर पशुओं को मारते समय भी, "बिस्मिल्लाह रहमानिर्रहीम" का पाठ किया जाता है, क्या पशुओं को मार डालना क्षमा शीलता और दयालुता का कार्य है ? किसी के जीवन को समाप्त कर देना भी जिस मजहब में दया माना जाय और परमात्मा की दयालुता का स्मरण करके इस प्रकार के बर्बर कार्य जिस मजहब में किये जाने विहित हों, उसे क्रूरकर्मा तथा दुष्प्रवृत्ति वाले ही स्वीकार कर सकते हैं, थोड़ी सी भी मानवता रखने वाले नहीं और ऐसा खुदा भी क्रूरकर्मा बधिक तो हो सकता है, क्षमा करने वाला और दयालु नहीं हो सकता। मोहम्मद साहब का जहां तक प्रश्न है, उन्होंने तो एक स्थान पर स्पष्ट शब्दों में कहा है कि "गाय का दूध हर इन्सान के लिए सेहतमन्द दवा है और उसका घी शफा है, गाय का मक्खन तन्दुरुस्ती है, जबकि गाय का गोश्त खतरनाक बीमारियों की जड़ है।"

मुसलमानों की आबादी जिस नगर और किसी नगर के जिस क्षेत्र में अधिक होती है, वहीं सर्वाधिक गन्दगी रहती है। कहीं प्याज-लहसुन के छिलके पड़े सड़ते रहते हैं और उन पर मक्खियां भनभनाती रहती हैं। वह मूर्ख लिखता है कि "मुसलमानों ने भारत को जन्नत बना दी" यद्यपि घृतयुक्त सामग्री से युक्त सुवासित वायुमण्डल वाले स्वर्गोपम भारत को उपर्युक्त प्रकार की गन्दगियों को यत्र-तत्र सड़कों पर बखेर कर नर्क बनाने में कोई कमी उठा नहीं रक्खी।

(क्रमशः)

पंजाब में डी.ए.वी. संस्थाओं का अस्तित्व खतरे में है

पिछले दिनो डी ए वी संस्थान की केन्द्रीय मैनेजमैंट की बैठक दिल्ली स्थित डी ए वी संस्थान के मुख्य कार्यालय मे सम्पन्न हुई। इस बैठक मे भाग लेने के लिए देश भर से डी ए वी संस्थानो के प्रिंसीपल महोदय पधारे। मुझे भी इस बैठक मे डी ए वी संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर वेद व्यास और सेक्रेटरी श्री दरबारी लाल ने खास तौर पर आमंत्रित किया था। इस बैठकमे बटाला के सिवाए पंजाबके तकरीबन सभी डी ए वी संस्थानों के प्रिंसीपल उपस्थित थे। अपनी औपचारिक बैठक के पश्चात पंजाब के विभिन्न शहरों से आये डी ए वी संस्थानो के प्रिंसीपल एक-एक कर पञ्जाब मे डी ए, वी सस्थाओ पर बढ रहे आतंकवादियों के अत्याचारों की कहानिया सुनाने लगे। इस लेख मे मै पाठको की जानकारी के लिए पंजाब के विभिन्न डी ए वी सस्थानो के प्राचार्यों द्वारा उनके संस्थानो के साथ हो रहे अत्याचारो की कहानियां दर्ज करने जा रहा हू।

एक डी ए वी कालेज के प्रिंसीपल ने बताया कि उनके कालेज मे आल इण्डिया सिख स्टूडेण्टस फैडरेशन के नवयुवक अपना यूनिट खोलना चाहते थे। जब प्रिंसीपल महोदय ने इसका विरोध किया तो भारी संख्या मे फैडरेशन के सदस्य नंगी तलवारें और स्टेनगनो से लैस होकर कालेज मे आये और प्रिंसीपल के कार्यालय मे जबरदस्ती जा घुसे, जबकि कालेज के बाहर खड़े पंजाब पुलिस के जवानों ने उन्हे ऐसा करने से न रोका। फैडरेशन के सदस्य कालेज बन्द करवाना चाहते थे। जब कालेज के प्रिंसीपल को स्थानीय प्रशासनने भी सहयोग प्रदान करने मे आनाकानी दिखाई तो उन्होने फैडरेशन के दबाव के आधीन कालेज बन्द कर दिया।

इसी कालेज मे दूसरी घटना तब हुई जब फैडरेशन के सदस्यो ने कालेज के प्रिंसीपल के समक्ष कालेजपरिसर के अन्दर अखण्ड पाठ रखने की माग रखी। जब प्रिंसिपल ने फैडरेशन के वर्करो की उपरोक्त मांग मानने से स्पष्ट तौर पर इन्कार कर दिया तो फैडरेशन वालो ने प्रिंसीपल के आफिस के बाहर 'भिण्डरावाला जिन्दाबाद' 'खालिस्तान जिन्दाबाद' और 'सुबेग सिंह जिन्दाबाद' के नारे लगाये। डी ए वी तथा आई टी आई कालेज के परिसरो के अन्दर दीवारो पर 'खालिस्तान' समर्थक पोस्टर चिपकाये गए। जब प्रिंसीपल यह बात स्थानीय प्रशासन के नोटिस मे लाये तो प्रशासन चुप्पी साधे बैठा रहा।

प्रिंसीपल महोदय के मुताबिक उन्हे स्वर्ण मन्दिर से सीधे फोन पर धमकिया दी गई कि अगर फैडरेशन वालो को कालेज के अन्दर अखंड पाठ न रखने दिया गया 'तो इसका अन्जाम बुरा होगा'। आखिरकार प्रशासन की दखलन्दाजी के पश्चात् फैडरेशन के वर्करो को डी ए वी कालेज तथा आई टी आई कालेज के बीच बाहर वाली सड़क पर अखण्ड पाठ रखने को मना लिया गया। अखण्ड पाठ के पश्चात फैडरेशन वालों ने जो भाषण दिए, उनमे उन्होने डी ए वी संस्थान के खिलाफ भारी विषवमन किया। स्पष्ट तौर पर फैडरेशन वालो ने कहा यह डी ए वी संस्थान सिखों के दुश्मन हैं 'हम दयानन्द आई टी आई का नाम बदल कर खालसा आई टी आई रखेंगे और डी ए वी कालेज की लाइब्रेरी का नाम बदल कर मनजीत सिंह लाइब्रेरी रखेंगे आदि।

एक अन्य नगर के एक प्रिंसीपल ने बताया कि उनके कालेज मे फैडरेशन का इतना जोर है कि स्थानीय खालसा कालेज से फैडरेशन के लडके जब जी चाहे उनके कालेज मे आ घुसते हैं और पुलिस उन्हे नहीं रोकती। यह लडके जब चाहे कालेज बन्द करवा देते हैं और हडताल भी करवा देते है। गत माह फैडरेशन के स्थानीय पदाधिकारी प्रिंसीपल महोदय से मिले और उनके समक्ष उन्होंने कालेज के हाल के अन्दर अखण्ड पाठ रखाने की माग रखी। जब प्रिंसीपल महोदय ने इससे साफ इन्कार किया तो कालेज मे तनाव पैदा हो गया। महोदय को दमदमी टकसाल वालों ने धमकियां देनी शुरू कर दी। कालेज मे यह नारे लगाये जाने लगे 'जो लड़ेगा वो झड़ेगा' और पूरे कालेज परिसर मे खालिस्तान समर्थक पोस्टर तथा नारे लगाए गये। जब कालेज मैनेजमेंटने स्थानीय प्रशासन से मदद मागी तो प्रिंसीपल महोदय के मुताबिक उन्हे प्रशासन की तरफ से लडको के साथ न भिड़ने की सलाह दी गयी। आखिरकार नेहरूचन्द पालीटेक्निक कालेज के हाल के ताले तोडकर फैडरेशन के लडको ने वहाँ अखण्ड पाठ किया और डी ए वी संस्थान को अपना दुश्मन करार दिया।

प्रिंसीपल महोदय ने एक अन्य कालेजमे फैडरेशन द्वारा अपना जबरदस्ती प्रभाव जमाने का ब्यौरा भी दिया। उन्होने बताया कि किस तरह उस कालेज के प्रिंसीपल द्वारा कालेज मे स्पेशल टेस्ट न बन्द किए जाने पर फैडरेशन के लडको ने उन्हे गालियां दीं और उन पर हमले किए। कालेज के शीशे तोडे गए और कालेज मैनेजमेंट के विरुद्ध रैलिया की गयीं। कालेज मे हडताल चलती रही और आखिरकार स्थानीय प्रशासन की सलाह पर खुद प्रिंसीपल को लड़को के समक्ष अप्रत्यक्ष रूप मे माफी माँगनी पडी तब कहीं जाकर कालेज में पढाई का काम शुरू हुआ।

पंजाब के इन दोनो मुख्य शहरो के डी० ए० वी० संस्थानों के अलावा अन्य शहरो मे भी फैडरेशन के कार्यकर्ताओं ने आज कल अपनी गतिविधियो से शैक्षणिक सस्थाओ को धमकाये और डराए रखा है। बटाला मे भी डी० ए० वी० संस्थान के प्रिंसीपल पर फैडरेशन के ५० लडकों ने उस समय हमला कर दिया जब वह बस मे से अपने चपरासी के साथ प्रश्न पत्रो के बंडल लेकर नीचे उतरे। उन्होने अपनी जान बडी मुश्किल से बचाई।

फैडरेशन के कार्यकर्ताओ की उपरोक्त गति विधियां केवल लडको के कालेजों तक ही सीमित नहीं है। इनकी गतिविधियो का केन्द्र अब पञ्जाब के डी० ए० वी० संस्थानो के लडकियो के कालेज भी बनते चले जा रहे हैं। लडकियों के एक डी० ए० वी० कालेज की प्रिंसीपलके मुताबिक कुछ अर्सा पहले जब उनके कालेज मे एक चोरी के केस मे पुलिस चार पांच लोगो को पकड़ कर ले गई तो उसी रात केसरी पगड़िया बाँधे फैडरेशन के १४-१५ लडके उनके घर पर उनके बारे मे पूछताछ करते रहे। उन्होने यह भी बताया कि उनकी जानकारी के

(शेष पृष्ठ १० पर)

गोरखपुर जिले की समाजो द्वारा "जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर" सम्बन्धी निर्णय एव भ्रम निवारण

रविवार ३० मार्च ८६को गोरखपुर जिले की समाजो के प्रतिनिधियो का एक सम्मेलन आर्य समाज पिपराइच मे अपराह्न २ बजे श्री स्वामी श्रेयोनन्द वैदिक यति की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ । उक्त अवसर पर उपस्थित समाजों के प्रतिनिधियो तथा जिला सभा के पूर्व मन्त्री एव निवर्तमान उपाध्यक्ष श्री के० एन०सिंह द्वारा द्विजराज शर्मा एव राज-मगल विश्वकर्मा द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से अलग 'जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा" गठित कर पजीकृत कराये जाने का घोर विरोध किया गया तथा इसे स्पष्ट विद्रोह की सज्ञा देते हुये सभी सदस्यो ने डा० विनय प्रताप-सयोजक पूर्वी प्रचार विभाग से जोरदार माँग किया कि निहित स्वार्थी तत्वो के ऊपर इन अवैधानिक कार्यहेतु कानूनी कार्यवाही कर चौरी चौरा को दान मे प्राप्त सम्पत्ति की रक्षा की जाय तथा अनेक गैर कानूनी कार्य कर रहे निहित स्वार्थी तत्वो को कानूनन दण्डित करवा कर आर्य समाज की प्रतिष्ठा को बचाया जाय । डा० विनय प्रताप जी ने इस दिशा मे शीघ्रति शीघ्र कानूनी कार्यवाही करने का आश्वासन दिया ।

उक्त अवसर पर स्वामी जी की अपील पर सभी उपस्थित प्रतिनिधियों ने हर्ष ध्वनि सहित सार्वदेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश मे अपनी आस्था व्यक्त करत हुए जून मास मे आयोजित पूर्वांचल आर्य सम्मेलन के अवसर पर विधिवत् जिला" आर्योप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर" का निर्वाचन सभा प्रधान तथा मन्त्री जी की उपस्थिति मे सम्पन्न करवाने का आग्रह किया । जिले को समस्त सभा से सम्बद्ध समाजो ने नवीन समाजो से सम्बद्ध होने की अपील किया तथा डा० विनय प्रताप जी ने सम्बद्धता हेतु पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया ।

सम्वाददाता

१००१ रुपये की थैली भेट

आर्य समाज औरैया (इटावा) के वार्षिकोत्सव पर जिला आर्योप-प्रतिनिधि सभा इटावा द्वारा दि० ३० मार्च ८६ को आयोजित आर्य सम्मेलन मे उक्त उप सभा के प्रधानश्री ओ३म जी (प्रधान आ स बिधूना) ने अपनी उप सभा की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के निरीक्षक श्री ध्रुवपाल सिंह 'अटल' का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए १००१ रुपये को थैली हरिद्वार महाकुम्भ मे वेद प्रचार हेतु सादर समर्पित की । श्री अटल जी ने सभा की ओर से उपसभा के अधिकारियो तथा मन्त्री श्री वेद प्रकाश जी को धन्यवाद प्रदान किया ।

नरेन्द्रार्य

पत्रकार श्री अवनीन्द्र कुमार का निधन

सुप्रसिद्ध हिन्दी के अग्रिणीय पत्रकार श्री अवनीन्द्र कुमार जी का निधन दि० २ मार्च सन् १९ ६ को ७८ वर्ष की आयु मे दिल्ली मे हो गया श्रीअवनीन्द्र जी का जन्म पटना मे हुआ और बिहार विद्यापीठ तथा गुरुकुल कांगडी शिक्षा प्राप्तकी तथा विद्यालंकार की उपाधि धारण करने के बाद समाज सेवा साहित्य सेवा और पत्रकारिताक्षेत्र में पग रखते हुये एक ऐसा समय आया जब अवनीन्द्र जी कुशल सम्पादक तथा इतिहास, राजनीति और अर्थ शास्त्र विषयों के गम्भीर चिंतक एव लेखक की श्रेणी मे आ गये 'सैनिक' आगरा 'विशाल भारत' कलकत्ता, 'नवयुग' देलही, दैनिक हिन्दुस्तान' तथा नवभारत टाईम्स मे सम्पादक के रूप मे आपने विशेष ख्याति अर्जित की तथा आज के दो दशक पूर्व राजनैतिक समस्याओ आर्थिक परिस्थितियों एव केन्द्रीय बजट आदि विषयो पर आपकी विद्वता पूर्ण सम्पादकीय, लेख, जिज्ञासा और आदर की दृष्टि मे पढ़े जाते थे । अवनीन्द्र जी सतत् अध्ययन शीलता, गम्भीर चिंतन एव उससे अर्जित विचारों को सुचारु प्राजलि हिन्दी भाषा मे लेख क रूप मे जन-जन तक पहुचाने की प्रतिक्रिया मे सिद्ध हस्त माने जाते थे ।

स्वतन्त्र पत्रकार के रूप मे 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सदस्य के रूप मे तथा अन्य सामाजिक संस्थानोसे अवनीन्द्र जी का सीधा परिचय था, सरल अर्थशास्त्र पच वर्षी बिजली योजना सामुदायिक योजना, आपकी अर्थशास्त्र विषयक रुचि की द्योतक है साथ ही राधा कृष्णन, मदन मोहन मालवीय आदि की जीवनिया भी पठनीय हैं । हिन्दी विश्वज्ञान कोष के भी आप सम्पादक रहे और राजकीय प्रकाशन आजकल को भी आपने अपने सम्पादकत्व मे ख्याति प्रदान की ।

'आर्यमित्र' ख्याति पूर्ण पत्रकार गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक प्रसिद्ध समाज सेवी, लेखक, चिन्तक एवं सम्पादक श्री अवनीन्द्र जी के निधन पर हार्दिक दुःख प्रकट करता है तथा प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत को शान्ति एव उनके पुत्र श्री सतीश कुमार और अन्य परिवार के जन धैर्य धारण करें क्योंकि समस्त पत्रकार जगत और आर्य समाज उनके दुःख में सम्भागी है ।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०

आर्य समाज गोरखपुर के नव निर्मित "आर्य महिला कक्ष का उद्घाटन सम्पन्न"

दि० २५ मार्च ८६ को दो दिवसीय वृहद उत्सव कर नव निर्मित आर्य महिला कक्ष का उद्घाटन दिल्ली की आर्य विदुषी माता नरेन्द्र कक्कर के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर सम्पन्न हुआ । उक्त अवसर पर वृहद् यज्ञ ब्रह्मचारी अखिलेश्वर व्याकरणाचार्य, स्वामी वेदव्रतानन्द जी तथा माता कृष्णा खन्ना सभी दिल्ली निवासी द्वारा सम्पन्न करवाया गया । प्रात साय भजन प्रवचन उपदेश व्याख्यान आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुये ।

यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर माता कौशल्या अरोरा जी तथा डा० सूर्यदेव प्राणाचार्य जी को भवन निर्माण मे विशेष योग दान हेतु धन्यवाद देते हुए आर्य समाज गोरखपुर के वरिष्ठ उपप्रधान श्री अवधेश कुमार राय ने नव निर्मित विशाल महिला कक्ष महिला आर्य समाज की अध्यक्ष श्रीमती राधा सेठ को महिला समाज गोरखपुर" हेतु समर्पित किया ।

डा० विनय प्रताप
मन्त्री आर्य समाज गोरखपुर

'धर्म निरपेक्ष' भारत गणराज्य और कश्मीर

(श्री त्रिलोकी नाथ भट्ट उपाध्यक्ष काश्मीरी समाज आर्यसमाज ताजगंज, आगरा)

(गतांक से आगे)

बेग साहब को सत्ता से बाहर धकेल कर तो यह विश्वविख्यात 'सेक्युलरिज्म के 'अलमबरदार' अब यहाँ एक "बेताज सुलतान" ही बन गये थे। अब तक किसी हिन्दू छात्र को मेडिकल, इन्जीनियरिंग में योग्यता के उच्चतम शिखर पर होते हुए भी यदि प्रवेश नहीं दिया जाता और वह उच्चन्यायालय से 'रिट पेटीशन में जीत भी जाता परन्तु राज्य सरकार के गुप्त (भेदभाव वाले) आदेशों के प्रभाव में बहुधा उस न्यायालय के आदेशों की भी धज्जियां ही उड़ा दी जाती थीं। फलतः अधिकतर हिन्दू प्रत्याशियों को जीविका की खोज में देश के अन्य भागों में बराबर आना पड़ रहा है।

गांव का इस्लामीकरण

३—शेख साहब के जीवन काल में ही कश्मीर घाटी में बहुत सारे ऐसे गांव तथा छोटे कस्बों के नाम भी बदल दिये गये जो हिन्दुओं के धर्मस्थलों या हिन्दी भाषा से सम्बन्धित थे। जैसे 'उमानगरी' का पुराना नाम शेखपुरा' में परिवर्तित किया गया। यह भी कोई छुपी बात नहीं है।

४-यह भी एक सत्य कथा है कि कुछ ही वर्ष पूर्व इसी धर्मनिरपेक्ष नेता ने राज्य में एक गुप्त आदेश के द्वारा गीता तथा सत्यार्थप्रकाश जैसे ग्रन्थों को समस्त लाइब्रेरियों तथा सरकारी कार्यालयों से हटवाने तक का दुस्साहस किया था। अन्ततोगत्वा राष्ट्रीय आर्य नेताओं के अथक प्रयासों से ही उस आदेश को उन्हें निरस्त करना पड़ा था।

५—स्वर्गीय नेहरू की भांति ही उनकी सुपुत्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी शेख साहब के परिवार को कितने असख्य लाभ पहुचायें। गद्दारी के बदले में उनको इन्दिरा जी ने पुनः गद्दी सौंप तो दी थी। परन्तु उनकी अत्यन्त संकीर्ण तथा अलगाववादी उस प्रवृत्ति को आज तक कोई बदल नहीं सका।

६-१९८२ में शेख साहब के देहावसान के पश्चात् सर्वप्रथम उनके सुपुत्र डा० फारुख ने सत्ता हथिया ली। उनका गत ० वर्षों का जीवन काल भी अब किसी से छिपा नहीं है। अपने तत्कालीन अवस्थ पिता के भारत गुप्त अभियान में डा० फारुख, उनके भ्रातृगण, भगिनी तथा बहनोई जी भी अपना परिचय भलीभांति पहले से ही दे चुके थे। शायद ही कोई भूला होगा।

७—मुख्य मन्त्री पद संभालने के तुरन्त पश्चात डा० फारुख ने अपने स्वर्गीय पिता की भांति ही अपने उपकारक नेहरू परिवार के साथ भी टक्कर की घातक नीति अपनाई। हिन्दू हितों पर कुठाराघात कर, पजाब के आतङ्कवादियों को जम्मू कश्मीर में प्रशिक्षण केन्द्रों की गुप्त रूप से छूट देने तथा कश्मीर में राष्ट्रविद्रोही, पाकिस्तानी तत्वों तथा कट्टरपन्थी साम्प्रदायिक नेताओं के साथ गठजोड़ के बावजूद भी वे अन्ततक अपने को एक 'सेक्यूलर' राष्ट्र वादी ही घोषित करते रहे। परन्तु अपनी कुकृत्यों की पराकाष्ठा पर ही वे तुरन्त ही सत्ता से हाथ धो बैठे थे। उनके कार्यकाल में भी कश्मीर घाटी से हिन्दुओं का धीरे धीरे पलायन जारी रहा क्योंकि उनके सारे ही गुटबाज बहुसंख्यकों के तुष्टीकरण में ही संलग्न थे।

८—दुर्भाग्य से फिर वही सत्ता जी०एम० शाह जैसे 'फिरका परस्त मौका परस्त 'भ्रष्टाचारों के सरगना' तथा सैद्धान्तिक रूप से भारत की सत्ता को सदा चुनौती देने वाले तक पाखण्डी 'नेता' के हाथ आई अपने काले कार्यकलापों से उन्होंने सिद्ध कर दिया कि वास्तव में उन्होंने राष्ट्रीय हितों के साथ विश्वासघात ही किया है। सत्ता से मुक्त होने के कुछ ही दिनों में वे वास्तविक रूप में प्रकट होने लगे हैं। यदि हमारे राष्ट्रीय नेताओं के मस्तिष्क अब कुछ सबक सीखने की स्थिति में पहुच गये हों। तो उनको सर्व प्रथम ऐसे देश के शत्रुओं के विरुद्ध अभियोग चलाने से संकोच नहीं करना चाहिये। वर्तमान में यही समय की पुकार है।

कश्मीरी हिन्दुओं में भय तथा अविश्वास की लहर व्याप्त

५—भले ही अपने देश में इस धर्म निरपेक्षता के कहीं कुछ अवशेष रह गये हों। कम से कम कश्मीर में वह कब का 'दफन' हो चुका है। इस धर्म निरपेक्षता पर सदा से बलिदान होते आ रहे कश्मीर घाटी में बचे खुचे मुट्ठी भर असहाय हिन्दुओं की संख्या जो २० वर्ष पूर्व दो लाख की थी अब मुश्किल से ६०, ६५ हजार ही रह गयी बताते हैं। यह सब अब अस्थिरता, तथा आतङ्क के वातावरण में ही अपने दिन बिता रहे हैं। अनेकों तो अब शरणार्थी बनकर शिविरों में रह रहे हैं। उनके पुनर्वास की भी एक जटिल समस्या उत्पन्न हुई है।

यहां इस तथ्य से इन्कार भी नहीं किया जा सकता कि स्वर्गीय शेख मुहम्मद अब्दुल्ला के जीवनकाल में वहां पर बसे हिन्दुओं के कम से कम जान व माल तो सुरक्षित थे। उन्होंने कभी भी उन अराष्ट्रीय तथा पाकिस्तानी तत्वों को इस प्रकार के अत्याचारों की खुली छूट नहीं दी। वे एक दूरदर्शी तथा परिपक्व राजकीय नेता थे। और जानते थे कि इस विशाल देश में ७ से ८ करोड़ मुसलमान भी अल्पसंख्यकों के रूप में ही बड़े सम्मान तथा सुरक्षता के वातावरण में अन्यत्र निवास करते हैं। परन्तु उनके इन 'जानशीन' (उत्तराधिकारी) नेताओं में सत्ता का उन्माद तथा साम्प्रदायिक कट्टरता एवं कट्टरता कूट-कूट कर भरी होने के कारण वे कभी कोई विशाल राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपना ही नहीं सकते थे। आज कश्मीर का क्या देश का कोई भी सच्चा देशभक्त (हिन्दू) न तो डा० फारुख न ही वहां के किसी अन्य नेता पर विश्वास कर सकता है।

अब धारा ३७० को उड़ाना ही एकमात्र बचाव है

हमारी और समस्त विचारशील भारतियों की अब एक ही धारणा है कि जब तक संविधान की यह देशघातक, धारा ३७० पूर्णतया निरस्त नहीं की जाती। कश्मीर का उन्माद ग्रस्त बहुसंख्यक कभी भी भारत के प्रभुत्व को न अब तक स्वीकार कर चुका है न कभी भविष्य में करेगा अतः पांच वर्ष के लिये वहां का शासन अर्द्ध सैनिक सत्ता के अन्तर्गत ही लाना एकमात्र बचाव का उपाय है। ईश्वर हमारे प्रधान मन्त्री को उक्त (सही) दिशा में बढ़ने की सद्बुद्धि प्रदान करे।

— —

श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान का फरवरी १९८६ का कार्यक्रम

(१) १-१-८६—प्रात ग्राम सोन्धा (गाजियाबाद) श्री सेठ कलेहर लाल जी द्वारा हेतराम जच्चा बच्चा केन्द्र मे यज्ञ एव प्रवचन। तत्पश्चात आर्य समाज हरिद्वार के लिए प्रस्थान।

(२) २-२-८६– आय वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे प्रात ८॥ से ९ बजे तक प्रवचन और कुम्भ शिविर के लिये सहयोग का आह्वान। आर्य समाज हरिद्वार मे कुम्भ मेला वेद प्रचार कैम्प के लिये विशेष बैठक की अध्यक्षता।

(३) ३-२-८६-ग्राम जई (मेरठ) मे दान मिलने वाली भूमि को देखने गया।

(४) ४-५-२।८६-मेरठ में ही सभा एव अन्य सस्थाओं के कार्यों मे सलग्न।

(५) ६-२-८६– गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी डा० भोलाझाल मेरठ– गया।

(६) ८-२-८६–दिल्ली-सावदेशिक सभा के कार्यालय गया।

(७) ९-२-८६—एक कन्या के साथ मुसलमान युवकों के बलात्कार के सम्बन्ध मे उनको गिरफ्तार करवाने मे पुलिस अधिकारियों के साथ व्यस्त।

(८) १०-२-८६-आर्य समाज चौक बुलन्द शहर के शताब्दी समारोह के उपलक्ष मे भव्य स्मारिका का विमोचन। जिला सभा बुलन्द शहर द्वारा स्वागत।

(९) ११-२ ८६-नागरिक परिषद् की बैठक मे सम्मिलित हुये।

(१०) १२-२-८६ आय समाजसे सम्बन्धित विविध कायक्रमोमे सलग्न।

(११) १३-२-८६ हरिशंकर आर्य विद्या सदन की ओर से वीर हकीकत राय की पुण्य स्मृति मे बसन्त मेला म सम्मिलित।

(१२) १४-२-८६-आय कन्या इण्टर कालेज बहादराबाद एव आय समाज बहादराबाद मे स्वागत—भेंट-भाषण तथा वृक्षारोपण का कार्यक्रम।

(१३) १५-२-८६-को मेरठ मे साम्प्रदायिक दगा मे शाति स्थापित करने मे प्रशासन की सहायता मे सलग्न जिसके परिणाम स्वरूप कई दिन की हड़ताल खुली। परन्तु दगे के कारण कर्फ्यू।

(१४) १६-२-८६-मुरादाबाद गया।

(१५) १७-१८-२-८६-लखनऊ—सभा कार्यालय।

(१६) १९-२-८६-आर्य समाज भोलेपुर फतेहगढ़ मे यज्ञशाला से शिलान्यास के अवसर पर भाषण तथा अन्य कायक्रम। आय समाज फर्रुखाबाद का निरीक्षण। आर्य कन्या इण्टर कालेज फर्रुखाबाद मे स्वागत एवं भाषण। साधना आश्रम फर्रुखाबाद का निरीक्षण। मेला राम नगरिया घटिया घाट मे वेदप्रचार शिविर मे भाषण। खुदागज के खेतों को देखने गये तथा वहाँ स्वागत मेरा और कोषाध्यक्ष श्री कृष्णबलदेव महाना जी तथा भाषण। आय समाज गुरुसहायगज और कमालगंज मे स्वागत एवं भाषण।

(१७) २१-२-८६-फतेहगढ़ से कन्नौज के लिये प्रस्थान। वहा से बस द्वारा आर्य समाज औरंय्या (इटावा) पहुचे। कोषाध्यक्ष महानाजी साथ थे। वहा से जीप से आर्य समाज बकेवर पहुचे। जिला सभाके प्रधान–मन्त्री एव मुख्य निरीक्षक ध्रुवपाल सिंह अटल साथ थे। वहां स्वागत और कार्यो के लिये निमन्त्रण। आर्य समाज भरथना (इटावा) तथा दयानन्द बाल मन्दिर भरथना का निरीक्षण। आर्य समाज अजीत मल का निरीक्षण। रात्रि मे आय समाज औरंय्या मे स्वागत और भेंट। तथा भाषण। रात्रि को ११ बजे दिबियापुर के लिये प्रस्थान।

(१८) २३ २-८६-आय समाज मेरठ शहर के वार्षिक निर्वाचन मे सॅलग्न।

(१९) २४-२५ २-८६-को मेरठ मे विविध सस्थाओ के कार्यक्रमो मे व्यस्त।

(२०) २६-२-८६ आर्य समाज माजरा मे ध्वजारोहण-तथा भाषण। वहा से गुरुकुल प्रभात आश्रम। वहा से आर्य समाज घोलडी के वार्षिकोत्सव पर भाषण। वहां से महात्मा अमर स्वामी जी को उनके आश्रम विवेकानन्द नगर गाजियाबाद मे पहुचाया। रास्ते मे आर्य समाज मोदी नगर के प्रधान श्री आचार्ज लाल जी बजाज से मिलते हुए घर पहुचा।

(२१) २७-२८६-रघुनाथ गर्ल्स इण्टर कालेज की सस्थापिका कृपादेवी जी का जन्म दिवस—सस्थापक दिवस के रूप मे मनाया गया। यज्ञ के पश्चात् उन्हे श्रद्धांजलि।

(२२) २८ २-८६-आर्य समाज ब्रह्मपुरी की ओर से ग्राम माजरा मे नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर के उद्घाटन समारोह मे विशेष अतिथि के रूप मे भाषण। वापस शहर मे आकर सयुक्त व्यापार सघ की साधारण सभा मे सम्मिलित होकर कई दिन से चल रही दूकानो की हड़ताल तुड़वाई।

डा० आनन्द सुमन द्वारा शुद्धिया

पटना—६ अप्रैल—आयसमाज के युवा नेता वैदिक प्रवक्ता डा० आनन्द सुमन ने २ अप्रैल से ८ अप्रैल तक बिहार प्रात की आर्य समाज पीरो-आरा, दानापुर—पटना, बाकीपुर मे निरन्तर वैदिक धर्म प्रचार किया।

डा० सुमन की विचार धारा से प्रभावित, पीरो के विधर्मी युवक गोपाल को दीक्षा देकर गोपाल आय नाम दिया गया–दानापुर की कुमारी शाहीन बेगम पुत्री श्री कय्यूम असारी व टुनटुन अंसारी पुत्र सुरजू साव को वैदिक धर्म मे दीक्षित कर कुमारी आशादेवी व अशोक कुमार नाम करण किया गया व दोनो का विवाह सम्पन्न करवाया। डा० सुमन द्वारा विवाह पद्धति की मनोहारी व्याख्या से प्रभावित होकर आर्यजनों ने डा० सुमन की भूरि-भूरि प्रशसा की।

डा० अखलेश शरण प्रधान

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह सँग्राम सेनानी देशभक्तो का अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज करोलबाग दिल्ली मे रविवार चंत्रवदी १२ ता० ६ अप्रैल ८६ को इस समारोह का उदघाटन श्रीमान मोहनलाल जी मोहित प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मारिशस ने किया।

श्री पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी की अध्यक्षता मे यह कार्यक्रम स्वागत समारोह का सम्पन्न हुआ। इस स्वागत समारोह के संयोजक वेद पथिक प० धर्मवीर आर्य झण्डाधारी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी रहे। श्री मोहनलाल जी मोहित ने सर्वप्रथम अभिनन्दन श्री स्वामी विद्यानन्द जी का किया। इस समारोह मे आर्यजगत के सपादक श्री प० क्षितीश जी वेदालङ्कार, श्री प० विद्यासागर जी वेदालङ्कार, श्री पं० वेदप्रकाश जी शास्त्री, श्री प० विद्यासागागर जी शर्मा, श्री सोहनलाल जी कालरा श्री ओमप्रकाश जी क्षत्रपाल, श्री पं० मोदप्रकाश जी शास्त्री, श्री महावीरसिंह जी राठी, श्री देशराज जी प्रेम आदि प्रमुख स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियो का अभिनन्दन आर्यसमाज करोलबाग के अध्यक्ष श्री अजय कुमार जी भल्ला, श्री प० हरिदेव जी शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज करोलबाग, मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी सुनेजा, कार्यवाहक मंत्री श्री दयालचन्द जी आर्य ने और महिला आर्यसमाज की ओर से श्री मा० पूजनीय माता शांतिदेवी जी मलिक ने किया।

प्रीतिभोज का प्रबन्ध आर्यसमाज करोलबाग की ओर से किया गया। इस समारोह के कार्यक्रम को दूरदर्शन पर प्रसारित कराने मे सहायक दूरदर्शन के अधिकारी श्री राजमणि राय जी हैं। जिनके हम आभारी हैं। —संवाददाता

लखनऊ मे नवसस्येष्टि एव आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सवत् २०४३ तदनुसार १० अप्रैल १९८६ को लखनऊ जनपद की विभिन्न समाजों मे नवीन ध्वज लहराकर आर्य समाज कैंट, नगर आर्यसमाज रकाबगंज, विश्व मानव परिषद् सदर लखनऊ आदि के सौजन्य से नव संवत्सर तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह से मनाया गया। नव सस्येष्टि यज्ञ के साथ श्री हरिवंशलाल जी मेहता वेदमनीषी के प्रभावशाली प्रवचन तथा श्री जयदेव शर्मा, श्री पवनकुमार, श्री लालता प्रसाद उपदेशक सभा, श्री अवध नारायण, आनन्द वर्धन, प० रामचरित आदि के भजन एव प्रवचन भी हुए। सेवक दम्पति का भी विशेष सहयोग रहा।

—ज्ञानकृष्ण प्रचारक 'आर्यमित्र'

—आर्यसमाज सूरत मे दिनांक १० अप्रैल १९८६ को अनेकों नर-नारियो की अत्यधिक उपस्थिति के बीच आर्यसमाज का १११ वां वर्ष तथा नवसंवत्सरोत्सव बडी धूमधाम के साथ सुसम्पन्न हुआ, जिसमे प्रखर तथा मार्मिक व्याख्यान भी हुये।

—हरिओ३म् सि० आचार्य

—वैदिक साधन आश्रम तपोवन (देहरादून) मे दिनांक २१ अप्रैल से २६ अप्रैल १९८६ तक श्री महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ के ब्रह्मत्व मे बृहद यज्ञ सम्पन्न हुआ। दिनांक २६ अप्रैल को पूर्णाहुति तथा मधुर भजन एव प्रभावशाली प्रवचन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। —मन्त्री

—तहसील वेद प्रचार सभा अतरौली (अलीगढ़) के सयोजकत्व में जनपद के ग्रामीण क्षेत्रो मे दिनांक ८ मार्च से १५ मार्च १९८६ तक व्यापक रूप से वेद प्रचार किया गया तथा कई स्थानों पर नवीन आर्य समाजो की स्थापना की गई। —मन्त्री

—आर्यसमाज ब्रह्मपुरी (मेरठ) के तत्वावधान मे दिनांक २५ मार्च १९८६ को होली पर्व पर विशेष यज्ञ का आयोजन हुआ तथा विद्वानों के प्रभावशाली प्रवचन हुए। दिनांक २६ मार्च को होली मिलन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। —मन्त्री

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५ मई १९८६ को समाप्त हो जाता है। वी पी भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी पी नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी पी भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी पी भेजने के लिए हमें बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे है। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है।

८९१, ११५?, २३०९, २५२८, २७५४, २९१८, ३३५६, ४४१२, ४५१६, ४६७०, ४७९७, ५५७९, ६१३१, ६१३९, ६४२३, ६५१२, ९८९०, १११९४, ११५९८, ११६००, ११६१९, ११६३३, ११९१८, ११९२२, १२१७४, १२१८०, १२१८२, १२१८९, १२६५०, १२६५९, १२८८३, १२८८९, १२८९४, १२८९५ १२९००, १२९०४, १२९०५, १२९१०, १३१११, १३११३, १३११६, १३११८, १३४६२, १३४६३, १३४६४ १३४६५, १३४६७, १३४६८, १३४६९, १३४७०, १३४७१ १३४७२, १३४७३।

विनीत—

—व्यवस्थापक

भूखी आदिवासी महिलाओ का जबरन विवाह तथा वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर करते 'मुस्लिम गुण्डे'

अरब शेखो को अपनी कमसिन बहनो और बेटियो को बेचने का धन्धा शुरू करने के बाद अब 'मुस्लिम गुण्डों' (यह विशेषण हमारा नही महाराष्ट्र विधान परिषद के कुछ माननीय सभासदों का है) ने महाराष्ट्र के धुले जिले के अक्कलकुआ तालुके की भूखे और भूख से ग्रस्त आदिवासी महिलाओ पर अत्याचार करने आरम्भकर दिये हैं। वे उन्हे मुसलमान बनाने के लिये उनसे जबरन विवाह कर रहे हैं और वेश्यावृत्ति के लिये मजबूर कर रहे हैं।

१६ जनवरी १९८६ को जब महाराष्ट्र विधान परिषद मे शिव सेना के श्री प्रमोद नवलकर तथा अन्य सभासदो ने इस मुद्दे को उठाया, तो राज्य गृहमन्त्री श्री जे टी महाजन ने जो वक्तव्य दिया उससे सभासदो को सन्तोष नहीं हुआ, कारण उनके मतानुसार मन्त्री महोदय मामले की लीपापोती करने का प्रयास कर रहे थे। उनके बहुत जोर डालने पर अन्त मे मन्त्री महोदय को परिषद को यह आश्वासन देना ही पडा कि वे इस मामले की जाच पुलिस गुप्तचर विभाग से करायेंगे। हम मन्त्री महोदय की इस घोषणा का स्वागत करते हुए यह आशा भी करते हैं कि दोषी व्यक्तियों को उचित सजा अदालत द्वारा दिलवाने मे महाराष्ट्र सरकार तनिक भी नहीं हिचकिचायेगी, और धर्मान्ध मुस्लिम नेताओं के दबाव मे नहीं आयेगी।

इस विक्षुब्धकारी घटना ने एकबार फिर यह साबित कर दिया है कि भारत के मुस्लिम समाज मे आज भी ऐसे तत्व मौजूद हैं, जो इस्लाम के नाम पर जघन्यतम कृत्य भी करने को तैयार हैं, और उनकी दृष्टि मे इस्लाम का हित पहले है और देश समाज का बाद मे। यह घटना मन मे एक और प्रश्न को भी जन्म देती है। आखिर इस काण्डमे लिप्त मुसलमानों मे और उन मुसलमानो मे जिन्होंने भारतपर हमलों के दौरान लाखो हिन्दू महिलाओं का नारीत्व हरण कर उन्हे जबरन मुसलमान बनाया था, अन्तर क्या है ? यह बात भी जहन मे आती है कि पाकिस्तान मे जन्म के बाद भारत मे ऐसे तत्वो का सर उठाने का मौका नहीं मिल पायेगा, धूमिल हो चुकी है। ऐसे तत्वो का सफाया करने के लिये जनता और सरकार को कुछ करना होगा।

यह देखकर मन विषाद मे भर जाता है कि हमारे तथाकथित धर्म निरपेक्षवादी नेता 'मुस्लिम गुण्डो' को असहाय महिलाओ के शील तथा भारतीय संस्कृति के मूल्यो के साथ खिलवाड करते देखकर भी खामोश बैठे हैं। इस दब्बूपन और अवसरवादिता की जितनी निंदा की जाये, उतनी कम है। —सदाजीवतलाल महामंत्री, धर्मस्वातन्त्र्य समर्थन समिति १-२ फिरोजा मेन्शन ग्रान्ट रोड स्टेशन पूव बम्बई

—आर्य समाज खुरजा द्वारा दिनांक २ मार्च से ९ मार्च तक ऋषि बोध सप्ताह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमे सभा प्रधान पं० इन्द्रराज, महोपदेशक श्री शिवकुमार शास्त्री हरदोई के उपदेश व प्रवचन हुए। —डा० राजेन्द्र प्रसाद मन्त्री

—दयानन्द बाल मन्दिर टनकपुर (नैनीताल) मे ऋषि बोध पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। रामदेव आर्य प्रधानाचार्य

पंजाब में डी. ए. वी. संस्थाओ का अस्तित्व खतरे में है

(पृष्ठ ५ का शेष)

मुताबिक उनके कालेज की भी कुछ लडकियां सिक्ख फैडरेशन की सदस्य बन चुकी हैं। इनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करने पर फैडरेशन वाले फोन पर धमकाते हैं।

यह तो मैंने पञ्जाब के कुछ प्रमुख डी० ए० वी० संस्थानों के प्रिंसीपलो द्वारा बताई घटनाओ का जिक्र किया है, लेकिन इस बैठक मे पञ्जाब के विभिन्न शहरों से जितने भी प्रिंसीपल आये थे, सभी अपनी अपनी दुखभरी दास्तान पञ्जाब से साथ लेकर आये थे। एक बात पर पंजाब के डी० ए० वी० संस्थानो के सभी प्रिंसीपल एकमत थे कि पंजाब का उग्रवादी धडा अबडी० ए० वी० संस्थानों को हिन्दू संस्थान समझता है और सिक्ख कौम के दुश्मनों मे गिनता है। जिस तेजी के साथ आजकल पंजाब के डी० ए० वी० संस्थानों मे उग्रवादी धडे का दबाव बढ़ रहा है, वह दिन दूर नहीं जब जल्दी ही पंजाब के सभी डी ए, वी संस्थान भी आतंकवाद का एक अखाडा बन जायेंगे।

शिक्षाप्रसार के क्षेत्रमे डी ए वी संस्थान का अपना एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। खास तौर पर पञ्जाबमे तो डी ए वी संस्थानकी जड फैली हैं। महात्मा हंसराज ने सबसे पहले डी ए वी संस्थान की नींव लाहौर मे रखी थी। महात्मा जी पंजाब के थे और असल में डी० ए० वी० संस्थान का सर्वप्रथम उत्थान भी पंजाब से ही शुरू हुआ। अब तक अनगिनित हिन्दू, सिख, ईसाई और मुसलमान विद्यार्थी पंजाब के इन डी ए वी संस्थानों में शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। शिक्षा संस्थान तो वह जगह होते हैं जहा धर्म, ऊंच-नीच और जाति साम्प्रदायिकता एवं बिरादरीवाद से उठकर इस देश के हर नागरिक को विद्या प्राप्त करने का अधिकार है। आज तक पंजाब के सभी डी ए वी संस्थान शिक्षा प्रसार के लिये इसी सिद्धान्त का अनुसरण करते चले आ रहे हैं, लेकिन आज अलगाववादियों ने यह कैसा माहौल पञ्जाब मे पैदा कर दिया है जिससे प्रदेश में लम्बे समय से शिक्षा प्रसार की ज्योति को प्रज्ज्वलित करने वाले डी ए वी संस्थान के अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है।

—अश्विनी

—आर्य समाज शमसपुर सदवो (बिजनौर) मे दयानन्द बोधरात्रि धूमधाम से मनाया गया तथा दिनांक २ मार्च से ९ मार्च १९८६ तक प्रभात फेरी आदि का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मंत्री आर्य समाज

—आर्य समाज हेदरगंज बाजार, पो० खपराडीह (फैजाबाद) का ३३ वा वार्षिकोत्सव दिनांक २८ से ३० मार्च तक समारोह से मनाया गया। मन्त्री

—आर्य समाज मोलेपुर (फर्रुखाबाद) के मंत्री श्री लक्ष्मी नारायण आर्य, समाज के वयोवृद्ध सदस्य श्री पंडित शांति स्वरूप, श्री वसन्त सिंह कटियार आदि ने दिनाक ३ अप्रैल १९८६ को सेन्ट्रल जेल फतेहगढ़ मे बिजनौर एवं नगीना से आये सत्याग्रहियो से मिलाकर स्थित की जानकारी की तथा उन्हे फर्रुखाबाद की मशहूर दालमोट भेंट की। श्री गुरुदत्त शर्मा

○ ओ३म् ○

❀ आवश्यक सूचना ❀

उ.प्र. की समस्त आर्यसमाजों के माननीय प्रधान मंत्री जी की सेवा में-

प्रिय महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश शताब्दि समारोह की स्मारिका के प्रकाशनार्थ निम्न सूचनाएं अपेक्षित हैं, यथाशीघ्र भेजकर कृतार्थ करें। इस ग्रन्थ में आपकी गौरवशाली आर्यसमाज का उल्लेख आवश्यक है।

आपका

मनमोहन तिवारी

मन्त्री सभा

१-नाम आर्यसमाज

२-स्थान पो० जिला

३-आर्यसमाज की स्थापना तिथि —

४-आर्य प्रतिनिधि सभा में प्रविष्टी की तिथि

५-आर्यसमाज की स्थापना के समय, पदाधिकारियों के नाम

प्रधान —उप प्रधान —मन्त्री उपमंत्री —कोषाध्यक्ष —लेखापरीक्षक —पुस्तकाध्यक्ष

६-आर्यसमाज के वर्तमान पदाधिकारियों के नाम तथा निवास के पते सहित—

(अ) प्रधान—
(ब) उप प्रधान—
(स) मन्त्री—
(द) उपमन्त्री—
(घ) कोषाध्यक्ष—
(ङ) पुस्तकाध्यक्ष—
(च) निरीक्षक—

७-आर्यसमाज की वर्तमान सदस्य सख्या— सहायक सख्या

८-आर्यसमाज का भूमि भवन है या नहीं, यदि है तो उसका मूल्य तथा क्षेत्रफल

९-आर्यसमाज मे पुस्तकालय है या नहीं, यदि है तो पुस्तक संख्या— तथा मूल्य

१०-आर्यसमाज द्वारा सचालित सस्थाओ तथा शिक्षा संस्थाओं का नाम तथा प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष या प्रबन्धक का नाम व निवास का पता—

११-आर्य वीर दल है या नहीं, उसकी संख्या—

१२-दैनिक अथवा साप्ताहिक सत्संग होते हैं या नहीं—

१३-वेद प्रचार की व्यवस्था का उल्लेख—

१४-आपकी समाज 'आर्यमित्र' साप्ताहिक की ग्राहक है या नहीं ?

१५-विशेष वक्तव्य—विगत तीन वर्षों मे आपकी समाज द्वारा किया हुआ कोई उल्लेखनीय कार्य—

(उदाहरणार्थ) जैसे- शुद्धि, भवन निर्माण, निर्धन सेवा, औषधालय, आदि-आदि।

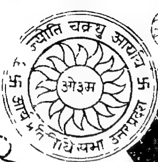
हस्ताक्षर

दिनांक मन्त्री प्रधान

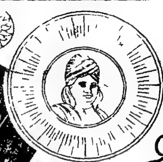
आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन. पी. ७९
मा० वैशाख १४
वैशाख कृष्ण ११, रविवार
४ मई १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र



आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.



१८८६-१९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी.कालेज, लखनऊ

विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक
गतिविधियों पर विचार

इन्द्रराज प्रधान	मनमोहन तिवारी मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

[illegible] णस्वामी भवन ५मीराबाई मार्ग, लखनऊ१. फोन ४५९९३

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं० १२४१/५७ घोषणा पत्र सं० ७ / १८-२-८५

वर्ष ८९] मा० वैशाख २१, २८, वैशाख शुक्ल २. ९, रविवार संवत् २०४३ वि०, दि० ११, १८ मई १९८६ [अङ्क १९-२०

प्रार्थना

ओं देव्यावध्वर्यू ऽ आ गत रथेन सूर्यत्वचा । मध्वा यज्ञ समञ्जाथे । त प्रत्नथाय वेन- श्चित्र देवानाम् ।।

—यजु० ३३-३३

भावार्थ–हे दिव्य गुणसम्पन्न राष्ट्रयज्ञ के दो नेताजनो ! सूर्य के समान रंगवाले रथ के साथ आओ । राष्ट्रयज्ञ को मधुर सुख से सगत करो ।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–
मनमोहन तिवारी
सम्पादक–
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

मुसलमानो की उभरती साम्प्रदायिक आकांक्षायें भारत को पुनः विभाजित करने की योजना

मु० महिला विधेयक पारित होने से हौसले बढ़े

प्रशासन को सभा प्रधान की स्पष्ट चेतावनी

भारतीय जनता से जागरूक रहने की अपील



श्री प० इन्द्रराज जी सभा प्रधान

श्री राजीव गांधी के नेतृत्व मे कांग्रेस (इ) और सरकार ने जिस प्रकार से साम्प्रदायिक मुस्लिम मुल्लाओं के सामने घुटने टेके हैं उससे आज यह स्पष्ट लक्षित हो रहा है कि भारत को फिर से विभाजित करने की योजना और राष्ट्र की सीमाओं को सकुचित करने का षडयन्त्र चल रहा है। यदि समय रहते भारत की जनता जागृत नहीं होती है तो हमे दुखद परिणाम देखने पड़ेंगे।

उपरोक्त शब्दों के साथ अपने मत को व्यक्त करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री प० इन्द्रराजजी ने गम्भीर चेतावनी दी है। प्रधान जी का कहना है कि शासन ने लोकसभा मे मुस्लिम महिला विधेयक ऐसे घोर साम्प्रदायिक कानून को पारित कराये वह भी अनुशासन, व्हिप और यहा तक कि संसद सदस्यता से पृथक करने की धमकी देकर ? जबकि प्रत्येक राष्ट्र और प्रगतिवादी व्यक्ति इसके विरोध मे था और इससे शक्ति पाकर मुस्लिम सम्प्रदाय के नेता देश मे साम्प्रदायिक विद्वेष फैला रहे हैं। राम जन्म भूमि के विवाद को लेकर दिनांक ३० अप्रैल १९८६ को सारे राज्य मे जो मुस्लिम प्रदर्शन हुए हैं वह परिस्थितियो को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं। सैयद शहाबुद्दीन जो जनतापार्टी के तो ससद सदस्य है परन्तु इस समय पूर्ण इस्लामियत के रग मे रगे हुए जहरीले प्रचार कर रहे है अभी आस्ट्रेलिया के दूर दर्शन को एक संदेश देते हुए सैयद साहब ने कहा कि "भारत के मुसलमानो मे इतनी शक्ति है कि वह इस देश मे इस्लामियत का झण्डा बुलन्द कर सकते है और हिन्दुओ को कुचल सकते हैं अगर एक भी मस्जिद मन्दिर मे बदली गई तो उसके परिणाम सामने आयेंगे। इतना ही नहीं सैयद साहब ने स्पष्ट धमकी दी है कि "अगर मुसलमान तबलीगी झंडे के नीचे विद्रोह करते हैं तो उन्हें सेना कुचल नहीं सकती है बल्कि भारतीय सेना का मुसलमान उनके साथ विद्रोह मे होगा। सैयद शहाबुद्दीन के इस वक्तव्य को ससद सदस्यों ने भी गम्भीर रूप से लिया और जब ससद मे इस प्रश्न को उठाने का प्रयास किया गया तो अध्यक्ष ने अनुमति नहीं दी और सरकारी सदस्य मौन रहे। यह परिताप की बात है। इससे बडा परिताप और क्या हो सकता है। यही नहीं सभा प्रधान जी का यह भी कहना है कि प्रधान मन्त्री ने जो मुसलमानों के आगे घुटने टेके हैं उसके नये रूप इस प्रकार सामने आ सकते हैं–सारे भारत में उर्दू दूसरी राज भाषा के रूप मे, मुसलमानो की ससद, विधान सभा और नौकरियों मे अनुपात से दूना आरक्षण, मुस्लिम वक्फों को पूरी आर्थिक सहायता और साथ ही मुस्लिम फौज और मुस्लिम पुलिस भी तैनात की जायगी। सभा प्रधान ने गम्भीर चेतावनी देते हुए शासन को समय के पहले सावधान होने की सलाह दी है। हिन्दू जनता जागृत हो क्योंकि काश्मीर मुस्लिम साम्प्रदायिक रंग में रग रहा है वहां कोई भी अनहोनी हो सकती है। खालिस्तान की घोषणा अमृतसर गुरुद्वारे से ही चुकी है आज भी निरीह हिन्दुओं की हत्यायें पंजाब मे हो रही हैं।

सभा प्रधान जी ने इस वक्तव्य द्वारा भारतीय जनता को जागृत किया है और यदि सत्तारूढ़ दल की यही स्थिति रही तो ऐसी भी स्थिति आ सकती है कि आर्यसमाज देश के नेतृत्व के लिए सक्रिय होकर एक राजनैतिक दल के रूप में सामने आने के लिए विवश हो।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आर्य्यमित्र

लखनऊ— रविवार ११ १८ मई १९८६ दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

सम्पादकीय

लोकतन्त्र------ ?

विभिन्न प्रकार की शासन पद्धतियों मे लोकतन्त्र एक सत्यनिष्ठ शासन पद्धति है जिसमे मानव के विचार उसकी भावना तथा उसके प्रतिक्रिया का समादर किया जाता है इसीलिये साम्राज्यवाद अधिनायकवाद राज्यपद्धति इन शासन तन्त्रो मे लोकतन्त्र को सर्वश्रेष्ठ स्वीकार किया गया है। भारतवर्ष मे लोकतन्त्र प्रणाली अति प्राचीन है और वैदिक तथा प्राग ऐतिहासिक काल से इसकी परम्परा हमे मिलती है और ऐतिहासिक प्रामाणिक युग मे भी भारत वर्ष मे लोकतन्त्र की प्रतिष्ठा रही। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी आर्य समाज संगठन के लिये लोकतन्त्रीय प्रक्रिया को श्रेयस्कर स्वीकार किया तभी आर्य समाज मे निर्वाचन आदि पद्धति कार्यशील हुई। भारतवर्ष मे स्वतन्त्रता संघर्ष के बाद जब विदेशी दासता से मुक्ति प्राप्त हुई तो लोकतन्त्र की वरियता को स्वीकार करते हुए भारतीय संविधान की संरचना हुई जिसमे मानव के मूलभूत अधिकार उसकी विचार और अभिव्यक्ति को प्रमुखता प्रदान की गई तथा जन संख्या की दृष्टि से भारत विश्व मे एक महान लोकतन्त्रीय परम्परा युक्त राष्ट्र के रूप मे उदय हुआ।

अभी भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति के अड़तीस वर्ष व्यतीत हुए है परन्तु अनुभव किया जा रहा है कि जिस लोकतन्त्र की बुनियाद यहाँ रखी गई वह लोकतन्त्र पूर्ण विकसित नहीं हो सका और उसकी जड़ो पर ही स्वार्थी तत्वो द्वारा कुठाराघात प्रारम्भ हो गया है लोकतन्त्र मे प्रत्येक व्यक्ति को अपने अभिव्यक्ति का अपने आत्मा की अनुरूप ध्वनि को व्यक्त करने का अधिकार है और लोकतन्त्र का सर्वोच्च सुन्दर स्वस्थ केन्द्र है 'लोकसभा' जहाँ निर्वाचित सदस्य अपने विचार और अभिव्यक्ति स्वतन्त्रता से रख सकें और आत्मा की पुकार के अनुकूल आचरण कर सके। परन्तु आज इसी लोकतन्त्र मे अधिनायकवाद का उदय हो रहा है। सामान्य जनता इन परिवर्तनो की ओर ध्यान नही देती परन्तु बुद्धि जीवियो को ध्यान देना चाहिये कि यदि अधिनायकवाद अथवा डिक्टेटर शिप प्रबल होती गई तो लोकतन्त्र को ही नही राष्ट्र को भी हानि हो सकती है।

विगत वर्ष उन्नीस सौ चौरासी के निर्वाचन मे कांग्रेस (इ) को आवश्यकता से अधिक सफलता और बहुमत लोकसभा के निर्वाचन मे प्राप्त हुआ वह सफलता किसी व्यक्ति विशेष का जादू नही कांग्रेस नेता वर्ग पर जनता का मुग्ध होना नही था अपितु श्रीमती इन्दिरा गांधी की जिन परिस्थितियों मे हत्या की गई उससे देश में आक्रोश व्याप्त हुआ और जनता ने सहानुभूति पूर्वक कांग्रेस (इ) को अपना समर्थन प्रदान किया परन्तु कांग्रेस (इ) उस बहुमत को देखकर जनता के प्रति आभारी होने के स्थान पर, उसके नेताओं मे मद और आत्म गौरव की एक हल्की सी लहर झलकने लगी। लोकतन्त्र में सत्ता एक व्यक्ति मे सिमट कर नही रहनी चाहिए ? परन्तु यह दोष श्रीमती इन्दिरा गांधी के समय में भी था कि कांग्रेस अध्यक्ष और प्रधान मन्त्री के पद को सुशोभित करती रही तथा वही क्रम श्री राजीव जी को भी प्राप्त हुआ। इससे संस्था मे लोकतन्त्रीय विकास न होकर अधिनायकवाद का विकास हुआ। अधिनायकवाद के विकास का एक उदाहरण सामने है, परित्यक्ता मुस्लिम महिला विधेयक जो लोकसभा मे सत्तारूढ दल द्वारा उपस्थित किया गया उसकी प्रतिक्रिया सारे भारतवर्ष मे एक स्वर से हुई और इस विधेयक को कायम का मुस्लिम साम्प्रदायिकता के सामने घुटने टेक देने की नीति कहा गया। कांग्रेसीजनो ने अनुरोध किया कि इस विधेयक पर लोक सभा के प्रत्येक सदस्य को खुलकर बोलने का और अपने विचार प्रकट करने का अवसर मिलना चाहिये। इस विधेयक के सम्बन्ध मे दलीय अनुशासन व्यवहार मे न लाया जाय। कतिपय सदस्यो ने श्री राजीव गांधी जी से लिखित रूप मे भी अनुरोध किया। कितना अच्छा होता कि श्री

(शेष पृष्ठ १० पर)

प्रसिद्ध आर्य नेता श्री ओ३मप्रकाश त्यागी का निधन !

आर्यजगत की अपूरणीय क्षति

हृदयविदारक समाचार

अति दुःखद एवं शोकपूर्ण समाचार है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामन्त्री तथा भूतपूर्व सासद एवं भा० जनता पार्टी के प्रसिद्ध नेता श्री ओ३मप्रकाश जी त्यागी का दिनाक १० मई १९८६ को हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। इस समाचार से सम्पूर्ण आर्यजगत मे एक शोक की लहर दौड़ गई। आप एक निर्भीक, कर्त्तव्यनिष्ठ और प्रसिद्ध आर्य नेता थे जिनका जीवन ही आर्यसमाज और आर्य परिवार के लिये अर्पित था। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मन्त्री श्री प० मनमोहन जी तिवारी ने अपने प्रिय आर्य नेता के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए व्याकुल हृदय से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की, तथा उनके स्व० आत्मा की शांति तथा शोकाकुल परिवार के प्रति असीम धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के कार्यालय के समस्त कर्मचारियो ने अपने स्वर्गीय नेता के प्रति शोक सभा करके उनके आत्मा की चिर शान्ति एवं दुःखी परिवार के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की। —संवाददाता

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का रजिस्टर्ड कार्यालय, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ पर ही है, अन्य कोई नहीं है।

उत्तरप्रदेश की समस्त आर्यसमाजों एवं जिला आर्य उप सभाओ के अधिकारियो की सेवा मे—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने अपनी अन्तरंग के निर्णय के अनुसार श्री कैलाशनाथसिंह तथा श्री राजपाल आर्य एवं उनके साथियो को छः साल के लिए निष्कासित किया हुआ है, इसके उपरान्त भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के द्वारा निष्कासित व्यक्तियो ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के नाम से एक परिपत्र, १० मार्च १९८६ को निकाला है, जिसमे उन्होंने अपने को सभा का अधिकारी घोषित किया है, जो पूर्णतया असंवैधानिक है, क्योंकि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ, रजिस्टर्ड कार्यालय के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी हैं, जिसे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं रजिस्ट्रार सोसाइटी फर्मस् चिट् फड, उ० प्र०, लखनऊ द्वारा मान्यता प्राप्त है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ जो रजिस्टर्ड कार्यालय है—के द्वारा प्रदेश की समस्त आर्यसमाजो तथा शिक्षण संस्थाओं का संचालन होता है।

समस्त आर्य बन्धुओ से निवेदन है कि श्री कैलाशनाथसिंह एवं श्री राजपाल आर्य स्वयंभू नेता के भ्रम से भ्रमित न हों तथा इन्हें किसी भी प्रकार का सहयोग न दें, साथ ही साथ यह भी निवेदन करना है अपने परिपत्र मे, १५, १६, १७ मई, ८६ को मेरठ मे आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० शताब्दी समारोह के नाम पर धन इकट्ठा करने का प्रयास कर रहे हैं उन्हे किसी भी प्रकार का धन न भेजें।

तथा अपने समाजो के वार्षिक चित्र भी आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के पते से भेजे। इस सम्बन्ध मे जो भी जानकारी करना चाहे आप श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उ० प्र०–५ मीराबाई मार्ग लखनऊ–२२६००१ पर सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

भवदीय

इन्द्रराज	चन्द्रकिरण शर्मा	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्य समाज

(श्री डा० मुन्शीराम जी शर्मा 'सोम' कानपुर)

आर्य समाज आर्यों का समाज है, अर्थात् ऐसे नर नारियों का जो दान पूजा और समतिकरण जैसे उदात्तभावों को हृदय में भरे हुए निरन्तर यजन कर्म मे लीन हैं। वैदिक पुरुष सूक्त मे इस विश्व को सहज यज्ञ भावना से विभूषित कहा गया है जिसमे वसन्त आकर घी की आहुति देता है, ग्रीष्म ईधन बनता है और शरद हवि सामग्री का रूप धारण करती है। गीता न भी प्रजा को यज्ञ भाव के साथ ही निर्मित कहा है ऐसे यजनशील आर्यों का समुदाय सचमुच सराहनीय है।

भारत जस आय प्रदेश को दस्युओ न बाहर स आकर अनेक बार पददलित किया है आय यजनशील थे, तो दस्यु यज्ञ-विध्वसक, तोड फोड करने वाले, लोलुप और व्रतहीन। ऐस तामसी एव राजसी दुष्ट नर सत्व गुण सम्पन्न आर्यों पर अपने बल का प्रयोग करके जब स्वाथ सिद्धि मे जुटे तो समाज विशृङ्खलित हो गया। आर्यों के सत्व न उसे सम्भाला, दस्युओ को अपने चरित्र से प्रभावित किया और परिणामत घातक भी उनके साथ आय भाव को अपनाने लगे। भारत में आज भी अनेक वश आपको ऐसे दिखाई देंगे जो बाहर न आय जान पडते हैं परन्तु आर्यों मे घुल-मिल गये है। उन के कुछ रीति रिवाज, प्रथायें, चाले आपके चाल-चलन से पृथक हैं फिर भी वे आपके साथ हैं और इस देश को अपनी मातृभूमि मानते हैं।

जो दस्यु आपसे न मिल सके, उन्होने आर्यायन (ईरान) और कुभा (काबुल) जैसे प्रदेशो को आर्यो स विहीन कर दिया, उन्हे या तो अपने जैसा बना लिया या नष्ट कर दिया या भगा दिया। कुछ ऐस भी निकले जिन्होने तल-वार के बल पर अपना शासन भी जमा लिया। तेरहवी शताब्दी स लकर बीसवी शताब्दी तक कभी तुर्क, कभी मुगल और कभी आग्ल अपना प्रभाव जमाये रहे। पर आय भी चुप होकर नही बैठ। उनका सत्य प्रबल रहा। उसने घुटने टेकना, सामना करना सीखा है। महाराणा प्रताप, वीर वर शिवा और छत्रसाल, गुरु गोविन्द सिह के नाम आप सबकी जिह्वा पर हैं। आय स्वातन्त्र्य सूय की ये प्रखर रश्मियाँ बादलो को फाडती रही है और आपका तम निकाल कर प्रकाश देती रही है।

१८५७ का विप्लव इतिहास मे प्रसिद्ध है। आय समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द के आविर्भाव का वही काल है। पारतन्त्र्य के कटु परिणाम उनके सामने नग्नरूप म उपस्थित थ। देश कितने दिनो म उन्हे भोग रहा है। आर्यों की रीति नीति को उन्होंने कितना दूषित कर दिया है। वेद कैसा विस्मृत हुआ है। धन्य है वे पीढिया जो वैदिक ऋचाओ को पाठ सहित कण्ठस्थ करके वद की सुरक्षा करती रही। औदीच्यो का यह सुपुत्र उदीची उदय की दिशा दिखाने के लिए कटिबद्ध हुआ। गुरु विरजानन्द उसके पथ प्रदशक बने। सरस्वती का वरद पुत्र जुट गया—देश भर म वेदो का सन्देश पहुचाने के लिए। वेद आर्यों की अनादि निधना वाणी-स्मृतियो, शास्त्रो और काव्यो का आदि स्रोत सबके लिए है विश्व भर के लिये है। वेद का उद्घोष कृण्वन्तो विश्व आयम् तथा अपघ्नतो अराव्ण विश्व भर को आय बनाओ सद्गुण सम्पन्न करो अदानी और अयाजक दस्युओ का सहार करो– उनके अन्दर म दस्युता को हटाकर उन्हे आयत्व म दीक्षित करो विश्व यजनशील बने परस्पर मिल कर एक दूसरे के लिए स्वार्थ द्वारा त्याग दान और प्रेम का पाठ पढें। आयत्व वेद के 'दुरितानि परासुव और 'भद्र आसुव तथा अग्नेय सुपथा' के व्रत ग्रहण करने म निहित है। आय समाज की स्थापना के मूल मे महर्षि का यही वेदादश था।

आयत्व की यही पुनीत भावना महर्षि को उनके जीवन के अन्तिम क्षणो मे राजस्थान ले गई ? क्यो ? इसलिए कि ब्रह्म को क्षत्र की आवश्यकता होती है। अकेला ब्रह्म वाणी मात्र है।

जब तक क्षत्र रूपी भुजाओ का बल उसे प्राप्त नही होता तब तक समाज प्रेरित और सचेष्ट नही किया जाता। राजस्थान क्षात्रशक्ति का गढ रहा है। देश और धर्म की रक्षा के लिए उसने वीर बाँकुरे योद्धा उत्पन्न किये हैं। यदि यह राज्य श्री यह क्षत्रशक्ति, ऋषि के साथ उठ खडी हो और देश देश की स्वाधीनता तथा समाज को धर्मधीलाता देने के लिये कटिबद्ध हो जाय तो यह आर्यों का देश, यह आर्यों का समाज विश्व मे पुन वेदो का डका बजा सकता है और अपने को अभ्युदय तथा नि श्रेयस की ओर ले जा सकता है। ऋषि चले राजस्थान पहुँचे कुछ काय भी हुआ, पर वहा तो मुगलो की विरासत मदिरापान मास भक्षण, वेश्यावृत्ति का नग्न नृत्य हो रहा था। इस दुवृत्त दौर म ब्रह्म की वाणी सुनने और तदनुकूल चलने के लिए कौन तैयार होता ? आशाओ के विपरीत महर्षि को विष पान कराया गया और अजमेर मे वे प्रणव जाप करते हुए कुछ भक्तो को यह कह कर ससार म विदा हो गये– मेरे पीछे खडे हो जाओ '।

ऋषि के भक्तो मे अनेक त्यागी, बलिदानी महापुरुष आन हैं। महात्मा हसराज और स्वामी श्रद्धानन्द के नाम आप सबकी जिह्वा पर है। आर्यसमाज ने गुरुकुलो और डी० ए० वी० सस्थाओ के माध्यम मे देश और धर्म के जागरण म अनुपम काय किया है। आय वश को समृद्ध करने के लिए जो प्रयत्न आय युवकों तथा तरुणो ने किये हैं, ये भी सब विदित है। अपने ही जो बन्धु मुगल काल मे बलात मुसलमान बनाये गए थे व भी हिन्दूसमाज मे पुन सम्मिलित हो रहे हैं। काय हुआ है, पर अभी बहुत कुछ शेष है।

मुसलमान और ईसाई वर्गों के मनसूबे, पाकिस्तान अरब खाडी देश अमेरिका तथा ऐसे ही अन्य भारत विरोधी देशो की सहायता तथा उकसाहट पाकर हमारे उज्ज्वल भविष्य को धूमिल करन मे सलग्न हैं। खेद है हमारे कुछ बन्धु भी उनका साथ देकर देशद्रोह फैला रहे हैं और पाकिस्तान की तरह खालिस्तान बनाने पर तुले हुए है। कश्मीर हमारे ही नेताओ द्वारा पृथक सा कर दिया गया था पर अब सेना सचेत है और देश रक्षा में प्राणपण से जुटी है। आय समाज को इस दिशा मे विशेष रूप से काय करना है। महर्षि का स्वप्न देश की अखण्डता और धर्म सस्था-पना का पुण्य उद्देश्य उसके समक्ष है। आर्यसमाज के सदस्य उसके वीर पुत्र जुटे है। सभी दिशाओं म उनकी दृष्टि लगी है। आय समाज की स्थापना के मूल मे महर्षि का वैदिक घोष कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' हम सबको जीवन मे चरितार्थ करना है। जब भारत और उसके साथ विश्व भर के मानव आर्यत्व से ओत प्रोत हो जावेंगे, तो यह वसु धरा वस्तुत और प्रसविनी सिद्ध होगी– यह भारत वस्तुत प्रकाश का केन्द्र सिद्ध होगा। औदीच्य की उदीची दिशा हमे सतत उत्–ऊपर श्रेष्ठत्व की ओर प्रेरित करती रहे— आर्यसमाज निश्चित रूप से आर्यों का समु-दाय बने— दस्युता दमन और वैदिकता का प्रसार होता रहे— यही इस वृद्ध सोम' की प्रभु से विनीत प्रार्थना है।

—

भजनोपदेशको एव उपदेशको के सम्मान को योजना–

–आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने उन उपदेशको एव भजनोप-देशको को जिन्होंने अपने जीवन का अधिकाश भाग आर्य समाज की सेवा एव वैदिक धर्म के प्रचार म व्यतीत किया है को सम्मानित करने की योजना बनाई है जिसमे उन्हे नकद धनराशि एव शाल देकर सस्मानित किया जायेगा।

यह समारोह नवम्बर १९८६ के द्वितीय सप्ताह मे नई दिल्ली म सम्पन्न होगा। आर्य जनता से प्रार्थना है कि ऐसे महानुभावो के नाम एव पते से सूचित करें। इस योजना मे सेवा निवृत्त वृद्धावस्था को प्राप्त उपदेशक एव भजनोपदेशक भी सम्मि-लित हो सकते हैं अथवा अपना कार्य विवरण भेज सकते हैं, सम्मान के लिए बुलाये जाने वाले व्यक्तियो का आने जाने का मार्ग व्यय भी प्रदान किया जायेगा तथा आवास व भोजन की व्यवस्था नि शुल्क होगी।

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा ६५ वर्षो तक अपने मधुर भजनों से आर्य समाज की सेवा करने वाले ८३ वर्षीय श्री आशानन्द जी भी इस योजना के लिए काफी धनराशि से सहयोग कर रहे हैं।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें—

रामनाथ जी सहगल मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधिसभा
मन्दिर मार्ग नई दिल्ली ११०००१

—आय समाज भीकमपुर जैनी का विशाल छठवा वार्षिकोत्सव दिनांक ३० ३१ मई व १ जून १९८६ को बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है जिसमे आय जगत के उच्च कोटि के विद्वान् सन्यासी व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इसी अव सर पर दिनांक २८ मई से १ जून १९८६ तक आर्यवीर दल के भव्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होगा उपस्थिति प्रार्थनीय है। मन्त्री आर्य समाज

'अमेरिका और कर्नल गद्दाफी'

(आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक)

अमेरिका के छट वेड ने दिनांक १९ अप्रैल १९८६ को अरब के एक देश लीबिया पर भयकर हवाई आक्रमण करके उसके दो नगरो को आतङ्कित किया। कितने ही नागरिक मरे भवन गिरे और कर्नल गद्दाफी का निवास स्थान भी अग्नि की लपटो मे आ गया। श्री गद्दाफी बच गये परन्तु उनके परिवार के कुछ जन और सेवक हताहत हुए। ससार के कुछ देशो न जो सैनिक शक्ति से विहीन हैं इस हमले की निन्दा की। गुट निरपेक्ष देश भी चिल्लाये और भारत के प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाँधी ने लोक सभा मे अमेरिकी कार्यवाही की निन्दा की। उचित भी है कि किसी देश को या एक छोटे साधन विहीन लीबिया को अमेरिका जैसा शक्तिशाली देश आतंकित करे। परन्तु भावावेश मे न आकर यदि सही दिशा से देखा जाय तो नीति शास्त्र का भी आधार है कि वही राष्ट्र जीवित रह सकता है जो अपने देश की ओर आख उठाने वाले की आँख निकालने की क्षमता रखता हो। अमेरिका कोई पागल और शक्ति से मदान्ध देश नहीं हैं। अमेरिका को जब निश्चय हो गया कि लीबिया के कर्नल गद्दाफी अपनी शक्ति से अधिक उचक रहे थे और कुछ दिन पूर्व पश्चिमी जर्मनी में एक बम विस्फोट हुआ जिसमे कई अमेरिकन नागरिको की मृत्यु हुई उसके पीछे लीबिया का हाथ था। साथ ही एक अमेरिकन वायुयान के अपहरण मे भी लीबिया का षड्यन्त्र था और अमेरिका तथा ईसराइल के सम्बन्धों मे लीबिया का अनावश्यक हस्तक्षेप था। इस प्रकार अरब का एक छोटा सा देश जो पेट्रोल बेचकर थोडी सी अर्जित सम्पत्ति और सेना पर इठला रहा था तब उसे उचित सबक मिलना आवश्यक था अन्तत अमेरिका ने वही किया, क्योकि यदि कोई राष्ट्र अपना अपमान सहन करता है तो वह राष्ट्र विनाश की ओर जाता है।

भारत मुस्लिम देशो का मित्र है। लीबिया मुस्लिम देश है इसलिये प्रधान मन्त्री अमेरिका के विरुद्ध बोल उठे और उनके स्वर मे स्वर दूसरे भी मिलाने लगे। परन्तु क्या हमने अपनी ओर देखा ? रोज भारत और पाकिस्तान के सीमा पर, भारत और बाँगला देश की सीमा पर विदेशी सेनाओ द्वारा भारतीय सैनिकों पर गोलिया चलाई जाती है। लद्दाख के ऊपर का भारतीय क्षेत्र सियाचिन झील पर पाकिस्तानी प्रभुत्व बढ रहा है। हमारी भूमि पाकिस्तान चीन को दे रहा है। सिख पाकिस्तान मे प्रशिक्षण ले रहे हैं। काश्मीर मे भारत विरोधी मुसलमान पाकिस्तान के इशारे पर उछल-कूद रहे हैं। लङ्का मे भारतीय वश के तमिलो को विनाश किया जा रहा है परन्तु क्या किसी स्थल पर ऐसा कस कर जवाब हमने दिया है कि पाकिस्तान की आख दुबारा भारत की ओर न उठे। हमने काश्मीर का कुछ भाग कायरतावश छोडा लाहौर तक पहुचकर उसे वापस किया, ढाका मे भारतीय सेनायें विजयी हुई। हम वहाँ से लौट पडे जिसका परिणाम हुआ शेख मुजीबुर्रहमान की हत्या और उसका परिणाम है कि बागला देश कहीं जल के विवाद को लेकर कहीं सीमा विवाद को लेकर हमें आख दिखाने से नही चूकता। कुछ दिन पूर्व की बात है कि त्रिपुरा की दक्षिणी सीमा जो बागला देश से मिली हुई है और महुरी नाम की एक [illegible] बनाती है वर्षा मे यह उग्र हो जाती है गाव और खेतो को नष्ट करती है। बगला देश ने अपनी ओर इसके बाध की दीवार उठाई जिससे इसका जल प्रवाह भारत की ओर और दूर तक विनाश करने लगा जब भारत ने अपनी ओर बाध बनाने का कार्य प्रारम्भ किया तो बगला देश को शका हुई कि महुरी नदी का पानी उसके देश के लिए घातक होगा अत उसने बाध बनाने के कार्य को रोकने का सकेत किया। इतना ही नही बाध बनाने वाले भारतीय दल पर बगला देश ने गोली वर्षा करा दी परन्तु भारत सरकार ने इस अपमान को सहकर भी बाध के कार्य को रोक दिया। उचित तो यह था कि उस गोली वर्षा का यदि करारा जवाब दिया जाता जैसा अमेरिका ने लीबिया को दिया है तो ये क्षुद्र राष्ट्र आख तरेरना बन्द कर देते।

आज कुछ दुर्बल विकासशील राष्ट्र गुट निरपेक्षता का नारा लगाकर शान्तिवादी बनते है परन्तु यह छोटे सभी राष्ट्र अमेरिका अथवा रूस के सहारे पर ही जीवित हैं। रूस का शासन लोहे की दीवारो मे बन्द है वहा विदेशियो को परिश्रय नहीं है, परन्तु अमेरिका दूसरे देशो को विकसित होने में सहायता दे रहा है। आज भारत ही अमेरिका से लाभान्वित होता है कि कितनी बडी सख्या मे भारतीय अमेरिका मे जीविकोपार्जन कर रहे हैं और यहा तक कि राष्ट्र के कितने बडे-बडे नेता जब भयकर रूप मे रोग ग्रसित होते हैं तो अमेरिका के ही चिकित्सालयो मे जाकर शरण लेते हैं। इस प्रकार भारत अमेरिका की भी सास्कृतिक मैत्री है अत हम अमेरिका की प्रशसा करेंगे कि उसने आख दिखाने वाले को उचित सबक सिखाया।

भारत अरब राष्ट्रो के साथ जो मुस्लिम राष्ट्र है गहरी दोस्ती दिखा रहा है भारत के मुसलमानो को खुश करने के लिये। लेकिन अरब राष्ट्र पैसे से भारत में इस्लामियत का प्रचार कर रहे हैं जिससे भारत का जो मूल सांस्कृतिक ढाचा है वह कमजोर पड़े और यदि किसी कारणवश मुस्लिम राष्ट्र सशक्त हो जाते हैं तो वे भारत के मुसलमानो को भारत मे और विभाजन कराने के लिये प्रेरित कर सकते हैं।

अत अमेरिका और लीबिया का जो विवाद है उसे सही दृष्टि से समझना चाहिये भारत के हित मे देखना चाहिये इस्लामी आंखों से नहीं।

उत्तर प्रदेश विद्यालय प्रबन्धक महासभा उत्तर प्रदेश का इक्कीसवा अधिवेशन सम्पन्न

श्री गोपीनाथ जी दीक्षित पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

कानपुर। उत्तरप्रदेश विद्यालय प्रबन्धक महासभा के वार्षिक अधिवेशन कानपुर मे श्री गोपीनाथ दीक्षित भू०पू० उद्योग मन्त्री उ० प्र० शासन एव सदस्य विधान सभा उ० प्र० पुन सर्वसम्मति से महासभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुये। महासभा ने सर्वसम्मति से अध्यक्ष श्री दीक्षित जी को यह अधिकार दिया कि वे महासभा के पदाधिकारियो के नामो की घोषणा करें-श्री दीक्षित जी न, महासभा के कार्यवाहक अध्यक्ष हेतु लखनऊ के श्री दीनदयाल जी का नाम घोषित किया जो पूर्व भी इस पद पर थे। वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री केदारनाथ गुप्त इलाहाबाद तथा महामन्त्री पद हेतु मिरजापुर के श्री प्रेम कुमार लूडिया का नाम घोषित किया। मन्त्री पद हेतु लखनऊ के श्री प० मनमोहन जी तिवारी, सहायक मन्त्री पद हेतु श्री मैथिलीशरण श्रीवास्तव फैजाबाद तथा श्री वीरेन्द्र कुमार मौर्य लखनऊ को पुन महासभा का कोषाध्यक्ष घोषित किया। इस महासभा मे सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुये -प्रस्ताव स० १-अध्यापक व कर्मचारियो की वार्षिक वेतन वृद्धि को परीक्षा फल एव अनुशासन से जोडा जाय-(२) शिक्षको के निलम्बन तथा प्रस्तावित दण्ड का पूर्ण अधिकार प्रबन्धतन्त्र को दिया जाय तथा जिला विद्यालय निरीक्षक व अन्य विभागी अधिकारियो का हस्तक्षेप अनुमोदन समाप्त किया जाय, ३-विभाग के विभिन्न अधिकारियो के स्तरो द्वारा गलत एव अनियमित उद्देश्य देने के फलस्वरूप जो [illegible] दमे बाजी हो रही है या विद्यालय का अहित हो रहा है उसकी क्षतिपूर्ति जिम्मेदार अधिकारी के वेतन से की जाय, ४-शिक्षा विभाग के सभी स्तर के अधिकारियो द्वारा निर्णय हेतु समय की सीमा आदेशात्मक रूप में लागू की जाय, ५-विद्यालय मे विभाग, अतिरिक्त विषयों की मान्यता देने के साथ ही साथ कक्षा सचालन एव अध्यापको की नियुक्ति का अधिकार दिया जाय जिससे शिक्षा का अनावश्यक ह्रास न हो, ६-प्रशासन योजना के बारे मे अनावश्यक विवाद जो शिक्षा उपनिदेशक गण खडा कर रहे हैं उसे अविलम्ब रोका जाय ताकि विद्यालय मे अनावश्यक विवाद उत्पन्न न हो सके, ७-शिक्षकों व कर्मचारियो के राजनीति मे भाग लेने से रोका जाय क्योकि वे लाभ के पद पर हैं, ८-विकास शुल्क पूर्ण रूप से विद्यालय को दिया जाय तथा शुल्कर्यांकन ४० / प्रबन्ध कोष स्रोत मे जमा किया जाय, ९-प्रबन्ध समिति को पूर्व की भाँति सम्पूर्ण अधिकार वापस दिये जाँय, १०-निबन्धक सोसाइटीज फण्डस एव चिट्स की जो अनियमित अधिकार दिये गये हैं उन्हें समाप्त किया जाय। —सवाददाता

अभिभावक संघ का वक्तव्य

लखनऊ १ अप्रैल। अखिल भारतीय अभिभावक सघ ने यहाँ जारी एक प्रेस विज्ञप्ति मे लखनऊ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कालेज शिक्षक सघ (लुआकटा) के उस निर्णय की तीव्र भर्त्सना की जिसके अनुसार यदि उनकी मागो को माना नही गया तो वे विश्वविद्यालय परीक्षाओ मे सहयोग नही करेंगे। इस निर्णय को अभिभावक सघ ने छात्र विरोधी एव ब्लेकमेल करने का तरीका ठहराया है।

सघ के अध्यक्ष श्री पी०एन० चतुर्वेदी ने खेद प्रकट किया कि छात्रो जिनका लुआकटा की मागो से कोई सरोकार नहीं है को अनावश्यक परेशानियों एवं व्यवधानों का सामना करना पड रहा है। हालांकि इन छात्रो का कोई दोष नहीं है।

—पी० एन० चतुर्वेदी अध्यक्ष

परिवार नियोजन और हिन्दू-

(डा० गंगाराम (निदेशक) वैदिक शोध संस्थान, अलीगढ़)

पोप पाल द्वितीय ने भारत विदाई से पूर्व ईसाइयों से अपील की कि वे परिवार नियोजन न करें। ईसाइयों की मदर टेरेसा भी परिवार नियोजनके विरुद्ध है तथा भ्रूण-हत्या को मानव-हत्या मानती है। मुस्लिम मुल्ला-मौलवी से लेकर आधुनिक उच्च शिक्षित मुसलमान भी परिवार नियोजन को मजहब विरोधी मानते हैं। मुस्लिम व्यक्तिगत कानून मे वे किसी प्रकार के परिवर्तन के भी इसीलिये विरोधी हैं क्योंकि इससे उनकी आबादी का बढ़ता हुआ औसत कम हो जायेगा। हिन्दुस्तान में अहिन्दू इस तथ्य को भली-भांति समझते हैं कि परिवार नियोजन के राष्ट्रीय कार्यक्रम को न अपनाने से वे आगामी ५०-६० वर्षों में बहुमत मे हो सकते हैं। इसीलिये परिवार नियोजन केन्द्रों पर लगभग शत-प्रतिशत नसबन्दी और गर्भपात के केस हिन्दुओं के ही होते हैं।

परिवार नियोजन की वर्तमान प्रक्रिया से यदि आगामी ५०-६० वर्षों बाद हिन्दू हिन्दुस्तान मे अल्पमत में हो गया तो उसका वही हाल होगा जो ईरान मे पारसियों का हुआ था लेबनान और सायप्रस मे ईसाइयों का हो रहा है। मलेशिया, पाकिस्तान और बगला देश मे हिन्दुओं की जनसंख्या कम हो जाने के बाद जो उनकी अधोगति हुई है, उसे भी ध्यान मे रखना आवश्यक है। मलेशिया मे मुसलमान ५१ प्रतिशत होते हुये उसे इस्लामिक राज्य बना दिया गया जबकि वहा ४९ प्रतिशत आबादी हिन्दुओ, बौद्धो और चीनियो की है। अत लोकतन्त्र और धर्म निरपेक्षता भी हिन्दुस्तान मे तभी तक है जब तक कि हिन्दू बहुमत मे हैं।

परिवार नियोजन हिन्दुओं के आर्थिक सिद्धांत के भी प्रतिकूल है क्योंकि वे भोग और भोक्ता के वैदिक सिद्धांत को मानते हैं। परमात्मा ने सृष्टि मे पहिले भोग भेजे और बाद मे भोक्ता। यदि वह भोग से पहिले भोक्ता को भेज देता तो जीव सृष्टि के प्रारम्भ मे ही मर जाता इसलिये परमात्मा के विधान के अनुसार ही सृष्टि में मनुष्य, पशु, कीट और पतग की आबादी होती है। मनुष्य के एक मुह के साथ साथ दो हाथ भी परमात्मा देता है। हिन्दुस्तान में २५-३० वर्ष पूर्व खाद्यान्न की जो कमी थी, आज आबादी बढ़ जाने के बावजूद भी क्या वह दिखाई देती है? अब भारत में खाद्यान्न इतना अधिक है कि विदेशो मे लाखों टन गेहू, चावल, आदि भेजने के बाद सरकारी गोदामों मे उसे सड़ने से हमारी सरकार बचा नहीं पा रही है।

योरोप के हालैण्ड जैसे धनी देश मे जन सख्या का जो प्रति वर्ग मील अनुपात है उस दृष्टि से हिन्दुस्तान मे ४ अरब आबादी को आसानी से खिलाया जा सकता है। रासायनिक खादों और आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणो से लाखों एकड़ बन्जर भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है। हिन्दुओं की आबादी का दबाव यदि बढ़ा भी तो वे करोड़ों की सख्या मे उन देशों मे घुसपैठ कर सकते है जहां आबादी बेहद कम है। क्या हम विशाल राष्ट्र होकर भी बगला देश के मुस्लिम घुसपैठियों को रोक पा रहे हैं? क्या जब इगलैण्ड में आबादी का दबाव बढ़ा तो वे कनाडा, सयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि देशों में करोड़ों की सख्या में नहीं बस गये? क्या आज करोड़ों लोग अफ्रीकाई और अमेरिकाई देशों में नहीं बस सकते। क्या करोड़ों भारतीय अपने साम्यवादी मित्र देश रूस में जाकर नहीं बस सकते जहां जन संख्या बढाने के लिये सरकार नाना प्रकारके प्रोत्साहन देती है। रूसजैसे साम्यवादीदेशव्यक्तिद्वारा व्यक्तिके शोषण के विरोधी हैं और वैदिक सिद्धांत राष्ट्र द्वारा राष्ट्र के शोषण के विरुद्ध है। अत साम्यवाद के अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धांत के अनुसार विशाल जन-संख्या वाले गरीब भारत के [illegible] और क्षेत्रफल में विशाल रूस में जाकर बसने लगें तो वह क्यों कर रोकेगा। इससे मार्क्सवाद मजबूत ही होगा।

गर्भपात और नसबन्दी हिन्दू धर्म और अध्यात्म विरोधी भी है। योरोप के अधिकांश कैथोलिक देशों में भ्रूण-हत्या प्रति बन्धित हैं। फिर धर्म परायण भारत में इसे कानूनी रूप दिया जाना भारत की आत्मा का हनन है। आखिर भारत जैसे राष्ट्र का क्या भविष्य होगा। जिसमें मा गर्भपात द्वारा अपने बच्चे को गर्भ में ही मार देती हो।

परिवार नियोजन दार्शनिक दृष्टि से भी हिन्दू विरोधी है क्योंकि जिस जीवात्मा को अपने पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर मनुष्य योनि में आना है, किन्तु उसे हिन्दु महिला परिवार नियोजन नसबन्दी या भ्रूण-हत्या के द्वारा मनुष्य योनि में ही न आने दें तो स्वाभाविक रूप से वह जीवात्मा अहिन्दू औरतके उदर से जन्म लेगी। इसीलिये ऋग्वेद मे परमात्मा का दस सन्तान तक उत्पन्न करने का आदेश है-"इमां त्वमिन्द्र मीढ्व सुपुत्रा सुभगा कृणु। दशास्यां पुत्रा नाधेहि पतिमेका दश कृधि।" ऋग्वेद ॥ म० १०।सू० ८५।म० ४५ ॥

इसलिये परिवार नियोजन नसबन्दी और गर्भपात राजनैतिक, आर्थिक धार्मिक और दार्शनिक दृष्टि से हिन्दू विरोधी है और यह भी सत्य है कि हिन्दुस्तान के जिस क्षेत्र मे भी हिन्दू अल्प मत में होता जा रहा है, वहीं विघटनकारी और पृथकतावादी शक्तियां सिर उठा रही हैं। अत यह कथित राष्ट्रीय कार्यक्रम राष्ट्र विरोधी है। क्योंकि हिन्दुओं के अल्पमत मे आते ही इस देश का राजनैतिक स्वरूप मजहबी बन जायेगा और हमारी भावी पीढियो का हश्र वही होगा जो काबुल, गधार सिन्धु, बलोचिस्तान, सीमान्त प्रदेश, पश्चिमी पजाब, पूर्वी बगाल आदि मे हिन्दुओं का हुआ है। क्या हिन्दू समाज परिवार नियोजन के वर्तमान राष्ट्र विरोधी स्वरूप को अपना कर अपने पैर में स्वय कुल्हाड़ी मारेगा। अत हिन्दू समाज के विनम्र सेवक के नाते मैं देश के ६५ करोड़ हिन्दुओ और समस्त हिन्दू सगठनों से अपील करता हू कि वो नसबन्दी-शिविरों के विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन करें ताकि भारत की धर्मनिरपेक्ष सरकार को इस दिशा में जापान की तरह कोई तर्कसंगत कानून बनाना पड़े।

-आर्य समाज हरदोई के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य बन्धुओं ने आर्यसमाज, हरदोई की उपप्रधाना श्रीमती सरोज परिहार के पूज्य पति श्री शिवदान सिह परिहार के आकस्मिक निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए समाज के साप्ताहिक अधिवेशन २३ मार्च ८६ को शोक सभा में दिवंगत के प्रति शांति तथा दु खी परिवार के धैय हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

सम्वाददाता

—इटारसी आर्य समाज ने, अपने समाज के कोषाध्यक्ष श्री नाथूराम मानक चन्द्र अग्रवाल के लघुभ्राता श्री गोपीलाल जी के असामयिक निधन पर गहरा दु ख व्यक्त किया है। समाज के साप्ताहिक सत्संग दिनांक २३ मार्च ८६ को शोक सभा में दिवगत के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये शांति एव शोकाकुल परिवार के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

मन्त्री आर्य समाज

कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो लेख पर मुस्लिम प्रतिक्रिया का उत्तर

--परिव्राजक, नजीबाबाद

(गतांक से आगे)

ताजमहल को मुसलमानो का बनाया हुआ लिखा है, यद्यपि ताजमहल ही नहीं, अन्य मुस्लिम कहे जाने वाले सभी भवन हिंदू इमारतें हैं। मुसलमानो ने कभी कोई नया भवन भारत मे नहीं बनाया। पुराने हिंदू भवनो पर बलात् अधिकार कर तथा उनमें से कुछ में थोड़ा फेरबदल करके उन्हे मुस्लिम भवन घोषित कर दिया। अन्यथा कोई हमें बताये कि जो अपने रहने और अपनी पर्दानशीन औरतों को रखने के लिए एक झोंपड़ी न बना सके, उन्होंने मरने के बाद के लिए इतने विशाल भवन कैसे बना दिये ? इस मिथ्या स्थापना को तो वही मानेंगे, जिनके धड़ पर मस्तिष्कयुक्त सर नहीं अपितु मिलिया कद्दू (काशीफल) रक्खा हुआ है, कोई भी बुद्धिमान इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता।

वह लिखता है 'मुसलमान भारत को आजाद कराने मे आगे रहा।' यद्यपि वास्तविकता यह है कि सन् १९४६ के निर्णायक आम चुनाव मे ९३ प्रतिशत मुसलमानों ने पाकिस्तान के पक्ष में मतदान किया था। जिन ७ प्रतिशत मुसलमानों ने मुस्लिम लीग के विरोध मे मतदान किया था, वह मुख्यत सीमाप्रांत पश्चिमी पजाब और सिंध के थे। इस प्रकार से आज के इस खण्डित भारत के लगभग शतप्रतिशत मुसलमानो ने मुस्लिम लीग के द्विराष्ट्र सिद्धान्त के पक्ष मे मतदान करके पाकिस्तान का समर्थन किया था। उन्हीं पाकिस्तानी मनोवृत्ति के पक्षधर मागी भारत-द्रोहियों की सन्तान मे से कुछ निर्लज्ज भारत को आजादी दिलाने का दम्भ भरने लगे हैं, जिनमे से एक यह पत्र लेखक है। यद्यपि देश की आजादी की लडाई मे साथ देने वाले मौलाना आजाद को दाढ़ी नोचने वाले जनाब की मजहबी मुस्लिम यूनीवर्सिटी अलीगढ़ के ही छात्र थे।

कालेज छात्रों का उदाहरण देकर हिंदुओं के कारनामे बताने का दुस्साहस करने वाले धूर्तराज बागला देश के युद्ध मे पाकिस्तानी इस्लाम के मुजाहिदो द्वारा दिन रात सैनिक खाइयों मे नगी कर रक्खी गई नारिया और ढाका विश्वविद्यालय की सैकडों सोती हुई असहाय छात्राओ से सामूहिक बलात्कार तो इस्लामी संस्कृत का आदर्श चित्र होगा और सन १९४७ मे पाकिस्तान बनने के तुरन्त बाद रावलपिंडी की सडको पर निकाला गया तेरह सहस्र नंगी हिन्दू महिलाओं का जुलूस क्या इस्लामी बर्बरता और बेहयाई का मुह बोलता चित्र नहीं है ? इन नीच कर्मा से लज्जा के स्थान पर इस्लाम के ठेकेदारो का गौरव के साथ सर ऊचा हो जाना होगा। हलाकू और चगेज के कुकृत्यों से भी बढकर इस्लामी करतूतो के यह कारनामे इतिहास मे अंकित होकर इस्लाम के नाम पर आने वाली विश्व-सन्ततियों की घोर घृणा व्यक्त कर 'लाहौल' भेजते रहने का अवसर सदा-सर्वदा देते रहेंगे।

उपर्युक्त पंक्तियां तो हमने केवल उक्त पत्र के उत्तर स्वरूप लिखी हैं। इस्लाम और कुरान की वास्तविकता का दिग्दर्शन तो "आर्यमित्र" के पाठको को भविष्य मे लिखे जाने वाले लेखों द्वारा करायेंगे।

—आर्य समाज नेमदार गंज (नवादा बिहार) मे आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह के साथ सम्पन्न हुआ विभिन्न विद्वानों ने आर्य समाज की आवश्यकता की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए उसके विकास और आवश्यकता पर बल दिया। —रवीन्द्र प्रसाद निर्भय

'मुक्तक'

[डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली]

(१)

स्वर स्वत ही फूट पडते
बस वही हैं गीत बनते।
टीस की आलोक देकर,
मीत सच्चे बन विहसते

(२)

चल रहा सग्राम प्रतिपल,
किन्तु कायर व्यक्ति चचल।
शूरता की बात करता,
पृथु कलेवर, कम दुर्बल।

(३)

शक्ति रूपा हू, मुझे क्यो भूलते,
भाग प्रतिमा कह मुझे क्यों पूजते।
किन्तु जो दायित्व का है दायरा,
बस वहा पर हो निरन्तर ऊबते।

(४)

शान्ति को हिंसा नहीं है पा सकी,
क्रांति को जडता नही है ला सकी।
भावना और कर्म का परिणय वरद,
रागिनी को मूकता क्या गा सकी ?

भव्य मेला प्रचार भूमिका

आर्यसमाज महावीरगंज लखनऊ के त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव का २५-५-८६ अन्तिम दिन होगा। इस दिन ज्येष्ठ मास का प्रथम मगल होने से जनपद का सबसे अधिक भीड का मेला अलीगंज क्षेत्र मे होता है।

समाज के उत्सव का विशाल शामियाना प्रभावशाली वैदिक प्रचार शिविर का कार्य करेगा। जनपद की सभी समाजें इस ठोस प्रचार मे सक्रिय सहयोग देंगी।

—ज्ञान कृष्ण

सम्पादक के नाम पत्र—

मन को दहला देने वाला काश्मीर का समाचार

(कैप्टेन श्री नारायणसिंह का पत्र)

प्रिय सम्पादक महोदय,

नई दिल्ली। १९४७ मे भी ऐसा नही हुआ जो अब काश्मीर मे हुआ। पहले मकान लुटे। निम्नांकित पत्र परम पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी महाराज को श्री रिटायर कैप्टन नारायणसिंह जी ने लिखा है। पूर्ण पढ़ने का कष्ट करें।

परम पूज्यनीय स्वामी जी महाराज। चरण वन्दना!

काश्मीर को बचाना चाहते हैं तो बचालें, वरना यह दूसरा पाकिस्तान बनाया जा रहा है। हिन्दू तो २/३ हिस्सा पहले ही काश्मीर से निकाल चुके हैं, अब जो रहे हैं वह काश्मीर छोड रहे हैं। जब हिन्दू सब चले गये तो ००० की आवाज होगी। काश्मीर मे मुसलमान बसते हैं। मुसलमानो को दे दो। शायद १९४७ में भी ऐसा नहीं हुआ था, जो अब काश्मीर मे हुआ। पहले मकान लुटे फिर मकान जला दिये गए। जो तन पर कपडे थे वह भी उतार कर ले गए। मर्द औरतों को नगा किया गया। कोई भी हिन्दू की फरयाद नहीं सुनता। पुलिस ने कोई भी काम नहीं किया उल्टा हिन्दुओ को मरवाया। फायर सर्विस वाले भी वक्त पर नही आये, अगर आए भी तो कुछ काम नहीं किया। यह एक चाल हुकूमत और काश्मीर की जनता की थी इस वक्त गवरनरी राज्य है मगर मुसलमानो के काश्मीर मे हिन्दुओं का सोसल बाईकाट कर रखा है किसी को तिलक नहीं लगाने देते। अब हिन्दुओ के सामने गायें काटी जा रही हैं, ३५ मन्दिर एक दिन में बरबाद कर दिए गए, गीतायें और रामायण जो मन्दिरो में थे फाड दिए गए। मूर्तियो को तोड़ा गया और उनसे मूर्तियो पर पेशाब कराया गया। यह है हमारी सरकार। आखिर इस देश का क्या होगा ? —सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति की ओर से—

सदाजीवत लाल

उत्तरप्रदेश विभाजन

एक ज्वलन्त प्रश्न

[श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक]

[अध्यक्ष-वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ० प्र०]

लगभग बीस वर्ष से उत्तर प्रदेश के विभाजन का प्रश्न चल रहा है। इस प्रश्न को लेकर दो पृथक पृथक समितियाँ भी बनी हुई हैं। कभी-कभी समाचार-पत्रों में उनके वक्ताओं के वक्तव्य तथा उन समितियों के प्रस्ताव भी पढ़ने को मिल जाते हैं।

पंजाब और हरियाना के विभाजन के बाद हरियाणा की जो प्रगति हुयी उसे देखकर चौधरी चरणसिंह जैसा विचारक और राष्ट्रवादी नेता भी इस प्रदेश के विभाजन का समर्थक बन गया। चौधरी ही क्यों? स्वयं मैं भी यह सोचने और समय-समय पर विचार व्यक्त करने लग गया था कि इस प्रदेश का विभाजन हो जाना चाहिये। परन्तु सन् १९७१ मे जब बंगला देश का युद्ध हो रहा था मेरे विचार मे एक अवरोध आकर खड़ा हो गया और वह अवरोध सन् १९८० मे आकर स्थायित्व को प्राप्त हुआ।

इस प्रदेश के विभाजन के पक्षपाती लोगों का कहना यह है कि पूर्वी उत्तरप्रदेश के लोग परिश्रमी नहीं हैं इसी कारण से वह निर्धनता मे जीवन बिता रहे हैं। प्रदेश के पश्चिमी भाग के लोगों की अतीव परिश्रम की कमायी का करों द्वारा प्राप्त धन सरकारी योजनाओ के रूप मे पूर्वी क्षेत्रों मे लग जाता है। प्रदेश का विभाजन हो जाने पर पश्चिम का धन पश्चिम मे ही लगेगा, जिससे यह क्षेत्र हरियाणा और पंजाब की भांति समृद्ध होगा।

चौधरी चरणसिंह का विचार इससे कुछ आगे बढ़कर है। उनका कहना यह है कि प्रशासन मे चुस्ती जब तक नहीं होगी तब तक प्रदेश उन्नति नहीं कर सकता। उनके विचार से प्रदेश बड़ा होने से प्रशासन मे चुस्ती नहीं आ पाती। यह वास्तविकता है कि पांच वर्ष की अवधि मे मुख्य मन्त्री की तो बात छोड़िये, कोई भी मन्त्री अपने विभाग के जिला अधिकारियों तक को नहीं जान पाता, जिसके परिणाम स्वरूप सरकार द्वारा स्वीकृत योजनायें क्रियान्वित नहीं हो पातीं। अन्य लोगों और चौधरी चरणसिंह के विचार मे प्रदेश के विभाजन के प्रश्न पर मौलिक और सैद्धान्तिक मतभेद है। चौधरी जी का दृष्टिकोण प्रशासनिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है और प्रदेश की आर्थिक प्रगति के लिये भी उपयोगी है। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है। गत कुछ वर्षों से मैं भी इन्हीं विचारों का रहा हूं किन्तु १९७१ मे मेरे विचारों में परिवर्तन आना प्रारम्भ हुआ और १९८० में वह परिवर्तन स्थायित्व को प्राप्त हो गया। बात यह है कि १९७१ में जब भारत की सेनायें बंगला देश की मुक्तिवाहिनी के साथ मिलकर पाकिस्तानी सेनाओं से जूझ रही थीं, उस समय मुरादाबाद में एक मुसलमान के घर से एक पाकिस्तान का चित्र मिला था, जिसमे उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले तक का क्षेत्र पाकिस्तान में दिखाया गया था। उस समय मुझे वह दिन भी स्मरण आया, जबकि कांग्रेस मे आने से पहले हाफिज मोहम्मद इब्राहीम ने अखिल भारतीय मुस्लिम लीग में शाहजहांपुर तक पाकिस्तान की माग का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। इसी प्रसंग में अलीगढ़, सम्भल, मुरादाबाद आदि के साम्प्रदायिक झगड़ों के दृश्य मेरे मानस पटल पर उभरे। वह झगड़े साधारण झगड़े नहीं थे। उन झगड़ों के प्रसंग में तोपों और बमो की मुस्लिम घरो, मस्जिदो से प्राप्ति और फिर मुरादाबाद के दंगे का तो कारण भी विचित्र ही है। एक सुअर का ईद की नमाज के समय ईदगाह में पहुंच जाना। भला इसमे हिन्दुओं का क्या दोष? क्या मुरादाबाद के हिन्दुओं ने उस सुअर को बहका कर वहां भेजा था? परन्तु रोने के लिए तो धुएं का बहाना भी पर्याप्त होता है फिर उस सुअर के कारण होने वाले हत्याकाण्ड के अवसर पर तोपों और बमों की बरामदगी। यह भीषण अस्त्र क्यों एकत्र किये गये थे? वास्तविकता यह है कि पूर्व योजना के अनुसार यह सब हुआ यदि सुअर न आता तो भी वह मारकाट उसी दिन प्रारम्भ होती। हां, बहाना कुछ और ढूंढना पड़ता। यदि नहीं तो कोई हमे बताये कि उस दिन ईदगाह मे बन्दूकें, रिवाल्वरें आदि क्यों ले जायी गयी थीं? वहां लोग नमाज अदा करने गये थे या शिकार खेलने?

इस काण्ड के बाद से मुरादाबाद के बाहर जाने वाले तीन प्रमुख मार्गों को उन पर मुस्लिम बस्तियां बसा कर तथा स्कूल-कालिज खोलकर बाहर से आने वाले सुरक्षा बलों को वहीं रोक लेने का प्रबन्ध किया जा रहा है। उन बस्तियों में भी प्रमुखता उन भारत द्रोहियों की है, जो बिहारी मुसलमान पूर्वी पाकिस्तान मे जा बसे थे और सन् १९७१ में बांगला देश की मुक्तिवाहिनी और भारतीय सेना से पाकिस्तान के पक्ष मे लड़े थे। बांगला देश ने उन्हें बाहर निकाल दिया, पाकिस्तान ने उन्हे सभाला नहीं। अभागे भारत के नादान शासकों ने उन भारत के शत्रुओं को भारत बुला लिया। उन्हीं भारत विरोधियों की पर्याप्त सख्या को मुरादाबाद की इन नयी बसायी जाने वाली मुस्लिम कालोनियों मे बसाया गया है।

दूसरी ओर मेरठ के साम्प्रदायिक दंगे रहे। क्या यह साधारण दंगे थे? क्या वहां की परिस्थितियों ने यह सिद्ध नहीं कर दिया कि पाकिस्तान से मिलकर पाकिस्तान के पक्ष मे ही सुनियोजित षड्यन्त्र थे। क्या वहां बमो तथा मोर्टार जैसे भीषण हथियारों का प्रयोग नहीं हुआ? क्या यह सब रातो-रात एकत्र हो गये थे? क्या मेरठ की मस्जिदों और कब्रिस्तानों मे लाल सिगनल आप ही आप आकाश से आकर लग गये थे।

दिल्ली के इमाम बुखारी का वहां बार-बार आना, भाषण करना और दिल्ली मेरठ मार्ग पर रोक लिया जाने से सरकारी आदेश की अवहेलना करके गढ़मुक्तेश्वर की ओर से मेरठ मे घुसने का प्रयत्न करना, इन सबने मुझे दूसरी दिशा मे सोचने के लिये बाध्य कर दिया।

एक ओर तो अब्दुल्ला बुखारी का यह बयान कि -मुसलमान भारत का वफादार नहीं हो सकता, वह केवल अरब का वफादार है क्योंकि वह इस्लाम के पैगम्बर हजरत मोहम्मद का पवित्र देश है" और उसके इस बयान के विरुद्ध यह कहने के लिये कि हम भारत के वफादार हैं, किसी भी मुसलमान सांसद तथा अन्य मुसलमान नेताओं मे से किसी का भी मुह न खोलना, इस बात का प्रबल प्रमाण है कि मुसलमान चाहे हिन्दुत्ववादी भारतीय जनता पार्टी का हो या राष्ट्रीय होने की एकमात्र दावेदार इन्दिरा कांग्रेस का अथवा किसी और दल का, अब्दुल्ला बुखारी के विचारों का प्रबल समर्थक है और भारत के प्रति लेशमात्र भी वफादार नहीं है।

अब्दुल्ला बुखारी के इस बयान का मैंने विरोध किया था और 'अब्दुल्ला बुखारी का प्रलाप" शीर्षक से एक पत्र तात्कालिक प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भेजा था। मेरा वह लेख पुस्तकाकार कुछ

(शेष पृष्ठ ८ पर)

(पृष्ट ७ का शेष)

"ज्वलन्त प्रश्न" शीर्षक से छपवाया गया था, उन्हीं दिनों "हरिजन समस्या भारत मे विद्रोह की तैयारी शीर्षक से भी एक पत्र छपवाया था और उन्हे लेकर उत्तरप्रदेश के उन पश्चिमी जिलों का भ्रमण किया, जो १९७१ मे मुरादाबाद से प्राप्त होने वाले पाकिस्तान के चित्र मे दिखाये गये थे। प्रत्येक स्थान पर प्रबुद्ध जनों की गोष्ठियाँ बुलवायीं और सार्वजनिक सभाओ मे भाषण भी किये। मुसलमान इससे तिलमिलाये, धमकियों के सूत्र मेरे पास भिजवाये और कुछ ने मुझसे मिलकर भी वार्तालाप किया। परन्तु मैने देखा कि वास्तविकता को स्वीकार करने को कोई भी तैयार नहीं हुआ या तो तिलमिलाते बौखलाते चले गये या यह कहकर उठ गये कि "छोडो भी, ऐसी बातों पर ध्यान देना ठीक नहीं।"

दूसरी दिशा मे सोचने की मेरी बाध्यता ने ही प्रदेश के इन पश्चिमी जिलों मे भ्रमण करने को मजबूर किया और उस भ्रमण तथा इन जिलों की मुस्लिम आबादी के आधार पर मै यह समझ पाया कि यदि इस प्रदेश का विभाजन हुआ और यह पश्चिमी क्षेत्र पृथक प्रदेश बना तो परिणाम भयंकर होंगे। पूरे उत्तर प्रदेश मे मुस्लिम आबादी लगभग १५ प्रतिशत है किन्तु इन जिलो मे पैंतिस प्रतिशत है। यदि यह पैंतिस प्रतिशत मुस्लिम जनसख्या का क्षेत्र पृथक प्रदेश बना तो यह तो स्पष्ट ही छोटा पाकिस्तान होगा। तब विधान सभा और विधान परिषद् मे मुस्लिम प्रतिशत बढ़ेगा और हिंदू सदस्यों की संख्या का प्रतिशतक कम होगा। पूरे उत्तर प्रदेश की अपेक्षा हिंदू और मुसलमान विधायकों की संख्या मे अन्तर बहुत कम हो जायगा। तब उस छोटे से प्रदेश की सरकार की क्या स्थिति होगी ? जब १५ प्रतिशत मुस्लिम आबादी की सरकार राष्ट्रद्रोही समस्याओं की अपनी तुष्टीकरण की नीति के कारण आँखें बन्द करके उपेक्षा कर जाती अथवा उनसे सम्बद्ध मांगों को मान लेती है और संस्कृत हटाकर उर्दू लागू करने जैसे पग उठाकर साम्प्रदायिक आधार वाले अराष्ट्रीय तत्वों को प्रोत्साहन देती है तो ३५ प्रतिशत मुस्लिम आबादी की सरकार से क्या आशा की जा सकती है।

यह सब देख और समझकर मेरा उन बन्धुओं से आग्रहपूर्वक निवेदन हे कि जो प्रदेश का विभाजन करके पश्चिमी जिलों का पृथक् प्रदेश बनवाना चाहते हैं। और इसके लिए आंदोलन करने पर उतारु हैं वह समग्र राष्ट्रीय दृष्टिकोण से सोचें। क्षणिक आवेश, साधारण क्षेत्रीय समस्याओं और राजनीतिक, आर्थिक आदि स्वार्थ से पृथक होकर केवल और केवलमात्र राष्ट्रीय दृष्टिकोण से, भारत राष्ट्र के हित की भावना से विचार करें तो वह भी मेरे मत के हो जायेंगे।

मैं ऐसा नहीं मानता कि मुसलमानों मे कोई भी राष्ट्रभक्त तथा राष्ट्रवादी नहीं है लेकिन इतना तो निश्चित ही है कि उनकी सख्या इतनी नगण्य ह कि वह बोलन का साहस ही नहीं कर पाते। परन्तु यह भी निश्चित ह कि वह भी अपनी इस चुप्पी के कारण राष्ट्रहित के लिये विश्वासपात्र नहीं रह जाते क्योंकि उनकी इस चुप्पी से राष्ट्रद्रोही तत्वों को बल मिलता है।

—आयसमाज किरतियापुर (हरदोई) के मन्त्री श्री रवीन्द्र कुमार अग्निहोत्री की आयु० पुत्री सरिता का मुण्डन संस्कार श्री स्वामी अनन्त भिक्षु वानप्रस्थ के पौरोहित्य मे दिनांक २३ अप्रैल १९८६ को सम्पन्न हुआ तथा आयसमाज किरतियापुर को ५१) वेद प्रचारार्थ दान श्री अग्निहोत्री जी ने प्रदान किया। - भारतेन्द्रनाथ अग्निहोत्री

—आर्यसमाज इटारसी मे दिनांक १० अप्रैल ८६ को आर्यसमाज स्थापना दिवस तथा दिनांक १८ अप्रैल १९८६ को मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जन्मोत्सव हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया। -मन्त्री

—आर्यसमाज हाँसीपुर (मीरजापुर) में नवसंवत्सरोत्सव तथा आर्य समाज स्थापना दिवस दिनांक १० अप्रैल १९८६ को नव उत्साह एव हर्ष के वातावरण मे सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त श्री यज्ञदेव जी द्वारा प्रभावशाली भाषण एव प्रवचन का कार्य सम्पन्न हुआ। -मन्त्री

—आर्यसमाज गया (बिहार) का ६३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १० अप्रैल से १३ अप्रैल १९८६ तक भव्य आयोजन के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, हरिजन स्नेह सम्मेलन तथा विभिन्न विद्वानो के भजन, उपदेश, प्रवचन आदि का आयोजन हुआ। -जगदम्बा प्रसाद मन्त्री

—बीकानेर नगर आर्यसमाज (राज०) मे दिनांक १० अप्रैल १९८६ को आर्यसमाज स्थापना दिवस तथा नव सवंत्सरोत्सव यज्ञ एव हवन के साथ सम्पन्न हुआ तथा दिनांक १८ अप्रैल १९८६ को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। -मन्त्री आर्यसमाज

—आर्यसमाज आनन्दबाग दुर्गाकुण्ड वाराणसी के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल पर श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री के पौरोहित्य में दिनांक १० अप्रैल से १८ अप्रैल १९८६ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का सफल आयोजन हुआ। रामनवमी पर्व पर श्री डा० आनन्द प्रकाश एवं डा० ज्योतिमित्र जी द्वारा पर्व के महत्व पर प्रकाश डाला गया। -शिवमित्र शास्त्री मन्त्री

— गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का ८६ वां वार्षिकोत्सव विशेष हर्ष एवं उल्लास के साथ दिनांक १२ अप्रैल १९८६ को सम्पन्न हुआ। भू० पू० सांसद श्री सत्यव्रत जी का दीक्षान्त भाषण हुआ। अपने ओजस्वी भाषण मे श्री सत्यव्रत जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की विशेषता प्रस्तुत करते हुए देश की वर्तमान परिस्थितियों मे गुरुकुल एव वैदकीय शिक्षाप्रणाली की आवश्यकता पर बल दिया।

—वीरेन्द्र अरोड़ा कुलसचिव

राम जन्मभूमि मस्जिद नहीं हो सकती–

प्रमाणित आधार–

(डा० श्री अमरेश आर्य 'अफजल उलमा', एम० ए० पी० एच० डी०, आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश, सुल्तान बाजार हैदराबाद)

आजकल रामजन्मभूमि के सम्बन्ध में उसको मस्जिद सिद्ध करने हेतु तथा मस्जिद का रूप देने के लिए बडे पैमाने पर कोशिश चल रही है हगामी जुलूस जेल भरो आन्दोलन निरन्तर कियाशील है। साधारण जनता अधिकाशत शिक्षित नहीं होती और जो मजहब के बहुत बडे दिलदादा लोग हैं ऐसी अशिक्षित और सीधी-साधी जनता को रामजन्मभूमि को मस्जिद का रूप दिलाने के लिए अपना कीमती खून बहाने के लिए भडका रहे हैं। हजारों मुस्लिम नवजवानों को अपने खून से हस्ताक्षर कराते हुए एक महीना पूर्व हैदराबाद मे 'बाबरी सेना के नाम से एक सेना भी तैयार की गई है। इन सब हालतो को देखते हुए हमे यह भय और आशका है कि यह बाबरी मस्जिद की समस्या हमारे पवित्र देश मे एक नई बर्बरी समस्या को जन्म देने जा रही है।

मैने ८ अप्रैल ८६ से लेकर २८ अप्रैल १९८६ तक अयोध्या एव फैजाबाद में रहकर कथित बाबरी मस्जिद जो कि वास्तविक रूप मे श्री रामचन्द्र जी का जन्म स्थान है का बडे गम्भीर रूप से अध्ययन किया है और उसी के आधार पर यह रिपोर्ट प्रकाशित करने को दे रहा हू।

रामजन्मभूमि पर किसी भी आधार से एक मस्जिद का रूप लागू नही किया जा सकता क्योकि—

(१)इस इमारत का रुख स्वय बता रहा है कि सचमुच यह इमारत मस्जिद के रूप मे निर्मित ही नहीं है क्योंकि इसमे 'मेहराव (वह स्थान जहां पर नमाज मे इमाम साहब खडे होते हैं) का रुख ठीक तरह से 'किबला' (मक्के का वह घर जिसकी तरफ नमाजी को नमाज में अपना मुह करना अत्यन्त आवश्यक है) की ओर नही है।

(२) इस इमारत के अन्दर और बाहर की दीवारो पर जो दस्तकारी पाई जा रही है वह किसी भी रूप मे एक मस्जिद म नही पाई जाती, यह दस्तकारी तो सिर्फ हिन्दू मन्दिरों मे ही पाई जाती है।

(३) इस इमारत के आस पास 'वजू' करने के लिए वह स्थान नही है और न ही ऐसे स्थान का कोई निशान है।

(४) इस इमारत के आस पास की आबादी, उपासनागृह एव अन्य इमारतें यह साबित कर रही है कि यहा पर किसी मस्जिद का उजूद ही नही था।

(५) इस इमारत मे लगे पत्थर मे खुले रूप मे नक्श किया गया है कि 'इस इमारत को मस्जिद मे रूपान्तर करने से पूर्व यह एक ऐसा उपासना गृह था जहा पर श्रीराम, सीता और हनुमान की पूजा की जाती थी। किसी पीर या मुर्शिद को खुश करने के लिए इस इमारत के ऊपरी हिस्सो मे थोडा सा रूपान्तर करके अधूरा मस्जिद का रूप दिया गया है।'

(६) इस इमारत मे पाई जाने वाली दस्तकारियाँ एव अन्य तमाम प्रमाणो से यह साफ जाहिर है कि- बाबरी मस्जिद का नाम जिस इमारत को दिया गया था वह वास्तव में एक मन्दिर था जो जबरदस्ती मस्जिद में रूपान्तरित किया गया है। इस्लामी शरियत के प्रामाणिक पुस्तकों में साफ लिखा गया है कि 'जबरदस्ती कब्जा किए हुए इमारत को यदि मस्जिद में रूपान्तरित किया जाय तो ऐसे मस्जिद में नमाज पढ़ना निषेध है ऐसी इमारत को किसी भी आधार पर मस्जिद की पवित्रता नही दी जायेगी(आलम गीरिया में मुजमरात एव बहरुल राईक के हवाले से)।

इस्लामी शरियत के ...ो के अनुसार 'बाबरी मस्जिद' का दावा जिस इमारत पर किया जा रहा है वह मस्जिद बन ही नही सकता। यदि किसी के अन्दर यह हिम्मत है कि वह खुले मच पर इस इमारत को मस्जिद के रूप में सिद्ध कर सके तो हमारे तरफ से उसे खुला चैलेन्ज है कि वह आये और अपनी सच्चाई जनता के सामने रखे। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक साधारण मुस्लिम जनता को मजहब के नाम से भटकाना एक ऐसा अत्याचार है जिसको न खुदा, न रसूल और न ही नेक लोग कभी पसन्द करते हैं।

रामनाथ पुरम् का शुद्धि कार्यक्रम

रामनाथ पुरम् जिले मे सन् १९७१ से लेकर सन् १९८५ के अन्त तक लगभग आठ हजार चार सौ अठारह हिन्दू भाई लालच और लोभ में आकर मत परिवर्तन करके मुसलमान हो चुके थे उनमें से लगभग छ हजार अस्सी विभिन्न समयों के शुद्धि सस्कार के द्वारा पुन हिन्दूधर्म में प्रवेश हो चुके हैं। बचे हुए लोगों के शुद्धि हेतु प्रयास जारी है। यह सब शुद्धि कार्यक्रम आर्य समाजी कार्य कर्ताओं ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के आदेशानुसार ही किया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की इस महान सेवा को कुछ लोगो को गलत तरीके से वर्णन करते हुए मैंने अपने उत्तर भारत के इस दौरे के बीच देखा है मुझे इस पर बहुत दुख हो रहा है। इतने सघर्षों को सहते अपने जान को हथेली पर रखकर आर्य समाज जो शुद्धि कार्यक्रम चलाता चला आ रहा है उसको भी मतलब परस्त दुनिया ने छोडा नही, मैं यह बात साफ तौर पर लिख रहा हू कि यदि इन शुद्धियों के पीछे किसी का सहयोग व आदेश हुआ हैं तो वह केवल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव सार्वदेशिक सभा के माननीय श्री प्रधान जी का हुआ हैं। जो लोग रामनाथ पुरम् के शुद्धि को अपनी बडी कामयाबी एव धर्म सेवा बताते हुए जनता को लूटते फिर रहे हैं उनका इन शुद्धि कार्यक्रमों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है अत जनता सावधान रहे। दक्षिण का शुद्धि कार्यक्रम बहुत बडी आर्थिक घटना का सामना कर रहा है उसके लिए कोई न कोई उपाय सोचने में धर्मप्रेमी लोग विलम्ब न करें।

डा० अमरेश आर्य
आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश
सुल्तान बाजार, हैदराबाद

आर्य जगत्

—आर्य समाज अजमेर का १११ वां स्थापना दिवस दिनांक १ अप्रैल १९८६ को दैनिक 'न्याय' के प्रधान सम्पादक प० विश्वदेव जी शर्मा की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के सैद्धान्तिक, दार्शनिक, वैचारिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य मे किये गये महान कार्यों, उपलब्धियो तथा वर्तमान परिस्थितियो मे उसकी आवश्यकता पर विद्वानो के प्रेरणादायी भाषण हुए। —रासासिंह मन्त्री

—पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का १५ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ४ से ६ अप्रैल तक अभूत पूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ जिसमे भजन उपदेश विद्यालय की छात्राओ के सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन हुआ। आर्य जगत के महान विद्वान श्री आचार्य विश्वश्रवा व्यास जी के वेद सम्बन्धी गहन विचारो का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। उत्सव सफल एव सराहनीय रहा।
—सुषमा पाल एम० ए०

—नगर आर्य समाज लखनऊ ने वैशाखी पर्व १३-४-८६ को 'बलिदान दिवस' के रूप में मनाया। वयोवृद्ध आर्य नेता प० नाथूराम सिंह का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। —ज्ञानकृष्ण

—सविता सदन गवां बदायूं में डा० ओम प्रकाश शर्मा के प्रयत्नों से १११ वां आर्य समाज स्थापना दिवस एव नववर्ष समारोह सम्पन्न हुआ। यज्ञ से आरम्भ कर श्री प्रज्ञादेवजी के प्रवचन और श्री दयाशकर जी के भजनो के बाद यज्ञ प्रसाद शान्तिपाठ के साथ समापन हुआ। —ओमप्रकाश

—आर्य समाज का स्थापना दिवस दिनांक ७ अप्रैल १९८६ को आर्य समाज मन्दिर लालगज (रायबरेली) में डा० शकुन चन्द गुप्त विद्यावाचस्पति प्रधान आर्य समाज लालगज की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया।

-शिवसाधक ...

आर्य समाज बैंकाक (थाईलैण्ड) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बैंकाक में दिनांक ८ मार्च १९८६ को ऋषिबोध पर्व विशेष हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया साथ ही समाज का ६६ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक २७ मार्च को होली पर्व के अवसर पर श्री अवतार सिंह पावा की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया। उत्सव में स्थानीय भजनिक श्री जगजीत सिंह के मधुर एवं प्रभावशाली भजन हुए तथा समाज के उप प्रधान श्री प्रसिद्ध नारायण जी तिवारी ने समाज के उद्देश्य एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। श्री बीर बहादुर चन्द उपमन्त्री आर्य समाज ने भारतीय संस्कृति की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए महात्मा बुद्ध जगत गुरु शंकराचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती और राजा राममोहन राय के सदुपदेशों तथा समाज सेवाओं की चर्चा की। समाज के कोषाध्यक्ष श्री पलकधारी चन्द ने बताया कि स्थानीय समाज की स्थापना भी सन् १९२० में होली के दिन ही हुई थी।

उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महामहिम भारतीय राजदूत महोदय तथा संसदीय कार्य मन्त्री और पर्यटन मन्त्री भारत सरकार श्री हरि किशन लाल जी का पुष्प मालाओं से स्वागत किया गया। स्वागताध्यक्ष श्री रामपलट पाण्डेयजी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' का थाई भाषा में अनुवाद और मुद्रण होने की सूचना व्यक्त करते हुये कहा कि बीस प्रतियां आज ही प्राप्त हो चुकी हैं यह समाज की एक विशेष उपलब्धि है। कार्यक्रम के अन्त में स्वागताध्यक्ष जी ने मन्त्रीजी, राजदूत महोदय तथा उपस्थित विद्वजनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

—संग्राम सिंह मन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा में स्थापना दिवस

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली में आर्य समाज स्थापना दिवस का १११ वाँ उत्सव दिनांक ६ अप्रैल १९८६ को सार्वदेशिक प्रधान श्री लाला रामगोपाल की अध्यक्षता में एक नवीन उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। श्री शालवाले जी ने आर्य जनों का आवाहन करते हुए बाहरी खतरों से देश की रक्षा हेतु जोरदार शब्दों में अपील की। प्रमुख वक्ताओं में श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, श्री प० शिव कुमार शास्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री एवं श्री प्रि० मोहन लाल जी का नाम उल्लेखनीय है। उत्सव की सफलता में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों आर्य स्त्री समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं का विशेष सहयोग रहा। —प्रचार सचिव

नव निर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्य समाज (अहमदाबाद) के अंतरंग सदस्य श्री हरिश्चन्द्र जी श्रीवास्तव के असीम सौजन्य से नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन समारोह उनके निवास स्थान थलतेज ६ गुञ्जन पार्क सोसाइटी में दिनांक १८ मार्च १९८६ को रामनवमी के पवित्र पर्व पर हर्ष और उल्लास के साथ भव्य यज्ञ एवं हवन के वातावरण में श्री आचार्य रामदेव मेहता के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। समारोह में समाज के प्रधान श्री रतन प्रकाश गुप्त तथा उनकी धर्म पत्नी श्रीमती सुशीला देवी ने भी भाग लिया। —सम्वाददाता

—आर्य समाज बिमौली के सदस्य तथा पुरोहित श्री विट्ठललालजी ने श्री ब्रह्मानन्द जी वेदभिक्षु से एक विशाल जन समुदाय के बीच में ६-४-८६ को प्रातः आर्य समाज मन्दिर में सन्यास की दीक्षा ली।

इसी उपलक्ष्य में विशाल यज्ञ के अतिरिक्त एक सत्संग का भी आयोजन ४,५,६ अप्रैल का प्रातः मन्दिर आर्यसमाज तथा रात्रि में श्री वेद काम मन्त्री आर्य समाज के निवास पर सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें पूज्य स्वामी जी (स्वा० ब्रह्मानन्द जी के अतिरिक्त बरेली निवासी श्री मनीश चन्द्र शास्त्री के सारगर्भित प्रवचनों के साथ २ श्री राम जी के भजनोपदेश हुए। —मन्त्री

— नगर आर्य समाज रकाबगंज लखनऊ में २०-४-८६ व २७-४-८६ को क्रमशः महात्मा हंसराज एवं मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी जयन्ती मनाई गई।

ज्ञान कृष्ण
सम्वाददाता आर्य मित्र

— दिनांक १८ अप्रैल ८६ को आर्य समाज कृष्णनगर मथुरा में रामनवमी महोत्सव बड़ी धूमधाम से हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया गया। भगवान राम के वैदिक जीवन पर प्रकाश डाला गया। —प्रधान आर्यसमाज

(पृष्ठ २ का शेष)

राजीव जी प्रधान मन्त्री और कांग्रेस अध्यक्ष होने के नाते लोक सभा सदस्यों को आत्मा की आवाज के अनुकूल बोलने का मौका देते परन्तु इस सम्बन्ध में जिन विचारशील व्यक्तियों ने कुछ कहने का साहस किया उन्हें कांग्रेस से बहिष्कृत किया गया और निलम्बित किया गया। अधिनायकवाद क्या है? सीधी परिभाषा है कि जो नेता सोचे वही सब सोचें। जो वह कहे उसका सब समर्थन करें। यदि कोई आर्थिक प्रश्न हो अथवा ऐसा विधेयक हो जिससे सरकार के पतन का भय हो तब तो दलीय अनुशासन किसी हद उचित है परन्तु मुस्लिम महिला विधेयक को लेकर जो अधिनायकवाद का प्रदर्शन हुआ है यह नितान्त अनुचित है और जहां अधिनायकवाद पनपता है वहीं नीचे से हिंसा के बीज भी पनपने लगते हैं। बुद्धिजीवियों से अनुरोध है कि राजनैतिक दलों में, सामाजिक संगठनों में जो अधिनायकवाद पनप रहा है एक व्यक्ति सदैव के लिए अपने पद पर चिपक कर बैठना चाहता है ऐसी प्रवृत्तियों के लिये और उनसे जो दूषित परिणाम हो सकते हैं उनको उजागर करने के लिये देश को सही दिशा देने के लिए बुद्धिजीवी वर्ग निर्भयता के साथ अपने विचार रखें और ऋषिवर दयानन्द की तरह निर्भीकता के साथ लोकतान्त्रिक परम्परा की रक्षा का निर्वाह करें।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

श्री शालवाले को अभिनन्दन पत्र भेंट

सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले को अभिनन्दन पत्र भेंट करके श्री प० राजगुरु जी शर्मा ने यह विचार व्यक्त किए कि अभिनन्दन ग्रन्थ के पूर्ण करने में श्री वा० सोमनाथ जी मरवाह ने आर्थिक सहयोग देकर ग्रन्थ के पूर्ण करने में जो योगदान दिया, उनके हम आभारी हैं। साथ ही उनके लेखन सामग्री जुटाने में अति योगदान भी सराहनीय है।

अभिनन्दन ग्रंथ के लेखन व सामग्री जुटाने में श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सभा उपमन्त्री की कार्य कुशलता भी अनुकरणीय है उनके प्रयत्नों से ही इस आयोजन को पूर्णता मिली है।

कार्य की पूर्णता में— कार्यालय को भुलाना भी असम्भव है। श्री रामभूल शर्मा,श्री वसुदेव जी, श्री दानसिंह जी आदि का ग्रन्थ सम्पादन में बड़ा ही योगदान है और यह बधाई के पात्र हैं।

—दयानन्द विद्यालय फरीदपुर का सातवाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १२ अप्रैल को सायंकाल बड़े धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें वैदिक यज्ञ, प्रार्थना व मन्त्रोच्चारण के उपरांत लोकगीत, राष्ट्रगीत, वैदिकगीत एवं कवि सम्मेलन के रोचक व आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत हुए। —प्रधानाचार्य

—दिनांक ३० मार्च १९८६ को आर्य समाज बांगरमऊ (उन्नाव) के तत्वावधान में तथा प० श्री रामनरायण आर्य प्रधान समाज की अध्यक्षता में नसिरापुरा निवासी श्री प्रेम नारायण व सुखवासी लाल के नाती का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। आर्य समाज नसिरापुर को दानस्वरूप २१) प्राप्त हुआ। —सम्वाददाता

— दिनांक १३ अप्रैल १९८६ को चि० विजय सुपुत्र श्री गंगाधर गांधी निवासी मेरठ कैंट का शुभ विवाह आयु० इन्दु सुपुत्री श्री खुशीराम गुलयानी बागपत मेरठ के साथ वैदिकरीत्यानुसार श्री श्रीपाल आर्योपदेशक द्वारा सम्पन्न कराया गया। श्री गांधी ने इस शुभ अवसर पर विभिन्न आर्य संस्थाओं को दान दिया। —मन्त्री आर्यसमाज

—आर्य समाज साडी जिला- हरदोई की ओर से नव निर्मित वेद मन्दिर एवं यज्ञशाला में दिनांक १७ से २० अप्रैल १९८६ तक श्री प० केशवदेव शास्त्री वानप्रस्थ महोपदेशक अधिष्ठाता उपदेश विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ तथा प० ब्रह्मानन्द आर्य भजनोपदेशक श्री युगलकिशोर आर्य भजनोपदेशक सभा द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जी महाराज के जीवन एवं कृतित्व पर सारगर्भित भाषण, प्रवचन एवं भजनोपदेश द्वारा जनता को भावविभोर कर दिया।

मेवाराम गुप्त ठेकेदार

—महिला आर्य समाज स्टेशन रोड मुरादाबाद में ६ अप्रैल से १० अप्रैल तक श्री मदन मोहन विद्यासागर (हैदराबाद) द्वारा वेदकथा का ज्ञानवर्धन हुआ। इसी समय श्री रामसरन वानप्रस्थी द्वारा लिखित पुस्तक— मास अण्डा मनुष्य का भोजन नहीं है' निःशुल्क वितरित की गई। —मन्त्राणी आर्यसमाज

—दिनांक १८ अप्रैल १९८६ को आर्य समाज मन्दिर लालगंज जिला रायबरेली में मर्यादापुरुषोत्तम राम का जन्म दिवस रामनवमी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर यज्ञ, भजनादि हुये। श्रीराम के जीवनपर विभिन्न वक्ताओं ने प्रकाश डाला। —शिवबालक आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० द्वारा–

कुम्भ मेला हरिद्वार में पाखण्ड खण्डन एवं वैदिक धर्म प्रचार की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ के तत्वावधान मे आयोजित हरिद्वार महा कुम्भ के मेले में पन्तद्वीप (चमगादड़ टीह) मे विशाल जगमगाते पंडाल के प्रचार शिविर द्वारा दिनाक १ अप्रैल से १४ अप्रैल १९८६ तक व्यापक रूप से रूढ़ियों एव पाखण्डों का खण्डन करते हुए वैदिक धर्म का प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ। विद्वानों द्वारा संगीत, भजन एवं प्रवचन के कार्यक्रमों के साथ ही यजुर्वेद पारायण यज्ञ का कार्यक्रम भी नित्य होता रहा तथा श्री विद्यारत्न जी द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित एक विशाल एवं भव्य प्रदर्शनी का आयोजन हुआ जिसमे हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा श्री स्वामी विवेकानन्द जी रहे तथा गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के ब्रह्मचारियों द्वारा नियमित रूप से वेद पाठ होता रहा। इस विशाल प्रचार शिविर में आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों, मनीषियों, सगीता चार्यों ने अपने ज्ञान से जनता को प्रभावित कर आत्म विभोर कर दिया। इस शिविर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्रद्धेय श्री लाला रामगोपाल जी शाल वाले, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी, आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी कर्मानन्द जी वानप्रस्थ, श्री धर्मेन्द्रसिह उपप्रधान सभा संयोजक प्रचार शिविर, श्री जयनारायणजी अरुण उपमन्त्री सभा, श्री विश्वम्भर दयाल जी गुप्त मुद्रक प्रकाशक साप्ताहिक 'आर्यमित्र' महोपदेशक श्री प० केशवदेवजी शास्त्री अधि० उ० वि० श्री पं० शिव कुमार शास्त्री महोपदेशक सभा, सभा भजनोपदेशक श्री ब्रह्मानन्द आर्य, श्री युगलकिशोर जी, श्री नेमप्रकाश जी, श्री शिवदेव बेधड़क जी, श्री गजराजसिह राघव श्री कमलदेव जी, श्री रामचन्द्र जी आदि के अतिरिक्त श्री ब्रह्मचारी आर्य नरेश श्री आचार्य रामकिशोर शर्मा श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, श्री मुन्शीलाल जी वैद्य श्री ओम प्रकाश वर्मा रेडियो सिंगर श्री धमपाल शास्त्री श्री शांति मुनि जी आदि का भी प्रचार में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। दिनांक ६ अप्रैल १९८६ को एक विशाल शोभा यात्रा सभी आर्य कैम्पों का संयुक्त रूपसे पन्तद्वीप से चलकर मेले के मुख्य मार्गों से होता हुआ भजन गीत एवं नारोंके साथ आर्य समाज मन्दिर श्रवण नाथ नगर पहुचकर एक विशाल सभा मे परिवर्तित हो गया जहाँ पर महात्माओं एवं विद्वान आर्यसन्यासियों के भाषण प्रवचन हुए और आज से १२० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा इसी मेले मे फहराई गई पाखण्ड खण्डिनी पताका का स्मरण कर भविष्य में भीषणतरत रूप से वेद प्रचार करते हुए पाखण्ड खण्डन करते रहने की प्रतिज्ञा की गई।

सम्वाददाता

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

—आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी (मेरठ) के तत्वावधान मे डी० ए० वी० इण्टर कालेज टटीरी मे २३ मई ८६ से १ जुन ८६ तक लगभग १५० आर्य वीरो के लिए मण्डलीय स्तरपर शिविर का आयोजन किया गया है। प्रस्तुत शिविर में प्रधान शिक्षक डा० देवव्रत आचार्य उप सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली तथा बौद्धिकाध्यक्ष प० फूलसिह आर्य धनौरा (टीकरी) सचालक सार्वदेशिक आ० वी० दल मण्डल मेरठ रहेगे। प्रवेशार्थ हा० स्कूल समकक्ष योग्यता धारी आर्य युवक सम्पर्क या पत्र व्यवहार मन्त्री आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी (मेरठ) से करें।

—राधेश्याम आर्य मन्त्री

गढ़वाल वेद प्रचार समिति देहरादून द्वारा आगामी २३, २४ और २५ मई को उत्तर काशी मे आर्य सम्मेलन १९८६ का आयोजन

कार्य सफलता के लिए आर्थिक सहयोग की अपील

सभी आर्य समाजों को सूचनार्थ–निवेदन है कि उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्र विगत कई वर्षो से ईसाईकरण की चपेट मे है। इन क्षेत्रों मे आर्य समाज के माध्यम से समय-समय पर हिन्दू जाति मे धार्मिक जाग्रति की जाती है। उत्तर प्रदेश के गढवाल, बिजनौर, और चमोली तथा उत्तर काशी क्षेत्रो मे विगत कई वर्षो से गढवाल वेद प्रचार समिति देहरादून सक्रिय होकर कार्य करती रही है। विगत १९८२ मे इस समिति की ओर से पौढी मे भारी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस वर्ष २३ से २५ मई १९८६ को उत्तर काशी आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

अत सभी लोगो को इस आयोजनके लिये अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहिये। मैं आशा करता हूँ सबके सहयोग से सम्मेलन सफल होगा।

नोट–धन चक अथवा धनादेश द्वारा गढ़वाल वेद प्रचार समिति के श्री उम्मेद सिंह आर्य विशारद मन्त्री, गढ़ निवास मोहकमपुर देहरादून के पत्त पर भेजने की कृपा करें।

राम गोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

दुःखद समाचार

—दुःखद समाचार है कि आर्य समाज देवरामपुर (मोटाडाक) पौढ़ी गढवाल के कर्मठ मन्त्री श्री महेन्द्र सिंह जी का निधन दिनांक २ अप्रैल १९८६ को तथा उनके २१ वर्षीय तरुण भतीजे श्री हरनामसिंह का जो बी० ए० के छात्र थे, दिनांक ३ अप्रैल १९८६ को गगा में डूब जाने से असामयिक देहावसान हो गया। प्रभु दिवगत आत्माओं को चिर शाति, तथा दुःसह्य दुःख से पीडित शोक विह्वल परिवार जनों को असीम धैर्य प्रदान करें।

नारायण दत्त शास्त्री प्रधान

–आर्य समाज बदायू के तत्वावधान मे दयानन्द सेवा आश्रम मे होलिकोत्सव, नवसवत्सरोत्सव तथा रामनवमी पर्व विशेष उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। विद्वानों के उपदेश प्रवचन हुए।

राम प्रकाश सिंह उपमन्त्री

—आर्य समाज सहतवार बलिया के तत्वावधान मे पचरूखा देवी रामघाट मेले मे दिनाक १७ अप्रैल को तथा सोनाडीह के मेले मे दिनांक १९ से २१ अप्रैल १९८६ तक वैदिक धर्म का प्रचार सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज जाजूमई (मैनपुरी)
प्रधान श्री राम बाबू गुप्ता
मन्त्री श्री प्रताप सिंह
कोषा० श्री बाबूराम गुप्त

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
मा० वैशाख २१, २८
वैशाख शुक्ल २, ९, रविवार
११, १८ मई १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

श्री लालता प्रसाद जी को जामात्र शोक–

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के उपदेशक श्री लालता प्रसाद आर्य के दामाद श्री रामप्रसाद जी का आकस्मिक निधन दिनांक २६ अप्रैल ८६ को सायं ८ बजे हो गया। वह एक कुशल व्यवसायी थे और बात ही करते-करते परिवार और प्रियजनों को छोड़कर चल दिये।

इस समाचार से आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय और आर्य मित्र परिवार को अत्यन्त शोक हुआ तथा प्रभु से प्रार्थना की गई कि दिवंगत को शांति एवं दुःखी जनों को धैर्य प्राप्त हो। सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी ने इस अवसर पर शोक सन्तप्त परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट की और प्रभु से दिवंगत के लिये शांति की प्रार्थना की। सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी जी ने भी शोक सवदना व्यक्त की।

संवाददाता

सूचना

श्री डा० शिवपूजनसिंह कुशवाह शास्त्री, एम०ए०, संयुक्त सम्पादक 'वेदवाणी' बहालगढ़ (सोनीपत) से जलवायु अनुकूल न होने के कारण उस स्थान को परित्याग कर अलग हो गये हैं। जो सज्जन उत्सवादि में बुलाना चाहें तो इस पते पर पत्राचार करें–शिव पूजन सिंह कुशवाह शास्त्री वेद मन्दिर (गीता आश्रम), अशोक सिनेमा के सामने ज्वालापुर (सहारनपुर)

दु:खद समाचार

–आर्य समाज गुलावठी बुलन्दशहर ने अपने समाज के भू० पू० उपप्रधान श्री डा० बलबीर सिंह जी के निधन (दि० १० मार्च ८६) पर गहरा शोक प्रकट किया है वे ७६ वर्ष के थे। समाज ने स्व० श्री बलबीर सिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये उनके शांति तथा शोक विह्वल परिवार के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

मन्त्री आर्यसमाज

–अत्यधिक शोक पूर्ण समाचार है कि आर्य समाज महगवां (हरदोई) के कर्मठ, स्वस्थ एवं युवा आर्य सदस्य श्री प्रेम कुमार शुक्ल का २८ वर्ष की अल्पावस्था मे दि० २ अप्रैल ८६ का आकस्मिक निधन हो गया। आर्यसमाज मेंहगवां के समस्त अधिकारियों एवं सदस्यों ने अपने युवा सदस्य के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए दिवंगत को चिर शांति तथा शोक सतप्त परिवार को असीम धैर्य धारण हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

स्वदेश त्रिपाठी उपमन्त्री समाज

आवश्यकता है पुरोहित की

आर्य समाज हापुड़ को एक योग्य एवम् कर्मठ पुरोहित की आवश्यकता है जो आर्य समाज के दैनिक यज्ञ, साप्ताहिक सत्सग एवम् विशेष पर्वो के अतिरिक्त आर्य परिवारो के संस्कारों को सम्पन्न करा सके। वेतन योग्यता एवम् अनुभव के अनुसार।

नरेन्द्रकुमार मन्त्री आर्य समाज हापुड़

आर्य समाजो के निर्वाचन

आर्य समाज मुहद्दीपुर गोरखपुर
प्रधान श्री रमापतिसिंह आर्य
मन्त्री श्री मेवालाल जी आर्य
कोषा० श्री स्वामी नाथ आर्य

आर्य समाज साहब गंज गोरखपुर
प्रधान श्री देवीदास आर्य
मन्त्री श्री रमेश प्रसाद आर्य
कोषा० श्री यशोदानन्द केसरवानी

आर्य समाज किराना बाजार गुलबर्गा (कर्नाटक)
प्रधान श्री शिवकुमार जी शास्त्री
मन्त्री श्री नारायण राव जी मेगजो
कोषा० श्री नारसिंग राव जी कानकुर्त

सूचना

आर्य मित्र' के समस्त प्रिय पाठक बन्धुओ को सूचित करते हुए महान दुःख हो रहा है कि सभा कार्यालय के प्रेस मे टाइप एवं अन्य मुद्रण सामग्री की भयंकर चोरी हो जाने के कारण हम दिनांक ११ मई १९८६ का अंक समयानुसार भेजन मे असमर्थ रहे।

अतः आपको दिनाक ११ मई एवं १८ मई १९८६ का संयुक्त अंक भेजा जा रहा है। परिस्थिति की विवशता के लिये खेद है।

सम्पादक

-आर्य समाज हासीपुर (मिरजापुर) के सदस्य श्री राम चरित्र सिंह की पूज्यनीया माता श्रीमती सिरोजा देवी के निधन पर उनका अन्त्येष्टीय संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। शान्ति यज्ञ के उपरान्त समाज को २१ रुपया दान स्वरूप प्राप्त हुआ।

यज्ञदेव वानप्रस्थ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्
आर्य मित्र
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

10/6/86 आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं १२४९/६० घोषणा पत्र सं० ७ / २८-२-८४

वर्ष ८९] मा० ज्येष्ठ ४, ११, ज्येष्ठ कृष्ण २. ९, रविवार संवत् २०४३ वि०, दि० २५ मई, १ जून १९८६ [अङ्क २१-२२

प्रार्थना

ओं आ न उइडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानर सविता देव ऽएतु। अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्व जगदभिपित्वे मनीषा ॥

—यजु० ३३-३४

भावार्थ—हे युवकजनों ! तुम बुद्धि से तुरन्त हमारे समस्त जगम पुत्र गो आदि को अवश्य आनन्दित करो जिससे कि विश्वनायक शासक राजा प्रशसनीय वाणियो द्वारा विद्यासम्मेलन आदि मे हमारे पास आवें।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी

सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

श्री शालवाले के नेतृत्व मे आर्य नेताओ का दल पंजाब की दयनीय लड़खड़ाती स्थिति के अध्ययन करने हेतु पंजाब गया

आर्य नेता श्री मनमोहन तिवारी अध्ययन दल में सम्मिलित

वर्तमान स्थिति की रिपोर्ट प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी को प्रेषित

दिल्ली स्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले के नेतृत्व में आर्य नेताओ का एक दल पजाब की सही स्थिति के अध्ययन हेतु तथा सद्भावना रूप मे पजाब राज्य मे गया जिसमे श्री मनमोहन जी तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, प्रो०शेरसिंह जी भूतपूर्व केन्द्रीय रक्षा मन्त्री तथा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् उप प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली निवासी हैदराबाद, श्री वी० कृष्णलाल भू०पू० मेयर हैदराबाद, श्री राजगुरु शर्मा प्रधान मध्यप्रदेश आर्य प्रतिनिधि एव श्री लक्ष्मीचन्द्र जी प्रतिनिधि आर्यसमाज दीवानहाल एव सुरक्षा अधिकारी आदि दिनांक १५ मई सन् १९८६ को प्रात पजाब मे सद्भावना हेतु पहुँचे। इस प्रतिनिधि मण्डल ने पजाब के लुधियाना, होशियारपुर, तरन तारन, बटाला अमृतसर, जालन्धर, पट्टी, खेमकरन गुरुदासपुर एव भारत पाक सीमा पर स्थित सम्वेदनशील स्थानो का एक सप्ताह तक दौरा किया। जनसाधारण से मिले, आर्यसमाजों मे गये, ग्रामीण जनता से सम्पर्क किया, हिन्दू सिख सबसे मिले और पजाब की सही स्थिति समझने का पूरा प्रयास किया। प्रतिनिधि मण्डल ने अपनी एक रिपोर्ट तैयार करके भारत के प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी को प्रस्तुत की, जिसमे अनुरोध किया गया कि पजाब की समस्या एसी स्थिति पर पहुँच गई है कि अब केन्द्रीय शासन को बडी कठोरता के साथ वहाँ के आततायियो का दमन करना पडेगा और निरीह जनता का बध रोकना सबसे प्रमुख कार्य है।



श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले

आर्य प्रतिनिधि मण्डल द्वारा प्रेषित रिपोर्ट मे स्पष्ट अङ्कित किया गया है कि वहाँ की हिन्दू जनता अत्यन्त भय त्रस्त है और पजाब से हरियाणा की ओर पलायन कर रही है। यह खेदजनक है। पजाब में हिन्दुओं को अल्पसंख्यक कहना भी उचित नहीं है क्योकि हिन्दू और सिखों का अनुपात ४९ एव ५१ प्रतिशत है। तथा सिख हिन्दुओं से अलग नही हैं अपितु राजनीति के दावपेंच उन्हे हिन्दुओ से अलग कर रहे हैं। रिपोर्ट मे कहा गया है कि अकाली दल की सरकार भी पिछले लगभग ६ महीने मे कार्य कर रही है परन्तु प्रतिदिन निरीह व्यक्तियों की हत्यायें हो रही हैं यह स्थिति किसी भी सभ्य देश के लिए और किसी भी सरकार के लिये पूर्णतया लज्जाजनक है। अकालीदल खुलकर दो खेमों मे बिखर गया है बरनाला केवल कहने भर के लिए मुख्य मन्त्री हैं। आर्य दलो का सद्भावना मण्डल हिन्दुओं से मिलकर इस निष्कर्ष पर पहुचा है कि हिन्दुओं में असुरक्षा की भावना व्याप्त है तथा पजाब की पुलिस भी उन्हे भय मुक्त करने मे असमर्थ हैं।



श्री मनमोहन जी तिवारी

समस्त परिस्थितियों का अध्ययन करने के बाद सद्भावना एव पजाब परिस्थिति अध्ययन हेतु गया आर्य दल प्रधान मन्त्री से स्पष्ट शब्दो मे अनुरोध करता है कि—गुरुद्वारे मे जूते साफ करते हुए श्री बरनाला जी सम्भव है पजाब मे अपनी पुलिस के द्वारा शान्ति स्थापना मे सक्षम नहीं हो सकेंगे अत पजाब को तुरन्त सेना के हवाले करना आवश्यक है तथा बरनाला जी भी ऐसा ही समझ रहे हैं। इसके साथ पजाब से मिला हुआ सम्वेदनशील जो कश्मीर राज्य है उसमे भी कश्मीरी पण्डितो की सुरक्षा के लिए सेना को ही दायित्व सौंपा जाय इस आशय की एक संस्तुति पहले भी श्री शालवाले भारत सरकार से कर चुके है।

'आर्य मित्र' को पूर्ण विश्वास है कि आर्य प्रतिनिधि मण्डल द्वारा जो संस्तुति प्रधान मन्त्री को की गई है वह निष्फल नहीं होगी। मुख्य प्रश्न है ? पजाब के हिन्दुओ मे सुरक्षा की भावना व्याप्त हो और किसी भी व्यक्ति को आततायियों की बन्दूक की गोली की भय से अपना गांव और जन्म भूमि न छोड़ना पड़े।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम०ए० सम्पादक

आर्य्यमित्र

लखनऊ— रविवार २५ मई, १ जून १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

सम्पादकीय

श्रद्धेय दिवगत त्यागी जी—

आयसमाज के विगत तीस वर्षो के सक्रिय जीवन के इतिहास में श्री ओ३म-प्रकाश जी त्यागी का विशेष योगदान रहा है। श्री त्यागी जी ने आयसमाज के क्षेत्र में आय वीर दल के एक साधारण सैनिक के रूप मे प्रवेश किया और दल के प्रशिक्षक तथा उच्च स्तरीय पद तक अपनी लगन एव सेवा भावना से पहुँच सके। इसी प्रकार सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री के गरिमामय पद तक श्री त्यागी जी साधारण समाज सेवी से आगे बढते हुए पहुँच सके तथा महामन्त्री के दायित्व का निर्वाह उन्होने बडी कुशलता एवं कर्तव्यो का निष्ठापूर्वक निर्वाह करते हुए किया। भारत के प्रत्येक प्रातो मे वह आर्यसमाज के एक सैनिक के रूप मे गये और वहा अपनी गतिविधियो मे जनमानस को आन्दोलित किया। आज आर्यसमाज ऐसे कमठ साहसी के नेतृत्व से वचित हो गया है श्री त्यागी जी का निधन वास्तव मे आर्यसमाज के उपर एक बजपात सा है।

श्री त्यागी जी अपने चारो ओर व्याप्त सामाजिक आन्दोलनो से भी अवगत होते रह जन सघ के कार्यकता के रूप मे आगे बढे आपद काल मे उन पर शासन का अकुश लगा और उसके समाप्त होते ही जनता पार्टी की ओर से वह बहराइच क्षेत्र से लोकसभा के लिए सासद चुने गये। इसके पूर्व सन् १९७० मे ७७ तक राज्य सभा के भी सदस्य रहे। अपने सासद जीवन म उन्होने साहस के साथ लोकसभा मे एक विधेयक उपस्थित किया। जिसके द्वारा प्रलोभन देकर धर्म परिवतन करना और कराना दण्डनीय अपराध घोषित किया जाय। इस विधेयक से ईसाई एव मुसलमानो मे खलबली मच गई दुर्भाग्य था कि जनता पार्टी की सरकार का पतन जल्दी हो गया नही तो यह विधेयक किसी न किसी रूप मे अवश्य पारित होता। अत ससद मे और ससद से बाहर उनका आय समाज के सेवक के रूप मे सदैव एक ज्वलन्त उदाहरण रहा है।

श्री त्यागी जी सौम्य, मिलनसार, विचारशील, सहिष्णु एव परोपकारी व्यक्ति थे उनका मृदु व्यवहार सबको प्रभावित करता था किसी की हानि सहन नही करते थे एव यथा शक्ति सबकी सहायता तथा जो कुछ जिसके लिये कर सकते थे करने मे उद्यत रहते थे यही एक गुण था जिससे वह सर्वप्रिय थे और जिस गुण के कारण इस ससार से जाने के बाद भी उनका स्मरण किया जाता रहेगा।

त्यागी जी नियमित और अपने जीवन को स्वस्थ रखने की प्रक्रिया मे निपुण थे कुछ अधिक बीमार भी नही थे। कुछ समय पूर्व इन पक्तियोके लेखक से कानपुर मे उनकी भेंट हुई और विस्तार से उन्होने आय समाज की भावी जीवन को किस प्रकार और कैसे नवीन मोड दिया जाय इस पर चर्चा हुई। दिनाक १० मई कितना दुर्भाग्य पूर्ण दिवस था कि आकस्मिक हृदय पर आघात हुआ और आय जगत के वीर, कमठ सेनानी के प्राण पखेरू उड गये सवत्र शोक व्याप्त हो गया और रात्रि तक सारे देश मे समाचार फैल गया कि त्यागी जी ने सदैव के लिये नेत्र मूद लिये। सभी स्तब्ध रह गये और कलतक जो सौम्य मुख मुद्रा जनता के बीच मे विहसती और बोलती थी वह महाकाल के अंक में महानिद्रा मे लीन हो गई।

'आर्य मित्र' से दिवगत त्यागी जी का विशेष प्रेम था अत अपने परिवार के अग्रज के निधन पर आयमित्र अश्रु पूरित नयना से एव शोकाकुल हृदय से उस कमठ आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। आयमित्र' के सम्पादक सम्पादकीय कार्यालय एव 'आयमित्र' के पाठकों की ओर से भी सादर श्रद्धा सुमन समर्पित है और त्यागी जी का स्मरण इसी रूप मे उचित होगा कि उनके जो गुण हैं उन्हें आय जगत के नवयुवक अपने व्यवहार मे लाने का प्रयास करें। आय प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए त्यागीजी की समाजिक सेवा भावनाओ का स्मरण किया और कहा कि आय समाज की नौका का एक कुशल नाविक हमसे बिछुड गया।

सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी जी ने अपने शोकोदगार प्रकट करते हुए त्यागी जी के मानवीय गुणो की सराहना की तथा यह आशा व्यक्त की कि आय समाज के नवयुवक कार्यकर्त्ताओ के लिए त्यागी जी के आदर्शों को अपनाना श्रेयस्कर होगा। प्रभु दिवगत आत्मा को शाति प्रदान करें एव दुखी पारिवारिक जन, मित्रो एव आयजनों को प्रभु धैय के साथ दुख सहन की शक्ति दे एव उनके प्रदर्शित माग पर अनुगमन करने का साहस प्राप्त हो।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

उत्सव

—आर्य समाज सासनी हाथरस का वार्षिकोत्सव दिनाक ६ से ९ जून १९८६ को धूम-धाम से मनाया जायेगा। जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के विद्वान महोपदेशक श्री शिवकुमार जी शास्त्री तथा योग्य भजनोपदेशक श्री ब्रह्मानन्द जी आय सम्मलित हो रहे हैं।

मन्त्री आर्य समाज

—आय समाज बेरुई पो० असथर जिला फतेहपुर का वार्षिकोत्सव दिनाक १० जून से १२ जून १९८६ तक हर्षोल्लास एव भव्य आयोजन के साथ सम्पन्न होगा।

मन्त्री आय समाज

शिक्षको की राजनीति को समाप्त करने हेतु कानून बने

शिक्षकों की राजनीति को समाप्त करने की इस इस समय अत्यन्त आवश्यकता है जिसके लिये शिक्षा मन्त्रालय तुरन्त ठीक कदम उठायें। शिक्षा का द्रुत विकास शिक्षक राजनीति के पूर्णरूपेण उन्मूलन से ही सम्भव हो सकता है। जब तक शिक्षण सस्थाओं में शिक्षक-राजनीति पनपती रहेगी तब तक विभिन्न परीक्षाओं के परिणामो मे उल्लेखनीय सुधार नहीं लाया जा सकेगा। उक्त उद्गार श्री एम० एल० शर्मा, सयोजक नागरिक मन्च, लखनऊ ने एक प्रेस विज्ञप्ति मे व्यक्त किये।

श्री शर्मा ने कहा कि शिक्षक राजनीति के उन्मूलन के लिये सरकार को उचित कानून बनाना चाहिये जिससे शिक्षक-वर्ग के ऊपर प्रतिबन्ध लग सकें एवं उनका राजनीतिक क्षेत्र में अनुचित प्रवेश न हो सके। नई शिक्षा नीति के तहत ऐसे प्रावधान किये जाने चाहिये जिससे छात्रों की पढाई का नुकसान किसी भी प्रकार से न हो सके। अब उन शिक्षक-नेताओं की राजनीति को कतई नहीं बर्दाश्त किया जाना चाहिये जिन्होने शिक्षा को अब तक काफी हानि पहुचाई है।

मिहीलाल शर्मा संयोजक
नागरिक मन्च, लखनऊ

निर्वाचन

आर्य समाज नगरियासरीक्षत बरेली	आर्य समाज बीकानेर
प्रधान श्री पूरनलालआर्य	प्रधान श्री अमरनाथ
मन्त्री श्री अर्जुनसिंह शर्मा	मन्त्री श्री धर्मपाल
कोषा० श्री नन्दकिशोर वर्मा	कोषा० श्री सेठ छगनलाल जी

आर्य जगत

—आर्य समाज शाहजहाँपुर की दिनाक २२ अप्रैल १९८६ की अन्तरग बैठक मे वार्षिकोत्सव की तिथिया ७ से १० अक्टूबर १९८६ निश्चित की गई।

मन्त्री

दयानन्द के वीर सैनिक तुम धन्य हो

[श्री दार्लसिंह जी मेहरा कार्यालयध्यक्ष सार्वदेशिक सभा नई देहली]

१० मई ८६ की प्रात आर्यजगत् और हिन्दू समाज के लिए वज्रपात की प्रात सिद्ध हुई। जाति, धर्म और संस्कृति का पुजारी और राष्ट्रीय एकता व अखण्डता का प्रबल योद्धा अचानक इस संसार से चल बसा। दयानन्द का यह अनन्य सेवक लाखो लोगों के दिलों पर एक अमिट छाप छोड़ गया। सार्वदेशिक सभा के यशस्वी मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी का निधन आर्यसमाज और हिन्दू जाति की अपूरणीय क्षति है, जिसे पूरा नहीं किया जा सकता।



स्व० श्री ओमप्रकाश जी त्यागी

इस कर्मवीर व्यक्तित्व का अन्तर्ज्ञान बहुत गम्भीर और गहरा था। उनके साथ निजी सहायक के रूप में काम करते हुए १६ वर्षों की दीर्घ अवधि में कभी भी ऐसा अवसर देखने को नहीं मिला कि उनके मुखमण्डल पर कभी कोई निराशा, क्रोध अथवा दुःख का भाव उत्पन्न हुआ हो। उन्होंने कभी भी छोटे-बड़े का भेद नहीं किया। कार्यालय में प्रवेश करते ही सबसे पहले स्वयं ही हाथ उठाकर अथवा हाथ जोड़कर सबको नमस्ते करते थे। उनकी बातों में एक मीठा स्वर था, एक आकर्षण था, पंच तत्वों के भौतिक शरीर को राख होता देखकर भी मन नहीं मानता कि श्री त्यागी जी हमसे अलग हो गये हैं। उन्होंने कभी भी गरीब, अमीर, जात पात या छुआ-छूत का अन्तर अपने मन में नहीं आने दिया। उनके सारे मित्र ही मित्र थे, उनका विरोधी हिन्दू जाति में ढूढकर भी हमारी दृष्टि में कभी, नहीं आया।

भरा हुआ शरीर और आकर्षक व्यक्तित्व, अन्तर्ज्ञान की गम्भीरता से युक्त था। उनका व्यवहार शालीनता, मनोविनोद और कार्य प्रेरणा के भाव सबको मोहित करते थे। कभी भी कोई समस्या उनके सामने आती तो वह तुरन्त ही वहां पर जो कोई होता, उसे पूछ बैठते-कि कैसा करना चाहिये। जो राय उन्हें उचित लगती उसी पर चल पड़ते थे। उन्होंने दूसरों की सम्मति लेने में कभी छोटे बड़े अथवा अपने पराये का भेद नहीं किया।

जिस व्यक्ति ने अपने जीवन का पहला कदम दयानन्द के सेवक के रूप में आर्य समाज की सीढ़ी पर रखा, वह जीवन भर फिर दयानन्द और आर्यसमाज का निष्ठावान सैनिक होकर रह गया।

श्री त्यागी जी को अपने जीवन में अभाव और उथल पुथल का भारी सामना भी करना पड़ा। कई बार उन्होंने अपने जो संस्मरण सुनाये वह दिल को छू लेने वाले थे। लेकिन इस वीर पुरुष ने कभी हार नहीं मानी। रचनात्मक शैली के इस कलाकार ने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में अपनी गहरी छाप छोड़ी है। संसद सदस्य के रूप में उन्होंने राष्ट्रीय समस्याओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। हिन्दू जाति की रक्षा के लिए उन्होंने संसद में विवादास्पद धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक भी रखा किन्तु वोटों की तुष्टीकरण की राजनीति ने इस बिल को पास नहीं होने दिया। इसका व्यापक प्रभाव श्री त्यागी जी के मन पर पड़ा, यही कारण था कि १९८० के लोक सभा के चुनाव के पश्चात् उन्होंने भारतीय जनता पार्टी से त्यागपत्र दे दिया।

आर्य जाति की रक्षा पंक्ति के रूप में उन्होंने आर्य वीर दल की स्थापना की। आज देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी आर्य वीर दल की कई शाखायें कार्यरत हैं। आर्य वीर दल ने सेवा, सहायता के अब तक कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। भारत को ईसाईकरण से बचाने के लिए दयानन्द सेवाश्रम संघ की स्थापना भी श्री त्यागी जी की प्रेरणा पर ही हुई थी। संघ इस समय देश के उत्तर पूर्वी क्षेत्र व अन्यान्य भागों में शानदार काम कर रहा है।

श्री त्यागी जी की प्रेरणा पर जहां देशान्तर में मारीशस, नैरोबी, लन्दन और डरबन आर्य महासम्मेलन हुए वहीं उनके मन्त्री काल में अजमेर महासम्मेलन आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह, सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह, महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह और श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी जैसे महत्वपूर्ण समारोह भी भारत में हुए। मारीशस सम्मेलन में भारत से जाने वालों के लिए विशाल अकबर पोत को याद श्री त्यागी जी की स्मृति देनी रहेगी। श्री त्यागी जी के कार्यों का इतिहास बहुत लम्बा है।

लगभग डेढ़ दशाब्दी से सार्वदेशिक सभा के सर्वोच्च मंच पर श्री रामगोपाल जी शालवाले (प्रधान) श्री ओमप्रकाश त्यागी (मन्त्री) और श्री सोमनाथ मरवाह (कोषाध्यक्ष) के त्रिमूर्ति की जो अजेय चट्टान, हैदराबाद के लौहपुरुष स्व० पं० नरेन्द्र (स्व० स्वामी सोमानन्द) की दूर दृष्टि से बनाई गई थी आज उस दीवार की एक कड़ी गिर गई है श्री त्यागी जी का विकल्प कोई दूर दृष्टि वाला ही ढूढ पाएगा।

जहां आर्यसमाज को, हिन्दू जाति को श्री त्यागी जी के वियोग का गम है वहीं हम जैसे अनुचरों की भी अन्तर्पीडा बार बार आर्तनाद कर उठती है। हे महापुरुष आप पुनः पुराना वस्त्र त्यागकर नए परिधान में इसी घर में जन्म लो, आपकी आवश्यकता है। दिवंगत के चरणों में मेरा शतशत प्रणाम।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का रजिस्टर्ड कार्यालय, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ पर ही है, अन्य कोई नहीं है।

उत्तरप्रदेश की समस्त आर्यसमाजों एवं जिला आर्य उप समाओं के अधिकारियों की सेवा में—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने अपनी अन्तरंग के निर्णय के अनुसार श्री कैलाशनाथसिंह तथा श्री राजपाल आर्य एवं उनके साथियों को छः साल के लिए निष्कासित किया हुआ है, इसके उपरान्त भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के द्वारा निष्कासित व्यक्तियों ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के नाम से एक परिपत्र, १० मार्च १९८६ को निकाला है, जिसमें उन्होंने अपने को सभा का अधिकारी घोषित किया है, जो पूर्णतया असवैधानिक है, क्योंकि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ, रजिस्टर्ड कार्यालय के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी हैं, जिसे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं रजिस्ट्रार सोसाइटी फर्मस् चिट् फंड, उ० प्र०, लखनऊ द्वारा मान्यता प्राप्त है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ जो रजिस्टर्ड कार्यालय है-के द्वारा प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों तथा शिक्षण संस्थाओं का सचालन होता है।

समस्त आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि श्री कैलाशनाथसिंह एवं श्री राजपाल आर्य स्वयंभू नेता के भ्रम से भ्रमित न हों तथा इन्हें किसी भी प्रकार का सहयोग न दें, साथ ही साथ यह भी निवेदन करना है अपने परिपत्र में, १५, १६, १७ मई, ८६ को मेरठ में आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० शताब्दी समारोह के नाम पर धन इकट्ठा करने का प्रयास कर रहे हैं उन्हें किसी भी प्रकार का धन न भेजें।

तथा अपने समाजों के वार्षिक चिट्ठे भी आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के पते से भेजें। इस सम्बन्ध में जो भी जानकारी करना चाहें आप श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उ० प्र०-५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ-२२६००१ पर सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

भवदीय

इन्द्रराज	चन्द्रकिरण शर्मा	मनमोहन तिवारी
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

अध्यात्म सुधा

वेद का मनन

(व्याख्याकार इन्द्रराज प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ)

ओ३म् अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम । होतारं रत्नधातमम ।
(ऋग्वेद १।१।१)

शब्दार्थ–[पुरोहितम्] सामने विद्यमान अथवा पूर्व से ही जगत् के धारण करने वाले [यज्ञस्य देवम्]—यज्ञ के प्रकाशक और स्वामी अथवा [यज्ञस्य] हवन विद्या आदि दान और शिल्पक्रिया के (देवम्) प्रकाशक [ऋत्विजम्] प्रत्येक ऋतु मे पूजनीय [होतारम] सब अभिष्ट पदार्थों को देनेवाले अथवा जगत् के सुन्दर पदार्थों को देनेवाले [रत्नधातमम] सुन्दर रत्न आदि पदार्थों के धारण करने वाले अथवा रमणीय रत्नादिको के पोषण करने वाले [अग्निम्] परमात्मा अथवा भौतिक अग्नि को, अथवा प्रकाश स्वरूप परमात्मा की [ईडे] मैं स्तुति करता हू ।

विशेष-ऋग्वेद का यह पहला मन्त्र सम्भवत ससार मे सर्वप्रथम अवतरित हुआ । दुनियाँ के इतिहासज्ञ विद्वानों की दृष्टि से ऋग्वेद की पुस्तक दुनियाँ के पुस्तकालय मे सबसे पुरानी पुस्तक है। इस परिपेक्ष्य मे ऋग्वेद का यह प्रथम मन्त्र सबसे पुराना मन्त्र है । सर्व प्रथम इस मन्त्र का अवतरण 'अग्नि' ऋषि के पवित्र अन्त करण मे हुआ । यह मन्त्र अपने मे भाषा विज्ञान, ज्ञान और विज्ञान लिये हुए हैं । वैयाकरण लोग अईउण आदि सूत्रो को शंकर के डमरु से निकला हुआ मानते हैं । यह बात तो सम्भवत समझ मे न आये । परन्तु हा सर्वप्रथम वेद का ज्ञान जब ऋषियों के हृदय मे प्रकट होने को हुआ तो अखिल भाषाओं के मूलभूत अनादि स्वरो की तथा कवर्गादि व्या स्थानो का आदि नाद विश्व गगन मण्डल मे प्रतिध्वनित हुआ जिसे ऋषि 'अग्नि' के पवित्र अन्तकरण ने झट से पकड़ा और इस प्रथम श्रुति के द्वारा ही सब जगह फैल गया । इसी श्रुति मे प्रधान स्वरो और मुख्य स्थानों का उपदेश इस प्रकार सर्वप्रथम ही आदि गुरु परमेश्वर के द्वारा ऋषियों के माध्यम से ससार मे प्रसारित हुआ । इसश्रुति के द्वारा साक्षात् सब वर्णों की परमपरा अखिल भाषाओं की जननी बनी । अब आप इस मन्त्र को देखें–['अग्नि'] इसमें स्वर हुएँ अ, इ, [ईडे] इसमे ई–ए [पुरोहितम्] इस मे उ, ओ [ऋत्विजम्] इसमे ऋ का उपदेश इस मन्त्र मे आदि गुरु परमेश्वर ने दिया । इसी प्रकार कवग, चवर्ग, तवग, टवर्ग और पवर्ग मे हर तृतीय अक्षर कोमल और मधुर होता है । ये भी इसी मन्त्र में उपलब्ध हो जाने हैं । इस प्रकार वर्णमाला की उत्पत्ति इस आदि ऋचा से सुस्पष्ट सिद्ध है ।

सीधा २ अर्थ करने पर प्रत्येक शब्द का क्रमश एक दूसरे से सम्बन्ध है। पहला शब्द 'अग्नि'—इसका अर्थ भौतिक अग्नि भी किया जाता है जो विज्ञान का सूचक है और प्रकाश स्वरूप परमेश्वर भी किया जाता है जो ज्ञान और उपासना के क्षेत्र मे स्तुति परक है । चाहे जैसा अर्थ करें पुनरपि शब्दो का तारतम्य देखिए अग्नि कैसा है । पुरोहितम् सामने विद्यमान है अथवा पूर्व से ही जगत् का धारण करने वाला है । निसन्देह अग्नि सर्व प्रथम प्रेरक है । जहाँ अग्नि नही है वहा गति नही है । शरीर मे अथवा मशीन में अथवा किसी भौतिक कण में अग्नि ही के द्वारा गति है अग्नि गई सब वस्तुए रुकी । कैसा अद्भुत व्याख्या क्रम है । वह अग्नि द्वारा गति कैसी हैं ? (यज्ञस्य देवम्) यज्ञ की, परोपकार की अथवा विज्ञान मे शिल्पक्रिया आदि की (देवम्) प्रकाशक है । अर्थात् समस्त गति भौतिक समृद्धि के लिये है । वह अग्नि कैसी है ? (ऋत्विजम्) प्रत्येक ऋतु मे पूजनीय है । अर्थात् ऋतु २ में जड जगम सृष्टि की रचयिता तथा निष्पादक है । वह अग्नि कैसी है ? (होतारम्)–सब अभिष्ट और सुन्दर पदार्थों को देने वाली हैं । निसन्देह अग्नि मे पक कर बर्तन में सौन्दय आता है । जठराग्नि मे पक कर अन्न-वीर्य और ओज बनता है । अग्नि मे पक कर ही भूगर्भ मे (रत्नधातमम्) रत्नों की उत्पत्ति होती है । वह अग्नि ही रत्नो का धारण करने वाला है । शब्दो में कैसा सुरम्यक्रम हैं ।

अग्नि के बिना–न गति, न प्रकाश, न जीवन । इसलिये अग्नि का अर्थ जहा भौतिक अग्नि है वहा आत्मा भी हो सकता है और परमात्मा भी । इस मन्त्र मे 'ईडे' क्रिया बडी महत्व की है । जहा भौतिक अग्नि का प्रसग है वहा 'ईडे' का अर्थ होगा अग्नि, विद्युत् और सूर्य के गुणो को जान कर उनका वैज्ञानिक ढग से यथा योग्य प्रयोग कर प्राणी मात्र का कल्याण करना तथा जहा अग्नि शब्द जीवात्मा और परमात्माके अर्थमे आया है वहा 'ईडे' क्रिया का अर्थ होगा परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण करके परमपिता परमात्मा जो सबका प्रकाशक है, और अपने प्रकाश से प्राणी मात्र का कल्याण कर रहा है उसका स्तुति गान करना । आईए–। इस ऋग्वेद की प्रथम ऋचा से उस अग्नि का स्तुति गान करें।

जहाँ हर व्यक्ति आतंकित और भयभीत है ।
सूरज डूबते ही दूकानें बंद-सडकों पर सन्नाटा—सब घरो के भीतर

पंजाब

जहा के सवेदनशील क्षेत्रो का दौरा करके वापस आये हैं । श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० पंजाब की प्रातन्तरिक स्थिति का आंखों देखे आधार पर श्री तिवारी जी की रिपोर्ट अगले अंक में पढ़िये । सम्पादक

क्या 'कुरआन' सचमुच खुदा की किताब है–

(डा० अमरेश आर्य एम० ए० पी० एच० डी० सुल्तान बाज़ार हैदराबाद)

मुस्लिम दुनिया का यह ठोस विश्वास है कि 'कुरआन' को हजरत 'जिबरील' नामी फरिश्ता जिसको 'रुह्' और 'रुहुल अमीन' भी 'कुरआन' मे कहा है खुदा के हुजूर से ले आकर हजरत मुहम्मद को दी है। और कुरआन एक मुस्त पूरा नहीं लाया गया है कई बार होकर आया है। सबसे पहले 'सुरतुल कलम' के पहली तीन आयत लाये गये और सबसे अन्तमें "सुरतुल माहीदा" की "आज के दिन हमने तुम्हारे लिये तुम्हारी शरियत को पूरा किया है" वाली आयत लाये गये। इन पहली और आखिरी आयतों के बीच जितने सारे कुरआन हैं वह कम से कम हिसाब के अनुसार चार सौ तिरासी बार होकर हजरत मुहम्मद को 'जिबरील' ने लाकर दिए हैं।

यहां पर तीन चीजें बहुत अहम हैं। (१) कुरआन को देने वाला वह तो खुदा है (२) कुरआन का मिलने वाला वह तो हजरत मुहम्मद है (३) कुरआन का लाने वाला वह तो हजरत 'जिबरील या रोह' या 'रुहुल अमीन' है। यह बात माननी पड़ेगी कि यह लाने वाला हरबार मिलनेवाले के यहां से देनेवाले के पास जाकर कुरआन को लाता रहा है और यह काम कम से कम हिसाब से चार सौ तिरासी बार हुआ है। यह सब इस्लामी दुनियां का विश्वास और इस्लामी किताबों का कहना है।

कुरआन' ने 'सुरतुल महारिज' नामी सिपारा में कहा है–'दुनियां वालों के पचास हजार साल के मुद्दत मे फरिश्ते विशेष कर 'जिबरील' इस दुनिया से जहां कुरआन के मिलने वाला हजरत मुहम्मद रहता है खुदा के हुजूर मे चढ़ते-चढ़ते पहुचते हैं" अर्थात 'जिबरील' को हजरत मुहम्मद के पास से खुदा के पास तक पहुचने के लिए कुरआन के कथनानुसार पचास हजार साल लग जाता है और वहा से वापसीके लिये भी पचास हजार साल। एक बार हो आने के लिये एक लाख साल इस तरह चार सौ तिराग्नी बार होकर आने के लिये चार करोड़ तिरासी लाख साल होना पडता है। अर्थात कुरआन के कथनानुसार वह खुदा के पास से हमारी इस दुनिया मे रहने वाले हजरत मुहम्मद के पास चार करोड तिरासी लाख साल में पहुचना चाहिए इस से कम समय के अन्दर हो नहीं सकता।

इधर हजरत मुहम्मद की कुल उम्र तिरसठ साल है और उनको चालिस साल पूरा होने के पश्चात् ही कुरआन मिलना शुरू हुआ है अब प्रश्न यह है कि ? चार करोड तिरासी लाख साला मे मिलने [illegible] एक चीज केवल तेईस साल में कैसे प्राप्त हुई। इन प्रश्नो का [illegible] जब तक प्रमाणा नुसार प्रस्तुत नहीं किया जायेगा तब तक कुरआन का ईश्वरीय पुस्तक का होना विश्वसनीय नहीं होगा।

———

नैतिक शिक्षा शिविर

बालकों को सुन्दर सस्कारों से सुसस्कृत करने एव उनके सर्वांगीण विकास को अपरिहार्य मानते हुए आर्य समाज बदायू की अन्तरग ने १ जून से ३० जून तक धर्म शिक्षा एव नैतिक शिक्षा कक्षायें संचालित करने का निश्चय किया है। यह कक्षायें प्रात ७॥ बजे से १० बजे प्रात तक चलेंगी। रोचक आकर्षक माध्यमों से शिक्षा दी जायेगी।

महेन्द्रकुमार एडवोकेट

—जिला आर्य उपसभा मिर्जापुर का रजत जयन्ती स्मारिका का विमोचन शिवशकरी मेले में रामनवमी को श्री शिवकेदारसिंह ब्लाक प्रमुख ने किया। श्री बेचनसिंह अधिष्ठाता ने ब्लाक प्रमुख का स्वागत व स्मारिका में सहयोग देने वालों को धन्यवाद दिया। स्मारिका अपने ढ ग की अनोखी है। ३५ आर्य समाजों का इतिहास प्रकाशित हुई है।

बेचनसिंह

सार्वदेशिक प्रधान श्री शाल वाले २२जून को सन्यास ग्रहण करेंगे—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्रद्धेय श्री लाला रामगोपाल जी शाल वाले ने, दिनांक २७ अप्रैल को सन्यास लेने की घोषणा की थी, तत् सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक ११ मई १९८६ में यह निश्चय हुआ है कि माननीय श्री शालवाले जी दिनांक २२ जून १९८६ को आर्य समाज दीवान हाल में दयानन्द मठ दीनानगर के संचालक और यतिमण्डल के प्रधान श्री स्वामी सर्वानन्द जी से दीक्षा ग्रहण करें और आर्य समाज दीवान हाल की ओर से संस्कार सम्बन्धी सब व्यवस्था की जाये।

सवाददाता

—आर्य समाज मिरजापुर मे स्थापना दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया जिसमे सामूहिक भोजन का कार्यक्रम रक्खा गया था समासदों के अतिरिक्त सैकडों नागरिकों ने एक साथ भोजन किया।　　मन्त्री

–दिनाक २९-४-८६ को ग्रा० मदारीपुर कलां, पो० बिलन्दा जिला फतेहपुर मे वैदिक धम का प्रचार हुआ जिसमे प० युगलकिशोर आर्य भजनोपदेशक आर्य प्र० सभा उत्तर प्रदेश के भजन एव उपदेश हुये। जिसमे लोगो ने प्रभावित होकर अपने गाँव मे आर्य समाज की स्थापना करवाई।

दिनेश कुमार गुप्त

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन की तिथि में परिवर्तन

आर्य जनता को सूचित किया जा रहा है कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का जो वार्षिक अधिवेशन रविवार १ जून को होने वाला था, उस दिन डी०ए०वी० स्थापना दिवस चण्डीगढ़ में मनाये जाने के कारण अधिवेशन की तिथि मे परिवर्तन कर दिया गया है। अत अब यह अधिवेशन, शनिवार ३१-५ ८६ को प्रात ९-३० से १ बजे तक एवं तत्पश्चात २ से साय ४-३० तक आर्यसमाज अनार कली, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे होगा।

अत: आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की आयसमाजो के समस्त प्रतिनिधियों एवं प्रतिष्ठित सदस्यों से निवेदन है कि वे यह परिवर्तित तिथि अपनी डायरी में अंकित कर लेवें। —रामनाथ सहगल

मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज आदोलन हैदराबाद के स्वतन्त्रता सेनानियो के ध्यानार्थ

प्रेस विज्ञापन (१ ८४) भारत सरकार ने आर्यसमाज आन्दोलन १९३८-३९ को, जो भूतपूर्व हैदराबाद रियासत मे हुआ। १-८-१९८० प्रभावी स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन योजना के अन्तगत सम्मान पेंशन प्रदान करने के उद्देश्य से स्वतन्त्रता सग्राम के एक भाग के रूप मे मान्यता देने का निर्णय किया है अत सरकार द्वारा यह निर्णय किया गया है कि इस आन्दोलन मे भाग लेने वाले और भ ग लेने वाले मृतको के ग्राह्य आश्रित अब अपने प्रार्थना-पत्र निर्धारित प्रपत्र पर सभी तरह से पूण किये गये अपेक्षित कागजात के साथ ३० जून १९८६ को या उससे पहले प्रस्तुत कर सकते हैं।

आवेदन पत्र की एक प्रति सम्बन्धित राज्य सरकार, केन्द्र शासित क्षेत्र प्रशासन को और दूसरी उपसचिव, गृह मामलो का मन्त्रालय, स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग, प्रथम मंजिल, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-११०००३ को रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाये।

आवेदन प्रपत्र उपसचिव, स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग, गृह मामलो का मन्त्रालय प्रथम मंजिल, लोकनायक भवन नई दिल्ली से व्यक्तिगत रूप से या डाक द्वारा नि शुल्क प्राप्त किये जा सकते हैं। ये प्रपत्र सम्बन्धित राज्य सरकार। केन्द्र शासित क्षेत्र प्रशासन से भी प्राप्त किये जा सकते हैं।

३० जून १९८६ के बाद प्राप्त आवेदनो पर विचार नहीं किया जायेगा।

केवल ऐसे स्वतन्त्रता सेनानी जिन्होंने आर्यसमाज आंदोलन मे भाग लिया, स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन योजना, १९८० के अन्तर्गत पेंशन प्रदान करने को ग्राह्य हैं, वही आवेदन करें।

डी० ए० वी० पी० ५६, (८६) ८६

हर्ष सूचना

सूचनाथ निवेदन है कि "निर्णय के तट पर दूसरा भाग (शास्त्रार्थ संग्रह) छप कर तैयार हो गया है।

जिन सज्जनो ने पहले केवल पचास रुपये देकर बुक किया था उन्हे अब भेजना आरम्भ कर दिया है, जो मई के अन्त तक सभी ग्राहकों तक पहुच जावेगा। इस भाग मे ३८ शास्त्रार्थ आये हैं। पृष्ठ ३६८ बड़े साईज मे है। छपा मूल्य १२५) रु० रखा गया है।

अमर स्वामी सरस्वती
द्वारा कार्यालय, १०५८ विवेकानन्द नगर
गाजियाबाद-२०१००१ (उ०प्र०)

पतवार संभालो

[श्री चन्द्रपालसिंह 'मयंक' एडवोकेट २६१, फेथफुलगंज, कैण्ट कानपुर]

[मयंक जी कवि हैं पत्नी के निधन के अवसर पर लिखित कविता उनकी आत्माभिव्यक्ति है। —सम्पादक]

घबराने से काम न होगा,
मन ! उठ कर पतवार संभालो।
माना-दुख का घोर प्रभंजन
हहर-हहर करता हहराता!
वज्रपात का शोर भयंकर
माना-रह रह हृदय कंपाता!
वज्रपात का भीम भयंकर
भीषण रव उठकर मिट जाता!
भय का भान कराने वाला
एक शून्य सा सब दिशि छाता!
हिम्मत नहीं हार बैठो तुम!
मन ! यह दुख का भार उठा लो।
शोक-मग्न लख कर तुमको
क्या उनको शोक न होता होगा?
तुमको रोते देख-देख कर
उनका हृदय न रोता होगा?
यह तो ठीक नहीं है, अब भी
तुम उनका दुख-भार बढ़ाओ!
आत्मा तो है अमर-सोच कर
मन ! तुम तनिक नहीं घबराओ।
शोक न करके, धैर्य धरो तुम!
उनकी आत्मा सुखी बना लो!
घबराने से काम न होगा,
मन ! उठ कर पतवार संभालो।

गुरुकुल कण्वाश्रम कोटद्वार गढ़वाल में ग्रीष्म कालीन युवक निर्माण शिविर दि० १३ से २२ जून १९८६ तक

गुरुकुल कण्वाश्रम कोटद्वार गढ़वाल मे तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में दिनांक १३ से २२ जून १९८६ तक विशाल आर्ययुवक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसके सरक्षक श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज होंगे। इस शिविर में ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त तथा श्री धर्मवीर आर्य आदि योग्य शिक्षकों द्वारा व्यायाम आसन-प्राणायाम, जूडो-कराटे, लाठी आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रवेश शुल्क १० रुपये, भोजन आवास की व्यवस्था नि शुल्क न्यूनतम आयु सीमा १५ वर्ष, आवश्यक सामग्री मे सफेद कमीज, सफेद सैन्डो बनियान सफेद कपड़े के जूते, सफेद नेकर, सफेद जुर्राब, केसरिया जाँघिया, लगोट काली बेल्ट, ६ इन्च की कृपाण प्रत्येक प्रशिक्षार्थी के लिए अनिवार्य है। इसी अवसर पर साधकों के लिए एक योग साधना शिविर का भी आयोजन होगा। सम्पर्क करें—

कार्यालय प्रबन्धक—गुरुकुल कण्वाश्रम
पो० कालाबाटी, कोटद्वार
जिला-पौड़ी गढ़वाल, पिन—२४६१४९

जम्मू-कश्मीर पँजाब सुरक्षा दिवस

कश्मीर में संविधान की धारा ३७० समाप्त हो

आर्यसमाजों के प्रस्ताव

शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के निर्देशानुसार प्रान्त की सर्वाधिक आर्यसमाजों में कश्मीर एवं पंजाब सुरक्षा दिवस मनाया गया जिसमें जम्मू-कश्मीर के असंख्य निहत्थे हिन्दुओं के शोषण नर संहार, लूटपाट, आगजनी मन्दिरों का तोड़फोड़, मजबूर अबलाओं के साथ अमानवीय कृत्य तथा हत्या और साथ ही खून से लथपथ पंजाब मे जहां एक लम्बे अर्से से उग्रवादियो द्वारा निरन्तर क्रमबद्ध रूप से आज तक होते चले आ रहे खून, कत्ल, डकैती निर्दोष व्यक्तियों की व्यापक पैमाने पर की जा रही हत्याओं की जोरदार शब्दो में निन्दा की गई कि प्रशासन इन साम्प्रदायिक तथा उग्रवादी गतिविधियो के विरुद्ध ठोस कदम उठाये जिससे अविलम्ब यह हिंसात्मक गतिविधियाँ बन्द हो तथा जम्मू कश्मीर को इस चिन्ताजनक स्थिति से हमेशा के लिए मुक्त करने हेतु संविधान की धारा ३७० को समाप्त किया जाय जिसके तहत जम्मू कश्मीर को विशिष्ट स्तर प्रदान किया गया है।

समाजों के पारित प्रस्ताव प्रधान मन्त्री भारत सरकार को प्रेषित किये गये।

(१) आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ, (२) आर्यसमाज बेहट सहारनपुर, (३) आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली, (४) आर्यसमाज सूरत (गुजरात) (५) आर्यसमाज हंसापुरी (नागपुर), (६) आ० स० जनकपुर (सहारनपुर), (७) आ०स०मोहम्मदी खीरी, (८) आ०स०शाहजहांपुर, (९) स्त्री आ० स० मेरठ शहर, (१०) स्त्री आ० स० शाहजहांपुर।

अश्लील चलचित्रोका प्रदर्शन तुरन्त रोका जाय आर्यसमाजो के प्रस्ताव

आज कल चलचित्रो एव दूरदर्शनो आदि मे अश्लील चलचित्रो के माध्यम से नारी के अंगों का अनुचित और खुला प्रदर्शन जो भारतीय संस्कृति और मर्यादा के विरुद्ध है, निरन्तर प्रसारित हैं। यह एक खेद पूर्ण एवं शर्मनाक सोचनीय प्रश्न है। यह भारत के पूज्यनीय नारी की गरिमा और प्रतिष्ठा का हनन ही नहीं बल्कि आने वाले पीढ़ी को विलासिता प्रदान करने का द्योतक भी है जो खुलेआम भ्रष्टाचार को जन्म दे रहा है। आर्यजगत इसके विरुद्ध है तथा आर्यसमाजों की यह सभा जोरदार शब्दों मे सरकार से मांग करती है कि ऐसे अश्लील चलचित्रो का निर्माण एवं प्रदर्शन तुरन्त रोका जाय जो भारतीय संस्कृति की उदात्त गरिमायुक्त नारी को शोषण के समान विलासिता के साधन के रूप मे प्रदर्शित कर रहा है और भारत की प्रतिभाशाली नारियो से भी निवेदन है कि वह इसके विरुद्ध अपनी आवाज उठायें एवं नारी समाज सेविकायें उन चल चित्र लयों पर जाकर धरना दें जहा नारी चित्रों में नग्न रूप से प्रदर्शित करके अपमानित की जाती है।

(१) आर्यसमाज डोईवाला (देहरादून)
(२) आर्यसमाज बीसलपुर (पीलीभीत)
(३) आर्यसमाज पुरैनी (बिजनौर)
(४) आर्यसमाज धनौरा टीकरी (मेरठ)

८४ मुसलमान नटो द्वारा वैदिक धर्म ग्रहण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान में, श्री मांगेराम भजनोपदेशक के सहयोग से तथा श्री स्वामी मेधानन्द सर० जी हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति समालखा (हरियाणा) द्वारा दिनाक २३ अप्रैल १९८६ को ग्राम बगढ़ जिला झुन्झनू मे यज्ञ हवन के पश्चात् १३ परिवारों के ८४ मुस्लिम नटों को स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे दीक्षित कर शुद्धि क्रिया द्वारा हिन्दू बनाया गया तथा समाज में इज्जत और रोटी बेटी का सम्बन्ध बनाने की प्रतिज्ञा की गई। —सवाददाता

गोरक्षा सत्याग्रह समिति घाटमपुर द्वारा व्यापक अभियान

श्री डा० गयाप्रसाद शास्त्री अध्यक्ष श्री उमाशंकर एडवोकेट महा मन्त्री गोरक्षा सत्याग्रह समिति तथा आचार्य बिनोवाभावे के परम भक्त श्री घोष बाबा एवं जिले के अनेक प्रमुख कार्यकर्ताओं के नेतृत्व मे, गो वंश का लदान रोकने हेतु दिनाक २९ मार्च व ८ अप्रैल १९८६ को व्यापक पदयात्रा की गई तथा हाकिम परगना घाटमपुर, हाकिम परगना भोगनीपुर आदि को ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए उ०प्र० सरकार का कानून प्रस्तुत किया जिसके आधार पर घाटमपुर रेलवे स्टेशन एव रेलवे स्टेशन पुखरायां से गोवंश का लदान रोक दिया गया है इस पुनीत कार्य मे सरकारी अधिकारी महानुभावों तथा जनपद की जनता का अपार सहयोग मिल रहा है समिति का अभियान व्यापक रूप से क्रियाशील है। —सवाददाता

दु:खपूर्ण समाचार है कि विगत मास अप्रैल मे कानपुर जनपद मे कई आर्य परिवारों के सदस्यों का निधन हो गया जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के भूतपूर्व प्रधान स्व० श्री प० विद्याधर जी की धर्मपत्नी का ७२ वर्ष की अवस्था मे दिनांक ११ अप्रैल ८६ को, आर्यसमाज रेल बाजार के पूर्व मन्त्री श्री चन्द्रपालसिंह मयंक की धर्मपत्नी का दिनांक १६ अप्रैल ८६ को हृदयगति रुक जाने से, आर्यसमाज मेस्टन रोड के पू० उपमन्त्री स्व० श्री डा० भगवान सहाय की धर्मपत्नी, आर्यसमाज सीसामऊ के प्रधान श्री डा० सुखदेव जी की पूज्य माता जी का अचानक हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर ने अपनी शोक सभा मे उपर्युक्त स्व० जनों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमेश्वर से उनकी आत्माओं की शांति तथा दु:खी परिवारजनों को इस महान दु:ख के प्रति असीम धैर्य हेतु प्रार्थना की।

- विजयपाल शास्त्री

सूचना

"वेद मन्दिर विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद, जिसके संस्थापक आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान् पूज्य अमर स्वामी जी महाराज हैं इस वेद मन्दिर की "यज्ञशाला दैविक प्रकोप से नष्ट हो गई है" और जिससे वेद मन्दिर की शोभा समाप्त हो गई है। पुन तैयार करने में लगभग १५ हजार रु० का खर्चा है। अत आर्य सज्जनों से प्रार्थना है कि इस पवित्र कार्य में अपना सहयोग निम्न पते पर भेजें। जिससे यज्ञशाला का पुन निर्माण कराया जा सके।

निवेदक—
लाजपतराय अग्रवाल
मन्त्री, वेद मन्दिर—विवेकानन्द नगर
गाजियाबाद—२०१००१ (उ० प्र०)

शोक संवेदना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओ३म्प्रकाश जी त्यागी के निधन का समाचार पढ़कर हार्दिक दुःख हुआ। लगभग दो मास पूर्व सार्वदेशिक सभा की बैठक मे उनसे भेंट हुई थी। पिछले लगभग ४० वर्ष से मेरा उनसे आत्मीय परिचय था। जब वह आर्यवीर दल मे कार्य करते थे। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शांति एवं दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करें।

प्रेमचन्द्र शर्मा

भूतपूर्व राज्य स्वास्थ्य मन्त्री

उप प्रधान आ० प्र० सभा उ० प्र०

कार्यकर्ताओ के रचनाकार

आर्यसमाज की शिरोमणि सभा के यशस्वी मन्त्री प्रातःस्मरणीय श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी का निधन, हम सबके लिए एक प्रबल आघात है। उनकी सबसे बडी देन यह है कि उन्होने आर्य वीर दल के माध्यम से सैकडो हजारों की संख्या मे आर्यसमाज के लिए समर्पित कर्मठ कार्यकर्ता दिए। जिन्होने जीवन पर्यन्त अज्ञान, अविद्या, अभाव को दूर करने का व्रत धारण किया और जो आर्यसमाज की धवल कीर्ति की रक्षा मे प्राणपण से लगे हुए थे। मैने सदैव उन्हे अपना गुरु और मार्गदर्शक माना। उन्होंने लम्बे काल तक विश्व के अनेक देशों मे आर्यसमाज का प्रचार कर देशान्तर प्रचार के क्षेत्र मे नए इतिहास की रचना की। अभी चार मास पूर्व दक्षिण अफ्रीका मे सम्पन्न आर्य महासम्मेलन मे दिए गये अपने उदघाटन भाषण मे उन्होने आर्यजगत के समक्ष सामयिक प्रचार नीति का स्वरूप उपस्थित किया था। उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व और उनके ओजस्वी विचार, पूरे भूमण्डल के आर्यों के लिए प्रेरणा के स्रोत थे।

अराष्ट्रीय प्रचार निरोध की दृष्टि से किये गये उनके कार्य राष्ट्र रक्षा के लिए जागरूक प्रहरी और संघर्षशील योद्धा होने के परिचायक है। ईसाई मिशनरियो के क्रियाकलापों को उजागर करना, धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक लाना, दयानन्द सेवाश्रम संघ की स्थापना करना तथा अपनी लेखनी द्वारा दजनो पुस्तको का सृजन कर तथ्यो को प्रकट करना, यह सब कार्य राष्ट्रीय अखण्डता की दिशा मे किये गये उनके स्तुत्य कार्य माने जायेंगे। वैदिक धर्म और संस्कृति के एक सशक्त प्रवक्ता के रूप मे उन्होने जनमानस पर एक अमिट छाप छोडी है। ऐसी महान विभूतियाँ संसार मे बहुत कम ही आया करती हैं जो धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, और राजनैतिक सभी क्षेत्रो मे एक साथ प्रभाव डालने की क्षमता रखती हो।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री पद पर १३–१४ वर्षो तक रहकर आपने सङ्गठन को नवीन दिशा देने का सदैव प्रयत्न किया। परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आर्यनेता के आदर्शो को चिर स्थायी रखने की क्षमता हमे प्रदान करे।

आनन्द प्रकाश

उप मन्त्री सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली

श्री शिवदेव बेधडक की पूज्यनीया माता जी का निधन

दुःखद समाचार है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री शिवदेवजी बेधडक की पूज्यनीया माता जी का निधन दिनांक ११ मई १९८६ को हो गया। वे ८५ वर्ष की थीं। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। प्रभु दिवंगता को शांति तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे। —सम्वाददाता

श्री ओ३मप्रकाश त्यागी के निधन पर—आर्यसमाजो की शोक संवेदना एव श्रद्धांजलि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामन्त्री एव भू०पू० सासद श्री ओ३मप्रकाश त्यागी जी का निधन आर्यजगत के लिए एक महान क्षति है। वे आर्य जगत के एक जाज्वल्यमान नक्षत्र ही नहीं एक महान राष्ट्र सेवी कर्मयोगी, गम रक्षा अभियान के प्रणेता और कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। आज उनके असामयिक निधन से सम्पूर्ण आर्यजगत मे एक शोकपूर्ण अमानिशा छाई हुई है। प्रान्त की आर्यसमाजो मे दु खी हृदय से शोक प्रस्ताव पारित करके अपने प्रिय स्व० नेता के प्रति शोक संवेदना एव भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह दिवगत आत्मा को शांति तथा शोक संतप्त परिवार को इस महान दु ख के प्रति असीम धैर्य प्रदान करे।

आर्यसमाज शाहजहांपुर आर्यसमाज अमरोहा (मुरादाबाद) आर्यसमाज अजमेर आर्यसमाज बदायू नगर आर्यसमाज लखनऊ, आर्यसमाज ताडीखेत अल्मोडा आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर आर्यसमाज बीसलपुर (पीलीभीत), आर्यसमाज लखीमपुर खीरी जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा पटना, आर्यसमाज ताज गंज आगरा आर्यसमाज मीरजापुर आर्यसमाज सम्भल (मुरादाबाद) आर्य समाज गवाँ (बदायू) आर्यसमाज कुन्दरकी (मुरादाबाद), आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी श्री सम्भुदयाल दयानन्द वैदिक आश्रम गाजियाबाद आर्यसमाज नामनेर (आगरा)।

श्री शांति स्वरूप मेहता का निधन !

शोक पूर्ण समाचार है कि दिनाक २७ अप्रैल ८६ को पूर्वाह्न लालबाग आर्य समाज के प्रमुख सस्थापक एव स्वामी श्रद्धानन्द के शिष्य श्री मेहता शान्तिस्वरूपजी का लगभग ६० वर्ष की आयु मे कैसर रोग से निधन हो गया। सर्वश्री प० राम चरित्र जी व राजेश्वर प्रसाद जी द्वारा भैसा कुण्ड श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दाह सस्कार सम्पन्न हुआ। श्री मेहता जी अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड गये है।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ ने २७ अप्रैल ८६ को ही सायकाल मासिक अधिवेशन मे शोक प्रस्ताव पारित करके गहरी समवेदना व्यक्त की और दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा शोकाकुल परिवार के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की। जनपद की लगभग सभी आर्यसमाजो ने शोक प्रस्ताव पारित किये।

आर्यसमाज लालबाग को १०१) रुपय का सात्विक दान दिया गया।

—ज्ञान कृष्ण

—दिनांक ४ मई ८६ को नगर आर्यसमाज मन्दिर लखनऊ मे श्री शान्तिस्वरूप जी मेहता तथा प० लालताप्रसाद जी के दामाद के आकस्मिक निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए एक शोक सभा की गई जिसमें दिवगत आत्माओं की शान्ति एवं सद्गति तथा दुखी परिवारो के असीम धैर्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—मन्त्री आर्यसमाज

—दुखद समाचार है कि आर्यसमाज पडरौना (देवरिया) के सस्थापक सदस्य श्री बुद्धदेव जी का दिनाक ३० मार्च ८६ को निधन हो गया वे ८४ वर्ष के थे। आपका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार बासी नदी के तट पर रामघाट पर सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज पडरौना तथा दयानन्द शिशु मन्दिर पडरौना ने स्व० श्री बुद्ध देव जी के निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए, दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा दु खी परिवार के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

—सत्यपाल कोहली

—दु खद समाचार है कि आर्यसमाज रेल बाजार कानपुर के पूर्व प्रधान एवं हिन्दी बाल साहित्य के प्रथम पंक्ति के कवि श्री चन्द्रपालसिंह 'मयंक' एडवोकेट २६१ फेथफुलगंज, कैन्ट कानपुर की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमवती यादव एम० ए० बी० टी० अध्यापिका ज्ञान भारती इन्टर कालेज कानपुर का आकस्मिक निधन दिनाक १५ अप्रैल ८६ को प्रात ५ ३० बजे हो गया। आप कुछ समय से बीमार थीं।

श्रीमती प्रेमवती जी ने उच्च शिक्षा प्राप्त दो पुत्रियाँ एवं एक पुत्र व पुत्रवधू को छोडा है। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति एवं दुःखी परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे। —सम्वाददाता

पत्र स० मे० १७०१/२५　　　　दिनाक २७-४-१९८६ ई०

आदेश

यत आर्यसमाज मन्दिर मैनपुरी के प्रशासक श्री हरुदत्तसिंह, समयाभाव के कारण, उक्त मन्दिर की आर्थिक व आन्तरिक व्यवस्थाओं में कुछ आर्यजनों के नैष्ठिक सहयोग की परम आवश्यकता का कटु अनुभव कर रहे हैं।

अत मैं, उक्त प्रशासक की उक्त परमावश्यकता की सुपूर्ति हेतु, इस सभा की ओर से, उक्त मन्दिर के आर्यजनों की तदर्थ समति तात्कालिक प्रभाव से नियुक्त करता हू—

१–सर्वश्री रघुनन्दनसिंह शास्त्री, सयोजक।
२–प० होरीलाल जी,　　३–सुरेशचन्द्र जी एडवोकेट
४–डा० गिरीशचन्द्र जी,　　५–सुरेन्द्रसिंह जी,
६–प० रामप्रकाश जी,　　७–नरेन्द्रार्य, सदस्यगण
८–म० रामचरनसिंह जी समिति की सूचनायें प्रसारण करेंगे।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ

मे० १७०७/६　　　　दि० २७-४-८६

आदेश

यत आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला–मैनपुरी के कालातीत पदाधिकारियो ने, उक्त उप सभा का वार्षिक निर्वाचन दिनांक २४-११-८५, इस सभा द्वारा निर्गत निषेधाज्ञा दिनाक १७-११-८५ की पूर्ण जानकारी के पश्चात् भी उक्त निषेधाज्ञा की जानबूझ कर अवज्ञा व अवमानना करके, अवैध रूप से सम्पन्न कराया था।

अत मैं उक्त उप-सभा के उक्त अवैध निर्वाचन को अमान्य करता हुआ, उक्त उप सभा के हित में उसके प्रचालन प्रशासन एव प्रबन्ध आदि के उद्देश्य से, उस पर तात्कालिक प्रभाव से, श्री अनन्तराम जी गुप्ता पूर्व-प्रधान, आर्यसमाज शिकोहाबाद को सर्वाधिकार सम्पन्न प्रशासक नियुक्त करता हूँ।

२–सर्वश्री विद्याराम व हरदत्त शास्त्री, आर्यसमाज सिरसागंज तथा ऋषिपाल, आर्यसमाज जसराना को आदेश देता हूँ कि उन पर उक्त उप-सभा का जो भी चार्ज हो वह सब तीन दिन के अन्दर उक्त उप सभा के उक्त प्रशासक महाशय को सौप देवें। अन्यथा उनके विरुद्ध चल रही अनुशासन की कार्यवाही पर अन्तिम निर्णय ले लिया जावेगा।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

प० स० मे० १७०५/५　　　　दिनांक २७-४-८६

आदेश

इस सभा के मुख्य-निरीक्षक की सस्तुति पर, सर्वश्री गुरुदत्त जी शर्मा एम० ए० आर्यसभासद, आर्यसमाज भोलेपुर, जिला फर्रुखाबाद तथा उमेश जी स्नातक एम० ए०, आर्यसभासद, आर्यसमाज बिबियापुर, जिला इटावा को तात्कालिक प्रभाव से इस सभा का निरीक्षक नियुक्त किया जाता है।

निरीक्षक महाशय इस सभा की गरिमा को ध्यान मे रखते हुए, इस आदेश के साथ सलग्न प्रपत्र में वर्णित अपने कर्तव्याधिकारों के अनुसार इस सभा को निष्ठापूर्वक सेवा करने का कष्ट करें।

इन्द्रराज
प्रधान
संलग्नक १ प्रपत्र।　　आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के निरीक्षकों के कर्तव्याधिकार

१—वह आर्य उप प्रतिनिधि सभाओ, आर्यसमाजो व उनके सत्सगो, आर्य शिक्षण सस्थाओं तथा अन्य सभी प्रकार की आर्य सस्थाओ व उनसे सम्बद्ध इस सभा की सम्पत्ति आदि का निरीक्षण, उनके आय-व्यय का सम्परीक्षण तथा उनकी अव्यवस्थित सम्पत्ति की नियमानुसार व्यवस्था करके प्रत्येक कृत कार्यवाही से, एक सप्ताह के भीतर, उचित माध्यम से माननीय मन्त्री जी, सभा को विस्तारपूर्वक अवगत करायेंगे।

२—वह उक्त उपसभाओं व आर्यसमाजों के वार्षिक चित्रों के साथ साथ उन पर देय दशांश, सूदकोटि, प्रतिनिधि तथा वेद प्रचार निधि का शुल्क एवं आर्यमित्र ग्राहक शुल्क आदि तथा इस सभा की सहायतार्थ मिलने वाले अन्य सभी प्रकार के दान व चन्दा आदि इस सभा की छपी हुई रसीद देकर विधिवत प्राप्त करेंगे और प्राप्त धन यथा समय सभा को उपलब्ध करायेंगे।

३—वह नवीन आर्यसमाजों व अन्य सभी प्रकार की नवीन आर्य सस्थाओ की स्थापना, निष्क्रिय आर्यसमाजों को सक्रिय तथा असम्बद्ध आर्यसमाजों व आर्य सस्थाओं को इस सभा से सम्बद्ध करायेंगे।

४—वह आर्यमित्र पत्र के नवीन ग्राहक बनायेंगे तथा पुराने अनियमित ग्राहको को प्रेरित कर उन्हे पुन नियमित करेंगे।

५—वह आर्यसमाज के नियमोपनियम तथा इस सभा के नियमों, निश्चयों तथा आज्ञाओं का उल्लघन करने वाले अनुशासनहीन आर्यजनो पर तीव्र दृष्टि रखेंगे। और असाधारण स्थिति मे उनके विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही, हेतु माननीय मन्त्री जी, सभा की सेवा में विस्तारपूर्वक अपनी सस्तुति प्रेषित करेंगे।

६–वह, उपर्युक्त के अनन्तर इस सभा के उन सभी निश्चयों तथा आदेशो का भी निष्ठापूर्वक परिपालन करेंगे जो उन्हें समय समय पर प्राप्त होंगे।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

उत्सव

आर्यसमाज फजलपुर (सुन्दर नगर) जि० मेरठ का वार्षिकोत्सव दिनांक २१, २२ तथा २३ जून १९८६ को मनाया जायेगा। आर्यजगत के अनेक प्रमुख विद्वान एवं वक्ता पधार रहे हैं। —मन्त्री

समालोचना

आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास शताब्दि समारोह के अवसर पर प्रकाशित

आर्य समाज कलकत्ता भारत की उन गौरवमयी आर्य समाजों मे से है जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती के निधन के दो ही वर्षों के अन्तराल में हो गयी । दीपावलि १८८३ मे महर्षि की इहलोक लीला ने विश्राम लिया और दिसम्बर १८८५ मे कलकत्ता में आर्य समाज स्थापित हो गई । अपने सफल सौ वर्ष व्यतीत करने पर दिसम्बर १९८५ में आर्य समाज ने शताब्दि महोत्सव आयोजित किया तथा इस पुण्य अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता का इतिहास प्रकाशित हुआ जो अपने मे नवीनता के साथ मुखरित होता हुआ समाज के सौ वर्षों की उपलब्धियोंपर ज्वलन्त प्रकाश बिखेर रहा है । इसका सुयोग्य सम्पादन आर्य समाज-१९ विधान सरणी कलकत्ता के मनीषी मण्डल के प्रमुख विद्वान प्रो० उमाकांत जी उपाध्याय ने किया । यह रचना आर्य जगत के साहित्य मे विशेष स्थान सुरक्षित करती है । कारण है कि कलकत्ता की आर्य समाज की गतिविधियों के साथ कितने ही आर्य विद्वानों का परिचय कराती है और पश्चिम दिशा मे भारत में आर्य समाज की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करती है । संक्षेप में एक उद्देशीय होते हुये यह प्रकाशित ग्रन्थ बहुउद्देशीय है और आर्यसमाज पर शोध कर्त्ताओ के लिये इस पुस्तक का अध्ययन अवश्यमेव सहायक होगा ऐसी मेरी धारणा है ।

स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का कलकत्ता मे पदार्पण दिसम्बर १८७२ मे हुआ तथा चार मास के लगभग वहां रहे और उस समय के प्रमुख ब्रह्मसमाजी विचारकों देवेन्द्रनाथ ठाकुर, केशव चन्द्रसेन, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर तथा अन्य बहुत से व्यक्तियों से मिले । महर्षि ने अपने वैदकीय दृष्टिकोण का परिचय दिया । ज्ञात हो कि आज ख्याति प्राप्त शान्ति निकेतन का विश्वविद्यालय उस समय महर्षि की ही प्रेरणा पर ब्रह्मचर्याश्रम के रूप मे आरम्भ हुआ और दैनिक हवन यज्ञ वहां होता था । भागलपुर के तत्कालीन राजा तेजनारायणसिंह के बीस हजार के दान तथा उन्हीं के सहायक श्री महावीर प्रसाद के द्वारा आर्य समाज सक्रिय हुई । स्वामी जी के लघु प्रवास का व्यापक प्रभाव पड़ा । अपने जीवन के प्रारम्भ के तीस वर्षों के ही अन्तराल मे आर्य समाज भवन बन गया । आर्य कन्या विद्यालय भी सक्षम हो गया और आर्य समाज की गतिविधियां हिन्दी आञ्चल से दूर कलकत्ता मे सजग हो उठी ।

सौ वर्षो की कोई प्रमाणित सामग्री उपलब्ध नहीं थी परिपत्र एवं क्रमबद्धता पूर्ण उपलब्धियों के न रहते हुए भी विद्वान् सम्पादक प्रो उमाकांत जी उपाध्याय ने श्रम पूर्वक तथा कौशल बुद्धि से सपरिश्रम बिखरी सामग्री को एकत्रित करके सुचारुता-क्रमबद्धता प्रदान की यह उनकी बुद्धि-कुशाग्रता तथा सम्पादन कला एवं चिन्तन सापेक्ष्य का प्रमाण है ।

विगत सौ वर्षों मे आर्य समाज-१९ विधान सरणी कलकत्ता की गतिविधियों की सम्पादक ने विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की है । शिक्षा प्रसार, क्रान्ति केन्द्र, सहायता कार्य, गोरक्षा, विद्वान, प्रचारक, पत्रिकायें पत्र, साहित्य, शास्त्रार्थ प्रचार, परिवार सहायता, पुण्य पुरुष, कार्यकर्ता अलग शीर्षकों से व्यापक गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है । विद्वान प्रचारकों में हमें बहुत से त्यागी विद्वानों का परिचय मिलता है । दो विद्वान प० दीन बन्धु शास्त्री तथा प्रिय दर्शन जी बंगाली होते हुये आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रबल पोषक रहे और आर्य साहित्य को बंगला भाषा प्रस्तुत किया । उपाध्याय परिवार के नर रत्नों ने अपनी सम्पूर्ण भावना से आर्य समाज को पल्लवित किया । एक ओर जहां प० अयोध्या प्रसाद एवं प० रुद्रदत्त शास्त्री जैसे विद्वानों का परिचय है वहीं बिड़ला, पोद्दार, जैपुरिया, मुरलीचन्द्र अग्रवाल आदि उदार व्यवसायियों के सहयोग की कहानी भी प्राप्त होती है ।

इतिहास का मुद्रण, कागज, जिल्द, प्रथम पृष्ठ सभी आकर्षक सराहनीय है । कितने ही दुर्लभ चित्र हैं जो इतिहास के साक्षी हैं साथ ही अधिक से अधिक विद्वानों प्रचारकों कार्यकर्ताओं के भी चित्र हैं । अल्प समय में बिखरी सामग्री के आधार पर एक क्रमबद्ध श्रृंखलायुक्त इतिहास की रचना कर देना ही सम्पादक एवं आर्य समाज के अधिकारियों की वरेण्य प्रस्तुति है । समस्त जनों का हार्दिक अभिनन्दन है ।

इतिहास शोध विद्यार्थियो के लिये सामान्य जन के लिये पठनीय है अत समस्त आर्य समाजों, वाचनालयों, महाविद्यालयों मे इसकी प्रतियां होना नितांत आवश्यक है । आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० इन्द्रराज जी ने तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने इस इतिहास प्रकाशन के कार्य की सराहना की एवं आर्य समाज के अधिकारियों को 'आर्यमित्र' के माध्यम से साधुवाद दे रहे हैं ।

आर्य समाज कलकत्ता का इतिहास (१८८५ से १९८५)

शताब्दि अवसर पर प्रकाशित, सम्पादक—प्रो० उमाकांत जी उपाध्याय, प्रकाशक—श्री पूनम चन्द्र आर्य मन्त्री आर्य समाज—१९ विधान सरणी कलकत्ता, मूल्य ८० रुपिया, पृष्ठ ७१०, सचित्र परिष्कृत साइज १८+२२+८ ।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

निर्वाचन

आर्य समाज सराय अहगत एटा
प्रधान श्री डा० शिवरत्न लाल आर्य
मन्त्री श्री रामनाथ गुप्त
कोषा० श्री मेवाराम

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर
प्रधाना श्रीमती कमला भन्डारी
मन्त्री श्री भंवरलाल आर्य बन्धु
कोषा० श्री सोहनलाल भासेरी

आर्य समाज सिलीगुड़ी
प्रधान श्री रतिराम शर्मा
मन्त्री श्री सर्वेश्वर झा
कोषा० श्री सुभाषचन्द्र नकीपुरिया

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी
प्रधान श्री देवनराम आर्य
मन्त्री श्री रामगोपाल आर्य
कोषा० बुद्ध देव आर्य

श्री इन्द्रराज जो सभा प्रधान का मार्च १९८६ का कार्यक्रम

(१) १-३-८६ मेरठ मे कर्फ्यू होने पर भी लखनऊ के लिये प्रस्थान।
(२) २ तथा ३ ३-८६ लखनऊ।
(३) ४-३-८६ खुर्जा—यज्ञ के अवसर पर प्रवचन—कन्या पाठशाला एसोसियेशन के डिग्री कालेज का निरीक्षण—आशीर्वादात्मक प्रवचन और पारितोषिक वितरण—रात्रि को जन सभा को उद्बोधन।
(४) ५-३-८६ बुलन्द शहर श्री वीरेन्द्र पाल जी के साथ आया।
(५) ६ से १०-३-८६ तक कर्फ्यू के कारण मेरठमे शांति स्थापित करने सम्बन्धी कार्यों में संलग्न।
(६) ११-३-८६ बड़ावद ग्राम में गया वहां से गुरुकुल प्रभात आश्रम वहां से मेरठ।
(७) १२-३-८६ दिल्ली।
(८) १३-३-८६ सारा दिन और रात्रि आर्य समाज का कार्य।
(९) १४-३-८६ आर्य समाज का कार्य।
(१०) १५-३-८६ अन्तरंग सभा सार्वदेशिक सभा मे दिल्ली-दीवानहाल आर्य समाज में।
(११) १६-३-८६ गाजियाबाद प्रचारार्थ।
(१२) १७-३-८६ जिलाधिकारी महोदय की अध्यक्षता मे नागरिक परिषद् मे भाषण तदोपरांत दिल्ली के लिये प्रस्थान।
(१३) १८-३-८६ १९-३-८६ मेरठ मे आर्य संस्थाओं के कार्यों मे संलग्न।
(१४) २० ३-८६ दिल्ली प्रादेशिक सभा के कार्यालय में कार्यवश तथा नौचन्दी मेले के लिए पुस्तकों का क्रय।
(१५) २१-३-८६ कसेरू खेड़ा मे गया।
(१६) २२-३-८६ २३-३-८६ २४-३-८६ मेरठ मे आर्य समाज के कार्य।
(१७) २५-३-८६ होली का विशेष यज्ञ शमा स्मारक मैदान मेरठ मे समाप्त की व्यवस्था की गई।
(१८) २६-३-८६ बुलन्दशहर की आर्य समाज मन्दिर मे होली मिलन और जलपान लगभग ५०० सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने भाग लिया जिसमे विधायक श्री जय नारायण शर्मा भी उपस्थित। सबका स्वागत सत्कार किया।
(१९) २७ ३-८६ मेरठ मे आर्य समाज के कार्यों मे व्यस्त।
(२०) २८ ३-८६ मेरठ बाहर से मिलनेवाले आर्य बन्धु आए तथा लखनऊ के लिये प्रस्थान।
(२१) २९ ३-८६ ३०-३-८६ ३१ ३-८६ लखनऊ कार्यालय मे कार्य।

श्री शालवाले द्वारा सन्यास की घोषणा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली प्रधान श्री लाला राम गोपाल जी शालवाल ने राष्ट्रीय एकता अखण्डता की भावना को जन जन म जगाने के लिये सन्यास ग्रहण करने की घोषणा की है अपने अभिनन्दन के अवसर पर श्री लाला जी ने कहा—आज के उपरान्त अब दुनियादारी से हटकर सन्यास आश्रम की ओर जाने को ही उचित समझता हूं। साथ ही अपनी सभा की बैठक बुलाकर मैं सभा के अधिकार पद से भी मुक्त होना चाहता हू।

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर मे

विशाल आर्यवीर एव शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल झज्जर (रोहतक) मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल का आर्य वीर एव शिक्षक प्रशिक्षण शिविर दिनांक १६ जून से २५ जून तक सम्पन्न होगा। शिविर का संपूर्ण व्यय गुरुकुल ही वहन करेगा। खाने पीने, रहने आदि का उत्तम प्रबंध गुरुकुल की ओर से होगा इस शिविर मे डा० देवव्रत जी व्यायामाचार्य युवकों को शारीरिक एवं बौद्धिक शिक्षा देंगे। शिविर में भाग लेने वाले नवयुवक वस्त्र, पात्र आदि दैनिक कार्य मे प्रयोग होने वाला सामान अपने साथ लायें। शिविर शुल्क मात्र २०) है। सम्पर्क करें।

ब्र० विजयपाल
प्रधानाध्यापक
महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर
रोहतक (हरियाणा)

पूर्वांचल आर्य महासम्मेलन

दिनांक ५ से ११ जून १९८६

स्थान—आर्य समाज गोरखपुर [बक्शीपुर] गोरखपुर

पूर्वी उत्तर प्रदेशान्तर्गत, गोरखपुर, बस्ती, देवरिया, आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर, जौनपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, सुलतानपुर, प्रतापगढ, गोण्डा तथा बहराइच एव अन्य निकटस्थ जनपदों की समाजो के समस्त आर्य बन्धुओ से निवेदन है कि ११, १२ मार्च १९८७ को मऊनाथ भंजन मे होने वाला उक्त सम्मेलन जो अपरिहार्य परिस्थितियो के कारण स्थगित हो गया था अब ५ से ११ जून ८६ तक आयोजित किया है। उक्त अवसर पर ८ जून १९८६ को पूर्वांचल आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन किया गया है। मुख्य अतिथि सभा प्रधान पं० श्री इन्द्रराज जी तथा सभा मंत्री श्री पं० मनमोहन जी तिवारी होंगे। समस्त समाजों की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

डा० विनय प्रताप
संयोजक पूर्वी प्रचार विभाग

—जिला आर्य प्रतिनिधि सभा उन्नाव के तत्वावधान मे दि १३ से १८ अप्रैल मेला बलोपा देवी कैलाश, दि० १९ अप्रैल को मेहरवान खेड़ा तथा २० अप्रैल १९८६ को भोला गंज में यज्ञ एव वेद प्रचार सम्पन्न हुआ। २१ से २४ अप्रैल आर्य समाज मकूर मे यज्ञ एव उपदेश तथा २५ से २७ अप्रैल मेला चैतवार नवाबगंज मे यज्ञ वेद प्रचार सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

इस घोषणा पर उपस्थित जनमानस भाव विह्वल हो, आश्चर्य मे पड गया और कहा कि आप तो स्वभाव से ही सन्यासी हैं-केवल गैरिक वस्त्र ही बदलने हैं।

स्वामी दीक्षानन्द जी ने श्री लाला जी के सन्यास पर यज्ञ कुण्ड की तीन मेखलाओ की चर्चा तीन-आश्रमो से की और चौथा सन्यास आश्रम अग्निकुण्ड की अग्नि से तुलना करके श्री लाला जी द्वारा अग्नि मे प्रवेश कर सन्यास का रूप लेने पर १-१ ग्यारह होकर समाज को आगे बढाने मे योग देने की बात कही।

श्री बलराम जाखड ने श्री शालवाले के सन्यास धारण की घोषणा पर बधाई देते हुए कहा कि मैं राष्ट्र - रक्षा के इस काम मे कन्धा स कन्धा मिला कर चलू गा।

सम्वाददाता

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन. पी. ७९
मा० ज्येष्ठ ४, ११
ज्येष्ठ कृष्ण २, ९, रविवार
२५ मई, १ जून १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र



आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.



१८८६-१९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी. कालेज लखनऊ

विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक
गतिविधियों पर विचार

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १. फोन ४५९९३

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री शिव ... दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ओ३म् आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं० ११४१/८० घोषणा पत्र स ७ / २८-२-८२

वर्ष ८९] मा० ज्येष्ठ १८, २५, ज्येष्ठ शुक्ल १. ८, रविवार संवत् २०४३ वि०, दि० ८, १५ जून १९८६ [अङ्क २३-२४

प्रार्थना

ओ यवद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा ऽअभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥ —यजु ३३-३५

भावार्थ—दुष्टनाशक ज्ञान-प्रकाशक ऐश्वर्यवान् राजन् ! तू जो आज और कहीं भी सम्मुख खड़ा हो जाता है, तो वह सब तेरे वश मे हो जाता है ।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

सम्पादक—

आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

माला की मणियां विखरने न पाये

आदर्श और सिद्धान्त व्यक्ति से महान होते है

राष्ट्र के लिए व्यक्ति है व्यक्ति के लिए राष्ट्र नहीं है

भारत वष प्राचीन काल से गम्भीर चिन्तन का राष्ट्र है । वेद उपनिषद शास्त्र और इतिहास प्र थ मानव चिन्तन को प्रतिभा प्रदान करते हैं तथा स्थूल से सूक्ष्म की ओर हमे विचारशील बनाते हैं । महर्षि बाल्मीकि और वेदव्यास सरीखे इतिहास कारो ने स्पष्ट कहा है कि इतिहास व्यक्तियो का वणन नही है ।" इतिहास की क्रिया कलापों से हमें शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये और उस शिक्षा के ही सहारे राष्ट्र के भविष्य का निर्माण हो । आवश्यक है कि राष्ट्र अपने इतिहास का अध्ययन करे और अपने महान अतीत से प्रेरणा प्राप्त करके भविष्य का निर्माण करे ।

पत्रकार का दायित्व भी महानतम होता है । राष्ट्र को सही दिशा दिखाना, समस्याओ का निराकरण करना और राष्ट्र के कणधारो की भविष्य के प्रति सावधान करना क्योकि राष्ट्र के कणधारो का जन सम्पर्क समाप्त हो जाता है और वह सुरक्षा के कृत्रिम आवरण मे बध जाते है । पत्रकार जन भावना के साथ रहता है और जनान्दोलन की प्रक्रिया को राष्ट्र तक पहुचाने का प्रयास करता है । सत्य और राष्ट्र हित की बात कहना ही उच्चकोटि की पत्रकारिता है ।

खेद है कि—जिस राष्ट्रीय एकता का अजन प्राचीन काल मे किया गया था तथा राजनैतिक सास्कृतिक एव आध्यात्मिक एकता सम्पूण राष्ट्र कैलाश से कन्या कुमारी तक सौराष्ट्र के द्वारिका से कामरू कमक्षा एव बग देश तक एक राष्ट्र के रूप मे माला के मणियो की तरह आबद्ध थी आज टूटकर बिखर रही हैं क्योकि कभी कभी राजनीति के छुद्र दांव पेंच, सत्ता पर सदैव आसीन रहने के हथकण्डो मे राष्ट्र के नेता इतना मोह मे घिर जाते हैं कि वे अपने निजी हितों के लिए राष्ट्र के हितो का बलिदान करने मे भी नही हिचकत और तब देश की एकता और अखण्डता को खतरा उत्पन्न हो जाता है और आज वही हो रहा है क्योकि कहावत है कि—'एक उठा हुआ असत्य मार्ग का पग दूसरे असत्य मार्ग का सकेत बन जाता है" और यही स्थिति भारत मे है । ब्रिटिश शासको ने भारत को खण्डित करने का सुझाव रखा और तत्कालीन भारतीय नेताओं ने शीघ्रता से सत्ता पर बैठने के लिए उस खण्डन को स्वीकार कर लिया और तभी से लेकर आज तक भारत की सीमायें सकुचित होती जा रही हैं । पजाब मे खालिस्तान की आवाज है ? राष्ट्र के शीषस्थ नेता सुलझाने में असमथ है कही चण्डीगढ का चारा फेंक कर कही बरनाला को समथन देकर समस्याओ का परिमाजन चाहते हैं किन्तु उसके मूल मे जाना नही ।

दार्जलिग और उसके आस-पास के पहाडी क्षेत्रो से एक नई ध्वनि सुनाई पड रही है । इन क्षेत्रो मे नैपाल के गोरखा अधिक रहते हैं और उनकी आवाज है कि दार्जलिग उसके पास के पहाडी क्षेत्रो के जिले, पश्चिमी बगाल से अलग करके गोरखा नेशनल स्टेट बनाया जाय । नैपाली वहा की भाषा हो और भारतीय सविधान मे स्वीकृत भाषाओ मे नैपाली भी बढा दी जाय । इतना ही नही यह आवाज सघष मे बदल गई । दार्जलिग बन्द हुआ और पुलिस के साथ सघष मे गोलिया चलीं । यह एक गम्भीर खतरा और सकेत हैं राष्ट्र की एकता भग होने का । यदि केन्द्रीय सत्ता यह समझे कि इस माग से बगाल की वामपथी सरकार विचलित होगी और उस पर शाति व्यवस्था भग का आरोप होगा तो यह उचित नही है । जैसा कि देखा गया है सत्ता दल के कुछ लोग गोरखा क्षेत्र की मांग के समथन मे इसलिए है कि वामपथी सरकार परेशानी में पहुचे और उसे भग करने का अवसर मिले यह धारणा निमूल है । गोरखा लैण्ड की माग प्रबल होते ही उसका प्रभाव, आसाम-त्रिपुरा—मिजोरम और नागालैण्ड पर भी पडेगा तथा पूर्वी भारतवष मे विघटन की लहर बढ़ सकती है । इसी प्रकार लका के तमिलवासी की जब जैवर्धन द्वारा हत्यायें होती रहेगी तो भारत का तमिल प्रदेश भी केन्द्रीय सत्ता को दोष देकर पृथकता का स्वप्न देख सकता है कि जिससे वह अपने तमिल भाइयो की सेवा कर सके और तमिल महा सघ की आधार शिला रखी जा सके ।

सम्प्रति भारतीय राजनीति आज सिद्धान्तो और आदर्शों से हटकर व्यक्तिगत की चरण पूजा मे चली गई हैं । आदर्श की बात कम की जाती है व्यक्ति की बात ज्यादा की जाती हैं । पडित कमलापति त्रिपाठी ऐसे व्यक्ति जो मनीषी और बुद्धिमान हैं राष्ट्र के आदर्श की बात, देश की अखण्डता कैसे सुरक्षित रखी जाय इस विषय पर न बोलकर, कोई मौलिक सुझाव न देकर केवल नारा लगाते हैं कि मैं 'नेहरू परिवार का तीन पीढयों से चरण दास हूं' यह स्वस्थ दिशा नही स्वस्थ मस्तिष्क का उद्गार नही अपितु खुशामद और लोलुपता की मैली और गन्दी जलधार है ।

अत 'आयमित्र' गम्भीर शब्दो के साथ राष्ट्र का आवाहन करता है कि वह आदर्श और सिद्धातो पर चले तथा महर्षि दयानन्द की शिक्षाओ से शक्ति ग्रहण करे । राष्ट्र की अखण्डताकी रक्षा आर्य जनो का कर्तव्य है । आदर्शों के सहारे हमें आगे बढना चाहिये । अवसर हैं कि आर्य समाज के शीर्षस्थ नेता गम्भीर स्वर से राष्ट्र पर आसन्न भविष्य में आने वाले सॅकट की जो बेला है उसमे सावधान रहें और जनता को सावधान करें । अपने आदर्श हम भारतके महान और गम्भीर इतिहास से खोजें और देखे । योरुप और अमेरिका की ओर न ताककर हम स्वावलम्बी बने । आचार्य रमेशचन्द एम०ए० सम्पा०

आर्य्यमित्र

लखनऊ— रविवार ८, १५ जून १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

सम्पादकीय

आतंकवाद से कराहता 'पंजाब'

नाटक और नौटँकी अब बन्द हो?

'आर्य मित्र' इन पंक्तियो के द्वारा देश के बौद्धिक जनो के समक्ष एक प्रश्न उपस्थित कर रहा है कि पजाब को परिस्थिति से सब अवगत हैं। विगत ४ वर्षो मे कितने निरीह व्यक्तियो को वहा हत्यायें हो चुकी हैं, बसे घर उजड गये हैं, परिवार की कई-कई पोढो नष्ट हो चुकी हैं और यहा तक कि भू० पू० प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधो भी उसो लपेट मे आ गई। फिर भी जब समाचार पत्रो मे पजाब को हत्या के समाचार आते हैं तो केन्द्रीय प्रशासन और प्रातीय प्रशासन दोनो एक ही रटे हुए वाक्य बोलते हैं कि "स्थिति मे सुधार हो रहा है, उग्रवादी पकडे जा रहे हैं, उन पर नियन्त्रण किया जा रहा है।" परन्तु जनता इन रटे वाक्यो को सुनते-सुनते ऊब गई है और जिस प्रकार वहा घटनायें घट रही हैं वह गम्भीर चिता का विषय बन गया है। बौद्धिक जन, शकराचार्य, मठाधीश साम्प्रदायिक सगठनोके प्रथम पक्ति के नेता सम्वेद स्वर से पजाब को पागल पन की हिंसात्मक आग को लपटो से बचाने का प्रयास करें और प्रधान मन्त्री एक आप्त पुरुष को भाति काल को भी आतंकित करने वाली गर्जना से उग्रवादियो को अन्तिम चेतावनी दे।

इतिहास के विद्यार्थी जानते हैं कि प्रत्येक घटना का मूल कहा से प्रारम्भ होता है और इतिहास यह भी बताता है कि अतीत की घटनाओ से शिक्षा प्राप्त की जाय और वर्तमान मे अतीत की जो त्रुटिया हो चुकी है वह दुहराई न जाय। परन्तु खेद है कि भारत के नेता जिनके हाथो मे राजनीति की डोर है वह अतीत को ऐतिहासिक गलतियो को जानते हुए भी वही गलतिया कर रहे हैं। स्वतन्त्रता के बाद विगत ३८ वर्षो मे देश मे जो विभाजन की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई है उनके पीछे सबसे बडी गलती है कि भारतीय नेता अग्रेजो को कूटनीतिक चाल मे फँसे और १५ अगस्त सन् १९४७ मे भारत का विभाजन स्वीकार किया गया। देश की अखण्डता खण्डित हुई और यहा की स्वार्थी और लोलुप नेता को जनता को यह आभास हो गया कि जैसे मुसलमानो के नाम पर भारत खण्डित करके पाकिस्तान बनाया गया वैसे ही देश के और अगो को भी खण्डित करके दूसरे स्थान बनाये जा सकते हैं। खण्डित भारत मे एक राष्ट्र की गौरवशील प्रतिमा थी सरदार वल्लभभाई पटेल उन्होने ५२६ रियासतो को भारत मे रखा जूनागढ, काश्मीर और हैदराबाद भारत की माला की मडिया बने रहे, तत्कालीन सिख नेता मास्टर तारासिंह आदि ने सिखिस्तान की माग प्रस्तुत की कि जैसे पाकिस्तान बन गया है वैसे ही पजाब सिखिस्तान बना दिया जाय। उस समय सरदार पटेल ने स्पष्ट उत्तर सिख नेताओ को दे दिया कि—छोटे से सिखिस्तान की सुरक्षा का दायित्व भारत नहीं लेगा और भारत के अन्दर रहने वाला प्रत्येक सिख भारत से निकाल दिया जायेगा। सिख शात हो गये। परन्तु नेहरूकी ढुलमुल नीति फिर सामने आई काश्मीर को धारा ३७० को सुविधा दो गई विशेष राज्य माना गया। तिब्बत की सार्वभौमिकता नष्ट की गई और चोनी भेडिये के मुख मे तिब्बती मेमने का बच्चा रख दिया गया। साथ ही भाषावाद प्रान्तो की सरचना होने लगी और सिखोने पजाबी सूबेकी माग कर दी। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने शासन की सत्ता पर आते ही हरियाणा, पजाब और हिमाचल का विभाजन करा दिया इतना ही नहीं गुरु मुखी लिपि मे लिखी गई पजाबी-पजाब की राजभाषा बना दी गई और सिखो के मतो को प्राप्त करने के लिए हिन्दी भाषा प्रधान चण्डीगढ़ नगर भी श्रीमती इन्दिरा गाधी ने सिखो को भेंट स्वरूप प्रदान कर दिया। इसके साथ ही जब प्रशासन की बागडोर कमजोर होने लगी तो सन् १९७५ मे देश मे इमरजेन्सी लगा दी गई और इमरजेन्सी से पीडित जनता ने जब सन् १९७७ मे इन्दिरा गाधी और उनके दल को पजाब देश से उखाड दिया और पजाब मे भी अकाली जनता पार्टी के सहयोग से सरकार बन गई। सत्ता मे आने के लिये श्रीमती गाधी ने पजाब मे सिख आतकवादियो को परिश्रय दिया और पजाब मे खालिस्तानी विचारधारा पनपने लगी! तत्कालीन पजाब के नेता ज्ञानी जैल सिह, दरबारा सिह इन्दिरा गाधी के सतरजी मोहरे बने और भिण्डर वाला मनोवृत्ति के आतकवादी खुलकर पनपने लगे। हिन्दू सिख एकता के प्रबल समर्थक लाला जगत नारायण की हत्या की गई और हत्या के सिलसिले मे जिन लोगो पर अभियोग चला उनमे भिण्डर वाले भी थे परन्तु न जाने कहा से बाग डोर ढीली हुई और सारे आतकवादी जेलो से बाहर आ गये। जनता मे भय व्याप्त हुआ। सिख आतकवाद बढता गया और वहा के घबराये हिन्दुओ ने इन्दिरा गाधी के हाथ मे फिर पजाब की सत्ता सौंप दी। परन्तु तब तक आतकवादियोके हौसले बुलद हो चुके थे। धार्मिक स्थलो पर उनके शस्त्रागार बन गये। हत्यायें होने लगी और सेना तथा पुलिस के सिख नोजवान मन से खालिस्तानी भावना मे रगने लगे। और तब पजाब मे शाति स्थापित करना इन्दिरा गाधी की शक्ति से बाहर हो गया। दिनाक ३-४ जून की मध्य रात्रि सन् १९८४ मे "ब्लू-स्टार" की घटना घटी सब परिचित है और उसके बाद आतकवाद ने अपना उग्र रूप धारण किया जिसकी दहकती उग्रता दिनाक ३१ अक्टूबर १९८४ को प्रात ९ बजे के लगभग १ सफदर जग रोड नई दिल्ली पर चरमसीमा पर पहुच गई।

श्री राजीव के प्रति भारत के जनता की सहानुभूति उमड उठी और मातृ वियोग मे सिसकने बालक को ढाढस बधाने के लिए भारत की संवेदनशील जनता ने सत्ता का खिलोना उनके हाथो मे थमा दिया। परन्तु पजाब जलता रहा। आतकवादी अमृतसर स्वर्ग मन्दिर से भगाये गये और पजाब की गलियो खेतो और खलिहानो तक मे फैल गये। श्री राजीव ने प्रयास किया 'लोगोवाल' समझौता किया, चण्डीगढ पजाब को समर्पित करने के लिये पूर्णरूप से तैयार हुए परन्तु यह भी सब एक कागजी खेल निकला। लोगोवाल स्वर्ग सिधारे बरनाला जी सामने आये। निर्वाचन हुआ तथा वृद्ध बरनाला ने कापते हाथो सर पर मौर रखा लेकिन पजाब की अक्खड नवेली नायिका ने समझ लिया कि यह वृद्ध

(शेष पृष्ठ ७ पर)

अपने ही देश में–

हिन्दू कब तक उत्पीड़ित होगा ?

सहन-शीलता की एक क्षमता होती है



[श्री प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश]

कितना खेद और परिताप है कि–स्वतन्त्रता के समय से लेकर अब तक अड़तीस वर्ष के अन्तराल मे राजनैतिक नेताओ की अदूरदर्शिता और कारणविहीन मुस्लिम चाटुकारिता के कारण इस देश का मूल निवासी जिसे वेदो से लेकर रामायण एव गीता तक पर श्रद्धा है और राम-कृष्ण जिसके आदर्श महापुरुष हैं उन आर्यजनो को जिन्हें हिन्दू कहते है निरन्तर उत्पीडन, त्रासदी, पलायन का शिकार होना पड रहा है। यह तो हमारी सहनशीलता है कि हम निरन्तर चोट खाते हुए भी आक्रामक प्रवृत्ति नहीं अपना रहे है। यदि विदेशो मे ऐसी स्थिति होती तो अब तक वहा क्रान्तिया हो गई होतीं। खेद है कि अफ्रीका के उत्पीडन के लिए तो प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी जो चिन्तित है छोटे-बडे सम्मेलनो का आयोजन करते हैं परन्तु आज पजाब मे हिन्दू उत्पीडित किया जा रहा है आतङ्कवादियो की गोली का शिकार हो रहा है तथा बागला देश मे हिन्दुओ के सहार के लोमहर्षक समाचार आरहे है जिनमे प्रमुख है कि मई के तीसरे सप्ताह मे एक सौ पचास के लगभग आदिवासी हिन्दू बागला देश से त्रिपुरा मे शरण के लिए आये परन्तु जब सुरक्षा सेनानियो ने उन्हें वापस भेजा तो जैसे ही वह बागला देश की सीमा मे घुसे कि वहा से मुसलमान पुलिस और नागरिको ने उन्हें मौत के घाट उतार दिया तथा निरन्तर ऐसे ही समाचार आ रहे हैं। श्री लका मे भी जिन तमिलो का नरसहार किया जा रहा है वह शैव मतानुयायी हिन्दू हैं। सिन्ध मे विगत मास मे कितने हिन्दू मारे गये, कितने मन्दिर नष्ट किये गये काश्मीर मे जो भारतीय गणराज्य की ही एक इकाई है फरवरी के महीने मे काश्मीरी पण्डितो पर इतना अत्याचार हुआ और इतने हिन्दू धर्म स्थल नष्ट किये गये कि काश्मीर का पण्डित पलायन की योजना बनाने के लिए बाध्य हो गया। स्पष्ट शब्दो मे हम एक प्रश्न रखना चाहते हैं कि–ससार मे मुसलमानो के सरक्षक अरब देश पेट्रो–डालर के बल पर ससार के दूसरे देशो मे इस्लाम का सरक्षण कर रहे हैं भारत मे उनके धन का उपयोग देखा जा सकता है इसी प्रकार क्रिश्चियन धर्म के सपोषक अमेरिका और योरुप के देश हैं और उनकी समृद्धता सर्वविदित है। भारत सरकार मुसलमानो को खुश करने के लिए अरब देशो की चाटुकारिता मे रहती है और इटली के पोपपाल के आगमन पर भारत सरकार ने जो उनका राजकोय सम्मान और स्वागत किया उसे सबने देख लिया परन्तु पजाब, बागलादेश, पाकिस्तान, कश्मीर और श्री लङ्का मे हिन्दुओ के उत्पीडन को रोकने के लिए बडी गम्भीरता के साथ लिखना पडता है परन्तु खेद है कि भारत सरकार के पास न साधन है शक्ति का और न मौखिक सहानुभूति है।

अड़तीस वर्ष पूर्व हम सबने देखा कि अंग्रेजो की चाल और भारतीय नेताओ का जल्दी से सत्ता पर बैठने की भावुकता ने देश का विभाजन कराया और अपने ही देश मे पेशावर से लेकर रावी तक रहने वाला हिन्दू निर्दयता के साथ उत्पीडित किया गया और शरणार्थी के रूप मे खण्डित पजाब में आया। इसी प्रकार चटगाव, ढाका, मैमनसिंग तथा हुलना, मेघना और पदमा नदी की घाटियों मे बसा हुआ पूर्वी बगाली हिंदू भारत के लिए निष्कासित किया गया और तब से आज तक यह क्रम जारी है। ज्वलन्त प्रश्न है कि "हिन्दू जिसकी परिभाषा आर्य है अपने देश मे ही शरण पाने के लिए भटक रहा है और आज पजाब जहा वह अड़तालिस प्रतिशत है पलायन के मार्ग पर है? खेद है कि स्व०श्री नेहरू से लेकर आज तक केन्द्रीय सत्ता पर बैठने वाला हर व्यक्ति भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित करता रहा इससे ईसाई और मुसलमानो को बल मिला कि भारत मे जहा कोई धर्म नहीं है क्यो न ईसाइयत और इस्लामियत का खुलकर प्रचार किया जाय। चाहिये तो यह था कि धर्म निरपेक्ष मे नैतिकता और आदर्श वाक्यो की तो व्याख्या की जा सकती है परन्तु विदेशी धर्मों का यहा धर्म परिवर्तन के लिए प्रचार नहीं किया जा सकता है।

श्री प० इन्द्रराज जी सभा प्रधान

हम आर्यसमाज के आस्थावान व्यक्ति सहिष्णु हैं, शान्तिप्रिय है परन्तु कायर नहीं हैं। सहनशक्ति अधिक है परन्तु अत्याचार और अन्याय के सामने अडिग होकर उसके विरोध की भी क्षमता हममे है। हम सत्ता नहीं चाहते है। परन्तु यदि सत्ता पर बैठने वाला भारतीय वैदिक राष्ट्रीयता मे अडिग श्रद्धा रखने वाले समुदाय की उत्पीडन से रक्षा नहीं कर सकता है तो हमारा कर्तव्य है कि हम उस उत्पीडन के विरुद्ध वैदिक ध्वज के नीचे सम्वेद स्वर से ऐसे निष्क्रिय शासन को ललकारें। आर्यसमाज माननीय सार्वदेशिक प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले के नेतृत्व मे राष्ट्र के सम्वेदनशील प्रश्नो पर अपनी भूमिका अदा कर रहा है। दक्षिण मे रामानुजम्-पुरम् मे जब इस्लामियत का प्रचार बढ़ा तो श्री शालवाले के नेतृत्व मे हमने वहा आर्यत्व के मर्यादा की रक्षा की और आज भी वृद्धावस्था मे हमारे नेता मे अदम्य शौर्य और उत्साह है। वह काश्मीर गये वहा के पीडित कश्मीरी पडितो से मिले उन्हें सम्वेदना के स्वर मे सम्बोधित किया और भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।' 'विश्राम कहा उन नर रत्नो को जग की व्यथा का बोझ जो सहने मे तत्पर हैं' के अनुसार माननीय श्री शालवाले पजाब के सम्वेदनशील स्थलो पर पीडित हिन्दू आर्यजनो के आसुओ की धारा को पोंछने के लिए पहुचे तथा भारत सरकार को अपने मौलिक सुझावो के साथ एक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

सक्षेप मे कह सकते हैं कि हिन्दुओ को आर्यजनो को इसी देश मे रहना है। विदेशो से न उनका सम्बन्ध है न सम्पर्क। अत आर्यसमाज इस ज्वलन्त प्रश्न पर विचार करे। हिन्दुओ की सुरक्षा का दायित्व ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार की अपेक्षा आर्यसमाज पर अधिक है आर्य नेताओ को इस विषय पर खुलकर विचार करना चाहिये, गोष्ठिया आयोजित की जाय और सरकार को सावधान किया जाय कि–"कम से कम आर्यवर्त की पुण्यभूमि पर वेदो मे श्रद्धा रखने वाले आर्य जनो हिन्दुओ का उत्पीडन बन्द हो।' मैं एक आर्यसमाज के छोटे से सेवक के नाते अपने जीवन की पूर्ण शक्ति को इस पुनीत कार्य मे लगा देना चाहता हू प्रभु मुझे बल और शक्ति प्रदान करे।

हम तरनतारन से क्यों निकले

(श्री विजय जी सम्पादक पञ्जाब केसरी दिल्ली)

पजाब के सीमावर्ती जिलो मे गुरुदासपुर और अमृतसर के देहाती क्षेत्रो से जिस अभूतपूर्व ढग से अल्पसख्यको का पलायन हुआ है और हो रहा है, वह आज प्रत्येक देशभक्त भारतीय के लिए गम्भीर चिन्ता का विषय बन गया है, क्योंकि इस देश की एकता और अखण्डता अमन और हिन्दू-सिख भाईचारे के लिए ऐसा खतरा पैदा हो गया है, जो इससे पहले आज तक कभी नहीं हुआ।

अमृतसर के तरनतारन उपमण्डल से भी यह पलायन व्यापक स्तर पर हुआ है। इस सिलसिले मे तरन तारन को छोडकर हरियाणा मे चले गये लोगो का एक पत्र हमे मिला है, जिसमे उन्होने बताया है कि वह पजाब से क्यो निकले। वह लिखते हैं–

'हमसे हर कोई पूछता है कि पजाब से क्यो निकले है। भाइयो पञ्जाब मे सरकार नाम की कोई चीज नहीं है, ला एण्ड आर्डर क्या होता है, कोई नहीं जानता, जब तक यह भ्रम रहा कि सरकार आखिर कुछ न कुछ जरूर करेगी, हम सहन करते रहे परन्तु हमने देखा कि यहा पर एक सुपर सरकार है, जिसका नियत्रण उग्रवादियो के हाथो मे है। बरनाला सरकार कागजो मे है, सुपर सरकार एक्शन मे है। जब हम अधिकारियो के पास जाते हैं, उनका नजरिया यह होता है कि बरनाला सरकार तो सिर्फ नौकरी देती है,सुपर सरकार जिन्दगी देती है, इसलिए हर आदमी सुपर सरकार को आज्ञा मानने के लिए बाध्य है।

पजाब के अन्दर वह सिख मारे जाते है, जो सुपर सरकार का हुक्म मानने से इन्कार करते हैं या उनसे सहयोग नहीं करते। हमारे अच्छे सिख दोस्त ने यही सलाह दी कि अगर जिदगी चाहते हो, तो यहा से निकल जाओ, जायदाद का क्या है फिर बन जायेगी जिन्दगी न रही तो जायदाद का क्या करोगे। हर हिन्दू ने कहा हम अपने बेगुनाह लोगो का कत्ल कब तक देखते रहेंगे। पाच साल से यह चक्र चल रहा है, बर्दाश्त की हद हो गई। अब ज्यादा सहन नहीं हुआ, तो अपना थोडा बहुत सामान उठाया और चल दिए। जब शम्भू बेरियर पार किया तो भय मन से जाता रहा। हम पजाब के अन्दर कायर बने हुए थे, यहा शेर हो गये, चेहरो पर मुस्कुराहट आ गई। ऐसा मालूम हुआ अब हमारा कोई कुछ नही बिगाड सकता।

हमने हरियाणा मे ला एण्ड आर्डर देखा तो हैरान हो गए कि भारत मे ऐसा इलाका भी हो सकता है। हम निकले थे बे-मजिल बे-मुराद मगर हरियाणा को देखकर यहीं जम गए। लोगो का प्यार देखा तो खुशी के आँसू आ गए। पजाब मे गम के आंसू थे हरियाणा मे खुशी के आँसू है, यही फर्क था जो हमे पञ्जाब से यहा ले आया। हम करनाल के भाइयों के अति आभारी हैं, जिन्होने भाइयो मे बढ़कर प्यार दिया। सब कमियां खत्म हो गयी, दिन रात-रात का डर जाता रहा। पञ्जाब जो कभी स्वर्ग था, अब नरक बन चुका है। हरियाणा जो कभी नरक समझा जाता था अब स्वर्ग दिखाई देता है। हम वापस नहीं जाना चाहते। पञ्जाब से खौफ आता है। कलेजा कांपने लगता है। हमारा मसला जिदगी और मौत का है पालिटिकल नहीं। पजाब मौत नजर आता है और हरियाणा जिदगी। हर आदमी समझता है कि हम किस चीज को पसन्द करेंगे। तरनतारन के गदे हालात के बारे मे बताना चाहें तो बहुत वक्त दरकार है। पजाब के अन्दर तरनतारन के हालात सबसे गदे है। हम मे सरकारी मुलाजिम भी है, बडे अच्छे गुजारे वाले भी लोग हैं। नौकरी जो हजारो की रिश्वत देकर हासिल की जाती है, छोडकर, लाखो की जायदाद छोडकर जो कुछ थोडा-बहुत ला सकते थे, वह ले आये केवल जीने की तमन्ना लेकर। रोटी आधी मिलेगी तो आधी खा लेंगे। आधी खाकर मस्त होकर नाचेंगे, खुशी होगी।

हमारी प्रार्थना है श्री सुरजीत सिह बरनाला जी से, चौधरी भजन लाल जी और सेंटर से कि हमारा मसला पोलीटिकल नहीं है, हमारा मसला जिंदगी और मौत का है। इसे पॉलिटिकल न बनायें न बनाना चाहते हैं न हमको सरकार से कुछ तमन्ना है। और तमन्ना है तो जीने की।'

हम मानते हैं कि यह पत्र किसी विरोधी का मोहताज नहीं है। हम बार-बार लिख चुके हैं और आज फिर केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी और सरदार बरनाला अविलम्ब ऐसे ठोस और सख्त कदम उठायें, जिससे पजाब मे अमन हो और यहा के अल्प सख्यक यह समझ सकें कि पञ्जाब मे उनकी जान और माल सुरक्षित है, तभी पलायन रुक सकेगा, तभी गये हुए लोग वापस आने की बात सोच सकेंगे और तभी इस देश की एकता और अखण्डता कायम रह सकेगी।

चरित्र निष्ठा ही मानवता का मूलाधार है

–श्री लाला रामगोपाल शालवाले

उपर्युक्त विचार स्व० श्री पुरुषोत्तम दास जी आर्य (बरवैवाले) के दिवगत होने पर आयोजित 'श्रद्धाञ्जलि सभा' मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष माननीय ला० रामगोपाल शालवाले ने व्यक्त किए। 'मनुर्भव जनया दैव्य जनम्' इस वेद मन्त्रांश के प्रकाश मे आपने कहा कि 'श्री लाला पुरुषोत्तम दास जी की धन्यता का सबसे बडा रहस्य एक इस सच्चाई मे ही निहित है कि उन्होने अपने ज्येष्ठपुत्र महात्मा श्री प्रेमभिक्षु जी (पूर्व नाम श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम) जैसी दिव्य विभूति को भारत राष्ट्र मा आर्य समाज के चरणो मे सश्रद्धा समर्पित कर दिया जिन्होने आर्य समाज के मानवतावादी (स्वरूप को अपनी लेखनी, वाणी और शिविर आयोजनो की मङ्गलमयी साधना द्वारा उजागर करते हुए 'चरित्र निर्माण अभियान' को जन्म दिया है। सच मे चरित्र निष्ठा ही मानवता का मूलाधार है।'

इस अवसर पर प्रख्यात वैदिक विद्वान भू० पू० सासद और सुप्रसिद्ध आय नेता श्री प० शिवकुमार जी ने 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु' इस प्रसिद्ध गीता वाक्य को प्रस्तुत करते हुए बताया कि मृत्यु तो सुनिश्चत है। हां कुछ ऐसे महान व्यक्तित्व भी होते हैं जो मर कर भी यश शरीर से अमर हो जाते है स्व० पुरुषोत्तम दास जी ऐसे ही कर्मयोगी थे। हम मृत्यु को भूलें नहीं, साथ ही सत्कर्मों से प्रेरणा लें।

श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री (वरिष्ठ उपमन्त्री सार्व० आर्य प्रतिनिधि सभा) ने कहा कि पूज्य लाला पुरुषोत्तम दास जी की जीवन साधना की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति माननीय श्री प्रेमभिक्षु जी के रूप मे

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पंजाब की स्थिति का आंखों देखा वर्णन


श्री मनमोहन जी तिवारी सभामन्त्री

सन्त नानक और गुरु गोविन्दसिंह की उपदेश भूमि

आततायियों द्वारा उत्पीड़ित और प्रताड़ित

केन्द्रीय शासन शीघ्र सैनिक कार्यवाही करे

सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी की पंजाब सम्बन्धी रिपोर्ट

मई १९८६ का प्रथम सप्ताह समाप्त हो गया था। मै उन कल्पनाओ की रेखायें खींच रहा था जिनके आधार पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की आगामी शताब्दि का अभियोजन किया जाना है कि सहसा दिल्ली से समाचार प्राप्त हुआ कि माननीय श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व मे पंजाब मे एक सद्भावना मण्डल दिनांक १५ मई को पंजाब की वर्तमान परिस्थितियो के अध्ययन हेतु जा रहा है और माननीय शालवाले ने मुझे भी उसमे सम्मिलित होने का निर्देश दिया। मै श्रद्धेय प्रधान जी के आदेशानुसार दिल्ली पहुचा और निश्चित समय पर श्री शालवाले के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मण्डल जिसमे प० रामचन्द्र राव बन्देमातरम् उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, इन पंक्तियो का लेखक और श्री राजगुरु शर्मा प्रधान मध्यप्रदेश थे—पंजाब की सीमा मे पहुचे और प्राय एक सप्ताह तक अमृतसर, जालन्धर, होशियारपुर, बटाला, पट्टी, तरनतारन, लुधियाना आदि स्थानो पर जाकर वहा की वास्तविक स्थिति का आकलन किया। और शहर और गाव दोनो क्षेत्रो मे घूमे साधारण किसान, गरीब कर्मचारी और सम्पन्न व्यक्ति सबसे सम्पर्क किया और एक तथ्य तक पहुचने का प्रयास किया।

विगत चार वर्षों से ऐसा दुर्भाग्य रहा है कि पंजाब मे स्वार्थपूर्ण राजनीति और धर्म दोनो को एक मे मिला दिया गया और पंजाब की राजनीति का सचालन और उनके निर्देशन के लिए धर्म स्थानो को जिन्हें गुरुद्वारा कहा जाता है रणमंच बनाया गया। पवित्र स्थलो की आड मे समाज विरोधी तत्व शरण लेता रहा तथा जनजीवन से खिलवाड करता रहा। सबसे पहले जरनैलसिंह भिंडर वाले को जिसने निरंकारी सिखो पर घातक आक्रमण किया सत की सज्ञा दी गई और पंजाब मे वह जहरीले प्रचार होने लगे जिससे पहले से ही विभाजित हुआ पंजाब एक ऐसा छोटा सा राज्य बने जो पाकिस्तान के हाथो मे खेले और खालिस्तान कहलाये। सरदार दरबारासिंह आतङ्कवादी सिखो के आन्दोलन को दबाने मे असफल रहे तथा लाला जगत नारायण जो पत्रकार जगत के एक गौरवमय स्तम्भ थे जिन्होने हिन्दू-सिख एकता का आन्दोलन प्रमुख रूपसे चलाया था उनकी आतङ्कवादियो ने हत्या कर दी और यहीं से आतङ्कवादियो तथा उग्रवादियो का नङ्गा नाच शुरू हुआ। भिंडरवाला सन्त बना, ऐतिहासिक अमृतसर के स्वर्णमन्दिर मे शरण ली, अस्त्र शस्त्र एकत्रित किये और उसके बाद वहीं से प्रतिदिन गिन गिन कर निर्दोष व्यक्ति मारे जाते रहे और आतङ्कवादियो के हौसले बढ़ते रहे। स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाधी ने दृढ़ता से स्वर्ण मन्दिर मे सैनिक कार्यवाही करके इस आन्दोलन को दबाया परन्तु आन्दोलन पनपता ही रहा और आज जब पंजाब मे अकाली दल की सरकार कार्य कर रही है बरनाला सुरजीतसिंह मुख्य मन्त्री अपने शक्ति भर शान्ति व्यवस्था मे प्रयत्नशील है फिर भी पंजाब मे शान्ति नहीं है बल्कि वहा उग्रवादियो का पागलपन बढता ही जा रहा है और निर्दोष हिन्दुओ की रोज हत्याये की जा रही है। यह स्थिति इतनी भयावह हो गई है कि केन्द्रीय सरकार को अवश्यमेव कोई न कोई पग उठाना पड़ेगा।

मै जिन शहरो कस्बो और गावो मे गया वहा ऐसा ही कोई विरला घर मिला होगा जिसका कोई व्यक्ति आततायियो का शिकार न हुआ हो जैसे हर घर श्मशान भूमि बन रहे है जीवन निश्चिन्त नहीं है क्योंकि आतङ्कवादी सहसा जो उन्हे मिला उस पर प्रहार करके भागते है और स्थिति यह है कि पंजाब प्रदेश की पुलिस मूक दर्शक बनकर देखा करती है यदि आतङ्कवादी पश्चिम को भागते है तो उन्हे पकड़ने के लिए पुलिस का दस्ता पूरब की ओर जाता है। सूरज ढलते ही दुकान बन्द हो जाती है, घरो के अन्दर ताले बन्द हो जाते है गली और सड़क सब सूना नजर आने लगती है। आतङ्क प्रधान स्थानो पर तो कर्फ्यू जमा मालूम पडता है हर गाव और शहर मे आतङ्कवाद का साया घूमता रहता है। जहा-जहा मै गया वहा चीत्कार और आर्तनाद सुनाई पड़ा। जो पंजाब कृषि प्रधान क्षेत्र रहा गेहू के उत्पादन मे अग्रणी रहा आज वहा आर्थिक ह्रास है। फसले उजडी जानवर भूखे, बिलखती क्रूर वधुये, और बलिष्ठ किसान घायल अस्पताल मे। सर्वत्र एक रौद्र रूप है दहशत है, और बरनाला सरकार के पुलिस को आतङ्कवादी परवाह नही करता है। बड़े-बड़े नेता चाहे जिस दल के हो घरो मे ताला लगाये बैठे है। विशेष रूप से पाकिस्तान की सीमा से मिले चार जनपद अमृतसर, गुरुदासपुर, फिरोजपुर और भटिण्डा तथा कपूरथला बटाला के क्षेत्र आतङ्कवादियो और उग्रवादियो का उन्मुक्त क्रीडा स्थली है ये क्षेत्र सवेदनशील है और इन्ही क्षेत्रो मे पाकिस्तान के द्वारा हथियार शस्त्र विद्रोह के साधन और विद्रोही व्यक्तियो को प्रशिक्षित करके भेजा जाता है तथा यही क्षेत्र तस्करी के मुख्य केन्द्र भी है। तस्कर निश्चिन्त है क्योंकि पुलिस का मनोबल गिरा हुआ है और वह आतङ्कवादियो के पीछे दौड़ रही है। केवल अर्धसैनिक सुरक्षा दल वहा सक्रिय है परन्तु वह [illegible] प्रशासन के अन्तर्गत कार्य कर रहा है और प्रशासन सक्षम [illegible] है क्योंकि अकाली दल मे भी कुछ पद के लोलुप व्यक्ति दल मे फूट डाल रहे है और मुख्य मन्त्री श्री बरनाला के पैरो को खींच रहे है। अकाली दल के एक गुट के नेता प्रकाशसिंह बादल और गुरुद्वारा प्रबन्ध समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री तोहड़ा की गतिविधियो से आप सब परिचित है और इन्हीं के कारणो से पंजाब की सरकार पगु हो गई है।

सद्भावना मण्डल का मुख्य उद्देश्य वहा के उन हिन्दुओ से मिलना

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ ५ का शेष)

था जिनकी जनसख्या अडतालिस प्रतिशत है परन्तु जो आतङ्क और उत्पीडन के शिकार है । लोगो ने स्पष्ट रूप से कहा कि–हम हिन्दुओ ने विगत निर्वाचन मे अकाली दल का खुलकर समर्थन किया, उन्हें सत्ता सौंपी परन्तु हमारे स्वप्न निस्प्रद हो गये । अकाली दल के शासन मे खालिस्तानी नारे और प्रबल हुए तथा गुरुद्वारो मे फिर से आतङ्कवादी जम गये । कितना दुर्भाग्य है कि यदि पुलिस गुरुद्वारो से आतङ्कवादियो को निकालती है तो नारा लगाया जाता है कि–'पुलिस ने धर्म स्थल को अपवित्र किया, बरनाला ने पुलिस भेजी, बरनाला हटाये जाँय, पश्चाताप करें' परन्तु श्री तोहडा और श्री बादल ने यह नही बताया कि 'आतङ्कवादियो से मुक्ति पाने के लिए पुलिस के स्थान पर उनके पास और कौन से साधन है और न आज तक गुरुद्वारे के ग्रन्थियो ने आतङ्कवादियों की निन्दा की ।

दु ख, वेदना और उत्पीडन शहन की एक सीमा होती है । विगत चार वर्षों से वहां का हिन्दू इसे सामूहिक रूप से सहन कर रहा है और अब उसके सामने यह प्रमुख समस्या है कि या तो पजाब मे मृत्यु और सर्वनाश का वरण करे अथवा वहां से पलायन करे और पजाब मे पलायन प्रारम्भ हो गया है । विशेष कर सीमावर्ती प्रदेशो से बडी सख्या मे तमाम अवरोधो को पार करते हुए हिन्दू हरियाणा, हिमाचल जम्मू, दिल्ली और राजस्थान की ओर आ रहा है । यह कार्य शुभ नही है । परन्तु पलायन करने वालो के पास कोई दूसरा साधन भी नहीं है । सरकार अभी तक कोई पग नहीं उठा सकी है । केन्द्रीय सरकार के सामने केवल एक ही उपाय है कि–सीमावर्ती जनपदो को सैनिक नियन्त्रण मे अधिग्रहण करे और सेना प्रान्तीय प्रशासन से मुक्त होकर स्वत शान्ति स्थापित करे ।

पजाब की यात्रा मे हमे लोमहर्षक घटनायें सुनने और देखने को मिलीं । आतङ्कवादी न वृद्ध देखते हैं, न रोगी देखते हैं, न बाल और वनिता देखते है उनका केवल एक ही उद्देश्य है कि हिन्दुओ की परिसमाप्ति और राज्य मे अस्थिरता हो और केन्द्रीय शासन झुककर खालिस्तान मान ले । एक घटना पर्याप्त है कि होशियारपुर के उत्साही आर्य समाज के कार्यकर्ता डी० ए० वी० आदि सस्थाओ के प्रधान चौधरी श्री अमरजीतसिंह प्रात जब दूध लेने जा रहे थे तो उन पर आततायियो ने आक्रमण किये यह मानवीय निर्दयता का क्रूरतम उदाहरण है परन्तु परमात्मा की कृपा है कि उनके पुत्र कमलजीतसिंह चौधरी आज ससद सदस्य है और होशियारपुर मे सद्भावना के वातावरण को जीवित रखे है । इसी प्रकार जालन्धर मे प्रकाशित हिन्दी के प्रसिद्ध पत्र 'पजाब केसरी' का ह लाला जगत नारायण और उनके पुत्र श्री रमेशचन्द्र की हत्या की गई परन्तु उसी परिवार के एक वीर युवक श्री विजय जी पजाब जालन्धर से ही 'पजाब केसरी' का विधिवत सचालन कर रहे है और इसी प्रकार कितने ही व्यक्ति साधुवाद के पात्र है जो शेर और ... के बीच मे भी निर्भीकता के साथ रहते हुए शान्ति प्रयास मे लगे है ।

हम केन्द्रीय सरकार के सम्मुख निम्न सुझाव रख रहे हैं–

१–सम्वेदन शील सीमावर्ती जनपदो को तुरन्त सेना के हवाले किया जाय ।

२–अल्पमत हिन्दुओ की सुरक्षा के लिये सुगमता से हथियारो के लाइसेंस दिये जाँय शस्त्र दिये जाँय और आर्थिक सहायता प्रदान की जाय ।

३–जो पजाब मे फूट और वमनस्य डालने का प्रयास करे वह चाहे कितना ही बडा व्यक्ति क्यो न हो तुरन्त सुरक्षा कानून के अन्तर्गत दण्डित किया जाय ।

४–गुरुद्वारे केवल धार्मिक क्रियाओ का सम्पादन करें वहाँ आतङ्कवादी तत्व किसी रूप मे भी न ठहरने पावें ।

५–देश के विभिन्न पार्टियो के शीर्षस्थ नेताओं को आर्यसमाज, शकराचार्यों तथा मठाधीशो को जाकर सद्भावना प्रयास का कार्य करना चाहिए ।

६–सरकार श्वेत पत्र प्रकाशित करे और स्पष्ट करे कि विदेशियो द्वारा किन हथकण्डो से उग्रवादियो को सब प्रकार से सहायता पहुच रही है । पडोसियो पर दबाव डाला जाय कि यदि ऐसे कार्य जारी रहे तो हमे उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही करनी पडेगी ।

आतङ्कवाद, पैशाची वृत्ति पजाब मे अब बहुत हो चुकी है । केन्द्रीय प्रशासन कठोर पग उठाये । आशा है कि प्रभु सबको सुमति प्रदान करेगा जिससे पजाब पर छाई यह आतङ्क की आँधियाँ बन्द हो जाँय ।

–मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी का निधन– आर्य समाजों की शोक संवेदना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महा मन्त्री श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी का निधन आर्य जगत की ऐसी अमूल्य क्षति है जिसे भुलाया नहीं जा सकता। वे आर्य जगत के प्राण थे। उनके इस आसामयिक निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत शोक विह्वल है। प्रान्त की आर्य समाजो ने अपने दिवगत नेता के असीम शांति हेतु भाव भीनी श्रद्धाजलि अर्पित की है परमपिता परमेश्वर दिवगत को शाति तथा शोक मे डूबे परिवार-जनो को महान् धैर्य प्रदान करें यही आर्य परिवारों की प्रभु से प्रार्थना है।–

175

आर्य समाज केराकत (जौनपुर) आर्य समाज हरदोई, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर राजकोट, आर्य समाज महाराजपुर छतरपुर म० प्र०, आर्य वीर दल साहूपुरी वाराणसी, आर्य समाज बलदेवाश्रम खुर्जा, आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर, आर्य समाज पुरानी मन्डी फिरोजाबाद, आर्य समाज आनन्द बाग-वाराणसी, स्त्री आर्य मेरठ शहर, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश हैदराबाद, आर्य समाज वैदिक आश्रम देहरादून, आर्य समाज बहराइच, आर्य समाज भागलपुर देवरिया, आर्य समाज उसका बाजार (बस्ती) आर्य समाज स्वरूप नगर कानपुर, आर्य समाज मोदी नगर गाजियाबाद, जिला आर्योप्रतिनिधि सभा मैनपुरी, आर्यसमाज लहेरिया सराय बिहार, आर्य समाज मदार दरवाजा फर्रूखाबाद, आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद, आर्य समाज कोटद्वार गढवाल, आर्य समाज गया, विश्व भारती अनुसधान परिषद ज्ञानपुर वाराणसी, आर्य समाज जवाहर नगर मेरठ, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार, आर्य समाज देहरादून, आर्य समाज गोला गोकर्णनाथ खीरी, आर्य समाज बस्ती।

आतकवाद से कराहता "पञ्जाब"

(पृष्ठ २ से आगे)

वर हमारे तेवर देखते ही कापने लगेगा। आज बरनाला जैसे किसी कर्कशा का पति घर पर बर्तन माजता है और वह कर्कश महिला सीना तान कर सारे गाव मे घूमती हैं वैसे ही बरनाला जूते साफ कर रहे हैं और आतकवादी बन्दूक की नोक पर पजाब के हिन्दुओ को सफाई कर रहे है।

'आर्यमित्र' भारत का सबसे प्राचीन हिन्दी का एक राष्ट्रीय साप्ताहिक है जिसे विरासत मे महर्षि दयानन्दकी निर्भीकता मिली है, आर्य समाज की एकता मिली है और जनता का सहयोग मिला है। एक पत्रकार का सबसे महानतम दायित्व है कि शासन को आनेवाली घटनाओं से सावधान करें, राष्ट्र को सत्य मार्ग दिखाये और जनता का पथ प्रदर्शन सत्य की ओर इगित करें। इसी साहस और निर्भीकता के साथ आर्य मित्र प्रधान मन्त्री जी से अनुरोध करता है कि ? पजाब की कागजी कार्यवाही बन्द हो और दृढ़ता के साथ पजाब मे सेना के हाथ मे प्रशासन दिया जाय तथा पजाब मे (नमस्ते भाई जी) नेताओ को राज्यपाल न बनाकर सेना के अवकाश प्राप्त किसी साहसी अधिकारी को राज्यपाल नियुक्त किया जाय। बरनाला चाहे सिर पर दूल्हे का मौर रखे रहे हमे आपत्ति नहीं परन्तु इनको बारात मे छैले न चलें निडर निर्भीक सैनिको की पक्ति हो। पजाब मे आज हिन्दू आतकित हैं, भाग रहा है और हिन्दुओ पर कब तक अत्याचार होता रहेगा ? दिनाक १४ अगस्त सन् १९४७ को पेशावर से लेकर रावी तक के क्षेत्र का हिन्दू भाग कर भारत आया आज रावी से लेकर हरियाणा की सीमा तक का हिन्दू क्या फिर पलायन की स्थिति मे आने वाला है। यदि केन्द्रीय शासन इस गम्भीर खतरे को समझ कर दृढ पग उठाये तभी श्रेयस्कर होगा और देश के बौद्धिक जन निर्भयता के साथ प्रधान मन्त्री पर दबाव डालें कि "पजाब मे नाटक नौटकी बन्द हो, आयोगो का तमाशा न दिखाया जाय, लोगोवाल समझौते की दुहाई न दी जाय बल्कि साहसिक पग उठाये जाय। शकराचार्य, मठाधीश, सम्प्रदायो के नेता खुलकर सद् भावना मिशन के रूप मे पजाब मे प्रवेश करें और हिन्दुओ के ही अभिन्न अग सिख की बहक बन्द हो और पजाब केसरी रणजीत सिह, गुरु गोबिन्द सिह और महान सन्त नानक की अमृतवाणी पजाब मे फिर व्याप्त हो।

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए० सम्पादक

आर्यजगत

–आर्य समाज भागलपुर देवरिया को एक आवश्यक बैठक दि० १४मई८६ को समाज के प्रधान श्री प०चन्द्रशेखरमिश्रकी अध्यक्षतामेसम्पन्न हुई जिसमे धारा ३७० को तुरन्त समाप्त करने हेतु सरकारसे मागकी गई तथा शरियत विधेयक की कडे शब्दो मे निन्दा की गई।

मन्त्री आर्य समाज

–"आर्य समाज बिलसडा मे दिनांक २४ से २६ मई तथा ग्रामतिलछो, पोस्ट-बिलसडा मे २८ से ३० मई तक वेद प्रचार एव 'यजुर्वेद पारायण यज्ञ" सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

आर्य जगत

–श्रीमती श्यामवती देवी पत्नी स्वर्गीय बा० जयनारायण (चक्की वाले) ने आर्य समाज बदायूं को एक हजार रु० नकद दान दिया है। श्रीमती श्यामवती देवी स्त्री आर्य समाज बदायूं की वयोवृद्ध, क्रियाशील, उत्साही सदस्या है। समाज उनके स्वस्थ एव दीर्घायु होने की ईश्वर से प्रार्थना करता है। मन्त्री आर्य समाज बदायूं

—दिनांक २७ अप्रैल ८६ को सायकाल बादशाह नगर लखनऊ रेलवे स्टेशन के निकट सम्पन्न जिला आर्यउपप्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक अधिवेशन मे प्रख्यात वैदिक विद्वान एव लेखक स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने वेदों की महत्ता पर सारगर्भित व्याख्यान एव शुद्ध मन्त्रोच्चारण पर बल दिया तथा श्री पवनकुमार जी ने "महर्षि दयानन्द की विश्व को अनूठी देन" विषय पर वार्ता प्रस्तुत की।

ज्ञानकृष्ण

प्रशासन द्वारा आर्य समाज की भूमि थाने के नाम आवंटित

निन्दा प्रस्ताव

अलीगढ प्रशासन द्वारा वैदिक आश्रम की भूमि को क्वासी पुलिस थाने के नाम आवन्टन के विरोध मे आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम अलीगढ की साधारण सभा मे दिनाक २० अप्रैल ८६ को पारित प्रस्ताव–

आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम अलीगढ की श्री हरप्रसाद आर्य दादा जी की अध्यक्षता मे हुई साधारण सभा सर्वसम्मति से अलीगढ प्रशासन के अधिकारियो को इस हठधर्मी और इकतरफा कार्यवाही की निन्दा करते हुए प्रस्ताव पारित करती है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की इस भूमि के कुछ अश का क्वासी पुलिस थाने के नाम आवन्टन करके उन्होने घोर अन्याय किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा १८९७ ई० से रजिस्टर्ड धार्मिक सस्था है तथा वैदिक आश्रम की भूमि पर सन् १९०७ से आज तक काबिज है। खतौनी के द्वितीय भाग मे आर्य प्रतिनिधि सभा का कब्जा विधिवत् दर्ज है। आर्य समाज के प्रतिनिधियो द्वारा सभी दस्तावेज प्रस्तुत किए गये किन्तु जिलाधिकारी महोदय ने परिसीमन अधिकारी को ही निर्णय सौप दिया है। जिसके परिणाम स्वरूप उक्त कार्यवाही की गई है।

आर्यसमाज के सदस्य एव सभासद जिला प्रशासन से अनुरोध करते हैं कि तुरन्त न्याय पूर्ण कार्यवाही करके वैदिक आश्रमकी भूमिको सीलिंग से मुक्त करायें। अन्था हमे बडे आदोलन और भूख-हडताल आदि वैध शाति पूर्ण उपायो का सहारा लेना पडेगा जिसकी जिम्मेवारी प्रशासन की होगी।

हरप्रसाद आर्य
प्रधान

रामदीन आर्य
मन्त्री

आर्य जगत

—बडें हर्ष के साथ सूचित किया जा रहा है कि 'आर्य समाज कल्याणी देवी, प्रयाग का १० वा वार्षिकोत्सव दिनाक २९ मई से १ जून १९८६ तक स्थान कल्याण गढ हनुमान जी का मन्दिर, कल्याणी देवी, प्रयाग मे हर्षोल्लास एव भव्य आयोजनो के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमे आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान, सन्यासी एव भजनोपदेशक आदि सम्मलित हुए।

प्रधान आर्य समाज

—जिला आर्यो प्रतिनिधि सभा मीरजापुर के तत्वावधान मे दिनाक १८ अप्रैल से १९ अप्रैल ८६ तक शिवशकरी धाम मे वैदिक धर्म प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ जिसमे ६मुख्यउपदेशक भजनोपदेशक सम्मलित हुए।

मन्त्री

श्री नारायण मुनिचतुर्वेद को श्रद्धाजलि–

—विश्व भारती अनुसधान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी) के अध्यक्ष श्री डा० भारतेन्दु द्विवेदी तथा परिषद के सदस्यों ने, एव गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति डा० श्री कपिल देव द्विवेदी ने, वेदो के प्रकाण्ड विद्वान श्री नारायण मुनि चतुर्वेद के निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की है। प्रभु दिवगत को चिर शाति तथा शोक विहृवल परिवार को असीम धैय प्रदान करें।

सम्वाददाता

आर्य कन्या महाविद्यालय बडौदा पर असामाजिक तत्वो का कब्जा

आर्य जगत् के लिये अत्यन्त दु ख की बात है कि–आय जगत की एक मात्र अन्तर्राष्ट्रीय सस्था आर्य कन्या महाविद्यालय, बडौदा पिछले लगभग एक वर्ष से अनार्यों के हाथ मे चली गई, जिसके परिणामस्वरूप यहा यज्ञवेदी, कार्यालय, बैंक अकाउण्ट्स व छात्रावासो पर तालेबन्दी है। सस्था के ८७ वर्षीय प्राण श्री प० आनन्द प्रिय जी के प्रति अभद्र व अपमान जनक व्यवहार किया जा रहा है और असामाजिक तत्वो को वहा लाकर बैठा दिया गया है। मानसिक रूप से वहा का स्टाफ क्षुब्ध है, उन्हें ९ माह से वेतन नहीं मिल रहा है।

श्री मधुसूदन पित्ती जैसे व्यक्ति से यह आशा नही की जा सकती थी कि गुरुकुल की सम्पत्ति के प्रति गिद्ध दृष्टि वे रखेंगे और अपने दुष्चक्र से उसे हडपने का प्रयत्न करेंगे। आज गुजरात राज्य के ही नहीं देश का एक मात्र वीरागनाओ को उत्पन्न करने वाले सस्थान पर सकट के काले बादल मडरा रहे हैं और आर्यों की शिरोमणि सस्था सार्वदेशिक सभा मूकदर्शक बनी क्या बैठी रहेगी ?

आर्यों को मेरी यह चेतावनी है कि वे निजाम जैसे अत्याचारी शासक से जहा लोहा ले सकने की क्षमता रखते हैं, वहा मधुसूदन पित्ती किस गणना मे हैं ? सन्यासो, धर्मप्रेमी वैदिक धर्मावलम्बी महानुभावो को शीघ्र ही इस ऐतिहासिक आर्य सस्था को बचाने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिये।

श्रीकरण शारदा
मन्त्री
परोपकारिणी सभा, अजमेर

आर्य जगत

—आर्य समाज मदार दरवाजा फर्रुखाबाद का ३६वा वार्षिकोत्सव दिनाक २, ३ मई १९८६ को बडो धूम-धाम से मनाया गया जिसमे उच्चकोटि के आचार्य विद्वान एव भजनोपदेशको के प्रभावशाली व्याख्यान, प्रवचन हुए।

मन्त्री

—आर्य समाज रामपुर (उ०प्र०) का वार्षिकोत्सव दिनाक २४ से २६ मई ८६ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान एव योग्य भजनोपदेशक सम्मलित हुए उत्सव प्रभावशाली रहा।

मन्त्री

दान के लिए अपील

आर्यसमाज ककर खेडा सभी बन्धुओ का आभारी है जिससे तीन कमरे बन चुके है। और दो कमरो मे आर्य शिशु विद्यालय चल रहा है। परन्तु यज्ञशाला तथा सत्सग भवन का निर्माण कार्य अभी भी शेष है। अत दानी सज्जनो से प्रार्थना है कि इस शुभ कार्य के लिए उदारता से दान देने की कृपा करें। निवेदक—

मन्त्री आर्यसमाज

६२ शाकपुरी ककर खेडा, मेरठ छावनी

आचार्य प्रियव्रत वेद मार्तण्ड 'आचार्य गोवर्धन शास्त्री' पुरस्कार से सम्मानित

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के ८६वें वार्षिकोत्सव पर ११ अप्रैल १९८६ को आयोजित वैदिक धर्म एव सस्कृति सगोष्ठी मे सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य प्रियव्रत वेदमार्तण्ड को सघड विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर के आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से समादृत किया गया। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालङ्कार ने अध्यक्ष पद से आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति को आर्यसमाज और वेद के क्षेत्र मे की गई सेवाओ का उल्लेख करते हुए उन्हें शाल समर्पित की। विश्वविद्यालय के आचार्य एव उपकुलपति प्रोफेसर रामप्रसाद वेदालङ्कार ने अभिनन्दन-पत्र तथा पुरस्कार राशि समर्पित की। प्रो० रामप्रसाद जी ने कहा कि आचार्य प्रियव्रत जी का सम्मान कर सघड विद्या सभा स्वय सम्मानित हुई है। स्वतन्त्रता सेनानी तथा पूर्व सासद श्री रामचन्द्र विकल इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। —श्रीरामप्रसाद जी वेदालकार

श्रद्धांजलि

श्री प्रेमभिक्षु जी मथुरा के पूज्यनीय पिता जी का निधन एक दुखद समाचार है। सार्वदेशिक सभा दिल्ली के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मन्त्री श्री प० मनमोहन जी तिवारी, श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री, श्री शिवकुमारजी शास्त्री आदि आर्य नेताओ ने दिवगत के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की है प्रभु दिवगत को चिर शाति तथा शोक सतप्त परिवार जनो को धैर्य प्रदान करे। —सवाददाता

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय सिराथू, इलाहाबाद मे एक जुलाई ८६ से प्रवेश प्रारम्भ। राज्य सरकार से प्रथम श्रेणी मे मान्यता प्राप्त। प्रथमा कक्षा से आचार्य एम० ए० तक सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्व विद्यालय से मान्यता प्राप्त है। विद्यालयीय विषयो के अतिरिक्त धर्म शिक्षा, शारीरिक एव यौगिक शिक्षा अनिवार्य है। बच्चो को शुद्ध पौष्टिक स्वास्थ्य वधक भोजन एव खुले वातावरण मे रहने की उत्तम व्यवस्था है। प्रतिदिन सन्ध्या हवन, आसन व्यायाम का नियमित अभ्यास कराया जाता है। नियमावली के लिए अविलम्ब लिखें, स्थान सीमित हैं। प्राचार्य

गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय

सिराथू, इलाहाबाद

दयानन्द शोधपीठ

दयानन्द (स्नातकोत्तर) कालेज, अजमेर मे स्थित दयानन्द शोधपीठ के लिए एक प्रोफेसर की वेतन रु० २६१०/- प्र० मा० शृखला १५००-२५०० मे आवश्यकता है। प्रत्याशी अनुसधान डिग्रीधारी तथा एम० ए० तक उत्तम शैक्षणिक योग्यता हिन्दी, सस्कृत अथवा दर्शनशास्त्र मे अनुसधान अथवा स्नातकोत्तर अध्यापन अनुभव। दयानन्द-दर्शन का ज्ञान आवश्यक। ख्याति प्राप्त विद्वान को अन्य योग्यताओ से छूट। विस्तृत आवेदन मन्त्री, आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर को करें।'

कार्यालय अधीक्षक

दयानन्द कालेज, अजमेर

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज बक्शीपुर गोरखपुर को दैनिक, साप्ताहिक यज्ञ, सत्सग, प्रवचन तथा सस्कार आदि मे निपुण एक विद्वान एव कर्मठ पुरोहित की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार व अन्य सुविधायें।

सम्पर्क करें—

डा० विनय प्रताप मन्त्री

आर्यसमाज—दयानन्द मार्ग

बक्शीपुर, गोरखपुर

प्रचार के लिए आठ पैसे में दस पुस्तकें

प्रचार के लिये भेजी जाती हैं। धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, हवन-मन्त्र, पूजा किसकी, सत्यपथ, प्रभु भक्ति ईश्वर प्रार्थना, आर्यसमाज क्या है, दयानन्द की अमर कहानी, जितने चाहें सैट मगावें।

हवन सामग्री ३-५० प्रति किलो, मुक्ति का मार्ग, ४० पैसे, उपासना का मार्ग, ६० पैसे, भगवान कृष्ण ४० पैसे सूची मगावें।

वेद प्रचारक मण्डल प्रभात रोड, दिल्ली-५

आर्यसमाज के वर्तमान और भविष्य

एक क्रान्तिकारी प्रकाशन

क्या

आर्य समाज

[हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय है]

लेखक—दत्तात्रेय वाब्ले (आर्य)

पृष्ठ सख्या—४०० मूल्य सजिल्द—५०/- अजिल्द—४५/-

प्राप्ति स्थान—आर्य समाज, अजमेर

शुद्धि सस्कार

आर्यसमाज मन्दिर जवाहरनगर (लालकुर्ती) मेरठ कैंण्ट मे श्रीयुत इकराम पुत्र श्री नूर मुहम्मद निवासी जामुन मोहल्ला लालकुर्ती मेरठ कैंण्ट को इसलाम सम्प्रदाय से वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। शुद्धि सस्कार यज्ञ श्री प० इन्द्रराज जी मन्त्री आर्यसमाज बुढानागेट, मेरठ शहर द्वारा सम्पन्न कराया गया, जिसमे आर्यसमाज के गण्यमान्य सदस्यो ने भाग लिया। शुद्धि सस्कार के पश्चात् इसका नाम राजकुमार (राजू) रखा गया। —देवप्रकाश मन्त्री

(चरित्र निष्ठा ही मानवता का मूलाधार है)

(पृष्ठ ४ का शेष)

हुई है। इसलिए हम कह सकते हैं कि अपने जीवनादर्शों के रूप मे वे आज भी हमारे मध्य मे हैं और कि हम निरन्तर उनसे प्रेरणा लेते रहे गे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के महामन्त्री श्री मनमोहनजी तिवारी (लखनऊ) के अतिरिक्त श्री मक्खनलाल जी अग्रवाल (आगरा), श्री सत्यानन्द जी आर्य (सुपुत्र श्री स्व० लालमन जी आर्य) दिल्ली, श्री रणजीत आर्य (फरीदाबाद), श्री अनूप सिंह जी आर्योपदेशक (गोवर्धन) श्री वेद प्रकाश जी 'प्रकाश' घिरोर (मैनपुरी), श्री गेंदालाल जी आर्य श्री देवेन्द्र जी आर्य वैदिक मिशनरी ऊवा गाव, श्री अभयदेव जी वानप्रस्थ वै० मि० (प्रधान जिला सभा) श्री प्रहलाद कुमार जी आर्य (प्रधान आ स हिन्डौन सिटी), श्री जगदीशप्रसाद जी एडवोकेट (मंत्री आ स हिन्डौन), श्री राम प्रकाश जी आय वै० मि० दिल्ली (शूकर-बस्ती, श्री आशाराम जी आर्य (श्री विरजानन्द स्मारक, मथुरा) श्री छैलविहारी जी आर्य (आर्य समाज छाता) ने भाव भीनी श्रद्धाञ्जलिया प्रस्तुत की। राम राज्य परिषद के श्री आचार्य प्रेम वल्लभ जी व्यास ी हरचरण लाल जी शर्मा 'पेटेण्ट' श्री स्वामी प्रेमानन्द जी, श्री स्वामी नित्यानन्द जी, श्री स्वामी मोक्षानन्द जी, श्री प० भूदेव जी शास्त्री, साहित्याचार्य, डी० ए० वी० के प्रबन्धक श्री मुरारी लाल जी अग्रवाल, श्री मुरारीलाल जी खन्ना, आर्यसमाज कृष्णा नगर, मथुरा के श्री विष्णुदत्त जी ठेठा, ट्रस्ट के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर जी आर्य (दिल्ली) ने बड़े ही भावभरित हृदय से श्रद्धाजलिया अर्पित करते हुए स्व० आर्य जी के गुणों की भूरि-भूरि प्रशसा की। श्री श्याम सुन्दर जी आर्य ने वैदिक परिवार निर्माण एव वैदिक मिशनरी निर्माण योजना का मूल सूत्रधार भी स्व० लाला जी को बताया।

श्रद्धाञ्जलि समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक माननीय श्री प० बाल दिवाकर जी 'हस' तथा मुख्य अतिथि थे— विद्वद्वर जी आचार्य शिवराज जी शास्त्री। आपने बताया कि ऐसा निष्ठावान आर्य परिवार मैंने अन्यत्र नहीं देखा, जहा छोटे छोटे सभी बच्चे और सभी महिलायें ऐसे शुद्ध मन्त्रोच्चारण सहित ऐसी श्रद्धा से यज्ञादि करते हो। दोनो ही विद्वानो ने स्वर्गीय दिव्यात्मा से कर्मण्यता, पुरुषार्थवत्ता और आर्यत्व की प्रेरणा लेने की) मार्मिक अपील की। श्री सत्यदेव जी गुप्त (आ स सेवासदन बल्लबगढ़ ने अपने आर्य समाज से लाए शोक प्रस्ताव को प्रस्तुत किया। अन्य अनेको आर्य समाजो और सस्थाओ से समवेदना पत्र प्राप्त हुए।

———

शोक समाचार

डी ए वी कालेज कानपुर के भूतपूर्व प्रिन्सपल डा० कालिका प्रसाद भटनागर की धर्म पत्नी श्रीमती सुनीतिदेवी का निधन ५ मई १९८६ को हो गया। —विजयपाल शास्त्री

— आर्य समाज गुलाटी के भू० पू० प्रधान श्री ला० नारायणदास जी का निधन दि० १ मई १९८६ को हो गया है।

गुलावठी आर्य समाज इस महान आत्मा को हार्दिक भावभीनी श्रद्धाजली अर्पित करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनके शोकाकुल परिवार को शान्ति व धैर्य प्रदान करे। —मन्त्री

—आर्य समाज लार के तत्वाधान मे श्री अभिमन्यु प्र० कुशवाहा के बाबा जी का अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार इण्टर कालेज के प्रवक्ता डा० कस्तूरी लाल आर्य के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

—आचार्य रामज्ञानी आर्य

पांचवर्षीय वेदव्रत आर्य द्वारा अद्भुत् प्रदर्शन

आर्य समाज बागपत (मेरठ) के कोषाध्यक्ष श्री देवेन्द्र कुमार आर्य अपने सुपुत्र चि० वेदव्रत आर्य द्वारा मैस्मेरेजम का भन्डा फोड करने तथा जन साधारण को इसका बोध कराने हेतु प्रदर्शन द्वारा मैस्मेरेजम की वास्तविकता का जनता को ज्ञान करा रहे हैं। ये होनहार बच्चा नोट का नम्बर, सन् घड़ी का टाईम, नाम ग्राम, पता किसके कितने भाई, कितने बहिने, शादी के मुकदमे के परीक्षा के चोरी के गड़े धन के, चलती गाड़ी का नम्बर बताना, तथा वर्तमान, भूत, भविष्यत-काल के विषय मे इस तरह से जवाब देता है जिस प्रकार से आटोमेटिक राईफल से गोली निकलती है। प्रदर्शन के उपरात इसका खण्डन किया जाता है।

इच्छुक आर्य जन अपने यहा उत्सव आदि पर बुलाने हेतु एक माह पूर्व सम्पर्क करें।

चौ० देवेन्द्र कुमार आर्य पत्रकार
कोषाध्यक्ष आर्य समाज बागपत

आर्य समाज महावीर गज (लखनऊ) का वार्षिकोत्सव एवं भव्य मेला प्रचार

आर्य समाज महावीर गज लखनऊ का त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव दिनाक २७ मई ८६ को विशेष हर्ष उल्लास एव धूम-धाम से सम्पन्न हुआ तथा अतिम दिन दिनाक २७ मई को बड़ा मगल होने के कारण पूरे दिन जिला सभा के निर्देशन मे मेला प्रचार शिविर चलता रहा। इस प्रचार शिविर मे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के उपदेशक श्री लालता प्रसाद जी, बाराबकी के सर्वश्री स्वामी योगा नन्द जी प० शिवधर भजनो पदेशक पटना, श्री सत्य प्रकाश जी भजनो पदेशक आदि के अतिरिक्त आर्य समाज के अनेक विद्वान एव वक्ता सम्मलित हुए श्री मदन लाल कपूर जी ने नि शुल्क ट्रैक्ट वितरण किया।

ज्ञानकृष्ण

वर्ष १९८६ के प्रथम वेदांग पुरस्कार के लिए श्री प० उदयवीर जी शास्त्री का नाम घोषित

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा निर्धारित वेद वेदाग पुरस्कार समिति ने वर्ष १९८६ के लिए आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान श्री प० उदयवीर जी शास्त्री का चयन किया है। ९२ वर्षीय पूज्य प० उदयवीर जी शास्त्री ने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक वाग्मय के प्रचार प्रसार मे समर्पित किया है। आर्य समाज के इतिहास मे किसी वेद के विद्वान को पुरस्कृत करने का यह प्रथम समारोह है।

आदरणीय पण्डित जी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, उपदेशक विद्यालय लाहौर, नेशनल कालेज लाहौर, ओरिण्टयल कालेज जालधर मे प्राचार्य के पदो पर सुशोभित रहे।

कैप्टिन देवरत्न आर्य महामन्त्री

'आर्य्यमित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
भा० ज्येष्ठ १८, २५
ज्येष्ठ शुक्ल १, ८, रविवार
८, १५ जून १९८६ ई०



आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन की नवीन कमेटी का गठन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपालजी शालवाले की अध्यक्षता मे गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन मे एक आवश्यक बैठक हुई जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी, सभा मन्त्री श्री प० मनमोहन जी तिवारी, श्रीमती सतोष कुमारी कपूर उपप्रधाना सभा एव कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, श्री रमेशचन्द्र जी एडवोकेट मथुरा, श्री ओ३मप्रकाश जी वैद्य, श्री कीर्तिपाल शर्मा तथा श्री नरदेव स्नातक, श्री ब्रह्मदत्त स्नातक, श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, श्री शिवकुमार जी शास्त्री, श्री महेन्द्रप्रतापजी शास्त्री आदि सम्मिलित हुए तथा गुरुकुल की वर्तमान परिस्थितियो का निरीक्षण किया, और गुरुकुल के कर्मचारियो से वहा का रिकार्ड एव लेखा जोखा प्राप्त किया। समस्त जानकारी के पश्चात् सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने यह निर्णय लिया कि दिनाक १२-२-८६ को गठित कमेटी को तत्कालीन प्रभाव से भग कर दिया जाय तथा नवीन कमेटी का गठन किया जाय। श्री सभा प्रधान जी ने कमेटी के सदस्यो की घोषणा की—श्री कीर्तिपाल शर्मा सयोजक, श्रीमती संतोषकुमारी कपूर सदस्य, श्री रमेशचन्द्र अग्रवाल सदस्य, श्री चन्द्रकिरन शर्मा सदस्य, श्री ओमप्रकाश जी वैद्य सदस्य इन सबको वही अधिकार प्राप्त होगे जो गुरुकुल की पूर्व प्रबन्ध समिति को प्राप्त थे। —सवाददाता

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ मई १९८६ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है।

८९१, ११५९, २३०९, २५२८, २७५४, २९१८, ३३५४, ४४१२, ४५१६, ४६७०, ४७९७, ५५७९, ६१३१, ६१३९, ६४२३, ६५१२, ९८९०, १११९४, ११५९८, ११६००, ११६१९, ११६३३, ११९१८, ११९२२, ११९२२, १२१७४, १२१८०, १२१८२, १२१८९, १२६५०, १२६५९, १२८८२, १२८८९, १२८९४, १२८९५, १२९००, १२९०४, १२९०५, १२९१०, १३१११, १३११३, १३११६, १३११८, १३४६२, १३४६३, १३४६४, १३४६५, १३४६७, १३४६८, १३४६९, १३४७०, १३४७१, १३४७२, १३४७३।

विनीत—
—व्यवस्थापक 'आर्यमित्र'

गङ्गा दशहरा मेले के अवसर पर

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी)

भोलाझाल (मेरठ) की ओर से

यज्ञ एव वेद कथा

मगलवार १७ जून १९८६ को प्रात ९ बजे से समारोह सम्पन्न होगे। कृपया अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर धर्म लाभ उठावें।

स्वामी विवेकानन्द	मनोहरलाल सर्राफ	इन्द्रराज
आचार्य	प्रधान	मन्त्री

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) मेरठ।

—श्री शोभनाथसिंह एडवोकेट की आयुष्मती पुत्री कु० पदमासिंह, डक्निराज, मीरजापुर का शुभविवाह, जीवनपुर ग्राम पो० नरायनपुर जि० मीरजापुर निवासी श्री रामप्रतापसिंह के चि० पुत्र नारायनसिंह के साथ वैदिक रीति से दिनाक १० मई की रात्रि मे सम्पन्न हुआ। —मन्त्री

वि . शुद्धि समारोह और आपका कर्त्तव्य

भारत सरकार की धर्म निरपेक्षता तथा तुष्टीकरण परक नीति का लाभ उठाकर हमारे देश मे धर्म के नाम पर विदेशी शक्तिया बहुत पहले से ही षडयन्त्र करती आ रही हैं। इसी धर्म की आड मे इन शक्तियो ने १९४७ मे देश के टुकडे किये। आज भी जहां-जहां ईसाई मुसलमानो की अधिकता है, वहा विदेशी शक्तिया तोडफोड एव लडाई-झगडे कराती रहती हैं। इसका एक ही उपाय है कि इस देश के सभी निवासी वैदिक सस्कृति को अपनी सस्कृति तथा यहा के पूर्वजो को अपने पूर्वज मानें।

इसी भावना को लेकर वैदिक यतिमण्डल के सरक्षण मे यतिमण्डल के कर्मठ सदस्य गुरुकुल आमसेना (उडीसा) के आचार्य एव उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने जोरदार ढङ्ग से शुद्धि का कार्य शुरु कर रखा है। स्वामी जी ने गत फरवरी ८६ मे पोपपाल के भारत आगमन पर भी एक विशाल शुद्धि समारोह गुरुकुल आमसेना मे आयोजित किया था। अब पुन जून के प्रथम सप्ताह मे ५ हजार ईसाइयो को वैदिक धर्म मे दीक्षित करने का कार्यक्रम है। यह काय अति परिश्रम एव व्यय साध्य है। सभी वैदिक सस्कृति प्रेमी देश भक्त सज्जनो से अनुरोध है कि इस महत् कार्य मे अधिक से अधिक सहायता देकर पुण्य के भागी बनें। और विदेशी शक्तियों के षड्यन्त्रो के चगुल से देश और अखण्डता की रक्षा करने मे योगदान कर अपनी देशभक्ति का परिचय दें।

सहायता श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, गुरुकुल आमसेना जिला-कालाहाण्डी (उडीसा) ७६६१०४ के पते पर भेजें।

निवेदक—

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	स्वामी सर्वानन्द सरस्वती
प्रधान	अध्यक्ष
परोपकारिणी सभा (अजमेर)	वैदिक यतिमण्डल दयानन्द मठ
	दीनानगर

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्या

रजि० न० २२४१/६०

घोषणा पत्र स० १ / २८-२

वर्ष ८९] मा० आषाढ १, ८, ज्येष्ठ शुक्ल १५, आ कृ ८, रविवार सवत २०४३ वि०, दि० २२,२९ जून १९८६ [अङ्क २५-२६

प्रार्थना

ओ३म् तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य विश्वमा भासि रोचनम् ॥ यजु ३३–३६

भावार्थ–हे सूर्य ! तू अन्धकार को हटाने वाला, ससार को मार्ग दिखाने वाला, प्रकाश या ज्ञानप्रकाश करने वाला है । प्रकाश्य विश्व को प्रकाशित करता है ।

इस अक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

सम्पादक–

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी सत्य को देखे और समझे चण्डीगढ देने से क्या आतकवादी शान्त होगे ?

दिनाक १५ जुलाई १९८६ को चण्डीगढ जिसमे अडतालिश प्रतिशत से ऊपर हिन्दू रहते हैं जहा की मुख्य भाषा हिन्दी है और विगत विधान सभा निर्वाचन मे जहा से अकाली उम्मीदवार हार गया है उसे शासन ने अपने जोर पर तथा हरियाना के हितो पर पूर्ण कुठाराघात करके पजाब को सौपने का प्रयास कर रही है तथा शासन अपने शक्ति के बलपर हरियाना की जनभावना को दबाकर पजाब को खुश कर रहा है । खेद है कि श्री राजीव जी ने भ्रमवश केवल अकालियो को ही वह भी बरनाला दल को ही पजाब का पूरा प्रतिनिधि मान लिया एव सब प्रकार के राजनैतिक दावो के दावपेंच दिखाकर पजाब को खुश करने पर भी क्या पजाब मे आतङ्कवादी अपने क्रिया कलापो को बन्द कर देगे ? और वहाँ शान्ति हो जायेगी । आतङ्कवादी चण्डीगढ नहीं बल्कि खालिस्तान चाहते है । भारत तथा कनाडा और अमेरिका तथा इङ्गलेण्ड मे खालिस्तान का समर्थन है । पजाब के पाकिस्तानी सीमा से मिले हुए क्षेत्र आतङ्क के मूल स्थान हैं और यदि वहा सेना न भेजी गई तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि आतङ्कवादी वहा के हिन्दुओ को निकाल दें और पाकिस्तानी सेनायें उनकी मदद मे आ जाय तथा एक एक गावो को खालिस्तान का निशाना बनाना शुरू कर दें । तभी आर्यसमाज के प्रमुख नेता श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले जो अब सन्यासी हो चुके है ने पजाब को सेना के हवाले करने के लिए तक देते हुए कहा था कि "इन सीमावर्ती जिलो मे आतङ्कवादियो के पीछे पाकिस्तानी सैनिक सिख और आतङ्कवादियो का वेश बनाकर कार्य कर रहे है अत भारतीय सेना को वहाँ जाकर उन छद्मवेशी पाकिस्तानियो का सफाया करना होगा ।"

न्यायाधीश श्री ई० एस० वेंकट रमैया ने अपनी सिफारिशो मे यद्यपि कोई स्पष्ट बात नही कहपाई है फिर भी इतना जरूर कहा है कि "भाषा और धर्म की आड मे भारत का अब और बटवारा न किया जाय तथा सारे राष्ट्र को एक भावना मे आबद्ध किया जाय । और यदि पजाबी, सिख, कन्नड, महाराष्ट्री, नेपाली और गोरखा जातिवाद के नारे लगते रहे तो भारत पतन के गर्त मे चला जायेगा ।"

प्रधान मन्त्री दृढता से काम लें । और आवश्यकता इस बात की है कि पूर्ण शक्ति के साथ जो उन्हें लोकसभा मे बहुमत मिला है उसका सदुपयोग करते हुए भारत जो छोटे-छोटे राज्यो मे विभक्त हो गया है उसे समाप्त करें । केवल पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण चार भारत के महाक्षेत्र बनें । इसके लिए उन्हें शक्ति और बल का प्रयोग करना चाहिये न कि कभी सिखो को खुश करना, कभी मुसलमानो को चाटुकारिता करना । इससे न तो राष्ट्र का कल्याण हो सकता है और न राष्ट्र शक्तिशाली हो सकता है ।

आज आवश्यकता है कि प्रधान मन्त्री सत्य को समझें, विवेक को धारण करें तथा एक गम्भीर गर्जना के साथ राष्ट्र मे फैली बटवारे की प्रवृत्ति को समाप्त करें तभी इतिहास मे वह अमर और चिरजीवी हो सकते है नहीं तो इतिहास के भावी पन्नो पर उन्हें समुचित स्थान न मिल सकेगा ।

श्री शालवाले जी का सँन्यास आश्रम मे प्रवेश

श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले आर्यजगत के एक आदरणीय व्यक्ति हैं । अपने जीवन के ६० वर्षों से अधिक उन्होने आर्यसमाज की सेवा मे लगाये हैं । वह विनम्र है, सहानुभूति मे कुशल हैं परन्तु अन्याय के प्रति लडने मे दृढ हैं । उनका गृहस्थ जीवन सफल रहा । वानप्रस्थ जीवन मे भी घर मे रहते हुए वे पारिवारिक जीवन से निर्लिप्त रहे और अब दिनाक २२ जून १९८६ के दिन के ११ बजे की शुभ वेला मे इस आर्य मनीषी ने अपने वानप्रस्थ जीवन के आभूषण को उतार कर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से सन्यास आश्रम की दीक्षा आर्यसमाज दीवानहाल मे ग्रहण की है तथा नवीन नाम स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

'आर्यमित्र' श्री लाला जी को साधुवाद देता है और प्रभु से प्रार्थना करता है कि आर्यजगत के यह सन्यासी महानतम बनें । समस्त आर्यमित्र परिवार की ओर से नवीन आर्य सन्यासी को भूरि-भूरि साधुवाद ।

–आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सपादक

आर्य्यमित्र

लखनऊ— रविवार २२, २९ जून १९८६ दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

सम्पादकीय

मूलं विहाय सिंचन्ति पत्राणि

विगत पाँच वर्षो से पजाब की समस्या जितना सुलझाई जाती है उतनी ही वह उलझती चली जाती है और केन्द्रीयसत्ता किसी भी दिशा मे अभी तक ऐसा कार्य नहीं कर सकी जिससे पजाब निरापद हो सके। पहले भिण्डरवाल समस्या धीरे-धीरे बढी उसे सुलझाने के लिए स्वर्ण मन्दिर मे सेना गई परन्तु सुलझ न सकी। सिखो को प्रसन्न करने के लिए भू०पू० प्रधान मन्त्री स्व श्रीमती इन्द्रा गाधी ने राष्ट्रपति से लेकर बूटासिह तक को उच्च पदो पर बैठाया परन्तु सिख सन्तुष्ट न हुए। पञ्जाब मे और पञ्जाब से बाहर इगलैण्ड और कनाडा मे खालिस्तानी समर्थक उग्रवादी सिखो के तत्व समर्थ होते गये तथा श्रीमती इन्द्रागाधी के बलिदान से भी कोई समस्या न सुलझी। पजाब मे राज्यपाल का शासन रहा तब भी समस्या जटिल रही और किसी प्रकार से प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी ने सिखो को सन्तुष्ट करने के लिए अकाली दल के नेता स्व० श्री सन्त हरचन्दसिह लोगोवाल से एक समझौता किया जिसके अन्तर्गत चण्डीगढ पञ्जाब को देना तय हुआ कि पञ्जाब के हिन्दी भाषी क्षेत्र हरियाणा को दिये जाय और अकाली दल पजाब मे शान्ति व्यवस्था और सन्तोष पैदा करे, खेद है कि श्री राजीव-लोगोवाल समझोते के हस्ताक्षर की स्याही सूखने भी न पाई थी कि लोगोवाल की भी असन्तुष्ट सिखो ने निर्मम हत्या कर दी। सुरजीत सिह बरनाला अकाली दल के नेता को पगडी बाधकर सामने आये। पञ्जाब मे निर्वाचन हुए। अकाली दल पूर्ण बहुमत से जीता और काग्रेस की लज्जा जनक हार हुई। और यह समझ मे आया कि अकाली दल पञ्जाब मे शान्ति व्यवस्था लायेगा।

पजाब मे काग्रेस की हार और अकाली दल की विजय पर काग्रेस खेमे मे खुशी मनाई गई और यह कहा गया कि अकाली दल की जीत प्रजातन्त्र की जीत है। दस महीने हो गए बरनाला जी मुख्यमन्त्री हैं परन्तु असन्तुष्ट उग्रवादी इस अवधि मे पूर्ण सक्रिय रहे, कितने गुरुद्वारो पर उन्होने अधिकार जमाया और कम से कम बरनाला के शासनकाल मे ही इतने निर्दोष अल्प सख्यक हिदुओ की हत्या हुई जितनी सैनिक कार्यवाही मे उग्रवादियो की नहीं हुई। इसके साथ ही पजाब के चार सम्वेदनशील जनपद, फिरोजपुर, गुरुदासपुर, अमृतसर और कपूरथला से बडी सख्या मे हिन्दुओंका पलायन प्रारम्भ हो गया है तथा हरियाणा के क्षेत्रो मे ये आ रहे है। दस महीनो मे देख लिया गया कि बरनाला के नेतृत्व मे पजाब की पुलिस पूर्णतया असफल रही और इतना ही नहीं भारत के राष्ट्रीय स्तर के नेता श्री अटल बिहारी बाजपेई तथा अन्य उसी स्तर के व्यक्तियो ने यह भी आरोप लगाया है कि बरनाला मन्त्रि-मण्डल के कुछ मन्त्रियो द्वारा उग्रवादियो को सरक्षण दिया जाता है और कुछ उनके कारो पर घूमते भी देखे गये हैं। अत बरनाला, उनकी पुलिस और बरनाला दल के अकालियो का मनोबल गिर चुका है और पजाब के उग्रवादी इन्हे अपना नेता नहीं स्वीकार करते हैं।

अकाली दल दो भागो मे खुलकर बट गया है और छब्बीस अकाली दल के विधायक श्री तोहणा और श्री बादल बरनाला को खुला चैलेन्ज दे रहे है तथा उन पर आरोप है कि उन्होने स्वर्ण मन्दिर मे पुलिस और अर्द्ध सैनिक बलो को भेजा। बरनाला की छबि जनमानस मे धूमिल करने के लिये उन्हें जूते साफ करने तक का प्रायश्चित कराया गया लेकिन पजाब की स्थिति नहीं सुधर सकी और प्रतिदिन हत्याओ की अमानवीय घटनायें हो रही हैं। केन्द्रीय सरकार इस निष्कर्ष पर पहुची कि सरदार चण्डीगढ़ पजाब को दे देने से समस्या सुलझ जायेगी अत निश्चय किया गया कि दिनाक २१ जून १९८६ को चण्डीगढ़ पजाबको विधिवत सौंप दिया जाय। पजाबके सम्बन्ध मे मैथ्यू आयोग की रिपोर्ट विफल रहा तथा हरियाणा को मिलने वाला हिन्दी भाषी क्षेत्र फजालिका और अबोहर की समस्या अधर मे लटक कर रह गई। न्याय मूर्ति श्री वैंकेट रमैया की रिपोर्ट भी सामने आ गई जिसे पजाब और हरियाणा को मानने के लिये बाध्य किया गया है और चण्डीगढ़ के बदले हरियाणा को फाजलिका और अबोहर नहीं मिलेंगे पटियाला जिले के कुछ गाव मिलेंगे। आयोग की यह रिपोर्ट दोनो प्रान्तो को स्वीकार नहीं है और हरियाणा का विद्रोह तो इसी से प्रकट हो गया कि दो ही घण्टे के अन्दर श्री भजनलाल को पदच्युत करना पडा और बशीलाल को नये आदेशो के साथ मुख्यमन्त्री बनना पडा।

हरियाणा को पूर्ण रूप से दबाकर वहा के विरोध की भावना को कुचलकर यदि चण्डीगढ़ पजाबको दे दिया जाय तो क्या इससे स्थिति सुधर जायेगी? तभी कहावत चरितार्थ होती है कि "मूलजड को न सींच कर दुराग्रही व्यक्ति पत्तों का सिचन करते हैं। पजाब की मूल समस्या है पाकिस्तान से मिले हुए जो चार सम्वेदन शील जिले हैं उनसे उग्र-वादियों को पाकिस्तान से प्रशिक्षण और अस्त्र शास्त्र प्राप्त होते हैं तथा वह आतक ओर अत्याचार का वातावरण बनाकर सरलतासे पाकि-स्तानी सीमा मे प्रवेश कर जाते हैं तथा इन्हा जिलो मे पाकिस्तान और पजाब के बीच मे भयकर रूप से तस्करी होती है। वहा का अपराधी तत्व पुलिस की निष्फल कार्यवाइयो से प्रसन्न है। आय जनता तथा अन्य व्यक्तियो का इन क्षेत्र मे भी निरीक्षण हुआ उन सबका एक मत है कि यह जिले सेना के सुपुर्द किए जाय तभी उग्रवादी गतिविधिया कम हो सकती हैं।

भारत सरकार पार्टी का हित, व्यक्तियो का हित और गलत रीति से की गई घोषणाओ और समझौते का मोह छोडकर मूल तत्व को खोजे और उन व्यक्तियोसे समझौता ओर शाति की बात करें जिनके हाथ मे सिखो की बागडोर है। केवल कागजी रिपोर्ट पर पजाब की समस्या नहीं सुलझ सकती। केन्द्रीय शासन विगत दस महीने मे पजाब मे तीन –राज्यपाल बदल चुकी है। स्थिति वैसी ही है। उग्रवादी जिनके प्रभाव मे है उन नेताओ को या तो विश्वास मे लिया जाय अथवा उन्हें निरकुशता से दमन किया जाय। बरनाला की स्थित गिर रही है। जो अकाली दल बिखर गया है उसके साथ किये गये समझौते व्यर्थ है।

इस समय पजाब की जो स्थिति है वह सबके सामने है। अत केन्द्रीय सरकार अब उपेक्षा का कार्य छोड कर देश के उच्चकोटि के राष्ट्रीय नेताओ की एक समिति बनाकर उनके द्वारा पजाब की सम-स्याओं को हल करने का प्रयास करें। काग्रेस के बलबूते को बात नहीं है कि वह अकेले समस्या का समाधान कर सके अत आर्य समाज व ऐसे नेताओ की भी सेवायें ली जाय जिनका वहा के हिन्दुओ पर विश्वास है।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०

विश्व मानव परिषद् (रा० म०) लखनऊ

के सरक्षण मे स्थानीय राज्य सूचना केन्द्र उत्तर प्रदेश हजरतगंज के प्रेम चन्द कक्ष मे दिनाक ३० जून एव १ जूलाई को प्रतिदिन साय ७ बजे से भारतीय नव-जागरण का पुनर्मूल्याकन" विषय पर एक द्विदिवसीय विद्वद्गोष्ठी का आयोजन किया गया है। सगोष्ठी मे उच्चकोटि के विचारक एवं दार्शनिक भाग ले रहे हैं।

जयदेव शर्मा महामन्त्री

किधर जा रहा है अपना भारत ?

(श्री मन्तोष 'कणर')

मुस्लिम महिला (तलाक अधिकार संरक्षण) विधेयक १९८६ संसद ने पारित कर दिया। लोगो का कहना है कि सरकार कठमुल्लाओ के आगे झुक गई। पर सरकार भी क्या करे ? उसे तो मुसलमानो की चिन्ता है। राष्ट्र की पहचान भले ही विलुप्त हो जाए मुसलमानो की पहचान रहनी चाहिए।

हर न्यायोचित माग का विरोध करना और राष्ट्र विरोधी मागो के समक्ष घुटन टेकना तो इनका स्वभाव बन चुका है। झुकने की एक लम्बी परम्परा है। भारत विभाजन के बाद कुछ मनचलो ने कह दिया– हम विधानसभा मे हिन्दी मे शपथ न लेकर उर्दू मे लेगे। इस पर सरकार के प्रतिनिधियों ने कहा– अपनी भाषा मे शपथ लेने मे कोई हानि नही है।

अंग्रेजी मे शपथ ले सकते है हिन्दी मे नहीं। अपनी राष्ट्र भाषा हिन्दी मे शपथ क्यों नही लोगे पूछने का साहस निर्णय जनो मे नही था।

केरल मे कुछ सरफिरो ने योजनाबद्ध ढग से दगा कर दिया। हिन्दू आस्थाओ के मन्दिर तोड दिए। कुछ गाव इधर-उधर कर मुस्लिम बहुल जिला बना दिया। जब चर्चा चली तो केन्द्र सरकार ने बडी सहजता से कह दिया–मुस्लिम बहुल जिला बनाना कोई बुरी बात नही है क्योंकि यह मुसलमानो का निजी मामला है।

सब मामले निजी है इस राष्ट्र का अपना कोई मामला ही नही है !

बम्बई के मुसलमान अड गये– हम बन्दे मातरम् नहीं गायेंगे, यह इस्लाम के विरुद्ध है। उत्तेजित सदन में मन्त्री महोदय उठकर खड हुए और बोले– आप किसी को वन्दे मातरम्' गाने को विवश नही कर सकते।

जिस वन्दे मातरम् को गाने पर हमारे स्वतन्त्रता सेनानियो ने ब्रिटिश पुलिस की लाठिया और गोलिया खाई हसते हसते फासी के फन्दे चूमे उसे ये नही गायेंगे क्योंकि इस्लाम के विरुद्ध है।

इस राष्ट्र के विरुद्ध कुछ नही है। 'बन्दे मातरम्' से सम्बद्ध अतीत की घटनाए आज भी राष्ट्रवासियो मे रोमाच उत्पन्न कर देती है, लेकिन जिनका खून ही पानी हो चुका हो, उनमे आशा भी क्या की जा सकती है ?

पचपन साल की अधेड पत्नी को किसी अन्य महिला के प्रेमपाश मे बधा उसका पति घर से निकाल कर सडक पर खडा कर देता है। दमे की बीमार भारतीय नारी अपने देश की अदालत मे न्याय मागती है। सर्वोच्च न्यायालय भारतीय अपराध प्रक्रिया सहिता की धारा १२५ के अन्तगत इद्दत की मुद्दत के बाद भी उसके भूतपूर्व समर्थ पति को गुजारा भत्ता देने का निर्देश देता है। मुल्लाओ के तेवर बदल जाते है। डरा धमका कर बुर्केवालियो के जलूस निकलवाए जाते हैं। 'इस्लाम खतरे मे है' का हल्ला मचता है। माग उठती है-- भारतीय अपराध प्रक्रिया सहिता की धारा १२५ मुसलमानों पर लागू नही होनी चाहिए क्योकि यह शरीयत के खिलाफ है।

२१ वीं सदी मे जाने वाली सरकार झुकती है शताब्दियो से मुस्लिम पुरुषो की बर्बरता की शिकार बुर्केवालिया उनके रहम-ओ-करम पर ही छोड दी जाती है।

जब भी जी चाहे घर की जीनत को खडा कर दो चौखट के बाहर और ले आओ किसी खूब सूरत बाला को ! कौन भारत का कानून तुम पर लागू होता है ! यदि कोई लागू करना चाहे तो बगावत कर दो। सडको पर निकल आओ। सरकार झुक जायगी। उसे तुम्हारी पहचान की तुमसे ज्यादा चिन्ता है !

दुबलो को बलवानो के आगे छोड दिया गया है। शान्तिप्रिय राष्ट्र भक्तो को राष्ट्रद्रोही आतकवादियो की स्टेनगनो के सामने कर दिया गया है। राष्ट्रीय एकता पत्ता पत्ता हो रही है। शासन खामोश है। यह भूखण्ड भले ही खण्ड-खण्ड हो जाए सत्ता की कुर्सियो पर दण्ड मिलनी चाहिए।

राष्ट्र बल बुद्धि और वीर्य मे क्षीण होता हो तो हो जाए क्षय रोग महामारी बन जाए कोई चिन्ता नही गाय कटती रहेगी गोवश घटता रहेगा। नहीं तो मुसलमानो की आस्थाओ पर चोट पहुँचेगी।

यदि किसी परीक्षा मे पूछा जाए – पृथ्वी गोल है या चपटी, और कोई मुस्लिम छात्र उत्तर लिख दे — चपटी तो क्या परीक्षक उसके अक काट सकेगा ? नही काट सकता। काटेगा तो हगामा मच जाएगा। उसको धमकाया जाएगा। खून-खच्चर होगा। 'मुस्लिम भूगोल' अलग है।

'हमने जमीन को फैलाया। उसमे पहाड गाड दिए। ताकि जमीन तुम्हे लेकर किसी तरफ झुक न पावे।'

क्या लोकसभा मे यह विधेयक भी आयेगा कि दुनिया का जुगराफिया (भूगोल, मुसलमान विद्यार्थियों पर लागू नहीं होगा ?

राष्ट्र के नेता झुकने के आदी हैं। गाधी जी, जिन्ना के आगे झुकने रहे अन्तत पाकिस्तान भेंट कर दिया। आज भी घुटने टेकने की परम्परा जारी है। न अतीत से शिक्षा न भविष्य की चिन्ता।

इस्लाम की व्यवस्थाओ पर आज प्रश्न चिह्न लग रहे हैं। लगने रहेगे। उन पर विचार करना प्रत्येक विवेकशील मुसलमान का कर्त्तव्य है।

खुद मिया जी चार-चार शादी कर ले। मन चाहे रखैलें भी रख ले। कयामत के बाद बहिश्त मे खूबसूरत गिलमे व हूरें भी सुरक्षित हैं। और बेचारी बीबिया ! तलाक तलाक बस फिर सडक पर ! इन अबलाओं को न यहा चैन है न मरने के बाद ! जिन्दा पर बच्चे पैदा करने की मशीन मात्र हैं। बहिश्त की खुदा जाने ! वहा तो सारा प्रबन्ध मियाँ जी के लिए है।

अब सरकार ने व्यवस्था कर दी है। तलाक के बाद यदि किसी मुस्लिम महिला की पुन शादी न हो पाए तो उसके भरण पोषण का दायित्व उसके मायके वालो का होगा। यदि वे असमर्थ हो तो फिर 'वक्फ बोर्ड' है। लेकिन वक्फबोर्ड मे पुरुष ही पुरुष हैं। महिलाओं को वहाँ भी स्थान नही है। क्या न्याय किया है ? चित भी मेरी पट्ट भी मेरी।

आज मुसलमानो के लिए अलग कानून बन रहे हैं। सिख मांग कर रहे हैं जैनी, ईसाई पारसी आदि भी मुह खोलने लगें तो क्या होगा ?

अभी अलग विधान बन रहे हैं। कल को अलग न्यायालय बनेंगे। मुसलमान कहेगे वर्तमान न्यायाधीश इस्लामी कानून को नही समझते। हमारा जज अलग होना चाहिए। अदालतें अलग होनी चाहिए।

वे काफिरो के न्यायालयो मे नही जायेंगे। मुस्लिम पुलिस, मुस्लिम पी० ए सी जैसी मागें उठ रही हैं। उन्हे मुस्लिम भाषा मे फैसले चाहिए। उत्तर प्रदेश के किसी मुस्लिम वकील ने हाकिम परगना के यहा उर्दू लिपि मे प्रार्थना पत्र दिया। उन्होंने कहा — इसके साथ हिन्दी का अनुवाद भी लगा दीजिए।

बात न्याय सगत थी लेकिन उसने मुसलमानो को भडका दिया। उन्होंने सभा करके निश्चय किया — आज से हम अपना सब काम केवल उर्दू मे ही किया करेगे।

यह सब झगडे की बातें हैं। मुरादाबाद को हवा मिल रही है कल को अलग देश की मांग उठेगी। अलग झण्डा अलग राष्ट्रपति !

ऐ राष्ट्र के कर्णधारो आप चारो ओर से शत्रुओं से घिरे खण्डित राष्ट्र का नेतृत्व कर रहे हो ! बहुत टेढा काम है, राजधर्म के सिद्धान्तो का अध्ययन करो इतिहास के पन्नो को पलटो। अतीत की भूलों को न दोहराओ। लेबनान इसी आग मे झुलस रहा है, कृपा कर भारत को मत झोंको।

सबके लिए समान विधान ! एक राष्ट्र एक प्रजा ! न कोई हिंदू न कोई मुसलमान ! भेद की दीवारो को साहस से गिरा दो। अलगाव के पौधे उखाड कर फेंक दो। आर्य समाज भारत माँ की अस्मिता की रक्षा अपना सर्वस्व लुटा कर भी करेगा। जब तक महर्षि दयानन्द के शिष्य इस धरनी पर हैं अविद्या अन्याय और अभाव के विरुद्ध सतत सघर्ष जारी रहेगा।

हिन्दू शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी की अवहेलना

(श्री जगन्नाथ, सयोजक राजभाषा कार्य केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, एक्स वाई-६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-११००२३)

जब आजादी के लिए सघष किया जा रहा था और सरकारी शिक्षण सस्थाओ का बहिष्कार किया जा रहा था, उस युग मे आर्य समाजो, सनातन धर्म सस्थाओ और अन्य धार्मिक सस्थाओ को ओर से स्थान-स्थान पर शिक्षण सस्थायें खोली जा रही थी जोकि विद्यार्थियो मे राष्ट्रीयता देश प्रेम तथा सस्कृति और हिन्दी के प्रति अनुराग पैदा करती थी। ऐसी सस्थाओं मे वाराणसी हिन्दू विश्व विद्यालय और डी ए वी कालेजो तथा स्कूलो का विशेष स्थान था। किन्तु बडे आश्चर्य की बात है कि अब इन हिन्दू शिक्षण सस्थाओ द्वारा अग्रेजोको अनावश्यक रूप से अधिक महत्व दिया जा रहा है। हाल ही मे भारत सरकार के एक उच्च अधिकारी ने नई दिल्ली के एक डी ए वी स्कूल के वार्षिक उत्सव मे भाग लिया था और उन्होने स्कूल के प्रिसिपल को जो पत्र लिखा है उसके आवश्यक अश नीचे दिये जा रहे हैं —

आपके वार्षिक उत्सव का कार्यक्रम जिस सुव्यवस्थित और सुचारु रूप से कार्यान्वित किया गया था वह न केवल प्रभावशाली था अपितु प्रशसनीय भी था। आपके स्कूल की गतिविधियो का ब्यौरा सुनने के बाद यह भास हुआ कि आपके सरक्षण मे आपके विद्यालय ने बहुत ही उच्च कोटि का निष्पादन का परिचय दिया है।

परन्तु यह बात जो मुझे अखरी वह थी समारोह के सचालन का माध्यम जो अग्रेजी मे हो रहा था। इसने पूर्व आपका निमन्त्रण जो अग्रेजी मे छपा हुआ था, उसे देखकर भी मुझे अचम्भा सा हुआ। मेरे विचार से यदि समारोह का सचालन हिन्दी के माध्यम से होता तो समारोह की गरिमा अधिक बढता। मै स्वय डी ए वी स्कूल का विद्यार्थी रहा हू और इन सस्थाओ का नाम लेते ही राष्ट्रीयता देश की एकता और भारतीयता की झलक सामने आ जाती है। यह भी सर्वविदित है कि महर्षि दयानन्द जी ने हजारो पुस्तको का अध्ययन करने के पश्चात जो अपना सदेश 'सत्यार्थ प्रकाश' मे दिया वह हिन्दी के माध्यम से ही दिया। यह भी किसी से भूला हुआ नहीं है कि उत्तरी भारत मे और विशेषकर अविभाजित पजाब मे आर्य समाज एव डी ए वी सस्थानो ने शिक्षा के सम्बन्ध मे जो भी कार्य किया था उसी के फलस्वरूप हिन्दी को इस क्षेत्र मे गौरवमय स्थान प्राप्त हो सका था।

मुझे नहीं मालूम कि डी ए वी सस्थान ने किस आशय से माडल स्कूलो की स्थापना की है। सभवत शिक्षा के क्षेत्र मे एक नई दिशा देने हेतु परन्तु मेरा यह भी विश्वास है कि इस दिशा-निर्धारण मे जो सस्थान के मूलभूत आधार है— जैसे कि राष्ट्रीयता, देशप्रेम, राजभाषा के प्रति अनुराग इत्यादि के प्रति शिथिलता नहीं आएगी। मेरा यह भी विश्वास है कि माडल स्कूल की स्थापना पब्लिक स्कूल की पद्धति को ग्रहण नहीं करेगी क्योकि आजकल के पब्लिक स्कूल न केवल विवाद का विषय है अपितु राष्ट्रीयता की कसौटी पर भी खरे नहीं उतरते।

हमारी राजनैतिक स्वतन्त्रता, आर्थिक उन्नति और सामाजिक परिवर्तन निष्फल रहेंगे जब तक कि हम मानसिक दासता से ऊपर नहीं उठेंगे। इस मानसिक दासता का कारण है हमारी अग्रेजियत मनोवृत्ति। हर भारतीय का स्वाभिमान इस बात का तकाजा करता है कि वह स्वेच्छा से सिर ऊचा करके बैठ सके। अभीतक अन्तर्राष्ट्रीयमच पर ही नहीं अपितु राष्ट्रीयमच पर अधिकतर अग्रेजी के माध्यमको ही अपनाया जा रहा है। परन्तु अब यह आभास उच्च क्षेत्रो मे भी होने लगा है कि हमें अपने कार्यकलापो मे अपनी भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

यह कहना वास्तविकता की अवहेलना होगी कि हिन्दी मे कार्य-कलाप करने की क्षमता नहीं। अब तो यात्रिक उपकरण भी द्विभाषीरूप मे देश मे ही उपलब्ध होने लगे हैं और उनका प्रयोग भी हो रहा है। निकट भविष्यमें दूर सचार व्यवस्था भी द्विभाषी रूपमें ही होने वाली है यह भी हमारा विश्वास है कि हमें अग्रेजी के प्रति कोई द्वेषभाव नहीं रखना चाहिए क्योकि यह भाषा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की भाषा है और अन्तर्राष्ट्रीय मच से सम्पर्क रखने के कारण इससे हम दूर नहीं रह सकते। परन्तु प्रश्न हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपना उचित स्थान ग्रहण करने का है जो न केवल एक सवैधानिक प्राविधान है बल्कि हर भारतीय के स्वाभिमान और देश की एकता से जुडा हुआ प्रश्न है।

उक्त विचारोमे हमें अपनी ओर से कुछ और नहीं जोडना है। आर्य समाज सरीखी सस्थाओ से भी हिन्दी के पोषण की अपील करनी पडे यह चिन्ताजक स्थिति है। पाठको से केवल यही निवेदन है कि केन्द्रीय सरकार के एक उच्च अधिकारी के उपरोक्त विचारो पर वे गम्भीरतासे मनन करेंगे और अपने प्रभावका प्रयोग करते हुए ऐसा प्रयत्न करेंगे जिस से कि हिन्दू सस्थाए अग्रेजी के एजेण्ट बनना बन्द करके वास्तविक रूप में राष्ट्रीयता तथा भारतीयता की पोषक सस्थाए बन जायेंगी।

राष्ट्रभाषा की चेतना जगायें

सस्कृति तब तक गूगी रहती है, जब तक राष्ट्र की अपनी वाणी नहीं होती। राजनीतिक पराधीनता की हमारी हथकडी-बेडी जरूर कटी है, किन्तु अग्रेजी और अग्रेजियत के रूप में हमारे मनोजगत में जो दासता के चिह्न विद्यमान हैं, उन्होने हमें निष्क्रिय बना रखा है। भाषा परिधान मात्र नहीं, राष्ट्र का व्यक्तित्व है। जीवन के हरक्षेत्र को सम्हालने में समर्थ होने के कारण हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूपमें स्वीकार किया गया है। केवल सविधान के लिख देने मात्र से यह बात पूरी नही हो पाती, इसे राष्ट्र के जीवन में प्रतिष्ठित करना होगा, अन्यथा स्वतन्त्रता का क्या मूल्य है?

—महादेवी वर्मा

विश्वशान्ति महायज्ञ

श्री वैद्य वासुदेव आर्य वानप्रस्थी व्यवस्थापक वैदिक योगाश्रम गणेशपुर मेरठ के असीम सहयोग से ऊजड खेडा पक्का कुआ (खेडी) में विश्व शान्ति यज्ञ का आयोजन दिनाक १ जुलाई से ११ जुलाई ८६ तक सम्पन्न होगा समस्त आर्यजनो से अनुरोध है कि इस महापर्व में सम्मिलित होकर वैदिकधर्म का झण्डा ऊचा करें। मार्ग—मेरठ मवाना हस्तिनापुर नियत स्थान ऊजड खेडा (महमूदपुर खेड़ी) मेरठ।

—सम्वाददाता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि मण्डल द्वारा अपने पंजाब के दौरे से लौटने पर प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाँधी को अँग्रेजी में लिखे गए पत्र का हिन्दी रूपान्तर

दिनांक २१ मई, १९८६

प्रिय श्री राजीव गाँधी,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक अध्ययन दल हाल ही मे पजाब प्रान्त का १५ मई, १९८६ से २१ मई, ८६ तक दौरा करके वापिस लौटा है। इस दल मे भारत के विभिन्न क्षेत्रो के प्रतिनिधि नेता सम्मिलित थे। यह दल सभी प्रमुख नगरो और उपद्रवग्रस्त देहाती क्षत्र मे गया और वहाँ के उद्योगपतियो, व्यापारियो और कृषको से मिला था, जो पिछले कुछ समय से पजाब मे हो रही हिंसा का शिकार हुए हैं। कई स्थानो पर इस दल ने जनसभाओ को भी सम्बोधित किया।

इस दल की यात्रा का मुख्य उद्देश्य पजाब की सही स्थिति का पता लगाना था और वहाँ की जनता को इस तथ्य से अवगत कराना था कि इस समय देश की सुरक्षा और अखण्डता को खतरा है। उन सब का मुख्य कर्तव्य है और इसके लिये उन्हें साम्प्रदायिक सद्भाव कायम रखकर उन शक्तियो से लडना है, जो देश को विघटित करके उसे कमजोर बनाना चाहते है। दल के वक्ताओ ने अपने भाषण मे उस भय और आतङ्क की भी चर्चा की जो इस समय पजाब के सीमावर्ती क्षेत्रो मे रहने वाले हिन्दुओ मे फैला हुआ है। उन्हें यह धमकियाँ दी जारही हैं कि यदि वे पजाब छोड कर नहीं गये तो मार दिया जायेगा और उनकी स्त्रियो को बेइज्जत किया जायगा आदि।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह उपरोक्त दल परिस्थिति के सन्दर्भ मे आपसे निवेदन करता है कि भारत सरकार पजाब की समस्या पर निम्न तथ्यों को ध्यान मे रखते हुये विचार करके तुरन्त कदम उठावे अन्यथा पजाब की स्थिति और भी अधिक खराब हो सकती है।

१—बरनाला सरकार अपने आपको 'पथ सरकार' कहकर प्रचारित करती है। इस समय पजाब के शासन मुख्यमन्त्री अथवा राज्याध्यक्ष के आदेशों का कोई प्रभाव नहीं है। वहाँ तो केवल सिख ग्रन्थियो और दूसरे पन्थ नेताओ को ही बात मानी जाती है। अकालीतख्त से पजाब पर उन्हीं का शासन है। यह परिस्थिति भारतीय सविधान की मूल भावनाओ के एकदम विपरीत हैं। भारत वर्ष एक धर्म निरपेक्ष राज्य है जहाँ किसी भी धर्म विशेष पर आधारित सरकार का कोई स्थान नही है। सार्वदेशिक सभा का विचार है कि पन्थ सरकार की भावना और कार्य उन खालिस्तान समर्थक तत्वो से अलग नहीं है जो सरे आम राज करेगा खालसा की आवाजें लगा रहे हैं, हिन्दुओ को अब वहाँ विदेशी समझा जा रहा है और इस प्रकार के हालात पैदा किये जा रहे है जिस से उनका पजाब मे रहना असम्भव हो गया।

२—सार्वदेशिक सभा ने अनुभव किया है कि पजाब के हिन्दुओं म बरनाला सरकार के प्रति कोई विश्वास नहीं रह गया है। कानून और व्यस्था बनाये रखने वाला शासनिक तन्त्र अप्रभावी सिद्ध हुआ है जिस का मूल कारण उसमे निष्ठापूर्वक अपना उत्तरदायित्व पूरा करने की इच्छा का अभाव है। बरनाला स्वय जानते है कि उनकी सरकार के बहुत से मन्त्री उग्रवादियो के समर्थक और हित चिन्तक हैं।

३—गत १२ मार्च से २६ मार्च १९८६ तक उग्रवादियो और उनके समर्थक लगभग बीस हजार सिक्खो ने बटाला शहर का घेराव किया था। पास के खोजवाल गांव मे ब्रम्हाण कृषको तथा हिन्दू जमींदारो की हत्या की गई। अमृतसर जिले के पट्टी और तरनतारन कस्बो मे भी बहुत से व्यापारी मारे गये। इन घटनाओ से हिन्दुओं का मनोबल बिल्कुल टूट चुका है। यदि स्थिति पर तुरन्त नियन्त्रण न किया गया तो हिन्दुओ का सामूहिक पलायन कभी भी शुरू हो सकता है। कुछ व्यापारी किसान अपना घर बार छोडकर इस समय तक पंजाब से अन्यत्र चले भी गये हैं।

४—भारत पाकिस्तान सीमा पर तस्करी का धन्धा करने वाले लोग अधिकाँश सिख है जो बडे बडे ट्रांसपोटरो से पैसा प्राप्त करते है। पजाब पुलिस इनमे से अधिकाँश को जानती है। यह पाकिस्तान से पैसा और हथियार भारत मे लाकर उग्रवादियो को देकर उनकी सहायता करते हैं। पुलिस कुछ तो स्वय उस धन्धे मे भागीदार होने के कारण कुछ राजनैतिक दबाव के कारण इन तस्करो के खिलाफ कोई भी कदम उठाने मे डरती है।

५—पिछले चार वर्षों मे पजाब की हिन्दू जनता भयकर हत्याकांडो के दौर से गुजरी है। सार्वदेशिक सभा का यह प्रतिनिधि मण्डल जहाँ-जहाँ भी गया वहाँ के रहने वाले पुरुषो और स्त्रियो ने अत्याचारो की करुण कहानी उसे सुनाई। सबके मुख पर एक प्रश्न था कि इन हत्याओ और अत्याचारो का अन्त होगा भी या नहीं? क्या उन्हें पजाब से निकाल कर किसी अन्य सुरक्षित स्थानो पर भेजने का प्रबन्ध किया जायगा या नही? यह दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि दल के सदस्यो के पास जनता के इन ज्वलन्त प्रश्नो का कोई उत्तर नहीं था।

सार्वदेशिकसभा के शिष्टमण्डल की पंजाब यात्रा

सार्वदेशिक सभा का शिष्ट मण्डल पजाब मे लुधियाना, जालन्धर, अमृतसर, गुरुदासपुर, विभिन्न स्थानो पर जाकर दुखी हिन्दुओं के करुणा जनक हृदय-विदारक विचारो को सुनने गए, प्रतिनिधियो के नाम श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले, श्री रामचन्द्र राव बन्दे मातरम्, श्री कमलजीत चौधरी ससद सदस्य, प्रो० शेरसिह, श्री राजगुरु शर्मा, श्री मनमोहन जी तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, श्री लक्ष्मी चन्द जी, आर्यसमाज दीवानहाल शामिल थे।

पजाब समस्या पर सार्वदेशिक सभा के विचार

सभा दृढ मन्तव्य है कि विदेशो मे विशेष कर इङ्गलैण्ड, अमेरिका, कनाडा आदि देशो मे रहने वाले कुछ महत्वाकाक्षी सिख राजनेताओ ने भारत के अन्दर रहने वाले सिख समुदाय मे यह भ्रांति फैलाने मे सफलता प्राप्त कर ली है कि खालिस्तान की स्थापना सम्भव है। केवल थोडे से बलिदान मे वे अपने इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है। यह तो एक प्रत्यक्ष रहस्य है ही कि पाकिस्तान इस विषय मे खालिस्तान समर्थको और उग्रवादियो को हर तरह की सहायता कर रहा है। सिख युवको को पाकिस्तान मे कमाण्डो ट्रेनिग दी जा रही है जिससे वे भारत मे घुसकर तोडफोड की कार्यवाही कर सकें और इस प्रकार देश मे कानूनी अव्यवस्था फैलावें। विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि इस प्रकार के प्रशिक्षित हजारो सिख नोजवान पाकिस्तान से भारत मे आ चुके है।

बरनाला सरकार मे इस विस्फोटक स्थिति का सामना करने का राजनैतिक साहस नहीं है। उसके बहुत से मन्त्री उग्रवादियो के समर्थक और पृष्ठ पोषक है। यह बरनाला स्वय भी जानते हैं। प्रशासनिक तन्त्र एकदम अप्रभावी और निष्क्रिय सिद्ध हो चुका है। (शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ ५ का शेष)

पँजाब समस्या देश की सुरक्षा की समस्या है कानून और व्यवस्था की नहीं

प्रधानमन्त्री के रूप मे आप शायद यह हमसे अधिक ही जानते होंगे कि पाकिस्तान मे सिखो को भारत मे तोडफोड की कार्रवाई करने आदि के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। उनके द्वारा पजाब मे खासकर सीमा से लगने वाले फिरोजपुर, अमृतसर और गुरुदासपुर जिलो मे जो आतङ्क फैलाया जा रहा है, उसके कारण वहाँ के हिन्दू किसी भी समय सामूहिक रूप से पलायन कर सकने हैं। सोमा पार पाकिस्तानी सेना की गतिविधियाँ इन दिनो तेज होती जा रही हैं जैसा कि १९६२ मे चीन के भारत पर आक्रमण से पहले 'नेफा' क्षेत्र मे थो। उस समय कमाण्ड इन चीफ जनरल थिम्मैया और जनरल थोरट को सामयिक चेतावनी पर किसी ने ध्यान नहीं दिया और भारत को पराजय का अपमान झेलना पडा।

सार्वदेशिक सभा अनुभव करती है कि पजाब की स्थिति अब केवल कानून और व्यवस्था का प्रश्न न रहकर देश की सुरक्षा का प्रश्न बनगई है और इसका एकमात्र हल यही है कि सीमावर्ती क्षेत्र तुरन्त सेना को सौंप दिये जायें। इस दल ने अपनी पजाब यात्रा के दौरान हजारो सिख नौजवानो को पीली पगडी पहने हुए देखा जो इस बात का द्योतक है कि उन्होंने 'अमृतधारी' बनकर खालिस्तान के लिये अपनी जान तक कुर्बान करने का वचन दे दिया है। पजाब के विभिन्न नगरो के गुरुद्वारो मे १५ से २५ वर्ष तक के सिख युवको को निरन्तर अमृतधारी बनाया जा रहा है जिसकी सख्या प्रतिदिन बढती ही जा रही है। जैसे ही पाकिस्तान से लगने वाले क्षेत्र हिन्दुओं से खाली हो जायेंगे, यह अमृतधारी युवक पाकिस्तानी सेना की सहायता से उस पर कब्जा कर लेंगे। इससे पूर्व की इस प्रकार की स्थिति पैदा हो, सभा का अनुरोध है कि यह तीनो जिले अविलम्ब सेना के हवाले कर दिये जायें। इस विषय मे देर करना देश के लिये घातक सिद्ध हो सकता है।

सार्वदेशिक सभा इस समस्या को हल करने मे भारत सरकार की सहायता करने के लिये तैयार है। यह इतना ही चाहती है कि इस विषय मे तुरन्त कार्यवाही की जाय अन्यथा पजाब मे हिन्दुओं का सामूहिक पलायन देश के अन्य क्षेत्रो मे भी हिन्दू सिख समस्या पैदाकर सकता है और साम्प्रदायिक झगडे हो सकने है, जिससे देश की आन्तरिक सुरक्षा और एकता खण्डित हो सकती है।

भवदीय—

अधोहस्ताक्षरी

१—रामगोपाल शालवाले, प्रधान
२—रामचन्द्रराव वन्देमातरम् उप प्रधान
३—कमलजीत चौधरी, ससद सदस्य
४—प्रो० शेरसिंह, प्रधान, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा
५—राजगुरु शर्मा, प्रधान मध्यप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा
६—श्री० किशनलाल, कोषाध्यक्ष आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा
७—मनमोहन तिवारी, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
८—लक्ष्मी चन्द, आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली

निर्वाचन

आर्यसमाज बस्ती

प्रधान—श्री हुबराज आर्य
मन्त्री—श्री ज्ञानेश वर्मा
कोषा०—श्री जीवन प्रकाश आर्य

आर्यसमाज कमालगज (फरुखाबाद)

प्रधान—श्री प्रो० भगवानप्रकाश अग्रवाल
मन्त्री—श्री भगवानदास आर्य
कोषा०—श्री रामस्वरूप वर्मा

श्री क्षेमचन्द्र जी 'सुमन' सम्मानित

भारत सरकार के 'मानव ससाधन विकास मन्त्रालय' के सस्कृति विभाग ने दस खण्डो मे प्रकाश्य 'दिवगत हिन्दी-सेवी' नामक विशाल सन्दर्भ-ग्रन्थ के ख्याति-प्राप्त लेखक आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' को साहित्य के क्षेत्र मे किये गए विशिष्ट योगदान के लिए अपनी 'अमेरिटस फैलोशिप' देकर सम्मानित किया है।

स्मरणीय है कि मन्त्रालय की इस योजना के अन्तर्गत नृत्य, सगीत, नाटक, चित्रकला, मूर्तिकला और साहित्य के क्षेत्र मे कार्य करने वाले जिन १० प्रमुखभावो को इस वर्ष यह सम्मान दिया गया है उनमे साहित्य क्षेत्र का सम्मान अकेले सुमन जी को ही प्राप्त हुआ है। इस प्रसग मे प्रत्येक सम्मानित व्यक्ति को २ वर्ष तक २ हजार रुपये प्रति मास प्रदान किये जाएगे।

सुमन जी के उक्त ग्रन्थ के दो खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं और आज कल वे उसके आगामी खण्डो को सामग्री तैयार करने मे जुटे हुए हैं।

'आर्यमित्र' सुमन जी को इस सम्मान हेतु साधुवाद देता है सुमनजी का आर्यमित्र से निकट सम्बन्ध हैं आप पत्र के सम्पादक रह चुके हैं। आर्यमित्र परिवार को अपार हर्ष है।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

—आर्य समाज लहेरिया सराय के महामन्त्री श्री ध्रुवनारायण आर्य जी की पूज्यनीया माता का दिनाक २० अप्रैल ८६ को प्रात काल ५ बजे देहावसान हो गया।

दिवगत माता जी बडी ही धर्म परायण एव व्यवहार कुशल गृहिणी थी।

अत यह समाज दिवगत माता जी की आत्मा को चिरशाति तथा शोक सतप्त परिवार को वेदना सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिये परमपिता परमेश्वर से दो मिनट मौन रहकर प्राथना करता है।

गणेश साह आर्य

आर्य जगत

१— श्री महीपालसिह निवासी कुचरपुर अग्रग. कायशाल सदस्य ने अपनी पूज्य माता जी की मृत्यु के बाद सस्कार बहुत अच्छे ढग से किया और दस हजार रुपये आय समाज पहासू को दिये जिसकी ब्याज से दैनिक यज्ञ का खच हो। आय समाज ने पूज्य माता जी के नाम से स्थिर निधी पञ्जाब बक मे कर दी जिससे त्रैमासिक ब्याज मिल जाता है। दैनिक यज्ञ मे अच्छा सहयोग हो जाता है।

सतीष कुमार मन्त्री

—आय समाज बिहारी गढ़ का तृतीय वार्षिक उत्सव दिनाक २० मई से २२ मई ८६ के मध्य हर्षोल्लास के साथ भव्य वातावरण मे सम्पन्न हुआ। उत्सव मे आर्य जगत के भजनोपदेशक सम्मलित हुए—

मन्त्री

—आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर मे दिनाक २३ से २५ मई ८६ तक महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी का आयोजन परेड मैदान मे धूम-धाम और हर्षोल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ तथा दिनाक २४ मई ८६ को भव्य शोभा यात्रा का आयोजन हुआ। इस समारोह, मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा० श्री सत्यप्रकाश जी सरस्वती सावदेशिक सभा दिल्ली के प्रधान श्रद्धेय श्री लाला रामगोपाल जी शाल वाले तथा अनेकानेक विद्वान एव वक्ता सम्मलित हुए।

राजेन्द्र गुप्ता महामन्त्री

आर्य जगत

—आय समाज के भूतपूर्व मन्त्री सुदर्शनसिह आय के चचेरे भाई सुरेश्वर सिह की कन्या रीनूकुमारी का विवाह गत २५ मई को बलिया जनपद मे जेल्हवा ग्राम निवासी श्री हरेरामसिह के पुत्र सुनील-कुमार के साथ सम्पन्न हुआ।

सम्वाददाता

—मगराला मुरादाबाद के चिकित्साधिकारी डा ओमप्रकाश शर्मा के पौत्र का नामकरण सस्कार सविता सदन गवाँ [बदायूँ] मे श्री प रमेशचन्द्र जी शास्त्री एव श्री स्वामी प्रज्ञादेव जी ने वैदिक पद्धति से कराया, नाम लोकेश रक्खा गया।

ओ३मप्रकाश

—आर्य समाज वार्ड १७ गोविन्द नगर का त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव गत दिवस स्थानीय डी० एम० यू० इण्टर कालेज मे आय समाज के प्रधान श्री श्याम प्रकाश की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

समारोह मे धारा ३७० समाप्त करने की माग के साथ ही देश मे एक समान नागरिक न्याय सहिता बना कर लागू करने की माग की गई।

सरकार से नई शिक्षा नीति को देवनागरी लिपि मे, सम्पूर्ण देश मे एक समान रूप से एव वेदानुकूल लागू किए जाने की भी माग की गई। अन्तिम दिन "दहेज-दानव" नाटक का प्रभावशाली मचन किया गया।

मन्त्री आय समाज

—पुष्पाजली एन्कलेव प्रीतमपुरा दिल्ली मे 'आय समाज मन्दिर समुदाय भवन" की स्थापना दिनाक १५ अप्रैल ८६ को श्री विद्या-प्रकाश वर्मा जी के असीम सहयोग से तथा पूज्य स्व० श्री स्वरूपानन्द जी के करकमलो द्वारा की गई समाज के निम्न पदाधिकारी चुने गये—प्रधान श्री विद्या सागर जी, मन्त्री श्री विद्या प्रकाश वर्मा, कोषाध्यक्ष, श्री बी० एस० कालडा।

—सम्वाददाता

आय समाज शोहरत गढ (बस्ती) का ३१ वा वार्षिकोत्सव दिनाक १३ मई ८६ को हष एव उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रमुख वक्ता श्री पडित जयप्रकाश जी आय ने भारतीय सस्कृति की रक्षा एव देश की एकता और अखडता विषय पर अपना सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

मन्त्री आर्य समाज

—आर्य समाज नैनीताल का ११२ वा वार्षिकोत्सव दिनाक २० से २७ मई तक समारोह पूर्वक मनाया गया। मन्त्री आर्य समाज

—आय समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का १७ वा वार्षिकोत्सव दि० ९ मई से ११ मई ८६ तक हर्ष एव उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य जगत के प्रमुख विद्वान एव वक्ता सम्मलित हुए उत्सव प्रभावशाली एव सफल रहा।

मन्त्री आय समाज

—आर्य समाज चोपन (मिर्जापुर) का वार्षिकोत्सव दि० १६ अप्रैल से १८ अप्रैल ८६ तक महान उत्साह एव उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। आय जगत के प्रमुख विद्वान एव वक्ता सम्मलित हुए। मन्त्री आयसमाज

—जनपद हमीरपुर (बुन्देल खण्ड) मे श्री पतिराखन जी आर्य वानप्रस्थी के माध्यम से सभा भजनोपदेशक श्री सीताराम आय एव श्री जगतवीर जी सनेही ने दि० १ मई से २५ मई ८६ तक व्यापक रूप से वैदिक धर्म का प्रचार किया।

सम्वाददाता

—आय समाज मण्डी बास मुरादाबाद मे दि० १ जून ८६ को श्री वीर सावरकर जी का १०४ वा जन्म दिवस सोल्लास मनाया गया तथा श्री सतीश चन्द्र जी गुप्त एडवोकेट ने वीर सावर कर जी के क्रातिकारी जीवन का व्यापक रूप से चित्रण किया। अम्बरीष कुमार त्यागी

प्रस्ताव

—नगर आय समाज, गगा-प्रसाद रोड रकाबगज, लखनऊ की दिनाक २५ मई ८६ की साधारण सभा ने उ प्र सरकार मे कायरत एक आई ए एस अधिकारी श्री धर्मसिह रावत द्वारा सरकारी कार्यालयो मे उच्च स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार, अनाचार आदि के विरुद्ध जारी अनशन एव उनके साहसिक काय की भूरि-भूरि प्रशसा की है वह ईश्वर से उनके मनोबल व आत्मविश्वास मे वृद्धि की प्रार्थना करती है।

रेवती रमन, एडवोकेट मन्त्री

श्री स्वामी मिथिलेश जी की हत्या

दुःख पूर्ण समाचार है कि गुरुकुल (देवरी प्रह्लादपुर) सोरो एटा के संस्थापक श्री स्वामी मिथिलेश जी को दिनांक २५ मई ८६ को गोली मार कर हत्या कर दी गई, पुलिस तहकीकात कर रही है। श्री स्वामी जी का अन्त्येष्टि संस्कार दिनांक २६ मई ८६ को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

प्रेमचन्द्र शर्मा प्रबन्धक

शोक समाचार

—अल्मोडा। आर्य समाज मन्दिर ताडीखेत मे सर्व स्वर्गीय विजय आर्य एडवोकेट २६ वर्ष (पुत्र—देवीदास जी आर्य, कानपुर), सुन्दर दास ८२ वर्ष (आर्यसमाज सोसामऊ कानपुर) और माता सरस्वती ८६ वर्ष (डा० सुखदेव जी एन बी बी एस का मातृ)को दिवगत आत्माओ की शान्ति तथा परिवार जनो के धैर्य हेतु शान्ति यज्ञ प० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य मे स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। —मन्त्री आर्य समाज

—अल्मोडा १२ मई १९८६ को आर्य समाज मन्दिर ताडीखेत मे "स्वर्गीय तेर्नासिग शाति यज्ञ" प० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य से महात्मा भक्तमुनि के सयोजन मे हुआ।

मन्त्री आर्य समाज

—तहसील आर्य सभा ठाकुर द्वारा का यह अधिवेशन आर्य समाज टाडा अफजल एव जनपद के सुयोग्य कार्यकर्त्ता श्री गनपत सिह जी की आकस्मिक मृत्यु पर हार्दिक सवेदना प्रगट करता है।

परमपिता परमात्मासे प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शाति तथा शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

मन्त्री आर्यसमाज

दुःखद समाचार है कि आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी एव वेदो के महान् विद्वान डा० नारायण मुनि चतुर्वेद का ज्वालापुर मे निधन हो गया वे ७६ वर्ष के थे। आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ने स्व० श्री नारायण मुनि जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए शोक सभा मे दिवगत के शाति एव परिवार जनो के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की है।

हरिगोपाल शास्त्री

—आर्य समाज तिलक द्वार मथुरा के तत्वावधान में आयोजित एक विशाल सभा मे स्व० श्री धर्मेंद्र जी शास्त्री के शोक दिवस पर समाज के सभी सदस्यो एव अधिकारियो के ओर से स्व० श्री धर्मेन्द्र जी को श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

मन्त्री आर्य समाज

—आर्य समाज रायपुर धुन्सी ने स्व० श्री विहारीलाल जी शास्त्री व कु० गीता देवीके निधनपर गहरा दुःख प्रकट करते हुए शोक सवेदन व्यक्त की है प्रभु दिवगत को शान्ति तथा परिवार जनो को धैर्य प्रदान करें। तारादेवी आर्य मत्राणी

आर्य समाज मसूरी की आज की यह सभा आर्यसमाज मसूरी के प्रधान स्वर्गीय श्री चरणदास जी साहनी के अचानक निधन पर हार्दिक शोक तथा सम्वेदना प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत आत्मा को शाति तथा सद्गति प्रदान करें और शोक सतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें।

मन्त्री आर्य समाज मसूरी

शोक पूर्ण समाचार है कि आर्य समाज चोपन (मिरजापुर) के कोषाध्यक्ष जी के २० वर्षीय युवा पुत्र प्रिय रविन्द्र कुमार का निधन दि० २१ अप्रैल ८६ को एक दुर्घटना द्वारा हो गया। प्रभु दिवगत को शाति तथा शोक विह्वल परिवार को इस महान् दुःख के प्रति सहन शक्ति प्रदान करें। मन्त्री आर्य समाज

आर्य जगत

—नैनीताल २५ मई १९८६ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बेतालघाट मे लक्ष्मी आश्रम कौसानी की छात्रा निर्मला [पुत्री स्व चन्दर्नासह देव, सोराग—अल्मोडा] का विवाह सस्कार डा अक्षय बी एम एस [पुत्र हर्मारसिह चौहान आर्य समाज टाण्डा अफजल—मुरादाबाद] के साथ स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी के पौरोहित्य मे हुआ। वर-वधू को आर्य समाज ताडीखेत [अल्मोडा] की ओर से रामदत्त पाण्डेय साहित्य रत्न व अनूर्पासह रावत द्वारा वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

रामदत्त पाण्डेय साहित्य रत्न
मन्त्री

आर्य जगत

—दि २६ मई ८६ को पश्चिमी चम्पारण अन्तर्गत जोगिरहा गाव मे वैदिक रीत्यानुसार वैवाहिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसका लोगोंपर काफी प्रभाव पडा। य कार्यक्रम रामचन्द्रसिह क्रान्तिकारीके द्वारा सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

—दिनाक २३ मई ८६ को श्री रामचन्द्रसिह क्रान्तिकारी [नेपाल] श्री सुवश राय भजनीक (नेपाल) श्री ध्रुव जी आदि के उपस्थिति मे पश्चिमी चम्पारण अन्तर्गत जगदीशपुर ग्राम मे श्री दामोदर जी के पिता का शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। तीन दिनो तक प्रचार चला लोगो पर काफी प्रभाव पडा।

मन्त्री

चेतावनी

यत मैनपुरी–जनपद के सव श्री विद्याराम द्वारा (मन्त्री आर्य समाज सिरसागज), कुलभूषण (द्वारा मन्त्री जी आय समाज शिकोहाबाद) तथा मूलचन्द्र (द्वारा प्रशासक आर्य समाज मैनपुरी) इस सभा के बार-बार अनुरोध करने के पश्चात भी विगत अनेक वर्षों से, इस सभा की अविराम अवज्ञा और अवमानना करने के साथ-साथ आय समाज के सगठनसे पृथक किये गये असमाजिक तत्वो से अवैध मेल करके उक्त सगठन को अपूर्णीय क्षति पहुचा रहे हे ।

अत इस सभा की ओर से उक्त तीनो आयजनो को अतिम रूप मे चेतावनी दी जाती ह कि–

यदि उन्होने इस सभा के अनुशासन को म नते हुए, पन्द्रह दिनो के भीतर, इस सभा द्वारा पूव मे प्रेषित भिन्न-भिन्न विषयक अपने-अपने सभी पत्रो के उत्तर अपने जनपद के इस सभा के अन्तरग सभासद (श्री नरेन्द्राय, ओ३म् भण्डार, मैनपुरी) के माध्यम से नही भेजे तो अनुशासन हीनता मानकर एक पक्षीय निणय ले लिया जायेगा ।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आय प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

निणय

इस सभा के मुख्य निरीक्षक कु ध्रुवपाल सिह जी "अटल" को आय समाज फतेहपुर विषयक आख्या दि० ४-५-८६, से सर्वथा सन्तुष्ट होकर, मे उक्त आय समाज के निर्वाचन दिनाक १६-१-८६, जो इस सभा के मुख-पत्र आर्यमित्र दिनाक २-३-८६ मे प्रकाशित (गजट) हो चुका हे, को सर्वथा वैध घोषित करता हुआ उक्त आय समाज के प्रत्येक आन्तरिक विवाद के प्रकरण को सवथा समाप्त करता हू ।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आय प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

आर्य समाज बडौत प्रशासक नियुक्त

आय प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊके प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी के आदेश दिनाक १६-५-८६ द्वारा आय समाज बडौत एव दयानन्द बाल विद्या मन्दिर बडौत (मेरठ) की प्रबन्ध समितियों को भग करके श्री रणवीर सिह चौधरी प्रधानाचार्य जनता वैदिक इन्टर कालेज बडौत (मेरठ) को दोनो सस्थाओ का प्रशासक नियुक्त किया हे । प्रशासक महोदय ने दोनो सस्थाओं का कार्यभार दिनाक १७-५-८६ को ग्रहण कर लिया हे । सामान्य परिस्थितिया हो जाने के उपरात नई प्रबन्ध समिति का चुनाव शीघ्र कराने का आश्वासन प्रधान जी द्वारा दिया गया है ।

डा ओमवीर सिह
भूतपूव मन्त्री व आय सभासद
आर्य समाज बडौत (मेरठ)

पूर्वांचल आय महा सम्मेलन विशेष समारोह पूव क स-पन्न

गोरखपुर क्षेत्र के उत्साही आय समाज के कायकर्ता डा० विनय प्रताप के अथक परिश्रम से जून के प्रथम सप्ताह मे गोरखपुर मे पूर्वी जनपदो का सफल महा सम्मेलन हुआ जिसमे उच्चकोटि के वक्ता आय समाज के कायकर्ता तथा प्रान्तीय सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने भाग लिया ।

इस सम्मेलन से पूर्वी जिलो मे आय समाज के प्रचार ओर प्रसार को नई लहर दौड गई तथा आर्य समाज के सगठन को विशेष बल प्राप्त हुआ । स्थानीय और बाहर के आयजनो की उपस्थिति भी पर्याप्त रही । इसी अवसर पर आर्य समाज बक्शीपुर गोरखपुर का भी वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ । विस्तृत विवरण आगामी अक मे प्राप्त होगा ।सम्वाददाता

चण्डीगढ़ का पँजाब को समर्पण

दिनाक २१ जून की तिथि टल गई पैंतालिस हजार एकड तथा पच्चीस हजार एकड भूमि के प्रत्यावर्तन का मामला सुलझ न सका । श्री राजीव ने अब १५ जुलाई १९८६ का दिन निश्चित किया है परन्तु न्याय मूर्ति श्री देसाई को जो निर्णय का कार्य सौंपा गया है उसे श्री बरूआ ने पूण रूप से अस्वीकार कर दिया अत अब दिनाक १५ जुलाई ८६ की तिथि भी सदिग्ध है। दिनाक २ जून के समपण के विरोध मे चण्डीगढ मे जो प्रबल प्रदर्शन और बन्द का आयोजन हुआ है उसे सरकार को ध्यान मे रखना चाहिए ।

उचित तो यह है कि दृढता के साथ पजाब मे आतङ्कवादियो का सफाया किया जाय तथा नवीन सिरे से चण्डीगढ का साठ/चालिस के आधार पर बटवारा किया जाय और पजाब मे जितने हिन्दी भाषी क्षेत्र है वह सब हरियाना को दिए जाय ।

प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रष्ट, टकारा, द्वारा सचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टकारा, जिला राजकोट, सौराष्ट्र मे ग्रीष्मावकाश आरम्भ हो गया है । नया सत्र प्रथम जुलाई १९८६ से आरम्भ होगा ।

सस्कृत के साथ मेट्रिक परीक्षा अथवा तत्समकक्ष सस्कृत परीक्षा (अंग्रेजी के साथ) उतीर्ण, ब्रह्मचारी, विनम्, भारतीय (वैदिक) साहित्य, सस्कृति और भूमि के प्रति निष्ठावान् छात्रो को प्रवेश मिलता है । प्रवेश फार्म और नियमावली ५) रु० भेजकर, मगायें । यथा विधि भर कर भेजें और २५ जून तक स्वीकृति प्राप्त कर लेने वाले छात्रो के लिये स्थान सुरक्षित रहेगा ।

यहा पर महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्य, अन्य ग्रन्थ तथा दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण, निरुक्त, सस्कृत, अंग्रेजी विज्ञान, सामान्य ज्ञान, आयुर्विज्ञान का भी ज्ञान दिया जाता है ।

शिक्षा, भोजन, आच्छादन, क्रीडा औषधि नि शुल्क है । शिक्षा काल चार वर्ष हे ।　　धर्मवीर विद्यालङ्कार आचाय

शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकता

श्री आय गुरुकुल चित्तौडगढ की माध्यमिक कक्षाओं के लिए पशिक्षण प्राप्त व्याकरणाचाय प्राचीन तथा अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, भूगोल, सस्कृत एव हिन्दीके लिए प्रशिक्षित स्नातक-स्नातकोत्तरअध्यापकों के आवेदन पत्र उनको योग्यता विवरण सहित २० जून तक आमन्त्रित हे, आयु सीमा २३ से ४५ तक वेतन योग्यतानुसार, इच्छुक महानुभाव आवेदन करें–

मुख्याधिष्ठाता–श्री आर्य गुरुकुल चित्तौडगढ, राजस्थान ३१२००१

–ग्राम अगदपुर [मेरठ] के श्री प्रमोदकुमार सुपुत्र श्री रणजीत सिह आर्य का शुभ विवाह दि० २६ अप्रैल ८६ को बिना किसी दान-दहेज के आर्य समाज को रीति रिवाजोके अनुसार आयुष्मति राजश्री सुपुत्री श्री डा० गोपाल-सिह लाठर निवासी ग्राम ऊन [मुजफ्फर नगर] के साथ हर्षोल्लासपूण वातावरण मे सम्पन्न हुआ । विवाहोत्सव के अवसर पर आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता सूबेदार श्री नवाबसिह ने वर-वधू को आर्शीवाद दिया ।

प्रधान आय समाज

–आर्य समाज सहतवार(बलिया) के के मन्त्री श्री वेद प्रकाश आर्य के सुपुत्र श्री ज्ञानप्रकाश का मुण्डन सस्कार पूण वैदिक रीत्यानुसार गत १ जून को आर्य समाज मन्दिर के यज्ञशाला मे समारोह पूवक प बैजनाथ चौबेके पौरोहित्यमे सम्पन्न हुआ ।　　सम्वाददाता

प्रचार के लिए साठ पैसे में दस पुस्तकें

प्रचार के लिये भेजी जाती हैं। धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, हवन-मन्त्र, पूजा किसकी, सत्यपथ, प्रभु भक्ति ईश्वर प्रार्थना, आर्यसमाज क्या है, दयानन्द की अमर कहानी, जितने चाहें सैट मगावें।

हवन सामग्री ३-५० प्रति किलो, मुक्ति का मार्ग, ४० पैसे, उपासना का मार्ग, ६० पैसे, भगवान कृष्ण ४० पैसे सूची मगावें।

वेद प्रचारक मण्डल प्रभात रोड, दिल्ली-५

आर्यसमाज के वर्तमान और भविष्य

एक क्रान्तिकारी प्रकाशन

क्या

आर्य समाज

[हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय है]

लेखक—दत्तात्रेय बाव्ले (आर्य)

पृष्ठ सख्या—४०० मूल्य सजिल्द—५०/- अजिल्द—४५/-

प्राप्ति स्थान—आर्य समाज, अजमेर

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय सिराथू, इलाहाबाद मे एक जुलाई ८६ से प्रवेश प्रारम्भ। राज्य सरकार से प्रथम श्रेणी मे मान्यता प्राप्त। प्रथमा कक्षा से आचार्य एम० ए० तक सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्व विद्यालय से मान्यता प्राप्त है। विद्यालयीय विषयों के अतिरिक्त धर्म शिक्षा, शारीरिक एव यौगिक शिक्षा अनिवार्य है। बच्चों को शुद्ध पौष्टिक स्वास्थ्य वर्धक भोजन एव खुले वातावरण मे रहने की उत्तम व्यवस्था है। प्रतिदिन सन्ध्या हवन, आसन व्यायाम का नियमित अभ्यास कराया जाता है। नियमावली के लिए अविलम्ब लिखें, स्थान सीमित हैं।

प्राचार्य

गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय

सिराथू, इलाहाबाद

आवश्यकता है

महिला आश्रमाध्यक्षा (अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्या। आश्रमाध्यक्षा (वार्डन) को वरीयता दी जावेगी। वेतन ५००—१०००। अनुभवी आश्रम अध्यापिकाए (२५०—५००) गृह विज्ञान अध्यापिका (एम-एस-सी), हिन्दी अध्यापिका (एम० ए०) वेतन ५००—८००।

प्रबन्धक,

कन्या गुरुकुल, हाथरस

(जि० अलीगढ़) उ० प्र०

आवश्यकता

दयानन्द बाल मन्दिर शाहगज, जौनपुर जो कक्षा शिशु से कक्षा अष्टम पर्यन्त शिक्षा प्रदान कर रहा है के लिए योग्य एव अनुभवी प्रधानाचार्य, एव अध्यापको की आवश्यकता है जो कि आर्य विचारधारा के हो। आर्यसमाज के सिद्धान्तो मे निष्ठा रखने वाले को वरीयता दी जायेगी।

प्रबन्धक,

दयानन्द बाल मन्दिर, शाहगज

जनपद—जौनपुर (उ० प्र०)

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण सस्था है। १म० कक्षा से १४ कक्षा तक शिक्षा दी जाती है।

१६ जुलाई १९८६ से एम० ए० की कक्षायें भी प्रारम्भ हो रही हैं। उच्च प्रशिक्षण शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिकशिक्षा चित्रकला, साइन्स, सगीत, गृह विज्ञान, सांस्कृतिक गति विधि सस्था की आधार भूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओ सहित बड़े छात्रावास तीसरी कक्षा से सस्कृत तथा अग्रेजी प्रारम्भ निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओ के लिये छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक तथा इण्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम वर्ष तथा तृतीय वर्ष मे प्रविष्ट हो सकती हैं। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। ७ जुलाई से नवीन कन्याओ का दाखिला है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव ५) भेजकर नियमावली मगा सकते हैं।

दमयन्ती कपूर

आचार्या

प्रवेश प्रारम्भ

अनुभवी शिक्षाविदो के नेतृत्व मे निरन्तर उन्नति पथ पर अग्रसर आर्य महाविद्यालय किरठल (मेरठ) मे एक जौलाई से छात्रो का नवीन प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। यहाँ सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की प्रथमा से आचार्य पर्यन्त शिक्षा के अध्यापन की पूर्ण व्यवस्था है। पचम श्रेणी अथवा किसी भी पूर्व उत्तीर्ण कक्षानुसार छात्र अग्रिम कक्षा मे प्रवेश ले सकता है। शिक्षा एव आवास की व्यवस्था निःशुल्क है। शास्त्री एव आचार्य के छात्रो की भोजन व्यवस्था भी निःशुल्क होगी। यथासम्भव पुस्तकीय सहायता प्रदान की जायेगी। अत अपने बच्चो के बहुमुखी विकास के लिए विद्यालय मे प्रवेश करायें, प्रवेश हेतु तुरन्त सम्पर्क करें।

मार्ग निर्देश—देहली से सहारनपुर जाने वाले बस मार्ग के रमाला स्टैण्ड से टाण्डा जाने वाले बस मार्ग पर किरठल है।

प्राचार्य—

आर्य महाविद्यालय—किरठल (मेरठ)

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस

(जि० अलीगढ़) उ० प्र०

१ जुलाई १९८६ से नया वर्ष। शिशु कक्षा से बी० ए० स्तर हैं आचार्य तक की निःशुल्क शिक्षा। गुरुकुल पद्धति पर निःशुल्क छात्रावास सबका सीधा-सादा, एकसा रहन-सहन, कड़ा अनुशासन, नगर से दूर स्वास्थ्यप्रद जलवायु सामान्य विषयों के अतिरिक्त धर्म, सगीत, नैतिकता गृहकार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा। देशी घी, दूध, नाश्ता सहित भोजन शुल्क ११०-०० रु० मात्र। नियमावली मगवाए।

—मुख्याधिष्ठात्री

कन्या गुरुकुल, हरद्वार

पो० कनखल, जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

के सुरक्षित छात्रावास, उत्तम भोजन व्यवस्था तथा याज्ञिक वातावरण मे कक्षा १ से १४वीं तक कन्याओ को शिक्षित कराने के लिए सम्पर्क करें। प्रवेश प्रारम्भ हैं। आचार्या।

कविराज हर्षवर्धन शास्त्री

वैद्याचार्य बी० एम० एस० आयुर्वेदाचार्य

मुख्याधिष्ठाता

कन्या गुरुकुल हरिद्वार पो० कनखल (उत्तरप्रदेश)

अभी समय है बन्द करो ये करतूतें शैतान की

जिन लोगों ने करी घोषणा कल्पित खालिस्तान की।
मार कुल्हाड़ी पैरों में तैयारी की अवमान की॥

पावन गुरुद्वारे में रहकर घृणित घिनौने काम किये।
गुरु-गरिमा है नाम तुमने अपने बदनाम किये॥
कहा पन्थ बतलाता, निन्दित दूषित, कल्पित काम करो?
गोली मारो, बम्ब फेंककर निर्दोषों के प्राण हरो॥
चर्चा कहाँ ग्रन्थ साहब में, पगलो! खालिस्तान की?
अमरीका ने उकसाया तुमको शह पाकिस्तान की॥

मृत्यु जबकि गीदड़ की आती और गांव की चिल्लाता।
देश द्रोह का अपराधी तो मृत्यु दण्ड ही है पाता॥
ठोकर खाकर सब गिरते हैं, लेकिन जो कि संभल जाता।
जला दूध का छाछ मिले तो फूक फूक के पी पाता॥
देश भक्त को भेंट मिला करती श्रद्धा सम्मान की।
अपराधी को शहीद कहना गल्ती है पहचान की॥

है अस्तित्व न जिसका, उसको लालकिले पर लहराना।
खेल नहीं बच्चों का झण्डा खालिस्तानी फहराना॥
गुरुओं से अमृत छक कर चल पड़े विषैले रस्ते हो।
जिस माता का दूध पिया है उसे नाग बन डसते हो॥
मुट्ठी भर ने लाज लुटायी कघे, कड़े, कृपाण की।
अरे सिर-फिरो! ध्यान करो मानी गुरुओं के ज्ञान की॥

फैलाया आतङ्क तरह कायर की छिपकर भाग गये।
हुए कलंकित, क्योंकि लगाकर मन्दिर में तुम आग गये॥
निर्दोषों के शीत रक्त से, खेल लहू की फाग गये।
सावधान! हैं सजग देश के रक्षक प्रहरी जाग गये॥
बहकावे में भटक, पकड़ ली पगडण्डी शमशान की।
अभी समय है, बन्द करो ये करतूतें शैतान की॥

—डा० राजेन्द्र वर्मा, कोटा ४ झ ७, विज्ञान नगर-कोटा ३२४००५

स्व० श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी के प्रति श्रद्धांजलि

आज उन्हे श्रद्धांजलि देने, हम आर्य जगत सब आये
जगत पिता परमात्मा उन पर, सुमन पुष्प बरसाये
जो निज जीवन भी दानकर किया, आर्यजनो दुखिया हित
वह श्रद्धा स्नेह विश्वास अचल था, करण विमल विनीत

तू आर्य जगत योद्धि फैलाए रागी नहीं वैरागी
पंच भूत में मिल जाने से, मरा नहीं त्यागी
जिकर करते लाखो निशदिन, जीवन में भी डर है
कर्मवीर कर्तव्य परायण, मर कर भी अमर है।

जगा गया वह भूत भविष्य, वर्तमान को अपना
भारत में प्रत्यक्ष कर गया आर्य वीर दल सपना
हिन्दी के हित कार्य कुशल में, हिन्द महासागर में
लाखों नहीं करोड़ों लोगो में, हिमगिरि शैल शिखर में

छिनकर हमसे कर्मवीर को स्वयं काल है मौन
मृत्यु भी पछता रही है, पवन हो गया मौन
त्यागी जी के सुयश काय को निज जीवन में ढालें
लोभ, मोह, वो स्वार्थ पंक को, 'आमोद' सत्य से धोले

-त्रिलोकी प्रसाद 'आमोद' भारतमाता चौक, केशोपुर पो० जमालपुर
जि० मुंगेर (बिहार)

सावधान !

एक रामदेव नामक कोई युवक, काषाय वस्त्रों में आने को किसी राजार्यसभा द्वारा सचालित गुरुकुल गेरवा कटरा जिला इटावा का मुख्याधिष्ठाता बताकर उक्त गुरुकुल की सहायता के नाम पर आर्यजनों को भ्रमित करके, धन संग्रह कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि उक्त युवक का आर्यसमाज से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। वह आर्यसमाज से पृथक किये गये असमाजिक तत्वों से अवैध मेल करके इस सभा के विपरीत आचरण कर रहा है।

अतः आर्यसमाजों, सभी प्रकार की आर्य संस्थाओं तथा आर्यजनों को आर्यमित्र के माध्यम से सावधान किया जाता है कि— वे उक्त युवक को किसी भी प्रकार का सहयोग व प्रश्रय न देवें तथा उसके उक्त कृत्य की सूचना सभा को तत्काल देवें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

आभार-प्रदर्शन

'कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो लेख और उस पर मुस्लिम प्रतिक्रिया का उत्तर आर्यमित्र में लिखने पर अनेक विद्वानो और अन्य अनेक आर्यजनो के पत्र स्तुतिपरक रूपेण मेरे पास पहुचे हैं। अनेक विद्वानो ने तो अमर बलिदानी धर्मवीर प० लेखराम जी की दृढ़ता और तार्किकता से मेरी तुलना की है। यह सब महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की ही देन है अतः त्वदीय वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये की भावना से उस महामानव जगद्गुरु और उसके मिशन के लिए ही अर्पित कर रहा हूँ। जिन महानुभावो ने एतद्विषयक पत्र लिखकर मेरा उत्साह वर्द्धन किया है, उन सभी का हृदय के अन्तस्तल से आभारमय धन्यवाद करता हू। शमित्योम्।

शुभ काम —

वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद, जनपद बिजनौर उ०प्र०

मुस्लिम परिवार की शुद्धि

दिनांक २५ मई को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर के तत्वावधान में मन्त्री श्री धर्मेन्द्र शास्त्री के संयोजन में विशाल राजपूत सम्मेलन ग्राम ठैगोरा में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता श्री ध्यानपालसिंह जी ने की। इस अवसर पर हजारों प्रतिनिधियों की उपस्थिति में पवित्र यज्ञवेदी पर श्री नौशेर खां के परिवार की शुद्धि आचार्य श्री धर्मेन्द्र शास्त्री द्वारा विधिवत की गई। नये नामकरण इस प्रकार हुए—(१) श्री नौशेरसिंह तोमर (२) श्रीमती सीता देवी, (३) आयु० कुमारी अनिता, (४) चि० घनश्याम (५) चि० लोकेशकुमार। —धर्मेन्द्र शास्त्री

—आर्यसमाज रामसनेही घाट जि० बाराबंकी के वार्षिकोत्सव में ता० २८ अप्रैल को ६ मुस्लिम व्यक्तियों का शुद्धी संस्कार किया गया। आर्यसमाज के सभी पदाधिकारियों के अथक परिश्रम से यह आयोजन हुआ। शुद्धी संस्कार सभा प्रचारक प० महानन्द आर्य द्वारा किया गया। श्री नेमप्रकाश भजनोपदेशक के प्रभावशाली भजन हुए। कु० महिपालसिंह जी के भजनोपदेश हुए। —दयाशंकर आर्य

निर्वाचन

आर्यसमाज धूरी
प्रधान—श्री महाशय प्रतिज्ञापाल जी
मन्त्री—श्री महाशय लक्ष्मणदास जी
कोषाध्यक्ष—श्री सतीशपाल आर्य

आर्यसमाज अडींग (मथुरा)
प्रधान—श्री बद्रीप्रसाद आर्य
मन्त्री श्री भगवत प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री शिशुपाल आर्य

आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर
प्रधान—श्री लक्ष्मणकुमार जी शास्त्री
मन्त्री—श्री जसवन्तकुमार जी शास्त्री
कोषाध्यक्ष—श्री वेदपाल जी

स्त्री आर्यसमाज सीसामऊ, कानपुर
प्रधाना—श्रीमती शशिकान्ता शास्त्री
मन्त्राणी— " स्वर्ण कुमारी अरोड़ा
कोषाध्यक्षा— " शीलवती जी सक्सेना

आर्यसमाज शोहरतगढ (बस्ती)
प्रधान—श्री सुन्दरलाल जी आर्य
मन्त्री—श्री हरनारायण लाल आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री शंकरप्रसाद रुगटा

आर्यसमाज विजार खाना
पो० मसवासी (रामपुर)
प्रधान—श्री रामस्वरूप जी आर्य विशारद
मन्त्री—श्री अभयस्वरूप एडवोकेट
कोषाध्यक्ष—श्री ओ३म् प्रकाश आर्य

आर्यसमाज सासनीद्वार, अलीगढ
प्रधान—श्री राजेन्द्रकुमार सक्सेना
मन्त्री—श्री जयनारायण शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री यादराम शर्मा

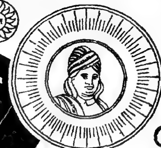
'आर्य्यमित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 46983 ४५६६३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
भा० आषाढ़ १, ८
ज्येष्ठ शुक्ल १५, आषाढ़ कृष्ण ८ रविवार
२२, २६ जून १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र



आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.



१८८६-१९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी.कालेज, लखनऊ

**विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक
गतिविधियों पर विचार**

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १. फोन ४५९९३

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदास आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से
श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० न० १२७१/८० लाइसेन्स नं० ७ / १८-३-८६

वर्ष ८९] सा० आषाढ़ १५, आषाढ़ कृष्ण १४, रविवार सम्वत् २०४३ वि०, दि० ६ जुलाई १९८६ [अङ्क २७

प्रार्थना

ओ३म् अत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं संजभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥

—यजु. ३३-३७

भावार्थ—सूर्य की यह महिमा है कि जो भी आकाश के मध्य में विकसित करने योग्य है, उस को वह समेट लेता है और जब यह शुभ रश्मियों को अपने में ले लेता है तब ही अन्धकारमय रात्रि समस्त जगत् के लिए अन्धकारावरण को फैलाती है।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

सम्पादक—

सोमदत्त शर्मा एम. ए.

आजीवन सदस्य ५५१)

वार्षिक ५०)

छमाही १५)

एक प्रति [illegible]

विदेश में [illegible]

*समये स्वल्पमपि वर्षा श्रेयस्करी: का विपुला वर्षा विनष्टे कृषि:

अभी समय है देशद्रोहियों को कुचल दिया जाय

भारत की अखंडता की रक्षा प्रधान मन्त्री का संवैधानिक दायित्व है

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी के प्रति सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी का सामयिक प्रतिवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने 'आर्यमित्र' के सम्पादक को साक्षात्कार देते हुए कहा कि "मैं विगत चार दशकों से ऊपर हो गये राष्ट्र एवं समाज की सेवा में सक्रिय हूँ तथा महात्मा गांधी के नेतृत्व से लेकर आज तक राजनैतिक गतिविधियों पर पैनी दृष्टि रखता रहा परन्तु, जैसी जटिल समस्यायें आज देश के समक्ष हैं और केन्द्रीय सत्ता द्वारा जो अनुभवहीन निर्णय लिए जा रहे हैं उनसे देश के विकास में अवरोध ही नहीं है अपितु भारत की अखण्डता एवं शाश्वत विकासशील वैदिक संस्कृति के क्षीण होने की भी सम्भावना है।" महर्षि दयानन्द के क्रान्तिदर्शी विचारों से प्रभावित होकर समाज का एक चिन्तनशील कार्यकर्ता हूँ फिर भी राजनीति का विशेष प्रभाव समाज पर पड़ता है इसलिए सक्रिय आर्यसमाज का कार्यकर्ता होते हुए भी राजनीति के समस्याओं के प्रति तथा उनके सुदृढ़ीकरण के लिए मेरा चिन्तन और विचार अपेक्षित है।

सम्प्रति राजनैतिक जो गलत कदम और निर्णय लिए गये उसका परिणाम है खालिस्तानी आंदोलन। स्व० श्री नेहरू ने काश्मीर के सम्बन्ध में जो विशेष उसे दर्जा धारा ३७० के अन्तर्गत प्रदान की तथा देश के प्रति पूर्ण आस्था न रखने वाले व्यक्तियों पर जो निर्भरता दिखाई उसका परिणाम है कि श्रीनगर के चौक और चौराहों पर खुलेआम पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लग रहे हैं और विगत एक वर्ष में वहां के हिन्दुओं का अमानवीय उत्पीड़न किया गया धर्म स्थान नष्ट किये गए और देशद्रोही खुलकर खेल रहे हैं पनप रहे हैं।

भारत के अन्य भागों में ईसाई भी अपना रंग दिखा रहे हैं। कहीं झारखण्ड राज्य की मांग उठती है और कहीं नागालैण्ड पूर्वाञ्चल क्षेत्र तथा मिजोरम में भारत सरकार शासन व्यवस्था में शिथिल होती है। मिजोरम भी एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी सीमा बर्मा से मिली हुई है और जिसके सीमान्त वनों में चीनी प्रभाव है और लालडेंगा के सैनिक सत्ता से विद्रोह कर रहे हैं। लालडेंगा अपनी राजनीति लन्दन में बैठकर करते हैं और इधर भारत सरकार ने लालडेंगा के प्रति भी समर्पण पूर्ण समझौते का मार्ग ग्रहण किया अर्थात् वहाँ की जो सरकार है उसके प्रधान लालडेंगा होंगे। मिजोरम एक राज्य होगा और वर्तमान सत्ता लालडेंगा से सहयोग करेगी; यद्यपि देखने से प्रतीत होता है कि यह समझौता सफल होगा परन्तु विदेशी संकेतों पर नाचने वाले कठपुतलियां भारत की अपेक्षा विदेशों के प्रति वफादार हैं। सन्देह है कि लालडेंगा भी कहीं अपने दबावकार आजाद मिजोरम वाले न बन जायें, क्योंकि सन् १९७८ से ८० तक कांग्रेस (इ) ने जिन्दरवाले को तथा लालडेंगा को प्रोत्साहन दी थी।

इधर भारत के मुसलमान यह समझकर कि केन्द्रीय सरकार दृढ़ सिद्धान्त विहीन है, मुस्लिम सम्प्रदाय की साम्प्रदायिकता में वोट बैंक के लिए जायज से नीचे गिर सकती है, उन्होंने साम्प्रदायिक लहर पैदा करके मुस्लिम महिला विधेयक पास कराया। सैयद शहाबुद्दीन भी जरूरत से अधिक बोले तथा अब चौंका देने वाली बात है कि सफदर पठित्र के मौलाना बुखारी के पुत्र आजाद सेना के नाम पर मुस्लिम नवयुवकों को शिक्षित करने और वायवंदी सामरिक प्रशिक्षण देने के लिए मुस्लिम सेना खड़ी कर रहे हैं। यदि समय रहते इन गतिविधियों पर रोक न लगाई गई तो सारे भारत में मुस्लिम विद्रोह की ज्वाला सुलगेगी जिसका एक नमूना पंजाब के बाद में आधिपत्य का विद्रोह है जहाँ सरकार विरोध के घरों से बम और विदेशी आयुध बरामद हुए।

(शेष पृष्ठ ११ पर)



सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार ६ जुलाई १९८६ दयानन्दाब्द १९२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

स्वामी आनन्द बोध जी

वैदिक जीवन दर्शन मे मानव जीवन के क्रियाकलापो को चार आश्रमोमे विभक्त किया गया है हर्ष है कि–सार्वदेशिक के प्रधान, आर्य समाज क्षेत्र के सतत जागरूक और कमठ सेनानी श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले जीवन के तीन आश्रमो की पूर्णता प्राप्त करके चतुर्थ सन्यास आश्रम मे प्रविष्ट हुए और विचारशील एवं क्रियाशील मस्तिष्क को पूर्णआनन्दबोध भी प्राप्त हुआ है। अर्थात् 'ईश साक्षात्के अलौकिक रहस्यमय सुख की पूर्णानुभूति। अन्य सन्यासी जहा काशेय वस्त्र एवं कमडल लेकर निजन गुफाओं मे प्रवेश करते है जनमानस की आतनाद से अपने को अलग हटाते है वहीं स्वामी आनन्द बोध ने दिनांक २२ जून १९८६को दीवान हालके प्रागणमे विशिष्ट व्यक्तियोके मध्य घोषणा की कि–अब जीवन का जो चतुर्थ चरण है अर्थात अस्सी वर्ष मे ऊपर अब जितनी श्वासे प्रभु कृपा से आये जायेंगी उनका प्रत्येक क्षण दलित, निरीह, पीडित, उपेक्षित प्रत्यक्ष समाज के जनो की सेवा मे लगेगा और भारत राष्ट्र का सुरक्षा अखण्डता, तथा आर्य जनो के कष्ट निवारण मे ही आनन्द बोध को सुख, शाति एव पूर्ण समर्पण के बोध का आभास होगा।

आर्य जगत वानप्रस्थ श्री शालवालकी सेवाओ से पूर्ण परिचित है। हम उनके कृतज्ञ है और अब सन्यास के रूप मे उनकी ओजस्विता, बलिदान और उत्कर्ष की भावना और अधिक प्रबल होगी। 'आर्यमित्र' आर्य जन मानस की ओर से अपने समस्त परिवार की ओर से परमेश से यह प्रार्था है कि-सन्यासी आनन्द बोध 'जीवेम शरद शतम्' हो तथा भविष्य के एक दीर्घ अन्तराल तक उनके धमनियो मे जीवन की ऊष्णता बनी रहे और राष्ट्र तथा समाज को उनका उचित निदशन प्राप्त हो। आर्य सन्यासी आनन्द बोध के प्रति आर्य जनो का सादर स्वागत पूर्ण नमस्ते।

प्रयाग का उपद्रव–

जून १९८६ के द्वितीय सप्ताह मे इलाहाबाद मे एक ऐसा उपद्रव हुआ जिससे वहा का जनमानसआवर्तलित हो उठा। नागरीय प्रतिक्रियायें रुक गई, नगर मे कर्फ्यू लगा, सरकारी आकडे कहते है कि नौ व्यक्तियो की जीवन लीला समाप्त हुई और प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री वीर बहादुर जी कहते है कि यह सब पूर्ण नियोजित था।

– जैसा विवरण प्राप्त हुआ कि इलाहाबाद मे एक सम्प्रदाय विशेष के घरो मे बमो के जखीरे प्राप्त हुए, अवैध शस्त्र एवं कारतूसें प्राप्तहुई और इतना ही नहीं इन बमो और कारतूसो से पुलिस जनो पर घातक प्रहार भी हुए साथ ही जहा तक समाचार है कि उपद्रव आरम्भ के पहले से ही प्रयाग मे अस्मीक स्थाई पाकिस्तानी नागरिक उपद्रव की योजना बना रहे थे। यह ती प्रसशनीय है कि पुलिस ने उपद्रव पर अधिकार प्राप्त किया जनजीवन फिर खुल गया परन्तु खेद है कि गुप्तचर विभाग इतना शिथिल है कि इस भयकर काण्डका उसे आभास ही नहीं हुआ। ऐसे उपद्रव प्रदेश मे अन्यत्र भी हो सकते है और उससे प्रदेशीय प्रशासन की ही नही मुख्यमन्त्री की भी छवि धूमिल होती है अत प्रयाग के उपद्रव को एक सकेत मानते हुए 'आर्यमित्र' प्रदेश के मुख्यमन्त्री, मुख्य सचिव तथा गृह सचिव से यह अपील करता है कि अपने गुप्तचर विभाग को इतना दक्ष करें कि उपद्रवी नाटक प्रारम्भ करने से पहले ही कालगृहों मे पहुचा दिए जाय। इस समय देश की जो परिस्थिति है जीवन मे जो विडम्बना चल रही है उसमे सतकता अत्यन्त अपेक्षित है।

ज्वालामुखी पंजाब–

भौगोलिक विशेषज्ञ जानते है कि ज्वालामुखी एक दम से नहीं फूटता। पहले धुवा निकलता है, चिनगारिया निकलती है और यह सकेत प्रयाप्त होता है सजग हो जाने का आत्म रक्षा के प्रबन्ध कर लेने का। किन्तु जो मूढ मत ज्वालामुखी के धुयें को यज्ञशाला का धुवा समझते है और वहा से उठी चिनगारियो को हवन कुण्ड की आहुतिया समझते है वह समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति तो बाद को स्वय अपने प्रति आत्मघाती होते है। राष्ट्र किसी व्यक्ति का नहीं होता, राष्ट्र किसी दल की सम्पत्ति नहीं होती राष्ट्र समस्त राष्ट्र के स्वेद की धरोहर है और राष्ट्र की शोभा और गरिमा इसीमे है कि राष्ट्र मे शान्ति सुख एव समृद्धि की वर्षा हो तथा प्रत्येक नागरिक शांति का अनुभव करे।

पजाब की समस्यायें जटिल हो रही हैं। चण्डीगढ समर्पण के दो नाटक हो चुके १६ जनवरी और २१ जून। और अब डुग्गी पीटी गई है कि दिनाक १५ जुलाई को पुन राजीव-बरनाला की नौटकी होगी जब कि स्थिति स्पष्ट है। हरियाणा की समस्त न्यायोचित मांगो को समाप्त किया गया। भाषा के आधार पर फजालिका और अबोहर नहा दिये जा रहे है। चण्डीगढ वहा के ४८ प्रतिशत जनता के भावना के विरुद्ध पजाब को दिया जा रहा है जैसे जबरदस्ती सिंह के मुह मे मृग शावक फेंका जा रहा हो और सत्तर हजार एकड भूमि भी बरनाला देने को तैयार नहीं है। यहा तक कि न्यायमूर्ति श्री देसाई जिन्हें केन्द्र सरकार भूमि निर्धारण की व्यवस्था सौंप रही है उनके आस्तित्व को ही बरनाला स्वीकार नहीं कर रहे है बल्कि इस मामले मे बरनाला, बादल, तोहडा और अरिमिन्दर सिह एक ही स्वर म बोल रहे है। एक ही व्यक्ति श्री राजीव जी प्रधान मन्त्री भी है तथा सत्तारूढ कांग्रेस दल के अध्यक्ष भी हैं खुले मस्तिष्क मे विचार करें कि १५ जुलाई को पुन नौटकी करके जनता को कब तक धोखा दिया जायेगा ? और पजाब की स्थिति यह है कि वहासे हिन्दुओ का पलायन जारी है उनकी स्थिति दयनीय है और हिन्दुओ के पलायन से भारत के हिन्दुओ मे जो क्षोभ है उसे श्री राजीव जी समझने का पूर्ण प्रयास करें। इसके साथ ही यह स्पष्ट हो गया है कि अकाली दल दो भागो मे बटा है परन्तु दोनो भाग हिन्दुओ के पलायन पर मौन है साथ ही देश के प्रमुख राष्ट्रीय नेताओ ने "टाइम्स आफ इंडिया" ऐसे पत्रो ने खुला सकेतकर दिया है कि जहा आतंक वादियो को पाकिस्तान से समथन मिल रहा है वहीं उन आतंक वादियो को अकाली नेताओ से और यहा तक कि पजाब मन्त्रिमण्डल के सदस्यों तक स सहानुभूति मिल रहा है और अमृतसर फिरोजपुर,गुरुदासपुर कपूरथला मे जो स्थिति है वह बरनाला के शक्ति से बाहर है कि उस पर वह विजय प्राप्त कर सकें और उसे रोक सके। पजाब की पुलिस निष्क्रिय है केन्द्रीय पुलिस पजाब पुलिस के सहारे पर काय कर रही है और पजाब की सिख जनता भी समझ रही है कि भय से डरने वाले बरनाला केवल प्रायश्चित करके जूते साफ कर सकते है परन्तु शांति स्थापित नहीं कर सकते है। यदि स्थिति न सुधरी, पजाब सेनाके हवाले न किया गया और बरनाला की सरकार भग न की गई तो वही स्थिति होगी जो उस कला दिखाने वाले नट की होती है जिसके पैरो मे बास बाधकर चलाया जाता है और राजीव जी १५ जुलाई के तमाशा दिखाने की डुग्गी बजाते रह जायेंगे।

'आर्य मित्र' दृढता के साथ प्रधान मन्त्री से अनुरोध करता है कि पजाब के सम्बन्ध मे अब स्थिति प्रज्ञ होकर निर्णय लें और भारतीय लोक सभा के सदस्यो से अनुरोध है कि दल पार्टी के सकुचित मोह से ऊपर उठकर प्रधानमन्त्री को सही निर्णय के लिये बाध्य करें।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

पंजाब के प्रेरणा स्रोत-महामानव—

लाला लाजपतराय

[श्री प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश]

भारत माता परतन्त्रता की बेडियो मे जकडी थी। निरकुश अग्रेजी शासन मनमाने जुल्म ढा रहा था। हिन्दू जाति, जातिवाद, छुआछूत, मद्यपान, रूढिवाद, और अन्धविश्वासो मे फसी थी। बाल विवाह, वृद्ध विवाह, दहेज, परस्पर फूट और उस पर भी विदेशी लोगो का अन्यायी शासन हिन्दू जाति को जरजर कर रहा है। ऐसे समय मे २८ जनवरी सन् १८६५ ई० मे पजाब के ढोडि ग्राम जगराव जिला लुधियाना मे एक अग्रवाल वश मे लाला लाजपतराय जी ने जन्म लिया। लगभग ४० वर्ष आर्यसमाज एव काग्रस के क्षेत्र मे प्रभावशाली कार्य करने के पश्चात् १७ नवम्बर १६२८ ई० को प्रात ७-३० बजे भारतवासियो को बिलखता छोडकर आप अमरशहीद हो गए।

आप विद्यार्थी काल मे एक कुशाग्र बुद्धि विद्यार्थी रहे। इसी छोटी अवस्था मे ही मिडिल पास करके आप छात्रवृत्ति पाने लगे तथा बाद मे आप एण्ट्रस पास करके लाहौर कालेज मे प्रविष्ट हुए। वहा भी दो वर्ष तक आपको छात्रवृत्ति मिलती रही। सन् १८८५ मे लाला जी ने वकालत की अन्तिम परीक्षा देकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

आपके पिता मुशी राधाकृष्ण जी स्वय आर्यसमाजी और काग्रस के भक्त थे इसलिये आप पर भी नैतिक धार्मिक और राजनैतिक सस्कार इस छोटी अवस्था मे ही पड गये। इसी का यह परिणाम हुआ कि आपने १८ वर्ष की आयु मे ही लुधियाना, अम्बाला और दिल्ली मे आर्य समाज से सम्बन्धित ३ प्रभावशाली व्याख्यान दिए। आप बहुत ही प्रभावशाली और ओजस्वी वक्ता थे। आपकी वाणी बडी सशक्त और अजेय थी।

वकालत पास करने के पश्चात् लाला जी ने हिसार मे वकालत प्रारम्भ की और प्रभावशाली वक्तृत्व के कारण बहुत शीघ्र ही एक प्रसिद्ध वकील हो गए। इधर सामाजिक कार्यो मे भी उन्होने रुचि लेनी प्रारम्भ की। परिणाम स्वरूप १५००) रुपये दान देकर हिसार मे आर्य समाज की स्थापना की। उस समय १५००) रुपये बडा महत्व रखते थे। यहा तक ही नही आपने सार्वजनिक कार्यो मे भी सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ किया। वहा की नगर पालिका मे आप ३ वर्ष तक अवैतनिक मन्त्री रहे।

शिक्षा जगत् मे भी लाला जी का अपूर्व योगदान रहा। आप शिक्षा प्रेमी थे। हिसार मे ही वकालत करते हुए लाला जी ने एक सस्कृत विद्यालय की स्थापना की। वे प्राय लाहौर भी आते रहते थे। जब प० गुरुदत्त जी एम० ए० ने शिक्षा मे क्रान्तिकारी परिवर्तन करने के लिए १ जून १८८६ मे लाहोर मे डी० ए० वी० कालेज की स्थापना की तो आपने तन, मन और धन से डी० ए० वी० कालेज को सहायता और सहयोग देना प्रारम्भ किया। जब कभी आप किसी सभा मे इसके लिए अपील करते थे तो रुपया बरसने लगता था। १८८८ से लाला जी सक्रिय राजनीति मे आ गए और काग्रेस के अधिवेशनो मे भाग लेने लगे।

सन् १८६७ मे भीषण दुर्भिक्ष पडा। लाला जी ने स्वय सेवक सेना इकट्ठी करके सेवा का कार्य किया। १८६६ मे पुन दुर्भिक्ष पडा बगाल, मध्यप्रदेश और राजपुताना उसकी चपेट मे आ गए। लाला जी ने फिरोजपुर अनाथालय मे अनाथ बच्चो को प्रवेश दिला दिया। आप उस समय अनाथालय के महामन्त्री भी थे। जब आपने स्थान का अभाव देखा तो अपनी बहन के नाम अनाथालय मे दो कमरे और बनवा दिए।

१६०५ मे कागडा पँजाब मे भूकम्प आ गया। उससे बडा विनाश हुआ। वहा सरकारी सहायता पहुचने से पूर्व ही आप अपने दल बल के साथ वहा पहुच गए और मलवो मे से शव और जीवित लोगो को निकालना तथा भूखे एव नगे लोगो को भोजन और वस्त्र देने का कार्य विशाल पैमाने पर किया।

सन १६१६ मे जब महात्मा गाधी जी ने दक्षिणी अफ्रीका मे भारतीयो पर हो रहे भयकर अत्याचारो के विरुद्ध अहिंसक आदोलन किया और धन की सहायता के लिए अपील की तो गोपाल कृष्ण गोखले के पत्र मे आपने १००००) रुपये लाहौर से एकत्र कर देने का आश्वासन दिया। परन्तु निमन्त्रण देने पर जब गोखले लाहौर मे पधारे तो आपने दस के स्थान पर ४००००) रुपये एकत्र करके गोखले जी को दिए।

समाज सुधार के कार्यों मे हरिजनोद्धार उस समय मुख्य कार्य था। १६१२ मे गुरुकुल कागडी मे एक अछूतोद्धार सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए पिछडे वर्ग मे शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिए आपने तुरन्त ४००००) रुपये दान किये और उद्धार और शिक्षा प्रसार का कार्य आरम्भ हो गया।

काग्रेस अधिवेशनो मे सक्रिय भाग लेने के परिणाम स्वरूप आपको १६०४ मे बम्बई काग्रस के अधिवेशन के पश्चात् श्री गोखले जी के साथ इङ्गलण्ड जाना पडा। विदेश से वापिस होने पर उन्होने देश मे विषम परिस्थितियो के कारण असन्तोष फैला हुआ देखा। लार्ड कर्जन ने बगाल के दो टुकडे कर दिये थे। सारे बगाल मे एक तूफान आ गया। दमन चक्र चलने लगा। हजारो देश भक्तो से जेल भर गए। इधर पजाब मे सिचाई कर बढा। 'पजाबी' नामक अखबार पर राजद्रोह का मुकदमा चला उसके प्रकाशक और सम्पादक को जेल भेज दिया गया। सारा पजाब उत्तेजित हो उठा। लाला जी ने निर्भीक भाव से नेतृत्व सम्भाल लिया। सरकार ने बदले मे उन्हे माण्डले भेज दिया। उनके निर्वासन से देश मे आग लग गई। परिणाम स्वरूप सरकार को झुकना पडा। लगभग डेढ़ वर्ष के पश्चात् जब आप देश मे आए तो हार्दिक स्वागत किया गया और प्रसन्नता की लहर दौड गई।

१६१३ मे करांची मे काग्रेस का अधिवेशन हुआ। उसमे कुछ मागो को लेकर इङ्गलण्ड जाने का निश्चय हुआ। शिष्ट मण्डल मे उनका भी नाम था। वे और श्री गोखले जी इङ्गलैण्ड गए। १६१४ मे महायुद्ध छिड गया। गोखले जी तो वापिस आ गए परन्तु सरकार ने लाला जी को वापिस आने नहीं दिया। १६१४ से १६१६ तक पाच वर्ष लाला जी अमरीका मे रहे और देश स्वतन्त्रता का प्रचार वहा ही प्रभावशाली ढङ्ग से करते रहे। १६ अक्तूबर १६१६ मे उन्होने अमरीका मे इण्डियन होम रूल लीग की स्थापना की और उसकी ओर से यग इण्डिया नामक मासिक पत्र भी निकालना पडा। अमरीका मे गरीब भारतीय प्रवासियो के लिए लाला जी ने 'भारतीय श्रमजीवी सघ' की स्थापना की। पठन-पाठन के लिए रात्रि पाठशालाए खुलवाई।

महायुद्ध समाप्त हुआ। लाला जी २० फरवरी १६२० को वापिस भारत आए। उनको वहा विदाई दी गई। भारत आने पर क्रूर डायर द्वारा जलियावाला बाग मे भारतीयो के नृशस गोली काण्ड का भी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सुधार परिस्थिति का नहीं ! अंतःस्थिति का

(आचार्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल) [मेरठ]

वर्तमान समय में किसी देश जाति समाज या संगठन की विषम परिस्थिति को देखकर यह नहीं कहा जा सकता कि अमुक देश जाति समाज संगठन की स्थिति ठीक नहीं है क्योंकि किसी की भी ठीक नहीं है। आज सम्पूर्ण विश्व ही कुछ विशेष विषम परिस्थितियों से चतुर्दिक से आवृत हो चुका है। परस्पर का अविश्वासभाव इतना बढ़ चुका है कि प्रेम और सौहार्द्य मानो गूलर के फूल बन गये हैं। उनकी परिकल्पना या सम्भावना शशक विषाण से भी अधिक असम्भावित हो चुकी है।

ऐसी परिस्थिति में सम्पूर्ण मानवता के उद्धारक या हितैषी चिन्तित हो गये हैं उनकी सतत चिन्तन धारा इसके समाधान की अपेक्षा स्वयं उनको विक्षिप्त बनाने के लिये मानो अग्रसर हो रही है और वे दिग्भ्रान्तता में किंकर्तव्य विमूढ़ से होकर दिग्भ्रान्त हो रहे हैं एवं इसी दिग्भ्रान्तता में ही मानव सुरक्षा का पथ प्रदर्शन कर रहे हैं। उनका इस प्रकार का पथ प्रदर्शन। अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा की उक्तिको पूर्णतया चरितार्थ कर रहा है। वे स्वयं अन्धकार की गह्वर गुफा में गिरते हुए अपने अनुगामियों का सर्वनाश करने पर तुले हुए हैं। उनकी असफलता का सबसे बड़ा कारण यही है कि किसी भी बुराई का कारण वे बाह्य परिस्थिति को कारण मानकर चलते हैं और बाह्य परिस्थिति के सुधार होने पर उस व्यक्ति या समाज का सुधार हो जायगा ऐसा वे मानते हैं। इस प्रकार का निदान अत्यन्त भ्रामक तथा स्वल्पावधि युक्त होता है। मनुष्य कोई निर्जीव प्राणी नहीं जो बाह्य कारणों के कारण ही परिवर्तित होता हो वह एक चेतन विवेचनशील तथा तर्कवितर्क का आश्रय लेकर कार्य करने वाला व्यक्ति है और इस प्रकार के व्यक्तियों का समूह ही समाज राष्ट्र आदि विभिन्न नामों को प्राप्त करता है। मनुष्य केवल परिस्थितियों का दास नहीं वह बहुत कुछ कार्य अन्तःस्थिति के बल पर ही करता है और सच कहा जाय कि अन्तःस्थिति के बल पर ही वह अपना अशेष कार्य सम्पन्न करता है। जब तक अन्तःस्थिति का सुधार नहीं होगा तब तक परिस्थिति का सुधार उसके विकास का निमित्त नहीं हो सकता जैसे कोई बंधा हुआ व्यक्ति है उसके हाथ पांव आदि कपड़े में लपेट कर बांध दिये गये हों और यदि वह छूटना चाहता है तो वह प्रयत्न करके शीघ्र नहीं तो विलम्ब से अवश्य ही छूट जायेगा और उठ खड़ा होगा हां ! यदि कोई विवेकशील पुरुष उसके बन्धनों को काट देता है तो उसके खड़े होने में शीघ्रता एवं सौकर्य हो जायगा। परिस्थिति का सुधार उसके उठ खड़े होने में सहायक बन जायेगा किन्तु यदि कोई मुर्दा अर्थी में बंधा हो तो उसके बन्धन चाहे कितने भी काट लें कपड़े उतार दें और यहां तक कि दो व्यक्ति उसे येन केन प्रकारेण खड़ा भी कर दें तो भी वह छोड़ते ही धड़ाम से गिर पड़ेगा और परिस्थितियों का सुधार उसकी किसी प्रकार की भी सहायता नहीं कर सकेगा।

आज कल के सुधारक अपनी सारी शक्ति परिस्थितियों के सुधार में नहीं लगा रहे हैं और वे सब मानो मुर्दे के बन्धन काटकर उठाने की भांति असफल हो रहे हैं। मनुष्य समाज या राष्ट्र का सुधार होगा उसकी अन्तःस्थिति के सुधार से। प्राचीन काल में हमारे ऋषि मुनियों ने अन्तःस्थिति के सुधार पर विशेष बल दिया था इसका परिणाम स्पष्ट था कि आपस में वैर विरोध की परिस्थिति उपस्थित होने पर भी अन्तःस्थिति ठीक होने के कारण वैर विरोध नहीं होता था। राम और भरत इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं और अन्तःस्थिति के बिगड़ने पर बाह्य परिस्थिति के ठीक होने पर भी वैर विरोध नरसंहार अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाता है। एतदर्थ कंस दुर्योधन शिशुपाल जरासन्धादि का उदाहरण द्रष्टव्य है। शतपथ ब्राह्मण में महर्षि याज्ञवल्क्य ने इसीलिये कहा है— तेन पूर्तिं अन्तरतः अर्थात्—अन्तःस्थिति का पवित्र होना परिस्थिति के अनुकूल होने से सैकड़ों गुना आवश्यक है कोई व्यक्ति यदि अन्तःस्थिति पवित्र वाला है तो गरीबी में पुरुषार्थ एवं सच्चाई का आश्रय लेकर आगे बढ़ेगा और समृद्धि में उदारता एवं दानशीलता का आश्रय लेगा तथा अन्तःस्थिति विकृत व्यक्ति गरीबी में चोरी झूठ कपट का आश्रय लेगा एवं समृद्धि में परपीड़न अनुदारता का आश्रय लेकर समाज को दुःखी एवं पीड़ित करेगा।

अतः हे सुधारवादियो ! यदि तुम संसार का उपकार चाहते हो तो परिस्थितिवाद को कुछ समय के लिये भूल करके अन्तःस्थितिवाद का आश्रय लो यदि अन्तःस्थितियां सुधर जायगी तो परिस्थितियां स्वयं सुधर जायगी। अतः इस युग का नारा— परिस्थिति को सुधारो परिस्थिति को सुधारो के स्थान पर अन्तःस्थितियों को सुधारो अन्तःस्थितियों को सुधारो यह जयघोष नारा होना चाहिये क्योंकि अन्तःस्थिति समाजरूपी शरीर की आत्मा एवं प्राण है और परिस्थिति बाह्य कारण आत्मा और प्राण के बिना जिस प्रकार शरीर निष्क्रिय एवं गलकर दुर्गन्ध को उत्पन्न करने वाला मात्र है। यदि कोई व्यक्ति किसी प्रिय व्यक्ति का प्राण ले ले और उसके शरीर की विभिन्न प्रकार के अपने अभीष्ट के सिद्ध्यर्थ विविध प्रकार से रक्षा करे तो वह कोई बुद्धिमान नहीं कहा जायेगा। बुद्धिमान वह है जो उसकी आत्मा एवं प्राण की रक्षा के साथ साथ उसके शरीर की रक्षा का प्रयत्न करता है। इसी प्रकार इस समय समाजके प्राण भूत अन्तःस्थिति की रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है। आइये हम सब अन्तःस्थितियों के सुधार में लग जाये, इसी में उभय पक्ष का कल्याण है।

सर्वे पदा हस्तिपदे निमग्ना: ।

आर्य जगत

आर्य जगत

गुरुकुल माण्डवाश्रम (बुलन्दशहर) का तृतीय स्थापना दिवस समारोह दिनांक १६ एवं १७ जून को धूम धाम से सम्पन्न हुआ।

आचार्य धर्मपाल शास्त्री

—आर्य समाज भोकमपुर जनाब्दाय) का ६वां विशाल आर्य सम्मेलन दिनांक ० मई से १ जून तक साथ ही आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक ८ मई से १ जून ~८ तक हर्षोल्लासके वातावरणमें सम्पन्न हुआ।

मन्त्री आर्य समाज

—आर्य समाज ममगपुर सहो [बिजनौर] का १८वां वार्षिकोत्सव दिनांक ५ से ७ जून ८६ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

मन्त्री आर्य समाज

'दण्डः शास्ति प्रजा सर्वा'

(श्रीमती सावित्री देवी शर्मा एम ए वेदाचार्या
१० केलाबाग सावित्री सदन बरेली उ० प्र०)

महाराज मनु न राज्य व्यवस्था का आधार दण्ड को ही माना है। दण्ड ही राजा है। दण्ड ही प्रजा का नेता-शासक और चारो आश्रमो के धर्म का रक्षक है। दण्ड की व्याख्या करते हुए कितने स्पष्ट शब्दो मे लिखते हैं–

दण्ड शास्ति प्रजा सर्वा दण्ड एवाभि रक्षति।
दण्ड सुप्तेषु जागर्ति दण्ड धर्म विदुर्बुधा ॥

वस्तुत राजदण्ड से भयभीत हुई प्रजा अनुशासन का पालन करती है। अधर्माचरण से बचकर धर्म मर्यादाओ का उल्लंघन नहीं करती। सोये हुए प्रजाजनो मे दण्ड भय सर्वदा जागृत रहता है। अत दण्ड ही राजधर्म का पर्यायवाचक है। भली प्रकार धारण किया हुआ दण्ड प्रजा को आनन्दित कर देता है। सत्यवादी विचारशील प्राज्ञ राजा ही दण्ड विधान का अधिकारी है। निष्पक्ष शासक दण्ड के द्वारा धर्मार्थ काम मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि प्राप्त करता है। अधर्मात्मा इस तेजोमय दण्ड को नही धारण कर सकता। राजनियम प्रणेता शासक मनु लिखते है–

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा।
प्रजा स्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत साधु पश्यति ॥

यदि राज्य के नेता विद्वान पक्षपात रहित है तो निश्चित ही उनके द्वारा सचालित श्यामवर्ण अर्थात कृष्ण को भयकर प्रतीत होने वाला लोहित नेत्रो वाला पाप नाशक दण्ड जनता की रक्षा करता है। प्रजा कभी भी पाप कर्मों मे मुग्ध नही होती। आज कल प्राय लोग पापाचरण मे विश्वास करते हुए कहते है– सत्यवादी साधु जन सर्वत्र पीडित हो रहे है। पापी पद पद पर सफलता प्राप्त कर रहे है। राजा की निष्पक्ष दण्ड व्यवस्था के अभाव मे प्रजा इस प्रकार अज्ञान जनित मोह को प्राप्त होती है। हमारे भारतीय सविधान के मुख पृष्ठ पर दण्ड संहिता का साराश निम्नांकित शब्दो मे उल्लिखित है– भले ही समस्त अपराधी छोड दिये जाये किन्तु एक भी निरपराध व्यक्ति दण्डित न किया जाये।

आश्चर्य होता है कि अपराधियो को यथोचित दण्ड दिये बिना न्याय कैसे सुरक्षित रह सकता है। जो राजा का मुख्य कर्तव्य है। उत्तरोत्तर बढते हुए भ्रष्टाचार का एक मात्र कारण लोहिताक्ष दण्ड के भय का अभाव ही है। सामान्य लोकोक्ति– लकडी के बल बन्दरी नाचे के अनुसार न्यायरूपी दण्ड के प्रभाव से बडे बडे दानव दुराचारी सुधर जाते है। राज्य सचालन मे दक्षिणा और दण्ड इन दो शब्दो का विशेष महत्व है। दक्षिणा का अर्थ है गुणवान सदाचारी का यथोचित सम्मान तथा दुष्ट पापियो के प्रति कठोर दण्ड विधान अत्यावश्यक है। 'चीन देश के सन्त कन्फ्यूशस ने कहा था– स्वच्छ प्रशासन के लिए दक्षिणा और दण्ड शासन के अनिवार्य अङ्ग है। समाजिको के मध्य यदि साधुजन पुरस्कृत (सम्मानित) किये जाते है तो साधारण दर्शक जनो मे सदाचरण के प्रति विशेष श्रद्धा उत्पन्न होती है। तथा राजाज्ञा से राक्षसो के निर्मम दण्ड पीडा पाते देखकर जनता के हृदय मे पाप के प्रति भय समा जाता है। जब तक प्रजाओ मे दण्ड भय जागता रहता है तब तक दुराचरण मे प्रवृत्ति नहीं होती। यह सुनिश्चित सिद्धान्त है। जिस प्रकार कठोर अनुशासक पिता या आचार्य की उपस्थित के ज्ञान मात्र से बालक दुष्ट कर्म नही करते, उसी प्रकार घोर दण्ड भय पालनीय प्रजाजनो को अधार्मिक नही होने देता उन्हे धर्मात्मा बनाने का एक मात्र उपाय न्याय विधान की कठोरता ही है। दण्ड विधान की कठोरता और सुगमता पर विचार करते हुए महर्षि दयानन्द जी लिखते है–कि दण्ड यथाशास्त्र यथापराध कठोर या सुगम होना चाहिए सामान्य अपराधो पर सुगम दण्ड अपेक्षित है किन्तु चोरी दुराचार अनृतसाम्य जैसे अपराधो पर कडा दण्ड अवश्य दिया जाये ताकि आगे यह पापाचरण न दोहराये जा सके। कभी हमारे देश मे इसी कठोर व्यवस्था के आधार पर महाराज अश्वपति जी ने सन्यासियो के समक्ष यह सत्य घोषणा की थी–

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यप।
नानाहिताग्नि नाविद्वान न स्वैरी स्वैरिणी कुत ॥

उन्हे गर्व था अपनी प्रजा के पावन चरित्रो पर जिसमे कोई भी चोर, कायर, शराबी, अग्निहोत्र न करनेवाला, मूर्ख अथवा स्वेच्छाचारी नही था। जब पुरुष वर्ग मे ही कोई दुरात्मा नही था तो देवियो मे अपराध होना तो असम्भव ही था। आज विदेश यात्रियो के मुखसे पश्चिमीय देशो के स्वच्छ प्रशासन, बेईमानी, चोरी आदि का अभाव सुनकर यही समझ मे आता है कि अपराधो पर तात्कालिक कठोरदण्ड विधान से ही ऐसी स्थिति सम्भव है।

दण्ड व्यवस्था मे विलम्ब और अन्याय ने वर्तमान राजनीति को दूषित कर अराजकता को जन्म दिया है। परिणाम प्रत्यक्ष है।

श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान का अप्रैल १६८६ के कार्यक्रम

(१) १-४-८६– लखनऊ से वापसी सीतापुर आर्य समाज मे रात्रि बरेली म भ षण साय साढ़े सात बजे मेरठ पहुचे
(२) २ से ३-४-८६ नौचन्दी मेले मे विषम परिस्थियो मे वैदिक साहित्यप्रचार केन्द्र का स्टाल प्रारम्भ
(३) ४ से ५-४-८६ आर्य समाज हरिद्वार एव कुम्भ मेला वेद प्रचार शिविर मे
(४) ६ से ७-४-८६ मेरठ मे आर्य समाज के कार्य
(५) ८ से ६-४-८६ हरिद्वार कुम्भ मेला वेद प्रचार शिविर
(६) १०-४-८६ मेरठ कुम्भ के लिए धन सग्रह
(७) ११ से १२-४-८६ कुम्भ वेद प्रचार कैम्प हरिद्वार तथा गुरुकुल कागडी के दीक्षान्त समारोह मे तथा कैम्प के लिए चन्दा एकत्र किया
(८) १३ से १४-४-८६ सैनिक विधवाओ एव अपग सैनिको १००) रु० के बर्तनो के ३० सैट भेट
, व्यापार मडल पुल बेगम पर नव सवत्सर यज्ञ मे प्रवचन तथा सवाना के लिए प्रस्थान
(९) १५-४-८६ यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति मेरठ मे प्रवचन
(१०) १६-४-८६ आर्यसभा की अन्तरग की अध्यक्षता तथा रात्रिमे मेला नौचन्दी के वैदिक साहित्य प्रचारकेन्द्रमे डियुटी
(११) १७-४-८६ दिल्ली तथा रात्रि नौचन्दी
(१२) १८-४-८६ बाहर से लोगो का आगमन मेरठ मे आर्य समाज के काम से लखनऊ के लिए प्रस्थान
(१३) १९-४-८६ लखनऊ रात्रि को वापसी
(१४) २०-४-८६ आर्य समाज मे एक प्रौढ विवाह

(शेष पृष्ठ १० पर)

अब हरियाणा हरि बोल!

[श्री क्षितीश जी वेदालङ्कार]

आयोगों का भी यह कैसा योगायोग है कि वे सदा हरियाणा को ही कसते हैं। कभी बहुधान्यक के नाम से प्रसिद्ध सिकन्दर के तथा अन्य विदेशी आक्रमणकारियों के दांत खट्टे करने वाले यौधेयों की यह भूमि भी कैसी विचित्र है कि राष्ट्र हित के नाम पर जब जब उसे कसौटी पर कसा गया तब तब वह खरी उतरी। पानीपत के मैदान में बारम्बार हार कर भी न तो उसने अपना पानी गंवाया न पत गंवाई। अब उसका पानी और पत दोनों कसौटी पर थे तो फिर उसने राष्ट्र हित की खातिर वेंकट रमय्या आयोग की रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया।

जरा हरियाणा के धैर्य को बानगी देखिए। शाह आयोग ने फैसला दिया कि चण्डीगढ़ हरियाणा को दिया जाये क्योंकि वह हिन्दी भाषी है केवल इसीलिए नहीं बल्कि इसलिये भी कि स्वयं चण्डीगढ़ की जनता ऐसा चाहती है। शाह आयोग के सामने जितने गवाह आए सबने यही बात कही। आज तक चण्डीगढ़ से जीत कर आने वाला प्रत्येक सदस्य भी इसी मुद्दे पर जीतकर आता रहा कि चण्डीगढ़ हरियाणा को मिले या केन्द्र के आधीन रहे। पर सबसे पहले इन्दिरा गांधी ने ही इस फैसले को तोड़ा।

आज यह बात सुनने में विचित्र लग सकती है पर इन्दिरा गांधी ने खासतौर से सिखों की समय समय पर जितनी प्रशंसा की उतनी प्रशंसा आज तक अन्य किसी राष्ट्रीय नेता ने नहीं की होगी। सिखों के प्रति यदि इन्दिरा गांधी के मन में कोमल भाव न होता तो वह पंजाब का विभाजन कभी न करती। आखिर पं० जवाहरलाल नेहरू के समय आमरण अनशन और आत्मदाह की धमकियां कितनी बार आईं पर नेहरू जी टस से मस नहीं हुए। इन्दिरा गांधी ने देश की बागडोर सम्भालते ही सिखों की मांग मानकर हरियाणा को अलग करके पंजाब में सिखों का बहुमत बनाया। चण्डीगढ़ भी सिखों को देने की घोषणा की।

कहा जाता है कि चण्डीगढ़ बना ही पंजाब के लिए था। पर यह दावा करने वाले यह भूल जाते हैं कि जिस पंजाब के लिए यह सुन्दर शहर बना था वह पंजाब विभाजित पंजाब नहीं था बल्कि वह संयुक्त पंजाब था जिसमें हरियाणा और हिमाचल भी शामिल थे। इसलिये चण्डीगढ़ पर जितना विभाजित पंजाब का है उससे कम किसी भी हालत में हरियाणा और हिमाचल का नहीं है। पर सिखों का मन रखने के लिये इन्दिरा गांधी ने चण्डीगढ़ केवल पंजाब को देने की घोषणा की और अबोहर फाजिल्का हरियाणा को। हालांकि चण्डीगढ़ के बदले अबोहर फाजिल्का देना ऐसा ही था जैसे महल के बदले झोंपड़ी देना। पर हरियाणा ने मन मार कर यह भी स्वीकार किया।

फिर आया राजीव लोंगोवाल समझौता। उस समय समझौते में यद्यपि राजस्थान और हरियाणा कोई पार्टी नहीं थे और उन दोनों राज्यों की अनुमति के बिना उनके बारे में कोई समझौता करना सुसंगत भी नहीं था। पर समझौते में स्पष्ट ही उन दोनों राज्यों को पंजाब की दया पर छोड़ने की झलक थी। फिर भी उक्त दोनों राज्यों ने उस समय कोई बावेला नहीं मचाया और प्रधान मन्त्री की सदाशयता पर विश्वास किया। [शेष पृष्ठ ८ पर]

लाला लाजपत राय

(पृष्ठ २ का शेष)

पता चला। वे क्षुब्ध हो उठे। क्रान्ति का कार्य तीव्र गति से चलने लगा असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। लाला जी पुनः बन्दी बनाये गए। अभियोग चला और एक वर्ष की कड़ी सजा सुनाई गई।

असहयोग आन्दोलन के परिणाम स्वरूप लाला जी ने एक स्वतन्त्र शिक्षण संस्था की आवश्यकता अनुभव करते हुए तिलक राष्ट्रीय विद्यालय खोला जिसे उन्होंने ४० हजार रुपये का पुस्तकालय तथा १ लाख ५० हजार रुपये का मकान दे दिया। देश सेवा के लिए आपने (सर्वेन्ट्स आफ दि पीपुल सोसाइटी) स्थापित की।

हिन्दू मुस्लिम एकता के बड़े पक्षपाती थे। परन्तु जब उन्होंने देखा कि मुस्लिम सम्प्रदाय को प्रसन्न करने के लिये हिन्दू हितों का बलिदान होता है तो उन्होंने हिन्दू संगठन के लिए कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। १९२५ में लाला जी कलकत्ता हिन्दू महा सभा के अध्यक्ष बने।

३० अक्तूबर १९२८ में साईमन कमीशन लाहौर पहुंचने वाला था। पंजाब में जनजागृति बहुत थी। काले झण्डे लिए जनता का विशाल जन समूह स्टेशन की ओर बढ़ना प्रारम्भ हुआ। लाला जी उस विशाल जलूस का नेतृत्व कर रहे थे। पुलिस ने भयंकर लाठीचार्ज आरम्भ किया। लाठियां बरसना प्रारम्भ हुईं परन्तु लाला जी आगे बढ़ते ही चले गये। लाला जी पर भी लाठियां बरसनी प्रारम्भ हुईं। लाला जी की छाती में बहुत बड़ा घाव आया। इतनी गम्भीर चोट के बाद भी लाला जी सायंकाल इस नृशंस काण्ड के विरुद्ध हो रही एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करने चल गए। बड़े ओजस्वी शब्दों में उन्होंने कहा—मेरे पर पड़ी अंग्रेज सरकार की एक एक लाठी अंग्रेजी शासन के जनाजे में एक एक कील का काम देगी। सिंह गर्जना हो गई। वह पंजाब का शेर लाठी प्रहार के पश्चात् कमजोर होता चला गया परन्तु उसका मनोबल बढ़ता चला गया। अन्त में १७ नवम्बर १९२८ को प्रातः ७ बजे वह देश भक्त भारत को स्वतन्त्रता के लिये बलिदान हो गया। शवयात्रा बड़ी विशाल थी। हजारों नर नारी रोते हुये और यह गाते हुये जा रहे थे—

जुल्म है लाला हमारा चल बसा—हिन्द की आंखों का तारा चल बसा।
कौम को जिसने सींचा खून से—देश के दर्द गम का मारा चल बसा॥
खून के आंसू बहा लो हिन्दुओ—रहनुमा था जो तुम्हारा चल बसा।
आन रखो काम की पर जान दो जुल्म डण्डा का मारा चल बसा॥
यह तमन्ना थी कि मुल्क आजाद हो सल्तनत की जड़ का मारा चल बसा।
शर्म नौकरशाही कुछ तो शर्म कर हाय शेरे नर हमारा चल बसा॥

बड़ा कारुणिक दृश्य था। बाल वृद्ध पुरुष क्रन्दन करते चल रहे थे। रावी के किनारे सायं ५ बजे अन्त्येष्टि संस्कार हो गया। देश भर में हाहाकार मच गया।

आज पंजाब की दुर्दशा इसलिये है कि पंजाब का कोई नेता नहीं है। लाला जी का बलिदान ही पंजाब समस्या का समाधान है।

आओ! संकल्पशील होकर देश की स्वतन्त्रता एकता और अखंडता की रक्षा करें।

संपादक के नाम पत्र

मान्यवर,

गत वर्षों में मैंने—देश विदेश की अनेक यात्राय की है। इन यात्राओं के मध्य आर्य समाज की स्थिति का अध्ययन मेरा प्रिय विषय रहा है। मैंने यह अनुभव किया है कि बुद्धिजीवी वर्ग आर्य समाज से उदासीन हो रहा है। पर उसके हृदय में आर्य समाज के लिए तड़प है। वह आर्य समाज को दिशा निर्देश करने के लिए लालायित है। उसके पास आर्य समाज को और अधिक सक्रिय करने के लिये अनेक सुझाव है।

यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि आज देश सांस्कृतिक दृष्टि से खोखलपन का अनुभव कर रहा है। पश्चिम के अन्धानुकरण के कारण वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ है। वह भटक रहा है और उसे कोई मार्ग नहीं सूझ रहा। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व आर्य समाज ने देश का सांस्कृतिक नेतृत्व किया था। सच बात यह है कि वह आज भी ऐसा कर सकता है। यदि आर्य समाज से प्रत्यक्षाप्रत्यक्षरूप से जुड़ा बुद्धिजीवी वर्ग दृढ़ संकल्प लेकर खड़ा होकर आर्य समाज को गतिशील बना दे तो देश की काया पलट ही सकता है।

मैं चाहता था कि दिसम्बर १९८६ से मार्च १९८७ के मध्य कभी आर्य समाज से सम्बद्ध एवं आर्य समाज के हितैषी बुद्धिजीवियों—प्राध्यापकों, चिकित्सकों लेखकों, पत्रकारों अभियन्ताओं आदि का एक सम्मेलन बुलाया जाय जिसमें देश विदेश की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की भूमिका पर विचार किया जाए।

३१ मई १९८६ को सायं ५ बजे स्वामी विद्यानन्दजी की अध्यक्षता में उक्त सम्मेलन की रूप रेखा तयार करने के लिए एक प्रारम्भिक बैठक आयोजित की गयी थी, जिसमें श्री क्षेमचन्द्र सुमन डा० कृष्णलाल, प्रो० वेदव्रत डा० सत्यदेव चौधरी श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री मांगेराम प्रो० आदित्य आर्य श्री गम्भीर, श्री सक्सेना, डा० कृष्णा चतुर्वेदी, श्रीमती पुष्पा आदि अनेक बुद्धिजीवी एकत्र हुए और सभी ने उक्त सम्मेलन की आवश्यकता अनुभव की वहां यह विचार भी बना कि बुद्धिजीवियों के एक विराट सम्मेलन से पूर्व भूमिका रूप में प्रादेशिक स्तर पर सम्मेलन आयोजित किये जाय और बुद्धिजीवियों को आर्य समाज के कार्य में सक्रिय किया जाये।

मुझे विश्वास है कि आप भी आर्य समाज को गति देने के लिये उक्त प्रकार के सम्मेलन को आयोजित करने के पक्ष में होंगे।

(१) आपसे निवेदन है कि आप अपने प्रदेश के बुद्धिजीवियों की एक सूची हमारे पास भेजें।

(२) यदि आप अपने यहां एक उक्त प्रकार का सम्मेलन आयोजित कर सकें तो अक्टूबर मास के बाद कभी वह आयोजित करें और उसकी हमें सूचना भी दें। (३) उक्त सम्मेलन के सबंध में आपके जो भी सुझाव हों वे लिखित रूप से भेजें। अर्थात उस सम्मेलन के विचारणीय विषय क्या है। (४) हम उक्त सम्मेलन के सम्बन्ध में एक राष्ट्रीय समिति का गठन करना चाहते हैं, आप अपने प्रदेश से कुछ नाम व पते भेजें ताकि हम उसमें से कुछ नामों का चयन कर सकें। (५) आप भी प्रादेशिक स्तर पर एक कार्य समिति का गठन करें।

प्रशान्त वेदालङ्कार
७/२/ रूप नगर
दिल्ली ७

भारत ही विश्व को शांति का पाठ पढ़ा सकता है

१० जून ८६, राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने आज कहा कि विश्व शांति के लिये निःशस्त्रीकरण की बहुत आवश्यकता है। भारत ही विश्व को शांति का पाठ पढ़ा सकता है।

राष्ट्रपति आज यहां डा० प्रशांत वेदालङ्कार तथा उनके साथियों को इटली, फ्रांस व स्विटजर लैण्ड की शांति पदयात्रा में भाग लेने के लिये जाने वाले एक प्रतिनिधि मण्डल को सम्बोधित कर रहे थे। इस यात्रा का उद्देश्य निःशस्त्रीकरण का प्रचार करना है। यह यात्रा २० दिनों तक चलेगी जिसमें विश्व के अनेक देश शामिल होंगे। भारत से २५ सदस्यों का प्रतिनिधि मण्डल जायेगा।

डा० प्रशान्त व उनकी धर्मपत्नी डा० सरोज दीक्षा विद्यालङ्कार (प्राध्यापिका श्यामाप्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय दिल्ली) को लन्दन आर्य समाज से निमन्त्रण मिला है। वे इन देशों के अतिरिक्त इंगलैण्ड, हालैण्ड, बेल्जियम तथा पश्चिम जर्मनी में भी जायेंगे जहां वे वैदिक व भारतीय संस्कृति का प्रचार व प्रसार करेंगे।

डा० प्रशान्त उक्त देशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने वाली सभा संस्थाओं में जाकर वहां भारतीय संस्कृति के और अधिक प्रचार की संभावनाओं का पता लगायेंगे साथ ही वे वहां के विश्वविद्यालयों में हिन्दी संस्कृत तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की स्थिति एवं वहां भारतीय दर्शन तथा पुरातत्व विषयक अध्ययन का सर्वेक्षण करेंगे।

डा० प्रशान्त ने अपनी प्रथम यूरोप यात्रा के अवसर पर यूरोपवासियों के लिए अपनी एक पुस्तक 'धर्म इन मोडर्न सोसाइटी' भी लिखी है, जिसमें आज के जीवन में धर्म की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला है। पुस्तक से स्पष्ट है कि भारत आज भी पश्चिम को बहुत सिखा सकता है।

सम्वाददाता

उत्तरकाशी में आर्य महा सम्मेलन सम्पन्न

गढ़वाल वेद प्रचार समिति देहरादून के तत्वावधान में उत्तरकाशी में एक विशाल आर्य महा सम्मेलन का आयोजन हुआ तथा दिनांक २३ मई ८६ को श्री ठाकुर सिंह जी नेगी की अध्यक्षता में एक भव्य शोभा यात्रा भी निकाली गई। इस समारोह की सफलता में स्थानीय जनता का विशेष योगदान रहा। उत्तरकाशी में यह आर्य समाज का पहला प्रचार था। इस समारोह में आचार्य श्री सत्यव्रत बागीश जी प्रो० गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार, श्री प० रामचन्द्र शर्मा भजनोपदेशक के अतिरिक्त आर्य जगत के प्रतिभावान् विद्वान, वक्ता सम्मलित हुए। इसी अवसर पर करीब १८ व्यक्तियों के सहयोग से उत्तरकाशी में नवीन आर्य समाज का गठन हुआ जिसका प्रथम सत्संग २६ मई को समाज के मन्त्री के निवास स्थान पर किया गया। इस नवीन आर्य समाज के निम्न नवीन पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान श्री मोहनलाल जी शाह, मन्त्री श्री सत्यदेव गुप्त, कोषा० श्री सुमन रावत जी। ज्ञातव्य हो कि यह क्षेत्र ईसाई और मुसलमान प्रचारकों का गढ़ है अतः यहां आर्य समाज की अत्याधिक आवश्यकता थी, समस्त आर्य बन्धुओं से अनुरोध है कि उक्त नवीन आर्य समाज को बधाई सन्देश भेजकर उत्साह वर्धन करें।

उम्मेद सिंह आर्य विशारद

कैसे वे इंसान बने हैं

कैसे वे इंसान बने हैं जिनके दिल में प्रीत नहीं है
बिन मरहम के क्या जग में सुन्दर सुन्दर गीत बने कभी है।
क्रूर हृदय कटक भी एक दिन अपना मीत बना लेते हैं।
वतन फरोशी की उमंग में हंस हंस प्राण लुटा देते हैं।

हे माटी के मानव सुन लो, तुम्हें भी माटी में मिल जाना,
स्नेह नेह कर सीख लो, मत सोचो विरान बसाना।
तुममें पुष्पलता है अच्छी लिपट लिपट कर आग बढ़ती
कमल दूर कुमुदिनी खिलती कैसी भैय्या सुन्दर लगती।

मत बनो सर्प तक्षक नागिन जैसी प्रीत निभाओ
दहक रही विखण्ड ज्वाला, उसमें स्नेह का नीर बहाओ।
कब तक कत्लआम करोगे इस अबोध जनता का साथी,
मांगेगा हिसाब तुम्हारा वाहे गुरु अल्लाह ताला साथी।

क्या चौरासी योनी का क्या तुमको आभास नहीं है
जीवन कब बन जाय मरघट इसमें भी विश्वास नहीं है।
एक दिन सबको है मुझाना इस जग की बगिया में साथी
मिटा रहे हो धीरे धीरे, अपने आप ग्रन्थों की ख्याती।

दोजख तुमको धिक्कारेगा क्यों करते हो खून खराबा
धिक्कारेगा तुमको भैय्या गुरु साहिब काशी और काबा।
मत बनो अरे फरेबी बुला रहा रसखान तुम्हारा
भूल गए अब्दुल हमीद को जो सबका रहा दुलारा।

गुरु मौलवी पण्डित के चक्कर में खण्डित भारत क्या करते हो,
अरे विवेकशील होकर क्यों तुम गलत कदम धरते हो।
गले मिलो भाई भाई से प्रीत निभानी भैय्या सीखो,
एक हमारा हिन्दुस्तान है ये इकबाल के गीत सीखो।

बाबरी मस्जिद के चक्कर में एक दिन भैय्या को न जाना,
नफरत की आंध में भैय्या भटक भटक कर मत न जाना।
क्यों किदवई भगत को भैय्या का बुला रहे हो धीरे धीरे,
बिछुड़ा भैय्या बहने बहों की आंख रोती होगी धीरे धीरे।

ये मन्दिर है वतन तुम्हारा, मत इसको वीरान बनाओ,
सजा नहीं सकते हो तुम मत इसकी शान मिटाओ।
सिसक सिसक रो उठेगा अर्जुन देव अशरफ-उल्लाह तुम्हारा,
हम एक हैं एक रहेंगे उद्घोष करता अभय दुबारा।-

—वेद प्रकाश कांशिन 'अभय' १५५ एन ई दयानगर-१ मेरठ-१ उ०प्र०

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ का वार्षिक साधारण अधिवेशन

श्रीमान् मन्त्री जी आर्यसमाज '

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ गाजियाबाद का वार्षिक साधारण अधिवेशन १३ जौलाई ८६ का स्थान बुढाना गेट आर्यसमाज मेरठ पर दिन के एक बजे सम्पन्न होगा। उपसभा के नियमोपनियम की धारा ४ खण्ड २ (उप सभा से सम्बद्ध प्रत्येक आर्यसमाज का ६ आर्य सभासदों तक एक उसके ऊपर प्रत्येक ६ या इसके किसी अंश पर एक प्रतिनिधि जिलोप सभा में भेजने का अधिकार होगा) के अनुसार आर्य समाज से प्रतिनिधि निर्वाचित करके वार्षिक साधारण सभा में भेज दें।

- प्रियव्रत शास्त्री
आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला मेरठ
उप कार्यालय बरवना, मेरठ

अब हरियाणा हरि बोल !

(पृष्ठ ६ का शेष)

तब आया मैथ्यू आयोग यह फैसला करने के लिए कि हरियाणा को कौन कौन से गांव दिये जाएं। मैथ्यू आयोग में सच कहने की हिम्मत होती, तो वह भाषा के आधार पर अबोहर फाजिल्का हरियाणा को देने का फैसला करता। पर तब कन्दूखेड़ा ने बखेड़ा खड़ा कर दिया। मरहम की शान ने अबोहर-फाजिल्का हरियाणा को नहीं देने दिया। हमें न्यायाधीश महोदय की नेकनीयती पर शक नहीं है। पर उन्हें स्पष्ट रूप से यह कहना चाहिए था कि सरदार प्रतापसिंह कैरों के समय उनके वित्त मन्त्री ज्ञानी करतारसिंह ने कन्दूखेड़ा को मुक्तसर तहसील में मिलाकर जान बूझ कर शरारत की थी अब उस शरारत को ठीक किया जाना चाहिए। या वे यह कह सकते थे कि न्यायाधीश का काम केवल शब्दों पर जाने के बजाय व्यावहारिक पहलू को भी देखना होता है। जैसे गणित में निकटतम पाई के सिद्धांत के अनुसार पाइयों की संख्या छोड़ दी जाती है वैसे ही राजीव लोंगोवाल समझौते की तीन शर्तें पूरी होने पर सटाव वाली कसौटी छोड़ी जा सकती है। यदि वे इतनी हिम्मत करते तो अबोहर फाजिल्का के बारे में दो टूक फैसला देने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होती। कन्दूखेड़ा और वाजिदपुर की पंजाबी भाषी पट्टी के कारण अबोहर फाजिल्का से हरियाणा को वंचित रखना किस दृष्टि से न्यायोचित कहलाएगा—हमारी समझ में नहीं आता। जरा कल्पना करिये कि हरियाणा के अन्दर यदि दो पंजाबी भाषी गांव होते और उन्हें एक हिन्दी भाषी गांव अलग कर रहा होता तो अकाली नेता सटाव की कैसी परवाह करते ?

फिर आया वेंकट रमैया आयोग। वेंकट रमैया आयोग ने तो अबोहर फाजिल्का को विचार कोटि से ही निकाल दिया, क्योंकि मैथ्यू आयोग उसे रद्द कर चुका था। उसके सामने फिर वही समस्या थी कि कौन से गांव दिए जाएं। वेंकट रमैया आयोग की खूबी देखिए। चौधरी भजनलाल ने पहले इस आयोग का बहिष्कार करने का निश्चय किया और हरियाणा की ओर से कोई दावा नहीं पेश किया। जब केन्द्र का दबाव पड़ा, तो ४८३ गांवों की लगभग ४॥ लाख एकड़ भूमि का दावा पेश किया। इससे पहले आयोग अपना मन बना चुका था। उसने इस दावे पर विचार करने से ही इन्कार कर दिया क्योंकि दावा पेश करने का समय निकल चुका था। आयोग की अवधि दस दिन और बढ़ने पर भी आयोग ने उस दावे पर विचार नहीं किया तो नहीं ही किया और अपनी ओर से चण्डीगढ़ के बदले और अबोहर फाजिल्का के भी बदले (जिसकी भूमि ४॥ लाख एकड़ थी) सत्तर हजार एकड़ भूमि देने की सिफारिश कर दी। मजेदार बात यह कि यह सत्तर हजार एकड़ भूमि कौनसी होगी इसका फैसला वेंकट रमैया आयोग ने नहीं किया उसके लिए नया आयोग बिठाने की सम्मति दी और साथ ही अपनी ओर से क्षमा मांग ली कि अगले आयोग का काम शुरू न हो पाए।

मैथ्यू आयोग मिथ्या आयोग सिद्ध हुआ, वेंकट रमैय्या आयोग कटमरैया आयोग बन कर रह गया—अब आपस में ही कट मरो हमारी बला से। अब जरा कल्पना करिए—कहां ४॥ लाख एकड़ कहां सत्तर हजार एकड़। अन्याय की भी न कुछ हद हो। उससे भी बढ़कर चमत्कार यह देखिए कि जिस हरियाणा को शिकायत होनी चाहिए थी उसने फिर राष्ट्रहित में यह रिपोर्ट स्वीकार कर ली और पंजाब फिर आनाकानी कर रहा है। हरियाणा के चाहे कितने ही 'लाल' हों—चाहे भजन लाल, चाहे देवीलाल और चाहे बंसीलाल, हे यौधेयों की भूमि ! इन लालों में से कोई तेरे हित की रक्षा करने वाला नहीं है। तुझे अपनी रक्षा अपने आप ही करनी पड़ेगी। तूने ही राष्ट्र हित के लिए कुर्बानी दनी है, और उन अकाली राज नेताओं को भी सीधे रास्ते पर लाना है जो कोई युक्ति और तर्क सुनने को तैयार नहीं हैं।

जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है तो उत्तर भारत में शवयात्रा के समय 'राम नाम सत्य है' की आवाज दिशाओं में गूंजती है। वैसे ही बंगाल में 'हरि बोल' के बोल गूंजते हैं। यदि हरियाणा में बराबर अपमान सहकर भी कोई क्षोभ उत्पन्न नहीं होता, तो हे हरियाणा ! 'अब हरि बोल !''

('आर्य जगत' से साभार)

श्री उमेशचन्द्र स्नातक सभा के निरीक्षक नियुक्त

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जो ने अपने आदेश पत्रांक मे० १७०५/२ दिनाक २७-४-८६ द्वारा श्री उमेश चन्द्र जी स्नातक, प्रवक्ता वैदिक इण्टर कालेज विबियापुर (इटावा) को आय समाजो के निरीक्षण हेतु सभा का निरीक्षक नियुक्त किया है। आय समाजें उनके निरीक्षण कार्य मे सहयोग देकर अनुग्रहीत करें। सम्वाददाता

ग्रन्थ प्रकाशनार्थ प्रार्थना

बिगत अनेक वर्षों से मै स्वामी दयानन्द एव आर्य समाज विषयक शाधपूर्ण साहित्य लिख कर यत् किंचित् साहित्य सेवा कर रहा हू। इस समय मैने दो नवीन ग्रन्थ लिखे जो प्रकाशनार्थ तैयार हैं—

१— स्वामी दयानन्द को प्रशस्ति मे लिखी गई सुन्दर एव काव्यपूर्ण सस्कृत रचनाओ का (हिन्दी भाषानुवाद सहित) सग्रह।

—२ स्वामी दयानन्द के भक्त, अनुयायी, प्रशसक तथा सहयोगी व्यक्तियो के जीवनवृत तथा स्वामी जी से उनके सम्बन्धो को विवेचना युक्त ग्रन्थ। इसमे उन पुरुषो के विवरण एकत्र किये गये हैं जो आर्य समाजी न होकर भी स्वामी जी के प्रेमी, भक्त, प्रशसक तथा सत्सगी थे। इन पुरुषो के दुर्लभ चित्रो को भी पुस्तक मे दिया जाएगा।

उपर्युक्त दोनो ग्रन्थो के मुद्रण हेतु आर्थिक सहायता की आवश्यकता ह। यद्यपि धनी मानी आर्य पुरुष भवनो, दूकानो और कमरों के बनवाने मे तो प्रचुर दान देते हैं किन्तु साहित्य के प्रकाशन मे उनसे समुचित सहायता नहीं मिलती। मैने अनेक धनी मानी आय पुरुषो से इस सबध मे निवेदन किया, किन्तु अकेले वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी (जो स्वय सन्यासी ह) ने तो एतदर्थ सहायता करने का वचन दिया ह, अन्य महानुभावो ने मुझे सहायता का आश्वासन तक नहीं मिला है। अत मेरा सब आर्य समाजो से निवेदन ह कि वे न्यूनातिन्यून १०० रु० इन ग्रन्थो के प्रकाशन हेतु मुझे निम्न पते पर भेजें। ग्रन्थ छपने पर उतने ही मूल्य की पुस्तकें उन्हें भेंट की जायेंगी। इस प्रकार उनकी यह सहायता दान न होकर सहयोग रूप मे ही होगी और साहित्य के यज्ञ मे उनकी समुचित आहुति भी पड़ सकेगी। निवेदक

डा० भवानीलाल भारतीय
जी—३ सैक्टर १४ पजाब विश्व-
विद्यालय, चण्डीगढ़,—१६००१४

विद्यालय हेतु दान

आर्य समाज बिसोली बदायू की ३० मई ८६ को बैठक मे आय बाल मन्दिर खोलने का निर्णय हुआ इस अवसर पर समाज के भू० पू० प्रधान श्री कल्याण राय जी ने पच्चीस हजार रुपये अपनी धर्मपत्नी के नाम से 'ज्ञानदेवी आर्य बाल विद्या मन्दिर' हेतु प्रदान करने की घोषणा की इस पुनीत कार्य हेतु समाज की ओर से उन्हे धन्यवाद दिया गया। मन्त्री आर्य समाज

—आर्य समाज बढ़ौली (अलीगढ) का वार्षिकोत्सव दिनाक ४ जून से ६ जून ८६ तक सोल्लास मनाया गया। मन्त्री आर्य समाज

—आर्य समाज मतलबपुर (सहारनपुर) का दसवां वार्षिकोत्सव दिनाक ८ से १० जून ८६ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। मन्त्री

उत्सव

आर्य समाज कृष्णानगर प्रयाग का होरक जयन्ती समारोह (७५वा) वर्षगाठ माह नवम्बर ८६ मे हर्षोल्लास एव धूम धाम से सम्पन्न होगा जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, वक्ता एव भजनोपदेशक सम्मलित होगें। इस अवसर पर अनेको कार्यक्रमो का आयोजन होगा। मन्त्री आय समाज

आर्य समाज अपराहा का वार्षिकोत्सव दिनाक २६ अक्टूबर से २८ अक्टूबर ८६ तक सोल्लास सम्पन्न होगा। मन्त्री आय समाज

आर्य समाज नकुड (सहारनपुर) मे दिनाक १५ जुलाई ८६ से १९ जुलाई ८६ तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है। जिसमे पाच दिन तक श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु (अबोहर) के द्वारा वेद कथा होगी। मन्त्री आय समाज

सूचना

लखनऊ जनपद मे साप्ताहिक आर्यमित्र की सुरक्षित प्राप्ति के लिये हमारे निम्न प्रतिनिधि से सम्पर्क करें — ज्ञानकृष्ण

सयोजक, वैदिक प्रचार केन्द्र
सामने लाजपत नगर, चौक, लखनऊ—३

आय जगत

—आर्य समाज भवाली (नैनीताल) का ६४ वा वार्षिकोत्सव धूम-धाम से सम्पन्न हुआ जिसमे आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी तथा आर्य जगत के अन्य प्रमुख विद्वान एव वक्ता सम्मलित हुए उत्सव प्रभावशाली रहा। हृदेश दोपाली पत्रकार

—ग्राम मुरई (सीतापुर) मे दिनाक २३ से २४ मई ८६ का व्यापक रूप से वेद प्रचार काय सम्पन्न हुआ। सभा भजनोपदेशक श्री युगुल-किशोर के मधुर भजन एव प्रभावशाली प्रवचन हुए। मन्त्री

—आर्यसमाज पहुच कटरा के मन्त्री श्री ब्रह्मदेव आर्य की आयुष्मती सुपुत्री कु० सरलादेवी का शुभ पाणि ग्रहण सस्कार ग्राम भगाहा पो० खरगूपुर जनपद गोण्डा के श्री खुशाराम जी के पुत्र श्री शेषराम आय के साथ बिना दहेज और अत्यन्त सादगी पूर्ण वातावरण मे वैदिक विधि से दिनाक १ जून ८६ को सम्पन्न हुआ। सस्कार—सत्य नारायण द्विवेदी "विजय" विद्या वाचस्पतिने सम्पन्न कराया वर पक्ष से २१) रु० समाज को दान स्वरूप प्राप्त हुए। वर वधू को आशीष मिला। —सवाददाता

विश्व कल्याण आश्रम द्वारा १२०० ईसाइयो का हिन्दूधम मे प्रवेश

बिहार ६ जन विश्व क ग आश्रम सिंहभूम बिहार ज्योतिपीठ एव द्वारका शारद पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी के सहयोग से १ ईसाइयों ने अ भा० आध्यात्मिक उत्थान मण्डल के माध्यम से काला कोकिला के पवित्र संगम मे स्नान करके अपने पूर्वजो के धम हिन्दू धर्म म प्रवेश किया। सवाददाता

दो मुस्लिम युवक हिन्दू बने

कानपुर— आर्यसमाज गोविन्द नगर मन्दिर म प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र के उपाध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने दो शिक्षित युवको को उनकी इच्छानुसार वैदिक धम (हिन्दू धर्म) म दीक्षित किया २१ वर्षीय असद अली का नाम अजय कुमार तथा नासाब आलम जो स्नातक तक शिक्षा प्राप्त है का नाम विजय कुमार रखा गया

श्री आर्य ने शुद्धि म के बाद विजय कुमार का विवाह कु० रेखा स वैदिक रीति से सम्पन्न करा या समारोह मे उपस्थित लोगो ने उन पर पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद दिया मन्त्री आर्य समाज

श्री ओ३मप्रकाश त्यागीजी को श्रद्धांजलि

प्रान्त की निम्न आर्य समाजो ने श्री त्यागी जी के स्व आत्मा की शान्ति तथा शोकाकुल परिवार जनो के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है

आर्य समाज (मथुरा) आर्य प्रतिनिधि सभा आध्र प्रदेश जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लोनी आर्य समाज विनय नगर कासिमपुर (अलीगढ) आर्य समाज हाजीपुर (मिर्जापुर) आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर आर्यसमाज बक्सर भोजपुर बिहार आर्यसमाज आनन्द गढ आर्यसमाज फतेहपुर (बहराइच) आर्य कुमार सभा गोण्डा

आर्य नेता श्री बिमल कुमार आर्य की पूजनीया माता जी का निधन

दुखद समाचार है कि आर्य प्रतिनिधि सभा प्र के युवा नेता श्री बिमल कुमार आर्य की पूजनीया माता जी आर्य समाज लोनी (हरदोई) के प्रधान श्री बजरंग लाल आर्य के प्रधान का कम के ल की बीमारी के उपरान्त दिनांक म के निधन हो गया उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ आर्य समाज लोनी, विद्या मन्दिर आदि ने शोक सभा करके हुए दिवगत आत्मा की चिर शान्ति तथा शोकाकुल परिवार जनो के असीम धैर्य धारण हेतु प्रभु से प्रार्थना की —प्रमशंकर आर्य प्रचार मन्त्री

सभा भजनोपदेशक श्री जगत वीर सनेही के पुत्र का निधन

दुखद समाचार है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र के भजनोपदेशक श्री जगतवीर सनेही के युवा पुत्र श्री विश्व वीर जी का आकस्मिक निधन दिनांक १९ जून को हो गया प्रभु दिवगत आत्मा को शान्ति एवं इस महान दुख में स्नेही जी के परिवार जनों को धैर्य प्रदान करे। —योगेन्द्र कुमार

आर्य समाज नवन एव गुरुकुल बनत के उप प्रधान श्री डा सुमेरसिंह जी के पिता श्री विक्रम सिंह जी आर्य का हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। दिन क १ जन को गुरुकुल वासियों ने शोक सभा मे दिवगत आत्मा के सद्गति तथा परिवार जनो के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की। मन्त्री

—श्री धर्मदेव प्रसाद आर्यसमाज के एक कर्मठ कार्यकर्ता और आसनसोल आर्यसमाज के मन्त्री रहे जून ८ को निधन हो गया। आसनसोल आर्य समाज में शोक सभा —सुरजदेव प्रसाद

(पृष्ठ ५ का शेष)

(१५ २१ ४ ८६	आर्य भवन मे पजाब दिवस तथा राष्ट्रवासी भाइयो के लिए ५० ०) रुपये भेजने की घोषणा आर्य स्त्री समाज म प्रवचन।
(१७ २२	एक गरीब विधवा की सुपुत्री के विवाह म धन सग्रह करके ११५०) रुपये दिए मौखरा म स्टाल पर
१) २	मरठ म कार्य
(१) ४	मुजाहिदपुर ग्राम मे प्रवचन
(१६) ५	मरठ म कार्य
(२० ५	सरस्वती शिशु मन्दिर म कन्या न कन्द पाचवी कक्षा विदाई समारोह पर प्रवचन नौचन्दी मे स्टाल पर
१	आर्य समाज बागपत मे सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक का विमोचन तथा सिमाना ग्राम मे ईसाई बिरादरी पचायत म सम्मिलित
( )	नौचन्दी मे पश्चिम भारतीय उपभोक्ता मच की ओर से साम्प्रदायिक सद्भावना समारोह म विशेष व्याख्यान
(२	मेरठ म
(	गुरुकुल विश्व विद्यालय व न

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण सस्था है। १म० कक्षा से १४ कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। १६ जुलाई १९८६ से एम० ए० की कक्षाय भी प्रारम्भ हो रही ह। उच्च प्रशिक्षण शिक्षिका वग पुस्तकालय नतिकशिक्षा चित्रकला साइन्स संगीत गृह विज्ञान सास्कृतिक गति विधि सस्था की आधार भूत विशेषताय ह। विस्तृत खेल के मदान आधुनिक सुविधाओ सहित बड छात्रावास तीसरी कक्षा से सस्कृत तथा अग्रजी प्रारम्भ नियन तथा सुयोग्य छात्राओ के लिये छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैटिक तथा इन्टर उत्तीण कन्याय भी प्रथम वष तथा तृतीय वर्ष मे प्रविष्ट हो सकती है। शिक्षा निःशुल्क दी जाती ह। ७ जुलाई से नवीन कन्याओ का दाखिला ह। प्रवश के इच्छुक महानुभाव ५) भजकर नियमावली मगा सकते ह।

दमयन्ती कपूर
आचार्या

गुण-कर्म-स्वभाव विवाह सस्कार

म ड सन अ मोरा जन १९ आर्यसमाज मन्दिर म कु० गीता (शुद्ध संस्कार से पूर्व नाम कु० नीमा) का विवाह संस्कार प्रकाश चन्द्र ठाकुर (पुत्र बनीराम जी ठाकुर अजाणी पण्डाधार जि अल्मोड़ा) के साथ सम्पन्न हुआ।

कु० एम एम / बी एड (पुत्र शकर लाल आर्य म रानीखेत) का विवाह स कार श्री उमाकांत द्विवेदी (पुत्र रामदत्तजी त्रिवेदी महजोग जि नायबरेली) के साथ सम्पन्न हुआ। —मन्त्री आर्यसमाज

विवाह सस्कार

आर्य समाज मन्दिर नाहीनि म ९ जून ८ को कु० तारा प्रवक्ता-जीवविज्ञान विभाग महाविद्यालय पिथौरागढ शुद्धि संस्कार से पूर्व — अजरा प्रधान पुत्र शम्स बन्द्र रोल ताला बाजार अल्मोड़ा) का विवाह संस्कार श्र नरेन्द्र आधकारी (पुलिस अधिकारी बिजनौर) के साथ प० प्रमदेव शर्मा एव प रामदत्त पाण्डेय साहित्यरत्न के पौरोहित्य म सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने वर वधू को आशीर्वाद दिया। — मन्त्री आर्य समाज

— आर्य समाज गया म दयानन्द सप्ताह सोल्लास सम्पन्न हुआ। प्रत्येक दिन परिवार म यज्ञ एव रात्रि को प्रवचन हुआ।

—ओम प्रकाश शर्मा

प्रवेश सूचना

विगत वर्षों की महनीय उपलब्धियों के साथ "गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर" का नवीन शिक्षा सत्र ४ जुलाई से समारम्भ होने जा रहा है। प्राचीन आश्रम पद्धति के अनुसार समग्र व्यक्तित्व के विकास पर बल देने वाली यह सस्था उत्तर प्रदेश राज्य प्रशासन से 'प्रथम श्रेणी' मे वर्गीकृत एव अनुदान प्राप्त है। सुविधा की दृष्टि से अध्यापन क्रम निम्न वर्गो मे विभक्त है।

(अ) कक्षा १ से ५ तक बेसिक शिक्षा परिषद् के नियत पाठ्य क्रमानुसार के साथ धार्मिक एव नैतिक शिक्षा अनिवार्यत दी जाती है।

(ब) प्रथमा (षष्ठ) से आचार्य (एम० ए० समकक्ष) पर्यन्त सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बन्धित प्राचीन एव सभी आधुनिक विषयो (अग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि) के अध्ययन एव परीक्षा क्रम सन्निहित है।

(स) अनुसन्धेय विषयो के गहन अध्ययन तथा सस्कृत हिन्दी विषयक स्नातकोत्तर उपाधि (एम ए, पी एच डी) हेतु स्वतन्त्र रूपेण सेवा निवृत्त विद्वानो का सान्निध्य सुप्राप्य है।

ज्ञातव्य है कि उक्त परीक्षाये समस्त राजकीय विभागो मे नियुक्ति प्रशिक्षण एव तकनीकी सस्थाओ मे प्रवेश हेतु निरापद रूप से मान्य है। बच्चे की अन्तर्हित प्रतिभा को उद्दीप्त कर व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास, भारतीय सस्कृति के प्रति रुचि अनुराग, सह अस्तित्व एव पूर्ण स्वावलम्बन की भावना मुखरित करना गुरुकुल शिक्षा पद्धति की मौलिक विशेषता है।

प्रवेशकालीन व्यय २२५) तत्पश्चात् भोजन शुल्क प्रति मास ६०) है। धृत दुग्ध वि व्यय बच्चे की आवश्यकता के अनुसार पृथक् से देय होगा। विद्युत चालित उपकरणो से युक्त गुरुकुल का एकान्त शान्त सुरम्य वातावरण अध्ययन मनन के लिए नितान्त उपादेय है।

प्रवेशार्थी सद्य सम्पर्क स्थापित करें।

प्राचार्य—
गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर
तिलहर शाहजहापुर (उ० प्र०)

कन्या गुरुकुल, हरद्वार

पो० कनखल, जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

के सुरक्षित छात्रावास, उत्तम भोजन व्यवस्था तथा याज्ञिक वातावरण मे कक्षा १ से १४वीं तक कन्याओ को शिक्षित कराने के लिए सम्पर्क करें। प्रवेश प्रारम्भ है। आचार्या।

कविराज हर्षवर्धन शास्त्री
वैद्याचार्य बी० एम० एस० आयुर्वेदाचार्य
मुख्याधिष्ठाता
कन्या गुरुकुल हरिद्वार पो० कनखल (उत्तर प्रदेश)

प्रचार के लिए साठ पैसे में दस पुस्तकें

प्रचार के लिये भेजी जाती है। धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, हवन-मन्त्र, पूजा किसकी, सत्पथ, प्रभु भक्ति ईश्वर प्रार्थना, आर्यसमाज क्या है, दयानन्द की अमर कहानी, जितने चाहें सैट मगावें।

हवन सामग्री ३-५० प्रति किलो, मुक्ति का मार्ग, ४० पैसे, उपासना का मार्ग, ६० पैसे, भगवान कृष्ण ४० पैसे सूची मगावें।

वेद प्रचारक मण्डल प्रभात रोड, दिल्ली-५

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पजाब की अकाली सरकार किसी भी तर्कसगत बात को मानने के लिए तैयार नहीं है। उन्हें चण्डीगढ तो पूरा चाहिए परन्तु घोषणा कर दी है कि "न्यायमूर्ति श्री देसाई के आयोग का नहीं मानते है और पजाब की एक इञ्च भूमि भी हरियाना को नहीं देंगे"। और सबसे बडा जो चिन्ता का विषय है वह है पजाब मे हिन्दुओ का पलायन और वहा के हिन्दुओ की नृशस हत्यायें। बरनाला सरकार के मन्त्री, बरनाला सरकार की पुलिस आतङ्कवादियो के मित्र है और बरनाला जी को छह महीने से ऊपर हो गये परन्तु न शान्ति स्थापित कर सके न पलायन रोक सके और न पजाब मे खुलेआम लगने वाले खालिस्तानी नारे रोक सके।

सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने दृढतापूर्ण शब्दो मे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी से अपील की है कि—"बरनाला सरकार भङ्ग हो, राष्ट्रपति शासन पजाब मे लागू किया जाय और वहा के सीमान्त जिले सेना के सुपुर्द हो, काश्मीर की भी धारा ३७० समाप्त हो और वहा भी तब तक राष्ट्रपति शासन रहे जब तक पाकिस्तानी समर्थक कारमीर से निकाल न दिये जाय"। मिजोरम पूर्वाञ्चल प्रदेश, दार्जिलिग का गोरखा आंदोलन समय से पहले कि वह शक्तिशाली बने समाप्त किये जाय परन्तु चाटुकारिता किसी के प्रति न दिखाई जाय, विद्रोही मुस्लिम क्षमा के योग्य नही है।

शासन यदि असफल रहा तो मै आर्यसमाज के कार्यकर्ता के नाते अपने विचारो को जनता के सामने दृढता से रखूगा और शासन को सही दिशा समझने के लिए बाध्य करूगा।

हर्ष है कि स्वामी आनन्दबोधजी हमारा नेतृत्व इस दिशा मे कर रहे है और जुलाई के द्वितीय सप्ताह से व्यापक आंदोलन के कार्यक्रम की घोषणा कर रहे है। —आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सपादक

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ जून १९८६ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते है इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) रु० मनीआडर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है।

३६४, ४५५, ४८५, ५४८, २२५१, २५६८, ३६५८, ४९४३, ८५९७, ८६१५, ८६२१, ८७८६, ८७९४, ८८७९, ८९५७, ९१४९, ९१५८, ९१७१, ९१८२, ९४५८, १०१७६, १०१७७, १०१७८, १०१८०, ११२०९, ११२१०, ११६२४, ११६२८, ११६३१, १२२०२, १२२०६, १२२०९, १२२११, १२२१३, १२२१४, १२६७६, १२६७९, १२६८०, १२९१२, १२९१३, १२९२१, १२९२३, १२९२४, १३१२२, १३१२४, १३१२७, १३१२८, १३१२९, १३४७७, १३४७८, १३४७९, १३४८०, १३४८२, १३४८३, १३४८४, १३४८५, १३४८६, १३४८७।

विनीत—
— व्यवस्थापक 'आर्यमित्र'

'आर्य्य मित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४५०७३ ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
सं० आषाढ १५
आषाढ कृष्ण १४
रविवार, ६ जुलाई १९८६ ई०

ओ३म्
आर्य मित्र
उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये नारायण आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से
श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

पंजी० न १२४९/६०
घोषणा पत्र स० ७ / २८-२-६२

वर्ष ८९] भा० आषाढ २२, आषाढ शुक्ल ६, रविवार सवत् २०४३ वि०, दि० १३ जुलाई १९८६ [अङ्क २८

प्रार्थना

ओ तच्चिमत्रस्य वरुणस्याभि-
चक्षे सूर्या रूप कृणुते द्योरुपस्थे।
अनन्तमन्यद्रु शदस्य पाज कृष्ण-
मन्यद्धरित स भरन्ति ॥

–यजु ३३–३८

भावार्थ–सूय मडल मे विराजमान हुआ चमकता है तथा दिन रात के स्वरूप को बनाता है। इस सूर्य का बल विस्तृत प्रकाश अन्य है, और अन्धकार अन्य है जिसको दिशायें धारण करती है।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

सम्पादक–

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

प्रधान मन्त्री से साग्रह अनुरोध

पजाब की उपेक्षा अधिक सहन नही होगी
निर्णय का आधार न्याय और नैतिकता हो ?

पजाब मे बरनाला सरकार को काय करते छह महीने हो गये। स्थिति सुधरने के स्थान पर बिगडती जा रही हे। दो आयोग भी गठित हुए और क्रियाहीन हो गये तथा पजाब के सीमावर्ती क्षेत्रो मे आतङ्कवादी खुलकर खेल रहे हैं। हरियाणा मे दिल्ली तक आर्यसमाज मन्दिर, सनातन धर्म भवन और धर्मशालायें पजाब से पलायन करके आये हिन्दुओ से भर गये, साथ ही सामाजिक सस्थायें, दानशील व्यक्ति अपने कतव्य का निर्वाह करके शरणार्थियो के सुख एव सुविधा के लिए काय कर रहे है जबकि प्रशासन एव सरकार अपने नैतिक कर्तव्य के निर्वाह के प्रति भी सक्षम नहीं है।

प्रसिद्ध पत्रकार श्री कुलदीप नैय्यर ने चार दिन पूव लिखा है कि पजाब मे हिन्दुओ को सख्या ४६-/- ह सिख ५४ -/- है जिनमे अकाली सारे सिखो के प्रतिनिधि नही हैं फिर भी श्री राजीव गाधी और उनकी सरकार अकालियो को सारे पजाब का प्रतिनिधि मानकर समझौता करते है और उन्ही से आशा करते है कि वह पजाब मे शान्ति स्थापित करेंगे। जबकि समाचार प्रकाशित हो चुके हैं कि अकाली मन्त्रियोके सरक्षण मे आतङ्कवादी कार्य कर रहे है ओर अकालियो का ही एक दल श्री बादल और तोहडा के नेतृत्व मे बरनाला सरकार का विरोधी दल बन गया है। यदि चण्डीगढ पजाब को दे दिया जाता है तो आतङ्कवादी सारे चण्डीगढ मे अपना गढ बना सकते है जबकि चण्डीगढ पूण रूप से हिन्दी भाषी नगर है। अत न्याय ओर नैतिकता यह अधिकार करती है कि प्रधान मन्त्री सत्य को देखें ? अकालियो की चाटुकारिता बहुत हो चुकी। पजाब के छियालिस प्रतिशत हिन्दू भी अधिक दिनो तक मूकदर्शक नही रह सकते। बरनाला सरकार ने आयोगो के निर्णयो को ठुकरा दिया है। देसाई आयोग के निर्णय को वह अस्वीकार कर चुके हैं। अत अब अधिक लोगोवाल समझौते की रट न लगाई जाय, चण्डीगढ पजाब को न समर्पित किया जाय अपितु आवश्यक यह हे कि पजाब के सम्बन्ध मे एक गोलमेज परिषद बनाई जाय जिसमे वहा के सिख, अकाली, निहग, रामगढिया, लाल कमाली सभी के प्रतिनिधि हो साथ ही छियालिस प्रतिशत हिन्दुओ के भी प्रतिनिधि हों तब वहां की समस्या हल की जाय और इसी बीच सेना की सक्रियता से आतङ्कवादियो को जड से उखाड फेंका जाय। सवेदनशील क्षेत्रो के प्रत्येक ग्राम मे शांतिदल बनाये जांय जो हिन्दुओ की रक्षा करें, उनके पलायन को रोकें और सेना पूण सहयोग दे आतङ्कवाद को समाप्त करने के लिए। अधिक लचकीली नीति हानिकारक होती है। केन्द्रीय प्रशासन की दुर्बल नीतियो का अन्य प्रान्तो पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड सकता है।

श्री पण्डित सच्चिदानन्द जी शास्त्री को साधुवाद–



श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री

श्री स्वामी आनन्द बोध जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने स्व० श्री ओ३म् प्रकाश त्यागी (भू०पू० मन्त्री सार्वदेशिक) के निधन से सभा मन्त्री के रिक्त पद पर श्री प० सच्चिदानन्दजी शास्त्री की नियुक्ति करके बहुत ही उचित निर्णय लिया है। श्री शास्त्री जी बहुत वर्षों से सार्वदेशिक सभा मे उप मन्त्री के पद पर रहे। वहा की गतिविधियो से परिचित हैं अत नवीन पद भार की गरिमा को सुचारुता से सम्पन्न करने मे पूण सक्षम है। 'आर्यमित्र' अपने समस्त पाठको तथा कार्यालय की ओर से श्री शास्त्री जी को साधुवाद देता है और हर्ष प्रकट करता है कि उत्तर प्रदेश का उचित नेतृत्व अब सार्वदेशिक को प्राप्त होगा।

आर्य्यमित्र



सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार १३ जुलाई १९८६ दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसवत् १९७२९४९०८७

मिजोरम की चर्चा

भारत के पूव आंचल मे पहले आसाम के अन्तगत मिजोरम एक जिला था जो वाद को परिस्थितियो वश जैसे आसाम के बहुत से क्षेत्र पृथक हुए मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैण्ड अरुणाचल इसी प्रकार मिजोरम भी केन्द्र प्रशासित क्षेत्र बना। पूव की ओर उसकी सीमा बर्मा देश से मिलती है पश्चिम म त्रिपुरा दक्षिण मे बांगला देश और उत्तरमे असम तथा नागालैण्ड आदि। यहा के निवासी अपने को 'मिजो, कहते हैं जा किसी सस्कृत के मित्रस्य शब्द का अपभ्रंस है। बहुत पहले यहां भारतीय सभ्यता और सस्कृत फैल चुकी थी और यह सब प्रदेश तांत्रिक परम्परा गत प्रधान थ। अंग्रेजो ने असम के इस क्षेत्र मे अपने शासन काल मे ईसाई मिशनरियो को खुलकर प्रचार करने का अवसर दिया और इन क्षेत्रों मे ईसाइयत का प्रचार हुआ और यहा तक कि नागालैण्ड भारत का वह क्षेत्र है जो पूण रूप स ईसाई प्रभुत्व मे हैं। स्वतन्त्रता क बाद श्री प० जवाहर लाल नहरू के प्रधान मन्त्रित्व काल म भी इन क्षेत्रा म ईसाई मिशनरी काय करन रह और यहा की जन जातिया का बराबर बढ़ावा दत रहे कि वह प्रथक राज्य और अस्तित्व की मांग करें तथा भारतीय सघ स अपने को पृथक करें। दूसरी ओर भारतीय और समाज सेवा की सस्थायें यहां नहीं जा सकती थी आयसंन्यासियो पर भी प्रतिबन्ध लगा रहा जिसे अपन राजनैतिक ऊचाई पर पहुँचने पर श्री प्रकाश वीर शास्त्री ने बहुत कुछ कम कराया। चीनसे भारत का म घष छिडा और चीन के गुप्तचर नागालैण्ड मिजोरम म सक्रिय हुए। नागालैण्ड का प्रमुख फिजो लन्दन मे बैठकर भारत के विरुद्ध विष वमन करता रहा और मिजोरम के श्री लालडेंगा जी चीन तथा बर्मा मे सहायता प्राप्त करके स्वय भ नता बने और "मिजो नेशनल फ्रन्ट" के नाम से एक सेना खडी की। आन्दोलन चलाया और कितने ही भारतीयो को मिजोरम मे मौत के घाट उतारा। लालडेंगा अपराधी प्रवृत्ति के नेता है और बराबर चीन से आर्थिक सहायता, शस्त्रो की मदद तथा सैनिक प्रशिक्षण लेकर मिजोरम मे अशांति का वातावरण बनाये रखनेमे सफल हुए है। इधर समाचारपत्रो मे प्रकाशित हुआ कि कांग्रेस (इ) के उपाध्यक्ष श्री अजुन सिह ने लालडेंगा से दलीय स्तर पर समझौता किया कि मिजोरम की वतमान कांग्रेस (इ) की सरकार लालडेंगा के साथ समझौता करके उनको मुख्य मन्त्री बनाये और मिजोरम को एक प्रभु सत्ता सम्पन्न राज्य का विशेष अधिकार दिया जाय। यह समझौता दलीय स्तर से ऊपर उठ कर लालडेंगा तथा भारत सरकार के बीच मे दिनांक २९ जून को सम्पन्न हो गया। मुख्य नवीन समझौत मे मुख्य आधार है कि मिजो नेशनल फ्रन्ट' के सशस्त्र सैनिक अपन हथियार डाल देगे सब आत्म समपण करग लालडेंगा के नेतृत्व मे मन्त्रि परिषद का गठन होगा और लालडेंगा के सैनानयो का पुनर्वास किया जायगा तथा मिजोरम को स्वतन्त्र राज्य का एक विशष स्थान प्राप्त होगा और फिर वहां निर्वाचन हागे।

सामान्यत इस सन्धि का यह कह कर स्वागत किया जा रहा है कि मिजोरम मे शान्ति हो गई और जैसे लोगोवाल समझौते का श्रेय श्री राजीव जी को श्री अजुर्नसिह ने दिलवाया वैसे ही श्री सिह ने पलक मारते मिजोरम की भी समस्या हलकर दी। परन्तु समझौते के जो आधार है उनमे एक यह भी है कि भारतीय ससद का फौजदारी और दीवानी या कोई भी नियम मिजोरम के अपने परम्परागत धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन मे ग्राह्य नही होगा, दूसर मिजोरम मे भारतीय प्रवेश कतिपय प्रतिबन्धो के साथ हागा, तीसर मिजोरम सरकार केन्द्रीय विदेश विभाग के माध्यम से नही अपितु सीधे वर्मा और चीन से व्यापरिक सम्बन्ध बना सकती है। यह तीनो शर्तें भारत के सविधान और उस की प्रभुसत्ता के विरुद्ध एक राज्यको विशेष अधिकार दता है। काश्मीर को भी हम ऐसे अधिकार दे चुके हैं जिनका परिणाम भुगत रहे हैं। लोगोवाल समझौते म भी केवल अकाली सिखों से समझौता किया गया जबकि अन्य दल ठुकरा दिये गये उसी प्रकार यह मिजोरम का समझौता भी घातक होगा क्योंकि क्या लालडेंगा के नेतृत्व वाले अपराधी शस्त्र डाल देंगे, लालडेंगा वर्मा और चीन स व्यापार का बहाना लेकर क्या उसका दुरुपयोग नही करेंगे। और क्या भारत सरकारकी स्थिति किसी समय वहा दयनीय और सोचनीय नही हो सकती।

'आर्यमित्र' देश के अन्य राजनैतिक दलो से, बौद्धिक चिन्तनशील व्यक्तियो से अनुरोध करता है कि वह इस समझौते की शर्तो का अध्ययन करके इसका विरोध करें और ससद मे यह जो अधिनियम पास कराया जा रहा है उसे पास न होने दें। विरोधी दलो का यह एक दायित्व है क्योकि कांग्रेस (इ) मे सबकी बुद्धियो पर पर्दा पड गया है और चाहें कोई बात देश के हित मे हो या विरोध मे हो वह श्री राजीव जी का विरोध नही कर सकते हैं अत देश की स्थिति अशान्तिमय रहेगी।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

श्री बा. जगजीवन राम जी का निधन!

भारत राष्ट्र की अमूल्य क्षति है

कितनी मनहूस थी दिनांक ६ जुलाई के प्रात १०-३० को वह बेला जिसने राष्ट्र के एक महान कर्तव्यनिष्ठ नेता को हमसे छीन लिया। आज सम्पूर्ण भारत राष्ट्र उनके निधन से अथाह शोक सागर मे डूब सा गया है। सर्वत्र एक नीरवता सी छाई हुई है। इस महान् राष्ट्रीय नेताके निधन पर शोकपूर्ण शब्दो मे अपना उद्गार प्रकट करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के महामन्त्री श्री प०मनमोहन जी तिवारी ने कहा—

"बाबू जी का निधन सचमुच भारत राष्ट्र की वह अमूल्य क्षति है जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं, अपने जीवन के ७९ वर्षों मे, उन्होने राष्ट्र, देश, समाज और कांग्रेस सगठन के लिए जो त्याग और बलिदान किये है वह भारत के भावी इतिहास के पन्नो मे एक यादगार बनकर चमकते रहेंगे, भू पू उप प्रधान मन्त्री से लेकर विभिन्न प्रशासनिक गरिमामय पदो पर वे रहे। आज उनके निधन से सम्पूर्ण राष्ट्र बिलख रहा है।"

सभा मन्त्री श्री तिवारी जी के नेतृत्व मे एक शोक सभा, सभा कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ मे हुई, जिसमे दिवगत महान् राष्ट्रीय नेता के स्वीर्गीय आत्मा की चिर शान्ति हेतु तथा इस महान् शोक सागर मे लिप्त परिवार जनो, के असीम धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई। सभा मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी ने कार्यालय कर्मचारियो सहित अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि स्व० श्री बाबू जी को अर्पित की।

—सम्वाददाता

पंजाब और देश की सुरक्षा के लिए अपना जीवन दांव पर लगाने का संकल्प

बरनाला की नीति खालिस्तान के निर्माण की ओर है

पँजाब की स्थिति और अधिक बिगड़ने से पहले तुरन्त कार्यवाही आवश्यक

महात्मा आनन्द बोध जी का प्रभावशाली वक्तव्य

दिल्ली २५ जून।

जैसा कि आप सब जानते ही हैं, मने कुछ दिन पूर्व ही वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार अपने जीवन के चतुर्थ एवं अन्तिम अध्याय मे प्रवेश किया है और भविष्य मे एक सन्यासी का जीवन व्यतीत करने का व्रत लिया है। गांधी जी ने इस वर्णाश्रम व्यवस्था की सराहना करते हुए कहा था—

> यह (वर्णाश्रम व्यवस्था) वैदिक धर्म की मानव जाति के लिए एक अमूल्य एव अनुपम देन है।

इसके ऊपर आचरण करने के बाद ही ससार के लोग इसके महत्व को समझ सकेंगे। मं आशा करता हू कि वह समय शीघ्र आयेगा सन्यास ग्रहण करने से मेरा यह मन्तव्य नहीं है कि मैं अपनी समस्त जिम्मेवारियो को त्याग कर किसी वट-वृक्ष के नीचे अथवा किसी कन्दरा मे या पुण्य सलिला नदी के तट पर बैठकर एकान्तवास करते हुए केवल ईश्वराधना मे ही अपना सारा समय व्यतीत करू। अपने परम गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा लेकर मैंने निश्चय किया है कि अब सारे पारिवारिक बन्धनो से मुक्त होकर मै अपना सारा समय देश, जाति और धर्म की सेवा मे समर्पित कर दू।

हमारा देश आजकल एक बहुत ही कठिन दौर से गुजर रहा है। उसकी एकता और अखण्डता खतरे मे है, उत्तर और दक्षिण दोनो ही भागों मे हमारी सस्कृति पर आक्रमण किये जा रहे है। पजाब मे हम आन्तरिक और वाह्य दोनो ओर से विघटनकारी ताकतो से लड रहे हैं। पश्चिम के तथाकथित गणतन्त्रवादी देश यह नहीं चाहते कि भारत एक शक्तिशाली देश बनकर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे 'तीसरी ताकत' को किसी प्रकार की सहायता करे। इसके लिए वे तरह-तरह के भारत विरोधी षडयन्त्र मे लगे हुए हैं। मैंने पिछले दिनो पजाब का विस्तृत दौरा किया था। वहाँ समाज के अनेक नेताओं से मिला। उन लोगो से भी बातचीत की जो उग्रवादियो के अत्याचारो के शिकार हुए हैं।

मैंने वहा के अल्पसख्यक हिदुओ के सुरक्षा की तलाश मे अपना घर बार, जमीन जायदाद छोडकर पजाब से बाहर के लिए पलायन करते हुये देखा है। एक बहुत ही साधारण गणना के अनुसार पाच हजार से अधिक व्यक्ति अब तक पजाब छोडकर अन्यत्र जा चुके है। पजाब की प्रान्तीय सरकार कुछ एकड जमीन प्राप्त करने के लिए सघर्ष कर रही है, जबकि वहा की निरीह-निर्दोष हिन्दू जनता आये दिन आतक-वादियो के गोली का शिकार हो रही है। श्री बरनाला जिस नीति पर चलते हुए कार्य कर रहे हैं, उससे तो यही प्रतीत होता है कि वे स्वय भी यही चाहते है कि पजाब की बिगडी हुई स्थिति इस तरह उस समय तक चलती रहे जब तक खालिस्तान का स्वत निर्माण न हो जाय।

पजाब मे मैने जो कुछ देखा उससे मुझे बडी पीडा हुई है, वहां के हिन्दुओ की दुर्दशा ने मुझे जल्दी से जल्दी सन्यास आश्रम मे प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया था। अब मै पूर्णरूप से स्वतन्त्र और बधन रहित होकर पजाब और देश को बचाने के लिए अपना जीवन भी दांव पर लगा सकता हू।

२२ जून १९८६ को ही अपरान्ह मे, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की बैठक भी हुई, जिसमे पजाब की बिगडती स्थिति पर विचार विमर्श किया गया। इस बैठक मे देश के अन्य भागों से भी विशिष्ट प्रतिनिधि आमन्त्रित किये गये थे, विचार विमर्श के पश्चात सार्वदेशिक सभा इस निर्णय पर पहुची है कि पजाब की स्थिति को और अधिक बिगडने से बचाने के लिए निम्न कार्यवाही करना आवश्यक है—

१— बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त किया जाय क्योंकि वह पजाब की स्थिति को सभालने के लिए हृदय से कृत सकल्प नहीं है। उस समय जबकि वहाँ उग्रवादियो द्वारा प्रतिदिन निरपराध हिन्दू अल्पसख्यक मौत के घाट उतारे जा रहे हैं, बरनाला सरकार का ध्यान कुछ एकड क्षेत्रीय लाभ के लिए सघर्ष करने मे लगा हुआ है।

२— पजाब मे तुरन्त राष्ट्रपति-शासन लागू करते हुए उसे सेना के हवाले किया जाय।

३— और वहाँ ऐसी परिस्थितियाँ पैदा की जाय जिससे वहाँ की कानून और सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ हो सके और जो अल्पसख्यक प्रान्त छोडकर बाहर चले गये हैं, वे पुन अपने घरो को लौट सकें।

इस अवसर पर अन्तरग सभा के सदस्यो ने एक प्रस्ताव भी पारित किया जिसमे सरकार से अनुरोध किया जाय कि वह पजाब की स्थिति को सुधारने के लिए बरनाला सरकार से केवल बातचीत के भरोसे न रह कर इस दिशामे कोई ठोस और प्रभावी कदम उठाये। यदि केन्द्रीय सरकार हमारी आवाज न सुने तो उस दशा मे सीधी कार्यवाही करते हुए सत्याग्रह किया जाय। इस विषय मे कुछ सदस्यो का विचार था कि सत्याग्रह सामूहिक हो कुछ केवल चुने हुए व्यक्तियो द्वाराही सत्याग्रह के पक्ष मे थे। कुछ की राय थी कि इसके लिए आमरण अनशन किया जाय। यदि ऐसा करना परिस्थिति वश आवश्यक हो। इस सभा मे यह भी तय किया गया कि पजाब की स्थिति पर विचार करने के लिये आर्य समाज के सभी क्षेत्रीय और जिला स्तर के कार्यालयो को एक परिपत्र भेजा जाय जो इस समस्या पर ध्यान पूर्वक विचार करने के बाद अपने सुझाव प्रस्तुत करे। इसके लिए सभा के सभी केन्द्रो के कार्यकर्ताओ की एक मीटिंग देहली मे १२ और १३ जुलाई १९८६ को बुलाई गयी है। उस समय इस दिशा मे आगे की कार्यवाही पर अतिम निर्णय लिया जायगा।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

समस्त आर्य जगत के एक अथक साथी हमेशा के लिए चल दिए

(प० धर्मवीर घूरा, शास्त्री उपदेशक आर्य सभा मारिशस अध्यक्ष मोरिशस
हिन्दी लेखक संघ वाक्वा मोरिशस)

श्री ओम प्रकाश त्यागी जी के निधन से मोरिशस के आर्य परिवारो मे शोक सा छा गया है क्योकि, हिन्द महासागर के इस टापू मे आप अनेक बार आ चुके थे मुझे स्मरण है जब यहां पर सन् १९७३ मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (देहली) के सहयोग मे १० वां आर्य महा सम्मेलन मोरिशस मे होने जा रहा था तभी मैंने आपके प्रथम दर्शन किये थे मुझे स्मरण है आप और डा० दुखनराम जी (पटना) एक साथ श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न श्री गौतमनिक्कजी के साथ आर्य भवनमे प्रवेश हुए थे। सार्वदेशिक का दफतर यहां खोलकर दिया गया था। हैदराबाद के पं० नरेन्द्र जी लिखा पढ़ी के कार्यों मे और आचार्य कृष्ण जी यज्ञ की तैयारियो मे लग चुके थे, उस समय तो आपके साथ बातचीत नही हो पाई थी पर उत्सव मे जब आपका सारगर्भित भाषण सुना तो पता चला कि आप आर्य जगत के और महर्षि दयानन्द जी के एक अथक त्यागी परिश्रमी, निस्वार्थ सेवी थे। उत्सव शानदार रहा आप प्रति-दिन बहुत व्यस्त रहते थे, पर उत्सव के बाद आप से बात-विचार करने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ। आपके नेतृत्व में भारत से अकबर जहाज द्वारा ५०० यात्री और वायुयान द्वारा दक्षिण अफ्रीका से १०० यात्री पधारे थे। श्री रामलाल मलिक जी ने भारत के यात्रियो की सुविधा के लिए लिखा पढ़ी की थी।



श्री ओम प्रकाश त्यागी जी

सन १९७५ मे मुझे परिवार के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित आर्य महा सम्मेलन मे आने का (भारत) मौका मिला। सार्वदेशिक भवन मे आपको छोड कर मेरा परिचय और किसी भी महानुभाव से नही था उस समय, पर जब आप को देखा तो मुझे अति प्रसन्नता हुई और दिल खोल कर आपने मेरा और मेरी धर्म पत्नी का स्वागत सभा दफ्तर मे किया था। जब मैंने आपको आर्य सभा मारिशस द्वारा प्राप्त पत्र (स्व० मोनी तोरल जी द्वारा सही) बताया तो आपने अपने मुखारविन्दु पर एक हल्का सा मुस्कान लाकर मुझे कहा कि आपके लिए परिचय पत्र की आवश्यकता नही है। आपने मेरे देहली निवास के लिए अच्छा प्रबन्ध करवाया। उत्सव की समाप्ति पर बार बार आपसे मिलना रहा और अन्तिम दिन आपसे विदा लेते समय मेरी आंखो मे खुशियो के आंसू भर आये थे।

उस वर्ष की बात है आप मोरिशस होते हुए दक्षिण अफ्रीका जा रहे थे तब आप श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न (प्रधान आर्य सभा) के पास ठहरे हुए थे। आपके साथ स्वामी सत्यप्रकाश जी थे। मोरिशस के रेडियो स्टेशन पर आपके साथ रेडियो कार्यक्रमो के लिए प्रोग्राम की तैयारी करने के लिये बात विचार किया और आप निश्चित समय पर स्टूडियो मे पधारे और मुझे आपके जैसे एक महान हस्ती का इन्टर व्यू लेने का शुभावसर प्राप्त हुआ था। फिर आप दिसम्बर मास मे होने वाले सम्मेलन मे शामिल होने के लिए दक्षिण अफ्रीका चले गए थे। कार्यक्रम के दौरान आपके साथ प्रश्न करते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा था। हमारी बातचीत १२ मिनट तक चलती रही पर आपने इससे पूर्व कोई नोट कागज पर नही लिखा था। केवल प्रश्नो को सुन लिया था।

इस वर्ष के जनवरी मास में आप दक्षिण अफ्रिका से भारत लौटने लगे तो मोरिशस से हो करके गये। तीन चार दिनों की अवधि मे मेरा आपके साथ फोन पर बात विचार होने के बाद आपने मोरिशस रेडियो स्टेशन आने के लिए फिर से स्वीकृति दी। समय पर आप विराज और दक्षिण अफ्रिका मे होने वाले शानदार उत्सव की सफलताओं के लिए आपने कार्यक्रम के दौरान अपनी खुशी प्रगट की। श्री शिशुपाल रामभरोस जी (प्रधान) प० नरदेव वेदालंकार जी (आचार्य) तथा दक्षिण अफ्रिका आर्यसमाज की भूरि-भूरि प्रशंसा की। लौटते समय आप मेरे घर पर बिराजे थे और मेरे परिवार मे घुल मिल कर बातें की। आप श्री सुभाष मोहित जी के साथ पधारे थे (उन्होंने बम्बई के श्री भगवती प्रसाद जी की पुत्री से विवाह किया है)

इस प्रकार आपके साथ मेरा सम्पर्क प्रारम्भ से अन्त तक प्रगाढ़ रहा। पर मेरे अन्तिम प्रश्न के उत्तर मे मजाक करते हुए आपनेकहा था कि फिर कभी आप रेडियो स्टेशन मे मिलने आयेंगे पर गत ६ मई १९८६ को आप के देहावसान से यह पता चला कि शायद अब हमारी भेंट अन्य जन्मो मे होगी क्योंकि आपने वचन जो दिया है मिलने के लिए।

वायुयान लेने से तीन दिन पूर्व आप पुनः आर्य भवन पधारे थे और आर्य सभा के उपदेशक महानुभावों से महर्षि दयानन्द जी द्वारा किये गये कार्यों पर बातचीत की और हमें सतर्क होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। उस समय का लिया गया चित्र एक निशानी बनकर रह गया।

बात बात मे मैंने उनसे पूछा था कि क्या कारण है कि सन् १९२५ में ... वाले आर्यसम्मेलन मे ... रेड्डी जी का सम्मान किया गया था। सन् १९६८ मे हैदराबाद मे होने वाले आर्य महा सम्मेलन के शुभावसर पर मारिशस के राजदूत (जो देहली मे थे) श्री रवीन्द्र घटमान जी द्वारा उद्घाटन करवाया गया था और सन् १९७२ मे अलवर आर्य महा सम्मेलन के शुभावसर पर मोरिशस के तत्कालीन प्रधान मन्त्री स्व० सर शिवसागर राम गुलाम जी को अध्यक्ष पद द्वारा सम्मानित किया गया था ? उन्होने बहुत स्पष्ट शब्दो मे कहा था कि—

'बिहार मे बहुत बडा कार्य आर्यसमाज का है और वहीं से मोरिशस मे अधिक लोग १५० वर्ष पूर्व आये थे। मैं समझ रहा हूं कि आर्यसमाज ने मोरिशस मे आकर एक बहुत बडी ज्योति दी और उस ज्योति से बहुत बडा कार्य हुआ इस कारण मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मोरिशस के प्रति आकर्षण था। आपने सन् १९२५ की बात की है मैंने उस सब का वर्णन कभी किया है और मैं जानता था उस कार्य को, उस समय मैं आर्यसमाज में सक्रिय रूप मे नहीं था परन्तु जब हमने अलवर मे राजस्थान मे सम्मेलन किया तो आपके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री सर शिवसागर जी ने बडी कृपा से हमारा आग्रह स्वीकार किया और बहुत अच्छे ढग से वहाँ पर उन्होने अपना कार्य किया उसी से प्रभावित हो करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने उसके बाद सबसे पहले मोरिशस मे अपना १२ वां आर्य महा सम्मेलन किया और उसमें भी उनका बहुत अच्छा योगदान रहा। इस प्रकार हमारा कार्य रहा। आपने सन् १९६२ की बात कही है वह तो एक बहुत बडी बात है। अपने घर बरने जी जो भारत मे अच्छा कार्य करते थे और उनके सहयोग से हमने १९६२ मे उनको वहां पर बुलाया और उन्होने अच्छा सहयोग दिया इस प्रकार से मोरिशस को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रत्येक ... से याद करती है और मेरा ऐसा विश्वास है कि उन तमाम प्रतिनिधि सभाओं मे केन्द्र, ... ही एक ऐसा केन्द्र है जिससे हम सारा जगत को ... दे सकते हैं और उसी मे हमने एक कार्यक्रम भी बनाया'।

इस प्रकार हमने पुनर्मिल कर और बातें की। आप मेरे साथ श्री सुभाष मोहित जी के साथ उन्ही की मोटर में पधारे थे। फिर आपने मेरी पत्नी से बातें की क्योंकि हमारी भारत यात्रा के मौके पर मेरी धर्मपत्नी आपसे सार्वदेशिक सभा के दफ्तर मे मिल चुकी थी। आपने हमारे प्रति बहुत अच्छी आत्मीयता बनाई। आप के देहावसान से हमे बहुत क्लेश हो रहा है। मोरिशस ने एक बहुत अच्छा साथी खो दिया। उनके निधन का समाचार भारत के अंग्रेजी पत्रो पर देखकर श्री मोहन लाल जी मोहित जी को फोन किया था तो उन्होने कहा था कि १० रोज हो गये पर कोई समाचार नहीं आया। सार्वदेशिक सभा को ऐसा दुखद समाचार हमारी आर्य सभा मे भेज देना चाहिये था।

ईश्वर से उनकी आत्मा की सद्गति के लिए हमारी प्रार्थना है। दुखी परिवारों, आर्यजनों को शान्ति प्राप्त हो।

आयु का ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित होनों और स्थावर में जीव का होना वैदिक सिद्धांत है ।

लेखक वैद्य, हकीम रामशङ्कर गुप्त प्रधान आर्य समाज जलेसर
जलेसर टाउन जिला एटा उत्तर प्रदेश

आर्य समाज मे आज कल दो विषयो पर मतभेद चल रहा है । एक है कि आयु पूर्व जन्म अनुसार निश्चित अथवा अनिश्चित है । दूसरा है कि स्थावर मे जीव है अथवा नहीं । इस सम्बन्ध मे पक्ष और विपक्ष द्वारा अनेको लेख एव पुस्तकें आर्य जगत् के सम्मुख अब तक आ चुकी है किन्तु फिर भी इस सम्बन्ध मे कोई निर्णयात्मक हल नहीं हो पाया है । इस सम्बन्ध मे मैने भी निम्न लिखित लेख लिखें है जो मासिकपत्रो के माध्यम से आर्य जगत् के सम्मुख आ चुके है जिनका विवरण इस प्रकार हैं ।–

१– मानव योनि मे जीवो का आधान शतवर्ष से अधिक नहीं ।
(परोपकारी अगस्त और सितम्बर सन् १९७३)

२– मेरे लेख पर की गई दयानन्द सन्देश के सम्पादक की टिप्पणियो का मुह तोड उत्तर ।
(मधुर लोक मई १९८२ से अप्रैल सन १९८७ तक)

३– ईश्वर के निर्णय सदैव से आयु को निश्चित मानने वालो के पक्ष में होते रहे हैं और होते रहेगें ।
(मधुर लोक मई सन १९८३)

४– आचार्य विक्रम जी का शास्त्र सम्बन्धी चैलेंज के सम्बन्ध मे मेरा उनसे निवेदन ।
(मधुर लोक अक्टूबर सन १९८३)

५– आयु घटने या बढ़ने वाली मानने का मिथ्या अभिमान और उस से आर्यों के सदाचार एव ब्रह्मचर्य का सत्यानाश ।
(मधुर लोक दिसम्बर सन १९८३)

इन सभी उपयु क्त अपने लेखो मे मैने आयु के निश्चित निर्धारित होने का वेद (अथर्व) ८।२।२ व ८।१।६ व ८।१।१९ व ८।२।२५ व १४।१।५२ व २४।२।७५ ऋग्वे १०।१६।१४ व १।७४।४ व १।८९।९ व २।२७।१० यजुर्वेद ३५।१५ व २।२७ व ३४।५२ व ९३ सामवेद १६९६) उपनिषद (छान्दोग्य ५।९।१-२ बृहदारण्यक ६।२।१३ दर्शन (योगदशन द्वितीय साधन पाद २३) धर्म सूत्र (गौतम धर्मसूत्र २।२। २९ आपस्तम्ब १।२।४-५ व २।१।२।३) महाभारत शांति पर्व १५३। ३७ व १८१।१३ नीतग्रन्थ (चाणक्य नीति ४।१) से और महर्षि के स्वय के वचनो से तथा प्रत्यक्ष प्रमाणो से सिद्ध कर दिया है । जिसका परिणाम यह हुआ कि इस विवाद को उठाने वाले महाशय वेदव्रत जी मीमान्सक और महाशय प० राजवीर जी शास्त्री सम्पादक दयानन्द सन्देश को अन्त मे मौन धारण करना पडा । अब इस शांत हुए विवाद को पुन उखाडने की एक महाशय यशपाल जी आर्यबन्धु मुरादाबाद निवासी को उठ खडी हुई जिसके फलस्वरूप उन्होने अपना एक लेख "वैदिक सिद्धात और महर्षि दयानन्द" नाम से आर्यमित्र साप्ताहिक पत्र के १५ मार्च सन १९८६ के दो अको मे आर्य जगत् के सम्मुख प्रस्तुत किया है और उन्होंने अपने इस लेख मे लिखा है कि महर्षि दयानन्द की मान्यता क्या है यह हमने ऊपर का प्रयत्न किया है । इसके विपरीत कहीं कुछ है तो कोई बताने का कष्ट करें । व्यर्थ को भावो को तोड मरोड कर महर्षि की मान्यता के विरुद्ध लिखने से कोई लाभ नहीं । आशा है कि सुहृदय पाठक हमारी इस प्रार्थना को दृष्टि गत रखते हुए महर्षि के उपर्युक्त विचारो का मन्थन करेंगे फिर अपनी मान्यता सुनिश्चित करेंगे ओर यदि फिर भी सन्तुष्ट एव सहमत न हो तो फिर खुलकर यह कहने का साहस करें कि यद्यपि महर्षि दयानन्द की ऐसी मान्यता है पर हम अपने स्वाध्याय एव अन्वेषणा से इस परिणाम पर पहुचे हैं तब लोग उनकी बातो को अधिक गम्भीरता के साथ सुनने तथा परखने का यत्न करेंगे ऐसी आशा है ।

आर्यबन्धु जी एक प्रछन्न पौराणिक प्रतीत होते हैं और आर्य समाज का जामा पहन कर और महर्षि की दुहाई दे देकर महर्षि के गौरव ओर गरिमा को छीछालेदर करना और कराना चाहते हैं । आर्य बन्धु जी से हमारा विनम्र निवेदन है कि वह इस शात हुये विषय को पुन उछाल-उछाल कर जगद्गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के गौरव और गरिमा को छीछलेदर स्वय आर्य समाजियो से न करवायें और न स्वय एक आर्य समाजी होने के नाते करें कारण कि आयु के घटने और बढ़ने होने वाली मान्यता को पुष्टि वेद, उपनिषद, दर्शन, धर्म सूत्र, नीतग्रन्थ ओर महाभारत आदिक अन्य ग्रन्थ नहीं करते है और न रात दिन होने वाला जीवन मरण का प्रत्यक्ष ईश्वरी प्रमाण ही करता है ।

मैंने बडी सूक्ष्मता से चारो वेदो, उपनिषदो धर्म सूत्रो नीति ग्रन्थो और महाभारत आदिक ग्रन्थो को पढ़ा है और उन पर विचार किया है मैंने तो चारो वेदो मे से एक भी वेद, उपनिषद, दर्शन धर्म सूत्र आदिक ग्रन्थ मे एक भी ऐसा वचन नहीं पाया हैं कि जिसमे कहा गया हो कि ब्रह्मचर्य धारण करने से आयु बढ़ जाती है ओर व्यभिचार धारण करने से आयु घट जाती है ।

वेद, उपनिषद, दर्शन धर्म सूत्र आदिक समी ग्रन्थ आयु का ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित होना बतलाते हैं । रहा महर्षि के वचन का मामला सो वह भी आयु को ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित होना मानते हैं जैसा आगे चलकर इस लेख मे बतलाया जायेगा । रहा सत्यार्थ प्रकाश द्वितिया वृत्त सन १८८४ मे जो यह लिखा है कि ब्रह्मचर्य धारण करने से आयु बढ़ जाती है और व्यभिचार से आयु घट जाती है केवल मात्र महर्षि की भावना है कारण कि जगद गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज नाम रूप धारी जीवात्मा मुक्तावस्था से लोटा हुआ एक महान् पवित्र जीव था इसलिये उसने दयानन्द के चोले मे आकर अखण्ड ब्रह्मचर्य धारण किया और लुप्त हुए प्राचीन वैदिक धर्म के पुनरुद्धार का एक महानतम् कार्य किया तथा वेदो का बुद्धि गम्य सर्वोत्तम भाष्य किया ओर उनकी यह प्रबल इच्छा रही कि सर्वसाधारण सदाचार का और ब्रह्मचर्य का जीवन अपनायें और वर्ते । योगी, साधु सन्यासी अखण्ड ब्रह्मचर्य धारण करके सर्वसाधारण जनता को अपने चरित्र बल से सदाचार्य आदि की उत्तम शिक्षा देवें इसलिये महर्षि ने सर्वसाधारण का चित्त सदाचार और ब्रह्मचर्य की ओर आकर्षित करने के लिये ब्रह्मचर्य धारण का महात्म्य के रूप मे आयु के बढ़ने का प्रलोभन दर्शाया है और उसके विपरीत अर्थात् व्यभिचार के धारण करने से आयु के घट जाने का भी भय दर्शाया है । यह कोई वैदिक सिद्धात नहीं है यह तो केवल मात्र महर्षि की भावना मात्र ही है । क्रमश

पंजाब से हिन्दुओं का पलायन रोका जाय

केन्द्रीय सरकार निहत्थे और असहाय हिन्दुओ की सुरक्षा का दायित्व ले

आर्य समाजो के प्रस्ताव

पजाब के आतङ्कवादियो का क्रूरतम आतङ्क सरकार की सहनशीलता का लाभ उठाकर आज विनाश की वह उग्रता धारण कर चुकी है जिस का निदान, असम्भव सा प्रतीत हो रहा है। खून की प्यासी आतङ्कवादियो की बन्दूको का पेट इतना बढ़ चुका है कि वे भरना ही नहीं चाहती ऐसा लगता है जैसे पजाब के ही नहीं समस्त राष्ट्र के हिन्दुओ का खून पीकर ही वे शान्त होगी। एक दिन नहीं बल्कि प्रति दिन, दर्जनों असहाय, निहत्थे और लाचार हिन्दुओ की हत्या, अबलाओ पर अत्याचार, उनके घरो मे आग और ऐसा उत्पीडन कि वहाँ हजारो हिन्दू परिवार छिन्न-भिन्न होरहे है अपना घर बार छोडकर जान हथेली पर लेकर भाग रहे हे, खून के प्यासे दरिन्दो की तृष्णा बढ़ती ही जा रही है और सरकार मौन है। आखिर सरकार हिन्दुओ की सुरक्षा का दायित्व कब लेगी ? क्या सचमुच सरकार हिन्दुओ का सर्वनाश चाहती है ? पजाब की इस क्रूरमयी स्थिति और हिन्दुओ के भयकर उत्पीडन से आयजगत मे रोष व्याप्त हो रहा है, अब आर्य जनता अधिक विनोतक यह खूनी नाटक नहीं देख सकती, अत प्रान्त की आर्यसमाजो का, आर्य जनता का और वरिष्ठ आर्य नेताओ का सरकार से स्पष्ट शब्दो मे अनुरोध है कि केन्द्रीय सरकार तुरन्त पजाब मे हिन्दुओ की सुरक्षा का दायित्व ले और ठोस व्यवस्था करते हुए उनका पलायन शीघ्र रोके अन्यथा आर्य जगत आदोलन के लिए वाध्य होगा–

आयसमाज जवाहरनगर मेरठ, आर्यसमाज किठौर मेरठ, आर्ययुवक परिषद मोदीनगर मेरठ, आयसमाज फतेहपुर, आयसमाज धूरी (पजाब) आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आयसमाज नवाबगज, बरेली।

स्वामी आनन्द बोध की अपील

स्वामी आनन्द बोध (भू पू सार्वदेशिक प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले) ने सन्यास आश्रम मे प्रवेश के साथ ही अपने को जन-जन की सेवा हेतु समर्पित कर दिया है और इस समय उनका पूर्ण ध्यान पंजाब मे उत्पीडन के शिकार हिन्दुओ के प्रति है इस हेतु वह शासन से भी कई बार अपील कर चुके हैं फिर भी शासन के बहरे कान पजाब से पलायन रोकने मे असमय है आतङ्कवादियो से निपटने मे अक्षम हैं। अत स्वामी आनन्द बोध जी शीघ्र ही सत्य के लिए, न्याय के लिए और मानवता के सरक्षण के लिए अनशन पर बैठने की घोषणा करने वाले हैं और उस दिन स्वामी आनन्दबोध जी के साथ भारतवर्ष के कितने ही आर्यजन अनशन पर बैठ सकते है।

चंपई–छवि

(डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी)

चपई छवि है न मिलती।

यह प्रसूनो से भरा मग,
देखकर इस ओर आय।
प्राप्त कर सीमान्त को,
ये प्राण खग है छटपटाय।
इस शरद के हास मे भी
चन्द्रिका क्यो है न खिलती ?

ज्ञान मन्दिर निलय नीरव,
स्वाथ पूरित गान गुञ्जन।
घोटन हैं न्याय—ग्रीवा,
बन रह आदर्श, रजित।
लेखिनी, सवेदना को,
आज लिखकर भी न लिखती।

ओढ़ अवगुन्ठन तिमिर का
ज्योति की है बात करन।
पास है पनघट उपस्थित,
किन्तु घट अपना न भरते।
उच्चता है, किन्तु फिर भी,
निम्नता जिसमे पनपती।

शब्द के ससार स भी,
अथ ने निर्वास पाया।
नाम को शीतल बनी है
किन्तु प्रतिपल क्रूर छाया।
पकिला यह देख सरिता,
हस की गति अब न रमती।

स्व० श्री बाबू जी को श्रद्धांजलि

महान शोक पूर्ण समाचार है कि भारतके भू० पू० उप प्रधान मन्त्री कांग्रेस (ज) अध्यक्ष एवं वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी श्री बाबू जगजीवन राम जी का निधन दिनांक ६ जुलाई १९८६ को प्रात १०-३०पर डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल दिल्ली मे हो गया। वे ७९ वर्ष के थे। स्व० बाबू जी ने आजीवन देश की अनन्य सेवाये की तथा प्रशासनिक एवं कांग्रेस संगठन के सर्वोच्च पदो पर रहे।

आज उनके निधन के समाचार को सुनकर हृदय को महान् आघात पहुचा ह सम्पूर्ण राष्ट्र एक शोक पूर्ण अमानिशा मे डूब सा गया है। महान् राष्ट्र सेवी के प्रति अपनी भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हू कि वह बाबू जी की स्व० आत्मा को चिरशान्ति तथा शोक विह्वल परिवार जनो को असीम धैर्य प्रदान करें।

चन्द्र किरन शर्मा

आबू पर्वत की सुरम्य श्रृंखलाओ मे आर्ष गुरुकुल की स्थापना

दिनांक ५ जून ८६ को श्री स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता मे आबू पर्वत की सुरम्य श्रृंखलाओ मे आर्य समाज के सौजन्य से आर्ष गुरुकुल की स्थापना की गई। गुरुकुल की आधार शिला प्रसिद्ध आर्य सन्यासी श्री स्वामी ओमानन्द जी के करकमलो द्वारा रखी गई। इसी अवसर पर एक बृहद यज्ञ का आयोजन भी हुआ जिसमे यजमान का कार्य श्री बाल दिवाकर हंस जी प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली तथा यज्ञ का ब्रह्मत्व श्री प्रो० धर्मवीर जी अजमेर ने किया। श्री हंस जी ने गुरुकुल हेतु ११११ रु० दान स्वरूप प्रदान करने की घोषणा की तथा अन्य आर्य प्रेमियो द्वारा दो लाख पचास हजार रुपए का बृहत दान भी तुरन्त प्राप्त हुआ कुछ उदार दानी सज्जनो ने गुरुकुल हेतु कमरे बनवाने का संकल्प लिया तथा दो सौ रुपये मासिक की दस छात्रवृत्तियां भी प्राप्त हुई जो दस वर्ष तक के लिए घोषित की गई।

सम्वाददाता

रजत जयन्ती स्मारिका

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मिरजापुर ने अपने रजत जयन्ती समारोह का आयोजन दिनांक ७ से ९ मार्च ८६ के मध्य किया और इस अवसर को स्मरणीय रखने के लिए रजत जयन्ती स्मारिका का प्रकाशन श्री बेचनसिंह जी के कुशल सम्पादकत्व मे हुआ। स्मारिका के लिए सामग्री का चयन बड़े परिश्रम और समुचित रूप से किया गया तथा समस्त मिरजापुर जनपद की विस्तृत जानकारी वहां के समाजो का परिचय सामाजिक गतिविधियो का मूल्यांकन बहुत ही उचित रूप से प्रस्तुत किया गया है। संक्षेप मे समस्त मिरजापुर की आर्य समाजो का परिचय स्मारिका मे प्राप्त है साथ ही जनपद के आयजनो के चित्र भी सजोये गये है।। मुख्य पृष्ठ का स्वामी दयानन्द का चित्र अतीव आकर्षक है। स्मारिका की साज-सज्जा मुद्रण और कागज भी सराहनीय है। सम्पादक एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मिरजापुर के अधिकारी व सभासद धन्यवाद के पात्र है। स्मारिका प्राप्ति के लिये श्री बेचनसिंह प्रधान सम्पादक जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मिरजापुर से सम्पर्क करें।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आवश्यक सूचना

मै १६ मई को आर्य समाज लोहारू जा रहा था भिवानी के पास एक दुर्घटना मे बड़ी भयानक चोट आई ईश कृपा से जान बच गई पूरे डेढ मास तक चारपाई पर पड़ा रहा अब लगभग मै स्वस्थ हो गया हू। जिन मित्रो ने मेरे इस कष्ट मे सम्वेदना पत्रो द्वारा प्रगट की है मैं उन सबका आभारी हू। अब मै शेष जीवन मे प्रचार द्वारा हर प्रकार आर्य समाज की सेवा कर सकने मे समर्थ हो गया हू।

वीरेन्द्र वीर आर्य
भजनोपदेशक आर्य समाज शामली
मुजफ्फर नगर

प्रवेश सूचना

श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या मे १/७/१९८६ से मनीषि छात्रो का प्रवेश होगा। यहा पर वैदिक परम्परा के अनुसार शिक्षा दीक्षा आधुनिक विषयो के साथ दी जाती है। प्रवेश काल ३० जुलाई तक होगा।

प्राचार्य शीलमित्र
प्रधानाचार्य
निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय
अयोध्या फैजाबाद

पिथौरागढ़मे डा० कच्वाहारी जिला कुष्ठ अधिकारी

ताड़ीखेत (अल्मोड़ा) २२ जून ८६। प्रास्थाके से स्थानान्तरित होकर पिथौरागढ़ मे डा० कच्वाहारी, जिला कुष्ठ अधिकारी के रूप मे सेवा प्रारम्भ करेंगे।

रामदत्त पाण्डेय 'साहित्यरत्न'

सूचना

सभी सज्जनो को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोलाझाल, मेरठ (उ प्र) मे स्थानाभाव हेतु इस वर्ष प्रवेश बन्द है। अत अभिभावको से निवेदन है कि इस सत्र मे प्रवेश हेतु किसी प्रकार का पत्राचार करने का कष्ट न करें।

आचार्य
गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी
भोलाझाल (मेरठ)

ब्र० यशपाल सर्वप्रथम

सभी आर्य बन्धुओ को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि आपके गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोलाझाल मेरठ उ० प्रदेश के ब्रह्मचारी यशपाल बन्धु ने श्रीमद् दयानन्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर रोहतक की मध्यमा द्वितीय खण्ड की परीक्षा मे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर प्रभात आश्रम के गौरव को बढ़ाया है।

आचार्य

महात्मा आनन्दबोध जी का प्रभावशाली वक्तव्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

इस वक्तव्य को समाप्त करने से पूर्व मै कुछ बातें स्पष्ट करना चाहूगा। आर्यसमाज ने सदा ही केन्द्रीय सरकार के उन सभी प्रयत्नो मे सहयोग दिया है जिसके द्वारा उसने देश के विघटनवादी तत्वो को समाप्त करने की योजना बनाई है। इस समय भी हम सरकार के साथ टकराव के पक्ष मे नहीं हैं। लेकिन अब देश की एकता और अखण्डता के लिए प्रति दिन बढते हुए खतरो को देखकर हमारी सहनशीलता समाप्त होती जा रही है। पजाब मे पाकिस्तान से आने वाले उग्रवादियो की घुसपैठ पाकिस्तानी असैनिक बल की घुसपैठ के कम नहीं है। प्रकारान्तर से यह पाकिस्तान का ही भारत पर हमला है। केन्द्रीय सरकार की कमजोर नीति सारे देश को साम्प्रदायिकता के आधार पर विभाजित कर देगी। हिन्दुओ मे धीरे धीरे यह भावना घर करती जा रही है कि अपने जीवन, सम्मान और सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए उन्हें स्वय ही प्रयत्न करना पडेगा। इसके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है। इसी भावना के अनुसार वे धीरे धीरे एक हिन्दू ध्वज के नीचे सगठित होकर एक शक्तिशाली बल का निर्माण चाहते हैं। देश के सभी राजनैतिक सगठन पद और सत्ता के लालच मे अपनी नैतिकता से इतने गिर गये हैं कि अब हिन्दुओ को उनकी किसी भी बात पर विश्वास नही रहा।

हमारी आशका है कि देश के विघटनवादी तत्व कुछ विदेशी ताकतों के सहयोग और समर्थन से सारे देश मे फैलकर हमारे राजनैतिक ढाचे को तोडकर देश को और विभाजित करने का प्रयत्न करेगे आर्य समाज जो देश भक्तो की एक सामाजिक सस्था है, इस विनाश का मूक दर्शक बनकर नहीं रह सकता। हम समझते हैं कि देश की सुरक्षा के लिए अधिकतम बलिदान देने का समय आ गया है। और हमे किसी भी कीमत पर इसकी रक्षा करनी है। मैं देश की सभी समाजिक सस्थाओ और राजनैतिक सगठनो से वे चाहे, किसी भी विचार धारा को मानते हो, यह अपील करता हू कि इस कठिन समय मे आगे आकर पजाब को बचाने का प्रयत्न करे। यदि पजाब बचेगा तो तभी देश भी बच सकेगा अन्यथा इसका विघटन अवश्यम्भावी है।

आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

निर्वाचन

आर्य समाज लाजपत नगर
कानपुर
प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य
मंत्री श्री म० डा० आशारानी राय
कोषाध्यक्ष श्री लक्ष्मण दास मग्गो

जिला आर्यप्रतिनिधि सभा बरेली
प्रधान श्री कृष्ण आर्य
मंत्री श्री पूरन लाल आर्य
कोषाध्यक्ष श्री रामकुमार वीरेश

आर्य समाज नरकटियागज
प० चम्पारन (बिहार)
प्रधान श्री विद्याभास्कर आर्य
मंत्री श्री शम्भू शरण आर्य
कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश आर्य

आर्य समाज बिजारखाता
(रामपुर)
प्रधान श्री रामस्वरूप विशारद
मंत्री श्री अजय स्वरूप एडवोकेट
को० श्री ओमप्रकाश आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अपील पंजाब हिन्दू सहायता कोष मे दान दे :

आज पजाब जल रहा है। उत्पीडित आर्य-हिन्दू जनता पजाब से निकल कर भिन्न-भिन्न स्थानो पर सुरक्षा हेतु पहुच रही है। आर्यसमाजो व सनातन धर्म सभाओं से निवेदन है कि पजाब से आई पीडित हिन्दू जनता को मन्दिरो, स्कूलो मे ठहरा कर उन्हें पूरी सुविधा दें।

हिन्दू जनता से अपील है कि वह इस सकट कालीन स्थिति मे तन मन, धन से सहयोग करें।

धन और सामान भेजने का पता— भवदीय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान सभा-प्रधान
नई दिल्ली-२

मध्य प्रदेश के अदिवासी क्षेत्रो मे डा० सुमन द्वारा व्यापक प्रचार

प्रसिद्ध आर्य वैदिक प्रवक्ता डा० आनन्द सुमन जी ने दो माह तक म० प्र० के आदिवासी क्षेत्रो मे व्यापक रूप से वैदिक धर्म का प्रचार किया। इस अन्तराल मे श्री सुमन जी ने माहिदपुर, देलची उज्जैन आगरा मालवा, नलखेडा पिलवास, आलोट विक्रमगढ चिकपुर, बडोद आदि क्षेत्रों का दौरा किया तथा वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए विशाल जन समूह को सम्बोधित किया। वहा के आदिवासियो पर डा० सुमन के प्रभावशाली व्याख्यानों का व्यापक प्रभाव पडा, इसी बीच उन्होने तीन स्थानो पर नवीन आर्य समाजों की स्थापना करवाई। पजाब की समस्या को देखते हुए डा० सुमन ने अपने ओजस्वी भाषणो मे कहा कि यदि 'पजाब मे भारत सरकार ने सेना नहीं भेजी तो परिणाम अच्छे नहीं होग।' डा० सुमन का यह प्रवास प्रभावशाली व सराहनीय रहा। —मत्री आर्य समाज नागदा

१२३० ईसाइयो का हिन्दूधर्म मे प्रवेश

उडीसा के सम्बलपुर, बलागीर, सुन्दरगढ जिलो मे ५००० से अधिक ईसाई पुन वैदिक धर्म मे आने को तैयार हैं। इसके लिए उन्होन उत्कल आ प्र सभा को विधिवत प्रार्थना पत्र भर कर भी दे दिया है। इन्ही लोगो मे से प्रथम किस्त के रूप मे सम्बलपुर जिल के रैंगाली, आमामिना, सरिया थानो के १६ गावो के ३६० ईसाई परिवारो के १२३० सदस्यो ने स्वेच्छा से पुन वैदिकधर्म ग्रहण किया।

शुद्धि का यह कार्यक्रम ५ से ७ जून १९८६ का पाच कैम्पो मे उत्कल आ प्र सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी गुरुकुल आमसेना की अध्यक्षता में तथा श्री प विशिकेसन श्री शास्त्री के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। इन सभी अवसरो पर भूतपूर्व पाद्री श्री बी भारती तथा उडीसा के स्थानीय आर्य बन्धु उपस्थित रहे। आ प्र सभा के उपदेशक श्री भगवानदेव व श्री सुभाष शास्त्री का इस आयोजन मे विशेष सराहनीय प्रयास रहा। मुख्याध्यापक
गुरुकुल आमसेना 'खरियाररोड)
कालाहान्डी (उडीसा)

देश का पुनः विभाजन होगा

श्री देवीदास आर्य

मसूरी आर्य समाज मसूरी के वार्षिकोत्सव में आयोजित सभा मे प्रसिद्ध आर्य नेता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र के उप प्रधान श्री देवीदास आर्य ने भाषण देते हुए कहा कि देश सकट के दौर से गुजर रहा है देश के सीमावर्ती सभी प्रदेशो मे पजाब कश्मीर केरल पूर्वी उ प्र मे विभाजन व अलग राज्य की आवाज बुलन्द हो रही है। केन्द्रीय सरकार इन्हें कुचलने मे असफल सिद्ध हो चुकी है। यदि सरकार की साम्प्रदायिक तुष्टिकरण की नीति कायम रही तो वह दिन दूर नहीं जब कांग्रेस सरकार एक बार पुन देश का विभाजन करे।

श्री आर्य ने आगे कहा कि आर्य समाज देश के इस सकट को देख कर कैसे चुप्पी धारण कर सकता है। हिन्दू समाज को एक करने की आवश्यकता है।

स्वामी ब्रह्मानद ने कहा कि देश में सन् १९४७ से पूर्व की स्थिति उत्पन्न हो रही है। मत्री

पूर्वाञ्चल आर्य महा सम्मेलन

आर्यसमाज गोरखपुर में सम्पन्न

गोरखपुर ८ जून । पूर्वी उत्तरप्रदेश के गोरखपुर, बस्ती, देवरिया, आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर, जौनपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, गोंडा, बहराइच और फैजाबाद जनपद से आये सैकड़ो प्रतिनिधियो तथा आर्यसमाज सिलो गुड़ो से आये अतिथियो की उपस्थिति मे श्री अक्षय मुनि वानप्रस्थ आजमगढ़ भूतपूर्व उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अध्यक्षता मे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के मन्त्री एव प्रदेश के आर्यजगत के युवा नेता श्री मनमोहन जी तिवारी (मुख्य अतिथि) की उपस्थिति मे सुदूर जिलो से आये प्रतिनिधियो ने समाजो के सगठन की दृष्टि से वृत्त, विचार समस्याए एव सुझाव प्रस्तुत किये जिनका उचित समाधान सभा मन्त्री महोदय ने किया । तथा पूर्वाञ्चल मे आर्य समाजो के सुदृढ़ सगठन हेतु अनेक योजनायें बताई एव सभा से सक्रिय सहयोग का आश्वासन दिया, पूर्वी प्रचार विभाग के सयोजक डा० विनय प्रताप के ध्यानाकर्षण पर स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री तिवारी जी ने कहा–कि किसी भी शिक्षण सस्था, जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० से सम्बद्ध कोई भी अन्य सस्था अपनी अलग रजिस्ट्री (पजीकरण) नहीं करवा सकती यह नितान्त अवैध है । आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध समाजें जो ऐसी सस्थाओ का सहयोग करेंगी अनुशासन भग की दोषी होगी । सभा की पूर्वी प्रचार विभाग के सदस्य श्री रमाशकर आर्य केराकत ने भी सम्बोधित किया । सयोजक प्रो० विजयप्रताप ने समस्त प्रतिनिधियो, अतिथियो को धन्यवाद ज्ञापन किया । अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री अक्षयमुनि वानप्रस्थ ने समाजो से ईर्ष्या द्वेष भाव को त्याग कर भ्रातृत्व भावना से सेवा एव सहयोग की कामना करते हुये कन्धे से कन्धा मिलाकर समाज का कार्य करने का आह्वान किया । –सम्वाददाता

–आर्यसमाज बक्शीपुर, गोरखपुर का ८८ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ५ जून से ११ जून के मध्य हर्षोल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ । जिसमे आर्य युवा सम्मेलन, सस्कृत सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, धर्म सम्मेलन, वेद सम्मेलन, आदि का आयोजन हुआ । आर्यजगत के प्रमुख विद्वान एव वक्ता सम्मिलित हुए। उत्सव प्रभावशाली एव पूर्णतया सफल रहा । –सम्वाददाता

–दिनांक १५ जून ८६ को आनन्द बाग हल्द्वानी जि० नैनीताल मे एक नवीन आर्यसमाज की स्थापना श्री यशवन्तसिंह जी एडवोकेट के मकान पर श्री यशवन्तसिंह जी एडवोकेट की अध्यक्षता मे हुई । जिसमे श्री हरिश्चन्द्र जी प्रधान, श्री चन्द्रप्रकाश जी मन्त्री एव श्री गिरीश चन्द्र जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए । –विश्वम्भरदत्त शर्मा

–नगर आर्यसमाज रकाबगंज व श्री दयानन्द बाल सदन मोतीनगर लखनऊ मे दि० २२ जून ८६ को क्रमश प्रातःकाल सायकाल ज्येष्ठ पूर्णिमा के विशेष यज्ञ सम्पन्न हुये । –ज्ञानकृष्ण

–आर्यसमाज, अल्मोड़ा का ८२ वां वार्षिकोत्सव ११, १२, १३ जून १९८६ को सम्पन्न हुआ । उत्सव मे डा०प्रज्ञादेवी, आचार्या पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी तथा श्री हरिसिंह एव श्री विक्रमदेव, भजनोपदेशक, बिजनौर के प्रवचन विशेष प्रभावशाली रहे । –मन्त्री

आवश्यक सूचना

वर्षाकालीन सस्ती प्रचार योजना

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजो एवम् अन्य सभी वेद प्रचार सस्थाओ को सहर्ष सूचित किया जाता है कि वर्षाकालीन सत्र मे जुलाई से (१ सितम्बर ८६ तक वेद प्रचार सप्ताह छोड़कर) सभान्तर्गत कार्यरत महोपदेशको उपदेशकों एवम् भजनोपदेशको की सेवायें उपलब्ध करने हेतु सभा के उपदेश विभाग से पत्र व्यवहार करे और सस्ती उत्सव प्रचार योजना के अन्तर्गत अपने यहाँ प्रचार व्यवस्था कराने का कष्ट करें और मार्ग व्यय के अतिरिक्त कम से कम १५१) एक सौ इक्यावन रुपया एक उपदेशक और भजनोपदेशक को दो दिन प्रचारार्थ सभा को वेद प्रचार निधि मे देकर लाभान्वित हों ।

आशा है साधनहीन निष्क्रिय आर्यसमाजें इस योजना से अधिक से अधिक लाभ उठायेंगी ।

निवेदक–
केशवदेव शास्त्री वानप्रस्थ महोपदेशक
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, लखनऊ

–आर्यसमाज ताड़ीखेत का ११ वां वार्षिकोत्सव १४ से १६ जून १९८६ तक सम्पन्न हुआ । –मन्त्री

–आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद मे दिनांक १ जून ८६ से ८ जून ८६ तक नगर के विभिन्न स्थानो पर वेद प्रचार एव जन जागरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, भ्रांझनपुर ग्राम मे पशु बलि की प्रथा के विरुद्ध जन-मत तैयार किया गया एव बृहद यज्ञ एव प्रचार का आयोजन किया गया । –मन्त्री

–आर्यसमाज धरहरवा, चम्पारण (बिहार) मे यजुर्वेद परायण यज्ञ दिनांक १०-६-८६ से १२-६-८६ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ जिसमे ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी तथा अन्य प्रमुख विद्वान एव वक्ता सम्मिलित हुये तथा दिनांक १३ जून से १४ जून तक प० चम्पारण अन्तर्गत हिरा पाकड मे प्रवचन एव यज्ञ सम्पन्न हुआ । –उपमन्त्री

–दिनांक १ जून से १९ जून तक भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी द्वारा प्रयाग, कानपुर(लाजपत नगर), भृगुद्वार नगर व महानगर(लखनऊ), गोरखपुर सैनिक बिहार पजाबी बाग दिल्ली तथा वेद मन्दिर चांदपुर मे वेद प्रचार सम्पन्न हुआ । –सम्वाददाता

–आर्यसमाज अडीग (मथुरा) का वार्षिक उत्सव दि० १७-१८ जून को उत्साहपूर्वक मनाया गया । उत्सव मे आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान एव वक्ता सम्मिलित हुये । –मन्त्री

निर्वाचन–

आर्यसमाज हल्द्वानी (नैनीताल)
प्रधान—श्री डा० अमृतलाल जी
मन्त्री—श्री प्रेमलाल जी
कोषाध्यक्ष—श्री रविन्द्रकुमार जी

आर्यसमाज देहरादून
प्रधान–श्री चिरंजीलाल ठेकेदार
मन्त्री–श्री जगदीश राय
कोषा०–श्रीमती वीर बाला

आर्यसमाज कोटद्वार (गढ़वाल)
प्रधान—श्री कृष्णचन्द्र
मन्त्री—श्री आनन्दप्रकाश अग्रवाल
कोषाध्यक्ष—श्री विष्णु कुमार

आर्यसमाज बिजनौर
प्रधान–श्री विधुशेखर जी
मन्त्री–श्री सुरेशचन्द्र गुप्त
कोषाध्यक्ष–श्री हेमराज दुबे

सम्पादक के नाम पत्र–

प्रिय सम्पादक महोदय,

क्या बंगला देश की सीमा पर स्थित प. बँगाल के सात जिले मुस्लिम बहुल जिले बन जायेंगे

बगला देश की सीमा पर स्थित प० बगाल के सात जिलो मे रहने वाले हिन्दू स्वय अपने ही देश मे शरणार्थी बन जायेंगे, यह सम्भावना मुस्लिमो का खुलकर पक्षपात करने वाली प० बङ्गाल सरकार, उसके भ्रष्ट अधिकारियो तथा अनेक विरोधी दलो की मेहरबानियो से जल्दी ही एक अस्लियत बन जायेगी, ऐसा प्रतीत होता है।

सिद्धार्थ शकर रे के मुख्य मन्त्रित्व काल मे ही बगलादेशी मुसलमानो का प० बगाल मे आगमन आरम्भ हो गया था, किन्तु तब वह ऐसे था, जैसे बूद-बूद पानी से बाल्टी भर रही हो। अब तो उनका आगमन ऐसे हो रहा है, जैसे मोटे पाइप से पानी छोडा जा रहा हो। विश्वस्त सूत्रो के अनुसार, पिछले तीन वर्षों मे पांच लाख से अधिक बगला देशी मुसलमानो ने इन सात जिलों–कूचबिहार, जलपाईगुडी, दीनाजपुर, नदिया, मालदा, मुर्शिदाबाद ओर २४ परगना–को अपना नयाघर बना लिया है। "लीकप्रूफ बार्डर्स" की अपनी पचवर्षीय योजनाओ की घोषणा करते हुए, आन्तरिक सुरक्षा मन्त्री श्री अरुण नेहरू ने भी इस सच्चाई को स्वीकार किया कि "हमारी १६०० कि मी लम्बी बगलादेश की सीमाए "अत्यन्त छिद्रयुक्त" हो गई हैं।"

'आर्गनाइजर' (१३ अप्रैल, १९८६) मे प्रकाशित एक लेख के अनुसार, हालत इतनी खराब हो गई है कि इन जिलो मे रहने वाले हिन्दुओ के कुछ वर्गों ने अपने को आरक्षित महसूस कर वहाँ से जाकर अन्य सुरक्षित स्थानो मे जाकर बसने का फैसला कर लिया है।

बगलादेश से पश्चिमी बङ्गाल आने वाले ये मुसलमान भारत आकर क्या करते हैं, इसका अनुमान प० बङ्गाल की फरवरी, १९८६ की इस रपट से लगाया जा सकता है कि ये लोग बेकार हिन्दू स्त्री-पुरषो को मध्य पूर्व के देशो मे भेजते है, जहां इन्हें जबरन मुसलमान बना लिया जाता है। ये बुर्दाफरोशी, तस्करी जैसे काले धधे भी करते ह। इतना ही नहीं, वे प० बङ्गाल के कुछ इलाको मे बडे पैमाने पर सम्पत्ति खरीद कर उन्हें मुस्लिम बहुल इलाके बना रहे हैं।

अब समय आ गया है, जब देश भर के हिन्दू एकजुट होकर प० बङ्गाल के सीमावर्ती जिलो मे रहनेवाले हिन्दुओ की मदद के लिये आगे आयें, ताकि कुटिल इरादो को लेकर बगलादेश से भारत आये बगला देशी मुसलमानो की नापाक और राष्ट्र विरोधी चालें बेकाम हो सकें।

धर्म स्वातन्त्र्य समर्थन समिति की ओर से,
सदाजीवत लाल वन्दूलाल
मानद महामन्त्री

प्रचार के लिए साठ पैसे में दस पुस्तकें

आवश्यक सूचना

उत्तरप्रदेश की समस्त आर्यसमाजो और आर्य उप प्रतिनिधि सभाओ के मन्त्री महोदयो को सूचित किया जाता है कि सभी को वार्षिक चित्र भेज दिये गये हैं–जिन्हें न प्राप्त हुए हो, वह सभा कार्यालय से पत्र लिख कर पुन मगा लें और भरकर सभा प्राप्तव्य दशाश सुवकोटि आदि के धन सहित १५ अगस्त ८६ तक कार्यालय को अवश्य भेजने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

दयानन्द सँघ की सूचना

सभा से सम्बन्धित समस्त अवतनिक उपदेशको, भजनोपदेशको को सूचित किया जाता है कि वर्ष १९८५ का कार्य विवरण लिखकर १५ अगस्त ८६ तक सभा कार्यालय को भेजने की कृपा करें, ताकि विवरण सभा की वार्षिक आख्या मे सम्मिलित किया जा सके।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

कन्या गुरुकुल, हरद्वार

पो० कनखल, जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

के सुरक्षित छात्रावास, उत्तम भोजन व्यवस्था तथा याज्ञिक वातावरण मे कक्षा १ से १४वीं तक कन्याओ को शिक्षित कराने के लिए सम्पर्क करें। प्रवेश प्रारम्भ हैं। आचार्या।

कविराज हर्षवर्धन शास्त्री
वैद्याचार्य बी० एम० एस० आयुर्वेदाचार्य
मुख्याधिष्ठाता
कन्या गुरुकुल हरिद्वार पो० कनखल (उत्तर प्रदेश)

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ जून १९८६ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हे। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है।

३६४, ४५५, ४८५, ५४८, २२५१, २५६८, ३६५८, ४९४३, ८५९७, ८६१५, ८६२१, ८७८६, ८७९४, ८८७९, ८९५७, ९१४९, ९१५८, ९१७१, ९१८२, ९४५८, १०१७६, १०१७७, १०१७८, १०१८०, ११२०९, ११२१०, ११६२४, ११६२८, ११६३१, १२२०२, १२२०६, १२२०९, १२२११, १२२१३, १२२१४, १२६७६, १२६७९, १२६८०, १२९१२, १२९१३, १२९२१, १२९२३, १२९२४, १३१२२, १३१२४, १३१२७, १३१२८, १३१२९, १३४७७, १३४७८, १३४७९, १३४८०, १३४८२, १३४८३, १३४८४, १३४८५, १३४८६, १३४८७।

विनीत–
– व्यवस्थापक 'आर्यमित्र'

शोक समाचार

— आय समाज जनकपुर जिला बग्ली के आय वीर मत्र श्री भीमसेन आर्य की चचेरी मा का स्वर्गवास दिनाक २९।५।८६ को हा गया वे ७० वष की थी। समाज ने भीममेन आय की माँ को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शाति तथा शोक विह्वल परिवार के धैय हेतु ईश्वर से प्राथना की।मत्री आय समाज

—दु ख है कि आय समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर के कर्मठ सदस्य श्री राम किशन की धम पत्नी श्रीमती सरस्वती देवी का निधन दिनाक १३ मई ८६ को हृदय गति रुक जान मे मद्रास मे हो गया वे ६० वष की थी। दिनाक २५ मई८६ के साप्त हिक सत्सग मे एक शोक सभा करके दिवगत आत्मा के लिए सदगति एव शाक सतप्त परिवार के लिए धैर्य प्रदान करने हतु ईश्वर मे प्राथना की गई।

— राम जी आर्य

—आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर के सदस्य श्री प्रभुदयाल आय के पुत्र श्री वेदप्रकाश का निधन दिनाक १३ मई ८६ को पोलियो से हो गया वे १८वष के थे। समाज ने शोक प्रस्ताव पारित करक दिवगत क शांति एव दु खी परिवार उन व धैर्य हतु प्रभु स प्राथना की।

- रामजी आय

—महान् दु ख है कि हमारी महिला आय समाज फैजाबाद की पुरानी सदस्या वयोवृद्धा श्रीमती सुमित्रा वर्मा का निधन दिनाक २६ मई ८६ को हो गया। अपन पीछे वे भरा पूरा परिवार छोड गई हैं। स्व श्रीमती सुमित्रा देवी का अन्त्येष्टि सस्कार पूण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। वे महिला आय समाज की एक कमठ कायकर्त्री सदस्या थी। प्रभु उनकी आत्मा को असीम शाति प्रदान करे।

— दयावती गुप्ता मन्त्राणी

—आय समाज भरथना के वरिष्ठ नता व स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी श्री अनवर मल जी के आकस्मिक निधन पर सभी उपस्थित सदस्यो एव पदाधिकारियो ने शोक सवदना प्रकट की है कि परमपिता परमात्मा दिवगत आत्मा को चिर शान्ति दे तथा शोक सतप्त परिवार को असीम दु ख सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

—मन्त्री आर्यसमाज

—आर्य समाज गवां (बदायूं) न श्री सच्चिदानन्द सहाय के हृदयगति रुक जान से आकस्मिक निधन पर शोक सवेदना व्यक्त की है वे वर्षो तक आर्य समाज गवा के प्रधान रह। उनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज गवा (बदायू)ने श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री के निधन पर उनकी दिवगत आत्मा की चिर शांति हेतु शोक सवेदना व्यक्त की, श्री शास्त्री जी का आर्यसमाज गवा से गहरा एव आत्मीय सम्बन्ध था। ओम प्रकाश

— आर्य समाज मन्दिर ताडीखेत (अल्मोडा) मे दिनाक ११ जून ८६ को महात्मा भक्त मुनि की दिवगत आत्मा हेतु शान्ति यज्ञ तथा श्री देवकी नन्दन पान्डेय की दिवगत आत्मा को शान्ति हेतु शान्तियज्ञ दिनाक ८ जून ८६ को श्री प० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। श्री देवकी नन्दन जी का निधन दिनांक ६ जून ८६ को नैनीताल मे तथा महात्मा भक्तमुनि जी का निधन दिनांक ९ जून ८६ को होगया था।

—मन्त्री आर्य समाज

—आर्यसमाज अडींग (मथुरा) ने श्री पुरुषोत्तमदास आर्य वेद मन्दिर तथा श्री धर्मेन्द्र जी शास्त्री के निधन पर शोक सवेदना व्यक्त करते हुए प्रभु से दिवगत के शान्ति तथा परिवार जनो के धैर्य हेतु प्रार्थना की।

—मन्त्री आयसमाज

—आर्यसमाज हांसीपुर (मिर्जापुर) के सदस्य श्री यज्ञनारायणसिंह के २५ वर्षीय युवा पौत्र के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज हांसीपुर ने गहरा दु ख प्रकट करते हुए दिवगत की शान्ति तथा शोक विह्वल परिवार जनों के शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए शोक सवेदना व्यक्त की। —मन्त्री आर्यसमाज

—आर्यसमाज ठाकुरगज लखनऊ के वरिष्ठ सभासद श्री महादेव मिश्र की धर्मपत्नी का देहान्त ५ जून ८६ को हो गया वे ६१ वर्ष की थी, दाह सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार श्री ज्ञानकृष्ण आर्य जी द्वारा सम्पन्न हुआ तथा दिनांक ८ जून ८६ को श्री मेधावी जी ने गृह शुद्धि का कार्य सम्पन्न कराया। —सम्वाददाता

—दु खद समाचार है कि आयसमाज कैसरबाग (लखनऊ) के अन्तरङ्ग सदस्य श्री रामसरन जी बजाज का लम्बी बीमारी के पश्चात् दिनाक १५ जून १९८६ को निधन हो गया। स्व० श्री बजाज जी का अन्त्येष्टि सस्कार पूर्व वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज कैसरबाग तथा नगर की अन्य आर्यसमाजो ने दिवगत आत्मा की चिर शान्ति एव शोकाकुल परिवार को धैर्य धारण हेतु प्रभु से प्रार्थना करते हुए स्व० श्री बजाज जी को अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। यज्ञ श्री विक्रमादित्य जी वसन्त द्वारा सम्पन्न हुआ।—अवधनारायण मन्त्री

—आर्यसमाज वैदिक आश्रम (रामघाट रोड) अलीगढ के उपप्रधान श्री शिव शर्मा जी का निधन दिनांक १८ जून १९८६ को मस्तिष्क की नाडी फट जाने के कारण हो गया। आर्यसमाज सासनी ने स्व० श्री शर्मा जी के निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। प्रभु दिवगत को शान्ति तथा दु खी परिवार को धैर्य प्रदान करे। —जयनारायन शर्मा

—आर्यसमाज सदर बाजार झांसी के पुरोहित एव सदस्य श्री चन्द्रभान जी आय का दिनांक १७ जून १९८६ को निधन हो गया समाज ने एक शोक सभा द्वारा दिवगत के चिर शांति तथा शोक सतप्त परिवार के धैर्य धारण हेतु प्रभु से प्रार्थना की। —शान्तिप्रसाद

—आर्य समाज वैदिक आश्रम अलीगढ़ मे एक शोक सभा श्री हर प्रसाद आय 'दादा जी' की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई जिसमे समाज के उपप्रधान श्री प० शिवशर्मा जी के निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा के शांति एव शोक विह्वल परिवार के धैर्य धारण हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई। —मन्त्री

—आयसमाज जाजूमई (मैनपुरी) ने आय प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी के परमस्नेही पुत्री के निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। प्रभु दिवगता को शांति तथा दु खी परिवार जनो को असीम धैर्य प्रदान करें। —मन्त्री

—आर्यसमाज रेलवे अम्बाला के माननीय सदस्य श्री गुरादुवाया जी मोहन का दिनांक १० जून १९८६ को लम्बी बीमारी के पश्चात् निधन हो गया वे ८२ वष के थे। आर्यसमाज रेलवे रोड तथा महिला आर्य समाज रेलवे रोड अम्बाला ने श्री दुवाया जी के निधन पर गहरा दु ख व्यक्त किया है। प्रभु दिवगत को शांति तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे। —जगदीशचन्द्र मन्त्री आ०स० अम्बाला

—दु खद समाचार है कि आर्यसमाज रुढ़िया छिनकौरा (मैनपुरी) के कर्मठ मन्त्री श्री लालतासिंह आर्य का निधन दिनांक ५ जून १९८ को हो गया है। समाज के समस्त कार्यकर्ताओ ने अपने मन्त्री के निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा को चिर शान्ति तथा शोक सतप्त परिवार को धैर्य धारण हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

—गङ्गासिंह आर्य

—

'आर्य्यमित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४५९९३ ४५६६३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
भा० आषाढ ९२
आषाढ शुक्ल ६
रविवार, १३ जुलाई १९८६ ई०

ओ३म् आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र



आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.



१८८६-१९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर स २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी.कालेज, लखनऊ

विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक
गतिविधियों पर विचार

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १ फोन ४५९९२

स्वत्वाधिकारिणी आ० प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदीन ...स्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से
श्री विशेश्वर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

वर्ष ८९] आर्य ... २९, आषाढ़ शुक्ल १४, रविवार सम्वत् २०४३ वि०, दि० २० जुलाई १९८६ [अङ्क २९

प्रार्थना

[illegible]

भावार्थ—हे प्रभु ! तू सब से महान है । हे ... तू वास्तव में महान है । तुझ महान सर्वस्वरूप की महिमा गाई जाती है । हे दिव्य स्वरूप ! तू वस्तुतः महान है ।

इस अंक के आकर्षण

वेद का मनन

निजाम रियासत में आर्यसमाज सत्याग्रह की कुछ यादें

आयु का ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित होना और आयुर्बुगत

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी

सम्पादक—
[illegible]

[illegible] १०)
४ पौंड
एक प्रति ७५ पैसे

आतंकवाद एव विघटनकारी दलो से समझौता न किया जाय

केन्द्र शरणार्थियो की उपेक्षा न करे शरणार्थी मन्त्रालय गठित हो

शताब्दि समारोह की सफलता आर्यजनो के सहयोग पर निर्भर है

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने मिजोरम मे लालडेंगा से समझौता किया जो विगत पच्चीस वर्षों से नेशनल मिजोरम फ्रन्ट के द्वारा विदेशो से धन लेकर और लन्दन मे कार्यालय स्थापित कर भारत के विरुद्ध पड़ोसी देशो से सहायता प्राप्त कर रहा है। समझौते मे यहा तक दुबलता दिखाई गई कि उसे मिजोरम का प्रधान मन्त्री काग्रेस के बल पर बना दिया गया। सन्देह है कि लालडेंगा क्या अपने विदेशी सहायको से इतनी जल्दी सम्बन्ध तोड देंगे और क्रिश्चियन मिशन जिसके वह सदस्य हैं अपने षड्यन्त्रो को बन्द कर देगा ? इसी शासन की दुबलता को देखते हुए पजाब के श्री बादल और तोहड़ा ने प्रस्ताव रख दिया कि पजाब के आतङ्कवादियों मे जिसमे सिख छात्र फेडरेशन और दमदमा टकसाल के प्रतिनिधि हैं सरकार पजाब समझौते की वार्ता करे इतना ही नहीं उन नेताओ के नाम भी दे दिये जो विविध अभियोगों मे जेल मे बन्द है और शर्त रखी कि उनसे बातचीत की जाय। समस्त सिखों की जो जेलो मे बन्द हैं आम रिहाई हो तथा जोधपुर मे जो कर्तव्य विहीन सैनिक बन्द हैं वह भी वापस भेजे जाँय। 'आर्यमित्र' प्रधान मन्त्री से अनुरोध करता है कि—आतङ्कवादियो से समझौते की बातचीत केन्द्रीय शासन की दुबलता को प्रकट करेगा। परिताप है कि—आज भारत के ही गणतन्त्र के अन्तर्गत रहने वाले पजाब के हिन्दू पलायन कर रहे हैं तथा राजस्थान हरियाणा दिल्ली और उत्तरप्रदेश मे शरण ले रहे हैं यह सब स्थिति क्यों हुई और इसके मूल मे क्या कारण है। किन राजनैतिक दलो का बौद्धिक दिवालियापन है इसे देश का प्रत्येक बौद्धिक व्यक्ति जानता है और हिन्दू तथा सिखो मे यह जो गहरी खाई बन गई है उसके लिए कौन उत्तरदायी है यह भी सब जानते है। खेद के साथ कहना पड रहा है कि हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान मे जो हिन्दू आये हैं उनके लिए आश्रय उनकी देख रेख और भोजन व्यवस्था समाज सेवी दल कर रहे है जिनमे आर्यसमाज सनातन धर्म मण्डल और अन्य संस्थायें है परन्तु केन्द्रीय सरकार अपने दायित्व का निर्वाह नहीं कर रहा है यहा तक कि दिल्ली में भी भाग कर आये हिन्दुओ के प्रति सरकार उदासीन है यह एक विडम्बना है कि सरकार क्यों इस प्रश्न पर आंख बन्द किये हैं ? जबकि उसका कर्तव्य है शरणार्थियो की सहायता।

'आर्यमित्र' आशा करता है कि हिन्दुओ की उपेक्षा करना सरकार के लिए उचित नहीं है। हिन्दुओ के संगठन व ... हो रहे हैं। राजीव सरकार की छवि आज देश के बहुमत वर्ग के सामने धूमिल हो रही है। केन्द्रीय सरकार को तुरन्त सहायता कार्य करना चाहिये और आवश्यकता इस बात की है कि केन्द्र मे शरणार्थी सहायता का मन्त्री और विभाग पृथक गठित किया जाय।

शताब्दि समारोह

उत्तरप्रदेश और देश तथा विदेश के आर्यजनो को अवगत हो गया है कि उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने जीवन के सौ बसन्त और पतझड पार कर लिए है इस वर्ष अक्टूबर १७ से २० के मध्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह का आयोजन कर रही है जिसकी सफलता के लिए सभा के अधिकारी ... मे लगे हैं और प्रयास कर रहे हैं कि शताब्दि अपनी ऐतिहासिकता को कायम कर सके और आयोजन मे कुछ ऐसे निर्णय लिए जांय जो भविष्य मे हमारी सेवा के उज्ज्वल प्रतीक बने। समारोह एक ऐतिहासिक होगा साथ ही भविष्य के लिए प्रेरणाप्रद होगा। परन्तु आज जिस प्रकार की महंगाई है और जैसी हमारी वृहत योजना है उसमे हमे तभी सफलता मिल सकती है जब प्रत्येक आर्यजन शताब्दि की सफलता अपनी सफलता समझे और जनता से सम्पर्क करे तथा आर्थिक सहायता के साधनो को उपलब्ध कराई जाय। सभा ने आवश्यक परिपत्र और दान प्राप्ति हेतु उपयोगी सामग्री प्रकाशित कर दी है आर्यसमाजों से अनुरोध है कि अपने रविवारीय सत्सगो में शताब्दि की चर्चा करें और आवश्यक धन की अपील करें। विशेष जानकारी हेतु मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क किया जाय। —आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

आर्य्यमित्र

सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार २० जुलाई १९८६ दयानन्दाब्द १
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की अन्तरंग सभा का अधिवेशन दि० २७ जुलाई १९८६ रविवार को प्रातः १० बजे से स्वामी नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में होना निश्चय हुआ है। अतः सभा के समस्त अन्तरंग अधिकारी व सदस्य समय पर पधार कर कार्य संचालन में सहयोग प्रदान करें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

आर्य का सितारा विलीन

भारत के प्रमुख नेताओं की प्रथम पंक्ति के एक विशिष्ट नेता श्री बाबू जगजीवन राम जी के निधन से देश के नेतृत्व मण्डल में एक गम्भीर रिक्तता उत्पन्न हो गई है। स्व० बाबू जगजीवन राम की जन्म स्थली बिहार का आरा जनपद है परन्तु वह उदय क्षितिज से ऊपर उठकर समस्त भारत में एक सर्वमान्य व्यक्ति बन गये और अपने जीवन पर्यन्त कुछ सिद्धान्तों तथा आचरण पर दृढ़ रहे। भारत के एक दलित समाज में उनका जन्म हुआ परन्तु जैसे कोयले की खान से हीरा निकलता है वैसे ही बाबू जगजीवन राम के विषय में भी कहा जा सकता है कि हीरा तराशने पर चमकता है उसी प्रकार से बाबू जगजीवन राम के जीवन पर जब आर्य समाज की छाप पड़ी तो उन्हें बल मिला कि जन्म से नहीं व्यक्ति कर्म से दलित होता है। बाबूजी स्नातक तक शिक्षा प्राप्त करके स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी के रूप में उभरे और महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपना जीवन निर्माता स्वीकार करते रहे ऐसा बाबू जी ने आर्य समाज के मंच पर कई बार स्पष्ट किया।

बिहार में स्व० जननायक पं० जवाहरलाल नेहरू ने परखा और समझा। सन् १९४६से निरन्तर केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में रहे जिस विभाग को उन्हें सौंपा या उसे सुधारने में सफल रहे। विचारों में आर्य समाजी सिद्धान्त के पोषक आचरण में गांधी वादी लोग के व्यवहार कर्ता स्वभाव में सरल और विनीत तथा श्वेत खादी का परिधान उन्हें अत्यन्त प्रिय था। स्व० इन्दिरा जी के मन्त्रिमण्डल में भी वरिष्ठ मन्त्री रहे बाद को कांग्रेस से पृथक होकर जनता पार्टी के नेताओं में प्रमुख रहे उन्हें आशा थी कि भारत के प्रधान मन्त्री अथवा राष्ट्रपति के पद पर किसी हरिजनको होना चाहिये और उसके लिए वह अपने को उपयुक्त समझते थे परन्तु यह इच्छा पूर्ण न हो सकी इसके कारणों में कुछ राजनैतिक समस्यायें और दलों की राजनीति रहा। इन पंक्तियों के लेखक को बाबू जी के साथ आर्य समाज के कई मंचों पर मिलने और बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बाबू जी बुद्धि की दृष्टि से विद्या की दृष्टि से धन की दृष्टि से निम्न श्रेणी में नहीं थे और जब उनसे यह प्रश्न किया गया कि— आर्य समाज आपको कर्म से उच्च मानता है लेकिन प्रत्येक निर्वाचन के समय आप हरिजन श्रेणी में चले जाते हैं इसका उनके पास कोई समुचित उत्तर नहीं था फिर भी संसद में रहकर वे इस रूप में हरिजन का प्रतिनिधि होकर अधिक सेवा कर सकता हूँ।

बाबू जगजीवन राम सभी की श्रद्धा के पात्र थे और इस समय उनके समकक्ष का कोई दूसरा नेता नहीं था। आर्यमित्र स्व० बाबूजी के प्रति सादर एवं विनीत श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है और उनके परिवार के सदस्यों से अनुरोध करता है कि उनकी पुत्री सुश्री मीरा कुमार तथा भावी मेधावी कीर्ति अपने पारिवारिक वैमनस्य को समाज की चर्चा का अधिक विषय न बनाये अपितु दोनों मिलकर श्री जगजीवन राम सेवा मन्दिरों की स्थापना कर जहां हरिजन एवं दलितों को विकासोन्मुख होने की दिशा प्रदान की जाय। इन दोनों महिलाओं से आर्य जगत का अनुरोध है कि वह स्व० बाबू जी की भांति आर्य समाज के साहित्य का अध्ययन कर और आसक्ति विहीन होकर समाज की सेवा करें तथा बाबूजी के यश और स्मृति को जनता में स्थायी शक्ति दे सकती है।

विचित्र परामर्श

ज्ञात हुआ है कि दिल्ली के सचिवालय के कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से अवर तथा निम्न वर्ग के लिपिकों के लिए एक लम्बी वस्त्र व्यवस्था की अनिवार्यता की जा रही है जिससे उनमें काया में तेजी आये। इसके लिए मंत्रियों की एक समिति नियुक्त की गई है और जिसने यह सुझाव दिया है कि पुरुष कर्मचारी धोती और कुर्ते के स्थान पर सफारी बुशर्ट और पैंट पहन और पैंट पर जब कभी कमीज पहनें तो उस पर टाई लगाना अनिवार्य हो। यह परामर्श इस बात को प्रकट करता है कि सत्ता में आरूढ़ अधिकारी और प्रवेश पाये हुए कुछ नवीन मन्त्रियों की मानसिकता क्या है ब्रिटिश काल में भी धोती कुर्ता पहनकर सचिवालयों के कर्मचारी जाते थे। बंगाल और मद्रास में इसी का प्रचलन था परन्तु अब सफारी सूट और टाई के लिए कमीज देश को उसकी अपनी राष्ट्रीयता से हटाकर योरुप के वातावरण में ढकेल रही है क्योंकि इस समय इन स्कूलों के भू० पू० विद्यार्थियों की छाप उनकी वेश भूषा और यूरोप के नागरिकों की नकल का भी प्रचार अधिक हो रहा है।

गांधी की शराब बन्दी का उपहास करके सरकार अधिक मदिरालयों को खोल रही है और खेद है कि भारत और विदेश में भारत सरकार के द्वारा आयोजित समारोहों पर मदिरा का खुल कर प्रयोग हो रहा है। इसी प्रकार आज खादी की भी दुर्दशा है और संसद के पांच सौ छब्बीस सदस्यों में से बहुत कम शुद्ध खादी में दिखाई पड़ते हैं तथा गांधी टोपी भी दो चार के सिर पर नजर आती है। अंग्रेजी भाषा का भी वातावरण गर्म है और भय है कि कहीं ऐसे नेता की सुझाबूझ और नकल करने में तेज व्यक्ति यह भी अनुभव करने लगें कि योरुप के किसी देश की महिला उनके पास पत्नी के रूप में हो तभी उन्नति हो सकती है।

देश के प्रबुद्ध और राष्ट्रीय महत्व के व्यक्तियों को इन बदलती परिस्थितियों पर विचार करना चाहिए।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०
सम्पादक

अध्यात्म सुधा

वेद का मनन

(श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश)

ओ३म् स न पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा न स्वस्तये ॥

(ऋ० मं० १ अ० १ सू० १ मं० ६)

शब्दार्थ— (अग्ने) हे ज्ञान प्रकाश स्वरूप परमात्मन् (स) वह तू [सूनवे] सन्तान के लिए [पिता+इव] पिता की भांति [सूपायनो] सुख से प्राप्त होने योग्य, सुगमता से प्राप्त होने योग्य हो । [स्वस्तये] हमारे कल्याण के लिए [न] हमें [सचस्व] अपना बना—अङ्गीकार कर । (वैदिक वन्दना से)

विशेष— यह मन्त्र भगवान् को परमपिता की भांति सरक्षण की ओर सकेत कर रहा है । सासारिक पिता सतान की रक्षा और पालन हेतु सन्तान को आसानी से उपलब्ध है । परन्तु परमपिता परमात्मा हम सब सन्तान रूपी जीवात्माओं को दुनियावी पिता से भी आसानी से प्राप्त है । वह कण कण में विराजमान है । सर्वत्र विराजमान होता हुआ सब तरफ से हमारा सासारिक पिता से भी अधिक रक्षक और पालक है । छोटे छोटे बच्चे हर सायकाल अपने पिता की प्रतीक्षा में रहते हैं कि जब पिता आएगा तो हमारे लिए कुछ न कुछ चीजें अवश्य लाएगा । जब कोई सन्तान को मारने या पीटने लगता है तब बच्चा बड़े गर्व से कहता है कि मेरे पिता तुम्हे मारेंगे । बच्चा अपने पिता को अत्यन्त समीप एक रक्षा और पालन का साधन मानता है । वेद के द्वारा कितनी मार्मिक प्रार्थना है कि वह परमपिता परमात्मा हम सन्तानों को इस ससारिक पिता से भी अधिक उपलब्ध है । वह अन्दर भी है और बाहर भी । वह जीवात्मा के लिए सदैव आनन्द का भोजन लिए हुए है । जब जब आत्मा उसके निकट होती है तब वह परमपिता परमात्मा उसको आनन्दमय कर देता है ।

अबोध बालक कभी २ पिता को भूल जाते हैं । परन्तु सासारिक पिता भी उनको अपनी तरफ छोटी २ चीजों से प्रभावित कर आकर्षित करता है । और स्वयं भी सुख का अनुभव करता है । परन्तु परम पिता परमात्मा हम भूले हुए जीवात्माओं को सासारिक सौन्दर्य और सुख देकर हमें अपनी तरफ आकर्षित करता है । उसकी बनाई हुई कलकल करती नदियां, सरसर करती समीर, पर्वतों की हिमाच्छादित ऊंची २ चोटी से भी अधिक चमकती हुई चोटियां, हरे भरे पत्तों से लदे वृक्ष और उदय होता हुआ लालिमा से परिपूर्ण सूर्य एवं शीतल चान्दनी बरसाने वाला चांद, अथाह गहराई वाले समुद्र हमें उस परम पिता परमात्मा की तरफ आकर्षित करते रहते हैं ।

पुनरपि हम अबोध जीव इस चकाचौंध में फस जाते हैं और उस सौन्दर्य छटकाने वाली परमसत्ता को भूल जाते हैं । इस वेद मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि हे भगवान् ! हमारे कल्याण के लिए तू हमें अपने साथ जोड़, हमें अङ्गीकार कर, हमारे साथ रह । हम तुम्हें भूलें नहीं यह सासारिक पिता तो किसी भी समय धोखा दे जाता है हमें छोटे छोटे बच्चों को छोड़कर चला जाता है । जीवन काल में वृद्धावस्था में हमसे सुख की कामना करता हुआ स्वार्थवश हमारा पालनपोषण और रक्षा करता है परन्तु तू तो हमारा अकारण पिता है । न हमसे सुख चाहता है और न कभी हमें धोखा देता है तू तो सदैव हमारे साथ है । जब हम तेरी शरण में आते हैं तो तू हमें आनन्द का भोजन परोसता है और हम भी 'रसो वै सः । रस एव लब्ध्वा आनन्दी भवति' । आनन्दी हो जाते हैं । हे पिता तू सदैव हम अबोध बच्चों का कल्याण कर हमें अपनी कृपा से अपने आप को बहुत ही आसानी से उपलब्ध करा । हम तेरे बालक हैं और तू हमारा पिता है ।

कुछ शब्दों के अर्थ विद्वानों की दृष्टि में— (१) सूपायन—सूपङ्क्रम सुखोपसर्पः)— स्कन्द स्वामी । सूपचर — (वेंकटमाधव) । शोभन प्राप्ति युक्त, (सायण) सु + उप—आयन—आसानी से पास आने योग्य सुष्ठ उपगतमयन ज्ञान सुख साधन पदार्थ प्रापणे यस्मात् स सूपायन । (महर्षि दयानन्द) ।

[२] सचस्व—सेवस्व [न] अस्मान [स्कन्दस्वामी] । धातु सच् सेवने सेचे च] समवेतान् कुरु [स्वामी दयानन्द]

[३] स्वस्तये—सु—अस्तये—उत्तम कल्याणमय अस्तित्व के लिए सुखाय, कल्याणाय च [स्वामी दयानन्द] ।

हमारे हाथ निर्माण के लिए हैं विध्वँस के लिए नहीं— बाबा आमटे

कलुष, हिंसा, विघटन और साम्प्रदायिकता से अकेले जूझता एक कर्मयोगी संत

"देशवासियों को याद रखना होगा कि हमारे हाथ निर्माण के लिए हैं विध्वंस के लिए नहीं । दूसरों की रक्षा के लिए हैं, उनकी जान लेने के लिए नहीं ।" यह उद्बोधन है, ७१-वर्षीय कर्मयोगी संत बाबा आमटे का जिन्होंने कलुष हिंसा विघटन, भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता की ताकतों से अकेले जूझने तथा भारत की एकता को अक्षुण्ण बनाये रखने के सकल्प को सब भारतीयों के प्राणों में फूंकने के उद्देश्य से पिछले दिनों एक ऐतिहासिक भारत-जोड़ो महायात्रा कन्याकुमारी से कश्मीर तक सम्पन्न की । ऐसे ही दुर्लभ कर्मयोगी सन्तों के त्याग और कठोर साधना के कारण ही आज हिन्दुस्तानी अपने देश के सुनहरे भविष्य से थोड़ा बहुत आश्वस्त हैं नहीं तो राजनीतिज्ञों के खोखले, मीठे वायदों और दावों को सुनते सुनते तो वह मोह-भग की स्थिति से गुजरते गुजरते ऊब गया है ।

नशीले पदार्थों का सेवन करने वाली और पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में अपनी पहचान को खो बैठने वाली देश की युवा पीढ़ी के प्रति हम भले ही आश्वस्त न हों लेकिन हजारों कुष्ठ रोगियों को अपने 'आनन्दवन' के माध्यम से आनन्द-नाक में ले जाने वाले बाबा आमटे इस पीढ़ी को ही 'देश' की एकमात्र आशा मानते हैं । शायद ऐसी आशा व्यक्त करते समय उन्हें स्वयं अपनी तरुणावस्था याद आ जाती है, जब सुख सुविधा से पूर्ण अपने जीवन का परित्याग कर इस तरुण वकील मुरलीधर देवीदास आमटे ने समाज तथा सरकार दोनों के द्वारा पूर्णतया उपेक्षित कुष्ठ रोगियों की सेवा और उन्हें स्वावलम्बी तथा समाज के लिये उपयोगी बनाने का व्रत लिया था । किस प्रकार उनकी दुःख से भरी अंधेरी जिंदगियों में आनन्द का प्रकाशपुञ्ज बिखेरा यह देखकर एक सिख राजनयिक दग रह गया था और उसने बाबा से पूछा था— आपके आनन्दवन में रहने वाले हर कुष्ठरोगी के चेहरे पर हंसी और मुस्कान क्यों है ? और बाबा ने मुस्कराकर कहा था इसलिए कि हमने यहां हंसी और मुस्कान को संक्रामक बना दिया है ।

मगसेसे पुरस्कार से सम्मानित पद्मविभूषण अपनी निस्पृह समाज सेवा के लिए अनेकानेक पुरस्कार जीत चुके हैं । नोबेल-पुरस्कार के लिए भी उनका नाम दो ख्यातनामा विदेशी विशेषज्ञों द्वारा सुझाया गया है । किन्तु वे अपना सर्वोच्च पुरस्कार यह मानते हैं कि अपनी 'भारत जोड़ो यात्रा द्वारा उन्होंने भारतीय जन मानस में भारत की एकता व अखंडता को अक्षुण्ण रखने की चेतना जागृत की । जिस तरुण शक्ति को उन्होंने 'देश की आशा की एकमात्र किरण' माना है वह किसी दिन तेजोमय और उपलब्धियों की आभा से उद्भासित होगी, तभी बाबा आमटे की साधना अपने को धन्य मानेगी । भवदीय,

सवाजीवतलाल चन्दूलाल मानद् कोषाध्यक्ष
भारत कल्याण मंच
१८५, वालकेश्वर मार्ग तीन बत्ती बम्बई

आयु का ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित होना और स्थावर में जीव का होना वैदिक सिद्धांत है

(लेखक वैद्य, हकीम रामशंकर गुप्त प्रधान आर्य समाज जलेसर जलेसर टाउन जिला एटा उत्तर प्रदेश)

गताङ्क से आगे

इसको वैदिकसिद्धांत मानकर इसपर वादविवाद करना उचित नहीं है तथा इससे तो अपनेआप अपनी ही छीछालदर करना कराना है। जो आर्यसमाजी महाशय आयु का निश्चित होना मानते है उनको निश्चित मानने दिया जावे और जो आर्य समाजी महाशय आयु को अनिश्चित मानते है उनको अनिश्चित मानने दीया जावे इससे आर्य समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है और उसके सिद्धांत को क्या हानि होती है।

आर्य बन्धु जी ने अपने इस लेख में लिखा है कि आर्य समाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद के अद्वितीय विद्वान थे। इन्होंने वेदो के मर्म को भली भांति समझ कर जन सामान्य के सम्मुख प्रस्तुत किया था। वैदिक सिद्धांतो को जितनी सूक्ष्मता से उन्होंने अध्ययन किया था उतना स्यात ही कोई अन्य कर पाया हो इसीलिये वे इन सिद्धांतो को जन सामान्य के सम्मुख स्पष्ट रूप मे रखने मे भी सफल हुए। महर्षि द्वारा व्याख्या पाकर वैदिक सिद्धांत भी महर्षि दयानन्द के सिद्धांतो के नामसे लोक व्यवहारमे सुविख्यात हुए। महर्षि के सिद्धांतो की यह विशेषता है कि वह स्पष्ट सुलझे हुए तथा युक्ति युक्त है। संसार मे कोई भी व्यक्ति उन सिद्धांतो को असत्य सिद्ध करने मे समर्थ नहीं।

आर्य बन्धु जी की अपने लेख मे लिखी उपयु क्त बात पूर्णतया सत्य है किन्तु इसका अर्थ यह नही है कि महर्षि के प्रत्येक वचन को बिना वेदो के प्रकाश मे देख और सोच समझ आंख बन्द कर केवल इसलिये स्वीकार कर लिया जावे कि वह महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा व्याख्यात है। इस सम्बन्ध मे महर्षि ने अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए गुजरात (पंजाब अब पाकिस्तान) मे दिनांक १३-१-१८७८ को अपने एक व्याख्यान मे स्पष्ट शब्दो मे कहा कि —

'मै आपको विश्वास दिलाता हूं कि मै यह नहीं चाहता कि जो कुछ मै कहूं आप उसपर आंख मीच कर चलें। आप उस पर विचार करें। उसे जांच और परख यदि वह असत्य जान पड़े तो उस पर कोई ध्यान न दें।

(पं० घासीराम सम्पादित स्वामी जी जीवन चरित्र) पृष्ठ ४४३)

महर्षि के कथनानुसार ब्रह्मचर्य से आयु बढ़ती है और व्यभिचार से आयु घटती है इस बात को वेदो उपनिषदो आदि ग्रन्थो के प्रकाश मे और प्रत्यक्ष प्रमाणो के आधार पर परखा तो इस बात को यथार्थ नहीं पाया इसलिये आयु को निश्चित मानने वाले हम आर्य समाजियो को यह बात कि ब्रह्मचर्य धारण करने से आयु बढ़ती है और व्यभिचार से आयु घट जाती है स्वीकार नहीं है। अब आर्य बन्धु जी ने अपनी मान्यता की पुष्टि मे ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और दुलियावृत सत्यार्थ प्रकाश सन १९८४के जो वर्तमान हवाले दिये है उनपर क्रमशः विचार किया जाता है।

आर्य बन्धु जी ने अपने इस लेख मे आयु के बढ़ाने के सम्बन्ध मे ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का जो हवाला दिया है उसमे यजुर्वेद ३।६२ 'त्र्यायुषं जमदग्नेः" वाले मंत्र पर लिखी गई महर्षि के भाष्य का सहारा लिया है किन्तु यजुर्वेद का यह मन्त्र उनकी कोई सहायता नहीं करता है कारण महर्षि अपने यजुर्वेद भाष्य मे ३।६२ का भाष्य इस प्रकार से किया है—

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्॥ ६२॥

पदार्थ भाष्य - हे (रुद्र) जगदीश्वर आपकी कृपासे (यत्) जो और जितनी (देवेषु) विद्वानो मे (त्र्यायुषम्) बाल, यौवन, वृद्धावस्था यह सुख देने वाली तीन अवस्थाये है और (जमदग्ने) जगत के दृष्टा एवं ज्ञाता (त्र्यायुषम्) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ इन तीन गुणो से युक्त सुख प्रद आयु (कश्यपस्य) आप आदित्य ईश्वर की व्यवस्था से प्राप्त (त्र्यायुषम्) विद्या, शिक्षण और परोपकार इन तीन गुणो से युक्त जो आयु है (तत्) वही और उन्हीं (त्र्यायुषम्) पूर्वोक्त तीन गुणो वाली आयु (नः) हमे प्राप्त हो।

इस प्रकार से आर्य बन्धु जी देखेंगे कि यजुर्वेद में किए गए इस पदार्थ भाष्य मे तीन सौ ओर चार सौ वर्ष की आयु की गन्ध मात्र भी नही है अतः ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में इस मन्त्र का किया गया भाष्य और यजुर्वेद संहिता मे इस मन्त्र के भावार्थ मे कही गई तीन सौ ओर चार सौ वर्ष की बात स्वीकार नहीं की जा सकती है।

जगद् गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने इस मन्त्र के भावार्थ मे जो यह लिखा है कि यहां "त्र्यायुषम् पद का चार बार आवृत्ति होने से यह अभिप्राय है कि तिगुनी से अधिक चौगुनी आयु का ग्रहण करे तथा इसकी प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना और अपना पुरुषार्थ भी करे।

महर्षि की उपयु क्त लिखी बात का यह तात्पर्य और अभिप्राय है कि जब किसी जीव को मानव शरीर प्राप्त हो तो उस जीव को चाहिए कि वह वेदानुकूल आचरण करता हुआ सदाचार से रहकर वेद का पठन-पाठन करता हुआ अपना जीवन व्यतीत करें और जब वह जीव इस प्राप्त वर्तमान मानव शरीर का त्याग करे तो फिर उस जीव को मानव योनि ही प्राप्त होवें इस प्रकार से वेदानुकूल आचरण करने से और ब्रह्मचर्य धारण करके सदाचार बरतते हुए वह जीव लगातार चार बार तक मानव योनि प्राप्त कर सकता है और चौथी बार शरीर त्याग ने पर उस जीव का मोक्ष हो जाता है। कारण कि "त्र्यायुषम्' पद का पांचवी बार आवृत्ति नही है इसलिये उस जीव को पांचवी बार मानव योनि न मिल कर उसको मुक्ति ही प्राप्त होती है यही तीन सौ ओर चार सौ वर्ष की आयु प्राप्त करने का रहस्य है जिसको न समझ कर लोग बाग इसी वर्तमान प्राप्त मानव शरीर मे तीन सौ और चार सौ वर्ष की कल्पना करते है वह गहरे अन्धकार मे है।

जिस ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का हवाला आर्य बन्धु जी ने अपने इस लेख मे दिया है उसी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के पुनर्जन्म विषय नामी प्रकरण मे महर्षि लिखते है कि—

क्रमशः

निज़ाम रियासतमें ४७ साल पुराने आर्य समाज सत्याग्रह की कुछ यादें

(ब्रह्मदत्त स्नातक, भारतीय सूचना सेवा (रिटायर्ड) सी० ४ बी०
३३२ बी० जनकपुरी नई दिल्ली

कुछ वर्ष पहले तक आर्य समाजों में प्रति वर्ष श्रावणी पर हैदराबाद बलिदान दिवस भी मनाया जाता था। सिक्खो मे आज भी संगत मे प्रतिदिन धर्मयुद्ध मे भाग लेने वालों का स्मरण किया जाता है। आर्य पर्व पद्धति के नवीनतम सस्करण मे इसका उल्लेख अब नहीं है। अत. इस प्रसग को बासी कढ़ी शीर्षक दिया गया है। कढ़ी का बासी पन लेखक को स्वाद मे अच्छा मालूम होता है। सम्पादक

वर्ष मे २६ दिसम्बर अथवा १३ अप्रैल [बैसाखी] का गुरुकुलो के जीवन मे महत्व पूर्ण स्थान रहा है वार्षिकोत्सव के इसी दिन छात्रो का १४ वर्षा के बाद समावर्तन और दीक्षात सस्कार होते थे और दीक्षात भाषण मे समाज सेवा के व्रत पर जोर दिया जाता था। इसी कड़ी मे मै भी वृन्दावन गुरुकुल स० १६३८ मे स्नातक बना था। स्वाधीनता के पूर्व गुरुकुलो के छात्र या स्नातक के सामने जीविका चलाने के लिये सरकारी नौकरियो के द्वार बन्द थ। या फिर जो लोग वहा से बाहर चौदह सालो की पढ़ाई पूरा करके नए सिरे से मैट्रिक, इन्टर बी० ए० या एम० ए० की अथवा स्वीकृत डिगरियो को पा लेते थे या विदेशों से ले आते थे, वे ही शिक्षा सस्थाओ या सरकारी कार्यालयो मे नियुक्त हो पाते थे। शेष गुरुकुल के उपदाधिकारी आर्य समाज मे उपदेशक पुरोहित्य या कार्यकर्ता बनते, अथवा सामाजिक सगठनो राजनैतिक दलो अथवा स्वतन्त्र सस्थाओमे कार्यरत हो जाते थे। कुछ आयुर्वेद या डाक्टरी चिकित्सा मे या फिर रचनात्मक कार्यो मे समर्पित हो जाते थे। अपनी प्रतिभा और परिश्रम से उनमे मे बहुत से लोग लेखन और पत्रकारिता के क्षेत्रों मे अपने तरीके से समाज देश व मानवता की सेवामे लगते थे। उन दिनो देश मे पत्रकारिता, जनसम्पर्क और सचार की शिक्षा व प्रशिक्षण के लिए कोई महाविद्यालय स्तर की शिक्षा सस्थायें नहीं बनी थीं। थोड़े से लोग अपने पारिवारिक व्यवसाय व उद्योग धधो को अपना लेते थे। उनकी यह नियति तो थी ही, परन्तु अधिकाश की भावना और आकाक्षा इनमे से किसी भी मार्ग से समाज अथवा देश को समर्पित रूप में सेवा करने की रहती थी। माता-पिता गुरुकुलों म इसी भावना से अपने पुत्र-पुत्रियो को शिक्षा के लिये भेजते थे, यद्यपि आज की स्थिति व परिवेश भिन्न ह।

१६३६ मे भारत और विदेश मे द्वितीय महायुद्ध से पूर्व की घटनायें तेजी से घूम रही थीं। चारो ओर उथल-पुथल मची हुई थी। १६३५ का सविधान लागू होने के बाद देश मे राजनैतिक चेतना जाग उठी थी। बगाल मे फजलुल हक की कृषक प्रजा पार्टी और पजाब की यूनियनिस्ट सरकार के अलावा ब्रिटिश भारत मे काग्रेस सरकारें बन चुकी थी। नए बने सिध प्रांत मे भी काग्रेस के हाथोमे सतुलन था परन्तु शेष एक तिहाई भारत की पाच सौ पचास रियासतों मे तब भी पुरानी डफली ही बज रही थी।

इन राज्यो मे सबसे अधिक प्रभावशाली शासक और अग्रेजी सल्तनत को भारत मे स्थिर करने वाला और महत्वाकाक्षी कट्टर मताध हैदराबाद का निजाम उस्मान अली खा था। उसकी खिदमतगारियों के बदले अग्रेज सरकार ने महाराजाओ नवाबो से ऊचे हिज हाईनेस के बदले 'हिज एक्जाल्टेड' का ओहदा और अग्रेज सरकार के परममित्र' उपाधियां भी दे रखी थी। तत्कालीन सेंट्रल प्रोविन्स एन्ड बरार प्रात मे से बरार (विदर्भ) क्षेत्र की मालगुजारी कीसारी वार्षिक आमदनी, जो तब तक एक करोड रुपए से ज्यादा थी, वह न केवल निजाम को दे दी गई थी अपितु उसके उत्तराधिकारी को 'प्रिंस आफ बरार' भी घोषित कर दिया गया था। वस्तुत इस दक्खिनी राज्य को १६४७ से बहुत पहले मुगलिया गद्दी का उत्तराधिकारी माना जाता था। जिन्ना के पाकिस्तान से बहुत पहले वहां मुस्लिम राज बन चुका था जहा जहा निजाम का एक छत्र और अत्याचारी शासन इस्लामी शासन के तहत चलता था। वहा के ग्यारह फीसदी मुसलमान निवासी नवासी फीसदी हिन्दू निवासियो पर छाए हुए थे। काग्रेस की मुस्लिम पक्षपाती और रियासतो मे हस्तक्षेप न करने की नीति से निजाम की बहुसंख्यक जनता को उत्तरदायी शासन तो क्या सामान्य मौलिक अधिकार भी नहीं मिले।

अन्तर्राष्ट्रीय जत्था--

ऐसी स्थिति मे आर्य समाज ने चौदह हजार से अधिक सत्याग्रहियो को रियासत तथा भारत के अन्य प्रातो से सघर्ष के लिए भेजा। विदेश के प्रवासी भारतीयो ने भी इस अवसर पर भाग लिया और विवेकशील मुस्लिमों तथा सिक्खो ने भी साथ दिया। उत्साह वश अठारह वर्ष से न्युन आयु के कुछ नाबालिगो ने भी इस आन्दोलन मे अपनी आहुति दी। बारह वर्ष का तेलगाने का एक लडका वैंकट और बीजापुर का एक सोलह वर्षीय नागप्पा तथा यू० पी० के धर्मराज सिंह के नाम मुझे आज भी याद आ रहे हैं। अत इस आदोलन को अत प्रातीय, अन्तर्राष्ट्रीय और अन्त साम्प्रदायिक जन आदोलन कहना ठीक होगा।

२२ जनवरी १६३६ को सारे देश मे निजाम के विरोध मे हैदराबाद दिवस मनाया गया। उसके बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वयोवृद्ध प्रधान महात्मा नारायणस्वामी के नेतृत्व मे सत्याग्रह शुरू हुआ। गुरुकुल कागडी के पन्द्रह छात्रो ने तीन फरवरी को क्षेत्रपाल जो बाद मे दैनिक हिन्दुस्तान मे सहायक सपादक क्षितीश वेदालङ्कार बने के नायकत्व में हैदराबाद मे सत्याग्रह शुरू हुआ और छह मास का कारावास भुगता।

मुझे अभी गुरुकुलसे पढ़कर निकले एक महीना हुआ था और ऋषितुल्य पिताश्री [बाद का नाम स्वामी विश्वेश्वरानन्द] की एक मात्र सन्तान होने के कारण उनकी सेवा में भी नही पहुच सका था। माताजी का तो बचपन मे ही स्वर्गवास हो चुका था। तभी गुरुकुल के कुलपति महात्मा नारायण स्वामी की गिरफ्तारी पढ़कर मन मे क्षोभ हुआ और वहा जाकर सत्याग्रह करने का निश्चय कर लिया। उन दिनो निजाम की मुस्लिम रियासत में कत्ल, दगे, गिरफ्तारी जेल जुर्माना व अत्याचार चरम सीमा पर थे, परन्तु पिता जी ने न केवल सहर्ष अनुमति आशीर्वाद दिया, अपितु बाद मे 'देवेन्द्र स्पेशल' मे सत्याग्रह करने जा पहुचे। गुरुकुल के इस छ सदस्यीय जत्थे में मेरे साथ थाईलैण्ड के २ सगे छात्र नित्यानद व अब स्व०) ब्रह्मानन्द, फिजी द्वीप के (स्व०) बहादुर दत्त, चार सहा। फ्रंटियर के सुखदेव व यू० पी० के श्री नरदेव जी बाद मे बीस वर्ष ससद सदस्य और फिर रेलवे सर्विस कमीशन के चेयरमैन रहे। शामिल थे। मैं तब २० वर्ष का था। हम लोगो ने एक मास तक निजाम के सीमावर्ती

(शेष पृष्ठ ६ पर)

निजाम रियासत में ४७ साल पुराने आर्य समाज सत्याग्रह की कुछ यादें

[शेष पृष्ठ ५ से आगे]

इलाकों मे जन जागरण का कार्य किया और ५ मार्च १९३९ को शोलापुर से गुलबर्गा जाकर अजमेर के (स्व०) चांदकरण शारदा के नेतृत्व मे सत्याग्रह किया। मुकदमे मे इन ६२ साथियो को एक साल सपरिश्रम और एक मास सादी कैद की सजा गुलबर्गा जेल मे सुना दी गई। महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रों के अलावा इस जत्थे मे एक पच्चीस वर्षीय उल्लेखनीय नवयुवा स्वामी परमानन्द अजमेर से पहुचे हुए थे। इन सन्यासी का आश्चर्य जनक विवरण वर्षों पहले मैने नवभारत टाईम्स मे 'वह साधु मरके भी उठा' शीर्षक से लिखा था। वृन्दावन गुरुकुल के एक अन्य थाईलैण्ड निवासी सत्यदेव और सिंध के एक युवा सत्याग्रही लोकमल के नामो की अभी मुझे याद है।

मुस्लिम सत्याग्रही की विपन्नावस्था

स्व० प्रकाशवीर शास्त्री महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रों के दूसरे दल मे थे। शोलापुर मे पीलीभीत (उ० प्र०) मे आये एक अन्य यज्ञोपवीत एव कड़ा कृपाण व केशधारी सिक्ख सत्याग्रही [नाम याद नहीं] ने हमारे साथ सत्याग्रह किया था। वे प्रतिदिन हवन करते थे। शाहपुरा [राजस्थान] से आनेवाले सत्याग्रहियो मे एक मुस्लिम सत्याग्रही सैयद फयाजअली जेल मे बाद मे आए। वे आज किस विपन्नावस्था मे है यह हाल मे उनके अजमेर से आये उस पत्र से लगता है जो अपनी कहानी कह रहा है। १७ फरवरी १९८६ को मकान नम्बर ११/४१५ अदरकोट अजमेर से भेजे पत्र मे अपने पिछले रजिस्टर्ड पत्र १४-१-८६ का उल्लेख करते हुए उन्होंने आर्य समाज अजमेर के द्वारा अपना प्रार्थना-पत्र दिया और आठ प्रमाण-पत्र सार्वदेशिक सभा को भेजने का उल्लेख किया है। इसमे अपने को सैयद फयाज अली ने जो लिखा है वह अत्यन्त मार्मिक और विवशता पूर्ण है पत्र के अविकल शब्द इस प्रकार है 'मगर मेरे विषय मे क्या हो रहा है मुझे दया करके कह क्या भेजना चाहिए। कृपया संतोषजनक उत्तर दिलाने का कष्ट करें। कृपया इस गरीब, मुफ्लिस, बेबह को किसी प्रकार से महर्षि दयानन्द का मदद दिलवाने मे कष्ट फरमा कर ही सहायता करें। ये नहा मालूम हुआ है कि श्रीमान मन्त्री जी साहिब मुझ, महर्षि दयानन्द के सेवक को, क्या लाभ दिलवा रहे है कृपया दया करके उत्तर दिलावे। नमस्ते।

ऊपर का पत्र और उनके हस्ताक्षर तथा रखाकन सब अविकल हिन्दी मे दिए हैं।

कारावास की कुछ यादें

कुल मिलाकर मैं पांच मास तेरह दिन गुलबर्गा, चचलगुडा [हैदराबाद] निजामाबाद और समारेड्डी की जेलों मे रहा। [बाद मे स्व० इन्दिरा गाधी ने समारेड्डी मे लोक सभा का चुनाव जीता था। कारावास की कुछ घटनाएँ बड़ा याद आ रही हैं जिनका उल्लेख पाठको के लिए रोचक है—५ मार्च का शोलापुर कैंप मे होली के दिन हलवा पूरी खाकर हम चले थे। शाम को गुलबर्गा जेल मे पहुचने पर ज्वार की कच्ची-पक्की रोटियां हाथ पर और लोहे के तसले मे भिडी की रसेदार तेल मे छुंकी लहसुन भरी तरकारी खाने को मिली। पानी पीने के लिए लोहे का गोल डिब्बा। जिसे वहा चम्बू कहते है। जमीन पर सोने के लिये ६-३ फीट का टाट, ओढ़ने के लिये [गर्मियो मे] काला कम्बल मिल गया। अगले दिन से हवन के लिए अनुमति और घी सामग्री मिलने लगी। तीसरे दिन जेल के भीतर अदालत लगा कर सजा सुनाने के बाद बाहर से साथ लाए गए कपड़े, चप्पल आदि जमा कर लिये गए और धारीदार दो सूती कपडे की दुपल्लीदार टोपी, पजामे, कुर्ते व गले मे लटकाने के लिए तार मे पिरोई काठ की एक टिकटिकी मिली। उसके ऊपर कैदी का नम्बर, सजा की दफा व शुरू व खत्म होने की तारीखें व सजा की अवधि खुदी रहती थी। कुर्ते की छाती पर कैदी का नम्बर लिखा रहता था।

जेल मे एक दिन अपने अमले के साथ हैदराबाद के सिर पर तुर्की टोपी लगाये, माथे पर एक सा ग्यारह का तिलक लगाये और कानो मे सोने का कुंडल पहने हुये एक हिन्दू था। डाक्टर ने कहा कि तुम लोग यहा पर हिन्दुओ की रक्षा करने आये हो या नौकरी से निकलवाने आये हो? वस्तुत मेरा कैदी नम्बर कुर्ते पर छपे नम्बर को देखकर मुआयने के समय नोट कर लिया गया था। बाद मे डाक्टर ने मेरे कहने पर बारीबारी से चार साथियों को स्पेशल डाईट बाध दी। इसमे हम लोग आपस म स्पेशल डाईट के आठ आट पराठे और उरद की दाल तथा चार किलो दूध बाट कर खाने लगे।

आर्य जगत

दिनांक १२ जून से १४ जून ८६ के मध्य पश्चिमी चम्पारण जिला अन्तर्गत गियाखन्ड मे यज्ञ का कार्य सम्पन्न हुआ। जिसमे १८ व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किया तथा १५ जून से १६ जून तक बेतिया खड्डा मे व्यापक रूप से वेद प्रचार हुआ श्री रामचन्द्र सिंह क्रान्तिकारी, श्री सुरेश राय भजनीक का विशेष सहयोग रहा।

—मन्त्री

—आर्यसमाज भालुए, [देवरिया] के निर्माणाधीन यज्ञशाला मे बृहद यज्ञ का आयोजन दिनांक २० जून ८६ को श्री आर्य मुनिजी वानप्रस्थ के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ तथा आर्य वीरदल की, एक आवश्यक बैठक समाज के प्रधान श्री चन्द्र शेखर मिश्र की अध्यक्षता मे हुई जिसमे आर्य वीर दल संगठन को सुदृढ करने एव उसकी आवश्यकता पर बल दिया गया।

मन्त्री

—ताड़ीखेत (अल्मोड़ा) दिनांक २९ जून ८६ को श्री मोहनचन्द्र जी जोशी एस० ई० एस० ने अपने निवास तल्लबिश्वा मे वैदिक सत्सग का आयोजन किया।

गुरुकुलानन्द सरस्वती

—आर्य समाज खैर (अलीगढ) मे दि० २० जून से २५ जून तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन हुआ। समारोह का उद्घाटन श्री बाल दिवाकर जी हंस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल तथा समारोह का समापन श्री प० प्रमचन्द्र शर्मा उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा हुआ।

मन्त्री

—जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बरेली का ४२वा वार्षिकोत्सव एव अधिवेशन ग्राम फजुल्लापुर मे दि० २८, २९ जून को सोल्लास सम्पन्न हुआ। श्री० कमलेश, श्री सीताराम शर्मा एव श्री ओमप्रकाश जी के प्रभाव शाली भजन एव प्रवचन हुए—

मन्त्री

—आर्य समाज भोजपुर खेड़ा का उत्सव आर्य युवक समारोह के रूप मे दिनांक १३ से १५ जून ८६ के मध्य हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ—

—मन्त्री

आर्य समाज भीकमपुर जैनी (बदायूँ) का छठवां विशाल वार्षिकोत्सव दिनांक ३० मई से १ जून ८६ के मध्य सोल्लास सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी द्वारा पंजाब से आये शरणार्थियो के कैम्पों का निरीक्षण एवं सहातार्थ ५०००) रुपए भेंट

दि० २४ जून ८६ की पजाबी आर्य भ्रातृ सभा मेरठ के मन्त्री श्री देव जी मरवाहा तथा कोषाध्यक्ष श्री सरदारी लाल जी छाबड़ा को साथ लेकर पजाब मे हो रहे अत्याचारो के कारण दिल्ली की आर्य समाज मन्दिरो मे आए हुये शरणार्थियो के कैम्प का निरीक्षण करने श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली पहुचे। इस समय उक्त आर्य समाज मे १७ परिवार आये हुए हैं। आर्य समाज मन्दिर मार्ग को केन्द्र बना कर परिवारों को दिल्ली के विभिन्न आर्य समाज मन्दिरों मे भेजा जा रहा है। आर्य समाज जनकपुरी मे भी ऐसे ही लगभग २० परिवार रुके हुए है। अन्य आर्य समाज मन्दिरो मे भी हैं। जब श्री इन्द्रराज जी अपने साथियो सहित आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग मे पहुचे तो शरणार्थी भाई बहन इकट्ठे हो गए। एक बहन प्रमिला शर्मा जी ने अपनी करुण कथा सुनानी प्रारम्भ की। उसने बताया कि उनका परिवार फतेहाबाद जिला अमृतसर से ११ मई को निकला। उग्रवादियो ने हमारे मकानो पर इश्तहार लगाए कि २४ घण्टे के अन्दर अन्दर मकान खाली करके चले जाओ, नहीं तो तुम्हे मार दिया जाएगा। पूछने पर कि आपने इन इश्तहारो को क्यो नही उतारा—बहन प्रमिला ने बताया—हम तो क्या ? पुलिस भी उन इश्तहारो को छू नहीं सकती। पिछले ३ महीनो से हम अपने घरो मे बन्द थे। कोई हिन्दू अपनी दूकान नहीं खोल सकता। कोई हिन्दू बस पर सफर नहीं कर सकता। सफर करने पर आगे मार दिया जाता है। बाजार बन्द थे। स्कूल बन्द थे। लड़किया पढने नहीं जा सकती थीं। मेरे पति अध्यापक है वे भी स्कूल बद होने के कारण नही जा रहे थे। होने वाली दुर्घटना का पहले ही पता चल जाता था कि अब कुछ दुर्घटना होने वाली है। क्योकि एक दो दिन पहले ही उग्रवादी जीप पर घूम कर रास्ते आदि का जायका लेते थे। एक दिन उग्रवादियो ने ग्राम के ८ लडके मार दिये। उनके अन्त्येष्टि सस्कार और अस्थिचयन की समस्या हमारे सामने थी। जहा हम सम्मान पूर्वक मर भी नहीं सकते वहा जीवित रहने का क्या लाभ ? एक दिन मोनिक गोल्डन कालोनी अमृतसर मे जहा हमने अपनी सुपुत्री को अपने रिश्तेदारो के यहा सुरक्षा की दृष्टि से भेजा हुआ था, वहा उग्रवादियो ने इश्तहार लगाया कि ६ ।। बजे कालोनी की जब लडकिया उठा ली जाएगी। घरो के गटर आदि खोलकर कालोनी की लडकिया बैठ गई कि हम गुण्डे उग्रवादियो के हाथो नही पडेगी। हम उनके आने से पहले ही मृत्यु का आलिगन कर लेंगी। किसी प्रकार से कालोनी का कोई व्यक्ति छिपकर सी० आर० पी० तक पहुच गया। पुलिस ने तुरन्त उस इलाके को घेर लिया और लडकियो की जान बच गई।

एक दिन कुछ उग्रवादी मेरी लड़की का अपहरण करने के लिए आए और उसे कहने लगे तुम्हारे घर वालो का एक्सीडेंण्ट हो गया है और तुम्हे बुलाया है। उसे कुछ भगवान् ने प्रेरणा दी। वह पिछली तरफ रहने वाले सरदार भाईयो से कहने लगी—अकल ! दो नौजवान एक्सीडेंण्ट की बात कहकर मुझे लेने आए हैं। सरदार जी बाहर आ गए। जब उन्होने कहा कि हम चलते है तो वे एकदम भाग खड़े हुए। उन सरदार जी के सहयोग और भगवान् की कृपा से हमारी पुत्री बच गई।

वह देवी रुधे हुए गले से कहने लगी जहा हमारी जान, माल और इज्जत सुरक्षित नहीं है, वहा हम कैसे रह सकते हैं।

कुछ नौजवानी ने बोलना शुरू किया—कि जहाँ बरनाला सरकार मे कुछ उग्रवादी ही मिनिस्टर है, वहा, सुख—शाति कैसे हो सकती है। एक ने बताया जब लडकिया कालेज गई तो उग्रवादी गुण्डो के कारण घर को नहीं लौटीं। किससे फरियाद करें ? किसे सुनाये ? कोई सुनने वाला ही नहीं है।

करुण कथा सुनने के पश्चात् दिल रो दिया और भारी मनसे शरणार्थियो की सहायता के लिए पजाबी आर्य भ्रातृ सभा मेरठ की ओर से ५०००) रुपये श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने श्री रामनाथ जी सहगल मन्त्री पजाब प्रादेशिक सभा नई दिल्ली को भेंट किए। सम्वाददाता

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

शताब्दी समारोह

दिनांक १७ से २० अक्टूबर १९८६

स्थान डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ

सेवा मे,

रजिस्ट्रार,

विश्वविद्यालय,

विषय--शताब्दी समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय अन्त. विश्वविद्यालय शोध-पत्रक प्रतियोगिता।

महोदय/महोदया

आपको सूचित करते हुए हमे हर्ष हो रहा है कि उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा १९८६ मे अपने शत वर्ष पूरे होने पर एक भव्य शताब्दी समारोह दिनाक १७-२० अक्टूबर १९८६ को डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ के विशाल मैदान मे आयोजित कर रही है।

इस अवसर पर अखिल भारतीय अन्त विश्वविद्यालय शोध पत्रक स्पर्धा का अद्भुत विषय रखने का निर्णय लिया गया है।

आपसे अनुरोध है कि अपने अधीनस्थ विभागाध्यक्षो/प्राचार्यों/प्रवक्ताओ/शोध विभागो के अध्यक्षो को निम्नाकित विषय एव पत्रक प्रस्तुत करने की नियमावली के अनुसार हमारी ओर से पत्रक लेखको को आमन्त्रित कर न्यूनतम एक शोध-पत्रक अवश्य भिजवाने की कृपा करें, जिन महानुभाव /महानुभावो का/के पत्रक आप भेजेंगे उनका/उनके नाम ३१ जुलाई १९८६ तक सूचित करने की कृपा करें, ताकि नियमो मे यदि कोई परिवर्तन हो, तो उन महानुभावों को समय से अवगत कराया जा सके। इस सभा की शताब्दी समारोह समिति आपकी अनुगृहीत होगी।

भवदीय

(मनमोहन तिवारी)

सभा मन्त्री एव शताब्दी समारोह सयोजक

नियमावली

१ विषय—"महर्षि दयानन्द दर्शन एवम् राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता मे उसकी उपादेयता।"

२ पृष्ठ सख्या—फुलस्केप ४० से ५० पृष्ठ जो टाइप कराके भेजने हैं।

३ कार्यालय को पत्रक भेजने की तिथि] १ सितम्बर १९८६ इसके पश्चात् पत्रक स्वीकार नहीं होंगे।

४ निर्णायक पैनल मे ५ महान विद्वान/विदुषिया होगी, जिनके पास यह पत्रक भेजे जाएगे। उनके द्वारा प्राप्त निर्णय के आधार पर प्रथम तीन पत्रको के लेखको को सम्मानित किया जाएगा तथा इनके अतिरिक्त दो सान्त्वना पुरस्कार होगे।

५

प्रथम विजेता पत्रक	२००० = ०० रु०
द्वितीय ,, ,,	१५०० = ०० रु०
तृतीय ,, ,,	१००० = ०० रु०
सान्त्वना पुरस्कार	५०० = ०० रु०
सान्त्वना पुरस्कार	५०० = ०० रु०

६ इन पाचो को अपने पत्रक के वाचन हेतु आमन्त्रित किया जाएगा और उनके रेल अथवा बस का यात्रा-व्यय एव आवास तथा भोजनादि की व्यवस्था का दायित्व सभा का होगा।

७ सभा के इन पाचो निर्णायकों के निर्णय अन्तिम होगे और इनमे किसी की आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

८ पत्रक हिन्दी, अग्रेजी अथवा सस्कृत भाषाओं मे ही स्वीकार होगे। शुद्ध टाईप किये हुए होने चाहिए। पत्रक तीन प्रतियों मे रजिस्टर्ड डाक से भेजने का कष्ट करें।

९ पत्रक सभामन्त्री को सीलबन्द लिफाफे मे रजिस्टर्ड डाक से भेजा जाए।

१० निर्णायक मण्डल के मतानुसार यदि पत्रक निश्चित स्तर से नीचे होगे, तो उन पर पुरस्कार हेतु विचार नहीं किया जायेगा।

११ सभी पत्र व्यवहार श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, डी०ए०वी० कालेज, लखनऊ (उ० प्र०) के नाम करें।

० ओ३म् ०

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

शताब्दी समारोह

१८८६-१९८६

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

श्री नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ-पिन २२६००१

शुक्रवार, १७ से सोमवार २०, अक्टूबर १९८६
के शुभ अवसर पर

दयानन्द / वैदिक / आर्य / स्नातक कालेज / उच्चतर माध्यमिक विद्यालय / बाल मन्दिर / वैदिक सिद्धान्त प्रतियोगिता

स्थान–

डी०ए०वी० कालेज, लखनऊ

इन्द्रराज मनमोहन तिवारी
प्रधान मन्त्री

सेवा मे,

प्रधानाचार्य / प्रधानाचार्या / प्रबन्धक

महोदय / महोदया,

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने अपने कार्यकाल के १०० वर्ष पूरे कर लिए है (१८८६–१९८६) । इस उपलक्ष्य मे सभा ने डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के प्रांगण मे दिनाक १७ से २० अक्टूबर १९८६ तक भव्य शताब्दी समारोह मनाने का निर्णय लिया है ।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश की वैदिक / दयानन्द/आर्य सस्थाओ के निम्नाकित कार्यक्रम सम्पादित करने का भी निर्णय लिया है–

(क) वर्ष १९८५ मे उन शिक्षण सस्थाओ को दक्षता अनुदान से पुरस्कृत किया जाएगा जो प्रदेश की इण्टर तक सस्थाओं मे प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करेंगे अनुदान की दरें क्रमश ३०००/- २०००/ व १०००/- रु० होगी । इसके लिये सभी सस्थाओ को एक पत्रक भेजा जा चुका है । जिन सस्थाओ ने अभी तक वह पत्रक भर कर न भेजा हो वे शीघ्रतम शीघ्र निम्न पते पर अवश्य भेज दें–

आचार्य विद्यारत्न
द्वारा डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ

(ख) आर्य/दयानन्द/वैदिक सस्थाओं के उन छात्रो / छात्राओ को पुरस्कृत किया जायेगा जिन्होंने इन सस्थाओ से १९८५ की उत्तर प्रदेश के माध्यमिक परिषद की हाई स्कूल एव इण्टर की परीक्षा मे समूचे प्रदेश मे प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया है । इस प्रकार ६ छात्राओं के और ६ छात्रो के कुल १२ पुरस्कार होंगे । पुरस्कार की दरें क्रमश ३००/-, २००/-, १००/- रु० होंगी । प्रत्येक आर्य विद्यालय श्री विद्यारत्न को उपर्युक्त पते पर अपने विद्यालय के हाई स्कूल ८५ व इण्टर ८५ के सर्वश्रेष्ठ छात्र की सूचना भेजें ।

नोट–१ क्रम (क) व (ख) मे जिनको आमन्त्रित किया जायेगा उनको द्वितीय श्रेणी का आने जाने का व्यय दिया जायेगा ।

२ यह दक्षता अनुदान तथा पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक २०-१०-८६ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ मे होगा ।

(ग) दिनांक १७ से २० अक्टूबर १९८६ को निम्नाकित तीन स्तरो की प्रतियोगिताए होंगी–

I कक्षा १२ तक के छात्र/छात्राओं के लिए–

१–वाक् प्रतियोगिता

विषय	प्रतियोगी सख्या	छात्र/छात्राओ को सम्मिलित अथवा अलग-अलग
"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमते तत्र देवता"	१	सम्मिलत
२–वाद-विवाद		
राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि गो रक्षा मे निहित है ।'	२ (पक्ष एव विपक्ष)	सम्मिलित
३–मन्त्रोच्चारण		
प्रार्थना-उपासना के आठ मन्त्र ऋग्वेद के अन्तिम चार सूक्त तथा शिव सकल्प के छ मन्त्र । कुल १८	२ (एक साथ पाठ)	अलग-अलग
४–महर्षि दयानन्द / आर्यसमाज / वैदिक सिद्धान्त प्रश्नोत्तरी		
महर्षि दयानन्द आर्यसमाज व वैदिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध मे प्रश्नोत्तरी लिखित एव मौखिक ।	३ की टीम	सम्मिलित

५–सामूहिक सांकेतिक गान

विषय	प्रतियोगी सख्या	छात्र/छात्राओ को सम्मिलित अथवा अलग-अलग
(आर्यसमाज के महत्वपूर्ण कार्यो पर)	४ से ८	अलग-अलग (वाद्य यन्त्रो का प्रयोग कर सकते है)
६–आर्य भजन		
वैदिक/आर्यसमाज के सम्बन्ध मे भक्ति/उपासना/वीरता/[illegible]	४ एक साथ	अलग-अलग (वाद्य यन्त्रो का प्रयोग कर सकते है)
७–मुक्त चित्रण (स्थल पर)		
स्वामी दयानन्द जी एव श्रद्धानन्द जी के जीवन की घटनाओं यज्ञशाला, महान आर्य विद्वानो के चित्र मे से एक ।	कम से कम १	सम्मिलित (केवल कागज स्थल पर मिलेगा । रग द्रव्य दि अपने लाने होंगे ।)
८–तत्परता		
स्थल पर तत्परता के व्यायाम एव सकेत	२	सम्मिलित

(शेष पृष्ठ ९ पर)

(पृष्ठ ८ का शेष)

९—१०० मी की दौड़,
रुकावट की दौड़

क्रीड़ा स्थल पर	एक-एक	अलग-अलग

१०—खो-खो

क्रीड़ा स्थल पर	८ की टीम	अलग-अलग

११—कबड्डी

क्रीड़ा स्थल पर	८ की टीम	अलग-अलग

१२—प्रतियोगिता हेतु स्कूल से तैयार की गई प्रदर्शनी के लिए वस्तुयें

१ २॥ मीटर x १ मी०कपड़ पर वार्षिक मन्त्रों का बैनर	१	सम्मिलित
२ सुलेख	४	(केवल छात्रों/छात्राओ एवं आचार्यों द्वारा निर्मित)
३ पोस्टर (केवल आर्यसमाज के कार्यों पर)	२	
४ आर्य विद्वान का चित्र	१	
५ कोई भी शिल्प वस्तु	१	

१३—स्काउटिंग बैज संकेत

विषय	प्रतियोगी संख्या	छात्र/छात्राओं की सम्मिलित अथवा अलग अलग
कोई पद्धति अपनाई जा सकती है		सम्मिलित

१४—महर्षि दयानन्द प्रश्नोत्तरी

आइटम ४ के अनुसार	२ की टीम	आचार्य/आचार्यायें

II दयानन्द मन्दिरों के कक्षा ३ से ५ तक के छात्र/छात्राओं की प्रतियोगिताएं—

१—मुक्त चित्रण—

यज्ञ कुण्ड आर्य विद्वान प्राकृतिक दृश्य मे से एक	१	सम्मिलित

२—तैल्वला

सामूहिक तैल्वला व्यायाम	?	सम्मिलित

३—सांघिक गान

आर्य विचारों पर	४ से ८	सम्मिलित वाद्य यन्त्र प्रयोग कर सकते है ।

४—मन्त्रोच्चारण

प्रार्थना उपासना के मन्त्र	२ एक साथ	सम्मिलित

५—रुकावट की दौड़

क्रीड़ा स्थल पर	१	सम्मिलित

III स्नातकोत्तर महाविद्यालयों के लिये—

१ क्रिकेट

सीमित २० ओवर	खिलाड़ी	छात्र

२—वालीबाल

	८ टीम	छात्र

३—बास्कट बाल

	८ खिलाड़ी	छात्रा

४—बैडमिन्टन (डबल)

	२ खिलाड़ी	छात्रा

(घ) आर्य कवि सम्मेलन (१९।१० रात्रि ७ बजे

नियमावली

१—प्रत्येक विद्यालय को ३१ ८ ८६ तक ५० रु० की धनराशि प्रवेश शुल्क के रूप मे मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० डी०ए०वी० कालेज लखनऊ के नाम से भेजकर पंजीकरण कराना होगा ।

२—यह प्रतियोगिताय १६ अक्टूबर से २० अक्टूबर तक डी०ए०वी० कालेज लखनऊ के प्रांगण मे होगी । टीमों को १६।१०।८६ को सायं तक पहुँच कर अपने आगमन की सूचना देनी होगी । टीमों के आवास व भोजन की व्यवस्था सभा द्वारा निःशुल्क होगी ।

३—शेष सभी व्यय विद्यालय स्वयं वहन करेंगे ।

४—टीमों को आर्य वीर शिविर के नियमों का अक्षरशः पालन करना होगा ।

५—टीमो की प्रतियोगी संख्या के अनुसार अध्यापक / अध्यापिकायें साथ आयेंगे और अनुशासन का उत्तरदायित्व उनका होगा ।

६—सभी प्रतियोगियों को निम्नांकित प्रार्थनायें कण्ठस्थ होनी चाहिये—(क) गायत्री मन्त्र (ख) यज्ञ रूप प्रभु हमारे वाला प्रार्थना गीत (ग) शान्ति पाठ (घ) प्रार्थना उपासना के आठ मन्त्र ।

७—सभा द्वारा निर्धारित निर्णायकगण का निर्णय अन्तिम होगा ।

८—सभी प्रतियोगियों को अपने साथ साफ धुली हुई स्कूल की पोशाक, विद्यालय का झण्डा आर्य पद्धति का एक बैनर अवश्य लाना होगा । साथ ही समुचित बिस्तर थाली कटोरी और लोटा और सामान्य वस्त्र भी लाने होंगे ।

९—प्रत्येक अनुशासित टीम को सर्वोच्च मार्च पास्ट की टीम को एवं सर्वोच्च शिविराग्नि (कम्प फायर) टीम को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जायेगा । कम्प फायर प्रतियोगिता का विषय नहीं है, फिर भी १६ अक्टूबर १९८६ की रात्रि को यह विषय रखा जायेगा ।

१०—सभी पत्र-व्यवहार श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० डी० ए० वी० कालेज लखनऊ से करने की कृपा करें ।

आशा की जाती है कि सभी आर्य छात्र / छात्राय तथा आचार्य / आचार्यायें आर्यत्व की उक्त परम्पराओं को ध्यान मे रखते हुए खिलाड़ी की स्पर्धा भावना से प्रेरित होकर उपयुक्त कार्यक्रमों मे भाग लें ।

—मन्त्री

सेवा में,

प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या,

समस्त डी० ए० वी० / आर्य / वैदिक इण्टर कालेज,

उत्तर प्रदेश

महोदय,

अनेक बार आपसे निवेदन किया गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा ने इण्टर कालेजों के सम्बन्ध में–(१) सर्वोत्तम तीन इण्टर को क्रमशः ३०००/, २०००/ तथा १०००/, का वकसा अनुदान तथा (२) परिषद इण्टर एवं हाईस्कूल परीक्षा १९८५ के इन विद्यालयों में से प्रदेश में प्रथम तीन स्थान प्राप्त छात्रों तथा तीन छात्राओं को पुरस्कार देने का निर्णय किया है और आपसे निम्नांकित प्रपत्र पर सूचनाएं मांगी हैं। सभा से सम्बद्ध अथवा असम्बद्ध दोनों प्रकार के विद्यालय इन दोनों पुरस्कारों के लिए मान्य हैं, परन्तु खेद है कि बहुधा विद्यालयों से इन उपयोगी योजनाओं के लिए सूचना प्राप्त नहीं हुई।

मुझे सूचित करते हुए हर्ष है कि १९८५ के यह पुरस्कार सभा की शताब्दी के अवसर पर दिनांक २० अक्टूबर १९८६ को वितरित होंगे।

आपसे पुनः अनुरोध है कि संस्था एवम् छात्र/छात्राओं के बृहद् लाभ के लिए निम्नांकित प्रपत्र अविलम्ब भर कर मेरे पते पर भेजें।

भवदीय

मनमोहन तिवारी

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सूचना एक–सर्व श्रेष्ठ दो छात्र / छात्राओं की सूचना (हा०स्कूल व इण्टर परीक्षा १९८५ की) अलग–अलग।

परीक्षा हाईस्कूल/इण्टर	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	अनुक्रमांक	वर्ग	प्राप्तांक	पूर्णांक	प्रतिशत

सूचना दो– सर्वश्रेष्ठ संस्था हेतु सूचना (१९८४–८५ के वर्ष पर आधारित)

१ विद्यालय का नाम

२ हाई स्कूल व इण्टर कक्षाओं के खुलने का वर्ष–हाईस्कूल इण्टर

३ परीक्षा फल

	परीक्षा में सम्मिलित छात्र/छात्राओं की संख्या	उत्तीर्ण परीक्षार्थी संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
हाई स्कूल परीक्षा १९८५–			
इण्टर परीक्षा १९८५–			

४ क्या विद्यालय में आर्य कुमार / कुमारी सभा निर्मित है ?

५ क्या साप्ताहिक यज्ञ कराया जाता है? यदि हां तो सप्ताह के किस दिन ?

६ राष्ट्रीय सेवा प्रशिक्षण के लिए कोन सा सेवा शिविर लगाया गया ? यदि हां, तो इसमें किये गये दो प्रमुख कार्यों का उल्लेख करें–

७ क्या विद्यालय में सभा का 'आर्यमित्र' पत्र मंगाया जाता है ?

[शेष पृष्ठ ११ पर

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों और आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं के मन्त्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि सभी को वार्षिक चिट्ठा भेज दिये गये हैं– जिन्हें न प्राप्त हुए हों, वह सभा कार्यालय से पत्र लिख कर पुनः मंगा लें और भरकर सभा प्राप्तव्य दशांश, सुवकोटि आदि के धन सहित १५ अगस्त ८६ तक कार्यालय को अवश्य भेजने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी

मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

दयानन्द संघ की सूचना

सभा से सम्बन्धित समस्त अवैतनिक उपदेशकों, भजनोपदेशकों को सूचित किया जाता है कि वर्ष १९८५ का कार्य विवरण लिख कर १५ अगस्त ८६ तक सभा कार्यालय को भेजने की कृपा करें, ताकि विवरण सभा की वार्षिक आख्या में सम्मिलित किया जा सके। मनमोहन तिवारी

मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

–श्री जवाहरलाल गुप्त निवासी रेणुकूट (मीरजापुर) की आयुष्मती कन्या का शुभ विवाह संस्कार दि० २३ मई १९८६ को श्री विश्वमित्र शास्त्री जी द्वारा पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। तथा श्री जवाहरलालसिंह की पुत्री का शुभ विवाह दिनांक १७ जून ८६ को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। –[illegible]

–श्री डा० राकेश [illegible] मुख्य चिकित्सक [illegible] के पुत्र का [illegible] वैदिक रीत्यानुसार श्री गिरधरलाल जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। –[illegible]

–गोण्डा। कु०सुनीता आत्मजा श्री ससारमणि तिवारी का शुभ विवाह दिनांक २९ जून ८६ को वैदिक रीत्यानुसार चि० श्री अभिमन्यु शुक्ल के साथ हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। विवाह प० अच्युतानन्द त्रिपाठी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

–जसवीर श्रीवास्तव

[पृष्ठ १० का शेष]

८ क्या आर्य प्रतिनिधि सभा की [illegible] की पुस्तकें विद्यालय मे लगाई [illegible] है? यदि हां, तो कौन सी कक्षाओ मे।

९ विद्यालय की वार्षिक पत्रिका मे आर्य विचार धारा के कितने लेख छपे है? हो सके तो एक प्रति भेजें।

१० छात्र/छात्राओ द्वारा विद्यालय मे निबन्ध लेखन, वाक, वाद विवाद, [illegible] प्रतियोगिता मे कौन-कौन [illegible] कराई गई?

११ विद्यालय मे विभागीय [illegible] रैली मे छात्र / छात्राओ [illegible] स्थानो की सूचना।

विषय स्थान

जिला—
[illegible]—

१२ विद्यालय की छात्र / [illegible] की संख्या तथा उनकी संख्या जिनको सध्या याद है।

कुल संख्या—
जिनको सध्या याद है उनकी संख्या

[illegible] विद्यालय सम्बन्धी प्रबन्ध समिति का कोई विवाद तो नही चल रहा?

१४ जिला विद्यालय निरीक्षक / पेनल निरीक्षण/ मण्डलीय बालिका निरीक्षका को निरीक्षण आख्या का सारांश।

१५ १९८४–८५ मे आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित धर्म परीक्षा मे सम्मिलित व उत्तीर्ण छात्र/छात्राओ की संख्या।

नाम परीक्षा सम्मिलित संख्या उत्तीर्ण संख्या

१६ विद्यालय की ओर से छात्र / छात्राओ द्वारा किये गये देश के किसी स्थान के पर्यटन का विवरण।

१७ आर्य प्रतिनिधि सभा को १९८४-८५ वर्ष मे भेजी गई अंश दान की धनराशि।

१८ अन्य विशेष उपलब्धि जिसका उल्लेख करना चाहे।

हस्ताक्षर व मुहर प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या

हस्ताक्षर व मुहर प्रबन्धक

—आर्यसमाज देवनगर (मनपुरी) का वार्षिकोत्सव दिनांक २१ से २३ जून ८६ के मध्य धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमे आर्यजगत के प्रमुख विद्वान एव वक्ता सम्मिलित हुए इसी अवसर पर लगभग ७५ स्त्री पुरुषो ने यज्ञोपवीत धारण किया तथा नशीले पदार्थों को त्यागने का सकल्प लिया। —मन्त्री

—श्री चि० रामप्रकाश गुप्त तथा आयुष्मती ममता कुमारी आर्य का शुभ विवाह सस्कार दिनांक ३० जून १९८६ को अतरौली (अलीगढ) मे श्री प० राजपाल शर्मा शास्त्री के पौरोहित्य मे पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। —ब्रजकिशोर आर्य

—आर्य समाज फतेहपुर (उ०प्र०) द्वारा जनपदीय स्तर पर वैदिक धर्म का प्रचार व्यापक रूप से सक्रिय है। श्री गजराजसिंह राघव भजनोपदेशक सभा ने, फतेहपुर जनपद मे प्रचार कार्य करते हुए कई नवीन आर्यसमाजो की स्थापना की तथा 'आर्यमित्र' के नवीन ग्राहक बनाये, श्री राघव जी का प्रचार कार्य सराहनीय रहा। —मन्त्री

—आर्यसमाज अमरोहा [मुरादाबाद] के तत्वावधान मे, दिनांक २७ जून से ६ जुलाई तक आर्य वीर दल शिविर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमे २१ आर्य वीरो को दक्ष किया गया। —मन्त्री

—इटावा जनपद के ग्राम तुकपुरा पो० पहाड़पुर मे नवीन आर्य समाज की स्थापना हुई जिसमे श्री हजारसिंह प्रधान, श्री सुभाषचन्द्र मन्त्री, श्री [illegible]नारायण जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। —मन्त्री

—आर्यसमाज बेल [illegible] सम्बलपुर [उडीसा] का वार्षिकोत्सव दिनांक २४ से २६ अप्रैल ८६ के मध्य धूमधाम से सम्पन्न हुआ तथा ईसाई बाहुल्य क्षेत्र मे, यह पहली लाउडस्पीकर पर वैदिक मन्त्रों का उच्चारण हुआ इससे हजारो जन प्रभावित हुए। वेद पाठ गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के स्नातक श्री आचार्य बृहस्पति जी शास्त्री तथा श्री वागीश्वर जी शास्त्री ने किया। —प्रचार मन्त्री

—आर्यसमाज महानगर लखनऊ का वार्षिकोत्सव श्रद्धानन्द पार्क विकासनगर, कुर्सी रोड लखनऊ मे दिनांक २८, २९ व ३० जून ८६ को [illegible] सम्पन्न हुआ। इसमे पटना से पधारे प० शिवधर जी भजनोपदेशक, वैद्य [illegible] श्री कुन्दनलाल जी आर्य, सर्वश्री ओजोमित्र शास्त्री, पवनकुमार जी आर्योपदेशक व श्री वीरेन्द्र बहादुरसिंह के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। २१ जून ८६ को सायकाल जिला आर्य सभा का मासिक अधिवेशन भी इसी स्थल पर सम्पन्न हुआ। —ज्ञानकृष्ण

—आर्यसमाज सिरसी (मुरादाबाद) मे दिनांक २० जून से ३० जून ८६ तक वेदकथा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। —यशपालसरन

'आर्य मित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
मा० आषाढ़ २९
आषाढ़ शुक्ल १४
रविवार, २० जुलाई १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र



आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

१८८६-१९८६



शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी.कालेज, लखनऊ

**विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक
गतिविधियों पर विचार**

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ। फोन ४५९९३

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये प्रकाशभवन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में
श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं० २२४१ ह०		घोषणा पत्र न० ७ / २८-२-८२

वर्ष ८९]	मा० श्रावण ५, श्रावण कृष्ण ६, रविवार संवत २०४३ वि०, दि० २७ जुलाई १९८६	[अङ्क ३०

प्रार्थना

ओ३म् बट् सूर्य श्रवसा महाँ २ऽ असि सत्रा देव महाँ २ऽ असि । महूना देवानमसुर्य्य: पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥

—यजु ३३–४०

भावार्थ—हे सूर्य ! तू यश से सचमुच महान् है । हे दिव्य स्वरूप ! तू वास्तव मे महान् है । तथा महत्व मे अग्नि आदियों का प्राणपोषक पुरोहित की भाँति है । न बुझने वाली सर्वत्र जाने वाली ज्योति है ।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी

सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	४ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

आर्यसमाज राष्ट्र का संरक्षक है

राष्ट्र हित में आर्यसमाज बलिदान पथ पर अग्रणीय होगा

प्रशासन ने यदि पंजाब की समस्या हल करने मे विलँब किया तो आर्य जन मानस के यशस्वी नेता स्वामी आनन्द बोध बलिदान पथ का अनुसरण करेंगे

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत के उच्चतम राष्ट्रीय स्वरूप का स्वप्न देखा "वैदिक आदर्श पर आधारित राष्ट्र पूर्ण प्रभुता सम्पन्न हो [illegible] विश्व मे अपनी महानता की किरणें विकीर्ण कर सके" और इस उद्देश्य प्राप्ति के लिए महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना की । आर्यसमाज अपने लक्ष्य पर आगे और बलिदान तथा संघर्ष मे सदैव अग्रणी रहा और यह आर्यसमाज की देन है कि स्वतन्त्रता संघर्ष मे सफलता मिली । परन्तु स्वतन्त्रता के बाद आर्यसमाज सक्रिय राजनीति से हटकर आध्यात्मिकता एवं नैतिकता के जागरण के कार्य में लग गया । सत्ता पर बैठे व्यक्तियों ने पहले भारत का विभाजन स्वीकार किया और चीन और देश स्थापित कर दिया [illegible] नेपाल और [illegible] की उपेक्षा करते हुए चीन को निकट पड़ोस के रूप में दे दिया तथा चीनियों [illegible] आक्रमण करने का निमन्त्रण दे दिया । इन प्रवृत्तियों ने देश के अन्दर राष्ट्रद्रोहियों को भी बल प्रदान किया । मुसलमान भारत के अन्दर नवीन पाकिस्तान के स्वप्न देखने लगे और विवेक रहित सिक्खों ने पाकिस्तान मे सहायता लेकर खालिस्तान का नारा लगा दिया और आज स्थिति यह है कि पूर्वोत्तर सीमान्त पर चीनी घुसपैठ कर रहे हैं, पश्चिम सीमा पर पाकिस्तानी सेनाओं का जमाव तथा अतिक्रमण की [illegible] और पंजाब मे सीधा संघर्ष हो रहा है खालिस्तान की स्थापना के लिए । इसके अतिरिक्त [illegible], नागालैण्ड और अन्यत्र भी उपद्रव की योजनायें ।

उपर्युक्त विषम परिस्थितियों के निवारण और शमन मे भारत सरकार को जितना दृढ होना चाहिए उतना नहीं हो रही है । अफ्रीका की रंग भेद की चिन्ता ज्यादा है परन्तु फिरोजपुर, अमृतसर, कपूरथला मे जो पलायन हो रहा है उसकी उपेक्षा ।

आर्यसमाज के सम्प्रति शीर्षस्थ व्यक्ति स्वामी आनन्द बोध इन परिस्थितियों पर चिन्तित है और उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रधानमन्त्री को सूचित कर दिया है कि 'पंजाब यदि बचाना है तो सीमावर्ती क्षेत्रों मे सेनायें भेजिए तथा बरनाला सरकार भंग कर दीजिये" ।

स्वामी आनन्द बोध ने दिनाँक १५ अगस्त को—"पंजाब बचाओ दिवस" मनाने की घोषणा की और यदि सरकार समुचित पग न उठा सकी तो आर्यजगत का यह प्रतीक आर्यजनों के माध्यम से शक्ति और बल पर अपने अभियान को प्रारम्भ कर देगा । आर्यजन राष्ट्र की रक्षा के लिए [illegible] हो जाय ।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आर्य्यमित्र



सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार २७ जुलाई १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

"ओजस्विता एव तेजस्विता"

मानव जीवन के विकास मे ओज एव तेज का विशेष महत्व है। अर्थात ओज वह शक्ति है जो मानव मेधा को विशेष रूप से क्रियाशील बनाती है और तेजस्विता के सहारे उसमे दिव्य प्रतिभा प्रतिबिम्बित होती हैं तभी प्राचीनकाल से वैदिक ऋषि सध्या के समय प्रात साय प्रभु से ओज की प्रार्थना करता हैं याचना करता हैं।

भारतीय राजनीति शास्त्र के आचार्यों ने राजपद पर प्रतिष्ठित व्यक्तियो की कतिपय योग्यताओ का विश्लेषण किया है और उनमे प्रमुख है कि राष्ट्र के मन्त्री, सेनापति, और प्रशासक ओजस्विता और तेजस्विता से परिपूर्ण हो साथ ही विद्या चरित्र और नैतिकता, मर्यादा तथा आस्तिकता के लिये उनमे पूर्ण क्षमता हो ऐसे ही व्यक्ति राष्ट्र को सही दिशा दे सकते हैं, सकट के समय राष्ट्र की रक्षा कर सकते हैं। उनकी वाणी मे राष्ट्र की जीवन धारा को परिवर्तित करने की क्षमता होती है। इस स्थिति तक पहुचने के लिये मनुष्य मे विद्या एव चरित्र का बल हो तथा विद्या और चरित्र बल के लिये सबसे बड़ा सम्बल है ब्रह्मचर्य। भारत के मनीषी, तथा उच्चकोटि के ऋषि कवि तथा लेखक राज पुरुष अधिकांश मे इसी श्रेणी के थे जिनमे सब निर्णय की शक्ति थी। आचार्य चाणक्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

सम्प्रति भारत की प्रशासन की पीठिका पर जो व्यक्ति आसीन हैं उनमें ओजस्विता और तेजस्विताका अभावसा प्रतीत होता है, तभी राष्ट्र एक के बाद दूसरे विषम परिस्थितो मे ग्रसित होता चला जा रहा है। यही कारण है कि छ वर्षोंसे पजाबकी समस्याका निदान ढूढ़ा जा रहा है परन्तु निदान की औषधि नहीं मिलतो रोग बढ़ता जा रहा है। पजाब मे कितनी नृशस हत्याए हुई उसी की प्रतिछाया प्रधान मन्त्री इन्दिरा जी पर भी पडी और आज स्थिति उलझी हुई है। पजाब से हिन्दुओ का पलायन हो रहा हैं। खेद है कि प्रधान मन्त्री की कोई भी वाणी इतनी शक्ति से प्रतिष्ठित नहीं हुई कि जिससे राष्ट्र मे व्याप्त दुसकर्मियो के हृदय हिल जाये। अपितु ऐसे समझौते किए गए जो कोई समस्या हल नही कर सके। लोगोवाल के साथ समझौते का प्रचार किया गया और उस दिशा मे पूर्ण पराजय हुई तथा चण्डीगढ़ की नौटकी कई बार खेली गई। कर्नाटक और गोवा मे मराठी और कोकडी को लेकर लोगों के सिरफूट रहे हैं राष्ट्र का कोई नेता इन क्षुद्र घटनाओं को शात करने मे समर्थ नहीं है। इतना ही नहीं मिजोरम मे जिन शर्तों के साथ लालडेंगा ऐसे व्यक्ति जो २५ वर्षों से भारत राष्ट्र से अलगाव की बात करते रहे हैं शस्त्र उठाये फिरते रहे उनसे समझौते किए जा रहे हैं और यहा तक आत्म समपर्ण है क मिजो की धर्म और सस्कृति सम्बन्धी विषय पर लोकसभा का कोई हस्तक्षेप नहीं हो सकता है और उसे विदेशोसे व्यापार की स्वतन्त्रता दी गई। कांग्रेस का निर्वाचित मुख्यमन्त्री, हलथन वाला, लालडेंगा को मुख्यमन्त्री बना कर उसका उप मुख्यमन्त्री बन रहा है। और यहा तक की जब मिजोरम मे श्री राजीव जी विदेशी बाना पहन कर और श्रीमती सोनिया मिजो भेष-भूषा मे समझौते को लेकर मिजोरम में नृत्य कर रहे थे तभी चीन की सेनाए भारत भूमि पर अधिकार कर रही थी और उस अधिकृत भूमि को चीन ने अपनी घोषित कर दी। काश्मीर मे पाकिस्तानी घुसपैठ जोरो पर है जम्मू की सोमा पर पाकिस्तान की सेनाओ का दबाव बढ रहा है। यह सब इसलिए हो रहा है कि आज राष्ट्र के नेताओं मे ओजस्विता और तेजस्विता का अभाव है और उनकी वाणी आतकवादियो आक्रमणकारियो और देश के अन्दर विघटन कारियो को कम्पित नहीं कर पाती है। मन्त्रिमण्डल मे योग्यता न देखकर जाति और पाति देखा जाता हैं तथा राष्ट्र सेवा मे आहुति करने वाले व्यक्तियों के स्थान पर अवकाश प्राप्त सरकारी अधिकारी बैठाए जाते हैं।

राष्ट्र मे ओजस्विता और तेजस्विता की आवश्यकता है? यदि राष्ट्र पुरुष इन शक्तियो को अर्जित नहीं कर पायेगें तो असफल रहेगें।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

विशेष सूचना

आर्य समाज के सिद्धातो के ज्ञाता एव कुशल उपदेशक श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री वेद वाचस्पति जी ने शैक्षिक काय से अवकाश ग्रहण कर लिया है और उनके पास आय समाजो की सेवा के लिए पर्याप्त समय है उत्सवों के अवसर पर शास्त्री जी को आर्य समाज के अधिकारी आमन्त्रित करने हेतु इस पते पर सम्पर्क करें– श्री वेद प्रकाश शास्त्री नांगल सोती–बिजनौर।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

दान दाताओ से सावधान रहने की अपील

स्वामी वेदानन्द वेद वागीश मन्त्री वैदिक यति मण्डल दीना नगर गुरुदासपुर (पंजाब) ने दान दाताओ से अपील की है कि उड़ीसा मे जो समाज सेवी सस्थाए हैं उन्हें तभी दान दें जब वह समझें कि धन का उचित सदुपयोग हो रहा है। इस विषय मे श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज का उल्लेख किया गया है कि उनके द्वारा सचालित सेवा सस्थाओं मे धन का समुचित उपयोग नहीं है। उन्होंने अपील की है कि सार्वदेशिक सभा भी इस विषय को जाच करें और दानदाता भी धन उसी को दे जहा उसका समुचित उपयोग हो। सम्पादक

—"श्री लक्ष्मण देव वैदिक समिति, लाजपत नगर चौक, लखनऊ को वर्ष १९८६.८७ के लिये अनुदान हेतु लखनऊ तथा जरवल रोड के बच्चे शीघ्र प्रार्थना पत्र भेजें।

पूरा विवरण तथा प्रार्थना-पत्र की प्रतिलिपि आर्यमित्र के २०-१०-८५ अक मे देखी जा सकती।"

हरिवश
प्रबन्धक
श्री लक्ष्मणदेव वैदिक समिति लखनऊ

आर्यों का आदि देश–भारत

–स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष–वैदिक संस्थान नजीबाबाद [उ० प्र०]

पराधीनता के युग में–जब भारत पर अंग्रेजो का शासन था तो उन्होंने दीर्घकाल तक भारत पर शासन करने की दृष्टि से भारत के इतिहास और उसकी संस्कृति को मिटाने के लिये योजनाबद्ध कार्य आरम्भ किया।

एक ओर तो लार्ड मैकाले की योजनानुसार एक शिक्षा पद्धति भारत में प्रारम्भ की, जो अभी तक चल रही है, जिसका उद्देश्य भारत में अंग्रेजी राज्य के लिये लिपिक तैयार करना था। दूसरे उस शिक्षा पद्धति में पढ़ाये जाने के लिए भारतीय इतिहास के नाम पर भारतीय इतिहास से नितान्त असम्बद्ध तथा भारतीय इतिहास विरोधी स्व-कल्पित इतिहास लिखवाकर भारतीयों को पढ़ाना प्रारम्भ किया, जिससे भारतीय अपने इतिहास से प्राप्त होने वाले अतीत गौरव को भूल जाये।

दूसरा कार्य अंग्रेजो ने भारतीय संस्कृति को मिटाने का प्रारम्भ किया और इस कार्य के लिये जर्मन अध्यापक मैक्समूलर को इङ्गलैंड मे बुलाकर उससे भारतीय संस्कृति के मूलाधार वेदों के भ्रष्ट अर्थ कराने प्रारम्भ किय। अंग्रेज यह समझते थे कि इस कार्य से भारतीयो के मन मे वेद के प्रति घृणा उत्पन्न करके तथा तत्पश्चात् भारतीयों को ईसाईयत के रंग मे रंग कर ब्रिटिश साम्राज्य को भारत मे स्थायी किया जा सकेगा।

किन्तु खेद तो यह है कि अंग्रेजों के चले जाने के पश्चात् तीन शताब्दि बीत जाने पर भी अभी तक भारतीयो को वही शिक्षा मिल रही है और इतिहास के नाम पर वही कुछ पढ़ना पड रहा है, जिसके परिणामस्वरूप इस शिक्षा और इतिहास से अनुप्राणित भारत के वर्तमान तथाकथित इतिहासवेत्ता अभी भी भारत को आर्यों का आदिदेश और आर्यों को भारत के मूल निवासी मानने को तैयार नहीं। यह लोग इतने कूप-मण्डूक हो गये हैं कि इनकी यह कूप-मण्डूकता दुराग्रह का रूप धारण कर चुकी है। इतना दुराग्रह कि भारतीय पक्ष को सुनने उसके प्रमाण जान लेने के पश्चात् निरुत्तर होकर भी बिना किसी तर्क और प्रमाण के अपनी बात पर अड़े रहते हैं। यह निकृष्ट कोटि की हठवादिता और दुराग्रह है। इससे जहां यह लोग जानबूझ कर स्व-इतिहास से अनभिज्ञ रहना चाहते हैं। वहां भावी सन्ततियों को भारतीय इतिहास और संस्कृति से अनभिज्ञ रखने के दुष्प्रयास में लिप्त रहकर जाति को पतन और विनाश के गर्त मे धकेलने का पाप भी करते हैं।

हमारा कहना यह है कि आर्य भारत के मूल निवासी हैं। आर्यों के यहां के मूल निवासी होने के कारण ही इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त है। यदि आर्य कहीं बाहर से यहा आये होते और उनके आने से इस देश का नाम आर्यावर्त्त पड़ा तो आर्यों के आने से पहले कोई अन्य नाम होना चाहिये था। परन्तु तथ्य यह है कि आर्यावर्त्त से पहले इस देश का कोई दूसरा नाम नहीं था।

समस्त भूगोल मे कोई भी भूखण्ड ऐसा नहीं है कि जहां पर मनुष्य रहते हों और उसका कोई नाम न हो। मनुष्य के रहने की बात छोडिये यदि किसी ऐसे भूखण्ड का मानव को पता लग जाता है कि जिस पर मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी आदि भी न पाये जाते हों तो वह उसका भी कोई नाम रख लेता है। फिर यह किस प्रकार सम्भव हो सकता है कि इस भूखंड मे आर्यों से पहले मनुष्यो की एक बडी सख्या निवास करती थी किन्तु इतने पर भी इसका कोई नाम नहीं था। क्या यह इतिहास और भूगोल दोनों के साथ उन्हें स्वीकार न करने का मिथ्या व्यवहार नहीं है? तथा क्या यह इतिहास और भूगोल को न समझने की अल्प बुद्धि तथा ऐतिहासिक और भौगोलिक अयोग्यता का प्रमाण नहीं है?

एक और बात यह है कि यह देश आर्यों का आदि देश तो है ही–साथ ही आर्यों का केन्द्र भी है। यह इतिहास की सत्यता भी आर्य शब्द मे ही निहित है। आर्य–।–आवर्त्त आर्थात् आर्यों का केन्द्र। इससे यह सिद्ध होता है कि न केवल यह देश आर्यों का आदि देश ही है अपितु आर्यों का केन्द्र भी यही है। इसी भूखण्ड से आर्य लोग भूगोल के अन्य भागो मे जाकर बसे और कालान्तर मे जलवायु के प्रभाव तथा स्वमूल आर्यावर्त्त से दूर हो जाने तथा दीर्घकाल बीतने पर आर्य परम्परा से विच्छिन्न हो जाने पर विविध जातियो मे विभक्त हो गये।

वास्तविकता यही है कि भारत आर्यों का आदि देश है और आर्य यहाँ के मूल निवासी हैं तथा द्रविण, कोल, किरात, यवन, कम्बोज आदि सभी आर्यों के क्षत्रिय वर्ण मे से है और खान-पान, आचार-विचार आदि से भ्रष्ट हो जाने के कारण यह सब लोग अलग-अलग वर्गो मे विभाजित हो गये तथा पृथक्-पृथक् नामो से पुकारे जाने लगे।

यह पश्चिमी दृष्टिकोण के इतिहासज्ञ सिन्धु घाटी की सभ्यता को आर्यों से प्राचीन कालीन बताते है। इनका कहना है कि आर्यों ने आकर सिन्धु सभ्यता को विनष्ट किया। यह भी कहते है कि सिन्धु-सभ्यता पाँच सहस्र वर्ष पुरानी है। स्व० डा० सम्पूर्णानन्द के अनुसार वेदो का समय अठारह सहस्र वर्ष पुराना है। यदि सिन्धु-सभ्यता को पाँच सहस्र वर्ष पुराना मान भी लिया जाय तो भी आर्य-सभ्यता तथा कथित सिन्धु सभ्यता से तेरह सहस्र वर्ष पुरानी सिद्ध होती है। दूसरी ओर इस समय ईसवी सन् १९८६ मे कलि सवत् ५०८६ चल रहा है अर्थात् महाभारत को जो कि कलियुग के प्रारम्भ से पहले और द्वापर के अन्त मे हुआ था कम से कम ५१०० वर्ष बीत रहे हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि महाभारत युद्ध सिन्धु सभ्यता से कम से कम एक शताब्दि पूर्व अवश्य हुआ था। महाभारत आर्य इतिहास है। यह न तो सिन्धु घाटी की सभ्यता का इतिहास है और न द्रविड-इतिहास।

सिन्धु घाटी की खुदायी मे जो सील मोहरें मिली हैं, उनमे से एक सील पर एक वृक्ष का चित्र है। उस वृक्ष पर दो पक्षी चित्रित हैं। एक उस वृक्ष के फलो को खा रहा है और दूसरा उसे (खाते हुए को) देख रहा है, स्वय खा नहीं रहा है। इस सील के चित्र का आधार ऋग्वेद का वह मन्त्र है, जिसमे प्रकृति को वृक्ष मानकर उस पर जीवात्मा को पक्षी रूप मे वर्णित किया है और इस प्रकार यह दिखाया गया है कि जीव प्रकृति के बने हुए पदार्थो को भोगता है और परमात्मा केवल उस का दृष्टा है। मन्त्र इस प्रकार है–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥
–ऋग्वेद १–१६४–२०

यह सील यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि आर्य-सभ्यता सिन्धु-सभ्यता से पुरानी है। यदि यह मान लिया जाय कि सिन्धु घाटी के लोग इस मुहर का प्रयोग करते थे, यह उन्हीं की मुहर है तो यह स्वय सिद्ध हो जाता है कि सिन्धु-सभ्यता आर्य-सभ्यता का उत्तर कालीन रूप मात्र है। (क्रमशः)

वेद-प्रचार-सप्ताह

१९ अगस्त से २७ अगस्त १९८६ तक

श्रावणी पर्व, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं बलिदान स्मृति समारोह पूर्वक मनाकर वैदिक धर्म का सन्देश जन-जन तक पहुचाइये

श्रीमन्नमस्ते !

इस वर्ष 'वेद प्रचार सप्ताह' दिनांक १९ अगस्त से २७ अगस्त १९८६ दिन मगलवार से बुधवार तक मनाया जावेगा। सप्ताह के कार्यक्रम निम्न प्रकार हैं–

आर्य समाजो को चाहिये कि वे अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने का भरसक प्रयत्न करें। इस कार्य मे स्थानीय महिला आर्यसमाज, आर्यकुमार सभा, आर्यवीर दल जहा न हो,वहाँ वह स्थापित किये जाने चाहिए। वेद प्रचार सप्ताह पूरे श्रावण मास चलाये जायें, जिससे विद्वानो का अधिक लाभ उठाया जा सके।

श्रावणी का महत्व

आर्य समाज के प्रवर्तक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान् वैदिक धर्म के महान् प्रचारक मानवता को मतान्धता, एवं अन्धविश्वासो को अन्ध कूप से निकालकर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के प्रदाता, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान सूत्रधार तथा राष्ट्र धर्म के प्रबल प्रेरक महर्षि दयानन्द के महान व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा समन्वित हो ऋषि के चरण चिन्हो पर चलने की चेतना देना, इस पर्व का महान उद्देश्य है।

वेद प्रचार निधि

इतने बड़े उत्तर प्रदेश मे आर्यसमाज के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिए सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिये। प्रान्त मे डेढ सहस्र से अधिक आर्यसमाजें हैं। यदि इनका प्रत्येक एक-एक सदस्य रुपया वेद प्रचार के लिए इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्तव्य समझें, तो वेदप्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेद प्रचार के लिए जो धन सग्रहीत किया जाय, उसे सभा कार्यालय मे भेजने की कृपा करें।

श्रीकृष्ण—जन्मोत्सव

२७ अगस्त १९८६ भाद्रपद कृष्णाष्टमी, आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान योग विद्या के प्रबल ज्ञाता पतनोन्मुख भारत के महान त्राता तथा भारत के निर्माता आचार्य अगिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभ जन्म दिवस है। इस महापुरुष के नाम पर आज भी जो पाखण्ड लीला हो रही है, उसके समूल नाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही विशेषरूप से है। श्रीकृष्ण की महत्ता के लिए उनकी वैदिक शिक्षाओ का प्रचार किया जाना चाहिए।

प्रात ७॥ बजे से आर्य मन्दिरो मे 'आर्य पर्व पद्धति' के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। रात्रि को आर्य मन्दिरो मे अथवा सार्वजनिक स्थानो मे योगीराज श्रीकृष्ण के जीवनपर व्याख्यान तथा उनके गीता ज्ञान और कर्म योग का विवेचन किया जाय।

कार्यक्रम १९ अगस्त से २७ अगस्त १९८६ तक

प्रतिदिन प्रात सूर्योदय वेला मे दैनिक सत्सग का आयोजन किया जाय, और इस सत्सग को यथा सम्भव प्रतिदिन निरन्तर चालू रखने की प्रतिज्ञा भी करनी चाहिये।

मध्याह्न–वैदिक साहित्य विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन सभासद बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय।

रात्रि–मन्दिरो मे वेद कथा का विशेष आयोजन हो। वेदो के आधार पर विश्व-बन्धुत्व, मानव वाद, बुद्धिवाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्रधर्म आदि विषयों पर विशेष व्याख्यानो का आयोजन किया जाय।

शारीरिक व्यायाम, प्रदर्शन एवं वाक् सघर्ष–इस सप्ताह मे आर्य वीर दल एवं आर्य कुमार सभाओ को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला विकसित करने की दृष्टि से भी विशेष आयोजन करने चाहिए।

श्रावणी कार्यक्रम

पारिवारिक यज्ञ–श्रावणी (रक्षा बन्धन) के दिन प्रत्येक आर्य परिवारो मे प्रात परिवारिक यज्ञ करें। प्रात ७॥ बजे से समस्त आर्य नर-नारी, युवक तथा बालक बालिकायें आर्य मन्दिर में उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनायें–वेद की पावन ऋचाओ का पाठ किया जावे।

रात्रि को आर्य मन्दिरों मे वेद कथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिये।

हैदराबाद सत्याग्रह धर्मयुद्ध एवं वैदिक धर्म के समस्त बलिदानियों को पुण्य स्मृति मनाकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जाये।

स्वतन्त्रता

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा अन्य आर्य जनो के प्रयत्न से भारत स्वतन्त्र हुआ। १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस मनाकर भारत की स्वाधीनता की रक्षा की प्रतिज्ञा लीजिए–आर्यसमाज ने देश की स्वाधीनता के सग्रामो मे सर्वाधिक बलिदान किया है। देश मे प्रजातन्त्र के समुचित विकास, भ्रष्टाचार निवारण, पञ्चवर्षीय तथा निरोधादि कार्यों मे आर्यसमाज को पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

टिप्पणी–(१) सप्ताह के आरम्भ मे आर्य मन्दिरो पर तथा आर्य ध्वज लगाना चाहिये।

(२) इस सप्ताह को अधिक महत्वपूर्ण व सार्थक बनाने के लिए हमारा आग्रह है कि प्रत्येक आर्यसमाज एक सूची उन महानुभावो की तैयार करे, जिनका आर्यसमाज से अथवा उसके अधीनस्थ सस्थाओ से, शिक्षणालयो आदि से सम्बन्ध रहा हो, और इस समय आर्यसमाज के सभासद नहीं हैं, ऐसी सूची की एक प्रतिलिपि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्यालय को भेजी जावे।

निवेदक–

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आयु का ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित होना और स्थावर मे जीव का होना वैदिक सिद्धांत है ।

(लेखक वैद्य, हकीम रामशकर गुप्त प्रधान आर्य समाज जलेसर
जलेसर टाउन जिला एटा उत्तर प्रदेश)

(गताङ्क से आगे)

जिस ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का हवाला आर्यबन्धु जी ने अपने इस लेख मे दिया है उसी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के पुनरजन्म विषय नामी प्रकरण मे महर्षि लिखते हैं कि—

"वैसे ही ईश्वर न्याय कारी होने से किसी को बिना कारण से सुख वा दु ख कभी नहीं देता । जब हमको पुण्य पाप का कार्य सुख और दु,ख प्रत्यक्ष है तब हमको ठीक निश्चय होता है कि पूर्व जन्म के पाप पुण्य के बिना उत्तम, मध्य और नीच शरीर तथा बुद्धि आदि पदार्थ कभी नही मिल सकते ।"

यहा पर बुद्धि आदि पदार्थ से आयु का भी ग्रहण होता है । अत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के इस लेखाश से यह भली भांति विदित होता है कि महर्षि भी आयु को ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित होना मानते थे । इसके अतरिक्त वह अपने वास्तविक मौलिक ग्रन्थ प्रथमा वृति सन् १८७५ के सत्यार्थ प्रकाश म योग दर्शन का 'सत मूल तद्विपाको जात्या-युर्भोग." को देते हुए उसका भाष्य इस प्रकार से किया है कि "इसका अभिप्राय है कि कर्मों के फल तीन होते हैं । जन्म, आयु और भोग, परन्तु जब तक कर्मा का मूल अविद्यादिक रहते है तब तक कर्म फल भोग भी रहता है सो भी जैसा कर्म वैसा जन्म, आयु और भोग उसके अनुसार होते है ।"

महर्षि के योग दर्शन साधन पाद के तेरव सूत्र पर किये गए उपयुक्त भाष्य से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि महर्षि भी आयु को पूर्व जन्म के कर्मानुसार ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित होना मानते थे ।

आगे चलकर आर्य बन्धु जी ने अपने इस लेख मे "ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन द्वितीय भाग के तृतीय सस्करण पृष्ठ सख्या ५६४ का सहारा लिया है । सो यह ग्रन्थ प्रमाणिक नही है । कारण कि जो पत्र व्यवहार स्वामी श्रद्धानन्दजी ने महर्षि का प्रकाशित किया था उसमे लाला जगन्नाथ दास की प्रश्नावली और उसका उत्तर नही है । यह पत्र और विज्ञापन नामी पुस्तक ऐसे दो महाशय, एक महाशय भगवद्दत्त जी दूसरे प० युधिष्ठिर मीमान्सक जी जिन्होने प्रेस के भूलो को गलती कहकर भगवद्दत्त ने सत्यार्थ प्रकाश द्वितिया वृति सन १८८४ के सत्यार्थ प्रकाश मे और प० युधिष्ठिर जी ने महर्षि के ऋग्वेद भाष्य मे काफी काट-छाट की है । इसलिये यह बहुत कुछ सम्भावना है कि पत्र और विज्ञापन के द्वितीय भाग मे ला० जगन्नाथ दास मुरादाबाद निवासी की प्रश्नावली और उसका उत्तर जाली रचकर इसमे घुसेड दिया हो अत यह प्रमाणिक नहीं माना जा सकता ।

आगे चलकर आर्य बन्धु जी ने सन १८८४ के द्वितिया वृत्ति सत्यार्थ प्रकाश के निम्न लेखाशो का सहारा लेते हुए उनको इस प्रकार लिखा है ।—

(१) जो मनुष्योमे विवाह का नियम न रहे तो गृहाश्रम के अच्छे-अच्छे सब व्यवहार सब नष्ट भ्रष्ट हो जायें । कोई किसी की सेवा भी न करे । और महा व्यभिचार बढ़कर सब रोगी निर्बल और अल्पायु होकर शीघ्र-शीघ्र मर जायें । कोई किसी से भय व लज्जा न करें । वृद्धावस्था मे कोई किसी की सेवा भी न करे और महा व्यभिचार बढ़कर रोगी निर्बल और अल्प आयु होकर कुल के कुल नष्ट हो जायें ।

(सत्य० ४ स०)

(२) अन्यथा वीर्य व्यर्थ जाता दोनो की आयु घट जाती ।

(सत्य० ४ स)

(३) २४ वर्ष के पश्चात् गृहाश्रम करूगा तो प्रसिद्ध है कि रोग रहित रहूगा और आयु भी मेरी ७० वा ८० वर्ष तक रहेगी ।

(सत्य० ३ स०)

(४) उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन करके पूर्ण अर्थात् चार सौ वर्ष पयन्त आयु को बढावे वैसे तुम भी बढाओ ।

(सत्य० ३ स०)

किन्तु महर्षि ने अपनी वास्तविक मौलिक कृति सन १८७५ के प्रथमा वृति सत्यार्थ प्रकाश मे जो उनके जीवन पर्यन्त आर्य समाजो मे चलता रहा मे ब्रह्मचर्य के सम्बन्धमे इस प्रकार लिखा है ।—

[१] वीर्य की रक्षा करने मे निश्चित बुद्धि होय क्योकि वीर्य की रक्षा से बुद्धि, बल, पराक्रम और धैर्यादिक गुण अत्यन्त बढते है ।

(प्र० म० २ स०)

[२] उत्तम पुरुष के ब्रह्मचर्य का नियम ४० वर्ष तक होता है और छान्दोग्य उपनिषद मे ४४ व ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य जो कर्त्ता है वह पुरुष विद्या, पराक्रम और सर्व श्रेष्ठ गुणो मे उत्तमो मे भी उत्तम होगा और ३० से ३६ वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्य का नियम है और २५ से ३० वर्ष तक न्यून से न्यून ब्रह्मचर्य का नियम है इससे न्यून ब्रह्मचर्य का नियम कभी न होना चाहिये जो कोई इससे न्यून ब्रह्मचर्याश्रम करेगा अथवा कुछ भी न करेगा उसको धैर्यादिक श्रेष्ठ गुण कभी न होगे सदा रोगी, भ्रष्ट बुद्धि, विद्या-हीन, कुत्सित कर्मकारी ही होगा क्योकि जिसके धातुओ की क्षीणता और विषमता शरीर मे होगी उस मनुष्य को किसी रीति से सुख न होगा ।

और कन्याओ का २० से २४ वर्ष तक उत्तम ब्रह्मचर्याश्रम है १६ वर्ष से आगे २० वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्याश्रम का काल है । १६ वें वर्ष से १७ वा १८ वा वर्ष तक अधम ब्रह्मचर्य का काल है १६ वर्ष से न्यून कन्याओ का ब्रह्मचर्य कभी न होना चाहिये जो कन्या १६ वर्ष से न्युन ब्रह्मचर्याश्रम को करेगी वह विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम धैर्यादिक गुणो से रहित और रोग आदिक दोषो से युक्त होगी सदा दु खी ही रहेगी ।"

[३] जो पुरुष ४०, ४४ और ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य रखेगा उस पुरुष के भाग्य और सुख को हम लोग नही कह सकते कि कितना होगा ।

[४] परस्पर व्यभिचारी होगे उनसे वीर्य का नाश होगा फिर बहुत से शरीर मे रोग होगे रोगो से सदा पीडित रहेंगे वे मूर्ख होगे इससे कभी सुख न पावेगें ।

[५] इस अपरिपक्व वीर्य और अत्यन्त वीर्य के नाश से बुद्धि, बल, पराक्रम, तेज और धैर्य का नाश हो जाता है आलस्य, रोग, क्रोध

[शेष पृष्ठ ६ पर]

आयु का ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित होना और स्थावर मे जीव का होना वैदिक सिद्धांत है

[शेष पृष्ठ ५ से आगे]

और दुर्बुद्धि इत्यादि ये सब दोष उसमें हो जायेंगे फिर कैसे उसको विद्या हो सकती है कभी न होगी।

(प्र० वृ० स० ३ स०)

इस प्रकार से आर्यबन्धु जी देखेंगे कि जगद्गुरू महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने ब्रह्मचर्य धारण करने से आयु का बढना और व्यभिचार से आयु घटना कहीं नहीं लिखा है। यदि आयु के घटने बढ़ने का वैदिक सिद्धांत होता तो वह अपनी इस वास्तविक मौलिक कृति सन १८७५ के प्रथमा वृति सत्यार्थप्रकाश मे अवश्य लिखते। इससे यह भली भांति विदित होता है कि महर्षि भी आयु को ईश्वर प्रदत्त तथा निश्चित और निर्धारित ही मानते थे।

अब आर्य बन्धु जी प्रत्यक्ष प्रमाणो के प्रकाश मे आयु के घटने और बढने वाली मान्यता को परखे तो उनको स्पष्ट ज्ञात हो जावेगा कि आयु के घटने और बढ़ने वाली मान्यता निरर्थक कोरी कल्पना मात्र मनमोदक के समान है।

प्रत्यक्ष प्रमाण

[१] जगद्गुरु स्वामी शकराचार्य जी महाराज ने बाल काल सन्यास धारण करके जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य धारण किया योगाभ्यास किया किन्तु फिर भी उनकी आयु बढ़ी नहीं और उनका देहपात शत वर्ष से न्यून अवस्था मे हो गया।

[२] स्वामी ब्रजानन्द सरस्वती जी महाराज ने भी बाल काल मे गृह त्याग कर सन्यास धारण किया और जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य धारण किया किन्तु फिर भी उनकी आयु बढ़ी नहीं उनका भी शत वर्ष के भीतर न्यून अवस्था मे देहपात हो गया।

[३] जगद्गुरू महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने बालकाल मे गृह त्याग कर सन्यास धारण किया और जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य धारण किया योगाभ्यास किया किन्तु फिर भी उनकी आयु बढ़ी नहीं और शत वर्ष के भीतर न्यूनावस्था मे उनका भी देहपात हो गया।

(४) योगीराज अरविन्द घोष बाल ब्रह्मचारी थे और उन्होने सन्यास धारण करके योगाभ्यास किया किन्तु उनकी भी आयु बढ़ी नहीं और शत वर्ष के भीतर ही उनका भी देहपात हो गया।

(५) स्वामी वेदानन्द तीर्थ, स्वामी नित्यानन्द, स्वामी आत्मानन्द और स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने भी बाल काल मे सन्यास लेकर ब्रह्मचर्य धारण किया किन्तु इनकी भी आयु बढ़ी नहीं और शत वर्ष के भीतर ही इन सबका देहपात हो गया।

(६) स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, आनन्द स्वामी, नारायण स्वामी स्वामी ध्रुवानन्द, स्वामी अखिलानन्द, स्वामी ब्रह्मानन्द स्वामी सत्यानन्द आदिक सन्यासी गण जो गृहस्थ से सन्यासी हुए और ब्रह्मचय धारण किया किन्तु इन सबकी आयु बढी नहीं अपितु शत वर्ष के भीतर ही इन सबका देहपात हो गया।

(७) रात दिन सदाचारी गृहस्थ आर्य समाजी जिनकी गणना नहीं की आयु क्यो नहीं बढ़ी और क्यो शत वर्ष के भीतर उनका देहपात हुआ।

इस प्रकार से आर्य बन्धु जी प्रत्यक्ष प्रमाणो के प्रकाश मे देखेंगे तो उन्हे भी ज्ञात हो जायेगा कि आयु ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित है अत आयु के घटने बढ़ने वाले आर्य समाजियों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वह आयु को घटने बढने वाली मिथ्या मान्यता को त्याग कर वेद प्रतिपादि और प्रत्यक्ष प्रमाणो से सिद्ध आयु निश्चित निर्धारित है कि मान्यता को स्वीकार करें। तथा उनसे यह भी सविनय निवेदन हैं कि वह प्रश्न को प्रतिष्ठा का विषय न बनाकर अब मौन धारण कर लें।

[२] वृक्षो मे जीव

मुझे वृक्षो मे जीव का होना स्वीकार है और मै यह मानता हू कि जीव अपनी सब इन्द्रियो से पाप करने से स्थावर योनि को प्राप्त करता है और उसमे निश्चित निर्धारित अवधि मे अपने किए हुऐ कर्मों का फल भोग कर ही स्थावर योनि को त्यागता है।

वेद प्रचार शिविर गंगा दशहरा भोलाझाल मेरठ

दिनाक १७-६-८९ को गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी भोलाझाल मेरठ की ओर से भोलाझाल गंगा नहरके तटपर एक विशाल वेद प्रचार शिविर लगाया गया। प्रात ९ बजे श्री सोमदेव जी शतायु के ब्रह्मत्व मे यज्ञ हुआ। तदुपरात गुरुकुलके ब्रह्मचारियो द्वारा एक सस्कृत गीतिका गा कर सब आगन्तुक आर्यजनों का स्वागत किया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराजजी लगभग ११-३० बजे शिविर मे पधारे तथा अपने प्रवचन मे देशमे चल रहे विदेशी कुचक्रो का जिकर करते हुए विस्तार से पजाब की विषम परिस्थितियो पर प्रकाश डाला। उन्होने आर्य जनो को देश की एकता अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए सचेत करते हुए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर बल दिया।

तदुपरात श्री हरस्वरूप जी, श्री कर्णसिह जी, एव श्री शोभाराम प्रेमी के सुमधु भजनो पदेश हुए।

मध्याह्नोत्तर छोटे छोटे ब्रह्मचारियों ने अग्रेंजी हिन्दी और सस्कृत मे व्याख्यान देकर श्रोताओ को मत्र मुग्ध किया। कुछ ब्रह्मचारियो ने श्लोक अन्ताक्षरी तथा सूत्र अन्ताक्षरी का इतना प्रभावशाली प्रदर्शन किया कि श्रोताओ ने गुरुकुल की शिक्षा की भूरि-भूरि प्रशसा की।

अन्त मे गुरुकुल के आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी ने सब आर्य बन्धुओ को आशीर्वाद दिया तथा सबको गुरुकुल को सहयोग देने की प्रेरणा की।

श्री इन्द्रराज जी मत्री ने सब अन्न और धन दान देने वाले महानुभावो का धन्यवाद किया।

—सम्वाददाता

आर्य जगत

—आर्य समाज ईसा नगर सीतापुर के सौजन्य से जनपद के ७ गावों मे वेद प्रचार तथा धनुष विद्या का कार्यक्रम श्री राम औतार भजनोपदेशक, तथा प० नेम प्रकाश भजनोपदेशक सभा द्वारा सम्पन्न हुआ।

प्रधान आर्य समाज

'ओ३म्'

सावधानता की आवश्यकता

(श्री राजर्षि रणञ्जयसिंह, (अमेठी राज्य)
भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश)

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सस्थापित उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र होने से 'परोपकारी पत्र का महत्व अत्यधिक है। उसमे प्राय सदा विद्वतापूर्ण लेखो का समावेश रहता है परन्तु गत जनवरी मास से उसके आवरण पृष्ठ पर परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम ओ३म् दृष्टिगोचर नही होता। ऐसा क्यो ? यह समझ मे नही आ रहा है।

आर्य समाज के स्थापना काल से आर्य समाज के सभी ग्रथों तथा पत्रादि मे परमेश्वर का यह परम पावन नाम अवश्य रहा करता था और इसी ओ३म् से यह प्रमाणित हो जाता था कि यह आर्य सामाजिक साहित्य है। दुर्भाग्य की बात है कि नवजीवन का सचार करने वाले जग को जगाने वाले आर्य समाज मे भी अब आलस्य का घुन घुसता जा रहा है। आर्यसमाज के प्रथम नियम का परोक्ष रूप से विरोध होना आरम्भ हो गया है अर्थात् सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

जिस प्रकार आजकल के शिक्षित युवको के शिरो से शिखा का लोप हो रहा है उसी प्रकार परमेश्वर के इस पवित्र नाम ओ३म् का भी लोप होने लगा है।

दिल्ली का सुप्रसिद्ध आर्य पत्र 'सम्राट है। वह गवेषणापूर्ण उत्तमोत्तम लेखो से सुसज्जित रहता है परन्तु उस पर भी प्रारम्भ में ओ३म् की आवश्यकता स्यात् समझी नहीं जाती। उसके सस्थापक आर्य समाज के धुरन्धर विद्वान् स्वनाम धन्य श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती थे जो सेना मे रहते हुए भी निर्भीकता से वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे हैं और जब लोकसभा की सदस्यता के लिए खड़े हुए थे तब हाथ मे ओ३म् की ध्वजा लिए हुए चलते थे। जिस पर एलेक्शन पेटीशन होने पर भी दृढ़ रहे और विजयी हुए।

आर्य प्रादेशिक सभा दिल्ली का मुख पत्र है आर्यजगत् उस पर ओ३म् सदैव रहा करता था एक बार थोडे समय के लिए वह ओ३म् से शून्य दृष्टि गोचर हुआ तब सुयोग्य सम्पादक जी से पूछने पर ज्ञात हुआ कि ओ३म् का ब्लाक घिस गया था अत दूसरा बनवाया जा रहा है और ब्लाक के ठीक हो जाने पर उस पर पूर्ववत् आदि मे 'ओ३म्' अकित रहने लगा है।

इस प्रकार आलस्य वा प्रमाद के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं नित्य कर्मों पर ही विचार किया जाय तो प्रत्यक्ष है कि उनका समुचित पालन नहीं हो रहा है। पचमहायज्ञो मे सर्व प्रथम हैं ब्रह्मयज्ञ अर्थात् सध्योपासन। आज कितने ही आर्य समाजी बन्धु हैं जो उसे करते ही नहीं। जो यदा कदा करते हैं उनमे अधिकतर ऐसे हैं जो मत्रो का शुद्ध उच्चारण नहीं करते। इसके अतिरिक्त यह भी खेद का विषय है जो सध्योपासन आदि के लिए ग्रथ अथवा गुटके छपते हैं उनमे कतिपय ऐसे परिवर्तन दृष्टिगत होने लगे हैं जो महर्षि द्वारा स्वीकृत वैदिक सध्या से भिन्न हैं। सध्योपासन के उपस्थान के तीसरे मन्त्र मे अन्तिम शब्द स्वाहा निकाल दिया जाता है मन्त्र के नीचे तो छपा रहता है (यजु० ७।४२) तात्पय यह है कि उक्त मन्त्र यजुर्वेद के सातवें अध्याय का बयालिसवा मन्त्र है परन्तु स्वाहा शब्द से विहीन होने से वह १३ वें अध्याय का छियालिसवा मन्त्र हो जाता है और जिसका ऋषि भी भिन्न है। यदि ऐसा किसी साधारण पुस्तक मे छपा होता तब चाहे टिप्पणी न भी की जाती परन्तु जब आर्य साहित्य के सुविख्यात प्रकाशक द्वारा आर्य सत्सग गुटका मे सुस्पष्ट सुन्दर रूप में छो अ वे र ा ो शक धर्मार्य सभा से स्वीकृत पद्धति के आधार पर धर्मार्य सभा को मन्त्र बलदने की अनाधिकार चेष्टा करानी हो थी तब मन्त्र का सख्या क्या वही रहने दी। क्या इतना भी ध्यान में नहीं आया। कहा तक लिखा जाय ?

आर्य समाज के उप नियमो में जहा प्रत्येक आय के लिए सस्कृत तथा आर्य भाषा (हिन्दी) का जानना अनिवार्य लिखा है, अब वहा छपने लगा है सस्कृत अथवा आर्य भाषा तथा और अथवा में जैन कोई भेद न हो। जहा सस्कृत तथा आर्य भाषा दोनो भाषाओ का जानना आवश्यक था अब सस्कृत अथवा आर्यभाषा छोडकर दोनो भाषाओ मे से किसी एक भाषाका ज्ञान आवश्यक निरूपित कर दिया गया। स्वामी जी महाराज जहा दोनो भाषाओ का ज्ञान परमावश्यक समझते थे, वहीं उनके अनुयायी जब ऐसा करने लगे तब क्या इसे माना जा सकता है ? क्या यह देववाणी सस्कृत तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी मे से किसी एक के साथ अन्याय और अनादर नहीं है ?

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह मे देश विदेश के मूर्धन्य आर्य विद्वान् आये हुए थे और अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नो पर विचार विमर्श हुआ था समझा जाता था कि अब आर्य समाज मे पुन नयी चेतना जागृत होगी। अन्धकार से प्रकाश की ओर पग बढ़ेगा किन्तु खेद की बात यह हुई कि अजमेरमें ही कतिपय मतभेद प्रकट होने लगे। खचा खच भरे हुए विशाल पडाल मे वेद सम्मेलन के शुभावसर पर बहुत से वैदिक विद्वान् अपने अपने विचार प्रकट करने के निमित मच पर विराजमान थे, उसी समय एक महान् वैदिक विद्वान् माने जाने वाले आचार्य जी द्वारा ऐसी बाधा डाली गयी की वेद सम्मेलन वहीं ठप पड ही गया और मुख्य विषय वेद न रह कर चन्दा हो गया। निर्वाण शताब्दी समारोह मे निर्वाण शब्द पर ही आक्षेप युक्त विवाद खडा हो गया अनेक स्थानो पर निर्वाण शब्द के स्थान पर बलिदान शब्द का प्रयोग किया जाने लगा, इतना ही नहीं जहाँ शोभायात्रा मे सम्मिलित जन समूह की सख्या पाँच लाख छप रही थी उहकी आलोचना करते हुए यह कहा जाने लगा कि उपर्युक्त सख्या पचीस सहस्र से अधिक नहीं थी। कहीं कहीं और भी कम बताई गयी। अस्तु यह भी व्यर्थ ही एक विवादित विषय बन गया। इतने समूह की गणना तो किसी ने की भी नहीं थी। लगभग दसलाख आर्य बन्धुओ को देखते हुए तथा १५ किलो मीटर की लम्बाई मे शोभा यात्रा को देखते हुए यही अनुमान लगाया गया कि सख्या पाच लाख से कम न रही होगी।

अभिप्राय यह है कि हम आर्य जन भ्रान्ति के चक्र मे कहा से कहाँ जा रहे हैं। छोटी छोटी बातो पर विवाद प्रारम्भ हो रहे हैं, यदि यही क्रम रहा तो हम अपने उस उच्च उद्देश्य मे सफल कैसे होगे। स्वामी जी महाराज ने कितने बडे क्रांतिकारी, देश हितकारी और परोपकारी सगठन का निर्माण किया था जो इस युग मे अद्वितीय था।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पँजाब से पलायन समस्या पर–
सार्वदेशिक प्रधान स्वामी आनन्द बोधजी की प्रधानमन्त्री से भेंट–
पलायन रोकने हेतु प्रभावशाली कदम उठाये जायेंगे--
--प्रधानमन्त्री का आश्वासन

पंजाब के उत्पीड़ित अल्प सख्यक हिन्दुओ की पलायन समस्या को तुरन्त रोकने तथा उनकी पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रति निधि सभा दिल्ली का एक शिष्ट मण्डल सार्वदेशिक प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता मे दिनाक १७ जुलाई १९८६ को प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी से दिल्ली मे मिला। इस शिष्टमण्डल मे स्वामी आनन्दबोध जी के साथ सर्व श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री मत्री सार्व देशिक सभा, प्रो० शेरसिंह जी, सूर्यदेव जी, राजगुरु शर्मा तथा श्री जगदीश प्रसाद वैदिक आदि थे। शिष्ट मण्डल की उक्त विषयक वार्ता को सुनकर प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी ने कहा कि– "पजाब से अल्प सख्यको के पलायन को रोकने के लिए प्रभावशाली कदम उठाये जायेंगे" साथ ही प्रधानमन्त्री ने यह भी आश्वासन दिया कि– 'पजाब छोड़कर आये लोगो की वापसी का भी प्रयास किया जायेगा'।

शिष्ट मण्डल ने, पाकिस्तान से लगे सीमावर्ती जिलो अमृतसर, गुरुदासपुर तथा फिरोजपुर के २५ मील के क्षेत्रों को तुरन्त सेना के हवाले करने तथा पजाब मे राष्ट्रपति शासन लागू करने की भी माग की जिससे वहा के अल्प सख्यकों मे सुरक्षा की भावना जागृति हो तथा उत्पीड़ित हिन्दुओ का पलायन रोका जा सके।

–सम्वाददाता

(पृष्ठ ७ का शेष)
(सावधानता की आवश्यकता)

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य हो ससार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। नम्र निवेदन है कि उपर्युक्त प्रश्नो पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके कर्तव्य पथ पर आरूढ़ रहना और तन मन धन से सत्य सनातन वैदिक धर्म का विश्वमे प्रचार और प्रसार करके वास्तविक शान्ति स्थापना करें।

ऋषि दयानन्द के जग को जगाने पर भी,
है वे अभागे जो अभी तक पड़े सोते हैं।
हाथ पर हाथ रख बनकर अकर्मण्य,
भाग्य के भरोसे ये अभागे आयु खोते हैं।
देश को स्वतन्त्रता से आलसी न पाते सुख,
बिना कर्म किये ही कल के लिए रोते हैं।
वेशपथधारी रणञ्जय कर्मवीर उठें,
देखें तब दु ख दूर कैसे नही होते है॥

–राजर्षि रणञ्जयसिह

–दुःख है कि बसेड़ा खुर्द (बिजनौर) के श्री हरिसिंह जी आर्य भजनोपदेशक का निधन वात रोग के कारण दिनाक ७ जुलाई ८६ को हो गया। प्रभु दिवगत को शान्ति एव शोक सतप्त परिवार जनों को धैर्य प्रदान करे। –रामदेव आर्य

क्षत्रिय आर्यवर चाहिए

अर्थशास्त्र मे परास्नातक, गृहकार्य मे दक्ष, सुन्दर स्वस्थ एव आर्य विचार धारा वाली क्षत्रिय कन्याओं के लिए आर्य विचार धारा वाले उनके योग्य वरो की तत्काल आवश्यकता है। कृपया निम्न पते पर सूचित करें–

प० चन्द्र नारायण
मित्र प्रेस, इटावा

आर्य जगत्

–आर्य समाज हरजेन्द्रनगर (कानपुर) ने गुरुकुल सोरो एटा के सस्थापक श्री स्वामी मिथिलेश जी की हत्या पर क्षोभ प्रकट करते हुए सरकार से हत्यारो को फासी की सजा देने की माग की साथ ही अपने दिनाक १३ जुलाई की शोकसभा मे दिवगत की शाति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए स्व० श्री स्वामी जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की है। –रामजी आर्य

–आर्य समाज गवा (बदायू) ने सत्य प्रकाशन एव वेद मन्दिर मथुरा के सचालक श्री प्रेमभिक्षु जी के पिता के स्वर्गवास पर शोक सवेदना प्रकट करते हुए दिवगत के चिर शाति एव परिवार जनो के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की। –प्रचार मन्त्री

–आर्य समाज विष्णुगढ़ (फर्रुखाबाद) ने श्री ओमप्रकाश जी त्यागी मन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली के आकस्मिक निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा के परम शाति एव शोक विह्वल परिवार के असीम धैर्य हेतु परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की। मत्री

–आर्य समाज सराय अगस्त (एटा) के प्रधान डा० शिवरत्न लाल आर्य की धर्मपत्नी का निधन दिनाक ३० जून ८६ को हो गया वे ७३ वर्ष की थीं। उनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। आर्य समाज सराय अगस्त ने दिवगता के आत्मा को चिर शाति एव परिवार जनों के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए दिवगता के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। –रामनाथगुप्त

–दु खद समाचार है कि आर्य समाज अडींग (मथुरा के प्रधान श्री बद्रीप्रसाद आर्य का निधन दिनाक ३ जुलाई ८६ को भोपाल मे हो गया आर्य समाज अडींग द्वारा एक शोक सभा करके दिवगत के शान्ति एव शोकाकुल परिवार के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई। –मन्त्री

–आर्य समाज महाराजपुर के कोषाध्यक्ष श्री दयाराम जी आर्य के पिता श्री छिकोडीलाल जी आर्य का निधन दिनाक २८ जून ८६ को प्रात हो गया। समाज मन्दिर मे अन्तरग सभा के सदस्यों एव आर्य जनो ने एकत्रित होकर दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित की और ईश्वर से प्रार्थना की कि उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे एव शोकाकुल परिवार को यह दु ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। –मन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज अमरोहा (मुरादाबाद)
प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य
मन्त्री श्री सीताराम शर्माबन्धु
कोषा० श्री सतीश चन्द्र जी

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा देहरादून
प्रधान श्री यशपाल आर्य
मन्त्री श्री देवदत्त पत्रकार
कोषा० श्री प्रेमचन्द मित्तल

नेपाल मे सत्यार्थ प्रकाश

(रामचन्द्र सिंह क्रांतिकारी, नेपाल)

जब जब वैदिक संस्कृति के ऊपर कुठाराघात होता है कोई न कोई महापुरुष उसके रक्षा के लिए आ जाते है। मनु महाराज ने स्मृति देकर लोगों को सुकर्म के तरफ ले जाने का अच्छा रास्ता निकाला ठीक उसी तरह स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वारा जो दिव्य ज्ञान विश्व को निष्पक्ष भाव से प्रदान किया सारी दुनिया उनकी ऋणी रहेगी।

नेपाल मे भी वही पुस्तक का एक पन्ना जो जादू का काम किया उसी से चार रत्न निकले। नेपाल के अमर शहीद श्री शुक्रराज शास्त्री के पिता श्री माधवराज जोशी एक बार पोखरा किसी वैद्य के पास गये। वही पर सत्यार्थ प्रकाश का फटा पुराना एक पन्ना प्राप्त हुआ। जिसको पढ़ने के बाद श्री माधव राव जोशी, वैद्यजी से पूछा कि मैं तो आपके पास अपने मर्ज का दवा लेने आया था लेकिन आते ही मर्ज ठीक हो गया। अब बीमारी भी बदल गयी। इस बिमारी का दवा इस पन्ना का पूरी पुस्तक है अगर ये पुस्तक न मिलेगी तो मैं आपके यहा ही मर जाउ गा वैद्यजी ने कहा "अरे इस पुस्तक पर तो सरकार ने पाबन्दी लगा दी है। यह पुस्तक तुम पढ़ोगे तो मुझे भी जेल के अन्दर करवा दोगे। पुस्तक का मरिज श्री माधवराज जोशी वहा से भागे भागे काठमाण्डो आए। वही पर उन्होंने वह पुस्तक प्राप्त की और पुस्तक को पढ़कर अपने सुपुत्र श्रीशुक्रराजकोशास्त्री बनाए। श्री शुक्रराजजीगुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर एक हाथ मे गीता और एक हाथ मे सत्याथ प्रकाश लेकर काठमाण्डो गए। उन्होने वेद का प्रचार करना शुरू किया। उस समय नेपाल मे राणा शासन था। राणा ने इन्हे कैदकर लिया और कहा कि वेद और सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार यहा (नेपाल मे) नहीं होना चाहिए। इनके साथ तीन और सहयोगी श्री गंगालाल, श्री दशरथचन्द्र और श्री धर्मभक्त ने समर्थन किया। इन लोगो को भी राणाओं ने जेल मे बन्द कर दिया। जेल मे भी शास्त्रीजी सन्ध्या उपासना हवन किया करते थे। अपने साथ वेद सत्यार्थ प्रकाश और गीता को भी साथ जेल ले गये थे। राणा सरकार ने कहा कि इन पुस्तको को पढ़ना छोड़दो और जो कहो सो मजूर है। इस पर शुक्रराज जी ने जवाब दिया कि "मरने के बाद ही ये सब पुस्तके मुझ से अलग हो सकते है। राणाओ ने बहुत प्रलोभन दिया लेकिन चारो मे किसी ने राणाओ की बाते को नहीं माना। अन्त मे चारों को प्राण दण्ड देने का फैसला राणाओ ने किया। अन्तिम बार उन लोगों से कहा कि अब आप लोग ये तय करें जिन्दगी चाहिए या पुस्तक ? एक स्वर से तीनो ने कहा श्री शुक्रराज जी जो कहेगे वही हमे मन्जूर है। शास्त्री जी ने कहा मरने के बाद ही मै वैदिक धर्म का प्रचार और विश्वास छोड़ सकता हु। तीनों को अपनी अपनी इच्छा के अनुसार मौत के मुह मे डाल दिया गया। किसने ओउम् का जप करते हुए किसी ने गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए अपना प्राण त्याग दिया। श्री शुक्रराज जी ने कहा कि मरने के पहले मुझे दो घण्टा का समय चाहिए। ये बागमती के किनारे गये और वही पर स्नान सन्ध्या हवन यज्ञ किए, सत्यार्थ प्रकाश और गीता का पाठ किए और फासी के फन्दे को गले मे लगाने से पहले एक बार गायत्री मन्त्र का जाप किए और ओउम् का जाप करते हुए फासी का डोरी अपने गले में लगाकर भगवान तेरी इच्छा पूरी हो कहके अपनी दुनिया समाप्त किया। चारो तरफ से दर्शको और राणा सरकार की फौज इस दृश्य को देख रही थी। वातावरण तो शान्त था उसी वक्त ८० वर्षिय बुढ़ा श्री शुक्रराज जी के पिता श्री माधवराज जोशी लट्ठी के सहारे वहीं पहुंचे और अपने पुत्र की शव को स्पर्श किये उनकी आंखोसे आसू की धारा बह रही थी। उन्होंने कहा कि—ये लोगो मे इस लिए नहीं रो रहा हू की मेरा पुत्र मर गया बल्कि इस लिए रो रहा हु की मैं बुढ़ा हो चला सन्तान पैदा करने की शक्ति समाप्त हो गयी। अगर जवानी रहती तो एक और पुत्र पैदा करता वह भी देश धर्म, जाती के उत्थान के लिऐ इसी घाट पर यज्ञ करता, वेद मन्त्रो का उच्चारण करता, सत्यार्थ प्रकाश का पाठ करता और प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो कहके फासी पर लटकता तो बडी खुशी होती। लेकिन अब मै ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मै बुढ़ा हु। यह कहकर वे बेहोश होकर गिर पड़े। लोगों ने उन्हे सम्भाला। श्री शुक्रराज शास्त्री का जहा अन्तिम सत्कार हुआ उसका नाम आज भी आर्य घाट है। ये रहा सत्यार्थ प्रकाश का जादू। धन्य हो ऋषि तूने ऐसी पुस्तक प्रदान किया। जिससे हिन्दू जाति आपकाआजीवन ऋणि रहेगा। ओउम शान्ति

आज नवम् बलिदान-दिवस पर—

गुरुकुल सिरसागंज (मैनपुरी) के सर्वस्व तथा अमर बलिदानी

महात्मा देव स्वामीजी को श्रद्धांजलि

(रच०—कुं० लाखनसिंह 'सौमित्र' आर्यसमाज, मैनपुरी)

गुरुकुल को देकर प्राण-दान नर-कुल को धन्य महान् किया।
देवेन्द्र, 'देव स्वामी' महान्-ऋषि, पर जीवन बलिदान किया ॥

शैशव से रहकर रागहीन, वैराग्य आग मे ज्ञान जगा,
ऋषि-आदर्शों के अनुरागी तपसी त्यागी का ध्यान जगा।
तपते-तपते तपसी जीवन दिया, विवेक निष्णात हुआ।
जागते-जागते ही जग को अज्ञात निशा मे प्रात हुआ।

गुरु 'ब्रह्मदत्त' के शिष्य बने व्याकरण-भानु का तेज लिये,
गुरु 'ब्रह्मानन्द' शरण मे आ, दर्शन-साहित्य सहेज लिये।
आजन्म ब्रह्मचारी रहकर, जग प्रेय माग को त्याग दिया,
जन मङ्गल का पावन व्रत ले श्रुति-श्रेय माग का राग लिया ॥

ऋषि दयानन्द के दिव्य स्वप्न, अनवरत जगाये अन्तर मे,
अज्ञान, अविद्या-तम हरकर, आलोक रश्मि भर घर-घर मे।
ऋषि शिक्षा के अनुरूप आर्ष, शुचि आर्ष ज्ञान के दानी बन,
जीवन का तिल-तिल होम दिया ऋषि परम्परा के मानी बन ॥

तप, स्वाध्याय, निष्काम-दान ही जीवन के आदर्श रहे,
आर्यों का गौरव शिखर सदा, धरती का भारतवर्ष रहे।
तुम इसी लक्ष्य की वेदी पर जीवन का कण-कण चढ़ा गये,
'गुरुकुल', 'गौं', 'ज्ञान' महत्ता को निज आचरणों से बढ़ा गये ॥

तप, त्याग तुम्हारा उदाहरण 'गुरुकुल' साक्षात् गवाही हैं।
पद-चिन्ह पड़े रह गये यहा आगे जा पहुचा राही है।
बलिदानो से सीचे बिरवे, इक दिन निश्चय हरियायेंगे।
जीवन के जलधर बरसेंगे, अमृत के बादल छायेंगे ॥

धर्म शिक्षा पुनश्चर्या शिविर नागबनी (जम्मू) में सम्पन्न

आर्य विद्या सभा डी० ए० वी० कालेज प्रबंध कर्त्री समिति, नई दिल्ली की ओर से महाराजा हरि सिंह एग्रीकल्चर कालिजियेट स्कूल नागबनी(जम्मू) मे ४ से ६ जुलाई तक धर्म शिक्षा पुनश्चर्या शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे दिल्ली, हरियाना, हिमाचल प्रदेश एव पजाब प्रातो के डी० ए० वी० स्कूलो के धर्म शिक्षको ने भाग लिया।

रामनाथ सहगल

आभार-प्रदर्शन

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी की भतीजी का निधन होने पर जिन संस्थाओं, आर्य समाजों और व्यक्तियों ने सहानुभूति प्रकट किया और शोक प्रस्ताव पारित किये प्रधान जी उनके प्रति साभार प्रकट करते हुए अनुगृहीत हैं प्रयास किया गया है सबको व्यक्तिगत आभार पत्र भेजने का फिर भी जिनको प्राप्त न हो सका हो उन्हें यह पंक्तियां ही आभार पत्र हैं-सम्पादक

-श्री प्रियव्रत शास्त्री सरधना मेरठ, श्री महेन्द्र प्रकाश कुलश्रेष्ठ प्रधानाचार्य दयानन्द सरस्वती साधना मन्दिर जाजूमई (मैनपुरी), मन्त्राणी स्त्री आर्यसमाज बुढानागेट मेरठ शहर, मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज साकेत मेरठ, मन्त्राणी महिला आर्यसमाज जवाहरनगर लाल-कुर्ती मेरठ, प्रधानाचार्या आर्य कन्या इण्टर कालेज स्वामी पाड़ा मेरठ, मन्त्री आर्यसमाज ककड़ खेड़ा मेरठ, मन्त्री आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ, मन्त्री आर्यसमाज साकेत मेरठ, मन्त्री आर्यसमाज शास्त्रीनगर मेरठ, मन्त्री आर्यसमाज बापरनगर मेरठ, मन्त्री आर्यसमाज जाजूमई (मैनपुरी) सुश्री इन्दिरा जी पूर्व प्रधाना स्त्री आर्यसमाज बापरनगर मेरठ।

अल्मोड़ा में आर्यवीर दल की स्थापना

-श्री वीरेन्द्रकुमार विद्यावाचस्पति, उप सचालक आर्य वीर दल उ० प्र० (सीतापुर) द्वारा दिनांक २ जुलाई ८६ को कुमाऊ मण्डल हेतु अल्मोड़ा मे आर्य वीर दल की स्थापना की गई, श्री वीरेन्द्रकुमार जी ने श्री सुरेश चन्द्र सुयाल को आर्य वीर दल तथा जिला सचालक नियुक्त किया। श्री सुयाल जी नगर समिति का गठन स्वय करेंगे।

-सम्वाददाता

उत्सव

आर्यसमाज अमरोहा (मुरादाबाद) मे वेद प्रचार सप्ताह दिनांक २४ से २७ अगस्त १९८६ के मध्य हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होगा। तथा समाज का वार्षिकोत्सव दिनांक २६ से २८ अक्टूबर ८६ के मध्य सम्पन्न होगा। -मन्त्री

अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज सदर बाजार झांसी द्वारा दिनांक ६ जुलाई ८६ को सेवा-निवृत्त हुए आर्यसमाज के वरिष्ठ समाज सेवी-लाला मालिकचन्द गुलाटी, ठेकेदार, डा० इन्द्रसेन गुलाटी, श्री टेकचन्द पुरी, भूतपूर्व एकाउन्टेन्ट जनरल, भारत सरकार, श्री गनपतराम भयाना, डिप्टी पोस्ट मास्टर, झांसी एवं श्री लक्ष्मण देव झाम्ब, सीनियर कन्डक्टर, मध्य रेल, का अभिनन्दन समारोह रविवार, ६ जुलाई १९८६ को सायं ४ से ७ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर, सदर बाजार, झांसी मे आयोजित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री आचार्य सुख स्वरूप, भूतपूर्व प्राचार्य-बुन्देलखण्ड कालेज झांसी थे। -मन्त्री

निधन

-श्री देवनसिंह जी अधिष्ठाता आर्य वीर दल उ० प्र० ने श्री यज्ञदेव वानप्रस्थी आर्यसमाज हासीपुर, मीरजापुर के पौत्र के आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए दिवगत के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है, प्रभु दिवगत को शांति तथा दुखी परिवारजनों को असीम धैर्य प्रदान करे। -सम्वाददाता

-आर्यसमाज बिरैयानाला (प्रयाग) के प्रधान श्री शिवनारायण मौर्य के पूज्य पिता श्री देवी प्रसाद जी का निधन दिनांक १८ जून ८६ को हो गया। समाज के सदस्यों ने शोक सभा करके दिवगत के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। -मन्त्री

-आर्यसमाज ताड़ीखेत (अल्मोड़ा) मे दिनांक ११ जुलाई ८६ को श्री जगजीवनराम जी की दिवगत आत्मा को शांति हेतु शांति यज्ञ प० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। -मन्त्री

-दुःखद समाचार है कि आर्यसमाज अडींग (मथुरा) के प्रधान श्री बद्रीप्रसाद आर्य का निधन हो गया। दिनांक ६ जुलाई ८६ को समाज मन्दिर मे शोक सभा का आयोजन हुआ जिसमे दिवगत के शांति तथा परिवारजनों के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई। -मन्त्री

-आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भू० पू० प्रचारक उसफार [मथुरा] निवासी श्री लालचन्दजी आर्य के निधन पर आर्यसमाज अडींग मथुरा के सदस्यों ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की शांति एवं दुःखी परिवार जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की। -मन्त्री

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५ जुलाई १९८६ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है।

५११, ६३१, ६७६, ७४८, ९७६, १३४८, १६५६, २४१७, २९५४, ४४७८, ४५३७, ४९७३, ५२७७, ५६३२, ६४६२, ६४७६, ६९९४, ६९९८, ८२९८, ८६२३, ८९७३, ८९७५, ९१९२, ९२०१, १०१८३, १०१८५, ११६५०, ११६५२, ११६५४, ११९५५, ११९५७, ११९५८, ११९५९, १२२७९, १२३०८, १२३११, १२६९९, १२९३८, १२९४३, १२९४४, १३१३०, १३१३३, १३१३६, १३१३९, १३१४०, १३१४३, १३१४६, १३१४७, १३१४८, १३१४९, १३१५०, १३१५१, १३१५२, १३१७०, १३१७३, १३४८८, १३४८९, १३४९०, १३४९१, १३४९२, १३४९३, १३४९४, १३४९५, १३४९६, १३४९७, १३४९८, १३४९९, १३५००, १३५०३, १३५०४, १३५०५, १३५०६, १३५०७, १३५०८, १३५०९, १३५१०, १३५११, १३५१३, १३५१४।

विनीत-

-व्यवस्थापक 'आर्यमित्र'

सम्पादक के नाम पत्र

"आर्य जगत् की समस्या एवं समाधान"

चिरकाल से यह अनुभव किया जा रहा था, कि वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले–सन्यासियो वान प्रस्थियो तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को शारीरिक शक्ति के साथ प्रचार करते हुए भोजन आछादन की सुविधा जीवनयापन हेतु प्राप्त होती रहती है। किन्तु जब शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाने पर चलने फिरने मे असमर्थ हो जाने से उनकी प्रचार यात्रा मन्द या समाप्त प्राय हो जाती है, तो आज जन उनकी सुध नहीं लेते हैं। समाज द्वारा ध्यान न देने पर उनके पारिवारिक जन उन्हें घर ले जाकर उनकी चिकित्सा तथा अन्य व्यवस्था करते हैं। क्या यह आर्य जगत् के लिए कलक नही है?

मै ऐसे कई आश्रमो के स्वामियो (सस्थाओ) और प्रबन्धको से पत्राचार एव मौखिक वार्तालाप से इस निष्कष पर पहुचा हू कि ऐसी सस्था न कहीं है और न होगी।

लगता है, आज तक किसी प्रान्तीय या शिरोमणि (सावदशिक) आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस पर विचार ही नहीं किया।

यद्यपि इस व्यवस्था योजना से अधिकतर आय जन सहमत तो है, तथापि इसे क्रियात्मक रूप देने का साहस नहीं करते हैं। इसीलिए मैं आर्य जगत् का ध्यान इस ओर आकृष्ट करते हुए यह घोषणा करता हू कि–

"वैदिक धम का प्रचार करने वाले–समथ तथा असमर्थ (प्रचार कार्य से थके हारे वृद्ध तथा रोगी) सन्यासी, वानप्रस्थी एव नैष्ठिक ब्रह्मचारी इतस्तत प्रचार यात्रा से निवृत्त होकर "वैदिक यति आश्रम" (केन्द्र) मे आवास, भोजन तथा चिकित्सा की नि शुल्क सेवा–सुविधा प्राप्त कर सकेंगे।"

उपरि लिखित लक्षण युक्त यति गण पत्राचार या साक्षात्कार से सपक स्थापित करके अपनी समस्या का पूण समाधान लेने का प्रयास करें।

स्वामी जीवानन्द जी सरस्वती
पता–वैदिक भक्ति साधन आश्रम,
आर्य नगर, रोहतक

ईसाई महिला की शुद्धि

–आर्य समाज हाँसीपुर [मिरजापुर) के सदस्य श्री तेजसिंह के अथक सहयोग से मिस इब्राहम ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया तथा उनका विवाह सस्कार पूण वैदिक रीत्यानुसार चौबेपुर निवासी श्री मगरू प्रसाद द्विवेदी के साथ सम्पन्न हुआ।

–जैमिनी सरकस के प्रमुख कलाकार श्री चाँद मोहम्मद, गोपाल गजी बिहार निवासी ने वैदिक धर्म ग्रहण किया तत्पश्चात् उनका विवाह सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार वहीं की कलाकार प्रेमिका के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमे आर्य समाज स्वरूप नगर कानपुर का विशेष सहयोग रहा–

सतीश कुमार दत्त

हृदय रोगियो के लिए लहसुन अमृत है

सदियो से ग्रामीण लोग लहसुन को एक बहु-उपयोगी घरेलू दवा मानकर उसका प्रयोग अनेक रोगो मे दवाई के तौर पर करते आ रहे हैं। अब अमरीकन हार्ट एसोसियेशन तथा नेशनल इन्सीटीयुट ऑफ हेल्थ, अमरीका ने लहसुन पर जो वैज्ञानिक प्रयोग किये हैं, उनसे सिद्ध हो गया है कि लहसुनमे मौजूद 'एलिसिन' नामक तत्व का सेवन उन रोगियो के लिए अत्यन्त हितकारी हे, जो हृदय-रोग, दौरा और धमनियो की कठोरता जैसे गम्भीर रोगो से पीडित है।

हमारे देश मे भी लहसुन पर वैज्ञानिक शोध हो चुकी हे। केवल विश्वविद्यालय के दो शोध कर्ताओ डॉक्टर के० टी० अगस्ती और पी० टी० मैथ्यू ने बीस वर्ष पहले ही अपने वैज्ञानिक प्रयोगो के आधार सिद्ध कर दिया था कि यदि लहसुन मे मौजूद 'एलिसिन' तत्व को उससे पृथक करके दो महीनो तक लगातार लिया जाये, तो वह शरीर मे मोटापे की मात्रा को काफी कम कर सकता हे।

दो प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञो-डॉक्टर पॉल आनन्द ए० जे० कोचर ने लहसुन पर प्रयोग करके यह सिद्धकर दिखाया हैं कि उसका नियमित सेवन शरीर मे कोलेस्ट्रॉल [जिसके कारण मुख्यत हृदय-रोग होता है।] की मात्रा को काफी कम कर देता हे डॉ० अरुण बोरडिया भी अपने प्रयोग से इन्हीं निष्कर्षों पर पहुचे हैं।

हृदय-रोगो के अलावा, घावो ओर कीडो द्वारा काटे गये स्थानो पर लगाये जाने पर भी लहसुन अपना कमाल दिखाता है। 'हैबर्ग इन्स्टीयूट फार फार्मास्यूटिकल्स बायोलाजी' के प्रोफेसर एवाल्ड स्पेयर ने प्रयोगो से यह मालूम किया कि 'एलिसिन' नामक तत्व पेनीसीलीन से भी अधिक प्रभावशाली हैं, और हजार मे एक भाग भी लहसुन का रस हो, तो बैक्टीरिया तथा अन्य रोगाणु फौरन मर जाते हैं।

दवा-निर्माताओ को चाहिये कि वे लहसुन की ऐसी दवाए-द्रव या गोलियो के रूप मे–तैयार करें, जिन्हे मामूली आदमी आसानी से ले सकें।

बिहारीलाल भेलाराम
प्रन्यासी
४ साई बाजार शॉपिंग सेन्टर सान्ताक्रूज
पश्चिम बम्बई ४०००५४

उपदेशक बन्धुओ से निवेदन

आर्य समाज के अधिकारियो के प्राय पत्र आते है कि अमुक-अमुक उपदेशक महोदय मार्ग व्यय प्राप्त करके भी नहीं आए और आग्रह किया जाता है कि ऐसे उपदेशको का नाम प्रकाशित किया जाय। यह अशोभनीय लगता है। अत उपदेशक महोदयो एव भजनीक बन्धुओ से साग्रह निवेदन है कि किसी समाज के लिए कार्यक्रम स्वीकार करके और मार्ग व्यय प्राप्त करके अवश्य उपस्थित हो तथा यदि किसी कारण वश न जा सकें तो आर्य समाज अधिकारी को अवश्य सूचित कर दें। गरिमा और शालीनता आवश्यक है।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज दर्शन पुरवा कानपुर
प्रधान श्री प्रताप सिंह
मन्त्री श्री सन्तराम सिंह
कोषा० श्री करतार चन्द सचदेवा

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल (मेरठ)
प्रधान श्री मनोहर लाल जी
मन्त्री श्री इन्द्रराज जी
कोषा० श्री माधव प्रसाद जी गुप्त

'आर्य मित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४५७ ४५६६३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू एन पी ७८
भा० श्रावण ५
श्रावण कृष्ण ५
रविवार, २७ जुलाई १९८६ ई०

ओ३म् आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये ... ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ ...
श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० न० १२४१/५०

वर्ष ८९] सा० श्रावण १९, श्रावण शुक्ल ५ रविवार सम्वत २०४३ वि० ता० १० अगस्त १९८६ [अङ्क ३२

प्रार्थना

ओ अद्या देवा ऽ उदिता सूर्यस्य निर॒ हस पिपृता निरवद्यात् । तन्ना मित्रो वरुणो मामहन्तामदिति सिन्धु पृथिवी ऽ उत द्यौ ॥

—यजु ३३–४२

भावार्थ–आज प्रतिदिन सूर्य की द्योतमान किरणें उदित होती हैं । अन्धकार से तथा पाप से रक्षा करती हैं । अत हमारे लिए दिनरात, अन्तरिक्ष, सागर, पृथिवी और द्यु लोक महिमावाले हो ।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

सम्पादक–

आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
वदेश में	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

पंजाब की रक्षा देश रक्षा

पन्द्रह अगस्त को समस्त भारतीय इसका संकल्प लें

भारत की समस्त आर्यसमाजें स्वतन्त्रता दिवस के दिन राष्ट्र रक्षा का सँकल्प ले रही है

स्वतन्त्रता दिवस राष्ट्रीय पर्व है और इस राष्ट्रीय पर्व पर वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए राष्ट्र रक्षा का सकल्प प्रत्येक भारतीय को अनिवार्य रूप से ग्रहण करना चाहिये । वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए तथा पडोसी देश पाकिस्तान, चीन और बागला देश आदि के जो छद्म व्यवहार हो रहे है उसने आज भारत के नागरिक को जागृत कर दिया है और राष्ट्र रक्षा सबका सामूहिक दायित्व है ।

आर्यसमाजें व्यापक रूप से सारे देश मे इसी पावन दिवस को राष्ट्र बचाओ, पजाब बचाओ के रूप मे मना रही है सार्वदेशिक सभा तथा प्रदेशीय सभाओ ने तदर्थ आदेश प्रेषित कर दिये हैं । प्रत्येक आर्यसमाज अपने यहाँ सभा का आयोजन करे "पजाब बचाओ तथा राष्ट्र बचाओ" सकल्प का आह्वान करे साथही यह भी भारत सरकार से माग की जाय कि गुजरात से लेकर कश्मीर तक भारत पाकिस्तान की जो सीमा रेखा है उसके ५ किलो मीटर की चौडाई का क्षेत्र सेना के हवाले किया जाय क्योंकि पजाब मे छद्म रूप से पाकिस्तानियो का प्रवेश सिख युवको को गुमराह करके उन्हे सामरिक शिक्षा देकर भारत मे आतङ्क और हत्याओं का जो वातावरण बनाया जाता है वह सर्व विदित है । जम्मू कश्मीर मे पाकिस्तानियो का प्रवेश एक दैनिक कार्यक्रम है अत सीमा सुरक्षा के प्रश्न पर किसी भी प्रकार की ढील देना अब राष्ट्र के प्रति एक अपराध माना जायेगा । स्वामी आनन्द बोध तथा अन्य आर्यसमाज के नेताओ ने इस सम्बन्ध मे अपनी अपील प्रकाशित की है । उत्तर प्रदेश की आर्य समाजो के लिए भी सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी और सभा मन्त्री श्री प० मनमोहन जी तिवारी की अपीलें प्रकाशित हो चुकी हैं । प्रजातन्त्र मे प्रत्येक नागरिक के ऊपर देश की हित रक्षा का भार है अत राष्ट्र की रक्षा का दायित्व समझते हुए राष्ट्र का नागरिक जनता के द्वारा निर्मित सरकार को जनादेश दे सकता है ।

आर्यसमाज जन सेवा के क्षेत्र मे विगत सौ वर्षों से अग्रणीय है अत इस अवसर पर भी आर्यसमाज ने पजाब से आए हुए बन्धुओ की सेवा और सहायता का कार्य प्रारम्भ किया है तदर्थ आयसमाजो से सहायता के सहयोग की अपील की जाती है ।

सम्प्रति देश मे विघटनकारी प्रवृत्तिया साम्प्रदायिकता के रूप मे अपना सर उठा रही हैं और यह प्रयास किया जा रहा है कि स्थान-स्थान पर जातिगत उपद्रव हो तथा जनमानस मे क्षोभ और भय उत्पन्न हो । इन प्रवृत्तियों से साम्प्रदायिकता के रग द्वेष से प्रत्येक भारतीय को सावधान रहना आवश्यक है । अत आर्य जन इस दिशा मे भी प्रयास करें एव साम्प्रदायिकता का उन्मूलन किया जाय ।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आर्य्यमित्र



सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार १० अगस्त १९८६ दयानन्दाब्द १६२

सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

१५ अगस्त के अवसर पर एक विचारणीय प्रश्न—

"राष्ट्रहित" आत्महित की अपेक्षा श्रेयस्कर है-

"पन्द्रह अगस्त" भारत के राष्ट्रीय जीवन मे परम पुनीत तिथि है जब आज से ३९ वष पूर्व भारतीयो ने आत्म बलिदान देकर अपने देश को ब्रिटिश शासन सत्ता से मुक्त कराया और इस महान भारत भूमि मे सर्व सत्ता सम्पन्न गणतन्त्र की स्थापना की। भारत मे पहले मुसलमान आये यहा राजनीति की सत्ता तक पहुचे परन्तु उनसे 'प्रताप' और 'शिवा' सरीखे राजपूतो का सघर्ष होता रहा। यद्यपि सारे देश मे वे पूर्णरूप से राजनैतिक सत्ता तो नहीं प्राप्त कर सके परन्तु धीरे-धीरे इसी देश मे बस गये और अपना निशान अलग बनाये रहे। इसी बीच अग्रेजी शासक देश मे आये जिन्हें कुछ देश भक्ति विहीन भारतीयो का सहयोग मिला और वह सारे देश मे फैल गये। सन् अठारह सौ साठमे साम्राज्ञी विक्टोरिया की घोषणा के साथ भारत मे अग्रेजी शासन स्थापित हुआ परन्तु उसकी जडें जम नहीं पाई थी कि, आत्मचेत्ता भारत के सपूतो मे उसे उखाड फेकने के मसूबे भी बनने लगे और इसी बीच देश का एक महान् व्यक्ति जो युवावस्था मे एक योगी के रूप मे अग्रेजी शासन के विद्रोहों के बीज जमते हुए देख रहा था से रहा न गया और सन् अठारह सौ तिहत्तर और पचहत्तर के मध्य उस महान् आर्य सन्यासी ने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से घोषणा कर दी कि विदेशी शासन से देशी शासन अच्छा है। इतना ही नहीं आय समाज का ही विकसित रूप स्वतन्त्रता आन्दोलन में देखा गया तथा छियासी वष अग्रेजी शासन के पूर्ण भी नहीं हुए थे कि भारत स्वतन्त्र हो गया अन्य सामाजिक सुधारो तथा नैतिक जीवन की चेतनाके साथ भारतीय स्वतन्त्रता का वरण आर्य समाज की सबसे बडी उपलब्धि थी।

स्वतन्त्रता के बाद राज्य का सुख आर्य समाज ने उठाने के लिये दूसरों को आमन्त्रित किया। काग्रेस सत्ता पर आई यद्यपि आज तीसरी पीढ़ी है लेकिन काग्रेस सत्ता को दूसरे राजनैतिक दल भी उभरे विकसे कुछ मुर्झाये कुछ हमारे बीच हरे भरे हैं। स्वतन्त्रता दिवस के पावन पर्व पर हमे अपनी सफलताओ और असफलताओ का लेखाजोखा करना चाहिए और निष्पक्ष होकर सोचना चाहिये कि आज देश मे जो राजनैतिक वातावरण मे विषैले धुयें उठ रहे हैं, स्वार्थ के सर्प फुँफकार रहे हैं और राजनैतिक दल जो उलूकीय चाल चल रहे हैं यह सब क्यो ? इसके परिणाम क्या होगे ? तथा जिस आय राज्य की कल्पना और राम राज्य की कल्पना महर्षि दयानन्द सरस्वती और मोहनदास कर्मचन्द गाधी ने की थी वह कहाँ तक सफल है, और विफल है तो क्यो ? विचार से प्रतीत होता है कि आज दयानन्द के आदर्श, गांधी के उपदेश राजनैतिक दलके नेताओंके मनसे उतर गये हैं। आज स्वार्थ की सिद्धि मे ही दल के लाभ की बातें सोची जाती हैं और राष्ट्रके स्थान पर व्यक्ति चिन्ता और आत्म चिन्ता अधिक है। लोकतन्त्र का नाम केवल खाना पूर्ति के लिए लिया जाता है और राजनैतिक दलों की जडें जनता मे न होकर ऊपरके नेताओ के हाथो मे और नेताओ का केवल एक उद्देश्य है कि शासन सत्ता पर कैसे पहुचे और जो पहुच गये हैं उनका केवल एक उद्देश्य है कि—जिस कुर्सी पर हम बैठे हैं वह हमारे प्राण क्या मृत्यु के एक वारिसको तक हमारे अधिकार मे बनी रहे। देश की हर समस्यायें राष्ट्र के हर प्रश्न इसी दृष्टिकोण से देखें जाते हैं सुने जाते है विचार किए जाते हैं और दल के व्यक्तियो का उपयोग जनता के हित के लिए नहीं नेताके हित के लिए किया जाता है। उसके परिणाम सामनें है। यह घृणित राजनैतिक चाल नेताओ ने अग्रेजो से सीखी है। जैसे अग्रेजो ने इस देश मे मुसलमानो को हिन्दुओ से, हिन्दुओ को हरिजनो से, हरिजनो को जनजातियो से आपस मे वैमनस्य कराया अपने हित के लिए और वही आज राजनैतिक दल कर रहे हैं। हमे इस दुर्गति को त्यागना होगा।

सन् १९७७ से काग्रेस पराभूत हुई और उसने फिर से सत्ता मे आने के लिए प्रयास किया उदाहरण स्पष्ट है उस समय भिण्डरवाला एक साधारण व्यक्ति था नाम लेना उचित न होगा आज के काग्रेस के शीर्षस्थ नेताओ ने भिण्डरवाला को ऊपर ऊछाला। वह आतकवादी बना और पजाव मे काग्रेस पुन सत्ता मे वापस आई। भिण्डर वाले का उपयोग आत्म हित के लिए किया गया लेकिन परिणाम सब देख रहे हैं। पजाब की स्थित कितनी गम्भीर है किसी से छिपी नहीं है और आज भी वहा भिण्डर वाले की जय बोली जा रही राजीव और बरनाला एक दूसरे का मुख देख रहे हैं। सत्य को देखते हुए आत्महित के लिए यह एक अपराध था।

पश्चिमी बगाल मे ज्योतिवसु मुख्य मत्री हैं वामपन्थी नेता है कार्य शून्य पर है। आत्म हित कैसे सिद्ध हो। दार्जलिग मे जो गोरखा क्षेत्र की माग उठ रही है उसका भी सचालक सुभाष वे सिह साधारण व्यक्ति हैं परन्तु कुछ काग्रेस (इ) के नेता उसे इसलिए ऊपर ऊछालने का प्रयास कर रहे हैं कि ज्योतिवसु की सरकार सकट मे पडे। यह अशोभनीय है। काग्रेस (इ) के विशिष्ट मन्त्री गण जब उन स्थानों पर जाते हैं जहा विरोधी दलो की सरकारें हैं तो वहा कीचड उछाला जाता है जैसे श्री हसराज भारद्वाज ने बगलौर मे तथा श्री के० के० तिवारी ने आध्रमे किया। यह स्वस्थ परम्परायें नहीं हैं। भारत एक महान् राष्ट्र है हम सब इस राष्ट्र के सम्पोषक हैं पद पर रहे या न रहे परन्तु राष्ट्रहित आत्महित से सदैव श्रेष्ठ श्रेयस्कर है। अत राष्ट्र के नेताओं एव प्रत्येक व्यक्तिको १५ अगस्त को अपने मनके इस कलमष को धो देना चाहिये यही 'आर्यमित्र' का सन्देश है और 'आर्यमित्र' यही कामना आर्य समाज के क्षेत्र मे भी चाहता है जहा आत्म हित और पद हित के स्थान पर समाज सगठन और राष्ट्र का हित ही श्रेयस्कर है तभी महर्षि दयानन्द के स्वप्न और गाधी के श्रम सुफलित होंगे।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

कुछ नये रहस्य : इन्दिरा जी की हत्या के चक्रव्यूह के

--अश्विनी मिश्रा (स्थानीय सम्पादक, पजाब केसरी, दिल्ली)--

स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या बडे ही रहस्यमय ढग से हुई, जब उनकी कोठी पर तैनात उनके अपने ही दो सिख सुरक्षा कर्मियो बेअन्तसिह और सतवन्तसिह ने उन्हे अपनी गोलियो का निशाना बना लिया। बाद मे श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की गुत्थी सुलझाने और हत्या की साजिश मे शामिल अन्य व्यक्तियो का पता लगाने के एक आयोग की नियुक्त भी की गई। देश की जनता को उम्मीद थी कि एक न एक दिन इन्दिरा गाधी हत्याकाड के तमाम रहस्यमय पहलुओ की जानकारी उसे जरूर मिलेगी लेकिन सरकार ने एक अध्यादेश जारी करके इस उम्मीद पर पानी फेर दिया है। बहरहाल, गुप्त सूत्रो के मुताबिक इन्दिरा गाधी हत्याकांड की जाच के दौरान खुफिया एजेंसियो ने जो सबुत इकट्ठे किये हैं, उनसे साफ पता चलता है कि इन्दिराजी की हत्या की साजिश का पाकिस्तान को पहले से ही पता था। एक पत्रिका के मुताबिक पाकिस्तान के सदर जनरल जिया को तो इस योजना का श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या के एक हफ्ता पहले से ही सभी कुछ मालूम था। पाकिस्तान को खुफिया एजेंसियो ने हत्या की योजना के सम्बन्ध मे जनरल जिया को अक्तुबर १९८४ के आखिरी सप्ताह मे ही सारी जानकारी दे दी थी। हत्या के कई दिन पहले से ही पाकिस्तान के खुफिया अधिकारियो को यहा तक मालूम था कि श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या किस जगह पर और कितने बजे होगी। पाकिस्तानी खुफिया अधिकारियो के पास श्रीमती इन्दिरा गाधी की कोठी का नक्शा भी मौजूद था, जिसमे स्पष्ट तौर पर उस जगह पर निशान लगाया गया था जिस जगह पर बेअन्त और सतवन्त ने श्रीमती इन्दिरा गाधी पर गोलिया बरसानी थीं।

इस बात मे अब शक की कोई गुजाइश नहीं रह गई है कि श्रीमती गाधी की हत्या की साजिश का सूत्रधार अतिदरपालसिह है जो इस समय पाकिस्तान का मेहमान है। पिछले दिनो कलकत्ता से छपने वाली एक पत्रिका 'रविवार' ने श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या और इस सम्बन्ध मे पाकिस्तान की सलिप्तता पर एक लम्बी रिपोर्ट प्रकाशित की है। इस रिपोर्ट को लिखने वाले रविवार के सवाददाता श्री स्वामी त्रिवेदी ने जो कुछ जानकारी इस सम्बन्ध मे प्राप्त हुई है, वह इस बात का सबूत है कि इन्दिरा गाधी की हत्या का षड्यन्त्र अतिदरपाल ने ही रचा था और इसकी पूरी जानकारी उसने पाक खुफिया अधिकारियो को पहले ही दे दी थी। रविवार के सवाददाता अपनी इस रिपोर्ट मे लिखते हैं कि--

इन्दिरा गाधी की हत्या की गुत्थी अब सुलझती नजर आ रही है। यह हत्या महज धार्मिक उन्माद का नतीजा नहीं थी, बल्कि यह एक सुनियोजित षड्यन्त्र के तहत हुई। इस षड्यन्त्र के रचे जाने मे पाकिस्तान का स्पष्ट हाथ तो था ही, कुछ अन्य विदेशी ताकतें भी श्रीमती गाधी को खत्म कराने पर तुली हुई थीं। इन्दिरा गाँधी हत्याकाड की जाच के दौरान खुफिया एजेंसियो को जो सबूत मिले हैं, उनसे इस बात की पुष्टि होती है।

इस षड्यन्त्र का मुख्य सूत्रधार है भोपाल का २१ वर्षीय सिखयुवक अतिदरपालसिह, जो इन दिनों पाकिस्तान सरकार का विशेष मेहमान है। गुप्तचर सूत्रो का यह मानना है कि इन्दिरा गाधी की हत्या का 'ब्लूप्रिंट' हादसे से पहले ही पाकिस्तान इटेलीजेंस ब्यूरो के हाथ पहुच चुका था। यह भी सम्भावना है कि इस 'ब्लूप्रिंट' की जानकारी अमरीकी गुप्तचर सस्था सी आई ए को भी रही हो।

स्वर्ण मन्दिर मे जब 'आपरेशन ब्लूस्टार' हुआ, उस दिन अतिदर पालसिह भोपाल मे ही था। वह प्रमुख अग्रेजी दैनिक 'हितवाद' के प्रेस अक्षीक्षक के पद पर तैनात था। 'आपरेशन ब्लूस्टार' को टेलीप्रिंटर पर आने वाली खबरो को पढकर वह बहुत बेचैन हो गया था। वह पूरे दिन टेलीप्रिंटर के सामने खडा रहा, उसका किसी अन्य काम मे मन नहीं लग रहा था। 'हितवाद' की मुद्रण शाखा के जानकार कर्मचारियो के अनुसार भोपाल मे बैठकर भी अतिदरपालसिह के पास उस क्षण स्वर्ण मन्दिर मे घटने वाली हर घटना की जानकारी थी। जानकार सूत्रो का कहना है कि उसके पास कोई सवेदनशील ट्रासमीटर था। स्वर्ण मन्दिर मे हुई इस सैनिक कारवाई के बाद कुछ ही दिन वह 'हितवाद' प्रेस आया। अचानक उसने १६ जून को इस्तीफा दे दिया। वह फिर किसी को नहीं दिखा।

४ जुलाई १९८४ को इण्डियन एयर लाइस की श्रीनगर से चण्डीगढ जा रही एयरबस को 'हाइजैक' पर आतङ्कवादी पाकिस्तान ले गये। जम्मू-काश्मीर के सिख छात्र सघ के महासचिव सरबजीतसिह ने पहले इसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ली, बाद मे उसके रेलवे कालोनी, जम्मू स्थित मकान की तलाशी लेने पर एक डायरी मिली, जिससे विमान अपहरणकाड के सिलसिले मे अतिदरपालसिह का हवाला मिला। कुछ अरसे बाद स्वय अतिदरपाल ने दिल्ली के अखबारो मे यह बयान जारी कर चौंका दिया कि इस विमान अपहरण काड मे उसका हाथ है। अचानक देश भर की खुफिया एजेंसिया सक्रिय हो गई। भोपाल के लोगो ने दातो तले उगली दबा ली। दरअसल भोपाल से गायब होने के इन्दिरा गाधी की हत्या तक अतिदरपाल और हमारे देश की गुप्तचर सस्थाओ के बीच 'तुम डाल-डाल, हम पात-पात' का खेल चलता रहा। जिस शहर से वह दो दिन पहले निकल जाता था, वहीं बाद मे हमारे सरकारी जासूस जाकर उसकी खोज करते थे।

ऐसा माना जाता है कि भोपाल छोडने के बाद अतिदरपालसिह कुछ दिन इदौर रुका और वहा से बतौर चन्दा काफी रकम इकट्ठी कर वह पजाब गया। पजाब के पटियाला, अमृतसर आदि शहरो से होता हुआ वह जम्मू पहुचा। यहीं पाकिस्तान के इटेलीजेंस ब्यूरो के लोगो से उसका सम्पर्क हुआ। विमान अपहरण काड के बाद वह यहा से चलता बना।

२१ जुलाई ८४ को अतिदर पाल सिह दिल्ली मे था। यहा उसने विदेशी प्रेस के लिए चौदह पृष्ठो की एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की, जिसमे 'आपरेशन ब्लूस्टार' और उसके बाद की स्थितिया बताई गई थीं। यह बयान काफी उत्तेजक था तथा उसमे स्वर्ण मन्दिर को सेना से मुक्ति दिलाने के लिए सिखो से बहा शहीदी जत्था भेजने की बात कही गई थी। १७ अगस्त को उसने पुन अखबारो के लिये विज्ञप्ति जारी की, जिसमे सेना के साये मे पजाब मे छात्रो के इम्तिहान कराये जाने की भर्त्सना की गई थी। २० अगस्त को प्रेस के लिये दिये गये बयान मे अतिदरपाल ने सुरक्षा सेनाओ द्वारा पजाब मे सिखो पर ढाये जा रहे जुल्म का खुलासा किया था। इस तरह वह 'आपरेशन ब्लूस्टार' मे सन्त भिंडरावाले और अखिल भारतीय सिख छात्र सघ के अध्यक्ष भाई अमरीकसिह के खात्मे से आतङ्कवादियो के टूटे मनोबल को सवारने का काम करता रहा। आश्चर्य यह है कि ये दोनो प्रेस विज्ञप्तिया अतिदर पालसिह ने कहा से जारी कीं, इसकी जानकारी गुप्तचर सस्थाओ को नहीं है। (क्रमश)

भगवान रजनीश के बाद महेश योगी

—इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

साधारण रजनीशजी पहले आचार्य रजनीश बने फिर भगवान रजनीश। और अब क्या है? यह सारा संसार जानता है। देशो से निकाले जाने पर वे कभी कही और कभी कही भटक रहे है। योग के नाम पर धोखा और भोग उनका जीवन दर्शन है। भारत मे रहकर अमरीका और योरुप की प्रशसा और यूरोप से निकाले जाने पर पुन भारत की प्रशसा उनकी देश भक्ति पर प्रश्न वाचक चिह्न लगाती है।

और अब योग के नाम पर श्रीयुत महेश योगी के शिष्यो ने २१ जुलाई को इन्दिरा गाधी स्टेडियम दिल्ली मे एक योग का प्रदर्शन किया बहुत बडे विज्ञापनो मे उन्होने आकाशगमन की घोषणा की। जनता इस यौगिक चमत्कार को बडी उत्सुकता से देखने के लिए भारी सख्या मे आई। परन्तु हजारो व्यक्तियो को उस समय बडा निराश होना पडा जब श्रीयुत महेशयोगी के शिष्य और शिष्यायें उछल कूद कर रह गये और हमारे बाहर खेलो मे भाग लेने वाले खिलाडियो जितनी उछल-कूद भी नहीं कर सके। आकाश गमन की तो बात ही क्या? योग के नाम पर जनता को धोखा देना और आध्यात्मिक शोषण करना क्या भारत के कानून के अन्तर्गत नहीं आता? जनता को ऐसे योगियो को ठुकरा देना चाहिये ताकि ससार की आस्था उस योग से न उठ जाए—जो कि वास्तव मे दुखो से छुटकारा दिलाकर मुक्ति दिलाने वाला है।

एक महान् व्यक्ति हम से बिदा हो गए

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा के महामन्त्री पूर्व सांसद एव आर्यसमाज के कर्मठ नेता श्रीयुत श्रीकरण शारदा जी २० जौलाई १९८६ को कलकत्ता मे अपने सुपुत्र के निवास स्थान पर हम लोगो से सदैव के लिए पृथक् हो गए।

हमने महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर मे उनकी कर्मठता को स्पष्ट देखा। उस शताब्दी की अभूतपूर्व सफलता का श्रेय अधिकाश उन्हीं को जाता है। वे देश भक्त शिरोमणि कुवर चादकरण शारदा जी के सुपुत्र थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने उनकी आकस्मिक मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट करते हुए उनकी मृत्यु को आर्यजगत् के लिए अपूर्णनीय क्षति बताया तथा उनकी दिवगतात्मा के लिए सद्गति की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। —सवाददाता

श्री नारायण देव शास्त्री का देहावसान

मेरठ जनपद की आर्य जनता को यह समाचार जानकर अत्यन्त दुख होगा कि प्रसिद्ध समाज सेवी, गोभक्त एव स्वतन्त्रता सेनानी श्री नारायणदेव जी शास्त्री का देहावसान गत ३१ जुलाई १९८६ को हो गया था। उनकी अनन्य सेवाओ को दृष्टि मे रखते हुए एक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन दि० १०-८-८६ रविवार को मेरठ मे उनके निवास स्थान ७३ बाउण्ड्री रोड (टेलीफोन एक्सचेंज के निकट) मेरठ मे साय ४-३० बजे किया गया है।

आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि अपने प्रिय नेता को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए अधिक से अधिक सख्या मे श्रद्धाजलि सभा मे उपस्थित हो।

इन्द्रराज
मन्त्री—जिला सभा मेरठ

—श्री आर्येन्द्रनाथ अग्निहोत्री आर्यसमाज किरतियापुर (हरदोई) की पुत्री कु० गार्गीदेवी का विद्यारम्भ सस्कार दिनाक ६ जुलाई १९८६ को श्री स्वामी अनन्त भिक्षु जी के पौरोहित्य मे पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। समाज को २१) रुपये का दान प्राप्त हुआ।

—भारतेन्दु नाथ

—आर्यसमाज फतेहपुर के तत्वावधान मे, जनपद के विभिन्न स्थानो, चुरियानी, शमियाना, सरकी, लच्छीरामपुर, भब्बापुर, ईटगाव, मोरपुर ऐलई, गाजीपुर, फुलवामऊ, कुरस्ती कला, काधी, विन्दकी, आदि मे दिनाक ६ जुलाई से २१ जुलाई १९८६ तक सभा भजनोपदेशक श्री शिवदेव बेधडक जी द्वारा व्यापक रूप से वैदिक प्रचार सम्पन्न हुआ। इस प्रचार कार्य मे समाज के मन्त्री श्री डा० हर्षवर्धन जी का प्रयास सराहनीय रहा। —सम्वाददाता

—आर्य समाज पलडी मेरठ के आर्य वीरो ने, दिनाक १३ से १६ जुलाई १९८६ तक ग्रामवासियो के साथ मार्ग निर्माण के कार्य मे योगदान किया। —समरसिंह

—आर्य युवक परिषद शाखा आर्यसमाज सकरावा फर्रुखाबाद मे दि० २०जुलाई १९८६ को शिक्षा प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमे ५० बालको ने भाग लिया तथा ४० बालको को पुरस्कृत किया गया।

—मन्त्री

—बदायू निवासी स्वर्गीय श्री गौरीशकर जी की धर्मपत्नी श्रीमती श्यामवती देवी ने स्त्री समाज बदायू को एक हजार रुपये दान स्वरूप प्रदान किया। स्त्री आर्यसमाज बदायू उनके इस पुनीत कार्य हेतु धन्यवाद प्रकट करती है। —सौभाग्यवती आर्या प्रधाना

—दिनाक ४ जुलाई को स्व० श्री रामभरोसे ग्राम तेरवा-पहलवान, हरदोई की सुपुत्री कु० सोम का विवाह सस्कार चि० ओ३म् त्रिपाठी सुपुत्र श्री सुघरदीन त्रिपाठी ग्राम व पो० सीतापुर के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार श्री राम औतार शर्मा प्रधान आर्यसमाज महगवा के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। वर पक्ष की ओर से आर्यसमाज महगवा को २१) दान स्वरूप प्राप्त हुआ। —स्वदेश त्रिपाठी

—अल्मोडा। आर्यसमाज मन्दिर ताडीखेत मे १० जून १९८६ से निवास कर रहे प० प्रसन्नकुमार इन्जीनियर (सदस्य आर्यसमाज सरोजनीनगर—नई दिल्ली) ने दीपावली १९८६ को सन्यासाश्रम मे प्रवेश करने का सकल्प लिया है। —गुरुकुलानन्द सरस्वती

—ताडीखेत (अल्मोडा) १८ जुलाई १९८६। आर्यसमाज ताडीखेत के मन्त्री प० रामदत्त पाण्डेय साहित्यरत्न को "सेवा निवृत्त रक्षा विभाग सघ रानीखेत" के सचिव निर्वाचित किये जाने पर स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी द्वारा बधाई दी गई। —प्रेमदेव शर्मा

निधन व शोक सम्वेदना

—बसेडा खुर्द जनपद बिजनौर के श्री हरिसिह जी आर्य भजनोपदेशक का दिनाक ७ जौलाई १९८६ को रुद्रपुर मे देहान्त हो गया। प्रभु दिवगत को शाति तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—परशुराम शुक्ल

—आर्य समाज बलिया के भू० पू० उपप्रधान श्री रामचरित्र राम आर्य का लम्बी बीमारी के बाद उनके निवास गाजीपुर मे निधन हो गया वे ८५ वर्ष के थे। आर्य समाज बलिया के सदस्य एव अधिकारियो ने दिनाक १७ जुलाई १९८६ को एक शोक सभा करके दिवगत के शाति एव दुखी परिवार जनो के धैर्य धारणा हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

—रामनाथ चौरसिया

—आर्यसमाज बढ़ापुर बिजनौर ने, अपने दिनाक २० जुलाई ८६ को साधारण सभा मे श्री हरिसिह जी भजनोपदेशक के निधन पर, अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की है। प्रभु दिवगत को शाति तथा शोक विह्वल परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

"वार और इनका क्रम"

(वसिष्ठ, आर्य समाज आयुध निर्माणी मुरादनगर गाजियाबाद)

ओ३म् पञ्चपाद द्वादशाकृति दिव आहु परे अर्धे पुरीषिणम् ।
अथेमे अन्य उपरे विचक्षण सप्त चक्रे षळर आहुरर्पितम् ।।

विज्ञान परिषद् इलाहाबाद से प्रकाशित सूय सिद्धान्त के मध्यमाधिकार श्लोक ५१-५२ की पाद टिप्पणि मे पृष्ठ ४१ पर भाष्यकर श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव लिखते हैं–"वारो का यह क्रम प्राय सभी देशो मे पाया जाता है। परन्तु इसके नाम करण की उपपत्ति जैसी यहा की गई है वैसी कहीं और भी है या नहीं यह खोजने के योग्य है।"

सभी जानते हैं कि वारो का यह क्रम निम्न प्रकार है—

इस तालिका से यह पता चलता है कि ... न प्रथम और द्वितीय को छोडकर सभी सौर ग्रहो के आधार पर हैं प्रथम सौर परिवार के केन्द्र सूर्य और द्वितीय पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा के आधार पर है। अग्रेजी नाम प्रथम, द्वितीय और सप्तम् सस्कृत नामो के अनुवाद मात्र हैं। फारसी के नाम सस्कृत के क्रमाङ्क के आधार पर हैं छटे सातवें को छोडकर। परन्तु इनका क्रम ऐसा क्यो है ? यह तो अब भी स्पष्ट नहीं होगा। इसके लिए सूर्य सिद्धात ही सहायक है जिसका आधार वेद है क्योकि सूर्य सिद्धांत को ऋषि भी अपने ग्रन्थ के प्रथम श्लोक मे ब्रह्म की स्तुति निम्न प्रकार करते हैं—

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्त जगदाधार मूतये ब्रह्मणे नम ।।

उस पर ब्रह्म को नमस्कार है जिसका (समग्र) रूप न तो ध्यान मे आ सकता है और न प्रकट किया जा सकता है, जो निर्गुण है परन्तु जिससे सब गुण उत्पन्न हुए हैं और जो सम्पूर्ण जगत का आधार है।" वेद को समझने-समझाने के लिए ज्योतिष शास्त्र के लिए तप का महत्व बतलाते हुए ऋषि आगे कहते हैं –

वेदाङ्गमग्रयमखिल ज्योतिषा गतिकारण ।
आसधयन्विवस्वन्त तपस्तेपे सुदुष्करम् ।।

वेदाङ्गो मे श्रेष्ठ सारे ज्योतिष पिण्डोकी गतियो का कारण बतलाने (स्पष्ट करने) वाले परम पवित्र और रहस्यमय उत्तम ज्ञान (वेद-ज्योतिष) को जानने की इच्छा से कठिन तप (परिश्रम) करके विवस्वान (सूर्य) की आराधना (गवेषणा) की।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने भी हमे बतलाया है कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। ऐसा ही सूर्य सिद्धात के ऋषि भी अन्य ऋषियो की भाति मानते थे। इसीलिये उन्होने अपने ग्रथ को रचना का मूल वेद मे पाया होगा। ऋग्वेद मे एक मन्त्र आता है जो लेख के प्रारम्भमे दिया है जिसका भाव है–

"मनुष्यो ! जानो कि यह शक्ति सम्पन्न प्रकाशमान सवत्सर क्षण-मुहूर्त रूपी ५ चरणो, मासरूपी १२ आकृतियो, दिवसरूपी ७ चक्रो, ऋतु रूपी ६ अरो वाला भी है।" ऋ० १-१६४-१२।

इससे पूव ११ वे मन्त्र मे ३६० + ३६० = ७२० दिन-रातो वाल भी बतलाया गया है। इस सूक्त मे ५२ मन्त्र मानो सवत्सर के ५२ सप्ताहो को इङ्गित करते हैं। अत ज्योतिष-शास्त्र मे रुचि रखने वाले ऋषियो ने एक वष को १२ मास, ३६० (सावन) दिनो, ६ ऋतुओ, ७ साप्ताहिक दिनो और ५२ सप्ताहो मे विभाजित करने का आधार वेद से प्राप्त किया जो आज तक चला आ रहा है और भविष्य मे भी स्यात् हम ग्राम-मीटर की भाति काल निर्धारण के लिये इस विभाजन को कभी तिरस्कृत नहीं करेंगे। क्योकि इसका आधार वैज्ञानिक भी है जिसे हम आगे स्पष्ट करेंगे।

इससे पूव हम एक दो बातें और बतलाना चाहेगे। कोई व्यक्ति मेरठ से दिल्ली की यात्रा रेलगाडीसे करता है तो दिल्ली पहुचकर कहता है कि दिल्ली आ गई जब कि दिल्ली नहीं वह स्वय आया है। इसी प्रकार यह भी कहा जाता है कि सूर्य-पूव मे है, सिरपर आ गया, पश्चिम मे छिप गया। इसका यह अर्थ नहीं है कि सूर्य गतिमान है बल्कि ऐसा कहने से व्यवहारिक कठिनाइया उत्पन्न नहीं होती। इसी प्रकार प्राचीन ज्योतिष विद जानते तो थे कि पृथ्वी गतिमान है तभी उसका नाम भूमि रखा गया था। हा अन्य ग्रहो की भाति सूर्य को भी उन्होने अपनी बात स्पष्ट करने के लिए 'ग्रह' मान लिया और चन्द्रमा को भी। दो ग्रह राहू और केतु और माने जो कि आकाशीय न तब थे और न अब हैं केवल दो स्थान-विशेषों को उन्होने ये नाम दिये। अत नौ ग्रहो मे से सात जो आख से दृष्टव्य थे और आज भी हैं, के नाम पर दिनो का नाम करण किया। वारो की सख्या वेद से '७' तो वे पहले ही ले चुके थे।

एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय काल को दिवस, दिन या अह भी कहते हैं और इसके चौबीसवें भाग को होरा या घण्टा कहते हैं जिसकी पुष्टि अग्रेजी का अवर-हवर और (डे-दि) भी आज तक करते आ रहे हैं।

अब दिनो के क्रम को समझाने से पूर्व आधुनिक विज्ञान और भूगोल से सम्पुष्टित एक तालिका दे रहे हैं।

७ ग्रहो का पृथ्वी से औसतन दूरी
अवरोही क्रम

ग्रह का नाम	अवरोही क्रम	भगण काल = चक्र समय (पूर्णाङ्को मे) सूर्य सिद्धातवत्	आधुनिक विज्ञानवत्
शनि	१	३० वर्ष	३० वष
गुरु	२	१२ वर्ष	१२ वष
मगल	३	२ वर्ष	२ वर्ष

[शेष पृष्ठ ६ पर]

"वार और इनका क्रम"

(शेष पृष्ठ ५ से आगे)

रवि	४	१ वर्ष	१ वर्ष
शुक्र	५	१/२ वर्ष	१/२ वर्ष
बुध	६	१/४ वर्ष	१/४ वर्ष
चन्द्र	७	१/१२ वर्ष	१/१२ वर्ष

यहा भगण काल को भी समझ लेना रोचक रहेगा। यह वह समय है जो पृथ्वी से आकाश मे किसी ग्रह या पिण्ड को एक स्थान से हटते हुए पुन ठीक उसी स्थान पर विश्व का एक चक्कर लगाकर आने (दिखने मे) लगता है।

उपरोक्त तालिका वारों के क्रम को समझने मे बडी सहायक है। तालिका से यह भी विदित है कि आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण और मान्यताए प्राच्य मान्यताओ की पूर्णत पुष्टि करते हैं।

अब हम 'वार क्रम' के सम्बन्ध मे सूर्य सिद्धात का मत उद्धृत करते हैं जिसके सम्बन्ध मे माननीय श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव ने इस लेख के प्रारम्भिक मे उद्धृत शब्द कहे हैं। सूर्य सिद्धात के ऋषि कहते हैं—

सावनो द्युगणत्सूर्याद्दिनमासाब्द पास्तत ।
सप्तभि क्षयितश्शेष सूर्याद्यो वासरेश्वर ॥ सू० स्प० ५१ ॥

"अर्थात्" सावन दिनो की जो सख्या हो उससे दिन पति, मासपति, और वर्षपति सूर्य से गिनकर जानना चाहिए। इस सख्या को ७ से भाग दें जो शेष बचे वही सूर्य से आरम्भ होकर दिनपति होगा।

ऊपर हम बतला चुके हैं कि एक अहोरात्र (दिन-रात) मे २४ होरा, हवर, या घण्टे होते हैं। सूर्योदय के समय के होरा का उपरोक्त श्लोकानुसार जो होरापति होगा वही उस दिन का नाम होगा। ये होरा पति, दिनपति, मासपति या वर्ष पति उपरोक्त तालिका के ७ ग्रह ही हैं, जो क्रम से पति, स्वामी बनते रहते हैं। जैसे पहले होरा का पति शनि है तो सरे का गुरु और तीसरे का मगल होगा।

इतना समझ लेने पर अब दिनो के क्रम को समझने मे कोई कठिनाई नही होगी। मान लीजिए आज पहले होरा या घण्टे का होरेश या होरापति शनि हैं तो दिन या वार का नाम भी शनि होगा। साथ ही ——

८ वें, १५ वें, २२ वें घटे का होरापति भी आज शनि होगा और आगे २३ वें का (तालिकानुसार) गुरु, २४ वें का मगल, २५ वें का रवि होगा। परन्तु २५ वां होरा या घण्टा अगले दिन का पहला होरा या घटा होगा। इसलिए उस दिन का नाम 'रवि' होगा।

इसी प्रकार रविवार के दिन १ ले, ८ वें, १५ वें और २२ वें घटे का भी होरापति रवि होगा और २३ वें का (तालिकानुसार) शुक्र, २४ वें का बुध २५ वें का चन्द्र होगा। परन्तु २५ वा होरा, घटा या अवर अगले दिन होगा। इसलिए उस दिन का नाम सोमवार या चन्द्रवार होगा।

इसी प्रकार से यह क्रम चलता रहेगा। समस्त ससार मे चलता रहेगा और समस्त ससार मे सृष्टि के आदि से चलता आया है। अर्थात् रविवार आदि से साप्ताहिक दिनों के नाम और वारक्रम वेदानुकूल है आधुनिक विज्ञान की कसौटियो पर पूर्ण वैज्ञानिक है।

अत हमारे ऋषियों की आदि से स्वामी दयानन्द सरस्वती पर्यन्त यह मान्यता रही है कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है।" क्या अच्छा हो हम उसके निष्ठावान पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने वाले हो जो हमारे लिए अत्यन्त अपेक्षित हैं परन्तु दुर्भाग्य से जिसकी हमने उपेक्षा की है। जैसा कि स० २०४२ श्रावणी विशेषाङ्क (सार्वदेशिक), जून-जुलाई अङ्क परोपकारी तथा मासिक महर्षि सन्देशमे हम व्यक्त कर चुके हैं। यहा हम उपरोक्त आर्य पत्रिकाओ का धन्यवाद करते है जिनके द्वारा हमारा सम्पर्क श्री इन्द्रदेव मुनि पुरोहित कुलपति आदर्श—गुरुकुल इन्द्र-प्रस्थशाही (पीलीभीत उ० प्र०) से हुआ है जो सायन पञ्चाङ्ग प्रकाशित करते हैं। कितना सुन्दर हो कि इस प्रकार के पञ्चाङ्ग आर्य जगत मे अनेक निकला करें। इत्योम्

निधन व शोक संवेदना

जो
जा
त

के
अ

—आय (बिहार) ने राष्ट्र के महान नेता श्री बाबू जगजीवन राम के निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की है। प्रभु उनकी स्वर्गीय आत्मा को चिरशाति तथा शोकाकुल परिवार जनो को असीम धैर्य प्रदान करें।

मन्त्री आर्य समाज गया

—आर्य समाज मिर्जापुर के सभासद व आर्य कन्या इण्टर कालेज के प्रबन्धक श्री चन्द्रलाल वर्मा का निधन हृदय गति रुक जाने से हो गया उनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। प्रभु दिवगत के शाति तथा परिवार जनो को धैर्य प्रदान करें।

मन्त्री

—गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय सिराथू (इलाहाबाद) की उपाध्यक्षा माता शन्नो देवी वानप्रस्थी का दिनाक ३ जुलाई ८६ को हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया वे ८० वर्ष की थीं। स्वर्गीय माता जी ने बत्तीस हजार रुपये का दान देकर गुरुकुल के विकास के लिए एक सराहनीय कार्य किया था। समस्त कुलवासियो ने स्व० माता जी के निधनपर गहरा दु ख प्रकट करते हुए शोक सवेदना एव श्रद्धांजलि अर्पित की तथा एक शोक सभा में दिवगत आत्मा की चिरशांति हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई।

डा० रमामिश्र शास्त्री प्राचार्य

—गुरुकुल महा विद्यालय सिराथू (इलाहाबाद) के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री बैजनाथ प्रसाद वानप्रस्थी का निधन दिनांक १२ जुलाई ८६ को लम्बी बीमारीके उपरांत हो गया वे ७८ वर्ष के थे। गुरुकुल वासियों ने एक शोक सभा द्वारा स्व० श्री बैजनाथ प्रसाद जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। प्रभु दिवगत को शांति तथा परिजनों को धैर्य प्रदान करें।

डा० रमामिश्र शास्त्री प्राचार्य

कैसा शासन कानून कहाँ ?

[श्री मेवाप्रसाद पाठक बी०ए०, एल० एल० बी०]

कैसा शासन कानून कहा ? मानवता नित्य निनाद करे।
मानव का रक्त पिये मानव, अरु मानवता फरियाद करे ॥
कैसा शासन कानून कहा ?

है धधक रहा पजाब आज, पर कोई बुझा न पाता है
झूठे दावों अयोगो का, नित खेल दिखाया जाता है
क्या यही धर्म है ? जहा विधर्मी धर्म पर वाद विवाद करे
कैसा शासन कानून कहा ?

यह धर्म नहीं आडम्बर है, जो मानव को दानव कर दे
अबला पर अत्याचार करे, लाचारो को बेघर कर दे
क्या यही गुरु की वाणी है, हत्यारो की इमदाद करे
कैसा शासन कानून कहा ?

कितनी माओ के लाल छिने, कितनो की सूनी माग हुई
लेकिन लोहू के प्यासो की कब प्यास लहू की शान्त हुई
यह गुरुनानक की पुण्य भूमि रो रो कर है आतनाद करे
कैसा शासन कानून कहा ?

कुछ तो सोचो कुछ तो समझो, यह खूनी ताडव बन्द करो
मानव मानव का रक्षक है इस दानवता का अन्त करो
गुरु नानक, और भगतसिंह की जननी तुम से फरियाद करे
कैसा शासन कानून कहा ?

पलटो पन्ने इतिहासो के कुछ तो अपनी पहचान करो
तुम रहे मुकुटमणि भारत के रक्षक थे यह तो ध्यान करो
'पाठक' अपने ही हाथो से क्यो अपना घर बरबाद करें
कैसा शासन कानून कहा ?

नेताओ के काधो पर

—o—

कहा खडे हैं, कहा जायेंगे, स्वय सोच लो तुम प्यारे !
लोग लिए फिरते हाथों मे यहा दहकते अगारे !!
नफरत का बाजार गर्म है, अर्थी उठी मुहब्बत की !
अमृत कह कर जहर पिलाना धर्म समझते हैं सारे !!
सुनने मे अटपटी लगेगी लेकिन एक हकीकत है !
आज मसीहा वह है भाई, जो मरते को खुब मारे !!
जनता जान बचाती फिरती यहा मौत के साये से !
नेताओं के काधो पर अब चढ़े हुये हैं हत्यारे !!
(पजाब केसरी से साभार)

—जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा जौनपुर के तत्वावधान मे, जनपद के खेता सराय, जमुनिया, शाहगज, सराय लोका, केराकत, मडियाहू, थाना गद्दी, जौनपुर व मीरगज मे ८ मार्च से १६ अप्रैल १९८६ के मध्य व्यापक रूप से वेद प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ श्री आर्य मुनि वानप्रस्थ, देवेन्द्र नाथ व श्री जयपालसिंह (वैशाली) बिहार आदि विद्वानो का विशेष सहयोग रहा। —छोटेलाल आर्य

सूचना

(१)

उत्तरप्रदेश के समस्त आर्यसमाजो तथा आर्य वीर दल के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि "आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के शताब्दी समारोह" के शुभ अवसर पर सेवा, सुरक्षा तथा व्यायाम प्रदर्शन हेतु कम से कम १ हजार आर्यवीरो को गणवेश मे आवश्यकता है। जिनके आवास भोजन व जलपान की नि शुल्क व्यवस्था होगी।

कृपया अपने यहा अभी से तैयारी करें, सूचना मुझे तथा सभा कार्यालय को तुरन्त भेजें।

गणवेश मे सफेद शर्ट व खाकी हाफ पैंट अनिवार्य होगा।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

बेचनसिह
अधिष्ठाता
आर्यवीर दल उ०प्र०

(२)

१७–१०–८६ से २०–१०–८६ तक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० शताब्दी समारोह मे आर्य कुमार सभा गोडा ने एक बस की व्यवस्था की है। जो भी महानुभाव जाना चाहते हो वह मन्त्री आर्य कुमार सभा, २१२, मालवीय नगर गोण्डा से सम्पर्क करें।

—सत्य प्रकाश एडवोकेट

गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश

१ जुलाई ८६ से चालू हो गया है। बी० ए० स्तर तक की शिक्षा। नियमित दिनचर्या, नैतिक शिक्षा, सादा भोजन उत्तम देखभाल के लिए अपने बालको का प्रवेश प्रारम्भिक भोजन शुल्क ९५) मात्र मे गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन मे करायें। वेद प्रकाश आर्य
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा)

श्री श्रीकरण शारदा का निधन

आर्यजगत् को यह जानकर अत्यन्त दु ख होगा कि लब्ध प्रतिष्ठ आर्य नेता तथा परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री श्रीकरण जी शारदा का ६८ वर्ष की आयु मे दिनाक २० जुलाई को कलकत्ते मे उनके बडे पुत्र श्री हर्षवर्धन के यहा निधन हो गया। श्री शारदा सुप्रसिद्ध आर्य नेता कु० चादकरण शारदा के सबसे बडे पुत्र थे। उनका जन्म १४ जून १९१९ को बडोदा मे नाना प० आत्माराम जी अमृतसरी के यहा हुआ। बी०ए० एल० एल० बी० की परीक्षायें उत्तीर्ण करने के पश्चात् उन्होने कुछ वर्ष तक वकालत भी की। १९५८ में परोपकारिणी सभा के सदस्य निर्वाचित हुए तथा सभा के सयुक्त मन्त्री पद पर कार्य किया। १९६४ मे आप सभा के मन्त्री चुने गये। तब से लेकर जीवन पर्यन्त २२ वर्षों तक आपने अत्यन्त निष्ठापूर्वक सभा मन्त्री के रूप मे कार्य भार सभाला। वे गत वर्ष से अस्वस्थ थे परमात्मा दिवगत शारदा जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे। —डा० भवानीलाल भारतीय
सयुक्त मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर

—आर्यसमाज फतेहगज पूर्वी (बरेली) का वार्षिकोत्सव दिनाक १ जुलाई ८६ से ३ जुलाई १९८६ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभा भजनोपदेशक श्री प० ब्रह्मानन्द जी आर्य तथा श्री नेमप्रकाश एव श्री युगुलकिशोर जी के भजनोपदेश सराहनीय रहे। —प्रधान आर्यसमाज

—आर्य समाज भीकमपुर जैनो बदायू के तत्वावधान मे दिनाक ८ जुलाई से १५ जुलाई तक जनपद के ग्रामीण क्षेत्रो मे व्यापक रूप से वैदिक धर्म का प्रचार हुआ तथा दिनाक १२ जुलाई १९८६ को ककराला निवासी श्री रघुवीरसिंह को वानप्रस्थ की दीक्षा दी गई। —दयाशकर आर्य

पंजाब बचाओ दिवस

प्रदेश की समस्त आर्य समाजें १५ अगस्त १९८६ को रक्षा दिवस के रूप मे मनाये

सार्वदेशिक प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी के आदेशानुसार समस्त प्रान्तीय आर्य समाज के अधिकारियो से अनुरोध है कि पजाब-बचाओ रक्षा दिवस का आयोजन १५ अगस्त को करें तथा प्रस्ताव पास करके भारत सरकार को भेजें कि "पञ्जाब सेना के हवाले किया जाय तथा अक्षम बरनाला सरकार भग की जाय।"

पञ्जाब के हिन्दुओ की रक्षा के लिए जन जागरण का वातावरण बनाया जाय और उत्पीडित हिन्दू जो दिल्ली तथा अन्यत्र आए हैं उनकी सहायता हेतु धन सकलित करके सार्वदेशिक सभा दिल्ली भेजने का प्रयास किया जाय।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

एक और अनुपम विद्वान चलबसा

हा ! प० सुधाकर जो !!

मैनपुरी-जनपदमे जन्मे आर्य जगत के गौरव, गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न स्नातक, आयुर्वेद के साथ-साथ वेद-वेदागके महान पण्डित, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के सर्वाधिक विद्वान महोपदेशक, विश्व सस्कृत परिषद, काशी द्वारा सम्मानित, आर्य समाज नया शहर इटावा मे वर्षो तक उसके सर्वसम्मति प्रधान-पद को सुशोभित करने वाले, दयानन्द कालेज मैनपुरी के आजीवन-आदरी-सदस्य, सिद्ध-हस्त एव सफल चिकित्सक, ओजस्वी किन्तु मृदुभाषी वक्ता, प्रवल तार्किक, सुन्दर, स्वस्थ और भीम-काय सुडौल कविरत्न प० सुधाकर जी शर्मा (पान्डेय) आयुर्वेद शिरोमणि, प्राणाचार्य विगत सप्ताह दि० १६-७-८६ को प्रात, ६७ वर्ष की आयु मे, इश्वरेच्छा से, अपना भरा पूरा परिवार छोड़कर, पता नहीं किस दिशा मे सदा-सवदा के लिए विलीन हो गये।

इस हृदय विदारक समाचार के पाते ही अपार जन समूह पूज्य पण्डित जी के अन्तिम दर्शन हेतु उमड़ पडा और अश्रुपूरित नेत्रोसे उनके पार्थिव शरीर को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार अग्नीश्वर को समर्पित किया।

जनपद-मैनपुरी व इटावा की आर्य समाजो के सा० सत्सग दि० २०-७-८६ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के अन्तरगाधिवेशन दि० २७-७-८६ मे आर्य जनो द्वारा, अपने प्रिय विद्वान उपदेशक-नेता को भावभीनी श्रद्धाजलियाँ देते हुए उनकी दिवगत आत्मा की चिरशाति तथा शोकाकुल परिवार को ध्रुव-धैर्य प्रदान करने हेतु, परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई।

कु० ध्रुवपालसिंह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक, सभा

बैंकाक के आर्य नेता श्री रामपलट पान्डेय के गृह में आनन्दोत्सव

बैंकाक आर्य समाज के मत्री श्री राम पलट पाडेय के निवास पर विगत दिनो आनन्दोत्सव की एक श्रृंखला प्रभु की कृपा से आयोजित हुई प्रथम उनकी पुत्री आयुष्मती प्रमिला पान्डेय का शुभ विवाह अशोक कुमार मिश्र के साथ तथा द्वितीय पुत्री आशा पान्डेय का विवाह राजेन्द्र प्रसाद मिश्र के साथ एक ही तिथि दिनाक २९ जून १९८६ को आनन्द पूर्वक सम्पन्न हुआ।

उनकी दो और पुत्रियो आयुष्मती शशिबाला पान्डेय का श्री विजय कुमार पान्डेय के साथ तथा शकुन्तला पान्डेय का गोविन्द पान्डेय के साथ दिनाक १५ जुलाई ८६ को पाणिग्रहण सस्कार भी विधिवत् सम्पन्न हुआ।

इसी शुभावसर पर उनके दो पुत्र नरेन्द्र कुमार पान्डेय तथा देवेन्द्र कुमार पान्डेय और दो भतीजे राजेश कुमार तथा दिनेश कुमार का यज्ञो-पवीत सस्कार भी दिनाक १५ जुलाई सन् १९८६ को प्रात वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

यह सब सस्कार उनके पैतृक स्थल ग्राम सगलपुर जनपद गोरखपुर (उ० प्र०) भारत वर्ष मे सम्पन्न हुआ। 'आर्यमित्र' श्री पान्डेय जी के इस आनन्द उत्सव की श्रृंखला मे अपने को भी सम्मलित करता है तथा प्रभु से प्रार्थना है कि नवविवाहित दम्पति का भावी जीवन सुखद एव सम्पन्नता परिपूर्ण हो तथा यज्ञोपवीत बालको का भावी जीवन विद्या से परिपूर्ण और यशस्वी हो।

—आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०
सम्पादक

पजाब से पलायित हिन्दुओ की सहायता हेतु

सभा प्रधान पँ० इन्द्रराजजी द्वारा पाच हजार रुपया सभा द्वारा देने का घोषणा

स्वामी आनन्द बोध जी के अपील पर पञ्जाब के उत्पीडित हिन्दू जो दिल्ली तथा अन्यत्र शरण ले रहे है उनकी सहायता हेतु सभा प्रधान प० इन्द्रराज जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा पाच हजार रुपये देने की घोषणा की।

इसी अवसर पर लखनऊ आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री अर्जुनदेव महाना ने अपनी सभा की ओर से ग्यारह सौ रुपया देने की घोषणा की।

प० मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य समाज गणेशगज लखनऊ ने आर्य समाज की ओर से ग्यारह सौ रुपया देने की घोषणा की।

इस सम्बन्ध में अन्य दानशील सगठन सस्था एव आर्य उदार जन धन प्रधान सार्वदेशिक सभा—नई दिल्ली को प्रेषित करें।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०
सम्पादक
आर्यमित्र लखनऊ

निर्वाचन

आर्य समाज आर्य नगर भूडबरेली
प्रधान श्री जगदेव जी आर्य
मन्त्री श्री सुरेश चन्द्र जी शर्मा
कोष० श्री रमेश चन्द्र सक्सेना

आर्य समाज रेणुकूट [मिर्जापुर]
प्रधान श्री बलधारी सिंह
मन्त्री श्री गिरधर लाल
कोषा० श्री बिनोद कुमार गुप्त

आर्य समाज बहजोई (मुरादाबाद)
प्रधान श्री लवकुशराम [illegible]
मन्त्री श्री नित्यमूर्ति आर्य
कोषा० श्री दिवेन्द्र कुमार आर्य

भारतीय संस्कृति से भारतीय कितनी दूर

(श्री सोतो वीरेन्द्र चन्द्र कमला कुटीर ५६५, सुभाषनगर, इलाहाबाद)

[गताक से आगे]

भारतियो मे विवाह-विच्छेद के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण अग्रेजो के साथ सम्पर्क से प्रारम्भ हुआ। इस परिवर्तित जोवन-दृष्टि को अभिव्यक्ति द्वारा भारतीय आदर्श वादी दामपत्य परम्परा विच्छिन्न होती जा रही है।

अग्रेजी सस्कृति से मेल के कारण भारतीय वेश-भूषा मे भी पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। पाश्चात्य वेश-भूषा का भारतीयो पर असाधारण आकर्षण पडा है। वह भारतियो को बहुत सुहाती है, फलत उसने भारतियो के स्वरूप को ही बदल दिया है। यहाँ तक कि बच्चो को नकटाई बाँधकर स्कूल भेजना पाश्चात्य युवक युवतियो की छवि पर लैट्टू रहना और लडकियो द्वारा भी टाइट जीन्स पहनना। यह सब करने मे हम अपनी शान समझते है। इन बातो को सभ्य होते एव "सोशल स्टेटस या एडवान्स" होने अथवा आधुनिकरण का प्रतीक करार दे दिया गया है। ऐसे मनुष्य अपने आपको दूसरो से ऊचा समझते हैं। यद्यपि ऐसा करनेवाले अग्रेजोकी मूलप्रति तो बन नहीं सकते केवल उनकी 'कार्बन कापी' जैसे प्रतीत होते हैं परन्तु जो स्त्री-पुरुष ऐसे पाश्चात्य जीवन से अप्रभावित है और उससे आविभू त नहीं हैं उन्हे पिछडे समाज का चिन्ह समझा जाता है। इस सम्बन्ध मे ध्यान देने की बात यह है कि आधुनिकरण की आड मे भारतीय सस्कृति की जडो को जो खोखला किया जा रहा है वह हमारे सास्कृतिक सिद्धातो के हित मे नहीं है। इससे एक सास्कृतिक शून्यता पैदा होती है।

इस प्रकार हमारी भाषा, वेश-भूषा, खान-पान रहन-सहन, परिलक्षित होता है। परिणामत भारतीय सस्कृति से हम शनै शनै दूर होते जा रहे हैं। इस सम्बन्ध मे यह ही रफतार रही तो हो सकता है आगे चलकर भारतीय सस्कृतिकी मूलात्माका ही काया कल्प हो जाय।

इस तरह के माहौल मे भारतीय सस्कृति को कोई प्रमुखता नही दी जा रही है। इसका नतीजा यह है कि हम अपनी सस्कृति को हीन समझने लगे है।

इन बातो पर ध्यान से सोचिए तब समझ में आएगा कि हमारे वह तौर तरीके भारतीय सस्कृति से कितने दूर है। सच्चाई यह है कि यह नमूना है हमारी मानसिक दासता का। हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि अग्रेजो ने भारत मे अपनी साम्राज्यवादी नीति को जमाने के लिए भारत की सस्कृति एव सभ्यता की जगह पर आधुनीकरण के के नाम पर अपनी सस्कृति, सभ्यता एव भाषा की श्रेष्ठता को जताने के लिए उनका बीजारोपण कर हमे सस्कृति भ्रष्ट करने का षडयन्त्र रचा था।

सबसे ज्यादा खटकने वाली बात यह है कि आडम्बरोपरक अग्रेजी सस्कृति को श्रेष्ठ मानने वाली गुलाम मनोवृत्ति से उत्पन्न यह पश्चिम का अनुकरण स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद और भी बढा है। स्वामी दयानन्द सरस्वती एव महात्मागाधी द्वारा बढाया गया देहाभिमान, स्वदेशी भावना तथा स्वदेशीपन का रग उडता जा रहा है ये सारे तथ्य भारतीय चिंतन पर भारी पड रहे हैं क्योकि ये भारतीयो के सोचने के तरीके को ही दिन-ब-दिन बदले दे रहे हैं। ये उन्हे उनकी सस्कृति से दूर करते जा रहे हैं। यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार पाश्चात्य सस्कृति के व्यापक प्रयोग से भले ही प्रगतिशीलता के अनुक्रम का समावेश हुआ हो तथा यह लोक सेवा आयोग द्वारा विज्ञापित सेवाओ के चयन मे अधिक सफलता प्रदान करता हो परन्तु यह उपलब्धि हम भारतीय सस्कृति को अस्मिता का बलिदान करने पर प्राप्त करनी पड रही है। पश्चिम के मनुष्यो की और हमारी सामाजिक मान्यताओ तथा जीवन मूल्यो मे अधिक अन्तर है। यह विस्मयकारी विडम्बना है कि जब कि पाश्चात्य देशो के लोग अपनी भोषण भौतिकवादी सस्कृति के विलासितापूर्ण जीवन से ऊब कर मानसिक शान्ति की खोजमे हमारी आध्यात्मिक शांति प्रदायिनी सस्कृति की ओर उन्मुख हो रहे हैं, हम उल्टे उनकी सस्कृति की ओर दौड रहे हैं। पाश्चात्य देश समृद्धियो मे बेशक बढ़े-चढ़े है परन्तु जहा सास्कृतिक एव आध्यात्मिक समृद्धि का प्रश्न है भारत निश्चित रूप से उनसे मीलो आगे है। इसी कारण भारत की आध्यात्मिक छवि पश्चिम को अब भी भाती है।

वास्तविकता यह है कि भारतियो को एक उस सुसस्कृत जीवन की अपेक्षा है जो उनको विचारहीन भौतिकता पूर्ण पाश्चात्य जीवन-प्रणाली की होड की दौड मे बचा भारतीय मानव बना दे। यह एक चरम चुनौती है क्योकि हमारे जीवन मे भारतीय सस्कृति ही महत्वपूण भूमिका निभा सकती है। हमारी पुरातन सस्कृति ही हमारे जीवन की द्योतक है। वह ही हमे ठीक राह दिखा सकती हैं। दोहरे सास्कृतिक परिवेश मे हम कही के न रहेगे।

भारतीय सस्कृति की उन्नति के लिए यहा चिरकाल से चले आ रहे सस्कारो,परम्पराओ एव आध्यात्मवाद को फिर प्रतिष्ठित करना होगा। यहा परम्पराओ से तात्पर्य रूढिवाद से नहीं है। अन्यथा आने वाली कुछ सदियो मे इस अन्धी दौड मे पाश्चात्य सस्कृति द्वारा हमारी सस्कृति के एक बडे भाग को ही निगल लिया जायगा। और हम अपने पूवजो की सस्कृति से अलग-थलग पड जायेंगे। यहा परम्पराओ से तात्पय रूढिवाद से नहीं है।

सस्कृति जीवन को समृद्धि के लिए होती है न कि पतन के हेतु। अतएव अग्रेज जो इस प्रकार की धरोहर छोड गए है वह भारतीय सस्कृति के लिए वरदान नही अभिशाप है। उससे भारतीय सस्कृति की परिपुष्टि कदापि नहीं हो सकती। महात्मा गाधी के नेतृत्व मे अहिसात्मक युद्ध छेडकर अग्रेजो राज्य से हमने १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्रता तो प्राप्त कर ली। उसके बाद राष्ट्रमे सरकार द्वारा आर्थिक स्वतन्त्रता लाने की बराबर चेष्टा की जा रही है क्योकि उसके बिना राजनैतिक स्वतन्त्रता अधूरी है परन्तु अग्रेजी सस्कृति से हमने सास्कृतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने का कोई व्यापक अभियान चलाने का अभी तक प्रयास नहीं किया है। नहीं तो भारतीय सस्कृति की रक्षा का क्या होगा ?

मूलमुद्दा यह है कि अग्रेजी भाषा का विद्यार्थी होना एव भारतीय सस्कृति का अनुयायी होना क्या साथ-साथ नहीं चल सकते। इससे हमारी सस्कृति धूमिल होने से बची रहेगी। इसके लिए हमे अपने देश की सास्कृतिक परम्पराओ के प्रति सजग एव सचेत रहना है। तभी इस सास्कृतिक सकट का जिसके दौरमे भारत गुजर रहा है समाधान होपायगा। तभी हम अपनी सस्कृतिक का सरक्षण कर सकेगी। उसके लिए भारतीय सस्कृति की सार्थकता एव उपदेयता की जागरुकता को उजागर कराने के निमित्त दायित्व बोध कराना अपरिहार्य है।

इस सम्बन्धमे कवियित्री निलम शर्मा की निम्नलिखित पक्तिया अत्यत सारगर्भित एव प्रासगिक हैं। उनमे हृदय को स्पर्श करनेवाली अनुभूति की गहरी गूंज है

उनीदे जनो पर से ये स्वप्निक चकाचौंध कब धूमिल होगी।
मुझे भारतीयता का अनुकरण करना है।
सस्कार जो दिव्य है, उन्हे अगीकार करना है।
सकुचाई हुई मेरी पहचान पर से ये अलसायी।
समय की परतें कब हटेंगी।
मुझे आत्मबोध करना है।
जड जो पोषित करती है उसे ढूढ़ निकालना है।

क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल

[श्री प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश]

१५ अगस्त स्वतन्त्रता दिवस है। आज स्वतन्त्र भारत मे जलता हुआ पजाब, अहमदाबाद के दगे, इलाहाबाद के साम्प्रदायिक दगे, उग्रवादियो के निर्मम हत्याकाड, झाडखण्ड आदोलन, आदि विघटन एव स्वतन्त्रता को नष्ट करने के विदेशी इशारे पर हो रहे घिनौने प्रयत्न आज उन क्रातिकारी वीरो की याद दिला रहे है जिन्होने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने बलिदान दिए। क्या उन्होने इसलिए बलिदान दिए थे कि भाई-भाई का खून बहाए। इसी अगस्त मास मे ही स्वतन्त्रता मिली और इसी अगस्त मास मे ही एक क्रातिकारी बालक ने भारत मे जन्म लिया जिसका नाम बहुत प्रसिद्ध है—रामप्रसाद बिस्मिल।

बचपन मे यद्यपि वह बुरी सगत मे पडकर बीडी, सिग्रेट पीने लगा था, भाग आदि का सेवन करने लगा था, उसके लिए घर मे पैसे चुराने लगा था। परन्तु मिडिल पास करने पर अच्छी सगत धार्मिक विचारो के मिलने से ये सब बुराइयां छूट गई। आर्यसमाज का युग था रूढ़िवाद और अन्धविश्वास के बन्धन टूट रहे थे। उसका प्रभाव बालक के हृदय पर भी पडा। अपनी बहन की शादी मे ही जब बारातियो को नाच गाने वालियो के साथ नाचते और अश्लील हरकतें करते देखा तो रामप्रसाद ने विद्रोह कर दिया। अपने ही बेटे को जब पिता ने डाटा तो रामप्रसाद नाराज होकर चला गया और उसने उस विवाह मे भाग ही नहीं लिया।

स्वतन्त्रता आदोलन जोर पकड रहा था। एक तरफ महात्मा गाधी का अहिसक आदोलन तो दूसरी तरफ अग्रेजो के अत्याचार से क्रातिकारी आंदोलन। क्रातिकारी युवकों का एक सगठन बन गया।

रामप्रसाद बिस्मिल उसमे अग्रणी था। क्रातिकारियो ने अग्रेजो को भारत से भगाने के लिए लूटमार का रास्ता अपनाया। जैसे ही एक किताब "अमरीका को आजादी कैसे मिली सामने आई तो उसे प्रकाशित कर प्रचारित करने का निश्चय किया। इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी माता से २ बार २००)—२००) रुपये लिए। किताब छपी युवको ने उसे बाटना और बेचना आरम्भ किया। गोरी सरकार को पता चला। किताब जब्त हो गई। एक युवक किताब बेचता पकड़ा गया। उस पर जब सख्ती की गई तो उसने सारा भेद खोल दिया। सगठन बिखर गया। कुछ गिरफ्तार हो गये परन्तु राम प्रसाद पुलिस के हाथ नहीं लगा।

धीरे-धीरे पुलिस की सख्ती कम हुई और क्रातिकारियो का सगठन फिर खडा हो गया। किताब पुन बिकने लगी परन्तु खर्च पूरा नहीं होता था।

एक दिन रामप्रसाद बिस्मिल ने अपने साथियो सहित सरकारी खजाना लूटने की योजना बनाई। क्रातिकारियो को पता चल गया कि सहारनपुर से सरकारी खजाना लखनऊ भेजा जा रहा है। वे भी गाड़ी पर सवार हो गए। काकोरी स्टेशन के पास जजीर खींच कर गाडी को खडा कर लिया और अग्रेज सिपाहियो पर हमला बोल दिया। दोनो तरफ से काफी गोलिया चलीं परन्तु अन्त मे क्रान्तिकारी हावी हो गए खजाना लूट लिया गया। काफी धन हाथ लगा। सगठन मजबूत हुआ ६६:८ ईकस की गतिविधिया तेज हुई। नवयुवक पकडे गए। उन पर बहुत सख्ती की गई। कुछ ने आसानी से प्रसन्नता पूर्वक उस सख्ती को सहन किया। परन्तु कुछ कमजोर निकले। वे सरकारी गवाह बन गए। रामप्रसाद बिस्मिल पर मुकदमा चला और उसको फांसी की सजा सुना दी गई।

वह हसते-हसते फासी के फन्दे को चूम गया। अपनी हरी भरी जवानी को भारत माता की स्वतन्त्रता लिए बलिदान कर गया। उसे क्या पता था कि उसकी कुरबानी को देश का नवयुवक भुला देगा। वह विदेशी इशारो पर उग्रवाद और आतङ्कवाद का सहारा लेकर उसी भारत माता को खण्ड-खण्ड करने का प्रयास करेगा जिस भारत माता की स्वतन्त्रता और अखण्डता के लिए रामप्रसाद बिस्मिल जैसे महान क्रातिकारी ने अपना बलिदान किया था।

भावाञ्जलि का दीपक

[डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी प्रोफेसर्स कालोनी श्यामगज, बरेली]

केवल भावाञ्जलि का दीपक,
क्या अन्धकार हर पायेगा ?
पूजा-अर्चन करने मे ही,
ये स्वर्णिम दिवस निकाल रहे।
नकली गढ़ और युद्ध जीते,
उसमे ही बने निहाल रहे।
मधुरस की बातें करने से,
क्या मधु-जीवन मे छायेगा ?
पदचिह्नो की महिमा का ही,
गुणगान निरन्तर हो करते।
चल पाते किन्तु नहीं उस पर,
बस रस्म मात्र इसको कहते।
कुहरे मे रवि की चर्चा से,
क्या दिवस विभामय छायेगा ?
सागर से धैर्य न ले पाये,
सरिता से नहीं सरलता को।
नभ ने न स्वप्न सब विकसाये,
उपवन से कभी न ऋजुता को।
गति की ऊची बातो से ही,
क्या पगु कभी चल पायेगा ?
पथ को प्रशस्त करने वाले,
माना प्रेरक सब साधक हैं।
जो चले नहीं उनके पथ पर,
पगु होकर निज के बाधक हैं।
मौलिकता के गायन से ही,
क्या नूतन कुछ मिल पायेगा।
जो विषमधार अभिशापित है,
क्यो बदल नहीं उसको पाते ?
कारा के खग होकर आकुल,
आकृति से मानव बन जाते।
मरु मे जलधर का यशोगान
क्या विकल प्यास हर पायेगा ?

—आर्यसमाज सिम्भालिका (मुजफ्फरनगर) के कर्मठ सदस्य श्री उदयवीरसिंह का निधन दिनांक २० अप्रैल १९८६ को एक दुर्घटना मे हो गया आर्यसमाज के सदस्यों ने स्व० श्री उदयवीरसिंह को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की शांति तथा परिवार जनों के धैर्य हे ईश्वर से प्रार्थना की।

—मन्त्री

मानस भवन मे आर्यजन जिसकी उतारें आरती।
भगवान भारत वर्ष मे गूंजे हमारी भारती॥

के

अमर गायक मैथिली शरण गुप्त की जन्म शताब्दि-

–कविवर गुप्त ने आर्य समाज के नवचेतना एव नवजागरण के सिद्धांतो को काव्य पक्तियो मे आवद्ध किया।

–बीसवीं शताब्दी के प्रारम्कि युग मे हिन्दी कविता ब्रजभाषा के आवरण ओढ़े हुए नवजीवन के सन्देश को देने का प्रयास कर रही थी तभी मैथिली शरण गुप्त के रूप मे एक ऐसी प्रतिभा का उदय हुआ जिसने हिन्दी को खडी बोली को काव्य का परिमार्जित रूप दिया तथा भावी कवियो के लिए आदर्श प्रस्तुत किया। चिरगाव जिला झासी के सम्भ्रात वैश्य परिवार मे तीन अगस्त सन् अठारह सौ छियासी को जन्म लेने वाले बालक का विकास एक प्रथम श्रेणी के कवि के रूप मे ही नहीं हुआ अपितु कविता को हिन्दी साहित्य को और हिन्दी साहित्य मे वैज्ञानिक परिवेश को सजोने और चिर जीवित रखने की क्षमता भी श्री गुप्त जी मे थी तथा उन्होने काव्य की दिशा को, भाषा की शैली को जो रूप दिया वही बीसवीं शताब्दी के लिए एक आदर्श तथा भावी कवियो के लिए प्रेरणा स्रोत बन गया। गुप्तजी की शिक्षा सामान्यत घर पर ही हुई और वैश्य परिवार की उदार भावना वैष्णव जीवन की पवित्रता की उन पर छाप पड़ीं। मैथिलीशरण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से इतना प्रभावित हुए कि वही 'राम' उनके काव्य का स्रोत बने और उनकी लेखनी से यह पक्तिया बर बस फूट पड़ीं—

राम तुम्हारा जीवन ही काव्य है।
जो कुछ लिख जाय सहज सम्भाव्य है॥

गुप्त जी जहा एक ओर अपने व्यवसाय मे कुशल थे वहीं अत्यन्त विनम्र सहनशील स्वभाव 'अतिथि देवो भव' की भावना से परिपूर्ण सहृदय कवि एव महामानव थे। उनकी कविता का काल सन् १९०५ से लेकर सन १९४५ तक चालिस वर्षो तक रहा और जिसमे उन्होंने चालिस से ऊपर काव्य ग्रन्थ तथा पाच अनूदित काव्य ग्रन्थो की रचना की। बीसवीं शताब्दि के प्रथम दो दशकोमे देश मे नवचेतना, सामाजिक दायित्व बोध और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के वातावरण के सृजन मे आर्य समाज के विशेष योगदान रहा। यह युग स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, लाला लाजपत राय का युग था। गुप्त जी पर भी इसकी छाप पडी और उनकी सुविख्यात रचना 'भारत भारती' मे जो राष्ट्र भक्ति की लहर है जो भारत के प्राचीन उत्कर्ष को गरिमा है वर्तमान मे सुधार के जो परामर्श हैं और भविष्य के लिए जो आशाएँ हैं उन पर आर्य समाज का भी प्रभाव प्रतिबिम्बित। "गुरुकुल" भी उनकी एक रचना है। 'जयद्रथ बध' प्रसिद्ध खण्ड काव्य है। इसके अतिरिक्त नारी जीवन के चित्रो की प्रस्तुति 'यशोधरा' और 'साकेत' की उर्मिला'मे है। उनके प्रमुख ग्रन्थ हैं–द्वापर, साकेत, पचवटी, गुरुकुल, पत्रावली, आदि।

श्री गुप्त जी राज्य सभा के भी सदस्य रहे तथा भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन मे कृष्णगृह की भी यात्रा की। और अपने जोवन पर्यन्त राष्ट्र हित, देशहित, भाषाहित के लिए प्रयत्नशील रहते हुए, तथा साधारण खादी की वेशभूषा आजीवन धारण किए हुए दिनाक १२ दिसम्बर १९६४ को चिरनिद्रा मे विलीन हो गये।

'आर्यमित्र' तथा हिन्दी के कवि नाथू शकर शर्मा तथा श्री हरिशकर शर्मा गुप्त जी के निकटवर्ती थे और इन पक्तियो के लेखक से जब गुप्त जी की भेंट होती थी तो इन तीनो की चर्चा भी होती थी।

'आर्यमित्र' उस महा विभूति महान् कवि को उसके जन्म शताब्दि के अवसर पर सादर श्रद्धाजलि अर्पित करता हुआ उनकी इन पक्तियो के द्वारा आर्यजनो की ओर से भी श्रद्धांजलि अर्पित करता है–

जिसको न निज भाषा गौरव तथा स्वदेश का अभिमान है।
वह नर नहीं पशु है निरा और मृतक समान है।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

पजाब बचाओ दिवस

उ० प्र० के समस्त आर्य समाज के अधिकारी गण तथा विद्यालय के प्रबन्धक, प्रधानाचार्य, प्रधान चार्या की सेवा में

निवेदन है कि सावदेशिक सभा दिल्ली द्वारा यह निश्चय किया गया है कि १५ अगस्त ८६ को स्वतन्त्रता दिवस के स्थान पर पजाब बचाओ दिवस मनाया जाये और उसमे प्रस्ताव पास करके प्रधान मन्त्री गृहमन्त्री, राष्ट्रपति एव पजाब के राज्यपाल, मुख्य मन्त्री, समाचारपत्रो तथा सभाओ को भेजें जायें।

अत १५ अगस्त को अपनी शिक्षण सस्थाओ और आर्य समाजो मे पजाब बचाओ दिवस मे प्रस्ताव पारित कर उपलिखित को भेजें तथा हमारे कार्यालय को भी सूचित करें।

मनमोहन तिवारी मन्त्री इन्द्रराज प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ

नोट–प्रस्ताव इस अध्योलिखित से मिलता जुलता होना चाहिए।

ओ३म्

प्रस्ताव का प्रारूप

पिछले कई वर्षों से पजाब मे निर्दोष व्यक्तियो की हत्याए की जा रही हैं और विदेशी शक्तियो के द्वारा विशेष कर पाकिस्तान के इशारो पर पजाबमे खालिस्तान बनाने का षडयन्त्र किया जा रहा है इस प्रकार विदेशी शक्तिया पजाब और काश्मीर मे व्यापक हिंसा करवा कर देश के टुकड़े करना चाहती है। इस समय देश की स्वतन्त्रता, अखण्डता और प्रभुसत्ता खतरे मे पड गई है।

आर्य समाज एक देश भक्त सस्था है इसलिए आर्य समाज केन्द्रीय सरकार से प्रबल माग करता है कि पजाबमे उग्रवादियो और काश्मीर मे देश-द्रोहियो को दबाने के लिए इन दोनो प्रांतो मे ५ वर्ष के लिये राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया जाए एव सीमावर्ती क्षेत्रो मे भूतपूर्व सैनिक को बसाया जाए तथा देश भक्तो को अस्त्रो के लायसेंस दिये जाए ताकि देश द्रोही शक्तियो को पूरी तरह से परास्त करके देश भक्त शक्तियो को प्रोत्साहित किया जा सके और पजाबमे हो रहे नरसहार को रोका जाये ताकि विदेशी षडयन्त्रो को विफल किया जा सके और देश को टूटने से बचाया जा सके।

'आर्य्यमित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45944 ४५६६३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
भा० श्रावण १६
श्रावण शुक्ल ५
रविवार १० अगस्त १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

ओ३म् ज्योति चक्षुः आर्याः
ओ३म्
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

१८८६-१९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी.कालेज, लखनऊ

विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक
गतिविधियों पर विचार

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १ फोन ४५९६२

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदास आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए
अस्थायी रूप मे सब्बरवाल प्रेस में श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० न० २२४१/८०　　　　　एल० एन० ० / २८-२-८५

वर्ष ८९]　मा० श्रावण २६, श्रावण शुक्ल १२ रविवार संवत २०४३ वि० दि० १७ अगस्त १९८६　[अङ्क ३३

प्रार्थना

ओं आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृत मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

—यजु ३३-४३

भावार्थ—द्योतमान सूर्य आकर्षणकारी स्वमडल से घूमता हुआ स्थिर सत्ता वाले तथा अस्थिर सत्ता वाले अर्थात् कारण कार्यात्मक जगत् को स्वस्थान मे नियत रखता हुआ ज्योतिर्मय मडल से लोक-लोकान्तरों को दिखाता हुआ प्रकाशित करता हुआ आता है।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी

सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

ज्ञानार्जन एवँ जीवन में पवित्रता लाने हेतु—

वेद-प्रचार-सप्ताह

समस्त आर्यसमाजें अपनी गरिमा के अनुसार आयोजित करें

वेद प्रचार सप्ताह ज्ञानाग्नि को प्रज्वलित करने हेतु आयोजित किया जाता है। यह सप्ताह आर्य जगत मे विशेष महत्व रखता है और वर्तमान विषाक्त वातावरण मे इसका सुनियोजित प्रचार एव प्रसार अत्यधिक आवश्यक है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी और मन्त्री श्री प० मनमोहन जी तिवारी ने एक सयुक्त वक्तव्य मे अपील की है कि आर्यसमाजें अधिक से अधिक वेद प्रचार सप्ताह को उत्साह से मनायें विद्वानो के प्रवचनो का प्रबन्ध करें और ज्ञानवर्धक आर्यसाहित्य का वितरण भी हो साथ ही प्रत्येक आर्यसमाज मे चारो वेदो का होना अनिवार्य है और आर्य सभासदो के यहा भी पवित्र वेद ग्रथ होना उनकी श्री और शोभा के लिए आवश्यक है। अत जिन आर्यसमाजो मे पवित्र वेद ग्रन्थ की प्रतिया न हों वह अपने यहा अवश्य ही उन्हें मगायें तथा आर्य जन अधिक से अधिक वेदो को अपने पठन-पाठन और अध्ययन हेतु सकलित करें यदि हम इतना कर सकें तो वेद प्रचार सप्ताह पूर्णरूपेण सफल होगा। वेद प्रचार सप्ताह को समुचित रूप से आयोजित करने मे जिन समाजों को किसी भी प्रकार की कठिनाई हो वह सभा कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क करें। प्रधान एव मन्त्री महोदय प्रदेश के समस्त आर्य जनो का इस अवसर पर अभिनन्दन करते हैं तथा वेद प्रचार मे अधिक से अधिक लग्नशीलता हो ऐसी उनकी हार्दिक कामना है।

o

आतँकवाद की चरमसीमा

भारत सरकार दृढ़ता से इसका मुकाबला करे

सारा देश स्तब्ध और शोकाकुल हो गया जब दिनाक दस अगस्त उन्नीस सौ छियासी को मध्याह्न मे समाचार प्रकाशित हुआ कि भारत के पूर्व थल सेनाध्यक्ष जनरल अरुण कुमार श्रीधर वैद्य की पुणे मे दिन को ११-३० के लगभग आतङ्कवादियो ने हत्या कर दी। जनरल वैद्य के ही कुशल सचालन मे जून सन् उन्नीस सौ चौरासी मे अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर मे सैनिक प्रवेश हुआ था और भिंडरवाला का अन्त हुआ था। जनरल वैद्य देश के एक कर्मठ सैनिक थे पराक्रम प्रदर्शन के लिए उन्हे दो बार महावीर चक्र प्रदान किया गया था और दिनाक ३१ जुलाई सन् ८६ को सेना से अवकाश लेकर पुणे नगर मे शाँति मय जीवन व्यतीत कर रहे थे। श्री वैद्य को पिछले कुछ समय पूर्व से बराबर धमकी भरे पत्र मिल रहे थे परन्तु उस वीर पुरुष ने धमकी के पत्रो की उपेक्षा की। पत्नी के साथ शिवा जी मार्केट से अपने निवास लौट रहे थे कि मध्य मार्ग मे ही उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी गई इससे सारा देश दुःखी हुआ। हिसा के इस बर्बरतापूर्ण कृत्य को देखते हुए आतङ्कवाद को चाणक्य की कुशो की भाति समूल नष्ट करने का सकल्प राष्ट्र को लेना चाहिये तथा सरकार को इस विषय मे जब राष्ट्र का समर्थन प्राप्त है तब भी यदि अपने थोड़े से समयमे वह आतङ्कवाद को समाप्त करने मे सफल नहीं होती है तो यह देश का दुर्भाग्य होगा।

'आर्यमित्र' अपने समस्त पाठको, लेखको, कर्मचारियो एव परिवार की ओर से वीर गति प्राप्त जनरल वैद्य के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है और प्रभु से प्रार्थना है कि दिवगत श्री वैद्य जी को चिरशाँति और उनकी पत्नी श्रीमती भानुमती वैद्य तथा पुत्रिया नीता पारिजात एव तरिणी तथा अन्य प्रियजनों को धैर्य प्रदान करे।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आर्य्यमित्र



सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार १७ अगस्त १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर—

श्रावणी पर्व—

वेद की ऋचाओ श्रुतियों के व्याख्यान औपनिषिदिक वार्तायें तथा महाकाव्य की कथायें सबका एक ही उद्देश्य है कि मानव जीवन मे जो कल्मष है जो अन्धकार है उसका निराकरण हो और तामसी वृतियो से अभिभूत मानव सात्विक वृत्तियो को प्राप्त करता हुआ दानवत्व की घृणित प्रवृत्तियो से उपर उठ कर देवत्व की ओर बढ़ सके। भारत वर्ष सदैव से धर्म प्रधान एव आध्यात्मिक वातावरण का केन्द्र स्थल रहा है। यहा प्राचीन काल से परम्परा है कि समाज के पथ प्रदर्शक ऋषि, सन्त, महात्मा और सन्यासी समाज को सत्पथ की ओर ले जाने का पूर्ण प्रयास करें। इसी कारण वैदिक काल से परिपाटी है कि वर्षा ऋतु मे जब श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से व्यापक वर्षा होती है तो श्रावण-मास और उसके अन्य सहयोगी मासो मे साधु महात्मा किसी एक स्थान पर ठहर जाते थे और वहाँ निरन्तर अपने नियमित प्रवचनो द्वारा जन मानस को सद्ज्ञान का प्रकाश देते थे। यही परिपाटी आज भी प्रचलित है और बदलते समय के अनुसार यद्यपि वेद कथायें ज्ञान की चर्चायें अधिक कालीन न होकर आर्य जगत मे श्रावण की पूर्णिमा से लेकर भाद्रपद की कृष्ण अष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जाता है। हर समाजें अपनी स्थिति के अनुसार उपदेशको का प्रबन्ध करती हैं और ज्ञान यज्ञ का विस्तार करती हैं।

आशा है कि इस वर्ष भी आर्य समाजें इस सप्ताह मे अधिक से अधिक वेद ज्ञान एव अध्यात्मिक वातावरण का स्वजन करेंगी और यह आवश्यक भी है क्यों कि आज की परिस्थितियो मे जब मानव को राक्षसत्व की ओर बढ़ने के लिए प्रेरणायें मिल रही हैं आर्य समाज का दायित्व है कि उस भटके मानव को देवत्व की परिधि मे लाये। अत यह कुविचार प्रक्षालन पर्व है जहा हम आशा करते हैं कि समाज सद्‌विचारों से परिपूरित हो वहीं 'आर्यमित्र' यह भी आशा करता है कि आर्य समाज मे जो तत्व द्वन्द उत्पन्न कर रहे हैं सम्पत्ति एव पद के प्रलोभन तथा अधिकार सीमा के अर्जन मे दुर्भाग्यवश सलग्न हैं उनका भी मन और विचार इस सप्ताह पर्व पर प्रक्षालित हो और सब स्वच्छ मन से आर्य समाज के जो मूलभूत उद्देश्य हैं उनके प्रचार और प्रसारमे लगें इसी मे समाज और देश का कल्याण निहित है। दूसरो की चिकित्सा करने वाला चिकित्सक स्वय स्वस्थ एव प्रभावी होना चाहिये यही बात आर्य समाज के कर्णधारो पर भी घटित होती है और वर्तमान परिस्थितियाँ भी आर्य समाज को सगठित होने का सकेत करती हैं विघटित होने का नहीं।

प्रधान मन्त्री की विदेश यात्रा-

—भारत के प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी अगस्त मास के प्रथम दस दिनो मे विदेश यात्रा पर रहे। पहले तो लन्दन मे राष्ट्र कुल के छै देशों का एक सम्मेलन हुआ और उसने दबाव डाला कि राष्ट्र कुल का शिरोमणि देश ब्रिटेन, रगभेद नीति के पोषक दक्षिण अफ्रीका का आर्थिक एव व्यावसायिक प्रतिबन्ध करे। छः देशों ने परामर्श दिया परन्तु ब्रिटेन की दृढ़ निश्चयी महिला प्रधान मन्त्री अपने विचारों से न हिलीं न डुलीं।

दूसरा सम्मेलन अमेरिका के दक्षिण पूर्व की ओर बसे हुए मेक्सिको मे हुआ जहाँ छोटे,बड़े छै राष्ट्र सम्मलित हुए और उन्होंने विश्व की दो महा शक्तियो रूस और अमेरिका से अनुरोध किया कि वे अणु एव परमाणु विस्फोटक बमों को न बनावें और ऐसे घातक अस्त्रों पर रोक लगाई जाय केवल अनुरोध की कुछ पक्तिया पारित करके यह सम्मेलन भी समाप्त हुआ।

श्री राजीव गाधी इस समय विश्व की राजनीति में दो विषयो पर बल दे रहे हैं प्रथम दक्षिण अफ्रीका की रगभेद नीति का विरोध दूसरे आणुविक बमों के निर्माण एव प्रयोग पर प्रतिबन्ध। दक्षिण अफ्रीका मे श्वेत जातिया अश्वेत मूल अफ्रीका निवासियों के साथ जो दुर्व्यवहार कर रही हैं वह निन्दा के योग्य है परन्तु दक्षिण अफ्रीका से ससार के समस्त देश आर्थिक एव व्यवसायिक सम्बन्ध समाप्त कर दें यह अधिक तर्क सगत नहीं है। ब्रिटेन, अमेरिका एव योरुप के दूसरे देश दक्षिण अफ्रीका मे बहुत बडी अपनी पूजी लगाये हैं और वहा से लोहा, प्लैटेनियम तथा अन्य कच्चे माल प्राप्त करते हैं यदि वहा से व्यवसायिक सम्बन्ध समाप्त कर दिए जाय तो वहा के उद्योग खनिज तथा यान्त्रिक बन्द हो जायेंगे और उसका प्रभाव अश्वेत अफ्रीकनों पर पड़ेगा जो उसमे कार्य करते हैं। वहा बेरोजगारी बढ़ जायेगी और जनता आर्थिक दुर्व्यवस्था ग्रस्त होगी तथा जो देश बहुत अधिक प्रतिबन्ध पर बल देते हैं उनका दक्षिण अफ्रीकाके साथ कोई विशेष व्यवसायिक सम्बन्धभी नहीं है। दक्षिण अफ्रीका से मिले दो अफ्रीकन देश 'जाम्बे' और 'जिम्बाबिया' जो श्री राजीव के स्वर मे स्वर मिला रहे थे उनकी स्थिति खतरनाक है क्योकि यह दक्षिण अफ्रीकासे घिरे हैं और आयात एव निर्यात के लिए वहीं के समुद्र तट का प्रयोग करते हैं दक्षिण अफ्रीका ने [illegible] पर प्रतिबन्ध लगा दिया और इनके यहा आर्थिक विषमता प्रारम्भ हो गई अत आवश्यक है कि हर कदम पर प्रतिबन्ध की माग न उठाकर वहा के अश्वेत आन्दोलन और उसके नेता माण्डले को हमे हर प्रकार से सहायता देना चाहिए क्योकि ब्रिटेन और अमेरिका से भारत का अधिक विरोध भविष्य में हितकर नहीं हो सकता।

आणुविक बम या आणुविक अस्त्र के परिसमाप्ति की माग भी वह देश कर रहे हैं जो आणुविक शक्ति के विकास मे बहुत पीछे हैं। बात हमेशा उसकी सुनी जाती है जो अपना समकक्ष हो यही कारण है कि रूस और अमेरिका पर इन देशों के सम्मेलन और उनके अनुरोध का कोई प्रभाव नहीं है तथा राष्ट्रपति रीगन ने इस प्रस्ताव को व्यर्थ और निरर्थक कहा है। राजीव जी जिन देशों का सम्मेलन करते हैं वह अमेरिका या रूस पर निर्भर हैं। राजीव जी अभी रूस अमेरिका ओर योरुप के बड़े देशों का नेतृत्व नहीं कर पाए हैं। असहाय देशों का सम्मेलन एकत्रित करना कोई श्रेयस्कर नहीं है। भारत को अणुशक्ति

(शेष पृष्ठ ६ पर)

कुछ नये रहस्य : इन्दिरा जी की हत्या के चक्रव्यूह के

——अश्विनी मिश्रा (स्थानीय सम्पादक, पंजाब केसरी, दिल्ली)——

(गतांक से आगे)

जिन दिनों ये बयान जारी किये गये, उन दिनो कुख्यात आतंकवादी सिमरनजीत सिंह मान मध्यप्रदेश में था। सम्भव है ये बयान खुफिया पुलिस को धोखा देने के लिए दिये गये हों। वैसे मध्य प्रदेश शुरू से ही आतंकवादियो के लिए 'पीस जोन' रहा है। याद रखना होगा कि निरकारी बाबा गुरबचन सिंह की हत्या का पहला प्रयास राज्य के जिला मुख्यालय दुर्ग मे ही हुआ था।

'आपरेशन ब्लू-स्टार' के विरोध मे आई० पी० एस० सेवाओं से स्तीफा देकर भागने वाला आतंकवादी सिमरनजीतसिंह मान सबसे पहले इदौर मे आकर रहा। सिमरनजीत सिंह मान इससे पहले पाकिस्तान की सीमा से लगे पंजाब के फरीदकोट जिले का एस० पी० था। उसकी आतंकवादियों से साठ गाठ होने का शक होने के कारण उसे वहां से हटाकर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, बम्बई मे तैनाती दी गई थी। यहीं से वह त्यागपत्र देकर गायब हुआ था। अगस्त ८४ के अन्त मे वह इन्दौर पहुचा। इन्दौर मे वह अमरजीतसिंह नामक एक सिख ट्रांसपोर्ट व्यवसायी के यहां ठहरा कुछ दिन बाद अमरजीतसिंह मान को शार्नसिंह सहित देवास जिले के सिंगवाडा गांव मे बने एक फार्म हाउस मे ले गया। मान की सेवा मे यहा एक फियेट कार रखी गई। देवास-उज्जैन रोड पर स्थित यह फार्म हाउस देवास के भूतपूर्व राजा यशवत राव पवार (जूनियर) के एक नजदीकी रिश्ते दार अजयसिंह जाधव का है। श्री जाधव सिमरनजीत सिंह मान के साले हर्जिदर सिंह के साथ असम के चाय बागान मे कार्यरत रहे हैं। मान इस फार्म हाउस मे ५ अगस्त ८४ से १६ अगस्त ८४ तक बेखटके रहा। यहां से वह दुर्ग गया। वहां वह राज्य मे आतंकवादियो के प्रमुख आश्रयदाता सुक्खासिंह से मिला। वहा सुक्खासिंह ने भिलाई हाउस (भिलाई स्टील प्लाट का अतिथिगृह) मे सिमरन जीतसिंह मान के ठहरने को माकूल व्यवस्था की। सुक्खासिंह ने यहां मान को अपने मित्र मनजीत सिंह से मिलवाया। सुख-चैन से एक सप्ताह यहा रहने के बाद सिमरन जीतसिंह मान सुक्खासिंह के साथ उसी कार मे नागपुर गया।

सुविज्ञ सूत्रो के अनुसार १५ अगस्त ८४ को जब इन्दिरा गांधी लालकिले पर तिरगा फहराने गई थीं तभी ये देशद्रोही उनका काम तमाम कर देना चाहते थे। लेकिन तब प्रधान मन्त्री की सुरक्षा मे तैनात सब-इ सपेक्टर बलबीर सिंह के ऐन मौके पर भारी रकम की माग किये जाने से यह कुचक्र पूरा न हो सका।

१५ सितम्बर को तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्रीमती गाधी भारतीय राष्ट्रीय छात्र सगठन के अधिवेशन को सम्बोधित करने नागपुर आने वाली थीं। मान ने वह सभा स्थल देखा। तब इन षड्यन्त्रकारियो ने श्रीमती गाधी को नागपुर के राष्ट्रीय छात्र सगठन के अधिवेशन मे निशाना बनाने की योजना तैयार की। मान नागपुर मे इदिरा गाधी की हत्या के लिए माकूल सम्भावनाओ का पता लगाते ही दुर्ग मे रहा। इदौर और देवास मे आराम फरमाता रहा, पर राज्य सरकार की पुलिस, उसकी खुफिया शाखा के कान पर जू तक नहीं रेंगी। आई०बी०ने जब इस सबध मे खोज-खबर शुरू की तो उनके तथ्यो को महज इसलिए झुठलाने की चेष्टा की गई ताकि वह अपनी जिम्मेदारी से बच सके।

१५ सितम्बर ८४ को अतिंदरपालसिंह और सिमरनजीतसिंह मान दोनों कलकत्ता मे थे। उसी तारीख को अतिंदरपाल ने कलकत्ता के प्रमुख अग्रेजी अखबार 'द टेलीग्राफ' के सवाददाता सुमीरलाल को इण्टरव्यू दिया। इसमे उसने श्रीनगर मे लगे हुए एयरबस अपहरण काड की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली थी। वैसे यह साक्षात्कार इस शर्त के साथ दिया गया था कि अतिंदरपाल सिंह के कलकत्ता छोडने के बाद ही उसे प्रकाशित किया जाए परन्तु 'द टेलीग्राफ' के सम्पादक एम० जे० अकबर की जानकारी मे जब यह बात आई तो उन्होने इस इटरव्यू को उसके महत्व को देखते हुए तत्काल छापने का निर्देश दिया। नतीजन १८ सितम्बर ८४ को यह इटरव्यू पहले पृष्ठ पर छपा।

मान और अतिंदरपाल सिंह मूलत 'ईस्टर्न जोन सिख कांफ्रेंस' मे भाग लेने कलकत्ता आए थे। अचानक 'द टेलीग्राफ मे खबर छप जाने से वे परेशानी मे पड गए। इतना होने के बाद भी पश्चिम बगाल पुलिस का ध्यान इस ओर नहीं गया। २३ सितम्बर को दोनो ने ईस्टर्न जोन सिख कांफ्रेंस मे 'आपरेशन ब्लू स्टार' का बदला लेने के लिए उत्तेजक भाषण दिए और फिर कलकत्ता से फरार हो गए।

गुप्तचर सूत्रो के अनुसार नागपुर राष्ट्रीय छात्र सगठन के अधिवेशन मे इन देशद्रोहियों की प्रधान मन्त्री की हत्या की योजना महज इसलिए नाकाम हो गई कि जिस डायस से प्रधान मन्त्री ने भाषण दिया, वह रिवाल्वर की रेंज से काफी दूर था। 'टेलिस्कोपिक राइफल' ऐसे भीड भरे माहौल मे ले जाना खतरे से खाली नहीं था। १५ अगस्त को दिल्ली के लाल किले और १५ सितम्बर को नागपुर मे, दोनों बार प्रधान मन्त्री की हत्या के षड्यन्त्र मे मुख्य भूमिका अतिंदरपालसिंह और सिमरनजीत सिंह मान की मानी जाती है, लेकिन दोनो तिथियो मे ये दोनो इन शहरो से बाहर थे। ये लोग हत्या की योजना तैयार कर सम्बन्धित शहर छोड देते थे। कुछ अन्य गुप्तचर सूत्रो के अनुसार मान के अलावा अतिंदरपालसिंह ने भी दुर्ग और नागपुर की गुप्त यात्रायें की थीं। वह पूरे सितम्बर माह मान के निकट सम्पर्क मे रहा। इसके अलावा उसकी भिडरावाले के अन्य कट्टर समर्थको सुक्खासिह, रामसिह रागी सुखतेजसिंह और कश्मीरसिंह से मुलाकातें हुई। कलकत्ता के बाद मान और अतिंदरपाल अलग-अलग हो गए।

अतिंदरपाल और उसके साथियो ने किस तरह श्रीमती इदिरा गाधी की हत्या की साजिस सफलतापूर्वक रची, इस बारे मे बाकी अगली किश्त मे पढें।

(क्रमश)

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम् :-

आर्य समाज कैसे बढ़े ?

(कल्याण भाई आर्य मन्त्री आर्य समाज घाटकोपर, मुबई)

महर्षि दयानन्द के जिन तपस्वी अनुयायिओ के कारण आर्यसमाज ने सामाजिक आध्यात्मिक एव राजनैतिक क्रान्ति करके अछूतो को गले लगाया, महिलाओ को आदर दिलाया, जड के स्थान पर चेतन ईश्वर का मार्ग दिखाया और श्याम जो कृष्ण वर्मा, रामप्रसाद बिस्मिल व लाला लाजपतराय जैसे वीरो के द्वारा आन्दोलन चलवाकर निजाम हैदराबाद को धूलि चटाकर देश को आजाद करवाया, आज उस आर्य समाज को क्या हो गया हैं ?

आर्य भाईयों एव बहिनो, हम अधिकतर यही सोचा करते हैं कि क्या कारण है कि अब आर्य समाज का प्रभाव कम हो रहा है और उसका वेद प्रचार अधिक से अधिक क्यो नहीं हो रहा ? जबकि दूसरी ओर देशी तथा विदशी मतवादी विधर्मी लोग तेजी से आगे बढ रहे हैं, इस विषय मे मुझे ऐसा अनुभव हुआ है कि हम लोग धर्म के लिए कुछ भी तप करना नहीं चाहते । हम अपना समय तथा सम्पत्ति भी श्रद्धा-पूर्वक हृदय से दान करने को तैयार नहीं । अपनी सन्तानो मे भी हम धर्म के प्रति उतनी श्रद्धा नहीं भर रहे ।

मैं (कल्याण जी भाई आर्य लुडवा (कच्छ गुजरात) निवासी) आपकी तरह आर्य समाज का एक छोटा सा सेवक हू । आज कल आर्य समाज घाटकोपर पर मुम्बई का मन्त्री हू । और पिछले बीस वर्षो से मुम्बई में भवन निर्माण का कार्य करता हू । इस बार मुझे अपनी उपरोक्त आर्य समाज की प्रचार की भावना से लगभग बीस दिन तक प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता श्री ब्र आर्य नरेशजी के साथ लगभग बीस दिन प्रवास मे साथ रहने का शुभ अवसर मिला ।

२८ फरवरी से २० मार्च तक हमने दिन रात ब्रह्मचारी जी के साथ रहकर उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र के अनेको ग्रामो, विद्यालयों तथा नगरो मे प्रवचनो तथा साहित्य वितरण से प्रचार किया । मुझे ब्रह्मचारी जी के साथ आगरा, एटा, फतेहपुर सीकरी जयपुर, उदय-पुर आबू पर्वत, पालनपुर (गुजरात) मोरवी, टकारा, धोराजी, सुपेडी, गांधी धाम, कच्छ-भुज, धनसुरा, करणावती (अहमदाबाद), बडोदरा, सूरत, गुरुकूल सूपा (नवसारी) के नगरो तथा उनके बीच मे आने वाले अनेको ग्रामो से प्रचार कार्य मे सहयोग करने का अवसर मिला । प्रत्येक समाज तथा मन्दिर मे श्री ब्र आर्य नरेश जी का भरपूर आदर हुआ और सभी लोगो ने उन्हे इस बात के लिए शिकायत की, कि आप हमारे लिये एक दो दिन ही देते हैं । पू० ब्र० आर्य नरेश जी को देखकर अनेक लोग कह उठते थे कि हमने ऋषि दयानन्द को तो नहीं देखा परन्तु आपको देखकर ऋषि दयानन्द जी की याद ताजा हो जाती है । इस बात को सुनकर यह कह देते थे कि मैं तो ऋषि दयानन्द के पैरो की धूलि भी नहीं । टकारा पहुचकर मैंने देखा कि डीसा, सख्येश्वर, राधनपुर, भाभर, पोरबन्दर, वीरपर राजकोट जूनागढ़ तथा दूसरी अनेको समाजो ने भी समय मागा पर ब्रह्मचारी जी के पास उन दिनो समय नहीं था और आगे समय महाराष्ट्र सभा की शताब्दी के लिये दे रखा था । पू ब्र जी के साथ इस प्रचार यात्रा मे मुझे अनेक अनुभव हुये जिनसे लाभ उठाकर हम आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ा सकते हैं । हम लोग वेद धर्म का प्रचार तथा प्रसार तो चाहते हैं पर उसके लिए अपना समय सम्पत्ति तथा सन्तान को लगाने के लिये तैयार नहीं जबकि और अनेकों पादरी घरबार छोडकर विदेश से चल-कर हमारे देश मे अन्दर ग्रामों तथा नगरो के मार्गो पर खडे होकर अपने मत की पुस्तकें बांटते है । ग्रामो के गरीब लोगों मे कष्ट सहकर प्रचार करते हैं । पूरा जीवन कोढ़ी-आश्रमों में लगा देते हैं, और ऐसी प्रेरणा अपनी सन्तानो को भी देते हैं । पर हमारे लोग धर्म के लिये ऐसा करने के बजाय ऐसा करने वालो की भी टाग खेचते हैं बीस दिन तक घर व बच्चो से तथा बिजनेस से अलग रहने के कारण किसी ने कहा इन्हें सम्भालिए इनकी पत्नी का क्या बनेगा ? ब्रहमचारी जी यह क्या कर रहें हैं ? व्यापार ठप्प हो जायेगा किसी ने कहा क्या जीप के ऊपर खडे होकर बीस-बीस पैसे की पुस्तकें बेचना कोई अच्छा काम है ? आर्य लोग विचारें क्या बिना त्याग के भी कभी आर्य समाज आगे बढ़ेगा ? क्या हमारी यह गृहस्थ की जिम्मेवारियाँ कभी खत्म होगी कितने लोग जिम्मेवारियो को पूर्ण करके वानप्रस्थी बन रहें हैं । खेद है कि आज हमे अपने धर्म के लिए सेवा करने मे शर्म आती हैं । ईश्वर हमे सुबुद्धि दें । दो चार लोगो ने मुझे क्या कहा मुझे इस बात की चिन्ता नहीं बल्कि मुझे इस बात की बहुत प्रसन्नता है कि जहाँ एक और हमारे परिवार के श्री शिवगण जो बापू जैसे लोगो ने हार्दिक आशीर्वाद दिया व आर्य जनो ने सत्कार किया वहाँ दूसरी और पूज्य श्री ब्रह्मचारी आर्य नरेशजी जैसे विद्वान योग साधको के साथ रहकर शारीरिक बौद्धिक तथा आत्मिक दृष्टि से अत्यन्त लाभ हुआ । ३-४ वर्ष पूर्व आपको यह विदित ही होगा कि सारे गुजरात की तरह ही कच्छ भुज मे भी ब्रहमचारी जी के आने से पूर्व आर्य समाज का प्रचार न के बराबर ही था लगभग चार वर्ष पूर्व जब मैंने उन्हे आर्य समाज भाडुप के उत्सव पर अपने बेटे चिरजिव जगदीश के मुण्डन सस्कार हेतु अपनी धर्मपत्नी पार्वती बेन की राय से (कच्छ) आने का निमन्त्रण दिया तो उस समय उनकी योजना के ही अनुसार ईश्वर की कृपा से लगभग पचास हजार व्यय करके मैंने वहाँ यज्ञ व प्रचार करवाया उनकी प्रेरणा से ही वहा दो स्थानो अमृत फार्म (निरोणा) एव कच्छ भुज नगर मे आर्य समाजो की स्थापना हुयी तथा अमृतफार्म विथोण नखत्राणा आदि स्थानो पर बडे-बडे यज्ञ हुये ।

जिन माताओ व सज्जनो को हिन्दी व सस्कृत नहीं भी आती थी उन्होने भी मत्रपाठ करके दैनिक यज्ञ करना शुरू किया । लोगो ने घरो से भैसो को बेचकर गौऐं पालकर गाय माता की सच्ची जय बोली । पर यह सब कुछ प्रचार से ही हुआ । आप लोग पूरे भारत की प्रति-सभाओं तथा सार्वदेशिक से भी परिचित होंगे । केवल गुजरात ही नहीं सभी स्थानो की प्रचार न होने की स्थिति लगभग बराबर हैं ।

ब्रह्मचारी श्री आर्य नरेशजी के साथ रहकर मैंने अनुभव किया कि लोग आर्य समाज को सुनना तथा जानना चाहते हैं परन्तु ब्रहमचारी जी की तरह समझानेवाले तेजस्वी व तपस्वी विद्वान तथा सहयोग देकर प्रचार करने वाले लोग ही बहुत कम हैं १९८५ मे जब ब्रहमचारी जी रात्री ९-३० बजे आर्य समाज आदर्शनगर जयपुर ठहरने आये थे तो ताला अन्दर से बन्द था । सेवक अन्दर था उसने ताला नहीं खोला ब्रह्मचारी जी के एक साथी ने गेट को लांघ कर ताला खुलवाया । इस बार भी वे लोग महसूस कर रहे थे कि उस रात्री हमारे से भूल हुई और ब्रह्मचारी जी को कष्ट हुआ । उस सेवक को ही उन्होने बदल दिया । इस बार १९८६ मे जयपुर वालो ने मेरा तथा उनका बहुत आदर किया । पालन पुर मे देवीशकर जोशी जी तथा एस० टी० वालों की फूलों की वर्षा को तथा एक दिन के कार्यक्रम मे हजार बारह सौ की भीड़ को हम नहीं भूल सकते ।

क्रमश.

श्रावणी पर्व

(लेखिका सावित्री देवी शर्मा १०, केलाबाग सावित्री सदन बरेली)

श्रावणी उपाकर्म महत्वपूर्ण वैदिक पर्व है । गृह्य सूत्रों के अनुसार इस पुण्य पर्व का सम्बन्ध वेदाध्ययन् के शुभारम्भ से है । वर्षा कालीन चातुर्मास्य के मनोरम् वातावरण मे वैदिक स्वाध्याय को प्रारम्भ कर पौष मास मे इसके समापन का विधान है । श्रवण नक्षत्र वाली पूर्णिमा को वेदाध्ययन का व्रत धारण करने से इसे श्रावणी कर्म कहा गया । स्वाध्याय हमारे जीवन का मुख्य कर्म है शतपथ ब्राह्मण में इसका माहात्म्य वर्णन करते हुए ऋषिवर लिखते है–अथात स्वाध्याय प्रशसा । प्रिये स्वाध्याय प्रवचने भवत । युक्तमना भवति । अपराधीनो अहरहरर्थान् साधयते । सुख स्वीपति । परम चिकित्सक आत्मनो भवति । इन्द्रिय सयमश्च । एकारामताच । प्रज्ञावृद्धि । यशोलोक पक्ति । प्रज्ञा वर्धमाना चतुरो धर्मान् ब्राह्मण मभिनिष्पा दयति । ब्राह्मण्य प्रतिरुपचर्या यशो लोकपक्तिम । लोक पच्यमानश्चतुर्भि धर्म ब्राह्मण भुनक्ति । अर्चयाच दानेन चाज्येयतया चावध्यतया च । (मा० शतपथ ब्राह्मण ११-५-७-१) अर्थात् स्वाध्यायशील ब्राह्मण युक्तमना होता है । अपराधी न होकर प्रतिदिन विविध पदार्थों की सिद्धि करता है । रात्रि में सुख पूर्वक सोता है । अपनी आत्मा का परम चिकित्सक होता है । उसे इन्द्रिय सयम, एकाग्रता और प्रज्ञावृद्धि का लाभ होता है । ससार में उसका यश निरतर बढ़ता है । उसकी ऋतम्भरा प्रज्ञा चार प्रकारके ब्राह्मण भाव को उत्पन्न करती है । अध्ययन, अध्यापन तथा पाठन यजन, याजन । यही मुख्य ब्राह्मण धर्म हैं ।

यह लोक भी इस उस ब्राह्मण धर्म से लाभान्वित होकर चार प्रकार से उसकी आराधना करता है—पूजा इष्टवस्तु का समर्पण, उसकी हानि न करना, तथा अबध्यता ।

स्वाध्याय का अथ है–"स्वस्याध्ययनम" अर्थात् आत्म गुणदोष निरीक्षण । अपने गुणो का तो प्राय सभी को ज्ञान होता है किन्तु स्वछिद्रान्वेषण में सजग रहना जितेन्द्रिय वीर पुरुषो का काम है । यह स्वदोषदर्शनिवस्तुत सदग्रन्थ के स्वाध्याय तथा साधुजनों का उपदेश श्रवण करते समय मनुष्य स्वाभाविक रूप से करने लगता है । दुराचारी के दोषो का दुस्साध्य सुधार वैज्ञानिक स्वाध्याय प्रक्रिया से सहज सा प्रतीत होने लगता है । अत शतपथ कार ने लिखा–यन्ति वा (आप, एत्यादित्य एति चन्द्रमा यन्ति नक्षत्राणि । यथा ह ता एता देवता नेयु 'नंकुर्यु' एव हैव तदहर्ब्राह्मणो भवति यदह स्वाध्यायो नाधीते । तस्मात् स्वाध्यायोऽध्येतव्य (मा० शतपथ ११-५-७-१०) अर्थात् सम्पूर्ण चराचर जगत् गतिशील है । जल धारायें निरतर प्रवाहित हो रही हैं । सूर्य अविराम गति से प्रतिदिन अपार नभ का एक चक्र पूरा कर लेता है । चन्द्रमा अपने नियमानुसार चल रहा है । गगन के नक्षत्र भी अपनी गतिविधियो मे सलग्न हैं । यदि ये भौतिक देवता गतिशीलता को छोड स्वकर्म मे प्रवृत्त न होते तो जो दुर्दशा इस ससार की होगी वही अधोगति उस ब्राह्मण की होगी जिस दिन वह स्वाध्याय के पुण्य लाभ से वचित रहेगा ।

स्वाध्याय के व्रत को अव्यवच्छिन्न रखने के लिए ही आचार्य यथा गुरुकुलीय शिक्षा के अनन्तर सामाजिक क्षेत्रमे समावर्तन करने वाले अपने शिष्यों को विशेष आदेश देते हैं– 'स्वाध्याय प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम्" अर्थात् स्वाध्याय तथा प्रवचन मे कभी प्रमादमन करना । यह सकलित जीवन के अनिवार्य अङ्ग हैं । धन वैभवपूर्ण–पृथिवी का दान करके जो विशेष पुण्य प्राप्त होता है उससे भी तिगुना लाभ स्वाध्याय से होता है । त्रिलोक विजयी कुबेर भी जिस सुख को प्राप्त नहीं कर सकते वह दिव्य आनन्द एकात सेवी स्वाध्याय शील जनो को सुलभ है । इस स्वाध्याय मे कभी अनध्याय नहीं होना चाहिए । भले हो ऋग् यजु, साम, अथर्व की एक ऋचा का पाठ मात्र ही करें । विध्यर्थ वादात्मक ब्राह्मण वाक्य का ही उच्चारण करें किन्तु असमर्थ अवस्था मे भी इस कर्म मे व्यवच्छेदन करें । वैदिक वाङमय का अध्ययन ही यहा स्वाध्याय का वास्तविक प्रयोजन है । यद्यपि अन्य धार्मिक ग्रन्थोका पठन-पाठन भी जीवनोपयोगी है किन्तु वेदवाणी ईश्वरीय ज्ञान होने स्वत प्रमाण एव पूर्ण निर्भ्रान्त हैं । ससार के सर्वाङ्गीण विकास के लिए वैदिक आलोक का प्रसार अनिवार्य है । अत युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदाध्ययन को आर्य समाज के तृतीय नियम मे आर्यो का परम धर्म बताया है–वेदो का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है । (आर्य समाज का तीसरा नियम) आत्म कल्याण चाहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को वेदों का स्वाध्याय प्रतिदिन आवश्यक है ।

श्रावणी का पुण्य दिवस वेदारम्भके लिए ही नियत किया गया है । इसी पावस काल के प्रत्येक वर्ण के जनो को निरन्तर वर्षा के कारण मार्गो के अवरुद्ध हो जाने से अपने दैनिक कार्यों से कुछ अवकाश मिल जाता है और निश्चिन्त होकर वेदो का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सुगमता से चल सकता है ।

श्रावणी उपाकर्म का दिन भारतीय हिन्दू समाज मे रक्षाबन्धन के रूपमें भी मनाया जाता है । प्राचीन कालमे ब्रह्मवर्चस्वी ब्राह्मण वेदो की रक्षार्थ क्षत्रिय तथा वैश्यों के कर कमलो मे रक्षा सूत्र बाध कर उन्हें वेद रक्षा का व्रत दिलाते थे । मध्य युगमे विदेशी आक्रान्ताओंके भय से भारतीय देवियां अपने सतीत्व की रक्षा के लिये भाइयो की बलिष्ठ कलाइयो में स्नेहमय रक्षाबन्धन बाध कर यह पवित्र पर्व मनाने लगीं । जो भाई बहन के सच्चे स्नेह का प्रतीक तथा नारी रक्षा के पावनव्रत का स्मारक रूप सिद्ध हुआ ।

वैदिक सस्कृति मे यज्ञोपवीत और कर्मकाड का विशेष सम्बन्ध है । श्रेष्ठतम यज्ञ करने से पूर्व नवीन यज्ञोपवीत यजमान अवश्य धारण करता है व्रतबन्ध सूत्र मनुष्यो के तीन विशेष कतव्यो (ऋणों = पितृ ऋण, देव ऋण, ऋषि ऋण) की याद दिलाता है । अत ऋण त्रय का प्रतीक यह यज्ञोपवीत इस ब्रह्म यज्ञ के आरम्भ से पूर्व अवश्य पहनना चाहिए ।

सम्पूर्ण विश्वमे शाश्वत ज्ञान यज्ञ का यह पावन पव प्रत्येक परिवार सस्था एव आर्य समाज मन्दिरो द्वारा वेद कथा सप्ताह के रूप मे अवश्य मनाया जाना चाहिये । वेदश्रमी ब्रह्म ज्ञानियो का ब्रह्म घोष जन मानस को आलोकित करने के लिए निरन्तर गूंजता रहे । अज्ञान तिमिरावृत वसुन्धरा के सन्ताप को ज्योतिमय वेदभास्कर के अतिरिक्त और कौन मिटा सकता है । सत्य ही है–

इदमन्धन्तम कृत्स्न जायेत् भुवनलयम् ।
ज्योति वेदविधानोक्त्या आ ससाराम्न दीप्यते ।।
नम ऋषिभ्य । छन्दोभ्य स्वाहा ।

"सम: समं शमयति"

आँख आना (कंजॉक्टीवाइटिस) और होम्योपैथी

(डा० ए० पी० शुक्ला बी० एम० एस० अवधपुरी, सर्वोदय नगर लखनऊ)

आख हमारे शरीर का एक महत्वपूर्ण अग है, इसकी रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। 'कजक्टीवाइटिस' आख का एक साधारण रोग है किन्तु उचित चिकित्सा न हो पाने से यह असाधारण रूपले सकता है।

लक्षण—यह रोग मुख्यत सर्द-गर्म के सधिकाल मे होता है। यह सक्रामक रोग होता है। इस रोग मे आखें लाल हो जाती हैं, लगातार आखो से पानी गिरता है, और उनमे दर्द गडन या करकराहट होने लगती है इसके साथ कभी कभी नाक से भी पानी गिरने लगता है रात मे आखें कीचड से चिपक जाती हैं आखो मे सूजन आ जाती है। रोशनी सहन नहीं होती है।

चिकित्सा—सर्व प्रथम गरम जल मे बोरिक एसिड पाउडर डालकर रुई से आखों की धुलाई करते रहना चाहिए जिससे उनकी पूरी सफाई एव सिकाई भी होती रहेगी। प्रथमा अवस्था मे दर्द के साथ अधिक लाली होने पर बेलाडोना ३० शक्ति खाना चाहिए। लाली के साथ प्रवाह घाव मवाद की तरह अधिक पानीगिरनेकी स्थितिमे यूफ्रेशिया ३० शक्ति खाना और यूफ्रेशिया मूल अर्क ३–४ बूद आधा औंस डिस्टिल्ड वाटर मे मिला कर दिन मे ४-५ बार दो-दो बूदें डालना चाहिए। आखो से अधिक गाढ़ा कीचड आने और रात मे आखें चिपक जाने पर अर्जेन्टम नाइट्रिकम ३० शक्ति खाना चाहिये। आखो को धूल, रोशनी तथा सक्रामकता से बचाने के लिए रगीन शीशे वाला चश्मा पहनना चाहिये। उपर्युक्त औसधिया रोग लक्षण के तीव्रतानुसार २–२ घण्टे पर अथवा ३–३ घण्टे पर प्रयोग करना चाहिए। आखें सट जाने के साथ पलकों पर छोटी फुंसिया होने पर पल्साटिला ३० शक्ति भी अच्छा काम करती है।

"श्रावणी पर्व"

(शेष पृष्ठ २ से आगे)

की ओर बढ़ना चाहिए तभी हम पाकिस्तान का मुख मोड सकते हैं और अमेरिका तथा रूस हमारा समादर करेंगे जब हम उनके समकक्ष होगे। अहिसा भी उसी को शोभा देती है जो शक्तिशाली होता है। सिह के अहिसा की प्रशसा होती है वैसे मृग और श्रगाल चाहे जितनी अहिसा की चर्चा करें दूसरे पशु उन्हें शक्ति हीन ही मानते हैं।

भारत वर्ष में स्वय ज्वलन्त समस्यायें हैं। पजाब का आतकवाद अपनी ऊचाइयों पर पहुच रहा है। दिल्ली मे मुस्लिम सेनायें बन रही हैं। बाबरी मस्जिद को लेकर हिदुस्तान का मुसलमान आखें दिखा रहा है। अरुणाचल मे चीनियों के चरण बढ़ रहे हैं और विन्धिया चल की पर्वत मालाओं पर बसे हुए आदिवासी प्रथक आदोलन की बात सोच रहे हैं। दार्जलिंग मे गोरखा-फ्रन्ट काम कर रहा है तथा देश मे कीमतें बढ़ रही हैं, सामान्य व्यक्ति भुखमरी की तरफ जा रहा है इन सभी समस्याओ से मुख मोडकर अपने घर की गिरती दीवारों की चिन्ता न करके दूसरे की दीवार पर पलस्तर करने के लिये दौडना बुद्धिमानी नहीं है। अत प्रधान मन्त्री को देश की इन परिस्थितियों पर गम्भीरता पूर्वक ध्यान देना चाहिए और बढ़ती हुई मुस्लिम साम्प्रदायिकता से निपटना चाहिए क्योंकि यदि पजाब मे हम असफल होते हैं तो आतकवाद के विष अन्य भागो मे फूटने ही वाले हैं। पहले अपना घर फिर पड़ोसी के चौपाल मेझाकना उत्तम है।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

"वेद विरुद्ध मत और मूर्तिपूजा"

(श्री जगदीश शरणशीतल भू० पू० प्रधान आर्य समाजजावपुर गर्ग बुकडिपो चांदपुर, बिजनौर)

महा भारत के एक हजार वर्ष पूर्व से ही आर्य जाति वेद विरुद्ध कुमार्ग पर चलने लगी थी। महा भारत के पश्चात् तो इसका और भी विकृत रूप हो गया। वर्ण भेद का आधार गुण, कर्म और स्वभाव के स्थान पर न होकर जन्म जात होने लगा। ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न होने के कारण वह कितना भी नीच कर्म क्यों न करे फिर भी वह श्रेष्ठ समझा जाने लगा। ऊच नीच का भेद इतना बढ़ गया कि शूद्र अत्यन्त नीच और हीन समझा जाने लगा। उन्हें न वेद पढ़ने का अधिकार था और न यज्ञ करने का। गौतम सूत्र के अनुसार यदि कोई शूद्र वेद मन्त्र सुन ले तो उसके कानो मे सीसा या लाख पिघला कर डाल दिया जाए। और यदि वह वेद मन्त्र का उच्चारण कर ले तो उसकी जीभ काट ली जाए। उसके लिए उन्नति के सारे द्वार ही बद कर दिए गये। ना वह विद्याध्ययन ही कर सकता था और नाही और कोई धार्मिक तथा सामाजिक प्रगति।

न्याय को इतना कलकित कर दिया गया कि एक ही अपराध मे चारो वर्णों के लिए पृथक पृथक दड का विधान था। उसी अपराध मे ब्राह्मण को सबसे कम तथा शूद्र को सबसे अधिक दड दिया जाने लगा। जबकि वैदिक मर्यादा के अनुसार सबको उन्नति करने का समान अधिकार था। योग्यता और विद्वता के द्वारा ही उसका वर्ण निश्चित किया जाता था। ब्राह्मण यदि नीच कर्म करे तो वह शूद्र और यदि शूद्र अच्छे कर्म करे तो वह ब्राह्मण हो सकता था। परन्तु अब इस वेद मर्यादा को नष्ट कर दिया गया। वेद के स्थान पर पुराण तथा नाना प्रकार के अवैदिक ग्रन्थो को ही वेद वाक्य समझा जाने लगा। महीधर तथा सायणाचार्य जैसे वाममार्गी विद्वानो ने अपने मतानुसार आधुनिक काल के शब्द कोष तथा व्याकरण के आधार पर असगत वेदो के अर्थों का अनर्थ कर दिया। वेद मन्त्रो के द्वारा यज्ञो मे पशु तथा नर बलि दी जाने लगी। चारो ओर दुराचार अनाचार ऊच नीच छुआ-छूत तथा हिंसा का साम्राज्य स्थापित हो गया। इसी समय अर्थात् आज से लगभग छब्बीस सौ वर्ष पहले कुछ समय के अन्तर से ही महावीर तथा बुद्ध जैसे महा पुरुषो का जन्म हुआ। उन्होने समाज की दीन हीन दशा को देखा। राजपाट छोडकर सन्यासी बने। मन मे विचार किया कि यह कैसा ईश्वर है और यह कैसी उसकी पवित्र वाणी वेद हैं जिसके नाम पर यह सब पापाचार तथा अत्याचार हो रहा है। यह दोनों महा पुरुष सस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान तो थे नहीं जो वेदोका गहन अध्ययन करते और उस समय के पाखडी पडितों से शास्त्रार्थ करके उनसे लोहा लेते और वेदो के सही अर्थ का प्रकाश करते। जैसा कि महर्षि दयानन्द ने सारे ससार को वेद के पवित्र ज्ञान से परिचित कराया और उन सभी भाष्यो का निरुक्त तथा निघटु के आधार पर युक्ति पूर्वक सत्यता के साथ खडन किया जिन्होने वेदो के अर्थों का अनर्थ करके उन्हें कलकित कर दिया था। उन्होंने उद्घोष किया कि वेद ईश्वरकी पवित्र वाणी है तथा सब सत्य विद्याओं की पवित्र पुस्तक है।

परन्तु यह दोनों महा पुरुष (महावीर तथा बुद्ध) तोपाली भाषा के साधारण विद्वान थे। सस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान न होने के कारण उन पौराणिक पडितो से वेद के द्वारा टक्कर लेना इनकी सामर्थ से बाहर था। क्रमश

श्रद्धांजलि–

दिवंगत-श्रीकरण जी शारदा

[जन्म–१४ जून १९१९ निधन–२० जुलाई १९८६]

जाना आना ससार का क्रम है। यह क्रम नहीं होता है इसका नाम ससार न होकर कुछ और होता, क्रम सामान्य होने पर भी इसमे सब सामान्य नहीं होते। जिनका योगदान अपने और अपने परिवार से हट कर समाज के लिए होता है, उनका जीवन व्यक्ति मे न होकर समाज मे प्रतिष्ठित हो जाता है। समाज मे व्यक्ति स्वय से नहीं अपने कार्यों से जीवित रहता है। यही जीवन बाद मे आने वाली पीढ़ी को जीवन की दिशा प्रदान करता है और सामाजिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। ऐसा ही प्रेरणादायी एक जीवन है परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्रीकरण जी शारदा का। आज वे अपने पार्थिव शरीर से हमारे मध्य नहीं रहे, उनकी भौतिक लीला समाप्त हो गई परन्तु उनका यश शरीर अक्षुण्ण हुआ हो हमे प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

शारदा जी को सामाजिक जीवन की कला अपनी पैतृक परम्परा से मिली थी। उनके परिवार मे देश भक्ति, समाज सेवा और सार्व जनिक कार्यों के निष्पादन की भावना को उच्च स्थान प्राप्त था। इसी परिवार से स्वर्गीय रामबिलास शारदा जो आर्य समाज के उच्च कोटि के नेता थे जिन्होने स्वामी श्रद्धानन्द, मास्टर आत्माराम अमृतसरी तथा स्वामी नित्यानन्द जी आदि के सहयोग से सार्वदेशिक सभा की स्थापना के पूर्व आर्यसमाज का नेतृत्व एव मार्गदर्शन किया। इसी परम्परा मे इनके सुपुत्र देशभक्त चादकरण शारदा का जीवन देश, धर्म तथा समाज के लिए समर्पित रहा है। उनके कार्य और नेतृत्व की कथा इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। इन्हीं के परिवार के श्रीकरण शारदा जी का जन्म आषाढ़ कृ० प्रतिपदा वि० स० १९७६ तदनुसार १४ जून १९१९ को बडौदा म हुआ था। आपके नाना राज्यरत्न स्व०आत्मारामजी अमृतसरी उस काल मे बडौदा मे निवास करते थे। इनकी माता जी का नाम सुखदा देवी था। वे भी अपने समय मे अग्रगण्य महिला समाज सेविका थीं, आपने अजमेर को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर अनेक लोककल्याण के कार्य किये थे। ऐसे योग्य माता पिता के मार्गदर्शन मे शारदा जी का लालन-पालन हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अजमेर के गवर्नमेन्ट हाई स्कूल तोपदडा मे तथा गवर्नमेन्ट कालेज अजमेर मे हुई थी। उच्च शिक्षा के लिए आपने आगरा कालेज आगरा को चुना तथा यहा से आपने बी० ए० एल०एल०बी० की परीक्षा सम्मान सहित उत्तीर्ण की।

यह समय था जब देश मे १९४२ का आन्दोलन अपनी परम सीमा पर था। शारदा जी की देशभक्ति ने उन्हें राष्ट्रीय सग्राम में कूदने के लिए बाध्य कर दिया तो इसमे आश्चर्य की क्या बात। इस युद्ध मे सक्रिय भाग लेने का आपको पुरस्कार मिला और आपको कालेज से निष्कासित कर दिया गया। एक देशभक्त समाजसेवी परिवार के उत्तराधिकारी के रूप मे आपको देखकर विदर्भ के प्रसिद्ध देशभक्त एव कांग्रेसके कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री बृजलाल बियाणी ने अपनी बडी पुत्री कमला का विवाह श्रीकरण जी के साथ कर दिया। शिक्षा प्राप्ति के अनन्तर आपने अजमेर को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। वकालत करते हुए आप सार्वजनिक जीवन मे भी बराबर भाग लेते रहे। आप १९४४ से १९५० तक अजमेर नगर कांग्रेस के मन्त्री तथा १९५३ तक प्रदेश कांग्रेस के सदस्य रहे। स्वतन्त्रता के उपरान्त कांग्रेस को अपने उद्देश्य से दूर हटते देखकर आप ने जनसघ की सदस्यता स्वीकार की। यहा भी जिले के अध्यक्ष के रूप मे तथा प्रदेश सगठनकर्ता के रूप मे नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति मे प्रतिष्ठित रहे। जितने भी राजनैतिक एव राष्ट्रीय आन्दोलन हुए आपने उनमे बढ-चढकर भाग लिया। १९७१ मे बगलादेश की मान्यता के लिए जनसघ द्वारा चलाये गये आन्दोलन मे भाग लेकर गिरफ्तार हुए और आप को तिहाड जेल मे रखा गया। इसी प्रकार पाकिस्तान के युद्ध मे जीते गये प्रदेश जब भारत सरकार ने लौटाने का निश्चय किया तब भी आप ने अटलबिहारी बाजपेयी के नेतृत्व मे सत्याग्रह किया।

जब भी देश मे बाहर या अन्दर निपत्ति आई, कहीं अन्याय होता लगा तो आपने अपने पूरे बल से उसका विरोध किया। श्रीमती गाधी ने जब देश मे आपातकाल थोपा तब आपको भारत सरकार बाहर कैसे रहने देती। आपको गिरफ्तार करके १४ मास तक अजमेर जेल मे रखा। १९७७ के चुनाव मे अजमेर की जनता ने आपको ससद मे पहुचा दिया, आप प्रचण्ड बहुमत से विजयी हुये। आपने इस ससद के कार्यकाल मे समाज एव देश के अनेक लोकहितकारी कार्य किये।

आर्यसमाज के क्षेत्र मे आपकी प्रारम्भ से ही रुचि थी। २२ अप्रैल १९५६ मे आप परोपकारिणीसभा के सदस्य रहे व सभा के पुस्तकाध्यक्ष तथा सयुक्त मन्त्री रहे। सन् १९६४से आजीवन आप परोपकारिणी सभा के मन्त्री चुने जाते रहे। आपके मन्त्रित्व काल मे सभा की उपलब्धिया गौरव प्रदान करने योग्य है। आपने न केवल सभा की सम्पत्ति सुरक्षा की अपितु उसे निरन्तर बढ़ाने का प्रयत्न करते रहे। आपका अधिकाश समय सभा के हित चिन्तन मे ही व्यतीत होता था। अस्वस्थ होने पर भी सभा के कार्य से न्यायालय मे जाना, प्रशासन के लोगो से मिलना सभा की सम्पत्ति व कार्यकलाप की देखभाल करना आपकी जीवन चर्या थी। १९८३ मे विश्व स्तर पर ऋषि निर्वाण शताब्दी का आयोजन कर आपने अपनी कर्मठता और भूमि भक्ति का अनुकरणीय परिचय दिया था। उस काल में कई वर्षों तक आपको निरन्तर अथक कार्य करना पडा, परन्तु कार्य की सफलता ही आपका लक्ष्य रहा। आपने अपने स्वास्थ्य व विश्राम की कभी परवाह नहीं की और आर्यसमाज के इतिहास के अविस्मरणीय समायोजन को आर्य जनता व सभा के कर्मठ सदस्यो के सहयोग से सफल कर दिखलाया। इस समारोह के अवसर पर सभा की ओर से अनेक ऐतिहासिक कार्य किये गये। ऋषि के अनेक ग्रन्थो के सुन्दर सस्करण प्रकाशित किये गये। वेद भाष्य के अतिरिक्त सभी ऋषिकृत ग्रन्थो को दो भागो मे आकर्षक साजसज्जा के साथ प्रकाशित कराया। ऋषि उद्यान मे एक भव्य सुन्दर विशाल यज्ञशाला का निर्माण भी आपने अपने पुरुषार्थ से कराया। यह यज्ञशाला शारदा जी की लगन और ऋषि के प्रति श्रद्धा का कीर्ति स्तम्भ है। शताब्दी के अवसर पर इस यज्ञशाला मे एक मास तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया था। इस प्रकार इस शताब्दी समारोह को आपके जीवन की सबसे बडी सफलता कही जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। तभी से आपका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जारहा था गत मास आप चिकित्सा के लिए कलकत्ता गये थे ओर हम सभी आशा कर रहे थे आप स्वस्थ होकर हमारा उत्साह बढ़ायेंगे और लम्बे समय तक मार्गदर्शन करेंगे परन्तु ईश्वरेच्छा बलीयसी। २० जुलाई की रात्रि मे उन्होंने अपने नश्वर शरीर का त्याग कर अपने यश शरीर को हमारे मध्य मार्ग दर्शक बना दिया। ऐसे कर्मठ लगनशील, ऋषि भक्त, आर्य के लिए हमारी नम्र श्रद्धाजलि।

परिवर्तिनी ससारे मृत को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वश समुन्नतिम्॥

–धर्मवीर

आर्य बहनों का रक्षा-सूत्र

[डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी श्यामगंज, बरेली]

देकर 'रक्षा' नाम इन्हें हा,
बहनो ने प्रिय स्वप्न सजाये ।
नहीं स्वार्थ" का भाव यहा है,
भाव प्रतिज्ञा का ये लाये ।
किन्तु शब्द भी दो कहने मे,
कितना हो भाई तुम हारे ।
बाध रही हू "सूत्र" तुम्हारे ॥

पारस्परिक स्नेह वर्धित हो,
जिसकी पावन परम्परा है ।
रत्न सगठन का सचित हो,
प्रेरित करती वसुन्धरा है ।
किन्तु बधे तुम सीमाओ मे,
तोड रहे क्यों नभ के तारे ।
बाध रही हू 'सूत्र" तुम्हारे ।

जिसने पुस्तक पढी प्रकृति की,
वही विवेकी मानव बनता ।
जीवन के इन कटु सत्यो को,
समरसता से है जो भरता ।
मुझे अलौकिक वस्तु चाहिये,
अर्पित कर दो बनकर प्यारे ।
बाध रही हू "सूत्र" तुम्हारे ॥

लौकिक, जो कुछ क्षण भगुर है,
करना चाह भूल है भारी ।
जो पथ मे विश्वास दीप दे,
मै उसकी कितनी आभारी ।
अस्तु छोडकर भ्राति भवर की,
बन जाओ प्रेरक और न्यारे ।
बाध रही हू सूत्र तुम्हारे ॥

देश, जाति, कुल की मर्यादा,
जिसके व्रती बनो महिमामय ।
स्वाभिमान से भर जायेगी,
बहिन तुम्हारी यह गरिमामय ।
सरस बिन्दु पर्याप्त मुझे बस,
नहीं चाहिये वैभव खारे ।
बाध रही हू "सूत्र" तुम्हारे ॥

बेमानी, बे मतलब है

इस भारत मे पढ़े लिखे अब वही लोग कहलाते हैं !
आख मूंद कर जो इङ्गलिश मे हिन्दी पर गुर्राते हैं ! !
मानो या मत मानो लेकिन यह दुनिया अब उनकी है !
जैसा साचा मिले उसी के अन्दर जो ढल जाते हैं ! !
तर और ताजा माल भाग्य मे है अब तिकडमबाजों के !
नेक कमाई करने वाले रूखी-सूखी खाते हैं ! !
सही बात कहने का मतलब मोल मुसीबत लेना है !
बार-बार यह बात प्यार से यार लोग समझाते हैं ! !
श्री विजय निर्बाध हकीकत बेमानी बेमतलब है !
यहा करोडों लोग तसब्बुर से ही दिल बहलाते हैं ! !

(पजाब केसरी से साभार)

उद्बोधन

[कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम ए, शास्त्री सदन रामनगर कटरा, आगरा-६]

अयि धरा के कर्णधारो ।
वेद की वीणा बजाओ ॥

चाहते हो यदि मनुज ही मनुज का वैरी न होवे,
स्नेह की सद्भावना का कोष यह खाली न होवे ।
सुन्दरी समता न ममता त्रस्त होकर आज रोवे,
तो सुजानता की सुरीली सरगमो को गुनगुनाओ ।१।

विश्व के कल्याण का प्रभु से यही वरदान पाया,
पञ्च तत्वो के विवेचन का यही विज्ञान आया ।
सृष्टि के प्रारम्भ मे ही ऋषिवरों ने गान गाया,
जागरण की प्रभु प्रभाती को निडर होकर सुनाओ ।२।

सत्य तथ्य पहेलियो के उत्तरो का हेतु मानो,
ज्ञानमय विज्ञान के शुचि सागरो का सेतु मानो ।
आध्यात्मिक वर विजय का एक ही कलकेतु जानो,
शान्ति साधन के लिए बस आरती इसकी सजाओ ।३

जब तक कि जग मे न इनका मान या सम्मान होगा,
विश्व मे कोई सुखी, सानन्द न इन्सान होगा ।
श्रेष्ठ सुकृती नर वरो का एक ही अरमान होगा,
स्वर्ण किरणो की मनोहर रोशनी को चमचमाओ ।४

सत्य जगती मे मनुज के रूप, कर्म अनेक है,
विश्व के बन्धुत्व मे हैं बधे सब एक हैं ।
सौम्य समता मे रमे सब धार एक विवेक हैं,
'प्रणव' के पावन सदेशे की सभी जय-जय मनाओ ।५

उठो ! जवानों !!

[श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर]

हाय ! धरणि पर आज हो रहा मानवता उपहास,
'दम्भ-द्वेष' कर रहा 'सत्य' का ही देखो परिहास,
'दया-प्रेम' निरुपाय बने हैं, 'त्याग' बना है शापित,
दानवता की विकट वृत्तियो से देवत्व हुआ कपित ।

शाति न जाने किस कोने मे, बैठी सिसक रही है,
समरसता के चरण तले की, धरती खिसक रही है ?
अत्याचार बढा है अविरल, नैतिकता का हुआ पतन,
नहीं हो रहा है धरती पर, सत्य शक्ति का कहीं मनन ।

जाने कब तक दिव्य धरा पर, समता सुमन खिलेंगे ?
शांति-सफलता के नीडो में, सभी मनुज सर्वदा पलेंगे ?
ज्ञान प्रभा की प्रखर रश्मिया, निकलेंगी नव ज्योतिष्मान ?
मानवता के तत्वो का फिर, कब से होगा शुचि सम्मान ?

आज हिमालय अगडाई ले, होगा नव परिवर्तन,
भारत-भू के कण कण मे, अब जागेगा स्पन्दन,
उठो ! जवानो ! सबल क्रांति की ज्योति जगाना होगा ।
भूमण्डल का गहन तिमिर, अब तुम्हे भगाना होगा ॥

दयानन्द—स्तवन

दयानन्द क्या क्या नहीं कर गया तू ?
भला सब ससार का कर गया तू ।१।
भटकते जो इस राष्ट्र परराष्ट्र मे भी ।
सभी को सरल मार्ग बतला गया तू ।२।
फसे जो भवर मे न कुछ सूझता था ।
अहो धन्य तट पर उन्हें कर गया तू ।३।
सिखा धर्म औ कर्म वैदिक सभी को ।
प्रभू इच्छा को पूर्ण यो कर गया तू ।४।
'नरेन्द्रार्य' सबको ऋणी यो बना कर ।
प्रभू का था प्रभु मे समा फिर गया तू ।।

—नरेन्द्रार्य, मैनपुरी

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ अगस्त १९८६ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है।

५६६, ६०८, ६१८, ९५३, १६०७, २१४५, ३०५०, ३७८०, ४३७२, ५००१, ५१८०, ५२६५, ५३०१, ६१९३, ६२०१, ६४९७, ६७७३, ६७८१, ६८३८, ८३२५, ८३८८, ८६४०, ८६६५, ९२१५, ९२१९, ९४९२, ९५०१, ९५०६, ९९४३, ९९६९, ११००५, ११०१०, ११२२७, ११२३५, ११२५२, ११६७७, ११६९४, ११७०१, ११९७१, ११९७३, ११९७८, १२३२८, १२३४४, १२३४७, १२३६०, १२३६४, १२३६५, १२३७६, १२६८९, १२७०४, १२७१२, १२७१७, १२७१८, १२७१९, १२७२१, १२९४८, १२९४९, १२९५१, १२९५३, १३१८१, १३१८२, १३१८५, १३१८७, १३१८८, १३१९१, १३५०८, १३५०९, १३५१०, १३५१११, १३५१३,१३५१४, १३५१५, १३५१६, १३५१७, १३५१८, १३५१९, १३५२०, १३५२१, १३५२२, १३५२३, १३५२४, १३५२५, १३५२६, १३५२७, १३५२८, १३५२९, १३५३०, १३५३१, १३५३२, १३५३३, १३५३४, १३५३५, १३५३८, १३५३९, १३५४०, १३५४१, १३५४२, १३५४३, १३५४४, १३५४६, १३५४७, १३५४८, १३५४९, १३५५०,१३५५१, १३५५२, १३५५४, १३५५५, १३५५६, १३५५७, १३५५८, १३५५९, १३५६०, १३५६१, १३५६२, १३५६३, १३५६५, १३५६६, १३५६७, १३५६८, १३५६९, १३५७०, १३५७१, १३५७२, १३५७३, १३५७४, १३५७६, १३५७७, १३५७८, १३५७९, १३५८०, १३५८१, १३५८३, १३५८५, १३५८६, १३५८७, १३५८८।

विनीत—

—व्यवस्थापक 'आर्यमित्र'

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश की शताब्दि

१७ से २० अक्टूबर १९८६ के अवसर पर

आर्य्यमित्र

का शताब्दि विशेषांक प्रकाशित हो रहा है

विद्वान्, लेखको, कवियो साहित्यकारों से सादर अनुरोध है कि इस विशेषाक के लिए अपनी अमूल्य रचनायें कविता, लेख, सस्मरण एव सैद्धान्तिक विवेचन आदि शीघ्र ही दिनांक १५ सितम्बर १९८६ के पूर्व ही भेजने की कृपा करें ताकि उन्हें हम पत्र मे समुचित स्थान दे सकें। साथ ही अनुरोध है कि अपने क्षेत्र के उन आर्यजनों का भी परिचय दें जिन्होंने आर्यसमाज की सेवा प्रचार और प्रसार मे विशेष योगदान दिया है तथा वह सस्थायें जो महर्षि दयानन्द के नाम से अलकृत हैं और अपने क्षेत्र मे शिक्षा का प्रसार विशेष रूप से कर रही हैं वह भी अपना परिचय भेजने की कृपा करें।

आर्यसमाज के सिद्धात, ऋषिवर की मान्यताओ, शिक्षा क्षेत्र मे आर्य समाज का योगदान, महिला एव निरीह जनमान्य का समुत्थान सम्बन्धी विषयों पर जो आर्यसमाज का योगदान है इस विषय पर भी विद्वानों के लेख आमन्त्रित किए जाते है।

'आर्यमित्र' समस्त आर्यजनों का अपना ही पत्र है अत आपके योगदान के हम आकाक्षी हैं।

मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आचार्य रमेशचन्द्र एम ए — सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सैनिक सुरक्षा पट्टी—

भारत सरकार गुजरात, राजस्थान, पजाब और जम्मू तथा कश्मीर मे भारतीय क्षेत्र की वह सीमा जो पाकिस्तान से मिली हुई है मे सैनिक सुरक्षा पट्टी ५ किलो मीटर चौड़ी बनाना चाहती है जिससे पचमांगियों का प्रवेश बन्द हो, पाकिस्तान की सैनिक घुसपैठ बन्द हो और अवैध रूप से जो सामान का आदान प्रदान होता है वह समाप्त हो। इसी हेतु सविधान की धारा २४९ के अन्तर्गत भारत सरकार राज्यो के क्षेत्र मे परिवर्तन हेतु अधिकार चाहती है। आशा है कि सरकार को यह सुविधा देने के लिए भारतीय ससद का प्रत्येक दल सरकार को अपना समर्थन देगा। आर्यसमाज के प्रमुख सन्यासी स्वामी आनन्द बोध सरस्वती तो कई महीने से इस प्रकार के सैनिक या सुरक्षा पट्टी बनाने के पक्ष मे है और यहा तक कहते हैं कि सीमा पर सेना के अवकाश प्राप्त व्यक्तियो को ही बसा दिया जाय जिन्हें भारतीय राष्ट्रीयता मे आस्था हो।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत

एक पुरुष शास्त्री औ० टी० की आवश्यकता है। अनुभवी एव आर्य समाजी व्यक्ति को प्राथमिकता दी जायेगी। इच्छुक व्यक्ति अपने प्रार्थना पत्र प्रबन्धक के नाम भेजें तथा साक्षात्कार हेतु अपने खर्चे पर २०-८-८६ को ३-०० बजे साय पधारें।

—प्रबन्धक

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

पं० राजगुरु शर्मा प्रधान निर्वाचित

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन दिनांक १४ जून ८६ को आर्य समाज मन्दिर देवास मे सम्पन्न हुआ जिसमे आगामी वर्ष हेतु सर्व सम्मति से निम्न पदाधिकारी चुने गये–प्रधान श्री प० राजगुरु शर्मा, मन्त्री श्री यशपाल जी आर्य कोषा० श्री लखबीरसिंह राना, उप प्रधान–श्री जगदीश प्रसाद जी वैदिक, श्री परमालसिंह कुशवाहा, श्री इन्द्रप्रकाश जी गाधी श्री वृन्दीराम जी सुमन, श्री ओम प्रकाश जी आर्य, श्री सेवाराम जी पटेल, उपमन्त्री–श्री प्रकाश जी एडवोकेट, श्री राजेन्द्र सहाय जी, श्री मूलचन्द्र आर्य, श्री रामनारायण जी आर्य, श्री जगदीश प्रसाद जी एरन, श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल। तथा श्री गोवंधन लाल जी अधिष्ठाता भू० स० वि०, श्री दलबीरसिंह जी राघव पुस्तकाध्यक्ष, व श्री रामचन्द्र जी शर्मा अधिष्ठाता आर्यवीर दल निर्वाचित हुए।

आर्य समाज शिक्षा सभा का अधिवेशन सम्पन्न

न्यायमूर्ति श्री बेरी प्रधान एव श्री दत्तात्रेय वाब्ले वरिष्ठ उप प्रधान निर्वाचित

रविवार दि० २० जुलाई ८६ ई० को ११ बजे से आर्य समाज अजमेर मे दयानन्द कालेज अजमेर, डी० ए० वी० स्कूल आदि विभिन्न छोटी बडी १४ शिक्षण सस्थाओं का सचालन करने वाली आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर का त्रैवार्षिक अधिवेशन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब एव डी० ए० वी० ट्रस्ट एव मैनेजमेट नई दिल्ली के प्रधान श्री प्रो० वेद व्यास जी एडवोकेट की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भारत की समस्त डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल शर्मा, हसराज मॉडल स्कूल दिल्ली के प्राचार्य श्री टी० आर० गुप्ता तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल विशेष रूप से उपस्थित थे।

आगामी वर्ष के लिये सर्वसम्मति से निम्न प्रकारेण पदाधिकारी चुने गये प्रधान–न्यायमूर्ति श्री भगवती प्रसाद बेरी पूर्व मुख्य न्यायाधीश राज स्थान, वरिष्ठ उप प्रधान–श्री दत्तात्रेय वाब्ले पूर्व प्राचार्य दयानन्द कालेज अजमेर, उप प्रधान–श्री ठाकुर प्रेमसिंह आर० ए० एस० मन्त्री–आचार्य श्री कृष्णराव वाब्ले, सयुक्त मन्त्री–श्री ओ पी, भार्गव पूर्व निदेशक कालेज शिक्षा राज, वरिष्ठ उपमन्त्री–श्री प्रो० जी एस जोशी–उपमन्त्री श्री वेदरत्न आर्य बी० ए० एल० एल० बी०।

रासासिंह मन्त्री आर्य समाज अजमेर

सस्ती प्रचार योजना

श्री विश्वम्भर दत्त जी शास्त्री उपदेशक सभा व श्री तेजपाल जी आर्य का मण्डली सहित कार्यक्रम अगस्त मास पर्यन्त नैनीताल, रामनगर हलद्वानी, झांसी आदि में रहेगा।

हरिश्चन्द्र आर्य सयोजक
वेद प्रचार मण्डल पश्चिमांचल, अमरोहा

उत्सव

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून मे राष्ट्रभृत यज्ञ दिनाक २ अक्टूबर ८६ से ५ अक्टूबर ८६ तक भव्यता एव श्रद्धा से आयोजित किया जायेगा। जिसमे २१ कुण्ड बनाये जायेंगे। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के सरक्षक महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ तथा सयोजक पूज्य स्वामी दीक्षा नन्द जी सरस्वती होगे।

देवदत्त बाली

आर्य समाज पतला (गाजियाबाद) का सातवा वार्षिकोत्सव दि० ७ मार्च से ९ मार्च ८६ के मध्य धूम-धाम से गायत्री देवी महिला विद्या पीठ के प्रांगण मे सम्पन्न होगा। जिसमे सार्वदेशिक प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती (भू० पू० श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले) आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी श्री माधव सिह जी, श्री स्वामी आत्मानन्द तीर्थ आदि प्रमुख विद्वान एव वक्ता सम्मलित होगे।

मन्त्री आर्य समाज

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के २०० युवको का मण्डलीय स्तर पर प्रशिक्षिण शिविर का एक भव्य आयोजन जवाहर लाल नेहरू स्मारक इण्टर कालेज खापुरी सठेडी [मुजफ्फर नगर] दिनांक ५ अक्टूबर से १४ अक्टूबर के मध्य सम्पन्न होगा जिसमे डा० देवव्रत आचार्य जी प्रशिक्षक का कार्य सम्पन्न करेंगे।

फूलसिंह आर्य

निर्वाचन

आर्य समाज हरिहरपुर [हरदोई]
प्रधान श्री नरदेव शास्त्री
मन्त्री श्री तरुण कुमारसिंह
कोषा० श्री तेज प्रकाश आर्य

महिला आर्य समाज गाजियाबाद
प्रधाना श्रीमती लीलावतीजी चोपडा
मत्राणी श्रीमती जयाकुमारी आर्य
कोषा० श्रीमती शकुन्तला वार्ष्णेय

आर्य समाज हरदोई
प्रधान श्री स्वयम्बरसिंह सोमवन्शी
मन्त्री श्री रामेश्वर दयालजी शुद्धि
कोषा० श्री वन्श गोपाल

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ
प्रधान श्री माधवसिंह जी
मन्त्री श्री इन्द्रराज जी
कोषा० श्री ओ३म् प्रकाशजी जौहरी

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर [देहात]
प्रधान श्री प० देवीप्रसाद आर्य [वानप्रस्थ]
मन्त्री श्री जयकरनसिंह
कोषा० श्री प्रभु दयालजी

आर्य समाज तरौंदा [कानपुर]
प्रधान श्री योगीसिंह जी
मन्त्री श्री यशवन्त सिह
कोषा० श्री वासुदेवसिंह

आर्य समाज भवाली [नैनीताल]
(श्री शम्भूनाथ पुस्कालय समिति)
प्रधान श्री बहादुर सिह
मन्त्री श्री रघुवरलाल अवस्थी
कोषा० श्री नारायण सिंह

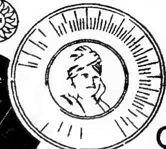
'आर्य्य मित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 46993 ४५६६३
पञ्जीकरण स० एल डब्ल्यु/एन पी ७६
मा० श्रावण २६
श्रावण शुक्ल १२
रविवार, १७ अगस्त १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र



आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.



१८८६-१९८६

शताब्दी समारोह

१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ

विगत १०० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन
देश की धार्मिक सामाजिक राजनीतिक
गतिविधियों पर विचार

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १ फोन ४५९९३

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये ... प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग ... के लिए
अस्थायी रूप से सब्बरवाल प्रेस श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

पंजी० व ११४१/८० ...न स० ७ / १८-२-८३

वर्ष ८६] भा० भाद्रपद २, ६, भाद्रपद कृष्ण ५, ११, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक २४, ३१ अगस्त १९८६ [अङ्क ३४–३५

प्रार्थना

ओं प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरे-
षामा विश्पतीव बीरिट ऽ इयाते।
विशामक्तोरुषस पूर्वहूतौ वायु
पूषा स्वस्तये नियुत्वान् ॥

—यजु ३३–४४

भावार्थ—मनुष्यादि प्रजाओ, प्राणियों के लिए वेगोवाला वायु और सूर्यरूप प्रकाश प्रजा स्वामी की भाति रात्रि और दिन के प्रथम स्पर्धाकाल अर्थात् प्रात काल मे अन्तरिक्ष मे आते हैं। इन प्रजा । के लिए उत्तम गति वाला जल आकाश से ओसरूप मे झरता

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

सम्पादक—

आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

शताब्दि समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

प्रकाशवीर शास्त्री नगर

[डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ]

दि. १७, १८, १९, २० अक्टूबर सन् सन्नीस सो छियासी

आर्य बन्धुओ एव बहिनो,

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने अपने आर्यजगत की सेवा के सौ वर्ष पूर्ण कर लिये है और यह हम सबका असीम सौभाग्य है कि शताब्दि समारोह मनाने का अवसर प्राप्त हुआ है तथा इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत आगामी दिनाक १७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६ के मध्य उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगर लखनऊ मे डी० ए० वी० कालेज के प्रागण मे समारोह सम्पन्न होने जा रहा है जिसमे विभिन्न कार्यक्रमो की आयोजना है। देश विदेश के प्रमुख आर्यनेता समाज के कार्यकर्ता उपस्थित होगे तथा उनके जीवन के अनुभव एव प्रवचनो से जनता लाभान्वित होगी साथ ही विगत सौ वर्षों के प्रतिनिधि सभा के कार्यों का सिंहावलोकन होगा और आगामी समय के लिए कार्यक्रम की रेखा योजनायें बनेंगी।

इस अवसर पर नवयुवक एव नवयुवतियो—छात्र तथा छात्राओ के लिए शैक्षिक एव बौद्धिक विकास हेतु शोध पत्रो का पठन-पाठन, लेख, कविता प्रतियोगितायें और स्वास्थ्य सम्वधन के लिए छात्र एव छात्राओ की क्रीडा प्रतियोगितायें भी होंगी। यह प्रतियोगितायें पहले उत्तर प्रदेश के आचलिक क्षेत्रो मे होंगी और जो प्रमुख विजेता दल होगे उनकी अन्तिम प्रतियोगितायें शताब्दी के अवसर पर होंगी।

अन्य कार्यक्रमो मे वेद मन्त्रो के सस्वर पाठ की प्रतियोगितायें, आर्य सिद्धान्त पर आधारित भाषण प्रतियोगितायें तथा हिन्दी एव सस्कृत का कवि सम्मेलन भी होगा। इसके अतिरिक्त अधिक से अधिक स्वामी जी के जीवन पर चित्र पट प्रस्तुत होंगे और पूर्ण प्रयास होगा कि आर्य साहित्य सस्ते मूल्यो पर उपलब्ध हो।

समस्त आर्यसमाजो से एव आर्यजनो से निवेदन है कि हमारे कार्यक्रम को सफल बनायें अधिक से अधिक सख्या मे उपस्थित हो और उत्साह वर्धन करें।

आवास की सुन्दर सुखद व्यवस्था होगी, बहुत ही सस्ते दामो पर भोजन एव जलपान उपलब्ध कराने के केन्द्र स्थापित किये जायेंगे। हमारी योजना को सफल बनाने के लिए प्रत्येक आर्यजन हमे अधिक से अधिक आर्थिक सहायता भेजें तथा अधिक से अधिक हमारे शताब्दि का प्रचार करें साथ ही अधिक से अधिक सख्या मे आर्य बन्धु एव बहिनें उपस्थित होने का प्रयास करें।

निवेदक,

मनमोहन तिवारी

मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

आर्य्यमित्र

सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार २४ ३१ अगस्त १९८६ दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

"यत्र योगेश्वरो कृष्णः तत्र पार्थ धनुर्धर":।

वेद प्रचार सप्ताह आर्य समाजो मे उत्साह पूर्वक मनाया जाता है और इस सप्ताह प्राय विद्वत जनो के भाषण द्वारा जन मानस का कालुष्य धोने का प्रयास किया जाता है और प्रयत्न होता है कि निमल बुद्धि एव उज्ज्वल विचारोसे सप्ताहके पश्चात् आयजन व्यवहार करेंगे। यह सौभाग्य है कि वेद प्रचार सप्ताह का अन्त उस दिन होता है जब समस्त भारत वष मे योगेश्वर श्री कृष्ण का जन्म दिवस भी आयोजित होता है। राम और कृष्ण भारतीय जनमानस मे इतना अधिक प्रवेश कर गये है कि आज भी व्यक्ति और समाज उनके आदर्शों से प्रेरणा ले रहा है तथा उनके जन्म दिवसो पर व्रत एव उपासना के द्वारा अपने मन को निमलता प्रदान करता है सौभाग्यसे 'आर्यमित्र'का यह अक पाठको के कर कमलोमे उस समय है जब योगेश्वर श्री कृष्ण का जन्म महोत्सव आयोजित हो रहा है।

भारतीय इतिहास मे दो व्यक्ति एक ही नाम के अमर हो गये एक तो वासुदेव श्री कृष्ण दूसरे 'कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास'। वासुदेव कृष्ण ने भारत वर्ष मे जिस राजनैतिक भूमिका का वहन किया वह था एक सुसगठित दृढ़ केन्द्रीय सत्ताकी स्थापना और उस केन्द्रीय सत्ता की स्थापना के लिए जो हस्तिनापुर मे मह. भारत के युद्ध के बाद युधिष्ठर के नेतृत्व मे स्थापित हुई उसके प्राप्ति तक पहुचने के लिए उस समय राष्ट्र मे जितने आततायी, जितने प्रजापीडक, जितने दुष्टप्रवृत्तिके व्यक्ति और छुद्र राज सत्तायें थी सबका सहार योगेश्वर श्री कृष्ण ने धनुर्धर पार्थ और उन्हीं के सदृश अन्य रण बाकुरो से करवाया। कृष्ण के जीवन की गतिविधियो को अमरता देने वाला व्यक्ति भी भारतीय साहित्य मे अग्रणिय है "कृष्णद्वैपायन" वेदव्यास जिनकी रचना है "महाभारत"। अत कर्मक्षेत्र मे निपुण व्यक्ति भी तभी अमर होता है जबकि उसको अमरता प्रदान करने वाला व्यक्त भी कोई उच्चकोटि का साहित्य कार होता है और सयोग है कि कृष्ण वासुदेव एव कृष्ण द्वैपायन दोनो एक दूसरे के पूरक है।

राष्ट्र नायक को लोकोत्तर पुरुष कहा जाता है। कृष्ण सरस थे— मृदु भाषी थे एव उनके नेत्रों से सज्जनो के प्रति अमृत वर्षा होती थी परन्तु जरासघ, शिशुपाल कस, जंद्रथ आदि जो आततायी और उग्रवादी थे उनके लिए वह कालाग्निवत थे और महाभारतमे कृष्ण की सात्विक प्रतिभा पाण्डवो की सेना का सचालन करती थी उन्हीं के युग का सर्वश्रेष्ठ वीर पुरुष अर्जुन अपने गाण्डीव से आततायियो का वध करता था तभी कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास कहते है कि—'जब सात्विक प्रतिभा का योगेश्वर के रूप मे और शक्ति प्रतिमा का धनुर्धर के रूप मे सयोग होता है तो राष्ट्र से आततायियो का विनाश हो जाता है, राष्ट्र सुख और समृद्धि की ओर बढ़ने लगता है। खेद है कि आज वर्तमान युग मे न तो राष्ट्र में सात्विक प्रतिभा का नेतृत्व है और न कोई धनुर्धर था न है तभी तीन वर्ष से भारत के एक प्रात में उग्रवाद का नग्न नृत्य हो रहा है और उग्रवादियो का सफाया शस्त्रके बल पर नहीं राजनैतिक अवसरवादिता के सहारे किया जाता है यह परिताप का विषय है।

'आर्यमित्र' योगेश्वर श्री कृष्ण की पावन जन्मवेला पर राष्ट्र के व्यक्तियो से अनुरोध करता है कि उनके जीवन का अनुकरण कर समस्त आय राष्ट्र योगेश्वर कृष्ण के समान प्रतिभाशाली हो और भारतीय राष्ट्र की नवयुवको मे उनकी बाहुओ मे धनुर्धर पार्थ का बल हो। राष्ट्र तभी सुधरता है जब प्रतिभा और बल का सयोग होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती मे जहां मस्तिष्क मे ओजमयी प्रतिभा थी वहीं उनके शरीर मे अखण्ड ब्रह्मचर्य का बल था और बाहुओ मे वह शक्ति थी जिससे वह आततायियो को झकझोर देते थे। आर्य समाज को आर्य समाज के नेताओ को इसी दिशा की ओर पूर्ण ध्यान देना चाहिए और राष्ट्र मे प्रतिभा तथा बल दोनो का सयोग हो ऐसी भावना को जन्म देना चाहिए।

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

देश को बचाओ, पजाब को बचाओ आज

(लेखिका—सावित्री रस्तोगी जवाहर नगर मेरठ)

छाई है सकट की काली घनघोर घटा,
सब मिलकर कष्ट हरो, गठ बन्धन, स्नेह भरो।
रोती हैं महिलायें, सुबक सुबक, वृद्ध जन,
मुरझाये बच्चो को, आश्रय दो प्यार करो॥

आओ कवि गण आओ, मानव मन शोध करो,
लेखनी उठाओ अब, गीत को अवरोध करो।
बुद्धिजीवी, नेता गण, तज कर सब राजभोग,
साधु, सन्त, उपदेशक, छोड़ो समाधि योग॥

नारी नर बाल वृद्ध, युवको, मिलकर आओ,
सैनिक अधिकारी वर्ग, व्रतधारी, सस्थाओ॥
एकता का मन्त्र पढ़ो, जड़ से मिटाओ द्वेष।
उग्रवाद, आर्तनाद, देश मे रहे न क्लेश॥

जननी जन्म भूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी—
पाठ करते थे, कुछ करके दिखाओ आज॥
जो है कर्तव्य आज, मा के प्रति हम सब का,
देश को बचाओ, पजाब को बचाओ आज॥

'आर्यमित्र' के पाठक बन्धुओ से

—'आर्यमित्र' के समस्त पाठक बन्धुओ को सूचित करते हुए निवेदन हैं कि 'श्रावणी एव रक्षा बन्धन' पर्व पर कार्यालय एव प्रेस अवकाश के कारण हम दिनाक २४ अगस्त का अक प्रकाशित न कर सके अत दिनाक २४ एव ३१ अगस्त का सयुक्त अक आपकी सेवा मे प्रस्तुत है।

सम्पादक

कुछ नये रहस्य : इन्दिरा जी की हत्या के चक्रव्यूह के

—अश्विनी मिन्ना (स्थानीय सम्पादक, पंजाब केसरी, दिल्ली)—

(गतांक से आगे)

श्रीनगर से विमान अपहरण मे मिली कामयाबी से अतिंदरपालसिंह के हौसले बहुत बुलन्द थे। खुफिया सूत्रो के अनुसार प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाधी की सुरक्षा व्यवस्था के अभेद्य कवच मे अतिंदरपालसिंह ने अगस्त ८४ मे छेद कर दिये थे। तब प्रधान मन्त्री की सुरक्षा मे तैनात सब-इन्सपेक्टर बलबीरसिंह को उसी ने १५ अगस्त के दिन लालकिले मे प्रधान मन्त्री की हत्या के लिए तैयार किया किन्तु ऐन वक्त पर बलबीर ने अपने परिवार को हिन्दुस्तान से सुरक्षित विदेश भेजने और उसे पांच लाख रुपये नकद देने की माग की। इससे षड्यन्त्रकारियो को उसके इरादो पर शक हो गया और यह योजना पूरी न हो सकी। इन दो हादसो के बाद श्रीमती गाधी की हत्या की योजना अति गुप्त तरीके से अतिंदरपाल सिंह ने कुछ विदेशी तत्वो के सहयोग से स्वय बनाई और ३१ अक्तूबर ८४ की मनहूस सुबह उसे सौ फीसदी कारगर कर दिखाया।

भोपाल मे अप्रैल के तीसरे सप्ताह दो सिख युवको से की गई पूछ-ताछ मे कुछ महत्वपूर्ण सूत्र हाथ लगे है। आनन्दराम आयोग के अन्तर्गत कार्यरत सी०बी० आई० के विशेष दल ने गत २८ अप्रैल को भोपाल के २१ वर्षीय सिख युवक बर्जिदरपाल सिंह और २३ वर्षीय युवक सुरिन्दरपालसिंह से करीब सात घण्टे पूछताछ की। बर्जिदरपाल सिंह एक सम्पन्न सिख बाप का बेटा है और भोपाल मे अरेरा कालोनी मे अपने पिता के मकान मे रहता है। उसके पिता पेशे से व्यवसायी हैं। मकान के सामने ही एक छोटा गुरुद्वारा है। बरजिदर भोपाल के पोलिटेक्निक कालेज का द्वितीय वर्ष का छात्र है। सुरिंदरपालसिंह बी० ए० द्वितीय वर्ष का छात्र है और वह उज्जैन के शासकीय इजीनियरिंग कालेज मे पढ़ता है। यह भोपाल के जहागीराबाद क्षेत्र मे मजदूरो की बस्ती सिलावटपुरा का रहने वाला है। इसके पिता रायचन्द सरकारी नौकरी से रिटायर होने के बाद अब ट्रक चलाते हैं। यह परिवार हिन्दू है लेकिन सुरिंदरपाल सिंह ने सिख मत स्वीकार किया हुआ है और अब वह एक कट्टर सिख युवक है। इन दोनो सिख युवको के अतिंदरपाल सिंह से भोपाल के दिनो मे और उसके भोपाल छोड़ने के बाद गहरे सम्बन्ध रहे हैं। यहा तक अतिंदरपाल सिंह के यहा से फरार होने के बाद से वे उसकी इच्छानुसार राज्य की गतिविधियो को ध्यान मे रख कर यहा अखिल भारतीय सिख छात्र सघ की कार्रवाई के सूत्र सचालक रहे हैं। अतिंदर और उसके परिवार के बीच सम्पर्क की कड़ी भी यही दोनो युवक थे। जाच दल को इन युवको से कई महत्वपूर्ण सुराग लगे है, जो षड्यन्त्र की तह मे जाने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

अतिंदरपाल के भोपाल से पलायन के बाद ये दोनो युवक उससे दिल्ली या अन्य स्थानो मे जाकर बराबर मिलते रहे हैं। एक खुफिया सूत्र के अनुसार बर्जिदरपाल और सुरिंदरपाल ने अपने सौ पेजी इकबालिया बयान मे बताया है कि अतिंदरपाल के दिल्ली स्थित पाकिस्तानी दूतावास के गुप्तचरों से निकट सम्बन्ध रहे हैं। वह उनसे नियमित मिलता रहता था। इन्दिरा गाधी की हत्या के एक सप्ताह पहले भी वह पाकिस्तानी दूतावास के गुप्तचरों से मिला था। वहा से लौटने के बाद अतिंदरपाल सिंह ने इन युवको को तब भोपाल मे रह रहे अपने परिवार और पिता की परिवरिश के लिए २० हजार रुपये दिये थे। इन युवकों को यह हिदायत भी दी थी कि वे उसके परिजनो को ३० अक्तूबर से पहले भोपाल से बाहर सुरक्षित स्थान पर भेज दें। इसलिए अतिंदरपाल सिंह का परिवार इन्दिरा गाधी की हत्या के समय राज्य के सभागीय मुख्यालय सागर मे सुरक्षित रहा। इसका आशय यह कि उसे इस बात का सकेत था कि श्रीमती गाधी की हत्या के बाद दगे भड़क सकते हैं। सी बी आई का यह विशेष जाच दल कोई एक दर्जन बार राज्य के मुख्यालय भोपाल, इन्दौर, उज्जैन, देवास, दुर्ग, रायपुर की यात्रा कर चुका है। ये तथ्य जानकारी मे आने के बाद जाच दल का काम थोड़ा प्रगति पर है।

विश्वस्त सूत्रो के अनुसार अतिंदरपाल सिंह ने श्रीमती गाधी पर ३१ अक्तूबर की सुबह पिस्तौल और स्टेनगन से गोलियो की बौछार करने वाले सब-इन्सपेक्टर बेअन्तसिंह और सिपाही सतवन्तसिंह से कभी सीधा सम्पर्क नहीं रखा। योजना का सूत्रधार तो अतिंदरपाल ही रहा। पर उनसे सम्पर्क का माध्यम दूसरे आतङ्कवादी थे। प्रधान मन्त्री निवास की सुरक्षा व्यूह रचना तथा उनके रोजमर्रा के कार्यक्रमो को ध्यान मे रखकर ही हत्या का प्लान तैयार किया गया था।

गुप्तचर सूत्रो को अभी तक मिली जानकारी के अनुसार अतिंदरपाल इंदिरा गाधी की हत्या का प्लान बनाकर जम्मू के पास से २८ अक्तूबर ८४ को ही पाकिस्तान चला गया था। सीमा के उस पार मौजूद पाकिस्तानी इंटेलीजेंस के लोगो ने उसका स्वागत किया था। सीमा पर पहुचते ही अतिंदरपाल ने इंदिरा गाधी की हत्या की योजना का मूल प्रारूप उन्हे सौंप दिया था। ये स्थितिया साफ बताती है कि इंदिरा गांधी की हत्या मे पाकिस्तान का स्पष्ट हाथ है। पाकिस्तान और अमरीका के सम्बन्धो की घनिष्टता को देखते हुए इस आशका को गलत नहीं कहा जा सकता कि इस षड्यन्त्र की जानकारी अमरीकी सस्था सी बी आई ए को भी रही हो। अतिंदरपाल सिंह ने जो योजना बनाई थी, वह सौ-फीसदी ज्यो की त्यों कामयाब हो गई। सुविज्ञ सूत्रो के अनुसार पाकिस्तान सरकार ने न केवल अतिंदरपाल को अपने यहा पनाह दी है, बल्कि उसे वरिष्ठ राजनैतिक शरणार्थी का दर्जा वेतन, सरकारी बगला और कार दी गई है। इन दिनो वह लाहौर मे है। कनाडा मे सिख स्टूडेंट्स फेडरेशन के गठन से लेकर पजाब के आतङ्कवादी गतिविधियो का सचालन और खालिस्तान की ताजा घोषणा सब कुछ उसी के इशारे पर हो रहा है। इसकी पुष्टि पिछले दिनो पजाब और राजस्थान मे पकडे गये प्रमुख आतङ्कवादी देविंदर सिंह, सरबजीतसिंह और गुरिंदर सिंह से पूछताछ के दौरान हुई। पाकिस्तान के लाहौर, स्यालकोट और फैसलाबाद मे पजाब मे पहुच रहे सिख युवको को दी जा रही आतङ्कवादी और छापामार लड़ाई की ट्रेनिंग का मुख्य सचालक भी वही है।

अब जाच दल के सामने सबसे जटिल प्रश्न यह है कि इन्दिरा गांधी की हत्या का षड्यन्त्र रचा कहा गया ? भोपाल अथवा मध्यप्रदेश के किसी शहर मे, दिल्ली मे (जो उन स्थितियो को देखते हुए सम्भव नहीं है) या जम्मू के किसी इलाके मे ? दूसरा अहम सवाल यह है कि जब अतिंदरपाल की गतिविधिया इतनी देशद्रोही थीं तो मध्यप्रदेश पुलिस की गुप्तचर शाखा अथवा केन्द्रीय इंटेलीजेंस ब्यूरो ने उस पर निगाह क्यो नही रखी ? क्या वह अपने छात्र जीवन से ही खतरनाक खेल खेल रहा था ?

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

जब यह परिवार भोपाल आया, अतिंदरपाल नौ-दस वर्ष का था। हायर सेकेण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद जब वह कालेज मे बी ए की पढ़ाई कर रहा था, तभी उसने अखिल भारतीय सिख छात्र सगठन के लिए काम करना शुरू किया। भोपाल के ही अरेरा कालोनी के क्षेत्र मे रहने वाले डा० सुन्दरसिंह और उनके पुत्र सुदर्शनसिंह की प्रेरणा से वह सिख छात्र सघ के काम मे सक्रिय हुआ और भोपाल जिले का अध्यक्ष नामजद किया गया। अतिंदरपाल बहुत ही अन्तर्मुखी है,इसलिए उसकी गतिविधियो की कोई भनक किसी को नहीं लगी। १९८० के बाद जब भिडरावाला ने अपना प्रभाव बढ़ाना शुरू किया, तो यह उनकी ओर आकर्षित हुआ। मेहता चौक और बाद मे स्वर्ण मन्दिर मे जाकर उनसे मिलता रहा। तब अखिल भारतीय सिख छात्र सघ के अध्यक्ष अमरीकसिंह ने इसे अखिल भारतीय सिख छात्र सघ का वरिष्ठ उपाध्यक्ष नामजद कर दिया। १९८३ मे अपने भाई गुरिंदरपाल की बीमारी के दौरान अतिंदर लगातार कई महीने दिल्ली रहा। तब एक रिश्तेदार प्रेमजीतसिंह बेदी के १४ सेन्ट्रल लेन, बगाली मार्केट स्थित मकान मे रहा। इसी दौरान उसका आतङ्कवादियो से निकट सम्पर्क हुआ। यह सर्वविदित है कि भिडरावाले के उदय से 'आपरेशन ब्लू स्टार' के बाद तक मध्य प्रदेश के इन्दौर, भोपाल, जबलपुर, दुर्ग और रायपुर से सिखो द्वारा इकट्ठा किये चन्दा स्वर्ण मन्दिर भेजा जाता रहा है। ऐसी स्थिति मे अतिंदरपाल सिंह द्वारा परिवार के उदरपोषण के लिये पैसो का अभाव बताकर नौकरी करना एक बहाना लगता है। सम्भव है कि अतिंदरपाल ने 'हितवाद' मे नवम्बर ८३ मे नौकरी महज इसलिये शुरू की हो कि एक अखबार की आड मे उसकी गतिविधिया सन्देह की निगाह से नहीं देखी जायेंगी। 'हितवाद' के परिसर मे ही स्थित 'गगोत्री भवन' की ऊपरी मंजिल मे रीजनल पासपोर्ट अधिकारी का दफ्तर है। ट्रैवल एजेंसी पासपोर्ट बनवाने का व्यवसाय भी करती है। पाकिस्तान जाने के लिए वीजा दिलवाना भी इनका धन्धा है। सम्भव है कि इस ट्रैवल एजेंसी के जरिये पाकिस्तान जाने वालो के माध्यम से वहा मौजूद अपने गुप्तचर सम्पर्कों से अतिंदरपाल द्वारा पत्र व्यवहार किया जाता रहा हो। पुराने भोपाल से उर्दू का एक अखबार निकलता है। उसके भी दिल्ली स्थित पाकिस्तानी हाई कमीशन तथा पाकिस्तान के सरकारी हुक्मरानो से निकट सम्पर्क बताये जाते हैं बहरहाल,फरवरी ८४ तक अतिंदरपाल की गतिविधियो पर किसी को सन्देह नहीं हुआ।

२३ फरवरी ८४ को 'हितवाद' भोपाल मे अतिंदरपाल द्वारा दिया गया एक बयान छपा, जिसमे सिखो के धार्मिक स्थलो मे हस्तक्षेप के लिए हरयाणा के मुख्य मन्त्री भजनलाल को बर्खास्त करने की माग की गई थी। उसमे यह भी कहा गया था कि पजाब के बाहर बसे सिख पूरी तरह भिडरावाले को समर्पित है। उसने कहा था कि भारत मे सिख और सिख धर्म सुरक्षित नहीं है इसलिये खालिस्तान की माग वाजिब है। मध्य प्रदेश मे दिया गया अपनी तरह का यह पहला बयान था। फिर भी राज्य की गुप्तचर पुलिस ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। लेकिन केन्द्रीय गुप्तचर ब्यूरो ने अतिंदरपाल के इस बयान को गम्भीरता से लिया। उसी का परिणाम था कि पजाब के पूर्व मुख्यमन्त्री दरबारासिह जब १६ अप्रैल ८४ को भोपाल मे आयोजित कौमी एकता सम्मेलन मे भाग लेने आने वाले थे, तो केन्द्रीय गुप्तचर ब्यूरो के निर्देश पर १६ अप्रैल ८४ की सुबह भोपाल के मगलवारा थाना की पुलिस ने अतिंदरपाल को उसके शातिनगर स्थित घर से पकड़ लिया था। दिन भर उसे टी०टी० नगर थाने मे रखा गया था। उससे दरबारासिंह की सुरक्षा के बारे के सम्बन्ध में पूछताछ की गई थी। इस बीच भोपाल के कई प्रभावशाली लोग उसे छुडाने थाना पहुचे थे पर उसे छोड़ा तब गया जब टी०टी० एक्सप्रेस से दरबारासिंह भोपाल छोड़कर वापिस दिल्ली रवाना हो गये। इस घटना से भी राज्य की खुफिया पुलिस ने कोई सबक नहीं लिया और अतिंदरपाल सिंह बेफिक्र अपनी गतिविधियो मे मशगूल रहा।

जनवरी से जून ८४ के बीच अतिंदरपाल के सम्पर्क आतङ्कवादियो से बढते चले गये। इस बीच पजाब और दिल्ली के कुख्यात आतङ्कवादी सुखदेवसिंह (अमृतसर), वीर बिरेंदरजीत सिंह (नई दिल्ली), हरबस सिंह (पुरानी दिल्ली), बलजीत सिंह और बिरेन्दर सिंह आए दिन भोपाल आकर बेखटके अतिंदरपाल सिंह के घर और 'हितवाद' के दफ्तर मे उससे मिलते थे। केन्द्र और गुप्तचर ब्यूरो की यह उदासीनता उन्हे सदेह के घेरे मे ला खडा करती है। आपरेशन ब्लू स्टार के बाद जब इस्तीफा देकर अतिंदरपाल सिंह गायब हो गया तब भी पुलिस सोती रही। उसकी नींद तब खुली जब श्रीनगर मे एयर बस के अपहरण कांड मे अतिंदरपाल का नाम सामने आया। उसके दो-तीन दिन बाद राज्य खुफिया पुलिस जब उसके घर पहुची, तो उसका परिवार मकान खाली कर गायब हो चुका था। इतना ही नहीं, इस हादसे के बाद भी अतिंदरपाल ईद के मौके पर पुन भोपाल आया। उसे मोती मस्जिद के निकट देखा भी गया। पुलिस की आख तब भी नहीं खुली। भोपाल के कल्याणी वर्किंग वूमेंस होस्टल मे जब उसकी बहन सुरिंदर कौर के साथ छोटी बहन परमिंदर रहती थी, तब भी उसके खर्च के लिए पाच हजार रुपये का ड्राफ्ट भेजा था। यदि पुलिस सतर्क होती तो शायद अतिंदर पाल बहुत पहले गिरफ्तार हो जाता और सम्भव है कि देश की प्रधान मन्त्री की हत्या न होती।

बहरहाल अब अतिंदरपाल पाकिस्तान मे कहीं छिपा बैठा मौज फर्मा रहा है। एक बात मेरी समझ मे नहीं आ रही है कि जब भारत की खुफिया एजेंसियों के पास इस बात के पक्के सबूत मौजूद हैं कि अतिंदर पाल सिंह पाकिस्तान मे छिपा बैठा है तो फिर हमारे देश की सरकार ने श्रीमती गाधी के इस हत्यारे को वापिस देने और इसे भारतीय पुलिस के हवाले करने की बात पाकिस्तान सरकार से क्यो नहीं की है? शायद भारत सरकार भी अब यह समझती है कि पाकिस्तान से बार-बार बात करने का अब कोई फायदा नहीं होने वाला है।

अब जब हमे पता चल चुका है कि हमारे देश की अखण्डता को नष्ट करने के लिए पाकिस्तान जी-जान से कोशिशें कर रहा है तो मेरी अपनी व्यक्तिगत राय मे भारत सरकार को पाकिस्तान से दो-टूक बात कर ही लेनी चाहिये। वर्ना हम शर्म करते रहेंगे और हमारी इस शराफत का फायदा उठाकर पाकिस्तान हमारे घर मे छेद करता चला जायेगा। मै तो इससे भी बढ़कर सोचता हू कि हमे अपनी रक्षा के लिए और अखण्डता को कायम रखने की खातिर अगर अब पाकिस्तान से दो-दो हाथ करने पड़ें तो इसमे भी कोई हर्ज नहीं है।

ओ३म्

क्या आर्य समाज योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज को हीं मानता ?

(श्री इन्द्रराज जो प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश)

जन साधारण मे एक बात प्रचारित है कि आर्य समाज देवी देवताओ को नहीं मानता। प्रत्येक का खडन करता है। वह योगीराज श्री कृष्ण जी को भी नहीं मानता। जन्माष्टमीके पवित्र पव पर सारे ससार मे भगवान् कृष्ण का जन्म दिवस बडे समारोह से मनाया जाता है। क्या आर्य समाज भी वह जन्म दिवस मनाता है और भगवान् कृष्ण को भी मानता है ?

निसन्देह जो महान आत्माए ससार मे अवतरित हुई उन्होने पतितो का उद्धार किया और वे पतितपावन कहलाए। परन्तु यदि मै स्वामी समर्पणानन्द जी (प० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार) के शब्दो मे कहू तो यह कहूगा कि ससार भर की महान् आत्माए यदि पतितपावन थी तो स्वामीदयानन्दजी पावन-पावन थे। अर्थात् पवित्र आत्माओ को वास्तविक स्वरूप मे ससार मे प्रदर्शित करने वाले थे।

आर्य समाज भगवान् कृष्ण को क्या और कैसे मानता है इस भाव को कई महान् इतिहासज्ञो ने अपनी लेखनी और अपने विचारो से प्रकट किया है।

कृष्ण चरित्रके प्रसिद्ध लेखक "बकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय" के विचार बिलकुल आर्य समाज के ही विचार हैं। वे एक जगह लिखते हैं– "भगवान् श्री कृष्ण सर्वथा निष्कलङ्क और शुद्धाचारी थे। उनके जैसा सर्व गुणान्वित और सब पाप रहित आदर्श चरित्र और कही नहीं है। न किसी देश के इतिहास मे और न किसी काव्य मे।'

यह है भगवान् कृष्ण का वह स्वरूप जिसे आर्य समाज मानता है। श्री मद् भगवद्गीता का प्रणेता अपने स्वरूप को स्वयम् ही गीता मे बता रहा है। महाभारत एव गीता के अध्ययन से महर्षि दयानन्द जी भी योगीराज कृष्ण जी के विषय मे इन्हीं विचारो के समर्थक बने। वे सत्यार्थ प्रकाश मे लिखते है –

देखो ! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वाभाव और चरित्र आप्त पुरुषोके सदृश है। जिसमे कोई अधर्म का आचरण कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।"

इससे बढ़िया भला भगवान् कृष्ण के विषय मे कोई लिख सकता है। इससे आर्य समाज का दृष्टि कोण स्पष्ट हो जाता है। आर्य समाज भगवान् कृष्ण को युग पुरुष मानता है। सारे ससार का उद्धार करने वाले, धर्म की सस्थापना और अधर्म का नाश करने वाले, वे अनन्य उत्साह से युक्त योगीराज श्री कृष्ण जो कितने महान् थे यह प्रदर्शित करने का आर्य समाज ने प्रयास किया है।

हां इसके विपरीत पुराणो मे योगीराज श्री कृष्ण जी को अच्छेरूप मे प्रस्तुत नहीं किया गया। साधारण जन और विद्वत् समाज राधा-कृष्ण का नाम तो लेते हैं परन्तु रुकमणी कृष्णका नाम नहीं लेते जिन्होंने विवाह के तुरन्त उपरात बद्रिका आश्रम मे रह कर १२ वर्ष तक घोर ब्रह्मचर्य तप के पश्चात् प्रद्युम्न नाम का एक वीर पुत्र उत्पन्न किया। ऐसा महान् पुरुष भला स्कन्द पुराण के अनुसार १६१०८ रानियो के साथ रहकर एक-एक मे से १०-१० पुत्र उत्पन्न कर ८१०८० पुत्र कैसे उत्पन्न कर सकता है ? ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार राधा के साथ अनुचित, आचार विरुद्ध लीला कैसे कर सकता है ? उसको गोपियो के चीर हरण का ही कहा समय था ? वह रास लीलामे कैसे समय खो सकता है ? वह कुब्जा के साथ कैसे अश्लील चरित्र खेल सकता है ?

हमने अपने आप, अपने महान् पुरुषो को अपने स्थान से गिरा दिया। कितना बडा अभिषाप है यह। इसीलिए स्वामी दयानन्द जी को आगे लिखना पडा–"और इस भागवत् वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए है। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा दासी से समागम, पर स्त्रियो से समागम, पर स्त्रियो से रास मण्डल, क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी मे लगाए हैं। इसको पढ-पढ़ाकर और सुन-सुनाकर अन्य मतवाले श्री कृष्णजी को बहुत सी निन्दा करते है। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्णचन्द्रजी के सदृश महात्माओकी झूठी निन्दा क्योकर होती स्वामी दयानन्द जी के ये शब्द कटु अवश्य हैं पर पूर्ण सत्य हैं। पुराणो मे श्री कृष्ण चरित्र को इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है जिसको पढ-कर शर्म को भी शर्म आती है।

योगीराज श्री कृष्ण जी सत्य वक्ता थे, निर्भीक योद्धा थे, विनम्र सेवक थे, कुशल राजनीतिज्ञ थे, अदम्य उत्साह वाले थे, ब्रह्मज्ञानी थे, कर्म योगी थे, दुष्टो का दलन करने वाले थे, सज्जन पुरुषोके सेवक थे, अतुल शारीरिक शक्ति के भण्डार थे, एक अच्छे मित्र थे, एक अच्छे सरक्षक थे, एक अच्छे दार्शनिक थे, और वे अतुल शक्ति सम्पन्न एव उदार चेता थे।

योगीराज श्री कृष्ण जी को आर्य समाज इस रूप मे मानता है। आज के हिंसावादी, अलगाववादी एव आतकवादी जमाने मे भगवान् श्री कृष्ण जी जैसे महान् आत्मा ही के पद-चिह्नो पर चल कर इन विघटनकारी शक्तियो का मुहतोड़ उत्तर दिया जा सकता है।

सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारवें समुल्लास मे एक अन्य स्थल पर स्वामी दयानन्द जी ने १८५७ की जन क्राति का उल्लेख बडे ही कुशल पूर्ण प्रकार से किया है। स्वामी जी लिखते है जब सवत् १९१४ के वर्ष मे तोपो के मारे मन्दिर मूर्तिया अग्रेजोने उडा दीं तब मूर्ति कहा गई थीं ? प्रत्युत वाघेर लोगो ने जितनी वीरता की, और लडे और शत्रुओ को मारा। आगे पुन स्वामी दयानन्द लिखते है जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उडा देता और ये भागते फिरते। सन् और सवत् मे (सतावन) ५७ वर्ष का अन्तर होता है। १९१४ मे से ५७ घटाने पर १८५७ ही रहते है। महर्षि दयानन्द जी ने वह जन क्राति देखी थी और उसमें सक्रिय भाग लिया था, और अग्रेजो के अत्याचार भी देखे थे। आज आतकवाद, हिंसा और उग्रवाद को भी स्वामी दयानन्द जी द्वारा प्रदर्शित योगीराज कृष्ण जी की उग्र सघर्ष नीति से ही परास्त किया जा सकता है। विघटनकारी शक्तियो को परास्त करने का एक ही रास्ता है भगवान् कृष्ण की उग्ररण नीति।

प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री महामन्त्री

उच्च सभा के बन गये, मन्त्रि सच्चिदानन्द।
नमन कर रहा प्रेम से, पडित ब्रह्मानन्द ।।
पडित ब्रह्मानन्द आपको है दे रहा बधाई।
चिरायु होकर धर्म दुदुभी, दे जग मे बजवाई ।।
वेदो की वाणी जन-जन तक, देवें आप सुनाई।
हरदोई जनपद की जनता, रही हर्ष मे छाई ।।
ब्रह्मानन्द आर्य प्रचारक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

नवम दशाब्दी मे प्रविष्ट पर–

वैज्ञानिक विद्वान स्वामी सत्यप्रकाश जी

(ले०–प० दीनानाथ सिह मत्री-स्वामी सत्य प्रकाश प्रतिष्ठान मन्त्री–आर्य कुमार सभा, उ० प्र० पता–ए-६३ विमानपुरी, एच० ए० एल० कोरवा अमेठी)

'विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा सत्यव्रता रहितमानमलापहारा ।
ससारदु खदलनेन सुभूषिता ये धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा ।'

जिन पुरुषो का मन विद्या के विलास मे तत्पर रहता, सुन्दरशील स्वभाव युक्त, सत्यभाषणादि नियम पालनयुक्त और जो अभिमान अपवित्रता से रहित, मन्यमलीनता के नाशक, सत्योपदेश, विद्यादान से ससारी जनों के दु खो के दूर करने से सुभूषित, वेद विहित कर्मों से पराये उपकार करने मे रहते है, वे नर धन्य है।–(सत्यार्थ प्रकाश, द्वि० समु०)

महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त वाक्य आर्य जगत् के गौरव, वैज्ञानिक परिव्राजक स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती पर पूर्णरूप से चरितार्थ होता है। वे कृष्ण जन्माष्टमी पर ८१ वर्षके पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर हम उनकी सेवाओ तथा गति विधियो का अति सक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं।

पूज्यपाद स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी का जन्म २४ अगस्त १९०५ ई० (कृष्ण जन्माष्टमी) को आय समाज मन्दिर बिजनौर मे हुआ। आपके पिता जी महान् दर्शनिक विद्वान प० गगाप्रसाद उपाध्याय थे। मैट्रीकुलेशन से लेकर डी० एस० सी० तक सम्पूर्ण शिक्षा प्रयाग विश्व विद्यालय मे हुई। सन् १९२७ इ० मे एम० एस० सी० और १९३२ मे डी० एस० सी० को उपाधि मिली १९३० ई० से ही प्रयाग विश्व विद्यालय मे अध्यापन का काय प्रारम्भ किया। १९६७ ई० मे रसायन विभाग के अध्यक्ष और प्रोफेसर पद से सेवा निवृत्त हुए। उसके अनन्तर ५ वर्ष तक प्रयाग विश्व विद्यालय के भौतिकी विभाग मे शोध कार्य के लिये प्रवृत्त हुए।

आपने रसायन और भौतिकी के क्षेत्र मे शोध कार्य किए और १५० से अधिक भारतीय तथा विदेशी शोध पत्रिकाओ मे निबन्ध प्रकाशित किए। लगभग २२ छात्रो ने आपकी अधीनता मे शोध कार्य करके डी० फिल० और डी० एस-सी० की उपाधियां प्राप्त की। प्रारम्भ से ही आपकी रुचि हिन्दी साहित्य, वैदिक साहित्य और वैज्ञानिक साहित्य के प्रति रही। जिस समय आप शोध कार्यकर रहे थे, उस समय की आपकी 'कविताओं' का सकलन "प्रतिबिम्ब" नाम से प्रकाशित हुआ था।

उपनिषद् और अध्यात्म साहित्य के अध्ययन मे रुचि थी और आपने ईश और श्वेताश्वेतर उपनिषदो का छन्दोबद्ध अनुवाद भी किया था। आपकी हिन्दी कवितायें भी छायावाद और रहस्यवाद की भावनाओ से ओत-प्रोत थीं। शोध कार्य के अतिरिक्त आपका ध्यान हिन्दी भाषा को वैज्ञानिक साहित्य से सम्पन्न करने की ओर प्रवृत्त हुआ। वर्षों तक आपने विज्ञान परिषद् प्रयाग से प्रकाशित होने वाली 'विज्ञान' मासिक पत्रिका का सम्पादन किया और अनेक तरुण वैज्ञानिकों को हिन्दी वैज्ञानिक साहित्य के प्रति प्रेरित किया।

उच्च स्तर के रसायन शास्त्र का ग्रथ 'सामान्य रसायन विज्ञान' भारत सरकार से पुरस्कृत हुआ और हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'सेकसरिया' पुरस्कार तथा 'ताम्रपत्र' आपको भेंट किया गया। बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् की सस्थापना होने पर आपको पटना मे 'प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक साहित्य' पर कतिपय व्याख्यान देने के निमित्त आमन्त्रित किया गया। ये व्याख्यान बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् की ओर से 'वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा' नाम से प्रकाशित हुए। इस ग्रन्थ पर भी उत्तर प्रदेशीय सरकार की ओर से पुरस्कृत किया गया।

आप प्रारम्भ से ही उ० प्र० के हिन्दी समिति, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी और हिन्दी सस्थान के सदस्य रहे। हिन्दी समिति की ओर से 'प्राचीन भारत मे रसायन का विकास' नामक एक ग्रथ का प्रकाशन हुआ। इस क्षेत्र मे सबसे पहला काम अग्रेजी मे डा० प्रफुल्लचन्द्र राय ने किया था। स्वामी जी के ग्रन्थ मे उससे भी अधिक मौलिक सामग्री विद्यमान है। यह ग्रथ अपनी प्रामाणिकता के लिए इस समय अपने विषय का एक मात्र ग्रन्थ है। जिसकी सामग्री का उपयोग अन्य भाषा भाषियो ने भी किया है। इस ग्रथ पर 'नागरी प्रचारिणी सभा ने पुरस्कृत किया और विज्ञान परिषद् प्रयाग से स्वामी जी को 'स्वामी हरिशरणा नन्द' पुरस्कार प्राप्त हुआ।

दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने तथा वर्ष १९८३ ई० मे विश्व हिन्दी सम्मेलन ने स्वामी जी को हिन्दी वैज्ञानिक सेवाओ के उपलक्ष मे समावृत किया। उत्तर प्रदेशीय शासन ने अपना उस समय का सर्वोच्च पुरस्कार १५०००/= (पन्द्रह हजार रुपए) भेंट किया। जो पूज्य स्वामी जी ने उदारता पूर्वक विज्ञान परिषद् को उसके भवन के लिए दान दे दिया था। स्वामी जी विज्ञान परिषद् से लगभग ६० वर्ष से सम्बन्धित हैं और उसके भवन मे ही स्वामी जी ने १० मई १९७१ ई० को सन्यास की दीक्षा ली। आज भी आप उसके कक्ष मे रहते हैं।

पिछले २८ वर्षो से स्वामी जी ने विज्ञान परिषद् प्रयाग से प्रकाशित होने वाली 'विज्ञान परिषद् अनुसन्धान पत्रिका' के प्रधान सम्पादकत्व का भार अपने ऊपर लिया। इस पत्रिका के वे जन्म दाता हैं। यही अकेली ही भारतीय भाषाओमे शोध पत्रिका हैं जिसका विनिमय विदेशी शोध-पत्रिकाओ द्वारा होता है। इसमे प्रकाशित लेखो को वही सम्मान प्राप्त होता है जो अन्य विदेशी भाषाओं की पत्रिकाओ को। स्वामी जी की प्रेरणा से लगभग १५ वर्षो से यह प्रथा रही कि 'भारतीय साइन्स काग्रेस' के साथ-साथ एक हिन्दी वैज्ञानिक गोष्ठी को भी स्थान मिलता रहा है। १९४७ ई० मे जब देश स्वतन्त्र हुआ तो अनुसन्धान कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए डा० सम्पूर्णानन्द जी ने उ० प्र० मे एक 'साइन्टिफिक रिसर्च कमेटी' की सस्थापना की और स्वामी जी प्रारम्भ से ही इस समिति के अवैतनिक मन्त्री रहे। बाद को यह अर्द्ध सरकारी सस्था सरकार ने अपने हाथ मे ले ली।

स्वाधीनता की प्राप्ति के पूर्व १९४२ ई० के राष्ट्रीय स्वतन्त्रय आन्दोलन मे स्वामी जी को 'नैनी जेल' मे रखा गया। उस समय उनके साथ उनकी बैरेक मे लाल बहादुर शास्त्री जी प० कमलापति त्रिपाठी फिरोज गाधी आदि व्यक्ति थे। उसी जेल में डा० कैलाश नाथ काटजू,

(शेष पृष्ठ १३ पर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आदेश है

(आर्य बन्धुओ—का कृपाभिलाषी—मौ० मोहित मारिशस)

द्वीप द्वीपान्तर, देश-देशान्तर मे वैदिक धर्म का प्रचार करना—"वेद पढ़ना-पढ़ाना और सुनना, सुनाना परम धर्म है।"

देश-देशान्तर मे वेद प्रचार के लिए अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओ का सुदक्ष विद्वान होना अनिवार्य है।

विश्व की प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय भाषा—जैसे १—अंग्रेजी, २—फ्रेंच, ३—जरमन, ४—स्पेन, ५—रुसिया, ६—चीनी और ७—अरबी ।

मेधावी आर्य स्नातक जो सस्कृत मे आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण हो, और ऋषि दयानन्द का भक्त हो, साथ ही महोपदेशक रूप मे समाज सेवा की लगन हो ऐसे महोपदेशक का द्वि-भाषी होना अनिवार्य है। उपर्युक्त ७ भाषाओ मे से रुचि अनुसार सस्कृत के साथ किसी एक मे विशेषज्ञ होना अनिवार्य है।

गुरुकुल, महाविद्यालय, विश्व-विद्यालयो मे ऐसे स्नातको को प्रयत्न से खोजा जाय। प्रारम्भमे चार भी मिल जाय, ४ अन्तर्राष्ट्रीय भाषा मे सुदक्ष तो उन्हें और दो वर्ष विशेष प्रशिक्षण "महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सस्थान" की तरफ से दिये जाय।

"महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक—सस्थान" के तीन कार्य होगे।

१— प्रशिक्षण, २—शोध-कार्य, ३—वैदिक साहित्य का सस्कृत, हिन्दी और अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओ मे शुद्ध-सुन्दर प्रकाशन।

उपर्युक्त कार्यों को विधिवत् सुसम्पन्न बनाने के लिये एक करोड का स्थिर कोष १० मिलियण रुपये होना आवश्यक है।

भूमण्डल के धर्मनिष्ठ आर्य महानुभावो से विनम्र निवेदन है, एक वर्ष के लिए धन सग्रह के व्रती बन जाए। स्वय केवल एक सप्ताह की आय, निधि मे प्रदान कर दें। ऐसे अभूतपूर्व प्रभावशाली काम के लिए एक वर्ष मे एक सप्ताह का सात्विक सचित धन ऋषि की दक्षिणा भेंट मे देना एक सज्जन के लिए कठिन नहीं है।

१— श्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन नई दिल्ली।
२— श्री आर्य प्रादेशिक सभा पजाब, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली।
३— श्री आर्य परोपकारिणी सभा—अजमेर—४—विश्व की सब आर्य प्रतिनिधि सभायें और पूज्य आर्य यति मण्डल के हाथो सफलता मिल सकती है।

ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेन र्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ॥

१९२० ई० मे वैदिक धर्म की दीक्षा लेने के बाद उपर्युक्त मन्त्र का पाठ और चिंतन मनन भी करता रहा। सत्पथ पर आगे बढ़ने की सदिच्छा थी। सद ज्ञान के आभाव के कारण मन्द गति से चल रहा था। निरन्तर सत्सग, स्वाध्याय करते दो दशक के बाद शिव-सकल्प का दृढ़ व्रतीबन ऋषि दयानन्द का आदेश-देश-देशान्तर मे वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार के लिए जो उपर्युक्त योजना है, उनको सक्रिय बनाना अनिवार्य समझा। अत पिछले १० वर्षो से अपनी वार्षिक बचत जो लगभग ३० हजार रुपये थी, उनका जोड तीन लाख रुपये मोरिशस मे स्थिर निधि के लिए दे दिया। भारत मे महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय वेद सस्थान" के लिए जमीन बेच कर ६ लाख की राशि दे दी है। अब आर्य जगत के धनिक वर्ग से सविनय माँग है, केवल एक वर्ष की बचत को उपर्युक्त निधि मे देकर सस्थान के आजीवन सदस्य बने।

शताब्दी-समारोह

उ० प्र० के समस्त आर्यसमाजो के मन्त्री महोदयो की सेवा मे

प्रिय महोदय,

जैसा कि आपको विदित है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० का शताब्दी समारोह दिनाक १७, १८, १९ व २० अक्टूबर, १९८६ को डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ मे मनाया जा रहा है इस सम्बन्ध मे धन एकत्रित करने हेतु सभा ने २/—, ५/—, १०/—, २५/—, ५०/—, व १००/— के आकर्षक टिकट एवम् सादी रसीदें छपाई है। चूंकि समय बहुत कम रह गया है अत शीघ्र से शीघ्र अपने आर्य समाजो तथा शिक्षण सस्थाओ से धन एकत्रित करके भेजने की कृपा करें।

जिन सज्जनो को रसीद बुकें या टिकट प्राप्त न हुए हो, वे कृपया अपनी जिला सभा से रसीदें प्राप्त कर इस कार्य को शीघ्र ही पूरा कर सहयोग दें। साथ ही साथ यह भी निवेदन करना है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने यह भी निश्चय किया है कि इस अवसर पर नवयुवक एव नव-युवतियो को आर्य समाज की ओर आकर्षित करने के लिए "आर्य वीर दल" के कार्यक्रम "वाद-विवाद/ कला एव लेख खेल-कूद" आदि प्रतियोगिताओ के अनेक कार्यक्रम रखे हैं। जिसमे विजेताओ को नकद पुरस्कार भी दिये जायेंगे।

कृपया आर्य समाज तथा आर्य समाज से सम्बन्धित नव-युवक एव नव युवतियो तथा शिक्षण सस्थाओ के छात्र/छात्राओ को इस कार्यक्रम मे भाग लेने हेतु अपने मण्डल के माध्यम से भेजने की व्यवस्था करे।

कृपया समस्त पत्र व्यवहार, बैंक ड्राफ्ट, चेक अथवा नकद धन, मनमोहन तिवारी, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश (५ मीराबाई मार्ग,) लखनऊ के नाम से भेजने की कृपा करें।

शुभ कामनाओ सहित।

आपका
मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

नोट—श्री विद्यारत्न जी, सयोजक, खेल-कूद प्रतियोगिता एवम् अन्य बाल प्रतियोगिताओ के सम्बन्ध मे, उनके निवास स्थान—द्वारा—प्रधानाचार्य, राजकीय दीक्षा विद्यालय, टून्डला, जिला आगरा, से सम्पर्क करें।

निर्वाचन

श्री श्रद्धानन्द बाल बनिता आश्रम देहरादून
प्रबन्ध कारिणी समिति के नव निर्वाचित सदस्य—
श्री यशपालजी आर्य प्रधान(पदेन)
श्रीमती सुशीला शर्मा अधिष्ठात्री
श्री लक्ष्मीचन्द सह अधिष्ठाता
श्री अनिल गोस्वामी कोषा०

आर्य समाज लश्कर (ग्वालियर)
प्रधान श्री भारतभूषण त्यागी
मन्त्री श्री मदन मुरारी सक्सेना
कोषा० श्री अभिमन्यु खुल्लर

"वेद विरुद्ध मत और मूर्तिपूजा"

(श्री जगदीश शरणशीतल भू० पू० प्रधान आर्य समाजजादपुर गर्ग बुकडिपो चाँदपुर, बिजनौर)

(गताङ्क से आगे)

इसीलिए इन्होने वेद और ईश्वर को अमान्य कर दिया। इन्होने अपने उपदेश मे मध्यम माग को अपनाया जैसे सत्य बोलना, किसी की निन्दा चोरी तथा हिंसा न करना। ऊंच-नीच और छुआ-छूत का भेद न समझना इत्यादि। इसी कारण समाज ने इन दोनो महापुरुषो का हार्दिक स्वागत किया। क्योंकि समाज इन पाखण्डी पंडितो के अत्याचार से अत्यन्त दुःखी था। आप तनिक बुद्धि से विचारिये तो आपको ज्ञात होगा कि यह सब शिक्षायें हमारे वेद की ही होकर फिर भी उन्होने वेद का खण्डन किया इसका मुख्य कारण उनकी योग्यता वेद के ज्ञान की पहुच से बाहर थी।

इन महा पुरुषो की मृत्यु के पश्चात् इनकी मूर्तिया मन्दिरों मे स्थापित होने लगी जिससे मनुष्य उनके गुणो को जान सके। उनके चरित्र का अनुशीलन कर शिक्षा ग्रहण कर सके और मूर्ति के सम्मुख श्रद्धा-पूर्वक सिर नवाकर उनका साक्षात्कार कर सके। इसी आवश्यकता के कारण मूर्ति पूजा का आविष्कार हुआ धर्म की इस सरल पद्धति को देखकर मनुष्य अधिक सख्या मे जैन और बौद्ध धर्म को ग्रहण करने लगे। अपनी धार्मिक अवनति को देख कर पौराणिक पंडितो ने भी मंदिरो तथा मूर्तियो का निर्माण किया। सारे भारत मे निराकार ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना के स्थान पर अनेक साकार देवी-देवताओ की पूजा होने लगी। मनुष्य समझने लगे यह मूर्तिया हमारा हर कार्य करने मे समर्थ हैं। हमने जो भी बुरे-कर्म किये हैं या करेंगे इनके गुण गान करने तथा दर्शन मात्र से सब नष्ट हो सकते है। इस कुधारणा ने मनुष्य को कुकर्मी तथा पुरुषार्थ हीन बना दिया।

जबकि वेद का उपदेश था कि जो जैसा कर्म करेगा उसका फल उसी को वैसा ही अवश्य भोगना पड़ेगा। उन महापुरुषो के चरित्र का अनुशीलन न करके उनके चित्र की पूजा होने लगी, मन्दिरों तथा मठो मे अपार सम्पत्ति एकत्र होने के कारण पुरोहित तथा पुजारी प्रमादी, विलासी तथा चरित्र हीन हो गए। मठो भिक्षु तथा भिक्षुणियां तरुण होने के कारण दुराचारी बन गए। राजा लोग इनकी विचार धारा के कारण सैन्य शक्ति की उपेक्षा करके विलासी जीवन व्यतीत करने लगे। हमारी इस मूर्खता अज्ञानता तथा दुर्बलता का लाभ उठाकर विदेशी आक्रमणकारी इस देश पर आक्रमण करने लगे। मन्दिरो, मठो तथा पुस्तकालयो को ध्वस्त कर दिया। यहां का अपार धन लूटकर पुरोहितो पुजारियो असख्य स्त्री पुरुषो तथा बच्चो को या तो मार डाला गया या उनको विधर्मी बना दिया गया। मूर्तिया टूटती रहीं और चुप चाप इस अन्याय को सहन करती रहीं उन्होने उन दुष्टो का कुछ भी नहीं बिगाड़ा और नाहीं अपने चमत्कार से उनको कुछ भी प्रभावित किया। हमने कभी सोचा ही नहीं कि मूर्ति पत्थर की बनी जड पदार्थ है उसमे किसी के बनाने या बिगाड़ने की कोई सामर्थ या शक्ति नहीं। जो कहते हैं हमने उसमे प्राणप्रतिष्ठा कर दी है तो फिर कभी आपने उस मूर्ति को चलते-फिरते-उठते-बैठते-खाते-पीते या कोई और चेष्टा करते देखा। परन्तु इसके विपरीत उसका सारा कार्य पुजारी के ही द्वारा होता है। इन अवैदिक मतो तथा मूर्ति पूजा ने समाज मे अकर्मणयता, असत्यता पुरुषार्थ हीनता, फूट, हिंसा तथा द्वेष को जन्म देकर देश को एक हजार वर्ष तक परतन्त्र और यहा की आर्य जाति को विधर्मी बनने पर विवश कर दिया। यदि हम वेद के मार्ग पर चलते रहते तो हमे यह दुर्दिन कभी न देखने पड़ते। जबकि वेद का मत हैं ससार मे वही मनुष्य उन्नत, विजयी तथा सम्मानित होते हैं जो मिल कर बैठते मिल कर चलते, मिल कर सोचते मिल कर बोलते तथा मिल कर काम करते हैं। जो दूसरो के ऊपर निर्भर रहता है वह आलसी है। प्रमादी है। उसकी ईश्वर भी सहायता नहीं करता पुरुषार्थ उन्नति, प्रगति तथा सफलता की कुंजी है। यदि ससार मे सुख और शांति चाहते हो और इस अलगाववादी, पृथकतावादी, उग्रवादी तथा साम्प्रदायवादी प्रवृति को समाप्त करना चाहते हो तो इन वेद विरुद्ध मतो तथा मूर्ति पूजा को छोड़कर वैदिकधर्म की ओर आओ और एक निराकार निर्विकार, अजर, अमर, अजन्मा, अनादि, अनन्त अभय, नित्य, पवित्र, सृष्टिकर्त्ता, सर्वशक्तिमान सर्वाधार, सर्वेश्वर, न्यायकारी, दयालु, सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वान्तर्यामी, अनुपम सर्वव्यापक ईश्वर की उपासना करो।

निर्वाचन

आर्य समाज भवाली नैनीताल
प्रधान श्री मेजर केशर सिंह
मन्त्री श्री भूमित्र आर्य
कोषा० श्री नारायण सिंह

आर्य समाज शेरकोट [बिजनौर]
प्रधान श्री राम स्वरूप आर्य
मन्त्री श्री गजराज सिंह वैद्यराज
कोषा० श्री इन्द्रजीत जी

आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत
प्रधान श्री रामानन्द जी सिंगला
मन्त्री श्री कुलभूषण जी
कोषा० श्री मदन मोहन जी

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा जौनपुर
प्रधान श्री रामराज
मन्त्री श्री कल्पनाथ
कोषा० श्री छोटेलाल आर्य

आर्य समाज मोठ [झांसी]
प्रधान श्री मदन मोहन एडवोकेट
मन्त्री श्री ओ३म्प्रकाश स्नातक
कोषा० श्री परेश कुमार

आर्य समाज सीतापुर
प्रधान श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल
मन्त्री श्री वेद प्रकाश आर्य
कोषा० श्री कृष्णकुमार आर्य

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम् :-

आर्य समाज कैसे बढ़े ?

(कल्याण भाई आय मन्त्री आर्य समाज घाटकोपर, मुबई)

[गताक से आगे]

मोरबी के भी लोगो ने सेवा मे कमाल ही कर दिया। वहाँ के प्रधान तथा मत्री प्रतिदिन प्रात साय समाज को खोलते है तथा अतिथि के आते ही बिना उसके कहे अपने घर पर भोजन की व्यवस्था करते हैं। नाश्ता समाज मे लाते है। अपने हाथ से जूठे बर्तन धोते है। प्रतिदिन अपने हाथ से समाज मे झाडू लगाते हे। ईश्वर हम सब आर्यो को भी ऐसी प्रेरणा दें वे हमारे साथ पास के गाव मे प्रचार के लिये भी गये यात्रा के अन्तर्गत गुजरात की समाजो मे जब हम आचाय श्री ब्र० आय नरेश जी के साथ प्रचार करने गये तो स्थानीय समाजो के अधिकारियो तथ धम प्रेमी सज्जनो ने बडे ही दु ख के साथ बताया कि गुजरात सभा की ओर से हमारे एक विद्वान के विषय मे यह सूचना मिली है कि उनकी प्रचाराथ सहयोग न दिया जाये। उन लोगो ने कहा कि बहुत मुश्किल से कहीं अब आप जैसे लोगो के सहयोग से प्रचार होन लगा था तो अब सभा के एक आद व्यक्ति के द्वारा यह अनिष्ट बात कहा जा रही ह। सभी समाजो क अधिकारियो तथा आय जनो न उपरोक्त पत्र का घोर विरोध करत हुये कहा कि हमारे लिए इस पत्र की कोई भी कीमत नही हं। हमारा तो यह सौभाग्य हे कि ब्र० श्री आय नरेश जी जसे भारत वष क प्रसिद्ध तेजस्वी व ओजस्वी विद्वान गुजरात पधारते हैं। उन्होने कहा कि एक आध व्यक्ति के कहने पर प्रचार नही रुक सकता। यदि जीवन दान देकर प्रचार करने वाले ब्रह्मचारियो व साधुओ के पहुचने पर समाजें ताला लगा कर रखेंगे, उन्हे वहा रहने की अच्छी व्यवस्थाके स्थानपर "जाने कौन कहेगी" जैसे कि पूज्य स्वामी इशानन्द तथा स्वामी शिवानन्द जी के साथ एक दो समाजो मे हुआ तो प्रचारक क्या मस्जिद मे रहेंगे ?

मुझे आश्चय ह कि एक तरफ तो जयपुर वाले रात्रि सेवक द्वारा ताला न खोलने पर क्षमा मागते है तो इधर दूसरी ओर जूनागढ व हाथी खाना-राजकोट वाले उलटा अनिष्ट व्यवहार करते हैं पर किसी साधु ने कुछ कह भी दिया तो बुरा नहीं मानना चाहिये अपितु अपनी गलतियो व कमजोरियो को सुधारना चाहिए आखिर वे गुरु के समान हैं। इस स्थानीय सभा मे कहा क्या क्या हो रहा हे ये सब हम जानते हैं। सच्चे ऋषि भक्त आय इसकी चिन्ता नहीं करते हैं।

अनेको वर्षो से आर्य समाज का कोई आदोलन नहीं हो सका, गो हत्या चर्बी काण्ड, धम परिवतन बिल, दूसरी भाषा उर्दू का बावेला, बहिन राकेश रानी पर ३६ मुकदमे, पजाब मे आर्यो की निर्मम हत्या, काश्मीर मे आय समाज को जलाना, भारत को विघटित करने वाले पादरियो के गुरु पोप पाल का भारत आना और भारत मे प्रथम बार वैदिक धम–आर्य समाज का प्रचार करते हुये पू० श्री ब्र० आय नरेशजो का गोवा मे पकड़ा जाना आदि-आदि मुद्दो पर हमारी शीर्षस्थ सभा को अवश्य आदोलन छेड़ना चाहिये था।

अब तो और भी दु ख तथा आश्चय की बात यह हे कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी द्वारा इन्दिरा कांग्रेस को वोट देने की अपील निकालने पर भारत भर के आर्य अत्यन्त दु खी हुए और उन्होने ऐसे कार्य की भर्त्सना की, चैम्बुर आदि स्थानो पर सभा प्रधान का विरोध हुआ। आर्य समाज मण्डीबास मुरादाबाद मे इसी बात पर एक सदस्य ने त्याग पत्र दिया और स्थानीय मण्डी बास समाज मे अधिकारियो ने लाला जी के इस काय का विरोध करते हुए निन्दा प्रस्ताव पारित किया अभी अभी मुझे वर्णाश्रम पत्रक तोपखाना बजार (हैदराबाद) के इस समाचार को सुन कर अत्यन्त दु ख हुआ कि हेदराबाद की एक समाज मे सावदेशिक सभा के प्रधान व मन्त्री से यह कहकर कि उनके कार्य काल मे आयसमाज का तेज और आदोलन प्राय समाप्त हो गया ह अत वे त्याग पत्र दें हमारे शिषस्थ नेताओ के विषय मे ऐसी बात सुनकर अत्यन्त दु ख हुआ। मेरी गुजरात, सौराष्ट्र तथा अन्य सभा समाजो को हाथ जोड कर प्राथना ह कि वे ऋषि दयानन्द क सिद्धातो के अनुसार ही कार्य करे। हम लोग गृहस्थ होत हुए भी वष म लगभग एक मास का समय तथा ईश्वर की कृपा से ओर श्री ब्र० आय नरेश जी जैसे पवित्र लोगो की प्ररणा स जो धन ओर समय आयसमाज के प्रचार के लिए लगाते ह, हमारी यही इच्छा ह कि आय समाज क प्रचार मे यदि कोइ सहयोग देकर साधु ब्रह्मचारी व सन्यासियो की सेवा तथा सत्कार करक वेद प्रचार करवा नही सकता तो कृपया रोकने का भी कष्ट न करें।

आय जनो को यह बात गभीरता स विचारना चाहिए कि कोइ भी व्यक्ति एक दम पूण विद्वान ओर अच्छा वक्ता नही बन जाता। अत हमारा यह परम कतव्य ह कि आय समाज क काय का आग बढ़ान क लिए घर बाहर को छोड़कर समाज मे आन वाल सभा आय प्रचारको का भोजन आदि से उचित सत्कार करें तथा उनकी योग्यता क अनुसार वैसे ही क्षेत्र आश्रम, विद्यालय या गुरुकुल मे प्रचार का व्यवस्था कर। मेरा यह दृढ़ निश्चय ह कि एसा हो जाने से हमे समाज क लिय अधिक कार्यकर्ता मिल सकेंगे, मेरा यह व्यक्तिगत विचार ह कि, यदि समाजो तथा समाजोके अधिकारी दलगत अनाय राजनीति गुटबन्दीसे हटकर पद क स्थान पर सच्चे आय सेवक बनकर वैदिक सिद्धातो के अनुसार काय करेंगे तो महाष दयानन्द का स्वप्न साकार होगा। यदि सभी आय गृहस्थ लोग थोडा सा भी समय प्रतिदिन धमके लिये निकाल कर बच्चो क साथ घर मे सत्सग करेंगे तो वातावरण सुधार सकेंगे। अपनी धमपत्नी श्रीमती पावती बेन आर्या के मुझे घर की ओर से निश्चित कर देने पर लगभग बीस दिन ब्र० आय नरेश जी के साथ प्रचार म रहकर मुझे भी यह कटु अनुभव हुआ की हमारे विद्वान साधु-प्रचारक आय समाज के प्रचार के लिए कितने कष्ट सहते ह। यदि हम लोग भी दो तीन दिन तक बाहर निकलकर देखेंगे तो वास्तविकता शीघ्र समझ म आयेगी और हम लोग अपना सुधार कर सकेंगे तथा आर्य समाज क कार्य मे तन-मन-धन से सहयोग देकर आय समाज के प्रचार को आग बढा सकेंगे और यह निश्चित है कि यदि हम आय लोग थोडा सा भी त्याग करके या कष्ट सहके कार्य समाज का सहयोग करेंगे तो वही बीता हुआ युग वापिस आ सकेगा।

पूज्य स्वामी आनद बोध सरस्वती जी

बुधवर रामगोपाल जी। बने बोध आनन्द।
आर्य जगत मे छा गया, सुनकर हर्षानन्द ।।
सुनकर हर्षानन्द, आर्यों मे नव आशा आई।
वैदिक धर्म प्रचार बढ़ैगो, देश विदेशन जाई ।।
कहे ब्रह्मानन्द आय, पूज्य स्वामी जो गुणवर।
होवे प्राप्त शतायु, धर्मधुर मुनिवर बुधवर ।।

ब्रह्मानन्द आर्य प्रचारक आय प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

राष्ट्रोद्धारक दयानन्द

(श्री विजेन्द्र शर्मा, सदस्य वेद मन्दिर सहारनपुर)

फ्रांस के विख्यात लेखक रोमा रोला १९२८ ई० मे जब भारत मे रहकर रामकृष्ण परमहंस की जीवनी लिख रहे थे तो वे राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत युग निर्माता दयानन्द के जीवन से इतने प्रभावित हुए कि इसी पुस्तक मे ही महर्षि के सम्बन्ध मे भी उल्लेख करना अनिवार्य समझा और उन्होने जो लिखा है वह आर्य समाज को ही नही अपितु पूरी मान्यता के लिये गौरव की बात है। देश जब दासता की सकलो मे जकड़ा हुआ हो और देशवासी खड़ताल छैने आदि बजा बजाकर ईश्वर की भक्ति मे तल्लीन हो रहे हो तो यह उनकी अज्ञानता तथा मानसिक दुर्बलता का सबसे बड़ा प्रमाण है। दयानन्द ऐसे काल्पनिक या थोथे अध्यात्मवाद के पक्ष मे नही थे। यर्थार्थवादी होने के कारण उन्हो ने यह अनुभव किया कि पराधीन रहना सबसे बड़ा दुःख है। [परवश दुःख] अतः उन्होने पश्चिम का अनुकरण किये बिना विशुद्ध वेदवाद पर राष्ट्रीयता को खड़ा करके वेद भाष्य मे स्थल स्थल पर स्वाधीनता तथा राष्ट्रीयता का उद्घोष किया। उन्होने भाग्य एवं नियतिवाद से प्रभावित निष्क्रिय समाज को आत्मा की स्वतन्त्रता तथा कर्मण्यता का पाठ पढ़ाया और इस प्रकार सच्चाई और निःस्वार्थता का आलम्बन लें देशकी उन्नति मे बाधक अन्ध विश्वास तथा पाखण्डो के विरुद्ध बिगुल बजा दिया।

रोमा रोला के अनुसार उनके हृदय मे विदेशी मतो की पुस्तको तथा भारत मे प्रचलित पाखण्डो के लिए कोई आदर न था। इन सब की आलोचना के लिए रोमारोला ने यह उल्लेख किया– 'दयानन्द के हृदय मे किसी भी प्राचीन व नवीन ऐसे व्यक्ति के लिए जिसने एक समय समस्त देशो की निरताज भारत भूमि के सहस्र वर्ष व्यापी पतन मे हिस्सा लिया हो, कोई दया का भाव न था। वह उन सब व्यक्तियो के जिन्होने उनके मतानुसार सच्चे वैदिक धर्म को विकृत एवं कलंकित किया था, निर्मम समालोचक थे। दयानन्द के राष्ट्रीयतावाद मे विश्व कल्याण की भावना जैसा कि उनके द्वारा निर्मित आर्य समाज के सातवें नियम से स्पष्ट है 'ससारका उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् आत्मिक शारीरिक और सामाजिक उन्नति करना।' दयानन्द द्वारा लिखित जो मन्तव्य है, उनके अन्त मे यह कहा गया है–

जो मत मतान्तरो के विरुद्ध परस्पर झगड़ें हैं, उनको मै पसन्द नहीं करता, क्योंकि इन्ही मतवालो ने अपने मतो का प्रचार कर मनुष्यो को फसाकर परस्पर शत्रु बना दिये हैं। सब सत्यका प्रचार कर सबको एक मत मे करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर मे दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबका सुख लाभ पहुचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।,

महर्षि दयानन्द ने सच्चाई और राष्ट्रीयता को एकता का आधार कहा। उनके अनुसार सब उन्नतियो का केन्द्र स्थान एक्य हैं। जहा भाषा, भाव और भावना मे एकता आ जाये, वहा ससार की नदियो की भांति सारे सुख एक एक करके प्रवेश कर जाते हैं।' आज देश की अखण्डता और एकता को दृष्टिगत रखते हुए किसी भी व्यक्ति, मत अथवा सस्था के उत्तम होने की कसौटी राष्ट्रीयता हो।

मनुष्य की परिभाषा दयानन्द के अनुसार निम्न प्रकार है–

'मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहें। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यो न हों– उनकी रक्षा, उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहा तक हो सके वहा तक अन्यायकारियो के बल की अवनति सर्वदा किया करे। इस काम मे उसको चाहे कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।'

दयानन्द मे जो निश्चयात्मकता, अदम्य साहस, सिंह जैसा शोणित तप सच्चाई तथा मानव कल्याण की भावना विद्यमान थी, उसी की आवश्यकता आज हम सबको है जिससे देश को खण्डित करने वाली मनोवृत्ति को पराजित कर छोटे से छोटे व्यक्ति की भलाई कर राष्ट्र को समृद्ध कर सकें।

–०–

जन्माष्टमी

(कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम० ए० महोपदेशक,
शास्त्री सदन रामनगर कटरा आगरा-६ उ०प्र०)

जन्म-अष्टमी पर्व पुरातन नये रूप मे आया है।
नया जागरण, नयी चेतना, नयी भावना लाया है ॥१॥

इतिहासो के पृष्ठ आज फिर लगे स्वयं को दुहराने।
अनय, अन्ध् अज्ञान दिशा के घन घमण्ड हैं घुमड़ाने।
अत्याचारी डटे हुए हैं आँगन मे भृकुटी ताने।
भारतीय सौभाग्य स्रोत को किसने आज सुखाया है ॥२॥

कही कंस के वंशधरो ने अपने डेरे डाले हैं।
जरासन्ध, शिशुपाल उछलते निर्भय हो मतवाले हैं।
सम्प्रदाय के नाग कालिये उगल रहे विषकाले हैं
साहस का व्यक्तित्व सो गया जगता नही जगाया है ॥३॥

पौरुष के वसुदेव देवकी बन्द पड़े हैं कारा मे
झेल रहे हैं कष्ट भयानक बहे यातना धारा मे।
भगदड मची हुई है सचमुच पञ्जाबी चौबारा मे
सतलज, व्यास नदी यमुना मे कितना रक्त बहाया है ॥४॥

पश्चिम की छींटे इस नदी मे आई बाढ़ डुबाने को
अरबी सागर उफन रहा है भारतीयता खाने को।
इसीलिए हो सावधान अब कृष्ण-नीति अपनाने को
'शठे शाठ्य समाचरेत' का गूंजे शोर सबाया है ॥५॥

याद रहे स्वातन्त्र्य महल को आंच नहीं आने पावे
देके मात पड़ोसी छलिया चाल नही चलने पावे।
अखण्डता की धवल ध्वजा यह जरा नही झुकने पावे।
आतङ्कवादो का कर दो बिलकुल "प्रणव" सफाया है ॥६॥

–०–

श्री इन्द्रराजजी सभाप्रधान का मई १९८६ का प्रचार कार्यक्रम

१ से ६ मई तक सामाजिक काय। गुरुकुल गया। नौचन्दी मेले मे रात्रि को वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र पर। तथा भतीजी शशि के नर्सिग होम मे सेवा।

७, ८ तथा ९ मई लखनऊ

१० से १८ तक मेरठ मे सामाजिक काय तथा भतीजी के इलाज मे

१९ मई– ईसाई युवक की शुद्धि।

२० से २५ मई— सामाजिक कार्यो मे अत्यन्त व्यस्त तथा भतीजी के इलाज मे।

२६-२७ मई– नैनीताल आर्य समाज मे भाषण

२८ मई– भवाली ,, ,, ,,

२९ से ३१ मई– सामाजिक कार्यों मे सलग्न।

श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान का जून १९८६ का प्रचार कार्यक्रम

१ जून– समाज के कार्यो मे व्यस्त

२ जून– आर्य समाज डिमौलो महिमुद्दीन पुर के वार्षिकोत्सव मे भाषण

३ से ७ जून तक– गुरुकुल के लिए अन्न सग्रह। सामाजिक कार्यों मे सलग्न। जिला एकीकरण नागरिक परिषद मे भाग।

८ जून– भतीजी का देहान्त

१२ जून ८६–जयपुर

१६ जून ८६– भतीजी का अन्तिम शान्ति यज्ञ

१७ ,, ,, गगा दशहरा पर गुरुकुल की ओर से वेद प्रचार कैम्प

१८ ,, ,, मुरादाबाद

१९-२१ ,, सामाजिक कार्यो मे सलग्न

२२ ,, दिल्ली श्री रामगोपाल जी शालवाले को सन्यासदीक्षा

२३ ,, आर्य समाज फजलपुर सुन्दर नगर मे भाषण

२४ ,, दिल्ली पञ्जाब से आये शरणार्थियो के कैम्प का निरीक्षण तथा ५०००) रुपये दान सहायतार्थ

२५ ,, हसन पुर मे राजाराम आदर्श विद्या मन्दिर का उद्घाटन भाषण।

२६ से २९ ,, आर्य समाज एव गुरुकुल प्रभात आश्रम के कार्यो मे सलग्न।

३० जून ८६ मुजफ्फर नगर कोर्ट मे बयान।

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का जौलाई मे वेदप्रचार कार्यक्रम

१ से ११ जौलाई ८६– आर्यसमाज, गुरुकुल, जिला सभा तथा सभा के विविध कार्यों मे सलग्न तथा स्वास्थ्य खराब

१२ जौलाई ८६ सार्वदेशिक की ओर से पञ्जाब मे हो रहे नर सहार के विषयमे अखिलभारतीय सम्मेलन दीवानहाल दिल्ली

१३ ,, फर्रुखाबाद, खुदागज, कमालगज, फतेहपुर

१४-१५ जौलाई–लखनऊ

१६-१७ ,, सामाजिक कार्यो मे सलग्न

१८ ,, धर्ममाता का देहान्त।

२० ,, आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ का वार्षिकनिर्वाचन

२२ ,, आर्य समाज का वाद तथा भान्जो को मृ यु दिन्ना

२३ ,, आर्य समाज का कार्य

२४ से २६ ,, सामाजिक कार्यो मे व्यस्त

२७।७।८६ लखनउ कार्यालय

२८ ,, धर्म माताजी का अन्तिम शाति यज्ञ

२९ ,, आर्य समाज का वाद

३० ,, ,, ,, ,,

३१ ,, परतापुर और वहा से वापसी पर सामाजिक कार्य।

आर्य युवक एव आर्य युवति दल हरियाणा का प्रथम महा सम्मेलन

–आर्य युवक एव युवतियो को राष्ट्र की एकता और अखण्डता के प्रति कर्तव्य निष्ठ एव जागरूक होने के लिए तथा राष्ट्र विरोधी तत्वो का डटकर मुकाबला करने के उद्देश्य से एक विशाल सम्मेलन भारत की प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी पानीपत आर्य कालेज के मैदान मे [बस स्टैण्ड के सामने] प्रान्तीयस्तर पर बडे ही हर्षोल्लास एव उत्साह के साथ दिनाक ४ एव ५ अक्टूबर १९८६ को सम्पन्न होगा। इसी अवसर पर आय जगत के शिरोमणि सन्यासी वेदज्ञ विद्वान सगीताचार्य, ओजस्वी युवक वक्ता वर्तमान ज्वलन्त प्रान्तीय राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ के सन्दर्भ मे वैदिक सिद्धातो के आधार पर गम्भीर विचार देंगे। इस महा सम्मेलन मे स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, सार्वदेशिक सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री प्रो० शेर सिंह, श्री रामनाथ जी सहगल, स्वामी ओमानन्द सरस्वती जैसे महान विद्वान एव वक्ता सम्मिलित होगे। –सम्वाददाता

–आय समाज नगरिया परीक्षित इज्जतनगर बरेली के तत्वावधान मे पारिवारिक सगठन का आयोजन लगभग ४ मास से क्रियाशील है मास जुलाई १९८६ मे उक्त समाज द्वारा बरेली के विभिन्न परिवारो मे पारिवारिक सत्सग उत्तम रूप से सम्पन्न हुआ। मन्त्री आर्यसमाज

–आर्य समाज ग्राम चन्द पुरवा बुजुर्ग (हमीरपुर) का वार्षिक अधिवेशन दिनाक २० एव २१ जुलाई १९८६ को हर्ष एव उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ जिसमे भजन, उपदेश के व्यापक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। –हर नारायण आर्य

–आर्य समाज विश्वेश्वर गज (बहराइच) के मन्त्री श्री ब्रह्मदेव गोस्वामी की आयुष्मति पुत्री कु० सरलादेवी का शुभ पाणिग्रहण सस्कार श्री शेषनाथ गोस्वामी पुत्र श्री खुशीराम गोस्वामी ग्राम मगहा खरगू पुर (गोण्डा) के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दिनाक १ जून १९८६ को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। –सम्वाददाता

–आर्य समाज सन्डीला (हरदोई) का वार्षिकोत्सव दिनाक १ सितम्बर से १४ सितम्बर १९८६ तक धूमधाम से सम्पन्न होगा जिसमे आर्य जगत के प्रमुख विद्वान एव वक्ता श्री हरिवश लाल जी मेहता वेद मनीषी तथा सार्वदेशिक सभा दिल्ली के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री आदि सम्मिलित होगे। –सत्यप्रकाश

–आय समाज हापुड (मेरठ) मे वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन दिनाक २० अगस्त से २७ अगस्त १९८६ तक हर्षोल्लास व धूमधाम से सम्पन्न होगा। आर्य जगत के प्रमुख विद्वान और वक्ता सम्मिलित होगे। –मन्त्री

समाज के अधिकारियो से निवेदन

प्राय उत्सवो के अवसर पर तथा अन्य आयोजनो पर सभा से उपदेशक और भजनीक समाजो को भेजे जाते हैं, सभा अधिकतर समाजो के अनुरोध पर ही कायक्रम निर्धारित करती है ।

खेद के साथ लिखना पड रहा है, कि कई उपदेशको एव भजनीको ने हमारा ध्यान दिलाया है, कि उनके साथ समाज के अधिकारी उचित व्यवहार नहीं करते हैं और मार्ग व्यय आदि भी समुचित नहीं देते है, यह उचित नही है। उपदेशको एव भजनीको को जो धन समाजें दें, उसकी उनसे रसीद ले लें, मार्ग व्यय आदि उचित दिया जाना चाहिए।

स्वागत सत्कार तो हमारी सभ्यता है ।

यदि उपदेशक या भजनीक के किसी व्यवहार से समाज अधिकारियो को शिकायत हो अथवा अन्य कोई उनके सम्बन्ध में उल्लेखनीय बात हो तो उसकी विस्तृत रिपोर्ट अधिकारी समाज सीधे हमारे पास लिखकर भेजें, हम उचित कायवाही करेंगे ।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०, लखनऊ

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ अगस्त १९८६ को समाप्त हो गया है । बी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) रु० मनीआडर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि बी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी बी० पी० भेजी जायेगी । अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो बी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पडेगा । कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं । १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है ।

५६६, ६०८, ६१८, ९५३, १६०७, २१४५, ३०५०, ३७८०, ४३७२, ५००१, ५१८०, ५२६५, ५३०१, ६१९३, ६२०१, ६४९७, ६७७३, ६७८१, ६८३८, ८३२५, ८३८८, ८६४०, ८६६५, ९२१५, ९२१९, ९४९२, ९५०१, ९५०६, ९९४३, ९९६९, ११००५, ११०१०, ११२२७, ११२३५, ११२५२, ११६७७, ११६९४, ११७०१, ११९७१, ११९७३, ११९७८, १२३२८, १२३४४, १२३४७, १२३६०, १२३६४, १२३६५, १२३७६, १२६८९, १२७०४, १२७१२, १२७१७, १२७१८, १२७१९, १२७२१, १२९४८, १२९४९, १२९५१, १२९५३, १३१८१, १३१८२, १३१८५, १३१८७, १३१८८, १३१९१, १३५०८, १३५०९, १३५१०, १३५१११, १३५१३,१३५१४, १३५१५, १३५१६, १३५१७, १३५१८, १३५१९, १३५२०, १३५२१, १३५२२, १३५२३, १३५२४, १३५२५, १३५२६, १३५२७, १३५२८, १३५२९, १३५३०, १३५३१, १३५३२, १३५३३, १३५३४, १३५३५, १३५३८, १३५३९, १३५४०, १३५४१, १३५४२, १३५४३, १३५४४, १३५४६, १३५४७, १३५४८, १३५४९, १३५५०,१३५५१, १३५५२, १३५५४, १३५५५, १३५५६, १३५५७, १३५५८, १३५५९, १३५६०, १३५६१, १३५६२, १३५६३, १३५६५, १३५६६, १३५६७, १३५६८, १३५६९, १३५७०, १३५७१, १३५७२, १३५७३, १३५७४, १३५७६, १३५७७, १३५७८, १३५७९, १३५८०, १३५८१, १३५८३, १३५८५, १३५८६, १३५८७, १३५८८ ।

विनीत—
—व्यवस्थापक 'आर्यमित्र'

फुलेरी (सफेद दाग) : कुष्ठ रोग नहीं है !

[डा० ज्ञानप्रकाश कछवाहा जिला कुष्ठ अधिकारी (पिथौरागढ़)]

कबरैली बकरी हो या गाय—देखने मे सभी को भाय ! यदि मनुष्य कबरैला हो जाय, तो ? यह निश्चित बात है कि फुलेरी (ल्यूकोडर्मा) छूत वाला (संक्रामक) रोग नहीं है । इसका कुष्ठ रोग से कोई सम्बन्ध नहीं है ।

कुष्ठ रोग (लेप्रोसी) माइकोबैक्टीरियम लेपरी नामक कीटाणु द्वारा फैलता है । कुष्ठ रोग के प्रारम्भिक चिह्न (बदरग लाल चकत्ते, त्वचा-सूजन, लाल—चमकीला—चिकनाई वाला मुखडा, त्वचा के बालो का झडना, शुष्क त्वचा आदि) तथा लक्षण (झुनझुनी, भारीपन, सुन्नपन, मासपेशियो मे कमजोरी, स्नायु मे सूजन व दर्द आदि) होते हैं ।

फुलेरी त्वचा के किसी भी भाग मे सफेद धब्बों के रूप मे प्रकट होती है । इन धब्बो मे खुजली, दर्द, जलन आदि नहीं होती है । इस सफेद धब्बो मे सवेदना, बाल (रोम), लचीलापन तथा तैल्यता—सामान्य त्वचा की भाति होती है ।

फुलेरी का कारण अज्ञात है । परन्तु उत्तरदायित्व कारक हैं—

आहार मे प्रोटीन व खनिज लवणो की कमी, विटामिन—सी व ऐन्टीबायोटिक्स का अधिक सेवन, मानसिक चिन्तायें आदि ।

सफेद धब्बो मे त्वचारगकण (स्किन पिगमेन्टस्) लाने हेतु निम्नाकित अनुभूत प्रयोग हैं—

त्रिफला चूर्ण—६० ग्राम, निबोली (नीमफल) के बीज २० ग्राम, शोधी भिलावा २० ग्राम, शोधी गन्धक २० ग्राम मिलाकर सबके साथ महीन चूर्ण बनावें । फिर भृङ्गराज की पत्ती के रस मे सानकर मटर के समान गोली बनाकर छाया मे सुखायें । रोजाना प्रात एक गोली घोशक्कर से तब तक खाते रहे, जब तक कि सफेद दाग की समाप्ति न हो जाय । उपचार काल मे आहार के रूप मे चितरीदार केले मीठे दूध में मिलाकर खाना चाहिये तथा चना का सेवन किसी भी रूप मे करें । कब्ज से बचाव हेतु रात्रि भोजन के अन्त मे दूध मे ईसबगोल का सेवन करें । नमक का सेवन नहीं करना है । उपचार मे ४ से ८ मास का समय लग सकता है ।

हर्ष सूचना

आय जनता को बडे हर्ष से सूचना दी जाती है कि गुरुकुल धासीपुरा मनसूरपुर जिला मुजफ्फरनगर मे दि० १३ जौलाई ८६ से प्रवेश प्रारम्भ हो गए हैं । गुरुकुल के सस्थापक स्वामी कल्याणदेव जी ने यह गुरुकुल स्वामी कर्मानन्द जी को साधिकार सौंप दिया है ।

आर्य जनो को इससे लाभ उठाए जाने की प्राथना की जाती है । इस सम्बन्ध में इच्छुक सज्जन पत्र व्यवहार द्वारा स्वामी कर्मानन्द जी से सम्पर्क स्थापित करें ।

—सम्वाददाता

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्यवीर दल पश्चिम उत्तर प्रदेश के सभी अधिकारियो को सूचित किया जाता है कि प्रान्त के नए महामन्त्री श्री वेदप्रकाश गुप्त (वेद नम्बरदार) बजाजा गली, बिन्दकी जिला फतेहपुर को नियुक्त किया गया है, कृपया भविष्य में उनसे सम्बन्ध स्थापित करें।

—डा० बालकृष्ण (आर्य) "विकल"

वैज्ञानिक विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाश जी

(शेष पृष्ट ६ से आगे)

बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन और आर० एस० पंडित भी थे।

विद्यार्थियो मे हेमवती नन्दन बहुगुणा भी थे। दिल्ली सी० एस० आई० आर० की ओर से 'भारत की सम्पदा' नामक जो ग्रंथ माला निकल रही है उसके प्रधान सम्पादक स्वामी जी है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन से सबसे बडा जो 'अंग्रेजी हिन्दी मानक कोष' छपा है उसक प्रधान सम्पादक स्वामी जी हैं।

'वेद प्रतिष्ठान' दिल्ली ने वेद के अंग्रेजी अनुवाद की जो आयोजना हाथम ली है उसके अन्तर्गत अनुवाद और सम्पादनका भार स्वामीजी को सौंपा गया। ऋग्वेदका कार्य समाप्त हो गया और यजुर्वेदका अनुवाद प्रेस मे दे दिया गया है। सामवेद भी लगभग पूरा हो चुका है। अथर्व वेद पर कार्य चल रहा है।

पिछले २० वर्षों से स्वामी जी का यह प्रयत्न रहा है कि प्राचीन भारतीय इतिहास पर जनता को अंग्रेजी मे प्रामाणिक ग्रन्थ भेंट किये जाय। इस शृंखला के अन्तर्गत स्वामी जी के निम्न ग्रन्थो का विशेष महत्व है–

(१) फाउन्डस आफ साइन्सेज इन एन्सियेन्ट इण्डिया (प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री को समर्पित) भारतीय शासन के अनुदान से इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद भी मानक ग्रन्थो की सूची मे प्रकाशित किया गया है।

(२)क्वायनेज इन एन्सियेन्ट इण्डिया (भू पू प्रधान मन्त्री इन्दिरा गाधी को समर्पित) प्राचीन मुद्रा शास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन पर जगत् प्रसिद्ध प्रामाणिक ग्रन्थ।

(३) बोधायन शुल्ब सूत्र, (४) आपस्तम्भ शुल्ब सूत्र (संस्कृत अंग्रेजी अनुवाद सहित) (५) ब्रह्मगुप्त–इण्डियन मैथमेटेशियन एण्ड एस्ट्रानामर, (६) बरवशाली मन्युस्क्रिप्ट (अकगणित की प्राचीनतम पुस्तक), ७ द शुल्ब सूत्राज (बौधायन, आपस्तम्ब, कात्यायन और मानव शुल्ब सूत्रो का सग्रह अंग्रेजी भूमिका सहित)।

(८) शतपथ ब्राह्मण (भाषानुवाद प० गगा प्रसाद उपाध्याय) तीन खन्डो के इस प्रकाशन मे स्वामी जी ने लगभग ७०० पृष्ठो मे इस ग्रन्थ सम्बन्धी विस्तृत विवेचना दी है।

(९) पातञ्जल राजयोग, (१०) पैराबिल्स एण्ड डायलाग्स फ्राम द उपनिषद्स, (११) बिन्सिटवेरीटास और (१२) द आर्य समाज रेनेसा (स्वामी जी के देशी-विदेशी भाषाओ के सकलन)।

(१३) अ क्रिटिकल स्टडी आफ द फिलासफी आफ दयानन्द इनके अतिरिक्त स्वामी जी के अनेक सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और सामाजिक ग्रन्थ हैं।

(उच्चकोटि के धार्मिक ग्रन्थोके सृजन एव प्रकाशन हेतु प्रमुखतया पूज्य स्वामी जी के ग्रन्थो आदि की सुरक्षा, प्रचार तथा प्रकाशन आदि के निमित्त एक सस्था 'स्वामी सत्यप्रकाश प्रतिष्ठान' के नाम से ८ अप्रैल १९८४ ई० को लखीमपुर (उ० प्र०) मे स्थापित की गयी है। वर्तमान मे इसका मुख्यालय–'आनन्द नगर–रायबरेली' मे बनाया गया है। इस प्रतिष्ठान ने अपने स्थापना के अल्प समय मे ही पूज्य स्वामी जी के तीन ग्रन्थो–(१) 'अध्यात्म और आस्तिकता, (२) अ क्रिटिकल स्टडी आफ द फिलासफी आफ दयानन्द (१९८५–सस्करण) तथा (३) अग्निहोत्र (रसायन विज्ञानकी कसौटी पर पूर्ण प्रमाणित अंग्रेजी विवेचना १९८६ सस्करण) का प्रकाशन किया है।

दीपावली १९८३ ई० के अवसर पर महर्षि दयानन्द निर्वाणशती अजमेर मे स्वामी जी के प्रमुख सयोजकत्व मे मनायी गयी। स्वामी जी ने इस अवसर पर एक 'निर्वाणशती स्मृति ग्रंथ' का हिन्दी तथा अंग्रेजी मे सम्पादन किया। जिसका विमोचन तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधीने किया।

स्वामी जी की विदेश यात्रायें—स्वामी जी पिछले वर्षों मे लगभग १४ बार ससार के विभिन्न देशो की अनेक प्रयोजनो से यात्रा कर चुके हैं। इग्लैण्ड, फ्रास, स्पेन, जर्मनी, आदि यूरोपीय देशोके अतिरिक्त आप कई बार दक्षिणअफ्रीका, केन्या, युगाण्डा, तजानिया, जैम्बिया, मारीशस, कनाडा, सयुक्त राष्ट्र अमेरिका, गायना, सूरीनाम, ट्रिनीडाड, जमैका, बर्मा, तथा थाईलैण्ड गये हुए है। देश-विदेश की विभिन्न आकाशवाणी दूरदर्शन केन्द्रो से कई बार विभिन्न विषयो पर वार्तायें भी प्रकाशित हुई है। फरवरी ८५ ई० मे स्वामी जी बैकाक, इण्डोनेशिया, जावा, सिंगापुर आदि तथा जुलाई १९८५ ई० मे इग्लैण्ड, हालैण्ड, डेनमार्क और नार्वे एव दिसम्बर ८५ ई० मे मारीशस होते हुए डरबन (दक्षिण अफ्रीका) मे अन्तर राष्ट्रीय वेद सम्मेलन की अध्यक्षता के हेतु गए। मई १९८६ ई० मे स्वामी जी ने न्यूयार्क मे नव निर्मित आर्य मन्दिर का उद्घाटन किया।

'स्वामी जी की आस्था वैदिक धर्म, भारतीय सस्कृति और विशुद्ध राष्ट्रीयता मे है। आप प्रयत्नशील हैं कि देश-विदेशों मे रूढ़वादिता समाप्त हो और वैज्ञानिकता के आधार पर नैतिकता और अध्यात्म सस्थापित हो। स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी महाराज २४ अगस्त १९८६ ई० को ८१ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। ईश्वर उन्हें 'अदीना स्याम शरद शतम्' श्रुति वाक्य के अनुसार शतायु करे, जिससे धर्म एव विज्ञान पिपासुओ को अमृत पान कराते रहे।

निर्वाचन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला–इटावा

प्रधान–श्री रूपबसन्त गुप्ता
मन्त्री–श्री वेद प्रकाश आर्य
कोषा०–श्री राम बाबू शर्मा

तिवारी ज्वाला प्रसाद आर्य कन्या इन्टर कालेज, इटावा।

१–अध्यक्ष–श्री मित्र प्रकाश शुक्ल
२–प्रबन्धक–श्री मुन्नालाल मिश्र
३–कोषाध्यक्ष–श्री रामकुमार–श्रीवास्तव

आर्य समाज अडींग (मथुरा)
प्रधान–श्री ओ३म् प्रकाश जी बहल
मन्त्री–श्री भगवत प्रसाद आर्य
कोषा०–श्री शिशुपाल जी

धेनु वंश के लदान पर चेतावनी

आर्यसमाज नवाबगंज, हाथरस का प्रस्ताव जो 'अमर उजाला' दि० २३-७-८६ के अङ्क मे गाय बैलों के बडी सख्या मे कलकत्ता एव बबई के लिए किये जाने वाले लदान के विरोध मे प्रकाशित हुआ है। उसका समर्थन आर्यसमाज शिविल लाइन्स वैदिक आश्रम, अलीगढ़ की आज २७-७-८६ को श्री हरप्रसाद आर्य की अध्यक्षता मे आयोजित साप्ताहिक सभा सर्वसम्मति से करती है तथा भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, रेलवे प्रशासन व जिला प्रशासन अलीगढ से माग करती है कि यह लदान बन्द किया जावे अन्यथा आंदोलन का उत्तरदायित्व सरकार पर होगा। —रामदीन आर्य

नगर आर्यसमाज लखनऊ में शुद्धि समारोह

रविवार दिनाक १० अगस्त ८६ को प्रात साप्ताहिक अधिवेशन मे स्नातक नवयुवक नूरुल्लाह ने स्वेच्छा से आचार्य मेधावी जी शास्त्री के पौरोहित्य मे वैदिक धर्म की दीक्षा ली। उनका नया नाम ओमप्रकाश रक्खा गया। हिंदू राष्ट्र मच के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम सिह जी योग ने नवयुवक को आशीर्वाद दिया और महिला डिग्री कालेज की प्रधानाचार्या डा० मनोरमा जी ने वैदिक साहित्य से पुरस्कृत किया।

—ज्ञानकृष्ण

वैदिक सत्सँग भवन का उद्घाटन

यह हम सब आर्यों के लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आर्यन एजूकेशन ट्रस्ट डी० ए० वी० कालेज मीरापुर इलाहाबाद मे दैनिक सत्सग हेतु दिव्य एव भव्य सत्सग भवन का निर्माण हो चुका है, जिसका उद्घाटन ६ जुलाई ८६ को सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक, प्रयाग विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रोफेसर एव रसायन विभाग के अध्यक्ष वेदो के अग्रेजी भाष्यकार विख्यात आर्य सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। इस समारोह मे नगर के गणमान्य नागरिक आर्य विद्वान उपस्थित थे। —संवाददाता

उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल का प्रांतीय अधिवेशन सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिम उत्तरप्रदेश का वार्षिक अधिवेशन गुरुकुल महाविद्यालय तातारपुर, गाजियाबाद मे १६ व २० जुलाई ८६ को श्री बाल दिवाकर जी 'हस' प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए पश्चिम उ०प्र० आर्य वीर दल के सर संचालक माननीय डा० बालकृष्ण आर्य ने आर्य वीर दल की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्र रक्षा हेतु आर्य वीरो को जागरुक और सगठित होने का आवाहन किया। —वेदप्रकाश गुप्त

श्रद्धांजलि

—ज्ञातव्य है कि आर्यजगत के ख्याति प्राप्त भजनोपदेशक तथा प्रचारक बसेड़ा खुर्द (बिजनौर) निवासी श्री हरिसिंह आर्य का निधन दिनांक १० जुलाई १६८६ को रुद्रपुर (नैनीताल) मे हो गया था, वे ७० वर्ष के थे। स्व० श्री हरिसिंह ने अपने ओजस्वी प्रवचन तथा मधुर भजनो के माध्यम से देश के कोने-कोने मे वैदिक धर्म का व्यापक प्रचार प्रसार किया था। आज उनका निधन सचमुच एक शोकपूर्ण समाचार है प्रान्त की आर्यसमाजो ने श्री हरिसिंह जी के निधन पर अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की है कि प्रभु दिवगत को चिर शांति तथा प्रिय जनो को असीम धैर्य प्रदान करे।

—आर्यसमाज ताडीखेत (अल्मोडा), सनातन वैदिक धर्म समिति गोला (खीरी), वेद प्रचार मण्डल पश्चिमाचल अमरोहा, आर्य उप प्रतिनिधि सभा पीलीभीत, आर्यसमाज बिलसडा पीलीभीत।

—आर्यसमाज कैसरबाग लखनऊ ने सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी को धर्म माता (सास) के निधन पर दुःख प्रकट करते हुए, एक शोक सभा द्वारा दिवगता माता जी के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमेश्वर से दिवगत आत्मा के शांति तथा प्रियजनो के असीम धैर्य हेतु प्रार्थना की। —अवधनारायण मन्त्री

—आर्यसमाज धुन्सी ने दिनाक ६ अगस्त १६८६ को एक शोक सभा द्वारा आर्यजगत के ख्याति प्राप्त उपदेशक श्री हरिसिंह जी आर्य के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की है कि प्रभु दिवगत को शाति तथा प्रिय जनो को असीम धैर्य प्रदान करे।

शोक सँवेदना

—आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर ने, अपनी शोक सभा मे समाज के आर्य सभासद श्री प० विश्वम्भरनाथ तिवारी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए शोक सवेदना व्यक्त की है, ईश्वर दिवगत श्री पण्डित जी को चिरशांति तथा प्रियजनो को धैर्य प्रदान करे।

—आर्यसमाज असुवा (फतेहपुर) के श्री महाशय बैजनाथ जी का निधन दिनाक १२ जुलाई १६८६ को होगया वे आर्यसमाज के एक कर्मठ कार्यकर्त्ता तथा काग्रेस सेनानी थे। आपका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। प्रभु दिवगत को शांति तथा प्रियजनो को धैर्य प्रदान करे। —प्रभुदयाल आर्य

—आर्यसमाज आजमगढ़ के सदस्य श्री शिवकुमारसिंह वानप्रस्थी का दिनाक ८ जुलाइ १६८६ को आकस्मिक निधन हो गया। स्व० श्री वानप्रस्थी जी का अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज आजमगढ़ मे एक शोक सभा द्वारा दिवगत को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए दिवगत की शांति तथा परिवारजनो के धैर्य धारण हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई। —मन्त्री

—आर्यसमाज पुरानी बस्ती (बस्ती) के कर्मठ सदस्य श्री रामदास जी लोहिया का दिनाक १६ जुलाई १६८६ को उनके निवास स्थान पांडे बाजार बस्ती मे निधन हो गया। स्व० श्री लोहिया जी आर्यसमाज बस्ती तथा आर्यसमाज पुरानी बस्ती के विभिन्न गरिमामय पदो पर रहे आर्यसमाज पुरानी बस्ती के अधिकारी एव सदस्यो ने स्व० श्री लोहिया जी को अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए दिवगत के शांति तथा परिवार जनो के धैर्य धारण हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

—राम चरित्र वैद्य

—दुःखद समाचार है कि आर्यसमाज नीमच (म०प्र०) के कोषाध्यक्ष श्री भगवान लाल आर्य के ज्येष्ठ भ्राता श्री उदयराम आर्य का निधन हो गया। कविरत्न श्री जगदीशप्रसाद द्वारा उनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ तथा समाज के सदस्यों ने एक शोक सभा द्वारा स्व० उदयराम जी को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दिवगत को चिर शांति एव प्रियजनो के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

—उपमन्त्री

वायरल फीवर

(डा० ए० पी० शुक्ल बी०एम०एस० सर्वोदयनगर, लखनऊ)

हमारा शरीर 'जीवनी शक्ति' द्वारा सचालित है। जीवनी शक्ति (वाइटल फोर्स) मे स्वय इतनी शक्ति होती है कि वह बाहरी आक्रमण का मुकाबला कर सके। शरीर मे किसी भी रोगाणु के प्रवेश करने के पूर्व जीवनी शक्ति और रोग शक्ति मे पूरा सघर्ष होता है। जब जीवनी शक्ति कमजोर पड़ जाती है तभी रोग शक्ति शरीर मे प्रवेश करती है। जब शरीर पर बाहरी शक्ति का आक्रमण होता है उस समय जीवनी शक्ति विरोध प्रकट करती है परिणामस्वरूप जो लक्षण शरीर मे बाह्य या आन्तरिक रूप से प्रकट होते हैं यही ज्वर कहलाते हैं। अर्थात् ज्वर स्वय कोई रोग नही है अपितु रोगाक्रमण का चिन्ह है।

'वायरल फीवर' का प्रभाव काल प्राय जून के अन्तिम सप्ताह से सितम्बर तक होता है विशेषतया बरसात (जुलाई–अगस्त) मे, पानी मे भीगने से, ओस मे सोने से या अधिक धूप मे चलने इत्यादि से यह ज्वर होता है।

लक्षण–ऊचा ज्वर १०४–१०५ तक हो सकता है। शरीर मे अत्यधिक ताप, भयकर प्यास किन्तु पानी अच्छा न लगना, जाम का स्वाद कड़वा गला भी खराब हो सकता है। सारे शरीर मे बेतहाशा दर्द, सिर मे दर्द, सर्दी-जुकाम भी हो सकता है। पैरों के जोडो और कमर तथा हड्डियो मे टूटने जैसा दर्द होता है कमजोरी जल्दी आती है चक्कर सा आने लगता है साथ मे ठण्ड का भी आभास होता है।

औषधि–पानी मे भीगने से आये हुए प्रथमावस्था के ज्वर में 'रस टाक्स' ३० शक्ति प्रति ३ घटे पर सेवन करने से ज्वर शीघ्र छोड देता है। साथ में गला खराब होने पर, आखें और मुह लाल होने पर रस टाक्स ३० के साथ बेला डोना ३० पर्याय क्रम से (अदल-बदल कर) लेना चाहिए। ज्वर तीव्र होने पर अथवा उपरोक्त से लाभ न होने पर रस टाक्स १००० शक्ति की एक खुराक लेकर कम से कम ३ घण्टे बाद से यूपेटोरियम पफ ३० शक्ति प्रति घटे पर लेने से लाभ होगा।

यदि कई दिनो से तीव्र ज्वर बना रहता है और किसी दवा से कोई लाभ नहीं मिल रहा है तो पायरोजेनम १००० की एक खुराक रात में सोते समय लेकर दूसरे दिन प्रात से चाइनम सल्फ ३० और फेरम आर्स ३० पर्यायक्रम से ३–३ घटे पर लेना चाहिये, अवश्य लाभ मिलेगा। यदि मरीज ने अग्रेजी दवाइयो का अधिक मात्रा में सेवन किया है तब उनका प्रभाव समाप्त करने के लिए नक्स वोमिका ३० शक्ति की २–१ खुराकें खिलाकर उपर्युक्त दवाइया ३ घटे बाद देनी चाहिए।

तीव्र प्यास के साथ (मल) पाखाना, सूखा, कडा, जैसे जला हुआ हो, सूखी खांसी एव लगातार सुस्ती रहना चक्कर, ज्वर के साथ ठण्ड हमेशा उनीदापन आदि लक्षणो मे ब्रायोनिमा ३० और जेल्सीमियम ३० पर्यायक्रम से लेना चाहिये।

पथ्य–किसी प्रकार के ज्वर मे १०० डिग्री से ऊपर ज्वर रहने पर मरीज को अनाज बिल्कुल नहीं लेना चाहिये। ब्रेड और बिस्कुट भी नहीं खाना चाहिये। दूध मे साबूदाना पकाकर खाना चाहिए, दूध-चाय लिया जा सकता है फलो मे मीठे सेब इत्यादि लिये जा सकते हैं। गले मे खराश या खांसी होने पर केवल दूध कदापि नहीं लेना चाहिए।

बौद्धिकता तेजस्विता नैतिकता से ओत प्रोत–

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

एक दृष्टि में नमन

राजर्षि टंडन उन महान् राष्ट्रीय तथा मूर्धन्य नेताओ की श्रेणी मे आते हैं जिन्होने स्वतन्त्रता सग्राम के इतिहास मे बहुत ही अहम और नाजुक मोड़ पर भाग लेकर–भारत के भाग्य की दिशा बदल दी। एक ओर तो इन्होने हिन्दुस्तान की आजादी मे अपार मस्तक डूबकर कांग्रेस पार्टी के माध्यम से देश की अनवरत सेवा की। इनका दूसरा महत्वपूर्ण कार्य–योगदान भारत मे हिन्दी को उसका उचित स्थान और अधिकार दिलाकर उसे राष्ट्रभाषा के रूप मे सुस्थापित करना। हिन्दी तथा हिन्दुस्तान प्रबल समर्थक टंडन जी की यह दृढ धारणा रही है कि केवल हिन्दी ही राष्ट्र को एक सूत्र मे बाधने की क्षमता रखती है–

निस्वार्थ कर्मठ त्यागय व्यक्तित्व

चरण धूलि दो शीश लगालू
जीवन का बल तेज जगालू
मै निवास उस मूक स्वप्न का,
तुम जिसके सक्रिय अवतार
नमन उन्हे मेरा शत बार

–हरिश्चन्द्र आर्य सयोजक, अमरोहा

आर्य जगत

–आर्य समाज चन्द पुरवा (कानपुर) के सौजन्य से आयु० कुमारी गीता सुपुत्री श्री जगमोहन सिंह चन्देल निवासी ग्राम खडमर (कानपुर) का पाणिग्रहण सस्कार चि० कुँवर धर्नेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री शिवबहादुरसिह निवासी- मदरिहा रोड नौबस्ता कानपुर के साथ दिनाक ४ जुलाई १९८६ को पूर्ण वैदिकरीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। कु०हरिवश सिह आर्य

–आर्य समाज नीमच (म० प्र०) मे दिनाक १२ जुलाई से १३ जुलाई १९८६ तक शाहपुरा निवासी श्री सोहन लाल जी शारदा द्वारा उपासना शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसमे हर्कियाखाल, पथ बरखेडा, पिपलया, नारायणगढ, गरोठ, गिरदौडा आदि आर्य समाज के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। –उपमन्त्री आर्यसमाज नीमच

शोक समाचार

–आर्यसमाज दर्शन पुरवा (कानपुर) ने गुरुकुल सोरो एटा के सस्थापक स्वामी मिथिलेश जी की हत्या पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की, तथा हत्यारों की निन्दा करते हुए उन्हें कडी से कडी सजा देने की माग की। –मन्त्री

–आर्य सस्कृति के प्रबल अनुयायी दुबहा बाजार (गोन्डा) निवासी श्री सावल प्रसाद श्रीवास्तव का निधन दिनाक २ अगस्त १९८६ को हो गया वे ६४ वर्ष के थे। श्री सावलप्रसाद जी का अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। प्रभु दिवगत को शाति तथा शोक सतप्त परिवार जनो को धैर्य प्रदान करे। –सत्यनारायण द्विवेदी

–गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के अधिकारी सदस्यो तथा विद्यार्थियो ने परोपकारिणी सभा अजमेर के महामन्त्री एव भू०पू० सासद श्री श्रीकरण शारदा के निधन पर गहरा दु ख प्रकट करते हुए, दिवगत श्री शारदा जी के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की, तथा दिवगत के चिर शाति एव प्रियजनों के धैर्य धारण हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

–मुख्याधिष्ठाता

'आर्य्य मित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
भा० भाद्रपद २, ९
भाद्रपद कृष्ण ५, ११
रविवार, २४, ३१ अगस्त १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

३८३५-श्री सम्पादक जी
गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी, (सहारनपुर)

ओ३म् ज्योति चक्षु आर्य
ओ३म्
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

१८८६ - १९८६

शताब्दी समारोह

१८ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ

आर्य युवकों व युवतियों के लिये आकर्षक कार्यक्रम

दयानन्द दर्शन शोध - पत्रक प्रतियोगिता
विभिन्न स्तरों के आर्य विद्यालयों की विभिन्न प्रतियोगितायें
खेलकूद - आसन प्राणायाम - भजन - मंत्रपाठ - आर्य सिद्धान्तों
तथा ऋषि के जीवन एवं कार्यों पर आधारित प्रश्नोत्तरी - वाद विवाद
चित्रकला व सामूहिक गान आदि

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १ फोन ४५९९३

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदास आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप से सब्बरवाल प्रिन्टिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर प्रसाद गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

प्रति० व २२४१/८७ | प स० ७ / १८-१-८१

वर्ष ८६] भा० भाद्रपद १६, भाद्रपद शुक्ल ३, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक ७ सितम्बर १९८६ [अङ्क ३६

प्रार्थना

ओं इन्द्रवायु बृहस्पति मित्राग्नि पूषण भगम् आदित्यान्मारुत गम् ॥

—यजु ३३-४५

भावार्थ—विद्युत्, वायु, सूर्य, दिन, अग्नि, पृथिवी, यज्ञ, किरणो एव वायुसमूह को उपयुक्त करना चाहिये ।

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे





आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

शताब्दि समारोह

अध्यक्षता

आर्यनेता स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

स्वागताध्यक्ष

अमेठी नरेश श्रद्धेय श्रीयुत राजा रणञ्जयसिंह जी

प्रदेश के इतिहास में एक अभूतपूर्व अवसर



आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने अपने जीवन को सौ शरद् पूर्णिमायें देखी हैं और इस वर्ष शारदी पूर्णिमा के मजुल अवसर पर दिनाक १७ से २० अक्टूबर १९८६ के मध्य शताब्दि समारोह की उत्साहपूर्वक समायोजना है । प्रदेश की राजधानी लखनऊ मे डी०ए०वी० कालेज के विशाल प्रागण मे प्रकाशवीर शास्त्री नगर की सरचना प्रारम्भ हो गई है और इसी स्थल पर उपरोक्त तिथियो मे विदेशों से तथा भारत के आर्य जन सामूहिक रूप से भाग लेने के लिए उपस्थित होगे तथा उत्तरप्रदेश की पच्चीस सौ से ऊपर आर्यसमाजें अपनी पूर्ण शक्ति के साथ इस समायोजना को सफल बनाने के लिये कृत सकल्प हैं । इस समारोह की अध्यक्षता भारत के आर्य वीर नेता स्वामी आनन्द बोध जी ने करने की स्वीकृति प्रदान कर दी है और स्वागत आयोजना का भार आर्यजगत के परम उदार सेनानी अमेठी नरेश राजा रणञ्जयसिंह जी के प्रबल कन्धो पर है ।

'आर्यमित्र' समस्त आर्यजनो से सादर अनुरोध करता है कि इस आयोजना को सफल बनाने मे अपनी शक्ति और श्रद्धानुसार पूर्ण सहयोग प्रदान करें तथा उदार सम्पन्न आर्य बन्धु आर्य प्रतिनिधि सभा की झोली को अपने आर्थिक सहयोग से भर दें जिससे इस समारोह को एतिहासिक रूपता प्रदान की जाय तथा आगन्तुक बन्धुओ का समुचित स्वागत सत्कार हो सके और सभा बडी सख्या मे आर्य साहित्य को अल्प मूल्य मे जनता के मध्य पहुचा सके ।

प्रबन्ध का भार निम्न हस्ताक्षर कर्ताओ पर है और सहयोग आपका अपेक्षित है । प्रकाशवीर नगर मे विभिन्न मण्डलो के कैम्प रहेंगे आर्यसमाजें दि० ३० सितम्बर तक सूचित कर दें कि उनके यहां से कितने प्रतिनिधि आयेंगे जिससे अनुकूल व्यवस्था हो सके ।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्य्यमित्र



सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार ७ सितम्बर १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

"संगच्छध्वम्"

एकता का मूल मन्त्र वैदिक ऋचाओं में निहित है और उस एकता के लिए आवश्यक है कि समस्त जन एक साथ चलें एक स्वर मे बोलें और किसी भी कार्य की सम्पन्नता मे सब एक मन होकर सन्नद्ध हो जायें वहीं सफलता चरण चूमने लगती है। आज इसकी आवश्यकता है और विशेष रूप से हमारा सम्बोधन उन महानुभावों के प्रति हैं जो आर्य समाज से सम्बन्धित हैं तथा ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के आदर्शों से अनुप्राणित हैं।

'आर्य मित्र' का यह अंक जब पाठकों के हाथ मे होगा तब केवल एक मास की अवधि रह जायेगी जब समस्त उत्तर प्रदेश और भारत के सामान्य एवं विशिष्ट आर्य जन आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की शताब्दि समारोह मनाने के लिए प्रकाशवीर शास्त्री नगर [डी० ए० वी० कालेज प्रांगण] लखनऊ मे उपस्थित होंगे। इस एक मास के अन्तराल मे हमारे ऊपर विशेष दायित्व है केवल सभा के अधिकारियो पर ही नहीं, आर्य समाज के एक सामान्य सदस्य के ऊपर भी एक उत्तर दायित्व है और यह उत्तर दायित्व संकेत करता हैं कि हमारे समवेत प्रयासों से शताब्दि समारोह सफल ही नहीं हो अपितु ऐतिहासिक रूपता ग्रहण करे। किसी आयोजन को पूर्णता देने मे सबसे बड़ा भार आर्थिक सहायता का होता है यदि सभी आर्यजन कर्तव्य की भावनाओ से प्रेरित होकर आर्थिक सहयोग प्रदान करने का संकल्प ले लें अपने क्षेत्र और जनपद के आर्य जनो मे जाकर, समान्य उदार जनो मे जाकर आर्थिक सहयोग की याचना करें तो हमे दृढ़ विश्वास है कि आर्य प्रतिनिधि सभा ने जिस वृहद आयोजन को रूपता देने का संकल्प लिया है वह सफल होगा।

आर्य समाजें अपने अधिवेशनो मे शताब्दि समारोह के लिए धन की अपील करें, प्रतिनिधि सभा कार्यालय से नोट प्राप्त करें जिन्हें देकर धन अर्जित किया जा सके और वितरण हेतु आकर्षक प्रचार साहित्य भी प्राप्त करें। इस अवसर पर जैसा स्वागताध्यक्ष अमेठी नरेश श्रीयुत राजा रणञ्जय सिंह जी से, प्रधान प० इन्द्रराज जी तथा मन्त्री प० मनमोहन जी तिवारी से जैसा अवगत हुआ है कि समारोह मे भाग लेने वाले प्रत्येक आर्य जन को पूर्ण सुख सुविधा प्रदान की जाय उसके लिए प्रतिनिधि सभा सेवा करने हेतु प्रतिबद्ध है तथा आर्यजन उसकी आर्थिक पूर्ति करने का संकल्प लें।

स्वामी आनन्दबोध जी का उत्साही कदम

सार्वदेशिक सभा के प्रधान एवं संघष ही जिनके जीवन का उद्देश्य रहा है स्वामी आनन्दबोध जी सम्प्रति उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर पंजाब से पीड़ित और आतंकित होकर आये हुये विस्थापित हिन्दुओं की सहायता हेतु केन्द्र चला रहे हैं और उसके लिए धन एकत्र कर रहे हैं विगत सप्ताह कानपुर में उन्हें बीस हजार से ऊपर आर्यजनों ने आर्थिक सहायता दी है। आर्यमित्र प्रदेश के आर्य जनों से अपील करता है कि स्वामी आनन्दबोध ने जिस कार्य को अपने हाथों में लिया है वह मानवता का श्रेष्ठतम कार्य है और उसके लिए हम उनकी पूर्ण रूप से सहायता करें।

—आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०

शताब्दी धन संग्रह हेतु

सभा मन्त्री का भ्रमण कार्यक्रम

१९-९-८६

कन्नौज, गुरुसहायगंज, भोलेपुर, बेवर, भोगाव, मैनपुरी, घिरोर, भारौल, शिकोहाबाद मे रात्रि निवास।

२०-९-८६

जाजमई, सिरसागंज, जसवन्तनगर, इटावा, भर्थना, बिधूना, बकेवर अजीतमल, औरैया।

कु० ध्रुवपालसिंह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक सभा

दिनांक १७ से २० अक्टूबर १९८६ तक

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश

के

शताब्दी-समारोह

के

मुख्य-कार्यक्रम

- प्रदेश के जनपदो की आर्य समाजें सामूहिक रूप से बसो द्वारा १५ से १६ अक्टूबर के मध्य अपने जनपद से लखनऊ के लिए प्रस्थान करेंगी और मार्ग मे बैनरो से युक्त-लाउड-स्पीकरो द्वारा जनता को आर्य समाज के सन्देश से अवगत करायेंगी।
- लखनऊ मे एक वृहद भव्य शोभा यात्रा निकलेगी। इसमे सोत्साह सम्मिलित हो।
- प्रतिदिन प्रात काल वृहद वैदिक यज्ञ होगा।
- सभा के सौ वर्षों के कार्यों की प्रदर्शिनी होगी।
- उत्तर प्रदेश का वृहद् मानचित्र प्रस्तुत होगा जिसमे आर्य समाजों की शास्त्रार्थों की गति विधियां प्रदर्शित होंगी।
- मारीशस फीजी दक्षिण अफ्रीका ट्रीडीनाड इगलैण्ड आदि से प्रतिनिधि आयेंगे और वहाँ की आर्य समाज की गतिविधियों का वर्णन करेंगे।
- लागत मूल्य पर आर्य साहित्य प्राप्त होगा।
- आर्य विद्वानों के सैद्धान्तिक भाषण।
- आर्य वीरों का शौर्य प्रदर्शन।
- कन्या गुरुकुल बड़ोदा की छात्राओं एवं अन्य गुरुकुलों के अलौकिक साहस पूर्ण व्यायाम प्रदर्शन।
- स्वामी जी के जीवन पर तथा आर्य क्रांतिकारियों के सम्बन्ध में प्रदर्शनियां।
- अन्य ज्ञान वर्धक एवं रोचक कार्यक्रम।

अध्यात्म सुधा

वेद का मनन

[श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश]

ओ३म् स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोम स्वस्ति भुवनस्य यस्पति ।
बृहस्पतिं सर्वगण स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु न ।।

[ऋ० ५।५१।१२]

शब्दार्थ–[स्वस्तये] कल्याण के लिए [वायुम्] वायु के समान वेगवान् तथा [सोमम्] चन्द्रमा के समान आह्लाददायक परमेश्वर को [उपब्रवामहै [स्तुति करते हैं। [य +भुवनस्य+पति] जो सारे ससार का स्वामी है। [स्वस्ति] हमारे लिए कल्याणकारी हो। [सर्वगणम् [सब प्राणियो के आधार [बृहस्पतिम्] बडे,बडे ब्रह्माण्डों अथवा वेद ज्ञान के रक्षक परमात्मा को [स्वस्तये] कल्याण के लिये स्तुति करते हैं [आदित्यास] अदिति = वेदविद्या या भूमि माता के पुत्र [न] हमारे [स्वस्तये] कल्याण के लिए हो।
विशेष = इस मन्त्र का अर्थ परमात्मा परक किया गया है। परमात्मा के कतिपय विशेषण बडे ही प्रेरणादायक हैं।–यथा–

[१] वह वायु के समान वेगवान है। उसके वेग और शक्ति की तुलना नहीं की जा सकती परन्तु ससार मे वायु के अन्दर उसका वेग और शक्ति देखा जा सकता है। इसी प्रकार

[२] वह सोम के समान आह्लादित करने वाला है। शीतलता देने वाला है। उसकी आह्लादित करने वाली शीतलता को ससार मे चन्द्रमा के अन्दर देखा जा सकता है।

[३] वह सारे ससार का मालिक है। फिर अपनी मलकीयत का अभिमान करना कितनी मूर्खता है। जहा एक वस्तु के दो मालिक हो जायेंगे वहां कलह, झगडा और अशाति होगी। हम तो भौतिक वस्तुओ के भी मालिक अपने आपको नहीं कह सकते। आदमी खडा रहता है वस्तु खिसक जाती है। कभी वस्तु खडी है, आदमी चला जाता है। ऐसी स्थितिमे अपने आपको किसी भौतिक वस्तु का मालिक बताना कितना विडम्बना पूर्ण है। हां ! वेद ठीक कहता है 'वह ईश्वर ही सारे ससार का स्वामी है।

[४] [सर्वगणम्–बृहस्पतिम्] बडे–बडे समूहो का प्राणियो को तथा बडे-बडे ब्रह्माण्डों का अथवा वेद ज्ञान का रक्षक–पति-स्वामी भी वह ही हैं। अपने कल्याण के लिए उस ईश्वर के इस स्वरूप को हम स्तुति करते हैं। वह ही तो हमे शाति देगा शीतलता देगा, किसी भी प्रिय से प्रिय वस्तु के चले जाने पर हमें धैर्य प्रदान करेगा। वेद विद्या के द्वारा हमे अज्ञान तिमिर से निकाल कर हमें मुक्ति प्रदान करेगा। ईश्वर का यह स्वरूप कितना मधुर है और कितना कल्याण कर है।

परन्तु यदि हम इस मन्त्र का अर्थ देवता परक करें तो भी हमारे लिए कितना कल्याण कर है। सर्व प्रथम हम [१] वायु देवता को समीप बुलाते हैं। बाहर की वायु ही तो शरीर मे प्राण शक्ति है जिसके बिना हम जी नहीं सकते। प्राण ही जीवनी शक्ति है। प्राण ही आयु है। "प्राणा वै प्राणीलमायु"। जो प्रात काल शुद्ध वायु का सेवन करता है वह स्वस्थ्य और दीर्घ आयु को प्राप्त करता है। जो प्राण विद्या को जानता है और प्राणायाम करता है वह अतुल शक्ति और स्वास्थ्य प्राप्त करता है। कितना कल्याणकारी है वायु देवता। परन्तु यह कल्याण तभी प्राप्त होता है जब हम उससे सम्पर्क करते हैं।
[२] चन्द्रमा के प्रकाश से हमें शीतलता प्राप्त होती है। चन्द्रमा औषधि और वनस्पति जगत् में सोम रस भरता रहता है। चन्द्रमा मनस्तत्व से बना है। हृदय की शीतलता उस चन्द्रमा से ही प्राप्त होती है। कितना आह्लाददायक है यह चन्द्रमा।

[३] भुवनपति सूर्य–सारे जगत् को प्रकाशित करता है। अन्धकार को दूर भगाता है। सूर्य की किरणो में अद्भुत शक्ति है सूर्य स्नान व्यक्ति को निरोग करता है। जीवन में भी प्रकाश का अनुसरण कल्याण कर है।

[४] [बृहस्पतिम्–सर्वगणम्] महती वेद विद्या के पालक आचार्य अपने समस्त शिष्य–प्रशिष्यो सहित हमारे लिए कल्याण कर हो जाते हैं। विद्या और ज्ञान का एक कण बडे से बडे अन्धकार के पहाड को जलाकर भस्मी भूत कर देता है। ऐसे ज्ञान विज्ञान से युक्त आचार्यों का अपने शिष्य प्रशिष्यो सहित आह्वान कितना कल्याण कर है। परन्तु वह आह्वान विनम्रता पूर्वक होना चाहिए।

(५] [आदित्यास न स्वस्तये भवन्तु] श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुष जो आदित्य ब्रह्मचारी हैं। ४८ वर्षों तक जिन्होने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया है। जिनका तप और ब्रह्मचर्य ही उपदेश कर रहा है। ऐसे आदित्य ब्रह्मचारियों की कृपा और कल्याण के पात्र हम बने ताकि उनके ज्ञान और जीवन से हमारा वास्तविक कल्याण हो सके।

हे भगवन् ! स्वस्ति, स्वस्तये–स्वस्तये। हमारा कल्याण हो। आप और आप की समस्त भौतिक शक्तिया हमारा कल्याण करने वाली हों। गुरुजन, आचार्य और श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुष हमारा कल्याण करें।

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा

ऋषि मेले का आयोजन

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी दीपावली के अवसर पर अनासागर के सुरम्य तट पर ऋषि उद्यान मे दिनांक–७–८–९ नवम्बर, १९८६ अर्थात शुक्र, शनि रविवार को समारोह पूर्वक मनाया जायगा।

इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज, स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज, प० उदयवीर जी शास्त्री दर्शना, चार्य, महात्मा आर्य भिक्षु जी वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, प्रो० शेरसिंह जी भू० पू० केन्द्रीय मन्त्री हरयाणा, डा० भवानी लाल जी भारतीय अध्यक्ष दयानन्द शोधपीठ चण्डीगढ़ साथ ही प० आनन्द प्रियजी, बडोदा गुजरात आदिके सन्यासी, विद्वान प्रसिद्ध भजनोपदेशक धार्मिक नेता समारोहमे भाग लेंगे और ओजस्वी विचारोसे जनता का मार्ग दर्शन करेंगे। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है।

सम्वाददाता

छात्र-नेताओं से

[स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद,]

लखनऊके काल्विन ताल्लुकेदार कालिज के ८५ वर्षीय वृद्ध आचार्य हबीबुल्लाह ने अभी पिछले दिनों कालिज की प्रवेश परीक्षा मे भाग लेने के लिए आए छात्रों को कहा कि "कालिज परिसर मे हिन्दी मे बातचीत न करें।" छात्रों ने उनके ऐसा कहने पर आपत्ति की तो हबीबुल्लाह मिया और भी भडक उठे और हिन्दी के विरुद्ध विष वमन करना प्रारम्भ कर दिया। विद्यार्थी लखनऊ विश्वविद्यालय छात्र सघ के नेताओ से मिले और उन्हें स्थिति बतायी। छात्र सघ के नेता मिया हबीबुल्लाह को जाकर मिले तो वह ८५ वर्षीय बूढ़ा और भी अशिष्टता पर उतर आया। उसने कहा—"इस कालिज के परिसर मे कुत्तों और सुअरों की भाषा नहीं चलायी जायेगी।" इस पर छात्र मिया हबीबुल्लाह पर टूट पडे और मारपीट के पश्चात् उन्होंने पत्रकार सम्मेलन मे सरकार से माग की कि—"राष्ट्र भाषा का अपमान करने के अपराध मे आचार्य हबीबुल्लाह को गिरफ्तार किया जाय।" छात्रसंघ ने यह घोषणा भी की कि—"सभी छात्रसघ ध्यान रक्खें कि शिक्षण-सस्थाओं, सरकारी कार्यालयों और निजी प्रतिष्ठानो मे कहा-कहा हिन्दी के अतिरिक्त अग्रेजी मे काम किया जाता है ?" छात्रसघ ने इ गलिस स्कूलों मे ताले डाले जाने की घोषणा भी की है और कहा है कि—"जब तक हिन्दी माध्यम नहीं होगा, तब तक ताले नहीं खोले जायेंगे।"

लखनऊ विश्वविद्यालय छात्रसघ का राष्ट्रभाषा को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए उठाया गया यह पग और उपर्युक्त निर्णय अत्यन्त सराहनीय है। परन्तु उत्तर प्रदेश मे ही स्थित पाकिस्तान के जन्म दाता अलीगढ़ विश्वविद्यालय की ओर भी छात्रसघो को ध्यान देना चाहिए। इस विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर ए० एम० बिलग्रामी ने "भारत मे भाषा की समस्या" विषय पर एम० फिल, करने के इच्छुक शाहिद हुसैन को स्पष्ट शब्दों मे कह दिया कि न तो प्रश्न-पत्र ही हिन्दी मे तैयार किए जायेंगे और न शोध-प्रबन्ध ही हिन्दी मे प्रस्तुत करने की अनुमति दी जायेगी।"

ऐसी बात नहीं कि शाहिद हुसैन अग्रेजी में शोध लिख नही सकते। उन्होंने बी० ए० और एम० ए० अग्रेजी माध्यम से ही किया है। मार्च ८५ में उन्होने अलीगढ़ विश्वविद्यालय में शोध के लिये पञ्जीकरण कराया। विषय था "भारत में क्षेत्रवाद, अकाली दल का अध्ययन।" एम० फिल, के लिए उन्होंने 'भाषा-समस्या' को चुना। जब प्रोफेसर बिलग्रामी नहीं माने तो शाहिद हुसैन ने विश्वविद्यालय के एक प्रसिद्ध प्रगतिशील प्रोफेसर से सहायता मागी। यह महोदय मध्ययुगीन इतिहास के जाने माने विद्वान् कहे जाते हैं। पता चला है कि इन तथा कथित 'प्रगतिशील इतिहासज्ञ' ने शाहिद हुसैन के विभागाध्यक्ष को कहा है कि "आप भी कैसे-कैसे गवार लोगों को पकड कर शोध कराने के लिए लाते हैं, जो हिन्दी मे शोध करना चाहते हैं।"

शाहिद हुसैन ने सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री पी० एन० भगवतीको लिखकर सहायता की अपील की। वहा से उत्तर मिला "सर्वोच्च न्यायालय इस कार्य में कोई सहायता नहीं कर सकता, उत्तर प्रदेश के कानूनी सहायता और सलाहकार परिषद्के सदस्य सचिव वासुदेवसिंहसे इस विषयमे मिलना चाहिए।" वासुदेवसिंह की ओर से उत्तर मिला "हम कुछ नहीं कर सकते।" शाहिद हुसैन ने लोक सभाध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ को पत्र लिखा जिसका कोई उत्तर नहीं मिला। उन्होंने अन्तिम १।र जनता पार्टी के नेता मधु दण्डवते से सम्पर्क किया। श्री दण्डवते ने मानव ससाधन मन्त्री श्री नरसिंह राव से एक पत्र में सम्बन्धित अधिकारियों को 'भाषा-समस्या' पर कठोर रवैया अपनाने के स्थान पर शाहिद हुसैन को हिन्दी में शोध प्रस्तुत करने देने के निर्देश का अनुरोध किया। मधु दण्डवते के पत्र को तीन मास से अधिक समय बीत गया किन्तु अभी तक कोई सरकारी कार्यवाही नहीं हुयी।

शाहिद हुसैन के पास अब दो ही रास्ते बचे हैं। या तो वह हिन्दी में शोध लिखने की बात पर अडे रहकर अपना भविष्य नष्ट कर लें और या फिर प्रोफेसर बिलग्रामी की बात मानकर अग्रेजी की भेड चाल में सम्मिलित हो जायें।

इस लेख द्वारा में छात्रसघों के स्वाभिमान और स्व-राष्ट्राभिमान को ललकार रहा हू। यदि छात्रसघ इस प्रश्न को हाथमें ले लें तो राष्ट्र-भाषा का अपमान करने का भविष्य में कोई भी दुस्साहस न कर सकेगा।

उसको हृदय बसाते

अजन्मा वेद उसे बतलाते।
सर्वाधार, सकल मे व्यापक, परम पिता कहलाते ॥
अजर, अमर, अति अनुपम, निर्भय, निराकार दर्शाते।
निर्विकार, करुणाकर, न्यायी, अक्षय, अगम बताते ॥
सद्-चित्त-आनन्द, अतिशय पावन, सर्वेश्वर हैं गाते।
सर्व शक्ति के धाम, अगोचर, सृष्टा सदा कहाते ॥
उस दुर्लभ की सिद्धि हेतु ही, तपसी ध्यान लगाते।
कह 'कुमार' तज लौकिक नाते, उसको हृदय बसाते ॥

[२]

जो चाहे कल्याण

उसका ओ३म् प्रमुख है नाम।
निर्मित प्रतिमा नहीं हो सके, सकल सृष्टि है धाम ॥
नयनो को दृश्य नही आये, श्रवण न पायें कान।
हैं असमर्थ पहुचने में पग, नर ले ऐसा जान ॥
सर्वाधिक दुर्लभ अमूल्य वह, देवम् देव महान।
कठिन साधना, पूर्ण लगन से, आ पाये वह ध्यान ॥
वेद कथन ही मात्र धर्म है, मानव का यह मान।
कह 'कुमार' मत भटक मतों में, जो चाहे कल्याण ॥

कुमार रस्तोगी
६—श्याम नगर लिसारी गेट मेरठ—२

मेव मुसलमानों का वैदिक धर्म में प्रवेश

हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरियाणा के असीम सौजन्य से तथा स्वामी सेवानन्द जी की अध्यक्षतामें, ग्राम तिजारा (हरियाणा) के आठ मेव मुसलमानों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा श्री स्वामी सेवानन्द जी से ग्रहण की, शुद्धि का यह कार्य आर्य समाज मन्दिर ग्राम तिजारा हरियाणा में सम्पन्न हुआ।

ओ३मप्रकाश प्रधान

पंजाब बचाओ दिवस

प्रान्त की समस्त आर्यसमाजो में राष्ट्र रक्षा के प्रबल सकल्प के साथ सँपन्न
पजाब और कश्मीर को तुरन्त सेना के हवाले किया जाय–
सीमा सुरक्षा पट्टी के निर्माण में उपेक्षा देश हित के लिए घातक है
अक्षम बरनाला सरकार भंग की जाय

आर्य जनों का सिंहनाद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्द बोधजी सरस्वती की अध्यक्षतामे पन्द्रह अगस्त का पावन स्वतन्त्रतादिवस पर्व इस वर्ष आर्य जगत मे ''पजाब बचाओ-देश बचाओ' के सकल्प के साथ मनाया गया। सर्व विदित हैं कि पिछले पाच वर्षों से पजाब की स्थिति क्या है ? वहा के निरीह निहत्थे, लाचार, अल्पसख्यक हिन्दू किस तरह आतकवादियो के क्रूरतम खूनी खेल का खिलौना बन कर रह गये हैं, किस तरह वहा की जनता पीडित होकर अपने प्राण हथेली पर लेकर भाग रही है, परिवार के परिवार या तो मौत की चादर के नीचे ढक दिये जा रहे हैं अथवा छिन्न भिन्न हो रहे हैं। खून-कत्ल, लूट-पाट, डकैती, आगजनी जैसे हिंसात्मक कारनामे आतकवादियो के लिए नियमित दिनचर्या के खेल बनकर रह गये हैं, वहा की जनता त्राहि त्राहि कर रही है और सरकार के पास इस अहम समस्या का कोई निदान है ही नहीं। इतना ही नहीं देश मे चारो तरफ विदेशी शक्तियों के षडयन्त्रात्मक जाल के ताने बाने फैल चुके हैं और देश को खण्ड खण्ड कर डालने की योजनायें क्रियाशील है। पजाब के सीमावर्ती जिलों से पाकिस्तान के छद्मवेशी आतकवादियो की भीड मे घुसकर विलुप्त हो रहे हैं और उग्रवाद की हिंसात्मक लपटो मे पेट्रोल डालकर उसकी ज्वाला को और भी प्रचण्ड कर रहे हैं। कहीं अली सेना का सगठन पांव फैला रहा है तो कहीं गोरखालैण्ड की माग है, याद रहे यह सब देश और राष्ट्र को नष्ट करने के वह खतरनाक 'सिगनल' है जिन्हें सुनकर राष्ट्र के देशभक्त आर्य वीर खामोश नहीं बैठ सकते। अत देश की वर्तमान षडयन्त्रकारी गतिविधियों को देखते हुए प्रान्त की निम्नलिखित आर्य समाजों ने सभा करके देश की एकता और अखण्डता की सुरक्षा के खातिर अपना तन मन धन सब कुछ दाव पर लगाने का सकल्प इस पावन पर्व पर लिया तथा पजाब की सुरक्षा के लिए पजाब और कश्मीर को कम से कम ५ वर्षों के लिए सेना के हवाले करने की सरकार से माग की साथ ही प्रस्ताव पारित करके प्रधान मन्त्री भारत सरकार दिल्ली को भेजे गये कि–

[१] यह सभा विगत ५ वर्षों से पजाब मे हो रही हिंसक गति विधियों पर गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। हमारी माँग है कि पजाब के तीन सीमावर्ती जिले सेना के हवाले किये जांय।

[२] यह सभा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी के उस प्रस्ताव का समर्थन करती है जो पाकिस्तान से लगी पट्टी, राजस्थान पजाब और जम्मू कश्मीर पर सीमा सुरक्षा विधेयक द्वारा सविधान मे सशोधन करके आतकवाद तथा पाकिस्तानी घुसपैठ को खत्म करने के लिए कृत सकल्प है।

[३] यह सभा विपक्षी दलो से अपील करती है कि देश हित के कार्यों मे सरकार को पूर्ण सहयोग दें।

केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर, आर्य समाज गुलावठी [बुलन्दशहर], श० द० वै० सन्यास आश्रम गाजियाबाद, दयानन्द शिशु मन्दिर मोतीनगर लखनऊ, दयानन्द विद्या मन्दिर मोतीनगर लखनऊ, आर्य समाज दयानन्द मार्ग बीकानेर, आर्यसमाज फिरोजाबाद, आर्य समाज नामनेर आगरा, केदारनाथ सेक्सरिया आर्य कन्या इण्टर कालेज आगरा, आर्य समाज असुरन गोरखपुर, आर्य समाज सिविल लाइन्स अलीगढ, आर्य समाज अमरोहा मुरादाबाद, आर्य समाज शाहजहापुर, जिला आर्य प्रति निधि सभा शाहजहापुर, आर्य समाज बुढ़ानागेट मेरठ शहर, आर्यसमाज बागपत मेरठ, आर्य समाज बस्ती, स्त्री आर्य समाज बुढाना गेट मेरठ शहर, आर्यसमाज आर्य नगर बदायू, आर्य कन्या इण्टर कालेज इस्लाम नगर बदायू, आर्य समाज बिहारीपुर बरेली, आर्य समाज राढधना मेरठ, आर्य समाज चौक प्रयाग, आर्य समाज तालिब नगर, आर्य समाज देहरादून, आर्य समाज मवाना मेरठ, आर्य समाज हरदोई, आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर, आर्य समाज अडींग मथुरा, आर्य समाज धूरी, आर्य समाज प्रकाशवीर शास्त्री भवन गाजियाबाद, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ, गुरुकुल वैदिक सस्कृत महा वि० सिराथू इलाहाबाद, आ० स० टून्डला आगरा, जिला उप सभा बरेली, जिला उप सभा मथुरा आ० स० खानपुर मेरठ, आ० स० कालपी जालौन, आर्य समाज बक्शी पुर गोरखपुर।

आओ चक्र सुदर्शन धारी

कृष्ण कन्हैया सच कहता हू मरा नहीं है कस,
द्वापर से दस गुना हो गया दुर्योधन का वश,
फिर अधर्म का हुआ धर्म के ऊपर पलडा भारी।
आओ चक्र सुदर्शनधारी !!

क्या गौ और क्या गोकुल कान्हा, सब पर ताप चढ़ा है,
इस धरती पर तब से लेकर अब तक पाप बढ़ा है,
हर दिल अब सहमा-सहमा है, हर मन भारी-भारी।
आओ चक्र सुदर्शन धारी !!

इस दुनिया मे जितना दु ख है उसका नाम मिटा दो,
प्रेम प्यार की अमृतधारा जन-जन पर बरसा दो,
सब सुख, सारी खुशिया दे दो सबको कृष्ण मुरारि।
आओ चक्र सुदर्शन धारी !!

–विजय निर्बाध

महर्षि स्वामी दयानन्द की शैक्षिक विचार धारा

(कु० नीराजना एम० ए० समाज शास्त्र उत्तरार्द्ध
दयानन्द कालेज–अजमेर (राज०))

महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व सर्वांगीण रूप से विकसित एक ऐसे गुणो का सकुल था जिसमें अध्यात्मिकता मन-वचन-कर्म का ऐक्य, क्रियाशीलता, साहस तथा अगाध पाडित्यविद्यमान था। वे उच्चकोटि के धार्मिक समाज सुधारक तथा राष्ट्रवादी थे, साथ ही क्रान्तिकारी शिक्षा शास्त्री भी। शिक्षाके विषयमे विश्वके शिक्षा शास्त्रियोंने असख्यो परिभाषायें व नीतिया प्रस्तुत की है किन्तु मै उन सबके पचडे मे न पड कर महर्षि कोशैक्षिक विचार धारा को ही उजागर कर उसकी समीचीनता प्रतिपादित करना चाहूगी।

परिभाषा

महर्षि दयानन्द ने "सत्यार्थ प्रकाश" के स्वमतव्यामतव्य भाग मे लिखा है–

"जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियादि की बढ़ती होवे और अविद्या आदि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं।"

उक्त परिभाषा किसी भी देश, काल तथा परिस्थिति मे मान्य हो सकती है। इसी प्रकार महर्षि ने "व्यवहार भानु" नामक लघु पुस्तिका मे भी शिक्षा के फल के प्रति अपना व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

शैक्षिक दृष्टिकोण

महर्षि दयानन्द आदर्श वादी शिक्षा शास्त्री थे जिन्होने व्यक्ति निर्माण को प्रमुखता दी है क्योकि व्यक्तियो का सकुल ही "समाज" कहा जाता है जिसमे वैयक्तिक अत क्रियायें सामूहिक अत क्रियायें बनकर समाज की परिभाषा को सार्थक बनाया करतीं हैं। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे उन्होने अपना यही व्यक्तिवादी दृष्टिकोण पदे पदे प्रकट किया है।

तीन गुरु

महर्षि ने "मातृमान, पितृमान, आचाय मान् पुरुषो वेद" की वैदिक मान्यता स्पष्ट करते हुए बच्चे की शिक्षा की प्रारभिक शाला माता की गोद मानी है। इसके अतिरिक्त महर्षि ने पूव समाजीकरण का भी अभिनव प्रत्यय दिया है जिसके विषय मे विश्व के प्राय सभी शिक्षा शास्त्री मौन है। यही कारण है कि आपने बच्चे के जन्म से पूर्व तीन सस्कार गर्भाधान, पु सवन तथा सीमन्तोन्नयन करने का विधान लिखा है। गर्भस्थ शिशु का स्वस्थ निर्माण इन्हीं सस्कारो द्वारा होता है। इस दृष्टि से महर्षि दयानन्द का शैक्षिक प्रत्यय अनूठा है। माता पिता और आचार्य की प्रधानता भी उन्होने स्वीकार की है जबकि पश्चिमी शिक्षा शास्त्री बच्चे को प्रधानता देते हैं।

गुरुकुलीय शिक्षा

महर्षि दयानन्द गुरुकुलीय शिक्षा के पुनरुद्धारकर्ता थे। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास मे उन्होने आठ वर्ष के लडके लडकियो को अलग-अलग पाठशालाओं मे भेजने का सकेत किया है। उनका यज्ञोपवीत घर मे ही कराकर आचार्य कुल मे भेजने का निर्देश देते हुए यह भी आदेश दिया है कि लडको के गुरु पुरुष और लडकियों की गुरु महिलायें ही होनी चाहिए। उनके इस आदेश का पालन करने के लिए बालक तथा बालिकाओ के गुरुकुलों की स्थापना की गई थी जहा ऋषि कृत आर्ष प्रणाली के आधार पर अध्यापन कराया जाता है।

आचार्य कैसे हों ?

पढ़ाने वाले आचार्य कैसे हो ? इस आवश्यकता की ओर तृतीय समुल्लास मे सकेत किया गया है। आचार्य को पूर्ण धार्मिक, विद्यायुक्त जितेन्द्रिय, सागो पाग वेदो का विद्वान, परोपकारी तथा पक्षपात रहित होना चाहिए। उनमे असत्याचरण को छुटाकर सत्यपथ को ग्रहण कराने की क्षमता होनी चाहिये। "आर्योद्देश्य रत्नमाला" तथा "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" ग्रन्थो मे इन निर्देशो का विस्तार से वर्णन किया गया है। आचार्य की सार्थकता छात्रो मे सदाचरण का आधान करने में ही है।

"अनिवाय शिक्षा"

महर्षि दयानन्द ने अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया है।" "सत्यार्थ प्रकाश" के तृतीय समुल्लास मे उनका स्पष्ट निर्देश है कि "पाचवें और आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के अथवा लडकियों को घर मे न रख सकें। पाठशाला मे अवश्य भेज दें जो न भेजें (तो) वह दण्डनीय हो जब तक समावर्तन का समय न आवे तब तक विवाह न होने पावे।" आदि प्रसग महर्षि की अनिवार्य शिक्षा विषयक मान्यता की पुष्टि करते हैं।"

"सस्कृत के साथ अग्रेजी भी पढ़े"

"महर्षि के पत्र और विज्ञापन" सम्पादक प० युधिष्ठर मीमासक जी को १७ जून १८८१ को लिखे गये पत्र मे बाबू दुर्गाप्रसाद जी को ऋषि ने आदेश दिया है–

"इस पाठशाला मे मुख्य सस्कृत, जो मातृ भाषा हैं उसकी ही वृद्धि होनी चाहिए। केवल सस्कृत और राज भाषा अग्रेजी दो ही का पठन-पाठन होना आवश्यक है।" इससे यह सिद्ध है कि महर्षि सस्कृत और अग्रेजी दोनो भाषाओ के अध्ययन पर बल देते थे।

'ऋषिकृत ग्रन्थ ही पढ़ें'

सत्यार्थप्रकाशके अष्टम समुल्लासमे महर्षिने बताया है कि सदा ऋषिकृत ग्रथो को ही पढ़ना चाहिए, अल्प शास्त्रज्ञ व्यक्तियो द्वारा लिखित ग्रथो को नहीं। ऋषिकृत ग्रथो का अध्ययन मानो समुद्र मे गोता लगाकर बहुमूल्य मोतियों को प्राप्त करना है। अल्पज्ञों के ग्रथों का पठन पहाड़ का खोदना और कौडी का लाभ करना है। इसी उद्देश्य से महर्षि ने परित्याग योग्य ग्रथो की सूची प्रस्तुत की है जिसमे कातन्त्र, सारस्वत, चद्रिका, मुग्धबोध, कौमुदी, शेखर, मनोरमादिव्याकरण ग्रथ, अमरकोश, वृत्तरत्नाकर शीघ्र बोध, मुहूर्त चितामणि, नायिकाभेद, व्रतार्क, तर्कसग्रह, साख्यतत्व कौमुदी, शारङ्गधर, पुराण, तुलसीदास कृत ग्रन्थ, रुक्मिणी मगल आदि ग्रन्थ प्रमुख हैं वे सार्थक अध्ययन अध्यापन पर विशेष बल देते थे।

"दण्ड व्यवस्था आवश्यक"

महर्षि दयानन्द ने शिक्षा व्यवस्था मे दण्ड की अनिवार्यता प्रतिपादित की है। उन्होंने इसकी पुष्टि मे महा भाष्य ८।१।८ का वचन भी उद्धृत किया है–

(शेष पृष्ठ ९ पर)

देश की वर्तमान परिस्थितियो पर एक विचारपूर्ण विवेचन–

देश स्वातंत्र्य, राष्ट्रीयता और नए संकट

– स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती –

लगभग दो वर्ष पहले की बात है। मै ३० अक्टूबर १९८४ को प्रात मौरिशस की यात्रा करके दिल्ली लौटा था। ठीक २४ घटे बाद प्रधान मन्त्री श्रीमती इदिरा गाधी की हत्या उनके निवास पर उन्हीं के अग-रक्षको द्वारा हुई। अङ्गरक्षक पकडे गये। आज तक निर्णय नहीं हो पाया कि उन्हें कब फासी दी जाएगी! यह है हमारा न्यायालय का तन्त्र। मैने सुना है कि इग्लेंड मे खूनी की वकालत उसकी पत्नी भी नहीं करती। और एक हमारा राष्ट्र है जो खूनी को छिपाता है। हमारे वकील और न्यायाधीश उसे बचाने के लिए न्याय के अधिनियमो के साथ बलात्कार करते हैं।

श्रीमती गाँधी की हत्या के कारण देश ऐसा सहमा कि न तो गाधी के स्वपक्ष के लोग और न विपरीत पक्षो के वाग्-वीरों मे से कोई ऐसा व्यक्ति निकला जो शासन का नेतृत्व अपने हाथ मे लेने को तैयार होता। सब डरे हुए थे–कोई जान से खेलने को तैयार नहीं था। नेताओ ने राजीव को बलि का बकरा बना दिया। अभी इन्दिरा की चिता मानो ठण्डी भी नहीं हुई थी राजीव ने गद्दी सभाली भी न थी, राजीव को आत्म रक्षा का एक ही उपाय सूझा। २४ जुलाई १९८५ को उसने लोगोवाल से समझौता किया। लोगोवाल को इन्दिरा जी ने जेल मे डाला था। बिना पश्चाताप किये लोंगोवाल जेल से बाहर आया। भारत के लोगों ने राजीव को बधाई दी। लोंगोवाल के साथ समझौता–चण्डीगढ़ सिखों को दिया जाय, पजाब सिखो को सौंप दिया जाय,–हिन्दी प्रदेश हरियाणा को मिलें, यह उदारता, यह सौजन्य भारत के लगभग सभी पत्रों ने राजीव के बडप्पन की प्रशसा की। शायद आर्यजगत के पाठकों को स्मरण हो–मैने छोटा सा वक्तव्य दिया–शीर्षक था–"पजाब समझौता–दूरदर्शिता या भयकर भूल।"

मेरी समझ मे हमारे पिछले तीनो प्रधान मन्त्रियो से तीन भयकर भूलें हुई और इस चौथे प्रधान मन्त्री ने अपने शासन के प्रथम चरण मे ही ऐसी भयकर भूल कर डाली जिसका प्रायश्चित्त करना असम्भव है। केनेडी की हत्या के बाद आतङ्कवादी हत्यारे के प्रति किसी ने ममता नहीं प्रदर्शित की और न उनके साथ समझौता किया। उस राष्ट्र के व्यक्तियो ने हत्यारो को देशभक्त की सज्ञा भी नहीं दी। पर हमारा देश विचित्र है। सन् १९०५ से आज तक के आतङ्कवादियो को हमने वीर बलिदानी माना है–उन्हे आजादी के आन्दोलन का आदर्श व्यक्ति माना है। वही आतङ्कवाद हमारे लिए आज घातक सिद्ध हो रहा है, जिसे हम बीसवीं सदी के प्रारम्भ से पोसते आये हैं। आज भी हम मे से न जाने कितने हैं, जो महात्मा गाधी जैसे नर श्रेष्ठ को मारने वाले गोडसे को गाँधी से बडा मानते हैं। मै नहीं जानता कि स्वामी श्रद्धानन्द को मारने वाले अब्दुल रशीद को मुस्लिम जनता शहीदो की श्रेणी मे गिनती है या नहीं।

इस आतङ्कवाद के नारकीय काण्ड हम पिछले तीन वर्ष से प्रति दिन इस देश मे देख रहे हैं–सितबर १९८१–लाला जगत् नारायण की हत्या, रमेश की हत्या, एक के बाद एक जघन्य हत्याओ का सिलसिला हत्या करने वाले पकडे ही नहीं गए, या फरार कर दिए गए। हमारा न्यायालय भी नपुसक रहा। इन हत्याओ के पीछे राष्ट्र विरोधियों का एक खास समुदाय था। देशभर मे फैले एक वर्ग-विशेष की आत्मीय सहानुभूति और पीठ थपथपाने वाली मनोवृत्ति थी। ७ जुलाई १९८६ को केनेडा से चले एयर इन्डिया (कनिष्क विमान) का आयरलैण्ड पहुचने से पूव विस्फोट किया गया। इदिरा ने जिन्हे जेल मे डाला था, उनकी रिहाई को गई। प्रत्येक मृतक पर २० हजार का मुआवजा राजीव ने दिया–मानो इदिरा से कोई पाप हो गया हो।

राजीव के इस समझौते के सम्बन्ध मे मैंने अपने वक्तव्य मे स्पष्ट कहा था– 'मै आपसे पजाब को चण्डीगढ न देने की बात नहीं कहता, न हरियाना को पजाब के कुछ जिले मिलने की बात। आतङ्कवाद और देशद्रोह के पुरस्कार के विरुद्ध हू मैं। देशद्रोहियो को पहले सजा मिलनी चाहिये, उचित पश्चाताप फिर क्षमा। समझौते की बात दूसरो से हो सकती है पर देशद्रोहियो से नहीं। जिन सैनिको ने सेना मे विद्रोह किया, उन्हे भी आप उपहार देंगे? इदिरा की हत्या का खून भी अभी सूख नहीं पाया था, कि इस समझौते ने इदिरा को खूनी और अपराधी ठहरा दिया और उसके हत्यारो को सदा के लिये शहीदो की श्रेणी मे ला रखा। आगे के लिए देश मे अधिक आतङ्कवाद की नींव पड जावेगी। मैंने जो आशका प्रकट की थी, वह शतश ठीक निकली।

लोगोवाल को भी लोगो ने अरदास करते हुए गोली से उडा दिया। एक पवित्र सिक्ख मदिर मे हमने लोंगोवाल को पजाब के गाधी की उपाधि से सम्मानित किया। लोगोवाल की हत्या के बाद ही गत वर्ष मै लन्दन मे था। वहा सिक्खो का बडा दल भिण्डरा वाले के गीत गाता था। मैंने भिण्डराँवाले के अनेक टेप लदन मे सुने, जिनमे हिन्दुओ का मजाक उडाया जाता था–भिण्डरावाले सिक्खो के एक बडे दल का हृदय सम्राट बन चुका था। इग्लैण्ड की सरकार ने सिक्खो को 'हिन्दुओ से पृथक् एक कौम" घोषित कर रखा था। लन्दन मे हेरा-फेरी करके लोगोवाल की प्रशसा मे सिक्खो की एक सभा बुलायी गई थी। मै जब लदन से लौटने के लिए एयरोड्रोम को आ रहा था, मुझे एक इश्तहार दिया गया–"हिंदुओ का प्रधान मन्त्री, सहस्रो सिक्खो का हत्यारा राजीव गाँधी लदन आ रहा है।" आज वह स्थिति आ गयी है, कि आप कितना ही क्यो न कहे, सिक्ख तो यही कहेगा कि मै हिन्दू नहीं हू। सरदार काहन सिंह ने एक पुस्तक लिखी थी, जिसका नाम था–"हम हिन्दू नहीं हैं"–कहा जाता है यह व्यक्ति मैकालिक नामक एक इम्पीरियल सर्विस वाले अग्रेज अफसर का क्रीतदास था। लोगोवाल मर गये और उसके साथ किये गये समझौते को पूरा करने मे राजीव डटे हुए हैं। मुझे डर है, कि वे कुछ न कुछ सिखो को दे डालेंगे। (क्रमश)



–स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती–



मातायें सन्तान के ज्ञान कर्म वस्त्र का विस्तार करें [बनायें]

ओ३म् । वितन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति । उपप्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ ।। ऋ० ५-४७-६ ।।

(मातर) माताए (अस्मै) इस पुत्र के लिये (धिय) बुद्धियो तथा (अपासि) कर्मो को (वि-तन्वते) विस्तृत करती हैं, और (पुत्राय) सन्तान के लिये (वस्त्रा) वस्त्र (वयन्ति) बुनती हैं। (वध्व) वधुयें (मोदमाना) प्रसन्न होती हुई (उपप्रक्षे) सम्पर्क के निमित्त (दिव –।–पथा) ज्ञान के मार्ग से (वृषण) वीर्य्य सेचन समर्थ पुरुषो को (अच्छ) भलीभाति (यन्ति) प्राप्त होती हैं। अथवा (वध्व) वधुयें (उपप्रक्षे) सम्बन्ध के निमित्त (मोदमाना) आनन्द मनाती हुई (वृषण) वीर्य्यवान् पुरुषो को (दिव) चाहती हुई (पथा) धर्म्म मार्ग से (अच्छ–।–यन्ति) ठीक प्रकार प्राप्त होती हैं ।

सन्तान जो कुछ है वह प्राय माता पिता के आचार विचार व्यवहार आहार तथा सस्कार का प्रतिबिम्ब है । माता पिता के आचार विचार का सस्कार बालक पर अवश्य पडता है,और उनमे से भी माता का प्रभाव बहुत अधिक होता है । माता चाहे तो बालक को शूरवीर,धीर गम्भीर,धर्म्मात्मा,विद्वान् पण्डित,ज्ञानी ध्यानी बनावे । माता की अकर्मण्यता उसे कायर भीरु विक्षिप्त चचल, पापात्मा दुरात्मा, मूढ़, अज्ञ, विषयी, लम्पट भी बना सकती है । बालक का जीवन प्रभात माता की गोद मे बीतता है । माता का एक एक इङ्गित चेष्टित, भाषण, गमन, आसन सभी उस बालक के लिये अनुकरणीय होते हैं । उनको देखकर असमर्थ होता हुआ भी बालक उनका अनुकरण करता है । दूसरे शब्दों मे कहे तो यह कहना होगा कि बालक को प्रवृत्ति माता ही बनाती है । वेद कहता है–'वितन्वते धियो अस्मा अपांसि मातर =' मातायें अपनी सन्तान के लिये बुद्धियो तथा कर्म्मों का विस्तार करती है ।

माता का उत्तरदायित्व बहुत है । मातायें सन्तान सम्बन्धी अपने इस उत्तरदायित्व को समझ जायें, तो ससार का सकट दूर हो जाये । क्षुद्र कौटुम्बिक वा देशिक दुर्भावनाओ से ऊपर उठकर समस्त ससार को अपना घर समझ कर विशाल मानव समाज की कमनीय कल्याण कामना से प्रेरित होकर अपना विचार उच्चार तथा आचार ऐसा बनायें कि बालको के हृदय मे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भव्य भावना उत्पन्न हुए बिना न रहे । तब अवश्यमेव ससार से अशान्ति का निर्वासन होकर शाति का साम्राज्य होगा । माताओं का एक और कार्य्य भी यहा बताया गया है–'वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति' = सन्तान के लिए वस्त्र मातायें बुनती हैं । यदि यह कार्य्य भी माता सम्भाल लें, तो गृहशिल्प की उन्नति होकर व्यापारिक स्पर्धा भी ससार मे न्यून हो जाये । मन्त्र के उत्तरार्ध मे विवाहाभिलाषिणी स्त्रियो के मनोभावो का सक्षेप मे वर्णन है, उसमे इशारे से पुरुष मे पुरुषत्व के होने की आवश्यकता भी बतला दी । स्त्री क्यो और कैसे पुरुष को चाहती हैं, इसको 'उपप्रक्षे' तथा 'वृषण' दो पद स्पष्ट कर रहे हैं । स्त्री सोच समझ कर पति को चुने, वह उसको 'दिवस्पथा' ज्ञान के मार्ग से चाहे । अर्थात् स्त्री को अपने कर्तव्य तथा आवश्यकताओ, एव योग्यता का ज्ञान होना चाहिये ।

वेद–निरुपित बने हमारा

[श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर]

उठो आर्यों ! निद्रा त्यागो,
युग की हुई पुकार है ।
आज तुम्हारे दरवाजे,
दानवता की ललकार है ।
धरती के प्रा ण मे उठता,
आर्त निनादों का क्रन्दन ।
निर्भयता से होता देखा,
दनुज–वृत्तियों का नर्तन ।
जाग उठे भारतमाता के, वीर सपूतों की तरुणायी ।
वेला सकल्पों की आयी ।।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का,
गूजे धरती पर जयघोष ।
वेद ऋचा'ओ की गरिमा का,
भू पर हो उद्भव, उद्घोष ।
मानवता के तत्वों का हो,
भूतल पर नूतन उन्मेष ।
शाति–सफलता–समरसता की,
प्रगति धरा पर रहे विशेष ।
पुन स्वतन्त्रता दिवस पधारी, लेकर स्वर्णिम अरुणायी ।
वेला सकल्पों की आयी ।।

वेद निरुपित बने हमारा,
मगलकारी नवल समाज ।
जन जन मे आह्लाद भरा हो,
सुन्दर सा हो सतत स्वराज ।
वर्णाश्रम की पुण्य व्यवस्था,
पुन यहा स्थापित हो ।
शोषण–उत्पीडन से कोई,
मनुज नहीं सतापित हो ।
सविता की कविता ने जग मे, अनुपम जाग्रत ज्योति जलायी ।
वेला सकल्पों की आयी ।।

वीरांगना लक्ष्मी देवी की साहसिक सफलता

बीकानेर नगर आर्यसमाज अन्तरङ्ग की सदस्या लक्ष्मी देवी बुलन्द हौसले वाली मर्दानी औरत हैं । दसियो अपहृत लडकियो को गुण्डों के चगुल से इन्होंने छुडाया और उनका मुकाबला बड़ी बहादुरी से किया ।

श्री गगानगर के कसारा सुथारान मोहल्ले की बीस वर्षीय सुधा को स्कूल से लौटते ईशक अली और उसके साथी २९ जुलाई को ले उड़े । मा बाप सभी परेशान । वे इनकी शरण मे आये । इन्होंने अपने सूत्रों से सुधा को उदयपुर के एक गाव मे भिखारिन वेश धर खोज निकाला । पुलिस लेकर सुधा जहा कैद थी उसमे जा घुसीं और बाहर ला पुलिस को सौंप दिया । बाद मे पुलिस ने लडके को भी गिरफ्तार कर लिया ।

उदयपुर आर्यसमाज मे लडकी के साथ जब ये गई तो घटना का ब्यौरा सुन इनका भव्य स्वागत किया गया । शाल और ग्यारह रुपये भेंट किये गये । सुधा के पिता श्री उदाराम ने कृतज्ञता पूर्वक डेढ़ हजार का पुरस्कार दिया जो इन्होंने तत्काल वहां के समाज को सौंप दिये । वीरांगना लक्ष्मी देवी की इस साहसिक सफलता पर बीकानेर समाज को गर्व है । –मन्त्री आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर

महर्षि स्वामी दयानन्द की शैक्षिक विचार धारा

(शेष पृष्ठ ६ से आगे)

सामृतं पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः ”

अर्थात् बच्चो को ताडना करना मानो उन्हें अमृत पिलाना है और लालन करना उन्हें विष देना है। आज दण्ड व्यवस्था को बुरा माना जाता है यही कारण है कि आज का छात्र उद्दण्ड और अनुशासन हीन होता चला जा रहा है।

शिक्षण विधि

महर्षि ने शास्त्रीय शिक्षण प्रणाली का अनुमोदन किया है। आपने शब्दार्थ, व्युत्पत्ति, अनुवाद, व्याख्यान, व्याकरण व प्रवचन आदि की दृष्टि से पारस्परिक सम्बन्ध निर्वाह पर बल दिया है। ब्रह्मचारी सुख सुविधाओ से दूर रहकर त्यागी, अर्ध्वरेतस् अल्पाहारी, गृहत्यागी, सतर्क मितप्रवादी और गुरुभक्त होना चाहिए। महर्षि द्वारा २० वर्षीय पाठ्यक्रम निर्धारित है जिसे सक्षेप मे इस प्रकार कहा जा सकता है। पाणिनि की ध्वनि विज्ञान, अष्टाध्यायी, व धातुपाठ, उणादिकोष, महाभाष्य निघण्टु, पिंगल, मनुस्मृति, दर्शन शास्त्र, वेद-उपवेद ज्योतिष, बीज-गणित, अक-गणित, भूगोल, ज्यामिति, भूगर्भ शास्त्र आदि पाठ्यक्रम को बीस वर्षों मे नियमित अध्ययन से पूरा किया जा सकता है।

"शिक्षा पर प्रभाव"

महर्षि की शिक्षाका प्रभाव धर्म, राजनीति और शिक्षा तीनो क्षेत्रो मे पडा है। उनकी प्रेरणा से कई प्रमुख राज नेताओ ने स्वतत्र्य सग्राम मे अग्रणी भूमिका निभाई। आपकी वेद भाष्य शैली ने तार्किक व अनुसधानात्मक दृष्टि कोण प्रदान किया जिसे आज विधर्मी भी अपना रहे हैं। महर्षि की शिक्षा का लाभ सामाजिक, धार्मिक कुरीतियो और अध-विश्वासों के उन्मूलन मे स्पष्टत. देखा जा रहा है। वेदों के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा, गुरुकुलीय शिक्षा के प्रति आकर्षण, सस्कृत भाषा, नैतिक शिक्षा के प्रति झुकाव आज बढ़ता जा रहा है। स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में तो ऋषि का जादू सिद्ध हो ही चुका है। कन्या-गुरुकुलो, डी० ए० वी० कालेजो व स्कूलों का सर्वत्र जाल बिछ गया है। आज आर्य समाज, देश का निर्भीक, राष्ट्रवादी तथा लोक कल्याणकारी सगठन माना जाता है। गुरुकुल कांगड़ी, दयानन्द वि० वि० चण्डीगढ़, डी० ए० वी० कालेज अजमेर, कानपुर, दिल्ली व पजाब आदि की सस्थायें देश की गौरवास्पद सस्थायें मानी जाती हैं। आर्य विवाह एक्ट, बाल-विवाह उन्मूलन (शारदा) एक्ट, हिन्दू विवाह विशेष एक्ट, आदि अधिनियम आर्य समाज के आंदोलनों के ही परिणाम हैं।

सचमुच यदि आज की किंकर्त्तव्य विमूढता युक्त परिस्थितियों में आर्य समाज की मान्यताओं और उसकी शिक्षा प्रणाली को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार कर लिया जाये तो आर्यावर्त की इस पावन धरा पर स्वर्ग उतर आये। प्रभु मेरी कामना पूर्ण करें। शमित्योम्

आर्य जगत

—स्त्री आर्य समाज साकेत मेरठ के तत्वावधानमें वेद प्रचार सप्ताह १ अगस्त से ७ अगस्त तक मनाया गया जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो द्वारा वेद कथा, का आयोजन हुआ।

सरस्वती गोयल मन्त्राणी

आर्य जगत

—आर्य समाज गया [बिहार] के तत्वावधान मे आर्य समाज मन्दिर टावर चौक गया मे वेद प्रचार सप्ताह दिनाक १९ अगस्त से २७ अगस्त ८६ तक धूम-धाम से मनाया गया। मन्त्री

—आर्य समाज रायचूर कर्नाटक मे श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह दि० १२ अगस्त ८६ से १९ अगस्त ८६ के मध्य हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। मन्त्री

आर्य समाज शाहजहापुर [रजिस्टर्ड] के विशाल सत्सग भवन मे पावन वेद कथा का आयोजन दिनाक १९ अगस्त ८६से ३ सितम्बर ८६ तक किया गया है जिसमे वेद कथा, भजन प्रवचन के अनेको कार्यक्रम धूम-धाम से सम्पन्न हो रहे हैं। मन्त्री

—आर्य समाज मेरठ शहर मे दिनाक १९ अगस्त ८६ को श्रावणी पर्व हर्षोल्लास के वातावरण मे समारोह पूर्वक मनाया गया यजमान का कार्य श्री राधेलाल सर्राफ, श्री भरत सिंह तथा श्री अवशेष कुमार जी एडवोकेट द्वारा सम्पन्न हुआ। सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने सगीत द्वारा हैदराबाद सत्याग्रह के बलिदानी शहीदो को अपनी श्रद्धा-जलि अर्पित की तथा आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री शाति प्रकाश जी ने रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर वेद रक्षा, राष्ट्र रक्षा एव गोरक्षा तथा नारी रक्षा का सकल्प ग्रहण करने हेतु आर्यजनो को प्रेरित किया।

सम्वाददाता

—रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर दयानन्द बाल मन्दिर शाहगज जौनपुर के छः बच्चो का यज्ञोपवीत सस्कार श्री प० काशीनाथ जी शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। विजय नारायण आर्य

—आर्य समाज भागलपुर देवरिया के तत्वावधान मे दिनाक ११ अगस्त ८६ को समाज के निर्माणाधीन यज्ञशाला में एक बृहद यज्ञ का आयोजन प० कमलनयन शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ जिसमे क्षेत्र के सम्भ्रान्त आर्य जन सम्मलित हुए। यज्ञ के अन्त में मुक्त सर में मारे गये १५ हिन्दुओ को सामूहिक हत्या पर क्षोभ प्रगट करते हुए परम-पिता परमेश्वर से दिवगतों के सद्गति तथा पारिवारिक जनों के शाति हेतु प्रार्थना की गई। रामाज्ञा मिश्र

नवीन आर्य समाज की स्थापना

ग्राम छिउलहा जिला फतेहपुर मे १८-७-८६ को नवीन आर्य समाज की स्थापना हुई। प्रधान श्री रघुनन्दन प्रसाद, मन्त्री श्री चन्द्रभानु सिंह और कोषाध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र जी निर्वाचित हुए।

मन्त्री आर्य समाज

उत्सव

आर्य समाज रजपुरा (बदायूं) का वार्षिक उत्सव २७-२८ सितबर दिन शनिवार-रविवार को स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती वेद भिक्षु के निर्देशन मे होगा।

मन्त्री

पुस्तक-परिचय

सत्यार्थ प्रकाश में उदधृत वैदिक मन्त्र

निदेशक—डा० निरूपण विद्यालकार—अध्यक्ष सस्कृत विभाग—मेरठ कालेज—मेरठ, एव सम्पादक डा० भूपेशचन्द्र जी इतिहास विभाग मेरठ कालेज मेरठ, प्रकाशक—आर्यसमाज सदर मेरठ—पृष्ठ २००, मूल्य सात रुपये पचास पैसे, साइज १८ x २२ = १/८ ।

सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द सरस्वती का वैदिक मान्यताओं पर आधारित आर्य सिद्धांत द्योतक बहुचर्चित एव बहुपठित ग्रन्थ है । स्वामी जी ने प्रत्येक सिद्धान्त विवेचना और मन्तव्य की पुष्टि मे अधिकाश रूप मे वैदिक मन्त्रो को प्रमाण—उदाहरण—सिद्धान्त रूप मे प्रस्तुत किया है । विद्वान् द्वय ने इस समालोच्य पुस्तक मे सत्यार्थ प्रकाश मे उद्धृत समस्त मन्त्रो का सकलन किया है तथा ऋषिवर की व्याख्या सस्कृत एव हिन्दी का अविकल रूप से प्रस्तुत करने के लिए अतिरिक्त मन्त्रो पर परिचयात्मक टिप्पणी एव व्याख्या देकर सामान्य पाठको के लिए अत्यन्त उपयोगी बना दिया है—प्रत्येक मन्त्र के देवता—ऋषि—छन्द—स्वर का भी स्पष्टीकरण है और क्रमश प्रत्येक उल्लास मे जितने मन्त्र हैं उसी क्रम से उल्लास के अनुसार सम्पादित है ।

पुस्तक की उपयोगिता मे परिपूर्णता हेतु प्रारम्भ मे—डा० रामनाथ वेदालकार का 'ऋषि दयानन्द की वेदार्थ मे क्रांति, डा० सत्यपाल शास्त्री का 'वैदिक देवतावाद क्या है ?' तथा डा० रामकिशोर मिश्र का 'वैदिक छन्द' तीन लेखो का योग करके पाठको की जानकारी मे विशेष वृद्धि होती है । अन्त मे परिशिष्ट मे उल्लासानुसार मन्त्रों की सूची एव वर्णानुक्रम मन्त्र—मन्त्रानुक्रमणिका देकर पाठकों को सुविधा प्रदान की गई है ।

सत्यार्थ प्रकाश मे महर्षि ने प्राय वेदो के बहुत से उपयोगी मन्त्रो का समावेश कर दिया है । उन समस्त मन्त्रो पर ऋषि की व्याख्याओ—पदार्थ के अतिरिक्त विस्तृत विशेष व्याख्या—टिप्पणिया अतिपूरक रूप मे है । तथा अध्ययन मे सुगमता प्रदायक है । पुस्तक सर्व रूपेण ग्राह्य एव उपयोगी है । विद्वानो के लिए व्यापक ज्ञान वर्धक है ।

विद्वानद्वय डा० निरूपण जी तथा डा० भूपेश जी के प्रयास सराहनीय हैं और सदर आर्यसमाज मेरठ की उदारता है कि इतनी उपयोगी पुस्तक, साज-सज्जा सुन्दर मुद्रण—स्वच्छ कागज उत्तम होते हुए भी साधारण से मूल्य पर प्रचार हेतु प्रकाशित किया है ।

अध्ययनशील सज्जन आर्यसमाजें, पुस्तकालय तथा पारितोषिक के लिए यह पुस्तक अति उपयोगी है और सामान्य जन भी लाभान्वित होंगे । सस्तुति है कि लेखको एव प्रकाशक को प्रोत्साहन दिया जाय तथा अन्य उपयोगी साहित्य भी प्राप्त हो ।

अन्त मे डा० निरूपण जी, डा० भूपेशचन्द्र जी एव आर्यसमाज सदर मेरठ के अधिकारी स्तुत्य योग्य है एव धन्यवाद के पात्र हैं ।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम०ए० सम्पादक

निर्वाचन—

आर्यसमाज सहजनवा (गोरखपुर)
प्रधान—श्री दानबहादुर राज
मन्त्री—श्री ब्रह्माशरण श्रीवास्तव
कोषा०—श्री फूलचन्द यादव

आर्यसमाज रामनगर (नैनीताल)
प्रधान—श्री दयाराम
मन्त्री—श्री सुरेन्द्रदत्त पन्त
कोषा०—श्री अवधेश कुमार

आर्यसमाज आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड वाराणसी
प्रधान—श्री यज्ञदत्त गौतम
मन्त्री—श्री शिवमित्र शास्त्री
कोषा०—श्रीमती रामदुलारी अग्रवाल

आर्यसमाज गोला गोकर्ण नाथ (खीरी)
प्रधान—श्री डा गिरधारीलाल शर्मा
मन्त्री—श्री रामसुचित शुक्ल
कोषा०—श्री जगदीश सहगल

आर्यसमाज ककडखेडा (मेरठ)
प्रधान—श्री मनोहरलाल गाधी
मन्त्री—श्री रामस्वरूप विमल
कोषा०—श्री रामशरण जी

आर्यसमाज उसड पो० बेहट (सहारनपुर)
प्रधान—श्री जगदीशप्रसाद
मन्त्री—श्री श्यामलाल
कोषा०—श्री मेघपालसिंह

आर्यवीर दल बन्दना (सहारनपुर)
प्रधान—श्री दिवाकर आर्य वीर
मन्त्री—श्री राजेशकुमार आर्य
कोषा०—श्री अनिलकुमार आर्य

आर्यसमाज भवाली (नैनीतल)
प्रधान—श्री मेजर केशरसिंह
मन्त्री—श्री भूमित्र आर्य
कोषा०—श्री नारायणसिंह

आर्यसमाज सेरकोट (बिजनौर)
प्रधान—श्री रामस्वरूप आर्य
मन्त्री—श्री गजराजसिंह वैद्यराज
कोषा०—श्री इन्द्रजीत जी

आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत
प्रधान—श्री रामानन्द सिंगला
मन्त्री—श्री कुलभूषण जी
कोषा०—श्री मदनमोहन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा जौनपुर
प्रधान—श्री रामराज
मन्त्री—श्री कल्पनाथ
कोषा०—श्री छोटेलाल आर्य

आर्यसमाज मोठ (झासी)
प्रधान—श्री मदनमोहन एडवोकेट
मन्त्री—श्री ओ३मप्रकाश स्नातक
कोषा०—श्री परेश कुमार

आर्यसमाज सीतापुर
प्रधान—श्री ओ३मप्रकाश अग्रवाल
मन्त्री—श्री वेद प्रकाश आर्य
कोषा०—श्री कृष्ण कुमार आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, आय कर से मुक्त

शताब्दी समारोह मे खुले हृदय से सहयोग दें और इस एतिहासिक अवसर पर दान देना न भूलें

उत्तर प्रदेश मे समस्त आर्य भाइयो को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि भारत सरकार ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, ५-मीराबाई मार्ग लखनऊ को आयकर अधिनियम १९६१ धारा ८० (६) के अधीन ३१-३-१९८८ तक आय कर से छूट प्रदान की है।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
लखनऊ

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उ० प्र० की कार्यसमिति की बैठक दिनांक ७ सितम्बर १९८६ दिन रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ ५ मीराबाई मार्ग नारायणस्वामी भवन के कार्यालय में दिन मे ११ बजे से होगी।

अत सभी महानुभावो से प्रार्थना है कि यथासमय पहुचने की अवश्य कृपा करें अति कृपा होगी।

प्रयागदीन जायसवाल मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उ०प्र०

हा ! हरिसिंह आर्य

भ्रात हरीसिंह चल दिये, छोड जिला बिजनौर।
दुखी सकल परिवार तज, गही स्वर्ग की ठौर ॥
गही स्वर्ग की ठौर, जनम भर ऋषि गुण गाते।
वैदिक धर्म प्रचार रग मे, रहे मदमाते ॥
कहें ब्रह्मानन्द आर्य, धन्य हैं वे पितु माता।
जने ऐसे गुणी, प्रचारक, बुधवर भ्राता ॥

—ब्रह्मानन्द आर्य भजनोपदेशक

—आर्यसमाज कृष्णानगर (कीटगज) प्रयाग का हीरकजयन्ती समारोह दिनांक २० नवम्बर ८६ से १३ नवम्बर १९८६ तक धूमधाम से मनाया जायेगा जिसमे आर्यजगत के सुप्रसिद्ध ख्याति प्राप्त विद्वान, उपदेशक व भजनोपदेशक सम्मिलित होंगे। —मन्त्री

—आर्यसमाज नाथूराम वार्ड कासगज मे महिला मण्डल के असीम सौजन्य से श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से कृष्ण जन्माष्टमी तक यजुर्वेदीय यज्ञ व सत्सग समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा। —सेवतीलाल आर्य

शोक संवेदना

—आर्यसमाज गोलागोकर्ण नाथ (खीरी) में एक शोक सभा दिनांक १७ अगस्त १९८६ को सम्पन्न हुई जिसमे ओजस्वी एव सुविख्यात आर्य जगत् के भजनोपदेशक श्री हरिसिंह आर्य (बिजनौर) तथा सभा के भू० पू० भजनोपदेशक श्री धर्मदत्त जी आनन्द (खीरी) के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

—रामसुचित शुक्ल

आर्यसमाज मेरठ शहर में संस्कृत दिवस

दि० १९ अगस्त ८६ मगलवार रात्रि को ८ बजे से सस्कृत दिवस श्री डा० कर्णसिंह जी अध्यक्ष सस्कृत विभाग मेरठ कालेज मेरठ की अध्यक्षता में आर्यसमाज मन्दिर मेरठ शहर मे मनाया गया। सयोजक थे श्री इन्द्रराज जी उत्तरप्रदेश के सभा प्रधान। भक्ति सगीत के पश्चात् ब्र० वागीश्वर, श्री राजेन्द्रकुमार तथा ब्र० प्रेमप्रकाश जी ने सस्कृत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए परिवार मे सस्कृत भाषा को अपनाने पर बल दिया। श्री डा०गणेशदत्त जी ने कहा कि वैज्ञानिको ने कम्प्यूटर के प्रयोग मे आने वाली भाषा का आविष्कार किया है और वह है सस्कृत। आज के विज्ञान के युग मे सस्कृत का कितना महत्व है। इस भूमिका के साथ एक प्रस्ताव भी रखा। श्री शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थमहारथी ने सस्कृत को आदिभाषा बताया जो मानव के उत्पत्ति के साथ ही भगवान ने दी थी। आदम हौआ को भी-वेद मन्त्रो से सिद्ध किया। श्री सत्यमित्र शास्त्री ने भी आधुनिक युग के परिपेक्ष्य मे सस्कृत को महत्वपूर्ण बताया। श्री इन्द्रराज जी उत्तर प्रदेश के सभा प्रधान जी ने इस बात की चर्चा की कि नई शिक्षा नीति मे सस्कृत को महत्व देने के स्थान पर उसे और दूर कर दिया गया है। यह देश और ससार का दुर्भाग्य है। देश की अखण्डता और सास्कृतिक धरोहर का आधार सस्कृत है। मानव समाज को निशस्त्रीकरण की नीति पर चलाने के लिए सस्कृत बहुत महत्व रखती है। उपनिषदों, गीता और वेदो के अमूल्य उपदेश ही ससार का हृदय परिवर्तन करने मे समर्थवान हो सकते हैं। —सवाददाता

—आर्यसमाज गोला गोकर्णनाथ (खीरी) के सदस्यो ने, भारत के भू० पू० थल सेनाध्यक्ष जनरल श्रीधर वैद्य के निर्मम हत्या पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए, दिवगत श्री वैद्य को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। —रामसुचित शुक्ल

—आर्यसमाज गया (बिहार) ने अपने आर्यसमाज को दिनाक १७ अगस्त ८६ की शोक सभा में, भू० पू० थल सेनाध्यक्ष जनरल श्रीधर वैद्य, श्री गोविन्दप्रसाद गुप्त सदस्य आर्यसमाज गया, श्री बाबू जगजीवन राम जी भू०पू०उपप्रधान मन्त्री भारत सरकार, श्री चन्द्रशेखरसिंह भू पू मुख्यमन्त्री बिहार आदि के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। —[illegible]प्रसाद मन्त्री

—आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री नवल किशोर जी आर्य का निधन श्रावणी पूर्णिमा के दिन हो गया। आर्य समाज मेस्टन रोड के सदस्यो ने, अपनी शोक सभा ने श्री नवलकिशोर जी के निधन पर गहरा दुखप्रकट करते हुए ईश्वर से दिवगत के शांति तथा परिवार जनो के धैर्य हेतु प्रार्थना की। —विजयपाल शास्त्री

—आर्यसमाज किरतियापुर हरदोई ने श्री हरिसिंह जी आर्य भजनोपदेशक बसेड़ाखुर्द (बिजनौर) के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। —स्वामी अनन्तभिक्षु वानप्रस्थ

—आर्यसमाज भागलपुर देवरिया के भू०पू० उपप्रधान तथा प्रख्यात कवि एवं समाजसेवी श्री युगुलकिशोर जी आर्य का निधन हो गया वे आर्यसमाज के एक कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। समाज के सदस्यो, तथा क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओ ने, उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए एक शोक सभा द्वारा दिवगत के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की तथा दिवगत के शांति एव प्रियजनो के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

—रामाज्ञा मिश्र

'आर्य्यमित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६३
पजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
भा० भाद्रपद १६
भाद्रपद शुक्ल ३
रविवार, ७ सितम्बर १६८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र



आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.



१८८६-१९८६

शताब्दी समारोह

१८ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६

डी.ए.वी. कालेज लखनऊ

आर्य युवकों व युवतियों के लिये आकर्षक कार्यक्रम

दयानन्द दर्शन शोध-पत्रक प्रतियोगिता
विभिन्न स्तरों के आर्य विद्यालयों की विभिन्न प्रतियोगितायें
खेलकूद • आसन प्राणायाम • भजन • मन्त्रपाठ • आर्य सिद्धान्तों
तथा ऋषि के जीवन एवं कार्यों पर आधारित प्रश्नोत्तरी • वादविवाद
चित्रकला व सामूहिक गान आदि

इन्द्रराज
प्रधान

राजर्षि रणञ्जयसिंह
स्वागताध्यक्ष

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ १ फोन ४५६६३

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदास आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप मे सब्बरवाल प्रिन्टिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्
आर्य मित्र
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

प्र० सं० व १२४१/८० — घोषणा पत्र सं० ७ / १४-२-८१
वर्ष ८६] मा० भाद्रपद २३, भाद्रपद शुक्ल ११, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक १४ सितम्बर १९८६ [अङ्क ३७

इस अंक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए.

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

प्रभु की अमृत वाणी—

हमारा नष्ट वैभव-स्वर्णिम अतीत फिर लौट आए



परिपूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम् । पुनर्नो नष्टमाजतु ।।

देवता—पूषा (ऋ० ६–५४–१० अ० ७–६–४)

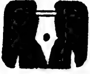
(पूषा) शक्ति पोषक प्रभु (परस्तात) परोक्ष से (दक्षिणम् हस्तम्) अपना दक्ष हस्त [दक्षता से पुष्ट करने वाला आशीर्वाद] (परि दधातु) सर्वत रखे। (न) हमारा (नष्टम्) नाश को प्राप्त हुआ [वैभव, स्वर्णिम अतीत] (पुन आ अजतु) पुन लौट आए, फिर से प्राप्त हो जाए।

ऋषियो की पावन भूमि भारत से परमात्मा की ज्ञान ज्योति प्राप्त कर जब मानवो ने आर्यत्व को धारण किया, वे उठे, आत्म विस्मृति की निद्रा से आत्मना जागरूक हुए और सम्पूर्ण विश्व मे सुख शान्ति की धारा प्रवाहित करने के लिए वे सकर्मा बने। उन्होंने अनार्यत्व का नाश किया। जो शास्त्रो के आधार पर मानव बने उन्हे स्नेह से गले लगाया और जो आसुरी वृत्ति वाले दानव केवल शक्ति की भाषा समझते थे, उन राक्षसों के विरुद्ध शस्त्र उठाए। धर्म सग्रामो मे उन्हें परास्त किया और सम्पूर्ण विश्व मे सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना की। एक भाषा, एक ध्वज, एक विशाल राष्ट्र, एक सस्कृति, एक मानव धर्म, कैसा स्वर्णिम अतीत था हमारा, पर आज वह गौरव शाली वैभव नष्ट हो चुका है। आसुरी और हिंसक वृत्तियो ने मानव को दानव बनाकर विश्व को नरक धाम बना दिया है।

महर्षि दयानन्द विश्व का आर्यकरण कर वैदिक सस्कृति की पुनर्स्थापना करके एक सार्वभौम चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य बनाना चाहते थे। उनके इन मन्तव्यो को कौन पूरा करेगा ? आर्यसमाजो के आर्य, जब वे सगठित होकर अपनी विराट शक्ति का परिचय देंगे और वेदानुकूल आचरण करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह, जो १७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ मे आयोजित किया जा रहा है, वह प्रदेश के समस्त आर्यजनों का परीक्षा काल है। अपने विशाल सगठन और एकरूपता का परिचय देने वाला यह सुअवसर १०० वर्षों के उपरान्त आया है। अपने स्वर्णिम अतीत, गौरवशाली वैभव को पुन प्राप्त करने की शुभाकाक्षाओं को कार्यान्वित रूप देने के लिए, प्रदेश के आर्यो ! आओ और इसमे सम्मिलित होकर, आर्यकरण के विराट यज्ञ मे अपनी आहुति देकर, ऋषि तर्पण करो।

—'वसन्त'



सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार १४ सितम्बर १६८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १६७२६४६०८७

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते

एक मास के उपरान्त उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ मे प्रदेश की शिरोमणि सभा द्वारा जिस विराट शताब्दी समारोह का आयोजन किया गया है, उसमे पचास सहस्र से अधिक आर्य जनो के पधारने की सम्भावना को लेकर उनके आवास, भोजन तथा अन्य सुविधाओ के लिए सभा द्वारा १४ उप समितियो का गठन किया गया है। यह शताब्दी समारोह अपने एक ऐतिहासिक महत्व को लेकर आयोजित किया जा रहा है इस समारोह मे जहा विशाल शोभा यात्रा निकाली जाएगी, वृहद वैदिक यज्ञ तथा विभिन्न सम्मेलन (जिनकी विस्तृत जानकारी आगामी अक मे प्रकाशित की जाएगी) सम्पन्न होगे, वहा अनेक वयोवृद्ध महानुभावो का तथा विद्वानो का अभिनन्दन भी किया जाएगा ताकि जिन्होने महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो को साकार करने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया है, इनके जीवनो से प्रदेश के आर्य जन अनुप्रेरित होकर अपने जीवन की ज्योति को जलाकर, उससे अन्य मानवो के जीवन दीप जलाने मे समर्थ हो सकें।

"आर्या ज्योतिरग्रा" (ऋ० ७।३३।७) के अनुसार ज्योति धारक होते हैं। वे प्रकाश दर्शक होते हैं क्योकि उनके पास प्रभु के दिव्य ज्ञान वेद की ज्योति होती है। आर्य जब उस ज्ञान को कर्म मे उतारते हैं तो वे आचार वान होकर, व्यवहारिक जीवन मे 'सकर्मा' बनते हैं। ऐसे ज्ञानियो के लिए ही वेद ने कहा है—"रक्षाणो ब्रह्मणस्पते" (ऋ० १।१८।३, यजु ३।३०) ज्ञान के स्वामिन! हमारी रक्षा कर। ज्ञान का वह स्वामी ही रक्षण कर सकता है जो आत्मना जागरूक होकर उठे, सजग हो, सावधान हो इसलिए वेद मन्त्राश मे कहा गया— "उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान्यज्ञेन बोध्य" (अ० १६। ६३।१) अर्थात् हे ज्ञान रक्षक! तू उठ और देवो को यज्ञ के द्वारा बोधत्व करा, उन्हे जगा तथा सुझा। दूसरो को वही जगा सकता है जो स्वय जागा हुआ है, जो स्वय सुलझा हुआ नहीं है, वह दूसरो का पथ प्रदर्शन कैसे करेगा? जो स्वय अज्ञानी है वह दूसरो को ज्ञानी नहीं बना सकता। आचार भ्रष्ट किसी को आचार वान नहीं बना सकता। वेद ने इस सत्य का बोध कराने के लिए ही 'यज्ञेन' शब्द का प्रयोग किया है। "यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म" श्रेष्ठतम कर्म ही यज्ञ है। आर्य ज्ञान के माध्यम से अपने जीवन मे उच्च से उच्चतर और उच्चतर से उच्चतम बनते है, फिर दूसरो का आर्य करण करते हैं।

अपने जीवन के निर्माण के लिए जिस आत्मशक्ति की आवश्यकता होती है, उसकी सज्ञा 'वाज्य' है और वाज्य सात्यार्थ प्रभु की वाणी कहती है—

"उत नो वाज सातये पवस्व बृहतीरिषः—।
द्युमबिन्दो सुवीर्यम्" ॥
(ऋ० ९।१२।१८ साम० ११९०)

जीवन मे सूक्ष्मतम चेतन बिन्दु मे जगमगाने के लिए वृहत, महती आकाक्षाओ के क्षरण, प्रवाह से ही सुवीर्य की प्राप्ति होती है। अतएव शताब्दी समारोह के अवसर पर प्रदेश के समस्त आर्यजनो को अपने सगठित स्वरूप का परिचय देना है। जैसे एक गृह मे जब कोई पावन पर्व मनाता है तो परिवार के समस्त सदस्य छोटे मोटे भेद भाव भुला-कर विशाल दृष्टिकोण से काम लेते हैं और जिस प्रकार वाह्य शत्रुओ से निपटने के लिए सब एक जुट होकर उनसे सघर्षरत होते हैं, उसी भाति शताब्दी समारोह मे हमे उस विशाल आकांक्षा को अपने भीतर सजोना है जो हमे अनार्यत्व से सघर्ष करने के लिए वाछनीय है।

आज युग की माग है कि आर्य उठें और आगे बढ़कर अपने यज्ञ को 'स्वाहा यज्ञ कृणोतन' (ऋ १।१३।१२) समर्पण यज्ञ का रूप दें। यदि यह स्वाहाकारी वृत्ति हमारी होगी तो प्रभु या 'अभि यज्ञ गृणीहिनः' (ऋ १।१५।३ य० २६।२१) हमारे यज्ञ को सराहनीय बनाएगा और हम "ब्रह्मणा वावृधस्व" (ऋ० १।३१।१८) के अनुसार पवित्र वेद ज्ञान से स्वय बढ़ सकेंगे और दूसरो को बढा सकेंगे। —'वसन्त'

आर्यसमाज मेरठ शहर में श्री कृष्ण जन्मोत्सव पर्व

दि० २७–८–८६ की रात्रि को आठ बजे से योगी राज श्री कृष्ण चन्द जी का जन्म दिन श्री मनोहरलाल जी सर्राफ प्रधान की अध्यक्षता मे मनाया गया। सयोजक थे श्री इन्द्रराज जी मन्त्री आर्य समाज। भक्ति सगीत के पश्चात श्री वागीश्वर जी शास्त्री ने योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज के विषय मे कहा कि वे सयमी थे। उन पर गोपियो का लाछन लगाना नितान्त गलत है। कृष्ण और सुदामा की भेंट का जिक्र करते हुए उन्होने उन्हे एक अच्छा मित्र भी कहा। ब्र० देवेन्द्र ने गीता के आधार पर बताया कि हमे अराष्ट्रीय शक्तियो के विरुद्ध युद्ध छेड़ना चाहिये और उन्हें जीतना चाहिए यह ही गीता का अमर उपदेश है। श्री मानसिंह जी वर्मा ने महर्षि व्यास को नमन किया क्योकि उनके कारण श्री कृष्ण जी ससार के समक्ष आये। उन्होंने यशोधरा जी को धन्यवाद किया क्योकि योगीराज श्रीयुत कृष्ण चन्द जी को बचाने के लिए अपनी पुत्री का बलिदान कर दिया। उन्होंने गीता के उपदेश की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि व्यक्ति को सदैव निराशा से ऊपर उठकर प्रभु समर्पण करके कार्य क्षेत्र मे उतरना चाहिये। श्री डा० गणेशदत्त जी ने योगीराज कृष्ण जी के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डालते हुए श्री कृष्ण जी की नीति का स्पष्ट उल्लेख किया कि उनका उद्देश्य दुष्कृत लोगो को मारना साधु लोगों के परित्राण तथा धर्म की स्थापना करना था। उसी मार्ग पर हमे भी चलना चाहिये।' शाति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी ने भगवान कृष्ण के सबसे बड़े कार्य को बताया कि उन्होंने ६०० भागो मे बटे हुए टुकडो को मिलाकर एक महान भारत बनाया और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए दुष्टो और आततायियो को मार दिया। श्री सत्य मित्रजी शास्त्री ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए जीवन मे श्रेष्ठता लाने का आग्रह किया। ससार मे व्यक्ति ठीक कार्य करता रहे यह ही उसकी सफलता का कारण बन जाता है। श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने अपने सयोजन मे ही बताया कि भगवान् कृष्ण जी ने बाहर के दुष्ट शत्रुओं के साथ-साथ अन्दर के काम क्रोध आदि शत्रुओं को मारने का उपदेश भी गीता मे किया है। वे योगीराज थे, वीर थे गम्भीर थे, कुशल राज-नीतिज्ञ थे १६ कलह सम्पूर्ण थे कर्म निष्ठा को अपना कर ही उन्होने दुष्टो को मारा था और महान भारत की रचना भी। ५००० हजार वर्षों के बाद भी आज के उनके उपदेश ससार की समस्याओं का समाधान करने वाले हैं। अन्त मे श्री मनोहर लाल जी प्रधान ने सबका धन्यवाद किया। सम्वाददाता

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की स्थापना के १०० वर्ष

[श्री प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश]

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की स्थापना को १०० वर्ष हो गए। हम सभा की शताब्दी मना रहे हैं। इन सौ वर्षों मे हमने परतन्त्रता का समय भी देखा है और स्वतन्त्रता का भी। परतन्त्र भारत मे विदेशी अग्रेज फूट डालो और राज्य करो की नीति पर चलकर अपना आधिपत्य जमाए हुए था। इधर आर्य जाति बुराइयो की दलदल मे फसी हुई थी। यहा पर अन्धविश्वास, रूढिवाद, धार्मिक शोषण, बाल-विवाह, वृद्ध विवाह, बहुदेवतावाद, जातिवाद, परस्पर की फूट, मद्य, मास, बलि, जूआ और गोवध आदि अनेकानेक बुराइया चारो तरफ फैली थीं। इस पर भी बहुत बडा अभिशाप अग्रेजो की परतन्त्रता का था। हम भारतवासी लोग भाग्यवादी बन गए थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति की बात हमारे मस्तिष्क मे उठती ही नहीं थी। अग्रेज बहुत चतुर था उसने भाडे के टट्टुओ तथाकथित ज्योतिषियो को भाग्यवाद के प्रचार मे लगा दिया था। हर भारतवासी यह सोचकर रह जाता था कि हमारे भाग्य मे तो परतन्त्रता लिखी है। हम स्वतन्त्र हो ही नहीं सकते।

ऐसे निराशा और अन्धकार के समय मे करुणा वरुणालय भगवान् ने एक पतले-दुबले नेत्रहीन सन्यासी विरजानन्द को एक योग्य शिष्य स्वामी दयानन्द दे दिया। स्वामी विरजानन्द जी यद्यपि नेत्रहीन थे परन्तु वे प्रज्ञाचक्षु थे। उनके अन्दर के नेत्र खुले थे। वे अष्टाध्यायी, महाभाष्य और आर्ष ग्रन्थो के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उन्होने कई विद्यार्थियो को शिक्षा दी परन्तु जिस प्रकार का शिष्य वे चाहते थे उन्हें नहीं मिला। यह तो प्रभु की अपार कृपा हुई कि स्वामी दयानन्द जी सच्चे गुरु की तलाश मे ढूढते-ढूढते मथुरा मे गुरु विरजानन्द जी की कुटिया पर पहुचे। द्वार खटखटाया। सच्चे गुरू को सच्चा शिष्य मिल गया। और गुरु ने अपना खजाना शिष्य को उडेल दिया। गुरू से विद्या प्राप्त करने के पश्चात् गुरू से विदा लेने का ऐसा मार्मिक दृश्य था जिसने भारत मे ही नहीं अपितु ससार मे क्रांति पैदा कर दी। सन्यासी दयानन्द कुछ लौंग भेंट करके गुरू से विदा लेना चाहता था। गुरू ने लौंग स्वीकार नही किए और कहा—'प्रिय दयानन्द ससार मे बहुत अन्धकार फैला हुआ है। ससार को सुख, शान्ति और आनन्द का सन्देश देने वाला गौरवमय भारत भी विदेशियो से पादाक्रान्त हो रहा है। परतन्त्रता की बेडियो मे जकडी भारत माता चीत्कार कर रही है। मुझे तुम्हारे लौंग नहीं चाहिये, तुम्हारा जीवन चाहिए। दयानन्द ने गुरू के सामने आत्म समर्पण कर दिया। और गुरू का आशीर्वाद लेकर प्रचार के क्षेत्र मे निकल पडे। एक नवयुवक कोपीन धारण किये, ब्रह्मचर्य और सयम के तप से युक्त, वेद और आर्ष ग्रन्थो का कोष अपने साथ लेकर सारे ससार को वैदिक धर्म का पीयूष पिलाने के लिए स्वार्थी और अन्धविश्वासी ससार मे कूद गया। कहीं ईटे, कहीं पत्थर, कहीं गालिया और कहीं विषपान करने को मिला, परन्तु परम आस्तिक दयानन्द अकेला ही सर्वशक्तिमान् भगवान का सहारा लेकर सब बुराइयो के विरुद्ध लडता रहा। उसका उद्देश्य था—भारत स्वतन्त्र हो और एक बार पुन वैदिक धर्म की पताका ससार मे फैले।

सन् १८५७ की वह क्रांति जो मेरठ से प्रारम्भ हुई। एक सैनिक मगल पाडे के मन मे कम्बूक मे गोमास के प्रसग ने, एक कौतूहल पैदा कर दिया। सर्वप्रथम अग्रेज के आदेश की उसने अवज्ञा की। और फिर एक क्रान्ति की लहर चारो तरफ फैली। स्वामी दयानन्द जी अग्रेजो को उखाड बाहर फेंकने मे सलग्न हो गए। बराबर ३ वर्ष वे भूमिगत रहे। परन्तु क्रूर अग्रेज अपने सैनिक बल से उसको दबाने मे सफल हो गया और राष्ट्र भक्तो को गोलिया और फांसी लगने लगी। मेरठ मे खूनी पुल इसकी गवाहिया दे रहा है।

पुन स्वामी जी ने अपना कार्य जोरशोर से प्रारम्भ किया। वे भारतवासियो को जगाना चाहते थे। रजवाडे जो पृथक्-पृथक् अपने छोटे-छोटे राज्यो को लेकर लगभग ५०० रियासतो मे बटे हुये थे उन को एक करके भारत स्वतन्त्र करवाना चाहते थे। इसको पुराना गौरव दिलाना चाहते थे। वेद के प्रचार को घर-घर और झोपडो-झोपडी तक पहुचाना चाहते थे। सतत निरन्तर अहर्निश इस कार्य मे लगे रहने के परिणाम स्वरूप लोगो मे कुछ चेतना आई और स्वामी जी की प्रेरणा से १८७५ मे बम्बई मे प्रथम आर्यसमाज की स्थापना हुई। एक अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी गई। और विधर्मियो और विदेशियो ने सोचा कि यह अग्नि अब सारे ससार के अन्धविश्वास को जलाकर भस्मीभूत कर देगी। वेद ज्ञान का सूर्य अब निराशा और अन्धविश्वास की काली-काली घटाओ से निकल कर चमकेगा और ससार का अज्ञान दूर हो जाएगा। भारत स्वतन्त्र हो जाएगा। इस सबकी कल्पना करके अग्रेजो ने एक षड्यन्त्र रचा और स्वामी दयानन्द जी उसके शिकार हो गए। वे वैदिक धर्म पर बलिदान हो गए। पापी जगन्नाथ ने उनको विष देकर ससार का बहुत बडा अहित कर दिया। पुनरपि आर्यसमाज की स्थापना से स्वामी जी महाराज ने वेद के आधार पर अन्धविश्वास, रूढिवाद, नास्तिकता, धार्मिक शोषण, मद्य, मांस, बलि, गोहत्या, भाग्यवाद, बाल-विवाह, वृद्ध विवाह और स्त्री और शूद्र को वेदो के ज्ञान और विद्या से दूर रखने आदि अनेको बुराइयो पर करारी चोट की। एक लहर प्रकाश की चारों तरफ फैली और भारतवासी कुछ जागृत हुए। बलिदानो का ताता धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्रो मे प्रारम्भ हुआ। वह अमर बलिदानी दयानन्द विषपान करके अमृतदान कर गया और १९४७ मे महात्मा गाधी जी के नेतृत्व मे भारत स्वतन्त्र हुआ। जो स्वतन्त्रता की और सुधार की लहर स्वामी दयानन्द जी ने चलाई थी उसी लहर का सम्बल लेकर महात्मा गाधी जी के नेतृत्व मे भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई।

स्वतन्त्र होने पर भारत ने सुख की सास ली। काग्रेस के नेतृत्व मे कार्य प्रारम्भ हुआ परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व भारत के टुकडे हो गए। पाकिस्तान का निर्माण हुआ। दोनो तरफ खून की नदिया बहीं। निर्दोष लोग मारे गए। नारियो का सतीत्वहरण हुआ। बडा कड़वा वह इतिहास का पृष्ट है जिसे पढ़-सुनकर रोगटे खड़े हो जाते हैं। इस मार काट का प्रभाव या यूं कहिए पाकिस्तान बनने का सबसे बडा दुष्प्रभाव आर्य समाज पर पडा। अरबो रुपये की सम्पत्ति पाकिस्तान मे रह गई और आर्य समाज का काय वहा सबसे अधिक था, वह सब समाप्त हो गया।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश की स्थापना के १०० वर्ष

[शेष पृष्ठ ३ आगे]

प० जवाहर लाल जो नेहरू भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री बनें। महात्मा गाधी जी का उन्हे स्पर्श था। वे भारत को बहुत ऊचा ले जाना चाहते थे। किसी भी देश की दरिद्रता तब दूर होती है जब हर खेत को पानी मिले और हर हाथ को काम। इस रहस्य को समझते हुए महात्मा गाधी जी ने देश की दरिद्रता को दूर करने के लिए लघु उद्योग का मार्ग दिखाया। स्वय वे चर्खा कातते थे। उन्होने अपने से ही लघु उद्योग का प्रारम्भ किया। परन्तु प जवाहर लाल नेहरू देश को बडे देशो की श्रेणी मे खडा करने के उद्देश्य से भारी उद्योग की तरफ आकर्षित हुए। देश को उनका नेतृत्व मिला। उद्योगीकरण प्रारम्भ हुआ। भावना देश को ऊचा उठाने की थीं। पचवर्षीय योजनाओ का प्रारम्भ हुआ। परन्तु किसी भी योजना मे शिक्षा और चरित्र पर कुछ भी नहीं किया गया। कोई भी देश इन दोनो के बिना नहीं चल सकता। इधर आर्य समाज ने गुरुकुलो, कन्या गुरुकुलो, डी० ए० वी० कालेजो और कन्या पाठशालाओ के माध्यम से शिक्षा और स्त्री शिक्षा या धर्म शिक्षा के आधार पर बच्चो मे चरित्र को ऊचा उठाने का बहुत प्रयत्न किया।

उद्योगीकरण अर्थात् विज्ञान जहा समृद्धि फैलाता है वहा उसके बडे अनिवार्य दुर्गण भी हैं उद्योग के विकास से बडा भारी वायु प्रदूषण होता है। चलचित्र एव टी० वी० के विकास के साथ-साथ चरित्र हनन का बडा भारी दोष उत्पन्न हो रहा है। पचवर्षीय योजनाओ मे चरित्र की कोई बात नहीं है।

आर्य समाज ने प्रारम्भ से ही यज्ञ को पकडा हुआ है। स्वामी दया-नन्द जी इस रहस्य को जानते थे। उन्होने नैत्यिक कर्म कान्ड मे ब्रह्म यज्ञ (सन्ध्या) और देव यज्ञ (हवन) को प्रमुख स्थान दिया। आर्य जन यज्ञ मे विश्वास रखते हैं और यज्ञो का प्रचार करते हैं। इस यज्ञ के द्वारा ही आज के ससार की तीन बडी समस्याए—वायु प्रदूषण-जल प्रदूषण और शब्द प्रदूषण दूर होती है। स्वय उद्योगी करण के विकास के लिए और भारत की दरिद्रता को दूर करने के लिए उस समय स्वामी दयानन्द जी ने श्याम जी कृष्ण वर्मा को कुछ होनहार योग्य भारतीय युवको को उद्योग सीखने के लिए जर्मनी भेजने की बात लिखी थी जब कि कोई भी भारतीय नेता अथवा साधु इस बात को स्वप्न मे भी नही सोच सकता था।

भारत वष का भौतिकवादी युग प्रारम्भ हुआ। चरित्र, धर्म और ईश्वर को एक तरफ रख कर धर्मनिर्पेक्ष राज्य की घोषणा हुई। भारत ने अपने पाव पर चलना प्रारम्भ किया। सडको, रेलो, पुलो, नहरो और बान्धों का निर्माण हुआ आज भारत स्मृद्धि की ओर अग्रसर हैं। परन्तु चरित्र का विकास नहीं किया गया और शिक्षा मे परिवर्तन नहीं किया गया। परिणाम स्वरूप विकासके होने पर भी आज घुटन है। स्वतन्त्रता वह नहीं रह गई है जिसकी हमे कल्पना थी। आज भ्रष्टाचार का बोल-बाला है। शिक्षा, राजतन्त्र, उद्योगीकरण का क्षेत्र, सेना के विभाग मे सर्वत्र भ्रष्टाचार व्याप्त है। ऐसा लगता है कि जिसके लिए सडकें, रेल, वायुयान, एव अन्यान्य विज्ञान के साधन प्रस्तुत किये गये हैं स्यात् वह व्यक्ति चरित्र के न होने से उन सडको पर चल नहीं सकेगा। रेल मे सफर नहीं कर सकेगा। नहरो से लाभ नहीं उठा सकेगा। विज्ञान से लाभान्वित नहीं हो सकेगा। कैसी है यह स्वतन्त्रता। जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा है हम आतकवाद, उग्रवाद के शिकार हो रहे हैं। आज भारत का पूर्वांचल प्रदेश हमारे वश मे नहीं है। गोरखे अपने लिए स्थान चाहते हैं। झारखण्ड पार्टी अपने स्थान की माग करती है। असम मे अशाति है। उत्तर प्रदेश के अन्दर-अन्दर लघु पाकिस्तान को बनाने की माग है। पजाब जल रहा है। माननीय प्रधान मन्त्री से लेकर साधारण व्यक्ति तक कोई भी सुरक्षित नहीं है। कोई पाकिस्तान मांग रहा है तो कोई खालिस्तान। आज देश की एकता, अखण्डता और प्रभुसत्ता को ही खतरा पैदा हो गया है। जिस स्वतन्त्रता को बडे बलिदान देकर, बडा रक्त बहाकर, विदेशो मे सुभाष बाबू द्वारा सेना खडी करके और सघर्ष करके हमने प्राप्त किया था। वह स्वतन्त्रता ही खतरे मे पडती दिखाई दे रही है।

इन ४० वर्षों मे, शिक्षा बढ़ी है परन्तु उद्देश्य लुप्त हुआ है, उद्योगी-करण से लाभ प्राप्त हो रहे हैं। एक दिशा मे हम चले हैं परन्तु लाटरी सिस्टम से जूए की तरफ भी बढे हैं। उद्देश्य हीन शिक्षा ने हमे चोरी, डकैती, शराब, जूआ और बलात्कार की ओर बढाया है। फिल्म इन्डस्ट्री ने हमे चरित्र मे खोखला कर दिया है। जिस सयम की बात स्वामी दयानन्द जी और महात्मा गाधी जी कहते थे उस सयम और ब्रह्मचर्य को आज चलचित्र जगत् ने उडा दिया है। आज बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह का स्थान दहेज पर होने वाली हत्याओ और आत्म-हत्याओ ने ले लिया है। धर्म मे अन्धविश्वास इतना बढ़ा है कि आज एक सौ से ऊपर तो स्वयम्भू भगवान् हैं जिनकी गाथा हम भगवान् रजनीश और महेश योगी के रूप मे नित्य प्रति समाचार पत्रो मे पढते हैं।

इन सब विषम परिस्थितियो मे भारत और ससार आर्य समाज की ओर ही देख रहा है। आर्य समाज से लोगो को बडी आशाए हैं। क्या हम जनता के विश्वास के साथ द्रोह करेंगे। जनता के विश्वास का पात्र हमे बनना है। उसके लिए प्रयत्न करना है।

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लगभग दो हजार आर्य समाजो, सैकडो शिक्षण सस्थाओ और अनेको अनाथालयो और विधवा आश्रमो को साथ लेकर अपने १०० वर्ष समाप्त कर रहा है। इन १०० वर्षों मे सभा नें बहुत काम किया है। हमारा प्रदेश तो ससार के कई देशो से बडा है। इस दृष्टि से कितना बडा द यित्व सभा के ऊपर है। मुझसे पूर्व बहुत बडे-बडे मनीषियो ने प्रधान और मन्त्री रह कर अपने तप—त्याग—योग्यता—क्षमता और प्रभाव से इसके कार्य को आगे बढ़ाया है। आज यह उत्तर दायित्व हम सबके कन्धो पर है।

आज ससार का मानव समाज २१ वी शताब्दी मे प्रवेश करने को है। केवल भारत म ही नहीं अपितु सारे ससार मे कम्प्यूटर सिस्टम फैल रहा है। इस भौतिकवादी नई तकनीक को भी एक ऐसे धम की आवश्यकता है जिस पर भौतिकवादी सिद्धात भी खरे उतरते हो। जो आधुनिक विज्ञान के अनुकूल हो और मानव जाति को सुरक्षा के लिये सच्चे आध्यात्म की ओर ले जाने वाला हो। कम्प्यूटर के इस युग मे वैज्ञानिको ने मिल बैठकर ऐसे धर्म की चर्चा की है और आर्य जनो का यह सौभाग्य है कि उन वैज्ञानिकोने वैदिक धर्म को ही इस योग्य समझा है कि इस वैदिक धर्म को साथ लेकर ससार की सम्यक उन्नति हो सकती है।

२१ वीं शताब्दीमे हमने प्रवेश करना है। कैसे इनसान उसमे प्रवेश करे यह उत्तरदायित्व इस समय आर्यसमाज का है। आगे आने वाले १४ वर्षों मे हम सब एकजुट होकर छोटे-मोटे मतभेदो को भुलाकर मानव निर्माण का कार्य करें। इस समय अपने देश मे विकटतम परिस्थिति है इसका मुकाबला भी आर्यसमाज ही करेगा।

आईए ! इस शताब्दी के अवसर पर हम अपने सगठन को मजबूत करें और चुनौतियो का सामना करने का सकल्प लें और वैदिक धर्म के साथ २१ वीं शताब्दी मे अच्छे मनुष्य को भेजें, जो वहां पर भी वेद के अनुसार 'मनुर्भव' के स्वर को गुंजाए और प्रकृति माता की विज्ञान के द्वारा दिए हुये समस्त वरदानों को अध्यात्म द्वारा स्वीकार कर इस धरतीमाता को स्वर्ग बना दें।

देश की वर्तमान परिस्थितियो पर एक विचारपूर्ण विवेचन–

देश स्वातंत्र्य, राष्ट्रीयता और नए संकट

(गताङ्क से आगे)

यह तो अभी ताजी ही घटना है–२५ जुलाई को उग्रवादियो ने प्रात काल मुक्तसर से चण्डीगढ़ जा रही बस का अपहरण किया, और पन्द्रह किलोमीटर दूर मौजा लवानिया वाली के पास ले जाकर १४ बसयात्रियो को गोलियो से उडा दिया। इस काण्ड के खूनी पकडे नहीं गए। जनता को गुमराह करने वाले एक समाचार मे (जिसे डाइरेक्टर जनरल आव् पुलिस रिबेरो ने दिया है) यह कहा गया है, कि इन हत्यारो की पहिचान करली गयी , और वे शीघ्र पकडे जाने वाले हैं। यह समाचार २५ जुलाई का है। १२ अगस्त को मै यह लिख रहा हू–मालूम नही पकडे जा सकेंगे या नहीं, क्योकि हत्यारो को सरक्षण प्राप्त है।

सिक्खों का वर्तमान दृष्टिकोण

एक ओर तो बरनाला की सरकार से हम काम कराना चाहते हैं, जो सिखो के वर्चस्व मे है, और देश या राष्ट्र की अपेक्षा उसको आत्मीयता सिक्खों के साथ अधिक है। दूसरी ओर आतङ्कवादी युवक पजाब के मुख्य मन्त्री का विरोध कर रहे हैं, क्योकि वे स्वर्ण मन्दिर की प्रतिष्ठा और मर्यादा को अक्षुण्ण नहीं रख सके। जूते साफ करने का प्रायश्चित्त भी वह कर चुके हैं। ३० जुलाई के समाचार के अनुसार दिल्ली के बगला साहेब गुरुद्वारे मे जो अ० भा० सिख छात्र सघ का अधिवेशन हुआ, उसने बरनाला सरकार का विरोध किया, और लोगोवाल राजीव समझौते को स्वीकार नहीं किया। इस अधिवेशन के अध्यक्ष मण्डल के एक सदस्य ने स्पष्ट कहा कि सिख हिन्दू नहीं हैं। सिक्ख एक अलग कौम है, और इसका हिन्दुओ से भी उतना ही सम्बन्ध है, जितना ईसाई और मुसलमानो या पारसियो से।

विघटन के बादल

अभी थोडे दिन हुए–रामकृष्ण मिशन के जिम्मेदार व्यक्तियो ने यह स्पष्ट कहा कि उनका मिशन हिन्दू मिशन नहीं है। स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि मे राम, कृष्ण, बुद्ध और ईसा एक समान ही महत्त्व था। राम कृष्ण मिशन का कार्य क्षेत्र हिन्दुओ तक सीमित नहीं है। इनके मिशन का काम ईसाइयों को जनसख्या के लिए हिदू बनाना नहीं है। यही स्थिति आर्यसमाज की है, जो सब सम्प्रदायो की रूढ़ियो और अन्धविश्वासो का एक सा ही विरोधी है, और जिसका कार्यक्षेत्र विश्व के सब देश हैं।

दुर्भाग्य की बात है कि आज हमारा देश विघटन के कगार पर है। नदी की प्रचण्ड रुद्र लहरो ने तट को काट-काट कर गिराना प्रारम्भ कर दिया है।

महावाक्य जिन्होंने हमे भुलावे मे रक्खा

अग्रेजो ने हमे नारा दिया था–जिसे हम प्रारम्भिक कक्षाओ मे भूगोल मे भी पढ़ते थे–

भारत देश नहीं–देशो से भी बडा उपमहाद्वीप है।

हमारा स्वाभिमान बढ़ा और हम फूलकर कुप्पा हो गये।

भारत अनेक शासनो, अनेक स्वतन्त्र इकाइयो का सघ है, यह गणराज्य है।

इस कल्पना ने हमे रूस और अमेरिका के समकक्ष खडा कर दिया–मानो किसी ने हमे उठाकर देवताओ की श्रेणी मे रख दिया हो। हमने गौरव समझा। देश में हमारे जो चुनाव हुए, उसके भावावेश मे प्रधान मन्त्री जवाहरलाल के ये शब्द थे–और हमने सिद्ध किया–या सार्थकता दी इस नारे को–एक आदमी–एक वोट।

– स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती –

प्रथम निर्वाचन मे पडित मोतीलाल नेहरू के भगी या मेहतर ने प्रयाग के लिबरल दल के दिग्गजो को हरा दिया। जिसका अभिप्राय शासक व्यक्ति नहीं है–राजनीतिक दल है–पार्टी के नाम पर व्यक्तित्व की योजना तर्क और बुद्धिमता की बलि।

राजीव के शासन मे पार्टी को मुस्लिम अधिनियम के सम्बन्ध मे मतदान के लिए बाधित किया गया–

अनुशासन के नाम पर पार्टी के महामानवो का निष्कासन हमारी मूलभूत समस्याओ का यह छोटा सा चित्रण है। राष्ट्रीयता की समस्या इतनी उलझ गयी है कि मरहम पट्टी से काम न चलेगा बीमारी भयकर है। हमे चाहिये काया कल्प।

o o o

भारत का संविधान और रिपब्लिक की कल्पना

१९४७ मे भारत स्वतन्त्र हुआ देश का नाम क्या हो, इस पर हलका सा विवाद प्रारम्भ हुआ। अग्रेजो के शासन की चरमावस्था पर हमारा देश ब्रिटिश साम्राज्य का अङ्ग था–इण्डिया, बर्मा और सीलोन भारत के गवर्नर जनरल (या वायसराय) के अधीन थे। द्वितीय महायुद्ध मे अनेक देशो के सयुक्त प्रयासके कारण जर्मनी और उसके मित्रराष्ट्रो की पराजय हुई। विजय मे सहयोग रूस अमेरिका इग्लंण्ड और फ्रास राष्ट्रो का था। अत यह निश्चय हुआ, कि युद्ध की सफल समाप्ति के बाद साम्राज्यवाद समाप्त कर दिया जाय। फलत ब्रिटिश साम्राज्य समाप्त हुआ, और उसको छोटे-छोटे टुकडो मे बाट दिया गया–बर्मा अलग हुआ सीलोन अलग हुआ। ब्रिटेन का निश्चय था कि जब तक पाकिस्तान भी अलग हो, भारत को स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती। पाकिस्तान के भी दूर-दूर बसे हुए दो ऐसे अग थे, जो अधिक काल तक सयुक्त नहीं रह सकते थे–पूर्व का बगलादेश, और पश्चिम का पाकिस्तान पाकिस्तान और हिन्दुस्तान(भारत)के पार्थक्य का दोष न गांधी पर है, न जिन्ना पर इसका कांग्रेस के विरुद्ध मुसलमानो को अग्रेजो द्वारा बरगलाया जाना था अलग बिना अग्रेज भारत को छोडने को तैयार हो होनहीं सकते थे। द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के लिए पहले पूर्वी अमेरिका एक अग्रेज शासक के अधीन था। साम्राज्यवाद की समाप्ति के लिए यह आवश्यक हुआ कि इसके टुकडे करके तीन देश बना दिये जायें–केन्या, उगाण्डा तजानिया। जब पूर्वी अफ्रीका साम्राज्य टूक-टूक कर तोड दिया गया, तब उस देश के नीग्रो स्वतन्त्र हुए और केन्याटा नेयेरो तथा एबोटे इनके प्रथम शासक बने।

भारत के भी टुकडे हुए तब भारत को स्वतन्त्रता मिली। भूलना नहीं चाहिये कि बिना खण्डित हुए, स्वतन्त्रता मिलती ही नहीं। क्योकि अग्रेज उसके लिए किसी हालत मे तैयार नहीं थे।

खण्ड-खण्ड कर देने की विश्वव्यापी नीति ने जर्मनी के भी सदा के लिए दो खण्ड कर दिये गये–रूसी प्रभाव मे रहने वाला पूर्वी जर्मनी और अमरीका के प्रभाव मे रहने वाला पश्चिमी जर्मनी। (क्रमशः)

श्री कृष्ण जी के जीवन चरित्र पर एक दृष्टि

[आचार्य प० धर्मानन्द शास्त्री हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश]

विश्व विख्यात, नीतित्रय के सफल प्रणेता महात्मा भर्तृहरि ने अपनी 'नीति शतकम्' मे एक यथार्थ सत्य को इस प्रकार श्लोक बद्ध किया—

परिवर्तीन ससारे मृत को वा न जायते ।
स जातो येन जातेन याति वश समुन्नतिम् ॥
—नी० श० २५

अर्थात् परिवर्तनशील ससार मे किस का जन्म और किसका मरण नहीं हुआ ? पर लोक मे उसी का जन्म लेना सार्थक है जिसके जन्म से वश को वृद्धि होती है ।

तात्पर्य यह है कि इस विश्व मे प्रत्येक प्राणि जन्म लेता और मरता रहता है । इस प्रकार जन्ममरण सबके लिये अनिवार्य है । किन्तु कुछ लोगो के जन्म और मृत्यु से ससार, समाज का महान् कल्याण होता है । ऐसे महानुभाव अपने कुल के यश के साथ-साथ मानव जाति के उद्धारक तथा रक्षक होते है । इस प्रकार के महान् व्यक्तियो मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगिराज कृष्ण, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, महात्मा ईशा, हजरत मुहम्मद, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी आदि लिये जा सकते हैं ।

विश्व के सभी महापुरुष अपने समकालिक परिस्थितियो से किसी न किसी रूप मे प्रभावित होकर देश, जाति, धर्म एव समाज की रक्षा और उन्नति के लिये तत्पर हुए हैं । किसी ने अपने जीवन को आदर्शमय पथ पर चलाते हुए अन्यायी अत्याचारी, दुराचारी, हिंसक और क्रूर राक्षसो को दण्ड देकर प्राणियो के भार से पृथिवी को हल्का किया । प्रजापीडक, अभिमानी, धर्मद्रोही, उदण्ड शासको का मानमर्दन करने के लिये आजीवन सघर्ष करते रहे हैं । अन्य कई आध्यात्मिक गुरु के रूप मे आकर सासारिक मायामोह से आक्रान्त अशान्तमय मानव जीवन को शाश्वत शान्ति प्रदान करने मे अपने अमूल्य जीवन समर्पित किये हैं । कुछ लोग अज्ञान से मार्गभ्रष्ट मानव समाज को नवीन मत खडा करके तात्कालिक उपशांति देने मे कृतकृत्य हुये है । कुछ महानुभाव सामाजिक कुरीतियो, अन्धविश्वासो तथा कदाचारो मे लिप्त जनता को उन्नत विचार और शुद्ध सामाजिक जीवन के लिए मनुष्य जाति को प्रेरित करते रहे हैं । और कुछ महापुरुष सदियो से विदेशियों के पादाक्रान्त दीन-हीन देश को जनता को स्वतन्त्रता दिलाने मे अपने को बलिवेदी पर चढा गये हैं । विश्व इतिहास के पन्नो को खोल के देखा जाय तो विदित होगा कि सभी देशो तथा कालो के महान विभूतियो ने किसी न किसी रूप मे पीडित प्राणियो की भलाई मे अपने तन, मन तथा धन को निछावर कर दिया है । यही कारण है, शताब्दियां बीतने पर भी जनता उन पुण्य पुरुषो को बडे आदर के साथ स्मरण करती रहती है । अस्तु ।

किन्तु ससार की यह एक विडम्बना है कि उन माननीय पुरुषो के अज्ञानी, स्वार्थी, अन्धविश्वासी, अतिश्रद्धालु अनुयायियो ने उनके यथार्थ जीवन एव कार्यों को मिथ्या कल्पनाओ से विकृत करते आ रहे हैं । महा पुरुषो के प्रेरणाजनक जीवन के घटनाओ को अलौकिक दैवी शक्तियो, असत्य कथाओ, असबद्ध चमत्कारो तथा कार्यों को आरोपित करके उनके पवित्र जीवन को कलकित और महत्वहीन बनाते आ रहे हैं । इससे मानव जाति तथा विश्व की महती हानि हुयी है । किसी भी महात्मा का निष्कलक, परम पवित्र, आदर्शमय उज्जवल जीवन ही भावी पीढी का उत्प्रेरक एव सन्मार्ग दर्शक होता है । इस सन्दर्भ मे द्वापर युग के महान कूटनीतिज्ञ, अद्वितीय योद्धा, अतुल बलशाली, अनुपम शूर-वीर, प्रतिभावान, महान तत्ववेत्ता, वाग्मी, विनम्र और व्यवहार कुशल भगवान श्रीकृष्ण का जीवन चर्चनीय है । भारतीयो मे आज श्रीकृष्ण के विषय मे दो प्रकार की धारणायें अति प्रचलित हैं । एक धारणा के अनुसार महात्मा कृष्ण साक्षात् ईश्वर का अवतार है । और दूसरी धारणा है कि श्रीकृष्ण गोकुलीय गोपाँगनाओ के साथ रासलीला करने वाला, नवनीत चोर एव गोपिकाओ के चीर हरण ले जाने वाला है । यद्यपि उपर्युक्त दोनो धारणायें परस्पर विरोधी हैं। पर भारतीयो ने कृष्ण के उपर्युक्त दोनो रूपो को अपने मे जीर्ण कर लिया है ।

अब हम कृष्ण के दोनो रूपो के औचित्य पर विचार उपस्थित करेंगे । सस्कृत साहित्य मे श्री कृष्ण चरित्र से सम्बन्धित व्यासकृत महाभारत, अष्टादश पुराण और अन्य कुछ ग्रन्थ हैं । और हिन्दी मे सूरसागर जयदेव कृत सुखसागर आदि हैं । देवकीनन्दन श्रीकृष्ण के अवतार तथा रासलीला का रूप महाभारत को छोडकर शेष ग्रन्थो मे विशेष वर्णित हैं । वस्तुत पुराण आदि ग्रथो मे श्रीकृष्ण चरित्र का जो स्वरूप चित्रित किया गया है, वह अप्रमाणिक, असत्य और मनगढन्त है । कृष्ण का एक तीसरा यथार्थ रूप महर्षि व्यास रचित महाभारत मे उपलब्ध होता है । यह सर्वविदित है कि कृष्ण चरित्र का मुख्य आधार महाभारत ही है । महाभारत मे श्रीकृष्ण का वर्णन अत्युत्तम है । वहाँ कृष्ण का महनीय व्यक्तित्व, उदात्त विचार वाला, उत्कृष्ट चरित्रवान, योगीराज, अधर्मनाशक और धर्म की स्थापना करने वाला, आदर्श पुरुष और लोकप्रिय नेता के रूप मे वर्णन हैं । महाभारत के आन्तरगिक परीक्षण से यह सिद्ध नहीं होता है कि श्री कृष्ण साक्षात्य परमात्मा का अवतार थे, न इस बात के प्रमाण ही मिलते हैं कृष्ण गोपिकाओ का चीर हरण करने वाला और उनसे व्यभिचार करने वाला था । योगीराज कृष्ण को ईश्वर का अवतार या गोपिवल्लभ का स्वरूप महाभारत के परवर्ती पुराणो का देन है । पुराण कृष्ण चरित्र के विषय मे प्रामाणिक नहीं हो सकते । क्योंकि पुराण कृष्ण जन्म के बहुत पीछे बने हैं । यह बात भी सही नहीं है कि पुराणो की रचना महर्षि व्यास ने की है । यदि पुराण व्यास कृत होते तो उनमे पूर्वापर असबद्ध काल्पनिक कथायें नहीं होती, न उनमे महापुरुषो के अपमान जनक प्रसग ही होते और ना ही सम्प्रदाय परक चर्चायें ही हो सकती है । हमारे इस पक्ष मे अनेको प्रमाण पुराणो से उपस्थित कर सकते हैं ।

हमने ऊपर उल्लेख किया है कि अपने पूर्वजो के श्रेष्ठ गुणो और उत्तम कार्यों मे भावी सन्तति के लोग प्रेरणा पाते हैं । उत्तम पुरुषो का आदर्शमय जीवन सामान्य व्यक्ति को उन्नति के शिखर पर पहुचाने मे महान् सहायक सिद्ध होता है । अनेक सन्दर्भो मे महापुरुषो की स्फूर्ति दायक जीवन घटनायें सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवनधारा मे एक नवीन चेतना का सचार कर देते हैं । पर इसके लिये इस बात को बडी आवश्यकता है कि जनमानस पर महापुरुषो के जीवन का सही चित्र अकित हो । किसी भी महानतम व्यक्ति के साथ अतिशयोक्तियो, अलकारो, असम्भव चमत्कारों और अलौकिक शक्तियो का सम्बन्ध जुड जाने पर सामान्य जनता को उनसे कोई विशेष शिक्षा नहीं मिल सकती है । ऐसी स्थिति मे महान आत्माओ का जीवन मानवातीत दैवी शक्ति के रूप मे रह जाता है यही कारण है, जनता सत्पुरुषो के गुणो एव कार्यों को अनुसरण करने के बजाय उनकी मूर्तियो के पूजन से ही मनोकामना की पूर्ति होना और पाप से मुक्त होने की भावना करती है । (क्रमशः)

विज्ञप्ति

प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष एव अन्य विशिष्ट लोगो की दिनाक ४–९–८६ को एक विशेष बैठक मे शताब्दी समारोह को सफल बनाने हेतु निम्नलिखित निर्णय लिये गये–

१–'आर्यमित्र' के सम्पादन के लिए सभा मन्त्री के अतिरिक्त श्री विक्रमादित्य 'वसन्त', श्री रमेशचन्द्र अवस्थी, श्री वेदव्रत अवस्थी का सम्पादक मण्डल गठित किया गया।

२–समारोह की सफलतार्थ निम्नलिखित उपसमितियो का गठन किया गया।

(१) धन सग्रह समिति, ( ) शोभा यात्रा समिति, (३) कार्यकर्त्ता व्यवस्था समिति, (४) पडाल समिति, (५) ऋषि लंगर समिति, (६) आवास समिति, (७) प्रचार समिति, (८) सुरक्षा समिति, (९) सफाई समिति, (१०) यज्ञ समिति, (११) यातायात समिति, (१२) निरीक्षण समिति, (१३) चिकित्सा समिति, (१४) अभिनन्दन समिति।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

शताब्दी समारोह सम्बन्धी आर्य वीर दल की आवश्यक सूचनाए

सूचना (१)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिमोत्तर प्रदेश के समस्त अधिकारियो को सूचित किया जाता है कि आचार्य धर्मपाल गुरुकुल ततारपुर महा विद्यालय (गाजियाबाद) को बरेली, मुरादाबाद, मेरठ व आगरा कमिश्नरियो के सगठन हेतु सहायक प्रान्तीय सचालक के पद की नियुक्ति प्रान्तीय सचालक डा० बालकृष्ण जी ने मई ८६ से कर दी है कृपया उनसे सम्पर्क करने का कष्ट करें।

वेद प्रकाश गुप्ता
मन्त्री पश्चिमोत्तर प्रदेशीय
सार्वदेशिक आर्य वीर दल विन्दका

सूचना (२)

पश्चिमोत्तर प्रदेश आर्य वीर दल के समस्त अधिकारी कार्यकर्त्ता व आर्य वीरो को सूचित किया जाता है कि डा० बालकृष्ण आर्य प्रान्तीय सचालक के आदेशानुसार १००० हजार आय वीर गणवेश (खाकी नेकर सफेद कमीज) मे १५ अक्टूबर से २० अक्टूबर तक आर्य प्रति निधि सभा की होने वाली शताब्दी समारोह के अवसर पर सेवा व सुरक्षा हेतु लखनऊ पहुचें।

ध्यान रहे अजमेर, उदयपुर, मथुरा के समारोहो मे आपके प्रशसनीय कार्यों की सारे आर्यजगत् मे चर्चा है। अब अपने प्रदेश मे भी कार्य करने का शुभ अवसर आया है अत सगठन व अनुशासन के प्रदर्शन को ध्यान मे रखते हुए अधिक से अधिक सख्या मे कार्यक्रम उक्त तारीखो का बनाकर श्री जयनारायण आर्य सयोजक शताब्दी शिविर (सराय ग्वाली जयगज अलीगढ़) पहुचने वाले आर्य वीरो की सूची शीघ्र भेज दें। आवास, भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था रहेगी।

वेद प्रकाश गुप्ता
प्रान्तीय मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल उत्तरप्रदेश

महाना जी को पितृ शोक

लखनऊ के वरिष्ठ आर्यनेता श्री कृष्ण बलदेव महान। एव श्री अर्जुनदेव महाना के पूज्य पिता श्री रामलाल जी महाना का दिनाक ३१–८–८६ की रात्रि को ९ बजे मेडिकल कालेज लखनऊ मे निधन हो गया। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन प्रात १० बजे उनके द्वार पर ही गाय के टक्कर देने से वे गिर गये और उनके कूल्हे की हड्डी टूट गयी थी। अनथक चिकित्सा प्रयत्न के बाद भी उन्हे बचाया न जा सका। उनकी आयु लगभग ९५ वर्ष थी।

उनकी शव यात्रा श्री अर्जुनदेव महाना के निवास से ठीक ११ बजे आरम्भ हुई। आर्यसमाज मदिर सिगार नगर के अधिकारियो ने समाज मन्दिर मे माल्यार्पण द्वारा अन्तिम विदाई दी।

पूर्ण वैदिक विधि से महात्मा दयानन्द तपोवन देहरादून के निर्देशन मे अन्त्येष्टि सस्कार आलमबाग के श्मशान भूमि पर हुआ।

२–९–८६ को साय ४ बजे से ६ बजे तक आर्यसमाज श्रृगारनगर मे उनकी आत्मा की शांति के लिए यज्ञ एव समाज प्रधान आचार्य श्री वेदव्रत अवस्थी की अध्यक्षता मे शोक सभा आयोजित हुयी, जिसमे आय प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी, महात्मा दयानन्द जी तपोवन देहरादून एव आनन्द सुमन देहरादून के अतिरिक्त नगर की समाजो व जिला सभा के अधिकारियो ने श्रद्धाजलि अर्पित की।

'आर्यमित्र' परिवार महाना जी के प्रति सहानुभूति प्रकट करता हैतु की परिवार को धैर्य तथा दिवगत को शान्ति प्राप्ति हो। –सम्पादक मण्डल

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

दिनाक १९–८–८६ से २७–८–८६ को आर्यसमाज बहराइच द्वारा वेद प्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन प्रात काल स्वस्तियाग तथा वेद पाठ श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' वेद वारिधि के ब्रह्मणत्व मे हुआ तथा सायकाल उनकी वेद कथा और श्री ठाकुरप्रसाद भजनोपदेशक के भजन हुए।

रविवार २४–८–८६ को दोपहर को बहराइच नगर के समस्त विद्यालयो के छात्र-छात्राओ की व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे निम्नलिखित विषय रखे गए–

(१) त्रैतवाद, (२) वर्ण व्यवस्था, (३) वेद मे नारी का महत्व, (४) यज्ञ से वायु प्रदूषण का नियन्त्रण।

प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले समस्त प्रतियोगियो को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कारो के अतिरिक्त वैदिक साहित्य प्रोत्साहन के निमित्त भेंट किया गया। उसके पश्चात् राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ।

–चरतसिंह मन्त्री

–"अम्बहटा (सहारनपुर) मे वैदिक गवेषक शिवपूजनसिंह कुशवाहा शास्त्री, एम० ए० ज्वालापुर का दिनाक १९ से २७ अगस्त ८६ तक वेदप्रचार सप्ताह के उपलक्ष्य मे प्रवचन हुआ। श्री सोहनलाल 'पथिक' पलवल का भजन भी हुआ। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।"

–सम्वाददाता

–आयसमाज काशी शास्त्राथ स्मृति स्थल आनन्दबाग दुर्गाकुण्ड वाराणसी की ओर से श्रावणी पूर्णिमा से आरम्भ होकर भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तक वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सामान्य यज्ञ के उपरान्त यजुर्वेद के पावन मन्त्रो द्वारा आहुति प्रदान की गई।

–शिवमित्र शास्त्री

विलक्षण प्रतिभा

स्व० पं० सुधाकर जी शर्मा

[मन्त्री आर्य समाज नया शहर इटावा]

प० सुधाकर जी का जन्म मैनपुरी जनपद के किसी ग्राम में हुआ था तथा प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम कुशमरा एव माध्यमिक व उच्च शिक्षा गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन में हुई थी जहां से आप आयुर्वेद के स्नातक (आयुर्वेद शिरोमणि) बनें। आप अपनी कक्षा में सर्वव प्रथम स्थान पर रहे। शिक्षा समाप्तिके तत्काल पश्चात आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महोपदेशक नियुक्त हुए जहा आपने पूरी निष्ठा व लगन के साथ आर्य जगत की सेवा की। आप अपने समय के अनुपम उपदेशक रहे। लगभग दसवर्ष तक सभाकी सेवा करने के उपरात आपने अपना एक औषधालय इटावा-नगर में खोला और इटावा तथा सीमावर्ती जनपदो में एक सफल चिकित्सक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। इटावा-प्रवास के समय आपने अनेक वर्षों तक आर्य समाज नया शहर इटावा के प्रधान-पद को सुशोभित किया। अन्त मे आप मैनपुरी-नगर मे जाकर रहने लगे।

गुरुकुलीय जीवन मे वह स्वस्थ- स्वाध्यायशील एव मेधावी छात्र रहे और तीन घण्टे नित्य व्यायाम करते थे। एक बार महात्मा नारायण स्वामी जी आवश्यक वस्तुओ का एक थैला भूल से छोड़कर दिल्ली जाने हेतु मथुराके लिये चले गये। स्वामीजीके जानेके बाद जब वह थैला देखा गया तो गुरुकुल मे सब को हैरानी हुई क्योकि उस थैले का स्वामी जी के साथ जाना परमावश्यक था इधर मथुरा से ट्रेन छूटने मे एक घण्टा से कम समय रह गया कोई व्यवस्था नहीं बन पा रही थी। अन्ततोगत्वा ब्रह्मचारी सुधाकर ने वह थैला उठाया और मथुरा के लिए भाग निकला। उधर स्वामी जी ट्रेन मे थैले की चिन्ता मे बैठे थे कि सात मील की दौड़ पूरी करके ब्रह्मचारी सुधाकर ट्रेन छूटने के कुछ ही मिनट पहले स्टेशन पहुच गये और थैला स्वामी जी को दिया। स्वामी जी ने तत्काल आशीर्वाद देते हुये दस रु० दूध पीने को दिये और दिल्ली से लौट कर उनका दूध और घी दूना कर दिया।

उपदेशकीय जीवन मे दो मोटरें रोकने, छाती पर मन भर का पत्थर रखकर तुड़वाने, भार उठाने, जजीर तोडने, तथा लाठी व तलवार चलाने आदि मे प्रवीण थे। एक बार आर्य समाज सासनी मे पण्डित जी शक्ति-प्रदर्शन कर रहे थे तो एक जाट महाशय ने अपनी भैंस की जजीर देते हुए तोडने को कहा। चूंकि जजीर अवगुठित थी अत प्रत्येक बल पर जजीर टूटने के स्थानसे बढ़ने लगी और नहीं टूटी। उसी दिन से पडित जी ने खुला बल प्रदर्शन बन्द कर दिया। वह कहा करते थे कि मै सौ वर्ष तक जिऊगा आयुर्वेद के साथ-साथ वेद, दर्शन, पुराण तथा काव्य आदि पर पर्याप्त अधिकार था 'ओ३म् से गणेश' विषय पर उनका अतीव शोधपूर्ण व्याख्यान होता था। उनकी वाग्मिता और तर्क शैली कों पौराणिक विद्वान भी भूरि-भूरि प्रशसा किया करते थे। मधुर भाषण से वह जन-जन का मन मोह लेते थे। उनकी प्रतिभा सर्वतोन्मुखी थी उनकी टक्कर का सस्कृत का विद्वान आय जगत मे नहीं था।

एक बार इटावा प्रदर्शिनी मे एक पहलवान ने तीन सेर खडी खाने की शर्त लगाई। पण्डित जीं सारी खडी खा गये और उसे पचाने के लिये प्रदर्शिनी के दस चक्कर लगाये।

९७ वर्ष की अवस्थामें, १६ जुलाई का प्रभात इन्हे लेने आया और पता नहीं किस अज्ञात दिशा मे सदा के लिये भेज दिया।

आर्यसमाज मेरठ शहर मे दानी सज्जनो का सम्मान समारोह

आर्य समाज मेरठ शहर मे दान दाताओं का सम्मान समारोह दि० २४ अगस्त ८६ को प्रात ९॥ बजे आर्य समाज मे सम्पन्न हुआ। इसके सयोजक थे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेशके प्रधान श्री इन्द्रराज जी। अध्यक्षता श्री मनोहर लाल जी सर्राफ प्रधान आर्य समाज मेरठ शहर ने की। श्री प्रधान जी ने माल्यार्पण द्वारा श्री मथुरा प्रसाद जी का, श्रीमती शकुन्तला गोयल जी प्रधाना स्त्री आर्य समाज मेरठ शहर ने माल्यार्पण द्वारा श्रीमती पुष्पा जी खन्ना का तथा श्री ओमप्रकाश जी जौहरी ने माल्यार्पण द्वारा श्री आत्माराम जीं का सम्मान किया।

श्रीमती पुष्पा जी खन्ना ने ५०००) रु० (पाच हजार रुपये) तथा श्री आत्मा राम जी ने १०००) रु० (एक हजार रुपये) गुरुकुल प्रभात आश्रम को दान किये तथा श्री मथुरा प्रसाद जी ने गरीब और प्रतिभाशाली छात्रो के लिये निम्नलिखित सस्थाओ को ५००) रुपये प्रति सस्था तथा २५०) रुपये प्रति सस्था दान दिये।

५००) रुपये प्राप्त करने वाली सस्थाए–
१–आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ शहर।
२– " " " " सदर मेरठ कैण्ट।
३–भागीरथी आर्य कन्या इण्टर कालेज लालकुर्ती मेरठ कैण्ट
४–चावली देवी " " " " ब्रह्मपुरी मेरठ
५– जगदीश शरण राजवशी इण्टर कालेज बेगमपुल मेरठ
६–एस० एस० डी० इण्टर कालेज लालकुर्ती मेरठ
७–गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ।
२५०) रु० प्राप्त करने वाली सस्थाए–
१–आर्य विद्यासदन थापर नगर मेरठ
२–हरिशकर आर्य विद्यासदन आनन्दपुरी मेरठ
३–गोदावरी देवी आर्य विद्यासदन मुफ्ती बाड़ा मेरठ
४–श्रद्धानन्द शिशु विहार दयानन्द पथ सदर मेरठ
५–दयानन्द शिशु सदन ब्रह्मपुरी मेरठ

श्री प्रधान मनोहर लाल जी ने महात्मा गाधी तथा स्वामी दयानन्द जी के विचारो के छाप की चर्चा करते हुए अपने आपको उनका ऋणी बताया। तत्पश्चात् यज्ञशाला के निर्माणार्थ निम्नलिखित व्यक्तियो ने दान की घोषणा की–

१–श्रीयुत् कालीचरण जी–१०००) रुपये
२–धर्मपत्नी श्री दरियावसिंह जी १०००) रुपये
३–श्री जगदीश जी गम्भीर–५०१) रुपये।
श्री इन्द्रराज जी ने सब दान दाताओ का अन्त मे धन्यवाद किया।

सम्वाददाता

आर्य जगत

–आर्य समाज मऊरानीपुर (झांसी) में वेद प्रचार सप्ताह धूम-धाम से मनाया गया जिसमें सभा महोपदेशक प० केशवदेव जी शास्त्री के प्रभावशाली प्रवचन तथा ठा० गजराज सिंह राघव भजनोपदेशक सभा के मधुर भजनो से जनता लाभान्वित हुई। मन्त्री

मेरठ में छद्मवेशी ईसाइयो द्वारा हिन्दुओ को ईसाई बनाने का षड्यन्त्र

वर्तमान समय मे, जहा छद्मवेशी ईसाइयो द्वारा पूरे भारतवर्ष मे सीधे साधे निर्धन हिन्दुओ को लालच देकर ईसाई बनाने का कार्य व्यापक पैमाने पर क्रियाशील है वहीं जनपद मेरठ के तहसील बागपत के ग्राम ललियाना में, तथा जनपद के अन्य क्षेत्रो मे भी ईसाइयो ने अपने कुचक्र का जाल फैला दिया है। ईसाइयो ने ग्राम ललियाना के हरिजन बस्ती के निकट विद्यालय की स्थापना की है जिसमे शिक्षा के नाम पर विद्यार्थियो को ईसाइयत की दीक्षा दी जा रही है तथा अपने छद्मवेशी दावपेंचो से, धन के लोभ और लालच मे फसाकर कुछ गरीब हिन्दुओ को ईसाई बनाने मे सफल भी हो चुके हैं। इस तरह के विद्यालय जनपद के विभिन्न क्षेत्रो मे दिन प्रतिदिन खोले जा रहे हैं तथा लेकडा, रटौल, ललियाना, डौला बांधू, बागपत, बडौत आदि मे ईसाइयत की दीक्षा प्रदान करने वाले विद्यालय खोले जा चुके है। विदेशी धन के बल पर तमाम वैतनिक पादरियो की नियुक्ति की जा चुकी है इनके प्रचार वाहन जगह-जगह घूम रहे हैं। ईसाई मिशनरियो के कारनामो का परिणाम अरुणाचल, नागालैण्ड, मेघालय, मिजोरम तथा देश के अन्य भागो मे देखा जा चुका है।

अत इस समाचार से सरकार को अवगत कराने का आशय यह है कि प्रशासन, स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए, इस मामले पर गभीर कदम उठाये अन्यथा आर्यजगत को आदोलन का सहारा लेना पडेगा।

जगवीरसिंह प्रधान
आर्यसमाज बागपत, मेरठ

वेद प्रचार सप्ताह सँपन्न

–आर्यसमाज मीरजापुर मे वेद प्रचार सप्ताह दिनाक १९ अगस्त से २७ अगस्त १९८६ तक हर्षोल्लास के वातावरण मे मनाया गया इस अवसर पर प्रतिदिन यज्ञ, भजन एव प्रवचन का प्रभावशाली आयोजन हुआ। –लालजी गुप्त

–आर्यसमाज बासी (बस्ती) मे वेद प्रचार सप्ताह दिनांक १९ अगस्त से २७ अगस्त तक भव्य आयोजनो के साथ सम्पन्न हुआ तथा दिनाक २७ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर यज्ञ का कार्य सम्पन्न हुआ जिसमे दयानन्द बाल मन्दिर के छात्र/छात्रा तथा आचार्य गण सम्मिलित हुए। –द्वारिकाप्रसाद यादव

–आर्यसमाज फर्रुखाबाद मे दिनाक १९ अगस्त ८६ से २७ अगस्त १९८६ तक वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमे सभा उपदेशक प० ललताप्रसाद जी का प्रभावशाली उपदेश एव प्रवचन हुआ तथा स्वामी सर्वानन्द जी ब्रह्मचारी महेन्द्रकुमार शास्त्री जी एव समाज के पुरोहित प० आत्माराम जी के भी भजन एव प्रवचन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। –रामप्रकाश

–आर्यसमाज लक्ष्मीपुर (पश्चिमी चम्पारण) विहार के तत्वावधान मे वेद प्रचार सप्ताह का कार्य क्षेत्र के विभिन्न आर्यसमाजो जगीराह, गोखूला, मुरली, लक्ष्मीपुर आदि मे श्री रामचन्द्रसिंह क्रातिकारी श्री सुदेशराय जी, श्री ध्रुव जी आदि के सद्प्रयासों से सोल्लास मनाया गया। –मन्त्री

–आर्यसमाज फतेहाबाद (आगरा) मे वेद प्रचार सप्ताह दिनांक १९ अगस्त ८६ से २७ अगस्त ८६ तक श्री इन्द्रजीत शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ तथा प्रतिदिन यज्ञ, भजन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। –मन्त्री

निवेदन

आर्यमित्र मे विद्वानो के सैद्धान्तिक एव वैचारिक लेख प्रकाशित होते हैं। आवश्यक नही है कि सम्पादक या आर्यमित्र की उनके साथ सहमति हो। हम विद्वानो के लेख प्रकाशित कर देते हैं यदि उनके लेखो मे भ्रान्तिया होती हैं तो अन्य विद्वान लेखक उनका निराकरण कर देते हैं। उनके भी लेख सादर प्रकाशित किये जाते है और इस प्रकार भ्रान्ति लेखक का सुधार हो जाता है।

लेखकों से अनुरोध है कि लेख प्रेषित करने से पहिले उस पर पूर्ण रूप से विचार करलें। सिद्धान्त विहीन स्थलो का सशोधन कर लिया करें, भाषा की शिष्टता अपेक्षित है।

विद्वत् जनो का सहयोग अपेक्षित है।

विदुषा वशवद
आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक आर्यमित्र
५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सूचना

अखिल भारतीय वैदिक यति मण्डल दीनानगर (गुरुदासपुर) का सम्मेलन २७, २८ सितम्बर १९८६ को दयानन्द मठ गोहानामार्ग रोहतक मे होगा। देश के सभी नैष्ठिक ब्रह्मचारी, वनी और सन्यासी २६ सितम्बर साय तक रोहतक मठ मे पहुचने की कृपा करें। भोजन और आवास का प्रबन्ध दयानन्द मठ रोहतक मे ही रहेगा।

–प्रचार मन्त्री वैदिक यति मण्डल
११९, गौतमनगर नई दिल्ली-११००४९

–आर्यसमाज बोसलपुर मे वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी से जन्माष्टमी तक मनाया गया जिसमे श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक द्वारा वेदोपदेश का कार्य क्रम बडे सुन्दर ढग से सम्पन्न हुआ। जनता ने अच्छी सख्या मे उपस्थित होकर हमारा उत्साह वर्धन किया। –मन्त्री

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, लखनऊ
आवश्यक सूचना

लखनऊ नगर एवम् जनपद की समस्त आर्य समाजो के प्रधानो तथा तथा मन्त्रियो को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के शताब्दी समारोह मे धन सग्रह के निमित्त यदि छपे कूपन उन के पास अब तक किसी कारण वश न पहुच पाए हों अथवा उनकी बिक्री के कारण वे समाप्त हो गए हो, तो वे उन्हे उप-सभा मन्त्री से तुरन्त प्राप्त कर लें तथा धनराशि एकत्र कर, शीघ्र जमा करवाने की कृपा करें ।

अर्जुन देव महाना　　　　मदन मोहन जोशी
प्रधान　　　　मन्त्री

आर्य समाज रामनगर, अमेठी में
वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

–आर्य समाज रामनगर, अमेठी (सुल्तानपुर) के तत्वावधान मे वेद प्रचार सप्ताह दिनाक १९ अगस्त ८६ से २७ अगस्त १९८६ (श्रावणी रक्षाबन्धन से श्री कृष्ण जन्माष्टमी) तक श्रीयुत राजर्षि रणञ्जयसिंह जी के सरक्षत्व मे हर्षोल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ जिसमे आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वानो ने वैदिक धर्म के महत्व पर प्रकाश डाला । प्रमुख विद्वानो मे, श्रीयुत राजर्षि रणञ्जयसिंह जी, सर्वश्री वसुमित्र जी शास्त्री, ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री, रामकिशोर जी शास्त्री, आचार्य वेद प्रकाश जी, प० शोभनाथ जी पुरोहित, महात्मा उमाशकर जी एव पूज्यपाद स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती आदि के ओजस्वी उपदेश एव प्रवचन हुए तथा भूपति भवन, रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी श्री शिवकुमार पाठक विद्यालय, श्री रणवीर इण्टर कालेज, श्री रणवीर जूनियर हाई स्कूल, आदि मे सभायें सम्पन्न हुई । कार्यक्रम की सफलता मे आर्यसमाज अमेठी के मन्त्री श्री राममूर्ति शुक्ल जी का पूर्ण योगदान रहा ।　　　　सवाददाता

ओ३म्

प्रांतीय आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश

रविवार दि० ७ सितम्बर को ११ ।। बजे से सभा भवन लखनऊ मे आर्य वीर दल व आर्य कुमार सभा की सयुक्त बैठक श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री सभा की अध्यक्षता मे हुई । जिसमे शताब्दी समारोह मे सेवा सुरक्षा हेतु निम्न निर्णय, लिए गए–

१– आर्य वीर दल का व्यायाम [illegible]र्शन व 'आर्यवीर व आर्य कुमार सम्मेलन' श्री बाल दिवाक [illegible]ंस की अध्यक्षता मे होगा ।
२– १५ से २० अक्टूबर [illegible]क आर्य वीर दल का 'सेवा सुरक्षा शिविर' श्री अवध बिहारी खन्ना व श्री जयनारायण आर्य की अध्यक्षता मे डी० ए० वी० कालेज लखनऊ मे लगाई जाय जिसमे सभी आर्य वीर गणवेशमे १५अक्टूबर को लखनऊ पहुचें १ हजार आर्य वीरो के शिविर मे रहने की व्यवस्था नि शुल्क होगी ।
३– सभी नगरनायक, मडलपति, उपसचालक तथा आर्य समाज के मन्त्री प्रधान अपने यहा से १०-१० आर्य वीर शिविर मे अवश्य भेजें ।
४– शोभा यात्रा हेतु आर्य वीर दल अपने साथ अपना नाम पट, ओ३म् ध्वज तथा बैण्ड बाजा के साथ गणवेश मे आवें ।
५– अपने पहुचने की सूचना अपने सचालकों को तथा मेरे पास ३० सितम्बर तक अवश्य भेज देवें ।
६– बैठक मे ४० अधिकारी व कार्य कर्त्ताओ ने भाग लिया ।

बेचनसिंह अधिष्ठाता
आर्य वीर दल उ० प्र० साहुपुरी, वाराणसी

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
शताब्दी समारोह
दिनाक १७ से २० अक्टूबर १९८६

स्थान–प० प्रकाशवीर शास्त्री नगर
(डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ)

अपील

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजो एवम् वैदिक / दयानन्द / आर्य शैक्षिक सस्थाओ से अनुरोध है कि शताब्दी समारोह हेतु धन सग्रह करने मे पूर्ण सहयोग दें ।

शैक्षिक सस्थाओ मे प्रत्येक छात्र/छात्रा से २/– तथा आचार्य एव आचार्या जी से ५/– कूपन देकर धन प्राप्त करें तथा सभा को भेजें

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के शताब्दी समारोह के अवसर पर
आर्य बाजार की व्यवस्था

इच्छुक महानुभाव इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें

सूचित करते हुए हर्ष है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का शताब्दी समारोह जो दिनाक १७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६ तक (डी० ए० वी० कालेज प्रागण) प्रकाशवीर शास्त्री नगर लखनऊ मे विशाल आयोजनो के साथ सम्पन्न होने जा रहा है, के पडाल में उपयुक्त स्थल पर एक भव्य आर्य बाजार की व्यवस्था की गई है । इच्छुक महानुभाव (पार्टिया) दुकान हेतु कितना स्थान चाहते हैं कृपया इस सम्बन्ध में हमें दिनाक ३० सितम्बर १९८६ तक सूचित करने की कृपा करें । व्यवसायिक वर्ग के लिए व्यापार हेतु यह एक स्वर्णिम अवसर होगा ।

मनमोहन तिवारी मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ ।

आर्यसमाज टूंडला की नवगठित तदर्थ समिति को मान्यता

श्री पूर्णचन्द्र जी प्रधान जिला उप सभा आगरा, एव श्री रोशनलाल जी तथा श्री अमरनाथ जी की उपस्थिति मे दि० २२–८–८६ को आर्य समाज टूडला (आगरा) मे हुई समाज के सदस्यों की बैठक मे सर्वसम्मति से समाज के चले आ रहे विवाद को समाप्त कर नवगठित निम्नाकित सात सदस्यो की तदर्थ समिति को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश मान्यता प्रदान करती है–

(१) श्री बोधानन्द, (२) श्री विद्यासागर दीक्षित, (३) श्री राजाबाबू, (४) श्री अशोक कुमार, (५) श्री रामचन्द्र मल्होत्रा, (६) श्री इन्द्रजीतसिंह, (७) श्री विद्यारत्न (सयोजक तदर्थ समिति) ।

इस विज्ञप्ति से पूर्व इस कार्यालय से यदि मान्यता सम्बन्धी कोई पत्र निर्गत हुए हो तो वह निरस्त किये जाते हैं ।–मनमोहन तिवारी मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ

५२ ईसाई परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित

—आर्य समाज बागपत मेरठ के अथक सहयोग से जन्माष्टमी के पावन पर्व पर दिनाक २७ अगस्त ८६ को ग्राम-बाघू (मेरठ) के ५२ ईसाई परिवारो के लगभग ३५० सदस्यो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे प्रवेश किया । शुद्धि हुए युवको ने बताया कि लगभग तीस वर्ष पूर्व उन्हे बहकाकर ईसाई बना दिया गया था शुद्धि का यह काय संन्यासी स्वामी चन्द्रदेव जी द्वारा सम्पन्न हुआ ।

सम्वाददाता

सामवेद पारायण यज्ञ के साथ वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज मैनपुरी मे, सभा के अन्त० सभासद प० नरेन्द्रार्य के सा*ी निर्देशन मे दिनाक १९-८-८६ से २७-८-८६ तक अविराम प्रति-दिन, प्रात यज्ञ भजन व प्रवचन तथा साय भजन व वेद कथा का कार्य क्रम चला । इस यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती रहे जिन्हो ने ही सप्ताह भर प्रतिदिन क्रमश प्रवचन दिये और वेद कथा की । वेद पाठ आचार्य प० रामदेव जी एव उक्त प० नरेन्द्रार्य ने किया । भजनो का मनोहारी कार्यक्रम, सभा के प्रचारक प० कमल देव जी ने प्रस्तुत किया । काव्य पाठ प० लाखन सिह जी 'सौमित्र' (भोजपुरा) ने किया ।

—रघुनन्दन सिंह शास्त्री

अति आवश्यक सूचना एवम् आदेश

महोपदेशको, उपदेशको और भजनोपदेशको के लिये

—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ के अन्तर्गत उपदेश विभाग मे कार्यरत सभी महोपदेशको उपदेशको और भजनोपदेशको को सूचित किया जाता है कि सभा की शताब्दी समारोह के व्यापक प्रचार एवम् धन सग्रह हेतु आप सभी महानुभाव सभा कार्यालय मे शीघ्र-से-शीघ्र पधार कर धन सग्रह हेतु छपे हुए नोट सभा कार्यालय से प्राप्त कर लें और स्वपरिचित और प्रभावित जनपदो मे पहुच कर अधिक-से-अधिक धन सग्रह करें और शताब्दी मे पहुचने के लिये अधिक-से-अधिक महानुभावो को प्रेरित करें तथा अपने पहुचने की सूचना सभा कार्यालय को तत्काल सूचित करें । इस सूचना को आदेश समझें ।

केशवदेव शास्त्री वानप्रस्थ
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ

आर्य जगत

—महिला आर्य समाज सभा भवन लखनऊ के तत्वावधान मे श्रावणी पर्व तथा वेद प्रचार सप्ताह दिनाक २० अगस्त से २७ अगस्त तक सोल्लास गायत्री यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ जिसमे प० मेधावी शास्त्री, प० इन्द्रदेव पाठक प० रूपचन्द्र जी दीपक तथा प० अखिलेश जी के सारगर्भित प्रवचन हुए । प्रेमवदशी

—आर्य लश्कर (ग्वालियर) मे वेद प्रचार सप्ताह दिनाक १९ अगस्त से २७ अगस्त ८६ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें नित्य यज्ञ, भजन, एव प्रवचन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए । मन्त्री

शुद्धि समाचार

इक्कीस ईसाई परिवारो का हिन्दू धर्म में प्रवेश

ग्राम भीमनगर (फरह) जनपद मथुरा के २१ जाटव परिवार जो कुछ समय पूर्व विदेशी पादरियो के बहकावे मे आकर धन के लालच मे ईसाई बन गये थे, वेद मदिर मथुरा के वैदिक मिशनरियो के अथक प्रयास से पुन अपने पैतृक धर्म हिन्दू मे वापस आ गये । शुद्धि का यह कार्य दिनाक २७ जून ८६ को श्री आचार्य प्रेमभिक्षु जी के सयोजकत्व मे सम्पन्न हुआ तथा शुद्धि का कार्य श्री आचार्य शिवराज जी शास्त्री ने किया, इस अवसर पर शुद्धि हुए समस्त युवको ने यज्ञोपवीत धारण किया तथा वैदिक धर्म को शिक्षा ली साथ ही बीडी सिगरेट आदि छोडने का सकल्प किया । शुद्धि के इस कार्य मे श्री विरजानन्द ट्रस्ट द्वारा सचालित वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र मथुरा के मिशनरियो का अथक सहयोग रहा ।

इसी अवसर पर भीमनगर मे नवीन आर्य समाज की स्थापना भी हुई । शुद्धि का यह कार्य सचमुच प्रशसनीय व सराहनीय है ।

सम्वाददाता

तीन मुसलमान हिन्दू बने

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बुलन्द शहर के तत्वावधान मे खुरजा के तीन मुसलमानो ने स्वेच्छा से हिन्दू धर्म मे प्रवेश किया तथा वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की । शुद्धि का यह कार्यक्रम अग्रवाल धर्म-शाला खुरजा मे सम्पन्न हुआ ।।

सम्वाददाता

कानपुर में पांच मुस्लिमो का हिन्दू धर्म में प्रवेश

कानपुर—आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे समाज के प्रधान तथा प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने पाच मुस्लिमो को इच्छानुसार उन्हें हिन्दू धर्म मे प्रवेश कराया

इनमे दो पिता पुत्र थे । पिता सलीम खा (६५) का नाम सुन्दर लाल तथा पुत्र मोहरम (२६) का नाम मोहनलाल रखा गया । इस प्रकार तलाक शुदा श्रीमती आलिया बेगम (२६) (राम प्यारी) व उसके पुत्र मोहम्मद अली की शुद्धि सस्कार के पश्चात श्री रामआसरे से विवाह कराया गया । जैमिनी सर्कसके कलाकार को भी हिन्दू धर्म की दीक्षा देने के बाद कु० प्रेमो कलाकार से वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न कराया गया । इस समारोह मे उपस्थित स्त्री पुरुषो ने शुद्धि होने वाले लोगों का फूल-मालाओ से स्वागत किया ।

मन्त्री आर्य समाज

आर्य जगत

—आर्य समाज महर्षि दयानन्द बीकानेरमें श्रावणी एव सस्कृत दिवस दिनाक १९ अगस्त ८६ को सोल्लास सम्पन्न हुआ जिसमें उपस्थित विद्वान वक्ताओं ने श्रावणी पर्व के महत्व की रूपरेखा प्रस्तुत की । मन्त्री

'आर्य्यमित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
भा० भाद्रपद ७३
भाद्रपद शुक्ल ११
रविवार, १४ सितम्बर १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

के

समस्त पदाधिकारियो तथा अन्तरंग सभासदो

द्वारा

प्रदेश के समस्त आर्यों का आह्वान

शताब्दी समारोह के अवसर पर

[१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६]

प्रकाशवीर शास्त्री नगर (डी० ए० वी० कालेज) लखनऊ मे आयोजित

इस समारोह मे सपरिवार तथा इष्ट मित्रो सहित सम्मिलित होकर अपनी सगठित शक्ति का परिचय दे। विगत १०० वर्षों के कायकलापो का निरीक्षण कर, देश की धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक गतिविधियो पर विचार कर, भावी योजनाओ की रूपरेखा तैय्यार करने मे अपना पूर्ण सहयोग दें।

समारोह की सफलताथ ७-९-८६ को निम्नलिखित उपसमितिया गठित –

[१] धन सग्रह समिति, [२] शोभा यात्रा समिति, [३] कार्यकर्त्ता व्यवस्था समिति, [४] पडाल समिति, [५] ऋषि लगर समिति, [६] आवास समिति, [७] प्रचार समिति, [८] सुरक्षा समिति [९] सफाई समिति, [१०] यज्ञ समिति, [११] यातायात समिति, [१२] निरीक्षण समिति, [१३] चिकित्सा समिति, [१४] अभिनन्दन समिति।

प्रदेश के नगर नगर मे, ग्राम, ग्राम मे सभा द्वारा प्रेषित शताब्दी विज्ञापन लगाइए, कूपनो पर धन एकत्रित कीजिए और समारोह मे भाग लेने के लिए तैय्यारी कीजिए। ओम् के ध्वज, आर्यसमाजो के नाम पट अपने बैंड बाजा, तथा वाहन लेकर पधारिए। आर्य वीर दल के कार्यकर्त्ता अपनी शाखाओ के स्वय सेवको के साथ अपने गण वेशो और दण्डो सहित पधारें।

प्रदेश की राजधानी मे इस ऐतिहासिक अवसर पर शोभा यात्रा से लेकर समस्त सम्मेलनो मे सक्रिय भाग लेकर नव जागृति पूर्ण उत्साह और आत्मीयता का परिचय दे।

<u>यह स्वर्णिम अवसर १०० वष उपरान्त आया है। इसे सफल बना कर इस वीर गान को साथक करें–</u>

रोक सकेंगे नहीं विरोधक आर्य शक्ति का प्रबल प्रवाह।
यह धारा भीतर से आती, नहीं रुकेगी इसकी राह॥

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्य जन नियत तिथि पर लखनऊ पहुंच कर शताब्दी समारोह की शोभा बढ़ावें।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप मे सब्बरवाल प्रिन्टिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ | घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

वर्ष ८६] भा० भाद्रपद ३०, आश्विन कृष्ण ३, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक २१ सितम्बर १९८६ [अङ्क ३८

इस अक के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

प्रभु की अमृत वाणी—

जीवित का लक्षण—

ऊंचा उठना और आगे बढ़ना है

अनुहूत. पुनरेहि विद्वानुदयनं पथः ।
आरोहणमाक्रमण जीवतो जीवतोऽयनम् ॥
(अथर्व० ५–३०–७)

(अनुहूत) अनुप्रेरित होकर (पुन आ+इहि) फिर आ (विद्वान्) ज्ञानपूर्वक (उत्+अयनम् पथ) उदीय पथ पर, उत्कर्ष के मार्ग पर । (आरोहणम्) ऊचा चढ़ना (आक्रमणम्) आगे बढ़ना (जीवत जीवत अयनम्) जीवित का जीवित मार्ग है । जीवित के जीवन का लक्षण है ।

वैदिक धर्म आशावादियो का धर्म है, निराशावादियो का नहीं । यत्न और पुरुषार्थ से मनोरथो की सिद्धि होती है । पुरुषार्थी जब यत्नपूर्वक पुरुषार्थ करता है तो उसके लिए सब सुलभ हो जाता है । असम्भव शब्द आर्यों के जीवन रूपी शब्द कोष मे न कभी रहा है और न ही कभी रहेगा ।

ईश्वरीय ज्ञान वेद से वेदानुकूल जीवन धारण करने वाले आर्य सर्वत्र आत्मना अनुप्रेरित होकर अपने लक्ष्य मे निष्ठा रखते हुए, उत्थान मार्ग पर अग्रसर हुए हैं । विपरीत परिस्थितियों ने जीवन सघर्ष मे जब कभी उन्हे पीछे ढकेलना चाहा, वे बारम्बार विजयी होकर पुन सन्मार्ग पर आए और तब तक बढ़ते रहे और चढते रहे, जब तक उन्हें अभीष्ट की प्राप्ति नहीं हो गई ।

मानव जीवन एक सघर्ष है । व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और सासारिक जीवन मे देवासुर सग्राम सर्वत्र से चलता आया है और चलता रहेगा । जहा निराशावादी घुटनों मे सिर पकड कर रोते हैं वहा वेद ज्योति से ज्योतित मानवो ने जीवन के इस लक्षण को आत्मानुभूत किया है कि जीवित वही है, जो जीवन मे सतत ऊचा चढ़ता है और आगे बढ़ता है । जो स्वय चढ़ने की क्षमता रखता है, वही दूसरे को चढा सकता है, जो आगे बढ़ना जानता है, वही उद्‌घोष करता है—

"मैं बढ़ता हू तुम साथ चलो,
साहसी अधीर नहीं होते ।
जो मरने से डरते जीवन मे,
वे कदापि रणवीर नहीं होते ॥"

सभा का शताब्दी समारोह प्रदेश के आर्यो को बुला रहा है कि आओ, वेद प्रतिपादित मार्ग पर सगठित होकर बढ़ो, जीवन मे उत्थान की सीढ़ियो पर चढ़ो और विश्व को दिखला दो कि अभी आर्यत्व जीवित है । 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को सार्थक करना जीवितों का काम है, जीवधारी मृतकों का नहीं ।

—'वसन्त'



सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार २१ सितम्बर १९८६ दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

वयं जयेम

आर्यों ने सर्वव जीवन के सग्रामो मे विजय पाई है चाहे यह सघर्ष उनके व्यक्तिगत जीवन में आत्म सघर्ष के रूप मे इन्द्रियों और मन को नियन्त्रण करने का रहा हो, चाहे सामाजिक, चाहे राष्ट्रीय अथवा सार्व भौम चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना के लिए उसे विश्व स्तर पर धर्म युद्ध के रूप मे लड़ना पड़ा हो। विजय श्री की प्राप्ति का मूल था आर्यों का वेदानुकूल जीवन धारण करना। वेद मानव को तपस्वी बनाता है और पुरुषार्थ के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र मे जय सम्पादित करने की प्रेरणा देता है—यथा—

इतो जयेतो विजय सजय जय स्वाहा।
इमे जयन्तु परामी जयन्ता स्वाहैभ्यो दुराहामीभ्य.।
नील लोहितेनामूनभ्य वतनोमि ॥

(अ० ८।८।२४)

यह मन्त्र प्रेरणा देते हुए कहता है—(इत जय) इधर जय हो (इत विजय) यहा विजय हो (सजय जय) सम्यक रूप से विजयी हो जय सम्पादित कर। इस जय को [वैदिक धर्मो आर्य] (इमें जयन्तु) मे जीते और [अनार्य] (अमी परा—जयन्ताम्) वे हारें। (एभ्य स्वाहा) इन [आर्यों] के लिए सु+आ+हा और (अमीभ्य दुराहा) उन [अनार्यों] के लिए दु +आ+हा। विजयी होने के लिए आवश्यक है कि (नील लोहितेन) नील तथा लाल से [पसीने और रक्त से] (अभि) सर्वतं अभिमुख होकर [पीठ मोड कर भाग कर नहीं अपितु सामने डट कर] (अमून अव+तनोमि) उन्हे परास्त कर।

सक्षेप मे मन्त्र की प्रेरणा यह है कि हमें पुरुषार्थी बनकर, अपना रक्त पसीना बहा कर अनार्यत्व से लोहा लेना है, आसुरी वृत्तियो को परास्त करना है। सघर्षशील पुरुषार्थियो की स्वाहा कारी वृत्ति को विकसित करना है और उसमे बाधक कठिनाइयो को दूर हटाना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह प्रदेश के समस्त आर्यों के लिये एक ऐसी ही चुनौती के रूप मे उनके सम्मुख आ कर खडा हुआ है। इसे सफल बनाना आर्यत्व की बहुत बडी विजय होगी क्योकि अपार जन समूह मे वैदिक विचार धारा को प्रवाहित करने का यह स्वर्णिम अवसर बारम्बार नहीं आएगा। इसे सफल बनाने के लिए प्रदेश के तथा उससे बाहर के आय जगत को अपनी स्वाहाकारी वृत्ति का परिचय देना होगा। तन-मन-धन से अपना सर्वस्व होमना होगा। हमारे सहयोगी जो इस पुनीत काय मे रात दिन लगे हुए हैं, उनके उत्साह को बढ़ाना होगा और इसमे बाधाए खडी करने वाले अनार्य समुदाय के प्रयत्नो को निरामूल करना पडेगा।

पर यह सब कैसे होगा ? यह तो तभी सम्भव है जब प्रदेश के समस्त आर्य नर-नारी, बाल, तरुण, और वृद्ध अपनी सगठित शक्ति का दृढ़ परिचय दें और शताब्दी समारोह मे सम्मिलित हो कर उसे सफल बनाने के लिए समस्त बाधाओ को दूर करने के लिए, होने वाले कठिनाइयों को हसते-हसते झेलें। यह तभी सम्भव है जब हमारे अज्ञान वश अथवा स्वार्थ के वशीभूत होकर जो परस्पर छोटे मोटे विरोध हैं उनका बुद्धिमता से निराकरण करके, एक दूसरे को हृदय से लगा कर ऋग्वेद के अन्तिम 'सगठन सूक्त' का, जिसका हम प्रत्येक साप्ताहिक अधिवेशन मे सामूहिक पाठ करते हैं, उसे अपने कर्म मे क्रियान्वित कर अपने उदार हृदय तथा विशाल आकाक्षाओं का जीवित प्रमाण दे सकें।

दुर्भाग्य वश विश्व की वर्तमान कूटनीति से हमारे स्वदेश की राजनीति भी आच्छादित है। 'विषेन विष हन्यते' विष से विष को दूर करो, लोहे से लोहे को काटो और काटे से कांटे को दूर करो, इस मनोवृत्ति को सतत विकसित किया जा रहा है जिसके कारण धार्मिक सगठन भी इस विषाक्त प्रवाह मे बहते जा रहे हैं। वास्तविक उद्घोष समस्त धार्मिक सगठनो और विशेषतय आर्य समुदायो का तो यह होना चाहिए कि अमृतेन 'विष हन्यते' अमृत से विष को दूर किया जाता है। एक विष को दूर करने के लिए जिस विष का प्रयोग किया जाएगा वह उससे अधिक सशक्त होगा और उससे दूर करने का और अधिक सश्क्त और इस क्रम से विषमता का विष कभी दूर नहीं हो पाएगा। इसके सर्वथा विपरीत जब अमृत से विष को दूर किया जाएगा तो यह अमृत्व समदर्शिता के रूप मे स्थायी सिद्ध होगा।

वेद तो विपक्षियो को भी साथ लेकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है—यथा—

नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्य चरामसि।
पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि सरेभामहे ॥

(ऋ० १०।१३४।७)

अर्थात् हे दिव्य गुण सपन्न देवताओ ! हम वैदिक धर्मी न तो हिंसा करते हैं और न ही फूट डाल कर विघटित होते हैं। हमारा आचरण तो वेदानुसार होता है। हम तो तृण की भाति क्षुद्र जनो के साथ भी एक होकर, समानता का व्यवहार करते हुए उनके सम्मुख अपना पुरुषार्थ अभिव्यक्त करते हैं।

शताब्दी के आयोजको की यह हार्दिक अभिलाषा है और वे ऐसी आशा रखते हैं कि प्रदेश के समस्त आर्य जन शताब्दी के इस पावन अवसर पर परस्पर मिल बैठ कर अपने समस्त मतभेदो और पारस्परिक सघर्षों को सर्वव के लिए तिलाजलि दे देंगे और सत्य के आधार पर उचित निर्णय लेकर उसे एक मत से ग्रहण करेंगे। न्यायालयो मे अथवा न्याय सभाओ मे जो वाद-विवाद चल रहे हैं, उन्हे अविलम्ब वापस ले लेंगे। सच्ची आध्यात्मिकता को धारण कर वे एक स्वर से इस उद्घोष को गु जायेंगे "वय जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमेशमुदवा भरे भर।" [ऋ० १ १०२-४अ ७-५०-४] अर्थात् हे सर्वशक्तिमान, शत्रु विदारक प्रभो ! हम आर्यजन तुझसे युक्त होकर, तेरी शक्तिको प्राप्त कर, प्रत्येक वृत्त को प्रत्येक मोर्चे को, सग्राम सग्राम मे जीतें, विजय प्राप्त करें। तथास्तु।

—'वसन्त'

[शेष पृष्ठ ३ पर]

(शेष पृष्ठ २ से आगे)

शताब्दी समारोह वृहत यज्ञ में जन-जन की आहुति अपेक्षित है

वैदिक यज्ञ पद्धति समाजवाद का एक जीवित एव ज्वलन्त उदाहरण है। प्राचीन काल से यज्ञो मे आहुतिया प्रदान करने की परम्परा है, चाहे किसी यज्ञ का यजमान चक्रवर्ती नरेश ही क्यो न रहा हो परन्तु उस यज्ञ मे प्रजा का प्रत्येक श्रेणी का व्यक्ति आहुति प्रदान करता था वह भी अपनी श्रद्धा एव आर्थिक सामर्थ्य के अनुसार। यही समाजवाद का रूप है जिसमे जनता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है और जहा किसी प्रकार का भेद भाव नहीं होता है। प्रत्येक शुभ कर्म, प्रत्येक वृहत आयोजन यज्ञ के ही प्रतीक रूप होते है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश अपनी सेवा डगर पर चलते हुए सौ वर्ष पूर्ण कर रही है इसकी शताब्दी शारदीय प्रभा क साथ आगामी मास के मध्य आयोजित हो रही है। यह एक गुरुतर कार्य है और इसकी सफलता तभी सभव होगी जब उत्तर प्रदेश के प्रत्येक आर्य हमारा सहयोग करें। सहयोग चाहे शहस्त्रो र गो का हो चाहे दस पैसे या सौ किलो ग्राम हवन सामग्री का हो हम सहयोग भावना का आदर करते है और जब सामूहिक सहयोग भावना का वातावरण बन जाता हे तो जैसे मेघ वर्षा की एक-एक बूद धरातल की तृषा मिटा देती है, सरिताओ और सरवरो के कलेवर को भर देती हैं वैसे ही आय जनो की बडी से बडी भेंट और छोटी से छोटी श्रद्धा भेंट, हमारी रिक्त झोलीको भर देगी और हम वृहत रूपरेखाके साथ आयोजित शताब्दि समारोह को पूर्णता प्रदान करने मे सक्षम होगे ऐसी आशा है।

'आर्यमित्र' धनी मानी व्यक्तियो से आर्थिक सहयोग की अपील करता है। प्रदेश के प्राय सभी आर्य समाज के अधिकारियो को हमने प्रचार साहित्य भेज दिया है और इस अवसर पर धन सग्रह के लिए नोटो की कापिया भी भेज दी है और आशा है कि हमारे समस्त बन्धु धन सग्रह के कार्य मे सलग्न होगे तथा जिन आय बन्धुओ एव बहिनो के पास आय कार्य कर्ता न पहुच सके हो वह अपने क्षेत्र के आय कार्यकर्ताओ से सम्पर्क करके सहयोग प्रदान करें। यह वृहत आयोजन सौ वष की सभा की सेवा यात्रा के बाद हो रहा हे और आगामी दो सौ बाद की शतांब्दि मे सभव है हम सब न रहें इसलिए इसी मे सबका योगदान सबकी आहुति प्राथनीय है।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

शताब्दी समारोह और हमारा कर्त्तव्य

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को स्थापित हुये एक शतक पूर्ण हो गया। इस मध्य प्रदेश मे ऋषि सन्देश प्रसारण वैदिक धर्म सस्थापन हेतु सभा ने प्रदेश का हजारो आर्य समाजो के माध्यम से सतत प्रयत्न किया।

देश के स्वातन्त्र्य सग्राम मे प्रदेश की आर्य समाजो की अनेक-विभूतियो ने अपना सर्वार्पण किया, आत्माहुति दी। स्वाधीनता के बाद अनेक महानुभावो ने शासन मे भी अपना वरिष्ठ स्थान बनाकर प्रदेश की सेवा की और कर रहे है।

प्रदेश की सम्पूर्ण समाजो के इस प्रदेशीय सगठन ने समय-समय पर प्रदेश के ऊपर आये विभिन्न प्राकृतिक राजनीतिक व सामाजिक झझावातो आपदाओ से डटकर सघर्ष किया और उनसे विनिर्मुक्त करने मे सहायक बना।

आज हमारे सगठन के जब सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हे और—हमारे पूर्वज इसके सँस्थापक इसके भली-भाति सचालनका भार हम पर अपनी पवित्र आशा व विश्वास के साथ छोड कर परम पद प्राप्त कर चुके हैं। हमे अपने दायित्व को भली-भाति समझना है और आर्य समाज के कार्यक्रमों को आत्मसात् करके जन-जन को उनसे प्रेरित करने का प्रयास करके प्रदेश व देश को सुखी समृद्ध बनाने का सकल्प लेना है।

आज देश मे मानवता कराह रही है। आतकवाद विलगाव-वाद अपने फन फैला कर उसे डसने का यत्न कर रहा है। ऐसी अस्थिर व विस्मय परिस्थिति को समाप्त करके सुख शाति समृद्धि का वातावरण बनाना हमारा धर्म है। अपने प्रदेशीय सगठन को सुदृढ़ बनाकर उसके निर्देशन मे निश्चित रूपेण हम सभी सकटो पर विजय पाने मे समर्थ होगे। राष्ट्र मे फ़ैलती अशाति अराजकता को समूल नाश करके राष्ट्र रक्षा हेतु आज प्रत्येक आर्य को सजग होकर समर्पित होना है।

हमारा दायित्व है कि हम अपना कर्तव्य पहचानें और अपने सगठन को दृढ़ करने के लिए समर्पित हो जायें। सकल्प लें इस पुनीत शताब्दी पर्व पर कि हमारे प्राणों की अन्तिम श्वास तक मानवता की रक्षा-धर्म की सस्थापना मे हम प्रयत्नशील रहेंगे। धर्म के नाम पर ईर्ष्या, द्वेष, आतकवाद, वर्गभेद, विलगाव की प्रवृत्तियो का समूल नाश करेंगे। विघटनवादी तत्वो को कभी भी प्रश्रय न देंगे। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के व्रत को सर्वात्मना अगीकार करेंगे।

आज कुछ अराष्ट्रीय तत्व हमारे सगठन को भी विघटित करने के लिये तरह-तरह के प्रयत्न कर रहे हैं। हम सतत जागरूक रह कर उन्हें सफल न होने देंगे।

आज प्रदेशीय सभा का नेतृत्व युवा वर्ग के हाथ मे हैं। प० इन्द्रराज जी जैसे निस्पृह, समर्पित, साधुवृत्ति वाले विद्वान् के हाथ मे प्रधान पद का, एव समाज के हेतु समर्पित जीवन आर्य युवक श्री मनमोहन तिवारी के हाथ मे मन्त्री पद का गुरुतर दायित्व है। वे अपने दायित्व का सही रूप मे निर्वहण कर सकें महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ा सकें प्रदेश के सर्व साधारण को सही दिशा दे सकने मे समर्थ हो एतदर्थ हम सब आर्य नर-नारियो का पुनीत दायित्व है कि हम सभी अपना सम्पूर्ण तन मन धन से उन्हे सहयोग प्रदान करें।

सभा का शताब्दी समारोह दिनाक १७–१८–१९–२० अक्टूबर १९८६ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के प्रागण मे निर्मित प्रकाशवीर शास्त्री नगर मे आयोजित किया गया है, जहा देश-विदेश से आये लाखो आर्यों का सगम होगा।

समारोह की सफलता हम आयजनो पर ही निर्भर है। अत सभी अपना सभी प्रकार का सहयोग प्रदान करने का व्रत लें और अपने सहयोग के निमित्त अविलम्ब जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान मे निर्मित निम्नलिखित उप समितियो—धन सग्रह, शोभा यात्रा कार्यकर्ता व्यवस्था, पडाल, ऋषि लगर, आवास, प्रचार, सुरक्षा, सफाई—यज्ञ, यातायात, निरीक्षण, चिकित्सा, अभिनन्दन, समिति में अपनी रुचि के अनुकूल सहयोग प्रदान करने के निमित्त सभा को अविलम्ब सूचित करें। हमारा अपना समर्पण निश्चय ही शताब्दी समारोह को सफल करेगा और देश में फैलते सभी आतकवादी, विघटनवादी तत्वो का समूलनाश करके महर्षि दयानन्द के स्वप्नो के भारत का निर्माण करने में सहायक होगा।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

श्रीकृष्णजी के जीवन चरित्र पर एक दृष्टि

[आचार्य प० धर्मानन्द शास्त्री हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश]

(गताक से आगे)

इसलिए कृष्ण को ईश्वर मानने वाले भक्तों ने कृष्ण के नाम से देश मे अनेको मन्दिर बनवाये हैं और उनमे राधा के साथ कृष्ण की मूर्तिया स्थापित की हैं। उन मूर्तियो के सम्मुख धूप-दीप जलाये जाते हैं। फल-फूल चढ़ाये जाते हैं। मिठाई आदि के भोग चढ़ाये जाते हैं और आरती उतारी जाती है। मन्दिरो मे तथाकथित कृष्ण भक्त जय गोपाल, राधे श्याम, हरेकृष्ण, कृष्ण कृष्ण आदि वाक्यो को घण्टो उच्चारण करते हुए भजन और कीर्तन करते रहते हैं। 'अवश्यमेव भोक्तव्य कृतकर्म शुभाशुभम्' किये गये कर्मों को अवश्य ही भोग करना पड़ेगा और 'कर्मण्येवाधिकारास्ते मा फलेषु कदाचन' निष्काम भाव से कर्म करना, इन प्राचीन सिद्धान्तो को तिलाजलि देकर कृष्ण के केवल भजन-कीर्तन से ही ईष्ट की प्राप्ति मान लेना अध पतन की पराकाष्ठा है। राधा-कृष्ण या अन्य महापुरुषों की मूर्तिया बनाकर मन्दिरो मे पूजा करना, और पापियो से पृथिवी का भार उतारने के लिए भगवान का अवतार ग्रहण करना किसी आप्त ऋषि-महर्षि ने नहीं लिखा है।

हम ऊपर चर्चा किये हैं कि पुराणो को छोड़कर कृष्ण को महाभारत मे कहीं पर भी परमात्मा नहीं माना गया है। और कृष्ण के समकालिक भीष्म, द्रोणाचार्य, विदुर, कौरव, पाण्डव आदि किसी ने भी कृष्ण को परमात्मा नहीं माना है। और श्रीकृष्ण ने भी महाभारत मे कहीं पर अपने को भगवान का स्वरूप नहीं बताया है। परन्तु परमात्मा को अपने से भिन्न स्वीकार किया है। श्री कृष्ण ने गीता मे इस प्रकार कहा है।

उत्तम पुरुषस्त्वन्य परमात्मेत्युदाहृत ।
यो लोकत्रय माविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वर ॥
—गी० १५-१७

अर्थात्—जीवन से भिन्न अविनाशी, तीनो लोको मे प्रविष्ट होकर पालन करने वाला ईश्वर अन्य ही उत्तम पुरुष है, जिसे परमात्मा कहा गया है। अन्यत्र भी ईश्वर अलग होने का प्रमाण मिलता है—

ईश्वर सर्वभूताना हृद्देशे र्जुने तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥
गी० १८-६१

अर्थात्—हे अर्जुन। ईश्वर सब भूत प्राणियो के भीतर रहते हुए अपने अनन्त शक्ति से सम्पूर्ण प्राणि जगत को यन्त्रवत सचालन कर रहा है। यहा भी कृष्ण ने अपने से पृथक परमात्मा को सिद्ध किया है। महाभारत मे दुर्योधन के पास दूत के रूप मे प्रस्थान से पूर्व कृष्ण ने स्पष्ट ही कह दिया है—

अह हितत्कारिष्यामि परपुरुषकारत ।
दैव तु न मया शक्य कर्मकर्तु कथचन ॥
उद्योग पर्व अ० ७९-५-६

अर्थात् मैं यथाशक्ति दुर्योधन को समझाकर कौरवो-पाण्डवों मे सधि कराने का प्रयत्न करूगा, शेष दैवाधीन है। उपर्युक्त प्रमाणों से सिद्ध हो गया है कि श्रीकृष्ण परमात्मा के रूप मे अवतार नहीं थे। किन्तु महाभारत मे व्यास ने कृष्ण को महान् शक्तिशाली, नरश्रेष्ठ, महापुरुष के रूप मे ही वर्णन किया है। अत कृष्ण को भगवान् का अवतार मान लेना उनकी महानता तथा यथार्थ इतिहास के साथ अन्याय करना है।

इसी प्रकार कृष्ण रासलीला की बात भी है। कृष्ण की रासलीला कहानी भारत के गौरव पर अत्यधिक कलक है। भारतीय सस्कृति के शिरोमणि, वेदवेदागों के पूर्ण विद्वान, धर्मज्ञ, कुशल राजनीतिज्ञ, राजनीति विशारद, अतुल बलशाली, अनुपम पराक्रमी, धैर्यशाली, सदाचारी, सयम-नियम के पालक, उज्ज्वल चरित्र और निष्पाप महात्मा श्री कृष्ण को चोर, परस्त्री गामी, बहुपत्नीत्व, छल-कपट करने वाला जन हत्यारे के रूप मे चित्रित करके उनके पवित्र जीवन को दूषित किया गया है। अब यहा कृष्ण के तथाकथित कामी भक्तो के भी एक दो उदाहरण लीजिए—

गोपालकामिनी जारश्चरजारशिखामणि ॥ गो० सहस्रनाम १३७
साक्षाज्जारश्च गोपीना दुष्ट, परलम्पट ॥ ब्रह्मवैवर्तपुराण
ब्रजे वसन्ते नवनीत चोर गोपागनाना दुकूल चौरम् ।
श्रीराधिकाया हृदस्य चौर चौराग्रगण्य पुरुष नमामि ॥

उपर्युक्त श्लोक या श्लोकाशो का भावार्थ यह है कि ब्रजवासी गोपिकाओ के साथ जारकर्म (व्यभिचार) करने वाला, चोरों और जारकर्मियो का सरदार साक्षात गोपिकाओ के कामो और उनकी साडियो को चुराने वाला, दुष्ट और परस्त्री लम्पट, राधिका का हृदय का चोर, चौराग्रगण्य कृष्ण को हमारा नमस्कार हो। क्या ऊपर के वाक्यो से कृष्ण का गौरव बढ़ सकता है? क्या इस प्रकार के अश्लील कृष्ण चरित्र से सामान्य जनता किसी प्रकार की उत्तम शिक्षा ले सकती है? क्या सत्पुरुषो के जीवन का यही लक्षण है? महाभारत का सूत्रधार धवल यशस्वी श्रीकृष्ण का इतना भद्दा तथा अशोभनीय जीवन कदापि नहीं था। गीता के द्वारा परम ज्ञान एव आदर्शमय सदाचार का उपदेश देने वाले कृष्ण परस्त्री गमन आदि कुत्सित आचरण कैसे कर सकते थे। हम यहा पर गीता तथा महाभारत से दो उदाहरण उपस्थित करते हैं, जो कृष्ण के पवित्र जीवन को समझने के लिए पर्याप्त है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन ।
स यत्प्रमाण-कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥
—गी० ३-२१

श्रेष्ठ पुरुष जो जो आचरण करता है, अन्य लोग भी उसके अनुसार ही चलते है। वह पुरुष जो कुछ मान के चलता है, सामान्य लोग भी उसी का अनुकरण करते हैं।

देश की वर्तमान परिस्थितियो पर एक विचारपूर्ण विवेचन–

देश स्वातंत्रय, राष्ट्रीयता और नए संकट

(गताङ्क से आगे)

देश को खण्ड-खण्ड कर देने की नीति ने भारत देश को भी परोक्ष रूप से प्रदेशो मे बाट दिया। इन प्रदेशो का अग्रेजी मे नाम स्टेट है। स्टेट को मिलाकर 'भारत सघ' बना। इसका अनुभव मुझे दो बार हुआ मैं उत्तरप्रदेश का हू–उत्कल प्रदेश के श्री विश्वनाथ दासजी मेरे प्रदेश के राज्यपाल रहे। उनका मेरे ऊपर स्नेह अन्तिम दिवसो तक रहा। जब वे उत्कल प्रदेश के प्रथम अधिनायक बने १९४७ के बाद, तो उन्हे प्राइम मिनिस्टर कहा जाता था बाद मे प्राइम मिनिस्ट्री से उतारकर उनकी सज्ञा चीफ मिनिस्टर हुई। अभिप्राय यह राज्य माना गया, और ऐसे ही सब प्रदेशो को भी राज्य और इन प्रदेशो को 'पृथक् स्वायत्त' स्वीकार किया गया। सब प्रदेशो को विशेष नियम से एकसूत्र मे पिरोने के लिए भारत सघ की कल्पना की गयी।

सघ की कल्पना की एक दूसरी झलक मुझे प्रयाग मे १९५६ मे मिली। सन् १९५६ मे यूनिवर्सिटी के प्रांगण मे भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने दो भवनो का उद्घाटन (या शिलान्यास) एक साथ किया–विज्ञान परिषद भवन का और जे० के० इन्स्टीटयूट आव इप्लाइड फिजिक्स के भवन का। जिस भवन को सर पदमपत सिहानिया ने जे०के० ट्रस्ट के अनुदान से बनवाया था। इस इन्स्टीट्यूट के मुख्य द्वार पर जो सगमरमर की शिला थी इसमे जवाहरलाल जी को 'प्राइम मिनिस्टर आव दी रिपब्लिक आव इडियन यूनियन" अकित था। उस समय भी मेरा माथा ठनका था।

हम सम्भवतया अपने देश का नाम यूनाइटेड स्टेट् ऑव अमेरिका यू०एस०ए० की तर्ज पर रखने मे अधिक गौरव समझते थे। आज भी दक्षिण अफ्रीका मे "यूनियन ऑव साउथ अफ्रीका" नाम का सघ या गणतन्त्र है। हम भी अपने देश मे गणतन्त्र दिवस मनाया करते हैं। गण तन्त्र सघ, रिपब्लिक, और यूनियन शब्दो के भीतर विघटन की आस्था परोक्ष रूप से निहित है–यह नहीं भूलना चाहिये। ऐसा लगता है कि आजकल का युग ही गणतन्त्रों, सघ और रिपब्लिको का है। मेरे पास-पोर्ट पर स्पष्ट शब्दो मे अकित है–भारत गणराज्य, यह पासपोर्ट "भारत गणराज्य के राष्ट्रपति के आदेश से" दिया गया है गणराज्य के प्रेसिडेन्ट को 'राष्ट्रपति' कहना अनुचित है। इसे गण-प्रमुख, गणाध्यक्ष या गण-पति तो कह सकते थे, पर राष्ट्रपति नहीं। भारत 'राष्ट्र' नहीं है–गण-राज्य है। यह सदिग्ध है कि किन अर्थों मे 'राष्ट्र' शब्द देश और नेशन का पर्याय है और किन अर्थों मे यह शब्द अलग अर्थ रखता है। जब मुझे विदेशो मे यात्रा करनी पड़ती है, तो एक शब्द और सामने आता है-नेशनेलिटी या राष्ट्रीयता, जिसको मैं भारतीय" लिखकर व्यक्त करता हू।

कुछ भी क्यो न हो–भारत मेरा देश है, मेरा गणराज्य है, मेरा राष्ट्र है मैं भारतीय हू मेरे देश के दो ही नाम सविधान ने स्वीकार किये हैं–भारत और इण्डियन कालान्तर मे एक ही नाम रहना चाहिये 'भारत' एक बार स्नेह से मैंने श्रीमती गाधी के समक्ष सकेत से १९८३ मे यह आपत्ति की थी 'जय हिन्द' क्यो कहा, वे समझ गयीं कि जब देश का नाम भारत है, तो जय हिन्द कहना अनुचित है। उन्होंने सरल भाव से कहा–'नेता जी ने यह शब्द हमे दिया था, उसकी आदत पड़ी है।' याद रखना चाहिए कि नेता जी के समय देश का विभाजन नहीं हुआ था। कौन कह सकता है कि विभाजन न होता तो देश के तीन नाम होते–इण्डिया, भारत, और हिन्द या हिन्दुस्तान। यह भाषा की विडम्बना है कि भारत, हिन्द, इण्डिया, हिन्दुस्तान भारतीय, हिन्दी, (अर्थात् हिन्द वासी) हिन्दुस्तानी, इण्डियन ये शब्द साम्प्रदायिक नहीं माने जाते पर 'हिन्दु' शब्द साम्प्रदायिक माना जाता है।

– स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती –

गणतन्त्र द्रोह, राष्ट्रद्रोह या देशद्रोह ये तीनों शब्द पर्यायवाची ही मानने चाहिये। विधिवत निर्वाचित प्रधान मन्त्री और राष्ट्रपति न हिन्दुओ का प्रधान मन्त्री और न हिन्दुओ का राष्ट्रपति है–वह समस्त भारत वासियो का प्रधान मन्त्री या राष्ट्रपति है। उसे वैसा कहना भी गणतन्त्र द्रोह या राष्ट्रद्रोह है। अपने देश या राष्ट्र का सम्बन्ध विदेश के राष्ट्रो के साथ कैसा हो, इसका निर्णय करने का अधिकार देश की विधिवत बनी लोक सभा या राज्य सभा को है, न कि किसी एक प्रदेश अथवा किसी एक प्रदेश की प्रजा को जो प्रदेश केन्द्र शासन के विरोध मे अन्य विदेशों से अपनी गुटबन्दी बनायेगा, उसे विद्रोही गणप्रदेश कहा जायेगा। प्रत्येक गणराज्य की एक सेना, एक सिक्का, एक गणराज्यकोष बैंक, एक पोस्ट आफिस, एक रेल-तन्त्र और एक वायुयान तन्त्र होता है, और सबसे बडी बात तो एक वैदेशिक नीति होती है। जो गणराज्य की वैदेशिक नीति है, वही प्रत्येक इकाई राज्यो की गणनीति है। विदेश नीति मे प्रदेश स्वतन्त्र नहीं हैं। बगाल या बिहार, तमिलनाडु या गुज-रात किसी को यह अधिकार नहीं कि बगलादेश, नेपाल अरब, इग्लैण्ड, कनाडा या किसी विदेश से अपना सम्बन्ध 'केन्द्र के सम्बन्ध से पृथक् बनावें। ऐसा करना देशविद्रोह कहलायेगा। यही बात पजाब और कश्मीर के साथ भी लागू होती है।

राष्ट्रीयता की भावना का अन्त

१९४७ मे देश स्वतन्त्र हुआ। सबने मिलकर देश का सविधान बनाया। हमारा यह सविधान देश मे राष्ट्रीयता की भावना को अनुप्रा-णित नहीं कर सका। देश मे स्वाधीनता प्राप्त करने से पूर्व कुछ अनुचित नारे अग्रेजी सरकार के विरोध मे लगाये गए। अग्रेजों ने सूबों को शासन की सुविधा की दृष्टि से बनाया था। किन्तु हमारी राष्ट्रीय मांग भाषा के आधार पर सूबे होने चाहिये इस नारे पर आधारित की गई। हमने सोचा कि शायद यह माग ज्यादा तर्क सगत या सार्थक है। फल यह हुआ कि भारत को जनपद की भाषा के आधार पर बाटना आरम्भ कर दिया। हमारे हृदयो मे जनपदो की भाषा के प्रति ममता भी अग्रेजो ने ही पैदा की थी–नहीं तो समस्त भारत मे उच्च शिक्षा का माध्यम सस्कृत और फारसी थी। भाषा पर आधारित सूबो या प्रदेशो का निर्माण कितना भयावह हो सकता है, यह हमने पिछले दो वर्षों में पजाबी भाषी और हिन्दी सूबो के विवाद मे देख लिया है। १९४७ के बाद ही हमसे यह भयकर ऐतिहासिक भूल हो गई। अब तक भी हम बहुत सी जनपदीय भाषाओं को पृथक प्रदेश नहीं दे पाये हैं, यद्यपि उनकी मांग बराबर जारी है–जैसे मैथिली भाषा जनपदीय भाषाओं ने देश की किसी भी व्यापक भाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान देने मे सकोच किया है।

(क्रमश)

एक ज्वलन्त समस्या

हम कथनी को करनी में उतारें

(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, डी–१४–१६ माडल टाऊन दिल्ली)

अपने लेख मे लेखक ने जिस मूल त्रुटि की ओर आर्यजगत क ध्यान आकर्षित किया है, वह केवल विचारणीय ही नहीं है, अपितु उसे हमे दूर भी करना है। सन्यास लेने से पूर्व स्वामी जी का पजाब विश्वविद्यालय से विशिष्ट सम्बन्ध रहा है। प्रधानाचार्य होने के कारण शिक्षा जगत के वाह्याडम्बरो से वे भली भांति परिचित हैं और उसके निवारण के लिए उनके हृदय मे जो सच्ची तडप है, वह इस लेख मे स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। आर्य जनो को आगामी मास मे सभा द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह मे इसको निर्णयात्मक रूप देकर अपने आर्यत्व को गौरवान्वित करना चाहिए। 'बसन्त' सम्पादक

'आर्यमित्र' के २० जुलाई ८६ के अक मे सम्पादकीय के अन्तर्गत 'विचित्र परामर्श' शीर्षक से आपने सरकारी कर्मचारियो के लिये पेंट तथा टाई के पहनावे को अनिवार्य किये जाने की आलोचना की है और इसके लिये दून स्कूल मे शिक्षित लोगो को दोषी ठहराया । यह योजना अभी विचाराधीन है। परन्तु आर्यसमाज (डी०ए०वी० मैनेजमेंट) द्वारा सचालित स्कूलो मे यह बहुत पहले से हो रहा है। वहा लडको के लिये पेंट और लडकियों के लिये स्कर्ट पहनना अनिवार्य है। टाई तो दोनो को लगानी ही पडती है। न लगाने पर दण्ड मिलता है। डी० ए० वी द्वारा सचालित ऐसे स्कूलो की सख्या सैकडो मे है और वे देश भर मे फैले हुए हैं। उनकी देखा-देखी दूसरे लोग भी ऐसा करने लगे हैं। इन स्कूलो का सचालन करने वाले लोग दून स्कूल मे नहीं पढ़े हैं। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब व डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी, कार्यकर्त्ता प्रधान श्री दरबारीलाल जी, मन्त्री श्री रामनाथ सहगल आदि जितने भी लोग हैं, उनमे एक भी दून स्कूल या वैसे ही किसी अन्य स्कूल मे नहीं पढ़े हैं। वास्तविकता यह है कि ये लोग आर्य समाजी न होकर मेकाले के मानस पुत्र हैं। यही कारण है कि जब मै एक दयानन्द पब्लिक स्कूल मे गया तो बच्चो ने 'गुड-मार्निंग अंकिल' कह कर मेरा स्वागत किया। वेषभूषा गई तो गई, हमारी एक बात (नमस्ते) जिसे प्राय सबने अपना लिया था, वह भी जा रही है।

जीवन के व्यावहारिक पक्ष का मूल शिक्षा पद्धति मे है। महर्षि दयानन्द न इसके लिये तीन मूलभूत सिद्धात निर्धारित किये थे—

१– शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।

२– सहशिक्षा न हो।

३– विद्यालय ऐसे हो, जिनमे राजकुमार और दरिद्र की सतान एक साथ पढ सकें।

हम जगह जगह-दयानन्द या डी० ए० वी० इंगलिश मीडियम पब्लिक स्कूल खोल रहे हैं। क्या यह नाम ही घोषणा नही कर रहा कि हमने दयानन्दके तीनो सिद्धातो को रद्दीकी टोकरीमे फेंक दिया है। ५ से १० हजार रुपये तक रिशवत दिये बिना इनमे प्रवेश नहीं मिलता। डी० ए० वी० पर बल इसलिये दे रहा हू, क्योंकि आर्य समाज मे शिक्षा के क्षेत्र मे इसी का सबसे अधिक नाम और काम है। इन स्कूलो मे मुख्य अतिथि के रूपमे प्रतिवर्ष किसी अभिनेता या अभिनेत्री को बुलाया जाता है। प्रो० रत्नसिह जी इन स्कूलों के लिये नैतिक शिक्षा परामर्शदाता है। मैंने उनका ध्यान इन अनार्यजुष्ट गतिविधियों की ओर दिलाया। उनके प्रयत्न का यह परिणाम निकला कि जहा पहले लडकों के लिये टाई लगाना अनिवार्य था, अब लडकियो के लिये हो गया। जहा पहले एक वेश्या को आमन्त्रित किया जाता था, अब २-३ को बुलाया जाने लगा। जब सबसे श्रेष्ठ और ऊची समझी जाने वाली सस्था (कम से कम हमारी दृष्टि मे) आर्य समाज की यह स्थिति है तो भारत सरकार से हम किस मुह से शिकायत कर सकते है? मैंने प्रयास करके देख लिया है। अब यह बाढ़ रुकने वाली नहीं है। अब तो आर्य समाज मन्दिरो तक मे खुले आम मांस–मदिरा का प्रयोग होने लगा है। आज एक राधा स्वामी कह सकता है कि हमारे मे कोई शराबी या मासाहारी नहीं है। परन्तु एक आर्य समाजी इस बात का दावा नही कर सकता। जो समाज आज अपने आपको नहीं सभाल पा रहा वह ससार का उपकार क्या करेगा? आज कोई भला आदमी अपने आपको आर्य समाजी कहने मे सकोच करता है, क्योंकि वह झूठ, तिकड़म, झगडे, मुकदमे बाजी का पर्याय या प्रतीक बन कर रह गया है।

आज की आवश्यकता है, आर्य समाज के विस्तार को रोक कर उसे सकुचित करने की। उसमे ८०–९० प्रतिशत खरपतवार है जो इन के १०–२० प्रतिशत अच्छे पौधो को भी नहीं पनपने देती। बुद्धिजीवी, चरित्रवान् और चिन्तक वर्ग आर्य समाज से दूर होता जा रहा है। वर्तमान मे जीने के लिये हम आज सब कुछ करने को तैयार है, भविष्य की हमे चिन्ता नहीं। परन्तु 'परोक्षप्रिया हि देवा प्रत्यक्षद्विष'।

अपने हृदय की टीस भर मैंने कागज पर उडेली है। 'हित मनोहरिर च दुर्लभ वच'।

आर्य समाजें

शताब्दी पर ट्रैक्ट बांटे

डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के प० प्रकाशवीर शास्त्री नगर मे मनाये जा रहे विशाल स्तरीय आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी सम्मेलन के अवसर पर कुछ आर्य दानी महानुभावो ने सस्ते और उपयोगी प्रचार ट्रैक्ट बटवान की इच्छा व्यक्त की है श्री अर्जुनदेव महाला और श्री माधव सिह चौधरी की ओर से महर्षि दयानन्द कृत मन्तव्यामन्तव्य प्रकाश का वितरण किया जायेगा इसी प्रकार यदि कोई अन्य दानी सज्जन अथवा आर्य समाजें अपनी ओर से प्रचार पुस्तिकाए (ट्रैक्ट) या पोस्टर–पैम्पलेट आदि बटवाना चाहें तो उसकी व्यवस्था अभी स आरम्भ कर दें। ट्रैक्टस, प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक सभा, दयानन्द सस्थान वेद सस्थान अजमेर अथवा आर्य-प्रचार ट्रस्ट दिल्ली से उपलब्ध किये जा सकते हैं। समाजें यदि चाहे तो स्वय भी परिपत्र छपवा कर बटवा सकती हैं।

सभा मन्त्री

निर्वाचन

जिला आर्योप्रतिनिधि सभा कानपुर, देहात

प्रधान श्री प० देवीप्रसाद आर्य
मन्त्री श्री जयकरनसिह
कोषा० श्री प्रभुदयाल जी

आर्य समाज मोतिहारी पूर्वी चम्पारण (बिहार)

प्रधान श्री डा० शकरसिह
मन्त्री श्री रामलखनराम
कोषा० श्री चन्द्रदीप प्रसाद

वैदिक दृष्टिकोण

पितरों का वास्तविक श्राद्ध एवं तर्पण–जीवितों की सुसेवा

[प्रियम्वदा व्याकरणाचार्या पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी]

आश्विन कृष्ण पक्ष पितृपक्ष कहलाता है । इस पक्ष मे पौराणिकवर्ग ब्राह्मणो को भोजन व वस्त्र देकर मृतको के श्राद्ध तर्पण कर, आत्मतुष्टि का जो स्वाग रचता है, उसके ज्ञान लोचन खोलने के लिए यह आवश्यक है कि आर्य जन इस की वास्तविकता को समझें और पथभ्रष्ट व्यक्तियो का मार्गदर्शन कर अपने कर्तव्य का निर्वाह करें । –'वसन्त' सम्पादक

वेदानुमोदित भारतीय संस्कृति का हर पहलू वह समुज्ज्वल हीरा है जो काल की असंख्य परतों मे लिपटा हुआ भी अपनी शाश्वत दीप्ति से निरन्तर देदीप्यमान है । ऐसी महनीय संस्कृति मे पला मनुष्य स्वत ही प्रेम दया दाक्षिण्यादि गुणो से सुभूषित हो जाता है । जो संस्कृति, अज्ञानता से हुई क्षुद्र जीव हत्याओ का भी प्रायश्चित सिखाती हो वह जिन माता पिता आदि की गोद में जन्म लेकर हम अपना शैशव व्यतीत करते हैं, उनकी सेवा का मार्मिक उपदेश न दे यह कैसे सम्भव है ? यद्यपि इनके असंख्य उपकारो का प्रतिदान कोई पर्व या समय निश्चित कर नहीं किया जा सकता तथापि जैसे बहिनें मातायें 'रक्षाबन्धन' जीवित पुत्रकादि पर्वो पर भाइयो एव पुत्रो के दीर्घायुष्य हेतु विशेष अनुष्ठान एवं शुभ कामनायें करती हैं उसी रूप में यह 'पितृपक्ष' अपने वृद्ध आत्मीय जनो के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के लिये भारतीय परम्परा में सुनिश्चित किया गया है ।

एक स्थल पर गोपथ ब्राह्मण में कहा है–

एन पूर्वे वयसि पुत्रा पितरमुपजीवन्ति उपोत्तमे वयसि पुत्रान् पितोपजीवति ॥ गो० १ ४।१७॥

अर्थात् जब सन्तान शिशु के रूपमें होती है, तब माता पिता उनका पालन करते हैं और जब वही पुत्र बडे एवं समर्थ हो जाते हैं तो वे मातापिता का पालन करते हैं । वस्तुत शिशुवत् संरक्षणीय इस अवस्था में जब कि शरीर का अङ्ग अङ्ग शिथिल हो जाता है जो पुत्र माता पिता की प्रेम पूर्वक सेवा कर आशीर्वाद पा लेते हैं वे ही सच्चा श्राद्ध एवं तर्पण कर पाते हैं । एक ओर पाश्चात्य सभ्यता कहती है– 'सभी वृद्धो को 'ओल्ड हाउस' भेज देना चाहिए क्योकि वे समाज के निरर्थक अङ्ग हैं दूसरी ओर हमारी पावन संस्कृति कहती है– कि पितरो की नित्य चरण वन्दना से आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते हैं । वास्तव में जरा-जीर्ण होने पर भी इनके पास अनुभवो का महत्वपूर्ण संग्रह हुआ करता है जिनसे शिक्षा लेकर इस दुस्तर भवसागर को सुगमता से तैरा जा सकता है । आज का गृहस्थी वृद्धो की उपेक्षा कर रहा है, सयुक्त परिवार से वियुक्त होने के लिये व्याकुल है अत मानसिक क्लेशो से संत्रस्त है ।

पितर संज्ञा किनको ?

पितर शब्द पितृ शब्द का बहुवचनान्त रूप है अत 'पान्ति रक्षन्तीति पितर' इस व्युत्पत्त्यनुसार वे सभी पितर हुए जो हमारी किसी भी प्रकार की रक्षा करने में समर्थ हैं । पितृपक्ष में पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही इन तीन पीढ़ी के पितरो का ही श्राद्ध विधान है, क्योंकि इतने ही पितर हमे धर्मोपदेश देकर अधर्माचरण से अथवा धनादि द्वारा भौतिक कष्टो से बचा सकते हैं । इससे अग्रिम पितरो का जीवित रह पाना प्राय सम्भव नहीं । पितर, यह मृत वशजों को कोई रूढि संज्ञा नहीं जैसा कि आजकल समझा जाता है बल्कि पुत्र ही आगे चलकर (यौवनावस्था के पश्चात) पितर कहलाते हैं । इस विषय में "पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति" । यजुर्वेद २५।२२ का यह मन्त्रांश प्रमाणरूपेण द्रष्टव्य है । स्वर्गस्थ वशज तो इसी रूप मे पितर कहे जा सकते हैं वे हमारे पितर थे । वेदो के अनेकश मन्त्रो मे–

त आगमन्तु त इह श्रुवन्तु अधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् । [यजु १९।५७] पितर शुन्धध्वम् । [यजु १९।३६] पितर इस यज्ञिय बर्हि पर बैठें, हमे उपदेश दें, हमारी रक्षा करें भोजनोपरान्त हाथ धोयें आदि २ प्रार्थनायें की गई हैं । य सब जीवित पितर हो कर सकते हैं अत जीवितो का ही श्राद्ध किया जाये यही वैदिक परम्परा है । सम्भवत तभी ये हमारे वृद्ध जीवित पितर जो पदार्थ आसानी से खा सकते हैं जैसे– खीर, पूडी,भात मक्खन आदि कोमल पदार्थ देने की परम्परा आज भी चल रही है ।

पितरो के लिये कृष्णपक्ष ही क्यों ?

यह सब विदित तथ्य है कि दक्षिणायन मासो की अपेक्षा उत्तरायण अमावस्या की अपेक्षा पूर्णिमा रात्रि की अपेक्षा दिवस श्रेष्ठ एव शुभ सूचक होते हैं पुनरपि आश्चर्य है पितरों के लिए जो भी वार्षिक पाक्षिक आह्निक कृत्य निर्धारित किये गये सभी दक्षिणायन मास, कृष्णपक्ष,रात्रि अमावस्या आदि मे ही किये गये । शतपथ ब्राह्मण मे भी–

पूर्वाह्णो वै देवानां, माध्यन्दिना मनुष्याणाम्, अपराह्ण पितृणा तस्मादपराह्णे ददाति ॥ शत० ब्रा० २-४-२-८

यह कह कर पितरो का समय देवो के ठीक विपरीत सायकाल बताया है । कृष्णपक्ष दक्षिणायन आदि प्राकृतिक उपमाओ का रहस्यान्वेषण करने पर ऋषियो का यह उत्तमभाव परिलक्षित होता है कि– जैसे ज्येष्ठमास मे प्रचण्ड ताप से चराचर सृष्टि को सतप्त करने वाले सूर्यदेव भी दक्षिणायन मासो मे शिथिल पड जाते हैं या शुक्लपक्ष मे सब को आह्लादित करने वाले चन्द्रदेव भी कृष्णपक्ष मे क्षीण होने लगते हैं उसी प्रकार की क्षीणावस्था मे पितर लोग रहते हैं अत जीवन का पुन शुक्लपक्ष या उत्तरायण लाने के लिये अर्थात् उत्तम योनि पाने के लिए इस परिपक्वावस्था मे परमेश्वर का विशेषत चिन्तन मनन करते हुए शुभ कर्मों से कभी भी विरत नहीं होना चाहिए । सक्षेपत एतादृश उत्कृष्ट शिक्षायें ही इन उपमाओ मे निहित हैं ।

पन्द्रह दिवसीय परम्परा का प्राचीन स्वरूप–

इस पितृपक्ष की आधुनिक परम्परा का प्रचलन कब से हुआ यह सुनिश्चित कर पाना तो कठिन है पर इतना अवश्य है कि नैत्यिक पच महायज्ञो मे 'पितृयज्ञ' के रूप मे अति प्राचीनकाल से ही इसका अस्तित्व रहा है । इसके अतिरिक्त ब्रह्मचर्यादि चतुराश्रमो की व्यवस्थानुसार पितृपक्ष मनाने की भी प्राचीन प्रथा थी जो इस प्रकार द्रष्टव्य है–

वर्षा के महीनो मे वानप्रस्थी जन ग्रामो के निकट ही आकर जनता को धर्मोपदेशो से लाभान्वित करते थे वे इस आश्विन कृष्णपक्ष मे पुन. अपने वन्य कुटीरो की ओर प्रस्थान करते थे । इन वानप्रस्थी पितरो

[शेष पृष्ठ ११ पर]

महर्षि दयानन्द उवाच

मानव धर्म

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख-दुःख और हानि लाभ को समझें, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओ की, चाहे वे अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महा बलवान भी हो तथापि उसका नाश और अप्रियाचरण सदा किया करें, अर्थात्, जहा तक हो, वहा तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम मे चाहे उसको कितना ही दुःख प्राप्त हो, च हे प्राण भी जावें परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक कभी न होवें।

[स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश से]

शताब्दी समारोह के भव्य कार्यक्रम

१– वृहद भव्य शोभा यात्रा।

२– वृहद वैदिक यज्ञ।

–३ सभा के शत वर्षो के कार्य की प्रदर्शिनी आर्य समाजो की।

४– शास्त्रार्थों की गतिविधिया प्रदर्शित करने वाला उत्तर प्रदेश का विशाल मानचित्र।

५– आर्य वीरो का शौर्य प्रदर्शन।

६– कन्या गुरुकुल बड़ौदा की छात्राओ तथा अन्य गुरुकुलो के शिक्षार्थियों के साहसिक व्यायाम प्रदर्शन।

७– विद्वानो के सैद्धान्तिक व्याख्यान।

८– लागत मात्र पर वैदिक साहित्य का विक्रय।

–९ स्वामी दयानन्द जो तथा आर्य जगत के हुतात्माओ और क्रातिकारियो से सम्बन्धित चित्र प्रदर्शनियाँ।

१०– विभिन्न ज्ञानवर्धक एव रोचक कार्यक्रम।

इस शताब्दी समारोह मे भारत के अन्य प्रदेशो से ही नहीं वरन विदेशों से भी यथा मारीशस फिजी दक्षिण अफ्रीका, ट्रीडीनाड, इंगलैण्ड, इराक आदि से भी प्रतिनिधि आयेंगे और अपने देशों मे आर्य समाजों की गतिविधियों से अवगत करायेंग।

प्रदेश के समस्त जनपदों की आर्य समाजें सामूहिक रूप से बसों द्वारा १५ से १६ अक्टूबर के मध्य अपने जनपद से लखनऊ के लिए प्रस्थान करेंगी। बसें ओम् ध्वजों और मन्त्रों के पटों से सुशोभित की जाएगी और ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से मार्ग मे वैदिक धर्म का पुनीत प्रचार करते हुए जनता को आर्य समाज के सदेशों से अवगत कराती हुई आएगी। भाग लेने वालों की सख्या से सभा को तुरन्त जानकारी दें ताकि व्यवस्था मे सुविधा हो।

शताब्दी समारोह को कैसे सफल बनाएं ?

१– सभा द्वारा भेजे गए बड़े विज्ञापनों को अपने अपने नगर व ग्राम के मुख्य स्थानों जैसे बाजारों, चौराहों, बस अड्डों और रेलवे स्टेशनों जैसे महत्वपूर्ण स्थलों पर तुरन्त लगाएं ताकि जन-साधारण को इस विशाल आयोजन की जानकारी हो सके।

२– सभा द्वारा प्रकाशित विज्ञप्तियो को अपने-अपने क्षेत्र मे वितरित करें। एक भी विज्ञप्ति अवितरित न रहे।

३– सभा द्वारा भेजे गए कूपनों पर धन सग्रह का कार्य बिना किसी विलम्ब के प्रारम्भ कर दें। यदि आप प्रयास करेंगे तो कोई भी कूपन बिना बिक्री के शेष नहीं बचेगा।

४– समारोह मे सम्मिलित होने का दृढ़ निश्चय करें और उसके लिए अपने परिवार के सदस्यो तथा इष्टमित्रों को भी प्रेरित करें। लखनऊ आने के लिए अपना रेलवे आरक्षण अथवा बस आदि की व्यवस्था सुनिश्चित कर लें।

५– अपने-अपने आर्य समाजों के नाम पटो ओम् ध्वजो तथा मन्त्रों व आदर्श वाक्यों वाले पटो को साथ लाए। ताकि विशाल शोभा यात्रा उनसे सुसज्जित हो सके।

६– सुव्यवस्था बनाये रखने मे अपना पूरा सहयोग दें और स्वेच्छा से सेवा भाव से आगे आयें।

यह कभी मत भूलें कि यह शताब्दी समारोह आपका अपना समारोह है और तन-मन-धन से पूरा सहयोग देकर इसे सफल बनाना आपका पुनीत नैतिक कर्त्तव्य है। इसकी सफलता आपकी ही नहीं सम्पूर्ण आर्य जगत की सफलता है।

पुस्तक-परिचय

कल्प पुरुष दयानन्द

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' के दयानन्द परक उद्‌गारो का विशिष्ट सकलन।

प्रकाशक—वेद सस्थान, सी–२२ राजौरी गार्डन नई दिल्ली ११००२७

मूल्य— एक रुपये पचास पैसे।

इस १६ पृष्ठीय पुस्तक का प्रकाशन स्वामी दयानन्द सरस्वती की १६३ वीं जन्मतिथि भाद्रपद शुक्ला ९, २०४३ वि० (१२ सितम्बर ८६) के अवसर पर किया गया है। इस लघु पुस्तिका मे 'विदेह' जी ने अपने हार्दिक उद्‌गारो की जो मार्मिक अभिव्यक्ति की है, वह केवल पठनीय ही नहीं है, वरन् अनुकरणीय भी है। देव दयानन्द के ऋण से वही उऋण हो सकता है, जो उनका सच्चा अनुयायी बनकर वेदोद्धार का व्रत लें और विश्व का आर्य करण करने के लिए, वैदिक सस्कृति का प्रसार कर अपने जीवन की आहुति दें। —'वसन्त'

'योग चिकित्सा'

ससार की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा क्यो है ?

[लेखक—योगाचार्य श्री डा० रमाकान्त मिश्र एम० ए०, आत्मोदय योग विश्वविद्यालय, श्री रामकृष्ण पार्क, अमीनाबाद, लखनऊ]

रोग भी सृष्टि के आरम्भकाल से इस ससार मे चले आ रहे हैं। जब मनुष्य जाति ने इस ससार मे जन्म लिया तभी से उसे प्रकृति और पुरुष का सम्यक् ज्ञान न होने के कारण विश्व के दैहिक, दैविक, भौतिक तापो ने तथा नाना प्रकार के शारीरिक एव मानसिक रोगो ने घर दबोचा। उससे छुटकारा पाने के लिए उसने अनेक उचित तथा अनुचित उपाय अपनाये। उसने विवशतापूर्वक उन स्रोतो का भी सहारा लिया जिन्हे वह स्वस्थ अवस्था मे अपने से दूर रखता था। ये चार चिकित्सा के स्रोत हैं—१—वानस्पतिक जगत्, २—खनिज जगत्, ३—पशु जगत् और ४—स्वय रोगजनित विषय। आज भी मनुष्य के सामने यह समस्या है कि मानव शरीर की विभिन्न प्रणालियो मे औषधि का कहा तक हित-कर प्रभाव पडता है। इसका मुख्य कारण यही है कि रोग निदान, शरीर विज्ञान, अस्थि शास्त्र और जीवक्रिया—(फिजियो केमिस्ट्री), विषम रसायन शास्त्र का ज्ञान अभी तक पर्याप्त नहीं है। इसी अधूरेपन का परिणाम यह है कि श्रेष्ठ चिकित्सक भी ऊ चे दर्जे के प्रयोगाश्रयी नीम हकीम ही बन पाये हैं। तभी तो कहा गया है—'शतमारी भवेद् वैद्य सहस्रमारी चिकित्सक' नौसिखिया चिकित्सक औषधि का काम चलाऊ ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपनी मोटी बुद्धि से रोगियो पर औषधि जन्य विषयो का प्रभाव देखने सुनने मे जब तक सौ रोगियो का प्राणान्त नहीं कर लेता, वह सिद्ध वैद्य नहीं बन पाता। इस प्रकार से आज का सिद्ध वैद्य या डाक्टर तो अवश्य ही एक हजार से अधिक रोगियो को मार चुका होता है। क्योंकि नित्य नयी औषधियो का सही प्रभाव जानने के लिए उसके पास इससे अच्छा कोई दूसरा उपाय नहीं है।

रोग ऐसे व्यक्तियो का कभी पिण्ड नहीं छोडते जो साधारण सी अस्वस्थता पर डाक्टरो और उनकी औषधियो की शरण मे दौड पडते हैं ज्यो ही एक रोग उनका पीछा छोडता है, दूसरे रोग उन पर आक्रमण कर देते हैं। अन्त मे अकाल मृत्यु की दयनीय स्थिति तक उनके सामने मुख खोल कर खडी हो जाती है।

प्राचीनकाल से प्रबुद्ध मानव इन औषधियो के दीर्घकाल तक सत्रस्त करने वाले दुष्प्रभाव की चर्चा करते आये हैं। इससे छुटकारा पाने के लिए ऋषि, मुनियो और तत्ववेत्ताओं ने पशु पक्षी आदि इतर प्राणियो की ओर देखा कि वे किस प्रकार रोग से मुक्ति पाते हैं। उन्होने घरेलू कुत्ता, बिल्ली, गाय आदि पशुओ की ओर ध्यान दिया और देखा कि वे भोजन करना त्याग देते हैं और उपवास से स्वस्थ हो जाते हैं। कुत्ते भोजन त्याग कर धूप मे जाकर लेट जाते हैं। इससे वे नये सिरे से जान दार प्राणी बन जाते हैं। उपवास और सूर्य स्नान उन्हे स्वस्थ बना देता है। बिल्ली भी ऐसा ही करती है। भोजन त्याग कर घास के तिनके चबाती है फिर उन्हे उगल देती है और स्वस्थ हो जाती है। ज्वर से पीडित होने पर गाय घास खाना छोड देती है और किसी तालाब के पास शान्त भाव से लेट जाती है। वह उस तालाब से अधिक से अधिक ज पीनेल का उपाय करती है और जल पीकर स्वस्थ हो जाती है। इस प्रकार उपवास करते हुये अधिक से अधिक जल पीने से उसका स्वास्थ्य ठीक हो जाता है।

इन प्राकृतिक चिकित्सा के उपायो के मार्ग मे अनेक बाधायें भी हैं। अन्यथा प्राकृतिक चिकित्सा बहुत अच्छी चिकित्सा है। आज के भौतिक वादी युग मे अहिंसा, प्रेम और विश्वबन्धुत्व की भावना मानसिक जगत् मे तो अवश्य प्रिय बन सकी है परन्तु ससार मे आज तक ठोस रूप ग्रहण नहीं कर सकी है। बुद्धिवादियो की अहमन्यता, रूढ़िवादिता, सामन्ती तत्वो का व्यक्तिवादी दम्भ एव शक्तिमत अधिकारो की प्रबल भावना और व्यापारी वर्ग की निरन्तर बढ़ती हुई अधिकाधिक लाभ की लोभ वृत्ति इस दिशा मे सबसे बडे अवरोधक कारण रहे हैं। जिस प्रकार अहिंसा और विश्वबन्धुत्व आदि गुणो के साथ दुर्व्यवहार होता आया है वैसा ही कुछ प्राकृतिक चिकित्सा के ऊपर भी आसन्न सकट बना हुआ है।

आज के भोग प्रधान भौतिकवादी युग मे आँखो को चकाचौंध करने वाले प्रचार के धूमधाम से औषधियो के तथाकथित आविष्कर्त्ताओं ने अपने कर्णभेदी प्रचार के बल से सबसे निर्दोष प्राकृतिक उपाय को मानव दृष्टि से ओझल करते हुए दूर फेंक दिया है। वे अछूतों के तुल्य अग्रह-णीय से प्रतीत हो रहे हैं और पराभूत भाव से केवल उन औषधि प्रति-पादको का ही मार्ग अनुसरण करने से लगते हैं।

परन्तु योग चिकित्सा विश्व का स्वय सिद्ध ऐसा चिकित्सा चमत्कार है कि इसके अन्तर्गत पूर्णतया रोग मुक्ति, दुबारा रोगग्रस्त होने की सभावना का अन्त, शरीर की चतुर्मुखी ओजस्विता, बनी रहने का निय-मन और रोग निरोधक चमत्कार सन्निहित रहते हैं। औषधिया अस्थायी तौर पर रोग को दूर कर सकती हैं परन्तु वे अन्दर प्रविष्ट होकर अपने विष जन्य अनुवर्ती प्रभाव द्वारा स्वास्थ्य को आघात पहुचाती हैं। प्राकृतिक चिकित्सा के उपवास, जल चिकित्सा, मिट्टी का लेपन, धूप-स्नान आदि से भी रोग पराभूत हो जाते हैं और औषधियो के समान अनुवर्ती दुष्प्रभाव न तो प्रकट होते हैं और न दुबारा समुचित स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने मे कोई बाधा ही उपस्थित करते हैं। यह दूसरी बात है कि इस सत्व प्रणाली मे कुछ देर लगती है और औषधियो की सरल रीत की अपेक्षा इसमे विरक्ति व क्लेश पैदा करने वाली पद्धति का अनु-गमन करना पडता है। फिर भी इस प्राकृतिक चिकित्सा की अपनी सीमायें हैं। यह भी तात्कालिक रोग शान्ति प्रस्तुत कर सकती है, लेकिन भावी रोगो के प्रति प्रकृति अवरोधक शक्ति का सहज गठन कर सके, इस दृष्टि से यह शरीर के दुर्बल केन्द्रो को तत्काल सपुष्ट करने की इतनी शक्ति नहीं रखती, इसकी अपेक्षा केवल योग ही ऐसी चिकित्सा है जो सबसे अलग अपने को विशिष्ट रूप मे प्रमाणित करती है। यह जितनी क्षमता के साथ रोगो की चिकित्सा कर सकती है उतनी ही सब-लता के साथ सीमातीत रूप मे रोग निरोधक शक्ति भी शरीर मे उत्पन्न करती है। आसन, मुद्रा, प्राणायाम आदि यौगिक क्रियायें स्नायु-शिराओ, मॉसपेशियो, रक्त-नलिकाओ, ग्रन्थियो के साथ-साथ हृदय और फेफडो आदि को भी इस रीति से शक्तिवान बनाती है कि कोई भी रोग कीटाणु या रोग शरीर मे प्रविष्ट होने का रास्ता नहीं पा सकता। इसी कारण योग चिकित्सा ससार की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा प्रणाली है। हमारे पूर्वजों ने जो योग विज्ञान और दर्शन की खोज की है वह विश्व की स्वयसिद्ध एक चमत्कारपूर्ण चिकित्सा है, जो मानव जाति के लिए एक बहुमूल्य निधि है। आज से हजारो वर्ष पहले भारतीय योग तत्ववेत्ताओ ने कहा था—पृथ्व्यपतेजोअनिलखे समुत्थिते पचात्मकेयोग गुणे प्रवृत्तये।

न तस्यारोगो न जरा न मृत्युः, प्राप्तस्य योगाग्निमय शरीर भव-
तापेन तप्तानाम् योगोहि परमौषधम् ॥

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्यमित्र स्मारिका

शताब्दी समारोह के पुनीत अवसर पर आर्यमित्र का विशेषांक 'स्मारिका' रूप मे प्रकाशित होगा । आर्यजगत के विद्वानो से अनुरोध है कि वे वेदाधारित मार्ग प्रदर्शक तथा महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो को पूरा करने वाले प्रेरणाप्रद लेखो और कविताओ को प्रकाशनार्थ ३० सितम्बर तक अवश्य भेज दें ।

—सम्पादक मण्डल

सूचना

सार्वदेशिक सभा दिल्ली ने और भारत सरकार के स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना गृह मन्त्रालय ने हैदराबाद आर्यसमाज सत्याग्रह १९३८–३९ के लिए आवेदन पत्रो के पहुचने की अन्तिम तारीख ३० जून ८६ निश्चित की थी । इस सभा के कार्यालय मे, सूचना नहीं मिलने के आधार पर ३० जून के बाद भी अपने आवेदन पत्र कुछ सत्याग्रही भेज रहे हे । ऐसे आवेदको को भविष्य मे अपने आवेदन निर्धारित फार्म की दो प्रतियो मे भारत सरकार के गृह मन्त्रालय (स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना) लोकनायक भवन नयी दिल्ली को ही भेजना चाहिए ।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

स्वतन्त्र युवा सगठनो से सावधान !

सार्वदेशिक आर्य वीर दल ही शिरोमणि सभा द्वारा सस्थापित एकमात्र युवा सगठन है

मुझे अनेक पत्र और मौखिक समाचारो से ज्ञात हुआ है कि अनेक स्वयभू कार्यकर्त्ता सार्वदेशिक आर्य वीर दल के बढ़ते प्रभाव और अनुशासन से भयभीत होकर स्वतन्त्र सगठन के नाम से सिद्धान्त प्रियता की दुहाई और शिरोमणि सगठन के प्रति अपनी स्वेच्छाचारी मनोवृत्ति से अनर्गल प्रलाप करते हुए अलग-थलग नया सगठन बनाने की घोषणा कर रहे हैं । मेरा ऐसे बन्धुओ से अनुरोध है कि वह वर्तमान मे उभरती समस्याओ से निपटने के लिए सार्वदेशिक सभा द्वारा सस्थापित सार्वदेशिक आर्य वीर दल को ही अपना हार्दिक सहयोग दें और अग्रसर होकर सगठन को मजबूत बनाकर अपने कर्तव्य का पालन करे । आर्यसमाज के समर्पित पदाधिकारियो से मेरा अनुरोध है कि आयसमाज मन्दिर मे सावदेशिक आर्य वीर दल के अतिरिक्त अन्य किसी स्वतन्त्र युवा सगठन की शाखा नहीं लगाई जा सकती है क्योकि सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री गत सावदेशिक साप्ताहिक मे इस विषय पर स्पष्ट घोषणा कर चुके हे कि आर्य वीर दल ही सभा का वैध युवको का सगठन है ।

बाल दिवाकर हस
प्रधान–सचालक सावदेशिक आर्य वीर दल
नई दिल्ली

सावदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा का -

आर्य वीर महासम्मेलन

२७—२८ सितम्बर को रोहतक मे

सावदेशिक आय वीर दल हरियाणा का १० वा प्रान्तीय महासम्मेलन २७–२८ सितम्बर १९८६ दिन शनि, रविवार को छाटूराम पार्क, रोहतक मे हो रहा है ।

सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जो महाराज होंगे । इनके अतिरिक्त स्वामी डा० सत्यप्रकाश जी सरस्वती, स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक सभा), प० बालदिवाकर जी हस (प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल) प० शिवकुमार जी शास्त्री (भू० पू० ससद सदस्य)' प्रो० शेरसिह जो (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा), डा० वेद प्रताप जी, वैदिक (पी० टी० आई० भाषा), डा० रामप्रकाश जी (चण्डीगढ), श्री चन्द्रप्रकाश स ा.र्यो एव प० बेगराज जी बेग आदि विद्वान् पधार रहे हैं ।

शनिवार २७ सितम्बर को २-०० बजे विशाल शोभा यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरेगी जिसमे हजारों आर्य वीर पूर्ण गणवेश मे तथा प्रान्त भर से आर्य प्रतिनिधि भाग लेंगे ।

आर्य वीर सम्मेलन, व्यायाम प्रदर्शन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आदि कार्यक्रम इस सम्मेलन के विशेष कार्यक्रम होगे ।

रोहतक नगर को दुल्हन की तरह सजाया सवारा जा रहा है । देश भर के आर्य प्रतिनिधियो के इस सम्मेलन मे भाग लेने की सम्भावना है।

सम्मेलन के सयोजक श्री जगदीश मिश्र आय तथा स्वागताध्यक्ष श्री राममेहर जी एडवोकेट रोहतक होगे ।

भोजन तथा निवास की नि शुल्क सुविधाजनक व्यवस्था कर दी गई है । आर्य विद्वानो के सन्देश सुनने तथा आर्य सगठन शक्ति का परिचय देने के लिए रोहतक पहुचें ।

अजीत कुमार आय
मन्त्री–आर्य वीर दल हरियाणा

पितरो का वास्तविक श्राद्ध एव तपण जीवितो की सुसेवा

[पेज ७ का शेष]

को यह विदाई को क्रिया हो पितृ श्राद्ध एव तपण कहलाती थी।

'श्रद्धया क्रियते यत् तत् श्राद्धम्' एव तृप्यन्ति तपयन्ति यं पितृन् तत्तर्पणम्'। इन कर्मों मे पूर्ण श्रद्धा तथा पितरो को तृप्त करने की भावना विद्यमान है। तभी इसके प्रतीक स्वरूप बाई ओर (जिधर हृदय होता है) यज्ञोपवीत धारण करके सभी ग्रामवासी एव आत्मीय-जन स्वधा-अन्न (स्वेन दधाति शरीरम् इति स्वधा) पिण्ड(पिडि सघाते धातु से निष्पन्न) के रूप मे अर्थात् प्रचुर मात्रा मे भेंट करते थे, जिससे वष पर्यन्त ये पितर अन्नादिकी चिन्ता से निश्चिन्त होकर अपनी साधना मे तल्लीन रहें। इस श्राद्ध एव तर्पण का अपर नाम 'पिण्डदान' एव 'पितृविसर्जन' भी दिया जा सकता है।

उपसहार

भारतीय जनमानस मे जब से ये धारणायें बद्धमूल हुई कि 'श्राद्ध देने से मृतात्मा पिशाच प्रेतादि योनियो से मुक्त हो जाता है, तथा अमावस्या के दिन बुभुक्षित पितर वायव्य रूप धारण कर अपने पुराने निवास के द्वार पर आते है' आदि २ तब से जीवित रहते तो मातापिता अन्न से वञ्चित रहने लगे मृत पितरो का ही श्राद्ध तर्पण चल पड़ा पर हम तनिक बुद्धि पूर्वक विचार करें कि इतनी विशाल सृष्टि के सचालक प्रभुदेव जिनके भण्डारे मे अनन्त जीव (मानवेतर योनियो के पितर भी) भोजन पाते हैं तो वहा यह हमारी व्यवस्था अकिञ्चितकर नहीं है क्या? कुछ क्षणो के लिए हम मान भी लें कि पितर वायव्य शरीर धारण कर अपने पुराने निवास स्थान पर उड कर आ गये तो शङ्का यह होती है कि इस जन्म मे जिन गृहो मे पितरो ने जन्म लिया है वहा २ से उन सभी को अपने पिछले जन्म वाले घरो मे चले जाने के कारण अमावस्या के दिन सहसा अदृश्य हो जाना चाहिए? पर आज तक ऐसी घटना हमारे परिवारो मे नहीं घटी समाचार पत्रो द्वारा भी नहीं सुनी गई और फिर जब वे इस समय वायव्य शरीर मे हैं तो उनका भक्ष्य पदार्थ वायु है अन्न तो नही! फिर हम अन्न क्यो भेंट करें?

इससे पता चलता है कि ये सब पुराणो की कपोलकल्पित गप्पे हैं, जिनका कोई सिर पैर नही हैं। पुराणो का यह कथन भी बुद्धिसगत नहीं कि 'श्राद्ध न करने से पिता को सद्गति नहीं मिलती' अर्थात् पिता के दुष्कर्म सुकर्म मे परिणत हो जाते हैं, यत 'अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्मशुभाशुभम्,परमेश्वर के इन अटल नियमो को जब चक्रवर्ती सम्राटभी नहीं टाल सकते तो साधारण जनो का सामर्थ्य ही क्या। पुराणो की बातें मानने पर तो कोई भी पापाचरण से भयभीत नहीं होगा क्योकि पुत्र के श्राद्ध करने से पिता की मुक्ति मिल ही जाती है। इस प्रकार आज भारतीय सस्कृति का समुज्ज्वल रूप जानने के लिये हमें पाखण्ड रूपी निविड शैवाल जाल का निवारण करना ही होगा, तभी गृहकलह आदि पारिवारिक या सामाजिक समस्याओं का उचित निदान हो सकेगा।

[पेज ६ का शेष]

योग चिकित्सा

अर्थात् ध्यानावस्था मे जब पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु के पांचों तत्वो के गुण योगाग्नि की शक्ति से नियन्त्रित हो जाते हैं तब योग चिकित्सक, योग साधक के शरीर मे कोई रोग नहीं रहता, वह न बुड्ढा होता है और न मरता है। उसके स्थूल शरीर पर विवेक का नियन्त्रण हो जाता है। यह स्वत हो जाता है, इसके लिए कोई विशेष साधना नहीं करनी पड़ती है।

इसका यह अभिप्राय नहीं कि योग चिकित्सा औषधि चिकित्सा के विरुद्ध है। योग औषधि चिकित्सा को भी एक पाच सिद्धियो मे से सिद्धि मानता है। परन्तु समाधि योग चिकित्सा सर्व श्रेष्ठ चिकित्सा है। हमे इसे ठीक से समझने की और करने की आवश्यकता है जिससे कि ससार के सभी रोग शांत हो सकें।

शताब्दी अवसर पर समाजें अपना उत्सव स्थगित रखें

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का शताब्दी समारोह दिनांक १७ से २० अक्टूबर ८६ तक ससमारोह लखनऊ मे मनाया जाना है।

प्रदेश की समस्त समाजों से अनुरोध है कि वे शताब्दी समारोह की सफलतार्थ अक्टूबर मास मे अपने वार्षिकोत्सव आयोजित न करें। यदि किसी समाज ने तिथियां निश्चित कर ली हो तो उन्हें आगे के लिए स्थगित करें।

शताब्दी समारोह की सफलता प्रदेश के समस्त आर्य जनो के सहयोग पर ही निर्भर करती है। कृपया तन मन धन का सम्पूर्ण योग दें।

मनमोहन तिवारी मन्त्री

ग्राम धुरखी मे वेद प्रचार

ग्राम धुरखी [केसर गज तहसील, बहराइच जनपद] में श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' वेदवारिधि तथा भजनोपदेशक श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र द्वारा १०-६-८६ को पधार कर १२-९-८६ [जन्म दिवस महर्षि दयानन्द] प्रात तक ठहर कर वेद प्रचार किया गया। दिनाक ११-९-८६ को श्री शिवकुमार सिंह 'रयकवार' [जिन्होने इस वेद प्रचार का समस्त आयोजन और व्यय वहन किया था] उनके पुत्र का चूड़ कर्म सस्कार बृहत वैदिक यज्ञ के साथ वेदरीत्यानुसार श्री 'वसन्त' जी के द्वारा सम्पन्न हुआ तथा उसके उपरान्त सह प्रीतिभोज हुआ। रात्रि ७ से ११ बजे तक श्री ठाकुर प्रसाद जी का भजनोपदेश तथा श्री 'वसन्त' जी का वेदोपदेश हुआ। इसमे धुरखी के समीपस्थ अन्य ग्रामवासियों ने भी भाग लिया। समारोह के अन्त तक भारी उपस्थिति रही। प्रतिदिन सभा के शताब्दी समारोह की विज्ञप्तियां कुण्डासर तथा केसरगज नगर व अन्य ग्रामो मे लगाई गई। धुरखी ग्राम[केसरगज तहसील]से हुजूरपुर मार्ग से लगभग दस किमी पर स्थित है। ८ किमी की सड़क के उपरान्त एक नाले को नौका के द्वारा पार करके दो किलोमीटर पगयात्रा करनी पड़ती है। इस उत्साह पूर्वक कार्यक्रम के उपरान्त भविष्य मे आर्य समाज की स्थापना कर वैदिक प्रचार किया जायगा। अभी केवल पूर्णिमा और अमावस्या को वैदिक सत्सग आयोजित होते हैं तथा विभिन्न अवसरों पर वैदिक सस्कार कराए जाते हैं। —सवाददाता

शोक सँवेदना

कानपुर के कर्मठ कार्यकर्ता, १५ वर्षों से इलाहाबाद कमीश्नरी के उप सचालक आर्यवीर दल, सादा जीवन उच्च विचार तथा धुन के पक्के, लगनशील आर्यवीर, पुरोहित, मास्टर श्री नवल किशोर जी आर्य मेस्टन रोड आर्य समाज, कानपुर १९ अगस्त को दोपहर बाद इस दुनिया से चल बसे। वे अविवाहित थे। पैदल चलकर गाव-२ जाकर आर्यवीर दल का प्रचार व शिविर लगाते थे। अभी मैं उनके सम्मान करने की योजना बना रहा था कि उनका देहावसान हो गया। आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश की यह सभा तथा मैं परमात्मा से दिवगत आत्मा की सद्गति व उनके शोक सतप्त आर्य परिवार के धैर्य व शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

देवव्रतसिंह
अधोष्ठाता आर्यवीर दल, उत्तर प्रदेश

'आर्य्यमित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
भा० भाद्रपद ३०
आश्विन कृष्ण ३
रविवार, २१ सितम्बर १९८६ ई०

ओ३म्
आर्य मित्र
उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

शताब्दी समारोह

की

शोभा यात्रा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के शताब्दी समारोह की भव्य शोभा यात्रा दिनाक १८ अक्टूबर १९८६ दिन शनिवार दोपहर १ बजे प्रकाश वीर शास्त्री नगर (डी० ए० वी० कालेज) लखनऊ से निकलेगी अत समस्त आर्यसमाजो से अनुरोध है कि अपने-अपने नामपट, बैनर इत्यादि के साथ शोभा यात्रा मे सम्मिलित होकर इस आयोजन को सफल बनायें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

शताब्दी समारोह में

विद्वान, महात्मा, राजनताओ के पधारने की स्वीकृति

शताब्दी समारोह मे दिनाक १७ से २० अक्टूबर १९८६ तक विभिन्न सम्मेलनो के आयोजन किये गये है जिसमे देश के बडे - बडे महात्मा विद्वान्, सन्यासी, राजनयिक नेता पधार रहे है। निम्न विद्वानो की स्वीकृति आ चुकी है। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली, श्री राम चन्द्र राव वन्दे मातरम्, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती कुलपति गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ, महात्मा दयानन्द अध्यक्ष तपोवन आश्रम देहरादून, श्री उत्तमचन्द्र शरर, श्री रामानन्द शास्त्री पटना, प० रुद्रदत्त शास्त्री, श्री बलदेवसिह आर्य मन्त्री उ० प्र० सरकार, श्री हुकुमसिह राज्य मन्त्री उ० प्र० सरकार, श्रीमती स्वरूप कुमारी बक्शी उ०प्र० सरकार आदि।

—सभा मन्त्री

विज्ञप्ति

समस्त शिक्षण सस्थाओ के अधिकारी गण से अनुरोध है कि जिनके पास बैंड, भजन मण्डली, लाउडस्पीकर, वाहन आदि है वे पूरी साज-सज्जा सहित शताब्दी समारोह मे पधारने की कृपा करें।

आवास भोजनादि की सुव्यवस्था की जा सके इसलिए पूर्व से ही सभा कार्यालय को सूचित करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

श्री पूर्णचन्द्र गुप्त पत्रकार दिवंगत

दैनिक जागरण पत्र के सस्थापक सचालक श्री पूर्णचन्द्र गुप्त का ७५ वर्ष की अवस्था मे दिनाक १५—९—८६ को हृदयगति रुक जाने से मेरठ मे निधन हो गया। उनके निधन से एक ओजस्वी पत्रकार कर्मठ आर्य सेनानी की हानि हुयी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी एवं मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी एव 'आर्यमित्र' परिवार ने दिवगत को शान्ति तथा शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सम्वेदना व्यक्त की है।

शताब्दी समारोह को आयोजित करने के लिए लखनऊ नगर मे व्यापक तैय्यारियो की रूपरेखा

१—समारोह मे पधारने वाले व्यक्तियो के मार्ग दर्शन के लिए रेलवे स्टेशनो और बस अड्डो पर स्वयसेवको की व्यवस्था।

२—डी० ए० वी० कालेज मे स्थापित होने वाले श्री प्रकाशवीर शास्त्री नगर मे जनपदो के आधार पर आवास की व्यवस्था।

३— या वापसी यात्रा के लिए रेलवे टिकटो के केन्द्रो की स्थापना।

४—पाच विशाल भोजन मडप, जिनमे एक साथ दस हजार व्यक्ति भोजन कर सकेंगे।

५—कार्यकर्त्ता व्यवस्था तथा पूछताछ कार्यालय, जहा शताब्दी की पूर्ण जानकारी उपलब्ध रहेगी।

६—विशाल ऐतिहासिक शोभा यात्रा जिसमे हाथियो, ट्रको, जीपो, मोटर साइकिलो, स्कूटरो, ट्रैक्टरो, बैंड बाजो, लाउड स्पीकरो आदि की पूर्ण व्यवस्था रहेगी।

७—आर्य वीर दल तथा आर्य कुमार सभा के गणवेशधारी २,००० स्वयसेवक सुव्यवस्था और सुरक्षा के लिए।

८—वैदिक साहित्य, कैसटो तथा अन्य आवश्यकताओ के लिए दुकानें।

९—वृहद् वैदिक यज्ञ के लिए भव्य यज्ञशाला तथा विभिन्न सम्मेलनो के विशाल मडप।

१०—निरीक्षण समिति के सदस्यो द्वारा सब व्यवस्थाओ का सतत निरीक्षण ताकि किसी को कोई असुविधा न हो।

समारोह मे एक लाख व्यक्तियो के पधारने की सम्भावना।

ऐसा स्वर्णिम अवसर कोई आर्य न चूके।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप मे सब्बरवाल प्रिन्टिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ — घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

भा० आश्विन ६, आश्विन कृष्ण १०, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक २८ सितम्बर १९८६

प्रभु की अमृत वाणी–

आगे बढ़ो ! विजय प्राप्त करो।

प्रेता जयता नर इन्द्रो व शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ।।

[ऋ० १० । १०३ । १३, यजु० १७ । ४६, साम०१८६२, अथर्व० ३ । १९ । ७]

(नर) नरो ! पुरुषार्थियो ! कर्मशीलो ! (प्र+इत) प्रस्थान, प्रयाण करो, आक्रमण करो आगे बढ़ो [किस निमित्त] (जयत) जयशील होने के लिए, विजय सम्पादन करने के लिए(इन्द्र व शर्म यच्छतु) इन्द्र तुम्हें शर्म प्रदान करे (व बाहव उग्रा सन्तु) तुम्हारी भुजाए उग्र हो [तुम] (यथा) यथावत् नितान्त तर्वत (अनाधृष्या) अपराजेय, अदम्य, अधर्षणीय (असथ) रहो ।

वैदिक धर्म के अनुयायी पुरुषार्थी कर्मशील और उत्साही होते हैं। उनमे न तो प्रमाद होता है, न ही आलस्य और न ही कोई निराशा। वे सदैव आशावादी, उत्साही और नित्य नवीन उमगो को सजोए हुए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे अग्रणी होकर सतत आगे बढ़ते हैं। नर वही होते हैं जिनमें नरत्व होता है और यह नरत्व उनके कार्यों मे प्रतिलक्षित होता है।

आर्यों ने इस नरत्व को धारण कर इस धरती पर सर्वदा अपना कमाल और जमाल दिखलाया है। आर्य कभी घुटनो मे सिर रखकर निराशाओं से आच्छादित होकर रुदन नहीं करते। वे सजग होकर उत्साह और उमग को लिए हुए, घरो से निकल कर प्रयाण करते हैं। उनका प्रस्थान आगे बढ़ने के लिए होता है, पीछे हटने के लिए नहीं और उसका एकमेव लक्ष्य होता है विजय प्राप्त करना, अपने मन्तव्यो को पूरा करना।

नरत्व को प्राप्त आर्य प्रभु निष्ठ होते हैं। उन्हे परमात्मा पर पूर्ण आस्था होती है। जीवन मे विजयी होने के लिए जिस धैर्य्य दृढ़ता और स्थिरता की आवश्यकता होती है, उनका दाता और प्रदाता वे केवल सर्वशक्तिमान परमात्मा को मानते हैं। प्रभु ही उनका 'युज्य' और 'युवा' सखा होता है जो उन्हें सतत सशक्त बनाता है, उनकी भुजाओं को उग्र बनाता है और वे जीवन के प्रत्येक सघर्ष मे, चाहे वह व्यक्तिगत जीवन का हो, पारिवारिक, सामाजिक अथवा राष्ट्रीय हो, सदैव विजयश्री प्राप्त करते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह जो १७, १८, १९ व २० अक्टूबर १९८६ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के प्रकाशवीर शास्त्री नगर मे सम्पन्न होने जा रहा है, ऐसी दिव्य प्रेरणाओ को देने के लिए आयोजित किया गया है। विनाश के कगार पर खड़े विश्व का मार्ग दर्शन करने लिए आर्यों को यहा एकत्रित होकर अपनी विराट शक्ति का परिचय देना है–

तुम सबल उठो हे आर्य वीरो ! जगती के तूफानों मे ।
मानवता का गौरव रखने बढ़े चलो मैदानो मे ।।
निश्चित होगी विजय तुम्हारी, धर्म के इस पावन रण मे ।
प्रबल प्रवाह नहीं रुकने हैं, धरती के सीमित प्रागण में ।
विजय पताका फहराने को, बढ़े चलो मैदानो मे ।।

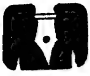
—'वसन्त'

सदस्यता शुल्क	
आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

प्रधान सम्पादक–
मनमोहन तिवारी

सम्पादक मण्डल–
विक्रमादित्य 'वसन्त' 'वेद वारिधि' — आचार्य रमेशचन्द्र एम ए. — आचार्य देवव्रत अवस्थी

वर्ष ८९
अङ्क ३९



सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार २८ सितम्बर १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

पितृ न् तर्पयत

'पितृ न् तर्पयत' (यजु-२।३४) इस मन्त्रांश का अर्थ है—पिताओ को तृप्त करो। आश्विन मास का कृष्ण पक्ष पितृपक्ष के रूप मे मनाया जाता है। भाद्रपद मास की पूर्णिमा से आश्विन मास के पूर्ण कृष्णपक्ष तक अर्थात् १६ दिनो तक हमारा पौराणिक वर्ग इन दिनो 'श्राद्ध तर्पण' के नाम पर मृतको की सद्‌गति के लिए ब्राह्मणो को भोजन कराता है, दान दक्षिणा देता है और इन कृत्यो से वह आत्मतुष्टि कर लेता है कि उसके इस कर्म से उसके पितर अर्थात् पिता, माता, पितामह, पितामही आदि तृप्त हो जाते हैं और इस भांति पितृ ऋण से उन्मुक्ति हो जाती है। आर्य समाज मृतको के नाम पर होने वाले इन श्राद्ध कर्मों को अन्धविश्वास, और अज्ञान की संज्ञा देता है और वेदानुसार प्रेरणा देता है कि जीवित माता पिता, दादा दादी आदि की सेवा शुश्रूषा करना ही हमारा वास्तविक कर्त्तव्य है और इन जीवितो की सुसेवा करना ही श्रद्धा है। जीवितो के प्रति अपने उत्तरदायित्वो और कर्त्तव्यों का निर्वाह करना ही पितर तर्पण है और उनके ऋण से उन्मुक्त होना है।

'पितृ' का अर्थ है पालन पोषण और रक्षा करने वाला। पितृ शब्द का बहुवचन है 'पितर'। अत पिता, पितामह, प्रपितामह तथा गुरुजन, आचार्य गण, ये सब हमारे पितर हैं। इन सबको तृप्त करना ही वास्तविक तर्पण है, जिसे अज्ञानवश हम विस्मृत करके, जीवितो की उपेक्षा कर मृतको के नाम पर आडम्बर रचते हैं। आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि आज का सुशिक्षित वर्ग भी आत्मना इसे अस्वीकार करते हुए भी, धर्म के नाम पर इस लकीर को पीट कर अपनी रूढ़िवादिता का परिचय देता है। यह जानते हुए भी कि मृतको के नाम पर ब्राह्मणो को दिये गए भोज, वस्त्र धन आदि उनके पितरो के पास कदापि नहीं पहुच सकते, इस अन्धविश्वास से मुक्त होने मे यह वर्ग अपने को असमर्थ पाता है।

वेद इस सदभ मे हमारा माग दशन करते हुए कहता है—

अत्र पितरो मादयध्व यथा भागमा वृषायध्वम्।
अमीमदन्त पितरो यथाभागमा वृषायिषत ॥

[यजु० २।३१]

अर्थात् (पितर) पिताओ (अत्र) यहा (एवयध्म्) तृप्त होओ ओर (यथा+भागम्+आ वृषयध्वम्) यथा भाग का पूर्णरूपेण सेचन करो। पिताओ ने जब इस प्रार्थना को स्वीकार किया तो (पितर अमीमदन्त) पिताओ ने तृप्त किया और (यथा भागम्) आ अवृषायिषत) यथा भाग का आ सेचन किया।

हमारे समस्त सम्बोधन जीवितो के प्रति होते हैं मृतको के प्रति नहीं। गृहस्थाश्रम मे जो पितृजन, गुरुजन, आचाय जन अपनी सतति का सुनिर्माण करते है, उनकी सतति ही अपनी सुसेवाओ से इन पिताओ को तृप्त करती है, आनन्दित करती है और उनकी सुसेवाओ से तृप्त होकर जब पितृजन अपना हार्दिक आशीर्वाद देते हैं तो उनकी सतति सम्यक् रूप से फूलती और फलती है।

ऐसे ही पितरों के लिए अनेक विशेषणो से युक्त करके कहा गया है "नमो व पितरो रसाय, नमो व पितर शोषाय, नमो व पितरो जीवाय, नमो व पितर स्वधायै, नमो व पितरो घोराय, नमो व पितरो मन्यवे, नमो व पितर पितरो नमो व गृहान् न पितरो दत्त सतो व पितरो देष्मैतद् व पितरो वास" (यजु २।३२) अर्थात् वे पिता जो रस आनन्द दाता है, जो निर्दोष हैं, मानवता से ओत-प्रोत हैं, जीवित हैं, घोर पुरुषार्थी हैं, मननशील है, परोपकारी है उनके प्रति ही हम नमनीय होकर भोजन वस्त्रादि से श्रद्धापूर्वक सेवा करते है ताकि वे दीर्घ काल तक नीरोग रहे, स्वस्थ रहे, सुप्रसन्न रहें और अपनी सततियो को अपने आशीर्वाद और उपदेशो से उपकृत करते हुए उन्हे सन्मार्गी बनाए रखें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इन पितरो को पूजनीय देवो की संज्ञा देते हुए कहा है—"देवपितृ कार्याभ्या न प्रमदितव्यम्। मातृ देवोभव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव। यान्यन वद्यानि कर्माणि तानि से वितव्यानि नो इतराणि। यान्यस्माक सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।

"अर्थात् देव जो विद्वान लोग और पितृ अर्थात् ज्ञानी लोगो की सेवा और सग से विद्या के ग्रहण करने मे आलस्य वा प्रमाद कभी करो। माता, पिता, आचार्य अर्थात् विद्या के देने वाले, और अतिथि जो सत्य उपदेश करने वाले विद्वान पुरुष है, उनकी सेवा मे आलस्य कभी मत करो। ऐसे ही सत्य भाषणादि शुभ गुणो और कर्मों ही का सदा सेवन करो किन्तु मिथ्या भाषणादि को कभी मत करो। माता, पिता और आचार्य आदि अपने सन्तानो तथा शिष्यो को ऐसा उपदेश करें कि हे पुत्रो व शिष्य लोगो ! हमारे जो सुचरित्र अर्थात् अच्छे काम हैं, तुम लोग उन्हीं को ग्रहण करो किन्तु हमारे बुरे कामो को कभी नहीं।"

महर्षि के उद्‌गारो से स्पष्ट है कि पितरो ओर सतानो के पारस्परिक क्या कर्त्तव्य हैं जिनका उन्हे निर्वाह करना है। यदि किसी व्यक्ति के पितर मदिरा पान करते है, अफीम खाते है, गाजा चरस पीते हैं अथवा अन्य मादक द्रव्यो का प्रयोग करते हैं तो उन मृतको के प्रति अन्ध विश्वास के कारण श्राद्ध करने वाले भी इन पदार्थों का उनकी तृप्ति हेतु ब्राह्मणो को सेवन नहीं कराते, उसी भाति हमे भी जीवितो के धार्मिक आदर्श काय कलापो को जीवन मे अपनाना है, दुरिताओ, दोषो, दुर्गुणो तथा दुर्व्यसनो को नहीं।

आर्य जगत के विद्वानो ने सदैव वेद की सत्य विद्याओ का प्रसार किया हैं, कर रहे हैं और करते रहेगे। अज्ञान और अविद्या के अन्धकार को प्रभु के दिव्य ज्ञान प्रकाश से दूर करना ही आय विद्वानो का पुनीत कर्त्तव्य है। सगठित रूप से किया हुआ सद्‌प्रयास ही अन्धकार मे भटकते हुए बहुसख्यक जन समुदाय का कल्याण करेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने अपने १०० वर्षों के जीवन मे इस अविद्या के तिमिर को दूर करने के लिए सतत प्रयास किया है। विद्या की वृद्धि की है और अविद्या का नाश किया है। सभा के अनेक वरिष्ठ महानुभावो, विद्वानो प्रचारको और सन्यासियो ने इस पावन कार्य मे अपने पावन जीवनो की आहुतिया दी हैं, जिसकी पूर्ण जानकारी शताब्दी समारोह के शुभ अवसर पर प्रकाशित शतवर्षों के सभा इतिहास से ज्ञात हो जाएगी पर केवल स्वर्णिम अतीत के गौरव गान से ही अभीष्ट की सिद्धि नही होगी। आज युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि प्रदेश के समस्त वैदिक धर्मी, आर्य नर-नारी इस समारोह मे एकत्रित होकर, प्रचार की सशक्त भावी रूपरेखा बनाए और महर्षि दयानन्द ने इस प्रदेश की नगरी हरिद्वार मे जिस पाखण्ड खण्डिनी पताका को पाखड निवारणार्थ फहराया था, उस पताका को हम प्रदेश के नगर नगर मे, ग्राम-ग्राम मे फहराए। उस महान ऋषि के ऋण से उन्मुक्त होने का यह एक सुअवसर आया है जिसे हम कदापि न चूकें। तथास्तु।

—'बसन्त'

हिन्दी-दिवस-राष्ट्रभाषा के सम्मान का संकल्प दिवस

(इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश)

लगभग १६० वर्ष पूर्व गुजरात मे एक युगदृष्टा का जन्म हुआ। उसकी मातृ भाषा गुजराती थी और वह सस्कृत का प्रकाण्ड पण्डित था। हिन्दी बोल नहीं सकता था। परन्तु जब उस महान् पुरुष ने वेद का प्रचार प्रारम्भ किया तब बडी कठिनाई उसके सामने आई। जन-२ मे वेद का प्रचार सस्कृत भाषा के माध्यम से कठिन हो गया। वह सस्कृत मे कुछ कहता था, अनुवादक उसका अनुवाद हिन्दी मे कुछ करता था। क्रान्तिकारी स्वामी दयानन्द जी महाराज का कार्य रुकने लगा। सस्कृत और हिन्दी जानने वाले श्रोताओ ने एक सभा के पश्चात् स्वामी जी के विचारो से प्रभावित होकर स्वामी जी से कहा महाराज आप कुछ कहते है और यह अनुवादक कुछ और ही कहता है। आपके भाव को ही पलट देता है। कृपा करके आप हिन्दी में ही बोलने का प्रयत्न करे।

बस ! उस युग द्रष्टा महर्षि दयानन्द ने जन-जन की भाषा हिन्दी मे ही बोलने का व्रत ले लिया। केवल व्याख्यान ही नहीं, हिन्दी मे सत्यार्थ-प्रकाश जैसा क्रान्तिकारी ग्रथ लिख डाला और वेदोद्धारक, वेदप्रचारक महर्षि दयानन्द ने हिन्दी भाषा के माध्यम से वेदो के सरलीकरण का सकल्प किया। एक महान् सकल्प था उस जमाने मे उन्होने वेदो पर भाष्य करते समय जब सस्कृत मे भाष्य का क्रम आया तो उसको तो 'भाष्य' नाम दिया। परन्तु जब हिन्दी मे अथ करने लगे तो उसको नाम दिया 'भाषा भाष्य' अर्थात् महर्षि लगभग १०० वर्ष पहले हिन्दी को भारत की राष्ट्र भाषा ही मानते थे। इसलिए एक गुजराती और सस्कृत के मर्मज्ञ ने अपनी दूर दृष्टि से हिन्दी की साव भौमिकता को देखते हुए अपना समस्त क्रिया कलाप हिन्दी मे ही कर दिया। अपनी ओजस्वी वाणी से जब वेद की उत्क्रान्ति करने वाली शिक्षा, हिन्दी मे प्रचारित करते थे तो कोटि २ मानवो के हृदय परिवर्तित हो जाते थे और फिर गुजरात ने एक और महान् पुरुष को जन्म दिया उसका नाम था महात्मा गाँधी। उस युग पुरुष ने भारत की परतन्त्रता की बेडियो को काटने के लिए हिन्दी का ही आश्रय लिया इन दोनो महापुरुषो से पूर्व, उनके समय मे और उनके समय के बाद सैकड़ो ही मुसलमान और हिन्दू कवियो और लेखको ने हिन्दी की अनन्य सेवा की।

भारत स्वतत्र हुआ। राष्ट्र भाषा का प्रश्न सामने आया। उन हजारो कवियो, लेखको एव दयानन्द का तप सामने आया। और उस उग्र तप ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर सुशोभित कर दिया। हिन्दी राष्ट्र भाषा घोषित हुई।

फिर स्वार्थपरता और भिन्न २ प्रान्तीय भाषाओ ने हिन्दी पर आक्रमण करना प्रारम्भ किया। अग्रेजी प्रमुख प्रतिरोधी थी। भारत को जोड़ने वाली और भारत की सम्पर्क भाषा को ४० वर्षो मे भी वह स्थान नहीं दिया जा सका—जो उसे मिलना चाहिए था।

उत्तर प्रदेश की राजभाषा हिन्दी ही घोषित हुई। परन्तु उसको दबाने का प्रयत्न समय २ पर किया जाता रहा है। प्रो० वासुदेव सिह हिन्दी के पक्ष पोषक होने के कारण ही मन्त्री पद से हटा दिये गये। आज भी कार्यालयों मे अग्रेजी ने पिण्ड नहीं छोड़ा है।

जब मै जनता मे देखता हू तो काड पैड बोर्ड और समस्त पत्र-व्यवहार हिन्दी मे न होकर अग्रेजी मे हो रहा है। जब बडे परिवारो मे परस्पर वार्ता करते हुए देखता हू, तो पता चलता है कि हम सम्भवत विलायत मे है। भारत मे नहीं। जब मै शिक्षा जगत् को देखता हू तो पब्लिक स्कूलो की बाढ आई हुई है। माता-पिता अपने बच्चो को अग्रेजी माध्यम से पढाना पसन्द करते है हिन्दी माध्यम से नही।

आज भाषावाद प्रान्तो और अग्रेजो के प्रभाव ने हिन्दी को दबा रखा है। सरकार ने भी जब नई शिक्षा नीति की घोषणा की है तो उसमे भी हिन्दी पीछे हटी है, आगे नहीं बढ़ी है और सब भाषाओ की जननी सारे भारत को एकीकरण मे बाधने वाली सस्कृत तो बिल्कुल ही छोड दी गई है।

दक्षिण वालो से वार्ता करने पर विदित हुआ कि प्रतियोगिताओ मे बैठने वाले हिन्दुस्तानी को पसन्द नही करते क्योकि हिन्दुस्तानी की कोई व्याकरण नहीं है। वे सस्कृत निष्ठ हिन्दी को पसन्द करते है क्योकि सस्कृत निष्ठ हिन्दी एक स्तर की भाषा है, जिसे अहिन्दी भाषी भी तैय्यारी करके सस्कृत निष्ठ व्याकरण से युक्त हिन्दी मे प्रतियोगिता मे भाग ले सकते है।

सारे देश को एक सूत्र मे बाधने वाली हिन्दी आज चौराहे पर खडी सिसकियाँ भर रही है। अब तमिलनाडू मे हिन्दी समर्थको पर आक्रमण किया गया है और हिन्दी दिवस पर ही हिन्दी के यह बोर्डों को पूछा गया है। उसे याद आते है पूर्वजो के तप और त्याग, निष्ठा और साधनाए और आज उसकी सर्वत्र उपेक्षा। क्या देश एक रह सकेगा ? जिस देश मे कोई अध्यापक अपने शिष्य को हिन्दी बोलने पर अपमानित कर दे। कहीं हीन भावनाओ मे धकेल दे। जिस देश मे पग २ हिन्दी को ठोकर खानी पड़े। जहाँ विदेश मे भी अपने देश के कर्णधार माननीय प्रधानमत्री किसी पत्रकार को हिन्दी बोलने से रोक दें। क्या ऐसी दशा मे हिन्दी का करुण क्रन्दन स्वाभाविक नहीं है ?

देश की एकता अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए राष्ट्र-भाषा का सम्मान एव उसकी अर्चना का सकल्प लेना अत्यन्त आवश्यक है।

आइये/हिन्दी दिवस के अवसर पर कोटि २ जनता की भाषा हिन्दी को हृदय सिंहासन पर आसीन करे और उसके उत्तरोत्तर विकास एव सम्मान का सकल्प ले।

आवश्यक सूचना

आर्य मित्र का शताब्दी विशेषाक दिनाक १६–६–८६ को प्रकाशित होगा। आर्य जगत् के विद्वान् लेखको से विनम्र निवेदन है कि वे विशेषाक मे प्रकाशनार्थ अपने लेख सम्पादक 'आर्य मित्र' ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ के पते से तुरन्त भेज दे ताकि ३०–६–८६ तक हमें प्राप्त हो सके।

विलम्ब से प्राप्त होने पर उनके प्रकाशन में असुविधा होगी। लेख सैद्धान्तिक तथा वेद विषयक हो क्योकि यह विशेषाक एक स्मारिका तथा स्थायी वैदिक साहित्य के रूप मे प्रकाशित होगा।

सम्पादक मण्डल

वैदिक संस्कृति के मूलाधार

(श्री जयनारायण आर्य, सराय ग्वाली, जयराज अलीगढ़ उपसचालक, सार्वदेशिक आर्यवीर दल, उत्तर प्रदेश)

अज्ञान वश आज के युग मे नाचना, गाना, बजाना, नाटक खेलना आदि को ही सास्कृतिक कार्यक्रम कहा जाने लगा है। सस्कृति रक्षा के नाम पर ही तथा कथित हिन्दू समुदाए द्वारा अपार धन जनता से सग्रहित कर अन्धविश्वास, ढोंग, पाखण्ड, रथ यात्राओ आदि के द्वारा व्यय करके जनता को मूर्ख बनाया जा रहा है।

यह जो वर्तमान सृष्टि है इसमे सातवें वैवस्वत मन्मन्तर का वर्तमान है। छ मन्वन्तर पूर्ण हो चुके हैं। एक (ब्रह्मदिन) सृष्टि मे १४ मन्वन्तर होते हैं। ७१ चतुर्युगी का एक मन्वन्तर होता है। कलियुग ४,३२,००० द्वापर ८,६४,००० त्रेता १२, ९६००० और सतयुग १७, २८,००० वर्ष का होता है। वैवस्वत मन्वन्तर की यह २८ वीं चतुर्युगी है। इस चतुयुगी मे कलियुग के ५,०८६ वर्ष का भोग हो चुका है शेष वर्षों का भोग होना है।

उपरोक्त प्रकार वेद व सृष्टि उत्पत्ति, आर्यों के काल एव वैदिक सस्कृति मे १,९६,०८, ५३,०८६ वर्ष व्यतीत अब तक हुए हैं क्योकि आर्य लोग नित्य प्रति कर्मकाड मे सकल्प करते समय बहीखाते की भांति लिखते लिखाते, पढ़ते पढाते–बोलते चले आते हैं। किसी भी प्रकार का इस विषय मे विरोध नहीं है।

सृष्टि के आदि मे आर्यों ने ही इस आर्यवर्तदेश को बसाया। सृष्टि से लेके महाभारत समय पर्यन्त आर्यो का सर्वभौम चक्रवर्ती अर्थात भूगोल मे सर्वोपरि एक मात्र राज्य था। परन्तु ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक यह अपनी पूर्व दशा मे नहीं आया, क्योकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने मे क्या सन्देह ? जब बड़े-बड़े विद्वान, बलवान, राजा, महाराजा, ऋषि, मुनि, महर्षि महाभारत युद्ध मे मारे गए तब वैदिक धर्म व सस्कृति सभ्यता का नाश हुआ। तब से ऐसी मूर्खता फली जैसी पोपो की इच्छा हुई वैसा करने कराने लगे। अनेक विरोधी साम्प्रदायिक सस्कृतियो ने जन्म लिया जिसमे वाम मार्ग, बौद्ध, जैन, ईसाई, यहूदी, सिख, पारसी, पौराणिको मे भी अनेको मत मतान्तर हैं जिन सबकी गणना लगभग १,००० है। यह सब इस प्राचीनतम वैदिक सस्कृति को मिटाने मे सलग्न हैं। अत सारे ससार पर चक्रवर्ती शासन करने वाली इस आर्य जाति की वैदिक सस्कृति के मूलाधार क्या हैं, इस पर कुछ लिखना आवश्यक है। निर्विवाद, निर्विरोध सत्यपक्ष मण्डित सूत्र के रूप मे निम्न प्रकार है।

१–वेद–सबसे प्राचीनतम ज्ञान, विज्ञान, समस्त आधार, व्यवहार, के भडार चार वेद है। ससार के श्रेष्ठ मनुष्यो को एक सूत्र मे बाधने को वेद कीली है। ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद चार हैं। वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, वेद का पढना पढाना सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

२– आस्तिकता (धर्म प्रधान)–ईश्वर, जीव, प्रकृति तीन सत्ताओ को अनादि और अनन्त मानने वाली वैदिक सस्कृति है। सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

३– ईश्वर कैसा है–ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्याय कारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

४– जीवो–के कर्मों का यथावत भोग प्रकृति द्वारा कराने, सृष्टि नियम चलाने हेतु अनादि प्रवाह से ईश्वर–जीव–प्रकृति की तीन सत्तायें हैं।

५– जीवो–मे एक मनुष्य योनि ही ऐसी है जो ज्ञान, कर्म, उपासना द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पुरुषार्थों को प्राप्त कर सकती है।

६– चार वर्ण–गुण कर्मानुसार (मनुष्य मात्र के लिए)
१–अज्ञान मिटाने वाले ब्राह्मण २–अन्याय मिटानेवाले क्षत्रिय
३–अभाव की पूर्ति करने वाले वैश्य ४–जो इन तीनो मे अयोग्य रहे समाज सेवा करने वाले को शुद्र कहते है।

७– चार आश्रम–१–ब्रह्मचर्य–२५ वर्षसे ४८ वर्ष कन्या १६ से २४ तक
२–ग्रहस्थ–पुत्र के पुत्र हो जाने तक।
३–वानप्रस्थ–सन्यास की योग्यता प्राप्त होने तक।
४–सन्यास–आजन्म।

८– सस्कार–गर्भाधान से अन्त्येष्टि पर्यन्त १६ सस्कार करने होते है जिनसे शरीर मन, आत्मा, उत्तम होते हैं।
गर्भाधान, पु सवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुण्डन, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास, अन्त्येष्टि।

९– नित्य कर्म–(पाच महायज्ञ) १–ब्रह्म यज्ञ (सध्या वेद मन्त्रों द्वारा)
२–देव यज्ञ (अग्निहोत्र वेदमन्त्रो द्वारा)
३–पितृयज्ञ [जीवित माता पिता की सेवा]
४–बलिवश्वैदेवयज्ञ [प्राणीमात्र को रक्षार्थ]
५–अतिथि यज्ञ [विद्वान, महात्मा, वानप्रस्थो, सन्यासी की सेवा सत्कार]

१०–योग साधना–ईश्वर व मोक्ष प्राप्ति का साधन केवल मात्र योग है योग के ८ अग हैं–

१–यम–पाच अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह,
२–नियम–पाच–शौच, सतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान
३–आसन–दृढता से सिद्धासन लगा २ घण्टा बैठने का अभ्यास
४–प्राणायाम–श्वास, प्रश्वास को अधिक देर भीतर बाहर रोकने का अभ्यास।
५–प्रत्याहार–इन्द्रियो को जीतना
६–धारणा–मन को हृदय, नाभि, मस्तिष्क, नासिका, जीभ के अग्रभाग मे स्थिर करना।
७–ध्यान–ओ३म् का जप करते हुए एकाग्र हो जाना

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वैदिक सस्कृति के मूलाधार

(शेष पृष्ठ ७ से आगे)

८—समाधि आनन्द मे मग्न हो जाना

११—यज्ञ—[परोपकार सम्बन्धी कार्य] पदार्थ विद्या से उपयोग, अग्निहोत्रादि जिससे देवपूजा, सगतिकरण और ध्यान होकर वायु वृष्टि, जल औषधि, वनस्पति, अन्न मे पवित्रता होकर सब जीवो को सुख पहुचता है।

१२—ओ३म्—ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है

१३—शिखा-सूत्र—[सस्कारो के अन्तर्गत है] धारण करना परम आवश्यक है।

१४—वेश भूषा—[सादाजीवन उच्च विचार] धोती कुर्ता [अधोवस्त्र एव उपवस्त्र]

१५—भाषा—सस्कृतनिष्ठ आर्य [हिन्दी भाषा]

१६—लिपि—देवनागरी

१७—खान-पान—सात्विक, प्राकृतिक, कन्द, मूल, फल, दूध, दही, घी, मट्ठा, अन्न, शाक, सब्जी

१८—अभिवादन—करबद्ध हृदय देश तक लाकर नमस्ते करना

१९—गोपालन—दुग्ध प्राप्ति, कृषि, व्यापार हेतु

२०—मातृवान, पितृवान, आचार्यवान, पुरुषोवेद [माता पितागुरु आदर्श योग्य होने पर सन्तान उत्तम होते हैं]

२१—आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म एक ईश को मान्यता यही हमारा कर्म।

२२—आर्यावर्त—सबसे प्राचीनतम देश का नाम, मध्यकाल मे भारत वर्ष, मुस्लिम शासन काल मे हिन्दुस्तान, अग्रेजो के समय इण्डिया कहा गया।

२३—वैदिक सस्कृति के आदर्श महापुरुष—मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण वर्तमान काल मे महर्षि दयानन्द सरस्वती।

२४—रीति रिवाज—आदि काल सृष्टि नियम के अनुकूल

२५—पर्व—आदि काल से प्रकृति, सृष्टि नियम के ऋतु अनुसार

२६—शिष्टाचार—धर्माचरण पूर्वक, ब्रह्मचर्यादि से सत्य को ग्रहण करना

२७—परोपकार—सब मनुष्यो को दुराचरण से छुडाना

२८—स्वर्ग—सुख विशेष जो पृथ्वी पर ही है कहते हैं।

२९—नरक—दु ख विशेष भोगों को जो पृथ्वी पर ही है कहते हैं

३०—जन्म—शरीर धारण को कहते हैं।

३१—मृत्यु—शरीर वियोग को कहते है।

३२—पुनर्जन्म—कर्मानुसार पुन शरीर धारण करने को कहते हैं।

३३—मनुष्य ससार भर को एक ही जाति है। प्रत्येक योनि को एक जाति कहते हे।

३४—देव—विद्वानो को कहते हैं।

३५—असुर—मूर्खों को कहते हैं राक्षस—पापियों को कहते हैं।

३६—आर्य—श्रेष्ठ, सज्जन, सदाचारी, परोकारी, आचरणवान को आर्य कहते हैं।

३७—दस्यु दुष्टों कहते हैं।

३८—आर्य समाज के दस नियम—सार्वभौमिक सुख शांति हेतु सर्वमान्य हैं विरोधाभास कुछ है ही नहीं।

३९—आर्यों का लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'—समस्त ससार को आर्य बनाओ।

४०—आर्यों के जयघोष—वैदिक धर्म की जय हो। आर्यवीरों जागो। ससार के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो।

यह सूक्ष्म सक्षेप मे वैदिक सस्कृति के मूलाधार लिखें हैं। राष्ट्र रक्षा एकता हेतु सर्वतन्त्र सिद्धात जिसको सदा से मानते हैं और मानेंगे भी इसलिये इन्हें सत्य सनातन वैदिक धर्म कहते हैं एक मत होकर इन्हे मानिए मनवाइए तभी हमारा, हमारे देश, समाज और विश्व का कल्याण है।

शताब्दी सेवा सुरक्षा प्रशिक्षण शिविर

स्थान—डी० ए० वी० कालेज लखनऊ

दिनांक १५ अक्टूबर से २० अक्टूबर ८६ ई०

शिविर सम्बन्धी आवश्यक नियम—

१— आर्य वीरो को पूर्ण गणवेश (खाकी हाफ पेन्ट, सफेद स्काऊटिंगकट शर्ट, सफेद पी० टी० शू व मोजा, लाठी, सीटी,) मे १५ अक्टूबर बुधवार को शाम तक पहुच जाना अनिवार्य है।

२— आर्य वीरों को अपने साथ आर्य समाज के मन्त्री। प्रधान या नगर नायक द्वारा परिचय-पत्र लाना आवश्यक है। उम्र १५ वर्ष से कम न हो।

३— अपने साथ मौसमी बिस्तर एक गिलास लाना आवश्यक है।

४—आर्य वीरों को २४ घण्टे शिविर मे रहना, खाना व सेवा करना है।

५— अनुशासन भग करने वाले को किसी भी समय। शिविराध्यक्ष शिविर से बाहर भेज सकता है।

६—उपरोक्त बातो का पालन करने वाले आर्य वीर व अधिकारी को ही अन्य सुविधायें तथा प्रमाण-पत्र दी जायेगी।

७— अपने पहुचने की,सूचना मुझे तथा प्रातीय सचालक श्री अवधबिहारी खन्ना, विश्वनाथ गली वाराणसी व श्री डा० बालकृष्ण आर्य बिन्दकी फतेहपुर को ३० सितम्बर तक अवश्य भेज देवें।

८— शोभा यात्रा व प्रदर्शन हेतु अपने साथ नाम-पट व दल का ओ३म् ध्वज साथ लावे।

विशेष जानकारी के लिये मुझसे सम्पर्क करें।

धर्नसिंह अधिष्ठाता
आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश
कार्यालय—आर्य समाज साहूपुरी, व राणसी

—आर्य समाज छर्रा (अलीगढ़) के तत्वाबधान मे वेद प्रचार सप्ताह एव वर्षा कालीन सत्र दिनांक १३ अगस्त से २७ अगस्त १९८६ तक समारोह सम्पन्न हुआ जिसमे यज्ञ, भजन एव प्रवचन से प्रभाव शाली कार्यक्रम सम्पन्न हुए तथा आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान सम्मलित हुए। सत्य प्रकाश आर्य

शताब्दी के अवसर पर योग साधना शिविर

साधक महानुभावों की सेवा मे–

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की शताब्दी के अवसर पर सभा की ओर से एक योग साधना शिविर दिनाक १४ अक्टूबर से १६ अक्टूबर १९८६ तदनुसार सोमवार से बृहस्पतिवार तक डी० ए० वी० कालेज लखनऊ मे अयोजित किया जाएगा। यह योग शिविर आय जगत् मे योग मे निष्णात स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम के निर्देशन मे आयोजित होगा जिसमे आसन-प्राणायाम और ध्यान की शिक्षा दी जाएगी। साधक महानुभाव नीचे लिखे नियमो के अनुसार योग साधना शिविर मे अपने प्रवेश की सूचना सभा मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी को ६ अक्टूबर ८६ तक दे।

साधना शिविर के नियम

(१) योग साधना शिविर मे भाग लेने वाले साधक को चारो दिन साधना स्थल डी० ए० वी० कालेज लखनऊ मे ही रहना होगा।

(२) सभी साधक अपने साथ उपयुक्त पात्र, आसन, बिस्तर तथा वस्त्र आदि रखेंगे।

(३) योग साधना शिविर मे प्रवेश शुल्क ५१) रुपये पूव ही जमा करवा कर रसीद लेनी होगी।

(४) शिविर मे प्रात ५ से ६ तक ध्यान, ६ से ७ तक आसन, प्राणायाम प्रात ९ से ११ तक उपनिषदो और योग दशन का अध्ययन एव स्वाध्याय दोपहर २ से ३ तक योग सम्बन्धी शका समाधान– साय पौने पाच से साढे छ तक ध्यान।

(५) प्रवेश करने वाले साधक का स्वस्थ होना बहुत आवश्यक है।

(६) योग शिविर मे साधको को चारो दिन अधिक से अधिक मौन रहना बहुत आवश्यक है।

(७) शिविर मे चाय आदि किसी भी मादक द्रव्य का सेवन वर्जित रहेगा।

(८) शिविर मे आने वाले महानुभाव अपने आने की सूचना सभा मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी को शिविर से कम से कम एक सप्ताह पूव अवश्य देंगे।

मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री   इन्द्रराज, सभा प्रधान

अन्तरग सभा की विशेष बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का शताब्दी समारोह दिनाक १७, १८, १९ तथा २० अक्टूबर, १९८६ को प्रकाशवीर शास्त्री नगर (डी० ए० वी० कालेज) लखनऊ के प्रागण मे सम्पन्न होगा।

शताब्दी समारोह के सम्बन्ध मे व्यवस्थाओ पर विचारार्थ अन्तरङ्ग सभा की एक विशेष महत्वपूर्ण बैठक दिनाक ५–१०–८६ दिन रविवार को प्रात १० बजे प्रकाशवीर शास्त्री नगर (डी० ए० वी० कालेज) लखनऊ मे होगी।

कृपया समय पर पधार कर कृतार्थ करें।

नोट–कृपया शताब्दी सम्बन्धी एकत्रित धन, 'आयमित्र' के लिए विज्ञापन भी अपने साथ लाने की कृपा करें।

भवदीय,

इन्द्रराज   मनमोहन तिवारी
प्रधान   मन्त्री

शताब्दी समारोह की विशाल शोभा यात्रा के लिए तैय्यारी करें

दिनाक १८–१०–८६ दिन शनिवार मध्याह्न एक बजे से शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य मे विशाल शोभा यात्रा प्रकाशवीर शास्त्री नगर (डी० ए० वी० कालेज), लखनऊ से आरम्भ होगी। प्रदेश की सभी आर्य समाजें और जनपद की उप-प्रतिनिधि सभाओ से अपने-अपने नामपट और झण्डो के साथ इसमे सम्मिलित होने की प्रार्थना है। जिन समाजो की शिक्षण सस्थाओ के पास अपने बैण्ड झाकिया और भजन मण्डलियाँ है, वे शोभा यात्रा मे उन्हे साथ लाने की कृपा करें। और आकर्षक झाकियाँ भी लायें। इस बात का भी ध्यान रखें कि अपने नामपट और झण्डे समय के अनुरूप नये और साफ हों। भोजन और रहने की नि शुल्क व्यवस्था होगी।

आशा है कि सभी आर्यजन बडे उत्साह के साथ इस शताब्दी समारोह मे भाग लेकर सगठन को बल प्रदान करेंगे।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

सूचना

प्रकाशको एव विद्वानो ने जो पुस्तकें समीक्षा हेतु आय मित्र मे प्रेषित की हैं उनकी समीक्षा २० अक्टूबर १९८६ के बाद के अको मे प्रकाशित होगी–सम्प्रति शताब्दि सम्बन्धी विज्ञप्तियो सूचनाओ को आर्यमित्र मे प्रायमिकता देना आवश्यक है।

सम्पादक मण्डल

'आर्य्यमित्र' साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
भा० आश्विन ६
आश्विन कृष्ण १०
रविवार, २८ सितम्बर १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेदों का डंका आलम में
बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।
ओम् का झंडा इस जग में
फहरा दिया ऋषि दयानन्द ने ।।

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे।
दयानन्द का काम पूरा करेंगे ।।

ऐसे अनेक अमर गान नभ मे गूंज उठेंगे उस स्वर्णिम ऐतिहासिक शोभा यात्रा मे जो आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित

शताब्दी-समारोह के अवसर पर

[१७ अक्टूबर से २० अक्टूबर १९८६]

प्रकाशवीर शास्त्री नगर (० ० ए० वी० कालेज) लखनऊ मे

दिनाक १८ अक्टूबर को दोपहर एक बजे निकाली जाएगी। १५ किलोमीटर की विराट शोभा यात्रा–रथो हाथियो, वाहनो, बड बाजो से सुशोभित स्थान स्थान पर आर्य समाज की महान् विभूतियो के सुसज्जित द्वारो से होती हुई, जय घोष लगाती हुई, मन्त्र पाठ करती हुई और प्रभु भक्ति के गान गाती हुई तथा वेद के पावन सन्देश सुनाती हुई, जब निकलेगी तो नरनारी सब मुग्ध हो जाएगे। आर्यों की सगठित शक्ति का सजीव स्वरूप जनता को यह बोध कराएगा कि स्वदेश और विश्व का वास्तविक कल्याण वैदिक धर्म को अपनाने से ही होगा।

शताब्दी के अन्य रोचक और प्रेरणाप्रद कार्यक्रम

+ आर्य वीरो का व्यायाम प्रदर्शन।
+ सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओ को सुलझाने वाले ज्ञान सम्मेलन।
+ योग प्रशिक्षण।
+ वृहद् वैदिक यज्ञ।
+ गुरुकुलो के शिक्षार्थियो द्वारा सस्वर वेद पाठ।
+ विदेशो की आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो द्वारा अपने क्षेत्रो का प्रचार विवरण।
+ लागत मात्र पर वैदिक साहित्य की उपलब्धि।
+ विद्वानो और समाज सेवियो का अभिनन्दन।
+ एक लाख व्यक्तियो के आवास और भोजन की सुव्यवस्था तथा अन्य अनेक ज्ञान वर्धक भव्य कार्यक्रम।

इस स्वर्णिम समारोह मे सम्मिलित होने की तुरन्त तैय्यारी कीजिए। आर्य वीर दल के स्वयसेवक अपने गणवेश मे ओम का ध्वज लिए लखनऊ नगर के प्रत्येक बस अडडे और रेलवे स्टेशन पर आपके स्वागतार्थ और पथ प्रदर्शन हेतु, प्रतीक्षा करते हुए मिलेंगे।

शताब्दी समारोह को सफल बनाने के लिए सभा द्वारा प्रषित पोस्टर अपने अपने नगर और ग्राम मे लगाए, कूपनो पर धन सग्रह करें। यह समारोह आपका अपना समारोह है। तन मन धन से इसे सफल बनाना आपका नैतिक कर्तव्य है।

१६–१०–८६ की सायकाल तक सामूहिक रूप से बसो द्वारा वेद प्रचार करते हुए लखनऊ पहुचिए।

दर्शनाभिलाषी–

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

समस्त पदाधिकारी अन्तरग सभा के सभी सदस्य तथा उपसमितियो के सयोजक, सप्रेरक और सदस्य गण

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप मे सब्बरवाल प्रिन्टिंग प्रस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र [शताब्दी प्रचार-प्रसार परिशिष्टांक–१]

रजि० स० २२४१/५७ घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

भा० आश्विन ६, आश्विन कृष्ण १०, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक २८ सितम्बर १९८६

प्रभु की अमृत वाणी—

जानो, मानो, ठानो

न त्वा उ मा वृजने वारयन्ते न पर्वतासो यदह मनस्ये ।
मम स्वनात् कृधुकर्णो भयात एवेदनु द्यून किरणः समेजात ।।

–ऋ० १०–२७–५

आर्य वैदिक धर्मी होते है । उनका आचरण सर्वथा वेदानुकूल होता है । जिन मन्त्रों का आर्य श्रवण करते हैं 'मन्त्र श्रुत्य चरामसि' के अनुसार उनको आचरण मे उतारने पर वे दृढ प्रतिज्ञ और अदम्य वीर बन जाते हैं । ऐसा दिव्य व्रती इस वेद मन्त्र से यह उद्घोष करता है–

(अह) मै (यत्) जब (मनस्ये) मन से स्वीकार कर लेता हू जान लेता हू और ठान लेता हू [तो] (मां) मुझे (वृजने) रोकने मे (न वं उ) न ही तो [कोई भी विरोधक] (वारयन्ते) समर्थ होते हैं (न पर्वतास)न ही कोई पवत ।

(मम स्वनात्) मेरे भीतर से बाहर आने वाले दृढ वचनो से (कृधु कर्ण भयाते) क्षुद्र श्रवण करने वाले भयभीत होते है (एव इत्) वैसे ही उसी भाति [जिस प्रकार] (द्यून अनु किरण स–एजात) दिनो को अनुगामी करता हुआ प्रकाशवान् किरणो का पुञ्ज सूर्य सतत निर्बाध गमन किया करता है ।

आर्यो ! प्रदेश की शिरोमणि सभा का शताब्दी समारोह ऐसी दिव्य प्रेरणाओं को देने के लिए आयोजित किया गया है । जो इस समारोह के महत्व का ज्ञानात्मक विश्लेषण कर जब उसे आत्मना स्वीकार कर लेंगे और उसमे सम्मिलित होने को ठान लेंगे तो उन्हें ऐसा करने के लिए कोई भी बाधा रोक नहीं पाएगी । जैसे तेजस्वी और तपस्वी सूर्य मेघो को चीर कर विश्व के कल्याणार्थ विजयी होकर जगमगाता है,उसी भाति आर्य भी बाधाओं के पर्वतो को लाघ कर अपने वीरत्व का प्रदर्शन करते हैं और अपने सकल विरोधियों को, असुरो को कम्पायमान कर देते हैं । एक वेद मार्गी ही पुरुषार्थी बन कर इस वीर गान को जीवन की आहुति देकर सार्थक करता है–

वैदिक धर्म का मूल्य प्राण है, देखें कौन चुकाता है ।
सुमनो की शैय्या को तजकर, कटक पथ पर आता है ।।

—वसन्त'

शताब्दी समारोह में—

चलो लखनऊ चलें

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के शताब्दी समारोह दिनांक १७ से २० अक्टूबर ८६ तक प्रकाशवीर शास्त्री नगर (डी० ए० वी० कालेज) लखनऊ मे ससमारोह के लिए बडे ही जोर शोर से तैयारियां चल रही हैं ।

राष्ट्र भृत (विश्व कल्याण) यज्ञ हेतु भव्य–यज्ञ शाला निर्मित हो रही है । जहा चारो दिन १६ यजमान एव सैकडों वेद पाठी वेद को पवित्र ऋचाओ के सस्वर पाठ के साथ आहुति दान करेंगे ।

१८ अक्टूबर को मध्यान्ह १ बजे से शोभा यात्रा प्रकाशवीर शास्त्री नगर से ही आरम्भ होगी जिसमे प्रदेश की सभी आर्यसमाजें जिला सभायें एव आर्य शिक्षण सस्थायें अपने नाम पट, झण्डो, झाकियों, भजन मण्डलियो, बैंड बाजो के साथ भाग लेंगी । १०० स्वागत द्वार बन रहे हैं अनेक देशों के प्रतिनिधि मण्डल आ रहे हैं ।

हम सब भी समारोह मे पहुचने के लिए सकल्प लें ।

देश विदेश से पधारे साधु महात्माओ आर्य नेताओं देश के शीर्षस्थ राजननयिक नेताओ के द्वारा राष्ट्र के निर्माणकारी मार्ग पर चलने का सन्देश सुनें । व्रत लें विघटन वाद आतङ्कवाद, साम्प्रदायिक विद्वेष के समूल नाश का ।

ऐसे सुअवसर, साधु-सगम के अवसर बार-बार नहीं मिलते । चूकें नहीं अवश्य पहुचें और मानव जीवन को सार्थक करें ।

–आचार्य वेदव्रत अवस्थी

प्रार्थना

हे प्राण दाता दु खनाशक सुख प्रदाता हे विभो
हे प्रकाशक सृष्टिकर्त्ता ज्ञान दाता हे प्रभो
हे देव अनुपम शक्तिमान् प्रेरक मेरे परमात्मा
बुद्धि को निर्मल बना दो, शुद्ध कर दो आत्मा

–आचार्य वेदव्रत अवस्थी

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

सम्पादक मण्डल–

विक्रमादित्य 'वसन्त' 'वेद वारिधि' आचार्य रमेशचन्द्र एम ए आचार्य वेदव्रत अवस्थी

वर्ष ८८

अङ्क ४०



सम्पादकीय

लखनऊ— रविवार २८ सितम्बर १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

जीवपुरा अधि इहि

आज हम जिस पृथिवी पर निवास कर रहे हैं उस पर सर्वत्र आग लगी हुई ह। सर्वनाश की ज्वालाए धधक रही हैं। अत्याचारो अनाचारो दुराचारो के शोले भडक रहे हैं। हिसक वृत्तियां निरन्तर उभरती जा रही हैं और उत्पीडित मानव जो आस्तिक हैं, एक आशा को सजोकर उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि प्रभु प्रेरणा से प्रेरित होकर उनके उद्धारक कब उनके उद्धार हेतु आगे आए गे।

आज जितने भी धार्मिक क्षेत्र हैं, उनका सचालन करने वालो के प्रति विश्व के जन-कतई आशावान नहीं हैं क्योकि वहाँ भी अधर्म का डेरा है। धर्म स्थानो के ऊपर धर्म की ध्वजाए लहराती हैं परन्तु उनके भीतर घोर अत्याचार हो रहा है। धर्म केवल वाह्याडम्बर तक सीमित होकर रह गया है। धर्म की लकीर पीटकर आज का मानव दानव बन गया है, एक स्वार्थी क्रूर हिसक पशु।

सम्पूर्ण विश्व की राजनीति घोर असत्य पर आधारित है। राजनीतिक नेताओ के जीवन मे मकर-फरेब झूठ कुटिलता का दर्शन पग-पग पर होता है। इसी भाति तथा कथित समाज सुधारक और विश्वोद्धारक भी केवल अपनी हित साधना मे लगे हैं। जलचरो की भाति वे मानव सागर को सतत प्रदूषित कर रहे हैं। जटा जूट धारी अथवा घोटम घाट किए बाहर से वस्त्रो को रगे हुए जिन्होने अपने को धर्म का ठेकेदार बनाया हुआ है, ऐसे पण्डितो पुजारियो, पुरोहितो तथा कथावाचको की कथनी और करनी का घोर अन्तर श्रोताओ को वाणी के चातुर्य से मुग्ध तो कर सकता है पर उनके जीवन को परिवर्तित नहीं कर सकता। कनक तथा कामिनी की आत्मना अर्चना करने वाले साक्षरता के आधार पर विद्वानो की श्रेणी मे अपने को खडा कर सकते हैं, धर्मात्माओ मे नहीं।

इन विषम परिस्थितियो मे केवल वेद ही ऐसा धर्म ग्रथ है जो मानवो को सुमानव बनाकर, भ्रष्टाचार के गढो को गिरा सकता है। महर्षि स्वामी दयानन्द महाराज ने सत्य विद्याओ के इस ग्रथ के पठन पाठन श्रवण श्रावण को आर्यों का परम धर्म बतलाया था। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का एकमेव उद्देश्य है वेद को विश्व धर्म बनाकर वैदिक सस्कृति का भूमण्डल पर प्रसार कर, पृथिवी के सकल मानवो का आर्यकरण। दूसरो को आर्य वही बनाएगा जो पहले स्वयम् आर्य बनेगा। वेद माता आर्यों को दिव्य सदेश देते हुए कहती है—

इहैधि पुरुष सर्वेण मनसा सह।
दूतौ यमस्य मानु गा अधि जीवपुरा इहि॥
[अ ५/३०/६]

अर्थात् हे पुरुष! (सर्वेण मनसा सह) पूरे मन के साथ, दत्त चित्त होकर (इह एधि) यहाँ गतिशील बन। (यमस्य दूतौ मा अनु गा) यम के दोनो दूतो का अनुगामी मत बन तथा (जीवपुरा अधि-इहि) जीवपुरी मे निवास कर।

शताब्दी समारोह मे भाग लेने वाले इस अमर वाणी के तीनो अशो पर विचार करें कि (१) क्या वे पूर्णतया ऋषि दयानन्द के मन्तव्यो को सार्थक करने के लिए इस विश्व मे गति शील है (२) क्या वे यम के दो दूतो अर्थात् व्यसन और विलास के अनुगामी तो नहीं बन रहे और (३) क्या वे जीवित होकर जीवपुरी मे निवास कर रहे हैं अथवा मरणपुरी मे। जो जीवित होते हुए भी मृत बने रहते हैं, उनमे निराशा और निरुत्साह होता है ऐसे निराशावादी और निरुत्साही न अपना कल्याण कर पाते हैं न किसी अन्य का जो व्यसनी और विलासी हैं वे कदापि पुरुषार्थी नहीं बन सकते और जो पुरुषार्थी नहीं हैं वे कभी अपनी साध को सफल नहीं बना सकते।

आय मृत्यु दिवस नहीं अपितु जन्म दिवस रूपी जयन्तिया मनाया करते है। मृतको को याद करना, अतीत की गौरव गाथा गान तक अपने को सीमित करना अपने अमूल्य समय को नष्ट करना है जो जीवित हैं, हमे उनका सुधार करना है और सुधार होने पर सुस्वागत करना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने जीवन के शत वर्ष पूर्ण कर लिए हैं और उसके द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह, वर्तमान युग के भ्रष्टाचार के उन्मूलन तथा स्वर्णिम भविष्य को साकार करने के लिए हमारे सम्मुख आया है। सम्पूर्ण आर्य जगत् हो नहीं, स्वदेश हो नहीं वरन् पूर्ण विश्व को वैदिक धर्मियो से जिन उद्धार की आशाए हैं, उन्हे सफलीभूत बनाना हमारे सगठन पर निर्भर है। आज वह समय आ गया है जब हम 'सर्व वै पूर्ण स्वाहा' को अपने जीवन यज्ञ मे सार्थक करके जगत को दर्शा दें कि आर्यत्व अभी जीवित है तथा सगठित है। आर्य सदैव जीवपुरी मे वास करते हैं। उनकी उमगें नित्य नवीन होती हैं, उत्साह कभी क्षीण नहीं होता क्योकि वे दृढ प्रतिज्ञ और अदम्य वीर होते हैं।

—'वसन्त'

वेद प्रचार सप्ताह

निम्नलिखित आर्य समाजो द्वारा वेद प्रचार सप्ताह पर वेद प्रचार तथा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाने के समाचार प्राप्त हुए है। विलम्ब से प्राप्त होने तथा शताब्दी विज्ञप्तियो के कारण पूरा विवरण देना सम्भव नहीं है—

आर्य समाज, सीसामऊ, कानपुर इस समाज द्वारा आयोजित प्रचार मे सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी का भव्य स्वागत किया गया तथा पजाब के विस्थापितो की सहायतार्थ १२,७०१) की थैली, जिसमे आय समाज दर्शनपुरवा की ११०१) को राशि सम्मिलित थी, भेंट की गई।

- आर्य समाज व्यापुर (पटना) बिहार।
- आर्य समाज बिसौली (बदायू)।
- आर्य समाज टाडा अफजल (मुरादाबाद)।
- आर्य समाज पुरानी मण्डी फीरोज बाद (आगरा)।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
शताब्दी समारोह
की

★ शोभा यात्रा मे समाजें अपने साथ बैण्ड बाजे, भजन मण्डलियाँ वाहन एव आकर्षक झाँकियाँ लायें।

★ अपने साथ क्या-क्या ला रहे है सविवरण तुरन्त सूचित करें।

★ भोजन व निवास की समुचित व्यवस्था हेतु आगन्तुक महानुभाव (बच्चे-स्त्री-पुरुष) की निश्चित या आनुमानित सख्या से तुरन्त अवगत करायें।

★ आर्य वीर अपने गणवेश मे आयें।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — सभामन्त्री

शताब्दी समारोह मे पधारने वाले आर्य नेताओ और विद्वानों की सूची—१

शताब्दी समारोह मे निम्नलिखित सन्यासियो, महात्माओ, विद्वानो और नेताओ के पधारने की स्वीकृति, जो अब तक प्राप्त हो चुकी है –

(१) स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।
(२) स्वामी विवेकानन्द जी प्रभात आश्रम मेरठ।
(३) स्वामी सत्यप्रकाश जी, प्रयाग।
(४) स्वामी स्वरूपानन्द जी, आगरा।
(५) महात्मा दयानन्द जी तपोवन, देहरादून।
(६) डा० योगेन्द्र कुमार जी शास्त्री।
(७) श्री ओमप्रकाश जी खतौली।
(८) श्री सत्य मित्र जी शास्त्री, बडहलगज, गोरखपुर।
(९) आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री बडोदा।
(१०) प० उत्तम चन्द जी 'शरर'
(११) श्री रामचन्द्र जी राव आन्ध्र प्रदेश।
(१२) आचार्य निरूपण विद्यालकार गुरुकुल कागडी।
(१३) श्री प्रशस्य मित्र शास्त्री, रायबरेली।
(१४) श्री रामदत्त जी शास्त्री देहरादून।
(१५) श्री रामानन्द जी शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार।
(१६) श्री गोपीनाथ दीक्षित गृहमन्त्री उत्तर प्रदेश।
(१७) श्री बलदेव सिह आर्य, राजस्व मन्त्री उत्तर प्रदेश।
(१८) श्री कृष्णलाल जी मेयर हैदराबाद आन्ध्र प्रदेश।
(१९) श्री गोसाई दत्त वानी सगीत प्रवीण (दूरदर्शन तथा आकाशवाणी कलाकार)
(२०) श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर (पजाब)
(२१) श्रीमती उर्मिला देवी शास्त्री बडौदा।
(२२) श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री गुरुकुल सासनी।
(२३) महात्मा आर्य भिक्षु वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर।
(२४) श्री राजगुरु शर्मा प्रधान अ० प्र० सभा मध्य प्रदेश।

शताब्दी प्रचार प्रसार परिशिष्टांक

शताब्दी समारोह पर किए जा रहे विभिन्न आयोजनों की शीघ्र जानकारी देने के लिए ऐसा निश्चय किया गया है कि प्रत्येक सप्ताह 'आर्य मित्र' के आठ-आठ पृष्ठो के दो अङ्क निकाले जायें। सामान्य साप्ताहिक अङ्क के साथ-साथ एक शताब्दी प्रचार प्रसार परिशिष्टाक भी निकाला जाये। प्रस्तुत परिशिष्टाक साप्ताहिक अक दिनांक २८-९-८६ का सह-अक है। इसी भाँति ५ तथा १० अक्टूबर के अकों के दो अतिरिक्त परिशिष्टाक निकाले जायेंगे जिनमे शताब्दी के प्रचार प्रसार को विशेष महत्व दिया जाएगा। आशा है हमारे पाठक हमारे इस सद्प्रयास का उचित मूल्याकन करेंगे और शताब्दी समारोह को सफल बनाने के लिए तन मन धन से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

—सम्पादक मण्डल

शताब्दी समारोह के आकर्षण

★ योग शिविर
★ राष्ट्रभृत महायज्ञ
★ विशाल शोभायात्रा
★ क्रीडा प्रतियोगितायें
★ वाक प्रतियोगितायें
★ निबन्ध प्रतियोगितायें
★ वेद सम्मेलन
★ राष्ट्र रक्षा सम्मेलन
★ महिला सम्मेलन
★ अभिनन्दन समारोह

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — सभामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

चेतना केन्द्र की स्थापना

आर्यसमाज रौराकलाँ ने समाज की विविध सेवा करने के लिए एक चेतना केन्द्र स्थापित करने का सकल्प किया है। यह चेतना केन्द्र बनना शुरू हो गया है किन्तु यह योजना बहुत बडी है और इसे अकेले आर्य समाज रौराकलाँ पूरा नहीं कर सकती इसके लिए हमे सबके सहयोग की जरूरत है।

जो आर्यसमाजें अथवा दानदाता इस यज्ञ मे आहुति देना चाहें वे बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा सहायता भेजें।

—वीरेन्द्रदेव नगवार मन्त्री आर्यसमाज रौराकलाँ (जनपद रामपुर)

आर्यो ! जागो !! व्रती बनो !!!

लेखक—आचार्य राजदेव नैष्ठिक प्रधानाचार्य
आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा इटावा (उत्तर प्रदेश)

उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ॥
आर्यो ! उठो, जागो तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कर्तव्य रत हो जाओ ।

आज हमारे देश की बहुत ही विचित्र दशा है ! जहाँ देखो वहीं हत्याए, जातिवाद, वर्गवाद, तथा प्रान्तवाद आदि के वितण्डे आ खड़े होते हैं । इनसे हमारे देश का नाश हो रहा है । इन्हीं कारणो से हमारे देश के मनुष्यो के हृदयो मे कलह, कटुता, अशान्ति, ईर्ष्या, द्वेष आदि घर कर गये हैं । तथा हम आर्य लोग कुम्भकर्णी निद्रा मे पड़े–२ सो रहे है । बताओ राष्ट्रोद्वार का पावन कार्य कौन करेगा ?

उपरोक्त दुरिताओ को दूर करने के लिए हमे सच्चा आर्य बनकर कर्तव्य क्षेत्र मे आना होगा अन्यथा यदि हम आर्य लोग इसी प्रकार अपने पावन कर्तव्यो से भागते रहे तो हमारी सभ्यता संस्कृति नष्ट हो जाएगी और हम कर मलते रह जाए गे ।

क्या इसी प्रकार आर्य लोग अपने पावन कर्तव्यों का बिना वहन किये 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का पावन स्वप्न चरितार्थ कर सकेंगे ।

जब हमने स्वयमेव आर्यत्व के पावन व्रत की दीक्षा नहीं ली, न अपने परिवार को आर्यत्व के व्रत मे दीक्षित किया तो क्या इसी भांति ऋषि का मन्तव्य पूरा होगा । यह दशा देखकर कु वर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर की यह कविता, पंक्ति याद आती है कि—

यही हालत रही तो हो चुका प्रचार वेदो का ।
इन्हे तो खून करना है दयानन्द की उम्मीदो का ॥

सर्व प्रथम राष्ट्र कल्याण, राष्ट्र हित साधन करने के लिए हमे अपना जीवन, पवित्र, व अनुकरणीय बनाना होगा, अन्यथा हम राष्ट्र-हित कार्य मे सक्षम न हो सकेंगे ।

यदि कोई सच्चा आर्य है, उसका जीवन पवित्र है तो लोग उसका अनुकरण करेंगे क्योकि चीटी से लेकर हाथी पर्यन्त सभी प्राणी अपना हित अनहित सभी जानते है । आर्य सदैव दूसरो का हित चाहता है । सच्चे आर्य के मन वाणी तथा कर्म मे प्राणिमात्र का हित निहित होता है । सच्चा आर्य वेद के शब्दो मे उद्घोष करता हुआ कहता है । "मित्रस्याहं चक्षुषा प्रतीक्षे ।" अर्थात् मै प्राणिमात्र को मित्र की स्नेह भरी दृष्टि से देखू जिससे मित्रता होती है । मनुष्य उसका अहित नहीं कर सकता ।

महर्षि प्रवर देव दयानन्द मानो इस मन्त्र की साक्षात्मूर्ति थे । उन्होने सम्पूर्ण जीवन का लक्ष्य प्राणिमात्र की हित साधना करना ही बनाया था । ऋषि ने जो वेद विरुद्ध मतों का खण्डन किया है, उसमे भी उनके प्रति हित की भावना ही निहित है । यदि हित निहित न होता तो ऋषिवर सत्यार्थ प्रकाश न लिखते, क्योंकि ऋषिवर उन्हें वेदोक्त सन्मार्ग पर लाना चाहते थे ऋषि के अन्तस्तल मे ईर्ष्या द्वेष हीं की चीज भी न थी ।

अमृत वर्षा

प्रभु की कृपा, रक्षा और सहाय

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु । सह वीर्य्यं करवाव है । तेजस्वि नावधीतमस्तु । मा विद्विषाव है ॥
(तैत्तिरीय आरण्यके । नवम प्रपाठके । प्रथमानुवाके)

हे सर्व शक्तिमन् ईश्वर ! आपकी कृपा, रक्षा और सहाय से हम लोग परस्पर एक दूसरे की रक्षा करें, और हम सब लोग परम प्रीति से मिल के सबसे उत्तम ऐश्वर्य अर्थात् चक्रवर्ति राज्य आदि सामग्री से आनन्द को आपके अनुग्रह से सदा भोगें । हे कृपानिधे ! आपके सहाय से हम लोग एक दूसरे के सामर्थ्य को पुरुषार्थ से सदा बढ़ाते रहें और हे प्रकाशमय सब विद्या देने वाले परमेश्वर ! आपके सामर्थ्य से ही हम लोग का पढ़ा और पढ़ाया सब संसार मे प्रकाश को प्राप्त हो और हमारी विद्या सदा बढती रहे । हे प्रीति के उत्पादक ! आप ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे हम लोग परस्पर विरोध कभी न करें किन्तु एक दूसरे के मित्र होके सदा वर्त्ते ।

हे भगवन् ! आपकी करुणा से हम लोगो के तीन ताप—एक 'आध्यात्मिक' जो कि ज्वरादि रोगो से शरीर मे पीडा होती है, दूसरा 'आधिभौतिक' जो दूसरे प्राणियो से होता है और तीसरा 'आधिदैविक' जो कि मन और इन्द्रियो के विकार, अशुद्धि और चचलता से क्लेश होता है, इन तीन तापो को आप शान्त अर्थात् निवारण कर दीजिए, जिससे हम लोग सुख से वेदभाष्य को यथावन् बना के सब मनुष्यो का उपकार करें । यही आपसे चाहते हैं, सो कृपा करके हम लोगो को सब दिनो के लिये सहाय कीजिए । —महर्षि दयानन्द सरस्वती

निर्वाचन

आर्य समाज चेम्बूर बम्बई	आर्य समाज रायबरेली
प्रधान श्री गुलजारी लाल आर्य	प्रधान श्री राम कुमार आर्य
मन्त्री श्री ईश्वरमित्र शास्त्री	मन्त्री श्री जागेश्वर आर्य
कोषा० श्री रामेश्वर चन्द्र जी	कोषा० श्री राम चन्द्र आर्य

किन्तु आज हम उस ऋषि के अनुयायी पदो के मामलो पर लड़ते रहे हैं यहीं तक नहीं आर्य समाजो, आर्य संस्थाओं में इन विवादो के पीछे हत्याए आदि भी घटित हो रही हैं । क्या हमारे दिलो मे यह सकीर्णता बनी रहेगी । यदि बनी रही तो हमारा उत्थान न होकर पतन आवश्यम्भावी हो जाएगा ।

आइये हम आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी के पावन अवसर पर यह व्रत लें कि आर्य समाज मे जातिवाद, वर्गवाद, तथा पद विवाद आदि के आधार पर व्याप्त सम्पूर्ण त्रुटियो को दूर करके सच्चे अर्थो मे आर्य बनकर, "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का पावन व्रत लेकर देश, तथा धर्म की रक्षा मे अपने को आहुत करदे तथा अपने को आर्य कहला कर चरितार्थ करें ।

तभी हमारी शताब्दी सफल होगी ।

शुद्धि आन्दोलन

शुद्धि के बढ़ते चरण

बागपत के निकटवर्ती गाव सतोषपुर बाधू मे करीब ३०, ४० वर्षों से ईसाइयो ने करीब ५०-६० हरिजन परिवारो को बहका के धन का लालच देकर ईसाई बना लिया था, उक्त परिवारों मे से कुछ परिवार पुन वैदिक (हिन्दु) धर्म मे लौट आये हैं। आर्यसमाज बागपत मेरठ के तत्वावधान मे शेष ४६ परिवारो के ३१५ व्यक्तियों को भी उनके प्रार्थनापत्र दि० २६-८-८६ के आधार पर दिनाक २७-८-८६ को एक भव्य एव आकर्षक समारोह मे शुद्ध करके वैदिक धर्म की दीक्षा दे दी गई है। उक्त समारोह के आयोजन मे आर्य सभा तहसील बागपत व आर्यसमाज व आर्य वीरदल, अग्रवाल मण्डी टटीरी मेरठ के पदाधिकारी व सदस्यो ने सक्रिय योगदान दिया। समारोह मे गाव व क्षेत्र की जनता ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर क्षेत्रीय जनता द्वारा वैदिक धर्मकी दीक्षा लेने वाले सज्जनो को फूलमालाओं व पुष्प वर्षा से जोरदार स्वागत किया गया। समारोह के उपरात आर्यसमाज की शाखा का गठन किया गया व आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास भी किया गया जिसका निर्माण कार्य तीव्रगति से हो रहा है।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला मेरठ

श्रद्धा उत्पन्न करें

—प्रतापचन्द मन्त्री आर्य समाज, साकेत मेरठ

श्रद्धयाग्नि समिध्यते श्रद्धया हूयते हवि
श्रद्धा भगस्य मूर्धनि वचसा वेदया मसि

श्रद्धा भक्ति से अग्नि को प्रदीप्त किया जाता है। श्रद्धा से ही यज्ञ हवन किया जाता है। सब पुरुषार्थ श्रद्धा से किये जाते है। श्रद्धा के बिना मनुष्य कुछ भी काम नहीं कर सकता। श्रद्धा के अन्दर अद्भुत बल है। श्रद्धावान मनुष्य अपनी श्रद्धा के बल से अद्भुत पुरुषार्थ कर सकता है। अत हमे अपने मन को श्रद्धा से युक्त बनाना चाहिये।

परम पिता परमेश्वर श्रद्धा से दान देने वाले का कल्याण करता है। श्रद्धाभक्ति से पुरुषार्थ, दान और कर्म करने वालो को यश प्राप्त होता है और उनके ही श्रम सफल होते है।

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य आदि सभी वर्गों का श्रद्धा से परस्पर सगठन होगा तो राष्ट्र मे विलक्षण बल बढ़ेगा और राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति हो सकती है।

योगी महापुरुष प्राणायाम से आत्मशुद्धि करके श्रद्धा से ही उपासना करते हैं। श्रद्धा हृदय की एक विशेष भावना से ही उत्पन्न होती है। अत मनुष्य को हृदय मे वह भावना जागृत करनी चाहिए। व्यक्तिगत एव सामाजिक उन्नति के लिए इस भावना की परम आवश्यकता है। विचार-श्रद्धा, विश्वास, मन का निश्चय, दिल का अटल भरोसा, दृढ़ सकल्प ही मनुष्य से महान से महान कार्य कराता है।

मनुष्य के मन मे कितनी भी शक्ति, बुद्धि तथा अन्य प्रकार की समर्थता क्यो न हो, परन्तु श्रद्धा न होने से उसके अन्य सद्गुण उत्तम प्रकार से अपना-अपना कार्य करने मे समर्थ नहीं होते।

अत मनुष्य को प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए कि उसके अन्त.करण मे सब धार्मिक कृत्यो व सत्कर्मों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो।

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीरदल पश्चिमोत्तर प्रदेश

क्षेत्रीय कार्यालय आगरा कमिश्नरी सराय ग्वाली, जयगज, अलीगढ़

- सार्वदेशिक आर्य वीरदल पश्चिमोत्तर प्रदेश की समस्त शाखाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५—मीराबाई मार्ग लखनऊ का शताब्दी समारोह १७ अक्तूबर से २० अक्तूबर १९८६ तक डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के विशाल प्रागण मे वृहद रूप से मनाया जा रहा है।

- इस अवसर पर उत्तर प्रदेशीय आर्य वीरदल महासम्मेलन का आयोजन करने का भी निश्चय हुआ है। जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्यवीरदल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर जी हस स्वतन्त्रता सैनानी करेंगे।

- आर्य वीरो के एक सप्ताह के शिविर का १५ अक्तूबर को प्रात डा० देवव्रत जी व्यायामाचार्य उप प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीरदल उद्घाटन करेंगे। श्री अवधबिहारी खन्ना बनारस एव श्री जयनारायण आर्य अलीगढ़ शिविर व्यवस्थाओ का उत्तरदायित्व सभालेंगे। योग्यतम शिक्षको एव आचार्य देवव्रत जी की अध्यक्षता मे यह शिविर सेवा, सुरक्षा, सगठन व अनुशासन का कार्य सम्पन्न करेगा। आवास भोजन आदि की व्यवस्था नि शुल्क होगी।

- प्रान्त के सभी शाखा सचालकों से अनुरोध किया जाता है कि लखनऊ शताब्दी समारोह मे केवल १००० आर्य वीर गणवेश मे भाग लेंगे। अत अपनी-अपनी शाखाओ के प्रशिक्षित आर्य वीरो की सूची तैयार कर अपने नगर नायकों अथवा आर्य समाज के प्रधान या मन्त्रियो द्वारा श्री बालकृष्ण आर्य सचालक पश्चिमोत्तर प्रदेशीय उत्तर प्रदेश के आदेश अनुसार श्री जयनारायण आर्य जयगज अलीगढ़ को भेज दें। जिससे आवास एव भोजन आदि की व्यवस्था जिलेवार की जा सके।

- अलीगढ़ के निकटवर्ती आर्य वीर केवल ५०) मार्ग व्यय आना जाना जमा कराके अपना स्थान सुरक्षित करा लें।

- खाकी नेकर सफेद कमीज, ब्राउन प्लीट, सैण्डो बनियान, काला अण्डरवीयर, लाल लगोट, बिस्तर, पहिनने के कपड़े आदि साथ लाना आवश्यक है। पीतल के बैज, टोपी, लाठी, समारोह स्थल पर उपलब्ध होंगे। शोभा यात्रा के लिये नगर व जिलो के बैनर सुन्दर उपरोक्त चिन्ह सहित पेन्टर से लिखा कर साथ लावें।

- शताब्दी शिविर मे भाग लेने वाले आर्य वीरो को प्रमाण पत्र भी दिए जायेंगे।

- अर्थव्यवस्था—प्रान्तीय सभा शताब्दी समारोह के २), ५), १०), २५), ५०) १००) के पत्रों पर दानदाता धन देकर समारोह को सफल बनायें।

निवेदक वेदप्रकाश गुप्ता, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्यवीर दल पश्चिमोत्तर प्रदेश

आर्य जगत्

—आर्य समाज खरसरा (बलिया) मे वेद प्रचार सप्ताह दिनांक १९ अगस्त से २७ अगस्त १९८६ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज बिसौली (बदायू) में हिन्दी दिवस दिनांक १४ सितम्बर १९८६ को समारोह से सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज गौरहो व अदलहाट (मिर्जापुर) के तत्वावधान से वेद प्रचार सप्ताह दिनाक १९ अगस्त से २७ अगस्त ८६ को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री सत्य प्रकाश आर्य भजनोपदेशक के मधुर भजनो का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज भीकमपुर जैनी (बदायू) के तत्वावधान मे जनपद के विभिन्न क्षेत्रो, केसरपुर, सिधौली दढ़ियाल, चाऊपुर, नेवडा आदि मे दिनाक १९ अगस्त से ४ सितम्बर ८६ तक व्यापक रूप से वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज नगरिया परीक्षत हवाई अड्डा, इज्जत नगर बरेली के तत्वावधान मे जनपद के विभिन्न परिवारो मे यज्ञ एव सत्सग का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज माण्डेबास (सहारनपुर) मे दिनाक २४ अगस्त से २९ अगस्त ८६ तक वेद प्रचार का कार्य सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज मेरठ शहर मे दिनाक १६ अगस्त से २७ अगस्त ८६ तक वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री मनवीर सिह, देवीसिह आदि के मधुर भजन तथा प्रसिद्ध विद्वान श्री शांति प्रकाश जो शास्त्रार्थ महारथी जयपुर तथा गोरखपुर के श्री सत्य मित्र जी शास्त्री के ओजस्वी प्रवचन के कार्यक्रम हुए।

—आर्य समाज (वेद मन्दिर) गोविन्द नगर कानपुर के तत्वावधान मे वेद प्रचार सप्ताह हर्ष एव उल्लास के साथ मनाया गया जिसमे प्रति दिन यज्ञ,भजन एव प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ साथ ही स्व० श्री मैथिली शरण गुप्त की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य मे उनकी साहित्यिक सेवाओ पर व्यापक प्रकाश डाला गया।

—आर्य समाज लौरिया प० चम्पारण (बिहार) मे वेद प्रचार सप्ताह दिनाक ४ सितम्बर से ८ सितम्बर ८६ तक धूम-धाम से मनाया गया इस अवसर पर यज्ञ भजन एव प्रवचन का आयोजन हुआ।

—नगर महिला आर्य समाज गाजियाबाद के तत्वावधान मे वेद प्रचार सप्ताह नगर के विभिन्न कालोनियो मे समारोह से सम्पन्न हुआ जिला गुणगावा की प्रसिद्ध विदुषी बहिन उषा जी के सारगर्भित व्याख्यान एव प्रवचन हुए।

—गुरुकुल वासुदेवपुर (देवरिया) के तत्वावधान मे वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी पूर्णिमा से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक हर्ष एव उत्साह के साथ मनाया गया तथा यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ साथ ही जनपद के ग्रामीण अचलो मे भी वेद प्रचार का कार्य सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी मे दिनाक २० अगस्त ८६ से २७ अगस्त ८६ तक वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया तथा स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती अमृतसरी के ओजस्वी प्रवचनो से जनता लाभान्वित हुई।

[सम्वाददाताओ से प्राप्त समाचारो का सक्षिप्त सकलन]

वृद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी तथा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओ का स्वागत

नव युवको मे चेतना एव वृद्धो मे सन्तोष हेतु आर्य समाज नैनीताल ने समस्त उत्तराखण्ड के स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो एव आर्य समाज के कर्मठ, त्यागी-तपस्वियो का जिनकी आयु ८० वर्ष अथवा उससे अधिक है, एक भव्य समारोह मे सम्मान करने का आयोजन दिनाक ६ अक्टूबर १९८६ को गाधी जयन्ती के अवसर पर किया है। पिछले वर्ष भी इसी तरह का एक आयोजन किया गया था जिसमे नैनीताल नगर के ५५ वृद्धो का जिनकी आयु ८० वर्ष से अधिक थी उनका सम्मान किया गया था।

मन्त्री आर्य समाज, नैनीताल

आर्योपदेशको, भजनोपदेशको के लिये विशेष सूचना

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक श्री आशानन्द जी ने अपनी नेक कमाई मे से उन उपदेशको एव भजनोपदेशको को सहायता देने का निश्चय किया था, जो कि वृद्ध हो चुके हैं अथवा कोई काय करने मे असमर्थ हैं। इस उपलक्ष्य मे हमने अनेक समाचार पत्रो मे सूचना दी थी। इस सम्बन्ध मे लगभग १०० उपदेशको, भजनोपदेशको के प्रार्थना पत्र हमारे पास आ चुके है तथा इन प्रार्थना पत्रो मे से हम केवल १८ ऐसे उपदेशको एव भजनोपदेशको को कुछ अनुदान की राशि दे सकेंगे। शेष के लिये बाद मे सोचा जायेगा। हमने और नये आवेदन पत्र स्वीकार करने बन्द कर दिये हैं। अत अब कोई इस विषय मे हमे प्रार्थना-पत्र न भेजें।

रामनाथ सहगल
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मदिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

निर्वाचन

आर्य समाज—नैनीताल
प्रधान श्री गुरुदेव विद्यालङ्कार
मन्त्री श्री केदार सिंह
कोषा श्री धनीराम

आर्य समाज मसूरी (देहरादून)
प्रधान श्री सुशील कुमार
मन्त्री श्री वीरेन्द्र साहनी
कोषा श्री भारत भूषण

आर्य समाज सिकन्दरपुर माछुआ (अलीगढ़)
प्रधान श्री कु० गजेन्द्रपालसिंह
मन्त्री श्री राजपाल सिंह
कोषा० श्री श्रीपालसिंह

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद
प्रधान श्री ब्र० वेदानन्द आर्य
मन्त्री श्री मनुदेवार्य
कोषा० श्री रमेश चन्द्रार्य

वैवाहिक विज्ञापन

आर्य समाजी नवयुवक सत्यप्रकाश स्नातक आयु २६ वर्ष स्थायी सहायक उत्तर प्रदेश सचिवालय सेवारत हेतु जाति दहेज, बन्धन रहित वैदिक विचारधारासे युक्त सुन्दर सुशील सुशिक्षित कन्या की आवश्यकता है। सम्पूर्ण परिवार उच्च शिक्षा प्राप्त सुसस्कृत तथा लखनऊ स्थायी निवासी पत्र व्यवहार का पता—

श्री ताराचन्द सेवा निवृत सयुक्त सचिव
(उत्तर प्रदेश सरकार) ३६ जगत नारायण रोड
गोलागज, लखनऊ (उ० प्र०)

सम्वेदना

विगत मास हमारे प्रात के निम्नलिखित आर्य बन्धुओ तथा महिलाओ के निधन समाचार प्राप्त हुए है—श्री बैजनाथ सिंह आय सदस्य आ समाज मिरजापुर, आर्यवीर दल इलाहाबाद मण्डलके उपसचालक मास्टर नवलकिशोर जी, श्री विश्वनाथ जी आर्य वीर दौराला (मेरठ) आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर के सदस्य श्री चानन साह के दामाद श्री रामशक्ति सेठ, श्री वैद्य भूदेव वर्मा अलीगढ की धर्मपत्नी श्रीमती आशा रानी, आय समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर के कमठ सदस्य श्री वश बहादुर सिह की पूज्यनीय माता जी, आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर के सदस्य श्री रामस्वरूप वर्मा जी, आय समाज रानीखेतके प्रधान डा० रामसिह की पूज्यनीय माता श्रीमती पार्वती देवी जी तथा आर्य समाज भावपुर मुरादाबाद के मन्त्री श्री हरपाल सिह के पूज्य पिता जी आदि।

'आयमित्र' परिवार तथा प्रतिनिधि सभाके अधिकारी गण उपरोक्त दिवगत आर्य बन्धुओ एव माताओ के प्रति सवेदना प्रकट करते हुए उनकी सद्गति तथा दुखी परिवार एव प्रियजनो को धैय प्रदान हेतु परमपिता परमात्मा से प्राथना करते हैं।

उत्सव

—आर्य समाज बिसौली [बदायू] का वार्षिकोत्सव दिनाक २० अक्टूबर से २२ अक्टूबर १९८६ के मध्य सम्पन्न होगा। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान्-वक्ता एव उपदेशक भजनोपदेशक सम्मलित होगे।

सम्वाददाता

मास नवम्बर ८६ मे जिला उप सभा जौनपुर का प्रचार कार्यक्रम

जिला उप सभा जौनपुर के तत्वावधान मे जनपद के विभिन्न स्थानों पर वेद प्रचार का काय दिनाक ३ नवम्बर से ४ नवम्बर तक जाफराबाद, ५-७ भदेवरा, ८ से १० मछली शहर, ११ से १२ सिकरारा, बाजार १३ से १४ सुजानगज, १५से १६ बदलापुर, १७ से १८ नौपेडवा बाजार, १९ से २० मानीकला २१ से २२ जमालापुर २३ से २४ नेवढ़िया, २५ से २६ सिरकोनी, २७ से २८ मुफ्तीगज, २९ से ३० नवम्बर ८६ पतरही मे सम्पन्न होगा।

—छोटेलाल आर्य

डा० आनन्द समन को कोई सहयोग न दें

हमे पता चला है कि डा० आनन्द सुमन इन दिनो पजाब तथा अन्य प्रातो मे—सार्वदेशिक सभा, पजाब रक्षा कोष तथा क्रांति प्रकाशन के नाम पर धन एकत्र कर रहे हैं। इस प्रकार की शिकायतें सार्वदेशिक सभा मे प्रबुद्ध आर्य जनो और आर्य समाजो से प्राप्त हुई हैं। श्री आनन्द सुमन को सभा ने इस प्रकार के काय न करने के लिए सावधान कर दिया था, किन्तु उन्होंने इस पर आचरण नहीं किया। पता चला है कि इन दिनो वह पजाब मे धन एकत्र कर रहे हैं।

अत समस्त आर्य जनो और आर्य समाजो से सूचनार्थ निवेदन है कि भविष्य मे आनन्द सुमन को किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग न करें क्योकि सार्वदेशिक सभा विगत कई वर्षों से उन्हे ५००-०० पाच सौ रुपया मासिक सहायता देती आ रही है और उनके आवास आदि की समुचित व्यवस्था भी नि शुल्क की हुई है। उनके द्वारा इस प्रकार धोखे से धन एकत्र करना कानूनन अपराध है। अतएव आर्य जनों, आय समाजो तथा अन्य हिन्दू सगठनो की सूचनार्थ यह विज्ञप्ति प्रकाशित की जा रही है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

उत्सव

—आर्य समाज बिसवा (सीतापुर) का वार्षिकोत्सव दिनाक ३ अक्टूबर से ५ अक्टूबर १९८६ तक मनाया जायेगा जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध उपदेशक स्वामी सुकर्मानन्द जी तथा श्री शिवदेव जी बेधड़क भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

सम्वाददाता

—जिला आर्योप्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर के तत्वावधान मे, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर्व तथा पजाब बचाओ दिवस आर्य समाज मेस्टन रोड, मे समारोह से मनाया गया इस अवसर पर सार्वदेशिक प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने पजाब के भयावह स्थिति की चर्चा की साथ ही देश के विघटनकारी तत्वो के प्रति आर्य जनो से जागरूक होने की अपील की।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
भा० आश्विन ६
आश्विन कृष्ण १०
रविवार २८ सितम्बर १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

★ जो बोले सो अभय, वैदिक धर्म की जय !

★ गुरु विरजानन्द की जय !

★ महर्षि दयानन्द की जय !

★ स्वामी श्रद्धानन्द की जय !

★ हुतात्मा पंडित लेखराम की जय !

★ महात्मा हंसराज की जय !

★ नारायण स्वामी की जय !

★ स्वामी सर्वदानन्द की जय !

वैदिक धर्म के बलिदानियो की जय !

★ आर्यसमाज अमर रहे !

★ ओम् का झण्डा ऊंचा रहे !

★ विश्व का कल्याण हो !

★ प्राणियो मे सदभावना हो !

★ वैदिक ध्वनि—ओ३म

आर्यों के इन जय घोषो से लखनऊ नगर का आकाश गूंज उठेगा ।

जब १८–१०–८६ की दोपहर को १ बजे वैदिक धर्मियो की

❀ विराट शोभा यात्रा ❀

प्रकाशवीर शास्त्री नगर, डी ए वी कालेज मो लखनऊ से प्रस्थान करेगी—

नाका हिंडोला चौराहे से गुरुद्वारा मार्ग बांस मण्डी चौराहे से गौतम बुद्ध मार्ग, शिवाजी मार्ग हुसनगंज, महात्मा गांधी मार्ग पर आकाशवाणी, सचिवालय, प्रधान डाकघर से आगे हजरतगंज, लालबाग केसरबाग, अमीनाबाद से होते हुए वापस डी० ए० वी० कालेज पहुंचेगी ।

एक लाख आर्यों की इस विशाल शोभा यात्रा को सुसज्जित किया जाएगा हाथियो, घोडो विभिन्न प्रकार के वाहनो और भव्य झांकियो से ।

इस भव्य यात्रा मे मनमोहक भजन वेद मन्त्र पाठ वेद सन्देश सायकालीन अग्नि होत्र तथा महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो के द्वारा पुनीत वैदिक धर्म का प्रचार होगा ।

शोभा यात्रा जिन मार्गों से निकलेगी उन मार्गों मे आर्यजगत की महान विभूतियो के नाम पर एक सौ सुसज्जित द्वार होंगे और स्थान-स्थान पर शोभायात्रियो का सुस्वागत लखनऊ के नागरिक सुपेयो और सुभक्ष्य पदार्थों से करेंगे ।

प्रदेश के आर्य जन १६–१०–८६ की सायकाल तक अपने अपने जनपदो से बसो के द्वारा ध्वनि विस्तारक यन्त्रो से प्रचार करते हुए डी०ए०वी० कालेज मोतीनगर लखनऊ पहुंच । जो धर्म प्रेमी रेलवे अथवा अन्य बसो से यात्रा कर, वे रेलवे स्टेशनो और बस अड्डो पर आर्य वीर दल के स्वयंसेवको से वांछित जानकारी लें ।

अपने अपने जनपदो से भाग लेने वालो की संख्या से कृपया अविलम्ब सभा कार्यालय को सूचित करें ताकि आपके आवास और आहार की व्यवस्था मे कोई असुविधा न हो ।

शताब्दी समारोह एक नव चेतना और जागृति के सन्देशो को प्रसारित करने के लिए आया है । इसकी सफलता सब आर्यो की सफलता है । तन-मन-धन से पूरा सहयोग देना हम सबका पावन नैतिक कर्त्तव्य है ।

इन्द्रराज
प्रधान

राजर्षि रणञ्जयसिंह
स्वागताध्यक्ष

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ–२२६००१

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्र० नि० सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में सब्बरवाल प्रिंटिंग प्रस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ | घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

भा० आश्विन १३, आश्विन शुक्ल २, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनांक ५ अक्टूबर १९८६

प्रभु की अमृत वाणी—

पराक्रम कर, जौहर दिखला, दुष्टों को दूर हटा और मार भगा

आ क्रन्दय बलमोजो न आ धा अभिष्टन दुरिता बाधमानः।
अपसेध दुन्दुभे दुच्छुनामित इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व ॥

—अथर्व० ६–१२६–२

आर्यों ने सर्वत्र अनार्यों से धर्म युद्ध किया है। जो असुर शास्त्रों की भाषा नहीं समझते, जो अत्याचार, अनाचार, दुराचार और कदाचार को अपना धर्म मानकर निर्दोषों को उत्पीड़ित करते हैं, उनकी हिंसा करते हैं और भ्रष्टाचारों की अभिव्यक्ति करते हैं, ऐसे आततायियों के विरुद्ध आर्य वीरों ने शस्त्र उठाए हैं, सिंह गर्जनाएं की हैं, उन्हें ललकारा है, उन्हें पछाड़ा है और दुरितों को रुलाया है। परमात्मा अपनी अमर वाणी में यह दिव्य सन्देश दे रहा है—

(दुन्दुभे) रण की उद्घोषणा के लिए दुन्दुभी बजाने वालो [उन दुष्टों को जो अपनी दुष्टता पर पश्चाताप न कर हसते हैं, प्रसन्न होते हैं] (आ क्रन्दय) पूर्ण रुला दो (दुरिता बाधमान) दुरितों भ्रष्टाचारियों को हटाते हुए, पीछे ढकेलते हुए (अभि स्तन) सर्वत्र गर्जना करते हुए (इत) यहाँ से, इस जगत से (दुच्छुना) दुष्टों को, दुराचारियों को (अप सेध) दूर हटा, मार भगा।

[हे आर्य !] तू (इन्द्रस्य मुष्टि असि) इन्द्र की, इन्द्रत्व की, सगठित मुष्टि है, शक्ति है (वीडयस्व) पराक्रम कर, जौहर कर [और जो दीन हीन, निर्बल दुर्बल तेरी ओर आश लगाकर देख रहे हैं, मार्ग दर्शन के लिए पुकारते हुए कह रहे हैं] (न बल ओज आधा) हमे बल और ओज प्रदान करो, हमारे भीतर अपनी दिव्य शक्ति और उत्साह को भर कर भरपूर कर दो [उन्हे भी अपना यह सामर्थ्य प्रदान कराओ ताकि वे भी दस्युता से लोहा ले सकें]

आर्यों ने सर्वत्र ससार का उपकार किया है। सबकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए अपने को अग्रणी किया है। दुरिताओं को दूर हटाया है। दोषों, दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को त्यागा है और दुराचारियों से उन्हें छुड़ाया है। परमात्मा के दिव्य ज्ञान का प्रसार कर अपनी जीवन ज्योति जलाकर दूसरों की जीवन ज्योति जलाई है। शोषित वर्ग मे पुन वीरत्व को जगाया है और उनका नेतृत्व कर धरती से आसुरी वृत्तियों का उन्मूलन किया है।

सभा का शताब्दी समारोह प्रदेश के आर्यों को उनके इस पावन कर्त्तव्य का पुन स्मरण कराने के लिए प्रदेश की राजधानी लखनऊ में आयोजित किया गया है। जिन्हें स्वदेश से सच्चा प्यार है, जो राष्ट्र के लिए, वैदिक धर्म को वास्तविक रूप मे अपने जीवन मे उतारने के आकांक्षी हैं, जो स्वदेश मे बढ़ती हुई हिंसक वृत्तियों का डट कर सामना करना चाहते हैं, वे इस समारोह मे स्वय आए और अपने साथियों को भी लाए ताकि अधिकाधिक जनों को इस वीरत्व से सुशोभित किया जा सके, अमरत्व से गौरवान्वित किया जा सके।

—'वसन्त'

सदस्यता शुल्क	
आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक मण्डल—
विक्रमादित्य 'वसन्त' 'वेद वारिधि' | आचार्य रमेशचन्द्र एम ए. | आचार्य देवव्रत अवस्थी

वर्ष ८६
अङ्क ४१



सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार ५ अक्टूबर १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

इन्द्र : मृधो वि–जहि

सम्पूर्ण विश्व मे इस समय आतङ्क का बोलबाला है। प्रतिदिन समाचारपत्रो मे अनेक हिंसक घटनाए पढ़ने को मिलती हैं। कहीं सजातीय गोलियो से भूने जा रहे हैं, कहीं वायुयान के निर्दोष यात्रियो को विमानो के अपहरण के पश्चात् मारा जा रहा है, कहीं डकैतिया पड रही हैं, निरीह नागरिको की हत्याए की जा रही हैं। महिलाओ के साथ सामूहिक बलात्कार किया जा रहा है। आज मानव ने दानवता के सब मापदड तोड दिए हैं। हमारा स्वदेश भी आतङ्कवाद की लपटो से अछूता नहीं है। सर्वाधिक हिंसक घटनाए पजाब (पञ्च नदियो के पावन प्रदेश) मे घटित हो रही हैं। पजाब के मुख्य मन्त्री श्री बरनाला जी चाहे कितने ही दावे क्यो न करें कि उन्होने स्थिति को नियन्त्रित कर लिया है, अधिकाश आतकवादी पकड लिए गए हैं परन्तु उनके ये दावे भीतर से खोखले सिद्ध हो रहे हैं। गत सप्ताह दो प्रमुख साम्यवादी राजनैतिक नेताओ की हत्याए तथा अन्य निर्दोष व्यक्तियो के सहार इस बात के जीते जागते प्रमाण हैं कि अभी पजाब का प्रदेश इन आक्रमणकारी हिंसको की हिसा से उत्पीडित है और यदि इसका शीघ्र उन्मूलन न किया गया तो इसके भावी परिणाम देश के लिए बड़े घातक सिद्ध हो सकते हैं।

आर्यों ने सदैव इन आक्रमणकारी हिंसको का डटकर सामना किया है और अपने वीरत्व से इन्हे केवल परास्त ही नहीं किया अपितु दस्यु वृत्ति का भी उन्मूलन किया है। आज पुन वह समय आ गया जब आर्यों को सुसगठित होकर अपने वेदानुकूल आचरण से इन आततायियों से जूझना है और यह सिद्ध कर देना है कि अनार्यत्व का विनाश करने मे केवल आर्य ही समर्थ सिद्ध हो सकते हैं।

वेद माता आर्यों को इस सन्दर्भ मे यह पावन सदेश देती है—

वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यत ।
यो अस्मा अभिदासत्यधर गमया तम ।
उपयामगृहीतोऽसन्द्रियाय त्वा विमृध एष ते
योनिरिन्द्राय त्वा विमृधे ॥

[ऋ० १०/१५२/४, य० ८/४४, १८/७० साम० १८६८ अ० १/२१/२]।

अर्थात् हे (इन्द्र) आत्मा ! तू (उपायाम गृहीत असि) पृथिवी-गृहीत है। समस्त पृथिवी तेरा घर है (ते एष योनि) तेरा यह मानव जीवन (त्वा इन्द्राय विमृधे, त्वा इन्द्राय विमृधे) तुझे सार्वभौम साधना के लिए, आत्म साधना के निमित्त इन्द्रत्व धारण करने के लिए तथा पापो के उन्मूलन के लिए, परमात्मा ने प्रवृत्त किया है।

अतएव हे (इन्द्र) शत्रुओ को परास्त करने की क्षमता रखने वाले शक्तिमान् आत्मा उठ ! (न) हमारे [जो] (मृध) हिंसक हैं हिंसाकारी हैं [उन्हें] (वि-जहि) विनष्ट कर (पृतन्यत) आक्रमणकारी सेनेच्छु हिंसा की सेनाओं को लेकर बढ़ने वाले [उन्हें] (नीचा यच्छ) दबोच दे, गहरा, नीचे दफन कर दे, ऐसा दमन कर दे [ताकि वे पुन उभर न सकें]।

हे (इन्द्र) शक्ति और सामर्थ्ययुक्त आत्मा ! तू इस (तम) अन्धकार को, सशय, भय भ्रम उत्पादित पाप को [जिसके कारण ये जघन्य अपराध इस विश्व मे होते है] (य) जो (अस्मान् अभिदासति) हमे सब प्रकार से दबाता है, विनष्ट करता है [उसे] (अधर गमय) अधर तक दूर ले जा, उठाकर दूर फेंक दें।

आर्यों ! इस मन्त्र में परमात्मा के आदेश का गम्भीरतापूर्वक मनन करें। आर्यों ने ज्ञानमार्गी बनकर सर्वदा यह आत्मबोध किया है कि उनकी आत्मा अजर अमर है केवल शरीर ही नाश को प्राप्त होता है। 'वायु, अनिलम् अमृतम् अथ इदम् भस्मान्तम् शरीरम्' के अनुसार आत्मा के अमरत्व का बोध जिन्हे आत्मानुभूत हो जाता है, वे सर्वथा निर्भीक और निडर हो जाते हैं। अपने जीवन के लक्ष्य को जानने वाले आर्य सर्वप्रथम साधारण जनजीवन से ऊचा उठकर प्रज्ञ बनते हैं, द्विज और प्रज्ञ बनते हैं और ऐसा बनने के लिए वे सर्वप्रथम अपने अन्त करण के षड्रिपुओ को परास्त कर विजयी बनते हैं। काम क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष और अहकार को वश मे करने वाले ये आत्मविजेता जगत मे एक सार्वभौम साध को लेकर चलते हैं। यह साध है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की। दूसरो को आर्य बनाने से पहले वे स्वयम् आर्य बनते हैं और अनार्यत्व के पोषक असुरो, राक्षसो तथा नरपिशाचो से वे धर्म युद्ध मे लीन होते हैं। शास्त्रो के आधार पर हिंसक वासनाओ का वे निराकरण करते हैं और 'बहुजन हिताय' को लक्ष्य मे रखकर जब शस्त्र उठाने आवश्यक हो जाते हैं तो वे इन आक्रमणकारियो को, हिंसको को, आततायियो को धर दबोचते हैं, उन्हे परास्त करते हैं और उनकी पाशविक वृत्ति को इतना नीचा दबा देते हैं कि एक दीर्घ समय तक वह नहीं उभर पाती। ऐसे दिव्य वीर ही साधारणजनों को जो दुष्टो द्वारा दलित किए जाते हैं, दबाए जाते हैं, मारे जाते हैं और शोषित किए जाते हैं, उन्हें उठाकर दूर अधर मे फेंक देते हैं।

वैदिक धर्मियो का धर्म वेद है, केवल वेद है और उसी के माध्यम से आर्यों को वैदिक सस्कृति का इस विश्व मे पुन प्रसार करना है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र के शताब्दी समारोह मे जहा विश्वभृत यज्ञ सम्पन्न होगा, योग साधना शिविर लगेगा, वहां वेद सम्मेलन, आर्य सम्मेलन और पजाब रक्षा सम्मेलन भी होंगे। वैदिक सन्यासियो, विद्वानों और नेताओ द्वारा ऐसे ही प्रेरणाप्रद व्याख्यान श्रवण करने को मिलेंगे। एक नव चेतना, नव उत्साह, नूतन उमगो और दिव्य चेतनाओ को प्रसारित करने के इस पावन अवसर को जो आर्य चूकेगा, वह सौभाग्यशाली नहीं होगा। आर्य जाति, वैदिक धर्म तथा आर्यावर्त्त की सर्वांगीण उन्नति के लिए इस भव्य सम्मेलन को सफल बनाना वर्तमान युग मे एक क्रांति लाने के सदृश है जिसमें तन मन और धन से सहयोग देना हमारा पुनीत कर्तव्य है। 'वसन्त'

देश की वर्तमान परिस्थितियों पर एक विचारपूर्ण विवेचन–

देश स्वातंत्र्य, राष्ट्रीयता और नए संकट

(गतांक से आगे)

अंग्रेजी–जिन्दाबाद, उर्दू जिन्दाबाद, बगला–जिन्दाबाद। अंग्रेजी हमारी भी है, और पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा भी है। बगला हमारी भी है और यह भाषा बगला देश की राष्ट्र भाषा भी है। किन्तु हमारी सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी किसी देश की राष्ट्र भाषा नहीं है, आज हमने इसके लिए एक नया नाम सम्पर्क भाषा गढ़ा है। देश का विघटन भाषाई आधार पर आरम्भ हो गया, तो एक दिन पश्चिमी बगाल भी भारत का परित्याग करके बगलादेश का अग बन जायेगा।

हमारी पहली भयकर भूल भाषायी प्रदेशो का निर्माण थी। दूसरी भूल साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन थी। देश का एक वर्ग प्रारम्भ से अब तक साम्प्रदायिकता का हामी रहा है। उसकी युक्ति यही रही कि यदि पाकिस्तान मुसलमानो का देश है, तो शेष भारत को हिन्दुओं का देश घोषित किया जाय इस भावना को मानने वाले सब नही हैं, पर उनके नेता १९४७ से आज तक भारतीय राष्ट्रीयता के विरोध मे अपने प्रत्याशी बराबर खड़े करते रहे हैं। ये रूढ़िवादी आस्थाओ के पोषक हैं–गाय–गगा और गायत्री को दुहाई देते हैं–ये अन्धविश्वासी तत्वों के समर्थक हैं–गुरुओ, भगवानो, अवतारो, मठो, महन्तों, मन्दिरो को भारतीय सस्कृति का प्रतीक मानते हैं। प्रारब्ध के पुजारी हैं, ज्योतिषियो के चक्कर मे हैं, राशिफलो को पत्रपत्रिकाओ मे छपवाते हैं, इनमे से कईयों के तान्त्रिक भी हैं, और ये अपने देश की कुरीतियो को विदेशो मे भी ले जाना चाहते हैं। फल यह है कि इस दल के लोगो का एक स्वप्न यह भी है, कि भारत का राष्ट्र इनके हाथो में आ जाय। इस दल ने १९४७ से आज तक भारतीय राष्ट्रीयता का पोषण नहीं किया।

आज सिक्ख स्पष्ट कह रहे है, कि हम हिन्दू नहीं है, कल जैन कहने को तैयार हैं–'हिन्दुओ का नारा था–'न गच्छेत् जैन मन्दिरम्' काशी विश्वनाथ के मन्दिरो मे जैनो के आने की मनाही थी, क्योंकि जैन आर्येतर थे–आर्य नहीं। रामकृष्ण मिशन के लोग भी यही कहेंगे–अरविन्द, थियोसोफिस्ट, ससार को कार्य क्षेत्र मानने वाले वैदिक धर्मी अमूर्ति-पूजक और जन्मना जाति के विरोध करने वाले उदार-चेता-ये भी 'हिन्दू' की श्रेणी से बाहर आने लगेंगे। देश का विघटन देश का अवश्यम्भावी खतरा है। क्या हम देश को इस विघटन और पतन से बचा सकते हैं?

विघटन से बचाना हो, तो

१–(क) गणराज्य को गणराज्य न मानकर राष्ट्र ('भारत राष्ट्र') माना जाय।

(ख) देश के सविधान पर फिर से सिंहावलोकन किया जाय। जिन विधाओं के आधार पर विघटित होने की आशका हो, उनमे सशोधन किए जाय।

२–प्रदेशों का विभाजन भाषा के आधार पर न होकर शासन की सुविधा के आधार पर हो। न्यूनतम प्रदेश हों–पश्चिम प्रदेश, पश्चिमोत्तर प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पूर्व देश, मध्यपूर्व प्रदेश, दक्षिण पश्चिम प्रदेश (आस्ट्रेलिया और सयुक्तराज्य अमेरिका के प्रदेश सरल रेखाओं के द्वारा बटे हुए हैं।)

३–देश मे किसी को न अल्पसख्यक माना जाये, न बहु-सख्यक, न कोई हरिजन माना जाय, और न कोई अनुसूचित या परिगणित वर्ग, न ईसाई, न मुसलमान, न हिन्दू न सिक्ख–राजनियम सबके लिए एक से हों जिस किसी ने भी भारत की राष्ट्रीयता अगीकार की है उस पर समान नियम लागू किये जाय–न कुरान की शरियत मानी जाय, न याज्ञवल्क्य स्मृति की।

– स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती –

४–अन्धविश्वासो और अवैज्ञानिक बातों का प्रचार करने वालो को जनता को धोखा देने वाला माना जाय और उनको नियन्त्रित करने के लिए दण्ड हो–चादी या ताबे से सोना बनाने वाले, या इसी प्रकार चमत्कार दिखाने वाले, या तान्त्रिक क्रिया के नाम पर धोखा देने वालो के लिए दण्ड का यथोचित विधान होना चाहिये।

५–जिन अधिनियमो के कारण जनता को न्यायालय जाने की आवश्यकता से अधिक छूट मिल गयी है–उन पर फिर से विचार करना चाहिये, ताकि सस्थाओ का अनुशासन सुचारुरूप से चल सके।

६–राष्ट्र की आवश्यक सेवाओं मे हड़ताल आदि के द्वारा विघटन डालने वाले जो अधिकार जनता ने दे रखे हैं, उन पर फिर से विचार होना चाहिये। देश का निर्माण करने मे जो भी बाधक तत्व हैं उन पर कठोर नियन्त्रण होना चाहिए।

७–देश मे बढ़ती हुई अनैतिकता को रोकने मे सभी राजकीय दलो का समवेत प्रयास होना चाहिये।

पिछले ४० वर्ष हमने खो दिये। ये वर्ष हमारे राष्ट्र निर्माण के थे, जर्मनी और जापान जो पिछले युद्ध मे बरबाद हो गए थे, आज फिर समृद्ध राष्ट्र है। हम वैसा क्यो न कर सके? एक ही उत्तर है–४० वर्षों मे हमने देश मे राष्ट्रीयता विकसित नहीं होने दी। तब न सही, तो अब सही!!

कविता कलाप

प्यारा अपना आर्यसमाज

सोता देश जगाया जिसने,
मानवता फैलाया जिसने,
नव आलोक महीतल पर—
सहज पुन बिखराया जिसने,
धर्म तथा सस्कृति का रक्षक—
एकमात्र भारत मे आज।
प्यारा अपना आर्य समाज ॥
वेदो का देकर सदेश,
मधुरिम सा अमृत उपदेश,
गिरिवर से ले हिन्द सिन्धु तक—
जाग्रत किया सहर्ष स्वदेश,
राम-कृष्ण की, देश धर्म की—
इसने सदा बचायी लाज।
प्यारा अपना आर्य समाज ॥
किया राष्ट्र मे पुनर्जागरण,
हुआ प्रफुल्लित भू का कण-कण,
यम-नियमो की, वर्णाश्रम की—
हुई व्याख्या, शुद्ध आचरण,
बन्धनमुक्त बनाने माँ को—
सजाया था वीरोचित साज।
अपना प्यारा आर्य समाज ॥

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ प्र)

ओ३म् का ही स्मरण

ओ३म् का ही स्मरण प्रात व साय मै करू।
ओ३म् मे ही हर समय हर क्षण लगाये लव रहू।
काय जग मे जो करू सब ओ३म् के ही मैं करू।
साधना मे ओ३म् के ही नाम की माला जपूं।
ओ३म् ही केवल सहारा है हमारा विश्व मे।
ओ३म् ही है परम रक्षक पालक पिता इस विश्व मे।
ओ३म् के चिन्तन भजन से दुख सब मिट जायेंगे।
ओ३म् के ही भजन से छल कपट सब छट जायेंगे।
स्नेह की धारा बहेगी ओ३म् के ही साथ से।
प्रीति सब मे लहलहायेगी अपने आप से।
ओ३म् की ही गोद मे मै बैठ सुख पाया करू।
पाकर कृपा उसकी सभी मे शान्ति फैलाया करू ॥

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

वेद वन्दना

विश्व सदन मे चार वेद यह, सूर्य सदृश्य प्रेरक हैं।
अर्थ धर्म वा काम मोक्ष सम, विविध ज्ञान द्योतक हैं ॥
साम-दाम वा दण्ड विभेद, नीति निपुण्य धरा है।
मानो शश्वत ज्ञान रूप मे, अमृत कलश भरा है ॥

वेद प्रभु का पावन ज्ञान है, इसमे ओम् नाम प्यारा।
ऋग, यजु, साम अर्थववेद, जिनमे अतुलित ज्ञान भरा ॥
सभी ऋचायें प्रभु गुण गाती, मन्त्र सत्य मार्ग दर्शाते हैं।
मानव जीवन का सार क्या है, सत्य-सत्य बतलाते हैं।

वेद स्वत प्रमाण अपने मे हैं, इनकी उपमा और नहीं।
जैसे सूर्य को सिद्ध करने हित, बना कोई अन्य यत्र नहीं ॥
वेद विश्व की प्रथम पुस्तक है, इसे सभी ने माना है।
इसमे अतुलित ज्ञान भरा है, इसे विद्वत जन जाना है ॥

वेद, ज्ञान असीम अनुपम है, इसके मम सभी से न्यारे।
इनकी गणना सहज नहीं है, ज्यों नभ के असख्य तारे ॥
इनमे ज्ञान गम्भीर भरा है, ज्यो सागर के बीच पानी।
इनके गहन अध्ययन मनन से, गति पाते हैं प्राणी ॥

वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक, सभी शास्त्र बतलाते है।
इनके सत्य सार जो जन जाने, वे ही मुक्ति पद को पाते हैं ॥
सारे विश्व मे जितनी विद्या, मूल वेद मे धरा हुआ।
लौकिक और प्रलौकिक ज्ञान, सभी वेद मे भरा हुआ ॥

वेद अपौरुष्य हैं, ऋषी गण सभी बतलाते है।
प्रभु से ज्ञान गम्भीर सुनें वे, इससे श्रुति नाम कहाते हैं ॥
वेद पढ़ें और पढावें सबको यह है परम धर्म महान्।
वेद सुनकर जग को सुनावें, यह है सत्य शास्त्र प्रमाण ॥

वेद भाष्यकर ऋषि दयानन्द, जग को अनुपम ज्ञान दिये।
सत्य असत्य का मार्ग बताकर, सत्यार्थ प्रकाश सम निधि दिये ॥
जग मे वेद प्रचार कैसे हो, विद्वत जन विचार करें।
वेद सप्ताह के पावन पर्व पर, सब मिल वेद प्रचार करें ॥
आर्य समाज वेद प्रचार कर, ऋषि के ऋण चुकाते हैं।
नर-नारी को वेद पढाकर, ज्ञान मार्ग बताते हैं ॥
'आमोद' सब मिल प्रेम से बोले, वेद भगवान करे कल्याण।
सत्य चित्त आनन्द रूप हैं, सच्चिदानन्द सम वेद महान ॥

[त्रिलोकी प्रसाद आमोद भारत माता चौक, केशोपुर
पो० जमालपुर, जि० मुंगेर (बिहार)]

शताब्दी समारोह
मे
१४ से २० अक्टूबर ८६ तक आयोजित

राष्ट्रभृत (विश्व कल्याण) यज्ञ

मे अपनी आहुति देकर यश के भागी बने। यजमान बनने के लिए तुरत सूचित करें। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, मेरठ एव अध्यक्ष महात्मा दयानन्द तपोवन देहरादून होंगे।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा

ऋषि मेला

समस्त आर्य जगत् को यह जानकर हर्ष होगा कि सदा की भांति इस वर्ष ऋषि मेला दिनाङ्क ७, ८ व ९ नवम्बर, ८६ शुक्रवार, शनिवार, रविवार को ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर मे सोल्लास मनाया जायेगा।

दिनाङ्क ५ से सामवेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ होगा। यज्ञ का समय प्रात ७ बजे से ९ बजे तथा साय ४ बजे तक रहेगा। इस अवसर पर आगन्तुक विद्वान् महानुभावों तथा प्रतिष्ठित भजनोपदेशकों के वेदोपदेश, भजन एव प्रवचन होगे। यज्ञ की पूर्णाहुति दिनाङ्क ९ को प्रात १० बजे सम्पन्न होगी।

इस मेले मे आय जगत् के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती तथा श्री डा० सत्यदेव जी, डा० भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़ आदि विद्वानो के प्रवचन तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशको के भजनोपदेश होंगे। सभी धर्म प्रेमी बन्धु सादर सपरिवार आमन्त्रित हैं। निवास व भोजन की नि शुल्क व्यवस्था ऋषि उद्यान मे रहेगी।

निवेदक—

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	डा भवानीलाल भारतीय
प्रधान	सयुक्त मन्त्री
पन्नालाल बाहेती	प्रो० धर्मवीर
कोषाध्यक्ष	कायकारी मन्त्री

आर्य समाजो के आगामी वर्षिक उत्सव

१— आर्य समाज 'अनारकली, मदिर मार्ग, नई दिल्ली १० नवम्बर से १६ नवम्बर १९८६।

२— आर्य समाज कैसरबाग, लखनऊ २४, २५ तथा २६ अक्टूबर, ८६ लखनऊ।

३— मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी का रजत जयन्ती समारोह २४, २५ तथा २६ अक्टूबर ८६।

इन उत्सवो मे अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया गया है, जिसमे आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान तथा भजनोपदेशक भाग लेंगे। स्थानाभाव के कारण पूर्ण विवरण देना समव नहीं है।

सराहनीय प्रोत्साहन

आर्य समाज पिथौरागढ़ (उ० प्र०) से प्राप्त सूचना के 'आधार' पर वर्ष १९८६ मे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण कक्षा १ से १६ तक के छात्र छात्राओं को मेधावी प्रमाण-पत्र पुरस्कार सहित दिए जाएगे। पिथौरागढ़ के ये विद्यार्थी किसी भी रविवार के सत्सग मे प्रात ८ से १० तक उपस्थित होकर स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी से सम्पर्क करें।

संवेदना

(१)

जिला आर्य उप सभा मिरजापुर के उप प्रधान श्री लाल बहादुर सिंह के पिता श्री विन्ध्येश्वरीसिंह तथा आर्य समाज बगही मिरजापुर के भूतपूर्व प्रधान श्री बैजनाथसिंह उर्फ 'शुकुल' जी का आकस्मिक निधन हो गया।

आर्य समाज बगही-मिरजापुर की ओर से उस अमर आत्मा की सद्गति व उनके शोक सतप्त परिवार के धैर्य व शाति के लिये प्रभु से प्रार्थना का प्रस्ताव पारित किया गया।

(२)

—आर्य समाज बिसौली बदायू ने अपने समाज के साप्ताहिक सत्सग दिनांक १३ सितम्बर ८६ मे सभा के भू० पू० भजनोपदेशक श्री धर्मदत्त जी आनन्द के निधन पर अपनी शोक सवेदना प्रकट करते हुए दिवगत के शांति एव शोक विह्वल परिवार जनों के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

(३)

आर्य समाज बाराबकी के भूतपूर्व मन्त्री श्री हरिशरण जी आर्य का निधन १४-९-८६ को हो गया। उनकी आयु ८३ वर्ष की थी। वे आर्य समाज के एक कर्मठ कार्यकर्त्ता थे, लेखक और विद्वान थे। हैदराबाद सत्याग्रह के अवसर पर आपने अपना सराहनीय सहयोग दिया था और स्व० स्वामी ध्रुवानन्द जी के जत्थे का बाराबकी मे स्वागत कराया था।

उनके निधन पर उनके पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण जी तहसील नानपारा (बहराइच) द्वारा, आर्य समाज नानपारा, आर्य समाज कैसरबाग, लखनऊ, श्री मद्दयानन्द बाल सदन लखनऊ, सरलतम जिज्ञासु सस्कृत समिति लखनऊ तथा श्रीमती प्रज्ञादेवी पाणिन कन्या सस्कृत महाविद्यालय वाराणसी प्रत्येक को १०१) रु० का दान [कुल ५०५] प्रदान किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी गण तथा आर्य मित्र परिवार दिवगत आत्माओ की शाति तथा सद्गति के लिये और उनके शोक सतप्त परिवारो को धैर्य्य प्रदान करने के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है।

आर्य जगत के समाचार

—ज्ञानदेवी आर्य बाल मन्दिर बिसौली की श्रीमती सत्यभामा पत्नी स्व० श्री ला० वेदप्रकाश अग्रवाल फरीदपुर (बरेली) ने ६ हजार रुपये दान स्वरूप प्रदान किया विद्यालय की ओर से श्रीमती सत्यभामा जी को इस पुनीत कार्य हेतु धन्यवाद प्रदान किया गया।

सम्वाददाता

निर्वाचन

आर्य समाज किरावली (आगरा)	आर्य समाज नेमदार गज
प्रधान श्री प्रिय चन्द्र बशल आर्य	प्रधान श्री नन्दलाल साह
मन्त्री श्री महेन्द्रसिंह आर्य	मन्त्री श्री रविन्द्र प्रसाद 'निर्भय'
कोषा० श्री रामवीर सिंह	कोषा० श्री सत्यदेवप्रसाद आर्यम इ र

अमृत वर्षा

धरती को शत्रु रहित करो

मनुष्यों के समुदाय में जो शत्रुओं को जीत सके, जो शत्रुओं से पराजित न हो, राजाओंमें सर्वोपरि विराजमान प्रकाश मान हो, सत्करणीय, सबको माननीय, बड़े चक्रवर्ती राज्य तथा सबसे बड़े होने के योग्य हो, सर्वत्र पक्षपात रहित और सबका मित्र हो, उस सभापति राजा को सर्वाधीश मान कर सब भूगोल को शत्रु रहित करो।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

"हिन्दी से एकता अखण्ता सुरक्षित"

केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुरके तत्वावधान मे आर्य समाज दर्शनपुरवा मे श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे राष्ट्र भाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। समारोह मे वक्ताओ ने कहा कि हिन्दी से देश की एकता-अखण्डता सुरक्षित है। अग्रेजी के स्थान मे हिन्दी को लाने, सस्कृत भाषा को पाठ्यक्रम मे अनिवार्य कराने की माग की गई। हिन्दी के अपमानकर्ता को देश द्रोही की तरह समझे जाने की भी माग की गई। मन्त्री

आर्य समाज शाहजहांपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज शाहजहापुर तथा आर्यस्त्रीसमाज शाहजहापुरका वार्षिकोत्सव दिनाक ७,८,९, १० अक्टूबर ८६ को बड़े समारोह के साथ आर्य महिला डिग्री कालेज, सदर बाजार के विशाल प्रांगणमें मनाया जायेगा।

विचार-विमर्श

पितृ-पक्ष

[लेख में प्रस्तुत विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। विचारक एतदसम्बन्धी अपने विचार दें वह सहर्ष प्रकाशित होंगे। —सम्पादक मण्डल]

[श्री वसिष्ठ, आर्य समाज आयुधनिर्माणी मुरादनगर गाजियाबाद]

ऊर्ज्जं वहन्तीमृतं घृतं पयः कीलालम्
परि स्रु तं । स्वधास्थ तर्पयत् मे पितृ न् ॥
(यजु० २-३४)

भावार्थ— परमात्मन् ! मुझे ऐसा सामर्थ्य प्रदान करो कि मैं जीवनप्रद, तेजोमय, अन्न दूध घी और उत्तम फलों के रसों तथा अन्य आवश्यक सामग्रियो से अपने पितरों एव उनके भी पितरो को अपनी सन्तुष्टि के लिए सदैव तृप्त किया करू ।

आइये उपरोक्त वेद मन्त्र पर कुछ मनन करें। पौराणिक जगत मे आश्विन मास का कृष्णपक्ष पितृ-पक्ष कहलाता है जिसमे भाद्रपद मास की पूर्णिमा तिथि को सम्मिलित करके १६ तिथि बनती हैं। इन दिनों वे अपने पितरो [मृतको] का श्राद्ध कर्म करते हैं, दान-दक्षिणा देते हैं, ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं और मानते हैं कि इस कर्म से पितर सन्तुष्ट होगे, उनकी भूख प्यास एव अन्य आवश्यकताओ की पूर्ति होगी।

मृतको का श्राद्ध-तर्पण असम्भव है इस कारण आर्य जन इस कर्म मे न विश्वास रखते हैं न इन दिनो पितृ-पक्ष मनाते हैं और न ही पितरों के नाम पर दान दक्षिणा तथा अन्न दान करते है।

आर्य जगत के विद्वानों के लिए हम यहा एक विचार प्रस्तुत करते हैं कि आर्यों को इस पक्ष (आश्विन कृष्ण) की अहेवलना नहीं करनी चाहिए अपितु उसे परिष्कृत रूप मे भली प्रकार मनाना चाहिए।

यहा पितृ कौन हैं यह जानना चाहिए। दादा-दादी, माता-पिता जो जीवित हैं और हमारे साथ परिवार मे रहरहे हैं,जिन के कार्यकलाप परिवार के आय-व्यय को प्रभावित करते हैं उनको वास्तविक पितृ समझना उचित नहीं है। वे तो मान्य पारिवारिक सदस्य ही हैं। जो मृत हैं वे नहीं क्योंकि उनसे सम्बन्ध ही समाप्त हैं।

हमारा विचार है कि वे जीवित दादा-दादी, माता-पिता आदि जो पारिवारिक उत्तरदायित्वो से अवकाश पा चुके हैं अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को अपनी सन्तति को सौंप, लोककल्याण मे सम्पूर्ण समय दे रहे हैं, तपस्वी जीवन बिता रहे हैं। घर से कोई लौकिक सम्बन्ध ही नहीं रखते। वे ही वास्तविक पितर हैं चाहे वानप्रस्थी हैं अथवा सन्यासी।

गृहस्थियों का कर्तव्य है कि वे उपरोक्त दृष्टि से वास्तविक पितरों को ग्रीष्म-शरद् ऋतु की पावन सन्धि बेला में, आश्विन वा चैत्र मास के कृष्ण पक्ष मे उन्हें खोज खोज कर अपने परिवार मे सम्मान पूर्वक लाया करें। विधिवत पूजा अर्चना सेवा-सुश्रूषा, उनकी पूरे पक्ष तक चलती रहें। और साथ ही यज्ञ-याग, कथा-कीर्तन, विचार गोष्ठियो का आयोजन हो।

पश्चात्त मे उनकी आगामी छ मास की ऋत्वनुकूल आवश्यकताओ का आकलन कर उसे श्रद्धा पूर्वक पूरा किया जाय। यदि उनका शरीर अब भी समाज-सेवा के लिए उपयुक्त है स्वास्थ्य ठीक है तो उन्हें श्रद्धा-पूर्वक भावभीनी विदाई आगामी छ मास के लिए दे दी जाए और यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा है तो अनुनय विनय कर उन्हें घर पर रोक लिया जाए।

यहा हम पितरो से भी अपेक्षा करते हैं कि उनकी विगत छ मास की समाज सेवा एव साधना ऐसी होनी चाहिए जिसमे उन्होने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहकार को जीतने के लिए उत्तरोत्तर उन्नति की हो परन्तु जो अब भी लोभ-मोह वश सामाजिक धन लाकर अपने परिवार मे देते हैं, उनकी साधना अधूरी है वे पितरो की कोटि मे नहीं आते।

निर्वाचन

आर्य समाज कालपी (जालौन)
प्रधान श्री भगवान सिंह जी
मन्त्री श्री प्रकाश जैतली
कोषा० श्री ज्ञानेन्द्रकुमार आर्य

आर्य समाज उझानी (बदायू)
प्रधान श्री उमेश दत्त शर्मा
मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र मिश्र
कोषा० श्री महेश चन्द्र आर्य

केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ
प्रधान श्री मान सिंह वर्मा
मन्त्री श्री इन्द्रराज जी
कोषा० श्री शान्ति प्रकाश मित्तल

आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी
प्रधान श्री रामचन्द्र प्रधान
मन्त्री श्री देवराज दत्ता
कोषा० श्री नरेन्द्र कुमार जी

आर्यसमाज आर्यनगर मूड बरेली
प्रधान श्री जगदेव जी आर्य
मन्त्री श्री सुरेश चन्द्र शर्मा
कोषा श्री रमेश चन्द्र सक्सेना

आर्य समाज कलवारी (बस्ती)
प्रधान श्री जयवक्स सिंह आर्य
मन्त्री श्री रामपाल सिंह आर्य
कोषा० श्री राजेश्वरी प्रसाद उपाध्याय

आर्य समाज खटीया (नैनीताल)
प्रधान श्री आनन्दप्रकाश रस्तोगी
मन्त्री श्री राम चन्द्र आर्य
कोषा० श्री पूरन सिंह जी वर्मा

आर्य समाज बहेडी (बरेली)
प्रधान श्री सुरेन्द्र सिंह
मन्त्री श्री रामस्वरूप स्नातक
कोषा० श्री कृष्णदयाल पाराशरी

आर्य समाज गया (बिहार)
प्रधान श्री प्रयाग नारायण आर्य
मन्त्री श्री जगदम्बा प्रसाद एम ए
कोषा० श्री मुन्शी प्रसाद आर्य

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा
प्रधान श्री बोधानन्द जी
मन्त्री श्री रामचन्द्र जी मलहोत्रा
कोषा० श्री राजा बाबू जी शर्मा

आर्य समाज नासिरा पुर पो०- बांगरमऊ (उन्नाव)
प्रधान श्री राम नारायण आर्य
मन्त्री श्री टीका राम आर्य
कोषा० श्री राम औतार जी

जिला आर्यप्रतिनिधि सभा जौनपुर
प्रधान श्री आर्य मुनि वानप्रस्थ
मन्त्री विशेसर नाथ आर्य
कोषा० श्री नारायण दत्त

आर्य समाज चौक बाजार बुलन्दशहर
प्रधान श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा
मन्त्री श्री अनिल कुमार गुप्ता
कोषा० श्री गणेशदत्त गोपाल

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45994 ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
मा० आश्विन १३
आश्विन शुक्ल २
रविवार, ५ अक्टूबर १९८६ ई०

ओ३म् आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

★ सिर जाए तो जाए मेरा वैदिक धर्म न जाए।

★ धर्म को खातिर ऋषि दयानन्द,
विष अमृत सम पी जाए।

★ धर्म की खातिर स्वामी श्रद्धानन्द,
श्रद्धा से सीने पर गोली खाए।

★ धर्म की खातिर महात्मा हंसराज,
हंस हंस कर मर जाए।

★ धर्म की खातिर पंडित लेखराम,
पेट में चाकू लगवाए।

★ धर्म की खातिर बाल हकीकत,
अपना सीस कटवाए।

★ धर्म की खातिर आर्य वीर,
आगे बढ़ बलि हो जाए।

आर्यसमाज का इतिहास बलिदानों का इतिहास है। महर्षि दयानन्द से लेकर अब तक वैदिक धर्म के प्रचारक अपना बलिदान देते आये हैं और आगे भी देते रहेंगे। चाहे पाखण्ड खण्डन हेतु उन्हें अपने पावन जीवन का उत्सर्ग करना पड़ा हो, चाहे अत्याचार, अन्याय और अभाव के विरुद्ध हैदराबाद में सत्याग्रह करके जेलें भरनी पड़ी हों अथवा पंजाब के हिन्दी आन्दोलन में प्राण गंवाने पड़े हों, लाठियां खानी पड़ी हों और अत्याचार सहने पड़े हों, आर्यों ने सदैव अग्रणी होकर जनता का नेतृत्व किया है।

आज पुनः राष्ट्र को विघटित करने के लिए जिन आसुरी शक्तियों ने अपना सिर उठाया है, स्थान-स्थान पर आतंकवाद से जन साधारण को भयभीत कर अपने निकृष्ट स्वार्थों को पूर्ण करने के लिए प्रयास रत हैं उनको कुचलने के लिए वैदिक प्रेरणाएं धारण करने के लिए संगठित रूप में लखनऊ आएं।

सभा के शताब्दी समारोह में

[१७ से २० अक्टूबर १९८६ तक]

[प्रकाशवीर शास्त्री नगर, डी ए वी कालेज मोतीनगर लखनऊ]

❋ विशिष्ट आकर्षण ❋

१४ से १६ अक्टूबर ८६—योग साधना शिविर।
१४ से २० अक्टूबर ८६—विश्व भृत यज्ञ।
१७-१०-८६ — ध्वजारोहण, 'आर्यमित्र' विशेषांक का विमोचन, पंजाब रक्षा सम्मेलन तथा शिक्षा सम्मेलन।
१८-१०-८६ — भव्य शोभा यात्रा, कवि सम्मेलन।
१९-१०-८६ — सामूहिक साप्ताहिक अधिवेशन, वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य सम्मेलन।
२०-१०-८६ — यज्ञ पूर्णाहुति, कार्यकर्ता सम्मेलन पुरस्कार वितरण, अभिनन्दन समारोह तथा समापन।

इसके अतिरिक्त प्रतिदिन प्रदर्शनियां, सस्ता साहित्य वितरण और ऋषिलंगर।

विस्तृत विवरण के लिए कृपया परिशिष्टांक की प्रतीक्षा करें।

शताब्दी समारोह आर्यों का अपना समारोह है सपरिवार तथा इष्ट मित्रों सहित पधारिए, नवीन वैदिक प्रेरणाएं लीजिए जाति धर्म और देश के प्रति कर्त्तव्य का पालन कीजिए।

इन्द्रराज प्रधान | **राजर्षि रणञ्जयसिंह** स्वागताध्यक्ष | **मनमोहन तिवारी** मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ-२२६००१

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में सब्बरवाल प्रिन्टिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ | घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

आश्विन शुक्ल ६, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक १२ अक्टूबर १९८६

प्रभु की अमृत वाणी—

विश्व के आर्यकरण के लिए जौहर प्रयाण करो

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।
अपघ्नन्तो अराव्णः ॥

—ऋ० ९–६३–५

(इन्द्र वर्धन्त) इन्द्रत्व, [आत्म शक्ति] का वर्धन करते हुए, (अप्+तुर) सत्कर्मों मे सुदक्ष होकर, आप्त जन बनकर, तत्परता से कर्मरत होकर (अराव्ण अप+ घनन्त) पापो, द्वेषों, अदानदाताओं का हनन, नाश करते हुए (विश्व आर्य कृण्वन्त) विश्व को आर्य बनाए ।

मानव जीवन का एक पुनीत लक्ष्य है आर्य बनना और आर्य बनाना । बनाने से पहले बनना पड़ता है । जो स्वय नही बना, वह दूसरे को क्या बना पाएगा ? जो स्वय पाप मलिन है, कचन कामिनी के मोह से ग्रस्त है, वह अन्यो का कैसे उद्धार करेगा ? युग प्रवर्त्तकों ने पहले अपने जीवन का निर्माण किया है, अपने जीवन की दिव्य ज्योति जलाई है और अपने आचरण से दूसरो को आकर्षित किया है, उन्हें मुग्ध किया है और उन्हें सम्पर्क मे लाकर उनके जीवनों को बदल डाला है, उसी भांति जिस प्रकार अग्नि के सगतिकरण से कोयला जगमगाने लगता है ।

शताब्दी के पावन अवसर पर आर्यो ! आओ, अपना आत्म निरीक्षण करो, दुरिताओं को चुन चुन कर, बीन बीन कर जीवन सदन से बाहर निकाल फेंको । आर्यत्व से सुशोभित होओ । आत्मशक्ति को बढ़ाओ, सुकर्म सम्पादन की दक्षता प्राप्त करो और तत्परता से जौहर प्रयाण करो विश्व के आर्यकरण का, वेदो के पुनुर्द्धार का, यह प्रेरणाप्रद गान करते—

हम बारम्बार पुकार रहे, प्रभो ! हमको तुम ऐसा वर दो ।
उद्धार करें हम वेदो का और आर्यकरण इस जगती का ।
होवें न हताश निराश कभी, विश्वास दृढ़ हम मे धर दो ॥
जो दीन दुखी हैं दुनिया मे, अत्याचारों के जो मारे ।
हो समर्थ उनकी रक्षा मे, ऐसी क्षमता हममे भर दो ॥
तोड़े हमने ममता घेरे और हुए प्रभु अर्पित तेरे ।
इस वेद धर्म की वेदि पर हे नाथ हमे बलि कर दो ॥

—'वसन्त'

सदस्यता शुल्क		प्रधान सम्पादक—		
आजीवन सदस्य	२५१)	मनमोहन तिवारी	वर्ष	८९
वार्षिक	२०)	सम्पादक मण्डल—	अङ्क	४२
छमाही	१०)	विक्रमादित्य 'वसन्त' 'वेद वारिधि' आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए. आचार्य वेदव्रत अवस्थी		
विदेश में	७ पौंड			
एक प्रति	४५ पैसे			



सम्पादकीय

मन्नन्तर— रविवार १२ अक्टूबर १९८६ दयानन्दाब्द १६२
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८७

एधिषीमहि

सृष्टि के प्रारम्भ मे ऋषियो ने परमात्मा के दिव्य ज्ञान की अग्नि से अपने पावन जीवनों को प्रज्वलित करके, अपने जीवनो की दिव्य ज्योति से अन्य मानवो की जीवन ज्योति जलाकर विश्व का आर्य करण किया था। वेद ने मानव सतति को केवल दो जातियो मे विभक्त किया है, एक आर्य और दूसरे अनार्य। जो मन वचन तथा कर्म से श्रेष्ठ है, वे सब आर्य है और जो इनसे पतित है वे अनार्य हैं। यथार्थ मे परमात्मा के अमृतपुत्रो और पुत्रियो की उपरोक्त दो ही कोटिया हैं। दैवी सम्पदाओसे युक्त होकर मानव समाज मे जो दिव्य ज्योति को जला कर उसे प्रकाशवान करते है, वे आर्य है और जो जन आसुरी सम्पदाओ को सजोकर, मायावी धूर्त बन कर आसुरी अधकार को फैलाते हैं, वे अनार्य हैं,

आर्य प्रणाली को जो मानव अपने जीवन मे अपनाता है, वह उत्कर्ष की शृ खलाओ को लाघता हुआ देव, महादेव, मुनि, ध्यानी, ऋषि, महर्षि और प्रज्ञानी बन जाता है। वह आत्म वेत्ता बनकर ब्रह्मवेत्ता तक बन जाता है पर जो अनार्यत्व से पतित होकर गिरने लगता है, वह पतन की खाइयो मे सतत गिरता हुआ पशुता की भी मात कर देता है। अनार्य जीवित होते हुए भी मृतको के समान होते है, आर्य सदैव नव उमग नव चेतना नव जागृति से सतत जीवित रहते है और देवत्व को धारण कर अमरत्व को प्राप्त होते है।

आर्य जन ही 'ईश्वरस्य पुत्र' के अनुसार परमात्मा के सच्चे पुत्र और पुत्रियाँ होते हैं। उनकी ही सज्ञा 'आदित्यास' होती है। अदिति के इन पुत्रो के लिए ही वेद कहता है—

ते ही पुत्रासो अदिते प्र जीवसे मर्त्याय।
ज्योतियच्छन्त्यजस्रम ॥

(ऋ० १०।१८५।३ य० ३।३३)

अर्थात् उस अखड शक्ति के वे ही वास्तविक पुत्र और पुत्रिया हैं जो मानवो के जीवनार्थ उन्हे अक्षय ज्योति प्रदान करते है।

अनार्यों ने मानव सतति को सदैव त्रस्त किया है, उसे घोर यातनाए दी है और उन की पुकार सुनने वाले केवल आर्य जन ही होते है जो उनके मरण के पूर्व सब ओर से दौडकर आते है और उनकी रक्षा करते है। आर्यो के लिए वेद का यही आदेश है—

जीवान्नो अभिधेतनादित्यास पुरा हथात्।
कद्ध स्थ हवन श्रुत ॥

(ऋ० ८।६७।५)

अर्थात् हे अदिति के पुत्रो और पुत्रियो, तुम जहा कहीं भी हो हम जीवितो के प्रति हमारे मरण से पूर्व हमारी पुकार सुन कर, सब ओर से दौड़ कर आवो।

आज सर्वत्र अनार्यत्व का बोल बाला है। मानवता सिसक रही है। हिंसक वृत्तियो ने दानवता को मात कर दिया है। अनाचार अत्याचार, दुराचार, बलात्कार तथा कदाचार से त्रस्त मानव आर्यों को रक्षार्थ पुकार रहे हैं, पर आर्य जन मोह माया के पाश मे बन्धे हुए है। आत्म विस्मृतिमे खोएहुए हैं। स्वार्थकी निद्रामे सो रहे हैं। सगठित आसुरीशक्ति से भयभीत होकर केवल एक दूसरे को निहार रहे हैं कि आगे कौन बढ़े ? वे इस वेद वाक्य को भूल चुके हैं कि "सूर्य एकाकी चरति" (सूर्य अकेला चलता है) वेद कहता है—

एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध एक सूर्यो विश्वमनु प्रभूत। एकै वोषा सर्वमिद वि भात्येक वा इद वि बभूव सर्वम् ॥

(ऋ० ८।५८।२)

अर्थात् एक ही अग्नि नाना प्रकार से प्रज्वलित होता है। एक ही सूर्य विश्व को प्रकाशता है। एक ही उषा इस सबको जगमगाती है और एकमेव ब्रह्म ही सबको व्यापे हुए है।

तो आज हमे अग्रणी होकर अकेले ही बढ़ना है। 'बढ़ चल बढ़ चल तू एकाकी' आज हमारा आदर्श प्रेरणाप्रद सम्बोधन होना चाहिये। अन्यो को प्रकाशित करने के पूर्व हमे अपने जीवनो को स्वय प्रकाशित करना होगा, जो दीप स्वय बुझा हुआ हो, वह दूसरो को कैसे ज्योतित करेगा ? जो स्वत शक्ति विहीन है, वह दूसरो की किस भाति रक्षा करेगा ? आर्यों को आज अपने जीवनों को प्रज्वलित करना है, विश्व के कल्याणार्थ, अनार्यत्व के विनाश और आर्यत्व की स्थापनार्थ। यह प्रज्वलन कैसे होगा तो वेद वाणी कहती है —

एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
समाववर्त्ति पृथिवी समुषा समु सूर्य।
समु विश्वमिद जगत्। वैश्वानरज्योतिर्भूयास
विभूत्कामान्व्यश्नवै भू स्वाहा ॥

(य० २०/२३)

इस मन्त्र की निम्नलिखित प्रेरणाओ पर हम ध्यान दें —

(एध असि) (प्रभो ! तू प्रज्वलन शील है (हम भी) (एधिषीमहि) प्रज्वलित हो जायें। (हे प्रभो !) (स[illegible]सि तेज धेहि) मेरे भीतर उस तेज को स्थापित कर।

(हे प्रभो तेरे इस विश्व मे) (स+आववर्ति उषा, स+आववर्ति पृथिवी) सम्यक् रूप से पृथिवी वर्त रही है, सम्यक रूप से उषा वर्त रही है (३) निश्चयात्मक रूप से (स+आववर्ति सूर्य) सूर्य भी भली भाति गतिमान है (इद विश्व जगत् स+आववर्ति) यह सारा जगत भी सम्यक् रूप से गतिशील हो रहा है।

[तो फिर हे प्रभो !] (मै भी) (वैश्वानर ज्योति भूयासम्) वैश्वानर ज्योति बन जाऊ (विभून् कामान् वि+अश्नवै , व्यापक कामनाओं का सेवन करू (और ऐसा करके) (भू स्वा[illegible]) अपनी आत्म सत्ता को सुहुत कर दू।

विश्व के आर्य करण में जिन मानव जीवनो को ज्ञान की अग्नि से हमे प्रज्वलित करना है। सकल परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को यदि हमे ज्ञानाग्नि से प्रज्वलित करना है तो उस समष्टि मे, जिसमे हम व्यष्टि रूप से समाहित हैं, सर्व प्रथम अपने को प्रज्वलित करने का प्रण लें।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के-

शताब्दी समारोह का विस्तृत कार्यक्रम

दि० १४ अक्टूबर से १७ अक्टूबर-साधना शिविर

स्थान-प्रकाशवीर शास्त्री नगर डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ

निर्देशक-योग निष्णात स्वामी विवेकानन्द जी
आचार्य गुरुकुल प्रभाताश्रम (टीकरी) भोलाझाल, मेरठ

प्रात ५ से ६ तक ध्यान
" ६ से ७ तक आसन, प्राणायम
" ९ से ११ " उपनिषद् एवम् योग दर्शन का अध्ययन तथा स्वाध्याय

दोपहर २ से ३ तक योग सम्बन्धी शङ्का समाधान

साय ४-४५ से ६-३० ध्यान

दि० १४ अक्टूबर से २० अक्टूबर-विश्व भृत यज्ञ

प्रात ७ से ९ बजे तक-सात दिन का बृहद् वैदिक यज्ञ

शुक्रवार १७-१०-८६ आश्विन सुदी पूर्णिमा सं. २०४३

काल । समय । स्थान । विषय । सयोजक-अध्य-मुख्य अतिथि वक्तागण अदि

प्रात ७-०० यज्ञशाला विश्वभृत यज्ञ ब्रह्मा-स्वामी विवेकानन्द जी
आचार्य गुरुकुल प्रभाताश्रम
(टीकरी) भोलाझाल, मेरठ

विशिष्ट विद्वान्-महात्मा दयानन्द जी, तपोवन, देहरादून

मुख्य यजमान-श्री पूर्णचन्द्र जी आर्य आगरा

सयोजक-श्री राजगुरु शर्मा
सहसयोजक-श्री अर्जुनदेव महाना, आचार्य देवव्रत अवस्थी
सहसयोजक-श्री लालबहादुर शास्त्री, इलाहाबाद
८-३० यज्ञशाला प्रवचन-महात्मा दयानन्द जी
९-०० ध्वज स्थल ध्वजारोहण

सयोजक-श्री बालदिवाकर हस
सहसयोजक-श्री देवनसिंह जी श्री विमल कुमार जी
निर्देशक-श्री प्रेमचन्द्र शर्मा हाथरस, श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य

ध्वजारोहण-माननीय स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती द्वारा

ध्वजगीत

पी० टी० प्रदर्शन-दयानन्द विद्या मन्दिर लखनऊ द्वारा
व्यायाम प्रदर्शन-आर्य वीर दल द्वारा

ओम् गान -दयानन्द विद्या मन्दिर लखनऊ द्वारा

प्रात । १०-३० । क्रीडांगन । खेल एव सास्कृतिक कार्यक्रम, सयोजक-श्री विद्यारत्न, श्री जी पी शुक्ल, वीरेन्द्र शर्मा बुलन्दशहर

" क्रिकेट- स्नातक कक्षा छात्र-प्रथम वृत्त
बालीबाल मैदान बालीबाल " "
खो खो मैदान खो खो इण्टर कालेज "
अग्रसेन कालेज बास्केट बाल स्नातक छात्राए "
कबड्डी मैदान कबड्डी इण्टर बालक "

प्रात १०-३० पण्डाल वाद विवाद इण्टर छात्र/छात्राए एक साथ
मुख्य अतिथि-आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
अध्यक्ष-श्रीयुत् रामानन्द शास्त्री
सयोजक-" विजय पाल शास्त्री कानपुर

प्रात १०-३० कलाकक्ष मुक्त चित्रण इण्टर तथा बालमदिर एक साथ

सयोजक-श्री चन्द्र किरण शर्मा
महिला " डा० प्रतिमा मेहता

अपराह्न २ बजे क्रिकेट स्थल क्रिकेट चलता रहेगा

२ बजे अग्रसेन कालेज बैड मिटन-स्नातक छात्र/छात्राए एक साथ

२-३० पण्डाल | **समारोह उद्घाटन, स्मारिका विमोचन**
उद्घाटन-स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती
मुख्य अतिथि-माननीय वीर बहादुरसिंह जी
मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश
अध्यक्ष-माननीय श्रीयुत् अर्जुनसिंह जी
भू पू मुख्यमन्त्री मध्यप्रदेश एव भू पू राज्यपाल पजाब
स्वागताध्यक्ष-राजर्षि रणञ्जयसिंह जी अमेठी
समारोह के अध्यक्ष-स्वामी आनन्दबोधजी एव स्वामी सत्यप्रकाशजी
विशिष्ट अतिथि-माननीय श्रीयुत् बलदेवसिंह जी आर्य
राजस्व मन्त्री उत्तरप्रदेश
सयोजक-श्रीयुत् इन्द्रराज जी, सभा प्रधान
सहसयोजक-श्री कृष्ण बलदेव महाना
सयोजक शताब्दी समारोह-श्रीयुत् मनमोहन जी, सभा मन्त्री
उद्घोषक समारोह- " विद्यारत्न जी
शान्ति पाठ ।

पंजाब रक्षा सम्मेलन

अपराह्न ४-३० पण्डाल पजाब रक्षा सम्मेलन
अध्यक्ष-श्रीयुत् रामचन्द्रराव वन्देमातरम, उपाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा
मुख्य अतिथि-श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती अध्यक्ष " "
विशिष्ट अतिथि-प्रो० शेरसिंह जी भू० पू० केन्द्रीय रक्षा मन्त्री
प्रेरणा स्रोत-श्रीयुत् वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

(शेष पृष्ठ ४ पर)

[पृष्ठ ३ का शेष]

सयोजक–श्रीयुत् क्षितोश जी वेदालकार

सहसयोजक–श्रीयुत् देवीदास जी आय कानपुर

वक्ता–श्रीयुत् छोटूसिह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

– ,, सूर्यदेव जी ,, ,, ,, दिल्ली

– ,, सच्चिदानन्द जी शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली

– ,, महात्मा दयानन्द जी तपोवन देहरादून

शिक्षा सम्मेलन

रात्रि ७-३० पण्डाल भक्ति सम्मेलन

८-३० ,, शिक्षा सम्मेलन

अध्यक्ष–स्वामी सत्य प्रकाश जो

मुख्य अतिथि–प्रो० वासुदेवसिह जी पूव मन्त्री उत्तरप्रदेश

सयोजक–डा० निरूपण जी विद्यालकार

सहसयोजक–श्री सुरेन्द्रपाल स्नातक

विशिष्ट वक्ता–सर्वश्री भवानीलाल जी भारतीय, ओम्प्रकाश जी शास्त्री, महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री, प्रेमचन्द्र शर्मा, डा० आनन्द प्रकाश जी, डा० योगेन्द्र कुमार जी, प्रो० रत्नसिह जी।

शनिवार–१८-१०-८६

प्रात ७ ०० यज्ञ शाला विश्व भृत यज्ञ

ब्रह्मा–स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य

सयोजक–श्री अर्जुनदेव महाना, आचाय देवव्रत अवस्थी

मुख्य यजमान–श्री दीपचन्द कोरतपुर बिजनौर

प्रात ८ ३० यज्ञ शाला प्रवचन महात्मा आर्य भिक्षु जी वान प्रस्थाश्रम

प्रात ८ ३० क्रीडास्थल क्रिकेट स्नातक छात्र दूसरा वृत्त

,, वालीबाल ,, ,,

,, खो खो इन्टर छात्राए ,,

,, कबड्डी ,, ,,

अग्रसेन कालिज बास्केट बाल स्नातक छात्राए ,,

प्रात ९ ०० पण्डाल वाक् प्रतियोगिता इन्टर छात्र/छात्रा अतिम वृत्त

साकेतिक गान इन्टर छात्र/छात्रा] तथा बाल मदिर] ,,

शुद्ध मन्त्रोच्चारण —,,— —,,—

अध्यक्ष–श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर एम० एल० सी०

मुख्य अतिथि–चौ० श्री माधवसिह जी मन्त्री प्रदेशीय विधाय सभा

सयोजक–श्रीमती प्रकाशरत्नम–प्राचार्या

शोभा यात्रा

प्रकाशवीर शास्त्री नगर डी० ए० वी० कालेज

अपराह्न १२ ००

प्रधान सयोजक–श्रीयुत रामनाथ जी सहगल दिल्ली द्वारा प्रमुख नेतृत्व।

अन्य सयोजक गण–सर्वश्री (१) रेवती रमन रस्तोगी, एडवोकेट (२) अर्जुनदेव महाना (३) चन्द्र किरण शर्मा (४) मदन मोहन जोशी (५) देवेन सिह (६) विद्यारत्न (७) वीना-नाथ सिह (८) वीरेन्द्र पाल शर्मा (९) मगलदत्त शर्मा (१०) देवपाल आर्य (११) डा० विनय प्रताप (१२) जितेन्द्र (१३) वीरेन्द्रकुमार आर्य (१४) बाल दिवाकर हस सेनापति आर्य वीरदल (१५) ध्रुवपाल अटल (१६) देवेन्द्र स्वदेश बन्धु (१७) अवध बिहारी खन्ना (१८) हरीश चन्द्र (१९) बालकृष्ण आर्य (२०) धर्मपाल जी (२१) फूल-सिह २२) बाकेलाल कसल (२३) श्री निवास (२४) देवेन्द्र मिश्र (२५) राम अवतार सिह (२६) विमल एडवोकेट (२७) भागचन्द (२८) वेद सिह चौधरी (२९) श्रीमती कैलाश सोनी (३०) श्रीमती कैलाश देवी (३१) श्रीमती रमा गौड (३२) श्रीमती अतुला दुबे (३३) कु० डा० प्रतिमा महता (३४) डा० सतोष दत्त।

यात्रा पथ — प्रकाशवीर शास्त्री नगर डी० ए० वी० कालेज लखनऊ से प्रस्थान करेगी।

नाका हिंडोला चौराहे से गुरुद्वारा मार्ग, दास मण्डी चौराहे से गौतम बुद्ध मार्ग, शिवाजी मार्ग, हुसेन गज चौराहा, विधानसभा मार्ग पर आकाशवाणी, विधान भवन, प्रधान डाकघर से होती हुई हजरतगज महात्मागाधी मार्ग से साहू सिनेमा, मेफेयर सिनेमा चौराहे से लालबाग, लालबाग चौराहे से लालबाग गर्ल्स कालेज चौराहा से निशात सिनेमा से कैसरबाग चौराहा, नजीराबाद, अमीनाबाद से फतेहगज से होती हुई गणेशगज नाका हिंडोला चौराहे से वापस प्रकाशवीर शास्त्री नगर डी० ए० वी० कालिज मे सभा मे परिणित हो जाएगी।

आशीर्वचन — स्वामी सत्यप्रकाश जी

आर्य कवि सम्मेलन

रात्रि ९ बजे पण्डाल भक्ति सगीत तथा आर्य कवि सम्मेलन

अध्यक्ष–राजर्षि रणजय सिंह जी अमेठी नरेश

मुख्य अतिथि–श्रीयुत भक्तदर्शन जी भू० पू० केन्द्रीय मन्त्री

सयोजक–श्री जयनारायण जी अरुण पत्रकार, उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

कवि गण–सर्वश्री डा० व्रजेन्द्र अवस्थी, निर्भय हाथरसी, शिशुपालसिंह निर्धन, प्रो० सारस्वत मोहन 'मनीषी', आचार्य 'प्रणव' शास्त्री, प्रो० क्रांतिकारी, प्रो० उत्तमचन्द 'शरर', विक्रमादित्य 'बसन्त', श्रीमती सावित्री देवी, ओमपाल सिंह 'निडर', डा० हरिओम पँवार, बलबीर सिंह 'करुण', उर्मिला श्रीवास्तव, नन्दकिशोर, श्रीपाल भारद्वाज, हुक्का बिजनौर, अब्दुल गफ्फार, लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र', राजकुमार शाहजहापुरी आदि कवियो को आमत्रित किया गया है।

रविवार १९-१०-८६

प्रात ७-०० यज्ञ शाला विश्व भृत यज्ञ

ब्रह्मा–स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ

सयोजक–श्री अर्जुन देव महाना एव आचार्य देव व्रत अवस्थी

मुख्य यजमान– श्री सुशील कुमार गुप्त गोरखपुर

(शेष पृष्ठ ५ पर)

प्रात ०८,३० यज्ञ शाला–भक्ति संगीत – – –

प्रवचन श्री राजगुरु शर्मा
,, आर्य भिक्षु जी
स्वामी स्वरूपानन्द जी

प्रात ०८,३० क्रीड़ांगन क्रिकेट स्नातक छात्र–अन्तिम वृत

,, वालीवाल ——,,——,,

,, खोखो इन्टर छात्र–प्रथमवृत

,, कब्बडी —,,— —,,—

अग्रसेन, वास्केटवाल स्नातक छात्राए द्वितीयवृत
कालेज

,, बेडमिण्टन —,,— ,,—

प्रात ०६,३० पण्डाल महर्षि दयानन्द इन्टर छात्र छात्राए प्रश्नोत्तरी

प्रात १०-३० पण्डाल

वेद सम्मेलन

अध्यक्ष–आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री

मुख्य अतिथि–स्वामी सत्य प्रकाश जी

संयोजक–श्री शिवकुमार जी शास्त्री

(दक्षिणात्य पद्धति से वेदपाठ एवं यजुर्वेद कण्ठस्थ प्रदर्शन–ब्र० शिवशंकर जी गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ)

वक्ता– सर्वश्री (१) दयवत शास्त्री (२) प्रशस्य मित्र शास्त्री (३) ज्वलन्त कुमार शास्त्री (४) सत्य मित्र शास्त्री (५) आचार्य सत्य प्रेम जी (६) स्वामी विवेकानन्द जी (७) स्वामी स्वरूपानन्द जी (८) आचार्य विशुद्धानन्द

अपराह्न २-०० क्रीडास्थल–सभी खेल चलते रहेंगे।

अपराह्न २-०० पण्डाल

महिला सम्मेलन

उद्घाटन कर्त्री–माननीया श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी मन्त्री समाज कल्याण उत्तर प्रदेश

अध्यक्षा–श्रीमती पद्मा सेठ जी–नगर विकास राज्य मन्त्री उत्तर प्रदेश

मुख्य अतिथि–श्रीमती दीपा कौल जी पर्यावरण एवं सूचना राज्य मन्त्री

संयोजिका –श्रीमती शकुन्तला जी गोयल मेरठ

व्यवस्थापिका–श्रीमती शांति देव बाला

वक्ता मण्डल– (१) श्रीमती सतोष कुमारी कपूर एम० एल० सी० (२) श्रीमती उर्मिला देवी शास्त्री [३] श्रीमती कमला जी त्यागी एम० एल० सी०
[४] श्रीमती प्रकाश राना प्राचार्या [५] डा० प्रज्ञादेवी वाराणसी
[६] श्रीमती सावित्री देवी शास्त्री बरेली [७] कुमारी कृष्णा कपूर
[८] कुमारी प्रतिभा मेहता

अपराह्न ३-३० पण्डाल

आर्य युवा शक्ति सम्मेलन

उद्घाटन देवरत्न आर्य मन्त्री आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई

संयोजक–श्री डा० धर्मपाल आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

विशिष्ट अतिथि–माननीय हुकुमसिंह जी पशु धन, खाद्य, रसद ससद कार्य मन्त्री उ० प्र०

वक्ता गण–श्रीयुत् बाल दिवाकर हंस
,, डा० धर्मपाल जी दिल्ली
,, प्रो० उत्तम चन्द 'शरर'

रात्रि ७-०० पण्डाल

आर्य सम्मेलन

अध्यक्ष–श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती

मुख्य अतिथि–माननीय श्रीयुत् सीताराम केसरी भू० पू० मन्त्री, भारत सरकार

संयोजक–श्रीयुत् राजगुरु जी शर्मा प्रधान आ०प्र०स० मध्य भारत

प्रेरणा स्रोत–[१] स्वामी सत्यप्रकाश जी
[२] श्रीयुत् आर्य भिक्षु जी

वक्तागण–[१] श्रीयुत् प्रो० शेरसिंह जी, प्रधान आ० प्र० स० हरियाणा [२] श्रीयुत् छोटूसिंह जी एडवोकेट प्रधान आ० प्र० सभा राजस्थान [३] श्रीयुत् वीरेन्द्र जी प्रधान आ० प्र० स० पंजाब (४) श्रीयुत सूर्यदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली [५] डा० योगेन्द्रपाल शास्त्री प्रधान आ० प्र० सभा जम्मू काश्मीर [६] श्रीयुत् शिवकुमार शास्त्री [७] डा० शिवगुलाम जी वरिष्ठ उप प्रधान आर्य सभा मारीशस [८] श्रीयुत् प्रह्लाद राम सरन मारीशस [९] श्रीयुत् सच्चिदानन्द जी शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली।

५

सोमवार २०-१०-८६

प्रात ७ ०० यज्ञशाला विश्वभृत यज्ञ की पूर्णाहुति एवं यजमानों को आशीर्वाद

ब्रह्मा–स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य गुरुकुल प्रभाताश्रम मेरठ

संयोजक–श्रीयुत् अर्जुनदेव जी महाना तथा आचार्य देवव्रत अवस्थी

मुख्य यजमान – श्रीयुत अर्जुनदेव महाना

प्रवचन – श्रीयुत आर्य भिक्षु जी

प्रात ९ ०० क्रीडागन सभी शेष खेल—

शेष खेलों का अन्तिम तथा १०० मीटर और बाधा दौड़।

प्रात १० ०० पण्डाल

कार्यकर्ता सम्मेलन

[भावी कार्यक्रम पर विचार]

अध्यक्ष – श्रीयुत् प० इन्द्रराज जी

मुख्य अतिथि – श्रीयुत् प्रो० शेर सिंह जी

उद्घाटन कर्ता – माननीय बलदेव सिंह आर्य राजस्व मन्त्री उत्तर प्रदेश

संयोजक – श्री विद्यारत्न जी

[शेष पृष्ठ ६ पर]

(पृष्ठ ५ का शेष)

वक्तागण – सर्वश्री [१] उत्तमचन्द 'शरर' [२] प्रशस्य मित्र शास्त्री [३] ज्वलन्त कुमार शास्त्री [४] डा० देवेन्द्र स्वदेश बन्धु

अपराह्न १०० पण्डाल भक्ति सगीत छात्र/छात्राए, विशिष्ट अतिथि नायक गण, अ न्य जनों द्वारा स्थान ग्रह

२३०

समापन समारोह

अध्यक्ष – माननीय श्रीयुत् गोपीनाथ जी दीक्षित गृहमन्त्री उत्तर प्रदेश

मुख्य अतिथि – माननीय श्रीयुत् के० सी० पन्त जी खान एव इस्पात मन्त्री भारत सरकार

सयोजक – श्रीयुत् रामनाथ जी सहगल मन्त्री प्रादेशिक सभा दिल्ली

प्रेरणा स्रोत – श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती

विशिष्ट अतिथि – श्रीयुत् प्रो० वेदव्यास जी प्रधान प्रादेशिक सभा दिल्ली

श्रीयुत् दरबारी लाल जी सगठन मन्त्री प्रादेशिक सभा दिल्ली

श्रीयुत सच्चिदानन्द जी वाजपेयी भू० पू० शिक्षा राज्य मन्त्री, उत्तर प्रदेश

स्वागत गान, माल्यार्पण, शोध पत्रक सम्मान, विद्यालय वक्तता अनुदान, प्रथम छात्र/छात्रा सम्मान, विद्वानो का अभिनन्दन, दैनिक यज्ञ करने वालो का सम्मान, तत्परता प्रतियोगिता, प्रथम शोध पत्रक वक्तृता साकेतिक गान, पारितोषिक वितरण–मुख्य अतिथि द्वारा आर्शीवचन, अध्यक्षीय भ षण, श्री इन्द्रराज सभा प्रधान द्वारा धन्यवाद प्रकाशन, राष्ट्रगान तथा शाति पाठ

ज्ञातव्य–कायक्रम मे आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने का अधिकार सभा मन्त्री को होगा।

महर्षि महिमा

विज्ञता विनष्ट हुई, अज्ञता अभा से घिरी,
ज्वाल जगती मे जडता की जलने लगी।
एक अखिलेश के अनेक रूप माने गये,
दम्भ की दुल रियाँ समोद छलने लगी।
व्यापक असीम को ससीम मान बैठे ब्रह्म,
वासना उपासना की चाल चलने लगी।
ऋषि - मुनियो की अवरुद्ध भावनाएँ हुई,
आसुरी प्रवृत्तियो की दाल गलने लगी।

—कुसुमाकर जी

हम आर्य वीर हैं....

हम आर्य वीर हैं सच्चे राही,
निर्भय बढ़ते जायेंगे।
देश - धर्म की बलि वेदी पर,
अपना शीश कटायगे॥
इतिहास बताता अमर कहानी–
है आर्य वीर सन्तानो की।
समय - समय पर लगा चुके हैं,
बाजी अपने प्राणो की॥
भूले नहीं अतीत का गौरव,
आने दो समय बतायेंगे।
हम आर्य वीर हैं सच्चे राही,
निर्भय बढ़ते जायेंगे॥
परम पिता के अमर पुत्र,
भारत के वीर सिपाही हैं।
धर्म - ध्वजा ले बढ़ने वाले,
सत्पथ के हम राही है॥
दलितो का उद्धार करेंगे,
अत्याचार मिटायेंगे।
हम आर्य वीर है सच्चे राही,
निर्भय बढ़ते जायेंगे॥
करस्थ थाल भी दे सकते,
हम रत्नदेव हे दानी।
हम राम - शिवा - राणा प्रताप,
हे देश - धर्म के अभिमानी॥
अज्ञान तमिस्त्रा पुन मिटाकर
ज्ञान ज्योति फैलायेंगे।
हम आर्य वीर हैं सच्चे राही,
निर्भय बढ़ते जायेंगे॥

बालको से—

आर्य वीर बालको! आर्य वीर बालको!!
सिंह सा दहाड दो
शत्रु को पछाड़ दो
काल कांपने लगे
अधम भागने लगे
दो लजा स्वकीर्ति - रश्मि से
प्रचण्ड अग्नि - ज्वाल को।
आर्य वीर बालको! आर्य वीर बालको!!
प्रबल ज्वाल - माल हो
व्याल को कुचाल हो
मत डरो कराल काल से
शत्रु दल विशाल से
दो उठा समग्र विश्व मे
मातृभूमि - भाल को
आर्य वीर बालकों! आर्य वीर बालकों!!

डा० राजेन्द्र प्रसाद आर्य
उप सचालक–सार्वदेशिक आर्य वीर दल पू० उ० प्र०
(गोरखपुर कमिश्नरी) फूलपुर (आजमगढ़)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का शताब्दी समारोह

[आश्विन सुदी पूर्णिमा स० २०४३ से कार्तिक बदी तृतीया स० २०४३ तक, तदनुसार शुक्रवार १७ अक्टूबर १९८६ से सोमवार २० अक्टूबर १९८६ तक]

स्थान—प० प्रकाशवीर शास्त्री नगर (डी० ए० वी० कालेज लखनऊ

विशेष आकर्षण

- १४ से १६ अक्टूबर तक योग साधना शिविर।
- १४ से २० अक्टूबर तक विश्व भृत यज्ञ।
- आर्य शिक्षण संस्थाओ के विद्यार्थियो की प्रान्तीय स्तर पर खेल-कूद एव बौद्धिक प्रतियोगिताए।
- धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एव नैतिक उत्थान पर सामयिक चर्चा के लिए अनेक सम्मेलन।

शताब्दी समारोह के अध्यक्ष—

श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली।

समारोह में पधारने वाले वैदिक संन्यासी, महात्मा, विद्वद मण्डल, आर्यनेता एवं अन्य महानुभाव—

श्रद्धेय स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, श्रद्धेय स्वामी ओमानन्दजी, सरस्वती, श्रद्धेय अमर स्वामी जी महाराज, श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती, श्रद्धेय स्वामी स्वरूपानन्द जी, श्रद्धेय महात्मा दयानन्द जी महाराज, श्रद्धेय महात्मा आर्यभिक्षु जी महाराज।

भारत के राष्ट्रपति माननीय ज्ञानी जैलसिंह जी

माननीय के० सी० पन्त, खान एव इस्पात मन्त्री भारत सरकार

माननीय सीताराम केसरी, ससदीय कार्य राज्य मन्त्री भारत सरकार

माननीय अर्जुनसिंह, ससद सदस्य, भू पू मुख्य मन्त्री मध्य प्रदेश एव भूतपूर्व राज्यपाल पजाब प्रान्त

माननीय वीर बहादुरसिंह मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश सरकार

माननीय गोपीनाथ दीक्षित गृह मन्त्री उत्तर प्रदेश सरकार

माननीय सुनील जी शास्त्री विद्युत मन्त्री उत्तरप्रदेश

माननीया श्रीमती स्वरूप कुमारी बक्शी हरिजन एव समाज कल्याण मन्त्री उत्तरप्रदेश

माननीय श्रीयुत् अरुणकुमारसिंह मुन्ना—सहकारिता मन्त्री उत्तर प्रदेश

माननीय श्रीमती दीपाकौल पर्यावरण एव सूचना राज्यमन्त्री उत्तरप्रदेश

माननीय " पदमा सेठ नगर विकास राज्यमन्त्री "

माननीय श्रीयुत रामऔतार दीक्षित पर्वतीय विकास राज्यमन्त्री ,,

माननीय ,, सच्चिदानन्दजी बाजपेयी भू. पू शिक्षा राज्य मन्त्री ,,

माननीय ,, हुकमसिंह जी पशुधन खाद्य-रसद ससद कार्य मन्त्री ,,

माननीय ,, बलदेवसिंह जी आर्य राजस्व मन्त्री ,,

माननीय ,, वासुदेवसिंह जी पूर्व खाद्य मन्त्री उत्तरप्रदेश

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री, डा० योगेन्द्रपाल शास्त्री, श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री रामानन्द शास्त्री, श्री रुद्रदत्त शास्त्री, श्री ओम् प्रकाश शास्त्री, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, श्री सत्यमित्र शास्त्री, श्री प्रशस्यमित्र शास्त्री, श्री ओकार प्रणव शास्त्री, श्रीमती उर्मिला शास्त्री, शास्त्रार्थ महारथी प० शान्ति प्रकाश शास्त्री, श्री भक्तदर्शन जी श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम, श्री गोसाई दत्त रेडियो कलाकार, श्री क्षितीश कुमार वेदालकार, श्री डा० निरूपण विद्यालकार, श्री डा० धर्मपाल, श्री डा० आनन्द प्रकाश, श्री भवानीलाल भारतीय, प्रो० शेरसिंह, प्रो० वेदव्यास, प्रो० रतनसिंह, श्री वीरेन्द्र जी, श्री सूर्यदेव जी, श्री रामनाथ सहगल, श्री राजा किशनलाल भू० पू० मेयर दिल्ली, श्री उत्तमचन्द 'शरर', श्री पन्नालाल पीयूष, श्री दरबारी लाल, श्री छोटूसिंह एडवोकेट, श्री राजगुरु शर्मा, श्री शोभराज प्रेमी, श्री बेगराज।

इन्द्रराज	राजर्षि रणञ्जयसिंह	मनमोहन तिवारी
सभा प्रधान	स्वागताध्यक्ष	सभा मन्त्री
अर्जुनदेव महाना	मदनमोहन जोशी	चन्द्रकिरण शर्मा
प्रधान जिलासभा लखनऊ	शताब्दी कोषाध्यक्ष	सभा कोषाध्यक्ष

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी का रजत जयन्ती समारोह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (प) से सम्बद्ध मातृमदिर कन्या गुरुकुल वाराणसी का रजतजयन्ती समारोह दिनाक २४ से २६ अक्टूबर १९८६ तक वाराणसी मे आयोजित किया जा रहा है। समारोह मे आर्य बहन भाइयो की सुविधार्थ सभा के तत्वावधान मे विशेष बसों को चलाने की व्यवस्था की गई है उचित जानकारी हेतु सम्पर्क करें—

—डा० धर्मपाल महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (प)
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली

आर्यसमाजो के वार्षिक उत्सव

निम्नांकित आर्यसमाजो के वार्षिक उत्सव मास नवम्बर १९८६ मे निम्नलिखित तिथियो मे सम्पन्न होंगे—

[१] आर्यसमाज शमशेरगढ़ बालावाला देहरादून १५ एव १६ नवम्बर
[२] ,, कुण्डा (प्रतापगढ़) ६ से ६ "
[३] महर्षि दयानन्दवर्ष गुरुकुल कृष्णपुर के तत्वावधान मे आर्य महा सम्मेलन दिनाक ८ से १० नवम्बर स्थान फैजबाग कुइया खेडा।

संवेदना

—आर्यसमाज जनकपुर (बरेली) के आर्यवीर श्री झाडेराम आर्य की पूज्यनीय माता जी का निधन दिनाक १९–९–८६ को हो गया वे ८५ वर्ष की थीं। समाज ने श्री आर्य की माता जी के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए दिवगता की शाति तथा शोक विह्वल पारिवारिक जनो के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

—दयानन्द बाल मन्दिर रसड़ा (बलिया) के सहायक अध्यापक श्री चन्द्र शेखर जी के पूज्य पिता जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए आर्यसमाज रसड़ा तथा दयानन्द बाल मन्दिर के सदस्यो ने दिवगत के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा प्रभु से दिवगत के शांति एव पारिवारिक जनों के धैर्य धारण हेतु प्रार्थना की।



कीर्तिः यस्य सः जीवति

(श्री प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश)

भारत माँ समय समय पर ऐसे सुपूतो को जन्म देती रही है जिन्होने उसकी माग की रक्षा की है, और उसकी बेडियो को काटा है। इस रत्न गर्भा भारत माता ने ऐसे ही एक वीर को १८८७ मे २३ जनवरी को कटक नामक स्थान मे जन्म दिया। पिता जानकी नाथ एव उनकी माता ने अपनी सन्तान को योग्य बनाया और राष्ट्रीय विचारो से ओत् प्रोत किया। सुभाष प्रारम्भ से ही एक निर्भीक प्रकृति के व्यक्ति थे। बचपन की घटना है जब वे प्रेसीडेन्सी कालेज के विद्यार्थी थे तब उस कालेज मे एक अग्रेज प्रोफेसर कक्षा मे बुरी गालिया देने का आदी था। उसका नाम सी० एफ० ओटन था। एक बार कक्षा मे एक विद्यार्थी से प्रश्न पूछा। वह उत्तर न दे सका। इस पर प्रोफेसर तडक कर अग्रेजी मे बोला तू नीच। तू पढ नहीं सकता। विद्यार्थी ने कहा--मै आपके प्रश्न को नहीं समझ सका। प्रोफेसर पुन गाली देता हुआ बोला--ओ काले बन्दर तू प्रश्न भी नहीं समझ सकता।

यह गाली गलोच सुभाष को सहन नहीं हुआ। सुभाष खडे होकर बोले--प्रोफेसरसाहब! जरा-जरा सम्भल कर बोलिये। प्रोफसर "यू ब्लाडी" तुम बैठ जाओ। सुभाष बोले! क्यों तूने हमे कुत्ता समझ रखा है। प्रोफेसर--हा तुम लोग कुत्ते हो। सुभाष को ये शब्द तीर की तरह चुभ गए। सुभाष बोले "हमारी आजादी छीन कर हमे गुलाम बनाने वाले" और प्रोफेसर की ओर बढ़ने लगे। प्रोफेसर अग्रेजीमे बोला [यू बास्टर्ड] चुप रहो हरामी, ऐसा कहकर ज्यो ही प्रोफेसर जाने लगा। सुभाष ने प्रोफेसर को पकड कर एक चाटा उसके गाल पर जमा दिया। इसी अपराध मे सुभाष को कालेज से निकाल दिया गया।

वह सुभाष बडा हुआ। कई बार जेल गया। भगकर माण्डले की जेल मे भी गया। कई बार देश से निकाला गया। प्रखर बुद्धि, सादा जीवन, सरल विचार एव देश भक्ति से ओत-प्रोत सुभाष अपने घर की नजरबन्दी मे से २६ जनवरी १९४१ को अग्रेज पहरे दारो की आखो मे धूल झोक कर उस एल्गिन रोड वाले मकान से निकल कर पेशावर-फिर अफगानिस्तान और फिर जर्मन की राजधानी बर्लिन मे पहुचे। जर्मनी से पनडुब्बी द्वारा जापान पहुच कर आजाद हिन्द सरकार और आजाद हिन्द फौज बनाई।

आजाद हिन्द फौज और आजाद हिन्द सरकार का अपना स्वत का इलाका, बीस करोड रुपये से भी अधिक का निजी खजाना, अदालत, थाने, अस्पताल, स्कूल, प्रेस और अखबार भी थे। सिक्के और स्टाम्प भी थे। लगभग ५० हजार सशस्त्र सैनिको की एक सुसगठित पलटन भी थी जिसमे महिलाओ की एक सैनिक टुकडी और छोटे-छोटे बच्चो का एक 'जाबाज' दल भी था जिसके छोटे-छोटे बच्चे सैनिक अपनी-अपनी पीठ पर सुरगें बान्ध कर दुश्मनो के टैंको को विध्वस करने मे भी नही हिचकते थे। वह ही लौह पुरुष बार-बार यह जय घोष करता हुआ आगे बढ़ता था--"तुम मुझे अपना रक्त दो और मैं तुम्हे आजादी दूगा।" वह सदैव युद्ध स्थल मे आगे रहता था। बलिदान मे वह सदैव आजाद हिन्द फौज के प्राय अगले भाग मे रहता था। इसीलिए तो उसने 'नेता' शब्द को सार्थक किया था।

उसका बलिदान उस जहाज वाली घटना से जोडा जाता है जो सिंगापुर से जापान जाते समय दुर्घटना ग्रस्त हो गया था। परन्तु आज भी भारत वासी उसकी इस मृत्यु पर विश्वास नहीं करते। वास्तव में वह जीवित हैं। "कीर्ति यस्य स जीवति" जिसका अमर यश है वह भला मरा कहा है ? कहना पड़ेगा सुभाष बाबू जीवित हैं-मरे नहीं।

जीवन ज्योति

पूज्यपाद श्री नारायण स्वामी स्मृति दिवस

(श्री सुधीन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए० सिद्धांत शिरोमणि)

तपोमूर्त्ति श्री पूज्यपाद नारायण स्वामी जी महाराज का निर्वाण १५ अक्टूबर १९४७ को बरेली नगर मे श्री डा० श्याम स्वरूप जी सत्यव्रत के गृह पर हुआ था। आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वानों की सैद्धान्तिक धार्मिक सभाओ मे धार्मिक विवादो मे उनकी ही बात को सर्वोपरि माना जाता था। वर्तमान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश-आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा उनकी तपस्या एव लगन का परिणाम है। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार तथा श्री नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ नैनीताल उनकी पावन स्मृति को अब भी अक्षुण्ण बनाये हुये है। आशा है आर्य समाज के वर्तमान कार्यकर्त्ता १५ अक्टूबर १९८६ को उनकी स्मृति को शताब्दी समारोहके अवसर पर भावी आर्य बन्धुओं के स्मरणार्थ उनके साहित्य एव उनके आश्रम को जीता-जागता स्मारक बनाने का प्रयत्न करेंगे। श्री मद्दयानन्द जन्मशताब्दि के उपरात यह आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का शताब्दि समारोह उनके बताये कार्य को पूर्ण करने का प्रयत्न करेगी।

स्वदेश के लिए

देश के लिए जियो, स्वदेश के लिए मरो।
तुम से जितना बन पडे स्वदेश के लिए करो ॥१॥
देश वालो देखलो है स्वदेश की जो दुर्दशा।
अपने दिल मे भव्य भाव देश के लिए भरो ॥२॥
गाइये अतीत के सुगीत गर्व युक्त मगर।
वर्तमान मे सुयश स्वदेश के लिये वरो ॥३॥
जितना त्याग तुम करो स्वदेश के लिए है कम।
कूदिए भी सिन्धु मे, स्वदेश के लिये तरो ॥४॥
जिन्दगी का मोह क्या दु ख हर्ष शोक क्या।
बढ़िए युद्ध क्षेत्र मे स्वदेश के लिये नरो ॥५॥
आपदाए लाख हों, हो करोडो आफतें।
दिल मे अपने वीर धीर देश के लिए धरो ॥६॥
यह हो सत्य धर्म जाप पुण्य तप पुनीत हे।
देश के लिये जियो स्वदेश के लिये मरो ॥७॥

--स्व० स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

(सविता से साभार)

उठो आर्य जन

उठो, आर्य जन ! देखो–होता अन्धकार का कुटिल प्रसार !
यहाँ धर्म-परिवर्तन दिन-दिन पाता जाता है विस्तार !

इसे रोकना ही होगा अब !
इससे है कितना नुकसान !
दिन प्रतिदिन कम होती जाती !
राम - कृष्ण की प्रिय सन्तान !

लोभ और लालच का निशि-दिनि होता है चारों ओर प्रसार !
यहाँ धर्म - परिवर्तन दिन - दिन पाता जाता है विस्तार !

दक्षिण मे औ' घोर पूर्व मे !
खेला जाता है यह खेल !
धोखा धड़ी, लोभ, लालच का !
जब होने लगता है मेल !

साधु प्रवृत्तियाँ दब जाती हैं ! उड़े बुराई पख पसार !
यहाँ - धर्म परिवर्तन देखो दिन - दिन पाता है विस्तार !

रोको - रोको इसको अब तुम !
इसे न होने देना तुम !
घृणा - वैर - अलगाव - फूट का !
बीज न बोने देना तुम !

बढ़े एकता, बढ़े सगठन ! हेल - मेल की हो बौछार !
होने पावे नहीं धर्म - परिवर्तन अब तो किसी प्रकार !

अब सत्यार्थ - प्रकाश देश मे !
फैलाओ तुम चारों ओर !
वैदिक नाद गुंजा दो कसकर !
भारत - भू में तुम घनघोर !

पापी - अत्याचारी दल का हो विनाश अब भली प्रकार !
गूंज उठे अब शताब्दी मे वीर आर्य जन की हुकार !

–चन्द्रपाल सिंह 'मयंक'
२६१, फेथफुल गज कैण्ट कानपुर–४

धुल जाये अन्तः पाप सभी

प्रभु ऐसी दया करो तुम धुल जायें अन्त पाप सभी ।
श्री चरणों मे ही रहू सदा छिग आये ना सन्ताप कभी ।
निर्मल हो मेरी आत्मा मन विकार से दूर ।
सद्विवेक जागे सदा हो बुद्धि ज्ञान भरपूर ।
प्रेम बढ़े सुमती जगे होवे वेद प्रचार ।
जन जन में प्रभु भक्ति का होवे रस सचार ॥

–आचार्य देवव्रत अवस्थी

आर्यवेद प्रचार मण्डल बलरामपुर
का छठवाँ वार्षिकोत्सव

यज्ञ प्रवचन एवं उपदेश का कार्यक्रम

दिनांक ८ नवम्बर से ११नवम्बर १९८६ तक

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी महाराजा साहब की पुरानी ड्योढ़ी सिटी पैलेस बलरामपुर के प्रागण मे दिनाक ८ नवम्बर से ११ नवम्बर १९८६तक उक्त कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इसमे आत्मिक एव सामाजिक उन्नति के सम्बन्ध मे आये विद्वानों द्वारा सारगर्भित एव मौलिक विचार दिये जायेंगे। उत्सव मे आर्य जगत के यशस्वी विद्वान महोपदेशक वेदवक्ता स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती हरिद्वार, श्री महावीर सिंह मुमुक्ष एम० ए० दर्शन, एल० एल० बी० मुरादाबाद, श्री राजेश पक्षी नवाबगज गोंडा, श्रीमती शान्ती बाला विश्वविद्यालय लखनऊ एव अन्य विद्वान पधार रहे हैं।

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय ११९
गौतम नगर, नई दिल्ली–४९
का

स्वर्ण जयन्ती समारोह

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ के साथ दिनाक ९ नवम्बर रविवार से ७ दिसम्बर रविवार ८६ तक ।

वर्तमान समय के सन्दर्भ मे—विद्यालय की प्रगति और नवीन स्नातको का दीक्षान्त समारोह, अन्य भव्य सम्मेलनों का आयोजन किया गया है ।

निर्वाचन

जिला आर्यो पप्रतिनिधि सभा देवरिया
प्रधान श्री समुन्दरसिंह
मन्त्री श्री नौमीराम आर्य
कोषा० श्री नथमल डालमियां

आर्य समाज कलवारी (बस्ती)
प्रधान श्री जयबक्शसिंह आर्य
मन्त्री श्री रामपालसिंह आर्य
कोषा० श्री राजेश्वरीप्रसाद आर्य

अमृत वर्षा

वैदिक राज्य व्यवस्था

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथ सदांसि।
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान् व्रते गन्धर्वा अपि वायुकेशान्।

(ऋ० ३।३८।६)

तीन प्रकार की सभा ही को राजा मानना चाहिए। एक मनुष्य को कभी नहीं। वे तीनो ये हैं—

प्रथम—राज्य प्रबन्ध के लिए एक "आर्य्य राजसभा" कि जिससे विशेषकर के सब राज्य काय ही सिद्ध किए जायें।

द्वितीय—'आर्य्य विद्या सभा' कि जिससे सब प्रकार की विद्याओ का प्रचार होता जाय।

तृतीय—'आर्य्य धर्म सभा' कि जिससे धर्म का प्रचार और अधर्म की हानि होती रहे।

इन तीन सभाओं से युद्ध मे सब शत्रुओं को जीत के नाना प्रकार के सुखों से विश्व को परिपूर्ण करना चाहिए।

यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह।
ते लोक पुण्य प्रज्ञेष यत्र देवा सहाग्निना॥

(यजु० २०।२५)

जिस देश मे उत्तम विद्वान, ब्राह्मण, विद्या सभा, और राजसभा विद्वान क्षत्रिय लोग, ये सब मिल के राजकामो को सिद्ध करते हैं, वही देश धर्म और शुभक्रियाओ से सयुक्त हो के सुख को प्राप्त होता है। जिस देश मे परमेश्वर की आज्ञा पालन और अग्निहोत्रादि सत्क्रियाओ से वर्त्तमान विद्वान होते हैं, वही देश सब उपद्रवो से रहित हो के अखण्ड राज्य को नित्य भोगता है।

—महर्षि दयानन्द

माँ प्रकाश भर दो

मां प्रकाश भर दो विचार हो जायें परम पुनीत
जीवन क्षण प्रतिक्षण पवित्र हो पा तेरा नवनीत
सद्विवेक सद्ज्ञान प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करो
अज्ञान तिमिर मेरे अन्तर से जगदम्बे तुम शीघ्र हरो
सुप्रज्ञा देकर ऐ जननी जीवन सफल बनाओ
मेधा अनुपम कर प्रदान सब दुर्गुण दूर भगाओ
मां चरणो में तव यही वन्दना इसको पूर्ण करो
मां वरद हस्त से अपने हमको परम पवित्र करो।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

किसे लिखें-कौन ठीक है?

,ओं ओम् ओ३म् अथवा ॐ

(आचार्य वीरेन्द्रमुनि शास्त्री एम० ए०, उपाध्यक्ष विश्ववेद परिषद्, सम्पादक 'वेद ज्योति' सी ८१७ महानगर, लखनऊ)

परमेश्वर का मुख्य नाम पतञ्जलि मुनि ने योगदर्शन मे 'प्रणव' बताया है—जिसे जप करना और जिसके अर्थ की भावना की जाय।

'तस्य वाचक प्रणव।'
तज्जपस्तदर्थं भावनम्॥

प्रणव—प्रकृष्ट और सदा नवीन रहने वाला यह शब्द 'ओ३म्' है, जो स्वाभाविक रूप से डकार के साथ मुख से निकला करता है—केवल मनुष्य ही नहीं, पशु भी इसको ध्वनि किया करते हैं।

प्राय सभी मतो और सम्प्रदायों ने इसको अपनाया है, भले ही कुछ विकृत रूप मे—

१—बौद्ध—ओ३म् मणि पद् मे हुम्।

२—ईसाई—ओमेन।

३—मुसलमान—आमीन और अलिफ, लाम, मीम् (बोलते समय लाम् की ध्वनि ब ब की हो जाने पर ओ३म् हो जाता है। स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने अपने भाषण मे कहा था कि 'मध्यकालीन शिलालेखो मे इसका लेखन रूप 'ॐ' पाया जाता है जिसे विशेषत पौराणिको ने स्वीकार किया। अत लोग समझ लगे कि यह पौराणिक गणेश की आकृति शुण्डाकार है। डा० शिवपूजन सिंह कुशवाहा आदि का यही मत है। किन्तु यह ठीक नहीं। 'ॐ' मे 'अ' स्पष्ट है। 'ो' के लिए 'ॐ' रूप जुड़ा हुआ है। यह एकाक्षर 'ओ' का ही लेखन स्वरूप है, जिसे गीता मे कहा है—

'ओमित्येकाक्षर ब्रह्म'।

एकाक्षर के अतिरिक्त 'अव' धातु से बना 'ओम्' शब्द है जिसके १९ अर्थ हैं। व के स्थान पर सम्प्रसारण उ होकर अ+उ=ओ हो गये और अत्यय के रूप मे इसमे म् जुड़कर 'ओ३म्' बन गया।

म् के स्थान पर अनुस्वार करने से 'ओं' बन जाता है। ३ अक्षरों से बने 'ओ३म्' (जिसे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनाया, इसको जब मन्त्र या वाक्य के आरम्भ मे बोला जाता है तो ओ का उच्चारण प्लुत (३ मात्रा का हो जाता है और प्लुत बताने के लिये ओ के बाद ३ का अङ्क लिखा जाता है। कुछ लोग भूल और नासमझी से ३ के स्थान पर 'उ' लिख देते है। पौराणिक समझते हैं कि यह दयानन्द आर्यसमाजी 'ओ३म्' है। वस्तुत ओ३म् लिखने के उपरोक्त चारों प्रकार ठीक हैं।

एक पावन स्मृति

सन्त रविदास

श्री इन्द्रराज जी

प्रधान आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश

भारत भू एव भारतीय सस्कृति पर जब-जब सकट आता रहा। विधाता बराबर महान् आत्माओ को इस पवित्र भूमि पर भेजता रहा। जब भारत मे जातिवाद, छुआछूत, भेदभाव ऊँचनीच, मद्यपान, अनाचार, अत्याचार, और चरित्र हनन का दौर दौरा था। जब मानवता कराह रही थी। जब भारत मे धार्मिक शोषण की प्रबलता थी। उस समय उस श्रमशील तथाकथित शोषित जाति मे करुणा वरुणालय परात्पर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान भगवान् ने इस भारत भूमि पर एक महान् व्यक्ति को अवतरित किया। वैष्णव सम्प्रदाय के सिद्धातो मे ओतप्रोत श्रमनिष्ठा में विश्वास करने वाला एक महान् व्यक्ति रविदास के रूप मे ससार मे प्रकट हुआ।

महापुरुष किसी एक जाति, एक सम्प्रदाय और एक वर्ग के नहीं होते। धरती तल से समयानुसार होने वाली बुराइयो को समूल नष्ट करने के लिए ऐसे महान् पुरुषो का आविर्भाव हुआ करता है।

श्रमनिष्ठ जीवन एक पवित्रता का जीवन होता है। अपने-अपने व्यापार और काम धन्ध मे निष्ठापूर्वक कार्य करने के पश्चात् कोई व्यक्ति यदि आध्यात्मिक मूल्यो को अपने मन, वचन और कर्म से अपने मे और समाज मे स्थापित करने की चेष्टा करता है, वह ही सन्त है, ज्ञानी है और महान् पुरुष हो जाता है।

सन्त रविदास उसी प्रकार के पवित्र अन्त करण वाले व्यक्ति थे। ऐसे सन्तो के मुखार विन्दु से जो शब्द निकलते हैं वे काव्यधारा के रूप मे हृदयो को परिवर्तित करते चले जाते हैं। मनुष्य को आनन्द से अप्लावित कर देते है। सन्त रविदास जी की यह वाणी जितनी सजीव है कि महात्मा गाधी जी भी अपनी प्रार्थना सभाओ मे उसको गाते रहे हैं ?—वैष्णव जन तो तेने कहिए।

जो पीर पराई जाने रहे।

इस प्रकार उनकी पवित्र वाणी प्रवाहित होती रही और मानवीय गुणों का निरन्तर प्रसार करती रही। मानव जाति उनके उस काव्य रसामृत से मानववाद, उदारता, समानता, परोपकार पर दु खहरण, विनम्रता सहज और पवित्र व्यवहार एव निष्ठावान क्रियात्मक जीवन की प्रेरणा लेती रही।

सन्त रविदास जी ने साधारण व्यक्ति को अपने क्रियात्मक जीवन से श्रमनिष्ठ बनाया। प्रभु भक्तिसिखाई। लोगो को आत्मसत्य को अनुभव करने की प्रेरणा की। मन को शुद्ध और पवित्र बनाने मे गगा के समान मन की पवित्रता पर बल दिया।

आइए। इन सन्तो के इस उपदेश से मानव जाति को लाभान्वित करने का प्रयत्न करें। सन्तों का अमर सन्देश प्रेम का सन्देश है। परस्पर प्रेमपूर्वक रहकर मानवता की सेवा का व्रत लें। यही इन सन्तों की वाणियों का प्रतिफल है। इनके उपदेशो पर चलकर ही हम भारत मे और ससार मे एक पवित्र, प्रेरणादायक वातावरण बना सकते हैं।

महिला मण्डल

नारी उत्थान और महर्षि

—लेखिका सरस्वती गोयल १०८ साकेत मेरठ

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने पौराणिक काल की धार्मिक एव सामाजिक रुढ़ियो तथा मान्यताओ मे बंधी हुई नारी जाति का उद्धार किया। जिनके साथ आरम्भ से ही पशुवत व्यवहार किया जाता था तथा उनको पैरो की जूतियाँ समझकर हर प्रकार से दबाया जाता था। यज्ञोपवीत, वेद पाठ आदि से सर्वथा वचित किया हुआ था।

ऋषि दयानन्द के आगमन से पूर्व रुढिवादिता के पुजारियों द्वारा "स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम" कहा जाता था। स्त्रियो को शूद्रो की तरह वेद मत्र सुनने तक का भी अधिकार नहीं था। कन्याओ को किसी भी प्रकार की शिक्षा देना पाप समझा जाता था।

ऐसे समय मे ऋषि दयानन्द ने वेद शास्त्रो के ही प्रकाश मे समस्त नारी जाति को शिवा कल्याणी, गृह लक्ष्मी प्रतिपादित किया तथा पचयज्ञ, षोड्स सस्कार एव वेद पढने-पढाने का पूर्ण अधिकार दिया। नारी जाति को ऋषि पूज्यनीया एव माता के समान मानते थे। उन्होंने ५००० वर्षों के बाद सबल स्वरो मे घोषित किया कि "यत्र नार्यस्तु—पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" ऋषि का आदेश था कि अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समस्त नारी जाति को ऊचा महत्व देकर वेदशास्त्र पढने, यज्ञोपवीत धारण करने, यज्ञ आदि कार्य करने-कराने का पुरुषो के समान अधिकार पावन वेदो के प्रकाश मे प्रदान कर नारी जाति के प्रति महान उपकार किया।

स्वामी जी ने नारी को पाँव की जूती व पति की दासी मानने सम्बन्धी कुत्सित भावनाओ का भी कडा खण्डन किया और यह घोषित किया कि बिना नारी के गृहस्थी का कोई यज्ञ आदि महत्वपूर्ण कार्य भी पूर्ण नहीं माना जा सकता। जिस कुल मे नारी का आदर सत्कार होता है उस कुल मे दिव्यात्मायें जन्म लेती हैं।

आज भारतीय सस्कृति की दृष्टि मे नारिया निश्चय ही समानाधिकारिणी हैं। महापुरुषो की जननी होने से सतत पूज्यनीया हैं। ऋषि दयानन्द ने स्वसस्कृति के मर्म को हृदयगम कर इस क्षेत्र मे महान क्रातिकारी कार्य किया है।

देश की स्वाधीनता, सामाजिक, धार्मिक एव सास्कृतिक क्षेत्रो मे ऋषि की अनुकम्पा से नारियो ने आगे बढकर प्रशसनीय कार्य किया है। आज के युग मे नारिया सभा के अधिवेशनो में प्रतिनिधि बनकर सम्मिलित होती हैं और प्रातीय स्तर पर कार्य करती है। इन सबका श्रेय महर्षि दयानन्द जी को ही है। समस्त नारी जाति का उत्थान करके उनको आगे बढ़ाकर, पुरुषो के बराबर समझकर महर्षि ने महान कार्य किया है। उनके महान् कार्यों के कारण महर्षि सर्वदा पूज्यनीय है।

शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश, लखनऊ

मण्डलीय प्रतियोगिता परिणाम

१०० मी० दौड़ (बालक) प्रथम–सुकेश माथुर डी० ए० वी०
द्वितीय–दयानन्द विद्या मन्दिर (राजेशकुमार)
तृतीय–अहमद हुसैन डी० ए० वी०

१०० मी०दौड़ (बालिका) द० उ० मा० क० वि० महानगर
प्रथम–गुरबन्ती शर्मा
द्वितीय–अचना चौधरी
तृतीय–राजश्री रावत बा वि मोतीनगर लखनऊ

कबड्डी (बालक) प्रथम–डी० ए० वी० लखनऊ
द्वितीय–दयानन्द विद्या मन्दिर

कबड्डी (बालिका) प्रथम–दयानन्द उ०मा०क० वि० महानगर, लखनऊ
द्वितीय–बालिका विद्यालय मोतीनगर, लखनऊ

खो–खो (बालक) प्रथम–डी० ए० वी० लखनऊ
द्वितीय–दयानन्द विद्यामन्दिर, लखनऊ

खो-खो (बालिका) प्रथम–बालिका विद्यालय मोतीनगर लखनऊ
द्वितीय–दयानन्द उ० मा० क० महानगर लखनऊ

वाक् प्रतियोगिता प्रथम–पकजसिंह–दयानन्द विद्या मन्दिर

मन्त्रोच्चारण प्रथम–स्नेह लता, किरन दीक्षित बालिका विद्यालय
द्वितीय–जया शुक्ला, अलका श्रीवास्तव दया० विद्यामन्दिर

प्रदर्शनी प्रतियोगिता प्रथम–दयानन्द विद्या मन्दिर, लखनऊ
द्वितीय–बालिका विद्यालय, "

वादविवाद प्रति० पक्ष प्रथम–प्रतिभा तिवारी–बालिका विद्यालय
द्वितीय–रश्मि सिन्हा "
विपक्ष प्रथम–राजीव शुक्ला डी० ए० वी०

दयानन्द प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता प्रथम–सचिन सक्सेना
द्वितीय–राजीव तिवारी

आर्य भजन प्रति० प्रथम–दयानन्द विद्यामन्दिर, लखनऊ
द्वितीय–बालिका विद्यालय, मोतीनगर लखनऊ
तृतीय–दयानन्द बा वि महानगर, लखनऊ

मुक्त चित्रण प्रति० प्रथम–माया कुशवाहा दयानन्द बाल विद्यामन्दिर
द्वितीय–स्वर्णलता बालिका विद्यालय
तृतीय–अखिलेशकुमार गुप्त दया०विद्या मन्दिर

सामूहिक सांकेतिक गान प्रथम–बालिका विद्यालय लखनऊ
द्वितीए–दयानन्द विद्यामन्दिर, लखनऊ

तत्परता के व्यायाम प्रथम–(१) गुणवती शर्मा दयानन्द वि० महानगर
(२) गीता विष्ट " "
द्वितीय–(१) सरला रावत बालिका वि० मोतीनगर
(२) मनीषासिंह " " "
तृतीय–(१) कृष्ण कुमार दयानन्द विद्या मन्दिर
(२) अतुल शुक्ला " " "

मनमोहन तिवारी
मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

(शेष पृष्ठ २ से आगे)

जो उस परमात्मा के दिव्य ज्ञान की अग्नि से अपने को प्रज्वलित करेगा, जो उसके तेज से अपने को युक्त करेगा, जो अपने ज्ञान लोचन खोलकर पृथिवी की महानता, उषा के सौंदर्य और सूर्य की सर्व श्रेष्ठता आत्मानुभूत करेगा, वही वैश्वानर ज्योति बनेगा, वही विश्व सुधार के पावन यज्ञ मे अपने जीवन को आहुत करेगा।

विश्व के आर्य करण के लिए आज ऐसे ही प्रज्वलित और आहुत जीवनो की आवश्यकता है। सभा के शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने वाले आर्य यदि ऐसी पुनीत भावना से लखनऊ आएगे तो यह निश्चित है कि न केवल वे अपनी जीवन ज्योति को जगाएंगे वरन् अन्यो के लिये भी ज्योति स्तम्भ बनेंगे।

—"वसन्त"

संवेदना

गुजरात के प्रसिद्ध वैदिक धर्मोपदेशक, वेद मन्दिर बड़ौदा के संस्थापक एवं संचालक, श्री प० विठलेश जी के द्वितीय पुत्र श्री प्रद्युम्न कुमार का अवसान दिनांक २३–९–८६ को बृहस्पतिवार को हो गया उनकी अन्त्येष्टि वैदिक विधि से सम्पन्न हुई।

दिवगत आत्मा की शांति और शोक संतप्त परिवार को यह कष्ट सहन करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।

आर्य जगत

–आर्य समाज बीसलपुर का वार्षिकोत्सव १ से ४ नवम्बर १९८६ ई० तक होगा जिसमे आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान पधार रहे हैं। शोभायात्रा दिनांक १ नवम्बर को होगी।

निर्वाचन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर, मन्त्री श्री डा० हरपालसिंह प्रधान श्री डा० विजयपालजी शास्त्री कोषा० श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य

नैतिक उत्थान आन्दोलन

मानव का धर्म-मानवता इसे कसौटियो पर कसें ?

लेखक—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री विद्यावाचस्पति ए० एस० बी० (रजिस्टर्ड)

यथा चतुर्भि कनक परीक्ष्यते
निघर्षण छेदन ताप ताडनै ।
तथा चतुर्भि पुरुष परीक्ष्यते,
त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा ।।

जैसे घिसने, छेदने, तपाने और पीटने से सुवर्ण की चार प्रकार से परीक्षा की जाती है, उसी प्रकार त्याग से, शील, गुण, कर्म से मनुष्य की भी चार प्रकार से परीक्षा की जाती हैं ।

महर्षि दयानन्द जी ने बताया कि मनुष्य उसी को कहना चाहिये जो मनन शील होकर स्वात्मवत् दूसरों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे । पुष्प की भाति मनुष्य अपने गुणों से ही चमकता है । आज ऐसे मानवो का मिलना अति कठिन है । एक कवि का कहना है—

ढूढता फिरता कोई धनवान् को ।
ढूढता फिरता कोई भगवान् को ।।
किन्तु मैं जिस दिल मे हो इन्सानियत ।
ढूढता फिरता हू उस इन्सान को ।।

ऐसे ही श्रेष्ठ मानव बनने के लिये वेद का आदेश है 'मनुर्भव' इस मनुष्य के सुख के लिये विज्ञान न जाने क्या-क्या साधन तैयार कर रहा है । मगर मनुष्य बनाने के लिए अभी कोई वैज्ञानिक मैदान मे नहीं आया । न कोई आ सकता है क्योंकि यह काम उसके वश का है नहीं। हां, मनुष्यों को बल्कि सारे ससार को नष्ट करने के लिये तो आज भी बहुत से वैज्ञानिको मे परस्पर होड़ लगी है कि देखें ऐसे अस्त्र-शस्त्र कौन तैयार कर सकता है जो अधिक से अधिक जनसहार कर सकता हो । बस, कुछ ही क्षणो मे विश्व विनाशक हाईड्रोजन आदि बम बना कर तैयार कर दिये गये हैं । कहना चाहिये कि ससार विनाश के कगार पर खड़ा है । कभी भी विस्फोट हो सकता है । नित्य ही देश-विदेशो मे बम विस्फोट से जो नरसहार हो रहा है वह प्रत्यक्ष हो है । मानवता के अभाव मे विज्ञान के ये नूतन आविष्कार आज मानव के लिये उल्टे घातक सिद्ध हो रहे हैं । इन मारक अस्त्रों से केवल हिंसा का प्रादुर्भाव होता है, जो मनुष्य को कोरा दानव बनाकर ही दम लेती है । आज हम विश्व शान्ति की बातें करते हैं । ऐसी दशा मे शान्ति की आशा रखना खपुष्प प्राप्त करने के समान व्यर्थ है । वस्तुत श्रेष्ठ मानवो का निर्माण तथा उनके मौलिक विचारों की साम्यता ही विश्व मे शान्ति ला सकती है । अत सबसे अधिक आवश्यकता मानव धर्म प्रचार की है । सभी देशों की सरकारें यदि विज्ञान के साथ शिक्षा नीति मे सुधार करके स्कूलों-कालिजों मे नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम भी रख दें तो वे छात्र भविष्य मे सच्चे अर्थों मे मानव बन सकेंगे । तब वही नाशकारी विज्ञान विश्व के लिये हितकारी सिद्ध होगा । इसके लिये शिक्षा मे परिवर्तन अवश्य करना पडेगा । वर्ना आतकवाद का नग्न नृत्य बन्द नहीं हो सकेगा ।

मानव जीवन की चार स्थितिया हैं । जिनमे प्रथम स्थिति पर वह सामान्य मानव होता है । उसमे मानवता कम और पशुता अधिक पाई जाती है । दूसरी स्थिति पर मानवीय गुणो मे वृद्धि करके वह श्रेष्ठ मानव कहलाता है । इसमे पशुता बहुत कम पाई जाती है । इससे भी अधिक मानवता का जब विकास होने लगता है तो वही देवता कहलाता है, जो मानवो मे अधिक ज्ञानवान एव आचारवान होता है । यह तीसरी स्थिति कहलाती है । चौथी स्थिति मे जब मनुष्य देव स्वरूप बन जावे तो उसमे विकास करता हुआ अपने ज्ञान-विज्ञान को बढ़ा कर परोपकार मय जीवन से युक्त ऋषि पद का अधिकारी हो जाता है, परन्तु इसके लिये प्रथम तीन स्थितियो से गुजरना होता है ।

इन चारो स्थितियो को प्राप्त मनुष्य की पहचान के लिये कुछ कसौटियाँ हैं । न्यूनाधिक गुणो के अनुसार मनुष्य उन पदों को प्राप्त कर सकता है । अत हम ऐसी कुछ कसौटियाँ नीचे लिख रहे हैं, जिनको विचार कर प्रत्येक मनुष्य अपना परीक्षा आप ही कर सकता है कि वह क्या है ।

मानवता की कसौटियाँ

१—क्या आप कोई भी अपराध वा पाप करते समय यह विचार करते हैं कि यह कार्य मेरी आत्मशान्ति के विरुद्ध है वा अविरुद्ध ?

२—क्या आप अन्यो के साथ वही व्यवहार करते है, जैसा कि आप अपने साथ दूसरो से चाहते हैं ?

३—क्या आप स्वार्थसिद्धि वा हानि-लाभ की परवाह न करके, निर्भय होकर सत्य को प्रकट करने का साहस रखते हैं ?

४—जो व्यक्ति आप पर पूरा विश्वास रखे, और फिर भी आप उसके साथ विश्वास-घात करें, तो क्या उस समय आपकी आत्मा ग्लानि होती है ?

५—आपको आत्मश्लाघा मे और परनिन्दा मे प्रसन्नता होती है या घृणा ?

६—क्या आप विपरीत परिस्थिति मे अथवा क्रोध की दशा में मानसिक सन्तुलन तो नहीं खो बैठते ?

७—क्या हानि-लाभ, मान-अपमान जय-पराजय एव सुख-दुःख में आपकी स्थिति डावाडोल तो नहीं हो जाती ?

८—किसी दुखी जीव को देखकर क्या आपके हृदय मे दया उत्पन्न होती है ? यदि हाँ, तो क्या आप उसे दुःखो से बचाने का भरसक प्रयत्न करते हैं ?

९—क्या आप अपने परिवार मे रहकर उत्तम भोजन अकेले खाना पसन्द करते हैं वा सबके साथ मिल कर ?

१०—यदि किसी झगडे मे आपके पुत्र-मित्र वा सम्बन्धो का अपराध सिद्ध हो जाय तो क्या आप उसके विरुद्ध आवाज उठाकर उचित दण्ड दिलाना पसन्द करेगे ?

११—क्या आप सम्मान का रूखा टुकडा खाना और अपमान का उत्तम भोजन न करना पसन्द करते हैं ?

(शेष पृष्ठ १४ पर)

[पृष्ठ १३ से आगे]

१२—यदि न्यायोपार्जित धन से सामान्य भोजन मिले, रहने को झोपड़ी मिले, बिजली की जगह दीपक से काम चलाना पड़े, समाज मे चाहे सम्मान न मिले अथवा अन्यायोपार्जित धन से उत्तम भोजन-वस्त्र मिले, रहने को कोठी, यात्रा के लिए कार वा हवाई जहाज मिले, समाज मे पूरी प्रतिष्ठा हो, तब क्या आप उस प्रतिष्ठा को लात मार कर उपर्युक्त पहले भाग पर जीना पसन्द करेंगे ?

१३—क्या आप सार्वजनिक लाभप्रद कार्यों मे अपना योगदान देना परम कर्तव्य समझते हैं, अथवा समष्टि के लाभ के लिये व्यष्टि की हानि पसन्द करते हैं ?

१४—क्या आप अपने अधीनस्थ कर्मचारियो के परिश्रम का तथा उपदेशार्थ बुलाये गये विद्वान् की योग्यता का समुचित मूल्य चुकाते है ?

१५—क्या आप विद्याहीन धनिको की चाटुकारिता मे अपनी विद्या, योग्यता तथा स्वाभिमान को चन्द पैसो मे बेचकर सन्तोष का अनुभव करते है ?

१६—क्या आप दूसरे की बहुमूल्य धरोहर रक्खी हुई वस्तु को ज्यो की त्यो वापिस कर देते है अथवा स्वय को समर्थ पाकर उसे हड़प कर जाते हैं ?

१७—निर्धनता से पीड़ित दशा मे—यदि कोई व्यक्ति केस मे रखे हुए दस-बीस हजार रुपये आपके सामने कहीं रखकर भूल जाय तो क्या पाने पर आप तत्काल उसे वापिस कर देंगे ?

१८—अपराध आप करें, और फस जाय कोई दूसरा व्यक्ति। उस दशा मे यदि सरकार उसे प्राणदण्ड अथवा ५—१० वर्ष के कारागार की सजा सुना दे तो क्या आप स्वय को दोषी बताकर उस व्यक्ति की जगह आप उस दण्ड भोगने को तैयार रहेगे ?

१९—यदि कोई असहाय नवयुवती एकान्त जगल मे कष्ट की दशा मे मिल जाय और आपको किसी का भय भी न हो तो क्या आप उसकी नि स्वार्थ सहायता करते हुए जितेन्द्रियता एव सच्चरित्रता का परिचय दे सकेंगे ?

२०—आप अत्यन्त भूख की दशा मे हो और भोजन आपके पास हो उस समय सहसा कोई भूखा व्यक्ति आपसे आकर कहे कि यह भोजन मुझे दे दीजिये। तब आप सच बतायें कि आप उस व्यक्ति को फटकार देंगे अथवा राजा रन्तिदेव जैसा भव्य उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे ?

इनके अतिरिक्त और भी अनेक मानवीय गुण हो सकते हैं। जो मानव के हृदय की पवित्रता को प्रकट करते हैं। यदि मनुष्य अधिक से अधिक इन विचारो मे स्वय को ढालने का यत्न करे तो हो नहीं सकता कि श्रेष्ठ मानवो के निर्माण से विश्व मे शान्ति न आये। आज सारे विश्व मे सर्वत्र दानवता का साम्राज्य है। इससे समूचा मानव समाज भयसवस्त है। अत प्रत्येक देश वासी को श्रेष्ठ मानव निर्माण तथा उसकी सुरक्षा के लिए प्रतिक्षण सगठित रूप से जागरूक होने की आवश्यकता है।

भारत के अन्न-जल और वायु से जीवित रहने वाले भारत माँ के सच्चे सुपूत पहरेदारो ! उठो, जागो, तुम्हारा कर्तव्य पुकार रहा है।

दानवता के कुटिल करो से मानवता को आज बचाओ।
फैला है अन्याय बहुविधि मानव धर्म समाज बचाओ ॥
इस भारत की स्वतत्रता हित यहाँ असख्य बलिदान किये हैं।
कितने जौहर हुए यहाँ और कितनों ने विषपान किये हैं ॥
बनो सुभाष, पटेल, और सावरकर वीर बनो तुम प्यारो।
राम-कृष्ण की भाँति कस-जरासन्ध और रावण सहारो ॥
वीर बनकर आप देश के आज पुन रणगान सुनाओ।
पुष्पाहार समझकर जिनको हमने अपने गले लगाये ॥
बनकर सर्प विषैले वे ही हमे काट खाने को आये।
ऋषि-मुनियो अपने गुरुओ की सब मर्यादा तोड़ चले हैं ॥
सत्य अहिसा और प्रेम से जो अपना मुख मोड़ चले हैं।
उनसे स्वामी दयानन्द का अब तो वैदिक राज बचाओ ॥ दा०
वही असुर दल भारत मा की छाती पर फुकार रहा है।
स्वार्थ हेतु जो आज निरपराधी लोगो को मार रहा है ॥
जयचन्द—मार्नासह की लाखों यहाँ सन्तानें घूम रही हैं।
खण्डित भारत को फिर से खण्डित करने पर झूम रही हैं।
"छाजूराम" इन गद्दारो से जन-जन का मुख साज बचाओ ॥ दा०

'दूर हटे पापिनी मदिरा यह'

यह मदिरा फैलाया करती, अनाचार व्यभिचार है।
इसके कारण फैला भू- पर, अतुलित अत्याचार है ॥
इस मदिरा से स्वास्थ्य बिगड़ता दूषित होती मन दशा,
करता है उत्तेजित मन को, इस मदिरा कुटिल नाश।
दनुज वृत्तियो को करती है, सदा मदिरा प्रोत्साहित।
मानवता के भावो को यह, करती रही हतोत्साहित ॥
विस्मृत कर देता स्मृति को, जो पीता विषसदृश शराब।
सदा मद्यपी की स्थितियाँ, रहती दूषित तथा खराब ॥
पाप तथा अनुचित आचारो की मदिरा है जानी।
सदा गरीबी और दुखो के अब गुण्ठन मे रही सनी ॥
क्षत-विक्षत हो जाती निश्चय मद्यपायी की अर्थ व्यवस्था।
बढ़ जाती सारे कुटुम्ब की दुखदापूरित क्रूर व्यथा ॥
दूर हटे पापिनी मदिरा यह, आओ ! जनमत करें सुजाग्रत।
इस मदिरा के निराकरण हित आन्दोलित हो जनगण अभिमत ॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

निर्वाचन

जिला—आर्यो प्रतिनिधि सभा सहारनपुर

प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य
मन्त्री श्री श्रीचन्द्र गौड़
कोषा० श्री ओम प्रकाश

आर्य समाज—बहेड़ी (बरेली

प्रधान श्री सुरेन्द्र सिंह
मन्त्री श्री रामस्वरूप स्नातक
कोषा० श्री कृष्ण दयाल पाराशरी

सभाधिकारियो का तूफानी भ्रमण

स्थान स्थान पर स्वागत, अभिनन्दन और भेंट

मैनपुरी/आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की आगामी शताब्दी का, आर्य समाजों, आर्य सस्थाओ व आर्यजनों को, निमन्त्रण देने तथा उन से शताब्दी हेतु सहयोग लेने के उद्देश्य से उसके माननीय प्रधान प० इन्द्रराज जी तथा मान० मन्त्री प० मनमोहन जी ने विगत दिनाक १९ व २० सितम्बर १९८६ मे फर्रुखाबाद, मैनपुरी तथा इटावा जनपदो का तूफानी भ्रमण किया उनके साथ सभा के मुख्य-निरीक्षक कुं० ध्रुव पाल सिंह जी 'अटल' भी थे। इस भ्रमण मे उक्त अधिकारियो का स्थान-स्थान पर भव्य स्वागत व हार्दिक अभिनन्दन हुआ एव उन्हे शताब्दी के लिये सहस्त्रो का आर्थिक सहयोग भी उपलब्ध हुआ।

इस भ्रमण के मध्य सभा के अधिकारियो ने आर्य समाजो तथा–खुदागज व फर्रुखाबाद आदि, आय शिक्षण सस्थाओ यथा–आर्य कन्या इन्टर कालेज इटावा, दयानन्द इन्टर कालेज जाजूमई तथा गुरुकुल सिरसागज आदि तथा आर्यजनो यथा–सर्वश्री सीताराम (खुदागज), सुखवासी लाल प्रधान (फर्रुखाबाद), श्रीमती सकुन्तला प्रधानाचार्या (इटावा), कु वर लाल (जसवन्तनगर) तथा विद्याराम (सिरसागज) आदि की आर्यसामाजिक समस्याओ और उनके विवादो को भी गम्भीरता पूर्वक सुना तथा उसके समाधान और निर्णय हेतु शताब्दी के पश्चात् समय निश्चित किया।

सभाधिकारियो के भ्रमण से आर्य समाजो, आर्य सस्थाओ व आर्य-जनों मे सगठन की नवीन चेतना और शताब्दी के लिये भारी उत्साह जाग्रत हुआ जिससे आशा है कि–इन तीन जनपदो से न्यूनातिन्यून तीन सहस्त्र आर्यजन निश्चय पूर्वक शताब्दी मे भाग लगे। सभाधिकारियो की कर्मठता की सर्वत्र प्रशसा हो रही है।। शताब्दी हेतु धन सग्रह भी उनकी प्रेरणा से युद्ध स्तर पर किया जा रहा है।

रघुनन्दनसिह शास्त्री
–सयोजक, आर्य समाज मैनपुरी।

दयानन्द कालेज जाजूमई में–सभा मन्त्री द्वारा शिलान्यास

दिनांक २०–९–८६/आज अपराह्न इस सभा के मान० प्रधान प० इन्द्रराजजी एव मान०मन्त्री प० मनमोहन जी तिवारी श्री दयानन्द सरस्वती साधना मन्दिर इन्टर कालेज जाजूमई जिला–मैनपुरी मे पधारे। कॉलेज के प्रबन्ध तन्त्र, अध्यापक एव छात्रों के साथ-साथ क्षेत्रीय जनता द्वारा उनका भव्य स्वागत, सम्मान एव सत्कार किया गया। इस अवसर पर मान० मन्त्री जी ने लगभग साठ सहस्त्र रु० लागत मूल्य वाले कालेज के चार नवीन कक्षो का शिलान्यास किया। यत इस अवसर पर मान० प्रधान जी भी उपस्थित थे अत उन्होंने शिलान्यास करते समय मान० मन्त्री जी की पीठ पर हाथ रखकर उन्हें प्रोत्साहित करते हुये हार्दिक आशीर्वाद दिया। इस अपूर्व दृश्य को देखकर उपस्थित जन समूह ने भारी करतल ध्वनि के साथ अपार हर्ष व्यक्त किया। जनसभा को सम्बोधित करते हुये मान० प्रधान जी ने छात्रो, अध्यापको, प्रबन्ध तन्त्र तथा अभिभावको के कर्त्तव्यो को बोध कराया तथा मान० मन्त्री ने सभा के आगामी शताब्दी समारोह मे भारी सख्या मे पधारने का हार्दिक निमन्त्रण दिया तथा समारोह के सहयोग हेतु अपील की जिस पर कालेज ने १००१, कालेज-प्रबन्धक श्री भगवान सिह एडवोकेट ने ५०१ तथा आर्य समाज जाजूमई ने २५१ रु० की थैलियाँ सादर भेंट की।

–कु० ध्रुवपाल सिंह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक, सभा।

सभा के शताब्दी समारोह में ४८ दुकानें

१७ से २० अक्टूबर ८६ को प्रकाशवीर शास्त्री नगर, डी० ए० वी० कालिज, लखनऊ मे होने वाले सभा शताब्दी समारोह में ४८ दुकानो की व्यवस्था की गई है। इन विक्रय केन्द्रो पर सस्ता वैदिक साहित्य, वैदिक गानो के कैसट, सामग्री, यज्ञ कुन्ड, डायरियाँ, कैलेंडर, आर्य समाज की सामग्री महान् विभूतियो के चित्र, जलपान की सामग्री की सुव्यवस्था रहेगी।

४ दिवसीय समारोह मे दुकानो का शुल्क विद्युत व्यय मिलाकर प्रति दुकान ५००) है। आरक्षण के लिए तुरन्त मिलें अथवा सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित करें तथा धन अग्रिम रूप मे जमा करें।

–मनमोहन तिवारी (मन्त्री)

आवश्यक सूचना

समस्त अध्यक्ष/मन्त्री पूर्वी उ० प्र० की आय समाजें तथा सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उ० प्र० के पदाधिकारियो को सूचित किया जाता है कि दिनाक १७ अक्टूबर ८६ से लेकर २० अक्टूबर ८६ तक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है जिसकी व्यवस्था के लिए १५ अक्टूबर ८६ से २० अक्टूबर ८६ तक प्रान्तीय स्तर पर आर्यवीर दल का सेवा एव सुरक्षा शिविर लगाया जा रहा है जिसमे आप लोग अपने २ जनपदो से कम से कम २० नवयुवको को इस शिविर मे भेजने की कृपा करें तथा उनकी सूची मेरे पते पर अविलम्ब भेजें। आर्यवीर गणवेश मे ही आयेंगे। आर्यवीरों का गणवेश सफेद हाफ कमीज, खाकी नेकर, सफेद जूता, सफेद मोजा, कन्धे बराबर लाठी, सीटी आदि होगा। आर्यवीर १५ अक्टूबर ८६ को डी० ए० वी० कालेज प्रकाशवीर शास्त्री नगर लखनऊ मे पहुच जाय। शिविर एव शताब्दी कार्यक्रम आपका है इसकी व्यवस्था देखना आपका कर्तव्य है।

प्रयागदीन जायसवाल मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उ० ० कार्यालय
दयानन्द जू० हा० स्कूल शास्त्री नगर सुलतानपुर।

नवीन आर्य समाज की स्थापना

ग्राम बहेडा सादात पो० खास जिला मुजफ्फर नगर मे नवीन आर्य समाज की स्थापना श्री नरेन्द्र सिह मन्त्री आर्य समाज टन्हेडा के अथक परिश्रम से की गई और निम्न पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान–श्री प्रीतम सिह
मन्त्री–श्री ब्रजपाल सिंह
कोषाध्यक्ष–श्री मा० हरपाल सिंह

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
मा० आश्विन २०
आश्विन शुक्ल ६
रविवार १२ अक्टूबर १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

शताब्दी समारोह में संसार के कल्याणार्थ विश्व भृत याग का अनुष्ठान

क्रत्वा शुक्रेभिरक्षभिॠणोरप व्रज दिव । हिन्वन्नृतस्य दीधिति प्राध्वरे ॥

[ऋ० ६-१०२-८]

(अध्वरे) विश्व यज्ञ मे (ऋतस्य दीधिति) सत्य की ज्योति को (प्र-हिन्वन) प्रचेतित करता हुआ प्रज्वलित करता हुआ (क्रत्वा) कर्मशीलता से (शुक्रेभि अक्षभि) शुद्ध तथा सशक्त दृष्टियो से (दिव व्रज अप ऋणो) विराट अन्धकार को हटा दे ।

हे विश्व यज्ञ के याज्ञिक जगमगा वह दिव्य ज्योति ।
करे नाश अविद्या तिमिर का उज्जवल करे जो सदाचार मोती ॥
कराए भव्य पावन सुदर्शन ज्ञान धारा मलिनता को धोती ।
सुकर्मी बने बसन्त जगती यह सारी पाप निद्रा मे रहे न सोती ॥



प्रतीक्षा की घड़िया समाप्त हुई

दिनाक १४ अक्टूबर ८६ से २० अक्टूबर ८६ तक प्रति दिन प्रात ७ से ९

[प्रकाशवीर शास्त्री नगर, डी ए वी कालेज मोतीनगर लखनऊ]

सभा के शताब्दी समारोह का विश्वभृत यज्ञ जिसमे ८८ यज ० वेदपाठी तथा अनेक व्रती नियमित रूप से भाग लेंगे ।
इसके साथ ही त्रिदिवसीय योग साधना शिविर भी १४ से १६ अक्तूबर १९८६ तक

दोनो भव्य आयोजन गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी के निर्देशन मे सुसम्पन्न होगे ।

शताब्दी समारोह के अन्य भव्य आयोजन

१७-१०-८६	–	ध्वजारोहण शताब्दी समारोह स्मारिका विमोचन पंजाब रक्षा सम्मेलन तथा शिक्षा सम्मेलन ।
१८-१०-८६	–	भव्य शोभा यात्रा कवि सम्मेलन ।
१९-१०-८६	–	आर्य सम्मेलन महिला सम्मेलन वेद सम्मेलन ।
२०-१०-८६	–	यज्ञ की पूर्णाहुति कार्यकर्त्ता सम्मेलन पुरस्कार वितरण महात्माओ विद्वानो याज्ञिको का अभिनन्दन तथा समापन ।

इन चारो दिनो मे आर्य वीरो के द्वारा व्यायाम प्रदर्शन खेलकूद वाद विवाद तथा संगीत प्रतियोगिताए, गुरुकुलों के शिक्षार्थियो द्वारा सस्वर वेद पाठ महर्षि दयानन्द के जीवन तथा आर्यजगत से सम्बन्धित भव्य प्रदर्शनिया मद्य निषेध ऋषि लगर, लागतमात्र पर वैदिक साहित्य की उपलब्धि ।

इसे ध्यान मे रखिए—

एसे स्वर्णिम अवसर बार बार नही आते समय और प्रवाह किसी की प्रतीक्षा नहीं करते जो चूकेंगे वे पछताएगे जो सम्मिलित होगे वे पुलकित होगे ओर नव उत्साह नव उमङ्ग ओर नव चेतना को लेकर प्रस्थान करेंगे स्वय को आर्य बनाकर विश्व को आर्य बनावें ।

इन्द्रराज	राजर्षि रणञ्जयसिंह	मनमोहन तिवारी
प्रधान	स्वागताध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ-२२६००१

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप मे नव्वरवाल प्रिन्टिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

कार्तिक कृष्ण ३०, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक २ नवम्बर १९८६

प्रभु की अमृत वाणी—

आतंकवादियों को गोलियों से भून डालो

यदि नो गा हसि यद्यश्व यदि पुरुषम् ।
त त्वा सीसेन विध्यामो यथा नो असो अवीरहा ।।

(अथर्व० १-१६-४)

इस समय आतकवाद से साधारण जन भयभीत है । आतकवादियो का काम है आतकवाद फैलाना' आतक फैलाने के लिए आतकवादी निरीह व्यक्तियो की हत्या करते हैं, उन्हें यातनाए देते हैं ताकि जन साधारण उनसे सर्वव भय की स्थिति मे रहे । आतकवाद का एकमेव उद्देश्य है देश को विघटित करना, उसकी प्रगति मे बाधक बनना और देश के शत्रुओ को उसे पराधीन बनाने के लिए प्रोत्साहित करना ।

इन विषम परिस्थतियो मे साधारण जनता यदि केवल सरकार से ही अपनी रक्षा की अपेक्षा रखे तो वह पर्याप्त नहीं है । सरकार का काम है जनता की रक्षा करना पर जब आतकवादी अपनी जडें दृढ़ करने के लिए सरकारी तन्त्र मे भी घुसपैठ करके रक्षको को भी भक्षक बना लें तो इन परिस्थितियों मे जनता को भी स्वय वीरत्व से सुशोभित होकर आतङ्कवादियो के दमन मे, उनके निर्मूलन के लिए अपनी सरकार को पूर्ण सहयोग देना है । यह तभी सम्भव है जब जनता सरकार से प्रमाण-पत्र लेकर अपने को शस्त्रो से सुसज्जित करके इन आतकवादियो का दृढता से सामना करे और निर्दोषो को गोलियो से भूनने वालों को गोलियो से भून दे ।

वेद धर्म वीरो का धर्म है । कायरो, डरपोको और भयभीत होने वालो का नहीं । अतएव वेद आदेश देता है–

(यदि न गाम हसि) यदि हमारी गति का हनन किया जाता है [गाम–गौ (गच्छतीति गौ)] (यदि अश्वम् हसि) यदि आशुगति [अश्व–आशुगति का प्रतीक] को मारा जाता है (यदि पुरुषम् हसि) यदि पुरुषत्व [पुरुष के द्वारा किया गया पुरुषार्थ] की हत्या की जाती है [तो हे मानव ! (वैदिक धर्मी) हे पुरुषार्थी वीर] (तम् त्वा सीसेन विध्याम) उसको, तुझ आततायी को, आतकवादी को, अत्याचारी को [हम) सीसे से, सीसे की निर्मित गोली से बींधते हैं [ताकि] (न अवीरहा अस) हमारा वीरत्व न मरे, हमारे वीरो को कोई न मार सके ।

वेद धर्म के अनुयायी वेद के इस आदेश का पालन कर अपने वीरत्व का परिचय दें । अपनी सम्पत्ति [चाहे वह गौ और अश्वो आदि के रूप मे हो अथवा भौतिक सुख के अन्य पदार्थ हों] तथा सतति की रक्षा करने के लिए आततायी के वध मे न कोई अधर्म है, न कोई दोष है और न ही कोई पाप ।

यदि अल्प सख्यक आतकवादी अपना सगठन बनाकर इतना अनर्थ कर सकते हैं तो बहु सख्यक प्रजा सगठित होकर क्या उनका सर्वनाश नहीं कर सकती ? आवश्यकता है केवल अपने वीरत्व को धारण करने कराने की और सगठित रूप से दृढ़ता से उनके सम्मुख डटकर उनसे लोहा लेने की । वेद धर्म यही सिखाता है।

उठो आर्यो ! शस्त्रो से सुसज्जित होकर डट जाओ ।
सगठित होकर इन आततायियों को मार गिराओ ।।

–'वसन्त'

★★★

सभा का शताब्दी समारोह सफलता पूर्वक सुसम्पन्न

★

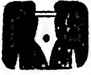
[विस्तृत विवरण पृष्ठ ३, ६ पर देखें]

★★★

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य २५१)
वार्षिक २०)
छमाही १०)
विदेश में ७ पौंड
एक प्रति ४५ पैसे

प्रधान सम्पादक–
मनमोहन तिवारी
सम्पादक मण्डल–
विक्रमादित्य 'वसन्त' 'वेद वारिधि' आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए. आचार्य वेदव्रत अवस्थी

वर्ष ८९
अङ्क ४३



सम्पादकीय

सम्वत्—रविवार २ नवम्बर १९८६ दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

ऋतवा त्वा वर्धयन्तु

सभा का शताब्दी समारोह बडी धूमधाम और उल्लास से, प्रभु की अनुकम्पा से सुसम्पन्न हो गया। सन्यासियो, महात्माओ, विद्वानों नेताओ तथा देश और विदेश के आर्यों ने उत्साह सहित इसमे अपना पूर्ण योगदान किया। प्रकाशवीर शास्त्री नगर डी० ए० वी० कालिज मोतीनगर लखनऊ के विशाल प्रागण मे शताब्दी समारोह को अपूर्व छटा का जब मैंने अवलोकन किया तो सभा की शतायु के मगल अवसर पर मेरे हृदय पटल पर वेद का यह मन्त्र सजीव रूप मे चित्रित हो उठा—

पश्येम शरद शतम्।
जीवेम शरद शतम्।
बुध्येम शरद शतम्।
रोहेम शरद शतम्।
पूषेम शरद शतम्।
भवेम शरद शतम्।
भूयेम शरद शतम्।
भूयसा शरद शतम्॥

[ऋषि-ब्रह्मा देवता-सूर्य] [अथर्व० १९/६७/१-८]

अर्थात् हम सौ और उससे भी अधिक वर्षों तक इस ससार को ज्ञान चक्षुओ से देखते रहें, अपनी इस अवधि मे जीवन यात्रा जीवितों के समान करें, ज्ञानी बनकर करें, उत्तरोत्तर उन्नतिशील होकर वर्धन करें, पुष्टि और दृढ़ता को प्राप्त करें, आनन्दमय स्थिति मे रहें और ऐश्वर्य, समृद्धि तथा सद्गुणो से अपने को सतत विभूषित करते रहें।

मानव जीवन मे नवीन उमग, दिव्य चेतना, शक्तिप्रद स्फूर्ति और आनन्द का सचार करने वाले अनमोल अमृतमय मन्त्रो से ईश्वर का अमर काव्य वेद परिपूरित है। एकमेव वेद ही इस धरती पर ज्ञान का वह अनन्त कोष है जो मानव जीवन मे आशावाद को लाता है अन्यथा मानवकृत अन्य ग्रन्थ जो वेदानुकूल नहीं है और जो भारतीय विचार-धारा पर चिरकाल से आच्छादित है—उनके अनुसार तो ये पाठ पढ़ाए जाते हैं कि 'ससार असार है। जगत् मिथ्या है। जीवन क्षण भगुर है, पानी के बुलबुले के समान है। इनसे मानव जीवन उत्साहहीन होता है, शक्तिहीन होता है, समृद्धिहीन और आदर्श विहीन होता है। पर इसके सर्वथा विपरीत सत्य विद्याओ का धारक वेद मानव जीवन मे आशावाद संजोता है। वेद के सहस्त्रो मन्त्रों मे मानव जीवन के लिए ओज, उत्साह और उल्लास झलकता है। मानव जीवन को सरस बनाने की जितनी पुनीत प्रेरणाए वेद के मन्त्रो मे हैं, वे अन्यत्र कहीं भी नहीं है। स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का मानव जाति पर सबसे बडा उपकार यह है कि उन्होने पथभ्रष्ट मानव सतति को सनमार्ग पर लाने के लिये 'वेद' की ओर लौट जाने का पावन सदेश दिया।

वेदो के महत्व को विश्वजनीन दृष्टि यही है कि मनुष्य आशावादी बने, निराशावादी नहीं। जहा मानव कृत ग्रन्थों ने 'पापोऽहं पापात्मा पापसम्भव' कहकर उसे ऐसा दीन हीन बना दिया वहां वेद ने 'इन्द्रोऽहम् न पराजिग्ये' (ऋ० १०/४८/५) कहकर आशावान बनाया कि वह इन्द्र है, उसका पराभव नहीं होगा। यदि वह इन्द्रियो को जीत कर अपने वश मे करके इन्द्रत्व को धारण करेगा। 'अहम् सूर्य इवा जनि' (ऋ० ८/६/१०) मैं सूर्य के समान चमकू और दमकू। 'इन्द्रो जयाति न पराजयते' (अ० ६/९८/१) इन्द्र विजय प्राप्त कराता है, पराजित नहीं कराता। हमारे ऋषियो मुनियो ने वेदो के महातम्य को अधिमानव दृष्टि से देखकर, मूल रूप मे इसका न केवल गान किया था अपितु इन शिक्षाओ को अपने जीवन मे उतार कर उसे आदर्श रूप मे प्रस्तुत किया था। वेद के मन्त्रो मे ईश्वरीय भावनायें ही प्रेरणा की स्रोत है। मानव मात्र का कल्याण ही उनका परम लक्ष्य है। यह एक ऐसा शाश्वत सत्य है जो सकल प्रकाशो के स्रोत सूर्य के समान हैं जिसकी उपेक्षा कदापि कोई भी नही कर सकता। प्रत्येक विचारशी[illegible] व्यक्ति, मननशील मानव, महात्मा, धर्मात्मा, सदाचारी, सर्वहितैषी जन ऐसी दिव्य भावनाओ का सर्वत्र स्वागत करेंगे और म[illegible] सम्प्रदायो [illegible] आबद्ध मानव को पाशो से मुक्त करके, उसके [illegible] दर्शन मे सहायक होगे। आज युग की यह सबसे महती आवश्य-कता है।

सभा के सौ वर्षों के जीवन मे अनगिनत महान् पुरुषो ने स्वामी दयानन्द के इन वेद मन्तव्यो को विश्वव्यापी बनाने के लिये अपने जीवनो को आहुत किया है। उन्होने अपना तन मन धन तथा यौवन इस सभा पर अर्पित कर दिया और इसकी जीवन ज्योति को जलाये रखा है। अनेक यातनायें सहते हुये, पग-पग पर विरोधों का डटकर सामना करते हुये वे सतत आगे बढ़े और सफल हुये। उन्होने न कभी साहस हारा और न ही कभी आत्म विश्वास को खोया।

दुर्भाग्य से पूर्ण विश्व मे आज जिस कूटनीति का बोलबाला है, उससे जनसाधारण भी नहीं बच पाया है। राजनीति के कुटिल दाव-पेंच धार्मिक सस्थानो मे भी खेले जा रहे हैं जिससे एक ऐसा निराशा का वातावरण छा गया है कि मानव का सुधार असम्भव सा प्रतीत होता है। आज तो 'विषेन विष हन्यते' की परम्परा को पकड़कर 'अमृतेन विष हन्यते' की पावन प्रेरणा को देने वाला आर्य समाज के अतिरिक्त कोई और नहीं है।

प्रदेश के प्रत्येक आर्य को यह स्वाभाविक कामना होगी कि यह शिरोमणि सभा दीर्घजीवी हो, ओजस्विनी हो, तपस्विनी हो और सदैव ऐसी भव्य शताब्दिया मनाती रहे पर यह तो तभी सम्भव होगा जब इसमे अर्पित जीवन आएगे जिनका प्रत्येक कर्म वेदानुकूल होगा। जो वेद के आदेशानुसार 'वृह मायाः' (ऋ० ६/४५/२६) मायाओ के आकर्षणो को काट डालेंगे। कनक कामिनी के प्रलोभन से सर्वथा दूर अछूते, पुत्रैषणा, लोकैषणा, वित्तैषणा को त्याग कर जो तपस्या के मार्ग को अपनायेंगे। 'तपसा नप्यध्वम्' (यु० १/१८) तप से चमकने का जो व्रत लेंगे। पदार्थों, जीवो और विषयो की आसक्ति से ऊपर

(शेष पृष्ठ ४ पर)

श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के कुशल नेतृत्व में

सभा का शताब्दी समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न

दक्षिण अफ्रीका, मारीशस तथा भारत के समस्त राज्यो से ६५,००० आर्यो का भव्य समागम

संन्यासियों, महात्माओं, विद्वानो और नेताओ द्वारा, शताब्दी के विभिन्न सम्मेलनो मे प्रेरणाप्रद उपदेश और व्याख्यान

हाथियो, अश्वो, द्रुतगति वाहनो, झांकियो से सुसज्जित विराट शोभायात्रा

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश द्वारा निर्धारित शताब्दी समारोह, पूर्ण उत्साह के वातावरण मे सुनिश्चित कार्यक्रमो के अनुसार सुसम्पन्न हो गया। इनकी विशिष्ट झलकियां सक्षेप मे इस प्रकार थीं।

(१) विश्व भृत यज्ञ दिनाक १४ अक्टूबर से जहां तीन दिवसीय सेना शिविर से तथा विश्व भृत यज्ञ से इसका सूत्रपात हुआ, वहां २० अक्टूबर की सायकाल ६०० बजे इसका भव्य समापन हुआ साधना शिविर और विश्व भृत यज्ञ स्वामी विवेकानन्द महाराज, आचार्य गुरुकुल प्रभाताश्रम (टीकरी) भोला झाल, मेरठ के ब्रह्मत्व मे सुसम्पन्न हुए। महात्मा दयानन्द जी महाराज, तपोवन देहरादून तथा अन्य सन्यासियों के प्रतिदिन यज्ञ शाला मे वेद प्रवचन होते रहे जिनका लाभ कई सहस्त्र आर्यजनो ने प्रतिदिन उठाया। भौतिक प्रसाद के साथ साथ आध्यात्मिक प्रसाद पा कर आर्यजन तृप्त हो गए। वेद पाठियो के सस्वर वेद पाठ ने उपस्थित समुदाय को मन्त्र मुग्ध कर दिया। यजमानों और व्रतियो ने निष्ठा पूर्वक इस कल्याणकारी यज्ञ मे भाग लेकर अपने को धन्य माना।

(२) ध्वजारोहण— १७-१०-८६ को प्रात ८ बजे श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ओम् ध्वजारोहन हुआ, ध्वजगान हुआ और पूज्य स्वामी जी के प्रेरणा प्रद शब्दों से समारोह का शुभारम्भ हुआ। आर्य वीर दल ने व्यायाम प्रदर्शन किया तथा दयानन्द विद्यामन्दिर के शिक्षार्थियो द्वारा पी० टी० प्रदर्शन तथा ओम् गान हुआ।

(३) खेलकूद तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताए ध्वजारोहण के पश्चात् प्रात १०३० बजे से क्रीडा स्थलो पर क्रिकेट, वालीबाल, बास्केट बाल, कबड्डी आदि की प्रतियोगिताए प्रारम्भ हो गई और उनके साथ ही पण्डाल मे छात्र-छात्राओ की वाद-विवाद प्रतियोगिताए भी शुरु हो गई। ये कार्यक्रम २०-१०-८६ तक अनवरत चलते रहे और सहस्त्रों की सख्या मे उपस्थित जन समुदाय ने इसमे भाग लेकर छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित किया।

(४) समारोह उद्घाटन और स्मारिका विमोचन मध्यान्ह २-३० बजे समारोह का विधिवत उद्घाटन तथा स्मारिका के रूप मे आर्य मित्र के विशेषांक का विमोचन माननीय श्रीमुत अर्जुन सिंह जी (भू० पू० मुख्यमन्त्री मध्य प्रदेश एव भू० पू० राज्यपाल पजाब और वर्तमान सचार मन्त्री भारत सरकार) के द्वारा हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री वीर बहादुर सिंह जी मुख्यमन्त्री थे जिन्होंने आर्य समाज के विभिन्न कार्यक्षेत्रों पर प्रकाश डाला और महर्षि दयानन्द के महान् कार्यों का उल्लेख किया। स्वागताध्यक्ष राजर्षि रणजय सिह जी ने अपने स्वागत व्याख्यान मे जो भावभीनी अभिव्यक्ति की, वह अपने मे अद्वितीय थी।

(५) विराट भव्य शोभा यात्रा दिनाक १८-१०-८६ को दोपहर को एक बजे प्रकाशवीर शास्त्रीनगर डी० ए०वी० कालेज से जो विराट शोभा यात्रा निकली, वह इतनी विशाल थी कि लखनउ के नागरिको ने न तो कभी उसकी कल्पना ही की थी और न ही किसी ऐसी अन्य शोभा यात्रा को कभी देखा था। इस ऐतिहासिक ३किलोमीटर की शोभा यात्रा के व्रहत स्वरूप का अनुमान इससे सहज लगाया जा सकता है कि इसका अगला सिरा जब ओडियन सिनेमा के पास पहुचा तोपिछला सिरा गौतमबुद्ध मार्ग से शिवाजी मार्ग की ओर अग्रसर हो रहा था। सुसज्जित हाथियो पर सवार सन्यासी तथा महात्मा अश्वो पर आरूढ आर्यवीर, मोटर साइकलो, स्कूटरो और मोपेडो पर प्रमुख आर्य जन, बैंड बाजे वाहनों पर सुन्दर झाकिया, ओम् के जय घोष, वैदिक नाद, प्रभु भक्ति के भजन, सस्वर मन्त्र पाठ, याज्ञिको द्वारा सायकालीन यज्ञ वातावरण को सुशोभित कर रहे थे। स्थान-स्थान पर बने महापुरुषो के नाम पर बने स्वागत द्वार और मार्ग मे प्रदर्शनकारियो का स्वागत लखनऊ के नागरिको के स्नेह, सम्मान और सत्कार का परिचायक था। सायकाल ६-३०जब शोभा यात्रा वापस प्रकाशवीर शास्त्री नगर पहुची तो स्वामी सत्य प्रकाश जी के आर्शीवचन से तृप्त हो गई।

(६) विभिन्न सम्मेलन शताब्दी सम्मेलन मे जिन सम्मेलनो का आयोजित किया गया, वे इस प्रकार थे।

१७-१०-८६ अपराह्न— पजाब रक्षा सम्मेलन
(अध्यक्ष— श्री राम चन्द्र राव वन्दे मातरम उपाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा)
रात्रि — शिक्षा सम्मेलन
(अध्यक्ष—स्वामी सत्य प्रकाश जी)

१८-१०-८६ रात्रि — आर्य कवि सम्मेलन
(अध्यक्ष—राजर्षि रणजय सिह)

१९-१०-८६ प्रात — वेद सम्मेलन
(अध्यक्ष—आचार्य वैद्य नाथ जी शास्त्री)
अपराह्न — महिला सम्मेलन
(—अध्यक्ष — श्रीमती पद्मासेठ राज्य मन्त्री उ० प्र०)
(उद्घाटन श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी मत्री उ० प्र०)

[शेष पेज ४ पर)

सभा का शताब्दी समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न

[पृष्ठ ३ का शेष]

अपरान्ह – आर्य युवा शक्ति सम्मेलन
(अध्यक्ष–श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध सरस्वती)
रात्रि – आर्य सम्मेलन
(अध्यक्ष–श्री इन्द्र राज जी सभा प्रधान)
२०-१०-८६ प्रात – कार्यकर्ता सम्मेलन
(अध्यक्ष–श्री इन्द्र राज जी सभा प्रधान)

इन समस्त सम्मेलनो का विस्तृत विवरण तथा उनमे पारित प्रस्ताव पृथक रूप से, सुविधानुसार आर्य मित्र के आगामी अकों मे प्रकाशित किए जाएगें। पाठक कृपया उनकी प्रतीक्षा करें।

(७) समापन समारोह २०-१०-८६ की दोपहर को समापन समारोह की कार्यवाही आरम्भ हुई जिसकी अध्यक्षता प्रो० बासुदेव सिंह जी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री युत् के० सी० पन्त खान एव इस्पात मन्त्री भारत सरकार थे। दोनो महानुभावों ने आर्य समाज के लिए बडे सारगर्भित व्याख्यान दिए। श्री के० सी० पन्त ने अपने व्याख्यान मे जहाँ आर्य समाज द्वारा की गई राष्ट्रीय सेवाओ और सामाजिक सुधारो का भाव-प्रद उल्लेख किया वहाँ स्वय को भी उसका एक सेवक बता कर सबको विभोर कर दिया। स्वागतगान, माल्यार्पण शोध पत्रक सम्मान विद्यालय वक्ता अनुदान, छात्र-छात्राओ को पारितोषिक वितरण, विद्वानों का अभिनन्दन, दैनिक याज्ञिको का सम्मान, सभा प्रधान द्वारा धन्यवाद राष्ट्रगान और शांति पाठ के उपरान्त शताब्दी कार्यक्रम का समापन उल्लासमय वातावरण मे हुआ।

(८) अन्य विशेषताए शताब्दी समारोह मे एक भव्य प्रदर्शिनी का भी आयोजन किया गया। महर्षि दयानन्द के गृह त्याग से जिज्ञासुरूप मे जिन स्थानों का भ्रमण उन्होने किया, जहाँ-जहाँ वेद प्रचार किया और जहाँ-जहाँ आर्य समाजें स्थापित कीं, उन्हे मान चित्रो द्वारा प्रदर्शित किया गया तथा उनके जीवन सम्बन्धी अनेक घटनाओ को चित्रबद्ध करके प्रदर्शित किया गया। समारोह मे ४० दुकानें भी लगाई गई जहाँ वैदिक साहित्य, सगीत के कैसेट, हवन सामग्री, चित्र, दैनन्दिनयो, बैज, बिल्ले तथा जलपान की पर्याप्त सामग्री उपलब्ध रही। इन दुकानो पर हर समय पर्याप्त भीड़ रही और खूब बिक्री हुई।

शताब्दी समारोह पूर्णतय सफल रहा और निर्विघ्न समाप्त हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, मन्त्री, अधिकारीगण, समस्त आयोजक और कार्यकर्त्ता जिन्होंने अथक प्रयास करके इसे सफल बनाया है, उन्हे हमारी बधाई अर्पित है।

–सम्पादक मण्डल

सूचना

शताब्दी समारोह के समापन के अवसर पर दिनाक २०-१०-८६ सायकाल ६ बजे दैनिक यज्ञ कर्ताओ को पुरस्कृत करने के लिए, मच से उनके नामों की घोषणा की गई थी, परन्तु अनेक याज्ञिक पुरस्कार लेने नहीं आए। चूंकि उस समय पर्याप्त विलम्ब हो जाने के कारण, भारी जन समूह जो वहा पर एकत्रित था, छुटने लग गया था और कोलाहल के उस वातावरण मे, यह सम्भव है कि वे अपने नाम न सुन पाए हों, अथवा सभास्थल से चले गये हों, उन्हे इस विज्ञप्ति के माध्यम से सूचित किया जाता है कि वे अपने पुरस्कार सभा से प्राप्त कर लें।

—मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आर्य जनों से अपील

आर्यसमाज सांवली-गढ़वाल की सहायता करें

पर्वतीय क्षेत्र मे आर्य समाज सावली पच्चपुरी गढ़वाल ने समाज सेवा का सराहनीय कार्य किया है स्वर्गीय जयानन्द भारती का इस समाज के निर्माण मे विशेष योगदान रहा है। और वर्तमान अधिकारी समाज की सेवा-भावना मे निरन्तर कार्य करके सदैव नवीन रूप दिया करते हैं।

इस समाज का भवन क्षतिग्रस्त हो गया है इसके धराशायी होने की आशंका है अत निर्माण कार्य आवश्यक है तदर्थ एक लाख रुपये की आवश्यकता है उदार आर्यजन सहायता देकर समाज की सहायता करें सहायता धन-चेक-ड्राफ्ट आदि मन्त्री आर्य समाज सावली पच्चपुरी पो० बंजरी जिला गढ़वाल के पते पर भेजी जाय।

–इन्द्रराज
प्रधान

–मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

सम्पादकीय

(पृष्ठ २ का शेष)

उ कर वेद के शब्दो मे 'स्वाकृतोऽसि' (य० ७३६) के अनुसार अपने निर्माता स्वयम् बनेंगे।

सभा से युक्त अपने अमृत पुत्रो और पुत्रियो को, जब वे अपने को इस योग्य बनायेंगे तब उस परम पिता का उन्हे यह आशीर्वाद वेद के शब्दो मे इस प्रकार मिलेगा—

समास्त्वाग्ने ऋतवो वर्धयन्तु सवत्सरा ऋषयो यानि सत्या। स दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आ भाहि प्रदिशश्चतस्त्र।

(यजु० २७/१)

अर्थात् प्रबुद्ध मानव! समानतायें तेरा विकास करें, ऋतुए, ऋताचार जिसमे परिवर्तन एव कठिनाई होती है, उससे तेरा वर्धन हो, सवत्सर तुझे बढ़ायें, ऋषि तेरा सवर्धन करें और जो सत्य है उनसे तेरा ऐसा अभ्युदय हो कि दिव्य जीवन सौंदर्य से सम्यक् रूप मे प्रदीप्त होकर, दिव्य भव्यता से जगमगाता हुआ तू सारी दिशाओ और उप दिशाओ को अपनी जीवन ज्योति से जगमगा दे।

सभा को दीर्घजीवी बनाने क. ऐसा ही पावन व्रत यदि हम सब लें तो यह निश्चित है कि व्रतो का रक्षक प्रभु "अग्ने! त्वम् व्रत पाऽसि" (ऋ० ८/११/१ य० ४०-१६ अ० १६/५६/१) के अनुसार हमारे इस पवित्र व्रत की रक्षा करेगा।

–विक्रमादित्य "बसन्त"

सवेदना

–आर्य समाज बहेडी जिला बरेली के वयोवृद्ध एव कर्मठ कार्यकर्ता चौधरी प्रेमचरन सिंह ग्राम रम्पुरा बहेडी निवासी का एक लम्बी बीमारी के बाद दिनांक २०-९-८६ को स्वर्गवास हो गया। उसी दिन पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य बलबीर सिंह के पौरोहित्य मे अन्त्येष्टि की गयी।

आर्य समाज बहेडी जि० बरेली को उनके आकस्मिक निधन से काफी क्षति अनुभव करता है तथा ईश्वर से प्रार्थना करता है कि ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

–रामस्वरूप स्नातक मन्त्री

वेद-विवेचन

वेदो रक्षति रक्षितः

[श्री अभयदेव शर्मा, एम०ए० (हिन्दी, सस्कृत), पी०एच०डी० (सस्कृत)
अध्यक्ष, वेद सस्थान, अजमेर—नई दिल्ली]

"जहाँ वेद नहीं, वहाँ न आर्य है, न दयानन्द है। वह आर्य समाज नहीं जहाँ सस्कृत और वेद नहीं" इन शब्दो मे प्रस्तुत लेख के लेखक जो सस्कृतज्ञ और वेदज्ञ हैं, उनके हृदय की तड़प व्यक्त होती है। स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' ने जीवन पर्यन्त वेद का प्रचार वाणी और लेखनी से किया और अपनी जीवनाहुति भी सहारनपुर के आर्य समाज के मच से वेद प्रचार करते हुए दे दी। 'अनुव्रत पितु पुत्र, इस वेद सूक्ति को सार्थक कर रहे हैं, उनके यह सुपुत्र जो एक राजकीय विद्यालय मे सस्कृत के प्रवक्ता हैं तथा सेवा निवृत होने पर अपने पिता की चिर-[illegible]य को पूर्ण करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। इस लेख मे सस्कृत और वेद के प्रति उनकी जो आत्म वेदना निहित है, क्या आर्यजन उसे आत्मानुभूत करके स्वामी दयानन्द के ऋण से उऋण होने का व्रत लेंगे ?

—वसन्त (सम्पादक)

आर्य-मर्यादा का निर्धारण वेद-श्रुति से हुआ करता है। अत आर्यत्व की रक्षा के लिए वेद अपेक्षित है। पर, वेद रक्षा तब करता है जब वेद की रक्षा आर्य करें। वेद किस लिए ? आर्य बनने के लिए। आर्य को ही ब्राह्मण (ब्रह्म का ज्ञाता) कहते हैं। आर्य हो ऋषि (तत्व का साक्षी द्रष्टा) है' आर्य ही वेद द्वारा यज्ञ करके देव बनता है और उस स्थिति मे रमता है जहाँ स्व है, आनन्द है (स्वर-ग)।

जो आर्य नहीं वह द्विज नही। उसका वेदो की माता, गायत्री की कोख से जन्म नहीं हो पाता है। वह तो पतित-सावित्रीक (गायत्री-वेद माता से हीन, मातृहीन-अनाथ) रह जाता है। जो आर्य नहीं वह अनार्य तो दस्यु है जो अजर, अमर, चेतन आत्मतत्व का उपक्षय (दसु-उपक्षय) कर करके, जड शरीर से अपना तादात्म्य कर करके जड़ बुद्धि, सवेदन-[illegible]न, प्राणरम और देहपरायण बना हुआ है। ऐसा दस्यु तो वह असुर जो अपनी देहपरिधि की सकुचित स्वार्थ सीमा से बाहर के लोक, पर-लोक को देख नहीं पाता। अहकार-रूप वृत्र के आवरण मे अपने आत्मा का दम घुटता हुआ देख कर भी उसे वेदना नहीं होती। वह स्व के बजाय स्व मे लीन होता है। स्व को विराट, उरु स्व-ज्योति से सवलित करने के लिए जिस आर्यत्व की अपेक्षा है उसे पाने के लिए देवासुरम् सग्राम करना होता है। और इस सग्राम में विजय मिलती वेद का पल्ला पकड़ने से।

वेद पोथी है, मनुष्य को प्राप्त सबसे पुरानी पोथी। पर, पुरानी होने से ही कोई वस्तु अच्छी नहीं हो जाती, और नवीन हर वस्तु बुरी नहीं भी हो सकती है। पोथियाँ तो ढेरों हैं। जागरूक, प्रबुद्ध मस्तिष्क सदा से पोथिया बोलता आया है जिन्हे किन्हीं ने रट लिया, लिख लिया तो वे आज तक सुरक्षित चली आ रही हैं। अनगिनत पोथियाँ नष्ट भी हो गई होंगी, जैसे, वेदो की सहस्राधिक शाखा-सहिताओं, ब्राह्मणा-रण्यकादियों मे से दस-बारह के अलावा सब विलुप्त हैं। इजील, बाई-बिल, कुरआन, गुरुग्रन्थ साहब जैसी कुछ पोथिया सुरक्षित हैं। कपिल-कणादादि वैज्ञानिक-दार्शनिको की पोथिया भी कुछ सुरक्षित हैं। ये पोथिया कागज-पत्र पर लिखी, भार-आकारयुक्त पाठ्य पुस्तक होने मात्र से अध्येय नहीं बन जाती हैं। इनमे कुछ हैं जो मनुष्य को उसके स्वरूप बोध मे सहायक हैं। अत मनुष्य इन्हे पढ़ता है। ये श्रुतिया हैं, सुनाई जाती हैं। ये पोथिया है, पढ़ी-पढ़ाई जाती है। ये शास्त्र है इनमे आर्य बनने के लिए आचारादेश हैं। पढ-सुन कर आचरण करने पर ही पोथी का अस्तित्व सार्थक है, आचारहीन को पोथिया पवित्र नहीं करतीं, आचार-हीन न पुनन्ति वेदा (मनुस्मृति)।

भारत की मान्यतम पोथी वेद है। देश-काल की परिधि के परे जो शाश्वत तत्व पोथियों मे हैं उसके कारण हर पोथी अखिल मानवता के लिए होती है, किसी सम्प्रदाय विशेष की बपौती वह नहीं होती। पर, वेद नामक प्राचीनतम पोथी मे तो शाश्वत ही शाश्वत, निरा सनातन तत्व साद्यन्त भरा पडा है क्योंकि यह उस काल की पोथी है जब मनुष्य देश, वर्ग, सम्प्रदायो की सीमाओ को या तो जानता नहीं था, अथवा उनकी कट्टरता से अनभिज्ञ था। अत वेद नामक पोथी जितनी सार्वभौम और सार्वकालिक है वैसी अन्य कोई पोथी नहीं है।

अपनी इस प्राचीनता के कारण, विभिन्न देशो और सम्प्रदायो की पवित्र पोथियो के रूप मे वेद ही सर्वत्र विराजमान है। मनु ने 'सर्व वेदात् प्रसध्यति' (मनुस्मृति) ठीक ही कहा था। तात्कालिक देश-कालिक बातों को छाट दें तो सब पवित्र पोथियो मे, सन्तों, मुनियो, सिद्धों, अर्हतों, ऋषियो, फकीरो, भक्तो की उक्तियों मे वेद मौजूद है। चीन, जापान, फारस, अरब, यूनान, रोम कहीं की भी वैचारिक परम्परा को लें, वहाँ वेद उपस्थित मिलेगा। सद्भाग्य से भारत मे वेद-चिन्तन की परम्परा फिर भी काफी कुछ सुरक्षित रह गई है। अत भारत के वेद से इन सब अन्य पोथियो के तत्वज्ञान को, अनबूझ उक्तियो बेतुकी कथाओ को, परस्पर विरोधी बातो को, गर्हित लगने वाली घटनाओ को हस्तामलकवत् समझा जा सकता है। ऐसा होने पर विभिन्न सम्प्रदायों और मान्याताओ के पक्षधर अपनी वैचारिक बातो को बहतर समझ सकेंगे। और तब खुलेगा वास्तविक धर्मसमन्वय का राजमार्ग जिस पर स्वेच्छया सब अनायास आ रहे होंगे, जहाँ सम्प्रदायो की दूरिया और कटुतायें दूर होंगी और पुन अखिल मानवता का अभिन्न स्वरूप उजागर होगा (अ-भिन्न खिल्य, ऋग्वेद)।

अत वेद-रूप परम गुरु की शरण मे आना आर्यत्व की प्रथम और प्रमुख पहचान है। जो वेदाध्ययन नहीं करता वह आर्य नहीं है। वेदाध्ययन कैसे हो ? वेद की भाषा तक पहुचने के लिए सस्कृताध्ययन अनिवार्य है। अत जो सस्कृत नहीं जानता वह वेद नहीं पढ़ सकता। वेद के स्वाध्याय के लिए वेद का ऐसा अध्ययन अपेक्षित है कि वेद अध्येता की स्व-सम्पत्ति, निजी वस्तु बन जाए। वेद के अनुवाद या टीकाए बाच लेना वेदाध्ययन नहीं है। हर अनुवादक, टीकाकार, भाष्यकार, व्याख्याकार ने वेद मे जो जितना जैसा समझा वह उतना वैसा मात्र उसकी कृति मे है। पर, वेद उससे विराट् और अधिक है। वेद की अनन्तता को कोई एक मस्तिष्क कृत्स्नतया नहीं अधिगत कर सकता। वैज्ञानिक को अब वेद का प्रत्येक शब्द विज्ञानपरक लगने लगा है। विज्ञान की जो गुत्थियाँ खोले नहीं खुल पा रही हैं उन्हें खोलने के लिए देशी-विदेशी वैज्ञानिक वेदों, उपनिषदो, बौद्ध उक्तियो से

(शेष पृष्ठ १२ पर)

शताब्दी समारोह में पधारनेवाले आगुन्तकों को हुई असुविधा के लिए खेद तथा क्षमा याचना

सभा के शताब्दी समारोह मे बाहर से पधारने वाले समस्त आर्य नरनारियो के हम बडे कृतज्ञ हैं जिन्होने दूर-दूर से पधार कर सब सम्मेलनों को सफल बनाने मे कष्ट सहकर भी अपना पूर्ण योगदान दिया और समस्त आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न हुए।

सम्पूर्ण आर्य जगत से लगभग ६५,००० आर्यों ने इस समारोह मे भाग लिया। यद्यपि आवास और भोजन समितियो ने सबके आवास और आहार का पूरा ध्यान रखा, तथापि अनेक भाई बहिनो को इतने अपार जनसमूह में असुविधा होना स्वाभाविक है। चारबाग से अमीनाबाद तक की समस्त धर्मशालाओ, विद्यालयो तथा होटलो मे स्थान का आरक्षण कराने के उपरात भी अनगिनत व्यक्तियो को डी० ए० वी० कालेज के बरामदों मे धरती पर आवास लेना पडा। भोजन कक्ष मे पूर्ण तत्परता निभाने पर भी यह सम्भव है कि अनेक व्यक्तियो को भोजन प्राप्त करने मे पर्याप्त असुविधा हुई होगी।

जिन आगन्तुको को आवास और आहार मे हमारी अव्यवस्था अथवा किन अन्य कारणो से जो भी असुविधा हुई हो, उसका हमे अत्यन्त खेद है और हम उसके लिए क्षमा प्रार्थी है। हमे पूरा विश्वास है कि शताब्दी समारोह को अपना ही समारोह मानकर तथा हमारी विवशताओ और उन परिस्थितियो को ध्यान मे रखते हुये, जिनमे ऐसी असुविधाए हो ही जाती हैं, हमारे अपने बन्धु माताए और बहिनें, हमें सच्चे हृदय से क्षमा प्रदान कर अपनी महान सहृदयता का परिचय देंगे।

इन्द्रराज (प्रधान) **मनमोहन तिवारी** (मन्त्री)

शताब्दी समारोह की प्रेस वार्ता

शताब्दी समारोह के पूर्व दिनाक १६-१०-८६ को प्रात ११ बजे रायल कैफे हजरतगज लखनऊ मे आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा समाचार पत्रो और समाचार समितियो के सवाददाताओ और पत्रकारो की एक सभा आयोजित की गई जिसमे २४ प्रतिनिधियो ने भाग लिया। यह प्रेस वार्ता शताब्दी समारोह के विभिन्न कार्य्यक्रमो से उन्हे अवगत कराने के लिए बुलाई गई थी।

प्रतिनिधियो ने सभा प्रधान तथा मन्त्री से जहा शताब्दी सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की, वहा मुख्य रूप से पजाब समस्या और उस पर आर्य समाज की प्रतिक्रिया की मुख्य रूप से चर्चा की। सभामन्त्री ने उपस्थित प्रतिनिधियो को बतलाया कि उन्होंने आर्य समाज द्वारा गठित समिति, जिसके वे स्वय भी सदस्य थे, पजाब के आतकग्रस्त क्षेत्रो का दौरा किया और स्थिति की वास्तविक रूप से जानकारी प्राप्त की। सभा प्रधान ने प्रतिनिधियो को अवगत कराया कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रद्धेय आनन्द बोध सरस्वती ने देश के केन्द्रीय प्रधानमन्त्री को पूर्ण स्थिति की वास्तविक जानकारी दी है और पजाब से आए हुए शरणार्थियो को दिल्ली से लेकर मेरठ तक के आर्य समाजों द्वारा उनके आवास और सहायता की व्यवस्था की है। जहां सरकार से आतकवाद को तुरन्त समाप्त करने का आग्रह किया है, वहा पजाब मे निवास करने वाले हिन्दुओ को पजाब न छोडने को, तथा आतकवाद का डटकर सामना करने की तथा इस कार्य मे सरकार को पूर्ण सहयोग देने की प्रेरणा दी है। आतकवादियो का निर्मूलन करना, उनका बध करना, उन्हें मृत्यु दण्ड देना वेदानुकूल है, जिसका आर्य समाज पूर्ण समर्थन करता है परन्तु बदले की भावना से, प्रतिकारवश देश के अन्य भागो मे निर्दोष व्यक्तियो के प्राण लेना अथवा क्षति पहुचाना हमारी नीति मे नहा है क्योकि हम आर्य जाति के रक्षक गुरुओ का न केवल सम्मान करते हैं वरन् सिख समुदाय को भी अपना अग मानते हैं क्योकि आज तक इस समुदाय के परिवारो से हमारे अटूट रिश्ते और नाते हैं। देश को विघटित करने वाले तत्वो से जगरुक रहना और देशवासियो को सजग करना और विदेशियो के हाथों मे खेलने वाले इन कठपुतलो का सर्वनाश ही हमारी नीति है, जिसमे हम एक ओर सरकार का पूर्ण सहयोग दे रहे हैं और दूसरी ओर जन साधारण को प्रेरित कर रहे हैं कि वे भी सरकार से लाइसेंस प्राप्त कर शस्त्रादि रखकर इन विनाशकारी तत्वो का विनाश करें। पाकिस्तान के समीपस्थ प्रदेशो मे सुरक्षा की दृष्टि से सुरक्षा पक्ति बनाने का भी आर्य समाज पूर्ण समर्थन करती है ताकि वहा से घुसपैठियो के प्रवेश को पूर्णरूपेण रोका जा सके।

दूरदर्शन लखनऊ द्वारा शताब्दी समारोह का छायांकन

शताब्दी समारोह के निम्नलिखित तीन प्रमुख अगो का दूरदर्शन लखनऊ द्वारा छायाकन किया गया, १७-१०, १८-१० तथा २०-१० को जिन्हें सायकाल ७-३० पर सुनाये जाने वाले समाचारो के साथ प्रदर्शित किया गया—

(१) उद्घाटन समारोह—१७-१०-८६ को मध्यान्ह ५-३० शताब्दी समारोह के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित जनसमूह की झलकियों के साथ माननीय श्रीयुत अर्जुन सिंह और प्रदेश के मुख्य मन्त्री माननीय श्री वीरबहादुर सिंह जी द्वारा व्यक्त विचारों के कतिपय अशों का श्रवण कराया गया।

(२) शोभा यात्रा—१८-१०-८६ को दोपहर को जो भव्य शोभा यात्रा निकाली गई, उसकी विशिष्ट झलकी समाचारों के साथ दिखलाई गई, जिसमे हाथियो, अश्वों, बैंडबाजों, स्कूटरों और पैदल चलने वाले अपार जनसमूह को प्रदर्शित किया गया।

(३) समापन समारोह—२०-१०-८६ को सायकाल को सम्पन्न हुए समारोह की झलकी के साथ माननीय के० सी० पन्त केन्द्रीय मन्त्री के व्याख्यानांश का श्रवण कराया गया।

शिक्षा जगत

सास्कृतिक कार्य्यक्रमो से नैतिक पतन

[लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती]
डी—१४१६, माडल टाउन, दिल्ली

[आज देश की शिक्षण सस्थाओ मे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर बालिकाओं का जो अश्लील श्रृगार कर उन्हे नचाया जाता है और फिल्मी गीत हावभाव व्यक्त करके गवाये जाते हैं, क्या इनसे विद्यार्थियो का नैतिक उत्थान होगा ? क्या आर्यजगत की शिक्षण सस्थाओ को अन्धानुकरण करके इस परिपाटी को चलाना चाहिये परिवर्तित करना चाहिये या तुरन्त बन्द कर देना चाहिये ? इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना होगा। हम आर्य शिक्षाजगत के अन्य विद्वानो के इस सन्दर्भ मे विचारो की प्रतीक्षा करेंगे। —'बसन्त' सम्पादक]

'आर्यमित्र' के २१ सितम्बर १६८६ के अङ्क मे 'हम कथनी को करनी मे उतारें' शीर्षक से मेरा एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ है। सभावित शकाओ के निवारणार्थ कुछ स्पष्टीकरण अपेक्षित है। इसलिये ये पक्तिया प्रकाशनार्थ भेज रहा हू।

'वेश्या' कौन है ? अमरकोश मे वारस्त्री, गणिका, रूपाजीवा शब्द वेश्या शब्द के पर्यायवाची है। वारस्य वृन्दस्य स्त्री साधारणत्वात्। गण समूहोऽस्त्यस्या भर्तृत्वेन (५—२—२५) गणयति। गण सख्याने

वेशेन नेपथ्येन शोभते। कर्मवेशाद्यत् (५—१—१००)

वेशे वेश्यावाटे भग वा। वेश प्रवेशोऽस्त्यस्या अन्येभ्योऽपि (वा ५—४—१२०)

वेश्य वेश्यागृहे क्लीन गणिकाया तु योषिति इति मेदिनी।

रूपमाजीवोऽस्या। अमरकोश खण्ड २, मनुष्यवर्ग ६, श्लोक १६

आप्टे कोश मे अर्थ है—'वेशेन पण्ययोगेन जीवति'। वेश+यत्।

इसमे 'पण्य' पद का प्रयोग देखने योग्य है। 'पण्य' उस वस्तु का नाम है जो विक्रय के लिये प्रस्तुत की जाती है। 'पण्ययोगेन' पद 'वेशेन' का विशेषण है—ऐसा वेश जो पण्य—विक्रय के साथ सम्बन्ध रखता हो। विक्रय मे सभोग आंशिक है। मेदिनी कोश के अनुसार 'वेश' पर 'नेपथ्य' का पर्याय है। उसका अर्थ मञ्च पर अभिनय के अनुरूप 'मेकप' है। चेहरे या केश या वस्त्र आदि का सजाना सवारना नेपथ्य या वेश है। व्यापार के लिये जो स्त्री ऐसा करे, वह वेश्या है।

'रूपाजीवा' का सीधा अर्थ है—जो रूप के सहारे आजीविका चलाती है, ऐसी स्त्री। आप्टे कोश मे रूप धर कर रगमञ्च पर आना, अभिनय करना और हावभाव प्रदर्शित करना, रूप के अन्तर्गत है।

'वेश्या' के अग्रेजी पर्याय 'प्रास्टीट्यूट' आक्सफोर्ड इगिलश डिक्सनरी मे इस प्रकार दिया है—'*A woman who offers or exposes one self to indiscrmiate lewdness*' 'क्रियापद के रूप मे प्रास्टीट्यूट शब्द का अर्थ है—'*To sell ones' houour for base gain or offer or expose onefself to indiscriminate leudness* अभिनय आदि को जिस रूप मे आज प्रस्तुत किया जा रहा है, उसे 'इरोटक आर्ट' को सज्ञा देते हुए कहा है—'*Erotic art is what excites your senses, incites lust and increases sexual appetite*

इससे कौन इनकार कर सकता है कि अभिनेत्रियो के शरीर, उनके हाव भाव, सवाद और गानो का उपयोग अधिकतर दर्शको की कामुकता को उभारने के लिए किया जाता है। जो अभिनेत्री अपने रगरूप, अग प्रदर्शन, हावभाव आदि के द्वारा दर्शकों की वासना को जितना अधिक उभार पाती है, वह उतनी ही अधिक लोकप्रिय होती है और ऐसी ही फिल्मो के लिये टिकट खिड़की पर भीड लगती है। जो लडकियाँ अर्ध नग्न शरीर के साथ कभी किसी की बाँहों मे झूलती हैं उनके चरित्र की गारन्टी कौन ले सकता है। अष्ट प्रकार के मैथुन मे आलिगन—चुम्बन सहित सात प्रकार के मैथुन तक का तो खुला प्रदर्शन होता ही है। मैथुन की अन्तिम स्थिति का भी साकेतिक प्रदर्शन काफी होने लगा है। विशेषत बलात्कार के माध्यम से। भारतीय दृष्टिकोण से यह सब सर्वथा घृणित एव अवाछनीय है।

ऐसी स्त्रियो को एक एक लाख रुपये दक्षिणा रूप मे देकर स्कूलों और वह भी आर्यसमाज द्वारा दयानन्द के नाम पर सचालित स्कूलो मे आदर्श—मुख्य अतिथि के रूप मे प्रस्तुत करना जघन्य अपराध है। निश्चय ही ऐसी सस्थाओ के सचालकों को न आर्यसमाजी कहा जा सकता है, न भारतीय। कभी स्कूलो मे साधु—सन्तो तथा विद्वानो को आमन्त्रित किया जाता था। अब उनके स्थान पर अभिनेताओ और अभिनेत्रियो को पैसे देकर बुलाया जाता है। कभी-कभी नेताओ को भी निहित स्वार्थों के कारण बुलाया जाता है। परन्तु उनमे भी प्राय राजनैतिक अभिनेताओ को चुना जाता है। हम उन्नति कर रहे हैं या पतन की ओर बढ़ रहे हैं, इसका तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए एक घटना का उल्लेख करना पर्याप्त होगा। सन् १६३६ मे डी० ए० वी० आदोलन की अर्ध शताब्दी लाहौर में मनाईगई थी। समारोह के अध्यक्ष थे त्यागमूर्ति महात्मा हसराज जी और मुख्य अतिथि थे ऋषिकल्प प० मदनमोहन मालवीय। सन् १६८६ मे समारोह के अध्यक्ष थे प्रो० वेद व्यास जी और मुख्य अतिथि थे दलबदलुओ के अग्रणी श्री भजनलाल। तब कार्यक्रम मे मुख्य आकर्षण था देश के प्रमुख शिक्षा शास्त्री और वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी जैसे सन्त महात्मा और अब थे कल्चरल (स्वामी वेदानन्द जी के शब्दो मे कजरल) प्रोग्राम प्रस्तुत करने वाली लडकिया।

सन् १६२३ के आसपास 'आर्यमित्र' के तत्कालीन यशस्वी सपादक प० हरिशकर शर्मा ने एक लेख लिखा था जिसमे आर्यसमाज के नैतिक स्तर के गिरने का कारण शिक्षा सस्थाओ को बताते हुए लिखा था कि इनके चलाने के लिये प्राय अनुचित साधनो का अपनाना पड़ता है। धन ऐसे लोगो से मिलता है जो अन्यथा अवाछनीय होते हैं। जब उनसे धन लिया जाता है तो उन्हे समाज मे अधिकार देकर सम्मिलित करना पड़ता है। इस प्रकार सज्जन पुरुषो की उपेक्षा होती है।

आज वह स्थिति अधिक भयावह रूप मे आ रही है। कहा जाता है कि पैसे के बिना काम नहीं चलता है। अच्छे से अच्छा काम करने के लिये भी पैसा चाहिये। इसलिये हम सस्था का सचालन करने के लिए जरूरतमन्दो से रुपया आदि लेते हैं। अच्छे कार्य के लिए भीउचित साधन अपनाये जाने चाहिये। आर्यसमाज का पांचवा नियम है—'सब कार्य

(शेष पृष्ठ १६ पर)

मिल कर चलें

श्री रूप चन्द 'दीपक'
आर्य समाज श्रृंगार नगर, लखनऊ

राष्ट्र असख्य समस्याओं से घिरा है । प्रत्येक समस्या की गम्भीरता भी अगाध है । दुर्भाग्य-वश राम, कृष्ण, चाणक्य, दयानन्द जैसा कोई व्यक्ति भी नहीं है जो अकेला सबको चला सके । अतएव सबको मिलकर चलना है । मिल कर चलें तो भिन्न-भिन्न गुणों के स्वामी होने के कारण हम समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। परन्तु यह तभी सम्भव है जबकि हम मिलें भी और चलें भी ।

आज धर्म का स्थान सम्प्रदाय ने ले लिया है। सम्प्रदाय को महर्षि दयानन्द कहा करते थे–सम्प्रदाह-अर्थात् जिससे धर्म एव ज्ञान का भली प्रकार दहन हो जाए-"सम्यक् प्रकृष्टतया हि दग्ध धर्मज्ञाना जना भवन्ति येषु ते सम्प्रदाहा, न च सम्प्रदाया, इति विवेक ।" वर्तमान मे इन सप्रदायो की सख्या सैकड़ों मे है । ये सभी परस्पर शत्रुभावी हैं । ईसाई भाई सेवा, चिकित्सा एव शिक्षा के बहाने अपनी सख्या बढ़ा रहे हैं । सेवा, चिकित्सा एव शिक्षा उत्तम कार्य हैं । परन्तु जब ये दूसरो को अपने शिकजे मे कसने के उद्देश्य से किये जाते हैं तो इनकी तुलना उस कसाई के कृत्य से की जा सकती है जो मारने से पूर्व बकरे को स्नान कराता, भोजन खिलाता, पुचकारता एव विश्राम देता है । मुसलमान भाइयो का इतिहास धर्मान्धता का इतिहास है । ये सर्वप्रथम मुसलमान हैं, बाद मे भारतीय, व्यापारी, मित्र । सिख सम्प्रदाय आज सर्वाधिक नाशकारी ज्वालामुखी बन गया है । अपने सप्रदायो के कृत्यो पर प्रधानमन्त्री का नियत्रण भी स्वीकार न करना, यथार्थ वादी सम्पादक का मत सहन न कर पाना, राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से ।ो सेनाध्यक्ष की कार्यवाही की भर्त्सना ा करना तथा अवसर मिलते ही इन तीनो की हत्या कर देना जिस सप्रदाय को प्रिय लगा हो, ऐसा सम्प्रदाय अमानवीय मानवो का ही हो सकता है । हिन्दू भाई हिन्दू नाम, जिसके अर्थ हैं-काला, डाकू, पाषाण पूजक, सेवक, गुलाम नास्ति आदि, पर गर्व करने लगे हैं । वेद, एकेश्वरवाद, पुनर्जन्म, त्रैतवाद आदि सत्य सिद्धातो को हृदय से स्वीकार करके एव सगठित होकर अपनी एव सबकी उन्नति करने के स्थान पर या तो एकाकी पड गये हैं या साम्प्रदायिक सेनाओं का गठन करने लगे हैं । यह सब विभ्रम है । धर्म का आचरण विरोध और हिसा मे नहीं अपितु स्नेह और एकता मे है । किन्तु हिन्दू-मुस्लिम सिख-ईसाई के रूप मे लोग भाई-भाई नहीं हो सकते । मानव-मानव ही भाई-भाई हो सकते हैं । अत मानव के एकमात्र धर्म वैदिक धर्म को जानना, मानना एव पालनक रना ही एकमात्र समाधान है ।

मे तनाव भी मिला है । उसका परिवार टूट रहा है । काम-ज्वाला धधक रही है । असाध्य रोग बढ़ रहे हैं । वह अशान्ति मे जी रहा है । ईश्वर को या तो भूल रहा है या फिर आर्थिक लाभ के लिए उसके नाम का व्यापार कर रहा है । यह सब सच्ची विद्या की उपेक्षा करके अर्थपक मे फसने का दुष्परिणाम ह । भौतिकवाद का दैत्य तीव्र गति से बढ़ता आ रहा है और एक प्रमुख समस्या बन गया है । ईश्वर की उपासना, प्राणिमात्र से स्नेह और प्राकृतिक सम्पदा का सदुपयोग करके ही इसका समाधान सभव है । वैदिक दृष्टिकोण हे–त्यक्तेन भुञ्जीथा (यजुर्वेद ४०-१) अर्थात् भोगे तो अवश्य किन्तु त्याग भाव से ।

सिंहावलोकन

एक अन्य समस्या है–भौतिकवाद इसने वर्तमान युग को अर्थप्रधान युग बना दियाहै । परिणामस्वरूप मानव के लिए मानव का महत्व घट गया है और धन का महत्व बढ़ गया है । वह दूसरो के जीवन की परवाह किये बिना खाद्य पदार्थों एव औषधियो मे मिलावट करता है । दूसरो को दबा कर स्वय उठना चाहता है । विवाह मे भी दहेज की माँग करता है । राष्ट्रहित की उपेक्षा करके भ्रष्टाचार करता है । यहाँ तक कि धर्मार्थ दिये गये दान के प्रतिदान मे भी व्यापारिक दृष्टिकोण रखता है । इस आपा-धापी से उसे धन तो अवश्य मिला है । परन्तु साथ

विद्या, बल, धन एव सेवा मे सब मनुष्य समान नहीं हो सकते हैं । उनमे अन्तर होना स्वाभाविक है । इसी अन्तर और विशिष्टता के आधार पर समाज मे वर्ण व्यवस्था चल रही थी । मनुष्य का वर्ण उसके गुण,कर्म, स्वभाव के आधार पर निश्चित होता था । विद्या देने वाले ब्राह्मण, रक्षा करने वाले क्षत्रिय, व्यापार करने वाले वैश्य और सेवा करने वाले शूद्र कहलाते थे । कालान्तर मे मनु का उक्त अभिप्राय समझने मे भूल होने लगी और जन्म के आधार पर जातिया बनने लगीं । एक वैज्ञानिक व्यवस्था का स्थान अवैज्ञानिक जाति-प्रथा ने ले लिया है । यह जाति-वाद समाज को भीतर से खा रहा है । एक ही देश के वासी परस्पर विभाजित हो रहे हैं । लोग भाषण मे स्वय को प्रगतिशील कहते हैं किन्तु व्यवहार मे, जाति क्या, उप जाति को भी महत्व देते हैं सम्प्रति जातीय आधार पर ही विवाह हो रहे हैं । विद्यालयो एव कार्यालयों मे जातीय पक्षपात हो रहा है । राजनैतिक चुनावों मे जातीय आधार पर वोट दिये जा रहे हैं । यह जातिवाद अविद्याजनित एव नाशकारी है । राष्ट्रीयता, एकता एव निष्पक्षता की स्थापना मे बहुत बड़ी समस्या है । इसका समाधान वर्ण-व्यवस्था की पुनर्स्थापना मे है।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना इसलिए की थी कि लोग विभिन्न सम्प्रदायो में [illegible] फँसकर पुन एक धर्म मे जीवन-यापन करें, ईश्वर की उपासना करते हुए अर्थोपार्जन [illegible], जाति-प्रथा तथा अन्य भेद-भाव समाप्त हो और वैदिक सस्कृति का सर्वत्र आचरण हो । परन्तु एक शताब्दी के जीवन मे इसमे कुछ विकार आ गया है । इसका परिष्कार आवश्यक है अर्थात् मूल स्वरूप की ओर जाना । एतदर्थ कुछ विनम्र अनुरोध है ःे–(१) आर्ष पद्धति से ही पठनपाठन हो । अवैदिक शिक्षा-अविद्या का मूल [illegible] । (२) वैदिक धर्मी आर्य जन आश्रम-व्यवस्था का पालन करें ताकि समाज मे सर्व गुणो से भूषित व्यक्ति सतोष प्रद सख्या मे उपलब्ध हो । (३) व्याकरण की उपेक्षा न करें । शब्द ब्रह्म अर्थात् वेद को समझना सम्भव है । (४) योगाभ्यास मे प्रमाद न करें । योग द्वारा ही परब्रह्म अर्थात् परमात्मा को समझना सम्भव है । (५) गृहस्थजन पञ्च-महायज्ञ अवश्य किया करें । गृहस्थ सुधार में समाज-सुधार होगा । (६) वेद पर मनमाने भाषण न हो । वेद वा आर्ष ग्रन्थों के आधार पर ही भाषण-लेखन करें ।

समाज मे श्रेष्ठ व्यक्तियों का प्रतिशत घटता जा रहा है । समस्या और अविद्या एक-दूसरे को बढ़ा रही है । राजव्यवस्था प्रभावी नहीं है । आर्य जनों को ही समाधान करना है । अत परस्पर अविरोधी एव सगठित होकर चलें । [illegible] चलें ।

कविता कलाप

सच्चे बन जाओ

श्री देवनारायण भारद्वाज,
एफ ४२ मानसरोवर कालोनी रामघाट रोड
अलीगढ़

कुछ अधिक बनो या बनो नहीं, मानव ही सच्चे बन जाओ।
निधि दयानन्द के बन न सको, प्रतिनिधि ही सच्चे बन जाओ।।
ऋषि-मुनि पण्डित सन्त मनीषी,
मानव के विविध विशेषण ये
यदि मूल मनुज ही मिट जाये,
तो व्यर्थ हुए विश्लेषण ये
जीवित की शोभा आभूषण,
मृत हेतु व्यर्थ परिवेशन ये।
अनुशासन स्नेह संगठन बिन,
सब अर्थ हीन अधिवेशन ये।।

स्वामी समान यदि बन न सको, सेवक ही सच्चे बन जाओ।
निधि दयानन्द के बन न सको, प्रतिनिधि ही सच्चे बन जाओ।।
शत युग त्रेता द्वापर बीते,
जब आर्य धर्म का था प्रकाश।
कलयुग के आरम्भ काल तक,
था वेद यज्ञ का ही विकास।।
मत भेद द्वेष उमड़े ऐसे,
हो गया महाभारत विनाश।
ऋषि दयानन्द ने आकर के,
था रोक दिया ये ध्वस्त ह्रास।

ऋषि के अनुयायी बन न सको, न्यायी ही सच्चे बन जाओ।
निधि दयानन्द के बन न सको, प्रतिनिधि ही सच्चे बन जाओ।।
ऋषि दयानन्द ने आडम्बर,
पाखण्ड खण्ड कर डाले थे।
पोप पुजारी ढोंगी मुल्ला,
सबके मुख पर श्रुति ताले थे।।
देशी राजे अंग्रेज विदेशी,
पड़ गये सभी के पाले थे।
प्रिय स्वराज्य का मंत्र फूंक कर,
सब वीर किये मतवाले थे।।

रवि दयानन्द के बन न सको, दीपक ही सच्चे बन जाओ।
निधि दयानन्द के बन न सको, प्रतिनिधि ही सच्चे बन जाओ।।
अरियो से लड़ना सिखलाया,
हम लड़ने लगे परस्पर ही।
जो दोष दूसरो मे होते,
वे आने लगे स्वय पर ही।।
हवि-हवन हाथ से छूट गए।
छा गए भवन अब सर पर ही,
बढ़ गए चरण न्यायालय को।
देवालय शरण बहिष्कर ही।।

श्रुति साधक श्रेयी बन न सको, श्रोता ही सच्चे बन जाओ।
निधि दयानन्द के बन न सको, प्रतिनिधि ही सच्चे बन जाओ।।

गाएं तेरी गाथा

श्री पूर्णप्रकाश मित्तल मण्डल सचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल मुरादाबाद मण्डल
मित्तल भवन, रामाश्रम रोड, मु० धनियान, बिजनौर

ऋषि तुम्हारे उपकारो को,
गाऊ मैं क्या क्या गाथा।'
नतमस्तक है मेरा तुम पर,
हर श्वास गाए तेरी गाथा।।

सोती मानव जाति को,
दीप दिखाया था तुमने।
भटके दुनिया वालो को,
राह दिखाई थी तुमने।।

भटका फिरता था मानव,
जाति-पाति के चक्कर में।
ना ज्ञान रहा था उस पागल को,
देवी देवता के चक्कर में।।

पूजा का आधार ओ३म् है,
ओ३म् है घट-घट वासी।
वेदों का आधार ओ३म् है,
ओ३म् है जीवन साक्षी।।

वर्ण का आधार जन्म नहीं,
कर्म सभी का सब कुछ।
सब को तुमने गले लगा कर,
ज्ञान दिया था सब कुछ।।

बाल-विवाह बहु-विवाह को,
तुमने दूषित बतलाया।
कुरीतियो को मिटाने हेतु,
तुमने बिगुल बजाया।।

सती प्रथा को मिटाया तुमने,
विधवा विवाह रचवा कर।
नारी जाति को सम्मान दिया,
उसको शिक्षा दिलवाकर।।

देश प्रेम की प्रेरणा देकर,
वेदों की गाथा गाई।
दुनिया वालो को तुमने,
वैदिक सस्कृति बतलाई।।

ऋषि-जन्म, दीक्षा, पाखण्ड खण्ड,
शास्त्रार्थ शताब्दी भी आई।
इस आर्यसमाज स्थापना की,
ऋषि निर्वाण शती भी आई।।
विशाल सभा विश्व सम्मेलन,
सबको हमने धूम मचाई।
तप तेज पुरातन फिर लाओ,
लाओ फिर गरिमा गहराई।।
ऋषि के सत शिष्य न बन पाओ, सन्नद्धि ही सच्चे बन जाओ।
निधि दयानन्द के बन न सको, प्रतिनिधि ही सच्चे बन जाओ।।

जीवन ज्योति

स्वामी दयानन्द के प्रमुख शिष्य

रावबहादुर गोपाल राव हरि देशमुख लोकहितवादी

—ले० डा० भवानीलाल भारतीय पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

मराठी साहित्य मे लोकहितवादी के नाम से प्रसिद्ध, महाराष्ट्र के प्रख्यात सुधारक तथा सावजनिक नेता गोपालराव हरि देशमुख के पूर्वज बाजीराव पेशवा (द्वितीय) के सामन्त घराने के थे। इनका जन्म १८ फरवरी १८२३ ई० को पूना मे हुआ। आयु मे ये स्वामी दयानन्द से एक वर्ष बडे थे। मुसिफ को परीक्षा पास कर देशमुख १८५२ ई० मे सरकारी सेवा मे आये। १८५५ मे वे पदोन्नत हुए और पूना मे सब ऐसिस्टेंट इनाम कमिश्नर बनाये गये। १८६२-६३ मे उन्होने कार्यवाहक सहायक और सत्र न्यायाधीश का पद सँभाला। १८६५ मे वे बम्बई के लघुवाद न्यायालय मे कार्यवाहक न्यायाधीश रहे। १८६७ मे अहमदाबाद मे वे इसी पद पर रहे। १८७७ मे उन्हे नासिक स्थानातरित कर दिया गया, जहाँ वे सत्र न्यायाधीश के पद पर रहे। १ सितम्बर १८७९ को जब उन्होने अवकाश ग्रहण किया तो उन्हे जिला एव सत्र न्यायाधीश के रूप मे कार्य करते हुये दो वष पूरे हो चुके थे।

सन् १८७७ मे दिल्ली दरबार के समय उन्हे 'राव बहादुर' की उपाधि प्रदान की गई। वे बम्बई विश्वविद्यालय क फैलो भी रहे तथा १८८० से १८८२ तक बम्बई की धारा सभा के सदस्य के रूप मे कार्य किया। मराठी मे उन्होने उच्चकोटि का साहित्य लिखा है। इन्होंने मराठी मे लगभग ४० छोटे बडे ग्रन्थो की रचना की है। १८८२ ई० मे देशमुख ने लोकहितवादी नामक एक मासिक पत्र का प्रकाशन भी आरम्भ किया था। प० गोपाल राव देशमुख का स्वामी दयानन्द से परिचय उस समय हुआ जब वे अहमदाबाद मे न्यायाधीश थे। उन्होने स्वामी जी की वक्तृता सुनी और वे उनके विचारो से अत्यधिक प्रभावित हुये। कालान्तर मे वे आर्यसमाज बम्बई के वर्षो तक पदाधिकारी रहे। स्वामी दयानन्द को यजुर्वेद पर भाष्य लिखने की प्रेरणा देशमुख ने ही दी थी। यद्यपि स्वामी जी ने वेद भाष्य प्रणयन का कार्य तो १८७७ ई० मे ही आरम्भ कर दिया था और भूमिका लेखन के पश्चात् वे ऋग्वेद भाष्य का आरम्भ भी कर चुके थे। इसी बीच देशमुख ने उन्हें यजुर्वेद पर भाष्य लिखने के लिये प्रेरित किया। स्वामी जी ने इसे तुरन्त स्वीकार किया और लाहौर से ६ जून १८७७ को भेजे गये पत्र मे उन्होने देशमुख को सूचित किया कि वे शुक्ल यजुर्वेद का भाष्य करने के लिये तैयार है। इसके लिये उन्हें दो पण्डितो की और आवश्यकता होगी। देशमुख को लिखे गये स्वामी दयानन्द के १२ पत्र प० भगवद्दत्त ने स्व सम्पादित 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' मे सगृहीत किये हैं। इन पत्रो से स्वामी जी का देशमुख के प्रति प्रेम, सौहार्द तथा सम्मान का भाव पदे-पदे व्यक्त होता है।

स्वामी दयानन्द ने वेद भाष्य का मुद्रण कार्य प्रारम्भ मे बम्बई से कराया। इस कार्य का दायित्व उन्होने हरिश्चन्द्र चिन्तामणि के सुपुर्द किया था किन्तु वे चाहते थे कि यह महत्त्वपूर्ण कार्य देशमुख जैसे जिम्मेदार तथा अनुभवी व्यक्ति की देखरेख मे होता रहे। उनका यह विचार रावलपिण्डी से ६ दिसम्बर १८७७ को भेजे गये देशमुख के नाम लिखे पत्र से ज्ञात होता है। स्वामी दयानन्द ने इन्हे अपनी स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का सदस्य भी मनोनीत किया था। स्वामी जी के निधन के पश्चात् जब परोपकारिणी सभा की प्रथम बैठक अजमेर के मेयोकालेज स्थित मेवाड दरबार की कोठी मे हुई तो उसमे देशमुख जी उपस्थित थे। इसी अधिवेशन मे उन्हे मेरठ के लाला रामशरण दास के दिवगत हो जाने के कारण सभा का मन्त्री चुना गया।

प० गोपालराव हरिदेशमुख ने स्वामी जी के निधन के पश्चात् उनके व्यक्तित्व, कार्य तथा विचारो का मूल्याकन परक एक विस्तृत निबन्ध मराठी भाषा मे लिखा जो उनके लोकहितवादी मासिक के जनवरी-फरवरी १८८४ ई० के सयुक्ताक के रूप मे प्रकाशित हुआ। इस लेख का साराश स्वामी दयानन्द के प्रथम हिन्दी जीवनी लेखक प० गोपालराव हरिशर्मा [फरुखाबाद निवासी] ने दयानन्द दिग्विजयार्क–(खण्ड ३) मे उद्धृत किया है। लोकहितवादी लिखित यह महत्त्वपूर्ण निबन्ध अब प्रा० कुशलदेव बडवलकर द्वारा हिन्दी मे अनूदित होकर पाठको के समक्ष आ चुका है।

प० गोपालराव देशमुख के पाच पुत्र थे लक्ष्मण राव, मोरेश्वर, गणपतराव, रामचन्द्र राव और कृष्णराव। बडे पुत्र लक्ष्मणराव स्वामी जी के जीवनकाल मे सरकारी सेवा मे प्रविष्ट हो चुके थे। जब स्वामी दयानन्द अजमेर से जोधपुर प्रस्थान करने की तैयारी मे थे तो लक्ष्मणराव उनसे योग सीखने की इच्छा लेकर वहाँ आये। जब २९ मई १८८३ को मध्याह्न की रेल से स्वामीजी ने अजमेर से जोधपुर के लिये प्रस्थान किया तो उन्हे स्टेशन पर विदाई देने के लिये आने वालो मे श्री लक्ष्मणराव भी थे जो उस समय खानदेश मे सहायक जिलाधीश के पद पर थे। उनके दूसरे पुत्र व्यवसाय से चिकित्सक थे। डा० मोरेश्वर ने एम० डी० की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वे आर्यसमाज बम्बई के प्रधान भी रहे।

लोकहितवादी के अवशिष्ट तीन पुत्रो का निधन स्वय उनके जीवनकाल मे ही हो गया था। गणपतराव का १८८३ मे रामचन्द्रराव का १८८७ मे तथा कृष्णराव का देहान्त लोकहितवादी की मृत्यु से एक वष पूव १८९२ मे हुआ। इन पारिवारिक क्लेशो को लोकहितवादी ने अत्यन्त शात एव स्थितप्रज्ञ के रूप मे सहन किया। विषम परिस्थितियो मे लोकहितवादी के अप्रतिम धैर्य तथा प्रशात मन स्थिति का एक उदाहरण उनके जीवन मे मिलता है। एक बार वे अपने पुत्र की अन्त्येष्टि करके लौटे ही थे कि स्वरूप काल के पश्चात् आर्यसमाज के सम्बन्ध मे बातचीत करने के लिये सुन्दर लाल जी नामक एक सज्जन उनके समीप पहुचे। अपने चेहरे पर किसी प्रकार के दुख व शोक का चिन्ह न लाते हुये उन्होने सुन्दरलाल जी के साथ इच्छित विषय पर बातचीत भी की। परन्तु जब घर के नौकर ने पुत्र के देहान्त की घटना सुन्दरलाल जी को बताई और यह भी कहा कि देशमुख जी तो स्वपुत्र को अग्नि के अर्पण करके ही अभी लौटे हैं, तो आगन्तुक ने क्षमा मागते हुए कहा कि ऐसे दुखद अवसर पर उनका सामाजिक कार्य हेतु उनके समीप आना ठीक नहीं था। इस पर परमस्थितप्रज्ञ लोकहितवादी

(शेष पृष्ठ १२ पर)



विश्वशांति एवं आर्यसमाज

—डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी,
प्रोफेसर्स कालोनी, श्यागज, बरेली

विद्वेष की ज्वालाओ मे सुलगते इस विश्व मे शाति की चर्चा कलित कल्पना मात्र बनकर रह गई है। विश्व की महाशक्तियां, प्रतिस्पर्धा के पोषण से सवधित होकर, एक दूसरे को निगलने का प्रयास कर रही हैं। आतकवाद के क्रूर ताडव की सचालिका हिंसा विस्तारवाद के मद मे अन्धी हो गई है। 'मानवता' बन्दिनी बनकर किसी अज्ञात स्थान पर सिसकियाँ भर रही हैं। सुनकर भी आज कोई उसकी नहीं सुनता। स्वार्थ ज्वर से आकुल व्याकुल आज का मानव दिग्भ्रात होकर, अपनी इस जीवन यात्रा को विषम से विषमतम बनाये दे रहा है।

ऐसे समय मे आयसमाज जो श्रेष्ठो का समाज है, अपनी महत्वपूर्ण विश्व शाति की भूमिका हेतु उल्लेखनीय ही नहीं अपितु आचार का प्रेरक होने के कारण वरणीय भी है, 'आचार परमो धर्म' के अनुसार 'आचार' ही सुख एव शाति का मूल है।

दुराचरण ही अशाति का मूल कारण है। आचार के विघटन का कारण सार्वभौम वैदिक धर्म एव सस्कृति की ही विस्मृति है। वेदोपदेश किसी देश विशेष के मनुष्यों के लिये नहीं, अपितु वे मानवमात्र का हित सँजोये हैं चाहे वह मानव ईसाई हो या मुसलमान, सिक्ख हो या हिन्दु, यहूदी हो या पारसी, रूसी हो या जापानी, या अन्य कोई। सगठन की सर्वप्रथम प्रेरणा करने वाली वैदिक ऋचायें ही हैं—

० सगच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम्

ऋ० १०/१९१/२

हम सब साथ-साथ मिलकर चलें।

० यो न पाप्मन् न जहासि तमुत्वा जहिमो वयम्।

अ० ६/२६/२

हे पापवृत्ते, यदि तु मुझे नहीं छोडती, तो मैं तुझे छोड़ता हू।

० अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि० यजु० १/५

हे अग्ने ! मैं व्रत पालक बनना चाहता हू।

० समानी वा आकूति समाना हृदयानि व ॥

ऋ० १०/१९१/४

हमारे सकल्प एक जैसे हों।

० मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन्मा ० अ० ३/३१/१-३

पारिवारिक व्यवहार व्रत से पूर्ण एव द्रोहशून्य रहे।

राष्ट्र या परिवार मे सुख समृद्धि तब हो सकती है, जब परस्पर प्रेम हो।

० सा प्रथमा सस्कृति विश्ववारा ० यजु० ७/१४
ससार की सारी सस्कृतियाँ वैदिक सस्कृति से निकली हैं।

० मनुर्भव जनया दैव्य जनम् ऋ० १०/५३/६
मनुष्य बन !

आज का ससार ईसाई, मुसलमान, यहूदी, बौद्ध, जैन, सिक्खादि बनने पर बल देता है। मानव ही मानवता का वैरी है। ऐसे विषम समय मे वेदोपदेश है—"मानव बन।" मानव बनने पर सारा ससार परिवार बन जाता है। पारिवारिक सामरस्य हेतु स्नेह का व्यवहार अपेक्षित है—"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' (य० ३६/१८) अर्थात् सबको मित्र की दृष्टि से देखू।

यहा वे मानव सीमा से भी आगे हैं, क्योंकि स्नेह का अधिकारी, मानव नहीं अपितु सब भूत प्राणी हो गये। जो विचारपूर्वक कर्म करता है, वही मानव है। विचार शून्य जन तो केवल मानवाकृतियां ही हैं, जहाँ मानवता, स्नेह एव सामरस्य का नाम भी नहीं मिलता। धार्मिक दृष्टि से मानव समाज के दो भाग है—ईश्वरवादी तथा अनीश्वरवादी। ईश्वरवादी 'ईश्वर' को पिता मानते हैं यथा—

० "त्व हि न पिता वसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ
अधा ते सुम्नमीमहे।

ऋ० २/९२/११

अर्थात् तू ही मेरा पिता और तू ही मेरी माता है, अत हम तेरी प्रसन्नता चाहते हैं। प्रभु की विद्रोही एव अयोग्य सन्तान बनकर ही हम परस्पर झगडते हैं, किन्तु ईश्वरादेश है—सगच्छध्व ० साथ-साथ मिल कर चल।

निस्सन्देह, मानव बनना ही विश्व शान्ति का एकमात्र उपाय है। मानव बनने का प्रथम साधन है—"तन्तु तन्वन् रजसो भानु मन्विहि ० अर्थात् ससार का ताना-बाना बुनता हुआ भी तू प्रकाश का अनुसरण कर, अर्थात् तेरे समस्त कर्म ज्ञानमूलक होने चाहिये।

० नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि ० ऋ० १०/१३४/७

अर्थात् हम न घातपात करते हैं और ना ही फूट डालते है। मन्त्र के श्रवणानुसार हम चलते है, क्योंकि "मन्त्र" हमारा "गुरु" है। तिनकों के समान तुच्छ साथियो के साथ एक होकर, वेगपूर्वक हम यहाँ कार्य करते हैं।

वैदिक धर्म का प्रसारक आर्य समाज विश्व शान्ति के लक्ष्य को लेकर मानवमात्र के कल्याण हेतु अग्रसर हैं। सब सत्य विद्याओं के मूल 'वेदों' का पठन-पाठन, मनन, चिन्तन एव प्रसार इस अनैतिकता के अन्धकार को दूर कर, इस भूतल को स्वर्ग बना सकता है। मात्र भौतिकोन्नति ही सुख शान्ति का हेतु नहीं। अध्यात्म और भौतिकता का सम्बन्ध आत्मा और शरीर जैसा है। अध्यात्म के बिना भौतिकवाद अभिशाप है। किन्तु यह अध्यात्म आये कहाँ से ? इस जिज्ञासा के शमन हेतु हमे विश्व की प्रथम पुस्तक "वेद" के पठन-पाठन की ओर अग्रसर होना चाहिये। कपट, ढोंग, मिथ्यामतवाद आदि को मिटाकर

[शेष पृष्ठ १२ पर]

विश्व शांति एवं आर्यसमाज

[पृष्ठ ११ का शेष]

आर्यसमाज विश्व शान्ति हेतु सार्वभौम वैदिक सनातन धर्म का प्रसार चाहता है।

ईश्वराज्ञानुसार, पक्षपात शून्य होकर चलना तथा सृष्टिक्रम का ज्ञान ही धर्मादेश है। आर्यसमाज के प्रतिष्ठापक महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म के प्रसारार्थ ही अपना आलोकित जीवन विश्व हितार्थ समर्पित किया। आर्यसमाज ने मानव कल्याणार्थ जो सभी क्षेत्रों मे कार्य किये हैं, उसकी सत्यता का प्रमाण हमारा इतिहास है।

आर्यसमाज ने वैदिक सिद्धांतो के प्रमाराथ मण्डनात्मक, तथा सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध खण्डनात्मक कार्य किया है। वेदोपदेश के प्रसारार्थ, तथा शास्त्रार्थ के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना १३ अप्रैल १८७५ मे बम्बई मे डा० मानिक चन्द्र की वाटिका मे हुई। आर्यसमाज की स्थापना मे महर्षि का अन्य उद्देश्य वैदिक धर्मानुसार राज्य व्यवस्था स्थापित करने हेतु वातावरण तैयार करना था। इसी लक्ष्य से प्रेरित होकर महर्षि दयानन्द ने महाराजा श्री प्रताप सिंह, तथा महाराणा सज्जन सिंह आदि को वैदिक राजनीति की शिक्षा देने का प्रयास किया था। यही कारण है कि सत्यार्थ-प्रकाश के षष्ठ समुल्लास मे विशुद्ध वैदिक राज्य व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। महर्षि दयानन्द के अनुगामी महादेव गोविन्द रानाडे, श्याम जी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय तथा लाला हरदयाल आदि विभूतियाँ हैं, जिन्होंने विश्व के सम्मुख वैदिक धर्म को सार्वभौमिकता को प्रस्तुत किया शुद्धि कार्य से हिन्दुओ की सख्या बढ़ी, यह कार्य गैर आर्यसमाजी नहीं कर सकता। आर्यसमाजी प० रामप्रसाद बिस्मिल का चेला मुसलमान अशफाक उल्ला खाँ हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर देशहित मे चढ़ गया। अशफाक उल्ला खाँ को आखिर किसने बनाया ?

'आर्यसमाज' सगठित होकर विश्व कल्याणार्थ जो सारभूत कार्य कर सकता है, वह अन्य सस्था नहीं कर सकती। आर्यसमाज वैदिक धर्म पर आधारित 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' (विश्व को आर्य बनाये) के उद्घोष से परिपूर्ण है। वस्तुत श्रेष्ठता का प्रसार ही वैदिक धर्म है, जिस पर विश्व शांति का महान् स्वप्न आकृति धारण कर सकता है।

★

रावबहादुर गोपालराव हरिदेशमुख

[पृष्ठ १० का शेष]

ने कहा—"समाज के कार्य के लिये अपने करने योग्य कार्य मे उदासीनता दिखाना मेरे मत मे अच्छा नहीं। सासारिक घटनाओं से ऐसी बातचीत मे दुख मानना उपयोगी नहीं, तथा उसी प्रकार यदि कोई उत्कृष्ट कार्य सिद्धि हुई हो तो उससे हर्षित होना उचित नहीं। मैंने अपनी ओर से अपने बच्चो को विद्यादान देने में कोई कमी नहीं रक्खी। फिर उनका अपना-अपना भाग्य उनके साथ है। यह ससार सुख दुख मय है। इसलिये उनके विषय मे सुख दुख मानने का कोई कारण नहीं है।"

लोकहितवादी के तीन पुत्रो तथा दो विवाहित पुत्रियो का निधन भी उनके सामने हो गया। उनकी पत्नी सौ० गोपिकबाई १८८५ ई० में परलोक वासिनी हुई। १८९३ में लोकहितवादी का निधन हो गया। डा० निर्मलकुमार फडकुले ने मराठी में "लोकहितवादी काल आणि कर्तृत्व" ग्रन्थ लिखकर देशमुख के युग तथा कृतित्व का मूल्यांकन किया है।

लखनऊ के प्रसिद्ध आर्य नेता का निधन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एव नगर आर्य समाज लखनऊ के प्रधान श्री गिरिराज शरण जी का ८० वर्ष की आयु में १०-९-८६ अपरान्ह १ बजे दीर्घ अस्वस्थता के पश्चात् निधन हो गया।

११-९-८६ पूर्वान्ह ११ बजे भैसा कुण्ड श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार उनका दाह सस्कार सर्वश्री मेधावी जी शास्त्री, प० रामचरित्र जी, प० ओजोमित्र जी, प० गोपाल शरण, महाशय कुन्दनलाल व श्री चन्द्रभूषण आर्य द्वारा सम्पन्न कराया गया।

१५-९-८६ अपरान्ह उनके निवास वेदभवन बाग पक्का राजाबाजार में शांति यज्ञ किया गया जिसमें सभी उपस्थित विद्वानो और दयानन्द बाल सदन सहित जनपद का सभी आर्य समाजो को दान दिया गया।

स्वर्गीय गिरिराज शरण जी कई वर्ष लखनऊ के मेयर रहे। आर्य मित्र परिवार उनके निधन पर अपनी सवेदना प्रकट करता है। प्रभु दिवगत आत्मा को शांति तथा उनके वियोग में सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

वैवाहिक आवश्यकता

कायस्थ सक्सेना साढ़े २३ वर्ष, ५ फुट २ इंच गोरी स्वस्थ, सुन्दर आकर्षक व्यक्तित्व एम० ए० कढ़ाई बुनाई टाइपिंग में निपुण कन्या के लिये आर्य परिवार का निरामिष भोजीवर, विवाह उत्तम तथा २७ वर्ष स्वस्थ, गोरे, केन्द्रीय सरकारी सेवारत १२००) मासिक वेतनभोगी, पाँच लाख की चल-अचल सम्पत्ति का मालिक विधुर के लिये शाकाहारी वधू, गुरुकुल स्नातक व स्नातिका को वरीयता, दहेज बन्धन नहीं। सम्पर्क करें—

श्री जगदीश्वर दयाल वैद्य

सैदपुर [बदायूं]

आर्य जगत

झड़ोद।कलां में आर्य समाज की स्थापना

दिनांक २-१०-८६ को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्वाधान मे श्री प० आशानन्द जी महोपदेशक द्वारा सी० आर० पी० एफ० कैम्प, झड़ोदाकलां नई दिल्ली मे आर्य समाज की स्थापना की गई। जिसमे निम्नलिखित अधिकारी चुने गये –

श्री आर० के० माथुर–प्रधान, श्री अचल सिंह–उप प्रधान, श्री विमल यश–मन्त्री, श्री यशपाल शर्मा–कोषाध्यक्ष, श्री भूदत्त कौशिक–पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री रतनलाल–लेखा निरीक्षक।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य समाजो को निर्देश

समस्त आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि पंजाब शरणार्थी समस्या के सहायतार्थ जो आर्य जन तथा आर्य समाजें धन दें, वह सीधे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर चैक, बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से भेजें।

क्योकि कई समाजो से इस प्रकार की शिकायतें आ रही हैं कि कुछ व्यक्ति पंजाब समस्या के नाम पर झूठ बोल कर धन माग कर ले रहे हैं। उनसे सावधान रह कर ऐसे तत्वो को सभा के नाम पर धन न दें और सभा को भी सूचित करें।

–स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२

—आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का ६४वा वार्षिकोत्सव आर्य समाज के प्रागण मे रविवार २१ सितबर रविवार २८ सितबर १९८६ तक समारोह सम्पन्न हुआ। जिसमे प्रसिद्ध आर्य विद्वान प० मदनमोहन विद्यासागर के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेदीय पारायण महायज्ञ श्रद्धा भक्ति के साथ सम्पन्न हुआ। इस समारोह मे आर्य जगत के प्रमुख विद्वान् एव वक्ता सम्मिलित हुए।

–बीकानेर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग का वेद प्रचार दिनाक २८ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक स्वर्णकार पचायत भवन मे सम्पन्न हुआ। दिल्ली से स्वामी जगदीश्वरा नन्द जी सरस्वती और जयपुर से आर्य समाज प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के भजनोपदेशक श्री सत्यपाल जी सरल ने भाग लिया।

–"साप्ताहिक आर्य मित्र के लखनऊ प्रतिनिधि श्री ज्ञानकृष्ण के नवजात द्वितीय पौत्र का नामकरण संस्कार वैदिक प्रचार केन्द्र लाजपत नगर में शुक्रवार १०-१०-८६ को सायकाल प० इन्द्रदेव जी शास्त्री के पौरोहित्य में सपन्न हुआ। नव शिशु का नाम अनुराग रक्खा गया।"

सावित्री देवी आर्या

नाथ यह वर दो

दयालू हे दयामय तुम पिता हम पर दया कर दो
शरण मे ही रहू तेरी पिता मुझको महीवर दो
न जाऊँ मैं कभी भी दूर तेरे पथ से ऐ स्वामिन्
सदा हो भक्ति मे तेरी लगू यह ज्ञान तुम भर दो
रहू नित्यदिन भजन मे लीन नित्य कर्त्तव्य सब करते
पदम पावन पिता ऐसी परम शक्ति मुझे दे दो।
न ईर्ष्या द्वेष कुछ पनपें मेरे मन मे मेरे भगवन्
काम अरु क्रोध आदिक से मुझे तुम दूर अब कर दो
रहें सब बन्धु बान्धव प्रेम से हिलमिल सदा भगवन्
न कोई दूर तुम से हो प्रभो यह ज्ञान तुम भर दो
जगत मे कोई भी मेरा न शत्रु हो मेरे स्वामिन्
सदा ही देश सेवा मे लगू तुम शक्ति यह भर दो
सदा ही वेद वाणी को सुनू बोलू सदा ही मैं
कभी जाऊँ न मै विपरीत उसके नाथ यह वर दो
सदा ही ओउम् को ध्याऊँ सदा ही ओ३म् गाऊँ मै
पर उपकार मे ही मां! रहूँ ऐसी कृपा कर दो।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

सवेदना

–दु खद समाचार है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के संस्थापक श्री मगनलाल भगवान जी जोशी का निधन दिनांक २०-८-८६ को बडोदरा मे हो गया। श्री जोशी जी ८७ वर्ष के थे। स्व० श्री जोशी जी सस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे उन्होने सामवेद का गुजराती भाषा मे भाषान्तर किया तथा ट्रस्ट की अप्रतिम सेवायें की। समाज द्वारा एक बृहद शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमे श्री भगवान जी भाई परमार तथा श्री हसमुख भाई परमार एव अन्य प्रियजनो ने दिवगत श्री जोशी जी को अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की साथ ही उनके चिर शाति तथा पारिवारिक जनो के असीम धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

–धर्मवीर आर्य आचार्य

–आर्य समाज बदायू एव क्षेत्र के कुशल कर्मठ आर्य समाजी श्री वैद्य राजाराम जिज्ञासु बदायू के पूज्य पिता श्री छोटेलाल जी का दिनाक २६-९-८६ को निधन हो गया वे ८५ वर्ष के थे। उनका अतिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से कछला गगा तट पर किया गया। परमात्मा मृतक आत्मा को शाति एव शोकातुर परिवार को धैर्य प्रदान करे।

–रामचन्द्र गुप्त मन्त्री आर्य समाज
बदायू

–आर्य समाज पीलीभीत की तदर्थ समिति के सदस्य श्री डा० ज्ञानेन्द्र प्रकाश के पूज्य पितामह श्री छोटेलाल सर्राफ बदायू का निधन दिनाक २६-९-८६ को प्रात ४ बजे हो गया।

आर्य समाज पीलीभीत शोकाकुल परिवार के प्रति अपनी हार्दिक सवेदना व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवगत की आत्मा को शाति एव सद्गति तथा पारिवारिक जनो को दुख सहन करने की क्षमता एव धैर्य प्रदान करें।

–ओ३मप्रकाश आर्य

पुस्तक-परिचय

आर्यसमाज क्या है ?

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु, आर्योपदेशक आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

प्रकाशक—आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी मुरादाबाद-२४४०३२

श्री अमृतलाल कटारिया की माता श्रीमती राजदेवी की पुण्य स्मृति मे ३२ पृष्ठीय यह नि शुल्क लघु पुस्तिका श्री शकरलाल कटारिया ने निजी व्यय से प्रचारार्थ प्रकाशित की है।

विद्वान लेखक ने 'आर्यसमाज क्या है ?' 'आर्य' शब्द का क्या अर्थ है ? श्रेष्ठ व्यक्तियो का (जिनके गुण कर्म और स्वभाव श्रेष्ठ है) समूह ही आर्यसमाज है। इसका विवेचन बडी विद्वत्ता पूर्ण किया है। आर्य समाज के क्या उद्देश्य है, क्या मान्यताए है, क्या सिद्धान्त है, कैसी शिक्षाए हैं और अन्य महान पुरुषो का इस समाज के बारे मे क्या मत है, इन सब का सारगर्भित विवरण है। अन्त मे डा० सूर्यदेव शर्मा की एक भव्य कविता जो उन्होने आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के अवसर पर लिखी थी, उसे प्रकाशित कर इस पुस्तिका की भव्यता मे चार चाद लगा दिये गये हैं। पुस्तिका नितान्त उपयोगी और पठनीय है। इसके पठन से आर्यसमाज के विषय मे विरोधियो द्वारा फैलाई गई सकल भ्रान्तियो का समुचित निवारण किया जा सकता है। लेखक और प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

★

भारतीय सेक्युलरवाद पर पुर्नविचार

लेखक—डा० हर्ष नारायण

प्रकाशक—श्री विजयपाल सिंह, अवकाश प्राप्त कालेज-प्राध्यापक, बाग मक्का, राजा बाजार, लखनऊ।

मूल्य— १-५०, पृष्ठ सख्या-१७

मानव प्रकाश माला का यह प्रथम पुष्प है। 'सेक्युलरिज्म' क्या है? 'धर्म-निरपेक्षता' अथवा 'सर्व धर्म समभाव'। बडी गम्भीरता से इस विषय पर विचार करके यह पुस्तिका लिखी गई है। सेक्युलरवाद के क्या दुष्परिणाम हमारे सम्मुख आये है और भावी आशकाओ को ध्यान मे रखते हुए, इस पर पुर्नविचार की ठोस युक्तियां दी गई है। राष्ट्र के व्यक्तित्व का विकास, राष्ट्रत्व की प्रतिष्ठा और विश्व को ज्योतिर्दान देना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है।

—'बसन्त'

आर्यसमाज बम्बई का निर्वाचन

आर्यसमाज बम्बई का १११वा वार्षिक सर्वसाधारण सभा दिनाक २८-९-१९८६ को सम्पन्न हुई जिसमे आगामी वर्ष के लिये श्री जगन प्रसाद गौतम प्रधान, श्री करसनदास राणा मन्त्री तथा श्री राजेन्द्रनाथ पाडेय कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

—आर्यसमाज साकेत का वेद प्रचार सप्ताह २८ सितम्बर ८६ से ४ अक्टूबर ८६ तक बडे उत्साह के साथ मनाया गया। जिसमे यज्ञ भजन एव प्रवचन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

इस उत्सव मे आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री प० शिवकुमार शास्त्री तथा अन्य विद्वतजन सम्मिलित हुए त० ४ अक्टूबर के विशाल महिला सम्मेलन मे दयानन्द सस्थान देहली की अध्यक्षा श्रीमती पडिता राकेश रानी तथा अन्य विदुषी महिलाओ ने नारी उत्थान पर सारगर्भित प्रवचन दिये। —प्रतापचन्द मन्त्री

—चम्पारण जिला सभा के तत्वावधान मे प्रत्येक वर्ष की भाति इस वर्ष भी १ सितम्बर से ३० सितम्बर ८६ तक लगातार मासिक वेद प्रचार सप्ताह विभिन्न क्षेत्रो मे सम्पन्न हुआ। इस प्रचार कार्य मे प० रामकृष्ण शास्त्री (प० भारत भूषण जी (हरिद्वार) प० रामचन्द्र शान्तिपुरी (नेपाल), ध्रुवप्रसाद (चम्पारण), ठा०सोहन लाल पथिक (दिल्ली), ठा० विश्वर्मासिंह (मिर्जापुर) आदि का व्यापक योगदान रहा।

वेदो रक्षति रक्षितः

(पृष्ठ ५ का शेष)

आशा लगा रहे हैं। आत्मपरायण को वेद मे साद्यन्त आत्मतत्त्व का सांगोपाग विवेचन दिखाई पडता है। इस प्रकार, वेद एक ओर भूत-भौतिक ब्रह्माण्ड को, इस लोक को स्पर्श करते हैं तो दूसरी ओर चेतन तत्त्व को, पर लोक को, पिन्ड को छूते है। वेद अणोर् अणीयान् हैं, तो महतो महीयान् भी हैं। वेद मनुष्य को प्राप्त सर्वश्रेष्ठ पूंजी है, "न भूतो न भविष्यति"।

वेद का इतना महिमाभाव क्यो हैं ? पोथिया तो ढेरों हैं। किसी भी पोथी की शाश्वत शिक्षाओं का आचरण मनुष्य के लिए पर्याप्त है, फिर वेद का ही आग्रह क्यों ? इसका कुछ समाधान तो ऊपर हो चुका है कि वेद गगोत्री का, उत्सप्रसूत, पावनातिपावन जल है जब कि अन्य पोथियो मे देश-काल का मिश्रण उसे प्रदूषण युक्त जल बनाए हुए है। "काफिर" शब्द सुनते ही राग-द्वेष के कीट मस्तिष्क को उत्तेजित करने लगते हैं पर जब उसके स्थान पर वृत्र, पणि या कोई असुर-दस्यु-रक्ष पिशाचवाची पद रख दिया जाए तो बात सहज ग्राह्य हो जाती है कि पणि या काफिर को तो जीने का हक है ही नहीं, उसे तो देखते ही मार देना है, पणिक जहि,। लोक और परलोक को जितनी परिपूर्णता से वेद समेटता है अन्य कोई पोथी नही समेटती। अत वेदाध्येता के व्यक्तित्व का जितना परिपूर्ण विकास हो सकता है उतना अन्य पोथियो द्वारा अशक्य है।

और यहीं वेद का वेदत्व अथवा महिमाभाव मुखर होता है। पोथी का "वेद" नाम तो, शब्द का गौण प्रयोग है। वस्तुत "वेद" शब्द का अर्थ है ज्ञान। वेद नामक ज्ञान विशेष का भोजन होने से पोथी को भी "वेद" कह दिया गया है। स्पष्ट है कि वेद का वेदत्व वेद नामक ज्ञान है। वेदना, सवेदना, अनुवेदन, जैसे शब्दो मे भी "वेद" अश मौजूद है। "वेद" "देव" का विलोम है। वेद से देव बना जाता है। देव सत्य हैं, जबकि मनुष्य अन्-ऋत हैं। ऋत को ग्रहण करके उसे सत्य मे परिणत करना देवो की रहनी है, जैसे, पृथ्वी सूर्य से ताप-प्रकाश-ऊर्जारूप ऋत को ग्रहण कर शस्यादि-सम्पत्तिरूप सत्य को जन्म देती है। पर, जो ऋत ऊर्जा को ग्रहण ही नही कर रहा वह उसे अपने उपयोगार्थ सत्य मे परिणत नही कर सकता। ऋत परोक्ष है, सत्य प्रत्यक्ष है। ऋत सूक्ष्म है, सत्य उसका स्थूल रूपान्तर है। यह सब देवकृत्य है। अत मनुष्य को देव बनने के लिए अपनी ऋत-पराङ्मुखता को त्याग कर ऋत का सत्य मे परिपाक करना सीखना चाहिए।

यह परिपाक तीन रूप ग्रहण करता है, ऋक् यजु, साम। ये ही ... न वेद हैं, ये ही देवो के तीन सत्य हैं। ऋक्-हवि, यजु-बल, साम-ओज। हवि, अर्थात्, भूत-भौतिक सघात वा देवान्न, अथवा पिन्ड की दृष्टि से शरीर। बल, अर्थात् ऊर्जा वा प्राणसघात। ओज, अर्थात्, मन शक्ति। अन्न-प्राण-मन, ये आत्मा के तीन कोश वा आवरण हैं। इनसे आत्मा अभिव्यक्त होता है और फलत मनुष्य का व्यक्तित्व बनता है। पर मनुष्य की केवल व्यक्त हैसियत नही है। वह "और भी कुछ" है। बस इन तीनो का समन्वित सघात है जहाँ ये तीनों न केवल एकमेक हो कर एक इकाई बन जाते हैं वरन् जहाँ अव्यक्त आत्मा का नित्यानुशासन चलता है। इस स्थिति को व्यक्तित्व-ज्ञान से विशिष्ट, विपरीत और विविध ज्ञान समझना चाहिए। अत इस कोश वा आवरण को विज्ञान कहा जाता है। यह अथर्व नामक वेद है क्योंकि विज्ञान की धारा यहाँ से आगे व्यक्त स्तर पर उतरती है (अथ-।-अर्वाक्)। पर अपने स्वरूप से यह अ-।-थर्व, अकप, स्थिर, ध्रुव स्वर-ज्योति है। यह स्तर देवो की अ-योध्या पुरी है जहाँ आत्मा से चिपटा यक्ष-महद् ब्रह्म बैठा हुआ है जिसे जानकर मनुष्य "ब्रह्मविद्" कहाता है।

वैसे तो प्राणिमात्र को शरीर-प्राण-मन रूप तीन वेद सदा प्राप्त हैं। पर उनके ये वेद वृत्रसतप्त अशुद्ध इन्द्र के कुप्रभाव मे हैं। ऐसा प्राणी या तो प्रकृति-निर्धारित सीमा मे ही शाश्वत काल तक अपना जीवन बिताता रहता है, अथवा वह मानुषी लौकिक बुद्धि कौशल पा कर भौतिक उन्नति और अहतृप्ति तक ही अपनी स्वरूप सीमा और अभीप्सा मान बैठता है। पशु-पक्षी, कीट-पतग, अभ्युदयपरायण मनुष्य, ये सब अपने त्रिवेदो को राग-द्वेष से विशक्त किए हुए हैं पर मनुष्य चाहे तो अपने सकल्प-बल से अपने वास्तविक "मानव", स्वरूप को पहचान जान प्राप्त कर सकता है। यह सामर्थ्य ही उसे अन्य पशुओं से भिन्न, "कुछ विशेष" "पुरुष पशु" बनाता है। हाथ नही जानता कि मै हाथ हू, गौ नही जानती कि मै गौ हू पर मनुष्य चाहे तो जान सकता है कि मै अजर, अमर, चेतन आत्मा हू, शरीर नही। जैसे-जैसे यह बोध उभरता है मनुष्य ऋषि (साक्षी द्रष्टा) होता है और उसके त्रिवेद (शरीर-प्राण-मन) शुद्ध होने लगते हैं क्योंकि इन त्रिवेदो का मूल उत्स जो अथर्व, विज्ञान-लोक वा महद्-बुद्धितत्व है वह "शुद्ध इन्द्र" बनने लगता है। इन्द्र जन्म के साथ अन्य सारे देव भी प्रकट हो जाते हैं और त्रिकोशगत त्रिवेद और उनके त्रिलोक एक झपाटे मे, मानो विद्युत कौंध जाए, स्व से "स्व" हो जाते हैं। और सारे देव प्रकट हुए नहीं कि विज्ञानमय कोश के स्तर पर आत्म-यजमान यज्ञकर्म मे प्रवृत्त हो जाता है। कर्म तो पहले भी अशुद्ध इन्द्र करता था। पर, वे कर्म उसे फलबद्ध करते थे। वह यज्ञ का स्वाग भरता भी था तो असुर उसका ध्वस कर देते थे। पर, अब इसका यज्ञ लक्ष्य को फतह कर लेने वाला (अध्व-र) बन जाता है जिसका अब असुर घात नहीं कर सकते (अ-ध्वर)।

तो नित्य-आत्मानुशासित बुद्धि और नित्य-बुद्धि नियन्त्रित मन से युक्त शरीर-प्राण वाले व्यक्तित्व का विकास करना ही वेद का वेदत्व है, वेद का फल है। तभी वेदाध्ययन, वेद का "स्व" अध्ययन स-फल है। अपने ज्ञान-क्रिया-भावनारूप ऋग्यजु सामों को अध्ययन का विषय बना कर स्व को स्व तक उजागर करके अपने पिण्डगत राष्ट्र को इन्द्र समाट् और वरुण राजा, सोम राजा द्वारा दीप्तिमान् करना है। जो इस देवयान पथ पर चले उसके लिए वेद है, उसके लिए मनुष्य जन्म है, उसके लिए धर्म-मोक्ष हैं, अन्यथा मनुष्य पुच्छविषाणहीन पशु तो ही है- अर्थ-कामपरायण।

तो जब दयानन्द वेद की खातिर एक आर्यो के समाज की कल्पना करते हैं तो उनकी कल्पना के आर्यों का समाज वेद मे ही सस्थित (वेद सस्थान) हो सकता है। जहाँ वेद नहीं, वहाँ न आर्य है, न दयानन्द है। वह आर्य समाज नहीं जहाँ सस्कृत और वेद नहीं। जहाँ सस्कृत और वेद हैं वहा ही वास्तविक आर्यसमाज है, नाम चाहे कुछ भी हो। पत्तो को धोने से वृक्ष को पोषण नही मिलता। धर्म वृक्ष की जड वेद है। धर्म की रक्षा वेद की रक्षा है। वेद नही तो धर्म नही। धर्म पगु है, बलवान् कधे उसे ढोते हैं। वेद भी पगु है, बलवान् कधों पर ही वह विराजता है।

गाधी के निधन के बाद गाधी चिन्तन की उपेक्षा देख कर विनोबा ने वेदना और व्यग्य मे कहा था कि हम लोग (गाधीवादी) गांधी जी की विधवाएं हैं। वेद और दयानन्द की उपेक्षा के माहौल मे ऐसा लगता है कि मानो, हम लोग (वेदाध्यायी, वेदानुरागी) भी वेद और दयानद की विधवायें हो। दयानन्द के नाम पर केवल सस्कृत, वेद और आर्यत्व जैसी दिव्य उदात्त बातें शोभा देती हैं। सात समुद्र पार की आग्लीभाव' को सनाथ करने को तो और ढेरो लालायित हैं। समाजसुधार करने को उतवाले और बहुत हैं। पर, वेद का काम तो आर्यत्व का महत्व जानने वालों को ही करना है। देर आयद दुरुस्त आयद ही सही। सर्व-धर्मान् परित्यज्य, वेद ही की शरण जाने मे आर्य समाज का गौरव है, यही आर्य-मर्यादा है। प्रत्येक आर्य समाज को सस्कृत-वेद की पाठशाला बन जाना चाहिए। काश, इस धरती पर ऐसी कुछ तो आर्य समाजें होती।

★

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
रजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
कार्तिक कृष्ण ३०
रविवार, २ नवम्बर १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

अमृत वर्षा

पाखण्ड खण्डन

देखो ! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है । उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है । जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा । और इस भागवत वाले ने अनुचित मन माने दोष लगाये है । दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, पर स्त्रियो से रास मण्डल, क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी मे लगाये है इसको पढ-पढा सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते है । जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी सदृश महात्माओ की झूठी निन्दा क्यो कर होती ? और रास मण्डल व रामलीला के अन्त मे सीताराम व राधाकृष्ण से भीख मगवाते हैं । जहा मेला ठेला होता है वहा छोकरे पर मुकुट धर कन्हैया बना मार्ग मे बैठाकर भीख मगवाते हैं, इत्यादि बातो को आप विचार लीजिये कि कितने बडे शोक की बात है । भला कहो तो सीतारा आदि ऐसे दरिद्र और भिक्षुक थे ? यह उनका उपहास और निन्दा नही तो क्या है ? इससे बडी अपने माननीय पुरुषो की निन्दा होती है । भला जिस समय ये विद्यमान थे उस समय सीता, रुक्मिणी, लक्ष्मी और पार्वती को सडक पर व किसी मकान मे खडी कर पुजारी कहते कि आओ इनका दर्शन करो और कुछ भेंट पूजा धरो, तो सीता रामादि इन मूर्खो के कहने से ऐसा काम कभी न करते और न करने देते । जो कोई ऐसा उपहास उनका करता है उसको बिना दण्ड दिये कभी न छोड़ते ।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

(पृठ ७ का शेष)

धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करना चाहिये ।' शिक्षा का अवसर सबको (ऋषि दयानन्द के शब्दो मे राजकुमार व दरिद्र की सन्तान को) समान रूप से उपलब्ध होना चाहिये । इस निमित्त किसी भी रूप मे शिक्षार्थी से पैसा मागना अनुचित है । यदि उचित साधनो से सस्था नही चलाई जा सकती तो बन्द कर देनी चाहिये ।

मेरा निश्चित मत है कि ऐसी सस्थाओ के नाम के साथ जिनमे ऋषि दयानन्द की मान्यताओ के विरुद्ध—

१—शिक्षा का माध्यम अग्रेजी है या प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषा मे नहीं दी जाती है ।

२—सहशिक्षा प्रचलित है ।

३—दरिद्र की सन्तान नही पढ सकती है ।

४—किसी भी रूप मे कैपिटेशन फीस ली जाती है ।

दयानन्द या हसराज शब्द का प्रयोग नहीं होना चाहिये ।



भगवन् ! प्रणतय ।

'आर्य मित्र' परिवर्तित रूपे प्रभावकारि वर्तते, भवतो लेखं तत् पत्र सुष्ठु ६ [illegible] अध्ययन भवते ।

अकिचन

अभय

श्री विक्रमादित्य 'कुक्कुल'
सम्पादक—'आर्यमित्र'

(अभयदेव शर्मा)
एम ए (हिन्दी सस्कृत) पी-एच डी (सस्कृत)
अध्यक्ष वेद सस्थान, अजमेर

शुद्धि आन्दोलन

दिनाक २३—९—८६ को गाव गोबिन्दपुर जि० झुनझुन राजस्थान मे यज्ञ हवन किया गया और सेवानन्द महामन्त्री हिन्दू शुद्धि सरक्षणाय समिति हरियाण के प्रयत्नो से यवन नटो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया और यज्ञ मे आहुतिया दिलाई गयीं कि हम मास, मदिरा आदि का त्याग करके आर्य सभ्यता को अपनायेंगे और उनके हाथ से प्रीतिभोज वितरण करवाया गया और बराबरी मे इज्जत दिलाई गई । इसमे भाग लेने वाले व्यक्ति मल्लाह राम, ब्रजलाल, ,मागेराम गाव भालोट जिला रोहतक के रहने वाले के सहयोग से ये शुद्धि की गई ।

पुराना नाम	नया नाम	पुराना नाम	नया नाम
गुलमा	जगलाल	बन्नू	बजरगलाल
समाना	सुन्दरल ल	छैला	छैलू राम
कबूला	कबूलसिह		

ओमप्रकाश प्रधान हिन्दू शुद्धि सरक्षणाय समिति हरियाणा
समालखा, जि० करनाल

—दिनाक ११—१०—८६ से २१—१०—८६ तक आर्यसमाज जनकपुर बरेली मे वेद प्रचार बडे हर्ष के साथ सम्पन्न हुआ । प्रतिदिन प्रात काल हवन स्वस्ति याग तथा वेद पाठ श्री सीताराम वेद प्रचारक व द्वारिका प्रसाद प्रचारक द्वारा भजन तथा वेद कथा हुई ।

दिनाक २१—१०—८६ को दाताराम को हिन्दू से आर्य बनाया गया उनके निवास स्थान पर हवन कराकर उनको यज्ञोपवीत धारण कराया गया तथा वैदिक धर्म की शिक्षा दी गई ।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप से नव्वरवाल प्रिन्टिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ओ३म्
आर्य मित्र
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

कार्तिक शुक्ल १४, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक १६ नवम्बर १९८६

प्रभु की अमृत वाणी—

आर्यों का धर्म

अत्याचारियों को कुचलना . राक्षसो का निराकरण
मूढ़ता का निवारण . पापियो का भस्मीकरण

परा शृणीहि तपसा यातुधानान् पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि ।
परार्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि परासुतृप शोशुचत शृणीहि ।।

[ऋ० १०-८७-१४ – अ० ८-३-१३]

आर्यों का जीवन सदैव तपस्या से युक्त रहा है । आर्य जन न व्यसनी होते हैं और न ही विलासी । वे सदैव पुरुषार्थी होते हैं । तप से निरन्तर तपते हुए वे जनहित मे रत रहते है । जनों को अत्याचारो, अनाचारो, कदाचारो और दुराचारो से बचाने के लिए आर्यों ने अपने जीवनो का धर्म की पावन बलिवेदी पर बलिदान किया है । अपने को मानव धर्मार्थ स्वाहुत करने की सकल प्रेरणाए उन्हे ने प्रभु के दिव्य ज्ञान 'वेद' से ली हैं । वेद का यह मन्त्र वेदधर्मियो को सुप्रेरित करते हुए, प्रचेतित करते हुए कहता है–

(अग्ने) हे अग्रणी ! जननायक ! दिव्य ज्योति से देदीप्यमान, श्रेष्ठ मानव [आर्य]

[१] (तपसा यातुधातान् परा–शृणीहि) तप से अत्याचारियो को कुचल कर रख दे ।

[२] (हरसा रक्ष परा–शृणीहि) असुरो को, आसुरी वृत्ति वाले राक्षसो को अपनी हरण शक्ति से, सशक्त सामर्थ्य से दूर धकेल दे ।

[३] (अर्चिषा मूर–देवान् परा–शृणीहि) जो मूढ हैं, अज्ञानी हैं और अपनी मूढ़ता और अज्ञान को देकर समाज, राष्ट्र और विश्व का अहित करते हैं, उन्हें [ज्ञान के] ताप से छिन्न-भिन्न कर दे अर्थात् अपनी बुद्धिमत्ता और ज्ञान से श्रेष्ठता का प्रदर्शन कर, उनकी चेष्टाओ को निर्मूल कर दे ।

[४] (शोशुचन असु तृप परा–शृणीहि) जो पापात्मा हैं, भोगो और विलासो मे सतत रत है, उन्हें अपने तेजोमयी अग्नि मे धधका कर, उनके पापो को भस्मीभूत कर दे ।

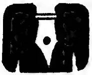
जिन्हें विश्व का आर्यकरण करना है, वे केवल थोथे जयघोष नहीं लगाते । जय विजय सम्पादन कर जब वे जयनाद करते हैं तो उनके जयनाद सजीव होते हैं । निर्जीव जयघोषो से केवल क्षण भर के लिए अस्थायी रूप से किंचित उत्साह का सचार होता है । विजय प्राप्त का एकमेव साधन है तपस्या । आर्यों ने घोर तप के आधार पर प्रभु के दिव्य ज्ञान से आत्म शक्ति प्राप्त की है । उस आत्मशक्ति से ही उन्होंने अत्याचारियो को कुचला है, असुरो के आक्रमणो को रोका है, उन्हें पीछे धकेला है, मूढ़ताओ का हनन किया है और पापियों के पापो को दूर करके अपने आर्य जीवन के आदर्श से विश्व का आर्यकरण किया है ।

क्या आर्यजन वेद के इस आदेश को शिरोधार्य कर अपने आर्यत्व का सजीव परिचय देंगे ?

हम आर्य हैं, अग्रणी होना, श्रेष्ठ बनना हमारा धर्म ।
अत्याचारियो को कुचलना, राक्षसो को मारना हमारा कर्म ।।
तपस्या मे तपना सतत, शुद्ध बुद्ध होना जीवन का मर्म ।
अजर अमर है आत्म तत्व, भस्म होता सदैव यह चर्म ।।
होती प्रज्वलित ज्ञान ज्योति, नष्ट होते सकल कुकर्म ।
आर्यकरण करना 'वसन्त' है लक्ष्य तेरा परम ।।

—'वसन्त'

सदस्यता शुल्क	प्रधान सम्पादक–	
आजीवन सदस्य २५१)	मनमोहन तिवारी	वर्ष ८६
वार्षिक २०)	सम्पादक मण्डल–	अङ्क ४४
छमाही १०)	विक्रमादित्य 'वसन्त' 'वेद वारिधि' आचार्य रमेशचन्द्र एम ए. आचार्य वेदव्रत अवस्थी	
विदेश मे ७ पौंड		
एक प्रति ४५ पैसे		



सम्पादकीय

नक्षत्र—रविवार १६ नवम्बर १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि सवत् १९७२९४९०८७

सुवीरा भव

आज भारत मे प्रतिदिन जीवित पुत्रवधुओ का दाह कर्म हो रहा है। प्रत्येक दिन समाचार पत्रो मे इन घटनाओ का उल्लेख होता है। जिस विवाहिता का वध किया जाता है, उसके लिए उसके पति कुल के सब सदस्य एक ही घोषणा करते है कि वधू ने स्वेच्छा से अपनी शारीरिक हत्या कर ली। इस देहाघात को वे अज्ञानवश आत्महत्या की सज्ञा देते है। शरीरान्त चाहे मिट्टी का तेल डाल कर जलाने से हुआ हो, चाहे विषपान से और चाहे गले मे फदा डाल कर, पर यह कटु सत्य है कि मरती पुत्र वधु ही है। न सास मरती है, न ही ननद और न ही जेठानी। पुत्र वधु मरती नहीं वरन् मारी जाती है और उसका प्रमुख कारण है 'दहेज का दानव' जो किसी भी सरकारी कानून से न तो अभी तक मरा है और न ही भविष्य मे कभी मरेगा। उसका हनन तो तभी होगा जब विवाह वेदानुकूल किए जाएगे।

आज तो प्रचलित प्रणाली है उसके आधार पर मूल रूप मे कन्या के माता-पिता द्वारा अयोग्य से अयोग्यतम वरो का चुनाव है। विवाह आठ प्रकार के होते हैं। (१) ब्राह्म विवाह—कन्या के योग्य सुशील विद्वान पुरुष, जिसका वरण कन्या प्रसन्नता से करे (२) दैव विवाह—विस्तृत यज्ञ जिसमे बडे-बडे विद्वान सम्मिलित हो, उनमे से उत्तम कर्म करने वाले देव पुरुष, जिसका वरण कन्या पति रूप मे करे (३) आर्ष विवाह—आर्यत्व से पूर्ण पुरुष और कन्या, दोनो की प्रसन्नता से पाणि ग्रहण होना और (४) प्राजापत्य विवाह—कन्या और वर का सम्बन्ध दोनो पक्षो की ओर से सुनिश्चित करके, उनका यज्ञ शाला मे विधिवत पाणिग्रहण कराना— ये चार प्रकार के विवाह उत्तम विवाह कहलाते हैं।

(५) असुर विवाह—वर की जाति मे कन्या को धन आदि देकर होम आदि विधि से सस्कार करना (६) गान्धर्व विवाह—स्त्री और पुरुष का स्वेच्छा से एक दूसरे से बिना किसी धार्मिक विधान से युक्तिकरण करना (७) राक्षस विवाह— हनन, छेदन, कन्या के रक्षको का वध कर, उन्हें आहत करके रुदन करती, कापती, भयभीत कन्या का अपहरण करके बलात्कार करना (८) पिशाच विवाह—शयन करती हुई पागल, नशे मे उन्मत्त की हुई कन्या को एकान्त पा कर दूषित करना, नीच, महानीच, दुष्ट अतिदुष्ट कुकर्म।

आठ प्रकार के इन विवाहो मे ४ उत्तम और ४ नीच विवाह है। उत्तम विवाहो का तो एक प्रकार से लोप हो गया है। प्राजापत्य विवाह भी दहेज से युक्त आसुरी रूप हो गया है। कन्या का पिता दहेज तो देता है पर कन्या के लिए जिस वर का चुनाव करता है, उसके न तो गुण देखता है, न ही कर्म और न ही स्वभाव। इन तीनों को कन्या के गुण कर्म और स्वभाव से तुलना का तो प्रश्न ही नहीं उठता। वर का चुनाव होता है, उसके बाह्य वैभव को देख कर। उसकी कोठी, बैंक मे जमा राशि, आधुनिक मिथ्या आडम्बरो से आकर्षित हो कर भारी दहेज देकर उस गुणहीन स्वभाव से दुष्ट और कर्म से नराधम वर को अपनी गाय जैसी सीधी, सरल, सुशील, गुणवती सुन्दर कन्या का दान कर दिया जाता है। उनकी यह भूल या तो कन्या के मारण का कारण बनती है अथवा जीवन पर्यन्त उसे मार्मिक वेदनाए उठानी पड़ती हैं। मनु महाराज ने कन्याओ के माताओ और पिताओ को बहुत पहले सचेत करते हुए, यह व्यवस्था दी थी—

काम मारणात्तिष्ठेद् गृहे कन्यर्तुमत्यपि।
न चैवैना प्रयच्छेतु गुणहीनाय कर्हिचित् ॥

अर्थात्—चाहे जीवन पर्यन्त विवाह योग्य कन्या घर मे ही बैठी रहे परन्तु गुणहीन पुरुष को अपनी कन्या कभी न दे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने भी उक्त कथन का सर्वथा अनुमोदन किया है परन्तु जब उनके अनुयायी भी इस आदेश को न मान कर युग प्रवाह मे बह कर अनिष्ट को प्राप्त होते हैं तो अपार वेदना होती है।

जहाँ माता-पिता को चाहिए कि वे बाहरी ठाठ बाट को छोड कर वर के गुण कर्म स्वभाव को देखें और अपनी कन्या के साथ इनका मिलान करें, वहाँ आज की शिक्षित विदुषी कन्याओ के सम्मुख भी मैं यह सुझाव रखता हू कि वे माता-पिता के दबाव मे आकर कदापि ऐसे अयोग्य व्यक्तियो के गलो मे वर माला न डालें। 'स्वय वर' की प्रथा जो वेदानुकूल है, वह आज भी जीवित है और बिना वरमाला डाले, विवाह सम्पन्न नहीं हो सकता। अन्य मत मतान्तरो मे भी कन्या की सहमति के बिना यह सस्कार नहीं होता। किसी भी तेजविहीन, ओजहीन, व्यसनी, विलासी, कामुक, मूर्ख, मूढ़, अदानी और लोभी का उन्हें कदापि वरण नहीं करना चाहिए। वेद कहता है—

ब्रह्मचर्य्येण कन्या युवान विन्दते पतिम्।
अनड्वान्ब्रह्मचर्य्येणाश्वो घास जिगीर्षति ॥
(अथर्व० ११/५/१८)

अर्थात् ब्रह्मचारिणी कन्या ब्रह्मचर्य सम्पन्न युवा को ही पति रूप मे प्राप्त करे। पुरुष ब्रह्मचर्य की वृष सज्ञ शक्ति से युक्त हो। अश्व की भांति वह भक्ष्य पदार्थो का उपभोग करता हो, शाकाहारी हो।

यहाँ प्रसङ्ग वश इस बात का भी उल्लेख कर दें कि वेदानुसार 'भगेन सह कुमारी अगमेत' (अ० २/३६/१) पति को धन के साथ कुमारी के पास जाना है न कि धन दहेज लेकर उसको पत्नी के रूप मे प्राप्त करना है क्योकि विवाह के उपरांत अपनी स्त्री और सतति का भरण पोषण का उत्तरदायित्व पति पर आता है, कन्या के पितृ कुल पर नहीं अतएव धन के लोभी और धनविहीन पुरुष का वरण सर्वथा वेद विरुद्ध है।

विवाह की कामना करती हुई कन्याओ की कामनाओ को वेद इस प्रकार व्यक्त करता है। उशती कन्यला इमा पितृलोकात् पति यती। अव दीक्षामसृक्षत स्वाहा ॥ (अथर्व० १४/२/५२) अर्थात् विवाह की कामनिया ये दुलारी कन्याए पितृ गृह से जब पति को प्राप्त हों तो व्रत को धारण करें। यह कौन सा व्रत होना चाहिए ? पति कुल में सम्राज्ञी बनने का, वेद के शब्दों मे ही—

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्य सुषुवे वृषा।
एवात्व सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्त परेत्य ॥
(ऋ० १४/१/४३)

अर्थात् जैसे बलवान सागर नदियों पर साम्राज्य भली-भांति करता है, वैसे ही तू पति के घर जा कर महारानी हो।

सम्पादकीय

[पृष्ठ २ का शेष]

वेद ने नारी को घर की महारानी घोषित किया है। स्त्री का इतना सम्मान और अधिकार किसी अन्य मत और पन्थ मे नहीं है। वेद ने इस स्त्री के इस सम्राज्ञी स्वरूप को इतना उच्च किया है कि यहा तक उसे घोषित किया है–

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव ।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु ।।(ऋ० १०/८५/४६
सम्राज्ञधि श्वशुरेषु सम्राज्युत देवृषु ।
ननान्दु सम्राज्ञ्येधि सम्राज्युत श्वश्र्वा ।। (अ० १४/१/४४)

श्वसुर, सास, ननद देवर आदिको के साथ सुसराल मे जा कर जिसे साम्राज्ञी बन कर रहना है, उसे तो राजमहल मे आनन्द से रानी के अधिकार से रहना है, दासी भाव से हीन अवस्था से रह कर उत्पीडित नहीं होना है। पर यह तभी सभव है जब वह दृढता, वीरता, आत्म-विश्वास और सबलता का व्रत वेद के इन शब्दो मे ले–

अह केतुरह मूर्धाहमुग्रा विवाचनी ।
ममेदनु क्रतुं पति सेहानाया उपाचरेत ।। (ऋ० १०/१५९/२)

अर्थात् मै पताका के समान उच्च हू, मै मूर्धा हू, प्रधान हू, तेजस्विनी हू, उग्र बोलने वाली हू अतएव मेरा पति मुझ शत्रु विनाशिनी के साथ ज्ञान और कर्म के अनुकूल व्यवहार करे, उसके अनुकूल आचरण करे।

जीवित वधुओ की दहेज के कारण जो हत्याए हो रही है, उनकी रोकथाम के दो ही उपाय हैं जिन्हे आज तत्परता से क्रियान्वित करना होगा –

प्रथम–अयोग्य वरो का कन्या के माता-पिता के द्वारा चुनाव न करना और यदि वे ऐसा अनुचित प्रस्ताव करें तो विदुषी कन्याए उसे दृढता से ठुकरा दें। अपने को भोग विलास की सामग्री मानने वालो का तथा दहेज के लोभियो का कदापि वरण न करें।

द्वितीय–पति कुल मे जाकर अपनी दृढता का परिचय दें और सम्राज्ञी बन कर जीवन यापन करें। यदि लोभ वृत्ति के कारण, कम दहेज के निमित्त पतिकुल मे उत्पीडित करने का प्रयास कोई करे तो अबला बन कर उसे मत सहन करें वरन् सबला बन कर उसका प्रतिकार करें। आत्म रक्षा धर्म है और उसके पालन करने मे यदि किसी प्राण घातक के प्राण जाते है तो उसकी कोई चिन्ता न करें क्योकि यह आत्म रक्षा अपराध नहीं है। आत्म विश्वास, धैर्य साहस और बुद्धिमत्ता से सकल कुप्रयासो को विफल कर वीरागना होने का परिचय दें।

–'वसन्त'

पँजाब का प्रशासन सेना को सौंपा जाए

प्रतिदिन समाचार पत्रो मे प्रकाशित समाचारो से यह सुस्पष्ट है कि पजाब मे आतकवाद का अब भी बोल बाला है। आतकवादी निरीह नागरिको की प्रतिदिन हत्या कर रहे हैं, बंक लूट रहे हैं और अपनी पाशविकता का परिचय दे रहे हैं। पजाब राज्य की सरकार के दावे कि आतकवाद अब अन्तिम चरण मे है, झूठे सिद्ध हो चुके है और भारत सरकार की इस सदर्भ मे नरम नीति जन साधारण मे उसे निरन्तर अप्रिय बना रही है।

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली मे आयोजित 'अखिल भारतीय पजाब बचाओ, देश बचाओ' सम्मेलन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध के सभा पतित्व मे ये प्रस्ताव पारित किए गए थे कि पजाब की बरनाला सरकार को तुरन्त अपदस्थ कर, पजाब को सेना के नियन्त्रण मे प्रशासित किया जाए ताकि अल्प सख्यक समुदाय की रक्षा की जा सके और देशद्रोही आतकवादियो को गोलियो से उडा कर शान्ति की स्थापना की जा सके।

जब तक भारत सरकार इन कठोर उपायो को तुरन्त कार्यान्वित नहीं करेगी और पजाब को पथिक सरकार का केवल समर्थन करती रहेगी, समस्या का निराकरण नहीं होगा। अतएव राष्ट्र रक्षा के दृष्टि-कोण से यह सर्वथा आवश्यक है कि पजाब की वर्तमान सरकार जो आतकवाद से निपटने में सर्वथा असफल रही है और जिसके अनेक नेता अपरोक्ष रूप में उग्रवादी तत्वो को सहयोग दे रहे हैं, उसे तुरन्त समाप्त कर पजाब का प्रशासन सेना के हवाले कर दिया जाए, राष्ट्रीय एकता और अखडता के लिए गुजरात से पजाब तथा जम्मू कश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए पारित विधेयक को दृढता से क्रियात्मक रूप दिया जाए। पजाब के अल्प सख्यको को आत्मरक्षार्थ शस्त्र रखने के लिए लाइसेंस दिए जाए तथा समस्त विस्थापितो को पजाब में पुन स्थापित किया जाए। यह सब कार्य तभी सम्भव होगे जब इस में दृढता प्रदर्शित की जाए और ढोलम ढाल नीति का परित्याग किया जाए।

–'वसन्त'

आवश्यक सूचना

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ सितम्बर १९८६ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है।

३५१, ६५७, १७८०, २४१५, ३०६७, ३०७३, ३०७७, ३०९०, ३०९७, ३१०६, ३१९६, ४५२१, ५०२७, ५६१४, ५६९०, ५९२१, ५९४८, ६०३४, ६२१२, ६५११, ६७०१, ६८०१, ६८२२, ७०१०, ८११३, ८२९७, ८३३१, ८३४८, ८३७७, ८६४८, ८६६०, ८९७७, ९११७, ९२६८, ९५२२, ९७१४, ९९८०, ९९८९, ११२४३, ११२७०, ११२७२, ११२७३, ११२७८, ११५६८, ११७०३, ११७२१, ११९९४, १२०००, १२३९७, १२३९८, ८, १२३९९, १२४०५, १२४०७, १२९६४, १२९८४, १३१९६, १३१९७,१३१९८, १३२०२, १३२०८, १३२०९, १३२१२, १३२१४, १३२१६, १३२२०, १३२२४, १३२३२, १३२३४, १३२३९, १३२४४, १३२४५, १३२५०, १३५९२, १३५९३, १३५९४, १३५९५, १३५९६, १३५९७, १३५९८, १३५९९, १३६००, १३६०२, १३६०३, १३६०४, १३६०५, १३६०६, १३६०७, १३६०८, १३६०९, १३६१०, १३६११, १३६१२, १३६१३, १३६१४, १३६१५, १३६१६, १३६१७, १३६१८।

जिनका शुल्क १५ अक्टूबर ८६ को समाप्त

४८३, ३२४०, ४५६६, ४६२२, ५०५५, ५३६१, ५९६२, ५९७३, ५९८०, ६२३४, ६४११, ७०२५, ८७१४, ९०३५, ९५३४, ९५४६, ११२९२, ११३०६, ११३३०, ११३५१, ११७२८, १२०१०, १२०१२, १२०१६, १२४१८, १२७४१, १२७४४, १२७४८, १२७५७, १३२५३, १३२५४, १३२५९, १३२६८, १३२६९, १३२७०, १३२७३, १३२७५, १३१८१, १३२९१ १३६२०, १३६२१, १३६२२, १३६२३, १३६२५, १३६२६, १३६२७, १३६२८, १३६२९, १३६३१, १३६३२, १३६३३, १३६३५, १३६३६, १३६३७, १३६३८, १३६३९।

विनीत– व्यवस्थापक 'आर्यमित्र'

देश की अखण्डता प्रभुसत्ता की संरक्षा सुख एव शान्ति स्थापना का दृढ़ संकल्प लेकर शताब्दी समारोह सम्पन्न

—आचाय वेदव्रत अवस्थी

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के दिनाक १७ मे २० अक्टूबर तक आयोजित शताब्दी महोत्सव प्रकाशवीर शास्त्री नगर डी० ए० वी० कालेज लखनऊ म देश विदेश से पधारे लगभग ७०००० नरनारियो ने देश की अखण्डता प्रभु सत्ता की सरक्षा सुख एव शान्ति स्थापन का दृढ़ सकल्प लिया ।

इस शताब्दी समारोह मे दक्षिण अफ्रीका को आय प्रतिनिधि सभा क मत्री श्री मनोहर सुमेरा सपरिवार एव मारीशस आय प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री शिवगुलाम सहित कई देशो के प्रतिनिधियो ने सोल्लास भाग लिया ।

देश के कोने कोने से अपनी अपनी बोलियो एव प्रदेशीय वेषभूषाओ मे भजन गाती नारे लगाती टोलियो की टोलिया—विशेष आकषण का केन्द्र रही । लगभग १५०० व्यक्ति तो केवल आन्ध्र प्रदेश से ही पधारे थे ।

१४ से २० अक्टूबर तक स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती कुलपति गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के ब्रह्मत्व मे विश्वभृत यज्ञ सम्पन्न हुआ । यज्ञ मे गुरुकुल प्रभात आश्रम, गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या गुरुकुल सिराथू, महाविद्यालय ज्वालापुर गुरुकुल गगोरी गुरुकुल तिलहर एव कन्या गुरुकुल हाथरस के ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणियो ने सस्वर वेदपाठ करके जनमानस को तृप्त किया ।

पूरे सप्ताह हर दिन पृथक पृथक यजमानो—क्रमश सदस्याय महिला आयसमाज गणगज सदस्य आय समाज आदर्श नगर सदस्य आयसमाज लालबाग श्री हसराज जी शाहजहापुर श्रीमती राजवती श्री शान्तिस्वरूप पाण्डेय फरुखाबाद श्री पूर्णचन्द्र आगरा श्री देवेन्द्रकुमार सर्राफ टाण्डा श्री अखिलेश लखनऊ श्री राजाराम जायसवाल कलकत्ता श्री कृष्णकुमार सर्राफ टाण्डा श्रीमती कुसुम गुप्त गोरखपुर डा० विनय प्रताप गोरखपुर श्रीमती कृत्स्ना देवी गोण्डा श्रीमती चन्द्रावती ज्वालापुर श्री अजु नदेव महाना लखनऊ कुमारी कृष्णा कपूर झासी श्री अशोक कुमार अमानिया श्री रमेश प्रसाद गुप्त सिलीगुडी—ने अपनी अपनी आहुतिया प्रदान की । यज्ञ के अनन्तर नित्य श्री अयोध्या प्रसाद प्रेमी ब्रह्मचारी सिगथू कन्याय गुरुकुल हाथरस एव आय क० इ० का० मेरठ के प्रभु भक्ति के गीत तथा स्वामी विवेकानन्द जी स्वामी स्वरूपानन्द जी आचाय सत्यप्रिय श्री राजगुरु शर्मा प्रधान आ० प्र० सभा मध्य भारत महात्मा दयानन्द जी महात्मा आयभिक्षु जी श्रीमती उर्मिला शास्त्री के प्रवचनो के द्वारा विश्व मे सुखशान्ति परस्पर प्रीति स्नेह स्थापना का सकल्प लिया गया । पूर्णाहुति के पश्चात सभा मत्री श्री मनमोहन तिवारी ने ब्रह्मा जी एव ऋत्विजो को सादर दक्षिणा प्रदान कर आभार व्यक्त किया एव स्वय सपत्नीक ब्रह्मा जी से आशीर्वाद प्राप्त किया । समस्त यजमानो को पुष्प वृष्टि के साथ ही पुस्तको की भट सहित आशीर्वाद दिया गया । सातो दिन यज्ञ व प्रवचन के कायक्रमो के सुनियोजित ढग से चलाने का मैने प्रयास किया । फिर भी जिन किसी को भी किसी प्रकार की असुविधा हुई हो जिन विद्वानो के हम वहा प्रवचन नही सुन सके उन सभी से विनम्र क्षमा प्रार्थी हू ।

१४ से १६ अक्टूबर तक स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा सचालित योग प्रशिक्षण शिविर मे प्रशिक्षार्थियो ने सम्पूण कायक्रमो मे भारी सख्या मे भाग लेकर लाभ प्राप्त किया ।

श्री विद्यारत्न जी अधिष्ठाता विद्याय सभा के सयोजन मे प्रदेश के विभिन्न जिलो से आये छात्र छात्राओ की प्रतियोगितायें समारोह का विशेष आकषण थी । शोध पत्रो की प्रस्तुति चिन्तन व लेखन की दिशा मे गम्भीरता से गतिशीलता का सकेतक था । समारोह के अन्तिम दिन विजेताओ को केन्द्रीय मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पन्त द्वारा पुरस्कृत किया गया ।

सर्वाधिक कायक्रमो मे सवश्रेष्ठता का प्रथम पुरस्कार ३०००) रु० नगर बालिका विद्यालय इ० का० मोतीनगर लखनऊ को प्राप्त हुआ । द्वितीय पुरस्कार २०००) आय कन्या इटर कालेज मुजफ्फरनगर एव तृतीय पुरस्कार १०००) रु० आय कन्या इण्टर कालेज सिकन्दराराऊ को प्रदान किया गया । इसके अतिरिक्त अन्य अनेको पुरस्कार बाटे गये ।

सर्वोत्कृष्ट शोध पत्र प्रस्तुत करने के उपलक्ष्य मे डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी प्रो० के० एल० अग्रवाल इलाहाबाद को १५००) रु० की नगद राशि सरोपा एव प्रशस्तिपत्र प्रत्येक को भट किया गया ।

वृद्ध विद्वानो को सम्मान के रूप मे मार्ग व्यय के अतिरिक्त २५१) रु० की स्वल्प राशि एव माल्यापण से—स्वामी अमर स्वामी जी महात्मा दयानन्द जी महात्मा आय भिक्षु जी प० सत्य मित्र शास्त्री प० रुद्र दत्त शास्त्री आचाय वैद्यनाथ शास्त्री शास्त्राथ महारथी प० शान्ति प्रकाश जी महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिह राजर्षि रणजयसिह स्वामी सत्यप्रकाशजी प० देशराज जी प० धमवीर झण्डाधारी प० वीरेन्द्र वीर—आचाय वसुदान द शास्त्री स्वामी शिवान द आचाय लक्ष्मणान द श्री नरपत सिंह को एव १५० रु० की राशि एव माल्यापण से आय मित्र की सर्वाधिक सेवा के उपलक्ष्य मे नारायण प्रिय जी को श्री पन्त द्वारा सम्मानित किया गया ।

मेरे (वेदव्रत अवस्थी लखनऊ) सहित श्री अजु नदेव महाना लखनऊ श्रीमती विमला महाना लखनऊ श्रीमती शकुन्तला इन्द्रराज मेरठ श्रीमती कैलाश सोनी मेरठ आदि २२५ दनिक यज्ञकर्ताओ को प्रो० वासुदेव सिह पूर्व मत्री उ० प्र० सरकार द्वारा पुस्तके प्रदान करके सम्मानित किया गया ।

१७ अक्टूबर की प्रात १० बजे ओ३म पताका फहराकर सावदेशिक सभा के प्रधान माननीय आनन्द बोध जी सरस्वती ने समारोह का शुभारम्भ किया । फिर २ ३० बजे से पण्डाल के कायक्रमो का आरम्भ स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती की ही अध्यक्षता मे आरम्भ हुआ । उदघाटन श्री अजु न सिह (तत्कालीन काग्रेस उपाध्यक्ष वतमान मत्री केन्द्र सरकार ने किया । अपने उदघाटन भाषण मे उन्होने कहा कि स्वाधीनता सग्राम के सूत्रधार महर्षि दयानन्द सरस्वती व और आतकवाद विघटनवाद की समाप्ति के लिए आर्यसमाज के नेतृत्व

[शेष पृष्ठ ५ पर पर]

देश की अखण्डता प्रभुसत्ता की संरक्षा, सुख एव शान्ति स्थापन का दृढ़ संकल्प लेकर शताब्दी समारोह सम्पन्न

[पृष्ठ ४ का शेष]

की प्रबल आवश्यकता है।

इसी सभा मे उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री वीर बहादुर सिंह ने भी राष्ट्र के निर्माणकारी कर्तव्यो मे आर्यसमाज की भूमिका की आवश्यकता पर बल देते हुए तदर्थ आयजनो का आह्वान किया। इस सभा मे श्रीमती स्वरूप कुमारी बक्शी, श्री सजय सिंह, श्री सुरेन्द्र सिंह आदि कई प्रदेश सरकार के मन्त्रीगण एम० पी० एल० एल० ए० एम० एल० सी० भी उपस्थित थे।

इसी सभा मे श्री अर्जुन सिंह द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख पत्र आर्य मित्र साप्ताहिक के शताब्दी विशेषाक (स्मारिका) का विमोचन भी किया गया।

सभा आरम्भ होने से पूर्व शताब्दी स्वागताध्यक्ष राजर्षि रणजय सिंह ने स्वागत भाषण पढ़ा और सभी देश विदेश से पधारे–आर्य नरनारियों केन्द्रीय व प्रदेशीय सरकार से पधारे विशिष्ट अतिथियो का स्वागत किया।

इसी दिन साय पजाब रक्षा सम्मेलन–श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् की अध्यक्षता मे हुआ जिसमे प्रो० शेरसिंह भू० पू० प्रतिरक्षा राज्य मन्त्री भारत, महात्मा दयानन्द, प० सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक सभा आदि अनेक वक्ताओ ने पजाब समस्या के समाधान के लिए अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। सभा मे सबसम्मति से देश की सुरक्षा हेतु आतकवादी विघटनवादी साम्प्रदायिक शक्तियो के समूल नाश के प्रयत्न मे आर्यसमाज द्वारा सरकार को पूण सहयोग देने का वचन दिया गया। अन्य जो प्रस्ताव पारित हुए। (स्थानाभाव से उन्हे यहा न देकर अगले अको मे क्रमश प्रकाशित किया जायेगा।

इसी दिन रात्रि मे शिक्षा सम्मेलन स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे हुआ। जिसका सयोजन डा० निरुपण विद्यालकार आचाय गुरुकुल कागड़ी ने किया। डा० भवानी लाल भारतीय, प० महेन्द्रप्रताप शास्त्री, डा० आनन्द प्रकाश, प्रो० रत्न सिंह आदि ने शिक्षा के गिरते स्तर पर चिन्ता प्रकट करते हुए शिक्षा मे राष्ट्रीय चरित्र उत्थान के लिए जाति, वर्ग, सम्प्रदायवादी दृष्टिकोण से परे राष्ट्रीयता से पूर्ण देश की प्रभुसत्ता को अक्षुण्ण बनाने, राष्ट्रीय चरित्र को अभ्युन्नत करने हेतु, नैतिक शिक्षा, ब्रह्मचय पालन के उपदेश, पाश्चात्य संस्कृति के प्रति उदासीनता मूलक पाठो के समावेश पर विशेष बल दिया।

१८ अक्टूबर को १२ बजे से अद्वितीय विशाल शोभा यात्रा श्री रामनाथ सहगल देहली के नेतृत्व मे प्रकाशवीर शास्त्री नगर से उठकर साय ६। बजे लगभग ८ किलोमीटर का मार्ग तय करके वहीं समाप्त हुई यात्रा मे लगभग ७० हजार देश-विदेश से पधारे आर्य नरनारियों ने सोत्साह भाग लिया। नगर मे शोभा यात्रा पथ पर १०० स्वागत द्वार दिवगत राष्ट्र नेताओ के नाम पर निर्मित किये गये थे जगह-जगह जनता ने यात्रा का पुष्प वर्षा व जलपान आदि द्वारा स्वागत किया गया। यात्रा मे हाथियों पर साधु सन्त सवार थे मोटर साइकल व स्कूटरों पर आर्य वीर चल रहे थे। घोडो पर सवार कन्या गुरुकुल हाथरस की छात्रायें वीरागना रानी लक्ष्मी बाई की स्मृति को ताजा कर रही थी। अनेको ट्रको पर विभिन्न झाकियां सजी हुई थी। सभा के सभी पदाधिकारियों के साथ देश विदेश से पधारे उच्चकोटि के अनेक नेतागण पैदल चलकर शोभा यात्रा को सुशोभित कर रहे थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी एक सजी हुई जीप पर विराजमान थे जिसके दोनो ओर सशस्त्र आर्य वीर चल रहे थे। पुलिस की व्यवस्था भी सराहनीय थी।

यात्रा मे प्रदेश के सभी आर्य विद्यालयो के आये छात्र छात्रायें अनुशासित ढग से गीत गाते व नारे लगाते तथा विभिन्न प्रकार के शौर्य प्रदर्शन करते हुए यात्रा की शोभा को द्विगुणित कर रहे थे।

रात्रि मे १० बजे से राजर्षि रणजय सिंह की अध्यक्षता मे एक अभूतपूर्व कवि सम्मेलन आरम्भ हुआ जो रात्रि लगभग ४-३० बजे तक राष्ट्रीय ओजपूर्ण कविता पाठ से सभी श्रोताओ को विमुग्ध करता रहा। सम्मेलन का सयोजन श्री जयनारायण अरुण एव सचालन आशुकवि डा० ब्रजेन्द्र अवस्थी ने किया। सम्मेलन मे पधारे सभी कवियो–कुमारी उर्मिला श्रीवास्तव शाहजहापुर, हुक्का बिजनौरी, निर्भय हाथरसी, करुण पानीपत, उत्तमचन्द शरर, प्रणव शास्त्री, श्री लाखन सिंह भदौरिया आदि ने अपनी रचनाओ के माध्यम से ऋषि महिमा के साथ भारत की अखण्डता प्रभुसत्ता की रक्षा, आतकवाद के नाश एव सुख समृद्धि की भावना जागृत करने का आह्वान किया।

१९ अक्तूबर को प्रात १०-३० बजे आचाय वैद्यनाथ शास्त्री की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन हुआ जिसमे वेद की अपौरुषेयता, सर्वांगीण ज्ञान का स्रोत वेद, वेद से विज्ञान, विध्वस से निर्माण की ओर आदि विषयो पर गम्भीर चिन्तन डा० स्वामी सत्य प्रकाश जी, स्वामी विवेकानन्द जी, डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री, डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, प० सत्य मित्र शास्त्री आचाय विशुद्धानन्द आदि विद्वानो ने दिया।

मध्यान्होत्तर २ बजे से महिला सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमे बोलते हुये श्रीमती स्वरूप कुमारी बक्शी हरिजन समाज कल्याण मन्त्री उ० प्र० सरकार ने कहा कि नारी का राष्ट्र के चरित्र निर्माण मे विशेष योगदान अपेक्षित है। प्रताड़ित नारी को उसका गौरवपूण स्थान दिलाने के आन्दोलन के प्रणेता महर्षि स्वामी दयानन्द थे महिला समाज उनका सदैव स्मरण करेगा। सम्मेलन की सयोजिका श्रीमती शकुन्तला गोयल थी। सचालक डा० शांतिदेव बाला ने किया। श्रीमती कमला त्यागी एम० एल० सी०, श्रीमती सन्तोष कपूर एम० एल० सी०, कु० कृष्णा-कपूर, श्रीमती उर्मिला शास्त्री, कु० प्रतिभा मेहता आदि ने अपने ओजस्वी विचार दिये।

३.३० बजे से आयोजित आर्य युवा सम्मेलन का सयोजन श्री डा० धर्मपाल मन्त्री आर्य प्रतिनिधिसभा देहली एव अध्यक्षता श्री बालदिवाकर हस ने की। सभी वक्ताओ ने युवाशक्ति को राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का आह्वान किया।

साय ७ बजे से प० राजगुरु शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के सयोजन मे आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ। (पारित प्रस्ताव बाद के अको मे प्रस्तुत होगे।–)

[शेष पृष्ठ ६ पर]

शुभ सूचना

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजो को सूचित किया जाता है कि डा० श्री महावीर शास्त्री निवासी रायगज गाजीपुर जो वर्ष १९५४ मे सभा के उपदेशक थे, उन्होने पुन सभा को अपनी सेवाए समर्पित कर दी हैं।

आर्यसमाजें उन्हे सभा के माध्यम से वार्षिकोत्सव पर आमन्त्रित कर सकती हैं। उक्त शास्त्री जी द्वारा धार्मिक कथा तथा सगीत योग प्रशिक्षण शिविर भी एक से चार दिन तक के आयोजित किए जाते हैं।

मनमोहन तिवारी
सभामत्री

सवेदना

श्री मदन गोपाल जी गुप्त मोतीनगर लखनऊ के पौत्र कुमार गौरव (एकमात्र सुपुत्र श्री गिरीश गुप्त गोरखपुर) का १० वर्ष की अल्पायु मे हृदय गति रुक जाने से दिनाक १०-१०-८६ को निधन हो गया।

सम्पूर्ण गुप्त परिवार का इस असामयिक वियोग से अतिशय दुखी होना स्वाभाविक है परन्तु जिस धैर्य का परिचय देकर श्री मदनगोपाल जी गुप्त ने अपने को सँभाला, सभा के शताब्दी समारोहो मे भाग लिया और प्रचुर अन्नदान देकर अपनी दानशीलता का परिचय दिया, उससे उनके महान आर्यत्व का बोध हुआ।

० ० ०

महाशय श्री हरबसलाल का आकस्मिक निधन ८४ वर्ष की आयु मे जो कुछ अस्वस्थ चल रहे थे दिनाक २९-१०-८६ की दोपहर को हो गया। वे पक्के आर्य और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। आर्य समाज की गतिविधियों मे उन्होने सदैव पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया। वैदिक धर्म का प्रचार उन्हें अत्यन्त प्रिय था। प्रभात फेरियो मे लोगो को एकत्रित करना, भजन व गीत गाना, जयघोष लगाना और समारोहो मे दरिया बिछाने से लेकर नगर मे मुनादी करना, सदैव एक सुखद स्मृति के रूप मे विद्यमान रहेगा। आर्यसमाज सिगार नगर को उनके द्वारा की गई सेवायें सदैव याद रहेगी।

आर्य मित्र दोनो परिवारो के प्रति अपनी तथा उनके वियोग मे पीड़ित पारिवारिक सदस्यो को सम्वेदना प्रकट करता है और प्रभु से उनको धैर्य्य प्रदान करने हेतु एव दिवगत आत्माओं की सद्गति हेतु प्रार्थना करता है।

—सम्पादक मण्डल

सूचना—आर्यमित्र प्रकाशनार्थ

—आर्यमित्र साप्ताहिक के प्रिय पाठक बन्धुओ को सूचित किया जाता है कि दीपावली पर्व के उपलक्ष्य मे कार्यालय एव प्रेस मे दिनाक ३१ अक्टूबर से ३ नवम्बर ८६ तक अवकाश होने के कारण दिनाक ९ नवम्बर १९८६ का अक बन्द रहेगा। दिनांक ९ नवम्बर एव १६ नवम्बर १९८६ का सयुक्त अक ही प्रकाशित किया जायेगा।

—सम्पादक मण्डल

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा ऋषि निर्वाण पर्व का भव्य आयोजन

दिवगत श्री पृथिवी राज बरमानी की पुण्य स्मृति मे 'योग यात्रिक' पुस्तक का विमोचन

शनिवार दिनाक १-११-८६ को लखनऊ जनपद की आर्य उप प्रतिनिधि सभा द्वारा महर्षि दयानन्द के निर्वाण पर्व का भव्य आयोजन हुआ जिसमे श्रीमती विमला माहना के भजनो के अतिरिक्त सर्वश्री महात्मा दयानन्द जी हरिवशलाल मेहता 'वेद मनीषी', कु० कचनलता सब्बरवाल [भू० पू० प्राचार्या महिला विद्यालय] तथा विक्रमादित्य 'वसन्त' वेदवारिधि के सारगर्भित व्याख्यान हुए।

इस पावन अवसर पर श्री पृथिवी राज बरमानी जिनका देहावसान गत वर्ष ऋषि निर्वाण पर्व के अवसर पर आर्यसमाज चन्द्र नगर की वेदि पर ऋषि के श्रद्धाजलि गान गाते हुए हृदय गति रुक जाने से हुआ था, उनकी पावन स्मृति मे वेद प्रचार समिति आलमबाग लखनऊ द्वारा प्रकाशित श्री 'वसन्त' जी की सम्पादित पुस्तक 'योग यात्रिक' का विधिवत विमोचन श्रीमती कचनलता सब्बरवाल द्वारा किया गया। पर्व का उपसहार ऋषि लगर के साथ हुआ जिसमे सैकडो नरनारियो ने एक साथ प्रीतिभोज किया।

देश की अखण्डता एव प्रभुसत्ता की संरक्षा मुख्य

[पृष्ठ ५ का शेष]

२० अक्टूबर को प्रात १० बजे से कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमे भावी कार्यक्रमो की रूपरेखा निर्धारित की गयी। सभा को देश के आर्य नेताओ के अतिरिक्त श्री बलदेव सिंह आर्य मत्री उ० प्र० सरकार ने भी सम्बोधित किया। पारित प्रस्ताव (बाद के अको मे प्रस्तुत होगे) भी सम्बोधित किया।

२० अक्तूबर को ही २-३० बजे से समापन की ओर पग बढ़े इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री गोपीनाथ दीक्षित गृहमन्त्री उत्तर प्रदेश सरकार ने की। सभा को श्री दरबारी लाल देहली, श्री सच्चिदा नन्द बाजपेयी भू० पू० राज्यमत्री उ० प्र०, प्रो० वासुदेव सिंह भू० पू० मत्री उ० प्र०, श्री राममाथ सहगल, प्रो० शेरसिंह आदि ने सम्बोधित किया। मुख्य अतिथि श्री कृष्णचन्द्र पन्त मत्री भारत सरकार थे। कार्यक्रम का सचालन सभा प्रधान प० इन्द्रराज जी ने किया।

श्री पन्त ने देश के स्वराज्य आदोलन के निर्माण पथ पर आर्य समाज के योगदान की सराहना करते हुए सदैव तदर्थ सजग रहने की अपील की।

श्री गोपीनाथ दीक्षित ने नारी उत्थान स्वराज्य आन्दोलन, छुआछूत के भेद निवारण आदि राष्ट्रीय आन्दोलनो मे आर्य समाज की समर्पित भूमिका की सराहना करते हुए ऋषि चरणों मे श्रद्धानमन किया। अन्त मे स्वामी सत्य प्रकाश जी ने आशीर्वाद दिया ओर सभा प्रधान प० इन्द्रराज जी ने धन्यवाद व आभार प्रकट किया। साय ७ बजे शांति पाठ एव गगनभेदी नारो के साथ विभिन्न समारोहों मे देश की अखडता, प्रभुसत्ता की रक्षा व सुख समृद्धि की अभिवृद्धि के सकल्प के साथ शताब्दी समारोह पूर्ण हो गया।

वनिता विवेक

वैदिक समाज में नारी

लेखिका—श्रीमती रश्मि प्रभा शास्त्री एम० ए० शिरोमणि
साहित्याचार्या—बी० एड० अधीक्षिका राजकीय आश्रम
पद्धति विद्यालय आलम नगर लखनऊ (उ० प्र०)

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।।

उपर्युक्त वचन मनु महाराज का है । प्राचीन काल मे कदाचित् नारियो का कहीं-कहीं अपमान देखकर यह श्लोक मनुस्मृति मे लिखा गया होगा । किन्तु आधुनिक युग मे महर्षि दयानन्द सरस्वती को भी लिखने की पूर्ण आवश्यकता प्रतीत हुई । उन्होने लगभग ३५ वर्ष भारतवर्षीय राजाओ, विभिन्न नगरो, नदी तटो एव पर्वत की शृंखलाओ का भ्रमण करके यह अनुभव किया था कि नारियो की दशा अतिदयनीय है । योगाभ्यास मे बैठ हुए गगा के किनारे एक महिला को देखकर जिसके पास अपने मृत बालक को छुपाने के लिए उसे कफन भी न मिल सका था अपनी आधी धोती फाडकर बच्चे को जल मे प्रवाहित कर दिया और शेष आधी धोती से अपने आँचल को छुपाये चीत्कार के साथ घर की ओर चलने लगी । महर्षि ने उस चीत्कार को सुना । उस समय उनको यह मनु का श्लोक स्मरण आ गया और वे भी उस महिला के साथ ही अपनी अन्तरात्मा से चिल्ला उठे । 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्तेरमन्ते तत्र देवता ।

महर्षि भी अन्तरात्मा मे इस चिल्लाहट ने बुद्धिस्थ सभी विचारो को आन्दोलित कर दिया । उन्होने नारी समाज के आदर एव अपमान तथा उपेक्षापूर्ण व्यवहारो से होने वाली समस्त हानियों एव लाभों पर विचार किया और समाज मे चली आ रही रूढ़ियो तथा विद्वानों व महात्माओ द्वारा प्रचारित सूक्तियो पर भी विचार किया । जैसे किसी ने कहा—

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी ।
ये सब ताड़न के अधिकारी ।

किसी ने कहा—'स्त्री शूद्रौ नाधीयेताम्' अर्थात् 'स्त्री और शूद्र न पढ़ाये जायें' ।

किसी ने लिखा—शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा नार्मा पिशाच्या न च वञ्चितो य । इसी प्रकार—द्वार किमेकं नरकस्य नारी। इत्यादि । ये सभी सूक्तियां उच्चकोटि के महात्मा व आचार्यों द्वारा लिखी गई थीं । किन्तु जैसा कि इन सूक्तियो मे किन्हीं कुटिल दुराचारी नारियों की ओर कोई सकेत नहीं है फिर भी यह सोचकर कि महात्माजन नारी समाजमात्र से अन्तरात्मा मे इतनी घृणा नहीं रखते होगे । किन्तु नारीगत विषयाकर्षण कल्याणपथ से विचलित करने वाला होता है । अत सभी को उनसे सावधान रहना चाहिये । इसलिए यह लिख दिया होगा कदाचित यह स्वीकारा जा सकता है । फिर भी हम यह कह सकती है कि आचार्यों व महात्माओ द्वारा नारी समाज को इतना कलकित कर लिख देने से मनुष्य समाज पर बहुत बुरा असर पडा है । जिसके कारण यह भारत वर्ष देश अनेक कठिनाइयो व समस्याओ मे फँसा और नारी जाति का विशेष पतन हुआ ।

अब मै कुछ विशेष-विशेष बातो को यहा उपस्थित कर देना चाहती हू । नारीका आदर सम्मान यदि नारी ही करे और पुरुष न करे तो सन्तानवृद्धि की हानि तो न होगी किन्तु उत्तम सन्तान जिसको श्लोक मे 'देवता' शब्द से कहा गया है वे उत्पन्न न होगी । क्योकि—

१—यदि शराबी या जुआरी पुरुष है तो वह कभी भी स्त्री अपनी धर्मपत्नी को भोजन, वस्त्र एव सद्व्यवहारो से प्रसन्न न रख सकेगा ।

२—यदि स्त्री युवती है और पुरुष वृद्ध है तो वह कभी भी अपनी स्त्री को प्रिया नहीं बना सकेगा ।

३—यदि पुरुष पढा लिखा ह और सन्ध्या हवन आदि सुकर्म स्वयमेव करता है किन्तु अपनी स्त्री को नहीं करने देता है तो वह स्त्री सहधर्मिणी नहीं कहला सकती ह ।

४—जो स्त्रियां अपने पति की अनुचित बातो को मानने के लिए हरदम विवश रहती हैं वे सदा 'गुलाम' रहती है । उनकी सन्तानें भी 'गुलाम' प्रकृति की अधिक होती हैं ।

५—जिन तेज स्वभाव वाली स्त्रियो को उनके पति प्रेमपूर्वक अपने अनुकूल नही बना सकते हैं और वे अच्छी बातो का भी उल्लघन करती हैं तो उनकी सन्तानें अधिकाश 'बागी' होती हैं ।

६—जिन परिवारो मे धन के लोभी विद्यमान है वहां स्त्रियो का आदर नहीं होता, वहा 'दहेज' की बार-बार चर्चा करने से 'आत्म-हत्या' कर लेती हैं, जला दी जाती हैं, अथवा मार डाली जाती हैं ।

७—जो लडकिया विवाह के बाद विधवा हो जाती हैं और उनका विवाह नहीं किया जाता, उनको आगे परिवार मे आदर नहीं मिलता इसलिए उस परिवार मे होने वाली दूसरी सन्तानें सदैव क्रोध को जन्म देती हैं ।

८—जिन नारियों को 'वैदिक शिक्षा से वचित रखा जाता है वे नारियाँ अन्धविश्वास मे अधिक फँसी रहती हैं ।

९—जो नारियाँ अधिक अन्धविश्वास मे फँसी रहती है वे मूर्ति-पूजा भगवान् के अवतार मानने तथा चित्रो की आरती उतारने मे लगी रहती है ।

सक्षेप मे इन सभी बातो को विचारने से यह निष्कर्ष निकलता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'नारी' शब्द से विवाहिता स्त्री ही अर्थ नहीं लिया था अपितु नारी जाति के विविध अवस्थाओ जैसे किशोरी, कुमारी, विवाहिता, वृद्धा दादी के रूप मे अनेक अर्थ लिए हैं और इसीलिए कन्याओ के लिए गुरुकुलो का समर्थन कर यज्ञोपवीत पूर्वक वेदशास्त्रो का पढना पढ़ाना वेदविहित बतलाया । जिससे वे नारी समाज की उन्नति के मूल कारण क्या हो सकते हैं ? यह समझ सकें । मनुष्य समाज मे नारियो का आदर कैसे बढ़े ? सामाजिक कुरीतियो को दूर करने मे वे क्या सहयोग कर सकती हैं ? यह समझ सकें ? विवाहिता होकर सन्तानो को कैसे सुसस्कृत कर सकेगी और अपने-अपने पतियो को सद्विचारो की ओर कैसे मोड सकेगी ? यह भी जान सकें । इसलिए नारियो को वैदिक शिक्षा दिलाना बहुत आवश्यक समझा था और ऐसे मनुष्य समाज का उन्होने डटकर खण्डन किया था कि जो नारियो को मात्र भोग व विलास का साधन बनाकर उनसे कामवासना की पूर्ति कर लेना चाहते तथा उनके सामाजिक जीवन को अन्धकारमय बनाकर उनका आदर सम्मान स्वयमेव छीन लेना चाहते थे ।

जो लोग ऐसा करते है वे स्त्रियो के प्रति घोर अन्याय का व्यवहार करते हैं । महर्षि दयानन्द सरस्वती इस प्रकार के अन्याय के कट्टर विरोधी थे । तभी तो उन्होने नगर-नगर और डगर-डगर मे यह उदघोष किया था ।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया ।।

विदुषी लेखिका ने सभा के शताब्दी समारोह के अवसर पर अपना यह लेख भेजा था, जो आर्य मित्र कार्यालय मे १४-१०-८६ को प्राप्त हुआ। विलम्ब से प्राप्त होने के कारण इसे विशेषांक मे देना सम्भव नहीं हो सका। वह अब पाठको की सेवा में प्रस्तुत है।

सम्पादक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

—श्रीमती सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या

१०, केलाबाग, सावित्री सदन, बरेली, उ० प्र०

वेद भगवान का उपदेश है "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" विश्व को आर्य बनाओ। प्रत्येक आर्य बन्धु का कर्तव्य है कि सैकडो मतो सम्प्रदायो और जाति बिरादरियो मे बटे हुए विश्व को वैदिक विचार धारा के आधार पर आर्यत्व के स्नेह सूत्र मे बाधने का प्रयास करें। आर्य किसी मतावलम्बी या साम्प्रदायिक व्यक्तित्व का नाम कदापि नहीं है। आर्य का लक्षण है –

कर्तव्यमाचरन् कर्म अकर्तव्यमनाचरन्

तिष्ठति प्रकृताचारे स वैआर्य इति स्मृत

मानव मात्र के हितकारक, कर्तव्य कर्मों को करने वाला तथा निन्दनीय दुष्कर्मों को त्याग कर प्रकृति के अर्थात् स्वाभाविक वेदानुकूल आचरण मे रत रहने वाला व्यक्ति 'आर्य' कहलाता है। कर्तव्य पालन का ही पर्यायवाची शब्द धर्माचरण है। धर्म का लक्षण हमारे मनीषी ऋषियो ने सार्वभौम दृष्टिकोण से निरूपित किया हैं –

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्म लक्षणम् ॥

१–धृति –विषम परिस्थिति मे भी बुद्धि को स्थिर रखना २–क्षमा –सुख-दुःख, निन्दा स्तुति, जय-पराजय, लाभ हानि आदि द्वन्द्वों को सहने की शक्ति रखना। ३–दम –विषय विकारों से मन को हटा कर उत्तम विचारो मे लगाना ४–अस्तेयम् –दूसरो के पुरुषार्थ से उपार्जित पदार्थों पर लाभ दृष्टि न रखना। ५–इन्द्रिय निग्रह –सन्मार्ग को छोडकर दुराचरण मे प्रवृत्त होने वाली इन्द्रियो को बलपूर्वक रोकना। ६–शौचम्–मानसिक, वाचिक और शारीरिक पवित्रता रखना। ७–धी –विश्व-मङ्गलकारी सकल्पो को कार्यान्वित करने की शक्ति ही धी है। ८–ससार के नित्यानित्य पदार्थों का सद्विवेक ही विद्या है। ९–सत्यम्–प्रत्येक विषय मे दुराग्रहरहित सत्य चिन्तन, सत्यश्रावण तथा सत्याचरण ही "सत्यम" है। १०–भावावेश पर सयम रखना, क्रोध न करना अक्रोध कहलाता है।



यही दशधर्म के लक्षण आर्यत्व की पावन मर्यादायें हैं। विश्व के मानवो को इन्ही सामाजिक शुभ गुणो से अलङ्कृत करने का प्रयास ही "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का सन्देश है। इस आर्यत्व का सकल भूमण्डल पर कैसे प्रसार हो यही विचारणीय है।

(१) सदाचारी धर्म प्रचारक सर्वप्रथम धर्म प्रचारक पूर्ण सदाचारी हो विश्व मङ्गलाभिलाषी धार्मिक जन अपने पवित्र आचारो से ही प्रथम धर्मोपदेश किया करते हैं। उनके पावन कर्म सहयात्रियो को तो प्रभावित करते ही हैं आसपास के वातावरण को भी स्वच्छ कर देते हैं। राग द्वेष रहित होकर ससार के समस्त प्राणियों पर मित्र दृष्टि रखने वाला ही धर्म प्रचार मे सफल होता है। केवल वाणी विलास से काम नहीं चलता। आचारहीन व्याख्याता कुछ समय तक प्रभावशाली हो सकता है किंतु सम्पर्क मे आने पर उसके वाणी और कर्म अर्थात् ज्ञान-कर्म मे विरोध देख कर जनता श्रद्धा नहीं करती। उनका उपदेश निरर्थक हो जाता है। अत ज्ञानवृद्ध के साथ आचार वृद्ध विद्वान् प्रवक्ता ही विश्व मे वैदिक धर्म के सफल प्रचारक हो सकते हैं।

(२) वैदिक सस्कृति का प्रचार–आज सारा ससार अनेक मतमतान्तर तथा राजनैतिक मतभेदो के कारण परस्पर विभक्त है। केवल वैदिक विचारधारा ही इनके भेदभावो को मिटा कर एक सूत्र मे बाँध सकती है। वेदो का सार्वभौम प्रचार प्रत्येक समस्या का समाधान है। धार्मिक, राजनैतिक एव आर्थिक विषमताओ को दूर करने के लिए वैदिक विधान के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है। अत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वेदानुकूल भारतीय सस्कृति का प्रचार अत्यावश्यक है।

(३) सस्कृत भाषा का व्यापक प्रचार–वैदिक सस्कृति की आत्मा सुरभारती सस्कृत भाषा ही है। जिसके अध्ययन से प्रत्येक मानव मे आर्यत्व का स्वत स्फुरण होने लगता है। इसी लिए इसे देववाणी कहा जाता है। वस्तुत. इस भाषा मे सभाषण करने वाले दिव्य गुण सम्पन्न देवता ही हो जाते हैं। सस्कृत साहित्य के अनुशीलन एव अध्यापन से आसुरी वृत्तियों का नाश होने लगता है। अन्त करण सुसस्कार युक्त होकर आर्योचित कर्तव्यों की प्रेरणा देता है। अत विश्व को आर्य बनाने के लिये मनुष्यो को सस्कृतज्ञ बनाना अनिवार्य है। भाषा से सम्बद्ध इतिहास और सस्कृति के स्वर्णिम पृष्ठ पलटते ही जीवन बदल जाता है। मत-सम्प्रदायो के सघर्ष अनायास ही इस अमर भाषा की सतत साधना से समाप्त हो जाते हैं।

यदि स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर हमारे भारत देश के कर्णधारो ने देव भाषा के प्रसार का अभियान चलाया होता तो आज धर्म, भाषा और प्रान्तीयता पर आधारित सभी समस्याओ का निराकरण हो गया होता। हिन्दी राष्ट्र भाषा विरोधी सभी प्रान्त सस्कृत भाषा को राष्ट्र भाषा एव अन्तर्राष्ट्रीय भाषा मनाने को सहर्ष तत्पर हैं। देश मे इस भाषा का समादर होते ही हिन्दी विरोध भी स्वत समाप्त हो जायेगा। विदेशी विद्वान् भी सस्कृत साहित्य को भारतीय सस्कृति का मूलाधार मानते हैं। भारत के गौरव का कारण यही अमरवाणी है।

(४) आर्य राष्ट्र के निर्माण की योजना– सार्वभौम एकता के प्रसार के लिये स्वदेश मे आर्य राष्ट्र का निर्माण हुए बिना सफलता सम्भव नहीं। आर्य सस्कृति के भक्त जब भारत के प्रशासक होंगे तभी आस्तिकता एव सदाचार की प्रतिष्ठा होगी अधर्म का समूल नाश होगा। केवल ब्राह्मण उपदेशो के प्रचार से कुछ सात्विक लोगो का कल्याण हो सकता है किन्तु दुष्टदमन के लिये शूर परन्तप राजन्य शक्ति का होना आवश्यक है ब्रह्म शक्ति के साथ क्षात्र शक्ति का सहयोग स्वच्छ प्रशासन के लिये अतिवरा अपेक्षित है। इस भ्रष्ट

[शेष पृष्ठ ११ पर]

कविता कलाप

मुक्तक

श्री जयनारायण अरुण
सम्पादक प्रसाद के फूल
बिजनौर

चलते कदमो मे रवानी डालो
थकने वालो के जवानी डालो
आग नफरत की बुझाने के लिए
दोस्तो प्यार का पानी डालो ।

प्यार काटो मे मुस्कराता है
प्यार [illegible] मे भी गाता है
और गमो की अधेरी राहो मे
प्यार रोशनी दिखाता है ।

धर्म के, कर्म के, ईश्वर के गीत गाता है
जाके मन्दिर मे कभी घण्टिया बजाता है
तेरी पूजा के इस दौर के चिराग पर लानत
जेब इन्सानियत का रोज कुतरा जाता है ।

काबा काशी की बहुत धूल है फाकी मैने
तेल देखा ही नही फूक दी बाती मैने
तू यहा तब मै वहा—और वहा—जाने कहा ?
दर्द बढता ही गया—ज्यू ज्यो दवा की मैने ।

चाद की तारो को इन काली घटाओ से बचा
गुल को पतझार की नापाक निगाहो से बचा
दिल के दालान मे इन प्यार के चिरागो को
दोस्त ! नफरत की चली तेज हवाओ से बचा ।

'ऋषिवर दयानन्द ने'

बन अजेय जूझा एकाकी
सबर्वा से प्यार किया ।
भव्य नवल उत्क्रान्ति लिए
धरती को क्या विचार दिया ।
अपराजेय बना सेनानी—
दानवता सहार किया ।
ऋषिवर दयानन्द ने पूरा
भारत का शृगार किया ।।

महिमण्डल मर्दन करके, पाखण्डो
का निर्भय हो, ललकारा ।
हिली धरा हिल उठा व्योम
जब शास्त्रार्थ का चला दुधारा ।
ढोगी—ठग—पाखण्डी सारे—
चुपके से कन्नी लिए किनारा ।
ऋषिवर दयानन्द ने विश्व—
दूर किया विस्तृत अधियारा ।।

ज्योतिर्मान किया भूतल को
कर वेदो का अनुसधान ।
नयी किरण पा दिव्य ज्ञान की
जाग उठा यह देश महान ।

उठो आर्य वीरो

श्री पूर्णप्रकाश मित्तल
सचालक आर्य वीर दल
बिजनौर

उठो आर्य वीरो बिगुल बज रहा है ।
गया वक्त सोने का तू सो रहा है ।।
विधर्मी करोडो मिटाते वतन को ।
सदा लूटते खलके अपने चमन को ।
तू नादान इतना अभी सो रहा है ।
गया वक्त सोने का तू सो रहा है ।
उठो आर्य वीरो बिगुल बज रहा है ।।

भाई हमारे करोडो मिटाए ।
मन्दिर हमारे हजारो गिराए ।।
ध्वजा ओ३म् की है हाथ तेरे ।
धर्म का पुजारी अभी सो रहा है ।
गया वक्त सोने का तू सो रहा है ।।

तन हो तुम्हारा वज्र की भाति
मन हो तुम्हारा समुद्र की भाति
पवन बन चट्टान अधम की गिराओ
क्षत्रिय बन बाण अग्नि के चलाओ
सुदर्शन तेरे हाथ अभी रुक रहा है ।
गया वक्त सोने का तू सो रहा है ।।

ना खौला अभी खून तेरे बदन का
भूना जाता सदा लाल तेरे वतन का
गौ, गगा का अपमान करते अधर्मी
मातृशक्ति का अपमान होता सदा ही
नारी जाति का व्यापार नही रुक रहा है
तू रक्षक सभी का क्यो वक्त खो रहा है ।
गया वक्त सोने का तू सो रहा है ।।

कमर बाध कर तुम खड्ग हाथ ले लो
गद्दार अधर्मियो को ललकार दे दो
तू है दयानन्द शिवा और बिस्मिल
क्यो आलस मे जीवन पडा खो रहा है ।
गया वक्त सोने का तू सो रहा है ।
उठो आर्य वीरो बिगुल बज रहा है ।।

आर्यसमाज किया स्थापित
रख ली जिसने मा की आन ।
ऋषिवर दयानन्द ने डाली—
मृतक जाति मे फिर से जान ।
गूज उठा, फिर भूमण्डल पर
सामवेद का मधु सगीत
स्वतन्त्रता के प्रति, जन जन की
बढने लगी निरन्तर प्रीति ।
मानवता की दानवता पर,
हुई पुन अभिनव सी जीत ।
ऋषिवर दयानन्द स्वामी ने—
दिया हमे दिव्य नवनीत ।।

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मन्त्री जिला सभा सुलतानपुर

पुस्तक-परिचय

'निर्णय के तट पर' (शास्त्रार्थ संग्रह) द्वितीयभाग

संग्रहकर्ता सम्पादक—शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी तथा श्री लाजपतराय अग्रवाल, प्रकाशक—अमरस्वामी प्रकाशन विभाग, १०५८ विवेकानन्दनगर गाजियाबाद उत्तर प्रदेश। पृष्ठ ३७०—मूल्य १२५ रुपिया।

आर्यसमाज के विगत पाच दशाब्दियो से प्रमुख उपदेशक—शास्त्रार्थ महारथी पूर्व नाम ठाकुर अमरसिंह जी तथा वर्तमान अमरस्वामी जी से समस्त आर्यजगत भलीभाति परिचित है। वह स्वय मे व्यक्ति नहीं सस्था हैं और ऋषिवर दयानन्द के सन्देशो का सर्वाधिक प्रचार प्रसार स्वामी जी द्वारा हुआ है और हो रहा है। शास्त्रार्थ के प्रति भी आपकी पूर्ण रुचि रही और सम्प्रति भी इस विशेष विद्या मे आपकी ख्याति है। आर्यसमाज के शास्त्रार्थों का अपना पृथक् इतिहास एव विशेषता है। स्वामी दयानन्द जी जब सत्य की मशाल लेकर निकले तो असत्य को दूर भगाना प्रमुख ध्येय था उसी असत्य के मिटाने के लिए महर्षि को शास्त्रार्थ भी करना पड़ता था तथा आर्यसमाज मे शास्त्रार्थ परम्परा प्रारम्भ हुई।

समालोच्य पुस्तक मे २४ शास्त्रार्थ सग्रहीत है। इनमे जिनमे स्वामी दयानन्द जी, भीमसेन शर्मा, तुलसीराम, दर्शनानन्द, गणपति शर्मा, राम चन्द्र देहलवी, तथा ठाकुर अमरसिंह जी (अमर स्वामी) के शास्त्रार्थ सग्रहीत हैं। इन शास्त्रार्थों का सग्रह अति कष्ट साध्य कार्य है फिर भी अमर स्वामी जी की लगन एव उनके परम भक्त तथा सहयोगी श्री लाजपतराय अग्रवाल को साधुवाद है जिन्होंने पाण्डुलिपियो के आधार पर सग्रहीत है। पक्ष-विपक्ष का सुन्दर रीति से उपस्थितकरण है—यह कार्य अभूतपूर्व एव दुस्तर है। प्रत्येक शास्त्रार्थ पर भूमिका एव परिचय है सम्पादन कला की विशेषता है।

आशा है आर्यजगत मे इस 'निर्णय के तट पर' ग्रन्थ का स्वागत होगा। सभी आर्यसमाजें इसे मगाकर अपने पुस्तकालयो मे रखेंगी। उपदेशकों एव भजनीको के लिए अत्यधिक उपयोगी सामग्री है आर्यमित्र अमरस्वामी जी को ऐसा दुर्लभ ग्रथ को आर्यजगत को देने के लिए बधाई देता है।

मुद्रण स्वच्छ, कागज उत्तम, साजसज्जा, गेट-अप पूर्ण आकर्षक है।

पाप पुण्य मीमांसा — सुख-दुख मीमांसा

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु आर्योपदेशक आर्यसमाज हरथला कालोनी मुरादाबाद।

श्री यशपाल जी आर्य बन्धु का जीवन—पठन—अध्ययन एव लेखन के लिए समर्पित है। ऋषिवर दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओ से प्रेरणा प्राप्त करके लेखक ने स्वस्थ आर्य परम्परा पोषक सिद्धातो का निर्धारण किया और उसी को लक्ष्य मान कर निरन्तर लेखन के सृजन त्मक कार्यो मे सलग्न रहते हैं। आर्यजगत को आर्य बन्धु जी ने पर्याप्त साहित्य प्रदान किया है। उपर्युक्त कृतियां—पाप-पुण्य मीमासा एव सुख-दुख मीमासा—लघु तीस पृष्ठो मे लेखक ने इन गम्भीर विषयो पर शास्त्रीय तथा परम्परागत माननीय प्रवृत्तियो का विश्लेषण किया है पुस्तकें ज्ञान वर्धक है। रोचक शैली मे है। उपदेशको भजनीको के लिये नितान्त उपयोगी है। सामान्य जन को भी जटिल विषयों के अवसर पर मार्ग दर्शक हो सकती है।

आर्य बन्धु रचना हेतु साधुवाद के पात्र हैं। पुस्तक लेखक महोदय से ही प्राप्त की जा सकती है।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

आर्य जगत

आचार्य विश्वश्रवा: जी आँखो की चिकित्सा के लिये अमेरिका मे

आचार्य जी की आखें पर्याप्त समय से खराब थीं। भारत के अनेक चिकित्सालयो मे तथा प्राइवेट नेत्र विशेषज्ञो से चिकित्सा कराई गई, कोई लाभ नहीं हुआ। दोनो आंखो से देखना बन्द हो गया। यह सूचना प्राप्त होने पर मैंने पिताजी (आचार्य जी) को चिकित्सार्थ अपने पास न्यूयार्क (अमेरिका) बुला लिया है।

अत इन दिनो ग्रन्थों का लेखन प्रकाशन तथा पत्रो का उत्तर देना आदि सभी कार्य बन्द रहेगा। आचार्य जी के भारत वापस आने पर सब कार्य पूर्ववत प्रारम्भ हो जायेंगे। आर्य जनता की सूचनार्थ निवेदन है।

—प्रोफेसर डा० वेदश्रवा
पुत्र—श्री आचार्य विश्वश्रवा व्यास
न्यूयार्क विश्वविद्यालय, १२० फोस्टर रोड,
Hopewe'l Jbs New york-12533
USA

नामकरण संस्कार

—आर्य समाज अहमदाबाद के अतरङ्ग सदस्य श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव की तीसरी पौत्री का नामकरण संस्कार दिनाक १२-१०-८६ को विजयादशमी के पावन पर्व पर पूर्ण वैदिकरीत्यनुसार आचार्य श्री रमेश देव जी के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ तथा उसका नाम "श्रुति" रखा गया।

वेद प्रचार

—चम्पारण जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे दिनाक १ सितम्बर से १ अक्टूबर १९८६ तम वेद प्रचार कार्यक्रम जनपद के विभिन्न क्षेत्रो मे हर्ष एव उल्लास के साथ सपन्न हुआ।

—आर्य समाज खेडा अफगान (सहारनपुर) में वेद प्रचार कार्यक्रम दिनांक ११ अक्टूबर से १५ अक्टूबर तक सपन्न हुआ।

वेद पारायण यज्ञ

(१) यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी विवेकानन्द जी प्रभात आश्रम के ब्रह्मत्व मे राजबीर सिंह दाहा (मेरठ) मे दिनाक २४ अगस्त ८६ तक हुआ।

(२) सामवेद पारायण यज्ञ स्व० विवेकानन्द जी प्रभात आश्रम के ब्रह्मत्व मे आर्य समाज मंदिर बुढ़ाना जि० मु० नगर मे दिनाक २६ सितम्बर ८६ से २८ सितम्बर ८६ तक हुआ।

आर्य समाजो के वार्षिक उत्सव

(१) —आर्य समाज रेलवे कालोनी समस्तीपुर बिहार का द्वितीय वार्षिकोत्सव दिनाक १२ नवम्बर से १६ नवम्बर १९८६ के मध्य हर्ष एव उल्लास के साथ सपन्न होगा जिसमें सर्व श्री स्वा० जगदीश्वरानन्द सरस्वती दिल्ली, प० सत्यदेव शास्त्री वाराणसी डा० देवेन्द्र सत्यार्थी जी पटना तथा आर्य जगत के अन्य प्रमुख विद्वान वक्ता-उपदेशक भजनोपदेशक सम्मिलित होगे।

(२) गुरुकुल शुकताल (मुजफ्फर नगर) का २२ वां वार्षिकोत्सव दिनाक १३ से १६ नवम्बर १९८६ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा जिसमे आर्य जगत के ख्याति प्राप्त उपदेशक भजनोपदेशक तथा विद्वजन सम्मिलित होंगे।

(३) आर्य समाज शाहजहाँपुर तथा स्त्री आर्य समाज शाहजहाँपुर सम्मिलित चतुर्दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनाक ६ अक्टूबर से १० अक्टूबर १९८६ तक महिला डिग्री कालेज के प्रागण मे समारोह से मनाया गया तथा दिनाक १२ अक्टूबर १९८६ को विजयादशमी पर्व भी हर्ष एव उल्लास के साथ मनाया गया।

संवेदना

आर्य समाज किदवई नगर कानपुर के पूर्व मन्त्री श्री हरिशकर निगम का दिनाक १९/९/८६ को हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया। ये एक कुशल विचारक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे इनके निधन से आर्य समाज महानगर को गहरा दुख हुआ है।

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर के साप्ताहिक सत्सग २१/९/८६ को दो मिनट का मौन होकर दिवगत आत्मा को सद्गति एव सतप्त परिवार को दुख सहने की शक्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गयी।

शिव सकल्प

डॉ० स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने करवाचौथ (२१ अक्टूबर १९८६) को अपने ५१वें जन्मदिवस पर कच्चाहार के २४ वर्ष पूर्ण करके २५ वें वर्ष मे प्रवेश करते हुए शरीरान्त होने पर किसी नेत्र बैंक को नेत्रदान तथा किसी मेडिकल कालेज को शवदान की इच्छा दुहराते हुये निम्नाकित सकल्प लिये —(१) दो से अधिक गुरुकुलो की स्थापना (२) सपूर्ण भारत मे नि शुल्क एक रूप-शिक्षा-व्यवस्था (३) एक सौ से अधिक लोगो को नैष्ठिक-ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ व सन्यास की दीक्षा (४) ग्यारह से अधिक आर्य समाजो की स्थापना (५) पशुबलि बन्दी (६) वन विस्तार (७) मद्यनिषेध (८) पांच यज्ञ व सोलह सस्कार प्रचार (९) शाकाहार प्रचार (१०) आरोग्य सेवा और (११) भारत की एकता-अखण्डता-सपन्नता।

ज्ञातव्य है कि "गुरुकुल ब्रह्मावर्त-रागातट (कानपुर)" का निर्माण कार्य चल रहा है तथा "गुरुकुल कुमाऊँ" की स्थापना निकट भविष्य मे की जाये गी।

मन्त्री आर्य समाज पिथौरागढ़
(उत्तर प्रदेश)

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

[पृष्ठ ८ का शेष]

प्रणाली के द्वारा देश भक्त आर्य शासक कभी नहीं चुने जा सकते प्राचीन चयन पद्धति से निर्वाचित श्रेष्ठ व्यक्ति जब राज्य की बागडोर सभालेंगे तभी राजनैतिक मदारी और कट्टर विधर्मी स्वय दब जायेंगे।

ससार भरमे एक सी उदार शिक्षा, मानवतावादी सिद्धान्तो का प्रचार तथा सार्वदेशिक सविधान के प्रचलन से ही विश्व को आर्य बनाया जा सकता है "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का मङ्गलमय स्वप्न तभी साकार हो सकता है।

आर्य राष्ट्र में हो सदा
प्रचलित वेद विधान।
न्याय सुरक्षा से बने
सारा विश्व महान्॥

★

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 4599 ४५६६३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
कार्तिक शुक्ल १४
रविवार १६ नवम्बर १९८६ ई०



उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

अंग्रेजी सरकार की दृष्टि मे—

स्वामी दयानन्द विद्रोही फकीर

पिछले कुछ वर्षों से आर्यसमाज क्षेत्रो मे इस बात की चर्चा रही है कि १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध मे महर्षि दयानन्द क्या कर रहे थे। इस बात मे तो सन्देह नही कि ऋषि दयानन्द देश भक्ति की भावना से आतप्रोत थे। नीचे लिखी घटना से उनकी तीव्र भावना पर विशेष प्रकाश पड़ा है।

ऋषि दयानन्द ने कलकत्ता मे कुछ दिन भाषण दिये थे। कभी-कभी कलकत्ता के प्रमुख पादरी विशाल सभा की अध्यक्षता करते थे। वह ऋषि दयानन्द के इस्लाम और ईसाइयत के सम्बन्ध मे अगाध ज्ञान को देखकर विस्मित हो जाते थे। उन्हे इस बात पर आश्चर्य होता था कि अरबी और अग्रजी न जानते हुए भी उन धर्मो की इन्हे कितनी गहरी जानकारी है।

कलकत्ता के उस पादरी से तत्कालीन वाइसराय लार्ड नार्थब्रुक ने स्वामी जी की विलक्षण प्रतिभा की बात सुनकर उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। स्वामी जी ने उससे दुभाषिए के जरिए बातचीत की। इस बातचीत से ऋषि दयानन्द के हृदय की देश भक्ति पूर्ण प्रदीप्त भावना प्रकट होती है। नार्थब्रुक ने इस बातचीत का विवरण इण्डिया आफिस को भेजते हुए लिखा था कि सरकार को इस 'विद्रोही फकीर' पर सतकतापूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए। इण्डिया आफिस को भेजे गए विवरण के अनुसार यह बातचीत निम्न प्रकार हुई थी—

वाइसराय—मुझे बताया गया है कि आप अन्य धर्मो पर जो कटु प्रहार करते है उनसे हिन्दुओ ओर मुसलमानो मे आप के प्रति विरोध भाव पैदा हो गया है। क्या आपको यह भय है कि आज के विरोधी आप पर कोई आक्रमण करेंगे ? विशेष रूप से किसी प्रकार के सरक्षण की आवश्यकता है ?

ऋषि दयानन्द—मुझे इस राज्य मे अपने विश्वास के अनुसार प्रचार करने की पूरी स्वाधीनता है, मुझे अपने ऊपर किसी के द्वारा आक्रमण का किसी प्रकार का भय नही है।

वाइसराय—पडित दयानन्द, यदि ऐसी बात है तो क्या आप इस देश को ब्रिटिश शासन द्वारा दिए गए शाति और सुख के वरदान के सम्बन्ध मे अपनी प्रशसा के कुछ उद्गार प्रकट करेंगे और अपने उपदेशो के साथ की जाने वाली प्रार्थनाओ के समय भारत पर ब्रिटिश शासन की स्थिरता बने रहने की की चर्चा करेंगे ?

दयानन्द—मै किसी भी स्थिति मे इस प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार नही कर सकता, क्योकि यह मेरा दृढ विश्वास है कि मेरे देशवासियो के विकास के लिए और ससार के राष्ट्रो मे सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए भारतवर्ष शीघ्र ही पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करे।

'मै प्रतिदिन प्रात—साय भगवान से प्रार्थना करते हुए यह मॉगता हू कि वह दयालु भगवान मेरे देश को विदेशी शासन से शीघ्र ही मुक्त करें।'

लार्ड नार्थब्रुक ने तो इस स्पष्ट और निर्भीक उत्तर की कतई कल्पना नही की थी। उसने एकदम बातचीत समाप्त कर दी। इस बातचीत मे वायसराय के हृदय मे ऋषि दयानन्द के उद्देश्यो तथा कार्य के सम्बन्ध मे सन्देह उत्पन्न कर दिया तभी उन्होने सरकार को इस विद्रोही फकीर से सावधान रहने की सलाह दी।

(हिन्दुस्तान नई दिल्ली १३-५-६१ से साभार)

अमृत वर्षा

क्या करे, क्या न करे ?

किसी को अभिमान न करना चाहिए। छल, कपट वा कृतघ्नता से अपना ही हृदय दु खित होता है, तो दूसरे की क्या कथा कहनी चाहिये।

छल और कपट उसको कहते है, जो भीतर और बाहर, और रख दूसरो को मोह मे डाल और दूसरो की हानि पर ध्यान न देकर स्वप्रयोजन सिद्ध करना।

कृतघ्नता उसको कहते है, जो किसी के किए हुए उपकार को न मानना है।

क्रोधादि दोष और कटु वचन को छोड शान्त और मधुर वचन बोले और बहुत बकवाद [illegible] रे।

जितना बोलना चाहिए, उससे न्यून वा अधिक न बोले। बडो का मान्य दे, उनके सामने उठकर जाकर उन को उच्चासन पर बैठावे। प्रथम 'नमस्ते' करे। उनके सामने उच्च आसन पर न बैठे।

विरोध किसी से न करे।

सम्पन्न होकर गुणो का ग्रहण और दोषो का त्याग रखे।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप से नव्वरवाल प्रिन्टिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विशम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८५

मार्गशीर्ष कृष्ण ६, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक २३ नवम्बर १९८६

प्रभु की अमृत वाणी—

देव विजयी होते हैं और असुर पराजित

यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्तदेषां नकिरा मिनत्। अरावा चन मर्त्यः ॥

(ऋ० ८-२८-४)

[देवा यथा वशन्ति तत् तथा इत् असत्] देव गणों की जो कामना होती है, जैसा वे चाहते हैं, वह वैसे ही हुआ करती है, वह वैसे ही होता है।

[अराव मर्त्यं चन एषा नकि आ मिनत्] इन देवों का, दिव्य पुरुषो का असुर जो उनसे वमनस्य करते हैं, अपनी शत्रुता से उत्पन्न विरोध और सघर्ष से कोई बिगाड नही कर पाते हैं।]

ससार मे देवासुर सग्राम सतत चलता रहता है। चाहे व्यक्ति का आत्मलोक हो, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय अथवा विश्व लोक, यह युद्ध अनवरत चलता आया है और चलता रहेगा। देवासुर सग्राम है क्या ? अध्यात्मवाद और भोगवाद की दो विभिन्न जीवन शैलियाँ। आर्य जन देवत्व के लिए आध्यात्मिक जीवन को अपनाते हैं और आसुरी वृत्तियो वाले भौतिक भोगवाद के रस का आस्वादन करते हैं। ये दोनो वाद सतत सहगमन करते हैं। कभी भोग वाद प्रबल होकर अपने प्राबल्य का प्रदर्शन करता है तो कभी अध्यात्मवाद का कल्याण पथ विश्व का सुमगलीकरण करता है। देव इस सग्राम मे जो विजय प्राप्त करते हैं, उसका आधार होता है, उन का देवत्व। मानव जब महामानव बनने के लिए उत्थान की श्रेणियो को लाघता है, तो ऋषि, साध्य और देवत्व को प्राप्त करता है। 'ऋषि-दर्शनात' ऋषि दर्शनीय हैं वे 'मन्त्र द्रष्टार' के अनुसार मन्त्रों के द्रष्टा होते हैं। मन्त्रानुकूल आचरण उन्हे 'आर्य' बनाकर 'गतौ' (गतिशील) करना है और वे 'ऋषि स यो मनुर्हित' मानव के कल्याण मे सतत रत रहते है।

साध्य सिद्ध पुरुष होते हैं। वे साधक बनकर साधना करते हैं साध्य को पाने के लिए और जब परमात्मा की अनन्त विराट ज्योति मे अपने को लीन कर देते हैं तो उसके दिव्य ज्ञान से दीप्त होकर देदीप्यमान हो जाते हैं। देवों का काम होता है 'देना' सर्वस्व अर्पण। वे धनार्थी नहीं लक्ष्यार्थी होते हैं।

आज सम्पूर्ण विश्व मे देवत्व नगण्य है। समस्त धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक सस्थाओ के सकल नेता और कार्यकर्ता केवल धनार्थी हैं। लक्ष्यार्थी तो कठिनता से कोई विरला ही है। विश्व के सर्वत्र अध पतन, भ्रष्टाचार और भोगवाद का इसीलिए बोलबाला है।

विश्व के आर्यकरण के लिए हमे दिव्य देव चाहिए। लक्ष्य की सिद्धि के लिए ज्योति शिखा पर जल जाने वाले पतगे, तभी आसुरी वृत्तिया पराजित होगी। देव असुरो,से नहीं उनकी आसुरी वृत्तियो से घृणा करते हैं। आसुरी वृत्तियो के उन्मूलन के लिए चूकि वे सर्वस्व को 'स्वाहा' करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं अतएव विजयश्री उनके चरण चूमती है और आसुरी भाव नष्ट हो जाने पर असुर उनके चरणों मे नतमस्तक हो जाते है क्योकि वे उनका कुछ भी नहीं बिगाड पाते हैं। आध्यात्मिक पथ पर चलने वाले देवों का जब परम सखा परमात्मा 'इन्द्रस्य युजा सखा' उनके साथ सदैव उनका पथ प्रदर्शन करताहै। तो भला उन्हे कौन परास्त कर सकता है।

आर्यो सुमानव बन कर,
देवत्व के पथ पर निरन्तर चलो।
चाहे कितनी भी बाधाए आए,
पर दिव्य पथ से कभी न टलो।
है सर्वशक्तिमान जब सखा तुम्हारा,
कौन करेगा तुम्हें पराजित।
बढ़ो, बढ़ चलो सतत 'वसन्त',
होकर सर्वत अनुशासित ॥

—'वसन्त'

स्नेह का अमृत

वन्दना के गीत गाता जा रहा हू
साधना के स्वर मिलाता जा रहा हु

प्रेम के बन्धन कभी भी टूटने पायें नही
दानवीय प्रलाप हमको त्रस्त कर पाये नही

नष्ट कर दू आसुरी प्रवृत्ति तप के ज्वाल मे
तोड फेकू द्वेष ईर्ष्या छद्म छल एक बार मे

शाति, शुचिता, शुभ्रता ससार मे फैलाऊ मै
सुख समृद्धि प्रपूर्ण वसुधा को बना दिखलाऊ मैं

वेद की अनुपम प्रभा से जगमगाये विश्व सारा
आर्यत्व की आभा प्रसारे विश्व का हर मनुज प्यारा

प्रेम की सरिता बहाता जा रहा हू
स्नेह का अमृत पिलाता जा रहा हू

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

सदस्यता शुल्क	
आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश मे	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक मण्डल—
विक्रमादित्य 'वसन्त' 'वेद वारिधि' | आचार्य रमेशचन्द्र एम ए. | आचार्य वेदव्रत अवस्थी

वर्ष ८९
अङ्क ४७



सम्पादकीय

मननार्थ— रविवार २३ नवम्बर १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि सवत् १९७२९४९०८७

मानवात् पित्र्यात् पथ:

आज मानव का जीवन पथ मानवता का न होकर दानवता का मार्ग हो गया है। दानवता का बर्बर पशु हो कर मानव ने पशुता की सीमा का भी उल्लघन कर दिया है। सकुचित साम्प्रदायिकता तथा कुंठित राष्ट्रीयता का विषपान करके आज का मानव एक क्रूर हिसक प्राणी बन कर रह गया है। आज निर्मम क्रूर पाशविक वृत्तियों से त्रस्त मानवता सिसक रही है। वेदना से सन्त्रस्त और विनाश से भयभीत मानवता के करुण क्रन्दन स्वर सर्वत सतत गूज रहे हैं और विश्व के कर्णधार, जननायक अपने को सर्वथ विवश पा रहे हैं। उनकी समझ मे नहीं आ रहा है कि इस दानवता का सहार कैसे किया जाए। हिंसा से हिंसा शान्त नहीं हो पा रही है। अग्नि से अग्नि बुझ भी कैसे सकती है? एकमेव परमात्मा की अमृतवाणी ही इसका निराकरण कर सकती है सर्वज्ञ प्रभु इस तथ्य से अवगत होने के कारण कि कर्म करने मे उसने जिस मानव को स्वतन्त्र बनाया है, वह उसका अतिक्रमण करके सर्व-श्रेष्ठ के स्थान पर निकृष्टतम बन कर, रक्षक नहीं भक्षक बन जाएगा अतएव वेदवाणी के माध्यम से अपना यह पावन सदेश सनातन ऋषियो के माध्यम से मानवो के कल्याणार्थ दिया—

ते नस्त्राध्व तेऽवत त उ नो अधि वोचत।
मा न पथ पित्र्यान्मानवादधि दूर नैष्ट परावत ॥

(ऋ० ८/३०/३)

इस मन्त्र मे त्रस्त मानव प्रजा के आत्मचीत्कार को व्यक्त किया गया है। दुखी मनुष्य पुकार रहे हैं दिव्य देवों को। वे करुण स्वरो मे देवजनो को सम्बोधित करके कहते हैं—

(ते) वे तुम (न त्राध्व) हमे तारो, हमारा त्राण करो (न अवत) हमे बचाओ, हमारी रक्षा करो। [कैसे?] (ते उ न अधि-वोचत) वे तुम हमे अधिकार पूर्वक बोल कर [क्या] (ते परावत मानवात् पित्रात् पथ न दूर मा अधिनैष्ठ) वे तुम हमे सनातन मान-वता के लक्षण पथ से दूर मत ले जाओ।

मानवता के इस सनातन पथ पर चलने का अधिकार पूर्वक उपदेश मानवी प्रजा को केवल वैदिक ऋषि ही कर सकते हैं और आज विश्व मे उनका सर्वत अभाव है। जिन्हे मानवी प्रजा को तारना है, उसकी रक्षा करनी है, उसे सनातन मानवता के पितृ पथ पर चलाना है, उनका निर्माण कहाँ हो रहा है? स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवनकाल मे केवल वेद प्रचार को ही जन कल्याण का आधार बनाया था। उस वैदिक ऋषि ने जीवन के अतिम समय मे भी यही कहा था कि 'बन्द द्वार खोल दो' पर उनके अनुयायी वेद प्रचार के द्वार बन्द करके मौन बैठे हैं। उन्होने केवल 'आर्य समाज मन्दिर' रूपी भवन खड़े कर दिये हैं जहाँ सप्ताह मे एक दिन कुछ वृद्ध और अधेड़ व्यक्ति केवल औपचारिकता निभाने के लिए सन्ध्या हवन कर लेना और थोड़ा सा सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका से कुछ पाठ कर लेना और कोई विद्वान हो तो उपदेश सुन लेना। यह भी तो केवल सम्प्रदाय का एक रूप मात्र ही है। सम्प्रदायिक व्यक्ति भी तो अपने-अपने उपासना गृह बना कर अपने इष्ट देव की अराधना कर, अपने कर्तव्य को निभा लेते हैं। तो क्या अन्तर रह जाता है उन सम्प्रदायवादियों और आर्य समाजियो मे? क्या वैदिक धर्म ईंट पत्थर के मन्दिर बनाना बतलाता है। स्वामी दयानन्द तो मानवो के मनो को मन्दिर बनाना चाहते थे और उनमे प्रभु के दिव्य ज्ञान वेद का प्रकाश करना चाहते थे और हम हैं कि उनकी इस पावन भावना के प्रतिकूल अपने मन के द्वार बन्द करके बैठे हैं और वेद प्रचार के साधनो के प्रति कहीं कोई रुचि नहीं है।

आज साधारण जन से आप पूछें तो वह आर्य समाज को केवल स्वामी दयानन्द का एक मत मानता है जिस का काम है हवन यज्ञ करना, शुद्धि और विवाह करना। वेद प्रचार की जब उपेक्षा की जाती है तो जन साधारण समझ भी कैसे सकता है कि आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने वेद प्रचार के लिए की थी ताकि विश्व मे वैदिक सस्कृति की पुर्नस्थापना हो और विश्व का आर्यकरण हो। विश्व का आर्य करण तो दूर की बात है, हम स्वराष्ट्र अर्थात् भारत का भी आर्यकरण नहीं कर पा रहे हैं। सस्थाओ के स्वर्णपाश ने हमे माया के बन्धनों मे बाध कर रख दिया है। जिन वैदिक ऋषियो के निर्माण के लिए हम ने गुरुकुलो की स्थापना की थी, क्या वहाँ से वास्तविक रूप मे वेदी, द्विवेदी, त्रिवेदी और चतुर्वेदी निकल रहे हैं। आज कितने ऐसे वैदिक ऋषि हैं जिन्हें वेद कठस्थ हैं और जो साधिकार उनके उपदेश और व्याख्यान की ऐसी क्षमता रखते हो जो मनुष्य को उसके सनातन रक्षक पथ पर चलने के लिए सुप्रेरित कर सके।

आर्य समाजो ने जहाँ खानापुरी के तौर पर साप्ताहिक अधिवेशनो को किसी प्रकार कर लेना अपना कर्त्तव्य निभाना समझा है, वहाँ कभी-कभी वार्षिकोत्सव या वेद प्रचार सप्ताह मना कर वेद प्रचार का साधन समझ रखा है। आप किसी भी वार्षिकोत्सव मे चले जाइये, वहाँ वेद प्रचार के नाम पर राजनीतिक व्याख्यान, मेला, तमाशा और वेद कथा के नाम पर उपनिषद, गीतादि की चर्चा मिलेगी। क्या स्वामी दयानन्द के ये मन्तव्य थे? क्या विश्व का आर्यकरण इन दिखावो से होगा?

राजपत्रित अधिकारी होने के नाते मुझे जब सहारनपुर और मुजफ्फरनगर के दौरे करने पड़े तो एक बार देवबन्द भी जाना पड़ा। देवबन्द इस्लामी गढ़ हैं— दारूल उलूम के विशाल प्रागण मे मैंने जो कुछ देखा उससे मै आश्चर्यचकित रह गया। विदेशो के कितने ही व्यक्ति वहाँ कुरान की आयतो का अध्ययन करते हैं, शोध करते हैं। वहाँ के पठन-पाठन, निवास और खान-पान को देख कर मैंने जब अपने गुरुकुलों से उसकी तुलना की तो मेरे नेत्र अश्रुपूरित हो गए। वहाँ आठ वर्ष की अवधि अध्ययन के लिए नियत है और सहस्त्रो की सख्या मे प्रचारक तैयार हो रहे हैं परन्तु हमारे पास ऐसे वेद विद्यालय कहीं नहीं हैं?

इन पक्तियों को लिखने का मेरा उद्देश्य यही है कि जिनके हाथ मे आज आर्य समाज का नेतृत्व है वे गम्भीरतापूर्वक विचारें। विश्व के मानव त्राण के इच्छुक हैं। वे रक्षार्थ दिव्यजनों को पुकार रहे हैं। शाश्वत सार्वपोषक मानवीय पथ से भ्रष्टों को पुन सन्मार्ग पर आरूढ़ केवल वैदिक ऋषि कर सकते हैं, जिन्हे आर्य समाज को बनाना है।

सनातन पितृ पथ से भटक कर इस पाशविक दानव को मानव बनाना आज हमारा प्रमुख कर्त्तव्य है। यदि विश्व को प्रलय से बचाना है तो आर्य जन आगे आए। वैदिक जन वेद और देवियाँ बनें, ऋषि और ऋषिकाए बनें, अपने करो में वेदों को दृढ़ता से थामे, अपनी वाणी से प्रभु के कल्याण प्रद वचनों को बोलें, अपनी जीवन ज्योति जला कर मानवों के जीवन दीप जलाए, पशुता को निष्कासित कर मानवता का सरस सचार करें, बन्धुत्व के बन्धन मे मानवीय प्रजा को बान्धें। स्नेह सूत्र ही एक मात्र विकल्प है त्रस्त सतप्त मानवी प्रजा के त्राण और रक्षण का।

—"वसन्त"

पश्चाताप से पाप विमोचन

–महात्मा दयानन्द, तपोवन, देहरादून

परमात्मा की भक्ति धारा को अन्त करण मे प्रवाहित करने का एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए अपने को शोधना, पवित्र करना । आत्म सुधार से ही विश्व का सुधार होता है । 'आप शुन्धन्तु एनस' (यजु २०/२०) धाराए पापो को शोधती है । कौन सी धाराए ? पश्चताप की धाराए जो अश्रुओ के रूप मे नयनों से बहती है जब मानव आत्म निरीक्षण करके अपनी दुरिताओ को देखता है और उनसे उत्पन्न ग्लानि के कारण सच्चा रुदन करता हैं । जब तक हमारी वाणी मे कटुता है भीतर की गदगियाँ हैं, अनृत हैं, सामाजिक अभिद्रोह है और मिथ्या दोषारोपण की वृत्ति है हमारा आत्म कल्याण कदापि सम्भव नहीं है, चाहे हम भक्ति का कितना ही स्वाग और आडम्बर क्यो न कर लें ।

–'वसन्त' (सम्पादक)

इदमाप. प्रवहतावद्य च मल च यत् यच्चाभिदुद्रोहानृत यच्च शेपे अभिरुणम् आपो मा तस्मादेनस प मानच मुञ्चनु (यजु०६/१७ अथव०७/८९/३)

यत् अवद्य च च मल च यत् अभि दुद्रोहं अन ऋतम् च यत् अ भीरुणा शेपे आप इद च बहत तस्मात् एनसः आपः मा च पवमान· मुञ्चतु

वेद मे मनुष्य जाति के सुधार का उपाय बताया मनुर्भव-ऐ इन्सान! इन्सान बन ! इन्सान हम केवल शकल से नहीं विचारो और आचरण से बनें । सुधारक प्रचारक कीर्तन मण्डलियाँ बहुत गला फाड़-फाड़ कर लाऊडस्पीकरो पर बोलते हैं, हो बिगाड़ हो रहा है। बातें वह ठीक कहते हैं फिर भी असर उलटा क्यो ? इस मत्र ने सही रोचक उत्तर दिया है मैं दूसरो को सुधार के सुझाव देता हू। परन्तु वह क्रिया मेरे जीवन मे नहीं होती । अत मेरा प्रवचन बेअसर होता है। मैं जबान से बोलता हू परन्तु मेरा असली जीवन वैसा नहीं बोलता ।

सुधार के नाम पर धधा व्यापार हो रहा है–दूसरो के दोषों के देखना सरल अपने दोष स्वीकारना कठिन । दूसरो के दोष प्रकट करना सरल । अपने दोष प्रकट करना कठिन है । अपने दोष स्वीकारना प्रकट करना बडी वीरता व साहस का काम है । सर्वप्रथम अपने व्यसनो को त्यागें फिर दूसरो से त्याग कराने का प्रयास करें तो

अध्यात्म-सुधा

सिद्धान्त बना पहले आत्म सुधार फिर परिवार समाज राष्ट्र सुधार होगा ।

[१]आत्म सुधार हेतु मत्र मे पाँच बातें गिनाई गई है जो त्याज्य हैं ।

१ अवद्य २. मल ३ अभिद्रोह ४ अनृत ५ लाञ्छनवृति

(१) वद्य से अवद्य शब्द बनता है । वद्य कहने योग्य, अवद्य हुआ न कहने योग्य । इसे विचारो अशलील, असत्य, कटु, उद्विग्न करने वाली बातें–अशुभ अप्रासगिक, अशुद्ध,अनाधिकार से बोलना उत्साहहीन करना । गलत मार्ग बताना, अभिद्रोह– अभि का अर्थ है सब निन्दा करना, पराए दोषो की चर्चा उछालना यह सब अवद्य है जैसे मत्र मे अवद्य को सर्वप्रथम त्याज्या बताया–ठीक इसी तरह महर्षि दयानन्द जी ने साधना मे वाक् वाक् को सर्वप्रथम स्थान दिया जिनमे सर्व बातें अन्तगत हैं। इन दोषो की चर्चा करने वाले अपने जीवन मे यही दोष भर लेते हैं ।

(२) मल–जो गन्दगी है वह मल है अपवित्रता है

(क) विचारो की अपवित्रता मस्तिष्क का मल है ।

(ख) भावनाओ की अपवित्रता हृदय का मल है

(ग) रोग अजितेन्द्रता शरीर का मल है ।

(घ) कुदृष्टि नेत्रो का मल है

(ङ) कुश्रवण कानो का मल है

(च) अभक्ष्य भक्षण की इच्छा रसना का मल है स्वाद की गुलामी है

(छ) नास्तिकता और अधार्मिकता आत्मा का आवरण या मल है

(३) अभिद्रोह–अभि क अर्थ सब ओर से द्रोह का अर्थ अनिष्ट करना ईर्षा द्वेष अभिद्रोह का मूल कारण है । किसी की उन्नति, प्रतिष्ठा, सफलता पर जब किसी व्यक्ति को ईर्षा उपजती है दाह होता है वह विवेकाहीन हो जाता है। ससार का कोई भी पाप नहीं जो अभिद्रोही न कर सकता हो । उपमा के रूप मे पाकिस्तान-भारत से ईर्षा करता है और सिखो को विध्वसक ट्रेनिंग अपने खर्च पर दे रहा है ऐसे आतकवादियो से सब कुछ सम्भव है । निर्दोषो का वध, राष्ट्र को अपमानित कमजोर करने की चेष्टा ।

(४) अनृत–जो ठीक नहीं, विशेषता से बोलने व व्यवहार मे गलत अन्याय युक्त हो वह अनृत होता है । अनृत भावन ओ से ही भ्रष्टाचार की उत्पत्ति होती है । थोडे म स्वार्थ को सिद्धि होती है ।

(क)जहा सभव हो तो अनृतचारी उससे चूकते नहीं । हमारे ही देशवासी थोडा सा धन लेकर मिल्ट्री के कीमती राज विरोधियो को बेच डालते हैं ।

(ख) रिश्वत लेकर पापो को दोष मुक्त घोषित कर देते हैं इस तरह पापो को प्रोत्साहित करते है

(ग) पतन काल मे वेद मन्त्रो के स्वार्थियो ने गलत अर्थ किए सुन्दर सिद्धातो को मोड-तोड कर साधारण जनता के समुख रख कर अपनी पूजा कराने हेतु वेद ज्ञान के महत्व को घटा दिया–एक ज्योति को धुँधला करने का प्रयास किया।

(५) निर्दोषो पर दोषारोपण करना । यह भी दाह के कारण होता है एक जघन्य पाप है वस्तुत ईर्षालू निन्दा करने वाले इनमे पाँचो मे से किसी न किसी दोष मे लिप्त रहते है । मत्र के दूसरे चरण मे इनके दो उपचार भी बतलाए गए है ।

१ प्रथम उपचार बताया–आप –आप के कई अर्थ विद्वान करते है । जल धारायें, शीतल स्वभाव सत सुकर्म प्राय वेद मे आप का प्रयोग बहुवचन मे होता है । प्रसगवश यहाँ आप का अर्थ पश्चाताप की अश्रुधारा उपयुक्त लगता है । पश्चताप अपने कुकर्म गलती को समझना स्वीकारना और स्वय उसके प्रति अत्यन्त दुखी होना । यह एक प्रकार की स्वत निर्धारित दण्ड का रूप होता है ।

यदि इस प्रकार के पश्चाताप के उपरान्त फिर उसी दोष की पुनरावृत्ति न होने का दृढ सकल्प हो तो यह अश्रुधारा मन की मलिनता को धोने के लिए बडी अचूक औषधि है ।

२ दूसरा उपचार बताया पवमान– पवमान तो वस्तुत परमेश्वर है । पवित्र होने के लिए तप करना । जिस अग से पाप हुआ उससे प्रायश्चित करना, उसे सजा देना, प्रायश्चित के साथ-साथ पावन परमेश्वर से प्रार्थना भी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

देश दर्शन

अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी जहां हिन्दू छात्राओं की अस्मत से खिलवाड़ की जाती है

—शिवकुमार गोयल

अलीगढ़। मुस्लिम विश्वविद्यालय कभी साम्प्रदायिकता तथा पाकिस्तान समर्थक गतिविधियो के कारण चर्चित था किंतु इन दिनो छात्राओ के यौन शोषण हिन्दू छात्राओ को प्रलोभन मे फँसाकर उनके धर्म परिवर्तन कर मुस्लिम छात्रो व शिक्षको के साथ निकाह करा देने जैसी शर्मनाक घटनाओ के कारण विवाद व चर्चा का विषय बना हुआ है। पश्चिम उत्तर प्रदेश के सर्वाधिक प्रभावशाली हिन्दी दैनिक 'अमर उजाला' के दो अको मे छात्राओ के यौन शोषण व उत्पीडन की तथ्यात्मक रपट छपते ही शिक्षा क्षेत्र मे हडकम्प सा मच गया। आगरा मण्डल के अनेक कालेजो के छात्रो सामाजिक व धार्मिक सगठनो ने इस घृणित कार्य मे लिप्त शिक्षको व छात्रो के खिलाफ कडा कार्यवाही किये जाने तथा इस सस्था के साम्प्रदायिक व राष्ट्र विरोधी स्वरूप की जाच किये जाने की माग कर डाली है।

इस विश्वविद्यालय के उप कुलपति पद पर जहा राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेन जैसे प्रख्यात शिक्षाविद् रहे हैं वहीं वर्तमान उपकुलपति सैयद हासिम अली पर तरह-तरह के आरोप लगाए जाने से यह तो स्पष्ट हो ही गया है कि इस विश्वविद्यालय का स्तर दिनो दिन गिरता जा रहा है। उप कुलपति पर सार्वजनिक रूप से यह आरोप लगाया जा रहा है कि वह कभी भूतपूर्व रियासत हैदराबाद के भारत विरोधी व पाकिस्तान समर्थक सगठन "रजाकार" से सम्बद्ध थे तथा इस आरोप मे उन्हे जेल की हवा भी खानी पडी थी।

हिन्दू छात्रायें ही शिकार

इस विश्वविद्यालय मे छात्राओ विशेषकर हिन्दू छात्राओ के साथ बलात्कार किये जाने उन्हे प्रलोभन व दबाव मे फँसाकर धर्म परिवर्तन कर मुस्लिम शिक्षको अथवा छात्रो के साथ उनका निकाह कर दिये जाने की शर्मनाक घटनाए तो समय-समय पर प्रकाश मे आती रही हैं। किन्तु असली विस्फोट १७ मई १९८६ को उप कुलपति सैयद हाशिम अली द्वारा मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो० एम० ए० बेग को छात्राओ के यौन शोषण के आरोप मे निलम्बित कर दिये जाने से हुआ। मनोविज्ञान विभाग की कुछ छात्राओ ने उप कुलपति को पत्र लिखकर प्रो० बेग तथा उनके मित्र रीडर डा० बी० डी० गुप्ता पर यौन सम्बन्ध स्थापित करने के लिए विवश करने के सनसनीखेज आरोप लगाये थे। उप कुलपति ने जाच के बाद पहले प्रो० बेग को निलम्बित किया तथा बाद मे डा० गुप्ता को निलम्बित किये जाने के बाद इन दोनो ने उप कुलपति व उनके समर्थक शिक्षको व कुछ छात्रो पर हिन्दू छात्राओ का उत्पीडन कराये जाने के प्रत्यारोपण लगाकर मामले को और गम्भीर बना दिया।

बहरहाल यौन शोषण कोई भी करता हो, किन्तु यह तो उजागर हो ही गया है कि कभी देश विदेश मे अग्रणी समझी जाने वाली यह शिक्षण सस्था आज पतन की पराकाष्ठा पर पहुच चुकी है।

एक छात्रा सुनीता टडन ने लिखित शिकायत मे आरोप लगाया था कि मरिस रोड पर स्थित भव्य कोठी निगार विला शिक्षकों की अय्याशी का अड्डा बनी हुई है। छात्राओ को बहाने से वहीं बुलाया जाता है तथा वासना का शिकार बनाया जाता है।

कु० टडन ने उप कुलपति को दिये ज्ञापन मे आरोप लगाया कि वह पितृविहीन है अतः अकेली अपनी माँ के साथ रहती है। वह मनोविज्ञान विषय मे शोध कर रही है। विभागाध्यक्ष प्रो० बेग ने उसे टाप कराने तथा रुपये पैसे से सहायता करने का लालच देकर यौन सबध बनाने पर दबाव डाला। जब उसने इस घिनौने कृत्य से इन्कार कर दिया तो उसे तरह-तरह की धमकियाँ दी गई। मुझे साजिश रच-कर बदनाम किया गया कि मैं एक मुस्लिम छात्र के साथ विदेश भागने वाली हू। कु० टण्डन ने आरोप लगाया कि प्रो० बेग ने उसके सामने कहा तुम पर दिल आ गया है अत तुझे छोडूगा नहीं।

छात्रा ने निर्भीकता से कहा यदि मेरे साथ न्याय नहीं हुआ तो मैं न्यायपालिका के दरवाजे भी खटखटाऊँगी और इन गुण्डो का पर्दाफाश करके ही रहूगी जिससे वे अन्य लडकियो के साथ खिलवाड न कर सकें।

कम्प्यूटर विभाग के शिक्षक हामिद हसन द्वारा एक हिन्दू छात्रा को भगा ले जाने का मामला भी हाल ही मे हुआ है। उप कुलपति ने उसकी सेवाए समाप्त कर दी है।

दो गुट आरोप प्रत्यारोप

मुस्लिम यूनिवर्सिटी मे शिक्षको व छात्रो के दो गुट बने हुए हैं। एक गुट मे प्रो० बेग तथा डा० गुप्ता हैं तथा दूसरे मे ख्वाजा शमीम अहमद, डा० कबर हुसन, डा० जमील कादरी आदि हैं। प्रो० बेग तथा उनके साथी दूसरे गुट पर सकीर्ण व साम्प्रदायिक होने का आरोप लगाते है जबकि अपने को राष्ट्रवादी व धर्मनिरपेक्ष घोषित करते हैं वे कहते हैं कि क्यो कि वे (प्रो० बेग तथा डा० गुप्ता) अल्पसख्यक हिन्दू छात्राओ को गुण्डो के चगुल से बचाने का प्रयास करते रहे हैं इसलिए सुनियोजित रूप से उनका चरित्र हनन करने के लिये एक बदनाम छात्रा से हम पर निराधार आरोप लगवाये गए हैं। डा० गुप्ता का स्पष्टीकरण है कि साम्प्रदायिक व शरारती मुस्लिम छात्र व शिक्षक हिन्दू छात्राओं का यौन शोषण तथा धर्म परिवर्तन कराते रहे हैं। मैं उनका कडा विरोध करता हू। इसलिये बौखलाकर उन्होंने मेरे तथा प्रो० बेग के चरित्र हनन की साजिश की है।

छात्रा से अलिखित विवाह

मजेदार पहलू यह है कि प्रो० बेग एक ओर दूसरों पर छात्राओ के यौन शोषण का आरोप लगाते हुये अपने को पाक साफ बताते हैं, किन्तु बातचीत मे वह यह स्वीकार करते हैं कि उन्होंने अपना चौथा विवाह

(शेष पृष्ठ १० पर)

पुस्तक-परिचय

समीक्षा

आर्य समाजकाइतिहास

(पञ्चम भाग)

साहित्य के क्षेत्र में आर्य समाज का कार्यकलाप

–आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०, सम्पादक आर्य मित्र' लखनऊ

आर्य जगत के ही नहीं अपितु भारत के विद्याविद विचारकों मे डा० सत्यकेतु जी विद्यालकार का विशेष स्थान है आप अपने जीवन मे मेधावी छात्र, लोकप्रिय अध्यापक, सफल गृहस्थ, क्रियाशील आर्य समाज के कार्यकर्ता, कुशल प्रशासक एव साहित्यकार तथा सिद्धहस्त लेखक रहे है। डा० सत्यकेतु जी ने वैदिक साहित्य दर्शन, उपनिषद-गीता आर्य समाज के सिद्धात विषयक ग्रन्थ, इतिहास, समाज शास्त्र-पुराण आदि विभिन्न विषयो पर अपनी रचनायें प्रस्तुत की तथा विद्वानो मे समादृत एव शिक्षा जगत मे अध्ययन हेतु मनोनीत हुई, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के इतिहास मे डा० सत्यकेतु जी का भी एतिहासिक योगदान है। सक्षेप मे डा० सत्यकेतु जी को साहित्य-मनीषी से अलकृत किया जा सकता है।

कतिपय वर्ष पूर्व डा०सत्यकेतु जी ने एक नवीन बृहद कार्य सम्पादन का बीडा उठाया है। वह है 'आर्य समाज का इतिहास' लेखन जो विस्तृत एव व्यापक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाय तथा आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवनी के साथ आर्य समाज एव उससे सम्बन्धित सभी दिशाओ पर व्यापक प्रभावो हो इसके लिए स्वय ब्रह्मा के पद पर आसीन होते हुए प्रेरणास्रोत रहे और उच्चकोटि के आर्य जगत के विद्वानो का सहयोग लिया। और सुसाहित्य के प्रकाशन के लिए आर्य स्वाध्याय केन्द्र३-ए-१/३२सफदरगज इन्क्लेव नई दिल्ली-२९ का सचालन किया है।

प्रस्तुत समालोच्य पुस्तक उसी 'आर्य समाज का इतिहास' का पाचवा भाग है। इसमे आर्य समाज सम्बन्धी सैद्धान्तिक एव प्रचारक सभी साहित्य पर विस्तृत रूप से गवेषणात्मक प्रकाश डाला गया है और प्रधान सपादक के रूप मे डा० सत्यकेतु जी विद्यालकार डी लिट-कुलाधिपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हैं तथा अन्य दो विद्वान डा० भवानीलाल भारतीय एम० ए०-पी० एच० डी०-प्रोफेसर एव अध्यक्ष दयानन्द पीठ-पजाब यूनीवर्सिटी चण्डीगढ़ तथा प्रोफेसर हरिदत्त वेदालकार एम० ए० भूतपूर्व इतिहास प्राध्यापक-गुरुकुल विश्वविद्यालय कागड़ी है।

डा०सत्यकेतु जी ने 'आर्य समाज का इतिहास' लेखन का जो महायज्ञ प्रारम्भ किया है उसके पीछे केवल एक उद्देश्य है। स्वामी दयानन्द सरस्वती भारत के उन्नीसवीं शताब्दि के उत्तरार्थ के महानतम महापुरुष एव नवजागरण के प्रणेता है वह राष्ट्रीय नेता और राष्ट्र को आधारशिला के वैदिक ज्ञान स्रोत के साथ समन्वयकारी है। परन्तु उनके विषय मे इतिहासकारों ने न्यायपूर्वक नहीं लिखा। बहुत उन्हें समझ नहीं सके बहुत उनको केवल साम्प्रदायिक महत्व के रूप मे प्रस्तुत करते रहे, इस कमी को इतिहासकार के रूप मे डा० सत्यकेतु जी ने समझा और इस मिथ्या भ्रान्ति के निराकरण के लिए तथा स्वामी दयानन्द और उनका आर्य समाज विषयक आन्दोलन का सही चित्र प्रस्तुत हो तदर्थ इस बृहद् यज्ञ का समायोजन है जो दुस्तर कार्य है परन्तु डा० सत्य केतुजी के लिए यह सम्भव है तथा प्रभु का उन्हे आशीर्वाद प्राप्त है।

समालोच्य ग्रन्थ आर्य समाज का इतिहास भाग पाच आर्य समाज विषयक बृहद् साहित्य [illegible] इसमे [illegible] अध्याय हैं जिसमे विस्तृत गवेषणात्मक रूप मे पठनीय सामग्री प्रस्तुत है। पहिले मे आर्य जाति का इतिहास-वेद ब्राह्मण आरण्यक आदि पर प्रकाश डाला गया है। दूसरे मे स्वामी दयानन्द जी द्वारा प्रणीत साहित्य सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका-सस्कार विधि आदि ग्रन्थो की जानकारी है। तीन से [illegible] अध्यायो मे आर्य समाज का वैदिक, उपानिषदिक-दर्शन-नीति स्मृति के सम्बन्ध मे विवेचन है। सातवें मे आर्य समाज के सिद्धान्त तथा आठवें मे कर्मकाण्ड पर प्रकाश है तथा नवें अध्याय मे आर्य समाज ने जो 'खण्डन' साहित्य प्रस्तुत किया है उसकी जानकारी है।

अध्याय दस मे स्वामी दयानन्द जी के जीवन चरित के सम्बन्ध मे जो उल्लेख है उसकी विवेचना है। अध्याय ग्यारह-बारह-तेरह मे क्रमश आर्य समाज सम्बन्धी विविध साहित्य, सस्कृत साहित्य, तथा हिन्दी साहित्य मे जो उपलब्धि है उस पर प्रकाश है। चौदह मे आर्य समाज के नेताओ के जीवन विषयक विवरण है। अध्याय पन्द्रह मे फुटकर प्रकीर्ण साहित्य तथा सोलह मे आर्य समाज के भजन साहित्य पर विवेचन है। सत्रह मे आर्य समाज सम्बन्धी पत्र-पत्रिकायें जो प्रकाशित हो रही है उनका परिचय है अट्ठारह मे शोध ग्रन्थो का उल्लेख है। उन्नीसवें अध्याय मे भारत के अन्य भाषाओ तथा अग्रेजी मे जो आर्य समाज विषयक साहित्य है उसकी रूपरेखा है। बीसवें मे आर्य समाज सबधी साहित्य के प्रकाशको का परिचय है। और अध्याय इक्कीस मे आर्य समाज के विरोध मे जो साहित्य लिखा गया है उसका विवरण है यह इक्कीस अध्याय-आर्य समाज सबधी साहित्य एव स्वामी दयानन्द जी के जीवन के सम्बन्ध मे विस्तृत रूप से अध्येता डा० भवानी लाल जी भारतीय द्वारा लिखित है।

अध्याय बाइस तेइस-चौबिस तथा पचीस के लेखक डा० हरिदत्त जी वेदालकार एम० पी० अध्यापक गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय है। आप ने क्रमश इन अध्यायो मे हिन्दी गद्य साहित्य काव्य साहित्य एव ललित कलाओ मे आर्य समाज सबधी जो उल्लेख है सदर्भ है उनका व्यापक रूप से प्रस्तुतीकरण किया है और अन्तिम अध्याय मे आर्य समाज सबधी जो अन्य ज्ञान विज्ञान है उसका समावेश है।

आर्य समाज के इतिहास लेखन का यह क्रम पूर्ण रूपेण स्तुत्य है और इसका पूर्णत्व तभी हो सकता है जब आर्य जगत का पूर्ण सहयोग इस कार्य मे डा० सत्यकेतु जी विद्यालकार को प्राप्त हो। आज के युग मे जब महगाई मे कागज के मूल्य बढते जाते हैं-मुद्रण व्यय भी अधिक है फिर भी अति उत्तम कागज पर स्वच्छ मुद्रण है अच्छी मजबूत जिल्द-बन्दी है तथा टाइटिल पेज आकर्षक है। और मूल्य सौ रुपया मात्र है। आशा है आर्य समाज-आर्य जन एव शिक्षा सस्थायें इस ग्रन्थ का समादर करेंगी और अधिक से अधिक सख्या मे इसे खरीद कर प्रकाशक की सहायता तथा पठन मे रुचि रखने वालो के प्रति उपकार करेंगी। लेखक प्रकाशक अभिनन्दनीय है। सपर्क कीजिये –आर्य समाज का इतिहास भाग–५ प्रधान सम्पादक–डा० सत्यकेतु जी विद्यालकार प्रकाशक आर्य स्वाध्याय केन्द्र ए-१/३२, सफदरगज इन्कलेव नई दिल्ली–२९

० ० ० ०

दयानन्द जन्मगांठ को 'वेददिवस' मनाना चाहिए

श्री अभयदेव शर्मा, एम० ए०, पी-एच डी अध्यक्ष
वेद संस्थान, अजमेर तथा नई दिल्ली

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की बदौलत 'आर्य' शब्द गत शताधिक वर्षों से काफी प्रचलित हुआ है। यह वैदिक शब्द मनुष्य के शब्दकोष के प्राचीनतम शब्दों में से है। आर्यत्व की कसौटी वेद है। वेद का शाब्दिक अर्थ वेदन, वेदना, आत्मानुवेदन, अर्थात्, आत्मबोध है। आत्मस्मृतिपूर्वक आचरण करना वेदव्यवहार है और यही आर्यत्व है। वेद ही आर्य का परम मित्र है। जहा वेद है वहा आर्यत्व है। जहा वेद और आर्यत्व है वहा दयानन्द हैं। जहा वेद नहीं और आर्यत्व नहीं वहा दयानन्द भी नहीं हैं। दयानन्द और वेद तो आज के युग मे पर्यायवाची शब्द हैं। दयानन्द वेदहीन आर्य की कल्पना नहीं कर सकते। और वेदहीन लोगो की जमात आर्यों का समाज हो नहीं सकती।

[२] यह वेद तत्त्व जिन पोथियो मे वर्णित हुआ उन्हे भी लक्षण से यही नाम दिया गया। आजकल वेदो का स्वाध्याय घटता जा रहा है। वेदों की भाषा सस्कृत है। सस्कृत के अध्ययन के ह्रास के कारण वेद दूर होते जा रहे हैं। सस्कृत तो क्या, आज तो हिन्दी भाषा का भी प्रौढ़ ज्ञान विरल होता जा रहा है। खडी बोली, हिन्दी के गढ़, उत्तर प्रदेश तक मे साहित्यिक ललित हिन्दी को क्लिष्ट भाषा कहने वाले बहुमत मे आते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति मे वेद ही क्या, सारा सस्कृत वाङ्मय दूर होता जा रहा है। त्रिभाषा-सूत्र मे सस्कृत पर आघात हुआ। नई शिक्षा नीति मे भी सस्कृत का कोई गौरवास्पद स्थान नहीं है। ऐसी अवस्था मे सस्कृत और वेद की रक्षा पारिवारिक सस्कृति के रूप मे ही सम्भव है।

दयानन्द के प्रति हमारी श्रद्धा कसौटी पर है। वह दयानन्द का नाम लेने तक का पात्र नहीं है जो सस्कृत सीखने का यत्न नहीं करता और सस्कृत के सहारे वेदानुशीलन नहीं करता। जहा सस्कृत और वेद का अध्ययन-अध्यापन नहीं होता वह शब्द के वास्तविक अर्थ मे, "आर्य"-समाज नहीं है। कहा जाता है कि भूतल पर कई सहस्र आर्यसमाजें हैं। पर कितनी "आर्य"-समाजें है जहा वेद का "पढ़ना-पढ़ाना" होता है और परिणामत जिसके सब सदस्य वेदाध्येता हो? जब वेद का ही पता नहीं हैं तो वेदाचार कैसे बनेगा और वेदाचार के बिना आर्यत्व कैसे उभरेगा? परिणाम सामने है कि अपने घर मे मिया मिट्ठू कितना ही बन लिया जाए, अपने सिद्धातो की शाश्वतता और सतत और व्यवस्थित रूप से साक्षात सृष्टिविज्ञान देख रहा है। इस विज्ञान के होते वह वेद को मानव-मस्तिष्क की रचना मानने को तैयार नहीं है।

वेदो की अपौरुषेयता आधुनिक मस्तिष्क को तर्कबुद्धि से समझ नहीं आती। पर अब वेदानुशीलन करने वाला वैज्ञानिक कहता है कि वेद विश्वव्यापी चेतनशक्ति की ही देन हो सकता है अन्यथा अतिप्राचीनकाल मे, जब प्रयोगशालाए और वैज्ञानिक परीक्षण-यत्र नहीं थे, अत्याधुनिक ही नहीं वर्तमान विज्ञान को भी अज्ञात जो



सार्वभौमिकता के कितने ही दावे किये जायें, दुनिया की निगाह मे आर्यसमाज भी एक वर्ग विशेष, एक सम्प्रदाय है और दयानन्द एक सम्प्रदाय के प्रवर्तक-आचार्य हैं। दयानन्द ही इस वर्ग के लिये परम प्रमाण हैं भले ही दयानन्द अपने को नहीं, वेद को परम प्रमाण मानते हो।

(३) "वेदो वाले" दयानन्द का कार्य "वेदो के परवाने" ही कर सकेंगे। दयानन्द की वेद-विरासत की रक्षा करने के लिये "सस्कृत-वेद-वेदाचार" इस त्रित की सुध लेने की पुन आवश्यकता है। वेदाध्ययन का नवीन सोपान वेदों की वैज्ञानिक व्याख्या के रूप मे उभर रहा है। वैज्ञानिक वेद मे वैज्ञानिक तथ्य वेद नामक ग्रन्थो मे हैं वे किसी भी मनुष्य की उपज्ञा नहीं हो सकते। कहिये, क्या कभी किसी को यह कल्पना थी कि अपौरुषेयता का प्रतिपादन एक ऐसी सर्वथा अप्रत्याशित दिशा से इस प्रकार हो सकेगा? वेदो मे कहीं से कोई मत्र व पक्ति का शब्द उठाकर कह देना कि "देखिये, वेद मे विज्ञान है", और बात है। और वेद मे एक छोर से अन्तिम छोर तक विज्ञान का प्रतिपादन होता हुआ दिखा देना कुछ और ही बात है। विश्वास न हो तो "वेद-सविता" मासिक पत्र मे नवम्बर १९८६ से धारावाही प्रकाशित होने वाली लेखमाला "यजुर्वेद की वैज्ञानिक व्याख्या' की प्रतीक्षा कीजिये जो प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री और वैदिक चिन्तक, डा० मनोहर-लाल गुप्त करने जा रहे हैं।

(४) तो दयानन्द के वास्तविक श्रद्धालुओ को अब वेद, सस्कृत और वेदाचार की रक्षा के लिये पुन सन्नद्ध हो जाना चाहिये और दयानन्द का जन्म दिवस [भाद्रपद शुक्ला ६] 'वेददिवस' के रूप मे मनाना चाहिये। इस दिन सकल्प लिये जायें कि हम सस्कृत सीखेंगे, वेदसहिताओ का क्रमश नित्य पारायण किया करेंगे, वेद का स्वाध्याय किया करेंगे, वेद प्रतिपादित आदर्शों के अनुसार जीवन को ढालेंगे।

अब जब कि ऐतिहासिको ने दयानन्द की जन्म तिथि निश्चित कर ली है, और वेद-सस्थान ने गत १२ सितम्बर १९८६ को वैदी तिथि के अनुसार दिल्ली मे उसका समारोह आयोजित करके मार्ग-प्रदर्शन कर दिया है और उसमे उपस्थित होकर और समारोह के आयोजनार्थ सस्थान को साधुवाद देकर सार्वदेशिक-आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान जी ने इसे परम्परा बनाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है तो फिर आर्यसमाजो को भी इस जन्मगाठ को प्रतिवर्ष सर्वत्र मनाना आरम्भ कर देना चाहिये। पर इसे मात्र रस्म-अदायगी का रूप न मिल जाये। दयानन्द और वेद अभिन्न हैं। अत दयानन्द का जन्म दिवस वेदनिष्ठा के पोषण के लिये मनाना चाहिये--व्रतोपवास-पूर्वक, सकल्पग्रहण-पूर्वक।

ऐसा करने से वेद हमारे परिवारो मे जीवित रह सकेंगे, वेदाचार के लिये पथ-प्रशस्त हो सकेगा। प्रत्येक परिवार से कम से कम एक सन्तान सस्कृत और वेद को समर्पित की जानी चाहिये। आपके बच्चे-बच्चिया चाहे कोई भी आजीविका व धन्धा अपनायें, भले ही वे डाक्टर, वकील, इजीनियर, व्यापारी, मैनेजर, राजनीतिक, इत्यादि बनें, पर सस्कृत

(शेष पृष्ठ १० पर)

स्वागत गान

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. शताब्दी समारोह लखनऊ के अवसर पर एक ऐतिहासिक आर्यवीर उद्घोष स्वागत गान (१७-१०-८६)

कविता कलाप

वैदिक धर्म प्रचार

राजर्षि रणञ्जयसिंह जी
भूपति भवन, अमेठी (सुलतानपुर)

आज आर्यावर्त देश से हमने यह घोष सुनाया है।
आवो ! आवो ! विश्व बन्धुओ ! वैदिक युग अब आया है।१।
आज आपके स्वागत हित, हिम ऐरावत शिर बांध खड़े।
तीन दिशा मे सिन्धु तथा तटवर्ती गिरि है बड़े-बड़े।२।
'गग यमुन' सरजू गडक औ ब्रह्म नर्मदा कलश लिये।
मध्य सतपुड़ा, विन्ध्य शृंगगण, खड़े प्रेम मय हर्ष लिये।३।
खड़े सेतु लका सीमा पर, काश्मीर गुलदस्त लिये।
मथुरा, अवध, प्रयाग नालिंदा, पाटलिपुत्र इन्द्रप्रस्थ लिये।४।
हरिद्वार कांगड़ी, विश्व विद्यालय काशी ज्वालापुर।
खड़ी त्रिवेणी झाँसी रानी, गढ़ चित्तौड़ लिये निज शूर।५।
'सोमनाथ' बूँदी की रानी, राजपूत इतिहास लिये।
टकारा ऋषि जन्म भूमि, अजमेर वेद के भाष्य लिये।६।
पजाब सिंह रणजीत यहाँ औ वीर लाजपत प्राण लिये।
लेखराम श्रद्धानन्द स्वामी निज हुतात्म बलिदान लिये।७।
दानवीर नृप हरिश्चन्द्र औ वीर कर्ण तप दान लिये।
तानसेन, तुलसी, औ मीरा, सूरदास निज गान लिये।८।
आवो आवो विश्व बन्धुओ ! हमने तुम्हें बुलाया है।
आज आर्यवर्त्य देश से हमने यह घोष सुनाया है।९।
ऋषि मुनिगण सब जाग उठे, प्राचीन याद दिलवाया है।
आज आर्यवर्त्य देश से हमने यह घोष लगाया है।१०।
एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्व स्व चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः (मनु)।।
याद करो उस मनु काल को, हमहीं तुम्हें पढ़ाये थे।
देश-देश के जब विदेश यात्री भारत मे आये थे।११।
यहीं राम थे त्रेता युग मे, रावण को मार गिराये थे।
यहीं कृष्ण कंसादि हनन कर, भू को शुद्ध कराये थे।१२।
यहीं बाल्मीकि अतीत रामायण को लिखवाये थे।
यहीं अहिंसक बौद्ध जैन सब जग को बौद्ध बनाये थे।१३।
यहीं महात्मा गांधी—जो भारत स्वतन्त्र करवाये थे।
महा शक्तिशाली गौरांगी शासक मार भगाये थे।१४।
यहीं अशोक महान राष्ट्र भारत को कभी बनाये थे।
यहीं गुरु गोविन्द सुतन, जीवित दीवाल चुनवाये थे।१५।
यहीं विक्रमादित्य स्व विक्रम भारत मे चमकाये थे।
यहीं महात्मा रामकृष्ण जी अपना मिशन चलाये थे।१६।
तथा विवेकानन्द राम, अमरीका प्रचार कराये थे।
द्वैतवाद, अद्वैतवाद, से त्रयवाद समझाये थे।१७।
यहीं भीष्म ब्रह्मचारी व्रत ले कृष्ण से अस्त्र गहाये थे।
स्वयं युद्ध तज तन छिदवा निज ऐच्छिक मृत्यु कराये थे।१८।
यहीं शिवा-राणा प्रताप, धर्मार्थ कठिन दुख पाये थे।
तेग बहादुर औ बन्दा बलि हो निज धर्म बचाये थे।१९।
यही आर्यावर्त आज फिर अतिथि यज्ञ रचवाया है।
आवो आवो विश्व बन्धुओ यह उद्घोष लगाया है।२०।
यही जवाहिर भारत को जग राष्ट्र सग मे लाये थे।
पिता पुत्र आनन्द भवन से रण दुंदुभी बजाये थे।२१।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

निश्चय है होगा नहीं जग मे शान्ति प्रसार।
जब तक वैदिक धर्म का होता नहीं प्रचार।
होता नहीं प्रचार स्वार्थ चारो दिक् फैला।
तन सुन्दर है किन्तु हुआ है मन अति मैला।
ज्ञान हीन विज्ञान प्रलय का लाता है भय।
ऐटम बम को लिए समझते उन्नति निश्चय।।
वेद पथ धारी धीर दत्त चित्त होते तब,
जग मे अशान्ति का प्रसार आज होता क्यों?
ज्ञान से विहीन विज्ञान प्रलयकारी बन,
मानव समाज मध्य बैर बीज बोता क्यो ?
होती प्रभु भक्ति सभी प्राणियो मे प्रेम होता,
ऊँच नीच भेदभाव जाति को डुबोता क्यो ?
सारा ससार सुख शान्तिमय स्वतन्त्र होता।
कोई 'रणञ्जय' अधिकार कहीं खोता क्यो।।
आर्य जन क्रान्ति करें, दूर सभी भ्रान्ति करें,
विश्व की अशान्ति हरें, वेद पथ गामी रहें।
धर्म अर्थ कामो मोक्ष, मर्म भलीभांति जान,
कर्म निष्काम करें, नहीं कदापि कामी हो।
हृष्ट पुष्ट हो शरीर, हो न स्वप्न मे अधीर,
साहसी गम्भीर वीर, सच्चरित्र नामी हों।
निश्चय विजय वे 'रणञ्जय' करेंगे प्राप्त,
जिनके आदर्श, ऋषि दयानन्द स्वामी हों।।

तमाशा बनकर न रह जाए

यह समारोह रह न जाए बनकर एक तमाशा।
जागृत यह कर सके समाज के उज्वल भविष्य की आशा।
तो करिये यह सकल्प बनें हम श्रेष्ठ आर्य जन।
आदर्शरूप हो हम आर्य जनो का उत्तम जीवन
वैदिक सस्कृति के बने रहें हम सच्चे रक्षक।
इसकी उन्नति सदा करेंगे जीवन है जब तक।
अपने श्रेष्ठ आचरण से हम पावें सबसे आदर।
वेद प्रचार करे सदा हम निर्भय होकर।।

—श्री प्रभातकुमार ८ न्याय मार्ग, इलाहाबाद

शुद्धि आन्दोलन

मोहम्मद अली को छैलबिहारी बनने से ही राहत मिली

[दैनिक आज, कानपुर २४/९/८६ से साभार]

कानपुर । वैदिक धर्म छोड कर छैलबिहारी ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था और मोहम्मद अली बन गया था मगर एक वर्ष भी नहीं गुजरा कि वह अपने किये पर पछताने लगा और अब वह पुन वैदिक धर्म मे शामिल हो गया है । आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य के प्रयास के फलस्वरूप गत २१ सितम्बर को गोविन्द नगर आर्य समाज मन्दिर मे पण्डित जगन्नाथ शास्त्री ने उसे पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित कर लिया है ।

परेड यतीमखाना के पास स्थित बाबू विश्वनाथ के हाता मे मकान नबर ६०/६५ के निवासी छैलबिहारी पुत्र गयाचरन के धर्म परिवर्तन की कहानी एक ऐसे बेबस इन्सान की कहानी है जिसने इच्छा न रहते हुए भी अपने पापी पेट और पत्नी की लुटी हुई अस्मत पर पर्दा डालने के लिए इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया ।

कानपुर महानगर मे धर्म परिवर्तन की अपने ढग की यह पहली कहानी नहीं है । शहर के विभिन्न मोहल्लो मे निर्धन बस्तियो के लोगो को अपने कारखाने मे काम देकर फिर उन पर मानसिक दबाव डाल कर धर्म परिवर्तन करा दिया जाता है । ऐसे मामले ज्यादातर हरिजन बस्तियो मे कमजोर वर्ग के नौजवानो के बीच हुए है और समझा जाता है कि इसके पीछे एक सगठित गिरोह सक्रिय है जिसे इस कार्य के लिए विदेशी मदद भी मिलती है ।

छैलबिहारी अपने धर्म परिवतन की कहानीयूं सुनाता है-छैलबिहारी (२७ वर्ष) बाबू विश्वनाथ के हाता मे रहता है । जब वह छोटा था तभी से इधर-उधर मजदूरी करके अपना पेट पालता था । जब वह कुछ समझदार हुआ तो उसी मोहल्ले के निवासी रफीक मोहम्मद के कारखाने मे घोडे का साज (चमडे) बनाने का काम सीखने लगा । इस काम को वह अच्छी तरह कमाने लगा तो उसे औसत मजदूरी भी मिलने लगी, इसी बीच उसकी शादी हो गयी और उसकी पत्नी भी उसके साथ ही बाबू विश्वनाथ के हाता मे रहने लगी । रफीक की निगाह छैलबिहारी की पत्नी पर टिक गई, आमदरफ्त बढ गयी । इधर छैलबिहारी को कारखाने मे काफी काम रहता और रफीक उसे मजदूरी आदि अच्छी दे देता था तथा उसकी कुछ ज्यादा ही फिक्र रखता इस लिए छैलबिहारी को कोई शक भी नहीं होता और रफीक उसकी पत्नी के साथ बेखटके मिलता रहता ।

ईद का त्योहार चल रहा था, छैलबिहारी कारखाने के काम मे लगा रहा उसके बाद सिनेमा देखने चला गया था मगर वह कुछ जल्दी ही लौट आया तो घर का दरवाजा भिडा हुआ था, सयोग से अन्दर की कुण्डी बन्द नही थी उसने धक्का दिया और कमरे में आ गया रफीक को अपनी पत्नी नीलम के साथ देख कर चौंक गया रफीक निकल कर अपने घर चला गया और जब छैलबिहारी ने अपनी पत्नी को डाटा फटकारा तो उसकी पत्नी ने कहा कि— 'अब तो जो कुछ होना था हो गया तुम मुसलमान बन जावो— इसी में हम दोनो का भला है ।'

(शेष पृष्ठ ९ पर)

विदेश दर्शन

रजनीशपुरम् अब वीरान हो गया है

ओरेगॉन की ६४००० एकड भूमि मे बसा आचार्य रजनीश स्वप्नो का नगर रजनीशपुरम् आज वीरान और उजाड पडा है ।

रजनीश के धनी शिष्यो की चहल-पहल से रगीन बने रहने वाले इस नगर मे अब घुटनो तक घास उग आयी है । इन दिनो रजनीश के १०-१२ शिष्य ही वहाँ रह कर नगर की देखभाल कर रहे हैं जब तक कि रजनीशपुरम् को खरीददार नहीं मिल जाता ।

अपने को धनी शिष्यो का गुरु कहे जाने वाले रजनीश के इस शहर पर उस समय कहर टूट पडा था जब उनकी निजी सचिव माँ शीला कुछ दूसरे शिष्यो के साथ भाग कर यूरोप चली गई थीं । रजनीश ने माँ शीला पर हत्या जहर देने आगजनी जैसे अनेक आरोपो के साथ ही लाखो डालर की चोरी करके भागने का आरोप भी लगाया था ।
मा शीला और कई सन्यासियो पर लगे आरोपों की छान बीन के सिलसिले मे रजनीश भी कानून की चपेट मे आने से नहीं बचे । प्रवासी कानूनो का उल्लघन करने के अपराध मे उन्होने ४००,००० हजार डालर का जुर्माना तो भरा ही नवबर मे उन्हें अमेरिका भी छोड देना पडा ।

अमेरिका छोडने के बाद नेपाल, यूनान, आयरलंड, उरुगवे, जमैका भटकते रहने के बाद हाल ही मे रजनीश फिर भारत पहुच गये हैं ।

उधर रजनीश की इमारतें और हवाई पट्टी बिकने का इन्तजार कर रही है । रजनीश की लगभग सौ रोल्स रायल कारो का कारवा टेक्सास के कार विक्रेता खरीद चुका है ।

नगर की दूसरी इमारतें शापिंग, माल, होटल, दर्जनो मकान और वह विशाल सभागार जहाँ कभी अपने शिष्यो को प्रवचन दिया करथे थे ।

इस बजर क्षेत्र को आबाद करने में दिन रात मेहनत करने वाले रजनीश के हजारों शिष्य आज इधर-उधर भटक रहे हैं और रजनीश की अतरग और निजी सचिव मा शीला कैलीफोर्निया की एक जेल मे है ।

ओरेगान के अधिकारी दो बार इस क्षेत्र का निरीक्षण कर चुके हैं । उनकी रजनीशपुरम् को सरकारी बन्दीगृह मे परिवर्तित करने की योजना है । लेकिन स्थानीय लोग इसका विरोध कर रहे हैं । एक किसान का कहना है जब अपराधियो का एक अड्डा समाप्त हो गया है तो अब कुछ और अपराधियों को यहाँ नहीं बसाना चाहिए ।

['ग्रामराज' से साभार]

★

वर्तमान समय में आर्य समाज के कार्य की दिशा

–डा० आनन्द प्रकाश, एम० फार्म०, पी० एच० डी० उपमन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

आर्य समाज स्थापना शताब्दी के उपरान्त अनेक प्रमुख आर्य समाजो ने अपने जीवन के १०० वर्ष पूरे किये और अब उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी शताब्दी मनाई । अपनी शताब्दी आयोजित करने वाली यह प्रथम आर्य प्रतिनिधि सभा है। इसकी स्थापना सार्वदेशिक सभा [illegible] हुई थी। भारत के सबसे बडे प्रान्त की सभा होने के कारण कुल आर्य समाजो मे से एक तिहाई से अधिक इससे स[illegible]। पिछले १०० वर्षों के इतिहास मे देश और प्रदेश मे जितने भी धार्मिक तथा सास्कृतिक पुनर्जागरण के आन्दोलन चलाये गये, उनसे इस सभा का निकट का सम्बध रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र "आर्य मित्र" सामाजिक क्रान्ति का अग्रदूत रहा। उसकी गणना हिन्दीके श्रेष्ठतम पत्रो मे होती है। इस सभा से प्रेरणा प्राप्त कर आर्य समाज के कार्य का विस्तार समीपवर्ती प्रान्तो एव बर्मा, थाईलैण्ड और सिंगापुर जैसे विदेशी स्थानो मे हुआ।

राष्ट्र निर्माण

शताब्दी के अवसर पर स्वाभाविक है कि पिछले कार्यों का मूल्याकन करने के साथ ही वर्तमान राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय परिपेक्ष्य मे भावी कार्यक्रमो का निर्धारण भी किया गया। ऐसे तो व्यक्तिगत और समष्टिगत जीवन का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जिस पर आर्य ने अपना प्रभाव न डाला हो, वैचारिक आन्दोलन की विशेष देन मानी जायेगी, जिसने इतिहास की धारा ही बदल दी राष्ट्रीय स्वाधीनत्य आन्दोलन मे आर्य समाज का एक सस्था के रूप मे योगदान सर्वोपरि तो रहा ही, इसने सामाजिक पुन रचना की पृष्ठ भूमि भी तैयार की। यदि स्वतन्त्र भारत मे आर्य समाज के कार्यक्रम पूरी तरह लागू हो जाते तो आज देश मे "पूर्ण स्वराज" यर्थात् "वैदिक स्वराज" की स्थापना हो चुकी होती देवनागरी हिन्दी को न केवल भारत मे, अपितु विश्व मे फैलने का श्रेय तो अधिकाश में आर्य समाज को ही है। महर्षि दयानन्द हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में विकसित करना चाहते थे। काशी में स्थापित नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना आर्य समाज के व्यक्तियो के द्वारा की गयी, इस ने देशवासियो का ध्यान भारत (आर्यावर्त्त) के उस सुदूर अतीत की ओर खींचा जो सर्वोन्नत, और वर्चस्व पूर्ण था, और अपने उसी गोरवमय इतिहास से सतत प्रेरणा लेने का निर्देश दिया।

वैदिक सस्कृति का मूल आदर्श है– व्यक्ति समाज और राष्ट्र के मध्य परस्पर भ्रातृ-भाव और मित्रता उत्पन्न करना। सभी भूवासी आपस मे भाई-भाई हैं सदाचरण, सत्य, ज्ञान, व्रत-ग्रहण, तप, आस्तिकता और यज्ञ-भावना के होने पर ही यह धरती धृत रह सकती है अन्यथा यह नित्य कलह और अशान्ति के थपेड़ों से विनष्ट होती रहेगी। पृथिवीधारक इन गुणों मे एक गुण यज्ञ-भावना है। जिसका मूल अभिप्राय है पारस्परिक सहयोग अर्थात् सबके कल्याण की भावना। वैदिक सस्कृति के इस उदात्त और पवित्र सन्देश को विश्व के कोने-कोने मे फैलाना ही, आर्य समाज का विश्वव्यापी कार्यक्रम है।

मानवता की दृढता मे कभी पराजय नहीं होती। आर्य समाज विश्व मानवता की लडाई लड रहा है। अतएव जहाँ भी अन्याय, अभाव और अज्ञान है, वहाँ आर्य समाज की जरूरत है। रगभेद और आर्थिक शोषण के विरुद्ध सभी ओर से आवाज उठ रही है, पर यदि निकट से देखा जाये तो इस प्रकार की आवाज उठाने वाले राष्ट्रो मे भी धार्मिक उन्माद, आतकवाद, हिंसा, सामाजिक असमानता, महिलाओ का शोषण, अविद्या और अज्ञान आदि विकार हैं। इन सभी धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, सास्कृतिक विकारो के विरुद्ध समान रूप से आवाज उठाने का साहस किसी भी विचारधारा मे नहीं है। आर्य समाज के पास वैदिक समाजवाद और वैदिक मानववाद के रूप मे उपर्युक्त सभी समस्याओ का समाधान है।

मोहम्मद अली को छैलबिहारी बन से ही राहत मिली

(पृष्ठ ८ का शेष)

छैलबिहारी का माथा चकराने लगा। इसके पहले भी कई बार रफीक ने उसे इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेने के लिए समझाया था– लालच दिया था कि मुसलमान बन जाने पर उसे इस्लामी कमेटियाँ पैसे की मदद करेगी– कारोबार बढ़ाने के लिए पैसा देंगी और उसकी जिन्दगी का नक्शा ही बदल जायगा। छैलबिहारी की पत्नी भी इससे पहले कई बार उसे यही सब बाते बताते हुए इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेने की जिद कर चुकी थी।

इस घटना के बाद ही दूसरे दिन रफीक ने और उसके कई साथियो ने दबाव डाला कि वह इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले अन्यथा उसकी पत्नी भी हाथ से चली जायगी।

मोहल्ले की स्थिति में अपने को लाचार पा कर छैलबिहारी ने इस्लाम धर्म स्वीकार करने की अपनी सहमति दे दी। पटकापुर जामा मस्जिद के काजी मजूर मुफ्ती ने उसे कलमा पढाया और अब वह छैलबिहारी से मोहम्मद अली बन गया।

अब मोहम्मद अली को फंजे आम सोसायटी से डेढ हजार रुपये मिल गये तथा कई सम्पन्न मुसलमानो ने भी उसकी आर्थिक मदद की जो छैलबिहारी के अनुसार लगभग डेढ-दो हजार रुपये की रकम होगी। मोहम्मद अली को रफीक ने अब कारोबार बढ़ाने के नाम पर बिल्हौर मे एक साथ दुकान खोलने के लिये भेज दिया जहाँ से मोहम्मद अली का बहुत कम आना-जाना होता और रफीक उसकी पत्नी के साथ बेखटके रातें गुजारता रहा।

धीरे-धीरे मोहम्मद अली को मिलने वाली आर्थिक सहायता मे तो कमी आ गई मगर जलालत और धमकियाँ बढ़ने लगी लिहाजा इन सब से ऊब कर उसने आर्य समाजी नेता देवीदास को अपनी पूरी कहानी बतायी और श्री आर्य ने उसे जिले के प्रशासनिक अधिकारियों से मिलाया और मोहम्मद अली के आग्रह पर उसे पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित कर उसे मुक्त करा दिया है

[पृष्ठ ४ का शेष]

करने के बाद भी १९७८ मे सिटी स्कूल के एक शिक्षक की बेटी से जो उनकी शिष्या (छात्रा) रह चुकी है अलिखित विवाह किया था। जनवरी १९८४ मे लडकी के पिता ने उसे उनसे अलग कर दिया। वे कहते है मैं पक्का नमाजी मुसलमान हू तथा मैने चार विवाह तथा पाचवा अलिखित विवाह अपने मजहब के अनुरूप ही किया था।

अलीगढ़ की प्राय सभी सस्थाओ के नेता व शिक्षाविद विश्वविद्यालय की इन शर्मनाक घटनाओ से चितित व क्षुब्ध हैं। हिन्दू महासभा के प्रातीय मन्त्री श्री रामप्रसाद वाजपेयी प्रमुख शिक्षाविद डा० वेदराज शर्मा भाजपा नेता श्री महेश चन्द्र वार्ष्णेय तथा जयपाल सिंह चौहान शिक्षाविद तथा जनसघ नेता डा० गगाराम सभी इन शर्मनाक घटनाओ की उच्चस्तरीय जाच कराकर चरित्रहीन शिक्षको को दण्डित किये जाने तथा हिन्दू छात्राओ की इज्जत की सुरक्षा की व्यवस्था को आवश्यक मानते है।

रानी व गीता से बलात्कार

डा० गगाराम बताते है इस यूनिवर्सिटी की एक दर्जन से ज्यादा हिन्दू छात्राओ को जाल मे फँसाकर धर्म परिवर्तन कराया गया तथा मुस्लिम शिक्षको व छात्रो से उनका निकाह करा दिया गया। रानी व गीता आदि के साथ खुले रूप मे बलात्कार किया गया। वहा समय-समय पर पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये जाते है। खेलो मे पाकिस्तान के जीतने पर जश्न तथा भारत के जीतने पर मातम मनाया जाता है। इन सब बातो को गम्भीरता से लिया जाना चाहिये।

एक अन्य शिक्षासेवी ने उदाहरण देकर बताया कि जमाते इस्लामी व मुस्लिम मुशरावत जैसी सस्थाए पैट्रो डालर के बल पर विश्वविद्यालय को राष्ट्र विरोधी केन्द्र बनाये हुए हैं। असामाजिक तत्वो, हत्यारो व जनूनी टाइप के गुण्डो का होस्टलो मे बोलबाला होता जा रहा है।

उप कुलपति ने इन तमाम आरोपो की जाच का काम केन्द्रीय इटेलीजेन्स के सेवानिवृत्त डायरेक्टर वासुदेवन को सौपा है। जाच दोनो गुटो की आरोपो की होना चाहिये। इस आरोप की भी जाच की जानी चाहिये कि क्या उपकुलपति वास्तव मे "रजाकार" रहे हैं।

अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की इन घटनाओ से यह अवश्य हो गया है हिन्दू माता-पिता अपनी पुत्रियो को इस अध्यात्मगृह मे भेजने से अवश्य डरने लगे है। ★

[हिन्दू सभा वार्ता से साभार]

(पृष्ठ ६ का शेष)

और वेद उनकी हाबी, उनका शौक उनका व्यसन अवश्य होना चाहिए। सस्कृतज्ञा माता अपने शिशु से सस्कृत बोले। एक ऐसी नई पीढी तैयार की जाए जिसका "मातृ" भाषा सस्कृत हो। यह तब होगा जब माता सस्कृत बोलेगी—लिखेगी। और माता यह तब कर सकेगी जब उसे अपने पति और परिवार का सक्रिय समर्थन मिलेगा।

स्वामी विद्यानन्द "विदेह" के शब्दो मे दयानन्द ने अपने गुरु की, गौ की, भारतमाता की, वेद की "जय" कभी नहीं बोली पर अपना जीवन इनके जय-सम्पादन मे होम दिया। उसी दयानन्द के सच्चे उत्तराधिकारी बनकर हम भी अपना जीवन जय के सम्पादन मे खपा दें, तब हमारा दयानन्द-शिष्यत्व प्रमाणित होगा।

वेद - पद - बहुला भाषा म्लेच्छ भी सस्कृत बोलते थे

अति प्राचीन भूविभाग के अनुसार ससार दो भागो का था। आर्य भाग और म्लेच्छ भाग। उससे भी प्राचीन काल मे सारा ससार आर्य मात्र था। उस समय ससार की भाषा अतिभाषा अर्थात् वेद-पद-बहुला भाषा थी। भाषा मे विकार के कारण और व्यवहार मे दूषित होने से म्लेच्छ भाग पृथक् होता गया। यास्क जानता था कि यद्यपि कम्बोज म्लेच्छ हो चुके हैं, पर वे भी कभी सस्कृत बोलते थे।

—प० भगवद्दत्त बी० ए०

[—क्या उपरोक्त कथन से यह स्पष्ट नहीं होता कि आर्यों की एकमात्र भाषा वेद पद मिश्रित देव भाषा सस्कृत थी। क्या आज अपने को आर्य कहने वाले अग्रेजी के स्थान पर इस देव भाषा को पुन अपनाकर आर्यत्व को गौरवान्वित करेंगे ? —'वसन्त' (सम्पादक)]

चिर युवा महाशय हरवशलाल मदान दिवगत

आर्यसमाज शृगारनगर, लखनऊ के चिर युवा कर्मठ कार्यकर्ता महाशय हरवशलाल मदान का बुधवार २९ अक्टूबर, १९८६ को निधन हो गया। आपका जन्म वर्ष १९०१ मे अमृतसर मे हुआ था। वर्ष १९५० मे लखनऊ चले आये। रेल सेवा एव वस्त्र रगाई मे जीवन भर कठोर परिश्रम करके अपने परिवार को शिक्षित एव समृद्ध बनाया। साथ-साथ आर्यसमाज की सेवा एव प्रचार भी अनूठे ढग से करते रहे। वृद्धावस्था मे भी युवकों की भाति प्रसन्न एव सक्रिय रहना, मार्ग चलते समय काटे-रोड़े हटाते चलना, रेल एव बस मे स्वय खडे होकर निर्बलो को बैठा देना, हिन्दू एव नमस्कार शब्दो के स्थान पर आर्य एव नमस्ते शब्दो का प्रचार करना, बच्चो से ओ३म् बुलवाना, आर्यसमाज के लिये रिक्शा पर उद्घोषणा करना तथा बुलन्द आवाज मे वैदिक धर्म एव महर्षि दयानन्द का जयघोष करना आपकी विशेषताएँ थीं। उनके निधन से आर्यसमाज को अपूरणीय क्षति हुई है। दिवगत आत्मा को सद्गति तथा शोक सतप्त परिवार के धैर्य हेतु परमेश्वर से हार्दिक प्रार्थना है।

—देवव्रत अवस्थी

संवेदना

आर्य प्रतिनिधि सभा डर्बन दक्षिण अफ्रीका ने अपने मन्त्री श्री मनोहर सोनेरा के मद्रास नगर मे दिवगत होने का समाचार तार से प्रेषित किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश दिवगत आत्मा की शाति तथा सदगति तथा उनके वियोग मे सतप्त पारिवारिक जनो, सबधियो और आत्मीयों को धैर्य्य प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है।

—मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

वार्षिक अधिवेशन आर्यसमाज गणेशगंज

आर्यसमाज लखनऊ (गणेशगञ्ज) का वार्षिक अधिवेशन २८ दिसम्बर १९८६ को आर्यसमाज भवन गणेशगज मे प्रात १० बजे रविवार को आहूत किया गया है। सब आर्य सभासद अपना वार्षिक चन्दा २१ दिसम्बर १९८६ तक कोषाध्यक्ष समाज को जमा कर दें।

विषय सूची

१–गत वर्ष की कार्यवाही की सम्पुष्टि।

२–वर्ष ८५–८६ के आय-व्यय का विवरण प्रस्तुतिकरण।

३–वार्षिकोत्सव की व्यवस्था पर विचार।

४–अन्य आवश्यक विषय प्रधान जी की आज्ञा से।

मनमोहन तिवारी

मन्त्री आर्यसमाज (गणेशगज) लखनऊ

आवश्यक सूचना

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ सितम्बर १९८६ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ सितम्बर १९८५ से वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है।

३५१, ६५७, १७८०, २४१५, ३०६७, ३०७३, ३०७७, ३०९०, ३०९७, ३१०६, ३१९६, ४५२१, ५०२७, ५६१४, ५६९०, ५९२१, ५९४८, ६०३४, ६२१२, ६५११, ६७०१, ६८०१, ६८२२, ७०१०, ८११३, ८२९७, ८३३१, ८३४८, ८३७७, ८६४८, ८६६०, ८९७७, ९११७, ९२६८, ९५२२, ९७१४, ९९८०, ९९८९, ११२४३, ११२७०, ११२७२, ११२७३, ११२७८, ११५६८, ११७०३, ११७२१, ११९९४, १२०००, १२३९७, १२३९८, १२३९९, १२४०५, १२४०७, १२९६४, १२९८४, १३१९६, १३१९७, १३१९८, १३२०२, १३२०८, १३२०९, १३२१२, १३२१४, १३२१६, १३२३०, १३२३२, १३२३४, १३२३९, १३२४४, १३२४५, १३२५०, १३५९२, १३५९३, १३५९४, १३५९५, १३५९६, १३५९७, १३५९९, १३६००, १३६०१, १३६०२, १३६०३, १३६०४, १३६०५, १३६०६, १३६०७, १३६०८, १३६०९, १३६१०, १३६११, १३६१२, १३६१३, १३६१४, १३६१५, १३६१६, १३६१७, १३६१८।

जिनका शुल्क १५ अक्टूबर ८६ को समाप्त

४८३, ३२४०, ४५६६, ४६२२, ५०५५, ५३६१, ५९६२, ५९७३, ५९८०, ६२३४, ६४११, ७०२५, ८७१४, ९०३५, ९५३४, ९५४६, ११२९२, ११३०६, ११३३०, ११३५१, ११७२८, १२०१०, १२०१२, १२०१६, १२४१८, १२७४१, १२७४४, १२७४८, १२७५७, १३२५३, १३२५४, १३२५९, १३२६८, १३२६९, १३२७०, १३२७३, १३२७५, १३१८१, १३२९१ १३६२०, १३६२१, १३६२२, १३६२३, १३६२५, १३६२६, १३६२७, १३६२८, १३६२९, १३६३१, १३६३२, १३६३३, १३६३५, १३६३६, १३६३७, १३६३८, १३६३९।

विनीत–

व्यवस्थापक 'आर्यमित्र'

[पृष्ठ ३ का शेष]

करते रहना। कि वह पाप युक्त करें सस्कार धुल जावें।

अत प्रत्येक पाप के सस्कार तक को मिटाने हेतु प्रायश्चित पश्चाताप व प्रार्थना ही अचूक साधन है। इन्हीं से व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र पाप मुक्त होते हैं सही सुधार साधना सफल होगी।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
रजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
मार्गशीर्ष कृष्ण ६
रविवार, २३ नवम्बर १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

१२९४६-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

अमृत वर्षा

सुख और दुःख क्यों होतें है ?

देखो ! एक जीव विद्वान्, पुण्यात्मा, श्रीमान् राजा की रानी के गर्भ मे आता और दूसरा महा दरिद्र घसियारी के गर्भ मे आता है। एक को गर्भ से लेकर सर्वथा सुख और दूसरे को सब प्रकार से दु ख मिलता है। एक जब जन्मता है तब सुगन्धियुक्त जलादि से स्नान, युक्ति से नाडी छेदन, दुग्धपानादि यथायोग्य प्राप्त होते हैं। जब वह दुग्ध पीना चाहता है तो उसके साथ मिश्री आदि मिलाकर यथेष्ट मिलता है। उसको प्रसन्न रखने के लिए नौकर चाकर, खिलौना, सवारी, उत्तम स्थानो मे लाड से आनन्द होता है। दूसरे का जन्म जगल मे होता, स्नान के लिए भी जल भी नही मिलता, जब दूध पीना चाहता है तब दूध के बदले में घूसा थपेडा आदि से पीटा जाता है। अत्यन्त आर्त स्वर मे रोता है। कोई नही पूछता। इत्यादि जीवो को बिना पुण्य प प के सुख दु ख होने से परमेश्वर पर दोष आता है।

दूसरा जैसे बिना किये कर्मों के सुख दु ख मिलते हैं तो आगे नरक स्वर्ग भी न होना चाहिए। क्योकि जैसे परमेश्वर ने इस समय बिना कर्मों के सुख दु ख दिया है वैसे मरे पीछे भी जिसको चाहे नरक मे भेज देगा। पुन सब जीव अधर्म युक्त हो जायेंगे, धर्म क्यो करें ? क्योकि धर्म का फल मिलने मे सन्देह है। परमेश्वर के हाथ है, जैसी उसकी प्रसन्नता होगी वैसा करेगा तो पाप कर्मों मे भय न होकर ससार मे पाप की वृद्धि और धम क्षय हो जायगा। इसलिए पूर्व जन्म के पुण्य पाप के अनुसार वर्तमान जन्म ौर वर्तमान तथा पूर्व जन्म के कर्मानुसार भविष्यत् जन्म होते है। —स्वामी दयानन्द सरस्वती

आवश्यक सूचना

उत्तरप्रदेश के समस्त आर्यसमाजो व आर्य वीर दल के अधिकारियो से निवेदन है कि ३० नवम्बर ८६ से मै कार्यमुक्त होकर गांव जा रहा हू। अत आगे से मुझसे निम्न पते से पत्र व्यवहार करें—

—बेचनसिंह आर्य अधिष्ठाता
ग्राम व पो०—अगहा (वाया चुनार)
जनपद—मिर्जापुर, उ० प्र०

—आर्यसमाज अमरोहा का ८५ वा वार्षिकोत्सव २६, २७, २८ अक्टूबर को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। २६ अक्टूबर को विशाल जुलूस नगर के प्रमुख मार्गो से निकला। जुलूस मे मुरादाबाद, सम्भल, ठाकुर द्वारा एव जनपद के कितनी ही ग्रामीण आर्यसमाजों के पुरुषो एव महिलाओ ने भाग लिया। २७ अक्टूबर को रात्री में प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की अध्यक्षता मे आर्य सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमे प० सत्यप्रिय जी, प्रो० रामप्रसाद जी, प्रो० उत्तमचन्द जी 'शरर' ने अपने विचार व्यक्त किये। सम्मेलन मे अनेक प्रस्ताव पारित किये गए। —मृदुला आर्या



श्री मान्यवर ! नमस्ते !

दीपावली के इस शुभ अवसर पर हमारी मगल कामनाए स्वीकार करें।

आपका शताब्दी उत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ होगा। यहा के समाचार पत्रो मे ऐसे समाचार आते नहीं हैं। 'सार्वदेशिक' और 'आर्य जगत' से समाचार मिलते हैं।

इस अवसर पर कुछ विशिष्ट प्रकाशन और प्रचार साहित्य प्रकट हुआ हो तो भेजिएगा। 'आर्यमित्र' का व शांक भी भेजने की कृपा करें।

हम पुन 'वैदिक ज्योति' का प्रकाशन चालू कर रहे हैं। इसके साथ एक अङ्क प्रेषित है।

इस्लाम और ईसाई मत का प्र प्रचार है और हिन्दू उसमें फसने भी जाते हैं।

भारत की स्थिति भी सन्तोषजनक तो नहीं है।

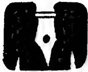
आपका बधु
नरदेव वेदालंकार
आर्य प्रतिनिधि सभा (दक्षिण अफ्रिका)
२१ कार्लीसी स्ट्रीट डरबन—४००१

(पृष्ठ ७ का शेष)

आज आर्यावर्त्त देश से हमने घोष लगाया है।
आवो! आवो! विश्व बन्धुओ वैदिक युग दिखलाया है।२२।
यही आधुनिक युग मे ऋषिवर दयानन्द जी आये थे।
दण्डानन्द गुरु से शिक्षा दीक्षा ले ज्योति जगाये थे।२३।
पूर्ण ब्रह्मचारी वेदो की ध्वनि आलाप जगाये थे।
भारत की दयनीय दशा लख शोकमग्न घबडाये थे।२४।
वेद अप्राप्य रहे जो उनको जर्मन से मगवाये थे।
चारो वेदों को ला करके, स्वय भाष्य लिख पाये थे।२५।
पूर्व भाष्य के गुण अवगुण लख आर्यसमाज बनाये थे।
सभी धर्म के स्वागत करके सबको सत्य सिखाये थे।२६।
सत्य धर्म के ज्ञान हेतु सत्यार्थप्रकाश लिखवाये थे।
सभी धर्म और विश्व प्रेम हित वे दश नियम बनाये थे।२७।
अतिम मे निज विषदाता को, धन दे विदा कराये थे।
तेरी इच्छा पूर्ण प्रभो हो, कह निर्वाण मगाये थे।२८।
वही आर्यावर्त्त आज भी अतिथि यज्ञ करवाया है।
अभिलाषित भारत 'शशीश' यह विश्व प्रेम दर्शाया है।२९।
धन्यवाद परमेश्वर को शत समारोह सुख लाया है।
धन्यवाद ऋषि दयानन्द हमको आर्यत्व सिखाया है।३०।
आर्य डाक्टर जगदम्बा प्रसाद ने घोष लगाया है।
उठो! उठो! आर्यो 'शशीश' वैदिक सुराज युग आया है।३१।

प्रस्तुतिकर्त्ता आर्य कवि तथा सगीतकार—
डा० जगदम्बा प्रसाद अठाना 'शशीश', बिजनौर

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदीन आयभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप मे नव्वरवाल प्रिन्टिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।



सम्पादकीय

सम्वत्—रविवार ३० नवम्बर १९८६ दयानन्दाब्द १ २
सृष्टि सवत् १९७२९४९०८७

उस बाग का क्या हाल जहा माली ही पामाली करे !

राष्ट्रभाषा का ससद में अपमान

देश को स्वाधीन हुए ३९ वर्ष हो गये। परन्तु पराधीनता दासता के बन्धन जकडते जा रहे है। हमारे पूवज महर्षि दयानन्द महात्मा गाँधी आदि ने सपने संजोये थे—भारत स्वतन्त्र होगा, सब सुखी होगे। सबमे प्रीति होगी। सबको अपने देश, जाति, धर्म के प्रति अनुराग होगा। परन्तु सब सपने ध्वस्त होते जा रहे है। आज अग्रेजी का मोहजाल हर बडे कहे जाने वाले लोगो को फाँस रहा है। अग्रेजी मन्थरा सब पर अपना प्रभाव डालकर स्वदेशी पर विदेशी को प्रतिष्ठापित करने मे तत्पर है।

देश के स्वतन्त्र होने पर राष्ट्रभाषा का सवाल जब उठा कितने उत्साह के साथ सारे देश ने हिन्दी जो देश के बहुमत की मातृभाषा बोलचाल की भाषा, सम्पर्क भाषा थी) को राष्ट्रभाषा के गरिमामय पद पर आसीन किया। परन्तु कतिपय दुराग्रही विघटनवादी—पराधीनता के पोषक तत्वो ने प्रभाव डाला और तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्व० प० जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दी को सीखने के लिए प्रशासकीय कार्यो मे कुछ वर्षो की ढील दे दी। फिर भूल पर भूल होती गयी, कुछ वर्षो की ढील बढती चली गयी। और फिर ढील की भाषा "बदलकर बलात् हिन्दी किसी पर थोपी नहीं जायेगी" हो गयी। बस प्रशासकीय कार्यों मे जहा हिन्दी ने काफी अपना स्थान बना लिया था फिर सौतेली सतान की तरह उपेक्षित होने लगी और अग्रेजी का प्रभुत्व स्थापित होने लगा।

देश मे विघटनवादी मनोवृत्ति का मूल कारण है—अग्रेजी का मोह। अग्रेजीदा अग्रेजो की भांति ही अपने को सर्वोत्कृष्ट तथा दूसरे को निकृष्ट समझते है। शासन मे बैठे लोगो ने भी वोट की राजनीति के कारण इसे नजरन्दाज ही करना अपना ध्येय बना लिया।

देश मे अग्रजी का समर्थन, हिन्दी का विरोध प्राय दक्षिण से उठा, प्रान्तवाद, विलगाववाद की आवाज दक्षिण मे उठी कारण वहा अग्रेजी का प्रभुत्व गहरा है। सबसे पहले दक्षिण मे ही भाषा के आधार पर पृथक् राज्य निर्माण की माँग का आन्दोलन उठा और एक विलगाववादी के आत्मदाह के बाद तत्कालीन प्रधानमन्त्री प० नेहरू ने घुटने टेक दिये और उनकी माग के अनुरूप आन्ध्र का निर्माण हो गया। फिर भाषा व जातिके नामपर बराबर परिवतन होने लगे। वह ज्वालादक्षिणके पश्चिम तक फैली। पजाब मे पहले पजाबी बोली को गुरुमुखी को भाषा बनाने फिर खालिस्तान की माँग उठी—ईसाई बहुल क्षेत्रो मे नागालैण्ड प्रभृति पृथक् राज्यो की माग प्रबल हो उठी और अब पूर्व मे गोरखालैण्ड की और एक माग उठ पडी। इस भाति इन विलगाववादी आन्दोलनों मे देश जल रहा है। नष्ट हो रहा है हमारा पौरुष। परन्तु सरकार मूकदर्शक की तरह कुछ भी समाधान नहीं कर पा रही है।

शासन के लिए मर्यादा उल्लघन अधर्म है सविधान के अनुरूप सबको निवास, भोजन, पूजा पाठ की निश्चित स्वतन्त्रता व सुविधा रहनी चाहिये। परन्तु सविधान के विरुद्ध किसी को भी राष्ट्रगीत, राष्ट्र भाषा, राष्ट्रध्वज के अपमान की छूट नहीं देनी चाहिये। सविधान के विरुद्ध देश को खण्डित करने, राष्ट्रभाषा का अपमान करने वाले राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज अर्थात राष्ट्रीयता का अपमान करने वाले वे चाहे जितने बडे हो चाहे जिस जाति मत सम्प्रदाय या पार्टी से सम्बन्धित हो उनके विरुद्ध सख्त से सख्त कदम उठाये जाने चाहिये।

द्रविण मुन्नेत्र कजगम व अन्ना द्रविण मुन्नेत्र कजगम पार्टियों का निर्माण मानो देश की प्रभुसत्ता को दाव पर लगाने, विघटन को बढ़ावा देने के लिए ही हुआ हो। उन्होंने जो भी कदम उठाये सभी देशघाती हो बनते गये। परन्तु शासको ने इन सबको बराबर नजरन्दाज ही किया है। हमारे सविधान मे साम्प्रदायिकता, विलगाववाद, मानवता के हनन को कोई स्थान नहीं है। फिर शासक साम्प्रदायिकता, विलगाववाद व मानवता हनन की समर्थक पार्टियो को प्रतिबन्धित क्यो नहीं करता। मुसलमानो के लिए सविधान मे सशोधन जिसमे नारो को न० २ का स्थान मिलता है मानवता हनन को प्रश्रय देता है।

शासन के लिए नीति का यह श्लोक त्यजेदेक कुलस्यार्थे ग्रामार्थे-' कुल त्यजेत्, ग्रामजनपदस्यार्थे—आदि दृष्टव्य है।

हमारा शासन अल्पमत, सवर्ण असवर्ण के नाम पर बहुमत को प्रताडित करने विभिन्न लाछनाओ से युक्त करने का पाप करता है। इससे अराजक तत्व शासन का सहारा लेकर वर्गभेद, द्वेष, घृणा को बढ़ाता है व अराजकता फैलाता है। शासक की दृष्टि मे जाति, मत, सम्प्रदाय, पार्टी विशेष नहीं। जनता, प्रदेश देश की सुख समृद्धि का लक्ष्य होना चाहिये। गलत करने वाले को वह किसी भी पार्टी, जाति, सम्प्रदाय से सम्बद्ध हो क्षमा नहीं करना चाहिए।

'अपना उत्सव' दिल्ली मे आयोजित हुआ। उसका आयोजन उचित है या अनुचित मैं आज इस पर विवेचन नहीं कर रहा, परन्तु उसके निमत्रण पत्र हिन्दी मे छापने के लिए उसके आयोजक प्रशसा के पात्र हैं। उक्त निमत्रण पत्र हिन्दी मे होने के कारण लोकसभा मे अन्ना द्रमुक पार्टी वाले आग बबूला हो गये। ससदीय परम्पराओं को तोडकर पत्र वहीं फाड-फाडकर फेंक दिये। यह राष्ट्रभाषा-राष्ट्रीयता व सविधान का घोर अपमान है। हमारे प्रधानमन्त्री, मन्त्री व लोकसभा अध्यक्ष मूकदर्शक बने रहे। लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड बडे ही आदर्श सिद्धान्त प्रिय व लोकसभा मे अनुशासन कायम करने मे प्रसिद्ध हैं। परन्तु उनकी इस विषय मे यह टिप्पणी 'कहीं कुछ चूक हो गयी है' विषय को नजरन्दाज करना हुआ। इससे ऐसे राष्ट्रद्रोही तत्वो को बढ़ावा मिलेगा। उन्हें अनुशासन विहीनता के विरुद्ध उन्हें प्रताडित करना चाहिए था। राष्ट्रभाषा का अपमान करने के लिए उन्हें दण्डित किया जाना चाहिये।

यदि यही स्थिति रही तो देश की आजादी खतरे मे पड जायेगी।

शासन सचेत हो अपने कर्तव्य पहचानें, अल्पमत, जाति धर्म सम्प्रदाय के नाम पर देश को विघटन से बचाने के लिए सविधान के अनुरूप सख्ती से बिना किसी पक्षपात के निपटे। भारत मे रहने वाले भारतीय हो। हिन्दू मुसलमान ईसाई नहीं। जो यह जातिभेदक आंदोलन उठायें उन्हें सख्ती से कुचल दे।

देश की सम्प्रभुता की रक्षा सविधान की सुरक्षा देश को विघटन से बचाने, राष्ट्रभाषा को उसका स्थान प्राप्त करने की दिशा मे कदम उठाने मे आर्य समाज सदैव शासन के साथ है। परन्तु सविधान के विरुद्ध होने वाले कार्यकलापों की सख्ती से निन्दा करता है और उनके विरुद्ध सबल आवाज उठाता है।

आशा है शासन अब पिछली गलतियों को समझ बूझकर सुशासन स्थापित करने के लिए कठोरता से नियमों को पालन करता हुआ देश को सुखी समृद्ध बनाने के लिए सतत प्रयत्नशील होगा।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी



रिषतो दह

वैदिक सन्यासी वेदमुनि परिव्राजक बिजनौर ने भारत के माननीय प्रधानमन्त्री जी को अपने पत्रांक १७७८ दिनांक २७-१०-८६ के द्वारा सूचित किया है, कि उनके द्वारा लिखित पुस्तक "मुसलमान बन्धुओ ! विचार करो।" जो उन्होंने तथ्यात्मक अभिलेख सामग्री से युक्त करके सद्भावनापूर्ण अपील के नाते लिखी थी, उसकी प्रतिक्रिया एक गुमनाम धमकी भरे पत्र के माध्यम से हुई है, जिसके लेखक ने अपने को 'एक बाबरी मस्जिद का सिपाही' बताया है।

यद्यपि इस पत्र की फोटो प्रतिलिपि भी उक्त पत्र के साथ सलग्न कर दी गई है, तथापि जहा हम उत्तर प्रदेश सरकार तथा भारत सरकार से अनुरोध करते हैं कि वे वैदिक सन्यासी की सुरक्षा की आवश्यक व्यवस्था करे और इस सदर्भ मे पूण जाच कर दोषी व्यक्ति को कठार दण्ड दे। इसके साथ ही स्वामी जी से भी हमारा विनम्र निवेदन है कि वे स्वय सुरक्षात्मक साधन अपनाए क्योकि आय समाज का इतिहास इस बात का साक्षी है कि वैदिक धम प्रचारको की कट्टरवादी तथा अन्धविश्वासियो द्वारा अनेक हत्यायें की जा चुकी है। वे सरकार को आवेदन पत्र देकर लाइसेंस प्राप्त कर रिवाल्वर रखें ताकि उन पर धमकी को सार्थक करने के लिए यदि कोई प्राणघातक प्रहार होता है तो वे आत्म रक्षाथ 'रिषतो दह' (ऋ० १/१२/५) 'हिंसाकारियो को भस्म कर दें' वेदसूक्ति को सार्थक कर सकें।

—'बसन्त'

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजो की सेवा में

जैसा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का निर्देश है अत प्रत्येक आय समाज के मन्त्री महोदयो को आदेश दिया जाता है कि भविष्य मे ऋषिबोधोत्सव आयसमाज स्थापना दिवस, महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस और स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आप अपनी जिला की उपसभा के माध्यम से एक स्थान पर मनाया करें।

स्थान की सूचना सम्बन्धित जिला सभा के मन्त्री महोदय स्वय आर्यसमाजो को दिया करेंगे।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

नामकरण-संस्कार

पिथौरागढ़। पुलिस लाइन मे मोहन लालजी टम्टा की द्वितीय सन्तान का नामकरण स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी द्वारा दिनाक २८ अक्टूबर ८६ को किया गया।

मन्त्री
आर्यसमाज पिथौरागढ़
उत्तर प्रदेश



[पत्रो मे व्यक्त विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।]

प्रिय महोदय,

मैं सनातन धर्मी हू, किन्तु आर्यसमाज की कई बातो से सहमत हू जिनमे एक शुद्धि भी है, इसलिए मुझे २८ सितम्बर १९८६ (परिशिष्ट अक) के पृष्ठ ५ पर "शुद्धि के बढते चरण" पढकर बडी प्रसन्नता हुई। वास्तव मे अन्य धर्मियो को हिन्दू धर्म मे मिला देने की प्रथा बहुत पुरानी है। विदिशा मे एक ईसा पूव पहली शती का एक गरुडध्वज आज भी लगा हुआ है। उन दिनो हिन्दू-धर्म को भागवत-धर्म कहते थे। और उसके अनुयाइयो को भागवत कहा जाता था। विदिशा के राजा के दरबार मे एक ग्रीक राजा ने अपना राजदूत भेजा जो विदिशा मे बहुत दिन रहा। वह यवन था। उसने भागवत-धर्म स्वीकार करके विष्णु का एक मन्दिर बनवाया जो अब नष्ट हो गया है। विष्णु के मन्दिरो के आँगन मे गरुणध्वज लगाने की पुरानी प्रथा रही है अतएव वह मन्दिर तो नष्ट हो गया पर गरुडध्वज आज भी विद्यमान है उस पर लिखा है कि 'हैलियो डोरस' नामक वह राजदूत भागवत हो गया और उसने यह गरुडध्वज बनवाया। अर्थात् ईस्वी सदी से पूर्व प्रथम सदी मे यवनो को भागवत-धर्म (जिसे अब सनातन धर्म) कहते है यवनो को भागवत अर्थात् हिन्दू बना दिया जाता था। यही नहीं, श्रीमद्भागवत मे भगवान विष्णु की प्रशसा मे लिखा है—

किरात हूणान्ध्र पुलिन्द पुल्लसा
आभीर कका यवना खसादया।
येन्ये पापाय दयाश्रयाश्रया
शुद्धयन्ति तस्मै प्रभुविष्णवे नम॥

इससे स्पष्ट है कि न तो 'शुद्धि' शब्द नया है और न शुद्धि की प्रथा ही नयी है। प्राय एक हजार वर्ष की गुलामी मे हम अनेक पुरानी बातें भूल गये। उस युग मे किसी की शुद्धि करना राजनीतिक स्थिति के कारण असम्भव था। अतएव हम शुद्धि की प्रथा भूल गये। फिर भी उन दिनो रहीम और रसखान ऐसे अनेक हिन्दू धर्म प्रमी हुए जिनके लिए भारतेन्दु ने लिखा था।

'इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिन्दू वारिए।

भवदीय
श्रीनारायण चतुर्वेदी अभूषण
साहित्य वाचस्पति एम० ए० डी० लिट
आदित्यशैल, ५३ खुर्शेदबाग, लखनऊ

समादरणीय सम्पादक जी,

कल्याणमस्तु।

इस पत्र के साथ एक लघु पुस्तिका एक मुसलमान के अशिष्टापूर्ण धमकी भरे पत्र की चित्रलिपि और उससे सबधित प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी जी को प्रेषित पत्र की प्रतिलिपि आपको भेज रहा हू।

आप यदि उचित समझें और आवश्यकता अनुभव करे तो सम्पादकीय टिप्पणी इस विषय मे अपने लोकप्रिय पत्र मे लिखें। शमित्योम्

वेदमुनि परिव्राजक
वैदिक सस्थान नजीबाबाद
जनपद बिजनौर, उत्तर प्रदेश

नैतिक उत्थान आन्दोलन

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतकर्म शुभाशुभम् ।

—प० चन्द्रकिरण जी शर्मा,
सभा कोषाध्यक्ष

भारतीय वैदिक सस्कृति उदात्त गुणो पर आश्रित है और उसका एकमात्र लक्ष्य मानव को आसुरी प्रवृत्तियो से विरत करके देवत्व की ओर ले जाना है। यही कारण है कि वैदिक सस्कृति मे जो सर्वोत्तम सन्देश है वह त्याग का है और यही वैदिक सन्देश महावीर और बुद्ध ने अपरिग्रह के रूप मे प्रस्तुत किया। चतुराश्रम की व्यवस्था मे वानप्रस्थ और सन्यास का जो समावेश है वह त्यागमयी प्रवृत्ति पर आचरण का क्रियात्मक रूप है तथा भारतीय आदर्श पुरुष राम और कृष्ण ने त्याग की पृष्ठ भूमि पर अपने को खरा उतारा तथा भारत की ऋषि परम्परा में त्याग की महत्ता रही और उन्नीसवीं शताब्दी के महानतम क्रांति दृष्टा स्वामी दयानन्द का जीवन भी त्याग की शृंखला का ज्वलन्त उदाहरण है। अत मानव त्याग के लिए कैसे प्रशिक्षित किया जाय इस पर भी आर्य मनीषियों ने मनन किया है।

वैदिक सस्कृति की दूसरी विशेषता है कि वह विराम शून्य है अर्थात मानव की आत्मा सतत है और इसी विराम शून्यता के कारण हम सृष्टि के प्रारम्भ से अजर और अमर हैं। कायिक शरीर का परिवर्तन करते हुए आत्मा आदि–अन्त रहित हैं तभी हमारी सस्कृति मे जन्म जन्मान्तर की जन्म व्यवस्था है अर्थात् सकेत कर दिया जाता है कि यदि कोई मानव इस जन्म मे सुखी और दु खी है तो उसका कारण यही जन्म नहीं जन्मान्तर के कर्म का विपाक और परिपाक है।

मानव अपने शुभ एव अशुभ कर्मों का भोक्ता होता है। वे कर्म चाहे इस जन्म के हों या चाहे पूव जन्म के हो। एक बालक किसी कृषक परिवार मे जन्म लेता है अभाव, निर्धनता के बीच पलता है, परन्तु हम देखते हैं कि परिस्थितिया ऐसा परिवर्तन लेती है, कि उसके सिर पर छत्र की छाया होने लगती है। इसके विपरीत कभी हम देखते हैं कि ऐश्वर्य के पालने मे झूलने वाला बालक सडक पर मिट्टी की डलिया ढोता हुआ मिलता है। इन दोनो मे विवेक यही सूचना देता है कि ये अपने पूर्व जन्म के किये हुए कर्मों का फल भोग रहे हैं।

"अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम" की अवधारणा विद्वानो तथा धर्मशास्त्र प्रणेताओं के अपने जीवन की तथा ससार की गतिविधियों का सूक्ष्म निरीक्षण करते उसे अपनी अनुभूति की अवस्था मे की हैं और वह अवधारणा मानव को नियत्रण में रहने के लिए एक व्यवस्था का सकेत है कि शुभ कर्म और अशुभ कर्म के परिणाम अवश्य सामने आयेंगे जैसे घडी की एक सुई की चाल को नियत्रित करने के लिये पेन्डुलम् चला करता है वैसे ही नीति पूर्ण शीर्षक वाक्य मानव को एक पेन्डुलम् की भांति जीवन को नियन्त्रित करता है और एक भावी भय मनुष्य को सद्मार्ग पर चलने के लिये और असन्मार्ग से विरत होने के लिये सकेत देता है।

समाज के इतिहास मे हमे सन्मार्ग और असन्मार्ग दोनो पर चलते हुए व्यक्ति दिखाई पडते हैं। उस समय यही उपर्युक्त सूक्ति हमें सही निर्णय का भी चुपके से सन्देश दे जाती है। सीधे शब्दों मे हम कह सकते हैं कि शीर्षक की सूक्ति पुण्य कार्य मे हमारी प्रगति कराती है और पाप कार्य से हमें विरत करती है तथा अन्तरग मित्र एव हितैषी सखा के समान सदैव सद्परामर्श दिया करती है कि अशुभ कर्म का करना ही नहीं अपितु उसका चिन्तन भी एक अपराध है तथा शुभ कर्म का चिन्तन जीवन के प्रति एक वरदान है और इसी वरदान की प्राप्ति जीवन का लक्ष्य है।

भारतीय आचार शास्त्र, नीति शास्त्र और धर्म शास्त्र मे भी इसी मूल मत्र का विविध रूपो मे वर्णन किया गया है तथा मनुष्य को सदैव अशुभ से शुभ की ओर ले जाने की बात कही गई है। इतिहास के पृष्ठो मे इसके असख्य उदाहरण छिपे हैं तथा पौराणिक कहानियो मे इसका विश्लेषण है। महर्षि बाल्मीकि ने रामायण और महर्षि वेदव्यास ने महाभारत मे जो चरित्र प्रस्तुत किये हैं जिन नायको की भूमिका का निर्वाह किया है सब अशुभ किये हुए कर्मों के भोगने मे कष्ट और दुर्गति को सहन करते हैं तथा सत् और शुभ कर्म वाले जीवन मे कुन्द वृक्ष की भांति श्वेत वर्ण बनकर फलते और फूलते हैं इसी को कर्म विपाक की सज्ञा दी गई है।

एक मत्र मे आता है "अग्ने नय सुपथा राये" अर्थात् हे परमात्मा, हमे सुपथ की ओर ले जाओ और एक वैदिक ऋषि कामना करता है "मृत्योर्माऽमृत गमयेति" इन दोनो वैदिक सूक्तियो का भी एक ही फलितार्थ है कि शुभ कर्म सदैव करना चाहिये, परन्तु मनुष्य त्रिगुण प्रधान होता है उसकी निम्न गा रागात्मक वृत्तिया प्रबल होती हैं तभी वह अशुभ कर्मों तथा अत्याचार के द्वारा दूसरो को पराजित करने की योजना मे लगा रहता है। इस योजना से हटाने के लिये ही उसे इगित किया जाता है कि "शुभ कुर्यात जीवन उच्च स्तर नेतव्यम्" ले जाना चाहिये। आज समाज दिशा विहीन है समाज मे दानवी प्रवृत्ति प्रबल है उसे रोकने के लिये मानव को सकेत करना आवश्यक है कि अशुभ कर्म से दूर रहकर शुभ कर्म की ओर प्रवृत्ति रखना ही जीवन का धर्म है और ससार मे जो बिलख रहे हैं, बिलबिला रहे है, विकलांग है कुमति मस्तिष्क हैं और सदैव परहानि के चिन्तक है उनका यह सारा परिपाक उनके पूर्व जन्म का अशुभ कर्म है। अत ऋषि का शाश्वत सन्देश है कि सत्य बोलो, शुभ कर्म का आचरण करो। और ऐसा कर्म करो जो यदि तुम्हारे लिये किया जाये तो सहर्ष स्वीकार्य हो। ॥

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज खण्डवा मे एक विद्वान पुरोहित की आवश्यकता है, गुरुकुल के स्नातक को प्राथमिकता दी जावेगी, जो सस्कार आदि सपन्न करा सकें, वेतन निर्धारण प्रत्यक्ष साक्षात्कार के समय की जावेगी। पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें। एक ही बार मे पूर्ण विवरण भेजें।

रामचन्द्र आर्य
प्रधान
आर्यसमाज खण्डवा ४५०-००१
(म० प्र०)

वेद-विवेचन

'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'

—श्री इन्द्रदेव पाठक, एम० ए०, साहित्याचार्य, दर्शनवाचस्पति
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

वेद एवं वैदिक साहित्य मे "देव" और "यज्ञ" शब्द सहस्रों स्थानो पर बार-बार दुहराया गया है जिसका मूल कारण यही है कि वैदिक दार्शनिक-विचारधारा के अनुसार इस जड और चेतन सृष्टि मे जगत के अनेक और विभिन्न क्षेत्रो मे जो कुछ भी प्रकृति की ओर से प्राणिमात्र के मगलकार्य हो रहे हैं, और जो भी प्रक्रियायें चल रही हैं, वे सब यज्ञ के ही नाना रूप हैं। उदाहरण के लिए पृथ्वी के गर्भ मे और पृथ्वी की सतह पर भी श्रोतो और नदियो के रूप मे प्रतिक्षण अजस्र जलधाराएँ प्रवाहित हो रही हैं। इसी प्रकार अन्तरिक्ष मे भी जल का सागर भरा हुआ है और अनेकानेक प्रकारो की तरगों से तरगित होता रहता है। अन्तरिक्ष ही नहीं, अपितु आकाशमण्डल के एक बाह्यस्तर पर भी सूक्ष्म वाष्प के रूप मे, जल विद्यमान है। इस प्रकार तीनों लोको मे जल ही नहीं, अपितु अग्नि और वायु भी व्याप्त हैं।

यह प्रक्रिया केवल जल सृष्टि अथवा इस ब्रह्माण्ड मे ही नहीं चल रही है अपितु चेतन सृष्टि, जो प्राणियो के शरीर के रूप मे है, उन पिण्डो मे भी प्रतिक्षण चल रही है। उदाहरण के रूप मे मनुष्य के शरीर को लीजिए—जठराग्नि, शारीरिक ऊष्मा, श्वास-प्रश्वास आदि के रूप में इस शरीर पिण्ड में भी ये प्रक्रियायें प्रतिक्षण, जागते सोते चलती रहती हैं। चेतन प्राणियो के—मनोमय जगत में विचारो और भावोद्वेगो के रूप में जो प्रक्रियायें चल रही हैं, वे भी यज्ञ के ही अगीभूत हैं। चेतन और जड़जगत मे, ये सब प्रक्रियायें, जिन शक्तियो की विद्यमानता के कारण उद्भावित हैं, उन शक्तियों का ही नाम वेद में "देव" है। यज्ञ एक प्रक्रिया का नाम है और उसके सचालनकर्ता "देव" हैं। देवो का अधिपति होने के कारण ही उस परमपिता परमात्मा को "महादेव" कहा गया है। यजुर्वेद के ३१वें अध्याय में एक मन्त्र है —

"यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणिप्रथमान्यासन्।
ते ह नाक महिमान सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवा ॥

अर्थात् देव (विद्वान पुरुष) यज्ञेन (यज्ञ के द्वारा) यज्ञम् (यजनीय परमेश्वर की) अयजन्त (उपासना करते है) ते ह (वे यज्ञादि कर्म) नाकम् [अतिश्रेष्ठ हैं] महिमान (श्रेष्ठ याज्ञिक कर्मी, महा महिमा वाले) सचन्त (उस मोक्षरूपी परमानन्द को प्राप्त करते है) यत्र (जिस स्थान पर) पूर्वे (पहिले से ही) देवा (आप्तपुरुष) साध्या सन्ति (विराजमान हैं)।

इस मन्त्र का आशय यही है कि जिस प्रकार परमपिता परमात्मा इस सृष्टिरूपी—महान् और पवित्र यज्ञ का कर्त्ता और पुरोहित होने के कारण पूज्यनीय एव वन्दनीय है, उसी प्रकार मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह श्रेष्ठ कर्मरूपी यज्ञो को करता हुआ परमानन्द अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करे। वेद कहता है—

"अग्निमीळे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतार रत्नधातमम् ॥

हम उस प्रकाशस्वरूप परमात्मा की उपासना करें जो यज्ञ का देवता और पुरोहित है। मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है, अज्ञानतावश जब कभी वह यज्ञरूपी नियमो अर्थात् सत्यकर्मों का उल्लघन करता है तब हम उसे अयज्ञीय कहते हैं और ऐसे सभी कर्म हमारे अमगल के कारण बन जाते हैं। वेद मे इसीलिए कहा गया है—"यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म" अर्थात् श्रेष्ठतम कर्मों का ही नाम "यज्ञ" है। ऐसे ही श्रेष्ठतम यज्ञरूपी कर्म करने के लिए वेद पुन आदेश देता है—

"देवो व सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे" अर्थात् हे प्रभो? हमे याज्ञिक अर्थात् श्रेष्ठ-कर्मी बनाइये।

वेदो के इन्हीं दार्शनिक तत्वो के आधार पर मानव के अभ्युदय एव निश्रेयस की सिद्धि हेतु ऋषियो ने अनेक प्रकार के यज्ञ, याग और इष्टियो की परिकल्पना का विधान किया है। यथा वृष्टियज्ञ, पुत्रेष्टियज्ञ, अश्वमेधयज्ञ, बाजपेयियज्ञ, गोमेध, अजामेध आदि। ये सभी यज्ञ मानव जीवन अथवा समाज के व्यापक क्षेत्र मे से किसी न किसी उपक्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाले हैं और समय समय पर अपने कार्य तथा अपनी इष्टियो अथवा सिद्धियो का परिनिरीक्षण करने वाले हैं।

हमारी प्रिय आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी-यज्ञ भी आत्मनिरीक्षण का है। स्वामी दयानन्द के कार्यों को आर्यसमाज ने और आर्यसमाजो के कार्य का आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने उत्तरदायित्वपूर्ण ढग से वहन करने का व्रत लिया है। हम इस व्रत मे कितने सफल हुए हैं, आज इसी का तो निरीक्षण करना है। किसी सस्था अथवा सभा के जीवन का १०० वर्ष का समय अल्प भी है और अधिक भी है। यदि सस्था अपने अन्तिम ध्येय की पूर्ति मे निरन्तर प्रगतिशील है, उसके कार्यों का औचित्य कसौटी पर खरा उतर रहा है तो उसके जीवन मे यह समय अल्प ही कहा जायेगा, और यदि कछुए की चाल घिसटते पिटते किसी तरह चलना ही लक्ष्य है तो यह समय अधिक हो या अल्प, नगण्य ही माना जायेगा। आर्यसमाज का अन्तिम ध्येय "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का है। आर्य प्रतिनिधि सभा का ध्येय आर्यसमाजो को इस अन्तिम ध्येय की प्राप्ति तक पहुचाने मे साहाय्य प्रदान करना है। अत हमारा कर्तव्य है कि शताब्दी के इस पावन पर्व पर हम सभा की प्रगति और उसके प्रत्येक आदोलन की जाच इसी मूल भावना से करें। यह हमारा शताब्दी समारोह नहीं अपितु शताब्दी-यज्ञ है, जहां से हमे पुन ध्येयपूर्ति के लिए व्रत लेना होगा क्योंकि समस्त मानव-जाति की ऐहलौकिक तथा पारिलौकिक उन्नति का यही मूलमन्त्र है।

इतिहास के सुनहरे पृष्ठ यज्ञ की महिमा से भरे पडे हैं, परन्तु काल की गति परिवर्तनशील है। मध्य युग मे जब वाममार्गीय आचरण जीवन मे प्रबल हो गये तो इन्हीं यज्ञो के नाम पर हिंसा, वामाचार, अनाचार फैल गये और उन्हें ही धर्म का साधन मान लिया गया। यज्ञो के नाम पर विभिन्न प्रकार के काल्पनिक सूत्र तथा मान्यताएँ खडी कर दी गई और जनमानस उन्हें धर्म का अग समझकर स्वीकार करने लगा। ऐसे समय मे, आधुनिक युग के अनेक मनीषियो, जिनमे स्वामी दयानन्द का नाम प्रमुख है, ने यज्ञों के दिव्यस्वरूप का पुन उद्घोष किया है। वस्तुत यज्ञ हमारे समाज को

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सुतारक साधना से आनन्दोपलब्धि

—विक्रमादित्य 'वसन्त'
वेदवारिधि
बी-६४ (वसन्तिका) राजाजीपुरम् लखनऊ-२२६०१७

य इद्धे आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः। द्युम्नाय सुतरा अपः ॥
(ऋ० ६-६०-११, साम ११५०)
य इद्धे आ-विवासति सु-म्न इन्द्रस्य मर्त्य , द्यु-म्नाय सु-तरा अप ।।

प्रस्तुत मन्त्र मे आनन्द प्राप्ति का बडा सरस और सरल उपाय बतलाया गया है। मन्त्रार्थ यह है-(य मत्य) जो मानव (द्यु-।-म्नाय) दिव्यआनन्दकाप्राप्ति के निमित्त (इन्द्रस्य इद्धे) आत्म ज्योति के द्वारा (सु+तर अप) सुतारक कर्म प्रवाहित करते है [वे ही] (सु+म्न आ+विवासति) सु+आनन्द का पूर्णतया सेवन करते हैं।

मानव स्वभाव से ही आनन्द करमी है। उसकी प्रत्येक इच्छा और उसकी पूर्ति के लिए किया हुआ प्रयत्न जिस सुख के लिए होता है, उसके मूल मे आनन्द की ही अपरोक्ष कामना होती है। कोई भी मानव दुख अशांति और क्लेश नहीं चाहता परन्तु फिर भी उसकी निवृत्ति इन से नहीं है। अनादि काल से इस ससार के तुमुल कोलाहल मे हाहाकार होता चला आया है, जो कभी समाप्त नहीं होगा। समस्याओ की उलझनें मानव को उलझाती रही है और उलझाती रहेगी। बुद्धिमान पुरुष उलझनो के जाल मे न फस कर उससे निकलने का मार्ग खोजता है और आनन्द प्राप्ति के लक्ष्य की ओर सकल बाधाओ को परे हटाते हुए आगे बढ़ता जाता है।

आनन्द प्राप्ति की प्रथम सीढ़ी है, आत्मज्ञानी होना अर्थात् आत्म विस्मृति की स्थिति से निकल कर आत्म जागृत होना। मानव जीवन की श्रेष्ठता का बोध तभी होगा जब शरीरस्थ आत्मा अपने स्वरूप से अवगत होगा। अपने को न जानना ही आत्म विस्मृति है। "न विजानामि यत् इव इदमस्मि" मे क्या हू, यह मै नहीं जानता हू, ऐसा अबोध तो केवल दीन हीन और भीरु होगा। जब नश्वर और विकारमय तथा परिवर्तनशील शरीर को ही सर्वस्व समझ लिया जाता है, तो यह स्थिति आत्म विस्मृति की है। जो आत्मा और



शरीर के समुच्चय को जीवन जान कर आत्म तत्व के पृथक अस्तित्व को स्वीकार करते है, जिन्हे यह प्रत्यक्ष बोध है कि जड शरीर मे जो गति है, जो वेग है वही आत्मा है, जो वेदानुसार "वायुरनिलममृतम् थेदभस्मान्त शरीरम्" (यजु ४०/१५) अजर और अमर है जब कि शरीर भस्मान्त है, वे ही ज्ञान के प्रकाश मे देख पाते हैं कि इस आत्मा की अतृप्त तृषा जब तक तृप्त नहीं होगी, तब तक व्याकुलता बनी रहेगी।

वर्तमान मानव जीवन जो अस्त-व्यस्त, असतुलित और घोर अशांत हैं, उसका मूल कारण है अज्ञान जन्य आत्म विस्मृति, जिसके कारण जीवन की बहुमुखता सिमट कर भोगवाद पर केंद्रित हो गई है। भोग की तीव्रता ने मानव बुद्धि को केवल इन्द्रियो की स्वार्थ मय तृप्ति मे लगा दिया है मानव को यह भ्रांति है कि उस का आनन्द उस की भोग परक इच्छा पूर्ति मे है, जब कि सत्य तो यह है कि आनन्द इच्छा की निवृत्ति मे है। इच्छा जैसे ही मनोभूमि को त्यागती है, आनन्द की अनुभूति तभी होती है। मन्त्र मे इस सत्य का दर्शन कराते हुए कहा गया है कि "द्यु-म्नाय इन्द्रस्य इद्धे सु-तर अप अर्थात् सुतारक आत्म साधनाओ को साधा जाए दिव्य आनन्द की प्राप्ति के लिए, अपने आत्म प्रकाश के माध्यम से।

सुतारक साधनाए वे होती है जो स्वार्थ के लिए न हो कर परमार्थ के लिए होती है। परमार्थी ही अपनी इंद्रियो का दमन और मन का शमन करता है। स्वार्थ पूरित एक इच्छा असख्य इच्छाओ को जन्म देती है, जिन की आपूर्ति के कारण अशांत मन और उत्तेजित मस्तिष्क व्यक्ति को सतत व्याकुल बनाए रखता है। बिना इच्छा के कम नहीं होता और मानव चूंकि अकर्मी नहीं रह सकता अतएव उसे असख्य इच्छाओ से निवृत्त होने के लिए एक महती विशाल इच्छा को सजोना होगा।

"उत नो वाज सातये पवस्व बृहतीरिष । द्युमदिन्दो सुवीर्यम्।।
(ऋ ६/१३/४ साम० ११६०)

वाजसात्यार्थ हमे उस विशाल आकांक्षा को सजोना है जो हमे प्रदीप्त सुवीर्य कर दे। साधना के लिए आत्म शक्ति चाहिए और मानव जीवन की उपयोगिता उस दिव्य कर्म मे है, जो सबके हित की कामना के लिए किया जाता है। नैसर्गिक इच्छाओ के अतिरिक्त जो शरीर को बनाये रखने से केवल सम्बन्धित हैं, मानव की ऐच्छिक इच्छाए जब योग के बिन्दु पर आ कर केंद्रित हो जाती हैं तभी जीवन का वशीकरण होता है और प्रत्येक कर्म श्रेष्ठता का प्रतिपादक होता है।

प्रत्येक क्रिया की एक प्रतिक्रिया है। दुष्कर्म की प्रतिक्रिया आत्म ग्लानि है और सत्कर्म का फल आनन्द उपलब्धि है। सद् इच्छा की पूर्ति के लिए किया गया कर्म सुकर्म ही होगा और जहाँ सुकर्म होगा, वहाँ ही सुखदायी आनन्द का पूर्ण सेवन होगा।

प्राचीन ऋषियो ने मानव जीवन की प्रणाली को वैदिक पद्धति पर आधारित किया था। जिसके कारण सादा जीवन और उच्च विचार का आदर्श व्याप्त हो कर मानव को आनन्द सेवी बनाता था। अज्ञानतावश उस वैदिक पद्धति को विस्मृत करने से ही आत्म विस्मृत हो कर आज का मानव आनन्द से वचित हो गया है। नितान्त दुराचारी युवावस्था मे शरीर से जर्जरित, अज्ञानी, छली, कपटी, विटामिनो व इजेक्शनो और टानिको के आश्रित जीने वाला भौतिक रूप से चाहे कितना ही समृद्ध क्यो न हो जाए, वह उस आनन्द की क्षीण अनुभूति तो दूर की बात है, उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता जो एक सच्चे परमार्थी को परमात्मा भाव से मिलती है।

आनन्द के आध्यात्मिक यथार्थ का मानसिक एव केन्द्रिक धरातल पर अवतरण आर्ष जीवन की विशिष्टता थी जिसका मूलाधार था वैदिक मान्यताओ को जीवन मे पूर्ण रूपेण अवतरित करना। आसनस्थ हो कर समावस्था मे जब शब्द, विचार, गति, आकृति, वर्ण चक्र और शरीर शून्यता का प्रयोगात्मक अभ्यास किया जाता था और वेदानुसार आचरण करने से द्वेष रहित स्थिति तक मानव अपने को पहुचाता था, तभी विवेक युक्त

[शेष पृष्ठ ८ पर]

राष्ट्रगान व उच्चतम न्यायालय

–श्री जस्टिस महावीर सिंह (अवकाश प्राप्त)
बी–१६२ सेक्टर १४ नाइडा जिला गाजियाबाद

अभी पिछले महीने (११ अगस्त १९८६) उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्र गान को गाने को बाध्य करने वाले केरल शिक्षा विभाग के परिपत्रों को असवैधानिक करार दिया और उन विद्यार्थियो का निष्कासन रद्द कर दिया जिनको राष्ट्र गान गाने से इन्कार करने पर स्कूल से निकाल दिया था। इस निर्णय की, जैसी आशा थी, बड़ी प्रतिकूल प्रक्रिया हुई और यह माग बढ़ती जा रही है कि राष्ट्रीयता की भावना के विकास के हित मे इस निर्णय को बदलवाया जावे और यदि आवश्यकता हो, तो सविधान मे भी सशोधन कराया जावे। केरल सरकार व कुछ अन्य नागरिको की ओर से इस सबध मे नई याचिका भी उच्चतम न्यायालय मे पेश की गई है जिस पर जल्दी हो सविधान पीठ द्वारा विचार होने की सभावना हे। तब भी हमे पूरे तथ्य जानने चाहिये कि किन आधारो पर यह निणय हुआ है तथा वह कहाँ तक यह ठीक है ?

केरल शिक्षा विभाग के निदेशक ने सन् १९६१ व सन् १९७० मे दो परिपत्र जारी किये थे। पहले परिपत्र मे राष्ट्रगान के सबध मे यह कहा गया था, कि सामान्य तथा पूरे स्कूल को राष्ट्र गान के गाने मे भाग लेना चाहिये दूसरे परिपत्र मे यह कहा कि यह आवश्यक है कि पढ़ाई प्रारम्भ होने से पहले सारे स्कूल के विद्यार्थी व अध्यापक एक जगह इकट्ठा हो व राष्ट्र गान के गाने के बाद एक स्वर से राष्ट्रीय प्रतिज्ञा कहने के बाद अपनी-अपनी कक्षाओ मे जावें।

केरल के एक स्कूल के ये तीन विद्यार्थी बिजू, बीनूमाल तथा बिन्दु एमानउल सवेरे इकट्ठा होने के समय जब राष्ट्र गान गाया जाता था, आदरपूर्वक खडे रहते थे परन्तु स्वय नहीं गाते थे। पहले किसी ने उनके इस आचरण पर ध्यान नहीं दिया था। परन्तु जुलाई १९८५ मे कुछ व्यक्तियो ने इस बात पर ध्यान दिया व उनसे सवेरे की ऐसी मीटिंग मे प्रश्न किया। उन्होने उत्तर दिया कि उनके धर्मानुसार राष्ट्रीय गान नहीं गाना चाहिए, अत वे इस गाने मे शरीक नहीं होते हैं। इसे राष्ट्र गान का अपमान माना गया और उन्हे स्कूल से निष्कासित कर दिया।

सिंहावलोकन

इन विद्यार्थियों ने केरल उच्च न्यायालय मे रिट करी। उच्च न्यायालय को यह पता था कि राष्ट्र गान मे कहीं भी ऐसी कोई रचना या परिकल्पना नहीं निकलती कि इससे किसी धर्म के मानने वालो को कोई आपत्ति हो। अत रिट खारिज की।

उस आदेश के खिलाफ इन विद्यार्थियो ने उच्चतम न्यायालय मे अनु० १३६ के अन्तर्गत अनुमति प्राप्त कर अपील की। उनका कहना था कि उनको राष्ट्र गान गाने को बाध्य करना उनके अनुच्छेद १९ (१) (क) व अनु० २५ का उल्लघन करता है।

अनु० १९ (१) (क) मे प्रत्येक नागरिक को भाषण व अभिव्यक्ति की स्वतत्रता का मूल अधिकार प्राप्त ह। इस अधिकार मे यह भी शामिल है कि वह चाहे तो कोई भाषण न करे या कोई विचार प्रकट न करे। परन्तु इस अधिकार पर अनुच्छेद १९ (२) द्वारा प्रदत्त शक्ति के अनुसार राज्य विधि द्वारा राष्ट्र की प्रभुता और अखडता, सुरक्षा, विदेशी राज्यो से अच्छे सबन्धो, लोक व्यवस्था, शिष्टाचार या सदाचार न्यायालय के अपमान या अपराधो को उकसाने से रोकने के लिए युक्तियुक्त रोग लगा सकती है।

उच्चतम न्यायालय ने प्रथम यह बताया कि केरल राज्य ने ऐसी कोई विधि नहीं बनाई है कि जिसके अनुसार राष्ट्र गान गाना आवश्यक हो और उसका गान न करना राष्ट्र का अपमान माना जावे। ये परिपत्र शिक्षा विभाग के निदेशक के है व प्रशासनिक प्रकृति के हैं। इनसे किसी का अधिकार नहीं छीना जा सकता।

सविधान मे कोई बाध्यकारी प्राविधान नहीं है। इस सबध मे केवल अनुच्छेद ५१–क (क) मे बताये मूल कर्त्तव्य की ओर न्यायालय का ध्यान दिलाया। यह मूल कर्त्तव्य निम्न हैं –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओ, राष्ट्रध्वज और राष्ट्र गान का आदर करे।

उच्च न्यायालय का यह मत है कि ये विद्यार्थी राष्ट्र गान के समय आदरपूर्वक खडे रहते है, अत केवल राष्ट्र गान 'सबके साथ न गाने' से उसका अनादर करना नहीं माना जावेगा।

ससद ने एक अन्य विधि बनाई है। यह राष्ट्र गौरव अपमान निवारण अधि० १९७१ है। इसकी धारा १३ मे राष्ट्र गान के सबन्ध मे निम्न प्राविधान किया है –

"जो कोई जानबूझ कर राष्ट्र गान को गाने मे रुकावट डालता है या इसके गायन करने वाले किसी समूह मे उपद्रव करता है या विघ्न डालता है, वह ३ वर्ष के कारावास तक व जुर्माना व दोनो से दडनीय होगा"

उच्चतम न्यायालय ने कहा कि इन विद्यार्थियो का कोई कार्य इस धारा के अन्तर्गत नहीं आता न वे किसी को राष्ट्र गान गाने से रोकते हैं और न कोई उपद्रव करते हैं।

दूसरे उच्चतम न्यायालय का यह मत भी है कि यदि कोई विधि भी इस सबध मे हो तो वह अनु- १९ (२) मे वर्णित किसी 'अपवाद' के सबध मे नहीं होगी क्यों कि न यह राष्ट्र की प्रभुता, अखडता, सुरक्षा, विदेशो से सबन्ध, न्यायालय का अपमान, मानहानि या अपराधो की दुष्प्रेरणा को रोकने के लिए होगी और इसलिए वह अवैध होगी।

इसके पश्चात उच्चतम न्यायालय ने दूसरे मूल अधिकार के सबन्ध मे भी विचार किया। अनुच्छेद २५ (१) मे निम्न है – "लोक व्यवस्था, सदाचार और स्वास्थ्य तथा इस भाग के अन्य उपबधों के अधीन रहते हुए, सभी व्यक्तियो को अन्त करण की स्वतत्रता और धर्म को अबाध रूप से मानने, आचरण करने और प्रचार करने का समान हक होगा।"

[क्रमश]

दीपक जलाओ साथियो

दिल से अँधेरो को भगाओ साथियो।
आँधियो मे दीपक जलाओ साथियो।
तेल की तलाश मे न जाओ साथियो।
बातियो को खून मे डुबाओ साथियो।
वायदा करो तो पूरा होना चाहिए।
माग भरदी तो नहीं रोना चाहिए।
यदि आग लगी आपके पडोसमे।
चैन की न नींद कभी सोना चाहिए।
बेटी न किसी की भी सतानी चाहिए।
टी०वी० फ्रिज हेतु न जलानी चाहिए।
इतनी समझ हमे आनी चाहिए।
लड़की न लकडी बनानी चाहिए।
डोलियाँ न अर्थियां बनाओ साथियो।
उतना ही खाओ जो कमाओ साथियो।
प्यास न बुझा सके वो पानी नहीं है।
विश्व भूल जाए वो कहानी नहीं है।
रुकने का नाम तो रवानी नहीं है।
हार मान बैठे वो जवानी नहीं है।
नीतिहीन बातें सब छोड दीजिए।
टूटी हुई माला फिर जोड दीजिए।
बादलो से अमृत निचोड लीजिए।
कसो की कलाइयाँ मरोड दीजिए।
गिरे हुए दीन को उठाओ साथियो।
एकता के बीज को बचाओ साथियो।
लक्ष्य पै न पहुचे वो तीर नहीं है।
खून पीता हो जो वो अमीर नहीं है।
सत्य बेचता हो वो फकीर नहीं है।
झूठ बोलता हो वो कबीर नहीं है।
प्यार के बिना तो जिन्दगी अनाथ है।
साथ छूट जाए वो भी कोई साथ है।
व्यर्थ मे झुका रहे वो कैसा माथ है।
उन्नति का नाम नहीं फुटपाथ है।
प्रेम की फुहार मे नहाओ साथियो।
वेदना को वदना बनाओ साथियो।
जनता को लूटे वो सिपाही नहीं है।
लिखने से मुकरे वो स्याही नहीं है।
रास्ते को दोष दे वो राही नहीं है।
प्यास को बढाए वो सुराही नहीं है।
सांच को यहाँ कभी भी आँच नहीं है।
आँच मे जले वो कोई सांच नहीं है।
पत्थर तो पत्थर है कांच नहीं है।
पक्षपाती जाँच कोई जाँच नहीं है।
फैशन की पूरियाँ न खाओ साथियो।
पुरखो के पुण्य को बचाओ साथियो।
दिल से अँधेरो को भगाओ साथियो।
आँधियो मे दीपक जलाओ साथियो।
तेल की तलाश मे न जाओ साथियो।
बातियो को खून मे डुबाओ साथियो।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी', डी०ए०वी० कालिज अबोहर (पजाब)

श्री जीवितराम सिंह का देहान्त

आर्यसमाज माटुंगा बम्बई के सस्थापक तथा वाराणसी व मिर्जापुर क्षेत्र मे आर्यसमाज की गतिविधियों के प्रमुख स्तम्भ श्री जीवितरामसिंह का २६ अक्टूबर ८६ की रात्रि मे ८२ वर्ष की अवस्था मे वाराणसी में देहान्त हो गया। आप मस्तिष्क के रक्तस्राव के कारण पिछले एक मास से बेहोश पडे थे। उनकी शवयात्रा को उनके निवास स्थान से सर्वप्रथम आनन्द बाग स्थित महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल ले आया गया और हरिश्चन्द्र घाट पर अन्त्येष्टि सस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वाराणसी नगर एव समीपवर्ती क्षेत्र के अनेक आर्यसमाजो के कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

श्री जीवितराम सिंह महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो के प्रति पूर्ण निष्ठावान, अत्यन्त मितभाषी एवं सेवाव्रती थे। वाराणसी के प्रसिद्ध जयनारायण इटर कालेज मे शिक्षा प्राप्त करते समय वे अनेक प्रकार की सामाजिक व राजनैतिक गतिविधियो मे सलग्न हो गये थे। तदन्तर वे १९२८ मे बम्बई चले गये और सन् ६० तक वहा रेलवे मे क्लेम इन्स्पेक्टर के पद पर रहते हुये भी आपने अर्थ शुचिता का पालन किया और आर्यसमाज का गौरव बढ़ाया। बम्बई के आयसमाज माटुंगा और इसके द्वारा सचालित विद्यालयो मे तो आपकी सेवायें सर्वविदित हैं। इसके अतिरिक्त श्रद्धानन्द महिला आश्रम बम्बई, गुरुकुल अयोध्या तथा काशी शास्त्रार्थ स्थल वाराणसी मे भी आपका सहयोग उल्लेखनीय रहा। आपने पने जन्म स्थल, ग्राम जलालपुर माफी, चुनार, मिर्जापुर मे भी एक बालिका विद्यालय खोला जिसके आप आजीवन प्रधान रहे। अग्रेजो के समय मे तत्कालीन बम्बई प्रान्त मे हिन्दी का पाठ्यक्रम सर्व प्रथम आपके ही प्र ास से लागू हुआ था। आपका जीवन चिरस्मरणीय एव प्रेरणास्रोत रहेगा।

—आनन्द प्रकाश उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा

सुतारक साधना से आनन्दोपलब्धि

[पृष्ठ ६ का शेष]

होकर जीवन को स्वाहाकारी बना कर, वह पूर्ण आनन्द का सेवन करता था। उसकी आध्यात्मिक उपलब्धियाँ केवल उस तक ही सीमित नहीं रहती थीं अपितु वह अपने सर्वस्व को अर्पित कर उस परम आनन्द के पूर्णानन्द को उसके समान त्यागी बन कर प्राप्त करता था। वेद ने इन पूर्ण आनन्द सेवियो के लिए ही कहा है—

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्। मधोर्नपात्रा प्रथमान्यस्मै प्रस्तोमा यन्त्वग्नये॥
(साम० ४४)

अर्थात् जो सर्वस्व दानी बन जनो को आनन्दित करता हुआ श्रेष्ठतम कर्म करने के लिए प्रेरित करता है, उस गति स्वरूप अग्रणी को, उसके द्वारा की गई स्तुतियाँ, उसी प्रकार बढ़ाती हैं, जिस भांत मधु के पात्र व्यापनशील बनते जाते हैं।

मानव जीवन का चरम लक्ष्य आनन्द है। आनन्द का दर्शन जीवन के प्रत्येक पक्ष के साथ है। जीवन मे प्राणवन्त होना, परिपूर्ण होना ही आनन्द है और इस की उपलब्धि का एकमेव उपाय है आत्मा को ज्ञानवान बना कर दिव्य ज्ञान के प्रकाश मे सुतारक कर्मों को करना और अपने को परमात्मा के गुणो से अलकृत करते हुए, उस विराट मे उस भांति लय हो जाना जिस भांति एक सरिता विराट सागर मे समाहित हो कर एकाकार हो जाती है, तद्रूपा हो जाती है।

५

बाल जगत

हमारा वैदिक धर्म

सबसे पहले हमको यह जानना चाहिए कि भगवान के चार महान और मुख्य कार्य क्या है ?

(१) सृष्टि की रचना तथा उसका नियमपूर्वक सचालन ।
(२) सृष्टि का सहार ।
(३) मानवों के कल्याणार्थ वेद के माध्यम से दिव्य ज्ञान का प्रदान
(४) कर्मों का यथायोग फल ।

दयालु परम पिता परमात्मा ने अपने अमृत पुत्रो को उनके सुख और कल्याण के लिये इस सुखमय सृष्टि की रचना करके उसका सारा वैभव देने की महान कृपा की और इस सृष्टि के पदार्थों का उचित उपयोग किस प्रकार हो तथा मनुष्यों को क्या करना उचित है, क्या करना अनुचित है यह ज्ञान भी चारो वेदो के द्वारा सृष्टि के आदि मे प्रदान किया । यहाँ का सारा कार्य मनुष्य को स्वय करना है । वह कर्म करने मे स्वतत्र और फल भोगने मे ईश्वर के अधीन है । जैसे एक विद्यार्थी वर्ष भर विद्याध्यन करता है । उसके बाद उसके ज्ञान की परीक्षा होती है । परीक्षा देने मे वह स्वतत्र परन्तु परीक्षा का फल उसकी योग्यता के अनुसार आचार्य के आधीन है । जैसा उसने लिखा है उसी के अनुसार उसको अक मिलते हैं । इसी प्रकार मनुष्य जैसे कर्म करेगा उसका यथा योग्यफल भगवान की न्याय व्यवस्था के अनुसार उसको अवश्य भोगना पडेगा । इसी कारण वह अशुभ कर्म न करके शुभ कर्म ही करेगा । क्यो कि वह जानता है कि मै यदि बुरे कर्म करूंगा तो मुझे उसका दण्ड अवश्य भोगना पड़ेगा । सृष्टि का वैभव और वेद का ज्ञान देने से वह दयालु है । कोई भी किया हुआ कर्म बिना भोगे किसी प्रायश्चित या किसी अनुष्ठान से किसी भी प्रकार क्षमा हो नहीं सकता अर्थात् जो जैसा करेगा वैसा भरेगा इससे वह न्यायाकारी है । यहाँ हमारे कुछ "भूले और भटके भाई अज्ञान वश प्रश्न करते हैं कि जब ईश्वर को यह चारो कार्य निश्चित करने हैं तो फिर हमे उसको मानने से क्या लाभ मेरा उनसे नम्र निवेदन है कि आपके पिता ने आपको जन्म देकर पालपोष कर तन-मन-धन से इस योग्य बनाया कि आप ससार मे हर प्रकार की उन्नति कर सकें । फिर आप ही बताइये कि उनको मानना अथवा उनका आभार व्यक्त करना चाहिए या नहीं । ससार का ऐसा कोई मनुष्य होगा जो उसको न माने और उनका आभार व्यक्त न करे ।

परन्तु जो सारे ससार का पिता है जिसने हमे सारी सृष्टि का वैभव और वह वैदिक ज्ञान प्रदान किया जिससे हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी हुए । नहीं तो हम भी पशु के तुल्य ही रहते । उसको न मानने और उसका आभार व्यक्त न करे इससे बड़ी कृतघ्नता और क्या होगी । वैदिक मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति के जीवन मे कभी निराशा अकर्मण्यता, पुरुषार्थ हीनता, अनैतिकता तथा नास्तिकता के भाव आ नहीं सकते । इसी कारण वह इस लोक का सुख भोग कर अन्त मे मोक्ष का अधिकारी होता है ।

[१]
सच्चिदानन्द का जो ध्यान किया करता है ।
अपने सुख का ही वह सामान किया करता है ।
उस दयालु का सभी व्यक्त यह आभार करो ।
जो सदा जीव का कल्याण किया करता है ।

[२]
वेद का मार्ग सरल फूल सा कोमल सुन्दर ।
और सब मार्ग तो काँटो से भरे हैं दुष्कर ।।
तर्क बुद्धि की कसौटी पै तो कस कर देखो ।
सारे मानव को यही मार्ग है हितकर सुख कर ।।

—श्री जगदीश शारदा शीतल चाँदपुर बिजनौर
भू० पू० प्रधान आर्य समाज

आवश्यक द्रष्टव्य

(पृष्ठ २ का शेष)

सर्व सज्जनो को सूचित किया जाता है कि 'निर्णय के तट पर' (शास्त्रार्थ सग्रह) का प्रथम व तृतीय भाग प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है । तृतीय भाग जिसमे शेष शास्त्रार्थ जो प्रथम व द्वितीय भाग मे नहीं आ पाये उनको सग्रहीत किया जायेगा । यह सामग्री भी अत्यन्त प्राचीन व अप्राप्य सामग्री ही होगी, जिसमे प० आत्माराम जी अमृतसरी, प० रामचन्द्र जी देहलवी, प० बिहारी लाल जी शास्त्री प० ओम प्रकाश जी शास्त्री, प०राम दयालु जी शास्त्री, स्वामी दर्शनानन्द जी, प० बुद्धदेव जी विद्यालकार, प० गगा प्रसाद जी उपाध्याय जी स्वामी ब्रह्ममुनी जी, महात्मा अमर स्वामी जी, प० आर्य मुनि जी,, श्री इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, प० शिव शर्मा जी, महात्मा हसराज जी लाला मुन्शी राम जी आदि-आदि अनेको विद्वानो के शास्त्रार्थों अप्राप्य सामग्री आ सकेगी ।

पुस्तक का प्रारुप द्वितीय भाग की तरह ही होगा, पेज भी लगभग ४०० के होगे । जिसका मूल्य छपने पर १२५ रु० प्रति भाग होगा परन्तु जो सज्जन छपने से पूर्व अपना पैसा भेजेंगे उन्हे मात्र ६०) रु० प्रति भाग की दर से दिया जावेगा ।

आप अभी केवल अपना आर्डर बुक करा दें, पैसा (पुस्तक के प्रेस मे जाने पर) लिया जावेगा, अभी कोई पैसा न भजें । छपने के बाद मात्र पोस्टेज खर्च ग्राहक को देना होगा । अपना नाम व पता साफ-साफ हिन्दी या कैपिटल अग्रेजी शब्दो मे पिन कोड न० सहित लिखें ।

इस महान कार्य मे जो भी सज्जन आर्थिक सहयोग देना चाहे, अवश्य दें । ताकि यह कार्य सुगमता पूर्वक पूरा हो सके । बैंक ड्राफ्ट 'अमर स्वामी प्रकाशन विभाग गाजियाबाद-२०१००१' के नाम निम्न पते पर भेजें एव इसी पते पर अपनी प्रतियां बुक करावें, किस-किस भाग की कितनी-कितनी कापी आपको चाहिए । चैक स्वीकार नहीं होगे ।

पता —"अमर स्वामी सरस्वती"
प्रबन्धक अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१६५८, विवेकानन्द नगर(कार्यालय)गाजियाबाद-२०१००१(उ०प्र०)

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म"

[पृष्ठ ५ का शेष]

असत् से सत् की ओर तमस् से प्रकाश की ओर ले जाने वाला प्रमुखतम दिव्य साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य इस लोक मे ही उन्नति नहीं प्राप्त करता अपितु परलोक मे भी पहुंचकर परमपुरुषार्थ मोक्षरूपी आनन्द को प्राप्त कर सकता है । समाज मे ऐसे ही व्यक्तियो का निर्माण करना हमारा ध्येय है । इसी के लिए सभाओ का सस्थाओ का निर्माण होता है ।

अतः शताब्दी के पुनीत पर्व पर एकत्रित होने वाले आर्यो ! हमे ध्येय की यही निष्ठा लेकर यहा से जाना है । यही हमारा यज्ञ है और यही हमारा व्रत है । हम अतीत की वाममार्गीय खाइयो को लाँघ चुके हैं, हमारे सामने वेद रूपी सूर्य का दिव्य प्रकाश है, कोटि-कोटि नर-नारियों का समवेत आत्म बल है । हमारे "कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहित हमारे सीधे हाथ में कर्म है और बायें हाथ मे विजय श्री है । अत उठो, जागो और सभा को अपना तन-मन-धन देकर शक्तिशाली बनाओ यही समय की पुकार है । ★

आर्य जगत

वार्षिकोत्सव

कानपुर महानगर की प्रतिष्ठित आर्य समाज सीसामऊ का ५२ वां वार्षिकोत्सव ७ से ९ नवम्बर १९८६ के मध्य उत्साहपूर्ण रूप से सपन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी मोक्षानन्द तथा स्वामी गुरुकुलानन्द के धार्मिक प्रवचन हुए। तथा नित्य वेद-पारायण यज्ञ हुए। आर्य मित्र के सम्पादक आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० का आर्य समाज कैसे शक्तिशाली हो इस विषय पर ओजस्वी भाषण हुआ। महिला आर्य समाज का भी अधिवेशन श्रीमती शशिकान्ता शास्त्री के संचालन में सम्पन्न हुआ। भजनोपदेश के भजन भी प्रभावशाली रहे, आर्य समाज के प्रधान प० लक्ष्मण कुमार जी शास्त्री तथा उनकी धर्मशीला पत्नी श्रीमती शशिकान्ता शास्त्री के अथक प्रयासों से उत्सव पूर्ण सफल रहा। ऋषि लङ्गर के अवसर पर एक सहस्र से अधिक जनों ने प्रसाद ग्रहण किया।

—आर्य समाज, शास्त्री नगर, मेरठ का पंचम वार्षिकोत्सव २५ से २७ अक्टूबर ८६ को सम्पन्न हुआ जिसमें आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान सर्वश्री सत्यमित्र जी शास्त्री (गोरखपुर), धर्मपाल जी शास्त्री, निरञ्जन देव तीर्थ (खतौली), सभा प्रधान प० इन्द्रराज जी, डा० वेद प्रकाश (हिन्दी विभाग) सत्यपाल जी शास्त्री (ककरखेड़ा) महावीर प्रसाद जी, ओम दत्त जी तथा भारतवर्ष के विख्यात भजनोपदेशक श्री नरदेव जी (भरतपुर) के सुमधुर एवं अमृतमय उपदेश हुए। —राजकुमार

—भारत और नेपाल की सीमा रेखा पर स्थित जोगबनी शहर के मध्य अग्रसेन भवन के प्रांगण में आर्य समाज जोगबनी का २४ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १८-१०-८६ से दिनांक २१-१०-८६ तक भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

—सम्वाददाता

महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा में २५,२६,२७ फरवरी १९८७ को ऋषि मेला मनाया जायेगा। ऋषि मेला के एक सप्ताह पूर्व से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ होगा। जिसके ब्रह्मा श्री पंडित मदन मोहन जी विद्यासागर (हैदराबाद वाले) होंगे।

—रामनाथ सहगल मंत्री—महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा



शताब्दी समारोह के सफल आयोजन पर और देश की ज्वलन्त पंजाब समस्या पर जो प्रकाश आर्य प्रेमियों और आर्य जनों ने प्रकट किया उसके लिए जनहित कर्मी सुधार समिति अशोरत गंज लखनऊ सभा आर्य गण महानभावों का हृदय से समिति आभार प्रकट करती है विशेष रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के महामन्त्री प० मनमोहन तिवारी के सफल प्रयास के लिये शुभ कामनायें अर्पित करते हैं और आशा करते है कि भविष्य में इसी प्रकार समाज सेवी कामों में आदि रहें शुभकामनाओं सहित जनहितकारी लखनऊ मंत्री

संवेदना

(१) २५ अक्टूबर, आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी शक्तिवेश जी के पूज्य पिता श्री प० धर्मदत्त शर्मा का देहान्त दिनांक २५ अक्टूबर को झज्जर नगर (रोहतक) में हो गया। उनकी उम्र ७७ वर्ष थी। वैदिक रीति से उनका दाह-संस्कार हुआ। पण्डित जी संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। धार्मिक विचार-धारा उनके अन्दर व्याप्त थी। बचपन में उन्हीं के संस्कारों से प्रभावित हो कर स्वामी जी ने इस क्षेत्र में पदार्पण किया।

(२) इटारसी आर्य समाज ने आर्य सदस्य श्री काशी राम जी के निधन पर दिनांक २६-१० ८६ को सा० सत्संग के बाद शोक मनाया।

(३) आर्य समाज इलाबांस के पूर्व मन्त्री एवं जनपद मैनपुरी के जाने-माने निष्ठावान, कर्मठ एवं सर्वाधिक वयोवृद्ध आर्य नेता प० कुँवर बहादुर जी का अपने ग्राम-इलाबांस में दिनांक १६-१०-८६ को प्रातः निधन हो गया। दि० २७-१०-८६ को शान्ति यज्ञ के अवसर पर जनपद भर के आर्य बन्धुओं ने अपने उक्त दिवंगत नेता को अश्रु पूरित श्रद्धाञ्जलियाँ दीं। आर्य समाज इलाबांस के आप ही प्रधान संस्थापक थे और आर्योपसभा की स्थापना में आपका भारी योगदान रहा था। सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान लाला राम गोपाल जी की अध्यक्षता में आर्य समाज मैनपुरी ने अपने शताब्दी समारोह वर्ष १९८० में आपका भव्य अभिनन्दन किया था। आर्य समाज इलाबांस की ऐतिहासिक हीरक जयन्ती वर्ष १९८२ की अनुपम सफलता आपकी ही प्रेरणा और लगन का सुपरिणाम थी।

(४) पिथौरागढ़। ७२ वर्षीय नैष्ठिक ब्रह्मचारी पीताम्बर ओली का शरीरान्त २७ अक्टूबर १९८६ को हो गया।

उपरोक्त चारों आर्य जनों के निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा गहरा शोक व्यक्त करती है तथा परम् पिता परमात्मा से दिवंगत आत्माओं को शान्ति तथा सद्गति और उनके वियोग में संतप्त सम्बन्धियों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करती है।

—मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

श्री सत्यव्रत जी, मन्त्री आर्य समाज—पुतरी, जिला मैनपुरी को अवैतनिक उपदेशक पद पर नियुक्त किया गया है। जो समाजें उन्हें प्रचारार्थ बुलाना चाहें, वे सभा से पत्र व्यवहार करें।

—मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

निर्वाचन

निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या

१—श्री रार्जाचरणञ्जय सिंह जी — प्रधान

५—श्री शमिन्द्र भटनागर — मन्त्री

६—श्री रामेश्वर लाल अग्रवाल —कोषाध्यक्ष

आ० स० देवरिया

१—प्रधान—श्री बजपाल सिंह

२—मन्त्री—श्रीकृष्ण सिंह धर्मा

५—कोषाध्यक्ष—श्री जगदम्बा प्रसाद

आ० स० तिलियाबो

प्रधान—श्री बाबूराम आर्य

मन्त्री—अहिवरन सिंह शास्त्री

कोषाध्यक्ष—श्री श्रीराम आर्य

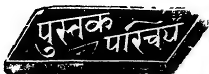
महर्षि दयानन्द आर्य शिक्षा समिति रीवा।

श्री सदाशिव आर्य —प्रधान

श्री सुशील कुमार वर्मा —मन्त्री

व्यवस्थापक

श्री सुदामा लाल सहदेव—कोषाध्यक्ष



समीक्षा

योग यान्त्रिक

सम्पादक –श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'

प्रकाशक–वेद प्रचार समिति आलमबाग लखनऊ

पृष्ठ सख्या–८५ मूल्य ३/५०

योग यान्त्रिक पुस्तक श्री पृथ्वीराज वरमानी जी लखनऊ की पावन स्मृति में प्रकाशित की गयी है। श्री वरमानी एक आदर्श पुरुष, सच्चे आर्य थे। विगत १२-११-८५ को ऋषि निर्माण दिवस पर आर्य समाज चन्द्रनगर लखनऊ को पावन वेदी पर जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा आयोजित समारोह मे ऋषि महिमा के गीत गाते हुए ही आपका देहावसान हो गया था।

वे उस समय ६७ वें वर्ष मे चल रहे थे इस लिए श्री वसन्त जी ने उनकी स्मृति मे श्री चम्पति जी, श्री प्रकाश जी, श्री नन्द लाल जी, श्री नत्था सिंह, श्री सहदेव शारदा व कुछ स्वरचित ६७ भजनो का सग्रह (जो भजन उन्हें बहुत प्रिय थे और बडे ही उल्लास के साथ समारोहो मे सगीत बद्ध करके सुनाया करते थे, सम्पादित किया है। उक्त समारोह मे २ भजन वे लिख कर लाये थे परन्तु सुना न सके उनके ब्लाक बनवा कर इसमें छापे गये हैं। इसके अतिरिक्त उनकी डायरी से अनेक सकलित स्वर्णिम वाक्यो का प्रकाशन एव भूमिका मे उनकी कतिपय विशेषताओ का भी वर्णन लेखक ने बडे ही मनोहारी ढग से किया है।

यह भजन आर्य समाज के भजनोपदेशको तथा समस्त भजन प्रेमियो के लिए अत्यन्त उपयोगी है। पुस्तक का मूल्य लागत मात्र है।

पुस्तक श्री 'वसन्त' जी बी ६४ वसन्तिका राजाजीपुरम लखनऊ अथवा मत्री वेद प्रचार समिति आलमबाग द्वारा आर्य समाज आदर्श नगर लखनऊ से उपलब्ध हो सकती है।

–आचार्य देवव्रत अवस्थी सम्पादक

प्रश्नोत्तरी

प्रश्नोत्तरी– लेखक श्री यशपाल जी आर्य प्रकाशक आर्य समाज धमावाला–देहरादून, मूल्य दो रुपया पचास पैसे पृष्ठ–६५

लेखक श्री यशपाल जी क्रियाशील आर्य समाजी है एव लगन तथा निस्पृह से वैदिक सिद्धांतो के पालक एव पोषक हैं। देहरादून एव पर्वतीय क्षेत्रों मे उनका विशेष स्थान है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक सिद्धांतों पर आधारित आर्य समाज की स्थापना की एव उन सिद्धान्तों के समर्थन हेतु सत्यार्थ प्रकाश की रचना की। श्री यशपाल जी ने प्राय: आर्य समाज से सबन्धित समस्त विषयो का इस लघु पुस्तक केवल सौ प्रश्नों एव उत्तरों में समावेशित कर दिया है। यह सत्यार्थ प्रकाश को सक्षेपिका है। पुस्तक उपदेशकों–भजनीको के लिये अति उपयोगी है एव आर्य समाज के विद्यालयो में विद्यार्थियो को नैतिक शिक्षा के रूप में रखनी चाहिए और पारितोषिक मे अनिवार्य रूप से वितरित की जाये जिसमे थोडे ही में बहुत अधिक ज्ञान उपलब्ध हो सके। श्री यशपाल जी आर्य को इस योग्य रचना हेतु धन्यवाद मुद्रण स्वच्छ–कागज उत्तम है।

पुस्तक की प्रतियो के लिए पत्र व्यवहार कीजिये श्री यशपाल जी आर्य-आर्य वस्तु भण्डार–४६ डिस्पेन्सरी रोड देहरादून।

–आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सांडी जि० हरदोई का ४९ वॉ वार्षिकोत्सव बडी धूम धाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर श्री मेवाराम गुप्त ठेकेदार द्वारा स्थापित वेद मदिर मे चारो वेदो की स्थापना की गई तथा यज्ञशाला मे सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री आचार्य चन्द्र देव शास्त्री श्री आचार्य ओकार मिश्र'प्रणव' शास्त्री आदि विद्वानो के प्रवचन एवम् श्री महिपाल सिंह आर्य, अलीगढ़ श्री ब्रह्मानन्द आर्य श्री रामावतार आर्य भजनोपदेशको के भजन हुए। इस पांच दिनो के आयोजन मे आस-पास की जनता जर्नादन ने अधिक से अधिक सख्या मे भाग लिया और हजारो नर-नारियो ने धर्म लाभ उठाया।

–प० केशवदेव शास्त्री वान० महो० अधिष्ठाता उपदेश विभाग

वेद मन्दिर चान्दपुर जिला बिजनौर का २३ वॉ वार्षिक उत्सव

व यज्ञ २१/१०/८६ से २७/१०/८६ तक

अध्यक्ष महात्मा बलदेव जी महाराज वानप्रस्थी चाँदपुर
ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी सचालक तपोवनाश्रम देहरादून
मुख्य वक्ता पडित शिवकान्त उपाध्याय पुरोहित आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली
वक्ता स्वामी जीवनानन्द जी वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक
वक्ता बाल सभा के बडे वेद मन्दिर चान्दपुर
भजन उपदेशक श्री चयन मुनि तपोवना श्रम देहरादून
तथा अन्य देवियॉ

२१/१०/८६ प्रात ८ बजे शोभा यात्रा पुराने वेद मन्दिर से आरम्भ हुई और दस बजे वेद मन्दिर रामलीला मैदान चान्दपुर मे समाप्त हुई शोभा यात्रा मे ऋषि दयानन्द सरस्वती शिशु मन्दिर के छोटे बच्चो ने बहुत सुन्दर बैण्ड बजाया। दस युवक स्कूटरो पर और लाला दौलत राम वृद्ध युवा घोडे पर बैठे शोभा यात्रा का नेतृत्व कर रहे थे।

चान्दपुर विद्यालय की छात्राओ ने भाग लिया और सारा समय भजन बोलती व गाती रही– ऐसे ही युवको की मण्डली थी नगर वासियों पर आर्यों के सगठन व शक्ति का अच्छा प्रभाव पडा। सुरक्षा का प्रबन्ध यू० पी० पुलिस का था।

दिन को उपवास के उपरान्त साय ३ बजे यज्ञ आरम्भ हुआ। अथर्व वेद काण्ड दस से जो कि काण्ड १३ तक चला। कहीं-कहीं यज्ञ के ब्रह्मा मत्र पर प्रकाश डालते रहे बाहर से आने वालो की सख्या पर्याप्त थी। यज्ञ मे १२७ यजमान बने जिन्होंने घी की आहुतियाँ दी २८५ व्रतो बने जिन्होंने सामिग्री की आहुतियाँ दी।

शनिवार २५/१०/८६ को दोपहर को ११ बजे से लेकर साय ४ बजे तक अखण्ड गायत्री यज्ञ हुआ। १५ मिनटो की पार्टियॉ थी। जिसमे ११७ यजमान २०० के लगभग व्रती बने।

यज्ञ मे लगर की सेवा चान्दपुर वेद मन्दिर की महिलाओ ने बडी सराहनीय की, कोई वेतनिक सेवक न था। प्रात साय २०० से अधिक व्यक्ति भोजन करते थे श्रद्धा व सेवा भाव का एक आदर्श उपस्थित किया गया।

वक्ता तो उच्च कोटि के थे ही परन्तु बाल सभा के बच्चो ने जिन्हे महान् तपस्वी महात्मा बलदेव जी ने तैयार किया था वाद-विवाद के रूप मे गहन विषयो को सरल व प्यारी भाषा मे उपस्थित करते। श्रोताओ ने बडी सराहना की।

शनिवार साय को बच्चो को पुरस्कार दिए गए। मत्री जी ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी रविवार नौ बजे पूर्णाहुति हुई यजमानो को आर्शीवाद रूप में ब्रह्मा जी द्वारा फल पुष्प दिए गए।

–दयानन्द वानप्रस्थी



सम्पादकीय

सम्वत्—रविवार ७ दिसम्बर १६८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि सवत् १६७२६४६०८७

विप्रराज्ये शव. यज्ञेषु गृणे

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि आर्यावर्त्त के आर्यों ने इस धरती पर सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना अनेक बार की। चक्रवर्ती साम्राज्य का एकमात्र उद्देश्य था मानवो की विभिन्नता को एकता मे परिवर्तित करना। सम्पूर्ण मानव जाति को स्नेह सूत्र मे आबद्ध करके समस्त ससार मे सुख शांति और आनन्द की धाराओ को प्रवाहित करना। चक्रवर्ती साम्राज्य मे सम्मिलित सब राज्यो का एक ध्वज होता था, एकमात्र देव भाषा [सस्कृत] ही विश्व भाषा थी, एक ही निराकार परमात्मा की स्तुति प्रार्थना उपासना होती थी। एक ही वैदिक सस्कृति का प्रसार होता था और वेद ही मानव का एकमात्र धर्म होता था। इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो राज्य शास्त्रो की भाषा समझते थे उन्हें प्रीति और सम्मानपूर्वक विराट राज्य का अग बना दिया जाता और आसुरी वृत्तियो वाले जो शस्त्रो मे विश्वास रखते थे, उन्हे युद्धो मे परास्त कर सन्मार्ग पर लाया जाता था। सक्षेप मे आर्यो के राज्य ही 'विप्र राज्य' होते थे, जिनका आदेश वेद मे इस भाति दिया गया है—

अय सहस्रमृषिभि सहस्कृत समुद्रइव पप्रथे।
सत्य सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ॥

[ऋ० ८–३–४, य० ३३–८३, साम० १६०८, अ० २०–१०४–२]

अर्थात् (ऋषिभि) ऋषियो के द्वारा (सहस्रम् सह कृत) सहस्त्र [असख्य] प्रकार से बल युक्त किया हुआ (अयम्) यह [राज्य] समुद्र इव पप्रथे) समुद्र के समान समृद्ध हुआ करता है, विस्तृत होता है। (विप्र राज्ये) विप्रो के राज्य मे (शव यज्ञेषु गृणे) शक्ति और सुकृतो को स्तुतता हू [क्योकि] (अस्य सत्य महिमा) इसकी महिमा सत्य है।

आर्यावर्त मे राज्यो का सचालन जहा ब्रह्मचारी राजाओ के द्वारा होता था—यथा—,'ब्रह्मचर्यण तपसा राजा राष्ट्र वि रक्षति" [अ० ११–५–१७] वहा उनके परामर्शदाता भी मननशील, मन्त्रद्रष्टा', मनुर्हित ऋषिगण होते थे जिन्हे मनु और वशिष्ठ की सज्ञाओ से सबोधित किया जाता था। राजा राज्य का सचालन करने के लिए दो सभाओ का निर्माण करता था, एक जन समिति जिसमे सब साधारण के प्रतिनिधि होते थे और दूसरी राज सभा जिसमे विशिष्ट तेजस्वी लोग मनोनीत किये जाते थे। वेद ने राज्य कार्य सचालन हेतु इनके लिए कहा है—

सभा च मा समितिश्चावता प्रजापतेर्दुहितरौ सविदाने।
येन सगच्छा उप मा स शिक्षाच्चारु ववानि पितर सगतेषु ॥

(अ० ७–१२–१)

अर्थात् प्रजापालक राजा की कन्या तुल्य एक दूसरे के अनुकूल कार्य्य करने वाली सभा और समिति होनी चाहिये जिनसे सहयुक्त होकर मेरी रक्षा हो सके और इन सभाओ के पितृजन सम्मेलनों मे सुन्दर वचन बोलकर मुझे भी सुशिक्षित करें।

वेदानुसार इन सभाओ के सभासद ऐसे होने चाहिए—

विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि।
ये त के सभासदस्ते मे सन्तु सुवाचस ॥

(अ० ७–१२–२)

अर्थात् जिसे सभा के नाम से सबोधित किया जाता है वह नष्ट न होने वाली, प्रसिद्ध रूपा हो और उसके सभासद मेरे लिए उत्तम[सत्य] बोलने वाले हो।

जहा सत्यवादी परमार्थी हितकारी सभासद् होगे, मननशील ऋषि परामर्शदाता होगे, पक्षपात रहित न्यायकारी ब्रह्मचारी राजा होगा, वहा जनसाधारण कैसे कष्ट पा सकते हैं।

इन वैदिक मर्यादाओ की अनभिज्ञता के कारण ही आज विश्व की स्थिति बडी शोचनीय हो गई है और दिन प्रतिदिन दुरावस्था की वृद्धि हो रही है।

इस समय समस्त विश्व मे घोर क्लेश, हिंसा, अशान्ति, अराजकता और आतवाद व्याप्त है। राजनीति के नाम पर जिस कूटनीति को विश्व के कर्णधारो ने अपना रखा है, उसके ही ये कटु परिणाम हैं जिन्हे विश्व के मानवो को भोगने के लिये विवश होना पड रहा है। आज राजनीति का मुख्य आधार है—'विषेन विष हन्यते'। इस नीति के फल स्वरूप ही विश्व से खिलवाड करने वालो ने अनेक देशो के राज्यो का विभक्तिकरण किया। ऑग्ल-अमरीकी गुट ने चीन का विभाजन कर दो चीन बनाए, एक चीन ताइवान और दूसरा साम्यवादी चीन, कोरिया दो विभागो मे विभाजित हुआ, उत्तरी और दक्षिणी, वियतनाम के भी इसी भाति दो टुकडे हुए। जर्मनी भी पूर्वी और पश्चिमी भागों मे विभक्त हुआ। अफ्रीका भी पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी होकर टूटा।

इन आसुरी वृत्तियो से निवृत्त होने की वैदिक धर्म नीति का आधार है—'अमृतेन विष हन्यते' जिसे केवल वैदिक ऋषि ही चरितार्थ कर सकते है। वेद के शब्दो मे—

निर्माया उ त्ये असुरा अभूवन् त्व च मा वरुण कामयासे।
ऋतेन राजन्ननृत विविञ्चनमम राष्ट्रस्याधिपत्यमेहि ॥

(ऋ० १०–१२४–५)

अर्थात् वे जो प्राण प्रिय, प्रज्ञाविहीन, नितान्त मूढ, विवेकशून्य हो गए हैं, उनके लिए हे वरणीय देव! मेरी यह कामना है कि राजा सत्य से असत्य को पृथक् करता हुआ, मेरे राष्ट्र का अधिपति होकर सुशासन करे, सुसचालन करे।

ऋषियो मुनियो की पावन भूमि भारत जो सदैव से विश्व का आर्य करण करती रही है और जिसे विश्व के नेतृत्व करने का अनेक बार सौभाग्य प्राप्त हुआ है, उसमे ही वैदिक जागृति करके स्वामी दयानन्द महाराज की यह अन्यतम् इच्छा थी कि विश्व की सुख शाति के लिए आर्यो का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य पुन स्थापित हो परन्तु आज उस भारत की पुण्य भूमि की जो दुर्दशा है, उसे सक्षेप मे इतना ही व्यक्त कर देना पर्याप्त है कि स्वराज्य अभी तक सुराज्य तो नहीं बन पाया अपितु दिन प्रतिदिन वह कुराज्य बनता जा रहा है और इसका मूल कारण है ऋषि-विहीन परामर्शदाता, अयोग्य सचालक और वेद अनभिज्ञता के कारण स्वार्थवृत्ति की प्रधानता।

हमारे जिन नेताओ ने स्वतन्त्रता के पूर्व ये घोषणायें की थीं कि स्वाधीनता के उपरान्त स्वराज्य मे दूध घी की नदिया बहेंगी स्वदेश मे स्वर्गिक सुखो की भरमार होगी, वहा आज ३६ वर्षो मे क्या दुर्दशा हो गई है, इसे लिखने की आवश्यकता नहीं है। महगाई, भ्रष्टाचार, अनाचार, अशान्ति, सघर्ष और पारस्परिक दुर्भावनाए, इन सब मे ही व्याप्त हुई हैं। भाषावाद के आधार पर अनेक पृथक् राज्य बनाकर भी शांति नहीं हुई है। पजाब का विभाजन कर हरियाणा और हिमाचल प्रदेश दो पृथक् राज्य और बना दिए गये। विवादग्रस्त चण्डीगढ़ केन्द्र के अधीनस्थ रखा गया, फिर भी पजाब मे आज खालिस्तान की माग को लेकर हिंसा का जो ताडव नृत्य हो रहा है, उसे रोकने मे अभी तक सरकार सफल नहीं हुई है। (शेष पृष्ठ ३ पर)

पुस्तक-परिचय

वेद माता

लेखक—स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'
प्रकाशक—वेद सस्थान, सी२२राजौरी गार्डन नई दिल्ली, ११००२७
मुद्रक—वैदिक यन्त्रालय अजमेर
सम्पादक—श्री अभय देव एम० ए० पी० एच० डी०
तथा सहायिका वीणा चौधरी, एम० ए०
पृष्ठ सख्या—४८
मूल्य—तीन रुपए

उपरोक्त पुस्तक का प्रकाशन वेद सस्थान के सस्थापकाध्यक्ष स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' के ८८ वें जन्म दिवस (१५-११-८६) के उपलक्ष्य मे उनके वेद परक विशिष्ट एक सौ उद्गारो के सकलन रूप मे किया गया है।

यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है और वेद के विषय म वास्तविक बोध कराती है। प्रथम उद्गार वेद को शोभाए मान करता हुआ कहता है—"वेद ही सत्य धर्म है। वेद को अपनाओ। वेद ही परम गुरु है।" पुस्तक मे सकलित विचारो को आठ भागो मे विषयानुसार विभक्त कर के वेद की वास्तविक महिमा का बखान किया गया है।

प्रत्येक वैदिक पुस्तकालय मे तथा समस्त शिक्षण सस्थाओ मे इस पुस्तक का सग्रह अत्यावश्यक है क्योकि इसके माध्यम से वेद की वास्त विक रूपरेखा का सहज और सरस ज्ञान, जिज्ञासुओ को होगा और वेदाध्ययन मे उनकी रुचि बढ़ेगी।

—"वसन्त"

प्रो० श्री प्रकाश—दिवंगत

आर्य जगत के प्रसिद्ध मनीषी प० गगा प्रसाद उपाध्याय के पुत्र तथा स्वामी सत्य प्रकाश के लघु भ्राता एव डी० ए० वी० कालेज कानपुर के रसायन विभाग के वरिष्ठ प्रवक्ता प्रो० श्री प्रकाश का लबी पक्षाघात बीमारी के बाद २२ नवम्बर १९८६ को रात्रि मे ५६ वर्ष की आयु मे कानपुर उनकेनिवास स्थान स्वरूप नगर मे देहान्त हो गया। अन्तिम सस्कार गङ्गातट पर हुआ प्रो० श्री प्रकाश आर्य समाज के विचारो के समर्थक थे एव कुशल लेखक थे। आर्य मित्र मे आपके लेख प्राय प्रकाशित होते रहते थे और समय-समय पर आर्य समाज के अधिवेशन मे भी आते थे। आर्य समाज स्वरूप नगर के गठन एव सञ्चालन मे आप का विशेष योगदान रहा है।

आर्य मित्र अपने पाठको एव परिवार की ओर से प्रभु से प्रार्थना करता है कि दिवगत को शान्ति एव दुखी परिवार को धैर्य प्राप्त हो।

सभा मन्त्री प० मनमोहन तिवारी ने भी सहानुभूति प्रकट की शोक सम्पन्न परिवार के प्रति तथा इस क्षति को आर्य समाज के लिए शोचनीय बताया।

—आचार्य रमेश चन्द्र एम. ए.
—श्री विक्रमादित्य'वसन्त'

सम्पादकीय

(पृष्ठ २ का शेष)

पूर्वांचल में नागालैंड के उग्रवादी चीन के साथ अपने सम्पर्क बढ़ा रहा है। अरुणाचल मे चीन की घुसपैठ हो रही है और बढ़ती जा रही है। बगाल मे गोरखालैंड का एक नया आदोलन उठ खडा हुआ है। उत्तर मे फारूक अब्दुला को पुन काग्रेस ने सहयोग देकर मुख्य मन्त्री के पद पर आसीन किया है ताकि कश्मीर मे पाकिस्तान समर्थक तत्वो को बढ़ने से रोका जाए। पश्चिमी अचल मे केरल मे मुस्लिम लीग पुन सक्रिय हो रही है। मुल्ला पुरम् नामक पृथक जनपद बना दिया गया है। खाडी देशो के मुस्लिम प्रवेश पैट्रो डालर के बल पर अराष्ट्रीय प्रवृत्तियो को उकसा रही है। दक्षिणी सीमा पर श्रीलका जो भारत विरोधी रवैय्या अपना रही है और बौद्ध मत अनुयायी होने का दम भरने के उपरान्त भी भारत से गए तमिलो पर हिंसा का जो प्राघात हो रहा है, वह किसी समय भी उग्रतम स्थिति धारण कर सकता है।

भारत के चारो ओर से विद्यमान इन विषम परिस्थितियो के साथ जो आतरिक समस्याए भीषणता धारण कर रही है, प्रदेशो के विभिन्न राज्यो मे होने वाली अनेक हडतालें, साम्प्रदायिक दगे, आतकवाद का बोलबाला जिनके कारण राष्ट्र की अखडता जिसे खडित करने के लिए सतत बाहरी और भीतरी कुप्रयास किये जा रहे हैं, उनकी रोकथाम वेद के आधार पर कैसे की जा सकती है और भारत को पुन विश्व के गुरु होने का सौभाग्य कैसे प्राप्त कराया जा सकता है, इसकी चर्चा मैं आगामी सम्पादकीय मे करूगा।

--वसन्त

विनम्र प्रार्थना

विद्वान् लेखको से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपने लेख-कवितायें आदि स्पष्ट अक्षरो मे कागज के एक ओर लिख कर भेजने की कृपा करें। साथ ही लेखो मे वर्णित मत्र व श्लोको का सन्दर्भ भी अवश्य भेज देने की कृपा करें जिससे प्रूफरीडिंग मे भूल न हो अशुद्धिया न रहें और जिज्ञासाओ को स्पष्ट करने मे समर्थ हो सके।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी
सम्पादक

अत्यावश्यक सूचना

सभा कार्यालय से शताब्दी समारोह हेतु जिन-जिन महानुभावो तथा आर्य समाजो के पास कूपन (नोट) बचे हो, वे कृपया हिसाब सहित बचे नोट एव सग्रहीत धन सभा कार्यालय को शीघ्र भेजने का कष्ट करें ताकि हिसाब बनवाया जा सके।

—मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजो की सेवा मे—

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों से निवेदन है कि वे अपना नया निर्वाचन अपनी जिला सभा से प्रमाणित करा के भेजने की कृपा किया करें तभी आर्य मित्र मे प्रकाशित हो सकेगें।

—मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

दार्शनिक–वैज्ञानिक–विचारक–व्याख्याता

स्वामी सत्य प्रकाश जी

प्रत्येक प्रभाती उषा किरण जिन्हे नवीन रंग में रंग देती है।

–आचाय रमेश चन्द्र एम ए सम्पादक

सम्प्रति भारत वर्ष के बौद्धिक व्यक्तियो का राजनीतिक क्षेत्र के अतिरिक्त आकलन किया जाये तो स्वामी सत्य प्रकाश जी क। भी विशेष तथा प्रशसनीय अदर्श स्थान है। उनके एकत्व मे अनेकत्व है। व्यक्ति मे समिष्ट है तथा स्वय मे वह सस्था है। किसी पद पर प्रतिष्ठित नहीं है किसी सभा सस्था के प्रधान नहीं है परन्तु पदधारियो की ऊँचाई उनके सामने बौनी है। वास्तव मे समस्त आभरणो अलकारो का परित्याग करके वह ज्ञान श्री मण्डित है और सन्यास वेष मे विभूति सम्पदा से सम्पन्न है। भारत मे त्याग मे वैशिष्ट है। राम को रामत्व अयोध्या त्याग कर मिला। कृष्ण के कृष्णत्व मे सिंहासन त्याग की द्युतिमा है-बुद्ध को बुद्धत्व युवराज पद त्यागने पर मिला तथा मूल शकर भी दयानन्द बन कर विश्व का आदित्य तब बन सका जब कर्दम तिवाए के भृत का त्याग किया।

स्वामी सत्य प्रकाश जी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न है। विज्ञान के विद्यार्थी रहे। प्रयाग विश्वविद्यालय मे रसायन विज्ञान के आध्यापक रहे परन्तु दर्शन के प्रति उनका अनुराग ही नहीं है गम्भीर अध्ययन है तथा दर्शन के सत्य मे शाश्वत सत्य की ज्योति उन्हे मिली है। मौलिक चिन्तन की उनमे प्रधानता है। अन्य विचारको के निष्कर्षों का अध्ययन करके स्वय अपने मौलिक विचार देने मे वह समर्थ है इसके साथ ही उच्चकोटि के व्याख्याता भी है। अग्रेजी एव हिन्दी मे समान अधिकार से भाषण देने मे निपुण है और शब्द उनकी जिह्वा पर स्वाभाविक रूप से उभर कर सामने आते हैं। जटिल दार्शनिक विषय हो या कोई दृष्टान्त या था हो उनकी शैली मे सहजता रहती है एव विचारों का स्रोत एक सा उभरता है। वाणी मे माधुर्य है। विचारो मे गम्भीरता है और उद्‌गार मे सत्यता है एव व्यवहार मे आत्मीयता है तभी स्वामी सत्य प्रकाश जी सर्वत्र समाहत हैं एव जनप्रिय है।

पण्डित गगा प्रसाद जी उपाध्याय आय समाज के दिशा प्रकाश है इनकी विद्वता, गम्भीरता, लेखन एव भाषण की श्रेष्ठता आर्यसमाज मे उपमा रहित है। उनके व्यक्तितत्व ने आर्य समाज मे अमिट छाप छोडी है स्वामी सत्य प्रकाश जी उपाध्याय के आत्मज है और पिता के ज्ञान-विरासत के वाहक है। बाल्य-काल मे ही पिता के सस्कार इनमे प्रवभासित हुए एव विज्ञान मे एम० एस० सी० तथा डी०एस० सी० की उपाधि से अलकृत जहा एक ओर प्रयाग विश्वविद्यालय जैसे उच्च श्रेणी के शिक्षा सस्थान मे रसायन शास्त्र के विभागाध्यक्ष हुए वहीं पितृचरण से प्राप्त दार्शनिक चिन्तन धारा और और आर्य समाज के आदर्शों के प्रति निष्ठा-अर्जन मे समर्थ र६। ब्रिटिश युग मे प्रयाग विश्वविद्यालय गरिमा के शिखर पर था उसे भारत का आक्सफोर्ड कहते थे जहाँ डा० अमर नाथ झा अन्य प्रोफेसर अग्रेजी भूषा मे सुसज्जित रहते थे वहीं प्रोफेसर सत्य प्रकाश जी खादी की धोती और कुरते मे गरिमा के साथ रहते थे। श्वेत परिधान मे उनको अपनी आभा थी जो नैतिकता से मण्डित थी एव सत्य के आदर्श से विभूषित थी। अग्रेजी भाषा साहित्य मे पूर्ण राष्ट्रीयता एव पण्डित्य प्राप्त होने पर भी हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम होने के कारण राष्ट्रीय भावना के तरग से आन्दोलित होते हुए विज्ञान के पठन-पाठन को हिन्दी मे उत्तर भारत मे लाने का श्रेय डा० सत्य प्रकाश जी को है। आपका ही स्थापित विज्ञान परिषद है जिसका भवन प्रयाग विश्वविद्यालय की परिधि मे है तथा 'विज्ञान' नामक प्रमुख पत्रिका इसका प्रकाशन है। इस सब के द्वारा डा० सत्य प्रकाश जी ने विज्ञान को जन सामान्य के निकट लाने का प्रयास किया हिन्दी के माध्यम से तथा साधारण कक्षाओ से लेकर एम० एस० सी० तक विज्ञान विषय की पुस्तकें हिन्दी मे जो उपलब्धि है, उसके पीछे इनकी ही अटूट लगन एव भारती के प्रति श्रद्धा है।

दार्शनिक व्यक्ति ही चिन्तक एव विचारक होता है। पिता जी की प्रेरणा से स्वामी दयानन्द सरस्वती की कृतियो के प्रति आकषण हुआ। और उनके अध्ययन से स्वत विचार की सहस्रधारा प्रवाहित हो उठी। आय समाज के गौरव श्रद्धेय नारायण स्वामी ने प्रो० सत्य प्रकाश की प्रतिभा की परख की और उनसे आर्य समाज सबधी दार्शनिक एव सैद्धान्तिक, कृतियो की रचना करने का अनुरोध किया 'अग्निहोत्र' विषयक यज्ञ परक पुस्तक सामने आयी जिसमे मन्त्रो के अर्थों की व्याख्या एव अग्निहोत्र की उपादेयता पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार है। रचना अग्रेजी मे होने के कारण देश-विदेश मे फैल गयी। १९३७ के लगभग ही अग्रेजी मे एक्रीटिकल स्टडी आफ दी फलासिफी आफ दयानन्द'– स्वामी दयानन्द-दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। जो पूर्वाग्रह्य के साथ मौलिक है। तथा स्वामी दयानन्द जी के अनुसार षड्दर्शनो मे जो समन्वयात्मकता है उसकी विशद् व्याख्या एव वैज्ञानिक समदर्शिता है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय मे अध्यापन करते हुए तथा ग्रहस्थ जीवन के कर्त्तव्यो का निर्वाह करते हुए लेखनी की शाश्वत उपासना डा० सत्य प्रकाश का ध्येय रहा तथा विज्ञान-दर्शन आर्य समाज आदि विषयो मे मौलिक रचनायें प्रकाशित होती रहीं तथा उच्चकोटि की रचनाओ का सम्पादन होता रहा। १९६७ मे विश्वविद्यालय से अवकाश ग्रहण के बाद इस लेखन क्रम मे निरन्तर वृद्धि होती रही तथा १० मई १९७१ को सन्यासाश्रम के प्रवेश के पश्चात तो चिंतन तथा लेखन ऊँचाई के शिखर पर पहुच गया स्वामी सत्य प्रकाश जी की प्रमुख कृतियो मे है। चारो वेदों का अग्रेजी अनुवाद, अग्रेजी हिन्दी मानक कोष भारत की सम्पदा इनके अतिरिक्त-वेद, विज्ञान दर्शन-आय सैद्धान्तिक चिन्तन-सभ्यता इतिहास– औपनिषदिक-विचार–सस्कृति, शिक्षा आदि विभिन्न विषयो पर अग्रेजी भाषा मे स्वामी सत्य प्रकाश की रचनायें देश-विदेश मे समाहत है और बहुचर्चित एव पठित है।

डा० सत्य प्रकाश के जीवन मे अ।ित जो गुण थे अध्ययन-आदर्श-नियम पालन–मितव्ययता– समय प्रतिबद्धता उदारता सहायता आदि स्वामी सत्य प्रकाश के जीवन मे द्विगुण हो कर चमक उठे। सन्यासाश्रम का प्रवेश उनके जीवन मे मणि काचन का योग बन गया तथा कलिका का प्रच्छन्न सौरभ विकसित कुसुम मे अत्यधिक अवच्छन्न हो उठा। स्वामी सत्य प्रकाश का मुझे सान्निध्य प्राप्त हुआ। वार्तालाप विचार श्रवण का अवसर मिला और जब मिले पहले से अधिक प्रगतिशील एव विचार प्रखर मिले। देश-विदेश मे भ्रमण करके वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया परन्तु शिष्टयेषण के रूप मे नहीं विचारो की मौलिकता के

[शेष पृष्ठ ८ पर]

जीवन ज्योति

दिवंगत श्री मनोहर सुमेरा जी

अभी पिछले मास ही दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री मनोहर सोमेरा से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे उनके देश मे व्यापक वैदिक धर्म प्रचार करने के बारे मे हमारी चर्चा हुई थी। तब यह किसको पता था कि वे सपत्नीक भारत भ्रमण की समाप्ति से पूर्व ही अकस्मात दिवगत हो जायेगें। उनका हृदय द्रावक निधन का समाचार डर्बन से मुझे प्राप्त हुआ है। उनकी आयु ६० वर्ष के आसपास थी और सर्वथा स्वस्थ दिखाई पडते थे। उनके पूर्वज १०० वर्ष पूर्व जिनका नाम सोमेरा था भखला जिला बरेली (यू० पी०) से शर्तबन्द कुली प्रथा के अन्तर्गत वहाँ पहुचे थे। वे अपनी इस पितृ भूमि को देखने के बाद मद्रास पहुचे थे।

गत वर्ष इन्हीं दिनो डबन मे हुए सार्वभौम आय महासम्मेलन मे मुझे उनके दर्शन हुए। वे बडे कर्मनिष्ठ और शात स्वभाव के व्यक्ति थे। उक्त सम्मेलन मे रगभेद की नीति के दक्षिण अफ्रीकी सरकार के कार्यकलाप पर विरोध सूचक प्रस्ताव का उन्होंने ही समर्थन किया था जबकि स्व० श्री ओमप्रकाश त्यागी ने उस प्रस्ताव को रखा था आज दोनो ही दिवगत है। श्री सोमेरा मे अद्भुत सगठन और कार्य शक्ति थी। वेद प्रचार के सबन्ध मे वहाँ श्री नरदेव वेदालकार जो कुछ लिखते, कहते या प्रस्तुत करते थे, उसका वहाँ के अग्रेजी भाषी भारतीयो तक अनुवाद करके पहुचाने का कार्य भी सोमेरा ही करते थे। वे उनके साथ वैदिक ज्योति के सह सपादक भी थे। उनके निधन पर केबिल द्वारा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इस निधन को अत्यन्त हृदय द्रावक बताया और समस्त आर्य जगत की ओर से उनके परिवार के प्रति सवेदना प्रकट की। श्री सोमेरा का शव प्रथम सप्ताह मे विमान द्वारा डर्बन ले जाया गया जहा समस्त आर्य जगत के गणमान्य व्यक्तियो ने अपनी श्रद्धाजलि उनको अर्पित की। वस्तुत श्री सोमेरा के निधन से आर्य जगत और विशेष कर दक्षिण अफ्रीका मे आर्य समाज के प्रचार को गहरा धक्का लगा है। भगवान उनकी आत्मा को शाति तथा परिवार को सान्त्वना प्रदान करें।

महादेव स्नातक प्रेस० एव जन सपर्क परामर्शदाता
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

श्री सुमेरा जी सपत्नीक सभा के शताब्दी समारोह के अवसर पर लखनऊ भी पधारे थे और आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे अधिकारियो तथा आर्य मित्र के सपादक श्री 'बसन्त' जो से दक्षिण अफ्रीका मे वैदिक धर्म के पुनीत प्रचार के विषय में उत्साहपूर्ण वार्ता की थी, जिसकी सुखद स्मृति ही अब शेष रह गई है।

सपादक मण्डल

शिक्षा जगत

तप और विद्या

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि मानव की उन्नति के लिए तप और विद्या दो आवश्यक अग है। तप जो विद्या के बिना किया जाता है, सुखदायक नहीं बन सकता और विद्या जो तप के बिना प्राप्त की जाती है, वह पूरा फल नहीं दे सकती। ऋषियो ने इसी लिए यह नियम रखा था कि विद्यार्थी तपस्वी हो। बाल्यकाल से ही प्रसन्नता के साथ कष्ट सहन करने का स्वभाव उसमे अवश्य आ जाना चाहिए। इद्रियो पर सयम उसकी शिक्षा मे सम्मिलित था। गुरु की आज्ञा पालन और सेवा की शिक्षा उसे दी जाती थी। परिणाम यह था कि विद्यार्थियो मे सहनशीलता, सादगी, सेवा एव आज्ञा पालन के भाव पैदा होते थे। यदि आज-कल कल के अग्रेजी शब्दो का प्रयोग करू, तो यह कहू कि विद्या के साथ डिसीप्लिन (अनुशासन) एक आवश्यक वस्तु समझा जाता था। निरुक्त मे इसी विचार को अलकृत भाषा मे प्रकट किया गया है। विद्या विद्वान को कहती है कि तू मुझे उस विद्यार्थी को मत देना जिसमे श्रद्धा व विनय न हो।

महर्षि दयानन्द की महत्ता का एक कारण यह भी था कि उनके हृदय मे अपने गुरु स्वामी विरजानन्द के लिए पूरी श्रद्धा थी। एक बार विरजानन्द जी ने इन पर हाथ उठाया। ऋषि ने हाथ जोड कर कहा– मेरा शरीर कठोर है, आपके हाथ कोमल हैं। मुझे आज्ञा दो कि मै आप के हाथ दबा कर कुछ सेवा करू। यदि विद्यार्थी के अन्दर श्रद्धा और सेवा का भाव न हो, तो उसकी विद्या सफल नहीं हो सकती। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे दोष है कि पढ़ाने वालो के लिए पढने वालो के दिलो मे श्रद्धा का अभाव है। उसका एक यह कारण भी है कि अध्यापक वर्ग का चरित्र इतना ऊँचा नहीं, जितना होना चाहिए। दूसरा यह है कि विद्यार्थी फोस देते है और उनका यह विचार है कि अध्यापक वर्ग की वेतन हमारी फोस से निकलती है। तीसरा यह कि हमारे अन्दर ही ऐसी श्रेणियां उत्पन्न हो गई हैं, जो स्कूलो, कालेजो व गुरुकुलो मे हडतालें करवा कर विद्यार्थियो को अध्यापको के विरुद्ध भडकाती रहती हैं। इन श्रेणियो के नेता यह विचार करते हैं कि हम विद्यार्थियो को स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ा रहे हैं। वे यह नहीं सोचते कि ऐसा करने से सस्थायें नष्ट हो जाएगी हमारे युवको का चरित्र भी बिगडेगा और इन की आत्माए निर्बल हो जाएगी।

आज के युग मे ऋषि दयानन्द प्रणीत गुरु शिष्य प्रणाली को अपनाए बिना न सतान योग्य बन सकती है और न तपस्वी बन सकती है। बिगडे हुए इस वातावरण को ठीक करने के लिए शिक्षा शास्त्रियो को पुन विचार करना चाहिए। महर्षि के इन शब्दो पर पूरा ध्यान देना चाहिए कि तप जो विद्या के बिना किया जाता है, वह सुखदायक नहीं बन सकता और विद्या जो तप के बिना प्राप्त की जाती है, वह पूरा फल नहीं दे सकती।

–तपोनिधि महात्मा हसराज जो

★ ★ ★

राष्ट्रगान व उच्चतम न्यायालय

—श्री जस्टिस महावीर सिंह (अवकाश प्राप्त)
बी—१६२ सेक्टर १४ नाइडा जिला गाजियाबाद

[गतांक से आगे]

इस अधिकार को रोकने या विनियमित करने का प्राविधान निम्न प्रकार अनु० २५ (२) मे दिया है —

(२) इस अनु० की कोई बात किसी ऐसी विद्यमान विधि के प्रवर्तन पर प्रभाव नहीं डालेगी या राज्य को कोई ऐसी विधि बनाने से निवारित नहीं करेगी जो

(क) धार्मिक आचरण से सबन्धित किसी आर्थिक, वित्तीय, राजनैतिक या अन्य लौकिक क्रियाकलापो का विनियमन या निर्बन्धन करती है।

(ख) सार्वजनिक कल्याण और सुधार का उपबध करती है।

उच्चतम न्यायालय ने पहले तो यह बताया कि इस प्रकार का विश्वास अर्थात् 'किसी भी राष्ट्र का राष्ट्र गान न करना या राष्ट्र ध्वजा को सलामी न देना' वास्तव मे उस मत का अग है जिसको ये विद्यार्थी मानते है और यह उनका केवल वैसे ही धर्म का अग नहीं बताया। इस सबध मे उन्होने नई एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिकन' अर्थात् ब्रिटेन मे प्रकाशित विश्वकोष के खड १० पृष्ठ ५३८ मे जहाँ इस मत के धार्मिक विश्वासो के साराश मे लेखाबद्ध है, ध्यान दिलाया। साथ ही आस्ट्रेलिया उच्च न्यायालय व अमेरिका के उच्चतम न्यायालय मे निर्णीत कुछ मामलो (१) एडीलेड कम्पनी आफ जेवोह के विटनेसेज व कामनेवल्थ (२) मिनर्स विले स्कूल व गोबिटीज व (३) वैस्ट वर्जीनिया शिक्षा बोर्ड व बर्नेट (४) डोनाल्ड व बोर्ड आफ एजुकेशन (कैनाडा के अपील कोट जे व (५) शेल्डन व फेनित (अमेरिका के राज्य अरीजोना के जिला न्यायालय) मे भी इस मत के विश्वासो का वर्णन है। इनके अनुसार इन के मत के मानने वाले विश्व के कितने ही देशो मे हैं। वे बाईबिल के शुद्ध साहित्यिक अर्थ मे विश्वास रखते हैं। उनका कहना है कि केवल ईश्वर की ही एक सत्ता है। पहले इसान भी ईश्वर की सत्ता के अन्तगत कार्य करता था परन्तु उसने बाद मे ईश्वरीय सत्ता को चुनौती देकर अपने साम्राज्य जगह-जगह स्थापित किये और उनका गुणगान कराना प्रारभ कराया। उन्हे किसी मूर्ति या उसके समान किसी वस्तु को मान्यता देने का स्पष्ट निषेध है। उनके अनुसार राष्ट्रध्वज भी एक प्रकार की मूर्ति हो है व राष्ट्र गान भी उसी के सबन्ध मे है।

प्रतिज्ञा दोहराने मे कुछ मानसिक धाराओ की अपेक्षा होती है। यहाँ यह आवश्यक नहीं किया कि नागरिक अपने विश्वासो को छोड दें और इनको मान लें व तब क्या इतना ही पर्याप्त होगा कि 'मुह से माने' व 'अन्त करण से न माने'।

कैनाडा के अपील न्यायालय ने 'डोनाल्ड व बोर्ड अ फ एजुकेशन धार तिरी आफ हैमिल्टन मे, जहाँ यह मत के मानने वालो का

सिंहावलोकन

उपरोक्त वर्णित मामलो मे राष्ट्रध्वज को सलामी न करने, राष्ट्रगान न गाने या उस समय खडे न होने पर जेवोह के मत वालो के खिलाफ मामले भी चले।

अमेरिका मे मिनर्स विले स्कूल वाले म मले मे सन् १९४० मे पहले उच्चतम न्यायालय ने यह तय किया था राष्ट्रध्वजा को सलामी करने को आवश्यक बनाना नागरिक के स्वतत्रता सबन्धी मूल अधिकार का उल्लघन नहीं है, परन्तु ३ वर्ष बाद ही सन् १९४३ मे वैस्ट वर्जीनिया वाले केस मे पहले मत को उलट दिया और तय किया कि इससे उनके अन्त-करण की स्वतत्रता के मूल अधिकार का उल्लघन होता है। उन्होंने बताया कि अनिवार्य रूप से राष्ट्र ध्वज को सलामी देने व राष्ट्रीय ध्वजा को सलामी देने व राष्ट्र गान गाने पर आपत्ति थी, यही तय किया कि यह उनका धार्मिक मत है और चाहे हम उसे माने या न माने, हम उनके धार्मिक मत मे दखल नहीं दे सकते क्योकि यह उनका निजी मामला है और राष्ट्र के नैतिक जीवन पर उससे कोई खतरा नहीं है।

अत उच्चतम न्यायालय ने इन विद्यार्थियो का यह अधिकार भी माना। यह भी उन्होने बताया कि जो शक्ति राज्य सरकारो को इस अधिकार पर पाबन्दी लगाती थी अनु० २५ (२) से मिली है, वह यहाँ लागू नहीं होती क्योंकि न इससे सार्वजनिक व्यवस्था, सार्वजनिक स्वास्थ्य या सदाचार पर प्रभाव पडता है और न यह किसी लौकिक क्रिया से सबध रखती है

अन्त मे न्यायालय ने यह देखते हुए कि इससे भारत की जनता को मानसिक ठेस लग सकती है, निम्न अपील की।

"हमारी परम्परा हमे सहिष्णुता सिखाती है, हमारे दर्शन शास्त्र सहिष्णुता का प्रचार करते हैं और हमारे सविधान ने सहिष्णुता पर अमल किया है। हमे इसे हल्का नहीं करना चाहिए"

इसमे तो सदेह नहीं कि शाब्दिक दृष्टि से उच्चतम न्यायालय का हमारे सविधान के विभिन्न अनुच्छेदो व अन्य सबधित विधि का निर्वचन लेकिन हर एक कार्य को समाज की परिस्थितियों मे देखना चाहिये। देश मे राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने के लिए कुछ बातें बताई जाती हैं व कराई भी जाती है। राष्ट्र गान गाना व राष्ट्रध्वज को सलामी देना ऐसे ही कुछ कार्य हैं। हो सकता है कि बडे विकसित मस्तिष्क वाले व्यक्तियो पर इनका न हो, परन्तु विद्यार्थियो पर, जिनका मस्तिष्क अभी विकसित होना है, इन बातो से प्रभावित हो जावे। परन्तु यदि न भी हो, तब भी एक रूपता के लिए कुछ औपचारिकताए की जाती हैं। यदि अमेरिका न्यायालय का यह मत मान लिया जावे कि बिना मन से माने कोई बात कहलाना निरर्थक होगा, तब न्यायालय मे किसी प्रकार की शपथ या निर्वाचन के समय राष्ट्र के प्रति वफादारी को शपथ सब बेकार होगी।

अनु० ५१—क (क) मे मूल कर्त्तव्य यह प्रत्येक नागरिक का बनाया है कि वह राष्ट्र गान का आदर करे। क्या आदर केवल खडे होने से ही हो जाता है ? जब मन से वे इस पर बिल्कुल विश्वास ही नहीं करते, तब आदर कैसा, यह तो एक खिलवाड ही है। उनके मत मे तो राष्ट्र गान इत्यादि करना ईश्वर का अपमान करना है क्योंकि मनुष्य ने ईश्वर की सत्ता को चुनौती देकर अपना अलग साम्राज्य बना लिया है। अत ऐसी परिस्थिति मे उनका कार्य राष्ट्र गान के प्रति अनादर ही है।

फिर ये व्यक्ति भारत के नागरिक हैं। एक ओर वे नागरिकता का लाभ उठाते है और दूसरी ओर नागरिकता के कर्त्तव्य नहीं निभाना चाहते।

कविता कलाप

ओ! इन्सान

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
वेद मन्दिर हिन्द नगर
लखनऊ ५

ओ इसान अरे नादान
बनता है तू क्यो हैवान
प्रभु ने अनुपम देह तुम्हे दी
ऋतम्भरा सद् बुद्धि तुम्हें दी
कर विवेक का सद् प्रयोग तू
कर दे ज्योतित सकल जहान । ओ इसान
किस विडम्बना म फस प्राणी
नष्ट कर रहा शुभ्र जवानी
फैलाता आतक चतुर्दिक्
बनने का ले स्वप्न महान । ओ इसान
आतक उग्रता कभी देख ले
शान्ति नहीं फैला सकते
दुष्ट दनुजता के अन्दर
मत सुख समृद्धि ढूंढे नादान । ओ इसान
छोड पाप की डगर शीघ्र
मन शुद्ध बना कर शुद्ध काम
प्यार स्नेह की डोर बाध
आनन्दित कर दे सकल जहान । ओ इसान

वसुन्धरा पर कौन रखेगा लाज?

भारत माँ के आसू निकले दशा विलोकि समाज की ।
वसुन्धरा पर कौन रखेगा लाज ऋषियो के नाम की ? ।।
गौतम कपिल कणाद आदि ने तप से जिसको सींचा था
जैमिनि व्यास पतजलि का ही यह आबाद बगीचा था ।।
जिस धरती के कण-कण से ही गुंजित वेद ऋचायें थीं ।
प्रखर ज्ञान के दिन कर से आलोकित सकल दिशायें थीं ।।
आरण्यक उपनिषद जहाँ धरती को मार्ग दिखाते थे ।
ये भूगोल खगोल विश्व को सब ज्ञान सिखाते थे ।।
भीख माँगते तृषित नेत्र से आज पश्चिमी ज्ञान की ।
कौन करेगा बात गर्व से आज आत्मसम्मान की ।।
जहाँ सत्य के आराधन मे प्रासादो का मोह बिसार ।
निर्वसन विचरते देखा था जब सम्राटो के सबके द्वार ।।
जीवन का आदर्श कर्म था नहीं जानते थे अधिकार ।
सदाचार थापूजन जिनका जीवन पूर्ण विमल अविकार ।।
मानवता की मधुर रागिनी जिनके उर मे बजती थी ।
जिनके दिव्य-विचारों से यह सारी धरती सजती थी ।।
जगती को परिवार मान कर जब भ्रातृत्व सिखाते थे ।
धरती के हर कोने को हम अपना घर बतलाते थे ।।
घात लगाये बैठा है भाई-भाई के जान की ।
छोडेगा अब छाप कौन निज दर्शन अरु निज ज्ञान की ।

प्रणेता —सत्यवीर प्रकाश आर्य एडवोकेट हरदोई

दशा न देखी जाती

श्री सुबोध आर्य
द्वारा —श्री जगदीश प्रसाद आर्य (मंत्री आर्य समाज)
आर्य समाज रोड, अगवानपुर मुरादाबाद-२४४५०२

आर्य भूमि पर आर्यो की,
दशा न अब देखी जाती
देख व्यथा अपने सुत की,
फटती भारत माँ की छाती ।।
नहीं कोई वेदो की महिमा,
अब यहाँ पर गाता है ।
मत्र सुसज्जित वाणी को,
वातावरण तरसा जाता है ।।

"अब यहाँ साम्राज्य हमारा",
पाप गर्व से यूं बोला ।
रक्त भरी हुकारो से, आर्य भूमि,
का कण—कण डोला ।।
घबरा जाता सोच "आर्य"
अब हमारा क्या होगा ? ।
गर ऐसी ही रही हालत
ना बाकी अपना निशा होगा ।।

सत्यार्थ प्रकाश महात्म्य

सत्पथ हमे दिखा दिया सत्यार्थ प्रकाश ने ।
वेदोक्त सब सिखा दिया सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
ऋषिवर के देव बुद्धि से पुस्तक अमर मिली ।
अमरत्व की प्रदीप दी, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
हमको अतीत धर्म कम बुद्धि ज्ञान दे ।
स्वर्णिम प्रभा बिखेरा, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
मन औ मतान्तरो को नि सार सिद्ध कर ।
वैदिक प्रभात जग को दी, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
पोपो की खोल पोल औ यवनो ईसाई को ।
'बाइबिल' कुरा बधवा दिया सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
स्त्री औ शूद्र पठन करें, वेद शास्त्र को ।
उच्चाधिकार उन्हें दी, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
प्रेरित किया है विश्व को, एक वेद धर्म पर ।
'कृणवतो आर्य'सुविधि दी, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
अब नगर-नगर, डगर-डगर, आर्य व्याप्त है ।
तर्कों से सबको विजय दी, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
आज विश्वकोष मे, प्राचीनतम है वेद ।
मनवा दिया है विश्व को, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
अन्धो को आँख देके औ सुझवा सुमार्ग को ।
दिया आर्य वीर सेवक, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।

[शेष पृष्ठ ८ पर]

स्वामी सत्य प्रकाश जी

(पृष्ठ ४ का शेष)

साथ और चिन्तन का गम्भीरता के साथ । विश्वविद्यालयो-महाविद्यालयों के सिनेट हाल मे उनके व्याख्यान विद्वानो के मध्य होते हैं जहाँ गम्भीर एव तथ्य के साथ बोलना पडता है । आर्य समाज के सामान्य श्रोताओ मे जिस सहज गति से कथा कह कर उन्हे प्रभावित करते है उतनी ही कुशलता के साथ विज्ञान के अभेवताओ के बीच में गम्भीर विषयो का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं गम्भीर परिमार्जित साहित्य सम्पन्न प्रवाहमयी अग्रेजी भाषा मे लेखक को उनके भाषणो को सुनने का अवसर मिला है तथा उत्तर भारत के श्रेष्ठतम वैज्ञानिक सस्थान मे जहा वैज्ञानिक अमेरिकन एव इग्लिश थे स्वामी जी का भाषण विज्ञान की धरातल से उठ कर जब अध्यात्मिक शिखर को स्पर्श करने लगा तो सब स्तब्ध रह गये एव पूर्ण शाति के वातावरण मे केवल श्वास स्पन्दन था । सन्यास जीवन मे अध्ययन एव विचार प्रसारण स्वामी जी का नियम है । यात्रा मे सबसे अधिक सामान उनकी पुस्तकों का रहता है । निरन्तर भ्रमण-निरन्तर उपदेश-निरन्तर अध्ययन सन्यास जीवन के अग है । ससार की चोट के आघात सहन करके भी अविचलित स्वामी सत्य प्रकाश पूर्ण रूप से सन्यास धर्मी नहीं अपितु सन्यास उनमे प्रतिष्ठित है । और मन्दाकिनी की गतिशीलता मे जो शीतलता और नवीनता रहती है वह स्वामी सत्य प्रकाश के जीवन मे प्रवाहित होती रहती है ।

डा० रत्न कुमारी जी प्रो० सत्य प्रकाश का सहधर्मिणी थी । गृहस्थ जीवन के पवित्र कर्त्तव्यो का निर्वाह करते हुए वह पति के जीवन उन्नायक बन कर रही और एक डिप्टी कलेक्टर की पत्नी होते हुए भी पति का सादगी वादी के वस्त्रो का व्यवहार और नियम तथा सयम को अपने स्वभाव मे सहज रूप से ग्रहण किया अध्ययन के प्रति अभिरुचि रही सीमित आय मे ही गृहस्थ जीवन मे श्रम साध्य रही और पति के आदर्शों को अधरो पर मुस्कान बिखेर कर सराहती रही तथा अपने जीवन मे उतारती रही । स्वामी सत्य प्रकाश जी ने भी डा० रत्न कुमारी स्वाध्याय सस्थान की स्थापना करके दिवगता के प्रति उचित श्रद्धाजलि प्रस्तुत की है जिससे उच्चकोटि की पुस्तकें प्रकाशित हो रही है तथा स्वामी जी की दो सुयोग्य शिष्यायें डा० उषा ज्योतिष्मती एव डा० एस० रगनायकी इस सस्था के विकास मे अपना उचित सहयोग दे रही हैं ।

वैदिक साहित्य मे कवि शब्द का समादरपूर्वक उल्लेख है कल्पना मानव की एक उदात्त सम्पदा है जिसके आश्रय से ईश्वर का सामीप्य प्राप्त होता है तथा विचारक-दार्शनिक कवि-चित्रकार आदि इस वृत्ति के सहारे अपनी अभिव्यक्ति दूसरे तक पहुचाते हैं । डा० सत्य प्रकाश जी भी कवि हृदय है जीवन के आरम्भ मे उन्होने काव्य की रचना मे भी की है जो 'प्रतिबिम्ब' नाम से प्रकाशित हुई है । आज भी वह कवि है । उनमे प्रगतिशीलता है और कौशेय भगवा-वस्त्र मे आधुनिकता के दर्शन होते हैं । नवीन विचार मानस मे उदित होते है । और इस सन्यासी का चिन्तन अनोखा है प्रत्येक प्रभाती की उषाकिरण स्वामी सत्य प्रकाश मे नवीन स्पन्दन का सन्चार करती है तथा उत्साह के साथ नये रग से उन्हे रग देती है और वह चिन्तन लेखन-भाषण के द्वारा अपनी अभिव्यक्ति प्रगट करते है—चरैवेति इनके जीवन मे लक्षित है तथा इधिनामिरुम-नवगतिशीलतास्वामी सत्य प्रकाश के जीवन की प्रभा है। जिसे शीत व्याधित नहीं कर सकता है । केवल एक चादर और शाल मे जो सारा जाडा झेल लेता है उसमे कभी अवरोध आ ही नहीं सकता है । अवरोध के बन्धन तोड देना ही सन्यास है ।

सीमा तोड चले-मोह छोड चले विशाल वारिधि मे तरगित होने के लिए सरोवर का सीमा ठुकरा दी सन्यास के बाद स्वामी सत्य प्रकाश घर से दूर स्वजनो से दूर हो गए । पथ ही जिसका विश्राम है और गति ही जीवन की चर्चा है । प्रो० श्री प्रकाश जी स्वामी सत्य प्रकाश के लघुभ्राता है । कानपुर मे डी० ए० वी० कालेज मे रसायन शास्त्र के प्रवक्ता है 'नेह-नीड' स्वरूप नगर मे रहते है । इन पक्तियो के लेखक के परम मित्र है । प्राय स्वामी जी को त्याग और आदर्श की घटनायें सुनाया करते हैं । कानपुर मे आये श्री प्रकाश को पुत्रवत पाला था-अत जब सुना कि वह बीमार है रिक्शा तक से श्री प्रकाश के द्वार तक आये सहसा याद आया सन्यासी मोह मे नहीं बधेंगा वहीं से कुशल पूछ श्री प्रकाश की पत्नी ने आग्रह किया अन्दर आइये-उत्तर दिया सन्यासी हू, घर मे कैसे आऊँ मई मास था तेज हवा चल रही थी दुपहरी ढलान पर थी बहू सुमन ने पूछा—शर्बत ले आऊ यहीं रिक्शा पर बैठे ही ले लीजिये—सन्यासी बोला—भिक्षा दूसरे घर ग्रहण करूगा । रिक्शा बढ़ चला—लघु भ्राता और भ्रातृ बहू नयन मे आंसू भरे निहारते रहे ।

स्वर्गीय प्रकाश वीर शास्त्री इन पक्तियो का लेखक और स्वामी सत्य प्रकाश जी हरिद्वार मे थे । स्वामी जी और प्रकाश वीर देहली चले गये प्रकाश वीर शास्त्री ने मुझे स्वामी सत्य प्रकाश की अविचलधीरता का हाल इस प्रकार बताया । देहली पहुचने पर स्वामी जी प्रकाश वीर के साथ उनके निवास पर ठहर गये । दिसम्बर का महीना था—सहसा टेलीफोन की घण्टी बजी स्वामी सत्य प्रकाशके एक पुत्र इग्लेंड मे ही बस गये हैं दूसरे देहली मे आनन्द जी बैंक के अधिकारी थे । उन्हे दिल का दौरा पडा वह चल बसे उसी की सूचना टेलीफोन से आई—प्रकाश वीर विचलित किसी प्रकार स्वामी जी को सन्देशा दिया-सन्यासी शात निश्छल और गम्भीर, पुत्र-वधू-पौत्र-पौत्री की क्रन्दन पुत्र काशव और सन्यासी शान्त । गेरुवे वस्त्रो ने सहृदय सत्य प्रकाश को कठोर बना दिया—सन्यासी है । बन्धन मुक्त है । पिता पुत्र के सम्बन्ध तोड चुका है । प्रकाश वीर शास्त्री ने प्रबन्ध किया अन्तिम सस्कार हुआ। सन्यासी बहू से बोला—बेटी अपने पुत्र-पुत्रियो को लेकर इलाहाबाद जाओ घर मे रहो प्रभुरक्षक है—और यह सन्यासी काष्ठ वत है । यह तो जा रहा है कलकत्ता जहाँ की जनता उसका प्रवचन सुनना चाहती हे सक्षेप मे स्वामी सत्य प्रकाश के सन्यास धर्म की परोक्षा प्रभु ने ली सन्यासी खरा उतरा परीक्षक अपनी कठोरता के लिए लज्जित हुआ ।

मानव जीवन की ऊँचाई को स्वामी सत्य प्रकाश जी स्पर्श कर रहे हैं । आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की शताब्दि के अवसर पर लखनऊ मे १७ से २० अक्टूबर सन् १६८६ के मध्य स्वामी जी के साथ चार दिन सान्निध्य का अवसर मिला । सन्यासी मे सतत् गतिशीलता है नवीनता है और नव सकल्प है । लघु लेख यहीं समाप्त है । भविष्य मे सुयोग मिला तो स्वामी सत्य प्रकाश की कृतियो को परिचयात्मक समीक्षा प्रस्तुत करूगा । स्वामी जी की कृतियां जिज्ञासु इस पते पर सपर्क करके प्राप्त कर सकते है । श्री दीना नाथ सिंह इन्जीनियर मन्त्री स्वामी सत्य प्रकाश प्रतिष्ठान आनन्द नगर रायबरेली उत्तर प्रदेश ।

मुक्ति का साधन तथा स्वरूप

लेखक—सिद्धान्त शिरोमणि सुधोन्द्र नाथ शास्त्री एम०ए०
साख्य योगतीर्थ

कौटिल्य शास्त्र के प्रणेता महाप्राज्ञ चाणक्य ने अपनी चाणक्य नोति मे मानव कल्याण हेतु अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वत । नित्य सन्निहिता मृत्यु कर्त्तव्यो धर्म सग्रह ।। यह लिख कर मानव जन्म की सार्थकता हेतु जिस अमृतवर्षा की ओर सकेत किया है उसके अनुसार मानव जीवन को उदात्त बनाने हेतु भौतिक सुखो की अपेक्षा धर्म सग्रह को ओर विश्व का ध्यान आकर्षित किया है। इसो भाव को कवि कुल गुरु कालि दास ने भी अपने महाकाव्य रघुवश मे राजर्षि दिलीप के मुख से "एकान्त विध्वसिषु मद्विधाना पिण्डेषु नास्था खलु भौतिकेषु । सासारिक वैभव के प्रति आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य मे उपेक्षा की भावना को व्यक्त किया है ।

धर्म सग्रह के साधनो मे धर्म अर्थ काम मोक्ष इस चतुवर्ण की ही प्रधानता मनीषी विद्वानो ने अगीकार की है। चतुवर्ण के प्रथम अङ्ग धर्म की अनेक परिभाषायें की गई है परन्तु "यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिस धर्म । धर्म केइस परिभाषा मे सब परिभाषाओ का सार अन्तर्निहित है अत निःश्रेयस, मुक्ति मोक्ष ही धर्म सग्रह की परिणति का फल है ।

धर्म के निमित्त कम की अनिवार्यता समस्त आचार्यों ने एक स्वर से स्वीकार की है । यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के दूसरे मन्त्र "कुर्वन्नेवेहकर्माणि जिजीविषेत शत समा । एव त्वयिनान्यथेतोस्तिन कर्म लिप्यते नरे" मे भी शतवर्ष पर्य्यन्त कर्म करते हुए ही जीवित रहने का व्याख्यान है । ससार की समस्त क्रियायें कामनाओ से ही सचालित है । मानव धर्मशास्त्र के प्रणेता महाराज मनु ने भी अकामस्य क्रिया काचिद्दृश्यते नैव कर्हिचित् । यद् यद्धि कुरुते किञ्चित् तत् कामस्य चेष्टितम् ।। लिख कर विश्व मे समस्त क्रियायें काम से सचालित हैं यही स्वीकार किया है । धर्म के चतुवर्ण मे काम को तीसरा स्थान प्रदान किया गया है तदनन्तर मोक्ष को स्थान दिया गया है ।

इसका भाव यही है कि धर्मपूवक अर्थ का सचय भौतिक जीवन मे अर्थ की महत्ता को ध्यान मे रखते हुए ही वेद का आदेश है कि "वय स्याम पतयो रयीणाम् ।। अर्थात् हम धनो के स्वामी हो । धन द्वारा कर्म की सम्पन्नता होती है इसकी यथार्थता स्वय ही स्पष्ट है । धन के स्वामी के जीवन की साथकता इसी मे है कि उसके



काम्य कर्म श्रेष्ठ कर हों । जिससे कि निःश्रेयस् प्राप्त हो सके ।

इन कर्मों की श्रेष्ठता ही निःश्रेयस् की कसौटी है । यह यज्ञो के द्वारा ही सम्भव है। यज्ञ को भी दो भागो मे विभक्त किया गया है । इष्ट तथा आपूर्त । मन्त्रोच्चारित स्वधा शाकल्य की आग्निक आहुति यज्ञ का पूर्व भाग है तथा दान दक्षिणादि परोपकारार्थ किये गये कर्म ही आपूर्त कर्म । जब ये दोनो प्रकार के कर्म सकाम रूप से सम्पन्न किये जाते हैं तब इनका फल-स्वर्ग होता है 'स्वर्ग कामो यजेत्" परतु जब ये कर्म निष्काम भाव से सम्पन्न होते है तब ये कर्म मुक्ति मोक्ष प्रदायक माने गये है । इन दो प्रकार के कर्मों को गीता मे कर्म, अकम तथा विकर्म इन त्रिविध रूपों मे प्रस्तुत किया गया है । "त्रिविधा कर्म नोदना गा । परन्तु इन सब का समावेश इष्ट आपूर्तकर्मों मे ही होजाता है। गीतोक्त निष्काम कर्म मुक्ति साधक है ।

मुक्ति या मोक्ष शब्द वेदो मे नहीं आया है वेदों ने अमृत, शब्द का उल्लेख है जिसका जल रूपा औषधि है । अप्सु अन्त अमृत, अप्सु भेषजम् । ऋग १/४/४ इसी को स्पष्ट करते हुए अथर्व वेद के ११/६/२३ मे "यन्मातली रथक्रीत अमृत वेद भेषजम् । नदीन्द्रो अप्सु प्रावेशयद् तदापो दत्त भेषजम् । इस मन्त्र मे भी भेषज ओषध को ही अमृत कहा गया है । वस्तुत मनीषी आप्त पुरुष शाब्दिक सगति तथा विसगतियो सेनिर्लिप्त रहतेहुए इष्ट तथा आपूर्त कर्मों पर ही स्वजीवन को आश्रित रखते है । भोगैश्वर्य परायण, प्रसक्त जन शारीरिक ऐन्द्रिक सुखो मे ही आस्थावान होकर आवागमन चक्र मे आवद्ध रहते है । परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति तृष्णा के क्षय होने पर आत्म सुख को ही जीवनका आनद सार सर्वस्व समझ कर परमात्मा के साक्षात्कार द्वारा परम ओषध अमृतत्वकी प्राप्ति मे समर्थ होते है ।

आत्मा की अमरता का उल्लेख प्राय सभी शास्त्रो तथा धर्म ग्रन्थो मे समान रूप से विद्यमान है परन्तु पातञ्जलयोग दशन मे जिस अष्टाङ्ग योग का उल्लेख है वही सर्वश्रेष्ठ है । जिसका सार आत्म सयम को ही भगवत् प्राप्ति का सर्वोच्च साधन स्थापित किया गया है। महर्षि का कथन हैकि वेदो के ज्ञान द्वारा वेदोक्त कर्मों सेव्यक्ति परमात्मा के समीप वेदोक्त कर्मा होकर उपासनालीन होकर उस अमृतत्व या मोक्ष के आनन्द का अनुभव करने मे समर्थ होता है । इतना ही नहीं महर्षि ने मुक्ति को अवधि का भी उल्लेख कर अवधि की समाप्ति पर मुक्ति से पुनरावृत्ति का भी अपने अमर ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश मे उसका उल्लेख सप्रमाण किया है । शिव गीताकार ने तो मोक्षस्यनहि वासोऽस्ति न च ग्रामान्तरमेवन । अज्ञान हृदय ग्रन्थि नाशो मोक्ष इतिस्मृता । अर्थात् मरणोपरान्त अन्य शरीर मे जन्मलेना मोक्ष नहीं अपितु हृदय स्थित ज्ञान विहीन ग्रन्थियो का सुलभ ज्ञान ही मोक्ष है । जो कि मानवीय जीवन मे सर्वथा सभव मानव तन ही मुक्ति का द्वार है । शतपथ ब्राह्मण मे सौ वर्ष से अधिक दीर्घ आयु दीर्घ जीवन प्राप्त करना ही अमृतत्व या मोक्ष है । अर्थात् सौ वर्ष की आयुके उपरात साधना से मोक्ष लाभ होता है । यो ह वै शतमूर्ध्वं माजीवति सअमृतत्वमेति । शतपथ परन्तु ऋग्वेद के १/४४/५ मे स्तविष्यामि त्वामह विश्वस्यामृत भोजनम् । अग्ने जातार अमृत कि मेध्ययजिष्ट हव्य वोहना। सबभोग्य पदार्थों केवहनकरने वाले परमात्मा को ही अमृत कहा गया है । उस परमात्मा को प्राप्ति ही ज्ञान कर्म उपासना की त्रिवेणी मे निमग्न होने पर प्राप्त होती है । ★

सत्यार्थ प्रकाश महात्म्य

[पृष्ठ ७ का शेष]

हम आर्य स्वय हिन्दू कहा मस्त हो गये ।
जगवाया वेद सुधा दे, सत्याथ प्रकाश ने ।।
ऋषि करके दुग्धपान, अन्तर्ध्यान हो गये ।
वाणी का टेप कर लिया, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
वेदो का नित्य पढना पढ़ाना है आर्य धर्म ।
भूलो नहीं उपदेश को, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
चौदह ही समुल्लास मे ऋषि ने न कुछ छोडा ।
ऋषि को सजीव कर दिया, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
सत्धर्म आर्य समाज अमर, अमर ओ३म है ।
नित अभय की पुकार की, सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
हिन्दुत्व का प्रकाशक, बलदेवी मारवाड ।
'शतवर्ष' उदयपुर की सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
जो बोलें सो अभय बोलो, वैदिक धर्म की जै ।
ऋषि को 'शचीश' धन्य की सत्यार्थ प्रकाश ने ।।
सत्पथ हमे बतला दिया सत्यार्थ प्रकाश ने ।
वेदोक्त सब सिखला दिया सत्यार्थ प्रकाश ने ।।

प्रस्तुतिकर्ता आर्य कवि तथा सगीतकार
—डा० जगदम्बा प्रसाद अष्ठाना 'शचीश' जौनपुर

वार्षिकोत्सव

निम्नलिखित आर्य समाजों द्वारा वार्षिकोत्सव इस प्रकार सम्पन्न हुए।

(१) आर्य समाज तिलहर, ७ से ९ नवम्बर ८६

(२) स्त्री आर्य समाज सीसामाऊ, कानपुर ७ से ९ नवम्बर ८६

(३) आर्य समाज, सरदार पटेल मार्ग, खलासी लाईन सहारनपुर १६ से १८ नवम्बर ८६

(४) आर्य समाज, मिर्जापुर (रामनगर) फैजाबाद १७ से १९ नवम्बर ८६

(५) आर्य समाज बीसलपुर (पीलीभीत)

(६) आर्य समाज मीरजापुर २८ नवम्बर से १ दिसम्बर ८६

(७) आर्य समाज गोंडा २१ से २४ नवम्बर ८६

(८) महिला आर्य समाज उन्नाव के तत्वाधान मे कार्तिक पूर्णिमा के शुभ अवसर पर दिनाक १६ से २९ नवम्बर १९८६ तक वैदिक ज्ञान मेला का भव्य आयोजन आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण मे हुआ जिसमे देश के उच्च कोटि के महात्मा, विद्वान और भजनोपदेशकों ने अमृत ज्ञान वर्षा की।

(९) आर्य समाज नगर ऊँटारी (पलामू) के तत्वाधान मे विजयादशमी के शुभ अवसर पर लगातार ६ दिनो तक वैदिक धर्म प्रचार का कार्यक्रम श्री विश्वनाथ प्रसाद आर्य के अथक प्रयास से १३ से १५ अक्टूबर ८६ तक बाजार के प्राङ्गण मे श्री महानन्द जी आर्य भजनोपदेशक चुनार एव श्री सीता राम आर्य तथा श्रीमती सिया सुन्दरी आर्या। आर्य भजनोपदेशक के द्वारा बडे धूमधाम से सम्पन्न हुआ और श्री धर्मेन्द्र प्रताप देव के नेतृत्व मे चल रहे प्रभात क्लब की ओर से नगर ऊँटारी राजा के किला के प्राङ्गण मे श्री वीरेन्द्र जी आर्य भजनोपदेशक के माध्यम १६ से १८ अक्टूबर ८६ तक भजनउपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसकी उपस्थित जन समूह पर अच्छा प्रभाव पडा।

(१०) आर्य समाज दर्शनपुरवा कानपुर नगर की श्रमिक बस्ती की एक क्रियाशील आर्य समाज है और विगत दो वर्षो से नवीन अधिकारियो के लगन तथा उत्साह के साथ समाज सेवा मे अग्रसर हो जन प्रियता प्राप्त कर रही है। १४ से १६ नवम्बर १९८६ के भव्य उत्सव सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुल नन्द जी सरस्वती के शास्त्रीय तथा व्रती सत्यप्रिय के धार्मिक भाषण रुचिकार रहे। भजनीक महाराज सिंह और श्री जलेश्वर के भजन भी जन प्रिय रहे।

आर्य मित्र के सम्पादक आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए० का समापन भाषण हुआ जिसमे आर्य समाज वर्तमान बदलते परिवेश मे कौन सी भूमिका का निर्वाह करे।

इसी अवसर पर श्री कुवर बहादुर जी ने आज ८३ वर्ष और उनकी पत्नी श्रीमती शारदा जो आज ७७ वर्ष ने सन्यास आश्रम प्रवेश किया। दम्पति को सन्यास दीक्षा स्वामी गुरुकुलानन्द जो ने दिया और उनका सन्यासाश्रम का नाम क्रमश स्वामी मित्रानन्द तथा शारदायती सम्बोधित हुए। सन्यासी दम्पति का आर्य जनों ने उत्साह के साथ स्वागत किया।

आर्य समाज के प्रधान श्री प्रताप सिंह–मन्त्री श्री सत्यराम सिंह सेंकार एडवोकेट एव श्री कर्ण सिंह जी आदि के परिश्रम एव लगन से सेवारत रहने के कारण उत्सव सफल रहा।

—सम्वाददाता

—आर्य जगत के प्रसिद्ध वेदवक्ता श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती का वर्तमान पता श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, वेदवक्ता न्यू आदर्श नगर, अलकेश्वर आगरा–४

आर्य जगत

नवीन आर्य समाज की स्थापना

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जौनपुर के प्रधान श्री आर्य मुनि द्वारा दि० ८-११-८६ को गौराबादशाहपुर मे वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। श्री मेधाकुल शास्त्री के सरक्षण मे तथा आ० स० के मन्त्री श्री अमीपाल सिह भदेवरा के विशेष प्रयास से गौरा बादशाहपुर की बाजार मे आर्य समाज की स्थापना की गयी।

नव वर्ष के लिए निर्वाचन ये हुए–

(१) हरेन्द्र प्रताप सिंह (प्रधान)
(३) श्याम कन्हैया (मन्त्री)
(५) ओम प्रकाश (कोषाध्यक्ष)

पिथौरागढ़ मे स्वामी गुरुकुलानन्द कल्वाहारी द्वारा सन्यास दीक्षा

पिथौरागढ़। दीपावलि२०४३ विक्रमी को डा० सांवत सिह पी० एच० डी० के यहाँ महर्षि दयानन्द निर्वाण यज्ञ के बाद आर्य समाज मन्दिर मे स्वामी गुरुकुलानन्द कल्वाहारी ने नैष्ठिक ब्रह्मचारी डॉ० राजेश पुनेठा को स्वामी राजयोगानन्द सरस्वती के नाम से सन्यास दीक्षा दी।

सनातन वैदिक धर्म के प्रचारार्थ स्वामी कल्वाहारी एक सौ से अधिक आर्य जनो को वानप्रस्थ व सन्यास की दीक्षा देंगे और उनके विवरण "अपने साधूसयासी" नामक पुस्तक मे प्रकाशित करेंगे।

उत्तर प्रदेश मे पिथौरागढ़ ही ऐसा जनपद है, जहाँ कोई आर्य समाज मन्दिर नहीं है! कृपया निम्नाकित दान से कुछ अधिक भेज कर पुण्य लेवें –

५०) दानभक्त–स्लेनपट पर सूची,

५००) दानवीर–सगमरमर पर सूची,

५०००) दानमहावीर–सगमरमर पर द्वार, श्यामपट आदि का नामकरण और

१००००) दानपरमवीर–सगमरमर पर यज्ञशाला, कक्ष आदि का नामकरण। बैंक ड्राफ्ट आर्य समाज पिथौरागढ़–नैनीताल बैंक लिमिटेड, पिथौरागढ़) या धनादेश (स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती, पिथौरागढ़) के पता पर भेजें। स्वामी जी जुलाई१९८६ से पिथौरागढ़ की सेवा हेतु आ गये हैं।

—लक्ष्मी चन्द्र मित्तल मन्त्री

है कोई दानवीर कर्ण और भामाशाह

प० बुद्धदेव विद्यालकार, आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति, प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार जैसे बर्जनो वैदिक विद्वानो के गुरु श्री प्रो० विश्वनाथ वेदोपाध्याय की अवस्था इस समय ९६ वर्ष है। आँखो की ज्योति मन्द हो जाने और हाथो मे कम्पन होने पर भी दिन-रात वेद भाष्य मे लगे हुए हैं। अथर्ववेद के बीस काण्डो मे से १२ काण्डो का भाष्य छप चुका है। दो काण्डो का छपने को तैयार है। शेष ६ काण्डो का भाष्य वे कर रहे हैं। सम्पूर्ण भाष्य का प्रकाशन श्री प० युधिष्ठर मीमांसक के निर्देशन मे रामलाल कपूर ट्रस्ट की ओर से हो रहा है। अब तक प्रकाशन का व्यय चौ० प्रताप सिंह जी (करनाल) उठा रहे थे। उनके स्वर्गवास के बाद यह काम बीच मे रुका पड़ा है, क्योंकि उनके उत्तराधिकारियों को इसमे रुचि नहीं है। ट्रस्ट के पास पैसा नहीं है। अभी लगभग एक लाख रुपया और लगना है। आर्य

(शेष पृष्ठ ११ पर)

वेद प्रचार

वार्षिकोत्सव

(१) रेलवे कालोनी आर्य समाज समस्तीपुर– १२-११-८६ से १६-११-८६ तक सम्पन्न (आर्य वीर सम्मेलन, वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन कार्यकर्त्ता सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन)

(२) आर्य समाज कृष्णा नगर (कीटगंज) प्रयाग– २१ से २३ नवम्बर ८६ तक सम्पन्न हुआ।

(३) आर्य समाज भटौली ४,५,६, दिसम्बर ८६ को मनाया गया।

अन्य समारोह

(१) आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर १ से ३ नवम्बर तक त्रि-दिवसीय प्रचार समारोह सपन्न।

(२) गुरुकुल बनल विश्व कल्याण चतुर्वेद पारायण यज्ञ त्रिताप निवारणार्थ २१ सितम्बर ८६ से प्रारम्भ हो गया है।

(३) आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढवाल १०५ वा जयती समारोह स्व० श्री जयानन्द भारतीय जी स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी की स्मृति मे १७-१०-८६ को सम्पन्न हुआ।

(४) ऋषि मेला ५ से ६ नवम्बर ८६ तक ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड (आनासागर का तट) अजमेर मे सम्पन्न।

(५) वेद गोष्ठी परोपकारिणि सभा दयानन्दाश्रम, केसरगज, अजमेर द्वारा ८-११-८६ को एक वेद गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमे आर्य दृष्टिकोण से वेद के यथार्थ स्वरूप का दर्शन, वेद के शोधकर्ताओ के सम्मुख आने वाली कठिनाइयो का निराकरण, ऋषि दयानन्द की शैली के अनुसार ऋग्वेद के शेष भाग तथा साम और अथर्व वेद का भाष्य किस प्रकार हो आदि विषयो पर वैदिक विद्वानो द्वारा विचार किया गया।

भारत को इसराइल से मित्रता करनी चाहिए

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का सुझाव

देहरादून, १० नवम्बर। आर्य समाज देहरादून के १०७वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित 'पजाब रक्षा सम्मेलन मे अध्यक्षीय भाषण करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि कश्मीर तथा पजाब को बचाने का एक ही उपाय है कि सविधान मे सशोधन करके समूची पश्चिमी सीमा पर पाच मील चौडी स्थायी सुरक्षा पट्टी का निर्माण करके वहा देश के ४१ लाख अवकाश प्राप्त सैनिको को बसा दिया जाए और दोनो प्रदेशों मे पाच वर्ष के लिए राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया जाए।

पजाब समस्या की विस्तार से चर्चा करते हुए स्वामी जी ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि उस प्रदेश की ४८ प्रतिशत जनता की भाषा हिन्दी को उसका सविधान प्रदत्त अधिकार भी नहीं दिया जा रहा है। आप ने कहा कि भारत ही ऐसा विचित्र देश है जहाँ अल्पमत को वे अधिकार द दिए गए हैं जो बहुमत को प्राप्त नहीं है। इन परिस्थितियों मे बहुमत को जागृत होने की अत्यन्त आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि श्री बरनाला ने सुरक्षा-पट्टी बनाने का विरोध करके यह सिद्ध कर दिया है कि वे उग्रवादियो के पक्षपाती है क्योंकि सुरक्षा-पट्टी बनने से उग्रवादियो पर रोक लग सकती है। आर्य नेता ने आगे कहा कि भारत की एकता को नष्ट करने का अन्तरराष्ट्रीय षड्यन्त्र चल रहा है और उसका मुकाबिला करने के लिए भारत को इसराइल से मित्रता करनी चाहिए। उस देश ने आज तक कोई पग भारत के विरोध मे नहीं उठाया है।

स्वदेश के भविष्य के बारे मे अपने विश्वास को व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने कहा कि निराशा की कोई बात नहा है। वह दिन आएगा जब भारत का ध्वज ससार मे सर्वोपरि लहराएगा क्योकि यह देश "सर्वे भवन्तु सुखिन" की प्रार्थना करने वाला देश है। आवश्यकता केवल इस बात की है सबके साथ यथायोग्य व्यवहार करना हम सीख जाए।

पजाब के विस्थापित परिवारो की सहायता के लिए आर्य समाज देहरादून ने दूसरी किस्त के रूपमे स्वामी जी को पाच हजार रुपये का चैक भेंट किया। प्रथम किस्त मे ६००१ रुपये दिये गये थे।

मुस्लिम-बहुल क्षेत्रो मे ही दंगे क्यो होते है?

सम्मेलन मे भाषण करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस बात पर खेद और आश्चर्य व्यक्त किया कि पजाब से बाहर के सिक्ख यह नहीं कहते कि पजाब मे जो हो रहा है, वह गलत है। आप ने कहा कि वहा दरिन्दे पुलिस का भेस बना कर घूमते हैं।

साप्रदायिक दगो के बारे मे शास्त्री जी ने कहा कि इस विषय पर विचार करते समय यह अवश्य देखना होगा कि मुस्लिम बहुल क्षेत्रो मे ही दगे क्यो होते हैं।

संवेदना

निम्नलिखित आर्यों के दिवगत होने के समाचार पर सवेदना है–

(१) श्रीमती कृष्णा देवी शर्मा धर्म पत्नी श्री केशव देव जी शर्मा, आर्य समाज गोला (लखीमपुर-खीरी)।

(२) श्री वेद प्रकाश सुपुत्र श्री बसत सिह आय समाज बगहा (मीरजापुर)।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिवगत आत्माओ को शाति तथा सद्गति और उनके वियोग मे सतप्त परिवारजनो को धैर्य प्रदान करने के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

—मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

शोक सभा

–दिनाक २६ १०-८६ को एक शोक सभा श्री डा० गिरधारी लाल शर्मा जी की अध्यक्षता मे आर्य समाज गोला के आर्य समासद श्री केशवदेव शर्मा जी की धर्म पत्नी श्रीमती कृष्णा देवी शर्मा के आकस्मिकनिधन पर सम्पन्न हुई। जिसमे दिवगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थनाकी गयी।

है कोई दानवीर कर्ण और भामाशाह ?

[पृष्ठ १० का शेष]

समाज के पास करोडो रुपया है पर वह उन कामो मे खर्च हो रहा है जिनका न दयानन्द से कोई सबध है, न आर्य समाज से। वेद को तो कोई पूछता ही नहीं। वेद नहीं रहेगा तो आर्य समाज नहीं रहेगा। जलसे, जलूसो, स्कूलो, कालिजों, बरातघरों, औषधालयो आदि पर–ईंट-पत्थरों की बिल्डिगो पर करोड़ों रुपये लगाने वाले आर्यों और आर्य समाजो के न म श्री मीमासक जी ने वेदवाणी मे बडी मार्मिक अपील निकाली है। कारें, जीपें, और मैटाडोर भेंट करने वालो मे क्या कोई ऐसा नहीं जो वेद के नाम पर एक लाख (अथवा जिसका जितना सामर्थ्य हो) रुपया रामलाल कपूर ट्रस्ट बहलाढ़ को दे सकें।

प्रो० विश्वनाथ जी दधीचि की तरह अपनी हड्डियां दे रहे है। क्या ८६ वर्षीय उस तपस्वी के कार्य का कोई मूल्याकन करेगा?

–विद्यानन्द सरस्वती, डी–१४/१६ माडल टाउन दिल्ली।

ले आख मीच अन्याय देख वह खून नहीं । पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'



सम्पादकीय

सम्वत्— रविवार १४ दिसम्बर १९८६, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि सवत् १९७२९४९०८७

आर्यो ! चेतो

आर्य समाज की स्थापना के साथ महर्षि स्वामी दयानन्द का स्वप्न था मानव उत्तम ज्ञान से पूर्ण होकर उत्तम कर्म करके उत्तमोत्तम आनन्द से पूर्ण होकर सम्पूर्ण सृष्टि को आनन्दित करेगा । पद दलित, दु खों से त्रस्त पराधीनता की बेडी मे जकडी भारत माता को आजाद करायेगा।

"इन्द्र वर्धन्तु अप्तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, अपध्नतो आराव्ण" की वैदिक आज्ञानुसार पापो, दोषो, दुष्ट वृत्तियो का सर्वनाश करके सारी दुनिया मे सुख-शान्ति सौहार्द्र एव वैदिक ज्ञान का प्रसार करके सम्पूर्ण जगत् को आर्य (श्रेष्ठ मानव) बनाने के लिए सर्वात्मना उत्सर्ग को समुत्सुक रहेगा ।

निश्चय ही उनके इस स्वप्न को हमारे पूर्व कालिक नेता अमर-हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द प० लेख राम, स्वामी दर्शना नन्द जी, स्वामी सर्वदा नन्द जी, महात्मा हसराज, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी त्यागानन्द जी, महात्मा आनन्द स्वामी प्रभृति अनेको मनीषी, विद्वानो सन्यासी महात्माओ ने साकार करने का यत्न किया ।

स्वाधीनता के आदोलन मे सर्वात्मना आहुति देने को लाला लाजपत राय, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिह, सरदार पटेल, पट्टाभि सीता रमैया सरीखें अनेकों आर्य जनो ने सकल्प लेकर कदम बढाये आहुतियाँ दीं, विजय भी मिली । देश स्वाधीन हुआ । परन्तु स्वराज्य के बाद शायद आर्यों ने अपने कर्त्तव्य की इतिमान ली हमने अपनी जागरूकता शिथिल कर दी, हमारे लक्ष्य सरकार पूर्ण करेगी ऐसा मान बैठे, कई आन्दोलन जो ऋषि ने उठाये जैसे छुआछूत, नारी सम्मान, शिक्षा आदि को निश्चय ही सरकार ने अपने हाथो मे लिया भी। परन्तु हमारी शिथिलता के कारण सरकार उनके वास्तविक लक्ष्य तक पहुचा पा मे समर्थ नहीं रही । स्वार्थी वृत्तियो ने अपना आक्रमण ऐसा किया कि स्वराज्य मे सु-राज्य स्थापना की कल्पना ध्वस्त होने लगी और यह आन्दोलन गलत मोड पर जा कर विध्वसात्मक ईर्ष्या द्वेष वर्धक बनने लगे । ऋषि का स्वप्न टूटने लगा ।

कतिपय स्वार्थी लोग अपने राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने के लिए आर्य समाज का दामन पकड कर बढने का यत्न करने लगे । बस गिरावट आरम्भ हो गयी । चरित्र गिरने लगा ।

एक समय था जब 'आर्य'रूप मे परिचय देने पर न्यायालय मे शपथ नहीं लेनी पडती थी । उसकी गवाही न्यायाधीश को निर्णय देने के लिये सहायिका होती थी । मार्ग मे चलते, आपस मे व्यवहार करते चरित्र को देख कर 'आर्य' पहचान लिया जाता था ।

क्या हो गया आर्यों ! बह सब बदल गया 'सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए' का नियम केवल कागजो पर रह रहा है । आज हमारा दर्शन सुप्रभावी नहीं रहा । विपरीत कुप्रभावी बन गया है । आज हम पद लिप्सा के वशी भूत हो अदालतो मे झूठे सच्चे मुकदमे चलाने मे लग पडे हैं । लड़ाई, झगडा, गाली-गलौच, मारपीट भी कर लेते हैं । लज्जा नाम को नहीं आती । गर्व से सीना तान कर चलना चाहते है । आर्य समाजो के विवाद, आर्य विद्यालयों के विवाद जनता के बीच हमारा यश क्षीण कर रहे हैं । हमसे मार्ग दर्शन की अपेक्षा करने वाले निकट आने पर हमसे विवादजन्य स्थिति को सुन कर-देख कर दु खी होते हैं निराश होते व हमसे दूर चले जाते हैं । यदि यही स्थिति रही तो एक दिन 'आर्य समाज' नाम मात्र इतिहास का विषय बन कर रह जायेगा । और दयानन्द की आत्मा हमे धिक्कारेगी ।

अभी भी समय है आओ हम सचेत हो जायें, उठें, चेतें, और अनार्य वृत्तियो, स्वार्थ पद लोलुपता, अहकार, दुश्चरित्रता (चरित्र-हीनता के सम्पूर्ण लक्षणो) का सर्वथा नाश करके सच्चे आर्य बनने का प्रयत्न करे । (आर्य शब्द ऋगतौ धातु से बनता है जिसका अर्थ ज्ञान गमन, प्राप्ति है– यह सभी सुधी जन जानते है ।) कर्त्तव्य पालन वैदिक आज्ञाओ का अनुसरण करने के व्रती बनें । विवादो को नष्ट करें । अदालतो से परे हटें । घर मे बैठ कर अपने को टटोलें । साफ करें । सत्य को स्वीकार करें परस्पर गले मिलें और सच्चे आर्य बन कर विश्व मे सुख शान्ति समृद्धि के प्रचार प्रसार के लिए एक हो जुटें । विश्व को आर्य बनाने के दयानन्द के स्वप्न को साकार करें ।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी



टिप्पणियाँ

श्री गोर्वाच्योव का स्वागत

रूसी कम्युनिष्ट पार्टी के महामत्री श्री मिखाइल गोर्वाच्योव के दिनाक २५/११/८६ को उनके भारत आगमन पर हमारे प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी ने देश की जनता को ओर से उनका भव्य स्वागत किया । निश्चय ही इस यात्रा से भारत-रूस मैत्री और दृढ़ होगी ।

इस अवसर पर स्वागत कार्यक्रमो को दूर दर्शन पर देखते हुए जहाँ रूसी नेता के अपने देश की भाषा मे ओजपूर्ण भाषण देने से हर्ष हुआ वहीं हमारे प्रधान मन्त्री द्वारा अग्रेजी भाषा मे स्वागत भाषण करने से हार्दिक ठेस लगी । तब और अधिक दु ख हुआ जब दूरदर्शन पर श्री गोर्वाचोव के भाषण का प्रसारण हो रहा था उसका अग्रेजी रूपान्तर बडी जोर की आवाज मे किया जाने लगा और श्री गोर्वाचोव की आवाज दब कर केवल अग्रेजी ही सुनाई पडती रही ।

अत्युत्तम होता कि उनका भाषण उनकी भाषा मे सुनने के बाद उसका सक्षिप्त हिन्दी व अग्रेजी रूपान्तर २–४ मिनट मे सुना दिया जाता । विदेशो मे जहा भी यह प्रसारण देखा व सुना गया होगा वहाँ भारत के प्रधान मन्त्री के अग्रेजी भाषण को प्रशसा की दृष्टि से नहीं लिया जायेगा ।

यह जान कर अत्यधिक हर्ष हुआ कि श्री मिखाइल गोर्वाच्योव एव उनकी धर्म पत्नी श्रीमती रईसा गोर्वाच्योव शाकाहारी हैं एव मद्यपान नहीं करते । हमारी सरकार की ओर से हैदराबाद हाउस मे उनके सम्मान मे दिये गये भोज मे शराब व मास को नहीं लिया गया । फलो के रस व शाकाहारी भोजन से उनका स्वागत किया गया और अधिक उत्तम होता यदि उनका आदान-प्रदान भी भारतीय ढग से होता गिलास एक दूसरे को देते न कि एक दूसरे को दिखा कर स्वय पीते ।

हमारे देश की अपनी एक स्वागत की परम्परा अनोखी है । विदेशी यात्री उस स्वागत की कल्पना लेते हुए यहाँ आते थे और यात्रा के

[शेष पृष्ठ ३ पर]

श्री गोर्वाच्योव का स्वागत

(पृष्ठ २ का शेष)

विश्व मे सर्वोत्कृष्ट स्थान बनाने के लिए विदेशी सस्कृति का अनुसरण नहीं अपनी सस्कृति का पालन और दर्शन तथा शान्ति प्रवाहिनी वैज्ञानिक प्रतिभा का सम्वर्धन है। मात्र भारतीय सस्कृति ही विश्व प्रेम सौहार्द प्रसार का मार्ग प्रशस्त करती है। हमे पाश्चात्य दर्शन से हट कर प्राच्य दर्शन को देखना है। स्वदेशी भाषा, स्वदेशी सस्कृति का अनुसरण करके दूसरो पर अपनी अनन्य देश भक्ति की छाप छोडनी है।

एक विनम्र अनुरोध श्री गोर्वाच्योव से भी है। उनके भारत आगमन से पूर्व कतिपय समाचार पत्रो मे लेखो के माध्यम से भारत की भू० पू० प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की साजिश मे ब्रिटेन व रूस को भागीदार बताया गया है। यदि इसमे कहीं कुछ सत्यांश हो तो उसका प्रायश्चित उन्हे खुले शब्दो मे कर लेना चाहिए अन्यथा कठोर शब्दो मे उसका प्रतिवाद करना चाहिए। इससे भारत व रूस के सम्बन्ध और प्रगाढ होगे। और दोनो मिल कर विश्व को अन्य देशों को आणविक शक्ति को निर्माणकारी दिशा मे लगाने मे बाध्य करने मे समर्थ होगे।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

सत्यमशीय

आर्य समाजो मे जब तक वैदिक सिद्धातो के प्रचारार्थ शास्त्रार्थों का आयोजन किया जाता था, वैदिक धर्म का वास्तविक प्रचार होता था। स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज के कथनानुसार शास्त्रार्थों के आयोजन का उद्देश्य वाद-विवाद अथवा अपनी विद्वता का प्रदर्शन करके किसी अन्य को परास्त कराने का कदापि न हो कर, केवल सत्य और असत्य का निर्णय करना होता था। 'सत्यमेव जयते' सत्य मे अपरिमित शक्ति होती है अतएव सत्य सदैव विजयी होता था और असत्य की पराजय होती थी।

इधर जब से शास्त्रार्थों की परम्परा शनै शनै लुप्त हो रही है, आर्य जगत के विद्वान अपने ही सिद्धातो को लेकर, परस्पर विरोधी बन रहे है। आर्य जगत के विभिन्न साप्ताहिक और मासिक पत्रो मे बहुधा इस प्रकार के विरोधात्मक लेखो का प्रकाशन हो रहा है, जिसके कारण हमारा प्रचार शिथिल हो रहा है और विरोधियो को उससे पर्याप्त बल मिलरहा है। कहीं-कहीं तो शिष्टाचार की मर्यादा को लाघकर ऐसे भ्रष्ट शब्दो का लेखनी के द्वारा प्रयोग किया जाता है जो अवाछनीयता की श्रेणी मे आता है। जिन विषयो पर परस्पर विचारो का मतभेद है उनमे से कुछ इस प्रकार हैं—

(१) सृष्टि सवत
(२) वृक्षो, वनस्पतियो, औषधियो मे जीवात्मा है या नहीं।
(३) मानव जीवन की आयु कर्मानुसार निश्चित है या नहीं।
(४) शरीर छोडने के उपरान्त आत्मा तुरन्त नवशरीर धारण करती है अथवा कुछ समय पश्चात् इत्यादि।

इन समस्त विरोधो का समाप्त होना वैदिक धर्म के प्रचारार्थ अत्यन्त आवश्यक है और इस का एकमेव उपाय है कि आर्य जगत की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अपनी विद्यार्य उपसभा के माध्यम से वेद गोष्ठियो का आयोजन करे और उसमे ऐसा विरोध करने वाले समस्त विद्वानो को आमन्त्रित करके सत्य असत्य का निर्णय करने के लिए शास्त्रार्थ आयोजन करे और जो निर्णय इस सभा द्वारा लिए जाए, वे अनिवार्य रूप से सब विद्वानो को स्वीकार कराए जाए ताकि इन विरोधों से जो परस्पर मतभेद और विरोध उत्पन्न होकर हमारे प्रचार कार्य्य मे जो गतिरोध हो रहा है, उसे समाप्त किया जा सके। हमारा समस्त विद्वानो से भी अनुरोध है कि जो सत्य निर्णय इन गोष्ठियों के माध्यम से लिये जाए, उन्हे वे स्वीकार करें और प्रचारार्थ सेवनीय बनाए।

—वसन्त

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियो को पेन्शन

सलाहकार समिति का गठन

ताजा सूचना के अनुसार भारत सरकार के गृह मन्त्रालय के स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा प्रस्तावित सलाहकार समिति के गठन को सिद्धान्ततः स्वीकृत कर लिया है और सभा कार्यालय से सम्बन्धित सदस्यो के पते मागे गये हैं। प्रस्तावित समिति के सदस्यो के नाम ये हैं- स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री वन्देमातरम् राम चन्द्रराव (वरिष्ठ उपप्रधान सार्वदेशिक सभा), श्री राम चन्द्र राव कल्याणी (मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश) प्रो० शेरसिंह (उपप्रधान, सार्वदेशिक सभा), श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट (कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा), श्री शिवकुमार शास्त्री (भूतपूर्व ससद सदस्य) और श्री रणवीर सिंह (हरयाणा के भूतपूर्व ससद सदस्य)। मनोनीत सदस्यो से अविलम्ब सम्पर्क स्थापित कर हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सत्याग्रहियो को पेन्शन देने की कारवाई प्रारम्भ की जा रही है।

हरयाणा मे भी मान्यता

हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौधरी बसीलाल ने १६ नवम्बर को झज्जर (जिला रोहतक) मे एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए घोषणा की कि हैदराबाद निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह करने वाले राज्य के नागरिको को स्वतन्त्रता सेनानी माना जायेगा और उन्हे पेन्शन दी जायेगी।

कृपालु पाठको से

आर्य मित्र आपका अपना पत्र है। हम प्रयास कर रहे हैं कि इसे उपयोगी सिद्धात सम्मत सामग्री से युक्त कर आपको समर्पित करते रहे हर पाठक एव समाज के अधिकारी यदि सकल्प लेकर न्यूनातिन्यून ५ ग्राहक हमे बना कर देने का कष्ट करें तो हम आर्य मित्र को आत्मनिर्भर बनाने मे समर्थ हो सकेंगे और सदैव सुरुचि पूर्ण सिद्धान्त प्रतिपादक लेख कविता आदि प्रकाशित कर समय से सेवा मे पहुचाते रहने मे सक्षम रहेगे।

— आचार्य वेदव्रत अवस्थी सम्पादक

श्री गजानन्द जी आर्य परोपकारिणी सभा अजमेर के मन्त्री निर्वाचित

ऋषि मेला अजमेर के शुभावसर दि० ९/११/८६ को श्रीमती परोपकारिणी सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन माननीय स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। तथा दिवगत सभा मन्त्री श्री करण जी शारदा के स्थान पर सर्वसम्मति से स्वर्गीय यशस्वी दानवीर श्री लालमन जी आर्य के सुपुत्र श्री गजानन्द जी आर्य मन्त्री निर्वाचित हुए। उपस्थित सदस्य महानुभावो ने तथा समस्त विशाल जनसमूह ने उनका हार्दिक स्वागत किया।

उपासना का वैदिक स्वरूप

लेखक स्व० —श्री स्वामी आत्मानन्द सरस्वती

उपासना शब्द भगवान् के नाम कीर्तन मे प्रसिद्ध है। नाम कीर्तन कई प्रकार से किया जाता है। रागी लोग उसे गा गा कर और बाजे बजा-बजा कर करते हैं। एकात मे आसन लगा कर जप को भी उपासना का साधन माना जाता है। जप भी मानसिक और वाचिक दो प्रकार से किया जाता है। मानसिक जप ही "अजपा-जाप के नाम से प्रसिद्ध है। महर्षि पतञ्जलि ने नाम के जप के स्थान मे अर्थ की पुनरावृत्ति को महत्व दिया है। उन्होने लिखा है – "तज्जपस्तदर्थ भावनम्" ।। योग समाधिपाद २८ ।। प्रणव के अर्थ का बार-बार मनन करना ही जप है। "प्रणव" "ओउम्।। अक्षर को कहते हैं। "ओ३म ही ईश्वर का नाम है" ऐसा महर्षि पतञ्जलि का मन्तव्य है। उन्होने लिखा है "तस्य वाचक प्रणव" ।। योग समाधि पाद २७।। ईश्वर का नाम प्रणव है। तो क्या इस नाम का बार-बार उच्चारण करें तो जप का लक्ष्य पूरा हो जावेगा। इसके उत्तर मे ही महर्षि ने ऊपर के सूत्र से प्रकाश डाला है। उन्होने उत्तर दिया है कि "प्रणव" के नाम का उच्चारण ही नहीं "प्रणव" के अर्थ का बार-बार मनन करोगे, उस अर्थ से अन्तःकरण को भावित करोगे तो जप का लक्ष्य पूरा होगा।

इसी प्रकार महर्षि पतञ्जलि ने जप नाम के उपासना के क्षेत्र मे आमूल चूल परिवर्तन कर दिया है। नाम कीर्तन के स्थान पर ईश्वर के गुणो मे आत्मा को विभूषित करना ही उन्होने उपासना का प्रकार निश्चित किया है। यद्यपि नाम कीर्तन और नाम के भावार्थ का ज्ञान ये दोनो भी उपासना के भेद है। परन्तु ये दोनो विधिया इस तीसरी अवस्था तक पहुचने की साधनमात्र हैं। महर्षि पतञ्जलि के इस विचार का आधार हम वेद को मानते हैं। तथा उसी आधार को पाठकों के सामने उपस्थित करने के लिए ऋग्वेद का एक प्रसग यहा उद्धृत करते हैं। वेदो मे इस भाव को स्पष्ट करने वाले अनेक स्थानो पर अनेक प्रसग मिलते हैं। उनमे से इस प्रसग को भी हम यहा उपस्थित करने का प्रयत्न करेगे। मन्त्र है –

"गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किण ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वशमिव-येमिरे ।। ऋ १/१०+१

अर्थ (शतक्रतो) हे अनन्त कर्म करने वाले तथा अनन्त ज्ञान के भण्डार, भगवन्। (त्वा) तेरी (गायत्रिणो) स्तोत्रगान के जानने वाले (गायन्ति) स्तोत्र गान द्वारा उपासना करते है। (अर्किणो) ऋचाओ के अर्थो के विशेषण



(अर्कम्) पूज्य आपकी (अर्चन्ति) अर्थ ज्ञान के द्वारा उपासना करते है। (ब्रह्माण) ब्रह्मविद्या से विभूषित लोग (त्वा) तेरी उपासना कर (वशम्) ब्रह्मविद्या के कुलो अर्थात् सस्थाओ को (उद्यमिरे इव) मानो उद्यमी बना रहे हैं। अर्थात् उन्हें ऊचें उठा रहे है।

इस मन्त्र मे तीन प्रकार के उपासको का वर्णन है। तीनो के नाम गायत्रिणो, अर्किण और ब्राह्मण। इन मे से गयत्री लोग मन्त्रो के गान के द्वारा भगवान् के नाम का गान करते हैं। अर्की लोग ऋचायों के अर्थ का ज्ञान प्राप्त कर भगवान् के नाम के महत्व को ज्ञान, उस महत्व का ज्ञान रूप ही भगवान का पूजन करते हैं। और ब्रह्म अर्थात् वे लोग जिन्होने ब्रह्म विद्या अर्थात् ब्रह्म के गुणो से अपनी आत्मा को अलकृत कर लिया है वे न केवल अपना ही निर्माण कर रहे हैं प्रत्युक्त ब्रह्मविद्य के कुलो अर्थात् सस्थाओ का भी उत्थान कर रहे हैं।

इन उपासको मे प्रथम श्रेणी के उपासक की उपासना का कोई विशेष फल मन्त्र मे नहीं आया। परन्तु गान के द्वारा उपासना का निर्देश अवश्य किया गया है। इसमे प्रतीत होता है कि उपासक कि यह प्रथम अवस्था उसे आगे बढ़ने का सदेश दे रही हे। वह अब मन्त्र गान से आगे बढ़ कर मन्त्रो के अथ का ज्ञान प्राप्त करने का यत्न कर रहा है। और यह ही इसके ज्ञान का फल है।

उपासक ने अपनी इस दूसरी अवस्था मे पहुच कर मन्त्रो के अर्थ का ज्ञान आरम्भ कर दिया है। मन्त्रो के अर्थ जानने पर ही उसे भगवान् के गुणो का बोध होना है, और यह बोध ही इसका भगवान् का पूजन है। परन्तु उपासक की इस उपासना के फल का निर्देश भी मन्त्र मे नहीं किया गया। इससे प्रतीत होता है कि उपासक की यह अवस्था भी इसे आगे बढ़ने का आदेश दे रही है। और यह आगे बढ़ना है भगवान् के गुणो से अपनी आत्मा को अलकृत करना, और यह ही उस उपासक की दूसरी अवस्था अर्थात् उसके मन्त्रार्थ ज्ञान का फल है।

उपासक की तीसरी अवस्था मे ब्रह्म नाम होता है। यहाँ वह न गाता है और न केवल नाम के अर्थों का ज्ञान ही कर रहा है। यहाँ वह अपने जाने हुए भगवान् के एक-एक गुण से अपनी आत्मा को अलकृत करता हुआ आगे बढ़ रहा है। यह ही है इसको वास्तविक उपासना। इसके द्वारा अपने परम् उत्थान के लिए ये इसकी आत्मा का निर्माण होता है। इस उपासक की उपासना के यहाँ दो फल दिखलाये गये हैं। उनमे से एक यह कि उसको ब्रह्मा की उपाधि मिल गई है, यह उसका एक सार्थक नाम है। ब्रह्मा के गुणो को धारण करने से ही उसका नाम 'ब्रह्मा" पड़ा है। और दूसरा फल है ब्रह्मविद्या के वश कुलो अर्थात् सस्थाओ का उत्थान।

इन सस्थानो का उत्थान "गायत्री' और "अर्की" इन दोनो मे से किसी के भी अधिकार की वस्तु नहीं है। किसी को उठा वही सकता है, जो उठ कर स्वय खडा हो गया है। ब्रह्म के अपने कार्य-क्रम मे अपने उत्थान की योजना है। उसने प्रभु के गुणो से अपने आप को सजाया है। जिस प्रकार अच्छा सारथी ही रथ को उचित माग पर ले जा सकता है। उसी प्रकार अच्छा ब्रह्मज्ञानी ही ब्रह्म के जिज्ञासुओ एव ब्रह्म सस्थाओ को आगे बढ़ा सकता है। इस प्रकार के इस उपासक का फल है अपना निर्माण और पर निर्माण उपासक का यह प्रकार ही सर्वश्रेष्ठ प्रकार है। और सब प्रकार इसी की ओर ले जाने के साधन है।

भगवान् के अनेक नाम उसके अनेक गुणो के आधार पर ही हैं। उपासक अपनी उपासना मे जब भगवान के किसी नाम का उच्चारण करता है तो उसका तात्पय होता है उस नाम से ध्वनित होने वाले उस गुण से अपनी आत्मा को अलकृत करना। इस मन्त्र मे भगवान् को सबोधन करता हुआ उपासक भगवान् के एक नाम का उच्चारण करता है, और वह नाम

(शेष पृष्ठ १२ पर)

प्रधान सम्पादक की कलम से—

आतंकवाद का नग्न ताण्डव :

पंजाब में पुनः लोमहर्षक नरसंहार

१ दिसम्बर ८६ के प्रात कालीन समाचार पत्र पढ़ कर किसके हृदय न दहल उठे होंगे। जब पढ़ा होगा कि पंजाब में आतकवादियों ने २४ निरपराध यात्रियो को बस से घसीट-घसीट कर स्टेनगनों से भून डाला। यह नरसहार की सर्वाधिक लोमहर्षक घटना है। इससे पूर्व १४ निरपराध यात्रियो को ऐसे ही बस से घसीट कर मार डालने पर भी जन-जन काप उठा था और सरकारी सवेदना के साथ आश्वासन मिला था कि अब ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने दी जायेगी।

पजाब मे आतकवादियों द्वारा छुटपुट हत्यायें रोज ही होती हैं उन्हें तो शायद अब दैनिक कार्यक्रम सा मान लिया गया है।

क्या केन्द्र सरकार अभी भी नहीं चेतेगी ? पजाब मे राष्ट्रपति शासन हटा कर लोकप्रिय सरकार स्थापित करने पर सभी को प्रसन्नता हो रही थी कि अब निश्चय ही वहाँ अमन-चैन कायम होगा। परन्तु वह स्वप्न धूल धूसरित हो गया। आतकवाद का नग्न ताण्डव वीभत्स से वीभत्सतर व वीभत्सतम बनता जा रहा है। बरनाला सरकार उस पर नियत्रण करने मे सर्वथा असमर्थ है। इसका मूल कारण है सरकार मे बैठे बहुत से शिरोमणि नेता आतकवाद के परोक्ष रूप से पोषक है।

अकाली दल की लड़ाई मे भी नरम व गरम दल (आतकवादी व शान्तिवादी) की भूमिकाए दृष्टिगत होती है परन्तु वास्तव मे यह बिलगाव मात्र कुर्सी के लिए है। सत्तासीन शान्तिवादी व सत्ताविहीन आतकवादी दर्शन प्रस्तुत करता है। मूल मे जनहित व राष्ट्रहित का उनमे अभाव ही लगता है। शान्ति स्थापना की मानसिक चेतना उनमे प्राय दृष्टिगत नहीं होती। अन्यथा बरनाला सरकार उन क्रूर आतकवादी युवकों को "भूले पुत्रो" की सज्ञा देकर जेलों से बाहर कर स्वच्छन्द न करती विपरीत इसके आतक मचाने वालो को सर्वथा ही नष्ट कर सकती थी। एक दिसम्बर के घटना क्रम के बाद बरनाला सरकार ने श्री गुरुचरण सिंह तोहड़ा व प्रकाश सिंह बादल को गिरफ्तार कर लिया है परन्तु इसमे उनका पार्टीगत मतभेद अधिक प्रभावी है आतकवाद का दमन नहीं।

जो सरकार अपने अधिकृत क्षेत्र मे अमन-चैन नहीं स्थापित कर सकती उसे कायम रहने का अधिकार नहीं है। यदि श्री सुरजीत सिंह बरनाला हृदय से शाति कामी है तो उन्हे नि सकोच अपना त्याग पत्र देकर राष्ट्रपति से अनुरोध करना चाहिए कि वे उचित व्यवस्था करें। परन्तु वे ऐसा नहीं करेंगे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री गुरुचरण सिंह तोहड़ा स्पष्ट रूप से आतकवाद को प्रश्रय देते हैं। उनकी हाल की गिरफ्तारी भी इसका प्रमाण है। उनके निर्वाचन से स्पष्ट है पजाब मे आतकवाद सशक्त है। यह स्थिति देश के लिए अत्यधिक घातक है। यदि केन्द्र सरकार उदारवादी नीति ही बरतती रही तो देश बर्बाद हो जायगा और यह सबको सावधान रहने का स्वाग करती रहेगी।

हमारे युवा प्रधानमत्री श्री राजीव गाधी निश्चय ही बड़े ही चिन्तक व दूरगामी परिणामो के द्रष्टा है। वे इन घटना क्रमो से कितना चिन्तित व दुखी हैं इसके समाचार पत्रो के माध्यम से हम सभी अवगत हैं। परन्तु अब मात्र दुख प्रदर्शन व चिंता व्यक्त करने का अवसर नहीं रहा। उन्हें चाहिये कि वे राष्ट्रपति के द्वारा बरनाला सरकार को बर्खास्त करायें और वहाँ राष्ट्रपति शासन कायम करके सम्पूर्ण प्रशासन सेना के सुपुर्द करें।

निश्चय ही पजाब से आतकवाद के समूलनाश का उपाय मात्र वहाँ सेना का प्रशासन कायम करना ही है।

केन्द्र सरकार और राष्ट्रपति पजाब की नित्यप्रति गिरती स्थिति को अब मुख्य रूप से देखें और आतकवाद को समूल नष्ट करके पजाब को सुख शाति का क्षेत्र बनाने के लिये कठोरतम कदम उठायें। पजाब की समस्या के समाधान के साथ सम्पूर्ण देश की समस्याओ का काफी कुछ निदान स्वय ही प्रखर हो उठेगा।

विश्वास है केन्द्र सरकार अब और नरसहार तथा आतकवाद की मात्र दर्शक बनकर न रहेगी। तुरन्त प्रभावी कदम उठायेगी।

मनमोहन तिवारी

★ ★

अन्तरँगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ की अन्तरग सभा का साधारण अधिवेशन दिनाक २८-१२-८६ दिन रविवार को प्रात ११ बजे से डी० ए० वी० कालेज लखनऊ मे होना निश्चय हुआ है।

कृपया नियततिथि और समय पर पधार कर कार्य सम्पादन मे सहयोग प्रदान करें।

भवदीय

—मनमोहन तिवारी

सभा मन्त्री



शुभ सूचना

आगामी ऋषि बोध के पावन पर्व (शिवरात्रि) पर आर्य मित्र का विशेषाक प्रकाशित होने जा रहा है। इस विशेषाक मे जहाँ स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के मन्तव्यो और उनकी पूर्ति के लिये किए जा रहे प्रयासो के विशिष्ट लेख होंगे, वहा अक्टूबर ८६ मे लखनऊ मे सुसम्पन्न शताब्दी समारोह का पूर्ण विवरण होगा। समस्त सम्मेलनो के पारित प्रस्तावो और व्याख्यानो तथा अन्य सामग्री का इस मे पूर्ण समावेश रहेगा।

इस विशेषाक की एक प्रति का मूल्य १०/— होगा। चूंकि यह विशेषाक सीमित सख्या मे छपेगा अतएव आर्य समाजो को चाहिए कि वे अपनी आवश्यकतानुसार अग्रिम धन भेज कर अभी से आरक्षण करा लें अन्यथा विलम्ब होने पर यह सभव है कि यह प्राप्त न हो सके।

लेखको और कवियो से भी विनम्र निवेदन है कि वे सारगर्भित मौलिक रचनायें भेज कर कृतार्थ करें। रचनाओं मे कोरी प्रशस्तियां ही न हो अपितु ठोस सामग्री हो जो ऋषि के मन्तव्यो को सिद्ध करने मे सहायक हो।

समस्त रचनाए १५ जनवरी १९८६ तक प्राप्त हो जाए। विलम्ब से प्राप्त होने पर उन्हे प्रकाशित करना सभव नहीं होगा।

—सम्पादक मण्डल



विज्ञान वार्ता

वेद में विमान

डा० प्रकाश मित्र शास्त्री,
प्रधान सपादक, पारिजात, १०५/१९४ प्रेम नगर, कानपुर

ज्ञान का विकास पारम्परिक है। मानव के पास जो कुछ भी ज्ञान विज्ञान है उसका मूल उसके ही पूर्व पुरुषो द्वारा प्रसारित हुआ है। महान् से भी महान् विद्वान् का ज्ञान स्वत उद्भूत नहोकर परत उद्भूत होता है। ससार के समस्त शिक्षणालय इसके साक्षी हैं। प्रारम्भ मे बालक अपने माता-पिता के साथ रहता है और व्यवहारिक ज्ञान सीखता है। बडा होने पर आचार्यों का अन्तेवासी बनकर गुरुतर ज्ञान अर्जन करता है। वहाँ वह कुछ ज्ञान प्रत्यक्ष रूप मे गुरुमुख से पढता है और कुछ परोक्षभूत गुरुजनो का ज्ञान लिपिबद्ध रूप मे उपस्थित ग्रथो के माध्यम से ग्रहण करता है। इसके विपरीत जो बालक किसी भी शिक्षणालय मे नहीं पहुच पाते वे उन तमाम शिक्षणालयो मे अध्यापित होने वाले ज्ञान से सर्वथा वचित हो रह जाते हैं।

यहाँ एक जिज्ञासा जागृत होती है कि जब सृष्टि के आरम्भ मे मानव का जन्म हुआ तो उसे यह ज्ञान किस परम्परा से प्राप्त हुआ? निश्चित रूप से सृष्टि के प्रारम्भ मे मानव को ज्ञान की प्रेरणा देने वाले उपाय की आवश्यकता अवश्यम्भावी थी और इसी लिये विश्वसृष्टा पर ब्रह्म ने समस्त भौतिक साधनो की सरचना के साथ ही समग्र ज्ञान विज्ञान के आविस्रोत वेद रूप मे ब्रह्म ज्ञान को भी मानव के समक्ष उपस्थित किया। जिस प्रकार हमारे नेत्रो की दर्शन शक्ति तब तक सार्थक नहीं हो पाती जब तक सूर्य या अन्य दीप आदि साधनो से प्राप्त प्रकाश उसमे सहायक नहीं होता—उसे प्रेरणा प्रदान नहीं करता, ठीक उसी प्रकार मानव के मन बुद्धि भी तब तक कोई ज्ञान अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते जब तक सृष्टि के प्रारम्भ मे परब्रह्म से आविर्भूत वेदरूप ब्रह्म प्रकाश स्वत या परत (अन्य ग्रथो या परम्पराओ के माध्यम से) उन्हें प्रेरणा प्रदान न करें।

“ऋग्वेदादि शास्त्रस्यानेकविद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत्। सर्वार्थविद्योतिन सर्वकल्पस्य ज्ञानस्य योनि कारण ब्रह्म।”

इसी रूप मे उसका वेद नाम भी अन्वर्थ सज्ञा के रूप मे सार्थक होता है—

‘विद्यते जायते अनेन’ इति वेद।’

यही कारण है कि आय ऋषि मुनियो और वैदिक जनो का विश्वास (सिद्धान्त) है कि “वेद सब सत्य विद्याओ का भण्डार है वेद मनुष्योपयोगी समस्त ज्ञान का बीज है—मूल है—आविस्रोत है।’ जो भी ज्ञान विज्ञान का प्रसार विश्व के किसी भी क्षेत्र मे प्राप्त है वह सभी वेद मूलक है-चाहे वह साक्षात् रूप मे वेद से प्राप्त किया गया हो अथवा वैदिक आचार्यों की कृपा का प्रसाद हो अर्थात् उनके द्वारा प्रणीत ग्रथो से हमे प्राप्त हो रहा हो तथा यह भी सम्भव है कि वह परम्परागत लोक प्रचलित वैदिक वादो के श्रवण से ही अवगत हुआ हो।

तात्पर्य यह है कि आज विश्व मे ऐसा कोई भी ज्ञान-विज्ञान नहीं है जिसका मूल वेदो मे न हो, ऐसी कोई भी विद्या या कला नहीं है जिसका आविस्रोत वेदो से निगत न हुआ हो। वेदमाता के ज्ञान रूप पय का पान करके ही यह जीव शिशु सशक्त मानव के रूप मे दृष्टि गोचर हो रहा है। यह वेदमाता का ही वरदान है कि मानव को नानाविध समृद्धि हस्तगत हुई है। वह समस्त महाभूत निर्मित ब्रह्माण्ड को हस्तामलकवत् कर सका है और आज भी ज्ञान-विज्ञान का प्रसारक बनकर विविध ऐश्वर्यों का उपभोक्ता बना हुआ है।

प्रस्तुत सदर्भ मे उन नानाविध ज्ञान-विज्ञान की परम्पराओ या विविध विद्याओ एव कलाओ के सबध मे विवेचना करना अथवा उसे स्पष्ट करने के लिये वेदों के उद्धरण उपस्थित करना अभीष्ट नहीं और न ही विस्तार भय से समीचीन ही प्रतीत होता है। जिनका कि वर्णन ज्ञान-विज्ञान के आविस्रोत वेदो मे निहित है-पुनश्च स्वीकृत शीर्षक के प्रसग मे वेदो का आधार लेकर ही उद्धरणो के साथ विज्ञान विषयक कुछ विवेचना सम्प्रति प्रस्तुत है —

ऋग्वेद मे विमान के निर्माण विधि एवम् अन्तरिक्षयान गरिमा का सकेत करते हुए कहा गया है—

“वेदा यो वीना पदमन्तरिक्षे पतताम्। वेद नाव समुद्रिय। ऋ० १-२५-७ वि-पक्षी, मान-अनुरूप या सदृश, पक्षी के सदृश आकाश मे उडने मे समर्थ यान विमान” हुआ। मन्त्र मे समुद्र शब्द अन्तरिक्षवाची है। समुद्रिय नाव अर्थात् अन्तरिक्ष-गामी विमान की स्थिति को जानने वाला “वरुण” है। ‘वरुण -वरणीय सर्वे प्राणिभि इति वायु विशेष, इति जो वायु अवश्यभावि रूप से समस्त प्राणियो द्वारा वरणीय है अर्थात् जिसके बिना प्राणी एक क्षण भी जीवित नही रह सकता, वह वरुण-ओषजन वायु है जिसे आज आक्सीजन नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार उक्त मन्त्र को स्पष्ट रूप मे कहा गया है कि अन्तरिक्ष यात्रा के परमोपयोगी साधनो मे सर्व प्रमुख स्थान “वरुण” का है।

इस “वरुण” वायु को मित्र वायु से मिलने पर वर्षा का हेतु भी माना गया है।

उतासि मैत्रावरुणो वशिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन्मनसो ऽधिजात।
द्रप्स स्कन्न ब्रह्मणा दैव्येन विश्वे देवा पुष्करे त्वाऽदवन्त॥

ऋक् ७-३३ ११

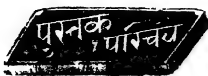
हे वासक जल! तुम मित्र और वरुण से प्रादुर्भूत हो, हे अन्न दात! तुम उर्वशी (विद्युत्) के सयोग से उत्पन्न हुए हो, जल रूप में परिणत तुझको उत्तम अन्नोत्पादन हेतु सूर्य की किरणें तुम्हें अन्तरिक्ष मे धारण करती है इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए महर्षि यास्क लिखते हैं—)

तस्या (उर्वश्या) दर्शनात् मित्रावरुणयो रेतश्च स्कन्द। यहाँ “रेतस्” जलवाची है।

उक्त प्रसग मे मित्रावरुण नामक युग्म शक्ति वायुवाचक होकर क्रमश हाईड्रोजन और आक्सीजन की बोधक होती है। मित्र वायु हल्की होने के कारण प्रक्षेपण करती है ऊपर उठाती है तथा वरुण वायु-पदार्थों से सयुक्त होकर अपनी-अपनी ओर आकृष्ट करती है।

मित्र शब्द डुमि-प्रक्षेपणे धातु से ‘क्त्र’ प्रत्यय करने पर बनता है अत इसका अर्थ होता है प्रक्षेपण—प्रेरणा देना। इसी प्रकार वरुण शब्द वृवरणे धातु से ‘उनन्’ प्रत्यय करने पर बनता है, जिसका अर्थ होगा ‘वरण करना या अपनी ओर आकृष्ट करना।’ इसी यौगिक व्युत्पत्ति के ही आधार पर वैद्युत एव चुम्बकीय धाराओ को मित्र वरुण कहा जा सकता है। मित्र शक्ति वह प्रक्षेपण शक्ति है जो गर्मी के द्वारा वस्तुओ को फेंकने या फैलाने का काम करती है— यही प्रकाश तथा ताप किरणो को बाहर फेंकती और यहीअणु मे ऋणात्मक विद्युत परमाणु को गति देती है तथा वरुण शक्ति आकर्षण को कहेंगे जो अणु मे परमाणु की धनात्मक वैद्युत शक्ति है।

[क्रमश]



समीक्षा

पूर्ण मयंक पर प्रभा के धन

जीवन वीणा –लेखक कविवर श्री चन्द्रपाल सिंह यादव मयक-एम ए, एल एल बी एडवोकेट, २६१-फेथफुल गज-कानपुर (कैण्ट) प्रकाशक-प्रेम-प्रकाशन २६१ फेथफुल गज-कानपुर-पृष्ठ सख्या–१०० मूल्य बारह रुपिया।

आर्य मित्र के पाठक श्री चन्द्रपाल सिंह जी मयक से परिचित है। प्राय मयक जी की रचनाए समय-समय पर प्रकाशित होती रहती है। मयक जी ने राष्ट्रीय तथा बाल साहित्य अधिक लिखा है। व्यवसाय से एडवोकेट, विचारो से आर्य समाजी एव भावना से पूर्ण रूपेण कवि हृदय है। जहाँ अनुभूति है और अनुभव मे जीवन की गहराइयो को स्पर्श करते हुए अभिव्यक्ति मे साधारणीकरण की क्षमता है।

जीवन वीणा-मयकजी के गीतो का सग्रह है जो दो भागो मे विभक्त है 'सुख-दुख' तथा गीत तुम्हारे दोनो मे तीस-तीस गीत है जो हृदय के अन्तस्तल के भावो के उद्रेक के साथ निसृत है। सुख-दु ख के गीतो मे मानवीय भावनाओ मे जीवन के उतार चढाव है। सयोग एव वियोग की स्मृति एव अनुभूति है तथा सरसता के साथ कवि हृदय द्वारा प्रेय सीके प्रति आत्म निवेदन है। कवि के उद्‌गार –

मेरे सुख-दुख का साथी जो
यह जीवन वीणा–भेंट उसे।
मेरे नीरस जीवन–पथ मे
जो रस धारण बन कर आया।
मेरे जलते–बलते मन पर
जो सावन–घन बन कर छाया।

मयक जी मे चित्रण की क्षमता है –

अब बीती रात प्रभात हुआ
रजनी के पिछले पहर क्षितिज्।
मे श्वेत प्रभा झिलमिला उठी,
प्राची के अचल मे ऊषा
मुख विखला कर खिलखिला उठी।

कवि हृदय मयक– सुख-दुख के पालने मे झूल रहा था बादल, बिजली-बरखा, सान्त्वना-विषाद, विछोह, अनुरोध, आश्वास, प्राण तुम्हारी पाती आदि गीतो के रस सिक्त आन्दोलन मे विचार रहा था कि सहसा १५ अप्रैल १९८६ को उनकी सहधर्मिणी-श्रीमती प्रेमवती जी ने अधरों पर मुस्कान लिए अपने नेत्र सर्वव के लिए बन्द कर लिये एक डाल के दो खिले फूलो मे से एक धीरे से वृन्त से गिर कर धरा पर पखुं ड़िया बिखेर उठा मयक निस्तेज हो गया आखो मे सावन के घन बह चले तथा साहस बटोर कर कवि ने अन्तिम शृङ्गार देखा उस रूप सी का जो उनके जीवन मे वीणा बन कर झकृत हो उठी थी परन्तु ज्योति मे ज्योति विलीन होने पर जीवन लहरी की झकार शाश्वत हो उठी तथा अधीर मन का सबल बन कर मयक पतवार सभाल कर ज्योति के दर्शन के साथ चिर-शान्ति को प्राप्त करता है। वियोगी मयक को सतोष है कि मुमताज की स्मृति मे वैभव सम्पन्न शाहजहाँ के समान वह ताज महल नहीं बनवा सकता परन्तु –

प्रेमवती थी मुझ गरीब कवि की रानी,
प्रेम-त्याग–सेवा-निष्ठा जिसने जानी।
क्रूर काल ने उसको मुझसे छीन लिया,
मैंने भी यह काव्य प्रिये– रच डाला
गीत तुम्हारे लिख डाले हैं झकृत तुम्हारी है,
यह श्रद्धा के फूल या मेरे श्वसों की तड़पन हैं।।

कवि सवेदनशील प्राणी होता है। अपनी सवेदना मे जग की सवेदना को पा लेता है और आत्म में समत्य के दर्शन की क्षमता रखता है। मयक की वियोग लहरी मे विश्व का वियोग गूंज रहा है यही काव्य का शाश्वत सत्य है।

कविवर मयक जी को तभी पूर्ण रूप से समझा जा सकता है जब उनकी रचनाओ का आस्वादन किया जाये अत पाठको से निवेदन है कि मयक की रचनाओ को पढे– प्राय उनकी पच्चीस के लगभग रचनायें प्रकाशित हो गई हैं। इनमे उच्च कोटि का बाल साहित्य है। ज्ञानमय साहित्य है। और जीवन की तार को छेड कर तन्मय करने वाला साहित्य है। आशा है कवि अभी बहुत कुछ भावी-पीढ़ी के लिए सकेत दे सकेगा।

श्री चन्द्रपाल सिंह यादव मयक 'आर्य मित्र' परिवार के सदस्य हैं। हमारे सम्माननीय लेखक कवि है– आर्य मित्र परिवार भी उनकी धर्म पत्नी के निधन पर उतना ही दुखी है जितना मयक जी। अत हम सब मिल प्रभु से प्रार्थी है कि प्रेमवती जी के प्रेम-स्मरण के साथ मयक जी शान्ति ग्रहण करें एव जीवन की डगर पर बढते हुए लेखनी को विश्राम न दे।

अग्रहण प्रतिपद कृष्णा विक्रम सम्वत २०४३

–आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०



तीन सौ तेतीस ईसाई वैदिक धर्म में दीक्षित

दिनाक १३/८/८६ को भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री अमृत लाल नागर के अथक धर्म प्रचार के फलस्वरूप ग्राम पवाक जिला मुरादाबाद के ईसाइयो ने प्रभावित हो स्त्री-पुरुष, बच्चो सहित यज्ञ पर शुद्ध होकर वैदिक धर्मी बने।

दिनाक १४/८/८६ को भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के प्रचारक राम लाल ने ग्राम रौली जिला बदायूं मे एक शुद्धि कार्यक्रम आयोजित किया श्री अमृत लाल नागर उपदेशक शुद्धि सभा ने इन सबको आर्थिक सहायता व शासन से सुविधा दिलाने का वचन दिया।

दिनाक १५-८-८६ को भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री अमृत लाल नागर के धर्म प्रचार से प्रभावित होकर ग्राम सत्यपुर भिलौलिया जिला बदायूं के एक सौ पचास ईसाई भाइयो ने स्वेच्छा से वैदिक धम स्वीकार किया। तीनो शुद्धि सस्कार प० दीपचन्द शर्मा ने कराये।

दिनाक १६-८-८६ ग्राम अजनाबर जिला बदायूं मे गत मास शुद्धि सस्कार द्वारा एक सौ दस महानुभाव ईसाई भाइयो ने जो वैदिक धर्म की दीक्षा ली थी उन्होने रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर यज्ञ का आयोजन किया और यज्ञ श्री अमृत लाल नागर उपदेशक शुद्धि सभा ने सम्पन्न कराया।

दिनाक ७/८/८६ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वाधान मे ग्राम तिजारा आर्य समाज मन्दिर जिला अलवर मे सेवानन्द सरस्वती की अध्यक्षना मे मेवहु मुसलमानो ने स्वेच्छा पूर्वक वैदिक धर्म ग्रहण किया। दिनाक २१/७/८६ को गाव प्रीतमपुर जिला सोनीपत मे मुसलमान भाइयो ने अपनी इच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया।

दिनाक २३/८/८६ भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के प्रचार श्री इतवारी लाल आर्य के धर्म प्रचार से प्रभावित होकर ग्राम निधौली जिला एटा के दस परिवारो के सत्तासी ईसाई भाईयो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

–

अभिलाषा

यदि हाथ मे हो आर्यों के प्रिय भारत की सत्ता।
अन्यायी अत्याचारी का लगा रहे न पत्ता ॥
भारत की प्रजा के आर्य सम्पूर्ण दुखो को दूर करें।
रिश्वत खोर कर्मचारियों को फासी का आदेश करें ॥
पूर्ण देश की जनता के हित शिक्षा भी नि शुल्क करें।
दहेज तथा सह शिक्षा को भी आर्य जड से नष्ट करें।
गोरक्षा अनिवार्य करके दूध दही भरपूर करें।
सत्य-सत्य होवे यहाँ न्याय भ्रष्टाचार को दूर करें ॥
सर्व हितैषी आर्य जन ही भारत भू को सुखी करे।
भारत माँ के अरे भाइयों आर्य दुखो को दूर करें।

—आचार्य राजदेव नैष्ठिक
आर्ष गुरुकुल ऐखा कटरा इटावा (उत्तर प्रदेश)

ऋषि-राज कलेन्डर १९८७

इस कलेन्डर मे देशी तिथियाँ, अग्रेजी तारीख दी हैं। महर्षि की जीवनी के प्रत्येक पृष्ठ पर चित्र हैं। इसके अतिरिक्त पर्वों के ४० चिन्ह स्थान-स्थान पर गायत्री मन्त्र, आर्य समाज के नियम हैं। १ कलेन्डर ८० पैसे, ४ कलेन्डर तीन रुपये १० कलेन्डर पाँच रुपये, सौ का मूल्य ४०) पहले भेजे।

हवन सामग्री ३-५० किलो आर्य डायरी ६) रु०।

पता :—वेद प्रचार मण्डल
करौल बाग, रामजस रोड, दिल्ली—५

आवश्यकता है
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय के लिए

१— सभा कार्यालय के लिए एक ऐसे कुशल व्यक्ति की आवश्यकता है, जो हिन्दी मे पत्र-व्यवहार कर सके और कम से कम ग्रेजुएट अवश्य हो। कार्यालयाध्यक्ष का काम भी कर सके, साथ ही हिन्दी मे खाता रोकड आदि रखने की क्षमता रखता हो। आर्य समाजी होना आवश्यक है। प्रार्थना पत्र मे आयु, योग्यता और अनुभव के प्रमाणपत्रों की प्रतिलिपि भी अवश्य साथ भेजी जाए। कम से कम जो वेतन चाहें, वह भी लिख दें। सेवा निवृत्त व्यक्ति जिनकी आयु ६० वर्ष से अधिक न हो अपना आवेदन पत्र भेज सकते हैं।

२— वेद प्रचार विभाग के लिए तीन उपदेशको की आवश्यकता है, जो आर्य सिद्धातों को अच्छी प्रकार जानते हो और जिन्हें व्याख्यान व प्रवचन करने का अभ्यास हो। इसके अतिरिक्त और भी जो योग्यता का अनुभव हो, वह भी लिख दीजिए।

३— तीन व्यक्ति जो आर्य समाज की विचारधारा के अनुसार भजन गा सकते हों, और शास्त्रीय सगीत के ज्ञाता हो। अपनी आयु, शिक्षा योग्यता और अनुभव के प्रमाणपत्र भी आवेदन पत्र के साथ भेजें। वेतन और दूसरी सुविधायें योग्यतानुसार दी जायेंगी।

आवेदन पत्र १५-१२-८६ तक निम्न पते पर भेजें।

—श्री ब्रह्मदत्त शर्मा
महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब,
गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा,
जलधर शहर (पजाब)

हैदराबाद आर्य समाज सत्याग्रही को भारत सरकार द्वारा पन्शन की स्वीकृति

आर्य जगत मे यह समाचार बडी प्रसन्नता के साथ सुना जायेगा कि श्री नरदेव स्नातक पूर्व ससद सदस्य और चेयर मैन रेल्वे सर्विस कमीशन बम्बई को १९३८-३९ मे हैदराबाद आर्य समाज सत्याग्रह में भाग लेने के फलस्वरुप भारत सरकार ने स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना के अन्तर्गत पेंशन देना स्वीकार कर लिया है। श्री नरदेव भूतपूर्व निजाम रियासत मे पाच मास और तेरह दिन कारावास मे रहे थे। गुरुकुल वृन्दावन से छात्रावस्था मे ब्रह्मदत्त स्नातक के नायकत्व मे उन्होने कारावास भुगता था। कुल एक वर्ष सपरिश्रम कारावास की सजा उनकी टोली को मिली थी। भूतपूर्व निजाम द्वारा आर्य समाज की मागे स्वीकार करने बाद उसके जन्म दिन पर १९ अगस्त ३९ को सारे सत्याग्रहियो को बिना शर्त छोड दिया गया था।

उक्त सत्याग्रह को स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना १९७२ व १९८० मे बनने के पश्चात सैतालीस साल बाद यह पहला अवसर है जब किसी सत्याग्रही को पेंशन स्वीकृत हुई। भूतपूर्व या वर्तमान ससद सदस्यो में से केवल श्रीनरदेव स्नातक तथा स्वामी रामेश्वरानन्द ने उक्त आन्दोलन मे कारावास भुगता था। और उनके जेल के सह निवासी को जेल के प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। कुल मिलाकर तब २८००० व्यक्ति जेल मे गए थे जिनमे से अब अनुमानत केवल दस प्रतिशत ही आज जीवित हैं।

प्राप्त सूचनाओ के अनुसार सरकारी लालफीताशाही और पर्याप्त प्रचार न होने के कारण बहुत थोडे जीवित सत्याग्रही ही अपना आवेदन भेज सके हैं। सार्वदेशिक सभा जिसके अन्तर्गत यह आन्दोलन तब चलाया गया था, उसके कार्यालय मे इस आशय के पत्र आ रहे हैं कि आवेदन की अन्तिम तारीख ३० जून १९८६ से पूर्व जो आवेदन पत्र राज्य सरकार के कार्यालय मे नियत अवधि मे पहुच गए, उनकी प्रतिलिपियाँ भारत सरकार में देर से पहुचने के आधार पर बडी सख्या मे आवेदन पत्र निरस्त किए जा रहे हैं। स्वतत्रता सेनानी प्रमाण मे या तो आवेदनो को जानबूझ कर देर मे स्वीकार किया गया है और उसको आधार बना कर आवेदन निरस्त किए जा रहे हैं। डाक विभाग की यदि इसमे गलती होती तो वे आवेदन पत्र राज्य सरकार के कार्यालय मे कैसे नियत समय पर पहुच जाते ? निश्चय ही इसमे कुछ शरारत प्रतीत होती है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इस सबध मे गृह मन्त्री बूटासिंह को पत्र भेज कर इन अनियमितताओं की ओर सरकार का ध्यान खींचा है। इसके अतिरिक्त सेनानी प्रमाण का ध्यान भी इस दिशा मे खींचा गया है।

ज्ञातव्य है कि इस प्रकार के स्वाधीनता सेनानियो को सन् १९८३ से पेन्शन दी जाने की व्यवस्था है। पाच मास से कम कारावास भुगतने वालों को राज्य सरकारें अपने नियमानुसार पेंशन देने की व्यवस्था करेंगी, जबकि केन्द्र से पेंशन पाने वालों को राज्य सरकारे भी पेंशन देगी।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
सी० ४ बी०, ३३२—बी०
जनकपुरी नयी दिल्ली—५८

सवेदना

श्रीमती कुँवारा देवी सदस्या आ० स० शमशेरगढ़ (देहरादून) की ७८ वर्ष की आयु मे १४/११/८६ को देहान्त हो गया। प्रभु से सभा दिवगत आत्मा की शाति के लिए प्रार्थना करती है।

सभा मन्त्री

आर्य जगत

वेद प्रचार

(१) आर्य समाज बलिया द्वारा ददरी के मेले मे १५,१६ तथा १७ नवम्बर ८६ को वेद प्रचार किया गया।

(२) आर्य उपप्रतिनिधिसभा, मुरादाबाद द्वारा १२/११/८६ से १६/११/८६ तक गंगा मेला तिगरी घाट पर आर्य समाज प्रचार शिविर लगाया गया, जिसमे वेद सम्मेलन मद्यनिषेध सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन तथा शहीदो की स्मृति मे कवि गोष्ठी के आयोजन किए गए, जिनमे वैदिक विचारधाराओ पर आधारित अनेक प्रस्ताव पारित किए गये।

(३) महिला आर्य समाज उन्नाव के तत्वाधान मे आ० स० उन्नाव मे कार्तिक पूर्णिमा के शुभ अवसर पर १६ से १९ नवम्बर ८६ तक वैदिक ज्ञान मेला सम्पन्न हुआ।

(४) गढ़ मुक्तेश्वर गंगा मेला वेद प्रचार शिविर १२ से १६ नवम्बर ८६

गढ़मुक्तेश्वर गंगा मेला वेद प्रचार शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न

दिनाक १२ से १६ नवम्बर ८६ तक मेरठ एव गाजियाबाद की सयुक्त उपसभाओ के तत्वाधान मे श्री चन्द्र किरण जी के सयोजकत्व मे विपुल भीड एव अत्यन्त उल्लासपूर्वक वेद प्रचार शिविर की अभूतपूर्व आयोजना प्रकट हुई। प्रतिदिन प्रात साय गुरुकुल प्रभात आश्रम के सुयोग्य ब्रह्मचारियो द्वारा विशुद्ध उच्चारण युक्त विशिष्ट यज्ञ सम्पादित होता रहा। इस मध्य आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान प० श्री इन्द्र राज जी ने अपने आध्यात्मिक प्रवचन मे स्पष्ट किया कि शारीरिक सुविधाओ से शारीरिक विश्राम तो मिल सकता है किन्तु मन का उससे भी गहरा आत्मा का आनन्द अप्राप्त ही रहेगा वेद और वेद को समस्त सत्य विद्याओ का भडार तथा मनुष्यता की चरमोत्कर्ष निहित शिक्षण का आधार घोषित करते हुए महर्षि दयानन्द के अभूतपूर्व वेदो की ओर लौटो पुरुषार्थ की चर्चा करते हुए प्रधान जी ने आर्य समाज के साथ मिल कर कार्य करने पर बल दिया राष्ट्र की चर्चा करते हुए आर्य समाज की ओर लोगो का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होने पजाब से हिन्दू पलायन एव उनकी हत्या तुरन्त रोकी जाये, बरनाला सरकार को भग कर पजाब को सेना के सुपुर्द तथा सुरक्षा पट्टी बनाने का पुरजोर आग्रह किया अपने भाषण मे उक्त आग्रहो का विस्तृत औचित्य प्रस्तुत किया।

गढमुक्तेश्वर गगा के दूसरी तरफ जिला सभा मुरादाबाद द्वारा आयोजित ग्राम तिगरी मेले पर भीड से खचाखच भरे आर्य महासम्मेलन कोसम्बोधित करतेहुएउन्होने कहाकिदेशकी आतरिकसकट कोबडी सतर्कता से और अत्यन्त गभीरता से लेना होगा हमे अपने ही आस्तीन मे छिपे सापो को पहचानना होगा और बढ़-चढ़ कर देश की सस्कृति साहित्य कला दर्शन आदि सस्करणो चेतनायुक्त सपर्क स्थापित करना पडेगा और देश के प्रति राष्ट्रीय कर्तव्य निभाना पडेगा। कश्मीर के सदर्भ परबोलते हुए श्रीप्रधानजी कहा जिसे एक बार आजमा लिया गया हो उसे दुबारा आजमाना बुद्धिमता नहीं है। तालियो की गड़गडाहट के बीच माननीय प्रधान जी ने अत्यन्त सजगता का सदेश दिया साथ ही माननीय राजीव गाधी को इस समस्या पर पुनविचार करना चाहिये क्योकि जो देश के लोकतन्त्रीय कानून, समस्त राष्ट्रीय मूल्यो पर आक्षेप करता हो और जिसमे अराष्ट्रीय साम्प्रदायिक दल प्रतिबद्धता का गर्मरक्त चाव हो फिर राष्ट्रीय सबधो मे आच न आये यह कैसे सभव हो सकता है। इस लिए एक राष्ट्रीयता आवश्यकता के प्रति सोचना है उनके अनुरूप नितान्त दृढ़ सकल्प से पूर्ण मौलिकता से प्रत्येक नागरिक को बडी चतुरता से क्रियाशील होना है उनके इस राष्ट्रीय सदेश के बाद वेद प्रचार शिविर मे प्रख्यात एव सुप्रसिद्ध विद्वान् महापदेशक एव भजनोपदेशको ने अत्यन्त सवेदन शील वातावरण मे वीरता भरे गीतो से मनोरजन किया।

इस सम्मेलन की सफलता मे दोनो जिलो के अधिकारी वर्ग, श्री रार्मासह जी वानप्रस्थी, श्री कैलाश चन्द्र जी आर्य, श्री माया प्रकाश जी त्यागी, श्री ब्र० नरेन्द्र जी, श्री हरस्वरूप जी आदि महानुभावो का योगदान सराहनीय था।

वार्षिकोत्सव

निम्नलिखित आर्य समाजो के वार्षिकोत्सव मनाने के समाचार प्राप्त हुए हैं—

(१) आर्य समाज रसौली (बाराबकी) २८ से ३० नवम्बर ८६ तक।

(२) आ० स० शमशेर गढ (देहरादून) १५ व १६ नवम्बर

(३) आ० स० बीसलपुर (पीलीभीत) ४/११/८६

सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ के आवशानुसार सभा के पूर्णकालिक जीवनदानी, सुयोग्य कर्मठ युवा ब्रह्मचारी देवेन्द्र स्वदेश बन्धु को आर्यसमाजके पूर्ण जागरुक तटस्थ युवा सगठन जन सपर्क हेतु नियुक्त किया जाता है।

समस्त आर्य बन्धुओ से निवेदन है कि ब्रह्मचारी जी की आयोजित सभाओ को उपस्थिति एव आपेक्षित सहयोग से सफल बनाये।

प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

सावधान!

आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि स्वामी सदानन्द नामक सन्यासी से सावधान रहे। यह अपने को आर्य सन्यासी बता कर आर्य बन्धुओ के निवास स्थान पर रुकता है। इसकी हर गतिविधि सदेहास्पद है। शारीरिक स्वास्थ्य खराब होने को कह कर आतिथ्य ग्रहण करता है। आर्य समाज मन्दिरो मे नहीं ठहरता।

रेडिओ, ट्रान्जीस्टर, टेपरेकार्डर, टी० वही० का विशेष शौकीन है एव बी० बी० सी० लदन सुनने मे बहुत रुचि रखता है। अपनी मधुर वाणी से रौब दौब प्रभाव जमा कर सेवा कराता है। नशे युक्त इजेक्शन को प्रतिदिन लेता है।

दीना नगर मठ अथवा आर्य वान प्रस्थाश्रम ज्वालापुर से सबध होने को कहता है। गतव्य स्थान पर पहुचने से पूर्व वहा के प्रसिद्ध धनवान सेवाभावी आर्य बन्धुओं की जानकारी प्राप्त करता है।

इसी प्रकार २/३ धूर्त ब्रह्मचारी एव सन्यासी आर्य समाज का उपयोग कर भ्रमण कर रहे है।

अत आ० प्र० नि० सभा से नियुक्त अथवा जिसे हम जानते हैं उसे ही समाज मन्दिर अथवा गृह मे प्रवेश दें तथा धूर्तों से सावधान रहे।

—देवदत्त शर्मा, अमरावती
(सम्पादक आर्य सेवक
आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य
प्रदेश व विदर्भ

अन्य प्रचार

मेला प्रचार

(१) आर्य समाज रांची द्वारा कार्तिक पूर्णिमा (१६/११/८६) मेले के अवसर पर वैदिक धर्म प्रचारार्थ शिविर लगाया गया।

(२) आर्य मेला प्रचार समिति, मीरजापुर के द्वारा बेचूबीर के मेले मे पाखड-खडिनी पताका फहराते हुए दिनाक ६,१०,११ व १२ नवम्बर को बड़े ही समारोह पूर्वक वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। अनेक उपदेशक व भजनोपदेशको का भजन व प्रवचन हुआ। पचासो हजार की जनता ने लाभ उठाया।

(३) आर्य समाज कैसरबाग लखनऊ द्वारा १६/११/८६ कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर गोमती नदी के तट पर पूरे दिन भजनो व उपदेशो द्वारा प्रचार किया गया।

(४) वैदिक यज्ञ

आय समाज नेमदार गज (नवादा बिहार) द्वारा ऋषि निर्वाण पर्व पर २१ व्यवसायिक सस्थानो मे हवन यज्ञ सम्पन्न कराए गए।

(५) निर्वाण दिवस

आर्य समाज काकडवाडी बम्बई द्वारा १/११/८६ को महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह पूवक सम्पन्न हुआ।

(६) आर्य समाज बदायूं द्वारा वेद प्रचार

(१) वेद प्रचार सप्ताह लोची नगला, जवाहरपुरी, जिला परिषद परिसर, रेलवे लाइन पार कालोनी मे वेद कथा की गई।

(२) १५ अगस्त ८६ को पजाब बचाओ देश बचाओ दिवस मनाया गया।

(३) कृष्ण जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

(४) १४ सितम्बर हिन्दी दिवस पर विचार गोष्ठी एव कवि गोष्ठी आयोजित की गई।

(५) विजय दशमी पर्व उल्लास के वातावरण के साथ मनाया गया।

(६) ३० अक्टूबर को लौहपुरुष सरदार पटेल एव आचार्य नरेन्द्र देव का भावपूर्ण स्मरण किया गया।

(७) ३१ अक्टूबर को राष्ट्र रक्षा सकल्प दिवस के रूप मे व्यवस्थित किया गया।

(८) १ नवम्बर शारदीय नवस्येष्टि, दीपावलि, महर्षि दयानन्द निर्वाण पव एव आर्य समाज बदायूं भवन निर्माता सन्त विज्ञानानन्द पुण्य स्मरण दिवस पर विशेष आयोजन किए गए। भवन प्रकाश से जगमगया।

(९) १५ नवम्बर को आर्य समाज बदायू भवन निर्माता, विज्ञानानन्द इन्टर कालेज सस्थापक, हैदराबाद सत्याग्रह मे बदायूं जत्थे के नेता, दानी सन्त स्वामी विज्ञानानन्द (पूर्व नाम जयनारायण सकसेना) की १०६ वीं जयन्ती धूमधाम से मनाई गई।

(१०) १६ नवम्बर सन्त गुरु नानक जी के जन्मोत्सव पर उनके पथ के पथभ्रष्ट, आतंकवादी, हत्यावादी, अलगाववादी, अराष्ट्रीय तत्वो की अमानवीय कृत्यो की निन्दा की गई सन्त के समाज सुधार वादी कल्याणकारी मार्ग पथभ्रष्टो से अपनाने की अपील की गई।

(११) कयोडा मेला मे आर्य समाज बदायूं का प्रथम शिविर १३ नवम्बर से १८ नवम्बर तक आयोजित किया गया।

नामकरण संस्कार

आर्य समाज अल्मोड़ा के उपमन्त्री एवम् पुस्तकालयाध्यक्ष श्री राम गोपाल सिंह के पुत्र का नामकरण सस्कार ४/११/८६ को सम्पन्न हुआ। पुत्र का नाम देवेन्द्र प्रताप सिंह रखा गया। उपस्थित व्यक्तियो के साथ प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री रतन सिंह आर्य (नवजात शिशु के नाना) ने बच्चे को आर्शीवाद दिया। इस शुभ अवसर पर श्री राम गोपाल सिंह जी ने रु० २५१/ आर्य समाज पिथौरागढ़ के निर्माणाधीन भवन एवम् रु० १०१/ महर्षि दयानन्द धमार्थ आयुर्वेदिक औषधालय कर्णबास जि० बुलन्द शहर को दान दिए।

आर्य समाज "अनारकली" का वार्षिकोत्सव सोल्लास स पन्न

आर्य समाज "अनारकली" नईदिल्ली का गत एक सप्ताह से चल रहा वार्षिकोत्सव विशेष आकर्षण के उपरान्त दिनाक १६ नवम्बर १९८६ को सोल्लास सम्पन्न हुआ।

प्रात काल यज्ञ की पूर्णाहुति हुई जिसमे कई नर-नारियो ने आहुतिया डालीं। तत्पश्चात् ख्याति प्राप्त एव वेद विज्ञ विद्वानो के वेद पर उल्लेखित व आधारित वेद प्रवचन हुए। प्रवचन देने वालो मे आर्य प्रादेशिक प्र० सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता आचार्य पुरुषोत्तम, "आर्य जगत" के यशस्वी सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार, डी० ए० वी० कालेज कमेटी के नैतिक शिक्षा परामर्शदाता प्रो० रतन सिंह, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के आचार्य एव उपकुलपति प्रो० राम प्रसाद वेदालकार आदि मुख्य थे।

समारोह के समापन पर समाज मत्री श्री रामनाथ सहगल ने उपस्थित जनता का धन्यवाद किया।

वार्षिकोत्सव

अरमापुर इस्टेट कानपुर की आर्य समाज का वार्षिकोत्सव २१ से २३ नवम्बर १९८६ के मध्य उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। यह क्षेत्र शिक्षित व्यक्तियों का है तथा उसी के अनुरूप उत्सव मे शालीनता थी। इस अवसर पर श्री सत्यदेव जी वाराणसी, डा० महावीर प्रसाद हरिद्वार, प० लालता प्रसाद एव देव मुनि के प्रवचन हुए तथा श्री गजराज सिंह के भजन हुए।

आर्य मित्र सम्पादक आचार्य रमेश चन्द एम० ए० का समापन भाषण हुआ और आर्य समाज की वर्तमान तथा भावी भूमिका बदलते परिवेश मे कैसी हो इस पर व्यापक प्रभाव डाला गया।

क्षेत्र मे प्रचार के साथ ही आर्य समाज का हाईस्कूल तक एक विद्यालय भी है जिसमे छात्र सख्या पर्याप्त है। समाज के उत्साही मन्त्री श्री गोरखनाथ जी गुप्त एव कर्मठ प्रधान श्री बलदेव राज जी की लगन एव उत्साह सराहनीय है। शोभा यात्रा एव ऋषिलगर भी सफल रहे।

सूचना

"कतिपय कारणों से आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि श्री यशपाल आर्य बन्धु का आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं रहा है अत भविष्य मे आर्य समाज के सहयोगी जन वेद प्रचार, साहित्य प्रचार आदि मे धन का सहयोग एव पत्र व्यवहार सीधे मन्त्री आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी मुरादाबाद से ही करें।

—महावीर सिंह 'मुमुक्ष' मन्त्री आर्य समाज रेलवे हरथला कालौनी मुरादाबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश शताब्दी समारोह का आर्य सम्मेलन

—: प्रस्ताव :—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, के अध्ययन दल का यह निष्कर्ष है कि राष्ट्रीय एकता के समर्थको द्वारा विघटनकारी शक्तियो को विफल करने के सभी प्रयासों के बावजूद, क्षेत्रीयता, भाषावाद तथा साम्प्रदायिक विद्वेश और कट्टरता भयानक रूपधारण करते जा रहे है।

विद्यार्थियो, नवयुवको, और जनसाधारण मे कुपोषण भयकर रूप से बढ़ते जा रहे है शराब आदि व्यसनों के कारण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का निरन्तर ह्रास हो रहा है, इसका ज्वलत प्रमाण हमको एशियाई खेलो मे देखने को मिला।

इन तथ्यो के प्रकाश मे उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह पर आयोजित यह सम्मेलन पुरजोर माँग करता है कि —

१— भारत सरकार और राज्य सरकारें मिल कर सारे देश मे मद्य निषेध तथा नशा बन्दी पूण रूप से लागू करे और स्वय सेवी सस्थाओ के सहयोग से जनता को इन व्यसनों से मुक्ति दिलायें।

२— खेल व्यायाम योगासनो को उदारता पूर्वक प्रोत्साहन दिया जाये और उसके लिए पर्याप्त साधन जुटाने हेतु प्रान्तीय एव केन्द्र सरकार विशेष ध्यान देवे।

३— बड़े खेद का विषय है कि आजादी के बाद ४० वर्ष बीत जाने पर भी सविधान के निर्देशो की अवहेलना की जा रही है। भारत सरकार को तुरन्त गो वश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबध लगाना चाहिए तथा गोसवंधन के द्वारा देश मे दूध का उत्पादन बढ़ा कर बच्चो तथा नवयुवकों को पोष्टिक भोजन देने का समुचित प्रबध किया जाये।

४— देश की आतरिक व्यवस्था इतनी मजबूत होनी चाहिए कि विघटनकारी शक्तिया सर न उठा सकें और इसके लिए एक जुटता और राष्ट्रीय सकल्प अपेक्षित है। इस सबध मे सरकार की ढुलमुल नीति देश की एकता के लिए घातक सिद्ध हो रही है। और भाषाओ सम्प्रदायो तथा क्षेत्रो के नाम पर विघटनकारी शक्तिया ताकत पकड़ती जा रही हैं।

देश की जनता को अल्प सख्यको और बहुसख्यको मे बाँटने का विरोध करते हुए हमारी यह माँग है कि अनुच्छेद ३० को सविधान मे से निकाल दिया जाय। वास्तव मे अल्पसख्यक और बहुसख्यक के कुत्सित विचार के लिए सम्प्रदाय निरपेक्ष (सेकुलर) राज्य मे कोई स्थान नहीं हो सकता। इस लिए हमारी यह भी माग है कि अल्पसख्यक आयोग को भग कर दिया जाये और यदि आवश्यक हो तो मानव अधिकार आयोग का गठन कर दिया जाये।

५— देश के सभी भागो मे साम्प्रदायिक शक्तिया फिर से सिर उठा रही हैं। और अपनी-अपनी सेनाओ का गठन करने मे लगी हैं। साम्प्रदायिकता दो चीजो के सहारे पनपती है (क) साम्प्रदायो के नाम पर बनी शिक्षण सस्थाओ और (ख) राजनीति। साम्प्रदायिकता के खतरे से देश को बचाने के लिए हम माँग करते हैं कि (क) अलग-अलग सम्प्रदायो की शिक्षण सस्थाओं के नाम और स्वरूप बदल कर उनको सब सम्प्रदायो के लिए खोल दिया जाये (ख) सम्प्रदायो के नाम पर बनी हुई राजनीतिक पार्टियो पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगा दिया जाये।

स्वतन्त्रता सग्राम मे आर्य समाज का योगदान सर्वविदित है और वह राष्ट्र की एकता और अखडता के लिए कृत सकल्प है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सभो प्रांतीय सभाओ से हमारा निवेदन है कि देश की सुरक्षा के दायित्व को सभालकर वे एक देश व्यापी प्रबल आदोलन की तैयारी करें और सरकार को तुष्टिकरण की कमजोर नीति को छोड़ने के लिए बाध्य करें।

(मनमोहन तिवारी)
सभा मन्त्री

(इन्द्र राज)
सभा प्रधान

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर

महानगर कानपुर की गोविन्द नगर आर्य समाज का ३९ वा वार्षिकोत्सव २८-२९-३० नवम्बर १९८६ के मध्य सफलतापूर्वक सपन्न हुआ। प्रो० उत्तम चन्द शरर प्रेम भिक्षु तथा शास्त्रार्थ कुशल २० शांति प्रकाश के भाषण हुए ओर श्री सोहन लाल पथिक के प्रभावशाली भजन हुए। आर्य मित्र के सम्पादक आचार्य रमेश चन्द्र जी एम० ए० भी इस अवसर पर पधारे। समाज के प्रधान श्री देवीदास आर्य के निर्देशन मे सचालित आर्य कन्या इण्टर कालेज की बालिकाओ ने भी भाषण भजन एव सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

श्री देवीदास जी आर्य निर्भीक नेता आर्य समाज के कार्यकर्ता तथा सहस्त्रो विधर्मियो द्वारा अपहृत हिन्दू महिलाओ के उद्धारक हैं। वहीं उच्चकोटि के सगठनकर्ता और स्वप्नो को साकार करने मे समर्थ हैं। आर्य समाज गोविन्द नगर का नवनिर्मित भवन उन्हीं के सद्प्रयासो से बन कर तैयार हुआ है और इस वर्ष का वार्षिकोत्सव इसी दिव्य भवन मे हुआ। भवन आधुनिक साज-सज्जा से परिपूर्ण है। वृहद हाल सेवक निवास भोजनालय स्नानगृह आदि है। वहीं ऊपर तीन सर्व सुविधा सम्पन्न अतिथि गृह है। कोना-कोना स्वच्छ दपण की भांति चमकदार है। इस सब का श्रेय श्री देवीदास जी आर्य को है तथा उन उदार मना-आर्य जनो को है जिन्होने आर्थिक सहायता प्रदान की है।

मेरा अनुरोध है जब कोई आर्य समाज भवन बनाये इस गोविन्द नगर के भवन को अवश्य देखें श्री देवीदास जी आर्य साधुवाद के पात्र हैं।

—आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०

वार्षिकोत्सव

(१) आर्य समाज अनारकली मन्दिर माग नई दिल्ली १४ से १६ नवम्बर ८६ तक सपन्न हुआ १८ वयोवृद्ध भजनोपदेशक सम्मानित व पुरस्कृत किए गए।

(२) आर्य समाज रांची का वार्षिकोत्सव २९,३० तथा ३१ दिसम्बर को आयोजित किया गया है।

(३) नगर आर्य समाज गोरखपुर दिनाक ७ से ११ नवम्बर ८६ तक सपन्न हुआ।

(४) आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी मुरादाबाद ९ से ११ नवम्बर ८६ तक सपन्न हुआ।

(५) अखिल भारतीय सिंधी आर्य सभा, नागपुर द्वारा आर्य सम्मेलन २१ से २३ नवम्बर तक सपन्न हुआ।

(६) आर्य समाज शोहरतगढ़ (बस्ती) उ० प्र० वार्षिकोत्सव १६ से १८ नवम्बर ८६ तक सपन्न हुआ।

(७) आर्य समाज छिउलहा फतेहपुर वार्षिकोत्सव १० से १२ नवम्बर ८६ को मनाया गया।

(८) आर्य समाज निलोहा ग्राम (मवाना–मेरठ) वार्षिकोत्सव ६ से ८ नवम्बर तक मनाया गया। डा० वेद प्रकाश जी द्वारा विशेष रूप से ग्राम प्रचार किया जा रहा है।

से आज नीच अन्याय देख यह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'



सम्पादकीय

कलमन्द— रविवार २१ दिसम्बर १९८६ दयानन्दाब्द ११२
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

स्व-राज्यम् अनु-अर्चन् वृत्रं जघन्वान्

दिनांक ७-१२-८६ के सम्पादकीय में मैंने जिस विषय का अन्त में उठाया था, वह यह था कि आज स्वदेश विषम परिस्थितियों से आच्छादित है। राष्ट्र को खंडित करने के लिये भीतर और बाहर सतत कुप्रयास किए जा रहे हैं, जिनको यदि अविलम्ब रोक थाम न की गई तो ये घातक सिद्ध होंगे।

जब देश स्वतन्त्र हुआ तो विभाजन के कारण जिस अंग को काट कर एक नव राज्य पाकिस्तान का गठन किया गया, वहा से अल्प सख्यक समुदाय को पलायन करना पड़ा और इसे राजनीतिक विवशता की संज्ञा दे कर, यह संतोष कराया गया कि इसे स्वाधीनता का त्याग और बलिदान माना जाए। बंगाल का वह प्रदेश जो पाकिस्तान का अंग था, उसकी स्वतन्त्रता के पश्चात् वहा से भी भारी संख्या मे शरणार्थी हमारे देश मे आए और हमने मानवता के आधार पर उन्हे शरण दी। अब यह स्थिति आ गई है कि पंजाब का जो प्रदेश, जिस पर हमारा अपना शासन है और जो हमारे देश का अविभाज्य अंग है, वहा खालिस्तान के रूप मे एक स्वतन्त्र देश स्थापित करने का आंदोलन चलाया जा रहा है। आतंकवाद इतना उग्र रूप धारण कर चुका है कि वहा से अल्प सख्यक समुदाय एक बार पुन शनै शनै पलायन कर रहा है और हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली मे शरण ले रहा है। उन्हे विभिन्न धर्मशालाओं तथा धार्मिक स्थलो पर विस्थापितो के रूप मे शरण लेनी पड़ी है। उनकी दर्द भरी घटनाओ ने हमारे हृदयो को द्रवित कर दिया है और उनके लिए अपीलें निकाल कर धन संग्रह कर उनकी सहायता की जा रही है। अपने ही देश के वासियो को देश के एक स्थान से आतंकित हो कर पलायन करना पड़ और देश के दूसरे भाग मे शरण लेनी पड़ और दूसरो के दान पर जीवन यापन करना पड़, यह बात हमारे गौरव को किस सीमा तक कलंकित करती है, इस का सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

चूंकि समस्याओं का समाधान रुदन करने से नहीं होता अतएव वेद इन्हे सुलझाने के लिए कहता है—

इत्था हि सोम इन् मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्। शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या नि शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ (ऋ० १/८०/१)

ऋग्वेद के प्रथम मंडल का ८० वां सूक्त वेद का स्वराज्य सूक्त कहलाता है। स्वराज्य की अर्चना करते हुए हम स्वराज्य को सुराज्य कैसे बना सकते है इस का पूर्ण चर्चा इस सूक्त के १६ मन्त्रो मे की गई है। यदि सूक्त मे वर्णित बातो को व्यवहारिक रूप दिया जाए तो हमारा स्वराज्य सुराज्य बन जायेगा। राम राज्य से भी बढ़ कर विश्वराज्य बन जाएगा। प्रथम मन्त्र ही इस तथ्य को अभिव्यक्त करता है कि—'हे बलवान वज्रधारी महान् स्वामी तू आनन्द और सुखदायी शांति के लिए इन का संवर्धन करते हुए अपने ओज रूपी शक्ति पूर्व से अपनी विस्तृत भूमि को निश्चयात्मक रूप से शत्रु विहीन कर स्वराज्य की अर्चना कर। अतएव जिन्हे स्वराज्य की अर्चना करनी है, उसे सुखी और समृद्धशाली बनाना है, उन्हे वज्रधारी बन कर भीतरी और बाहरी दोनों प्रकार के शत्रुओ से उसे बचाना है। 'स्वराज्य की अर्चना' नामक पुस्तक में मैंने पूरे सूक्त की व्याख्या इस महान लक्ष्य को लेकर ही की थी। आज जहाँ बाहर के देशो की गिद्ध दृष्टि इस देश पर लगी है, वहाँ भीतर भी अनेक कुचक्र चल रहे हैं और इसमे कोई संदेह नही कि बाहर की अपेक्षा आन्तिरक शत्रु अधिक अनर्थकारी सिद्ध होते हैं।

आज देश को ऐसे नरो की आवश्यकता है जो नररत्न बन कर इस का उद्धार करें। वेद ने ऐसे नरो के लिए ही कहा है—

जुहुर वि चितयन्तो ऽनिमिष नृम्ण पान्ति।
आ दृढ़हा पुरं विविशु॥ (ऋ५/१९/२)

अर्थात् जिन्होने चेतनापूर्वक विशेष रूप से पुकारा है, आह्वान किया है, वे ही नरत्व का निरन्तर रक्षण कर पा रहे हैं क्योंकि उन्होने दृढ़ पुर मे अपना आवास बनाया है।

जब तक इस देश के वासी ज्ञानमार्गी नही बनेंगे और जब तक उन्हे यह आत्म बोध नहीं होगा कि वे केवल शरीर नहीं है। शरीरो के साथ जिस आत्मा का समुच्चय है और जिस के कारण वे जीवित हैं, वह तत्व प्रमुख है। आत्मा अजर अमर है और अविनाशी है जब कि शरीर मरण धर्मा है। जो मानव आत्मोन्मुख हो कर अपने जीवन मे जीता है, वही मानो एक दृढ़ दुर्ग मे निवास करता है। जो केवल बहिर्मुखी हो कर जीते हैं, वे ही दुर्ग के बाहर होने से असुरक्षित जीवन जीते हैं। आत्म दुर्ग के वासी ही नररत्न कहलाते है क्योंकि वे मानवता धर्म, जाति, देश और विश्व के लिए नश्वर शरीर को न्यौछावर करते है।

आर्यो! स्वामी दयानन्द ने अपने दुरे राज्य को भी जिस अच्छे विदेशी राज्य से श्रेयस्कर वर्णित किया था, उस स्वराज्य को सुराज्य मे परिणत करने का समय आ गया है। मोह माया के पाशो को काटो, ममता के बन्धन को तोड़ो, व्यसनो और विलासो को त्यागो, उठ कर खड़ हो जाओ दृढ़ प्रतिज्ञ बनो और बलिदानो के पाठ पढ़ाओ। इन्द्र और वृत्र का परस्पर विरोध तो सतत रहता है। इन्द्रत्व को विकसित करो तो वृत्र शक्तिहीन हो जाएगा। इन्द्रत्व ही आत्म शक्ति है और वृत्र उसकी रुकावट है। निराशा, निरुत्साह आलस्य, प्रमाद, व्यसन, विलास अविश्वास, जड़ता, दुर्बलता ये सब वृत की सेना के सैनिक है। आशा, उत्साह, आत्म विश्वास, साहस, जागरुकता, विवेक, क्षमता, कुशलता, सक्रियता, तपस्या, दृढ़ता ये इन्द्र के वीर सैनिक है। स्वराज्य की अर्चना करने वाले इन्द्रत्व का पौरुष धारण करते हैं। आत्म शक्ति का उदय करते हैं और उसे विस्तारते हैं।

जब तक स्वराज्य मे ऐसे नररत्नो का उदय नहीं होगा, राष्ट्र की समस्याओं का कदापि समाधान नहीं होगा और वह कभी भी सुराज्य नहीं बन पाएगा।

—"वसन्त"

वेद का मनन

[श्री इन्द्रराज श्री प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश]

विश्वेदेवा नो अद्या स्वस्तये,
वैश्वानरो वसुरग्नि. स्वस्तये ।
देवा. अवन्त्वृभव स्वस्तये,
स्वस्ति नो रुद्र पात्वंहस ॥

(ऋ० ५-५१-१३)

शब्दार्थ-(विश्वे देवा.) समस्त दिव्य पदार्थ, विद्वान् और इन्द्रियाँ (अद्य) आज (न) हमारे लिए (स्वस्तये) कल्याणकारक हों। (वैश्वानर) सब चराचर मे विराजमान एव प्रकाशमान और (वसु) सर्वत्र बसने वाला या सब को बसाने वाला (अग्नि, ज्ञान स्वरूप परमात्मा (स्वस्तये) हमारे लिए कल्याण करे। (ऋभव) शास्त्रों के रक्षक, मेधावी अथवा ज्ञान ज्योति से देदीप्यमान (देवा) विद्वान जन (स्वस्तये) हमारे कल्याण के लिए (अवन्तु) हमारी रक्षा करें। (रुद्र) दुष्टो को रुलाने वाला परमात्मा (न) हमे (अंहस) पाप से (पातु) बचाए जिससे हमारा (स्वस्ति) अभ्युदय और निश्रेयस सिद्ध हो।

इस मन्त्र में भगवान् से प्रार्थना की गई है कि हमारे लिए चारों तरफ से स्वस्ति का वातावरण बने। यह तभी हो सकता है जब कि हमारे चारों तरफ रहने वाली समस्त वस्तुएं हमारा कल्याण करने वाली हों। हम देखते हैं कि हमारे चारों ओर देवता हैं। जड़ देवता और चेतन देवता। अग्नि, जल, वायु, सूर्य, चन्द्रमा आदि ये सब जड़ देवता हैं। माता, पिता, आचार्य, और अतिथि ये चेतन हैं। अथवा प्रकृति के अनुसार तो

(विद्वांसो हि देवा) विद्वान देव कहलाते हैं। शास्त्रों में इन्द्रियों को भी देवता कहा गया है। ये सब के सब हमारे लिये कल्याण करने वाले हों। जड़ देवताओ का सम्पर्क हमें स्वास्थ्य-दिव्यता आदि प्रदान करता है जिससे हमारा कल्याण होता है। शुद्ध वायु प्राण शक्ति को बढ़ाता है। शुद्ध जल शरीर को निर्मल करता है। अग्नि देवता सारे ससार को पवित्र करने वाला है इसीलिए तो इसको पावक कहा गया है। सूर्य चन्द्रमा हमे प्रकाश देने वाले हैं। इन सब देवताओं से हमारा बड़ा कल्याण होता है। परन्तु ये देवता जब रुष्ट हो जाते हैं जब अग्नि, वायु, जल अपनी सीमा से बाहर हो जाते हैं तो अग्नि जला देती है, भस्म कर देती है। वायु तूफान के द्वारा विनाश कर देता है। जल बाढ़ के द्वारा ससार को बहाकर ले जाता है। सूर्य आग बरसाने लगता है, चन्द्रमा ज्वार भाटा ले आता है। इन सब देवताओ को सर्वशक्तिमान भगवान ही वश मे रखता है। इसीलिए उसी परमात्म देव से प्रार्थना की गई है कि हे भगवान ये जड़ देवता हमारा कल्याण करने वाले हो हमारा विनाश न करने वाले हो। चेतन देवता माता पिता आचार्य, अतिथि, और विद्वान लोगों का हमे सदैव सत्सग मिलता रहे, अच्छी माता, अच्छे पिता और अच्छे आचार्य और अतिथि का मिलना बड़े सौभाग्य की बात है। माता पिता आचार्य आदि इन चेतन देवताओं का हम पर बहुत ऋण है। इनके ऋण को आसानी से उतारा नहीं जा सकता हम सदैव इनके प्रति आदर भाव और श्रद्धा का भाव रखते हुए इनके कृपा के पात्र बनें। इनके कोप भाजन न बनें। तभी ये चेतनदेवता हमारे लिये कल्याण करने वाले बन सकते हैं। आगे वेद मन्त्रों में कहा गया है कि वह चराचर जगत मे प्रकाशमान और सबको बसाने वाला भगवान हमे सीधा रास्ता दिखाकर तथा हमे सदैव अच्छे मार्ग पर प्रेरित करके हमारे लिये कल्याणकारी हो।

शास्त्रो के रक्षक मेधावी विद्वान भी हमारे लिए कल्याणकारी होवें और हमारी रक्षा करें। जो विद्वानों की सेवा करता है और उनकी सगत मे रहता है। विद्वान लोग उसकी रक्षा करते हैं। एक कुमार्गगामी व्यक्ति को पाप के गर्त से बचा लेता है। इस प्रकार कितनी सार्थक प्रार्थना है कि मेधावी विद्वान हमारी रक्षा द्वारा हमारा कल्याण करें।

मन्त्रो के अन्त मे प्रार्थना है कि दुष्टो को रुला देने वाला भगवान हमारी पाप से रक्षा करे जिससे हमारा कल्याण हो भगवान का रुद्र रूप पापो से रक्षा करने वाला होता है। दण्ड व्यवस्था सारे ससार के सुधार के लिए है। जब यह विश्वास हो जाये कि पाप का दण्ड अवश्य मिलेगा तो व्यक्ति पाप करने से बचेगा। उन विश्वासो ने ससार का बड़ा अहित किया है जिनमे दण्ड के क्षमा कर देने की बात है। कोई व्यक्ति हो यथा ईसा, मुहम्मद अथवा कोई नहीं हो यथा क्या इन पर ईमान लाने या स्नान करने से पाप क्षमा नहीं होते। पापी व्यक्ति भगवान के विधान से और उसकी दण्ड व्यवस्था से बच नहीं सकता। इसलिए भगवान का रुद्र रूप पापो से बचाने वाला है इसी से वास्तविक कल्याण हो सकता है।

आइए कल्याण के मार्ग पर चलें ताकि विद्वान देवता और भगवान हमारा कल्याण करें।

★★★

वेदोपदेश

विश्व को सुखमय बनाऊं

हे नाथ मैं सेवक तुम्हारा
शरण में अब आ रहा हू
है पास मेरे कुछ नहीं
बस भेंट श्रद्धा ला रहा हू।
दूर कर दो दोष मेरे
दुर्गुणो को दूर कर दो
सद्गुणो से पूर्ण करके
ज्ञान से भरपूर कर दो।
हो पुनीत चरित्र मेरा
हृदय मे हो तव बसेरा
हो सहारा एक तेरा
अवश्य हो अनुपम घनेरा।
छल कपट को त्याग करके
स्नेह की धारा बहाऊ
द्वेष का विष पान करके
प्रेम का अमृत पिलाऊँ।
कण कण मे तेरी छवि निहारू
ज्योति जगमग जगमगाऊ
सौजन्य प्रसार सब मे
विश्व को सुखमय बनाऊ।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

वेद में विमान

डा० प्रकाश मित्र शास्त्री,
प्रधान सम्पादक, पारिजातम् १०५/१२४ प्रेम नगर, कानपुर

[गतांक से आगे]

इस मित्रावरुण की मूल उत्पत्ति क्रमशः सूर्य के पृष्ठ भाग और अन्त प्रवेश से होती है। वेद कहता है–

दक्षस्यवाऽदिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि।

ऋक् १०/६४/५

इसी मित्रावरुण रूप युग्म शक्ति के सहारे विमान परिचालन का भी निर्देश वेद करता है–

अस्माक मित्रावरुणाऽवत रथ-मादित्यै रुद्रै वसुभि सचाभुवा। ऋ० २/३१/१। हे मित्रावरुण शक्तियो आदित्य रुद्र और वसु नामक किरणों के साथ होने वाली वैद्युत एवं चुम्बकीय शक्ति के द्वारा हमारे रथ अर्थात् यान-विमान को गति प्रदान करो चलाओ।

मूल मन्त्र में आदित्य, रुद्र और वसु शब्दो से विशिष्ट किरणो की ओर संकेत किया गया है आदित्य संज्ञक सप्तरंगो में विभक्त किरणें तृतीय सवन मे अर्थात् साय काल हमे सूर्य से प्राप्त होती है तथा रुद्र नामक तेजोमय ताप किरणें माध्यन्दिन सवन अर्थात् पूरे दिन भर प्राप्त होती है। इसी प्रकार वसु नामक किरणें प्रातः सवन अर्थात् उषाकाल मे प्राप्त होती है। तात्पर्य यह है कि सूर्य से वैद्युत एवं चुम्बकीय शक्ति हमे भिन्न-भिन्न किरणो के रूप में उप-लब्ध होती है तथा आदित्य नाम से सप्तरंगी किरणें, रुद्र नाम से रोहित वर्णीय ताप किरणे और वसुनाम से उष.कालीन नीलपर. किरणे संकेतित होती हैं।

ये नीलपर किरणें रसायन परिणाम उत्पन्न करने की क्षमता रखती हैं। यही रासायनिक शक्ति प्रक्रिया विशेष द्वारा विद्युत या चुम्बक रूप में परिवर्तित कर विद्युत सेल के रूप मे प्रयुक्त की जा सकती है। इसी प्रकार रोहित वर्णीय ताप किरणें दो धातुओं के संयुक्त स्थल पर आग्नेय दर्पण (आतशीशीशा) के माध्यम से पहुंच कर विद्युत प्रवाह का कारण बन जाती हैं। वैद्युत एवं चुम्बकीय लहरों के रूप में व्यवहर्तव्य किरणों का यही तेजोमय रूप 'मित्रावरुण' नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इन किरणों को मित्रावरुण अर्थात् वैद्युत एवं चुम्बक परिणाम में रूपान्तरित करके यान या विमान संचालन में प्रयोग करने का निर्देश हमें उक्त है 'अस्माक मित्रावरुणा-ऽवतम्' वेद मन्त्र से प्राप्त होता है।

विज्ञान वार्ता

अन्तरिक्षचारी विमान सर्व सुविधा सम्पन्न हो, अत्यन्त तीव्र गति से चलने वाले हों और आव-श्यकतानुसार सुगमतापूर्वक ऊपर-नीचे, चढ़ने-उतरने मे सक्षम हों– इस स्वरूप का चित्र निम्नलिखित वेद मन्त्र मे द्रष्टव्य है–

आवां रथो अश्विना श्येनपत्वा सुमृळीक स्ववा यात्वर्वाङ्।
यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा वातरंहा.॥

ऋक्–१/११८/१

१–श्येनपत्वा–(बाज पक्षी के समान उड़ने वाला)

जैसे बाज पक्षी अपने शिकार पर झपट कर आक्रमण करता हुआ सहसा तीव्र गति से नीचे आ जाता है और पुनः उसी गति से ऊपर को चला जाता है। वैसे ही यह विमान भी अपने लक्ष्य पर आक्रमण करने हेतु वेग से नीचे आने और पुनः तत्काल उसी वेग से ऊपर चला जाने वाला हो।

२– मर्त्यस्यमनसो जवीयान्– (मनुष्य के मन के समान अथवा उससे भी अधिक तीव्रगामी) अन्य समस्त गतिशील पदार्थों की गति की कोई न कोई सीमा है–पर मन की गति को परिमाण में नहीं लाया जा सकता–

जो विमान मन की गति के समान गति वाला है निश्चय ही वह आज अतिस्वन (शब्द की गति से तीव्र गामी) विमानों की अपेक्षा अधिक तीव्रगामी होगा।

३– वातरंहा–(वायु के द्वारा गति को प्राप्त होने वाला)

महर्षि भारद्वाज ने अपने ग्रन्थ "यन्त्र सर्वस्व" के वैमानिक प्रकरण में विमान के परिचालन में अनेक प्रकार के साधनों चुम्बक-पारद-विद्युत-सौरची तैल आदि का वर्णन विशेष रूप से किया है। उक्त ग्रन्थ में वर्णित शकुन विमान का संचालन वातशक्ति के आधार पर होता है।

४– त्रिवन्धुर – इस शब्द से तीन बन्धन विवक्षित है–जिसका यह भी भाव सम्भव है कि विमान का निर्माण चार भागों में पृथक्-पृथक् हो–

(अ) औष्म्यक (ऐंजिन) एवं विशिष्ट यंत्रों का भाग, (आ) ईंधन का स्थान (इ) यात्रियों के बैठने का विभाग (ई) सामान रखने का विभाग, अथवा विमान के अंग सुकाग, पत्तक उत्थापक आदि की ओर भी संकेत हो सकता है।

५– वृषणा अश्विनी– मंत्र में बलशाली 'अश्विनौ' नामक युग्म शक्ति को विमान–यन्त्रों का अधि-पति संरक्षक या परिचालक माना गया है।

इसी 'अश्विनौ' का परिचय देते हुए निरुक्तकार महर्षि यास्क ने उसे ज्योतिः और रस रूप बत-लाया है– 'अश्विनौ यद्व्यश्नुवाते सर्वं रसेनाऽन्यो ज्योतिषाऽन्यः।' अर्थात् अश्विनौ वह युग्म शक्ति है जिसमें एक रस रूप से और दूसरी ज्योतिः रूप से ही विश्व व्याप्त है आकाश मार्ग से लोक-लोकान्तरों में परिभ्रमणशील विमानव्योम यान के अतिरिक्त जल, स्थल (पर्वत-रेगि-स्तान) आदि मार्गों से भी गमन करने की क्षमता वाले हों। अनेका-नेक दिनों तक लगातार व्योम अंतरिक्ष या समुद्र में गमन करने की शक्ति उन यानों में हो ऋग्वेद के मन्त्र में यह वर्णन इस प्रकार से है–

"समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षळश्वैः।"
ऋक्० १/११६/४ अर्थात् अश्विनौ शक्तियां अन्तरिक्ष-पृथ्वी स्थल एवं जल के पार एक ओर से दूसरी ओर तक सैकड़ों चक्रों एवं छ. तीव्रगामी नेभ्यक यंत्रों से युक्त तीन रथों से अर्थात् जल-स्थल व नभ में चलने वाले यान से मानव को ले जाती हैं।

इस भांति ऋग्वेद के 'अश्विनौ' तथा 'मित्रावरुणौ' सूक्तों में तथा यथास्थल अन्य सूक्तों में भी विमान कला के तो दर्शन होते ही हैं– साथ ही साथ अन्य भी नानाविध यानों एवं यंत्रों के निर्माण का मूल स्रोत भी हमें वहां से प्राप्त होता है।

रसमय एवं ज्योतिर्मय रूप से विश्व में व्याप्त होने वाली अश्विनौ नामक युग्म शक्ति (जो कि सूर्य किरणों से प्राप्त होने वाली शक्ति है ऋक् १/४७/७ जिसमें एक शीत है दूसरी उष्मा, एक आर्द्र है दूसरी शुष्क) तथा पूर्ववर्णित "मित्रावरुणौ" नामक युग्म शक्ति परस्पर सहयोगिनी एवं एक दूसरे की पूरक है। वेद भी 'अश्विनौ' को 'मित्रावरुणवन्तौ' (ऋक्० ८/३५/१३ घोषित करता हैं।

[क्रमशः]

दयानन्द युगपुरुष नहीं, कल्पपुरुष थे

—स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'—

महान् दयानन्द

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' वेदों के परवाने थे। उन्होंने अपना तन-मन-धन यौवन सर्वस्व वेद ज्योति पर न्योछावर कर दिया। उनका निधन भी वेद प्रचार करते हुए आर्य समाज सहारनपुर की वेद वेदि पर ५ मार्च १९७८ को हुआ था। वे उच्चकोटि के वेद मनीषि अनुपम वेद व्याख्याता तथा प्रवीण सरस प्रवक्ता थे। उनका ओजस्वी लेखन तथा प्रबुद्ध प्रवचन बौद्धिक प्रतिक्रियावादियो को अप्रिय लगता था और मानवी दुर्बलताओं यथा ईर्ष्या द्वेष दुर्भावना के वशीभूत होकर उनकी जी भर कर आलोचना की जाती थी पर वे अडिग होकर सर्वत वेदमार्ग पर ही बढ़ते रहे। महर्षि दयानन्द को ही उन्होने अपना वेद गुरु माना और उनके ही वेद प्रचार कार्य्य को जीवन मे आगे बढ़ाया। स्वामी दयानन्द के उपरांत जितना वैदिक प्रचार उन्होने वाणी तथा लेखनी के माध्यम से किया, वह इस बात का प्रतीक है कि वे दयानन्द के कितने अनन्य भक्त थे। प्रस्तुत लेख भी उनकी अभिज्ञता को प्रदर्शित करता है और उस महान दयानन्द का वास्तविक मूल्यांकन करता है।

--बसन्त

दयानन्द विशेषणातीत है। वह इतना महान् है कि किसी भी भाषा का कोई भी विशेषण उसकी महत्ता को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकता।

दयानन्द दयानन्द ही था। दयानन्द के जीवन मे पतन एक बार भी नहीं हुआ था। वह जन्म-जन्म का कोई सिद्ध आत्मा था अथवा मोक्ष से आया हुआ कोई मुक्त आत्मा। अत. उसके पतन की कोई संभावना ही न थी। वह जन्म से अन्त तक निरन्तर उठता चला गया और ऊर्ध्व स्थिति मे ही उसकी अमर आत्मा ने उसके नश्वर शरीर का त्याग किया।

दयानन्द को मै युगपुरुष नही कल्पपुरुष मानता हू। उसका एक-एक स्वप्न सिद्ध सार्थक हो कर रहेगा। कृष्ण के बाद दयानन्द ही वह युगपुरुष है, जो कल्पपुरुष था। जब भी मुझे दयानन्द का खयाल आता है, मेरी आंखो के सामने दयानन्द के रूप मे सर्वकाल सम्पन्न एक अखण्ड और निर्भय ज्योति-पुरुष खड़ा दिखाई पड़ता है, जो न केवल इस पृथिवी के प्रवाह को निम्नतम से उच्चतम की ओर प्रेर रहा है, वेद और सृष्टि के गुह्यतम रहस्यों का भी उद्घाटन पर उद्घाटन करता चला जा रहा है, जो न केवल असत्य की जड़ो पर कुठाराघात कर रहा है, सत्य पर छाये आवरणों को भी छिन्न-भिन्न कर रहा है। जो न केवल खण्डहरों को ढा रहा है, नवीन आधारों पर नये निर्माणों में भी जुटा हुआ है। दयानन्द देव था। वह अन्त तक अदम्यता के साथ अकेला चला और अकेला बोला। उसने स्पष्टता के साथ सत्य का प्रकाश किया। उसने दृढ़ता और सतर्कता के साथ वैचार्य के विकास का पथ प्रशस्त किया। उसने निर्भयता के साथ स्वराज्य और स्वसभ्यता का उद्घोष किया। महान् साधना ने ही उसे देव बनाया।

सत्य ही सन्यास का लक्ष्य है और सत्य ही संन्यासी की परम सम्पदा है। धर्म की ही नहीं, जीवनसर्वस्व की रक्षा सत्याश्रित है। सचमुच सत्य दयानन्द का अन्यतम नियम और अवलम्ब था। सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग दयानन्द का अन्यतम नियम था। यह दयानन्द की चरम प्रशस्ति है।

यह गलत है कि दयानन्द वैराग्य से पीड़ित हो कर सन्यासी बना था। वह तो शिव की प्राप्ति और मृत्यु पर विजय के राग से अनुरक्त होकर घर से निकला था।

महर्षि दयानन्द जन्म से ही चारित्रिक और नैतिक वृत्ति के धर्मात्मा व्यक्ति थे।। गुप्त क्रांति विप्लव अथवा षड्यन्त्र का उनके स्वभाव मे सर्वथा अभाव था। उनके सम्पूर्ण जीवन, कार्य अथवा साहित्य मे ऐसी वृत्तियों का कोई चिह्न या लक्षण दृष्टिगोचर नहीं होता। वे जो कुछ कहते या करते थे, सब स्पष्ट और प्रत्यक्ष होता था। गोपनीयता उनमे थी ही नहीं।

आदि से अन्त तक दयानन्द का जीवन और दयानन्द की कृतियां व्याख्या की अपेक्षा रखती हैं। वेद शास्त्रों की व्याख्याए दयानन्द के जीवन से ऐसी गुथ गई हैं कि दयानन्द के जीवन की व्याख्या के बिना दयानन्द के ग्रन्थों की व्याख्याए की ही नहीं जा सकती।

ससार में अद्यावधि जितने महापुरुष हुए हैं, वे प्राय एकांगी थे। दयानन्द का व्यक्तित्व और जीवन इतना सर्वांगी था कि उसके एक-एक अंग पर यथावत् प्रकाश डालने के लिए अनेक अर्पित और सुविद्वान्, इतिहासज्ञ जीवनवृत्त-लेखकों की आवश्यकता होगी। दयानन्द के जीवन की कहानी मात्र लिखने से ससार को दयानन्द के आलोकित स्वरूप की झांकी मिलना सर्वथा असम्भव है। दयानन्द कृत सम्पूर्ण साहित्य का जिसने योगस्थ होकर अध्ययन नहीं किया, दयानन्द के सम्पूर्ण पत्र व्यवहार का जिसने तात्त्विक दृष्टि से अनुशीलन नही किया, दयानन्द-युगीन भारत और विश्व का जिसने इतिवृत्त नहीं जाना, भारत मे अगरेजी राज के दयानन्द सम्बन्धी सरकारी रिकार्ड को जिसने नहीं पढ़ा, किन परिस्थितियो मे दयानन्द ने क्या-क्या, कितना-कितना किया और किस प्रकार किया, इस तथ्य का जिसने विश्लेषण नहीं किया, और साथ ही दयानन्द की अध्यात्म-साधना तथा विद्योपार्जन की प्रक्रियाओ और परिक्रियाओ का जिसे ज्ञान नहीं, दयानन्द की आहो और वाहो की जिसे अनुभूति नहीं है, वह दयानन्द की जीवनी को विश्व के सामने प्रस्तुत करने मे पूर्णतया सफल न हो सकेगा। दयानन्द की भारतीयता तथा सार्वभौमिकता को अभिज्ञता के साथ प्रस्तुत कर सकना कोई सरल काम नही।

महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' मे राजनीति पर एक स्वतन्त्र समुल्लास लिखा है और धर्मार्यसभा तथा विद्यार्यसभा के अतिरिक्त राजार्यसभा की स्थापना का भी विधान किया है। महर्षि दयानन्द ने ही देश मे राजनैतिक चेतना तथा राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न की थी।

'आर्याभिविनय' मे महर्षि दयानन्द ने जिस 'अखण्ड चक्रवर्ती सार्वभौम आर्य साम्राज्य' का सकेत

(शेष पृष्ठ १० पर)



ऋषिकेश मे आन्ध्र आश्रम नामक सस्था है इसके सचालन में परम विद्वान एव सरल हृदय श्री जी० के० टी रगा चार्यालु जी है। आप भारतीय सस्कृति एव गौरव से सदैव ओत प्रोत रहते है- आप ने दो लघु ग्रथ अग्रेजी में लिखे हैं –

१–रियलिटी आफ बाइबिल (बाईबिल की वास्तविकता)।

२–रिलेजन गिवेन बाइ-गाड (ईश्वर द्वारा प्रदत्त धर्म)

नाम से ही पुस्तकों का परिचय है आर्य सिद्धातों के आदर्श को सामने रखते हुए पुस्तको की रचना है एव तद् सम्बधी सामग्री है। बाइबिल की वास्तविकता मे तार्किक रूप से विचार है और ईश्वर प्रदत्त धर्म मे वैदिक सिद्धातो का प्रतिपादन है। मूल्य भी स्वल्प तीन रुपया मात्र है। इच्छुक व्यक्ति श्री रङ्गा चार्यालु आन्ध्र आश्रम ऋषिकेश से सम्पर्क करें।

–आचार्य रमेश चन्द्र

परिचय–

युवा सन्यासी

स्वामी मोक्षानन्द जी सरस्वती

जिस सस्थाओं और सगठनों मे नव युवको का प्रवेश होता रहता है उनमे गतिशीलता एव जीवन बना रहता है। हर्ष है कि स्वामी मोक्षानन्द जी भी युवा सन्यासी है। उत्साहपूर्ण है एव प्रभावशाली भाषण कर्ता है। प्रचार प्रसार के कार्य मे सलग्न रहते हैं एव स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेशो के वाहक है। श्री देव नारायण पाठक(पूर्व नाम) आगरा कालेज से समाज शास्त्र मे एम० ए०, सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन का व्रत लेकर सन्यास आश्रम मे प्रवेश किया और तब से निरन्तर भ्रमण-भाषण के कार्य मे तत्पर है। सम्प्रति नेपाल मे है। पत्र व्यवहार का पता है– स्वामी मोक्षानन्द वैदिक सन्यास-आश्रम पो० बाजना मथुरा राष्ट्रीय विचार धारा के पोषक हैं प्राय पन्द्रह से ऊपर लघु साहित्य की रचना की है। प्रमुख पुस्तकें हैं, राष्ट्रद्रोही कौम, ताज महल का वास्तविक निर्माता कौन, इतिहास के कलक भाग–१ तथा २ इस्लाम का आधार हिन्दुत्व, नसबन्दी से राष्ट्र हत्या, भारत मे ईसा के एजेण्ट, भारतीय राजनीति मे धर्म का स्वरूप, कम्युनिस्टो के विदेशी गुरु, पाकिस्तान क्यो बना, भारतीय मुसलमानो का राष्ट्रीयकरण, आदि पुस्तक या ट्रैक्ट का परिचय नाम से ही हो जाता है जनता को सपर्क करके साहित्य मगा कर लाभ उठाना चाहिए। अधिवेशन मे ओजस्वी भाषण के लिए आमन्त्रित करना भी अपेक्षित है। स्वामी मोक्षानन्द जी वैदिक सन्यास आश्रम बाजना मथुरा।

–आचार्य रमेश चन्द्र, एम० ए०

अमर स्वामी जी का अनुपम एतिहासिक प्रयास

परम आदरणीय अमर स्वामी जी आर्य जगत के वयोवृद्ध सन्यासी है एव उनका जीवन तप, सघर्ष एव शिक्षा ज्ञान-प्रसार का रहा है, कितनी ही दुर्लभ पुस्तकें उनके द्वारा प्रकाशित हुई है। सम्प्रति 'निर्णय के तट' पर द्वितीय भाग प्रकाशित हो गयाहै जिसमे शास्त्रार्थों का प्राचिकल सग्रह है इसका प्रथम और तृतीय भाग भी तैयार हो गया है तथा मुद्रण मे है। स्वामी दयानन्द सरस्वती से लेकर आत्माराम अमृतसरी, राम चन्द्र देहलवी, प० बिहारी लाल शास्त्री, स्वामी दर्शनानन्द जी, बुद्धदेव विद्यालकार, आर्य मुनि, अमर स्वामी, श्रद्धानन्द जी, इन्द्र विद्यावाचस्पति आदि आर्य विद्वानो के जो शास्त्रार्थ पौराणिको एव अन्य धार्मिकों से हुए हैं उनका क्रमबद्ध संकलन किया गया है। समय विषय शास्त्रार्थ के प्रश्नोत्तर आदि का विशद् उल्लेख है। लोप होती हुई सामग्री को अमर स्वामी जी ने प्रयास के साथ एकत्रित किया है सशोधित किया है प्रयास से सामग्री एकत्रित की है और उसका प्रकाशन कर रहे हैं।

आर्य जनों से अपेक्षा है कि इस पुनीत कार्य मे अमर स्वामी की सहायता करें। पुस्तको के ग्राहक बने-बनाये आर्य समाजों के पुस्तकालयों मे रखे, उपदेशको, भजनीकों को भेंट करें। यह सब ग्रथ विस्तृत ज्ञान शास्त्रीय चर्चा, और आर्य समाज के सिद्धान्तों से पूर्ण-रूपेण परिपूर्ण है।

अमर स्वामी जी का अनुरोध है कि आर्य जन अपना नाम आदि सूचित कर दे। धन चाहे बाद मे भेजे जिससे अनुमान हो सके कि कितनी प्रतिया मुद्रित करायी जाये। इस वृहद् ग्रथ को स्वामी जी अर्द्ध मूल्य पर ६० रुपया(पूर्ण मूल्य १२० रु०)मे देंगे जो पहिले से ग्राहक बन जायेंगे। विस्तृत जानकारी के लिए सपर्क कीजिये – श्री अमर स्वामी प्रकाशन विभाग १०५८ विवेकानन्द नगर गाजियाबाद–१

'निर्णय के तट पर' प्रकाशन के लिए अमर स्वामी धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही स्वामी जी का अनुरोध है कि यदि किसी सज्जन के पास कोई शास्त्रार्थ सामग्री हो तो सूचित करिये वह साभार उन्हीं के नाम से प्रकाशित होगी।

–आचार्य रमेश चन्द्र, एम० ए०

प्रो० हरिदत्त जी का निधन

भारतीय इतिहास के ख्याति प्राप्त विद्वान् प्रो० हरिदत्त जी वेदालकार अध्यक्ष इतिहास वि० गुरुकुल कागड़ी का निधन उनके निवास स्थान देहली मे हृदय गति रुक जाने से विगत मास हो गया।

प्रो० हरिदत्त जी सरल स्वभाव के व्यक्ति थे गुरुकुल के स्नातक थे और वहीं आध्यापक रहे। भारतीय इतिहास की सामग्री को उन्होंने पौराणिक साहित्य से भी परिश्रम एव खोज से निकाला। 'आर्य समाज का इतिहास' जो विशाल ग्रथ निकल रहा है उसमे भी प्रो० हरिदत्त जी का योगदान रहा है। आपका जीवन अध्ययन-अध्यापन मे ही व्यतीत हुआ और गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की गरिमा आपके द्वारा विशेष रूप से रही है। कतिपय इतिहास के ग्रथ भी प्रो० हरिदत्त जी ने लिखे हैं। इतिहास विषय पर आप के भाषण सारगर्भित एव तथ्य परक होते थे प्रभु दिवगत को शांति एव दु खी परिवार को धैर्य प्रदान करे।

–आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०

वेद प्रचार यात्रा

ससार भर मे वेद भाष्य पहुचाने का संकल्प लेकर चलने वाले "दयानन्द सस्थान" की ओर से जनवरी मे वेद प्रचार यात्रा का आयोजन किया जा रहा है।

इस पहली वेद प्रचार यात्रा मे भारत से लगभग सौ व्यक्तियों का दल बैंकाक व सिंगापुर जायेगा। वहाँ के प्रवासी भारतीयो के बीच न केवल वेद प्रचार करेगा वरन् उन्हें अपनी मातृभूमि के सांस्कृतिक मूल्यो से भी परिचित करायेगा।

यह जानकारी देते हुए "दयानन्द सस्थान" की अध्यक्ष "पण्डिता राकेश रानी" ने बताया कि इस यात्रा के लिये २१ जनवरी से २ फरवरी तक का समय प्रस्तावित है।

वेद प्रचार यात्रा मे जाने वालों की सूची व कार्यक्रम का अन्तिम रूप ३१ दिसम्बर तक दे दिया जायेगा।

"दयानन्द सस्थान" की अध्यक्ष ने बताया कि सस्थान हर साल इस तरह की वेद प्रचार यात्रायें आयोजित करेगा। जिससे दुनिया के दूसरे देशो में भी वेद का सदेश प्रचारित किया जा सके।

आर्य जगत

श्री वेद प्रकाश गुप्त की प्रोन्नति

श्री वेद प्रकाश गुप्त इन्जीनियर शम्भू नगर मेरठ को अधिशासी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग शाहजहाँपुर के लिए प्रोन्नति हुई है। इसी उपलक्ष्य मे अपने निवास पी० डब्लू० डी० कालोनी लखनऊ मे उन्होंने यज्ञ एव पारिवारिक सत्सग दिनांक ७-१२-८६ को आयोजित किया। और लगभग ३५०/– उन्होंने विभिन्न सस्थाओ को दान भी प्रदान किया।

मित्र परिवार उनकी शतश उन्नति की कामना करता है।

—सम्पादक मण्डल

आर्य समाज शृंगार नगर द्वारा युवको मे वेद प्रचार की नई योजना

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के निर्देशानुसार आर्य समाज शृगार नगर लखनऊ मे बालकों व युवको मे वेद, धर्म व समाज के प्रति आकर्षण उत्पन्न करके उन्हे वेद पथानुगामी बनाने के लिए प्रत्येक मास के प्रथम रविवार को सम्पूर्ण कार्यक्रम यज्ञ से लेकर उपदेश तक बच्चो, युवकों द्वारा ही सचालित करने का आयोजन किया है। उसी अनुरूप ७-१२-८६ का सत्सग उनके माध्यम से हुआ, जिसमें यजमान पुरोहित व मन्त्र सचालक बच्चे ही बने। भजन प्रवचन उपदेश भी बच्चों व युवको के हुए। प्रयोग बडा सफल व आकर्षक रहा। उपस्थिति पर्याप्त थी। अन्त मे समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री कृष्ण बल्देव महाना ने प्रत्येक बच्चे को जिन्होंने कार्यक्रम किये उन्हें २०-२० का प्रोत्साहन पुरस्कार१२०/– दिया। कार्यक्रम के सयोजन का भार युवक आर्य वक्ता श्री रूपचन्द्रदीपक को दिया गया है।

आर्य समाज आदर्श नगर मे भी प्रथम रविवार का कार्यक्रम बच्चो द्वारा ही होता है जिसका अच्छा भावी प्रभाव है।

सभी समाजो को अपने-अपने यहाँ ऐसे कार्यक्रमो का नियमित आयोजन करना चाहिए।

—सम्पादक मण्डल

आर्य समाज देहरादून

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का प्रस्ताव

देहरादून,१८नव इस देशमेअसाम्प्रदायिक प्रजातत्र राज्य तभी तक है जब तक यहाँ हिन्दू बहुमत है। जिस दिन यहाँ हिन्दू का बहुमत समाप्त हुआ उस दिन यहाँ ईसाई या मुस्लिम राज्य तो हो सकता है परन्तु असाम्प्रदायिक प्रजातत्र शेष नहीं रहेगा। अत देश के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि हिन्दू बहुमत को बनाए रखने के लिए प्राणपण से जुट जाए। ये विचार आर्य समाज देहरादून के १०७ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे पारित प्रस्ताव के हैं। सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान प० इन्द्र राज ने की।

प्रस्ताव के अनुसार सरकार की वर्तमान नीतियाँ ऐसी है कि हिन्दू बहुमत के लोग स्वय को अल्पमत वर्ग का बता कर येन केन प्रकारेण अपने को जीवित रखने का प्रयास कर रहे है। "जैन बन्धु हिन्दू है परन्तु उन्होने न्यायालय से स्वय को अहिन्दू घोषित करा लिया है। राम कृष्ण मिशन हिन्दुओ का अग है, मिशन वालों ने कलकत्ता उच्च न्यायालय से निर्णय ले लिया है कि वे हिन्दू नहीं है। पचासो हिन्दू सस्थान अपने को अहिन्दू घोषित कराने को प्रयत्नशील हैं। यह सम्मेलन हिन्दू के इस बिखराव के लिए सरकार की वर्तमान नीतियो को उत्तरदायी मानता है। सरकार ने मजहब के आधार पर अल्पमत और बहुमत के नारे लगा कर न केवल अलगाववादी प्रवृत्तियो को हवा दी है अपितु अपने रवैये से हिन्दुओ के लिए खतरा भी पैदा कर दिया है। यह बात तो समझ मे आने वाली है कि सरकार ऐसी व्यवस्था करे कि बहुमत अपने सख्या बल से अल्पमत के स्वत्वो का अपहरण न करते परन्तु यह कैसा प्रजातन्त्र है कि जो अधिकार बहुमत को प्राप्त नहीं है वे अल्पमत को प्राप्त हो जाए ? करोडो रुपये लगा कर हम लोगो ने स्कूल बनाए, कालेज बनाए परन्तु आज स्थिति यह है कि हम अपनी इच्छा के अनुसार अध्यापक या प्राचार्य भी नहीं रख सकते। दूसरी ओर अल्पमत कहलाने वालो की सस्थायें चाहे वे लोग ऐसे व्यक्ति को प्रिंसिपल बना दें जो उस पद की अर्हता ही न रखता तो। स्थिति का इस प्रकार विश्लेषण करने के बाद प्रस्ताव मे माग की गई है कि सरकार शिक्षा के क्षेत्र मे असमानताओ को अविलम्ब समाप्त करे।

इसी प्रस्ताव के दूसरे भाग मे कहा गया है कि देश के बडे-बडे हिन्दू मन्दिरों को सरकार अपने हाथ मे ले रही है। तिरुपति का विशाल मन्दिर सरकारी नियन्त्रण मे है। वैष्णवदेवी का मन्दिर सरकार ने रातो रात कब्जा लिया। इस प्रकार पग-पग पर सरकार हिन्दुओं को अपमानित कर रही है। मन्दिरो मे अव्यवस्था तथा धन के दुरुपयोग का नारा लगा कर केवल हिन्दू मन्दिरो पर ही अधिकार करना अन्याय है, अमानवीय है। वह सरकार जिसका रोम-रोम भ्रष्टाचार मे डूबा है किस मुँह से मन्दिरो के भ्रष्टाचार को समाप्त करने का दम भरती है ? प्रस्ताव मे कहा गया है कि यदि सरकार वास्तव मे अनुभव करती है कि अव्यवस्था और भ्रष्टाचार है तो एक अखिल भारतीय मन्दिर अधिनियम बनाए ताकि सब मन्दिरो को एक मे बाधा जा सके और फिर देश-भर के मन्दिरो, मस्जिदो, गुरुद्वारो और गिरजो का सचालन उसी एक कानून के अनुसार करे। सारे देश के लिए समान नागरिक सहिता बनाए।

अन्त मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से प्रार्थना की गई है कि वह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से आग्रह करे कि एक आर्य महासम्मेलन आहूत किया जाए जिसमे सभी देश हितैषियों को आमत्रित किया जाए। वह महासम्मेलन इन विषयो पर जो निर्णय करे उसके कार्यान्वयन के लिए बडे से बडा त्याग और बडे से बडा आन्दोलन किया जाए। आर्य समाज देहरादून की ओर से प्रातीय सभा तथा सार्वदेशिक सभा को आश्वासन दिलाया गया है कि उनके आदेश के पीछे सारा जनपद होगा और आन्दोलन मे तन, मन, धन से किसी प्रकार की कमी नहीं रहने दी जाएगी।

०० ०० ००

उत्सव

०० ०० ००

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी का ५१ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १८ दिसम्बर से २१ दिसम्बर १९८६ तक समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा इस अवसर पर यज्ञ, भजन, उपदेश प्रवचन महिला सम्मेलन आदि अन्य कार्यक्रमों का आयोजन होगा जिसमे आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान् वक्ता उपदेशक भजनोपदेशक सम्मिलित होगे।

"साधना-शिविर संपन्न"

वेद संस्थान, दिल्ली में १० से १६ नवम्बर, "८६ तक साधना-शिविर सानन्द सपन्न हुआ। स्थानिक साधकों के अलावा, उत्तर प्रदेश गुजरात, पंजाब बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों से ३० से अधिक नर-नारी इसमें पधारे। १५ नवम्बर को संस्थान के सस्थापक, स्वामी विद्यानन्द "विदेह" का ८८ वां जन्म दिवस स्वामी दीक्षानन्द की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर "विदेह" के उद्गारों के सकलन, 'वेदमाता' का विमोचन डॉ० फतहसिंह ने किया। शिविर में तपोयाग और विजययाग सत्यानन्द वेदवागीश के ब्रह्मत्व में हुए। डॉ० फतहसिंह ने "वेद और इतिहास-पुराण" विषय पर छह प्रवचन दिए। सस्थानाध्यक्ष, डॉ० अभयदेव ने ऋग्वेद १०/१३० का अध्यापन किया। डॉ० महावीर ने "वेदामृत।" मन्त्र की व्याख्या मे पाच प्रवचन किए। दोपहर मे महिला-सत्सग, रात्रि को सार्वजनिक प्रवचन नित्य हुए। —चैतन्य मुनि वानप्रस्थ मन्त्री

कृतज्ञता ज्ञापन

स्व० राय साहब चौधरी प्रताप सिंह जी के समीप बहुधा मै करनाल आया जाया करता था और वहीं मुझे आर्य परिवार के डा० जे० पसरीचा से परिचय हुआ। उनकी पत्नी ने मेरी अग्रेजी पुस्तक "पातांजल राजयोग" पढ़ी हुई थी। चौधरी साहब के सम्पर्क से डा० पसरीचा से मेरा परिचय बढ़ा और उस दिन से ही मैने सोच रखा था कि अपनी आँख का मोतिया बिन्द का आपरेशन इनसे ही कराऊँगा। गत वर्ष राय साहब की मृत्यु हो गई, लेकिन डा० पसरीचा का स्नेह मुझे प्राप्त हो गया। पिछली बार जब दक्षिण अफ्रीका गया था तो वहाँ के लोगों ने कहा कि आपका आपरेशन नवीन विधि से यहां हम कर दें, लेकिन मेरा यह सकल्प था कि आपरेशन डा० पसरीचा से ही कराऊँगा। डा० पसरीचा का मैं मेहमान बना और उनके घर पर रह कर १७ नवम्बर को मैंने आपरेशन करा लिया, बड़ी कुशलता व आत्मीयता से अपने परिवार का मुझे समझ कर यह आपरेशन किया है। मुझे नये नेत्र उनकी कृपा से प्राप्त हुए है। अभी दो-तीन महीने नेत्र को पूर्व रूप में आने में लगेगें। मै डा० पसरीचा का किन शब्दों मे आभार मानूं, मेरी आँखें मानो मुझे वापस मिल गई हैं। सब प्रकार से आपरेशन सफल हुआ है। डा० पसरीचा श्रीमती पसरीचा और उनके परिवार का मैं ऋणी हू।

डा० पसरीचा का अपना विशाल केन्द्र करनाल मे है। आर्य समाज को गर्व होना चाहिए कि उनके अपने आर्य परिवार में इतना अच्छा विशेषज्ञ है। डा० पसरीचा अपनी टीम के साथ अनेक जगहों पर नेत्रों के कैम्प लगाते हैं और निसन्देह मै कह सकता हू कि वे अपने नेत्र विद्या के कुशल आचार्य हैं। उनके समस्त परिवार को न केवल मेरा ही, आर्य जगत का आभार है। —स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती

संशोधन

आर्य मित्र दिनांक २/११/८६ के पृष्ठ ४ पर प्रकाशित अपील को कृपया इस प्रकार सशोधित कर लें—

(१) आर्य समाज सांवली के स्थान पर आ० स० सांवली पचपुरी पढ़ें।

(२) स्व० दयानन्द भारतीय के स्थान पर देश भक्त स्व० श्री दयानन्द भारतीय पढ़ा जाए।

(३) पो० बंजरी के स्थान बैंजरौ, पिन कोड २४६२७५।

अपील पृथक रूप से छपवा कर श्री वासुदेव विमल मन्त्री आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढ़वाल द्वारा वितरित की जा रही है। दानदाता इस पावन कार्य मे आर्थिक सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागी

महात्मा हँसराज दिवस समारोह १९ अप्रैल १९८७

आर्य जनता के सूचनार्थ निवेदन है कि हरवर्ष की भांतिइस वर्ष भी आर्य प्रादेशिक सभा दिल्ली में महात्मा हसराज दिवस समारोह रविवार, १९ अप्रैल १९८७को समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। समस्त आर्य समाजों, सभी आर्य समाजों डी.ए.वी. सस्थाओं एव अन्य आर्य सस्थाओं से प्रार्थना है कि वेअभी से उक्त तिथि अंकित कर तथा उसदिन कोई अन्यकार्यक्रम रख कर इस समारोह में अधिक से अधिक सख्या में सम्मिलित होने की कृपा करें। विस्तृत कार्यक्रम प्रकाशित होने पर भिजवा दिया जायेगा।

कार्तिकी पर वेद प्रचार

१५-१६ नवम्बर ८६ को शृंगवेरपुर (प्रयाग) इलाहाबाद में गंगा तट पर दो दिन तक वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। इसमें पटना के श्री विद्याधर आर्य, प्रयाग के बजरंग बहादुर आर्य तथा बाराबंकी के सत्य प्रकाश आर्य भजनोपदेशक का आकर्षक प्रभावशाली कार्यक्रम रहा।

इसमें दयानन्द बाल सदन लखनऊ के श्री गोपाल मिश्र व उनके सहयोगी काशी प्रसाद गुप्त का सराहनीय सहयोग रहा।

राष्ट्र भाषा हिन्दी का विरोध असह्य

आर्य समाज बीकानेर महर्षि दयानन्द मार्ग ने निम्नांकित प्रस्ताव पारित किया।

देश के सविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित की किन्तु जब तक अखिल भारत में उसका प्रचार प्रसार न हो जाय तब तक अग्रेजी चालू रखने का निर्णय लेकर इसे उपयुक्त स्थान और गरिमा प्रदान करने का अवसर दिया था पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के चालीस वर्षों की लम्बी अवधि में उसे वह सुयोग तो मिला नहीं बल्कि उलटा विरोध अनादर और घृणा प्रस्फुटित हो रही है जो कि देश को खण्डित करने वाले हैं। तमिलनाडु में द्रमुक के करुणानिधि ने १७ नवम्बर से भारतीय सविधान के उस अनुच्छेद की प्रतियां जलाने और आंदोलन को व्यापक बनाने की घोषणा की है जो हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित करता है। हिन्दी नाम पट्टों को मिटाने का अभियान जोरों पर है। वहां कालेज के छात्र तो इसी बात के लिए प्रधानमन्त्री का पुतला जलाने और तोड़-फोड़ व भड़काने वाले भाषणों द्वारा वातावरण को गरमाने मे निकल पड़े।

आर्य समाज इस दुर्भाग्यपूर्ण असतोष को शीघ्र मिटाने का केन्द्र व राज्य सरकार और राजनैतिक दलो से आग्रह पूर्वक अनुरोध करता है और सार्वदेशिक सभा से इस बारे में उचित भूमिका निभाने की तैयारी करने की विनय करता है"।

आर्य समाज गोंडा का ७० वाँ वार्षिकोत्सव सोल्लास संपन्न

आर्य समाज गोंडा का ७० वां वार्षिकोत्सव दिनांक २१/११/८६ से २४/११/८६ तक सोल्लासपूर्वक मनाया गया। दिनांक २१/११/८६ को एक शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें दयानन्द बाल मन्दिर गोंडा बड़गांव एव ज्वाला देवी शिशु शिक्षा निकेतन के बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर महिला सम्मेलन राष्ट्र भाषा सम्मेलन एवं धर्म रक्षा, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। देश के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों, स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, प० इन्द्र देव शास्त्री, बलराम सिंह, कमल देव आर्य तथा कड़क सेन ब्रह्मचारी के ओजस्वी भाषणों ने जनता पर अच्छा प्रभाव डाला। कार्यक्रम का सचालन श्री बलराम गोविन्द जी मन्त्री जिला सभा गोंडा ने किया।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कलकत्ता का १० वां वार्षिकोत्सव दिनांक २०-१२-८६ से २८-१२-८६ तक समारोह पूर्वक स्थानीय दयानन्द पार्क (मुहम्मद अली पार्क) में समायोजित होगा। इस अवसर पर विशाल शोभा यात्रा विविध सम्मेलन एवं नौ दिवसीय यज्ञ का कार्यक्रम है। इस अवसर पर स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती (इलाहाबाद) पधार रहे हैं।

(१) कन्या गुरुकुल (सासनी) हाथरस अलीगढ़ का वार्षिक महोत्सव दिनांक ३१ जनवरी से ३ फरवरी १९८७ के मध्य सोल्लास सपन्न होगा।

(२) आर्य समाज आजमगढ़ के तत्वाधान मे दिनांक ४ जनवरी से १० जनवरी १९८७ तक वेद कथा का आयोजन होगा जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् एव वक्ता सम्मिलित होंगे।

(३) आर्य समाज उसका बाजार (बस्ती) के तत्वाधान् मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ दिनांक ५ फरवरी से ९ फरवरी ८७ तक सपन्न होगा।

(४) जिला आर्यों प्रतिनिधि सभा उन्नाव के तत्वाधान मे मेला तकिया में दिनांक २६ दिसम्बर से २८ दिसम्बर ८६ तक यज्ञ,वेद प्रचार एव जन जागरण का व्यापक आयोजन होगा।

(५) भारत के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य प० राम कृष्ण शास्त्री कलकत्ता के आचार्यत्व में ग्राम पथरा (रोतहट) नेपाल मे दिनांक १ जनवरी से ९ जनवरी ८७ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन होगा।

उत्सव सम्पन्न

–आर्य समाज कृष्णा नगर प्रयाग का हीरक जयन्ती समारोह दिनांक २१ से २३ नवम्बर ८६ तक हर्ष एव उल्लास के साथ मनाया गया।

–आर्य समाज हमीरपुर का वार्षिकोत्सव १२ नवम्बर से १६ नवम्बर तक सोल्लास सपन्न हुआ तथा समारोह के अन्तिम दिन श्री प्रो० वासुदेव सिंह जी का प्रभाव शाली वक्तव्य हुआ।

–आर्य समाज नकुड़ (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव दिनांक १२ नवम्बर से १४ नवम्बर तक भव्य आयोजन के साथ मनाया गया।

–आर्य समाज गाजीपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक २० नवम्बर से २३ नवम्बर तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

–आर्य समाज सुलतानपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक १३ नवम्बर से १६ नवम्बर तक धूम-धाम से मनाया गया।

–आर्य समाज रुद्रावली (बाराबंकी) मे ऋषि निर्वाण दिवस दीपावलि के पावन पर्व पर दिनांक १ नवम्बर ८६ को समारोह से मनाया गया तथा इसी अवसर पर समाज के मन्त्री श्री राजाराम गुप्त के लघुभ्राता श्री विपिन चन्द्र गुप्त के प्रथम पुत्र का नामकरण सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार पं० श्री राम बिहारी लाल शास्त्री के पौरोहित्य में संपन्न हुआ तथा नाम अतुल प्रकाश रखा गया।

–जिला आर्य प्रतिनिधि सभा उन्नाव के तत्वाधान में दिनांक ८ नवम्बर से ११ नवम्बर ८६ तक मेला गोकुलबाबा मे यज्ञ, वेद प्रचार एवं जनजागरण का व्यापक कार्यक्रम संपन्न हुआ।

–आर्य समाज पोठिया (कटिहार) का वार्षिकोत्सव दिनांक २३ से २५ नवम्बर ८६ तक हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया।



तरन तारन
२१-११-८६

श्रीमान मैनेजर साहब जी

नमस्ते। ठाकुर जी की कृपा से आप सानन्द व कुशल होंगे। निवेदन यह है कि आर्यमित्र पढकर आत्मा को बहुत आनन्द व प्रसन्नता होती है। एड्रेस आप अपने रजिस्टर पर दर्ज कर लेवें और भेजें।

श्री सुरेन्द्र बसल
सुरेन्द्र बी हट्टी
चौक दरबार साहब तरन तारन
अमृतसर (पजाब)

भूल हेतु खेद प्रकाश

दिनांक १४-१२-८६ के अक मे सम्पादकीय टिप्पणियाँ कालम मे श्री गोर्वाच्योव का स्वागत शीर्षक टिप्पणी मे पृष्ठ २ की अन्तिम लाइन "और भावना" के बाद निम्नलिखित वाक्य "के अनन्तर अपने सस्मरणो मे उनका वर्णन करते हुए भारतीय सस्कृति के प्रति नतमस्तक होते थे। हमसे आध्यात्म, दर्शन, विज्ञान, राजनीति सीख कर जाते थे।" प्रेस की भूल से रह गई है। इसका हमे हार्दिक खेद है।

कृपालु पाठक असुविधा के लिये क्षमा करेंगे और उक्त स्थान मे सुधार कर लेने की कृपा करेंगे।

–आचार्य देवव्रत अवस्थी

–चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वाधान मे नेपाल राज्य के मुरली बहुआ, रानीघाट, बीरगज आदि क्षेत्रो मे दिनांक १६ नवम्बर से २६ नवम्बर ८६ तक व्यापक रूप से वेद प्रचार का कार्य स्वामी मोक्षानन्द जी सरस्वती (मथुरा) तथा श्री रामचन्द्र क्रांतिकारी द्वारा सम्पन्न हुआ। तथा दिनांक ४ नवम्बर से ११ नवम्बर तक आर्य समाज मधुबनी कला पूर्वी चम्पारण मे यजुर्वेद परायण यज्ञ का आयोजन हुआ।

–जिला आर्यो प्रतिनिधि सभा बलिया के तत्वाधान मे दिनांक २४ नवम्बर को आर्य समाज हथौज मे यज्ञ व वेद प्रचार, ३० नवम्बर को सेमुरी व खड़करा बाजार मे सार्वजनिक सभा द्वारा वैदिक प्रचार १ दिसम्बर को महर्षि दयानन्द सीनियर विद्यालय मे वैदिक धर्म का प्रचार तथा दिनांक २ दिसम्बर को ग्राम सिवान कला में वेद प्रचार का कार्य एव नवीन आर्य समाज की स्थापना का कार्य सपन्न हुआ।

प्रभात आश्रम विजयी

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत अक्टूबर मास मे लखनऊ में अपने शताब्दी समारोह पर अन्त्याक्षरी का भी आयोजन किया था। जिसमें मन्त्रान्त्याक्षरी, श्लोकान्त्याक्षरी एव सूत्रान्त्याक्षरी का कार्यक्रम निर्धारित था।

सूत्रान्त्याक्षरी में तीन पक्ष सम्मिलित हुए एव तीनो ही बराबर रहे श्लोकान्त्याक्षरी में समयाभाव के कारण जय पराजय का निर्णय नहीं हो सका। मन्त्रान्त्याक्षरी में अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी गुरुकुल एटा को ०/२से परास्त कर गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ विजयी एव प्रथम रहा।

दयानन्द युगपुरुष नहीं, कल्पपुरुष थे

[पृष्ठ ५ का शेष]

किया है, वह शस्त्रास्त्र से सम्पादन किया जाने वाला साम्राज्य नहीं है। विश्व के आर्यकरण तथा वैदि- कीकरण द्वारा निष्पादन किया जाने वाला साम्राज्य है। वेदो की साकार विश्वव्याप्ति और संस्कृत के साभ्यास विश्व-प्रसार से विश्व के मानव-मानव का आर्यकरण करके जिस विश्व-कौटुम्ब्य की स्थापना होगी, वही दयानन्द की कल्पना का वास्तविक 'अखण्डल चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य' होगा।

वेद और दयानन्द दोनो ही साम्राज्यवादी हैं। 'आर्याभिविनय' मे महर्षि दयानन्द ने स्थान-स्थान पर प्रार्थना की है कि प्रभो, हम आर्यों का इस समस्त भूमण्ड पर सार्वभौम अखण्ड चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य हो। सार्वभौम अखण्ड चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य की ध्वनि तो 'सत्यार्थ प्रकाश' मे भी ध्वनित हो रही है।

शकराचार्य के बाद एक पुरुष प्रकट हुआ था, जिसका नाम दया- नन्द था। उसने भी भारत के राजाओं को अपने साथ लेना चाहा था पर अगरेजी साम्राज्य के अकुश के कारण वह अपने मिशन में सफल न हो सका। दयानन्द आया उसने भी शकर-वत् ब्रह्मचर्य, योग पाण्डित्य के आश्रय से भागीरथ प्रयत्न किया। सारे देश मे वह ग्राम-ग्राम, नगर- नगर, डगर-डगर घूमा। उसने डेरे-डेरे और कुटीर-कुटीर मे सहायता के लिए झाका। उसने यतियो और विद्वानो का आह्वान किया।

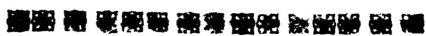
स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आपके लिए विरासत मे जितनी प्रशस्त और प्रचुर सम्पदा छोडी है, उतनी अन्य किसी आचार्य ने नहीं छोडी। उन्होंने आपको हाथो मे वेदभाष्य दिया है, सत्य-संयुक्त गहन और सघन साहित्य दिया है, जिसके आश्रय से आप प्रत्येक दिशा और पार्श्व मे बहुत आगे बढ सकते थे।

काश, हमने दयानन्द के आदेश का पालन करके वास्तविक रूप से वेदो को अपनाया होता तो अब तक हम उस छोर तक विश्व का आर्य- करण कर चुके होते।

ऋषे, काश, तेरे अनुयायियो ने वेदो को सच्चे हृदय से अपना कर ठीक ढग से वेद प्रचार किया होता तो आज सारा ससार वेद माता के सामने नतमस्तक हो रहा होता।

दयानन्द ने कहा था कि 'मनुष्य उसी को कहना कि मननशील हो कर स्वात्मवत् अन्यो के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे, अन्याय- कारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यो न हो, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रिया- चरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् भी हो तथापि उनका नाश और अप्रियाचरण सदा किये करे, अर्थात् जहां तक हो वहां तक अन्यायकारियो के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम मे चाहे उसको कितना ही दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी जावें परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।' (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)।

दयानन्द की यह आवाज वह तराजू है जिस पर हर इन्सान चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, अपने आपको तोल कर यह जान सकता है कि वह मनुष्य है या पशु,। दयानन्द की इस आवाज मे मत, सम्प्रदाय, वर्ग देश या राष्ट्र का भेद नहीं है। यह तो मानवता की वह कसौटी है, जिस पर हर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अपने आपको कस कर देख सकता है कि वह खरा है या खोटा।



शुभ सूचना

आगामी ऋषि बोध के पावन पर्व (शिवरात्रि) पर आर्य मित्र का विशेषांक प्रकाशित होने जा रहा है। इस विशेषांक में जहाँ स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के मन्तव्यों और उनकी पूर्ति के लिये किए जा रहे प्रयासों के विशिष्ट लेख होंगे, वहां अक्टूबर ८६ में लखनऊ में सुसम्पन्न शताब्दी समारोह का पूर्ण विवरण होगा। समस्त सम्मेलनों के पारित प्रस्तावों और व्याख्यानों तथा अन्य सामग्री का इस में पूर्ण समावेश रहेगा।

इस विशेषांक की एक प्रति का मूल्य १०/– होगा। चूंकि यह विशेषांक सीमित संख्या में छपेगा अतएव आर्य समाजों को चाहिए कि वे अपनी आवश्यकतानुसार अग्रिम धन भेज कर अभी से आर- क्षण करा लें अन्यथा विलम्ब होने पर यह सभव है कि यह प्राप्त न हो सके।

लेखको और कवियो से भी विनम्र निवेदन है कि वे सारग- र्भित मौलिक रचनायें भेज कर कृतार्थ करें। रचनाओं में कोरी प्रशस्तियां ही न हो अपितु ठोस सामग्री हो जो ऋषि के मन्तव्यों को सिद्ध करने मे सहायक हों।

समस्त रचनाए १५ जनवरी १९८६ तक प्राप्त हो जाए। विलम्ब से प्राप्त होने पर उन्हें प्रकाशित करना सभव नहीं होगा।

—सम्पादक मण्डल



अङ्गिरसो भवेमाग्नि रुजेम, ऋ० ४-२-१५

हम अंगारे बनें और पर्वत को खण्ड-खण्ड कर दें। अंगारों की तरह धधकते हुए हम मानव जाति और मानवता को ग्रस्त करने वाले पर्वतों को धराशायी कर दें, अन्यायियों और अत्याचारियों को सदा के लिए नामशेष कर दें। सांसारिक उपलब्धियों और भौतिक लाभों के लिए उनके गुणगान करके मतलब-बरारी करना मानवता नहीं, पामरता है। वैसा करना अन्याय और अत्याचार को बढ़ावा देना है।

ऐ अजीजाने जहां, फिकरा यह जाए गौर है।
कद्रदानी और है, मतलब-बरारी और है।

सुनिये, दुनिया आपके लिए क्या कह रही है।

आज ससार को फिर दयानन्द की आवश्यकता है, उसी दयानन्द की, प्रलोभनों को जो ठुकरा कर सत्य को कस कर थाम सके, जो सत्य का पूरा मूल्य चुका सके, जो निर्भीकता के साथ जो के नीचे घूमती हुई पृथ्वी पर अकम्प और अडिग रह सके, जो अनादर और दानवता के छक्के छुड़ा सके, जो मशाल-बरदार बन कर मानव-मानव को मानवता का दर्शन करा सके, जो वेद और योग के प्रसाद से सबको सुधन्य कर सके, जो फिर से सार्वभौम आर्य साम्राज्य के सोये अरमानों को जगा सके।

आर्य सत्याग्रहियों को पेंशन की घोषणा—

जांच के लिए गैर-सरकारी समिति गठित

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती अध्यक्ष होंगे

आगामी ३१ मार्च तक सब मामले निपटा दिये जायेंगे

केन्द्रीय गृह मन्त्रालय ने सात सदस्यो की एक गैर सरकारी जाच समिति का गठन किया है, जिसके अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती (पूर्व नाम श्री रामगोपाल शालवाले) नियुक्त किये गये है।

यह समिति उन प्रार्थना पत्रो की जाच करेगी जो स्वाधीनता सेनानी सम्मान पेंशन योजना १९८० के अधीन हैदराबाद आर्य सत्याग्रह सन् १९३८-३९ मे भाग लेने वाले सत्याग्रहियो अथवा उनकी विधवाओ की ओर से प्राप्त हुए है। हैदराबाद रियासत स्वतन्त्रता के बाद तीन भागो मे विभक्त हो चुका है और उसके अन्तवर्ती क्षत्रो का आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा महाराष्ट्र राज्यो मे विलय हो चुका है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सचालित इस सत्याग्रह ने लगभग २८,००० सत्याग्रहियो ने भाग लिया था। अब ४७ वर्ष बाद उनमे से केवल १५ प्रतिशत के करीब ही जीवित हैं। सत्याग्रह का नेतृत्व तत्कालीन सभाप्रधान स्वर्गीय महात्मा नरायणस्वामी जी ने किया था। इसमे देश के सभी क्षेत्रो और फीजी, बर्मा, स्याम आदि विदेशो मे रहने वाले भारतीयो ने भी भाग लिया था। इनमे सनातनधर्मी, जैन, सिख—सभी समुदायो के व्यक्तियो ने गिरफ्तारियां दी थीं। हा तक कि अजमेर के एक मुसलमान सज्जन सय्यद फैयाज अली ने भी इस सत्याग्रह मे भाग लिया था।

जाच समिति के अन्य सदस्यो के नाम इस प्रकार हे—

१—श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव
[वरिष्ठ उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा]

२—श्री रामचन्द्रराव कल्याणी
[प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश, हैदराबाद]

३—प्रो० शेरसिंह
[प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एव भू पू मन्त्री भारत सरकार]

४—श्री रणबीरसिंह, भूतपूर्व ससद् सदस्य (हरियाणा से)

५—श्री सोमनाथ मरवाह, एडवोकेट, नई दिल्ली

६—श्री शिवकुमार शास्त्री, भूतपूर्व ससद् सदस्य (उत्तरप्रदेश से)

याद रहे कि सार्वदेशिक सभा चिरकाल से इस प्रकार की समिति गठित करने की माग कर रही थी।

इस सम्बन्ध मे जारी ज्ञापन मे कहा गया है कि स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन योजना, १९८० के अधीन पेंशन देने के उद्देश्य से आर्य समाज के आन्दोलन को मान्यता देने के निश्चय के फलस्वरूप सरकार को अनेक राज्यो और सघीय क्षेत्रो से आर्यसमाज के आदोलन मे भाग लेने वालो से आवेदन पत्र मिले। बताया गया है कि इस कोटि मे आने वाले सब दावेदारो के लिए यह सम्भव न होगा कि वे जेल की सजा आदि के बारे मे सरकारी रिकार्डो पर आधारित साक्षी प्रस्तुत कर सकें। स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन योजना १९८० के प्रविधानो के अधीन यह साक्षी देनी होती है।

जब भी समिति की बैठक होगी, गृह मन्त्रालय के स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग के आर्यसमाज प्रकोष्ठ के इचार्ज सयोजक के रूप मे काम करेंगे।

समिति प्रयत्न करगी कि अपना काम पूरा करके ३१ मार्च १९८७ तक अपनी सिफारिशें सरकार के पास भेज दे।

आवश्यक सूचना

गुमराह करने वालो से सावधान!

विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के शताब्दी समारोह का भ्रामक प्रचार करके दिनाक २७ तथा २८ दिसम्बर ८६ को मेरठ नगर मे मनाने का समाचार प्रकाशित कर धन एकत्रित किया जा रहा है।

इस सन्दर्भ मे सूचित किया जाता है कि सभा का शताब्दी समारोह १७ से २० अक्टूबर ८६ तक लखनऊ मे सम्पन्न हो चुका है और मेरठ नगर मे इस सभा द्वारा कोई शताब्दी समारोह आयोजित नहीं किया जा रहा।

अतएव गुमराह करने वालो से स्वय सावधान रहे और दूसरो को भी सचेत करें। यदि कोई जानकारी प्राप्त करनी हो तो सभा कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ—२२६००१ से प्राप्त करें।

आगामी अङ्क मे विस्तृत सूचना की प्रतीक्षा करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६३
रजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
पौष कृष्ण ५
रविवार, २१ विसम्बर १९८६ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र



ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका शताब्दी मनाई जाए

आर्य समाज क अधिकारियो एव समस्त आय जनता से निवेदन हे कि जिस प्रकार से सभी स्थानो पर शताब्दिया व अन्य सम्मेलन आर्यों के सम्पन्न हो रहे है वहीं पर सब प्राचीन नगरी जो अपने नाम व काम से सुप्रसिद्ध है आय जन ध्यान देवे कि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने अयोध्या से ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिखना प्रारम्भ किया है। प०युधिष्ठिरजी मीमासक द्वारा लिखित स्वामी दयानन्द के ग्रन्थो का इतिहास प्रथम सस्करण १९४९ पृष्ठ ९६ पर यह प्रमाण है कि (भाद्र कृष्ण १४ स० १९३३ वि० तदनुसार १८ अगस्त १८७६ को स्वामी दयानन्द जी चौ० गुरुचरण लाल के मन्दिर सरयु बाग में पधारे। भाद्र शु० १ स० १९३३ वि०–२० अगस्त १८७६ को ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका लिखना आरम्भ किया है।) अर्थात १११ वष होने आ रहे हैं, फिर भी आर्यजनो का ध्यान इधर नहीं पहुचा हे, जिस पावन भूमि को दुनिया का सर्वप्रथम नगर माना जाता ह तथा करोडो वष तक आर्यों की समस्त भूमण्डल की राजधानी रही है और वही नगर तीथस्थल का रूप ले लिया है। दूर दृष्टि रखने वाले स्वामी दयानन्द जी ने यही ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिखना प्रारम्भ किया। इसी पुनीत भूमि स आशीर्वाद प्राप्त करके आगे बढ हे। प्रथम वेद ज्ञान मथुरा से प्राप्त किया। हरिद्वार मे उसी वेद ज्ञान के द्वारा पाखण्ड खण्डिनी लहराये आर पूण रूप स काशी मे उसी ज्ञान से शास्त्राथ जीता ओर उसी ही ज्ञान का स्थायी रूप देने हेतु अयोध्यापुरी मे पधार करक वेद प्रचार का माग सुगम बना दिया और आर्यसमाज का इसका भार दिया हे।

अब आयजन भविष्य को उज्ज्वल बनान हेतु सावदेशिक रूप देकर शताब्दी अवश्य मनायें और एक विशाल वेद मन्दिर का निर्माण हो जिसमे चारो वेदो के मन्त्र दोवार मे लिखे जावें और एक अतिथि शाला हो तथा दयानन्द वदिक शोध शाला हो, एक पत्रिका प्रकाशित होनी चाहिय। आय लेखक जन उपदेशक गण तथा सम्पादक जनो से मेरा यह आग्रह है कि इस ओर अधिक ध्यान देकर अयोध्या नगरी मे आर्यों का जयघोष प्रदान करने की ओर अपना पग बढ़ावें। जिससे १९८७ के अक्टूबर मास मे ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका शताब्दी समारोह सार्वभौमिक रूप से सम्पन्न हो सके। दानी महानुभावो से तथा विद्वानो से विशेष आग्रह है कि अपना आशीर्वाद प्रदान करने की कृपा करें। इस कार्य को आगे बढाने हेतु अपना परामश देकर कृताथ करें।

भवदीय–
कामता प्रसाद कमठ उपदेशक तथा
प्रधान आर्यसमाज, ग्रा० पो० डेहरियावाँ
फैजाबाद, उ०प्र०, पिन–२२४२०७

अमृत वर्षा

[१] यन्मनसा मनुते त द्वाचा ववति।
य द्वाचा वदति तत्कर्मणा करोति।
यत्कर्मणा करोति तदभि सपद्यते ॥

[जिस प्रकार मन से विचार होता है, उसी भाति वाणी से उच्चार होता है। जिस प्रकार वाणी से उच्चार होता है, उसी भाति आचार बनता है। जैसा आचार बनता है, वैसा ही मनुष्य बन जाता है।]

[२] यद्यपि तरणं किरणं सकलमिद विश्वमुज्ज्वल विदधे।
तदपि न पश्यति थूक पुराकृत मुज्यते कम ॥

[यद्यपि सूय की किरणो ने इस सारे विश्व को प्रकाशित कर दिया हे तो भी उल्लू नही देख पाता है। यह उसके पूव कृत कर्मों का ही भोग हे।]

[३] बभुक्षित किम् न करोति पापम।
क्षीण नरा निषकरणा भवन्ति ॥

['क्षित व्यक्ति निर्दयी होकर कोई भी पाप कर सकता है।

[४] कारष्यामि करिष्यामि करिष्यमिति चिन्तया।
मरिष्यामि मरिष्यामि परिष्यमिति विस्मृतम् ॥

[करूगा, करू गा, करू गा, इस चिन्ता मे मनुष्य भूल जाता है कि मरू गा, मरू गा, मरू गा।]

[सकलित]

संवेदना

निम्नलिखित आर्यों के दिवगत होने के समाचार प्राप्त हुए हैं जिस के लिए सभा सवेदना व्यक्त करती है–

१–जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा सुलतानपुर के प्रधान ९० वर्षीय श्री भीमकुमारसिह जी।

२–श्री यमुनाप्रसाद पान्डे निवासी खरी (गोण्डा)।

३–महात्मा अमर स्वामी जी की धर्मपत्नी श्रीमती नारायणी देवी जी।

४–आयसमाज बलिया के प्रतिष्ठित एव कर्तव्यनिष्ठ सदस्य श्री राम जन्म प्रसाद पथिक जी।

५–मैनपुरी जनपद के प्रतिष्ठित आय नेता श्री वीरेन्द्रनाथ जी भारतीय

इन दिवगत आत्माओ की शाति तथा उनके वियोग मे संतप्त सम्बन्धियो को धैय प्रदान करने हेतु प्रभु से प्रार्थना है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

शताब्दी समारोह की सफलता पर आर्यसमाज बैंकाक के कार्यकर्त्ताओ तथा सभी सदस्यो की ओर से हार्दिक शुभकामनायें स्वीकार करें। इस पुनीत अवसर पर बैंकाक का कोई सदस्य न पहुच सका। इसका हमे पश्चाताप है।

संग्रामसिह
मन्त्री–आर्यसमाज बैंकाक

स्वत्वाधिकारिणी आय प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के लिये भगवानदीन अ प्रभाकर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप मे सब्बरवाल प्रिन्टिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।